ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

"आचार्य श्री राम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों के काव्य का समालोचनात्मक अनुशीलन"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी के
हिन्दी विषयान्तर्गत पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

2341

भाग 1/2

5 दिसम्बर 2004

शोध केन्द्र

दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई
जनपद-जालौन (उत्तर प्रदेश)

शोध पर्यवेक्षक

डा0 रामस्वरूप खरे
एम०ए०,पी-एच०डी०'साहित्य रत्न'
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य
दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
उरई, जनपद- जालौन (उत्तर प्रदेश)
निवास- प्राध्यापक निवास, राठ रोड, उरई

शोधकर्ता

पं0 लक्ष्मण लाल त्रिपाठी
एम०ए० (हिन्दी,अंग्रेजी,संस्कृत;अर्थशास्त्र),
बी०एस-सी०,बी०एड०
शिक्षक- गाँधी राष्ट्रीय विद्यालय इण्टर कालेज राठ
निज-निवास- 'प्रज्ञा भवन', तिलक नगर
राठ (हमीरपुर) उ०प्र०
दूरभाष - (05280) 200286

शोध प्रबन्ध भाग- 2

अनुक्रमणिका

अध्याय — पृष्ठ सं0

अध्याय - 3 आचार्य श्री राम शर्मा के जीवन- दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवि (अवशेष भाग) 743-906

श्री वीरेश्वर उपाध्याय, श्री जितेन्द्र रघुवंशी, श्री शचीन्द्र भटनागर, श्री लक्ष्मीनारायण 'कमलेश' डा० आर०पी० कर्मयोगी, डा० जमुनाप्रसाद बडैरिया

अध्याय - 4 आलोच्य काव्यों में युगनिर्माण की प्रतिध्वनि 907-967

क.लक्ष्य — ख. संकल्प
ग. लोक मंगल की कामना — घ. महापुरुषों का गौरव गान
इ. जनजागरण के अभियान की स्वीकृति — च. जीवन-संघर्ष का आह्वान
छ. मानव मूल्यों की शिक्षा

अध्याय- 5 आलोच्य काव्यों में सामाजिक प्रगति शीलता की अभिव्यक्ति 968-1044

क.उदात्त मानव दृष्टि एवं प्रतिष्ठा — ख. नर-नारी सम्बन्ध
ग. जाति,रूढि कुरीति,अन्धविश्वास उच्छेद — घ. नारी महत्ता एवं नारी जागरण
इ. राष्ट्रीय एवं विश्ववन्धुत्व का भाव — च. सात्विक जीवन यापन की भावना
छ. युवा शक्ति का आह्वान

अध्याय- 6 आलोच्य काव्यों में धार्मिक सद्भाव 1045-1134

क. आत्मचिंतन — ख. जीवन- दर्शन
ग. स्वर्गावतरण की कामना — घ. धर्म एवं कर्तव्य की महत्ता और प्रतिष्ठा
इ. नैतिक- सांस्कृतिक उत्थान एवं धर्म — च. आध्यात्मिक तत्व चिंतन
छ. पर्वो एवं संस्कारों की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि

अध्याय-7 आचार्य शर्मा द्वारा प्रवर्तित जीवन -दर्शन विषयक पारिभाषिक शब्दावली का आलोच्य काव्यों में अनुसन्धान 1135-1204

अध्याय- 8 आलोच्य काव्यों में अनुभूति पक्ष 1205-1260

अध्याय- 9 आलोच्य काव्यों का कलापक्षीय विवेचन 1261-1327

अध्याय- 10 उपसंहार 1328-1403

क. महापुरुषों की दृष्टि में आचार्य श्री राम शर्मा
ख. युग मनीषी के रूप में आचार्य शर्मा का संदेश, साहित्य मनीषियों के विचारों से उसका साम्य तथा उसकी निजी विशेषता
ग. आचार्य शर्मा के जीवन- दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वज्जनों के विचार एवं सम्मतिया
घ. आचार्य शर्मा के जीवन -दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों की हिन्दी काव्य को देन

परिशिष्ट- 1. रेखाचित्र , मानचित्र एवं चित्रांकन 1404-1435

परिशिष्ट - 2. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची 1436-1463

घोषणा पत्र / प्रमाण पत्र

मै लक्ष्मण लाल त्रिपाठी एतद्द्वारा घोषण करता हूँ कि पी एन०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत यह शोध प्रबन्ध जिसका शीर्षक "आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों के काव्य का समालोचनात्मक अनुशीलन" मेरे स्वयं के प्रयासों का परिणाम है । यह एक मौलिक कृति है जिस पर किसी भी विश्वविद्यालय में इसके पूर्व शोध कार्य नही हुआ है । जो सामग्री जिन स्रोतों से प्राप्त की गई है उसका उल्लेख उचित स्थान पर कर दिया गया है ।

मैने निर्देशन प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने शोध पर्यवेक्षक श्रद्धेय डा० राम स्वरूप खरे जी का न्यूनतम दो सौ दिन मार्गदर्शन प्राप्त किया है । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध भाषा के दृष्टिकोण के साथ ही विषय वस्तु के सन्दर्भ में भी सन्तोषप्रद है ।

(डा० रामस्वरूपखरे)
एम०ए०, पी०एच०डी० 'साहित्यरत्न'
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य
दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उरई (जालौन) उ०प्र०
प्राध्यापक निवास, राठ रोड, उरई
पर्यवेक्षक

(पं० लक्ष्मण लाल त्रिपाठी)
एम०ए० (अर्थशास्त्र, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत)
बी०एस-सी०, बी०एड०
शिक्षक, गांधी राष्ट्रीय विद्यालय इण्टर कॉलेज,
राठ (हमीरपुर) उ०प्र०
शोधार्थी

सिकताकणों पर सात्विक चाँदनी विकीर्ण करता है। वे श्रुति तथा लय की अवज्ञा नहीं करते और प्रतीक तथा बिम्बों की संयोजना के हिमायती थे। उनका प्रगीत काव्य प्राणों की तारुण्य की लालिमा से मुक्त है। उनका वाड्.मय प्रेम के नैवेद्य के प्रदाता है। वे तल्लीनता तथा स्पष्टता के सिरजनहार थे। उनके गीतों में शब्द चयन एवं रचना कौशल को सम्यक स्थिति मिली है और उनकी अनुभूति तथा अभिव्यक्ति को सबलता तथा प्रौढ़ता प्राप्त है।

श्री वीरेश्वर उपाध्याय

जन्म- पारिवारिक प्रवृत्ति- शिक्षा एवं सेवाएं -

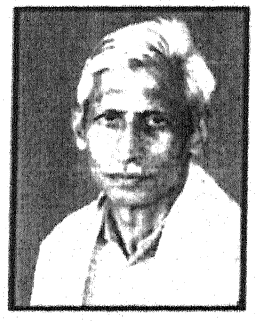

श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी का जन्म 2 फरवरी 1936 को कालपी (जालौन) उ0प्र0 में हुआ था। आपके पिताजी श्री गिरिजाशरण उपाध्याय उन दिनों वहाँ सेवारत थे। बाद में उक्त स्थल से उनका सम्पर्क टूट गया। आपके पिताजी का साहित्यिक ज्ञान श्रेष्ठ था। साहित्यिक कवि गोष्ठियाँ इनके घर पर एवं परिचित क्षेत्र में होती रहती थी। आपके बाबा उच्चकोटि के साधक थे। आपकी जन्मदात्री माता श्रीमती लड़ैती देवी साध्वी स्वभाव की महिला थी। आपका परिवार बुन्देलखंड के विभिन्न स्थानों पर रहा। श्री उपाध्याय जी के ताऊ जी श्री सच्चिदानन्द उपाध्याय एक अच्छे कवि थे। इस प्रकार पारिवारिक संस्कारों के कारण बचपन से ही इन्हें साहित्य एवं अध्यात्म में रूचि उत्पन्न हो गयी। श्री उपाध्याय जी दो भाई एवं एक बहिन हैं। आपके बडे भाई श्री भुवनेश्वर उपाध्याय अपने सेवा कार्य से अवकाश लेने के पश्चात उज्जैन में बस गये तथा आपकी बहिन श्रीमती सावित्री अपने परिवार के साथ पचमढ़ी में रह रही है। आपका पारिवारिक वातावरण पूर्णत: अध्यात्मिक था।

श्री उपाध्याय ने इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा करके अगस्त 1959 से दिसम्बर 1963 तक म0प्र0 विद्युत बोर्ड में और इसके बाद 1 जनवरी 1964 से 15 जनवरी 1967 तक पोलीटेक्निक, भोपाल में शिक्षक के रूप में सेवा कार्य किया। तत्पश्चात फरवरी 1967 में नौकरी से त्याग पत्र देकर पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा की सेवा में गायत्री तपोभूमि, मथुरा पहुँच गये। वर्ष 1971 में पूज्य आचार्य जी के साथ आप सपरिवार शांतिकुंज, हरिद्वार आ गये। श्री उपाध्याय जी का विवाह सन् 1959 में हुआ। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा देवी से आपको तीन संतानें पुत्र के रूप में प्राप्त हुई। आपके दो पुत्र श्री

अनिल उपाध्याय एवं श्री सुनील उपाध्याय सपरिवार शांतिकुंज में ही जीवनदानी कार्यकर्ता के रूप में निवास कर रहे है। छोटे पुत्र श्री सुशील उपाध्याय दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय में एकाउण्टेंट के पद पर कार्यरत है।

एक प्रखर व्यक्तित्व- श्री उपाध्याय जी के अन्दर बौद्धिक प्रखरता उत्कृष्ट स्तर की है। अटूट आत्मबल और दृढ़ निश्चय जैसे गुण उन्हें पैत्रिक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुए है। स्वविवेक से आपने स्वाबलम्बन की व्यवस्था की। श्री उपाध्याय जी की कार्यक्षमता को देखते-देखते शनैः शनैः पूज्य आचार्य शर्मा जी ने आपको जो भी गुरुतर उत्तरदायित्व सोंपे, आपने अपनी प्रखर सूझ-बूझ एवं कर्मठता से उनका निर्वहन किया और आज शांतिकुंज के सूत्र संचालकों में आपकी गणना की जाती है।

युग निर्माण मिशन से आपका जुड़ाव वर्ष 1954 में हुआ। उस समय वे झाँसी में इण्टरमीडिएट के छात्र थे वहाँ पहला सामूहिक गायत्री महायज्ञ हुआ। लक्ष्मी व्यायाम मंदिर, झाँसी में श्री बालकृष्ण अग्रवाल के आमंत्रण पर आपने उसमें भागीदारी की। इसके उपरान्त युग निर्माण मिशन से आपका सम्पर्क बढ़ता ही गया।

श्री उपाध्याय जी प्रारम्भ से आचार्य शर्मा जी के चिन्तन सूत्रों- श्रमशीलता, सत्यनिष्ठा, कर्तव्य परायणता तथा प्रतिभा संवर्द्धन व नियोजन से अत्यन्त प्रभावित हुए। 'श्रमशीलता' अर्थात श्रम देवता है, इसकी सतत् आराधना से जीवन धन्य हो जाता है। द्वितीय 'सत्यनिष्ठा' एवं 'कर्तव्य परायणता' अर्थात् अपने दायित्वों का पालन पूरी ईमानदारी के साथ करने पर व्यक्ति सभी जगह सम्मानित होता है। यही सर्वश्रेष्ठ जीवन नीति भी है। तृतीय 'प्रतिभा संवर्द्धन व नियोजन' अर्थात अपनी योग्यता को बढ़ाते हुए सत्कार्यो में नियोजित करना चाहिए। ये तीनों चिंतन सूत्र किसी भी व्यक्ति की सफलता की कुंजी है। परन्तु इन्हें व्यवहार की कसौटी पर कस कर ही सत्परिणाम देखे जा सकते है। श्री उपाध्याय जी इन तीनों ही चिंतन सूत्रों को गाँठ बाँधकर अपने जीवन पथ पर अग्रसर हो गए। श्री उपाध्याय जी कहते है» कि हमें पूज्य गुरुदेव (आचार्य शर्मा जी) व परम वन्दनीया माता जी की असीम अनुकम्पा मिली है। मुझ अदने से व्यक्ति का व्यक्तित्व उन्होने इतना प्रखर बना दिया कि मेरा जीवन धन्य हो गया। वे कहते है कि-"हमने भी श्रीराम के हनुमान की भूमिका सच्चे मन से निभाई है।"

श्रद्धेय उपाध्याय जी अपने कृतित्व के साथ-साथ वक्तृत्व में भी कभी पीछे नहीं रहे है। क्षेत्रीय सम्मेलनों में एवं शांतिकुंज में पूज्य आचार्य जी

का उन्हें विशेष सान्निध्य प्राप्त होता रहा। उन्हीं के शब्दों में-

"एकल निष्ठा का सूत्र है- 'एकला चलो रे'। समूहनिष्ठा का सूत्र वाक्य है-

'मिलकर चलो' 'संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनासि जाननाम।'

इन दोनों का अपना-अपना महत्व अपने-अपने स्थानों पर है। पूज्य आचार्य जी ने इस असमंजस से परिजनों को उबारने के लिए स्पष्ट मार्ग दर्शन दिया है। श्री उपाध्याय लिखते हैं-

"जहाँ युग ऋषि आचार्य शर्मा के विचारों और युगधर्म के स्वरूप को लोग समझे ही नही है, वहाँ यह प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए कि कोई साथ हो तो ही आगे बढ़ें, ऐसे में विवेक के निर्णय के अनुरूप सही दिशा में अकेले ही चल पड़ना अपना धर्म मान लेना उचित है। लेकिन जहाँ बड़ी संख्या में परिजन युग ऋषि आचार्य शर्मा जी के विचारों और युगधर्म को समझकर सक्रिय होने के लिए प्रयासरत हैं वहाँ मिलकर चलो, संघबद्ध होकर काम करो का ही सूत्र अपनाया जाना आवश्यक है। ऐसी स्थिति में एकला चलो का हवाला देना क्षुद्रता का परिचायक ही माना जाता है। ऐसा कहने वाले एक प्रकार से आत्म प्रवंचना करते है। संघबद्ध होने की अपनी कमी स्वीकार न कर पाने के या दूर न कर पाने के कारण ऋषि वाक्य को अपनी कमजोरियों का कवच बनाने का प्रयास करते है। क्षुद्रता का एक बडा घातक दुर्गुण यह है कि वह एकाकी श्रेय पाने के लिए आतुर रहती है और क्षुद्रता का एक दूसरा पक्ष यह भी है कि किसी प्रयास का संचालक-संयोजक बनने के लिए आतुरता पूर्वक लालायित होना है।"

काव्य साधना- श्री उपाध्याय अपनी रूचि के अनुसार कविताएं लिखने लगे थे। युग निर्माण मिशन से जुड़ने पर आचार्य शर्मा जी के मार्गदर्शन में सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप रचनाएं लिखना प्रारम्भ कर दी। जो लोकप्रिय होने लगी। इस श्रृंखला का इनका पहला गीत 'माँ तेरे चरणों में हम शीश झुकाते है,' पूरे भारत भर में लोकप्रिय हुआ। युग निर्माण मिशन के अतिरिक्त और किसी प्रयोजन से काव्य रचना आपने नहीं की। आपने जो भी लिखा पूज्य गुरूदेव (आचार्य श्रीराम शर्मा) के जीवन दर्शन के सूत्रों के संदर्भ में ही लिखा है। युग निर्माण सम्मेलनों एवं प्रज्ञा आयोजकों में शांतिकुंज, हरिद्वार की टोलियाँ मिशन के अन्य मूर्धान्य कवियों के साथ आपके रचे गीत भी गाती है। स्वयं अलग से किसी कवि सम्मेलन में भाग लेने की श्री उपाध्याय को अपनी सेवा साधना की व्यस्तता के कारण आवश्यकता ही नहीं पड़ी। युग निर्माण मिशन की टोलियों द्वारा प्रवचन मंच से कला मंच तक आपके गीतों का उपयोग

हुआ। युग निर्माण मिशन के ऑडियो-वीडियो कैसेट्स में भी आपके अनेक गीतों को अंकित कराया गया है। सीधे आकाशवाणी को आपने तो कोई गीत नहीं दिया किन्तु युग निर्माण मिशन के कैसेट्स एवं कलाकारों द्वारा उनका प्रसारण आकाशवाणी से भी होता रहता है।

श्री उपाध्याय ने सम्पादन लेखन के क्रम में विद्यार्थी जीवन में विद्यालय की पत्रिकाओं एवं स्मारिकाओं में किया। युग निर्माण मिशन की पत्रिकाओं में आचार्य शर्मा जी के निर्देशानुसार आप लेखन कार्य करते रहे। बाद में युग निर्माण मिशन की पाक्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा अभियान' के सम्पादन के दायित्व का निर्वाहन प्रारम्भ से अद्यतन आप ही करते चले आ रहे है। काव्य की धारा में कोई पुरुस्कार लौकिक संदर्भ में तो आपको नहीं मिला किन्तु जिनकी चेतना ने गीत लिखवाये, उन्ही ने स्वीकारे वन्दनीया माता भगवती देवी ने आपके रचे गीत खुद गाये, यही वह अपने लिए सबसे बडा पुरुस्कार मानते है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में सम्पन्न हुए आश्वमेधिक कार्यक्रमों में स्थानीय संयोजकों द्वारा आपको सम्मानित किया गया।

आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन के प्रभाव विषयक साक्ष्य -

श्री उपाध्याय का पूज्य आचार्य शर्मा जी से युग निर्माण मिशन के संदर्भ में व्यक्तिगत परामर्श का क्रम 1955-56 से ही चल पड़ा था। फरवरी 1967 के बाद से आपने सम्पूर्ण जीवन ही युग निर्माण मिशन के लिए समर्पित कर दिया एवं आचार्य शर्मा जी के महाप्रयाण तक उनके दैनिक जीवन का अंग ही बना रहा। काव्य सृजन के संदर्भ में आपको आचार्य जी से कोई पत्र व्यवहार की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। आवश्यकतानुसार काव्य सृजन के लिए उनका प्रत्यक्ष निर्देश एवं मार्ग दर्शन यदा कदा इन्हें प्राप्त होता रहा।

शिविरार्थी की दृष्टि से आपने गायत्री तपोभूमि, मथुरा में वर्ष 1964 से 66 तक ग्रीष्मकाल के एक-एक मासीय एवं नौ दिवसीय शिविरों में प्रतिभाग किया। सन् 1967 से अब तक तो मथुरा से लेकर शांतिकुंज, हरिद्वार में चलने वाले सभी प्रकार के शिविरों के संचालन में आपने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया और वर्तमान में भी कर रहे है।

साहित्यकारों और कलाकारों से सम्पर्क -

समय-समय पर पूज्य आचार्य शर्मा जी से भेंट परामर्श हेतु विशिष्ट व्यक्ति मथुरा एवं शांतिकुंज, हरिद्वार आते रहते थे। श्री उपाध्याय के पूज्य आचार्य शर्मा जी के अत्यन्त निकट होने के कारण आपका सम्पर्क भी उन महानुभावों से होता रहा जिनमें प्रमुख है- आर्य समाज के प्रमुख महात्मा

आनन्द स्वामी, काँची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती, पर्यावरण विद् श्री सुन्दर लाल बहुगुणा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के श्री शेषाद्रि जी, विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष श्री अशोक सिंघल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक स्व0 प्रो0 राजेन्द्र सिंह (रज्जू भइया), रामायण धारावाहिक के निर्माता निर्देशन रामानन्द सागर, गायत्री महिमा धारावाहिक की निर्मात्री श्रीमती मीना तिवारी व निर्देशक श्री धर्मेश तिवारी। साहित्यकारों से सम्पर्क के क्रम में युग निर्माण योजना के मूर्धन्य कवि- श्री शिवशंकर मिश्र, श्रीमती विद्यावती मिश्र, श्री बाबूलाल जैन 'जलज', डा0 त्रिलोकी नाथ 'ब्रजबाल', श्री बलराम सिंह परिहार, डा0 हरगोविन्द सिंह, डा0 रामस्वरूप खरे, श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र', श्री मंगल विजय, स्व0 माया वर्मा, श्री शचीन्द्र भटनागर, श्री गोपाल दास नीरज, डा0 जमना प्रसाद बड़ैरिया, डा0 आर.पी. कर्मयोगी आदि सभी से आपका सम्पर्क एवं पत्र व्यवहार का क्रम बना रहा। शांतिकुंज, हरिद्वार की 'कलाभारती' के गठन में भी आपका सत्प्रयास रहा।

प्रेरणा श्रोत कार्य :-

1. युगान्तर चेतना प्रेस शांतिकुंज, हरिद्वार में मुद्रित और युग चेतना ट्रस्ट शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा प्रकाशित पाक्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा अभियान' जो हिन्दी के साथ अन्य क्षेत्रीय-प्रान्तीय भाषाओं में भी प्रकाशित होती है और जिसकी सदस्य संख्या लाखों में है, का सम्पादन बड़ी कुशलता और प्रखरता से आप विगत पन्द्रह वर्षो से करते आ रहे हैं।
2. शांतिकुंज, हरिद्वार के तत्वाधान में देश भर में जो भी विराट आयोजन हुए है, उनके निर्धारण से लेकर संचालन तक सभी में आपकी भूमिका अनिर्वचनीय है।
3. युग निर्माण मिशन को पल्लवित और पुष्पित करने हेतु आप राष्ट्रव्यापी कार्यकर्ता सम्मेलनों में कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण एवं मार्ग दर्शन हेतु केन्द्रीय परामर्श मंडल शांतिकुंज, हरिद्वार के तत्वावधान में पहुँचते रहते हैं।

कृतित्व :-

"कवि युगस्रष्टा भी होता है और क्रान्तिदर्शी भी। वह एक ओर अपने युगीय परिवेश की अच्छाई-बुराई, समृद्धि-अभाव, संगति-विसंगति, समरसता-जटिलता आदि विविध रूपा सम्पूर्ण यथार्थ स्थिति को संवेदना के स्तर पर भोगता है तो दूसरी ओर वाह्य जीवन जगत से सम्बन्धित कौतूहल भरे प्रश्न भी उसके चेतना पटल पर नित्य उभरते रहते है। इसलिए उसका चिन्तन अभिव्यक्ति के धरातल पर दो धाराओं में प्रवाहित होने लगता है। एक धारा

देश, जाति और समाज का यथार्थ अथवा आदर्शरूप प्रस्तुत कर सामूहिक चेतना को सृजनोन्मुख बनाती है तथा दूसरी धारा वैयक्तिक भावभूमि पर प्रवाहित होती हुई सांसारिक सत्य का रहस्योद्घाटन करती है। किसी भी समर्थ साहित्यकार की रचना का आधार मूलरूप से ये ही दो भावभूमियाँ होती हैं जिन्हें क्रमश: युगबोध और दार्शनिक बोध की संज्ञा दी जा सकती है।" श्री उपाध्याय जी की काव्य रचना भी इसी प्रकार की भाव भूमि पर हुई है।

श्री उपाध्याय ने अब तक जीवन की विभिन्न मन:स्थतियों को अभिव्यक्त करने वाली आध्यात्मिक अनुभूति से परिपूर्ण शताधिक काव्य रचनाएं की है जिनमें से अधिकांश रचनाएं युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा एवं शांतिकुंज हरिद्वार प्रकाशित काव्य संकलनों में प्रकाशित भी हुई है। अलग से कोई अपना काव्य संकलन प्रकाशित कराने की आपने न कभी कामना की न इच्छा। युग निर्माण मिशन की पत्र-पत्रिकाओं-अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना में भी अपनी रचनाएं प्रकाशित होती रहीं। कविता ही नही, हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं की मर्मज्ञता आपकी अपनी विशिष्टता है। आप की साहित्य-साधना उच्चकोटि की है और पिछले पैतीस वर्षो से श्री उपाध्याय साहित्य-साधना में संलग्न हैं।

प्रकाशित रचनाएँ-

1. प्रज्ञा गीत में प्रकाशित रचनाएँ-

माँ! तेरे चरणों मे हम शीश झुकाते है। श्रद्धा पूरित होकर, दो अश्रु चढ़ाते है।।
झंकार करो ऐसी सदभाव उभर आयें। हे माँ! हे माँ! !
हुंकार भरो ऐसी, दुर्भाव उखड़ जायें।।
सन्मार्ग न छोड़ेगे, हम शपथ उठाते है। माँ तेरे चरणों में .....
यदि स्वार्थ हेतु मांगे, दुत्कार भले देना। अम्बे!अम्बे!!
जनहित हम याचक हैं, सुविचार हमें देना।।
सब राह चलें तेरी, तेरे जो कहाते है। माँ तेरे .....
वह हास हमें दो माँ, सारा जग मुस्काये। हे माँ! हे माँ!!
जीवन भर ज्योति जले, स्नेह न चुक पाये।।
अभिमान न हो उसका, जो कुछ कर पाते है। माँ तेरे चरणों में .....
विश्वास करो माता, हम पूत तुम्हारे है। अम्बे! अम्बे !!
बलिदान क्षेत्र के माँ, हम दूत तुम्हारे हैं।।
कुछ त्याग नही अपना, बस कर्ज चुकाते है। माँ तेरे चरणों में .....

("मातृ वन्दना" शीर्षक से)

2.मिले गुरु से अनुदान उदार, पिया जी भर कर माँ का प्यार।
कि जीवन भर, इस अहसान को, हम भुला न पायेंगे।
सहकर कष्ट अनेक देव ने, हममें किया सुधार।
धोए दोष प्रेम से माँ ने, सबको दिया दुलार।।
उठ रहे मन में यह उद्‌गार, रचेंगे नया देव परिवार।
कि इस भूपर, फिर से स्वर्ग धाम का गौरव लायेंगे। मिले गुरु से .....×××
पीड़ा पतन मिटा देने की, तुमने शपथ उठाई।
छूकर दर्द तुम्हारा, हमको राह तुम्हारी भायी।।
रचेंगे हम नूतन अभिमान, भले ही हो जावें बलिदान।
कि बलि होकर भी हम कर्ज तुम्हारा चुका न पायेंगे।। मिले गुरु से .....
("मिले गुरु से अनुदान उदार" शीर्षक से)

2. क्रान्तिगीत में प्रकाशित रचनाऐं -

क्रान्तिगीत (गीत संकलन) का मुद्रण युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा चतुर्थबार वर्ष 1997 में हुआ जिसका सम्पादन ब्रह्मवर्चस्य के नाम से किया गया। इसका प्रकाशन, शांतिकुंज हरिद्वार से किया। इस संकलन में श्री उपाध्याय के गीतों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। आपके प्रमुख गीतों के शीर्षक इस प्रकार है-

1. अश्वमेध पर्व है
2. बिगुल बज गया
3. जय महाकाल
4. युग ऋषि तुम्हें बुलाता है
5. भ्रम के भटकावे छोड़ो
6. सब महाकाल की जय बोलो
7. युग ऋषि तुम्हें बुलाता है
8. पिछले युग की बातें
9. लगा दो बाजी अपने जान की
10. आगे बढ़ो वीर बलिदानी
11. कार्य करेगी शक्ति तुम्हारी
12. माँ का संदेशा
13. सुनो कान खोलकर
14. बढ़ो सृजन सेनानी

प्रमुख गीतों के अंश अवलोकनीय है-

1. अश्वमेघ की ध्वजा उठाकर-बढ़ो सृजन सेनानी।
भारत माँ के गौरव की-फिर रचा दो नई कहानी।।
भूमि का कर्ज चुकाने चलो, नया सौभाग्य जगाने चलो।
दिग्विजय का आया है पर्व, उठो सब अवसर मत चूको।।× × ×
महाकाल ने महाक्रान्ति की है आवाज लगाई।
हमने उसको सफल बनाने की है शपथ उठाई।।
बिगुल बजाकर गाँव-गाँव, घर-घर इसको पहुँचाओ।

ले लो श्रेय, देव बन जाओ, अब न तनिक सकुचाओ।।

वसुन्धरा पर गूँज उठे प्रज्ञावतार की वाणी। भारत माँ के गौरव की ...

("बढ़ो सृजन सेनानी" शीर्षक से)

2. अश्वमेघ पर्व है, यजन करो यजन करो।

यज्ञ योग्य भाव-बुद्धि-कर्म का सृजन करो।।

विश्व का भविष्य हीनअंधकारग्रस्त देख, बुद्धि को विवेकशून्य और अस्त-व्यस्त देख।।

युग ऋषि ने अश्वमेध काविधान रच दिया, सूक्ष्म जगत पुनः दिव्य मेघा से भर दिया,

मेघा से दिव्य प्रखर बुद्धि उन्नयन करो।

कामना पवित्र नयी दृष्टि का सृजन करो। अश्वमेध पर्व है.....×××

मानव की बुद्धि हीन विद्या में व्यस्त है, रचती रहती कुचक्र लोभ- मोह ग्रस्त है।

ज्ञानयज्ञ हेतु बुद्धि फिर से तैयार हो, जीवन में सद्विवेक का फिर संचार हो।।

छोड़कर कुबुद्धि दिव्यभाव का वरण करो, सद्विचारयुक्त श्रेष्ठ कर्म का सृजन करो।

("अश्वमेध पर्व है" शीर्षक से)

3. बिगुल बज गया महाक्रान्ति का वीरों शौर्य दिखाना है।

असमंजस में समय गंवाकर, कायर नहीं कहाना है। वीरो शौर्य दिखाना है....

जाने कितने शुभ कर्मों ने, यह सुयोग दिलवाया है।

महाकाल से कदम मिला, चलने का अवसर आया है।।

हम सच्चे साथी है प्रभु के, यह विश्वास बढ़ाना है। असमंजस में ....वीरो शौर्य....

("बिगुल बज गया" शीर्षक से)

4. जय महाकाल जय महाकाल जय महाकाल जय महाकाल

जो पाप ताप का हरता है, जो युग परिवर्तन करता है।

माँ आदिशक्ति को साथ लिये, जो बदल रहा है सृष्टि चाल।। जय महाकाल....

जिसने श्रोतों को जगा दिया, जागों को जिसने चला दिया।

चलतों को जिसने दौड़ाया, निष्ठा को दी प्रेरक उछाल।। जय महाकाल..×××

छल द्वेष दम्भ का हनन करो, सद्भावों का शुरू सृजन करो।

प्रज्ञा प्रकाश जग में भरदो-उज्जवल भविष्य की ले मशाल।। जय महाकाल.....

("जय महाकाल" शीर्षक से)

5. असुर तत्व हावी है सब पर कैसे तुम्हें सुहाता है।

वीर भूमि की ओ संतानो! युग ऋषि तुम्हें बुलाता है।। × × ×

आज अरक्षित है जन-जन क्यों, वीर जनों की छाया में।

ज्ञानवान के रहते क्यों सब, भटक रहे है माया में।।

अपने पुत्रों की दुर्गति पर, माँ को रोना आता है। वीर भूमि की ओ संतानो.....

धनवानों का धन शोषण में, या व्यसनों में भटका है।
लोकसेवियों का दल देखो, निपट स्वार्थ में अटका है।।
जन-जन शंका में डूबा, विश्वास सिमटता जाता है। वीर भूमि की ओ संतानों....
("युग ऋषि तुम्हें बुलाता है" शीर्षक से)

6. लुटा रहा युग पुरूष सिद्धियाँ चाहे झोली भर लो-
भ्रम के भटकावे छोड़ो, कुछ काम प्रभु का कर लो रे।।
सुनो सुनो युग दूत बुलाता, मत उसको झुठलाओ।
भीतर से सद्भाव जगाता, उस पर ध्यान लगाओ।।
अलग-अलग मत भटको भाई, मिलकर कदम बढ़ाओ।
युग विचार, युग ऋषि के लेकर, जन-जन तक पहुँचाओ।।
अवसर अनमोल पकड़ लो रे,अपना प्रयास तो कर ले रे।थोड़ी हिम्मत तो कर लो रे।
जप-तप का बस नाम करो ना, सुनते हो कुछ काम करो ना।
मन की मनमानी छोड़ो, प्रज्ञा की राह पकड़ लो रे।। लुटा रहा युग पुरुष .....
मत डरना यदि असुर शक्तियां दिखें भयानक भारी।
युग के एक थपेड़े, से ढह जाते अत्याचारी।
समय-समय पर युगदूतों ने, बिगड़ी बात सँवारी।
प्रज्ञापुत्रों! आगे आओ, आज तुम्हारी बारी।
मन को छोटा मत होने दो, साहस मत ओछा होने दो, प्रभु की मर्जी भी होने दो।
प्रभु की लीला याद करो रे, गिद्ध-ग्वाल-सा शौर्य भरो रे।
कल की कायरता छोड़ो वासन्ती चोला रंग लो रे। लुटा रहा युग पुरुष .....
("भ्रम के भटकावे छोड़ो" शीर्षक से)

7. पिछले युग की बातें- हो गई बहुत पुरानी ।
हम सबको करनी है फिर से, सतयुग की अगवानी।
नये सृजन की प्रबल तंरगें, हमको आज जगानी।। हम युग निर्माणी.....
सता रही दुर्बुद्धि साथ अब उसका छोड़ो, राह रोकने खड़ी रूढ़ियाँ, उनको तोड़ो।
लोभ-मोह मेरूक जानेकासमय नही है, भय या दुख से झुक जाने का समय नही है।
महाकाल के संग चलने की हमने मन में ठानी। हम युग निर्माणी.....
अब दुर्बुद्धि मनों में हम पलने ना देंगे, दुर्भावों की कुटिल चाल चलने ना देंगे।
परिष्कार मन का सबको अब कर लेना है और हृदय मे दिव्य भावना भर लेना है।।
मानव में देवों जैसी है पावन ज्योति जगानी। हम युग निर्माणी .....
("पिछले युग की बातें" शीर्षक से)

8. सृजन सैनिको! बढ़ो लगा दो-बाजी अपने जान की।

महाकाल अब बढ़ा रहा है, गति अपने अभियान की।।
भटक गयी है बुद्धि मनुज की- उसे ठिकाने लाना है।
लकवे से अब मानवता को- जल्दी मुक्त कराना है।।
दुर्गति से उबार लें जग को - सद्गति हो इंसान की। महाकाल अब ....
धन उलझा है व्यसन और शोषण में उसको रोक दें।।
स्वार्थ बुद्धि को अहंकार को- चलो अग्नि में झोंक दें।
जन-जन के मन में फिर जागे-ज्योति प्रखर सद्ज्ञान की। महाकाल अब .....
प्रतिभायें रचती कुचक्र है- उनका मार्ग बदलना है।
कदम मिलाकर महाकाल के साथ-साथ अब चलना है।।
निष्ठा पूर्वक चले प्रक्रिया जन-जन के उत्थान की। महाकाल अब.....

("लगा दो बाजी अपने ज्ञान की" शीर्षक से)

9. माँग रही है देव संस्कृति- निष्ठावानों से कुर्बानी।
देवभूमि की शपथ उठाकर- आगे बढ़ो वीर बलिदानी।।
शीश चढ़ाकर कभी सपूतों ने माटी का कर्ज चुकाया।
भेंट चढ़ा निज पति-पुत्रों को महिलाओं ने फर्ज निभाया।।
आज माँगता महाकाल बस- समय तनिक सा प्रतिभाओं से।
स्वार्थ घटा, परमार्थ साधना को जोड़ें, निज क्षमताओं से।।
समय और श्रम से रचनी है नये सृजन की नई कहानी। देव भूमि की शपथ .....
वीर भूमि की संतानो! तुम कायर मत बन पीठ दिखाना।
रत्नप्रसूता माताओ! तुम अरे कोख को नहीं लजाना।।
परिवारों से एक व्यक्ति यदि सृजनवीर बन आ जायेगा।
तो अपना गौरव इस जग में प्राण-प्रतिष्ठा पा जायेगा।।
भय मत करना साथ हमारे है रक्षक युग ऋषि वरदानी। देवभूमि की शपथ..

("आगे बढ़ो! वीर बलिदानी" शीर्षक से)

10. माँ की ममता पीकर, गुरुवर! हमने कर ली है तैयारी।
महाक्रान्ति हित हम जूझेंगे, कार्य करेगी शक्ति तुम्हारी।। × × ×
पुत्र तुम्हारे हैं इस नाते, प्यार-अनुग्रह जी भर पाया।
लेकिन मन अब तड़प रहा है, दर्द आपका नहीं बँटाया।।
तुम तो अपना काम कर गये, आयी आज हमारी बारी। महाक्रान्ति हित .....

("कार्य करेगी शक्ति तुम्हारी" शीर्षक से)

11. विमल भावना भर भाषा में- संदेशा भेजा माँ ने।
हर सपूत तक पहुँचाना है- वह माने या ना माने।।

दूर देश जाकर तुम सब क्यों- अपनी गरिमा भूल गये।
योगी की क्षमता है तुममें, क्यों भोगों में भूल गये।।
बह अपना निर्वाह कर लिया- पशु से ज्यादा क्या पाया ?
देवभूमि के देवदूत तुम- यह क्यों याद नहीं आया।।
अब तो अपनी गरिमा के अनुरूप बुनो ताने-बाने। हर सपूत तक .....
आज कसौटी पर मानव को परख रही है मानवता।
मानव में कितनी मानवता निरख रही है ऋषि सत्ता।।
मानवता का मान बढ़ाना देखें किसको आता है ?
कौन दिखाता प्यार ऊपरी किसका सच्चा नाता है ?
सबकी कठिन परीक्षा होगी, अब जाने या अनजाने। हर सपूत तक .....

("माँ का संदेशा-प्रवासी भारतीयों के प्रति" शीर्षक से)

12. सुनो कान खोलकर, महाकाल की पुकार।
आमंत्रण स्वीकारो, ओ सपूत होनहार।।
और आज जीवन को ऐसा कुछ मोड दो, ऋषियों की धारा में अपने को जोड़ दो।।
चाह स्वर्ग प्राप्ति की पूर्ण क्यों हुई नही? कामना बनी रही, साधना हुई नही।।
स्वर्ग प्राप्ति की सुनो, राह कुछ कठिन नही, मनुज बने देवता, स्वर्ग आयेगा यही।।
युग का जो झकझोरे, शक्ति हमें चाहिए, पवनपुत्र की तरह भक्ति हमें चाहिए।।
साधक निजनिष्ठा कीपूंजी को तोल लो, अवसर है युगऋषि की पीड़ा को मोल लो।।
जन-जन की आस को नूतन विश्वास दो, मुरझाये चेहरों को, फिर नवीन हास दो।।
थकते हर प्राण पर, अमृत निचोड़ दो। ऋषियों की धारा में .....

("सुनो कान खोलकर" शीर्षक से)

13. अब समय नहीं है सोने का- अन्दर के शक्ति-स्रोत खोलो।
इस युग की चाल बदल डालो- सब महाकाल की जय बोलो।। × × ×
जब अनाचार बढ़ जाता है, पीड़ित धरती अकुलाती है।
तब पीड़ा पतन मिटाने को, अवतार चेतना आती है।।
जिसने उसको पहचाना है, पाया अनमोल खजाना है।
अपने मन की आँखे खोलो- सब महाकाल की .....

("सब महाकाल की जय बोलो" शीर्षक से)

युग गायन में प्रकाशित रचनाएं

युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा से प्रकाशित

'युग गायन' का सम्पादन ब्रह्मवर्चस द्वारा वर्ष 2002 में किया गया जिसमें श्री उपाध्याय जी की प्रकाशित रचनाएं अवलोकनीय है-

1. कर रहे भाव पूजन तुम्हारा मातु स्वीकार लो धन्य कर दो।
मन-वचन-कर्म से हो समर्पण भावना तीव्र अन्तर में भर दो।।
प्रीति पावन कहीं खो गयी है, भाव संवेदना सो गयी है।
स्नेह बन हों प्रवाहित जगत में, प्रेरणा आज यह हो रही है।।
अर्घ्य बनकर चरण पर पड़े, हम पुण्य रसधार का ज्वार भर दो।मन-वचन-कर्म से...
बढ़ गया द्वेष सद्भाव है कम, आज इंसान की आँख है नम।
द्वेष दुर्गन्ध को दूर करने, बन सरस गंध जग में धुले हम।
शुभ्रचन्दन बनें हों समर्पित, कामना साधना दिव्य कर दो। मन-वचन-कर्म .....×××
स्वार्थ संकीर्णता की लहर है, लिप्त उसमें मनुज हर प्रहर है,
पुण्य परमार्थ बन दूर कर दें, आज घर-घर घुला जो जहर है।
शुद्ध नैवेद्य बनकर बँटे हम, माँ हृदय में विमल का भर दो।। मन-वचन-कर्म .....

('समर्पण' शीर्षक से)

2. ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ, सत् ॐ चित् ॐ आनन्द ॐ।
प्रभु के नाम रूप अगणित है, वह तो घट-घट में स्थित है।।
प्रभु का बोध कराये ॐ सत् ॐ चित् ॐ आनन्द ॐ।।
प्रभु से डरे सो निर्मल होए, सब सुख लहै दीनता खोए ।।
मर विश्वास पुकारो ॐ। सत् ॐ
उसके घर है सबके जाना, सबका अन्तिम वही ठिकाना।।
अक्षर ब्रह्म सनातन ॐ। सत ॐ चित ॐ

("सच्चिदानन्द ॐ" शीर्षक से)

3. जय जय अम्बे जय जगदम्बे
आदि शक्ति युगशक्ति रूप ले, नवल सृजन कर दो अम्बे।। जय अम्बे.....×××
विकृत है चरित्र-इच्छाएं, कैसे मानव सद्गति पाएं ?
इच्छाएं देवो- सी कर दो, सदाचार का साहस भर दो।।
देव जननि हो तुम हे अम्बे। जय जय अम्बे .....×××
असुर वृतियाँ प्रखर हुई है, देव शक्तियाँ बिखर गई हैं।
करो पराजित अब असुरों को, करो संगठित पुनः सुरों को।।
दुर्गा बन विचरो अम्बे। जय अम्बे .....

("जय जय अम्बे जय जगदम्बे" शीर्षक से)

4. माँ दो वह व्यक्तित्व उभार, पाएं तेरा निश्छल प्यार।
बिगड़ी क्यों भारत की शान ? साधु रह गए वेश प्रधान।।
संत बनें सब गुणी सुजान, वेश नहीं गुण कर्म प्रधान ।

सद्भावों का हो संचार। पाएं तेरा .....× × ×

मिलता उसको ही प्रभु प्यार, जो करता है आत्मसुधार ।

ईश्वर को सत्कार्य पसन्द, नहीं चापलूसी छल-छंद।।

निश्छल सेवक बनें उदार। पाएं तेरा.....

("पाएं तेरा निश्छल प्यार" शीर्षक से)

5. नटवर नागर नंदा, भजो रे मन गोविन्दा।

करो नाम जप रोज प्रेम से, मनको धोओ नित्य नेम से।

निर्मल मन प्रभु को पसन्द है, मत कर मन को गंदा। भजो रे मन .....

भटके बहुत नहीं कुछ पाया, सत्य मार्ग तो समझ न आया।

अब तो मत ठोकर खा पगले, बन जा प्रभु का बंदा । भजो रे मन .....× × ×

सद्विवेक अब तो अपना लें, कुछ तो सत्कर्तव्य निभालें।

भवबन्धन का-लोभ-मोह का, कट जाएगा फंदा। भजो रे मन .....

("भजो रे मन गोविन्दा" शीर्षक से संकर्तन)

6. प्रेम से जप लो प्रभु का नाम, लगन से करो उसी का काम।

बोलो राम सीताराम, बोलो! श्याम राधेश्याम ।।

निज सुख औरों तक पहुंचाएं, सदा पराई पीर घटाएं।

ऐसे नर भूदेव कहाते, स्वर्ग इसी जीवन में पाते।।

अपनाते यह नियम वही नर, होते पूरन काम । बोलें राम .....

जन-जन में विवेक उमगाएं, घर-घर जाकर अलख जगाएं।

जग में जीवन ज्योति जलाएं, धन्य बनें और धन्य बनाएं।।

लगन लगे ऐसी इस पथ पर, बढ़े चलें अभिराम। बोलो राम .....

("प्रेम से जप लो प्रभु का नाम" शीर्षक से संकीर्तन)

7. प्रभु के सुन्दर है सब नाम, सारा जग है उसका धाम।

जपलो राम राम राम, भज लो श्याम श्याम श्याम ।।

अहुरमज्द वह, वही राम है, वही परम प्रभु वही श्याम है।

वही रुद्र है-खुदा वही है, वही बुद्ध धनश्याम। जप लो .....

कोई नाम रूप अपना लो पर उसका अनुशासन पालो।

राम रहीम पुकारो कुछ भी, करो नहीं बदनाम। जप लो .....

उसने सुन्दर बाग सजाया, मानव को माली ठहराया।

सब मानव उसके बेटे है, करें उसी का काम। जप लो .....

वह है स्वयं प्रेम का सागर, क्या पाओगे द्वेष बढ़ाकर ?

चाहे सिजदा करो उसे तुम चाहे करो प्रणाम। जप लो.....

("प्रभु के सुन्दर हैं सब नाम" शीर्षक से)

8. रुची तुम्हारी राह हमें तो हे माता, जगी तुम्हारी चाह नहीं अब कुछ भाता।
सब के हित में अपना हित है, स्वार्थी की दुर्गति निश्चित है।
पेट भरें परमार्थ न भूलें, स्वर्ण बने यदि लोहा छू लें।।
ऐसी दो सामर्थ्य हमें अब हे माता। जगी तुम्हारी चाह .....× × ×
बहुत सरल उपदेश सुनाना, किन्तु कठिन करके दिखलाना।
दूरदर्शिता को अपनाएं, मर्यादा कर्तव्य निभाएं।।
शुभ आचार-विचार, हमें दो हे माता। जगी तुम्हारी चाह .....

("जगी तुम्हारी चाह" शीर्षक से संकीर्तन)

9. सर्वश्रेष्ठ यह मानव जीवन, बने परम पद का यह साधन।
प्रभु को देखे घट-घट वासी, वह सेवक कैसे हो पापी ?
यही दृष्टि दो हे अम्बे ! जय अम्बे जय जगदम्बे .....
जो अनीति करते वो रोते, वही काटते जैसा बोते ।
ममता शुचिता समता लाएं, इस जीवन को धन्य बनाएं।।
यही भावना दो अम्बे ! जय अम्बे जय जगदम्बे ....
शान्तिदायिनी, शक्तिदायिनी, भक्तिदायिनी हे अम्बे। जय अम्बे .....

("जय अम्बे जय जगदम्बे" शीर्षक से संकीर्तन)

10. आद्यशक्ति युगशक्ति महान, दो हम सबको यह वरदान।
मानव-मानव एकसमान, एक पिता की सब सन्तान।
जातिवंश सब एक समान, नर और नारी एक समान।।
भेद मिटे छूटे अज्ञान। दो हम सबको .....
माता ही यदि हो अज्ञान, बच्चे कैसे बने महान ?
नारी पाएं शुभ सम्मान, हो संस्कृति का फिर उत्थान।।
बढ़े देवसंस्कृति की शान। दो हम सबको ....

("दो हम सबको यह वरदान" शीर्षक से संकीर्तन)

11. हे गुणधाम, हे सुखधाम, हे घनश्याम राजाराम। सीताराम.....राधेश्याम.....
हमें घेरे असुर भारी, दुखी हैं उनसे नर-नारी।
अनास्था बन चुके मन में, बसे आलस्य बन तन में।।
दुष्टता इनकी हो नाकाम। हे घनश्याम राजाराम। सीताराम.....राधेश्याम.....
मनों में स्वार्थ का डेरा, पड़ा अज्ञान का घेरा।
इसी में श्रम खपा जाता, समय सारा चुका जाता।
कर सकें कुछ तो प्रभु के काम, हे घनश्याम राजाराम। सीताराम ..... राधेश्याम....

सुन सकें युग की करूण पुकार, रहा युग पुरुष हमें ललकार।
निभाएं हम भी तो युगधर्म, समझ लें जीवन का यह मर्म ।।
जीत लें जीवन का संग्राम, हे घनशयम राजाराम। सीताराम..... राधेश्याम.....

("हे गुणधाम, हे सुखधाम" शीर्षक से)

12. कर लो माँ स्वीकार हमारे पूजन को, बाँटें विमल प्रसाद तुम्हारा जन जन को।
खूब सताया काम-कोध ने, लोभ-मोह ने दम्भ-द्रोह ने।
लूट लिए जीवन के मोती, क्यों लुटते सुबुद्धि यदि होती।।
अब सुन लो माँ करूण हमारे क्रन्दन को। कर लो माँ स्वीकार.....×××
जो साधन जगहित लग जाएं, वे ही शुभ्र नैवेद्य कहाएं।
प्राणों में लौ जगे तुम्हारी, यही आरती बने हमारी।।
कर दो माँ यों सफल हमारे जीवन को। करलो माँ स्वीकार.....

("कर लो माँ स्वीकार" शीर्षक से संकीर्तन)

13. नमो वेदमाता, नमो देवमाता, नमो आदि प्रज्ञा नमों विश्वमाता।
हर श्वांस में माँ तुमको पुकारूं, हर जीव में माँ तुमको निहारूं।।
जीवन बिता दूं यही मंत्र गाता। नमो वेद माता.....
ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ, जागूँ स्वयं और को भी जगायूँ ।
घर घर फिरूँ ज्योति तेरी जगाता। नमो वेदमाता.....
वह योग्यता दो सत्कार्य कर लें, अपने हृदय में सद्भाव भर लें।
मानस रहे ज्ञान से जगमगाता। नमो वेदमाता .....

("नमो अदि प्रज्ञा नमो विश्वमाता" शीर्षक से संकीर्तन)

14. वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता को नमन।।
आस्थाएं खो गई, अज्ञान से लाचार है, ज्योति पाने को नई आए तुम्हारे द्वार है।
ज्ञान दो सद्भाव दो सत्कर्म का दो आचरण। वेद माता .....
चाहते तो है बहुत पर मनोबल से दीन है सध नही संकल्प पाने, साधना से हीन है।
प्रेरणा दो शक्ति दो माँ, श्रेष्ठ कुछ कर लें यतन। वेद माता .....
आज पीड़ाग्रस्त है यहविश्व सुन्दर आपका, बन गयामानव स्वयंकारण पतन संताप का।
हो तुम्हीं युगशक्ति अम्बे, रोक दो पीड़ा पतन। वेदमाता.....

("विश्वमाता को नमन" शीर्षक से संकीर्तन)

15. जय जय आद्यशक्ति जय शंकर, जय श्रद्धा विश्वास पूज्यवर।
अब शिव तांडव की है बारी, करें लोकहित यह तैयारी।
आद्यशक्ति युग शक्ति प्रकट हों, दूर विश्व के सब संकट हों।
हो अवतरण तुम्हारा घर-घर। जय आद्यशक्ति....×××

शिवविचार, शिवकर्म-भावना, शिव हों सब संकलप कामना।
शिवमय सभी वर्ग जुट जाएं, बनें एक युगशक्ति कहाएं।।
विश्व बने फिर सद्-शिव-सुन्दर। जय जय आद्य शक्ति .....

("जय आद्यशक्ति जय शंकर" शीर्षक से संकीर्तन)

पद्यानुवाद

आचार्य शर्मा जी की प्रेरणा से श्री उपाध्याय जी ने लोकहितार्थ गायत्री स्तवन, महाकाल स्तवन, श्री मद्प्रज्ञापुराण के कुछ अंशों के, शिव संकल्पोनिषद आदि के पद्यानुवाद भी किये। उनके द्वारा किये गये पद्यानुवाद अवलोकनीय हैं। ये अनुवाद जो सम्पूर्ण भारतवर्ष तथा प्रवासी भारतीयों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय है-

1. गायत्री स्तवन का पद्यानुवाद-

यनमण्डलं दीप्तिकरं विशालं, रत्नप्रभं तीव्रमनादि रूपम्।
दारिद्रय-दुःख क्षय कारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं।।

शुभ ज्योति के पुंज, अनादि, अनुपम,। ब्रह्माण्ड व्यापी आलोक कर्ता।
दारिद्रय,दुःख भय से मुक्त कर दो। पावन बना दो हे देव सविता।। 1।।

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितम्, विप्रैः स्तुतं मानव मुक्ति कोविदम्।
तं देव देवं प्राणयामि भर्ग, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं ।।

ऋषि देवताओं से नित्य पूजित। हे भर्ग! भव बंधन- मुक्ति कर्ता।
स्वीकार हर लो वंदन हमारा। पावन बना दो हे देव सविता।। 2।।

यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं, त्रैलोक्य पूज्यं त्रिगुणात्म रूपम्।
समस्त-तेजोमय-दिव्यरूपं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं।।

हे ज्ञान के घन, त्रैलोक्य पूजित, पावन गुणों के विस्तार कर्ता।
समस्त प्रतिभा के आदि कारण, पावन बना दो हे देव सविता ।।3।।

यनमण्डलं गूढ़मति प्रबोधं, धर्मस्य वृद्धिं कुरूते जनानाम्।
यत्सर्वपापक्षय कारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं।।

हे गूढ़ अन्तःकरण में विराजित, तुम दोष पापादि संहार कर्ता।
शुभ धर्म का बोध हमको करा दो, पावन बना दो हे देव सविता।।4।।

यन्मण्डलं व्याधि विनाश दक्षं, यदृग-यजुः-सामसु सम्प्रगीतम्।
प्रकाशितं ये न च भूर्भुवः स्वः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं ।।

हे व्याधिनाशक, हे पुष्टिदाता, ऋग साम यजु वेद संचार कर्ता।
हे भूर्भवः स्वः में स्वप्रकाशित। पावन बना दो हे देव सविता।।5।।

यन्मण्डलं वेद विदो वदन्ति, गायन्ति यच्चारण सिद्धसंघा।

यद्योगिनो योग जुषां च संघा, प्रनातु मां तत्सवितुर्वरिण्य।।

सब वेद विद् चारण सिद्ध योगी, जिसके सदा से हैं गान कर्ता।

हे सिद्ध संतों के लक्ष्य शाश्वत, पावन बना दो हे देव सविता।।6।।

यन्मण्डलं सर्व जनेषु पूजितं, ज्योतिश्च कुर्मादिह मर्त्यलोके।

यत्काल-कलादि मनादि रूपम, पुनातु मां तत्सवितुर्वरिण्य।।

हे विश्वमानव से आदि पूजित। नश्वर जगत् में शुभ ज्योति कर्ता।

हे काल के काल-अनादि ईश्वर। पावन बनो दो हे देव सविता।।7।।

यन्मण्डलं विष्णु चतुर्मुखास्यं, यदक्षरं पाप हरं जनानाम्।

यत्काल कल्पक्षय कारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरिण्य ।।

हे विष्णु ब्रह्मादि द्वारा प्रचारित, हे भक्त पालक, हे पापहर्ता।

हे काल-कल्पादि के आदि स्वामी, पावन बना दो हे देव सविता।।8।।

यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धं, उत्पत्ति-रक्षा-प्रलय प्रगल्भम्।

यस्मिन् जगत् संहरतेऽखिलं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरिण्य ।।

हे विश्व मण्डल के आदि कारण, उत्पत्ति-पालन-संहारकर्ता।

होता तुम्हीं में लय यह जगत सब, पावन बना दो हे देव सविता।।9।।

यनमण्डलं, सर्वगतस्य विष्णोः, आत्म परंधाम-विशुद्धतत्वम्।

सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगन्यं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरिण्य।।

हे सर्वव्यापी प्रेरक नियन्ता, विशुद्ध आत्मा, कल्याणकर्ता।

शुभ योगपथ पर हमको चलाओ। पावन बना दो हे देव सविता।।10।।

यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति, गायन्ति यच्चारण-सिद्ध संघाः।

यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति, पुनातु मां तत्सवितुर्वरिण्य।।

हे ब्रहमनिष्ठों से आदि पूजित, वेदज्ञ जिसके गुणगान कर्ता।

सद्भावना हम सब में जगा दो, पावन बना दो हे देव सविता।।11।।

यन्मण्डलं वेद-विदोपगीतं, यद्योगिनां योगपथानुगम्यम्।

ततसर्ववेदं प्रणमामि दिव्यं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरिण्य।।

हे योगियों के शुभ मार्गदार्शक, सद्ज्ञान के आदि संचारकर्ता।

प्रणिपात स्वीकार लो हम सभी का। पावन बना दो हे देव सविता।।12।।

(कर्मकाण्ड भास्कर में प्रकाशित)

2. महाकाल स्तवन का पद्यानुवाद-

असम्भवं सम्भव-कर्तुमुद्यतं, प्रचण्ड-झंझावृतिरोध सक्षमम्।

युगस्य निर्माण कृते समुद्यतं, परं महाकाल ममुं नमाम्यहम्।।

असम्भव पराक्रम के हेतु तत्पर, विध्वंस का जो करता दलन है।

नवयुग सृजन पुण्य संकल्प जिसका, ऐसे महाकाल को नित नमन है।।1।।

यदा धरा या मशान्ति:प्रवृद्धा, तदा च तस्यां शान्तिं प्रवधितुम्।
विनिर्मितं शान्तिकुंजाख्य-तीर्थकं, परं महाकालममुं नमाम्यहम्।।

भू पर भरी भ्रान्ति की आग के बीच, जो शक्ति के तत्व करता चयन है।
विकसित किए शान्तिकुंजादि युगतीर्थ, ऐसे महाकाल को नित नमन है।।2।।

अनाद्यनन्तं परमं महीसं, विभोस्वरूपं परिचाय यन्मुहु:।
युगानुरूपं च पथं व्यदर्शयत्, परं महाकालममुं नयाम्महम्।।

अनादि, अनुपम, अनश्वर, अगोचरा, जिनका सभी भाँति अनुभव कठिन है।
युगशक्ति का बोध सबको कराया, ऐसे महाकाल को नित नमन है।।3।।

उपेक्षिता यज्ञ महादिका: क्रिया:, विलुप्तप्राय खलु सान्ध्य माह्निकम्।
समुद्धृतं येन जगद्धिताय वै, परं महाकालममुं नमाम्यहम्।।

विस्तृत उपेक्षित पड़ी साधना का, जिनने किया जागरण उन्नयन है।
घर-घर प्रतिष्ठित हुई वेदमाता, ऐसे महाकाल को नित नमन है।।4।।

तिरस्कृतं विस्मृत मप्युपेक्षितं, आरोग्यवाहं यजनं प्रचारितुम्।
कलौकृतं यो रचितुं समुद्यत: परं महाकालममुं नमाम्यहम्।।

यज्ञीय विज्ञान, यज्ञीय जीवन, जो सृष्टि पोषक दिव्याचरण है।
उसको उबारा प्रतिष्ठित बनाया, ऐसे महाकाल का नित नमन है।।5।।

तप: कृतं येन जगद्धिताय, विभीषिकायाश्च जगन्नुरक्षितुम्।
समुज्जवला यस्य भविष्य-घोषणा, परं महाकाल ममुं नमाम्यहम्।।

मनुष्यता के दुख दूर करने, तपकर कमाया परम पुण्य धन है
उज्जवल भविष्यत् की घोषणा की, ऐसे महाकाल को नित नमन है।।6।।

मृदुहृयुदारं हृदयं न यस्य यत्, तथैव तीक्ष्णं गहनं च चिन्तनम्।
ऋषेश्चरित्रं परमं पवित्रकं, परं महाकालममुं नमाम्यहमं।।

अनीति भंजक शुभ कोप जिनका, शुभ ज्ञान युक्त श्रेष्ठ चिन्तन गहन है।
ऋषिकल्प जीवन जिनका परिष्कृत, ऐसे महाकाल को नित नमन है।।7।।

जनेषु देवत्व वृतिं प्रवर्धितुं, वियद् धरायाञ्च विधातुम क्षयम्।
युगस्य निर्माण कृता च योजना, परं महाकालममुं नमाम्यहम्।।

देवत्व मानव-मन में जगाकर, संकल्प भू पर अमर पुर सृजन है।
युग की सृजन योजना के प्रणेता, ऐसे महाकाल को नित नमन।।8।।

य: पठेच्चिन्त येच्चापि, महाकाल स्वरूपकम्।
लभेत परमां प्रीतिं, महाकाल कृपा दृशा ।।

महाकाल की प्रेरणा, श्रद्धायुत चित लाय।

नर पावे सद्गति परम, त्रिविध ताप मिट जाय।।9।।

(देवदूत आया हम पहचान न सके 'स्मारिका' में प्रकाशित)

युगदेव-स्तवनम् (युग पुरुष वंदना) का पद्यानुवाद अवलोकनीय है-

कर साधना जिसकी रची यह सृष्टि विधि ने ज्ञात है।
जो वेदमाता देवमाता विश्व में विख्यात है।।
जिससे त्रिदेव त्रिलोक तीनों गुण प्रकाशित हो रहे।
तीनों चरण पावन त्रिवेणी सदृश कल्मष धो रहे।।
जिसका वरण करते शिखा अरु सूत्र रूपों में सभी।
कल्याण करती कल्पतरु पारस अमृत की भांति ही।।
चौबीस अक्षर युक्त आद्याशक्ति गायत्री प्रवर।
चौबीस ऋषि, अवतार देवों आदि की है सूत्रधर।।
कलि के प्रपंचों में उपेक्षित तिरस्कृत थी हो गयी।
जिसके प्रयासों से पुन: वह माँ प्रतिष्ठा पा गयी।।
उस महाप्रज्ञावान को युग पुरुष जो हैं ज्ञानघन।
युग साधकों का देवसंस्कृति सहित, नित शत-शत नमन।।
रवि रूप तपता यज्ञ जो पर्जन्य का शुभ स्रोत है।
देवत्व का आधार जिसमें प्राण ओतप्रोत है।।
पलते प्रखर होते उसी की गोद में सब देवगण।
होते उसी से प्रकट करते हैं उसी में समर्पण।।
ओजस् विमल तेजस् प्रखर, वर्चस् महत् के तत्व चित्।
भंडार में जिसके भरे सब ऋद्धि सिद्ध्यादिक सहित।।
कलि कलुष से विकृत उपेक्षित तिरस्कृत था वह हुआ।
उस यज्ञ को नवरूप जिसने प्रखर तप से दे दिया।।
उस महाप्रज्ञावान को युगपुरुष जो है ज्ञान घन।
युग साधकों का देव संस्कृति सहित नित शत-शत नमन।।

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएं-

1. **अखण्डज्योति- में प्रकाशित कवि की रचना अवलोकनीय है-**

हुआ समर्पण मिटी चाह सब, अब दो प्रभु ऐसा वरदन।
दुर्बल दीन-दुखी की खातिर, हो जाऊँ हँस-हँस बलिदान।।×××
इन्द्रिय सुख सौन्दर्य न चाहूँ, नही चाहिए सुविधा धाम।
तुमसे उपजे है यह सब, तुम्हें चाह कर रहूँ अकाम।
क्यों भटकूँ मै इस माया में, तेरी राह चलू भगवान। दुर्बल दीन-दुखी.....

प्रभु पद-कमलों का रस पाकर, देवराज का पद बेकार।
स्वर्ग और अपवर्ग न चाहूँ, है प्रभु चरणों का आधार।।
ऐसा रस संचरित करो प्रभु! बह जाये सारा अज्ञान।। दुर्बल दीन-दुखी.....

("साधक की चाह" शीर्षक से नवम्बर 1996 में प्रकाशित)

युग निर्माण योजना में प्रकाशित कवि की रचनाएं अवलोकनीय है-

1. हे गुरुवर श्रीराम तुम्हारी, महिमा अपरम्पार है।
मानवता ने तुमसे पाया, नव बल का संचार है।।
देवदूर बनकर आये, तपोपूत तुम कहलाये।
ऋषि बनकर सबको भाये, नमन तुम्हें सौ बार है। हे गुरुवर श्रीराम ...
राष्ट्रधर्म में मस्त रहे, जप-तप के अभ्यस्त रहे,
नये सृजन में व्यस्त रहे, जान गया संसार है। हे गुरुवर श्रीराम .....
तुमने कार्य महान किया, जगती का कल्याण किया।
संस्कृति का उत्थान किया, जो युग का उपचार है। हे गुरुवर श्रीराम....
यज्ञ और गायत्री को, सविता को सावित्री को।
माता देवि धरित्री को, दिया नया उपहार है। हे गुरुवर श्रीराम.....
संस्कृति को विज्ञान से, जीवन को सद्ज्ञान से।
पौरुष को निर्माण से, जोड़ा सभी प्रकार है। हे गुरुवर श्रीराम .....
वर्ग भेद को दूर किया, अहंकार को चूर किया।
अनुशासन भरपूर किया, जग का हुआ सुधार है। हे गुरुदेव श्रीराम.....
मिटा गये अज्ञान तुम, लुटा गये अनुदान तुम।
बाँट गये वरदान तुम, यह अद्भुत व्यापार है। हे गुरुवर श्रीराम .....

("हे गुरुवर श्रीराम" शीर्षक से, फरवरी 1998 में प्रकाशित)

2. हम गायत्री माँ के बेटे तुम्हें जगाने आये हैं।
जाग उठो भारत के वीरों, तुम्हें जगाने आये हैं।।
एक बनेंगे नेक बनेंगे, प्यार बढ़ाने आये है।
तपोभूमि मथुरा के नारे तुम्हें सुनाने आये है। हम गायत्री माँ के बेटे.....
हम सुधरेंगे युग बदलेगा, यही बताने आये हैं।
ऊँच-नीच और जाति-पाँति का, भेद मिटाने आये है। हम गायत्री माँ के बेटे.....
गायत्री के महामंत्र की महिमा गाने आये है।
युग निर्माण योजना का संदेश सुनाने आये हैं। हम गायत्री माँ के बेटे.....
विश्वधर्म को निर्मित करने, नयी प्रेरणा लाये है।
हर मानव में सद्बुद्धि का, दीप जलाने आये है। हम गायत्री माँ के बेटे.....

अत्याचार का अन्त करेंगे, लोभ मिटाने आये हैं।
कुरीतियों और पाखण्डों को, जड़ से मिटाने आये है। हम गायत्री माँ के बेटे.....
नया उजाला नयी रोशनी, जग में लेकर आये हैं।
अनाचार के अन्धकार को, जड़ से मिटाने आये हैं। हम गायत्री माँ के बेटे..
ज्ञान यज्ञ की लाल मशाल, तुम्हें थमाने आये हैं।
श्रीराम शर्मा जी का संदेश सुनाने आये है। हम गायत्री माँ के बेटे

("हम गायत्री माँ के बेटे" शीर्षक से जनवरी 1970)

3. उत्तर से आ रही निरन्तर दिव्य शक्ति की धारा।
फिर क्यों साहस टूट रहा है, पथ के बीच तुम्हारा।।
नूतन युग निर्माणहो रहातुमउसके सेनानी। नयी सभ्यता नई संस्कृति तुमको आज बनानी।।
ममता मय मानवकीपावन नीवनई गढ़ना है।रुके नही पग,सततअथक, बसआगेहीबढ़ना है।।
होना है नव सृजन विश्व का बन्धु तुम्हारे द्वारा। फिर क्यों साहस.....
अन्तर में विश्वासलिएतुम आगेबढ़ते जाओ।मिले फूल या काँटेलेकिन पगपीछे न हटाओ।।
माना होगी चुभनकिन्तुसंतोष इसीमें होगा।सतत् लक्ष्य तकचलने,कापरितोष उसी में होगा।।
क्लान्त निराशा सा यदि होगा, मानस कभी तुम्हारा।
आशा और उल्लास मिलेगा, बनकर सुदृढ़ सहारा।। फिर क्यों साहस.....

("दिव्य शक्ति की धारा" शीर्षक से जून 1980 में प्रकाशित)

4. स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन अपना, सभ्य समाज बनाएंगे।
नया सवेरा नया उजाला, इस धरती पर लाएंगे।
बेला आई नये सृजन की, नयी उमंगें ले जीवन की।
सोने वाले पछताएंगे, बढ़ने वाले यश पाएंगे।।
युग साधक बन तन-मन-धन से, हम युगधर्म निभाएंगे।।नया सवेरा.....×××
मन ही शत्रु मित्र ही मन है, इस पर आधारित जीवन है।
भव-बंधन मन का विकार है, मुक्ति मनों का संस्कार है।।
मन ही सच्चा आसन प्रभु का, इसको स्वच्छ बनायेंगे।। नया सवेरा .....

("नया सवेरा नया उजाला" शीर्षक से मार्च 1978 में प्रकाशित)

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन का आलोच्य काव्य में प्रतिफलन-

विश्व शांति के प्रयास-एक बार भर दिया प्राण रस, इसमें ऋषि ने अपना।
रहे प्रकाशित यह सदैव, देखा है ऐसा सपना।।
यह युग व्यापी अन्धकार तब ही तो मिट पाएगा।
गौरव वह प्रकाश का फिर से, जग में जग जाएगा।।

तुम्हीं उसे प्रज्ज्वलित रखोगे ऐसी आशा लगाई।
दृढ़ता की परिचायक इसको थामे सबल कलाई।।

युग परिवर्तन के प्रयास -

ईश्वर की इच्छा है ऐसी अब तो युग बदलेगा,
छोड़ अनीति अनय मानव, सत्यपथ की ओर चलेगा।
किन्तु तुम्हें इस परिवर्तन का माध्यम बनना होगा,
लाकर क्रान्ति विचारों में नव मानस रचना होगा।
अत: उठो दुष्प्रवृत्तियों से दो जग को छुटकारा।।

नैतिक-बौद्धिक-सामाजिक क्रान्ति-

आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक क्रान्ति यहाँ से होती है,
ज्ञान और विज्ञान मिलन की, यहाँ अनूठी रीति है।
इसी धरा पर स्वर्ग सृजन की छटा अरे! अभिराम है,
यहाँ हिमालय की छाया है, गंगा-गोद-ललाम है।।

शान्तिकुंज, हरिद्वार की स्थापना -

तपस्थली सप्त-ऋषियों की, वातावरण दिव्य इसका,
युग का विश्वामित्र यहीं है, सारा विश्व मित्र जिसका।
युग-वशिष्ठ के ज्ञान यज्ञ की लपट यहाँ अविराम है,
शांतिकुंज गुरुकुल है पावन, युग-ऋषि का तप धाम है।।

सेवा-साधना -

सन्त कहाऊँ, पैर पुजाऊँ, ऐसी कोई चाह नही,
दुनियाँ जाने या न जाने, इसकी भी परवाह नहीं।
हर पीड़ित की पीड़ा समझू, सेवा करूँ रहूँ अनजान,
दुर्बल दीनदुखीकी खातिर, हो जाऊँ हँस-हँस बलिदान।
चाह नहीं लौकिक वैभव की, मेरा धन प्रभु तेरा प्यार,
पाऊँ तुमसे बाँटू जग को, धन्य बने सारा संसार।
पावन प्रेम प्रवाहित हो प्रभु, डूब जाय सारा अभिमान।।

भाव संवेदना-

तुम दुनियाँ की पीर पी गये, युग के सच्चे पीर हो गये,
तपा दिया अपने जीवन को, जीवन कला सिखाई जग को।
दीन दुखी को गले लगाकर, जन-जन को खुशहाल किया,
हे युग ऋषि 'श्रीराम' आपने, सचमुच बड़ा कमाल किया।
जन्म लिया 'आँवलखेड़ा' में, सारा जगत निहाल किया।।

समाज का अभिनव निर्माण-

नर-नारी का, ऊँच-नीच का, जाति-धर्म का भेद नही,
सब ही एक समान यहाँ है, राग-द्वेष अब शेष नही।
कंधे से कंधे मिल करते, 'महाकाल' का काम है।।

आचार पद्वति - तपोमय जीवन-

तप हमको रुचता है, दुख की परवाह नहीं,
माँ का है साथ, अन्य सुख की कुछ चाह नहीं।
हम तो जीतेंगे मन के विकार, माँ की शक्ति से।। × × ×
स्वार्थ और लोभ नहीं हमको ललचाएंगे,
हम तो परमार्थ भाव मन में बसाएंगे।
हम तो कर लेंगे जीवन उद्धार, माँ की शक्ति से।।

यज्ञमय-गायत्री मय जीवन -

शुभ यज्ञमय हो जीवन हमारा, बढ़े हम स्वयं और को दें सहारा,
रहे हर मनुज शांति संतोष पाता। नमो वेदमाता, नमो देवमाता.....
सविता तुम्हारी महा भर्गशक्ति, वरण हम तुम्हारी करें श्रेष्ठ भक्ति।
हमें ले चलें श्रेष्ठ पथ से विधाता। नमो वेदमाता, नमो देवमाता.....

यज्ञ का तत्वदर्शन -

चन्दन ज्यों सुविचार चढ़ाएं, अक्षत्र शुभ संकल्प कहाएं।
सत्कर्मो की धूप जलाएं, जगहितार्थ यह यज्ञ रचाएं।।

सदाचार की प्रधानता -

अब दुर्बुद्धि मनों में हम पलने न देंगे, दुर्भावों की कुटिल चाल चलने न देंगे।
परिष्कार मन का अब सबको कर लेना है, और हृदय में दिव्य भावना भर लेना है।।

मनुष्य में देवत्व और धरती पर स्वर्ग -

आओ देवत्व जगाने को, धरती पर स्वर्ग बनाने को।
अपनत्व सभी में विकसा दो, हे सज्जन के मानस मराल।। × × ×
दिव्य ज्ञान धरती पर लाये, युग के भागीरथ कहलाये,
मानव में देवत्व जगाने, इस धरती को स्वर्ग बनाने।
मानवता को दिव्य सम्पदा देकर मालामाल किया। हे युग ऋषि .....

देवसंस्कृति दिग्विजय-

देवसंस्कृति घर-घर में अब स्थापित करना है।
लगे प्राण की बाजी फिर भी हमें नहीं डरना है।।
हे भारत के वीर सपूतों! अब तुम आगे आओ।

संस्कृति की दिग्विजय हेतु तुम जौहर फिर दिखलाओ।।
संस्कृति के इस महासमर के बन जाओ बलिदानी।
भारत माँ के गौरव की फिर, रच दो नई कहानी।।

समन्वय दृष्टि -

यदि विज्ञान सभ्यता दोनों से मानव का हित करना है।
अगर ध्वंस काचक्र काटकर फिर उज्जवलभविष्य रचना है।।
तो संस्कृति का गौरव फिर से सारे जग को समझाना है।
देवसंस्कृति के सूत्रों को फिर जन-जन तक पहुँचाना है।।

संस्कार सामर्थ्य-

मानव ने विज्ञान गढ़ लिया, सीख गया है शिष्टाचार।
यह तो बस पहली सीढ़ी है, कौन सिखाये सद्आचार?
जब संस्कृतिमय जीवन होगा, तब मानव सुख पयेगा।।× × ×
दानवता से त्रस्त मनुजता को उसको आज बचना है।
संस्कारों की परम्परा को जन-जन तक पहुँचाना है।।

साधना के सिद्धि-

चाह स्वर्ग प्राप्ति की पूर्ण क्यों हुई नहीं? कामना बनी रही साधना हुई नहीं।
साधना करो सखे! सिद्धि की कमी नही, साधना चले प्रखर लक्ष्य तक रुके नहीं।।

प्रतिगामिता के प्रति आक्रोश-

अब असुर शक्ति से डरो नही, आगे बढ़कर खुद वार करो।
युग शक्ति तुम्हारे पीछे है, अपना मन छोटा नहीं करो।।

अतीन्द्रिय जगत -

मै पास तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।।× ××
मिटा गये अज्ञान तुम, लुटा गये अनुदान तुम।
बाँट गये वरदान तुम, यह अद्भुत व्यापार है।।

इक्कीसवीं सदी- नारी सदी का उद्घोष-

महाकाल को नये सृजन का, नवअभियान रचाना है।
नारी को फिर विश्व मंच पर, करतब नये दिखाना है।
तर्क-छिड़ा मंडन शंकर में, न्यायाधीश भारती थी।।
युद्व छिड़ा जब कृष्ण-पार्थ में, कृष्णा बनी सारथी थी।
कही भामती मौन साधना, से सद्ग्रन्थ लिखाती है।।
कभी अहिल्याबाई बनकर, शासन तंत्र चलाती है।
निज प्रतिभा से नये सृजन का, नव दायित्व उठाना है। नारी को फिर .....× × ×

महाकाल ने सृजन साधना का अब शंख बजाया है।
इसीलिए सद्भाव मूर्ति, नारी को पुनः जगाया है।।

मातृशक्ति को नये सृजन में प्रभु का हाथ बँटाना है।। नारी को फिर .....

विवाहोन्माद-

घर-परिवार-समाज सभी का गौरव अगर बचाना है।
इस विवाह-उन्माद असुर को फौरन मार भगाना है।।
देन दहेज दिखावा मिलकर परिवारों को लूट रहे।
इसके कारण पावन रिश्ते बनते बनते टूट रहे।।
समझदार भी कुरीतियों को हंसकर गले लगाते है।
जब परिणाम सामने आते तो सिर धुन पछताते हैं।।

बहुत हो गई भूलें भारी, अब न इन्हें दुहराना है। इस विवाह .....

जगे जवानी संकल्पित हो, इस कुरीति को दूर करे।
बरबादी से पीछा छूटे, मन में नई उमंग भरें।।
पावन हों रिश्ते घर-घर में, सरस प्रेम की धार बहे।
मिटे कलह दुख दर्द दूर हों, स्वस्थ सुखी संसार रहे।

जड़ से यह कुरीति मिट जाएं, यह अभियान चलाना है। इस विवाह .....

('जीवन विद्या' में प्रकाशित)

उद्दाम राष्ट्र भाव-

बलिदानी मिटटी ने तुमको, भरकर आँख पुकारा है।
और हिमालय की चोटी से, ऋषियों ने ललकारा है।।
तुमने साहस हो कुछ भी तो, मोह छोड़ आगे आओ।
देवभूमि की गरिमा लेकर, भूमंडल पर छा जाओ।।
तुम हो उनके अंश कि जिनने गति मोड़ी तूफानों की।
आज जरुरत भारत माँ को ऐसे वीर जवानों की।।

("आज जरूरत भरत माँ को" कविता से क्रान्तिगीत में प्रकाशित)

मूल्यांकन

श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी का समग्र मूल्याँकन करना शोधकर्ता के लिए सूर्य को दीपक दिखाना है। श्री उपाध्याय जी से शोधार्थी की सर्वप्रथम भेंट शांतिकुंज, हरिद्वार में मार्च 1980 में हुई। शोधकर्ता ने उनकी दिनचर्या एवं क्रियाकलाप बहुत निकट से देखे है और उसके आधार पर मेरी यह धारणा सुदृढ़ हुई कि वे संस्कृति पुरुष पूज्य आचार्य शर्मा जैसी अवतारी

सत्ता के प्रमुख वीरभद्रो में से एक है साथ ही हिन्दी के एक निष्ठावान सेवक भी है। हिन्दी के प्रति उनके हृदय में गहरा अनुराग है और इस अनुराग में रंगे वे हिन्दी के प्रचार-प्रसार और उसकी विविध रचनात्मक सेवाओं में पूर्ण समर्पित है। वे पूज्य आचार्य शर्मा जी के युग विचारों को जन-जन तक पहुँचाने में भी अपनी कर्मठ भूमिका का परिचय देते है। देश-विदेश के अधिक से अधिक विद्धानों, साहित्यकारों, और कलाकारों से उनका सम्पर्क रहता है तथा विचार विनिमय का क्रम भी अनवरत बना रहता है। मुझे उनकी कर्मठता, सूझ-बूझ, कार्यक्रमों का नियोजन और सेवा भावना ने बहुत प्रभावित किया। बाद में जैसे-जैसे मै उनके सम्पर्क-सान्निध्य में आया वैसे-वैसे मुझे ज्ञातव्य हुआ कि वे हिन्दी के एक सफल कवि और गीतकार ही नहीं है अपितु राष्ट्रभाषा के अनन्य सेवक भी है।

सम्पादन एवं भूमिका लेखन में आप अत्यन्त निपुण और प्रॉम्प्ट है। समवयस्क और नयी पीढ़ी पर अपनी सहयोगी भावना के कारण आपका अच्छा प्रभाव है। श्री उपाध्याय के प्रति शोधकर्ता के भाव प्रसून अवलोकनीय है-

वीरेश्वर वीरभद्र है शांतिकुंज में वरिष्ठ।
मृदुस्वभाव संजीवनी, औषधि उनपे श्रेष्ठ।।
देखा गुरुवर का मिशन, हुए समर्पित आप।
कंधे थे मजबूत तो, दिया गया शरचाप।।
गुरुवर ने संचालन का, सौप दिया दायित्व।
आशा से कुछ अधिक ही, दिखलाया सुकृतित्व ।।
और इन्हें घोषित किया, अपना मानस पुत्र।
जीवन भर संग ही रखा, भ्रमणों में सर्वत्र।।
जीवन का उत्तरार्द्ध है, फिर भी तजा न काम।
रुकी नहीं गतिशीलता तनिक नहीं विश्राम।।
प्रबल-लगन संकल्पदृढ़, इनका जीवन प्राण।
कार्य गुरु का पूर्ण हो क्या है तन-मन-शान।।
विरला है व्यक्तित्व यह, दिव्य कृतित्व सुरम्य।
विश्रुत वाणी पुत्र की, करनी सदा प्रणम्य ।।

श्री उपाध्याय जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इतना बहुआयामी एवं प्रतिभा सम्पन्न है कि उसे एक लघु भूमिका में समेटना बडा दुष्कार कार्य है। हिन्दी पत्रकारिता व काव्यसृजन को आपकी देन अनेक रूपों में महत्वपूर्ण है। आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन के प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में 'प्रज्ञा अभियान पाक्षिक'

में प्रकाशित उनके महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बिन्दु अवलोकनीय है-

➔ कर्म विचार का स्थूल रूप एवं विचार कर्म का सूक्ष्म रूप है अत: जो कार्य करना चाहते है, उस सन्दर्भ में प्रस्फुटित होने वाले विचार को इतना सबल कर दें कि कोई रोक न सके।

➔ परमपूज्य आचार्य शर्मा जी की अन्त: वेदना व्यक्त करे हुए वे लिखते है कि- " हमने गायत्री यज्ञ पकड़ा था महाक्रान्ति के लिए, लेकिन हमारे कार्यकर्ता सस्ते पण्डे बनकर रहे गये। जहाँ गये वहाँ क्रान्ति की चिनगारी ने असर क्यों नहीं दिखलाया?

➔ ईश्वर ने ऋतुएं बनाई और बीज बनाया, लेकिन बीज फलेगा तभी जब सही समय पर बोया जायेगा। उसी प्रकार जीवन साधना भी तभी फलित होगी जब स्थिति परिस्थिति के अनुरूप जीवन का सुदपयोग होगा।

➔ परम पूज्य गुरुदेव (आचार्य श्रीराम शर्मा आचार्य) ने कभी हल्के शब्दों का प्रयोग नहीं किया। यदि उज्जवल भविष्य का उद्घोष किया है तो उसे सूक्ष्म जगत में पहले स्थापित कर दिया है। वे कहा करते थे कि- "एक दिन सारी दुनियाँ गायत्री जपेगी। यह शरीर में खड़ा हाड़-माँस का पुतला नहीं बोल रहा है, यह अन्तरिक्ष का निर्धारण है। मैं क्या कर सकता हूँ।"1

➔ प्रगति के अगले चरण नहीं मिलते तो यह हमारे साधना की कमी है।

➔ हम बार-बार लोहा गर्म करते है, फिर सो जाते है। बार-बार आयोजन करते है, किन्तु अनुयाज का सही क्रम न अपनाने से शक्ति को व्यर्थ गवाँ देते है।

➔ गायत्री उपासना केवल जप से ही नहीं दिव्य चेतना के सान्निध्य की अनुभूति से सफल होती है। साधना दिन भर की होनी चाहिए। जब जिया जायगा, सधा हुआ जीवन ही जिया जायगा, यही है जीवन साधना।

➔ "हम अपनी गुरुसत्ता (परम पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा) के साथ भावना, विचार और श्रम की नियमित साझेदारी करें। यदि हम अपने कर्तव्यों को पूरा करने में सफल नहीं रहे तो इस साझेदारी में कहीं न कहीं अनियमितता जरूर होगी।"2

➔ "युगऋषि (आचार्य शर्मा के) युग निर्माण अभियान को उनकी गरिमा के अनुरूप विकसित-समर्थ बनाकर हम उनके चरणों में एक ऐसी भावांजलि समर्पित करें जो उनके हृदय को पुलकित कर दे।"3

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा- प्रज्ञा अभियान पाक्षिक, 1 जून 2004
2. श्री वीरेश्वर उपाध्याय- प्रज्ञा अभियान, पाक्षिक, 1 जून 2004
3. श्री वीरेश्वर उपाध्याय- प्रज्ञा अभियान, पाक्षिक

युग-कवि श्री मंगल विजय 'विजयवर्गीय'

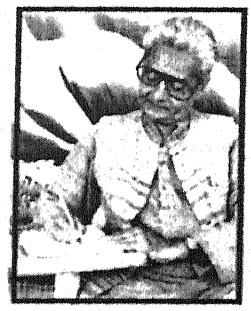

एक सामान्य वैश्य परिवार में सन् 1930 में कवि के पिता स्व0 सेठ हरदयाल जी 'विजय वर्गीय', जिनके भक्तिभाव पूर्ण आदर्श जीवन ने उनके चिन्तन, चरित्र में आदर्शों की छाप छोड़ी तथा माता स्व0 श्रीमती सूरज बाई 'विजय वर्गीय' जिनके ममत्वपूर्ण, सरल, सात्विक जीवन ने कवि की भाव संवेदनाओं को संस्कारति कर संवारा, के यहाँ 'गायत्री कुंज' औबेदुल्लागंज, भोपाल में जन्मे बालक में एक संवेदनशील कवि, मननशील, विचारक, प्रगतिशील समाज सेवी एवं समर्पित साधक का बहुमुखी व्यक्तित्व छिपा हुआ है, तब यह सोचा भी नही जा सकता था। किन्तु सतत् जीवन- संघर्ष एवं साधना-समर के गर्भ से जन्म लेकर जो व्यक्तित्व सँवर कर सामने आया उस अनूठे व्यक्तित्व का नाम है- मंगल विजय 'विजयवर्गीय'।

श्री मंगल विजय की दादी विशेष धार्मिक प्रवृत्ति की थी, उनके साथ पाँच-सात वर्ष की आयु से ही कवि को प्रतिदिन मन्दिरों के दर्शन करने जाने का सौभाग्य मिला। 15 वर्ष की आयु में आपका भोपाल आर्य समाज की 'आर्य मित्र सभा' से सम्पर्क हुआ। महर्षि दयानन्द के प्रखर, प्रगतिशील विचारों से कवि किशोरावस्था से ही अत्यन्त प्रभावित हुए। कई अखिल भारतीय आर्य नेताओं से आपका साक्षात्कार हुआ एवं प्रवचन लाभ इन्होने प्राप्त किया। किशोरावस्था से ही आपने 'आर्य कुमार सभा' भोपाल के अध्यक्ष पद जैसे उत्तरदायित्वों का आपने निर्वहन किया। राजनैतिक दृष्टि से आपके ऊपर क्रान्तिकारी वीर सावरकर का विशेष प्रभाव पड़ा। आप भोपाल नगर 'हिन्दू महासभा' के उपमंत्री भी रहे। इस बीच हिन्दू महासभा के अनेक वरिष्ठ नेताओं का सान्निध्य आपको प्राप्त हुआ। साहित्यिक दृष्टि से भोपाल के उर्दू प्रधान नबाबी माहौल में हिन्दी प्रचार-प्रसार हेतु भोपाल की तत्कालीन हिन्दी सेवी एक मात्र संस्था 'कला मन्दिर' की सदस्यता भी आपने ग्रहण की तथा यहीं से आपके काव्य सृजन को भी गति मिली। आपके प्रारम्भ के काव्य में आर्य समाज एवं हिन्दू महासभा के चिन्तन की सहज अभिव्यक्ति हुई। पन्द्रह वर्ष की आयु से ही प्रात: संन्ध्या, भ्रमण के क्रम में ही प्राकृतिक परिवेश में चिन्तन तद्नुसार काव्यसृजन का क्रम चलता रहा। चिन्तन स्वरूप सहस्त्राधिक चिंतन सूत्रों को अभिव्यक्ति मिली जिन्हें पहले 'स्वानुभूतियाँ' बाद में 'सिन्धु के बिन्दु' के रूप में लिखा जाता रहा। आपकी डायरियों में कुछ कहानियाँ और निबन्ध भी उपलब्ध हुए। रामचरितमानस पर आपके लेखों का एक संग्रह भी

उपलब्ध हुआ।

इस व्यक्तित्व को तराशने में महर्षि दयानछ, स्वातंत्रय वीर सावरकर, अवधूत स्वामी अखण्डानन्द जी एवं सर्वाधिक पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य तथा उनकी धर्मपत्नी (माता) भगवती देवी शर्मा का सृजन शिल्प ही उल्लेखनीय है।

शिक्षा एवं सेवाएं- आपकी शिक्षा व्यवधानों के बीच कई स्थानों पर प्राय: प्राइवेट रूप से ही पूर्ण हो सकी। मैट्रिक तक की शिक्षा ग्रहण करके आप शिक्षक बन गये। इसी अध्यापन कार्य की अवधि में आपने एम0ए0, बी0एड0 एवं 'साहित्य रत्न' तक शिक्षा बढ़ाई। चालीस वर्षो तक आप एक आदर्श शिक्षक के रूप में अपनी जीविका चलाते हुए शिक्षा, साहित्य, समाज एवं अध्यात्म के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करते रहे, अनन्तर प्रधानाचार्य के रूप में आप सेवा निवृत्त हुए।

जीवन-वृत्त- विधि के किसी विशिष्ट विधान के अन्तर्गत ही इस धरा पर सामान्य में असामान्य का अवतरण होता रहा है, इसी का साक्षी है श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' का समग्र जीवन।

सन् उन्नीस सौ तीस मधि पुण्य भूमि भोपाल।
वाणिक वंश 'मंगल' जनम, सूरज-हर भोपाल।।

स्नेह-सलिला माता की कोख से प्रखर प्रज्ञापुंज बालक का अवतरण ताल-तलैयों की नगरी, प्रकृति सुन्दरी पुण्यभूमि भोपाल में हुआ। जब यह गीतकार जन्मा धरती बन गई गोद, मुखरित हुए धरा के उद्‌गार-

उषा ने हँस अभिनन्दन किया, और पहनाया हीरकहार,
संध्या ने आँझा काजल, चली डुलाने विजन बयार ।
फूलों ने मुस्कान बिखेरी, बरसा नभ से मधुर प्यार।।

प्रकृति की गोद और घर के आधात्मिक वातावरण में आयु ने अपनी गिनती आरम्भ की। बचपन पर प्रभाव पड़ा माता-पिता एवं दादी की सहज संवेदनाओं, उनके ज्ञान और धर्म-भाव का। साथ ही चिन्तन को नई दिशा दी महर्षि दयानन्द के प्रगतिशील विचारों ने। यही कारण था कि बचपन में ही मंगल ने अमंगल पर विजय पाकर अपने नाम की सार्थकता सिद्ध की।

आयु के सोपान-

युग कवि मंगल विजय ने अपनी आयु के सोपानों को स्वयं छन्द बद्ध किया है-

जहाँ इस जवानी में अमृत भरा है, वहीं यह जवानी गरल से भरी है।
समझ-बूझ लो! आज अच्छी तरह से, मणीधर के फण में मणी यह धरी है।।

गुन-गुना रहा है कौन, गीत गा रहा है कौन।
उर-गगन में बिजलियों सा, दम दमा रहा है कौन।।
दुख-सुख दोनों के कंधों पर, जीवन भार ढुला करता है।
विरह-मिलन के दो पंखों पर, सधकर प्यार पला करता है।।
किसी ने दे दिया वह दर्द, जिससे प्राण दूने है।
कहीं पर कर दिया वह घाव, जिसके स्वाद लूने हैं।।
मैने विष के घूंटों को पी, साधों के शिशु को पाला है।
इसीलिए मेरी साधों का, नीलकंठ-शिव मतवाला है।।
सद्संकल्पों की देह न देते तुम, निर्मल-नीरा भी-नेह न देते तुम।
स्नेहार्द्र-सीप की गोदी न मिलती तो, मेरे मानस का मोती गल जाता।।

दाम्पत्य जीवन- कवि की सहधर्मिणी श्रीमती प्रभा विजय वर्गीय है जो आदर्श पत्नी के समर्पण भाव से कवि के जीवन निर्माण, परिवार निर्माण एवं काव्य सृजन की साधना में निरन्तर सहभागिनी बनी हुई है।

व्यक्तित्व :- श्री मंगल विजय एक धर्मपरायण, अध्यात्मवादी, आदर्शवादी, युग और समाज के पुनर्निर्माण के पक्षधर व्यक्तित्व है, साथ ही वे चिन्तक भी है और एक सृजनधर्मा कवि भी। उनके व्यक्तित्व के विविध पक्ष परस्पर असम्बद्ध नही अन्तर्गुम्फित है। शिक्षा के साथ-साथ प्रखर व्यक्तित्व की ऊँचाइयों का पैमाना भी आपके जीवन में ऊँचा होता गया।

श्री मंगल विजय के जीवन में भाव और बुद्धि का अनूठा सामंजस्य दिखाई देता है। किशोरावस्था से ही उनकी बुद्धि आत्मचेतना के अन्तराल में समाविष्ट होकर भाव जगत में प्रवेश करने लगी। यहीं से शुरू हुआ उनमें उद्वेलन और भावोन्मेष। अन्दर से उभरा यह भावोन्मेष ही कालान्तर में रसात्मक और रागात्मक बन गया। इसी रस दशा को प्राप्त कवि श्री मंगल विजय के होठों पर स्वर थिरकने लगे।

श्री मंगल विजय की आत्म चेतना में स्थिति कवि का प्रादुर्भाव कब हुआ उसे वे स्वयं नहीं जानते। हाँ अपने कृतित्व की शिल्पक और प्रभावक शक्तियों को वे अवश्य जानते है। इस सम्बन्ध में उनका कहना है कि "मेरी किशोरावस्था से ही मेरा सहज संवेदनशील स्वभाव कब बन गया, कुछ ध्यान नहीं आता। किशोर संवेदनाएं परिस्थितियों में हिचकोले खाती रहीं। यों तो मेरे कवि को परिस्थितियों ने भी खरादा-तराशा वस्तुतः कोई अदृश्य सत्ता (मेरे गुरुदेव पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य) अनजाने ही मेरे व्यक्तित्व का शिल्पन करती रही।" श्री मंगल विजय के जीवन में आचार्य श्रीराम शर्मा जी

की अहेतुकी कृपा से भौतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में चमत्कार स्तर की उपलब्धियाँ हस्तगत हुई।

काव्य साधना - कविता वह है जो उत्कृष्ट भाव और सर्वोत्तम चिन्तन द्वारा मानव हृदय के सच्चे भावों को सशक्त भाषा में प्रकट करती है। उत्तम कवि वह है जो मानव जाति के समस्त अच्छे अनुभवों, उपयोगी तत्वों, उच्चविचारों का भंडार सुरक्षित रखता है। जिन ग्रन्थों में मानव समाज के लोकहित की भावना भी होती है, वे ही सफल साहित्य की कोटि में आते हैं। साहित्य में वे ही कृतियाँ शाश्वत सम्मान पाती हैं, जो मानव जीवन का दु:ख दूर कर उसे भावनाओं तथा नैतिक मूल्यों के सुन्दर लोक में भ्रमण करने की शक्ति देती है।

साहित्य के द्वारा समाज को नई शक्ति मिलती है। साहित्य में लोकहित की भावना का होना नितान्त वाँछनीय है जो साहित्यकार अपने साहित्य में लोकहित का प्रतिपादन करता है, उसकी कृति कभी पुरानी नहीं पड़ती। वह सदा सर्वदा जनसाधारण के समीप प्रेरणा बनकर रहती है। हिन्दी साहित्य में भक्ति युग आज भी जनमानस में विराज रहा है। तुलसी, सुर, कबीर, नानक, आदि भक्तिकाल के साहित्यकार आज भी जनसामान्य के हृदय में बैठे हुए है। उन्होने नैराश्यमूलक जीवन में सरलता, धैर्य, जीवन मूल्यों के प्रति आस्था, श्रद्धा, ईश्वर के प्रति भक्तिभाव तथा श्रद्धा-विश्वास का संचार किया है।

आज कल की कविता में भाषा तथा विचार का बाहुल्य है, शैलियों के मनमाने आड़े-टेढ़े प्रयोग हो रहे है। किन्तु उनमें जीवन मूल्यों के प्रति कोई आग्रह नहीं दिखाई देता। रीतिकालीन कवियों ने अपने काव्य में वासनापूर्ण श्रृंगार को ही प्रधानता दी है। छायावादी कवियों- प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा, में लोकहित की भावना कला के विस्तार में दब गई। आम जनसामान्य उन्हें समझ तक नहीं पाता है। आज फिर ऐसे सरल, सरस, सहज, काव्य की आवश्यकता है जो प्राचीन जीवन मूल्यों, अतीत, संस्कृति, भारतीय चिन्तन, का प्रतिनिधित्व करे और भौतिकवाद तथा पाश्चात्य विचार धारा का प्रदूषण दूर करे।

यह काव्य साधना श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' द्वारा हुई है। आज भी कविवर श्री मंगल विजय भक्तिकाल का प्रतिनिधित्व कर रहे है। लुप्त होती हुई धार्मिक-नैतिक काव्य धारा का पूर्ण आस्था के साथ पुनर्जीवित करने का श्रेय श्री मंगल विजय जी को है। उन्होने भक्तिकाल को पुन: शीर्ष

स्थान पर पहुँचा दिया है। भक्ति काव्य की गरिमा उनके काव्य में स्पष्ट परिलक्षित होती है। कलिकाल में उपजे भौतिकवाद के विरूद्ध लोकजीवन को धर्म की गरिमा प्रदान करना उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है।

कवि के कथनानुसार यह संयोग ही है कि श्री मंगल विजय जी की प्रारम्भिक कविताओं का संग्रह जिनमें तीन सौ रचनाएं हिन्दी की एवं डेढ़ सौ रचनाएं उर्दू-नागरी लिपि की चोरी चला गया। किन्तु यह सौभाग्य की बात है कि भोपाल राज्य की एक मात्र साहित्यिक संस्था "कला मन्दिर" के सक्रिय सदस्य होने के कारण आपकी काव्य साधना निरन्तर चलती रही। उनके द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा के साथ-साथ मौलिक रचनाओं का सृजन भी होता रहा। तत्कालीन भोपाल के 'नवप्रभात (दैनिक), 'चेतना' (साप्ताहिक), 'अखण्ड प्रभा' (मासिक), कानपुर 'विजयवर्गीय संदेश' (कोटा) आदि पत्र-पत्रिकाओं में कवि श्री मंगल विजय की अनेक रचनाएं प्रकाशित होती रहीं। राज्य स्तरीय कवि सम्मेलनों में उनका ओजपूर्ण काव्य पाठ गौरव की बात समझा जाता रहा।

श्री मंगल विजय जी की रचनाएँ वर्ष 1971 से ही 'गायत्री परिवार' के युग- कवि के रूप में 'अखण्ड ज्योति', 'युगशक्ति गायत्री', युग निर्माण योजना (मासिक, साप्ताहिक एवं पाक्षिक) आदि पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित हो रही हैं। गायत्री तपोभूमि, मथुरा द्वारा प्रकाशित गीत संग्रह युग संगीत, पाकेट साइज के दो काव्य संग्रह युग गीत एवं 'पर्वपीयूष' में आपकी रचनाएं ही प्रकाशित हुई हैं। चुनी हुई कविताओं का एक संग्रह 'ज्ञान रश्मि' स्व0डा0 ओमशरण 'विजय' द्वारा जयपुर से प्रकाशित किया गया। अनेकानेक प्रतिकूलताओं के बावजूद आपका एक वृहद काव्य संग्रह जिसमें उनकी वर्ष 1945 से 1970 तक की रचनाएँ, 'साधना के स्वर' वर्ष 1968 में प्रकाशित हुआ। जिसमें 178 हिन्दी की श्रेष्ठ रचनाएं एवं 40 उर्दू की गजलें (नागरी लिपि में) संग्रहीत हैं। इनमें शालीनता, भारतीय गरिमा, साँस्कृतिक मूल्यों के प्रति प्रगाढ़ आस्था और सात्विक विचारधारा सर्वत्र मुखरित हुई है। सभी रचनाएँ मर्मस्पर्शी, चिन्तनप्रधान एवं गहनता लिए हुए है।

सम्मान एवं उपाधियाँ-

शोधकर्ता ने श्री मंगल विजय के कविकर्म में एक अभूतपूर्व कौशल और एक जागरूक प्रहरी की तरह सजगता और निष्ठा की अनुभूति की है। युग चेतना को उभारने और संस्कृति के संरक्षण में अथक प्रयासों के लिए वे अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित और पुरुस्कृत हुए है। उनकी रचनाओं को मुक्त कंठ से सराहा गया है। उन्हें दिए गये सम्मान और उपाधियों का

विवरण अवलोकनीय है-

1. अखिल भारतीय गायत्री परिवार के जिला स्तरीय 'प्रतिभा सम्मान आयोजन' में राजगढ़ में काव्य एवं साहित्य सेवा हेतु आपको सम्मानित किया गया तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

2. शान्तिकुंज के विशिष्ट प्रतिनिधि द्वारा 'लायन्स क्लब मंडीदीप' रायसेन, म0प्र0 द्वारा शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र देकर आपको सम्मानित किया गया।

3. अखिल विश्व गायत्री परिवार भिण्ड द्वारा 'पं. लीलापति शर्मा अमृत महोत्सव समिति' के तत्वावधान में 5 अप्रैल 1958 को श्री मंगल विजय को उनकी सतत् काव्य साधना, सार्वजनीन सेवा, परदु:ख कातरता तथा ज्ञान-लोचन उन्मीलन की दिशा में किये गये प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए सम्मान समारोह में आपको 'काव्य शिरोमणि' के रूप में सम्मानित किया गया।

प्रेरणा श्रोत कार्य- शांतिकुंज, हरिद्वार एक गायत्री तपोभूमि मथुरा के कलामंचीय कार्यक्रमों तथा देश की अन्य गायत्री परिवारों शाखाओं द्वारा आयोजित कलामंचीय आयोजनों एवं युग निर्माण मिशन के ऑडियो-वीडियों कैसेट्स आदि में आपके अनेक गीतों का उपयोग हुआ। शांतिकुंज में भी विभिन्न पर्वो पर आचार्य शर्मा द्वारा लिखवाई गई आपकी विशेष रचनाएं वरिष्ठ गायकों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक मंचों पर गायीं गई। आपके गीतों को परम वन्दनीय माता भगवती देवी शर्मा जी ने भी अपने श्रीमुख से गाया जो रिकार्ड किये गये। शान्ति कुंज की केन्द्रीय टोलियों में भी आपने टोली नायक के रूप में विगत तीस वर्षो से प्रतिवर्ष समयदान देते हुए पूज्य आचार्य जी के क्रान्तिकारी विचारों को जन-जन तक पहुँचाया। शान्तिकुंज के शिक्षा प्रकोष्ठ से सम्बद्ध होकर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रशिक्षिक प्रशिक्षणों में भी आपका योगदान स्मरणीय है।

युग निर्माण मिशन के आयोजनों में पूरे देश में जहाँ-जहाँ आपको आमंत्रित किया गया, प्रवचन के माध्यम से आपने परम पूज्य आचार्य शर्मा जी का संदेश उनके सन्देशवाहक के रूप में दिया साथ ही अपने क्षेत्र में युग निर्माण मिशन की विविध गतिविधियों के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन में निरत रहे। युग निर्माण मिशन के लिए समग्र जीवन समर्पण की उत्कट अभिलाषा आपके अन्दर प्रारम्भ से ही रही।

आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन के प्रभाव विषयक साक्ष्य एवं तथ्य-

अखिल विश्व गायत्री परिवार एवं युग निर्माण योजना के संस्थापक वेद मूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य तो मानो युग कवि मंगल विजय के जीवन के सूत्रधार ही बन गये। उनकी प्राण ऊर्जा से मंगल विजय जी की

चेतना रच-पच गई है। वे चौहत्तर वर्ष की आयु में भी उनके सूक्ष्य संरक्षण एवं मार्गदर्शन में पूरे देश में अलख जगाते फिरते हैं और उनकी कविताएं तो पूरे विश्व में युग निर्माण मिशन का संदेश अखण्ड ज्योति एवं युग निर्माण योजना पत्रिकाओं के माध्यम से प्रचारित-प्रसारित करती रहती है। इसके पूर्व ही किशोरावस्था में ही आपमें काव्य सृजन की अभिरूचि किसी अदृश्य सत्ता की सहज प्रेरणा से सहज रूप में ही चल पड़ी थी। यही संरक्षक अदृश्य सत्ता जीवन संघर्ष के हर मोर्चे से भी कवि को जूझने का साहस देती रही। उस सत्ता की पकड़ का तो वर्ष 1962 से ही उनका साहित्य अनायास पढ़ने के लिए मिलने पर उन्हें आभास होने लगा था और आचार्य शर्मा के संरक्षण का अनुभव भी होने लगा था।

संयोग से वर्ष 1970 के आचार्य शर्मा जी के भोपाल आगमन पर उन्होने आन्तरिक प्रेरणा से अपनी 51 रचनाओं का हस्तलिखित संग्रह मंगल कलश, उन्हें समर्पित किया। बस फिर क्या था, यहीं से पूज्य गुरुदेव शर्मा जी की अहेतुकी कृपा उन पर बरसने लगी। उस संग्रह की अठारह रचनाएं अखण्ड ज्योति एवं युग निर्माण योजना में प्रकाशनार्थ आचार्य जी ने रख लीं, शेष संग्रह आचार्य शर्मा जी ने लिखित आर्शीवाद के साथ स्वयं प्रकाशित करने हेतु लौटा दिया। यहीं से गायत्री परिवार के कवि के रूप में परम पूज्य आचार्य जी ने आपका परिचय प्रारम्भ करा दिया।

वर्ष 1965 से 70 के बीच गायत्री तपोभूमि, मथुरा से पत्राचार के माध्यम से आचार्य शर्मा जी से आपका सम्पर्क बना रहा। इसके बाद वर्ष 1971 से तो प्रतिवर्ष शांतिकुंज पहुँचने का और आचार्य श्री के चरणों में बैठकर साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मार्ग दर्शन इन्हें मिलता रहा। वर्ष 1971 से 1995 तक के शांतिकुंज, हरिद्वार के प्राय: सभी आध्यात्मिक शिविरों में श्री मंगल विजय जी ने प्रतिभाग किया। नौ दिवसीय शिविर से लेकर एक माह तक के शिविरों में आपने प्रतिभाग किया जिसमें जीवन साधना शिविर, लेखन सत्र, प्राण प्रत्यावर्तन शिविर, कल्पसाधना शिविर, कार्यकर्ता शिविर आदि प्रमुख है। वर्ष 1962 से ही अखण्ड ज्योति एवं युग साहित्य के सतत् स्वाध्याय ने आपको पूज्य आचार्य शर्मा जी की विचार क्रान्ति से ओतप्रोत कर दिया और 1971 से 1990 तक उनके निकट सान्निध्य एवं काव्य सृजन में प्रभावी मार्गदर्शन आपको मिलता रहा। आचार्य शर्मा का जीवन दर्शन सहज ही कवि की रचनाओं में उभर का आने लगा।

कृतित्व :- वर्ष 1970 से अद्यतन युग कवि श्री मंगल विजय का एक ही

ध्येय और एक ही लक्ष्य रहा- युग निर्माण मिशन के प्रति समर्पण। श्री मंगल विजय जी अब तक लगभग 5000 रचनाएँ लिख चुके हैं। काव्य जगत में यह एक उच्चस्तरीय कीर्तिमान है।

कवि रचित प्रकाशित एवं अप्रकाशित काव्य ग्रंथ की सूची अवलोकनीय है-

1. युग संगीत (गीत संग्रह) युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा प्रकाशित
2. ज्ञान रश्मि (कविता संग्रह) बन्धु प्रकाशन, जयपुर द्वारा प्रकाशित
3. पर्व पीयूष (कविता संग्रह) गायत्री तपोभूमि, मथुरा द्वारा प्रकाशित
4. साधना के स्वर (गीतों एवं गजलों का संकलन) प्रज्ञा प्रिन्टर्स, भोपाल द्वारा प्रकाशित
5. वन्दना के बोल (भक्ति पाकर गीतों का संग्रह) प्रज्ञा प्रिन्टर्स, भोपाल द्वारा प्रकाशित
6. सिन्धु के बिन्दु (चिन्तन सूत्र) " " प्रकाशित
7. जाग उठी तरूणाई (गीत संग्रह) गायत्री तपोभूमि, मथुरा द्वारा प्रकाशित
8. प्रज्ञावतार (काव्य ग्रन्थ) वेदमाता गायत्री ट्रस्ट शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित
9. उपेक्षिता- (माण्डवी पर खण्डकाव्य) अप्रकाशित
10. मातृमहिमा- मुक्तक काव्य (भारत की महान नारियों की झलक झाँकी) अप्रकाशित
11. संवेदना- (मुक्तकाव्य) (भारत विभाजन की पीड़ा) पर अप्रकाशित
12. महाराणा प्रताप- (खण्ड काव्य) अप्रकाशित
13. किसान- (खण्ड काव्य) अप्रकाशित
14. चाँद चतुष्पदी - मुक्तक काव्य (चाँद पर विविध दृष्टि) अप्रकाशित
15. भारत विभूतियाँ- मुक्तक काव्य (महापुरुषों का गौरव) अप्रकाशित
16. शरद सम्राट: (मुक्तक काव्य)-रूपक (चाँद पर शरद का रूपक) अप्रकाशित
17. मुक्तामाल: श्रेष्ठ मुक्तकों का संग्रह अप्रकाशित
18. मुस्कान (हास्य व्यंग कविताओं का संग्रह) अप्रकाशित
19. वेदना (कविता संग्रह) अप्रकाशित
20. प्रेरणा (कविता संग्रह) अप्रकाशित
21. सर्जना (कविता संग्रह) अप्रकाशित
22. क्रान्ति घोष (क्रान्तिकारी रचनाओं का संग्रह) अप्रकाशित
23. मानस मंथन (गद्य ग्रन्थ) रामचरित मानस पर स्वतंत्र लेख अप्रकाशित
24. कहानी संग्रह अप्रकाशित
25. निबन्ध संग्रह अप्रकाशित
26. स्वानुभूतियाँ (अनुभव सूत्र संग्रह) अप्रकाशित
27. युग निर्माण मिशन की पत्र-पत्रिकाओं में विगत चौबीस वर्षों से प्रकाशित रचनाएं (हजारों की संख्या में)

28. युग निर्माण योजना मथुरा द्वारा प्रकाशित विभिन्न काव्य संकलनों में कवि की प्रकाशित रचनाएं (सैकड़ों की संख्या में)

मंगल विजय-काव्य का समीक्षात्मक अनुशीलन –

1. साधना के स्वर (काव्य संग्रह)

साधना के स्वर (काव्य संग्रह) का 'प्रज्ञा फाइन आर्ट प्रिन्टर्स' औबेदुल्लागंज जिला रायसेन द्वारा वर्ष 1998 में किया गया जिसका समर्पण कवि ने इन पंक्तियों में किया-

"साधना के स्वर समर्पित हैं उन्हें, साध ने सम्बल बनाया है जिन्हे।
लोक-जीवन के चितेरे जो स्वयं, विविध रंगी-चित्र अर्पित हैं उन्हें।।"

प्रस्तुत काव्य संग्रह 'साधना के स्वर का' कवि-उद्देश्य, अपने काव्य सृजन के क्रमिक विकास को रचना-तिथि के क्रमानुसार प्रस्तुत करना था, उत्तरोत्तर श्रेष्ठ रचनाओं के क्रम से प्रस्तुत करना नहीं। इस संग्रह में कवि की 1950 से 1971 तक की कविताओं को काल-क्रम से प्रस्तुत किया गया हैं, साथ ही इसको दो भागों में रखा गया है। इसके उत्तरार्द्ध में उर्दू (देवनागरी लिपि) की चालीस नज़्में और अशार-गुच्छ हैं। सभी रचनाओं के अन्त में मंगल जी ने अपना एक-एक चिन्तन सूत्र भी दिया है जो अधिकांशतः रचना के भाव तत्व से साम्य रखता है।

मुक्तक काव्य होने के कारण इसकी रचनाओं में समय-समय पर जागृत होने वाले विभिन्न स्फुट भाव और विचार ही व्यक्त हुए हैं। ये रचनायें बीस वर्षो की अवधि में लिखी होने के कारण इनमें विषयगत, शैलीगत यहाँ तक कि भाषायी स्तर पर भिन्नता है। इन रचनाओं में से कुछ राष्ट्रीय भावना सम्पन्न हैं तो कुछ सामाजिक चेतना सम्पन्न, कुछ अध्यात्मपरक और भक्तिपरक हैं तो कुछ प्रकृति और ऋतु सम्बन्धी। इनमें एक ओर समष्टि चेतना है तो दूसरी ओर निजी सुख-दुख और संयोग-वियोग युक्त प्रेमानुभूतियाँ भी। इनमें युग बोध, जीवन-सत्य, अनुभव, अनुभूति, कल्पना, साधना, सिद्धि सब कुछ है। कवि ने अपनी कुछ कविताओं में भौतिकता का विरोध और आध्यात्मिक का समर्थन किया है –

"जब ज्ञान,भानु अज्ञान बदरिया छा देगी, तब रात नही होगीतो बोलो क्या होगा ?
जब आशा के प्रसाद, निराश ढा देगी, तब मात नहीं होगी तो बोलो क्या होगा?

× × × × × × × ×

मानव भौतिक-कीचड़ में धँसता जाएगा, भौतिकता कीचड़ जैसी सड़ती जाएगी।
अध्यात्म,उपेक्षा भरी दृष्टि से देखा तो, विज्ञान अगर अज्ञान नही तो क्या होगा।।

कवि आत्मा को चिरन्तन मानते हुए आत्मज्ञान को ही सार मानता है-

"चिरन्तन हैं आत्मा के प्राण, आत्म का ज्ञान इसलिए सार।
कभी होती भौतिकता भूत, चिरन्तन है अध्यात्म अपार ।।
("साधना के स्वर"पृ0 11)

आचार्य शर्मा के समन्वयात्मक दृष्टिकोण से प्रभावित होकर कवि की समन्वय दृष्टि है-

"श्रद्धा की सरिता को ज्ञान के किनारे दो, और ज्ञान गरिमा को श्रद्धा के फुहारे दो। एकाकी भौतिकता मरघट में जाएगी, बौराई वैज्ञानिकता खटपट कर जाएगी।। चेतन हो, जड़मत दो-चेतन दुलारे दो। श्रद्धा की..... "

कवि ने जीवन दर्शन को जिन दस कविताओं में व्यक्त किया है वे हैं- जीवनभार, साधनागीत, सफलता का रहस्य, असफलता का कारण, बड़ी बात, जीवन, समय की साध, वक्त कीमती है, जिन्दगी-फूल, हँस न पाओगे।

इन कविताओं में जीवन भार का सुख-दुख, विरह-मिलन पर आधारित होना, साधना और मृत्यु का सामना करने की आवश्यकता तथा सर्वार्थ को सामने रखना, जीवन-कला, समय की मूल्यवत्ता, जीवन में खुले में जीने देना और परिस्थितियों को आगे होकर बदल देने जैसे विचार प्रस्तुत किए गये हैं। कतिपय उदाहरण अवलोकनीय हैं-

"समय की कूची को, साधों की बाहों ने, कर्म के रंगों में डुबोकर चलाया तो मिट्टी के कागज पर जीवन चित्रित हो जाएगा। ("जीवन-कला" शीर्षक से)

× × × × × × × ×

प्रतिपल दहकती हुई समय की भट्टी में पुरुषार्थ का ईंधन लगा,
निश्चय को तपाया तो, कैसे भी लक्ष्य का, स्वर्ण चमक जाएगा।।
साधों के सौरभ से सुरभित हो जाएगा। ("समय की साध" शीर्षक से)

जीवन दर्शन के साथ-साथ कवि ने जीवनादर्श भी प्रस्तुत किये हैं. जैसे ज्ञान-गरिमा को सतत् सचेतन रखने, निराश्रित को शरण देने, उपेक्षित को सहारा देने, लक्ष्य प्राप्ति के लिए साधना करने, कुकृत्यों का सामना करने (ज्ञान-गरिमा), अपनी संतति को पारलौकिकता की ओर भी उन्मुख करने (कोरा-कागज), लोक मानस को जगाने, लोक मंगल के गीत गाने, ज्ञान-गंगा बहाने, मुक्ति-मंत्र पढ़ने, सद्विचार के फल उगाने, सड़ी-गली विनाशकारी मान्यताओं को उखाड़ फेंकते, हर अधर पर मुस्कान खिलाने और विचार क्रान्ति करने के (कसम है तुम्हें) इसी के साथ क्षणिक सुख के नश्वर साधन को छोड़ने की बात कहकर एक तरफ से सुखवादी दर्शन (हीडोनिज़्म) का विरोध

किया है। (यथार्थ)

वैसे भी कवि पवित्रतावादी हैं उसका कहना है कि सुन्दरता के साथ पावनता पुष्पित रहे और जगत सत्यं-सुन्दरम् के साथ शिवम् देखे (बाधा) वह स्वयं भी जगती का मल धोने में गर्व का अनुभव करता है। (चाह नहीं)। उसका संदेश है कि जीवन-जमुना को काम के कीचड़ से बचाओ (नाविक-कवि) और उसकी मान्यता है कि चारुचरित्र की चमेली ही जीवन-बगिया को महका सकती है। (विनय) आदर्शवादी कवि का पवित्रतावादी होना भी स्वाभाविक ही है। कतिपय उदाहरण अवलोकनीय हैं-

मनमाली! मत कर देना पूजा को कलुषित, सुन्दरता के साथ रहे पावनता पुष्पित।
जगती सत्यं, शिवां और सुन्दरम् निहारे, अरे प्रीत के हामी! तुझकोजतलाता हूँ।।'बाधा'

× × × × × × × ×

चलने में है विश्वास, राह का साथी हूँ। सबको प्रकाश ही देने वाली बाती हूँ।
मंजिल भी आएगी मग में ठुकरा दूँगा, जब तक पूरी कर लूँगा राह नहीं।।× × ×
जीवन जमुना का तरना वैसे ही मुश्किल, मत और काम के कीचड़ को ऊपर लाओ।
ओ कवि! प्रभु ने मल्लाह बनाया है तुमको, अपनी वाणी के बाँसों से मत अटकायो।।

(नाविक कवि)

आदर्शवादी और पवित्रतावादी होने के साथ कवि व्यवहारवादी भी है। उसका कहना है कि व्यवहार के तबले को बेसुरा मत होने दो (व्यवहार का तबला)। 'हौसला अफजाई' कविता प्रोत्साहन देने वाली है, 'मानव' कविता संकटों में संयम रखने, सत्कर्म करते रहना, संघर्ष करते हुए बढ़ते चलने के साथ अपराजित होने की भावना रखने के सुफल बताती है कि इस युग में सागर-सा खारापन है किन्तु घबराओं नहीं, गंगा की गति सा साहस ले प्रयत्नशील बनो, क्योंकि हर पावन प्रयत्न गंगा है, जिसके सामने हर विष छोटा है।

कवि ने वर्तमान भारत में व्याप्त शोषण, भ्रष्टाचार, वैमनस्य, भोगवादिता, भाषावाद, प्रान्तवाद और साम्प्रदायिकताजैसी बुराइयों को दूरकरने का आवाहन किया है-

"उठो न दूध लजाओ, माँ को धीर दो, शोषण दु:साहस की छाती चीर दो।
रिपु की गिद्ध-दृष्टि को पैनातीर दो, भ्रष्टाचारी को प्राणान्तक पीर दो।।
भोगवाद का दफना क्षीण शरीर दो, प्रगतिशीलता को सुरसरि सा नीर दो।
भाषा प्रान्तवाद को तनिक न ढील दो, साम्प्रदायिक सर्पो के सिर कील दो।
प्राणों से प्यारी स्वतंत्रता तो अपनी, रणचंडी बनकर संरक्षण करती है।।
जहाँ मैं जन्मा हूँ, वह ऐसी धरतीहै। प्रकृति जहाँ सर्वस्व निछावर करती है।।"

(भारत महिमा)

कवि की लेखनी ने सामाजिक क्षेत्र में भी विचरण किया है। नारी के सम्बन्ध में कवि का विचार है कि वह शक्ति है तो दुर्बलता भी, मधु है तो गरल भी, प्राण है तो मृत्यु दायिनी भी पर भारत में तो उसका रूप मानवी और माता का ही है।

मैं तुम्हारी शक्ति भी हूँ, मैं तुम्हारा मान भी हूँ।
मैं जननि का पूर्ण वैभव, जननि की आन भी हूँ।।
तुम भारती आत्मा, तन फिर क्यों गैरों सा,
तुम अपने ही वास्तविक रूप का व्यक्त करो।
अन्यायी-नर, सात्विक स्वरूप विकृत न करे,
ओ! शक्ति स्वरूपा निज अभिव्यक्ति सशक्त करो।। (नारियों से)

इस प्रकार कवि ने नारी को अपना पहनावा सरल रखने के लिए कहा है, ताकि लाखों बहनों को अपनी लाज ढकने के लिए वस्त्र मिल सकें। कवि का कहना है कि तन का श्रृंगार सजाने से आत्मा का मन्दिर सूना रह जाता हैं दूसरी ओर तपस्या, साधना, भक्ति और श्रद्धा से पोषित ऋषि कन्या शाकुन्तला जैसी ऐसी नारियाँ भी है। जो अपने को स्वकीया के रूप में पूर्ववत् अपनाने का युग पुरुष दुष्यन्त से अनुरोध करती हैं।

"इसलिए ओ! युगपुरुष दुष्यन्त! आओ !
हम 'संगच्छध्वं' का मंत्र गाएं, युग की यात्रा को चल पड़ें।
और युग को भरत दें, संघर्ष-सिंहों को लजाएं। × × ×
मुझ तपस्या, साधना, श्रद्धा, भक्ति पोषित ऋषि कन्या,
शकुन्तला रूपी स्वकीया को स्नेह से उर से लगाओ।। (आहवान)

समाज में एक समस्या नाज़ायज शिशुओं या कन्या को लावारिस के रूप में डाल दिये जाने की है। कूड़े में फेंक दिया गए ऐसे नवजात शिशु की विद्रोह भावनाओं को कवि ने वाणी दी है-

यदि यह अपराध किया नारी ने तो अन्तिम क्षण तक उसका नारीत्व अतृत्व रहेगा।
और अगर मजबूर की गई है वह तो,
ऐसा करने वालों का जीवन अंतिम क्षण तक संतप्त रहेगा।
व्यक्ति हो चाहे समाज हो,
ऐसा कभी नहीं होगा कि वे गर्भपात करने के फल को चख न सकेंगे।
मैं तो चला! किन्तु ये जघन्य अपराध नहीं दोहराये जायं,
ओर न ऐसे जुल्म किसी पर ढाए जाएं।।" ('गर्भपात' शीर्षक कविता से)

कवि होने के कारण मंगल विजय ने कवि के कर्तव्य और उसके

प्रभाव को भी व्यक्त किया है-

"कवि कविता जब-जब गाता है, तब तब नव सृष्टि रचाता है।
साहित्य-सदन की ही नींवें कवि भरता, ऐसी बात नहीं।।
कवि कभी भूलकर कविता में करता है कोरी बात नहीं।
कवि अपने ऊपर जगती के कण-कण का भार उठाता है।।"

(काव्य-सजृन)

कवि के लिए प्रकृति-प्रेमी होना सहज स्वाभाविक है। कवि श्री मंगल विजय का प्रकृति के प्रति प्रेयसी जैसा आकर्षण है। वह प्रकृति प्रेयसी को निरन्तर देखते रहना चाहता है, क्योंकि उसका रूप पल-पल में उनका नयन श्रँगार करता है-

प्रकृति-प्रेयसी को पहिनाई फागुन ने फूलों की फरियां।
रक्ताभी फूलों से जड़ दी, प्रेयसि की अनुरक्त चुनरिया।। × × ×
सहज-स्वरूप निरख तू अपना, तू अनादि यह झूठा सपना।
उसका स्नेह सुहाग क्षणिक है, उसका है दो दिन था तपना।।
बंधन की बाहों में बंधकर व्यर्थ न हूं बैराए बाबरिया।। (प्रकृति-प्रेयसी)

इस काव्य संकलन के उत्तरार्ध में संचित गज़लों और नज़्मों के भाव लोक में सम्मिलित है- आत्म विश्वास, मृत्यु के प्रति निर्भीकता, हिम्मतवर लोग और उनसे जीवन शिक्षा, प्राकृतिक सौन्दर्भ के प्रति मुग्धता, प्रकृति में किसी का रूपदर्शन, दुख तकलीफों की स्वीकार्यता, ग़म की अनुभूति, माशूक की तारीफ, माशूक़ की स्मृति उसका ध्यान, उसकी प्रतीक्षा पर उसका दीदार होने पर बेहोशी।

इस प्रकार 'साधना के स्वर' में अनेक भावों ओर विचारों की कविताएं है। कुल मिलाकर हम उसे एक उदान्त-काव्य की संज्ञा दे सकते है। उपमा, रूपक, मानवीकरण आदि के प्रयोग ने इसे अलंकृत किया है। इसके कुछ गीत प्रचलित गीत, लोकगीत और सिने गीत की धुनों पर भी आधारित है।

2. **वन्दना के बोल-** साधना के स्वर के बाद श्री मंगल विजय जी का यह दूसरा काव्य संग्रह है। इसमें उन्होने अपने हृदय की अतुल गहराईयों से उफनते स्वरों को नये अर्थ दिये हैं। वे एक संवेदनशील कवि हैं। यद्यपि भक्त कवियों में उनकी गिनती नहीं है, पर फिर भी उनका जीवन भक्ति का एक सरगम है, एक गीत है जिसे पंचम स्वर में गाया जा सकता है। वे परम्पराओं से दूर एक नई राह बनाते नजर आते हैं। उनके काव्य में 'मो सम कौन कुटिल-खलकामी' तो कहीं दिखाई ही नहीं देता। उनके इस संग्रह में अस्सी गीत हैं। प्रतिनिधि

रचनाओं के शीर्षक निम्न प्रकार हैं-

1. हमें भक्ति दो माँ! हमें शक्ति दो माँ
2. गंगा गायत्री दोनों का पतित पावनी नाम है
3. गायत्री ही गठन करेगी
4. यज्ञ-गरिमा
5. रामभक्ति का स्वरूप
6. भगवान बद्ध वन्दना
7. ओम महिमा
8. गुरु-गरिमा
9. दीपयज्ञ-युगधर्म
10. साधन का साध्य न बनाएं
11. मानव-मात्र की प्रार्थना
12. रोशनी का दर्द
13. दिव्यता-अवतरण
14. साधना
15. कर्म की पूँजी
16. दोष-दुर्गुण की दक्षिणा
17. वासंती-नारी
18. धर्मान्धता
19. राष्ट्र लाड़ले
20. संयम बनाम भजन
21. तप का प्रभाव
22. पैसा
23. कर्म की पूँजी
24. भगवान बुद्ध वन्दना

कुछ गीतों के अंश अवलोकनीय हैं-

1. हमें भक्ति दो माँ, हमें शक्ति दो माँ, सरल स्नेह की एक झिरन माँगते है।
   न धन, धाम कुछ आपसे माँगते माँ, विमल-ज्ञान की एक किरण माँगते है।। × ××
   नहीं स्वर्ग की सिद्धि की कामना माँ! नहीं मुक्ति की भी आकाँक्षा है।
   नहीं पद प्रतिष्ठा व यश चाहिए माँ! नहीं स्वर्ग-वैभव की वाँछा है।।
   अहं को गलाकर, चढ़ें लोक शिव को, अहंकार की हम गलन माँगते हैं।
   हमें भक्ति दो माँ.....("मातृ-वन्दना" शीर्षक से)
2. स्वास्थ्य सुख आत्मशक्ति के लिए, चलो! घर-घर में यज्ञ करें।
   देवसंस्कृति-दिग्विजय अभीष्ट, यज्ञमय वातावरण करें।
   'हुई पूरी वसुधा परिवार', यज्ञ संस्कृति संवर्धन हुआ।।
   यज्ञ है सुर-संस्कृति के पिता, प्रजा के साथ अवतरण हुआ।। (यज्ञ-गरिमा) पृ0 10
3. सद्विवेक के अविचल साधक, 'बुद्धं शरणं गच्छामि'।
   धर्म आचरण के आराधक, 'धर्म शरणं गच्छामि'।।
   अपने लिए कठोर सदा ही, औरों का हर क्षण सुखदाई।
   सब के ही दुख-दर्द विनाशक, 'संघ शरणं गच्छामि'।। ("भगवान बुद्ध वन्दना")
4. गरिमा महान गुरु की पहचान लीजिए।
   बन शिष्य 'समर्पण' का मजा जान लीजिए।। × × ×
   युग-वेदना छलक रही है, महाप्राण में।
   युग-पीर सिसकती है तनिक कान कीजिए।। गरिमा .....

गुरु से अगर लगन है, युग-पीर बँटाकर।
ग़मगीन मनुजता को तनिक त्राण दीजिए।। गरिमा ..... ("गुरु-गरिमा" शीर्षक से)

5. तप के बल पर आ जाते हैं, बड़े-बड़े भूचाल।
सूरज को भी हतप्रभ कर देता, तपसी का भाल।।
हम भलाई बनकर तैरेंगे, जग की जलन मिटाने।
और मनुजता के घावों को, शीतलता पहुँचाने।
'तेरे हैं' हम इसका परिचय देंगे आचरणों से।।
जैसे सूरज का परिचय मिलता उसकी किरणों से।
देते रहना हमें तपस्वी! गरिमा भरी उछाल।सूरज कोभी हतप्रभ.....("तप का प्रभाव")

6. मन की लगाम थाम ली, बस हो गया भजन।
संयम की साध साध ली, बस हो गया भजन।।
है इन्द्रियों का काम तो भोगो को भोगना, मन चाहता नहीं उन्हें भोगों से रोकना।
वैराग्य-वृत्ति धार ली, बस हो गया भजन। मन की लगाम.....× × ×
नश्वर है भोग सृष्टि के क्षण भर की धूप है।
है आत्मा अमर, वही आनन्द रूप है।।
निज आत्मा काजान ली,बस होगया भजन।मन की लगाम ...("संयम बनाम भजन")

7. सोचिए! सोचिए! साथ क्या जाएगा, आखरी वक्त क्या हाथ रह जायेगा।
साथ जा पाएंगे क्या ये लख़ते जिगर, रात दिन कर रहे आप जिनकी फिकर।
हर मुसीबत उठाई है जिनके लिए, आखरी-दर्द क्या वह बँटा पाएगा।।× × ×
लोक सेवा करो रास्ता एक है, दीनदुखियों की खिदमत अरे! नेक है।
याद करता रहेगा जमाना तुम्हें, खिदमते-खलककरता अगर जाएगा।।(कर्म की पूँजी")

8. सभी के दिल दिमाग पर ही छा रहा पैसा।
रंक को राव को, सबको नचा रहा पैसा।।
किसी से पूछिए क्या है कि लक्ष्य जीवन का,
जिसे देखे, वही दीवाना दिखेगा धन का।
कोई क्यों पढ़ रहा है? पैसा कमाने के लिए,
कोई श्रमकर रहा क्यों ? पैसे को पाने के लिए।
जागते सोते नजर आ रहा सबको पैसा। सभी के दिल दिमाग पर .....× × ×
कमाएँ पैसा अवश्य, किन्तु भामाशाह बनें,
दीनदुखियों की, राष्ट्र-संस्कृति की आह सुनें।
पैसा 'साधन' बनाएं, साध्य नहीं बनने दें,
पेट को पाप हेतु बाध्य नहीं बनने दें।

त्याग बलिदान की गाथा भी गा रहा पैसा।सभी के दिल दिमाग.....("पैसा शीर्षक")

9. जल थल से उठ रही है झंकार ओउम् की।
है गूँजती गगन में, गुंजार ओउम् की।।× × ×
गायत्री-मंत्र ओउम् का विस्तार हो गया,वेदों का ज्ञान ओउम् का ही सार हो गया।
प्रतिमा है 'शब्द ब्रह्म' की ओंकार की। जल, थल से.....
बस सार ओउम् का है संसार भी सेवा,मिलती है लोकसेवा से ही प्यार की मेवा।
भव से भी तारती है, पतवार ओउम् की। जल थल से.....("ओउम्-महिमा")

3. ज्ञान-रश्मि-

'ज्ञान रश्मि' कविता संग्रह का प्रकाशन 'बन्धु प्रकाशन जयपुर' से वर्ष 1979 में हुआ। समर्पण की पंक्तियों में कवि का भाव अवलोकनीय है- प्रकाश-पुंज! एक किरण औरभी समर्पित है। स्नेहसिन्धु एकझिरन और भी समर्पित है।
अकिंचन जन जैसा भी है आत्मसात करलेना, पारस!कुधातु-कण और भी समर्पित है।।

इस काव्य कृति के आत्म-निवेदन में श्री मंगल विजय लिखते हैं-

"व्यष्टि की समष्टिपरक शिष्टशालीन चिन्तन-अभिव्यक्ति सहज ही साहित्य-सम्पदा बन बैठती है। विगत 30-35 वर्षो से चल रही लेखनी को, विश्व-वेदना से द्रवित महर्षि परम पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा के लोक-मंगलपरक चिन्तन का सम्बल मिला तो मेरी काव्य-साधना धन्य हो गई। सामूहिक चेतना से संवेदित लेखनी से यदि कुछ समाजोपयोगी सृजन बन पड़ा तो यह उस पारस-परस का ही अजस्र अनुदान है।"

इस कृति की प्रस्तावना में बन्धु के संवेदनशील संस्थापक बन्धु ओमशरण जी लिखते हैं- "भारतीय दृष्टिकोण से साहित्य की तीन विशेषताएं मानी गयीं हैं-

(क) हित साधन करना ('हितं सन्निहितं तत् साहित्यं')
(ख) पावन मनोवृत्तियों को तृप्त करना ('सहित रसेनयुक्त तस्यभाव: साहित्यं')
(ग) मानव मनोवृत्तियों को उन्नत करना ('आवहितं मनसा महर्षिभि: तत् साहित्यं')

निष्कर्ष यह है कि साहित्य का मुख्य उद्देश्य मानव मात्र का हितसाधन है जो आनन्द के द्वारा किया जाता है। अत: साहित्य किंवा-काव्य का मुख्य कृतित्व इसके 'स्वादु' और 'तोष' प्रदान करने में है। वह ऐसा 'स्वादु' हो जो मीठा हो पर ऐसा मीठा न हो कि उसमें कीड़े पड़ सकें। वह 'तोष' दे सके पर ऐसा 'तोष' न दे कि फिर भूख न लगे। अत: महाकवि तुलसीदास ने "स्वान्त: सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा" लिखते समय काव्य के

मूल उद्देश्य को नहीं भुलाया -

"कीरति भणित भूति भल सोई। सुरसरि सम सब कर हित होई।"- तुलसी

अतः काव्य में शिवत्व की भावना तो फल में रस की भाँति स्वाभाविक रूप से सदा रहनी चाहिए। युग कवि श्री मंगल विजय मानव जीवन को महान आदर्शों से अनुप्राणित कर एक दिव्य भाव से आवृत करना चाहता है। पर यह कथ्य मात्र तक सीमित नहीं है। उन्होने अपनी कथनी को करनी में परिणत करने का जीवन्त प्रयास किया है। हमारा सौभाग्य है कि हम उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित हुए और प्रस्तुत अंक उनकी तीन-साढ़े तीन हजार कविताओं में से कतिपय का नवनीत उसी का परिणाम है।"1 इस काव्य संकलन में तैतीस रचनाएं है। प्रमुख रचनाओं के शीर्षक निम्नवत् हैं-

1. प्रकाश पिपासा
2. साहस जीता है
3. जीवन-कला
4. यज्ञीय अभिलाषा
5. मन का धन
6. दिव्य-जीवन
7. राष्ट्र-साधना
8. धर्म और आचरण
9. गीत-गरिमा
10. गृहस्थ-गरिमा
11. कवि-धर्म
12. प्रबुद्ध-जनमानस
13. संतति निर्माण
14. जवानों से
15. कन्यादान-दिव्यदान
16. वैधव्य समस्या और समाधान
17. सदाचार की सदा

प्रमुख गीतों की पंक्तियाँ अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं-

1. व्यक्ति नहीं जीता है जग में, जीवित साहस ही जीता है।
   व्यक्ति मात्र की क्या विसात है,साहस ही तो विष पीता है।।("साहस जीता है")
2. ऐसा जीना भी क्या जीना, जैसे सभी जिया करते हैं।
   यूँ तो जननी, जन्मभूमि को पीड़ा सभी दिया करते हैं।।× × ×
   आओ पीड़ित मानवता को पीड़ा से हम मुक्ति दिलायें,
   मानवता मर गई मनुज की, आओ! फिर से उसे जिलायें।
   स्नेह और समता, ममता को हम मानव की साध बनालें,
   ये ही गुण, मानव-वसुधा पर स्वर्ग उतार दिया करते हैं।ऐसा जीवन.....
   ("जीवन-कला")

---

1. श्री ओम शरण 'विजय वर्गीय' प्रस्तावना ज्ञानरश्मि, पृष्ठ 2

3. कवि तुम गाने लगे लोरियाँ, कौन भैरवी राग सुनाये।
तुम मदहोशी लगे पिलाने कौन सृजन की सुधा पिलाये।।
तुमने कजरारे-नयनों में अपनी कामुक-कलम डुबोई।
काला मुँह हो गया कलम का इतनी तुमने कलम भिगोई।।
बाल्मीकि! अलकों में उलझे, कौन पलक की पीर मिटाये। कवि तुम गाने लगे .....
युग परिवर्तन की वेला में कवि! तुम ऐसे गीत सुनाओ।
जनमानस में नये सृजन की, नूतन युग की, हूक उठाओ।।
हर मानव पीड़ित-मानस के रिसते घावों को सहलाये। कवि तुम गाने लगे .....
("कवि-धर्म" शीर्षक से)

4. जब-जब भी प्रबुद्ध जनमानस बुद्धि भ्रष्ट होता है।
तब-तब ही युग-गरिमा का इतिहास नष्ट होता है।।× × ×
जब प्रबुद्ध जनमानस में से दूर भ्रान्ति होती है।
तब प्रबुद्ध जन के मानस में 'विचार-क्रान्ति' होती है।।
तभी क्रान्ति के अजर-अमर इतिहास लिखे जाते हैं।
युग परिवर्तन के ज्वारों में अथक ज्वार आते हैं।।
युग भी बदल जाया करता है परिवर्तन आ जाता,
जब प्रबुद्ध मानस अनीति पर क्रुद्ध, रूष्ट होता है। तब-तब ही युग .....
("प्रबद्ध जनमानस" शीर्षक से)

5. संतति को केवल जन्म न दें, किन्तु करें निर्माण भी।
जननी और जनक के कर्तव्यों का हो कुछ ध्यान भी।।
संतति का क्रम तो चलता है यूँ तो कीट-पंतग में।
रंग लेते हैं संतानों को वे भी अपने रंग में।।
संतानों पर अपना रंग चढ़ाये कुछ इंसान भी। संतति को केवल.....× × ×
शुचिता, श्रद्धा, स्नेह, मृदुलता, समता, करुणा भाव दें,
साहस शौर्य सृजन श्रम क्षमता के प्रति अविरल चाव दें।
सदाचार, नैतिकता के संग सीखें जन कल्याण भी। संतति को केवल .....
("संतति निर्माण" शीर्षक से)

6. आग लगी घर के चिराग से, मेरा भाग्य हुआ यूँ खोटा।
जिन-जिनने जयबोली मेरी, मेरा गला उन्हीं ने घोटा।।
मेरा परिचय सभी जानते, सीधा-साधा सदाचार हूँ।
सत्यनिष्ठ जीवन जीने का, एक निष्ठ अविरल विचार हूँ। ("सदाचार की सदा")

7. वह विवाह व्यवसाय मात्र है, जिसमें मोल किया जाता है।

पावन कन्यादान कृत्य का, धन से तोल किया जाता है।।
कन्या अपने आप रत्न है, जो घर की लक्ष्मी होती है।
शीलवान, संस्कृत शिक्षित जो, उसमें कौन कमी होती है।।
सेवा त्याग भव्य भावों का दिव्य-दहेज दिया जाता है। पावन कन्यादान.....×××
ऐसा कन्यादान उपेक्षित अब न किया जायेगा आगे।
रत्न प्राप्त कर, बेटे वाला अब दहेज की भीख न माँगे।।
अब विवाह 'व्यवसाय न होगा', यह युग-घोष दिया जाता है।पावन कन्यादान.....
आने वाले युग में बेटे-बेटी हरगिज नहीं बिकेंगे।
क्यों वाणी अब मूक रहेगी, क्यों पौरुष के पुत्र झुकेंगे।।
आखिर निर्दोषी-ओठों को कब तक कहो सिया जाता है। पावन कन्यादान .....

("कन्यादान दिव्यदान" शीर्षक से)

8. विधवा के ही लिए बनी क्या ? पीड़ा और पतन की दुनियाँ।
क्या विदुरों के लिए छूट है, रचे अटूट-सपन की दुनियाँ।।
विधवा भी नारी होती है, उसका यौवन भी यौवन है।
विधवा भी जीवित होती है, उसके भी तो होता मन है।।
क्या विधवा के पास न होती, मानव-स्पन्दन की दुनियाँ। विधवा के .....
समवयस्क विधवा-विधुरों का हम आपस में ब्याह रचायें।
तरुणी विधवा के विवाह पर हम अनुचित अंकुश न लगायें।।
पुर्नविवाह रचाकर रोकें पतन और पीड़ा की दुनियाँ।। विधवा के .....

("वैधव्य समस्या और समाधान" शीर्षक से)

4. जाग उठी तरूणाई- (तरुण गीत संग्रह)

जाग उठी तरुणाई (गीत संग्रह) का प्रकाशन गायत्री तपोभूमि, मथुरा द्वारा वर्ष 2003 में किया गया। इसकी प्रस्तावना में डा0 प्रणव पण्ड्या लिखते हैं-

"देश की युवा पीढ़ी के ऊपर दुहरी जिम्मेदारी है। जहाँ एक ओर उन्हें पुरानी पीढ़ी की गौरव पूर्ण विरासत को सहेजना है; वहीं उसमें अपनी भावधारा, श्रद्धा, प्राणशक्ति तथा अनुभव मिलाकर भावी पीढ़ी के हाथों सौपना भी है। हमें हर्ष है कि हमारे युवा भाई-बहिन इस विशिष्ट उत्तरदायित्व को गंभीरता पूर्वक वहन करने आगे आ रहे हैं। पिछले वर्षो से देश के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों पर 'युवा सम्मेलन' एवं 'युवा चेतना शिविर' के नाम से सम्पन्न हुए हैं। इन अवसरों पर भक्तिगीतों के साथ-साथ प्रेरक-प्रयाण गीत भी गाये जाते हैं।

श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' हमारे युग निर्माण मिशन के ऐसे कवि हैं जिनके प्रेरक गीत अखण्ड ज्योति पत्रिका में पिछले चालीस वर्षो से प्रकाशित होते रहे हैं। प्रस्तुत गीत वस्तुतः उनके द्वारा युवाओं के लिए ही लिखे गए 'अग्निगीत' है। इक्कीसवीं सदी युवाओं की है।"1

परम पूज्य गुरुदेव (आचार्य श्रीराम शर्मा) ने अपनी एक क्रान्तिधर्मी पुस्तिका में लिखा है कि- "इस सदी के प्रारम्भिक पच्चीस वर्षो में इतना कुछ कार्य हो जाएगा कि विगत् दो हजार वर्ष का कचरा बुहारा जा सके।"2

इसके लिए उनने भी आशा की किरण भावनाशील प्रतिभावानों-युवा शक्ति के प्रतिनिधि प्राणवानों को माना है। प्रस्तुत गीतों में आचार्य शर्मा के इन्हीं भावों को अभिव्यक्ति देकर उनका आह्वान युवाओं तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। इन गीतों में व्यक्त की गई अपेक्षाओं को युवक-युवतियाँ अवश्य पूरा करेंगे। युवा पीढ़ी जागेगी, बढ़ेगी, सृजन करेगी तो हमारा महान राष्ट्र गौरवान्वित होगा और समर्थ-सशक्त बनेगा।

'तारुण्य बोध' शीर्षक से कवि श्री मंगल विजय लिखते हैं-

"विश्व में जितने भी जीवन्त इतिहास है वे तरुणाई की ही रचना हैं। 'एकोऽहं बहुस्याम' के तरुण ब्रह्म के ब्रह्म स्फुरण ने ही सृष्टि का सृजन किया। प्रकृति का तारुण्य ही प्राकृतिक सुषमा के रूप में व्यक्त होता हैं। चिन्तन की तरुणाई ही ऋषित्व बोध बन गई। सुर संस्कृति की दुर्दशा से मर्माहत तारुण्य ही 'निश्चरहीन करहुं मही' का संकल्प बन बैठा। हनुमान का तारुण्य ही 'रामकाज कीन्हें बिना मोहि कहाँ विश्राम' की कसक बन बैठा। गीता का तारुण्य ने पार्थ के तारुण्य को झकझोरा तो महाभारत की विजयश्री वरेण्य हो गई। मानवीय करुणा के तारुण्य ने सिद्धार्थ को बुद्ध बना दिया। जब तारुण्य तपा तो आत्मजयी महावीर बन गया। गुरु गोविन्द सिंह का तारुण्य आततायियों के लिए चुनौती बन गया। दयानन्द, विवेकानन्द की तरुणाई देव संस्कृति का उद्घोष बन बैठी। शहीदों की बलिदानी तरुणाई से ही भारत माता की परतंत्रता की जंजीरें चटक गई। (प0पू0 गुरूदेव) पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य की युग वेदना की तरुणाई ने 'नवयुग' निर्माण की आधार शिला रख दी।" "3

आज भी विश्व विभीषिकाओं का समाधान तरुणाई को ही निहार रहा है, राष्ट्र के तारुण्य को पुकार रहा है, इस आशय से 'युवा उमंग-तरुण तरंग' के स्वर प्रस्तुत संकलन में कवि द्वारा रचे गये हैं। राष्ट्र की तरुणाई को

1. डा0 प्रणव पण्ड्या- भूमिका, जाग उठी तरुणाई, पृष्ठ 1
2. आचार्य श्रीराम शर्मा- नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी, पृष्ठ 22
3. मंगल विजय 'विजय वर्गीय'- तारुण्यबोध, जाग उठी तरुणाई, पृष्ठ 2

समर्पित होने के लिए युवा उमंगित होंगे और तरुणाई तरंगित होगी, ऐसा शोधकर्ता का विश्वास है।

प्रस्तुत तरुणगीत संग्रह में कवि के सोलह तरुणगीत संकलित हैं जिनके शीर्षक इस प्रकार हैं-

1. समूह गान
2. जुझारू जवानों को संदेश
3. जवानों से
4. आह्वान
5. देवसंस्कृति विश्वविद्यालय आह्वान
6. शान्तिकुंज अनुदान
7. शाश्वत-युवा चेतना
8. जागरण गान
9. युवा संकल्प
10. तरुण-संकल्प एवं संदेश
11. विदेश वासी- भारतीय तरुणों से
12. बहुआयामी-जवानी
13. तरुणाई
14. संकल्पित जवानी
15. आत्म बोध
16. जाग-नौजवान रे

प्रमुख गीतों के प्रेरणादायी अंश दृष्टव्य हैं-

1. लड़ रहे हैं आप सीमा पर अकेले ही नहीं,
आपके पीछे खड़ी है, शक्ति पूरे राष्ट्र की।
जान को लेकर हथेली पर डटे हैं आप जो,
आज उस पर है समर्पित भक्ति पूरे राष्ट्र की।× × ×
दे रहीं आशीष, माताएँ करोड़ों राष्ट्र की,
राखियाँ तुमको समर्पित है करोड़ों हाथ की।
भावना संवेदना, शुभ कामनाएँ कर रहीं,
स्वस्तिवाचन कर रहीं अनुरक्ति पूरे राष्ट्र की।। ("जुझारु जवानों को संदेश")

2. जवानों! निरर्थक जवानी नहीं है, रगो का गरम रक्त पानी नहीं है।× × ×
जलाओं नहीं भोग की भट्टियों को, गलाओ नहीं बज्र सी हड्डियों को।
करो क्षय न अनमोल, इन शक्तियों को, जुटाओं नहीं व्यर्थ सम्पत्तियों को।।
जवानो कि अनमोल यह जवानी, इसे कौडियों में गंवानी नही है। जवानों ! .....
("जवानों से" शीर्षक से)

3. राष्ट्र के युवा! तुम्हें बुला रही है भारती, जाग! नौजवान जाग! संस्कृति पुकारती ।
भोगवाद 'संस्कृति'की अस्मिता मिटा रहा, त्यागवादी-संस्कृति के मूल्य को घटा रहा।
भोगवाद दोष-दुगुणों को जन्म दे रहा,
शील-शौर्य-संस्कृति ही व्यक्ति को संवारती। जाग! नौजवान.....× × ×
जाग जाएं नौजवान और थाम लें कमान।निकल आएं समाधान, देश फिर बनें महान।
संगठित-नौजवान, शक्ति के प्रतीक है।

भारती पुकारती, आरती उतारती।।जाग! नौजवान .....("आह्वान" शीर्षक से)

4. देवसंस्कृति-वेदना अनुभव करे जो वह तरुण पीढ़ी बुलाई जा रही ।
कर सके गुरुदेव के संकल्प पूरे, बस वही 'विद्या' पढ़ाई जा रही ।।
कई शिक्षा संस्थाएं चल रही हैं, किन्तु पीढ़ी भोगवादी ढल रही है।
लक्ष्य जिनका मात्र अर्थोपार्जन है, वासनाएँ, कामनाएँ पल रही हैं।।
आचरण में अनैतिकता घुस गई है,और नैतिकता भुलाई जा रही है। देव संस्कृति....

× × × × × × × ×

आक्रमण सुर संस्कृति पर हो रहे, और हम अब संस्कृति ही ढ़ो रहे हैं।
तरुण पीढ़ी को अरे क्या हो गया है, आत्म विस्मृति के तिमिर में खो रहे है।।

वेदना गुरुदेव की उनको उछाने, बस वही जीवन जगाई जा रही है।देव संस्कृति ....
आप भी आएं सुसुप्त देवत्व जगाने, बनें बजरंग संस्कृति-सीता बचाने।
आपने व्यक्तित्व अपना ढल लिया तो, काम आएं राष्ट्र को ऊँचा उठाने।।
हनुमान, अर्जुन-मैत्रेयी लक्ष्मीबाई, की सुख संभावना दिखला रही है।देव संस्कृति.....

("देव संस्कृति विश्वविद्यालय आह्वान" शीर्षक से)

5. जाग! राष्ट्र के यौवन प्रज्ञा युग लाने को।
विकृत चिन्तन, विकृतियों को अब दफनाने को।।
श्रेय हेतु शान्तिकुंज का आह्वान युवकों का,
युग शिल्पी ने 'नवयुग' शिल्पकर धर दिया।
युग चेतना प्रवाहने कमाल कर दिया।। ("शाश्वत युवा-चेतना" शीर्षक से)

6. फिजाओ! अब न इतराओ, शरारत बहुत खलती हैं,
हवाओ! रुख बदल लो, अब युवा पीढ़ी मचलती है।
हमारे जोश को गुमराह अब तक हो किया तुमने।
हमें बहका, मजा उपभोग का अब तक लिया तुमने।।
जोश को होश आया है, जवानी अब संभलती है। हवाओं! रुख बदल दो .....
नशीले पदार्थो, दुर्गुण, व्यसन अब होश में आओ।
रूढ़ियों! कुप्रथाओ! अन्धविश्वासों! कि थम जाओ।।
समस्याओं को सुलझाने, जवानी अब निकलती है। हवाओं रुख बदल लो.....

("युवा संकल्प" शीर्षक से)

7. देव संस्कृति के अंशज हो, भूल न जाना अरे! जवानो!
तुम महर्षि के वंशज हो, अपनी गरिमा को पहचानो।।
बीज कहीं भी बोया जाए, पर अपना परिचय देता है।

बीज आम का या नीम का, यह तो उसका फल कहता है।।
मीठे रस से भरा हुआ हो, उसे आम कहा ही फल जानो। देव संस्कृति के वंशज..
जन्म हुआ भारत से बाहर, तो भी चिन्ता का न विषय है,
माता-पिता ढले हैं जिनमें, उन संस्कारों का आश्रम है।
ऋषियों का है रक्त प्रवाहित, ऋषिउपासकोंकी सन्तानो! देव संस्कृति के अंशज ....××
चिन्तन और चरित्र से अपने, भारत माँ की शान बढ़ाना,
निज संस्कृति की कीर्तिपताका, प्रमाणिक होकर फहराना।
छाप छोड़ सुर संस्कृति की आचारों से प्रतिभावानो! देवसंस्कृति के अंशज हो.....

("विदेशवासी-भारतीय तरूणों से" शीर्षक से) पृ0 16

8. मोर्चे सँभाल रे, सँभाल तू कमान रे। आज युग पुकारता- जाग नौजवान रे।
दुर्दशा ग्रसित समाज-हाथ छटपटा रहा, भ्रष्ट हुआ मंत्र- राष्ट्र सम्पदा मिटा रहा।।
मुँह सिला है न्याय का- मौन है विधान रे। आज युग पुकारता .....
खोखला कर रहीं समाज को कुरीतियाँ, मृत्यु भोज हो रहे- झुलस रही है बेटियाँ।
क्या ? नहीं रहा जवान-खून में उफान रे। आज युग पुकारता .....
राष्ट्र और संस्कृति पर प्रहार हो रहा, बढ़ रही अनीतियाँ अन्धकार हो रहा।
दे चुनौतियाँ इन्हें-वीर वक्ष तान रे। आज युग पुकारता।।
अनीतियों से जूझने के मोर्चे खुले हुए, पीढ़ियाँ बिगडने को दुर्व्यसन तुले हुए।
है दु:खी समाज और-तू बना अजान रे। आज युग पुकारता.....× × ×
राष्ट्र विपदा से ग्रसित है नौजवानों, हर दिशा ही दिग् भ्रमित है नौजवानों।
तुम्हीं पर आशा टिकी है राष्ट्र की अब, तुम्हारी ताकत विदित है नौजवानों।।

5. प्रज्ञावतार (काव्य ग्रंथ)

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा के जीवन, दर्शन एवं मिशन पर आधारित कवि का काव्य ग्रंथ 'प्रज्ञावतार' का प्रकाशन श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा गुरुपूर्णिमा 2002 को हुआ। इसका समर्पण करते हुए कवि श्री मंगल विजय लिखते हैं-

संभव नहीं पिपीलिका, करे सिन्धु को पार।
पर समर्थ की पीठ पा, सिन्धु तरे सौ बार।।
विश्व चेतना की उद्गाता, आत्म चेतना का अभिवंदन।
किया आत्म विस्तार इस तरह, करा दिया अणु से विपु दर्शन।।
मानव में देवत्व उदय कर, किया अवतरण स्वर्ग धरा पर।
उस परमात्म शक्ति के सन्मुख, आत्मशक्ति का आत्म समर्पण ।।

अवतरण शीर्षक से कवि के उद्गार अवलोकनीय है-

"असम्भव की सम्भव में परिणति, अकिंचन व्यक्ति के लिए अवतरण, ही होता है, इष्ट के अनुग्रह का। पैंतालीस वर्ष पूर्व की भाँति, अब ढलती आयु में भी वैयक्तिक असमर्थता तो थी ही, साथ उस समय की चढ़ती आयु का उत्साह भी नहीं था, ऐसे में 'युगावतार' स्तर की सत्ता पर 'महाकाव्य' की तो यह अकिंचन कल्पना भी नहीं कर सकता था। युगावतार के लीला संदोह को समझने की पात्रता ही कहाँ थी, इस अकिंचन में, क्योंकि- 'सोइ जानइ, जेहि देय जनाई' का तथ्य अकाट्य ही था। लक्ष्य था प.पू. का (आचार्य श्रीराम शर्मा) का आद्योपान्त जीवन एवं समग्र दर्शन तथा युग निर्माण मिशन का समग्र स्वरूप पर 'मन अति रंक मनोरथ राऊ' की स्थिति, कितना क्या कर पाई है, क्या कहा जाए। अन्ततोगत्वा 'प्रज्ञावतार' ग्रंथ का शुभारम्भ हो गया। न तों 'कामायनी' की तरह प्रतीकात्मक शैली का निर्वाह हो सका और न ग्रंथ के स्वरूप को साहित्यिक कसौटी के 'महाकाव्य' का रूप मिल सका। भाव संवेदनाएं तो बहती चली गई, इष्ट के गुणगान एवं रचे-पचे मिशन-अभियान की ओर।"1 शांतिकुंज एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार की प्रमुख श्रीमती शैलबाला पण्ड्या अपने उद्‌गार व्यक्त करती हैं-

"बुद्धावतार का उत्तरार्ध प्रज्ञावतार है, यह परम पूज्य गुरुदेव (आचार्य श्री राम शर्मा) लिखकर गये है एवं एक महान स्थापना के द्वारा जन-जन के मन में इक्कीसवीं सदी के उज्जवल भविष्य से युक्त होने की भविष्य वाणी कर गये हैं। आदरणीय भाई श्री मंगल विजय जी ने जिन भावों के साथ इस सुन्दर काव्य में प्रज्ञावतार की महाकाल रूप में आयी सत्ता का चित्रण किया है, यह पढ़कर रोमांच ही उठता है।उनके इस काव्य में शौर्य भी है- स्नेह संवेदना भी है एवं गुरुसत्ता का (आचार्य शर्मा) का जीवन दर्शन भी। भाई श्री मंगल विजय जी विगत पैंतीस वर्षो से भी अधिक समय से युग निर्माण मिशन से जुड़े हैं एवं उनने अगणित कविताएं लिखी हैं। भाव संवेदना को अपनी पंक्तियों में पिरोते हुए कितनी सादगी से वे अपनी आराध्य सत्ता के विषय में लिख जाते हैं-"2

"जो नहीं दे सका कोई भी आज तक पूज्य गुरुदेव वह दे दिया आपने,
प्राण में प्रेरणा भाव संवेदना, बुद्धि को श्रेष्ठ चिन्तन दिया आपने।"

समालोचना- यह श्री मंगल विजय के काव्य की ही विशेषता है कि इन कविताओं के संकलन में 'प्रज्ञावतार' की विराट सर्वांगपूर्ण सत्ता का स्वरूप

1. श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय'- अवतरण, प्रज्ञावतार, पृष्ठ 5-6
2. श्रीमती शैलबाला पण्ड्या- कुछ शब्द, प्रज्ञावतार, पृष्ठ 4

दृष्टिगोचर होता है। उनके इस काय ग्रंथ ने ढेरों व्यक्तियों को प्रेरणा दी है, उनके जीवन में प्राणों का संचार किया है एवं कइयों के जीवन की दिशा धारा को बदला है।

काव्य हृदय को स्पर्श करता है व एक प्रकार से बौद्धिकता के साथ एक भावनात्मक क्रांति भी कर जाता है। श्री मंगल विजय जी की कविताओं में यही मर्म छिपा है। इसीलिए 'प्रज्ञावतार' रूपी यह ग्रंथ अत्यधिक मूल्यवान बन पड़ा है।

इस ग्रंथ की वैचारिक परिक्रमा करने से एक ही निष्कर्ष सामने आता है कि यह काव्य-कृति शब्दों के छंद-बंध के प्रबन्ध के साथ श्री मंगल विजय की गुरु भक्ति का अनुबन्ध भी है। प्रज्ञावतार के गीत, उनके आराध्य प्रेम के प्रतीक हैं। सद्गुरु प्रीति की इसी प्रतीति के लिए कवि के द्वारा बनाए गये "शब्द मन्दिर" की विचार परिक्रमा पूरी करने के बाद, अब क्षण आ गया है- इस मन्दिर के गर्भगृह में प्रवेश करने का, जहाँ प्रज्ञावतार की चेतना विराजमान है। काव्य पठन के बाद पाठक उसकी अनुभूति कुछ वैसी ही करेंगे, जैसी कि शोधकर्ता को स्वयं हुई। डा0 प्रणव पण्ड्या ने अपनी भावाभिव्यक्ति कुछ इस प्रकार की-

"प्रज्ञावतार की चेतना छुअन से, प्राणों के नील-कमल खिल जाते हैं।
इसकी स्वर लहरी के आलिंगन से, हृद वीणा हौले से झंकृत हो जाती है।।
गुरुभक्ति की धुन बजने लगती मुझमें, तन-मन की पंखुड़ियाँ खिल जाती हैं।
मन का मैल पिघलता पल में, जीवन के पाप-शाप धुल जाते हैं।।
सदगुरु के करुणा जल की वर्षा से, अन्तस में शत-शत झरने वह जाते हैं।

वे आगे लिखते हैं कि- "सहृदय पाठक 'प्रज्ञावतार' के काव्य मन्दिर में प्रवेश करें। इसके गर्भगृह में विराजमान सद्गुरु की चेतना की अर्चना करें। इसके चिन्मय स्वरूप में तन्मय हों और कवि की काव्यनुभूति में लीन हों।"1

'मंगल कामना' शीर्षक से साहित्य मनीषी श्री वीरेश्वर उपाध्याय के भावोद्गार अवलोकनीय हैं-

"मंगलमय श्री राम की कथा सुमंगल मूल।
कीन्हीं मंगल विजय नेकरश्रम युग अनुकूल।
भक्ति भाव-भागीरथी, सरयु-ब्रह्म विचार।
कर्मकथा-यमुना सहित तीर्थ राज साकार।।

1. डा0 प्रणव पण्ड्या- शब्द परिक्रमा, प्रज्ञावतार

जग मंगल के भाव से, पढ़े,सुने अपनाय।युग प्रज्ञा-युग-देवता का प्रसाद मिल जाय।
कलिकी कुटिलकुचालको, काटेब्रह्म विचार।जनहित केशुभभाव का भक्ति करे संचार।।
क्षुद्र स्वार्थ यमपाश को कर्म कथा देकाट।त्रिविधलाभ पाजाय नर,जो सेवे यह घाट।
'मंगल' भावों कोमिले श्रेष्ठ'विजय' उपहार।श्रम यहमंगल विजयका हो सार्थक साकार।।
युग ऋषि की पावनकथा से जागे युग शक्ति।स्वार्थत्याग, परमार्थमें होसबकी अनुरक्ति।।
मानव में देवत्व का हो फिर से संचार।धरती पर हो स्वर्ग का गरिमामय अवतार।।
सभी सुखी जीवन जियें, सब ही रहें निरोग।हे प्रभु! सबकाहो भला, दूर रहें दुख-भोग।"1

प्रज्ञावतार काव्य के कुछ स्थल बडे मोहक हैं। जैसे- 'विकृति' के प्रसंग में कवि में दार्शनिकता सघन हो गई है-

"पता नहीं अंकुरित हुआ कब, अहंकार आ कलुषित भाव।
होने लगा पल्लवित पुष्पित, द्वैत जन्य विकृति दुर्भाव।।
बन बैठी 'भोग्या' वसुन्धरा, प्रकृति नटी से खेला खेल।
शोषण में जुट गया प्रकृति से, मानव बिठा न पाया मेल।। × × ×
भोगवाद के विकृत चिन्तन का ऐसा निकला परिणम।
पर्यावरण-प्रदूषण फैला, मनुज भोग का हुआ गुलाम।। × × ×
चिन्तन की विकृति ही, सारी, विकृतियों का कारण जान।
समाधान, 'प्रज्ञावतार', ही, और विचार क्रांति अभियान।।

आचार्य श्रीराम शर्मा (गुरुवर) के सद्गुरु श्री स्वामी सर्वेश्वरानन्द जी का मिलन प्रसंग भी ऐसा ही है। उसमें अन्योक्ति के काव्य अलंकरण से प्रबोध के स्वर फूटते हैं-

"बाहर की आखें बंद करो! अन्तर की आँखों से देखो।
क्या-क्या थे, क्या-क्या करना है, अपने स्मृतितल पर लेखो।।× × ×
देखा अलमस्त कबीरा को, गुरु बोले, 'तुम ही थे कबीर'।
जन-जन को भ्रम से मुक्त किया, दो टूक बात वाले फकीर।। × × ×
चौबीस वर्ष तक पुरश्चरण-गायत्री का करना होगा।
हर वर्ष चौबीस-चौबीस लाख-जपकर नियम से चलना होगा।।× × ×
आँवलखेड़ा हो गया धन्य, युग प्रज्ञा ने अवतार लिया।
देवात्म हिमालय की ऋषिसत्ता, का भी शुभ आगमन हुआ।।"

वन्दनीया माता जी (श्रीमती भगवती देवी शर्मा) के अवतरण को कवि ने शब्द सौन्दर्य के द्वारा अनूठी अभिव्यक्ति दी है-

1. श्री वीरेश्वर उपाध्याय- मंगल कामना, प्रज्ञावतार

"पुलक उठा, चेतना जगत भी, माँ भगवती-आगमन से।
नव युग की भूमिका बन गई, शिव की शक्ति अवतरण से।।

प्रकृति चित्रण के प्रसंगों में कवि ने काव्य की माधुरी बडी मोहक रीति से झलकती है-

"बहते झरनों का स्वर मानों, मृदु संगीत सुनाना था।
हिम नग की प्राकृतिक छटा लख, मन किंचित न अघाता था।।"

शांतिकुंज के प्रारम्भिक लघु रूप के बारे में कवि के कथन में अनगिनत बातें एक साथ समा जाती है-

"भावी शांतिकुंज का इसमें वृहद स्वरूप छिपा था।
इसीलिए अब माताजी का, तप बल यहाँ खपा था।।"

धर्म और विज्ञान के मिलन के बारे में कवि की काव्योक्ति बड़ी भाव-प्रवण है-

"युग ऋषि की पीड़ा तीव्र हुई, करने को धर्म-विज्ञान मिलन।
मानव के पूर्ण विकास हेतु, दोनों का समुचित संयोजन।।"

राष्ट्र सन्त आचार्य श्रीराम शर्मा का 'शहीद' उस समय जाग उठा, जब कवि की पीड़ा परतंत्र भारत माता के प्रति इन शब्दों में व्यक्त हो उठी।

"भारत माँ रह गई बिलखती, बल वैभव नाकाम हुआ।।
'जगतगुरु' 'सोने की चिड़िया' वाला देश गुलाम हुआ।

और पू. श्रीराम शर्मा आचार्य 'श्रीराम मत्त' के नाम से गाँधी जी के स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। एक बार सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुए .....

"लहूलुहान हो गये, लेकिन झँडा मुँह में दबा लिया।
हो बेहोश गिर पड़े, लेकिन गौरव ध्वज का बचा लिया।।"

और इस प्रकार कवि के शब्दों में-

"साधक की गौरव-गरिमा को गिरने नहीं दिया जिसने।
राष्ट्र भक्त-स्वयं सवेक का गौरव बचा लिया उसने।।"

श्रीमती भगवती देवी शर्मा (वंदनीया माता जी) की सामाजिक विकृति दहेज के दुष्परिणाम के प्रति वेदना कवि ने इन शब्दों में छलछला दी है-

"जो बहुएं गाजे-बाजे से, जिस द्वार से लाई जाती हैं।
उस ही द्वारे से कुछ दिन में, मरघट पहुँचाई जाती हैं।।"

अत: माताजी (श्रीमती भगवती देवी शर्मा) के जाग्रत मन्यु ने 'नारी जागरण' का नारा बुलन्द किया-

"महिला जागरण पत्रिका से माता जी क्रान्ति मचाती थी।
विकृति कुरीति आडम्बर की घातक हानियाँ बताती थीं।।"

कवि के शब्दों में माताजी (श्रीमती भगवती देवी शर्मा)ने समाज को यूँ झकझोर डाला.....

"जिस घर में विधवा रोती है, आँसू परिवार बहाता है।
यह क्रूर समाज उसी घर में, निष्ठुर हो खाने जाता है।।"

और कवि के शब्दों में माता भगवती देवी शर्मा ने 'नारी युग' की घोषणा कर दी-

"नारी संवेदन, साहस ही, नवयुग का भार संभालेंगे।
मानवी मूल्य के अवमूल्यन-संकट से वहीं उबारेंगे।।"

इस प्रकार श्री मंगल विजय की लेखनी भक्ति-शक्ति, शांति-क्रान्ति की विविध मनोदशाओं का जीवन्त चित्रण करते हुए समापन की ओर बढ़ती है।

आचार्य शर्मा की अन्तिम यात्रा (महाप्रयाण) के बारे में कवि की अभिव्यक्ति अत्यन्त मार्मिक है-

"अन्तिम यात्रा-पथ की सीमा, हो गयी सहज ही शांतिकुंज।
थे गुरुवर भी तो शांतिपुंज, था शांतिकुंज प्रियतम निकुन्ज ।।

माताजी श्रीमती भगवती देवी के बिछोह का प्रसंग भी ऐसा ही मार्मिक है-

"करुणार्द्र हुई करुणा, ममता का उर विदारण।
चिर मौन कर लिया था, करुणामयी ने धारण।।"

ऐसे ही अनेक प्रसंगों के साथ काव्य-कथा बड़ी भावपूर्ण रीति से आगे बढ़ती है। इस कथा के अन्त में कवि के शब्द स्वयं काव्य का परिचय देते हैं-

"प्रज्ञावतार की यह गाथा, युग परिवर्तन की गाथा है।
कलियुग का अन्त हो रहा है, निश्चित ही सतयुग आता है।।"

इस महाकाव्य की महिमा कवि के ही शब्दों में अवलोकनीय है-

"चिन्तन व मनन करेंगे जो, प्रेरणा-भाव वे पाएंगे।
प्रज्ञावतार की लीला के, संगी साथी बन जाएंगे।।
मानव का जन्म धन्य होगा, इतिहास रचेंगे नवयुग का।
प्रज्ञावतार के साथ-साथ सन्दर्भ बनेंगे सतयुग का।।"

काव्य ग्रन्थ में पिरोये मुक्तक-

(i) विकृत चिन्तन और आचरण जनमानस को भ्रामक थे।
गायत्री के और यज्ञ के दर्शन परमावश्यक थे।। (धर्मतंत्र से लोक शिक्षण)

(ii) सादा जीवन उच्च विचारों के साधक थे।
और लोकमंगल के अनुपम आराधक थे।। (गृहस्थ तपोवन)

(iii) संस्कृति वही, किया करती जो अनगढ़ मानव को संस्कारित।

इसी लक्ष्य को पूरा करने संस्कारों को किया प्रसारित।।

(संस्कृति और संस्कार)

(iv) यज्ञीय संस्कृति का गौरव नहीं विदित था।

अनजान लोक मानस तभी तो दिग्भ्रमित था।। (यज्ञीय संस्कृति)

6. पर्व पीयूष- पर्वपीयूष (गीत संग्रह) का प्रकाशन 'मातृसत्ता श्रद्धान्जलि पुस्तक माला' के क्रम 103 के अन्तर्गत युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा वर्ष 1995 में किया गया। कवि के गीतों का संकलन एवं सम्पादन पं. लीलापत शर्मा जी ने किया। भूमिका में पंडित लीलापत शर्मा जी लिखते हैं-

"भारतीय संस्कृति संस्कारों एवं पर्वो की संस्कृति रही है। इसी ने उसे देव संस्कृति की गरिमा प्रदान की है। किन्तु इन दिनों पाश्चात्य भोगवादी-संस्कृति के दूषित प्रभाव ने व्यक्ति, परिवार, समाज को संस्कारों से वंचित एवं पर्वो को विकृत स्वरूप से भ्रमित किया है। "पर्व पीयूष" संस्कारों एवं पर्वो के स्वस्थ्य रूप एवं प्रेरक स्वरूप की झाँकी प्रस्तुत करता है ताकि हम संस्कारों की परम्परा को पुनः प्रारम्भ कर सकें। यही देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान है।

यह संकलन गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं के लिए अधिक उपयोगी है क्योंकि उन्हें विभिन्न संस्कार कराते समय एवं पर्व मनाते समय उपयुक्त प्रेरक गीत चाहिए।"1 "पर्व पीयूष" में उन्तीस गीतों का संग्रह हैं। प्रमुख गीतों के शीर्षक इस प्रकार है-

1. गुरु-अनूठी उपलब्धि
2. स्वर्ग-सृजेता-गायत्री
3. यज्ञ का तत्वदर्शन
4. गंगा-गायत्री अवतरण
5. गुरु पूर्णिमा प्रेरणा
6. श्रावणी संदेश
7. नवरात्रि-साधना
8. विजयादशमी का संदेश
9. रामनवमी पर्व
10. प्रकाश पर्व
11. होलीनव-युग की
12. बासन्ती-आमंत्रण
13. शिक्षकं-राष्ट्र-ब्राहमण
14. यज्ञ-गरिमा
15. शिखा का स्वरूप
16. संस्कार परम्परा
17. जन्मदिवस संदेश
18. विवाह शुभ कामना
19. सामूहिक आदर्श विवाह
20. साधु-ब्राह्मण गरिमा
21. स्वतंत्रता को नमन
22. बेटी की विदा

प्रस्तुत गीतों के अंश अवलोकनीय हैं-

---

1. पं. लीलापत शर्मा- भूमिका, पर्वपयूष

1. गायत्री ही गठन करेगी, अखिल विश्व परिवार का।
नामकरण होने वाला है, 'स्वर्ग' इसी संसार का।। × × ×
'प्रज्ञा' जाग रही है युग की, अब विवेक आधार है।
अब आडम्बर अंधविश्वासों पर हो रहा प्रहार है।।
पथ प्रशस्त 'वेदमाता' के ज्ञान यज्ञ के विस्तार का। नामकरण .....
राष्ट्र और वेदमाता के झगड़े, अब समाप्त हो जाएंगे।
एक 'राष्ट्र-परिवार' बनेगा, बंधु भाव अपनाएंगे।
'ध्वंस', विश्वमाता कर देगी, नफरत के संसार का। नामकरण .....
नर-नारी, काले-गोरे का भेद सभी मिट जाएगा।
सबकी प्रतिभाएं निखरेंगी, वह 'प्रज्ञा युग' आएगा।।
अब समुचित संरक्षण होगा, सबके ही आधार का। नामकरण .....

("स्वर्ग सृजेता-गायत्री" शीर्षक से)

2. किया यज्ञ, लेकिन विचारा नहीं, हृदय बीच में, यज्ञ धारा नहीं है।
हमें तत्वदर्शन समझ में न आया, न हमने कभी यज्ञ का मर्म पाया।
तभी जिन्दगी ने उतारा नहीं है। किया यज्ञ लेकिन.....
सभी यज्ञमय जिन्दगी जी सकें यदि। सभी मिल समर्पण सुधा पी सकें यदि।
तो 'स्वर्ग' यज्ञ ने कब संवारा नहीं है। किया यज्ञ लेकिन.....

("यज्ञ का तत्वदर्शन" शीर्षक से)

3. कब आओगे कृष्ण कन्हाई, फिर से श्याम घटा घिर आई।
भोगवाद की सघन घटाएं, भादों के घन सी मंडराएं।।
कैसी अंधियारी, घिर आई।। कब आओगे..... × × ×
हैं धृतराष्ट्र मोह के अंधे, दुर्योधन के धोखे-धंधे।
दु:शासन की बेशरमाई। कब आओगे.....
देव संस्कृति बुला रही है, करो दिग्विजय, समय यही है।
परिवर्तन की बेला आई।। कब आओगे.....

("कन्हाई की याद" शीर्षक से)

4. देवी की पूजा करते हैं, दो-दो नवरात्रि मनाते हैं।
फिर भी सम्मान न नारी का करते हैं, उसे सताते हैं।।
देवी की पूजा कहती है, हम नारी का सम्मान करें।
वह जननी है, जग जननी है, दैवी-गुण का गुण जान करे।।
जो देती रहती जीवन भर, क्या उसका कर्ज चुकाते है।। देवी की पूजा.....
माँ गायत्री की छवि का ही, हर नारी में दर्शन हो जब ।

साधक का मातृशक्ति के प्रति, सार्थक अर्चन-वन्दन हो तब।।
नारी शोषण, उत्पीड़न के सब द्वार बंद हो जाते है। देवी की पूजा .....× ××
नवरात्रि साधना, सामूहिक संगठन शक्ति की ऊर्जा है।
दुष्टता दमन के लिए वही अरिदल-विनाशनी दुर्गा है।।
जब देव संगठित होते है, दिग्विजय तभी कर पाते है।। देवी की पूजा .....

("नवरात्रि साधना" शीर्षक से)

5. जगो! ब्रह्मवर्चस्व!! राष्ट्र के, गरिमा पहिचानो।
गरिमामय मस्तिष्क तुम्हीं हो, यह रहस्य जानो।।× × ×
विकृत हो मस्तिष्क अगर तो जीना दूभर है।
इतना ही क्यों, शारीरिक अनिष्ट का भी डर है।।
तुममे ही तो पूरा राष्ट्र प्रभावित होता है,
मनचाहा निर्माण, सहज संभावित होता है।।
तुम्हीं 'राष्ट्र निर्माता' हो, यह तथ्य सत्य मानो। गरिमामय मस्तिष्क .....× × ×
पौरुष का मंत्र दो इन्हें उत्कृष्ट विचारों से।
नैतिकता का पाठ पढ़ाओ! अब आचारों से।।
चिन्तन और चरित्र, नहीं विकृत होने पाए।
कहीं ने इतिहासों में, शिक्षक को कोसा जाए।।
मानस-पुत्र तुम्हारे हैं, गैरों के मत मानो। गरिमामय मस्तिष्क.....

("शिक्षकं-राष्ट्र-ब्राह्मण" शीर्षक से)

6. ज्यों फहराती हुई पताका, मन्दिर की पहचान है।
वैसी ही शरीर मंदिर की, 'शिखा' अनूठी शान है।।× × ×
आध्यात्मिक संचार व्यवस्था, ऋषियों ने अपनायी थी।
इस माध्यम से अंतरिक्ष से अमित शक्तियाँ पायीं थी।।
धरती-अन्तरिक्ष का इससे ही आदान-प्रदान है। वैसे ही शरीर मन्दिर.....×××
इसको स्थापित कर, चिन्तन को उत्कृष्ट बनाएं हम।
अपने जीवन में ऐसी ही, 'धर्मध्वजा' फहराएं हम।
बिना ध्वजा का मन्दिर कैसा, खंडहर सा सुनसान है।। वैसे ही शरीर.....

("शिखा का स्वरूप" शीर्षक से)

7. जब-जब विचार क्रान्ति का संकल्प ले लिया है।
यह करिश्मा विचारों की क्रान्ति ने किया है।।
केवल न व्यक्तियों को, युग को बदल दिया है।।
यों राम और रावण, कहने को व्यक्ति ही थे,

उनके स्वरूप लेकिन, चिंतन की शक्ति ही थे।

श्रीराम के विचारों ने श्रेय ले लिया है। जब जब विचार क्रान्ति .....×××

युग, फिर विचार की ही तो क्रान्ति माँगता है,

विकृत-विचार धारा की शांति माँगता है।

इस विश्व वेदना को गुरुदेव ने दिया है। जब-जब विचार क्रान्ति.....

("विचार क्रान्ति"शीर्षक से)

7.युग संगीत (गीत संग्रह)-

युग संगीत (गीत संग्रह) का प्रकाशन युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा वर्ष 1985 में किया गया। इस गीत संग्रह में कवि के चालीस गीत संग्रहित है। प्रमुख गीतों के शीर्षक इस प्रकार से है-

1. स्वाध्याय-गरिमा
2. भोगवाद नहीं त्यागवाद
3. आचरण संतुलन
4. संस्कृति कलश से
5. प्रबुद्ध वर्ग से
6. समय-दान
7. क्रूरता की अति
8. साधु-ब्राह्मण-गरिमा
9. युग-समाधान-ब्राह्मणोचित जीवन
10. शिक्षा और विद्या
11. मातृ वन्दना
12. संस्कृति प्रसार
13. प्रज्ञावतार
14. युग स्रष्टा के अनुदान
15. मुक्ति के क्षण
16. वसुधैव-कुटुम्बकम
17. निर्माण करना है
18. तपाग्नि
19. बासन्ती नारी
20. युग साधना
21. दिव्यता का अवतरण

कतिपय गीतों की पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं-

1. मन की सहज-प्रवृत्ति, पतन को कर लेती स्वीकार।
'स्वाध्याय' संरक्षक बनकर, करता है प्रतिकार।।
इसलिए ऋषियों ने माना 'स्वाध्याय' अनिवार्य ।
भोजन सा अनिवार्य मानते रहे, सदा ही आर्य ।।
जब भी पतन, पराभव में फँस, होता मनुज निराश।
सद्ग्रंथों का स्वाध्याय, देता था उन्हें प्रकाश।।
स्वाध्याय से मिलता था, सद्चिंतन का उपहार। स्वाध्याय संरक्षक.....
स्वाध्याय ने किया, जाने कितनों का निर्माण।
जीवन परिवर्तित होता था, पा ऋषियों का ज्ञान।।
मिल सकते है ऋषि-मुनियों से, सभी गरीब-अमीर।

स्वाध्याय से मिल जाते हैं, तुलसी, सूर, कबीर।।
भेदभाव के बिना, सभी का है उन पर अधिकार।। स्वाध्याय संरक्षण .....

("स्वाध्याय-गरिमा" शीर्षक से)

2. चलेगा भोगवादी क्रम, तो शोषण रुक नहीं सकता।
बने जग त्यागवादी, फिर उत्पीड़न टिक नहीं सकता।।
जरूरी रोटी-कपड़ा जो, उसे 'उपयोग' कहते हैं।
अनावश्यक-सुखों के साधनों को 'भोग' कहते हैं।।
अनावश्यक सुखों से, शोषणों का दौर चलता है।
कि भूखे-पेट, नंगी-लाश पर ही, भोग पलता है।।
भोग की वृत्ति रहते, मनुज क्रन्दन रुक नहीं सकता। बने जग त्यागवादी.....
इसी कटु सत्य को ही दृष्टि में रख, देव संस्कृति ने।
बताया सादगी सीखों न डूबो भोग-विकृति में।।
कि जीवन ब्राह्मणोचित जी, फँसों मत भोज दल-दल में।
बची पुरुषार्थ की पूँजी, लगाओ लोकमंगल में।।
विषमता रह नहीं सकती, कुचिंतन रुक नहीं सकता।। बने जग त्यागवादी.....

("भोगवादी नहीं त्यागवाद" शीर्षक से)

3. अब बिगड़ने लगा संतुलन सृष्टि का, क्योंकि बिगड़ा हुआ आचरण व्यष्टि का।
'पिण्ड ब्रह्माण्ड है,' यह समझता मनुज, संतुलित पिंड के कार्य करता मनुज।।
'आत्मवत् सर्व भूतेषु' की भावना, फिर कराती वह, सर्वार्थ की साधना।
क्षय हुआ 'विश्व-परिवार' की दृष्टि का। अब बिगड़ने लगा.....× × ×
धर्म, बकवास की लाश ढोता नहीं, विश्व-कल्याण, बातों से होता नहीं।
धर्म को धारणा, आचरण चाहिए, और आदर्श का अनुकरण चाहिए।।
है यही मार्ग, आदर्श की पुष्टि का। अब बिगड़ने लगा.....

("आचरण संतुलन" शीर्षक से)

4. संस्कृति-कलश! तुम्हें हम विश्वास दे रहे है। पहरायेंगे पताका,व्रत आजले रहे है।
हम देव संस्कृति का, फिर जागरण करेंगे। संदेश ले इसी का, लाखों-कदम बढ़ेंगे।।
अब हर मनुज, सुसंस्कृत सा आचरण करेगा, सोये हुए मनुज में देवत्व फिर भरेगा।
पूरी उसे करेंगे, जो बात कर रहे है। संस्कृति पुरूष!तुम्हे हम विश्वास दे रहे है।×××
नैतिक सभी बनेंगे, तो आत्म बल बढ़ेगा, आदर्श आचरण के पथ पर मनुज चलेगा।
हर आचरण मनुज का, होगा विवेक सम्मत, पुरुषार्थ कर बनेगा, सम्पन्न और उन्नत।।
कुत्सा, कुरीतियों के आवास ढह रहे है, संस्कृति पुरुष! तुम्हें हम .....

("संस्कृति-कलश" शीर्षक से)

5. है भूमिका सदा से गरिमामयी तुम्हारी।
जब जब थकी मनुजता, हिम्मत न तुमने हारी।।
हर दम समाज-रथ केचालकतुम्हीं रहे हो,प्रहरी समान व्रत के पालक तुम्ही रहे हो।
पर आज क्यों तुम्हें ही, चालक! चढ़ी खुमारी। है भूमिका सदा से .....
होकर प्रबुद्धचालक,संज्ञाविहीन क्यों हो, प्रतिभा-प्रखर अरे! तुम प्रज्ञा विहीन क्यों हो।
चाणक्य वंशजो! क्यों गरिमाअरे विसारी। है भूमिका सदा से.....("प्रबुद्ध वर्ग")

6. दो निमंत्रण नहीं, क्रूरतम-काल को। दो 'समय-दान' केवल 'महाकाल' को।।
अन्यथा एक दिन काल की क्रूरता, छीन लेगी, अरे! प्राण की सम्पदा।
छोड़ना ही पड़ेगा सभी को यहाँ, और रह जायेंगे, सब जहाँ के तहाँ।।
चल सकोगे नहीं, एक भी चाल को। दो समय-दान .....× × ×
है मनुजता बहुत ही दु:खी इस समय, भाव-संवेदना की कमी इस समय।
अब-मनुज पीर हरने समय-दान दो, दर्द के घाव भरने, समय-दान दो।।
भावना से सजाओ! हृदय-थाल को। दो समय दान .....("समय दान")

7. मानव क्रूर हुआ है इतना, पशुता को भी मात कर रहा।
मानवीय-मर्यादाओं पर, निर्मम हो आघात कर रहा ।।× × ×
'रक्तपात करना' ही, उसने की है धर्मो की परिभाषा।
उसे धार्मिक कहता है वह, जो हो मनुज-रक्त का प्यासा।।
कमर कस रखी है अधर्म पर, और धर्म की बात कर रहा। मानव.....
("क्रूरता की अति" शीर्षक से)

8. साधु, ब्राह्मणो से शोभित था उस दिन भारत-भारत।
जिस दिन ब्रह्म तेज से मंडित मुख-मंडल का लाल।।
चरणों पर अर्पित था जन श्रद्धा का सहज प्रवाह।
उमड़ा करता था चरणों पर श्रद्धा-सिंधु अथाह।।
नत मस्तक होते चरणों पर महलों के सम्राट।
जबकि फूँस की कुटिया में वे करते थे निर्वाह।
त्याग-तपस्या के चरणों में झुक, था भोज निहाल।। जिस दिन .....× × ×
साधु! ब्राहमणो! पुन: पढ़ो अपनी गरिमा के छन्द ।
है वशिष्ट, चाणक्य और सांदीपन की सौगन्ध।।
छोड़ संकुचित स्वार्थ-सिद्धियाँ, साधो फिर सर्वार्थ,
जनमानस अज्ञान ग्रसित है, काटो तम के बंध ।
फिर से हो इतिहास तुम्हारा गुरुतर और विशाल।। जिस दिन ब्रह्म तेज.....
("साधु-ब्राह्मण-गरिमा" शीर्षक से)

9. ब्राह्मणोचित अगर जिन्दगी जी सकें, तो स्वयं व्यक्ति, भगवान बन जायेगा।
व्यष्टि ही जब, समस्या बनेगा नहीं, सृष्टि भर का समाधान हो जायेगा।।
'ब्राह्मणत्वं' लोभ का मोह का त्याग है, 'ब्राह्मणत्व' विश्व बन्धुत्व का राग है।
ब्राह्मण के लिए, ब्रह्ममय सृष्टि है, आत्मवत्-भाव ही 'ब्राह्मण-दृष्टि' है।।
भाव कैसे रहेगा, घृणा, द्वेष का, जबकि 'अद्वैत' का भाव हो जायेगा।ब्राहमणोचित...
("युग-समाधान-ब्राहमणोचित जीवन" शीर्षक से)

10. हो शरीर कितना भी सुन्दर, प्राण बिना निष्प्राण।
'शिक्षा' तो है वाह्य-कलेवर, 'विद्या', शाश्वत ज्ञान।।
शिक्षा देती वाह्य जगत की जानकारियाँ मात्र।
जिनसे बनता व्यक्ति, वाह्य जीवन जीने का पात्र।।
'विद्या' आत्म चेतना छूकर, करती आत्म विकास।
मानवीय क्षमताएं विकसा, जगा आत्म-विश्वास।।
'आध्यात्मिक सामर्थ्यवान' हो जाता विद्यावान। शिक्षा तो है वाह्य कलेवर.....×××
'शिक्षा' रावण चारवाक हिटलर को देती जन्म।
रौंद दिया करते वे निर्दय, मानवता का मर्म।।
'विद्या' से ऋषित्व जगता है, गुरुता जागी जाग।
उज्जवल ज्ञानोदय होता है, तमसा जाती भाग।।
करती है चाण्क्य-चन्द्रगुप्त, शिवा-समर्थ निर्माण ।। शिक्षा तो है वाह्य कलेवर.....
("शिक्षा और विद्या" शीर्षक से)

11. संस्कृति अनिवार्य है, सतयुग सृजन को।संस्कृति अनिवार्य है, पशुता दमन को।।
'संस्कृति' ही मनुज की वह श्रेष्ठता है, मिली जिससे प्राणियों में श्रेष्ठता है।।
देह में है 'प्राण' का स्थान जो भी, मनुज में है 'संस्कृति' का मान वो ही।।
देव-दुर्लभ यह बनाती मनुज तन को। संस्कृति अनिवार्य है.....× × ×
आज संस्कृति से विमुख हम हो रहे हैं, इसलिए तो पतन, पीड़ा ढो रहे हैं।
नर-पिचाशों सा, मनुज अब बौखलाया, क्योंकि अंकुश संस्कृति का रख न पाया।
कौन रोके फिर मनुजता के पतन को। संस्कृति अनिवार्य है .....
("संस्कृति-प्रसार" शीर्षक से)

12.बेचैन थी मनुजता,संस्कृतिकराहती थी।फिर से धरा 'अनूठा-अवतार' चाहती थी।।××
अवतार हो गयातबबस 'मत्स्य'रूप जैसा। मनु का बना कमंडल फिर ग्राम आँवलखेड़ा।
पिता रूपराम शर्मा और दानकुंवरि माता। थे दिव्य पुरुष दोनों श्रीराम जन्मदाता।।
'प्रज्ञावतार' का ही भू पथ निहारती थी। फिर से धरा अनूठा.....× × ×
'प्रज्ञावतार' का अब विस्तार हो रहा है।अज्ञान का चहुं दिशि प्रतिकार हो रहा है।।

निर्माण व्यक्तियों कापरिवार का हुआ है।फिर भव्य-भावना ने मानव हृदय छुआ है।।
संवेदना मनुज की, यह ही उभारती थी। फिर से धरा.....

("प्रज्ञावतार" शीर्षक से)

13.प्रज्ञागीतों में प्रकाशित रचनाएं-

युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा प्रकाशित प्रज्ञा गीत (गीत संग्रह) में युग कवि श्री मंगल विजय के गीतों को आचार्य शर्मा ने महत्वपूर्ण स्थान दिया था। उनके प्रमुख गीतों के शीर्षक इस प्रकार है-

1. रामभक्ति स्वरूप
2. भक्त और भगवान
3. व्यक्ति निर्माण
4. बदलो अपनी चाल
5. सहकार की सिद्धि
6. सहकार संकल्प
7. संघर्ष साधना
8. संघर्ष सामर्थ्य
9. श्रेष्ठ-सृजन
10. युग परिवर्तन
11. क्रूर प्रथाएं
12. संस्कृति की गुहार
13. ज्ञानयज्ञ के होताओं से
14. ग्रामोत्थान
15. परिवर्तन वेला
16. सुवह क्या कहेगी
17. बदला जाये दृष्टिकोण यदि
18. युग-सूरज अवतरण
19. विश्वासधाती मनुज
20. धरती को स्वर्ग बनाना है
21. उस साधना को है नमन
22. परिवार निर्माता नारी
23. विचार-क्रान्ति
24. देव संस्कृति की गरिमा

उपर्युक्त वर्णित गीतों को राष्ट्र भर के हिन्दी भाषी क्षेत्रों में शांतिकुंज हरिद्वार एवं युग निर्माण योजना से जुड़े युग गायकों द्वारा गाया गया तथा लगभग सभी गीतों के ऑडियों-वीडियो कैसेट्स तैयार हुए। कुछ गीतों के अंश अवलोकनीय हैं-

1. श्रीराम भक्ति ऐसी श्रद्धा उभारती है, निष्काम भाव शबरी ऋषि-पथ बुहारती है।×
यदि भक्तहम कहायें, तोश्रेष्ठ कामकरना।श्री राम काज करने अन्याय से न डरना।।
युगधर्म को निभाने प्रज्ञा पुकारती है।। श्रीराम भक्ति ऐसी .....

("रामभक्ति का स्वरूप" शीर्षक से)

2. सच्चा भक्त नहीं करता है स्वार्थ पूर्ण व्यवहार।
भक्ति नहीं हे चाटुकारिता, चारण की मनुहार।।× × ×
प्रभु का अनुशासन जो माने, वही भक्त कहलाये।
जन सेवा में लगे, उसी का मन निर्मल हो जाये।।
सच्चे भक्त किया करते हैं, कभी न ऐसे काम।

जिससे हों भगवान कलंकित भक्ति बने बदनाम।।
जन सेवा ही है विराट के, दर्शन का आधार।। भक्ति ही है चाटुकारिता.....
("भक्त और भगवान" शीर्षक से)

3. करें व्यक्ति निर्माण धरा को स्वर्ग बनाना है।
इन ईटों पर ही नवयुग का भवन उठाना है।।×××
त्याग तपस्या की भट्टी में व्यक्ति ढला करते,
स्वस्थ्य शरीर, स्वच्छ मन में ही देव पला करते।
विकृत मन का भस्मासुर सा वर न दिलाना है। धरा को स्वर्ग बनाना है .....
("व्यक्ति निर्माण" शीर्षक से)

4. बदलो अपनी चाल, नया युग आने वाला है।
हुई दिशायें लाल, अंधेरा जाने वाला है।।× × ×
जिनने कृष्ण, बुद्ध, गाँधी का आना पहचाना।
वे चल पड़े साथ में उनको पड़ा न पहछाना।।
फिर वे हुए निहाल, कौन झुटलाने वाला है।नया युग .....("बदलो अपनी चाल")

5.करते जो सहकार, सफलता उनकी चेरी है।
सफल नहीं वे रहे, जिन्होने शक्ति बिखेरी है।। ("सहकार की सिद्धि")

6. करेंगे प्रज्ञा से सहकार, उठायेंगे मिल-जुल कर भार।
कि इस भू पर फिर से एक नया संसार बसायेंगे।। ("सहकार संकल्प")

7. करेंगे जीवन भर संघर्ष नये युग का करने उत्कर्ष।
कि जीवन को-ऐसी शान से जीकर दिखलायें।। ("संघर्ष साधना")

8. संग्राम जिन्दगी है लड़ना उसे पड़ेगा ।
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा।।× × ×
आओ लड़ें स्वयं के कलुषों से कल्मषों से, भोगों से वासना से रागों के राक्षसों से
कुन्दन वही बनेगा, जो आग पर चढ़ेगा। संग्राम जिन्दगी है ....("संघर्ष सामर्थ्य")

9. नहीं ध्वंस ने, रचे सृजन ने बडे-बडे इतिहास।
पतझर याद न करते, करते याद सभी मधुमास।।× × ×
फिर ध्वंसों को कर निरस्त यह विश्व रचा जाना है।
मनुजों में देवत्व, धरा पर स्वर्ग सृजा जाना है।।
युग के विश्वमित्र तुझे है नूतन सृष्टि रचाने।
ब्रह्मतेज की सृजन चेतना की क्षमता बतलाने।।
हम भी सृजन साधकों जैसा प्रकट करें उल्लास। पतझर याद न करने.....
("श्रेष्ठ सृजन से")

10.परिवर्तन के बिना होता, विभीषिका का नाश।
मूर्धन्यो जागो औरों से रही न कोई आश।।
मानव के चिन्तन चरित्र में आज असुरता छाई।
पाप पतन की कुण्ठा-कुत्सा, भावों बीच समाई।।
है अभाव से ग्रसित राष्ट्र जनसंख्या बढ़ती जाती।
अणु युद्धों की होड़ लग रही, मानवता अकुलाती।।
प्रकृति क्षुब्ध हो उठी आज फिर सहा न जाता त्रास। मूर्धन्यो जागो.....
("युग परिवर्तन" शीर्षक से)

11.जिसे कसे हैं क्रूर प्रथाओं की निर्मम जंजीर।
ओ निष्ठुर पहचानों अब तो मानवता की पीर।। × × ×
स्वार्थ सिद्धि के लिए चढ़ाते देवी को बलिदान।
बेचारे पशु की बिसात क्या चढ़ जाते इंसान।।
यह कैसी विडम्बना कैसा देवों का अपमान।
अगर नियन्ता एक जीव सब, जग के एक समान।।
माँ की आँखों से, तो बहते आँसू छाती चीर।।ओ निष्ठुर.....("क्रूर प्रथाएं")

12. संस्कृति रही कराह न मेरा रूप बिगाड़ो रे।
अगर मनुजता को संवारना मुझे निखारो रे।। × × ×
संस्कृति बची अगर तो मानवता बच जायेगी।
यदि न बची तो मानव में पशुता आ जायेगी।।
क्या पशुता स्वीकार विश्व को, तनिक विचारों रे।। संस्कृति रही कराह.....
("संस्कृति की गुहार" से)

13. परिवर्तन के महायज्ञ का ज्ञान यज्ञ है आज।
युग का ब्रह्मा लगा रहा है होता ओ! आवाज।। ("ज्ञान यज्ञ के होताओं से")

14. फिर अपने गाँवों को हम स्वर्ग बनायेंगे।
अपने अन्दर सोया देवत्व जगायेंगे।।× × ×
शोषण, उत्पीड़न का फिर नाम नहीं होगा,
फिर पीड़ा और पतन का काम नहीं होगा।
सोने की चिड़िया हम फिर से कहलायेंगे।। ("ग्रामोत्थान")

15. अगर हम देश के काम आये, धरा क्या कहेगी गगन क्या कहेगा ?
चलो श्रम करें देश अपना संवारें, युगों से चढ़ी जो खुमारी उतारे।
अगर वक्त पर हम नही जाग पाये- निशा क्या कहेगी भुवन क्या कहेगा। अगर..
("सुवह क्या कहेगी")

16. बदला जाय दृष्टिकोण यदि, तो इंसान बदल सकता है।
दृष्टिकोण के परिवर्तन से, अरे! जहान बदल सकता है।।
कुछ भी नहीं असम्भव होता, जब संकल्प किये जाते हैं।
संकल्पों को सत्साहस के, सुदृढ़ चरण दिये जाते है।।
बाधाओं की क्या बिसात फिर, रुख तूफान बदल सकता है।। बदला जाये .....

("दृष्टिकोंण परिवर्तन" शीर्षक से)

17. आदमी आदमी को सुहाता नहीं, आदमी से अरे डर रहा है आदमी।
हाल इतना बुरा है विश्वास भी, आदमी पर नहीं कर रहा आदमी।।× ××
इस पतन का ही देखो ये परिणाम है, इस तरह आदमी आज बदनाम है।
अस्मतें तक चुराने लगा यह अरे, हाय! नैतिक पतन का ये अंजाम है।।
आदमी, आदमी से बिचकने लगा, कर्म ऐसे अरे कर रहा आदमी।। आदमी .....

("विश्वासघात मनुज" शीर्षक से)

17. ऐ धरती के रहने वालो! धरती को स्वर्ग बनाना है।
है स्वर्ग कहीं यदि ऊपर तो, उसको इस भू पर लाना है।।× × ×
सम्बन्धी मित्र, पड़ोसी से, निष्कपट मधुर व्यवहार करो।
उनके सुख में तुम सुखी रहो, सेवा कर उनके दु:ख हरो।।
निर्बल सज्जन से डरो सदा, बलवान दुष्ट से भी न डरो।
सच्चे अर्थो में बन मनुष्य, जीवन आदर्श बिताना है। ऐ धरती के .....

("धरती को स्वर्ग बनाना है" शीर्षक से)

समूह गान में प्रकाशित रचनाएं-

समूह गान भाग 1 व 2 (गीत संग्रह) का प्रकाशन युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा प्रकाशित किया गया जिसमें युगकवि श्री मंगल विजय की रचनाएं प्रकाशित हुई जिनके शीर्षक इस प्रकार हैं-

1. जरूरी है अपना निर्माण
2. नारी आह्वान
3. नारी तुम हो शक्ति राष्ट्र की
4. देवत्व को बचाने
5. पुरुषार्थ की कहानी
6. क्यों मोह है उन्हीं से
7. व्यक्तित्व गढ़ना हमें पडेगा
8. क्यों और को पुकारें
9. बडे भाग्य से मनुज तन मिला है
10. जीवन ही पूजा बन जाये

एक रचना अवलोकनीय है-

1. ऐसा जीवन जिएं, हमारा जीवन ही पूजा बन जाये।
पूजन की पवित्रता जैसी, जीवन में पावनता आये।।× × ×
वाणी में इतनी मिठास हो, शब्द-शब्द हो मधु-सा मीठा।

अपने शब्दों की मिठास से, रस छलके हो स्वाद अनूठा।।
जन-मन के विष की ज्वाला को, शान्त करे वाणी का अमृत।
वाणी सुधा पिलाये सबको, यह मिठास ही भोग लगाये।। ऐसी जीवन जिएं.....

("जीवन ही पूजा बन जाये" शीर्षक से)

युग गायन भाग 1, 2, 3 में प्रकातिश रचनाएं -

युग गायन भाग 1, 2, 3 (प्रेरणा गीतों का संग्रह) का प्रकाशन युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा किया गया जिसमें प्रकाशित युग कवि श्री मंगल विजय के गीतों के शीर्षक इस प्रकार हैं-

1. बात उनसे कही जा रही
2. सावधान! नव युग आता है
3. प्यार तो है हमें जिन्दगी से बहुत
4. धर्म से हम नहीं रख सके वास्ता
5. नारियों! भारत माता रही पुकार
6. अवतरण हो गया
7. सद्विवेक जग पाता
8. मानव जीवन
9. विश्व उद्यान भारत
10. आत्मविश्वास जगाओ रे
11. इतना कर्ज लदा है मुझपर
12. बालकों से भी हम नादान
13. उस जल की जलधार वृथा है
14. युग वेदना का उपचार
15. खोलो मन के द्वार
16. किधर जा रहे हो

एक रचना अवलोकनीय हैं-

इन दिनों बात उनसे कही जा रही, सुन-समझ-सोचकर जो अमल कर सकें।
आज की बात के मर्म को जानकर, भाव संवेदनाएं लिए चल सकें।।
जिन दिनों हो मनुजता लगी दाँव पर, मौत मंडरा रही हो मनुज गाँव पर।
जिन दिनों आँख इंसान की हो विफल, छल-छलाई हुई हो मनुज घाव पर।
इन दिनों पीर उनसे कही जा रही, जो न पाषाण हों पीर से गल सकें इन दिनों..

("बात उनसे कही जा रही" शीर्षक से)

क्रान्ति गीत में प्रकाशित रचनाएं -

क्रान्तिगीत का प्रकाशन शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा चतुर्थ बार वर्ष 1997 में किया गया जिसमें श्री मंगल विजय के प्रकाशित गीतों के शीर्षक इस प्रकार हैं-

1. महाकाल की चली सवारी
2. देश के रण बाँकुरों
3. शपथ ले रहे हैं
4. शपथ पूरी करेंगे
5. चल पड़े कारवाँ
6. जिसने दीप जलाये जग में
7. हम सुरक्षित नहीं
8. जियेंगे न अब हम, अपने लिएही

कुछ गीतों के अंश अवलोकनीय हैं-

1. महाकाल की चली सवारी-चलो साथ हो जायें।
यह परिवर्तन की बेला है-युग परिवर्तन लायें।। ("महाकाल की सवारी")

2. देश के रणबांकुरों! रण का समय है, देव संस्कृति दिग्विजय प्रण का समय है
आक्रमण पशु शक्तियों का हो रहा है, देश विकृतिजन्य पीड़ा ढो रहा है।
हर अशिक्षित दुष्प्रथाओं से कसा है, शिक्षितों पर भोग-संस्कृति का नशा है।।
सोचा लो, गंभीर चिन्तन का समय है। देश के रणबाँकुरो .....
("देश के रण बाँकुरो")

3. जिसने दीप जलाये जग में, तिल-तिल जलकर ज्ञान के।
सौदागर हम स्वयं बन गये, उस संस्कृति की जान के ।।
ऐसी भी कृतघ्नता कैसी, जिसने हमें प्रकाश दिया।
अपनी उस महान संस्कृति का, अपने हाथ विनाश किया।।
ऐसे तो आचरण न होते, समझबार इंसान के। सौदागार हम.....
("जिसने दीप जलाये जग में" शीर्षक से)

4. जियेंगे न अब हम अपने लिए ही। शपथ है हमें-लोक नायक तुम्हारी।
जुटेंगे सतत् लोक कल्याण में हम, शपथ है हमें-लोक साधक तुम्हारी।।
मनुज भूलकर आत्म गरिमा स्वयं की, पतन पाप के गर्त में गिर रहा है।
भटक अब रही है तिमिर में मनुजता, अंधेरा चतुर्दिक यहाँ घिर रहा है।।
सहेगा नही, विश्व अब वेदना को, पियेंगे उसे हम शपथ ले तुम्हारी।।जियेंगे.....
("जियेंगे न अब हम, अपने लिए ही")

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएं

श्री मंगल विजय की रचनाएं वर्ष 1950 से ही दैनिक नवप्रभात (भोपाल) साप्ताहिक चेतना (भोपाल) कला मन्दिर (भोपाल) का काव्य संकलन "उदयनी", अखण्ड प्रभा (कानपुर), अखण्ड सच्चिदानन्द संदेश (चित्रकूट), युवक (आगरा), सर्वसखा (दिल्ली), तरुण विजय (दिल्ली), आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं।

गायत्री परिवार के 'युग-कवि' के रूप में आपकी रचनाएं वर्ष 1971 से ही अखण्ड ज्योति (मासिक), युग शक्ति गायत्री, युग निर्माण योजना (मासिक एवं पाक्षिक), प्रज्ञा अभियान पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही है। प्रमुख रचनाओं के शीर्षक दृष्टव्य हैं- अखण्ड ज्योति में प्रकाशित रचनाओं के शीर्षक-

1. "एकाकी साधना" चारो ओर तिमिर होता है जुलाई 1976 में प्रकाशित
2. "जलन-दर्द था जिसे दर्द वह दीप जलता रहा" जुलाई 1977 में प्रकाशित
3. "आशा का उद्यान" मुरझाने मत दो मन-माली सितम्बर 1977 में प्रकाशित

4. "मानव और धर्म" पाई तो मनुज देह हमने सितम्बर 1978 में प्रकाशित
5. "मौन-भंग" बंदी बहुत रख चुकी अब तक अक्टूबर 1978 में प्रकाशित
6. युगनिर्माताओं से यही घड़ी है निर्माताओं अगस्त 1979 में प्रकाशित
7. मनोभूमि का परिष्कार हमें हमारी मनोभूमि को अप्रैल 1980 में प्रकाशित
8. बालको से भी गये बीते बालकों से भी हम नादान मई 1980 में प्रकाशित
9. "साधना-सातत्य", आँख अपनी स्वयं हम भले मीच लें जुलाई 1980 में प्रकाशित
10. "आत्म-आवरण" जैसे सूरज को ढक लेते नवम्बर 1980 में प्रकाशित
11. "धर्मतंत्र की गरिमा" धर्म तंत्र के स्वस्थ रूप को जनवरी 1981 में प्रकाशित
12. "सच्चा राम भक्त" प्यार है यदि हमें राम के नाम से मार्च 1981 में प्रकाशित
13. "अकथ-कथा" लिखी है दासता दिल में मई 1981 में प्रकाशित
14. "सामर्थ्यवानो से" सब ही नही जला करते हैं अगस्त 1981 में प्रकाशित
15. "अध्यात्म का स्वरूप"- नहीं अध्यात्म है झूठा नवम्बर 1981 में प्रकाशित
16. "नव सृष्टि सृजन" नयी सृष्टि का नवसृजन हो रहा है, मई 1982 में प्रकाशित
17. "तमसो मा ज्योतिर्गमय" तम प्रेरक है दुष्प्रशत्तियों का, अक्टूबर 1982 में प्रकाशित
18. "विज्ञान और धर्म"-विज्ञान धर्म ने जब समवेत स्वरउठाये, नवम्बर 1982 में प्रका.
19. "गुरु-गरिमा" अद्वितीय है निर्माणों में गुरुओं का निर्माण, जुलाई 1984 में प्रकाशित
20. "मुक्ति-संदेश"-शान्ति और संतोष छोड़ मृगतृष्णा मत पालो, जून 1988 मेंप्रकाशित
21. "देवार्चन", पर पीड़ा से छलक उठै मन यह छलकन ही गंगाजल, मार्च 1989 में
22. "सविता तुमकोहै नमन" मानवता के भाग्योदय के द्योतक, जुलाई 1984 में प्रका.
23. "अभिलाषा" अपनी राह चलालो भगवन, जून 1996 में प्रकाशित
24. "आगात का स्वागत" आगत का स्वागत सार्धे हम, फरवरी 1996 में प्रकाशित
25. "वासन्ती संदेश" हर बसन्त ने जिस जीवन के नये-नये,फरवरी 1997 में प्रकाशित
26. जिन्होने ज्योति अखण्ड जलाई, जिन गुरु में साकार हो, जुलाई 1997 में प्रकाशित
27. "युग साधना" समय है दिव्य जागरण का, मार्च 1998 में प्रंकाशित
28. "हनुमान तुम क्यों मौन हो" हो रहा हो संस्कृति सीताहरण, अप्रैल 2000 में प्रका.
29. करूणावतार जगदम्बे, आप अवतरित हुई धरा पर, सितम्बर 2000 में प्रकाशित
30. "इक्कीसवी सदी आगमन" इक्कीसवी सदी हैशुभ आगमन,जनवरी 2000 में प्रका.
31. हीरक जयन्ती आहवान, आ रही हीरक जयन्ती हम पुकारे,फरवरी 2001 में प्रका.
32. "गुरू महिमा" गौ गंगा गीता गायत्री सुर संस्कृति के धाम,जुलाई 2001 में प्रका.
33. "परिवर्तन सुनिश्चित है" जिस तरह सघन तिमिर के बीच,दिसम्बर 2001 में प्रका.
34. "शहीदों के प्रति" रक्त से लिखागया है विजय काइतिहास,जनवरी 2002 में प्रका.
35. "रूद्राभिषेक" रूद्र का अभिषेक आओ फिर करें, मार्च 2002 में प्रकाशित

36. "महाकाल आहवान" कुटिल चाल कलिकाल चल रहा, मार्च 2003 में प्रकाशित
37. जागरण-ज्ञान भारती पुकारती संस्कृति गुहारती, अक्टूबर 2003 में प्रकाशित
38. होली-दहन, होली चलो जलाएं जहालत जूनून की, मार्च 2004 में प्रकाशित
39. "साधना-समर" साधना संघर्ष है आओ लड़ें, मई 2004 में प्रकाशित
40. हम यह समझ न पाये" सान्निध्य आपका फूले नहीं समाये,जुलाई 2004 में प्रका.
41. "उजास पर्व पर करें बोध" जो कुम्हार के घर कोने में पड़े,नवम्बर 2004

युग निर्माण योजना (मासिक) में प्रकाशित रचनाएं -

1. "जीवन मुस्कान" कितनी भी पीड़ा हो मन में जनवरी 1975 में प्रकाशित
2. "जीवन कैसे जियें" ऐसा जीवन भी क्या जीना जनवरी 1976 में प्रकाशित
3. "धर्म दर्शन" जीवन पावन ग्रंथ बने तो सितम्बर 1977 में प्रकाशित
4. "स्वर्ण-साध" अगर स्वर्ण की साधना हम करेंगे फरवरी 1978 में प्रकाशित
5. "समर्थ व्यक्तित्वों से" सब ही नहीं जला करते है मई 1978 में प्रकाशित
6. "जनमानस केअर्जुन से" धर्म क्षेत्र ने कुरूक्षेत्र ने फिर से, अक्टूबर 1984 में प्रका.
7. "मंगल कामना" जल सकें आँधियोंतूफानों केबीच प्रभो! अगस्त 1984 में प्रकाशित
8. "रोशनी का दर्द" रोशनी आवाज देती ही रही नवम्बर 1984 में प्रकाशित
9. "संघर्ष की जिन्दगी है" संग्राम भी जिन्दगी है सितम्बर 1983 में प्रकाशित
10. "देवसंस्कृति की गरिमा" देवत्वकोबचाने संघर्ष भी किए,दिसम्बर 1983 में प्रकाशित
11. "प्रकाश बाँटे" पहुंचे द्वार द्वार पर किरणें लेकर उस दिनमान मई 1981 में प्रकाशित
12. "सविता समर्पण" सविता प्रखर प्रकाश हमें दो फरवरी 1982 में प्रकाशित
13. "नव-प्रभात" नव प्रभात की शुभ बेला में, जुलाई-अगस्त 1982 में
14. "अच्छा है पथ में मुसकाना" तम से डरकर सो जाने स, मई 1987 में प्रकाशित
15. "बसंत के अनुदान" प्रिय बसन्त अब तरण पर्व है जनवरी 1988 में प्रकाशित
16. "इक्कीसवीं सदी" कोरी न कल्पना है इक्कीसवीं सदी फरवरी 1989 में प्रकाशित
17. "धर्म में आज ऐसा चाहिए" पाप पतन से आज मनुष्य को, दिसम्बर 1993 में
18. "शिव साधना" कल्याण दायिनी है शिव की उपासना, फरवरी 1996 में प्रकाशित
19. "पूर्णाहुति की वेला" पूर्ण आहुति व्यक्ति गढ़ने का समय हैअप्रैल 2000 में प्रका.
20. "नयी सदी का मोड़" तप ऋषि युग्म का रंग लाने लगा,अगस्त 2001 में
21. "बुद्धिवाद और बुद्ध" बुद्धिहावी हो गयी है बुद्ध का दर्शन,जनवरी 2004 में प्रका.
22. "त्रिदेव प्रतिनिधि नारी" जननी तुम तीनों देवी की सच्ची,सितम्बर 1986 में प्रकाशित
23. "प्रज्ञा-प्रार्थना" मनोभूमि इतनी सूखी माँ हुई शुष्क पाषाण,अप्रैल 1989 में प्रकाशित
24. "निराशा की आशा" रोज की शामसे हम न भयभीत हों, जुलाई 1990 में प्रका.

'युगनिर्माण योजना' (साप्ताहिक) में प्रकाशित रचनाएं-

1. "नमन करें" हम बहुमुखी बसन्त को आओ नमन करें, 5फरवरी 1975 में प्रकाशित
2. "विजया दशमी का संदेश" उठो आत्माराम कि अब, 20सित0 1973 में प्रकाशित
3. "विकृति-विष" विकृतियों के विष को दफनाने के खातिर, 20मई 1976 में प्रका.
4. "माटी और सोना" माटी ही है पड़ा हुआ सोना खदान में 20सित0 1974 में प्रका
5. "भेद दृष्टि" जो समाज अन्तर करता हो पिता पिता में, 5जनवरी 1976 में प्रकाशित
6. "जीवन पद्धति" पूरा जीवन ही ऐसा हो जैसे हो पूजन, 22 दिस0 1980 में प्रकाशित
7. "अनुपम बसन्त" मनुजमन बसन्ती हुआ जा रहा है 5 फरवरी 1975 में प्रकाशित
8. "क्षणिक" हम कितने स्वप्न सजाते हैं पर पलभर का 5जनवरी 1975 में प्रकाशित

प्रज्ञाअभियान में प्रकाशित रचनाएं

1. "प्राणों की तरुणाई" जब तक जाग नहीं जाती है प्राणों की जून 1981 में प्रका.
2. "विस्तार नहीं समर्पण" यह उपवन जंगल ही है जो पूजा, नवम्बर 1977 में प्रका.
3. "बसन्त-संदेश" लाया है बसन्त संदेशाजीवनदान करो, 5 जन0 1974 में प्रकाशि
4. "संकल्प संजीवनी" हमारी शक्तियाँ सोई हुई, उनको जगाना है
5. "दिव्यता का अवतरण" दिव्यता का करें प्राण में अवतरण
6. "युगस्रष्टा के अनुदान" गति को दिया नया स्पन्दन और प्रगति को नई दिशाएं
7. "मुक्ति के क्षण" मनुजता की मुक्ति का शिशु आज युग के गर्भ में है
8. "वसुधैव कुटुम्बकम" जब तक अपनी अपनी ढपली, अपना अपना राग रहेगा
9. "निर्माण करना है" जहाँ सब ही सभी से स्नेह करने को समुद्यत हों
10. "तपाग्नि" कषायों कल्मषों को अग्नि तप की ही जलाती है
11. "बसंती नारी" नारी! बासंती बगिया हो, खिलती हो और खिलाती हो
12. "युग-साध" जो जुटे युग-साध में उस साधना को है नमन

गद्य लेखन-

1. सम्पादन - श्री मंगल विजय का पद्य के साथ-साथ गद्य पर भी पूर्ण अधिकार है। आपने अनेकों पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया है। जिसमें देवदूत आया, हम पहचान न सके, स्मारिका के संकलन एवं सम्पादन में आपकी भूमिका सराहनीय रही। इस स्मारिका का प्रकाशन शांतिकुंज, हरिद्वार के तत्वाधान में वर्ष 1995 में हुआ।

2. चिन्तन सूत्र -सिन्धु के बिन्दु- श्री मंगल विजय की 'सिन्धु के बिन्दु' कृति में वर्णित चिन्तन सूत्र अवलोकनीय हैं-

1. 'समर्पण-साधना' सहजतम लगने वाली, कठिनतम साधना है किन्तु श्रेष्ठतम भी है।
2. देवता गड़े-पड़े नहीं रहते, वे उछलते, मचलते रहते हैं- दिव्य चिन्तनाओं

भव्य भावनाओं और श्रेष्ठ आचारणाओं के रूप में ।

3. बनाए रखो! बिगड़ने मत दो!! अपना साहस, अपना चरित्र और अपनी बात।क्योंकि बनाये रहे तो लाखों निसार होंगे तुम पर और बिगाड़ ली तो हजारों दुश्मन हो जायेंगे।

4. चरम संघर्ष हो या चरम उत्कर्ष जो व्यक्ति इन क्षणों में धैर्य नहीं खोता, विचलित नहीं होता, वह श्रेय पाता है, श्रेयाधिकारी हो जाता है।

5. अज्ञ से उलझने में समय नष्ट करने की अपेक्षा विज्ञ से विचार-विमर्श का लाभ लेना ही श्रेयस्कर है।

6. राजनीति 'कीचड़' हो तो भी कमल खिलने की सम्भावना बनी रहती है। पर यदि राजनीति 'भ्रष्ट' हो गई तो उसमें भ्रष्टा के कीड़े ही बिलबिला सकते है।

7. संयम के पात्र में ही आनन्द के अनुदानों को सहेजा जा सकता है।

8. विद्वान होने के लिए सघन स्वाध्याय एवं गहन-चिन्तन पर्याप्त है। पर 'प्रज्ञावान' होने के लिए तपस्वी जीवन और दिव्य आचरण अनिवार्य है।

9. श्रद्धा-भक्ति के सुमन वैभव के बगीचों में नहीं, भावना की वाटिका में महकते-मुस्कराते है।

10. 'असन्तोष' अनीति का जनक है और 'अतृप्ति' उसकी जननी।

11. 'प्रारब्ध का प्रसाद', पुरुषार्थ के पात्र में ही संजोया जा सकता है।

12. अनियन्त्रित-आतुरता अनचाहे-अपराध की जननी है।

13. कटु वाणी विष के दंशन से कम नहीं। किन्तु मौन का मंत्र उसे निष्प्रभाव बना देता है।

14. मदिरालय और देवालय में क्या अन्तर, यदि दोनों ही स्थानों पर जाने वाले नशे में चूर हो विवेक ही खो बैठें।

आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन का आलोच्य काव्य में प्रतिफलन:-

आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन के सभी प्रमुख विन्दुओं (तत्वदर्शन एवं आचार्य दर्शन) का श्री मंगल विजय के काव्य में प्रतिफलन हुआ है। उदाहरण अवलोकनीय है-

(1) युग निर्माण के सोपान :-व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण,

(i) काश! हम जी सकें जिन्दगी संयमित। जिन्दगी में करें, स्वर्ग को अवतरित।
जिन्दगी फिर हमारी संवरने लगे, स्वर्ग का सुख धरा पर उतारने लगे।।
व्यक्ति परिवार सब संयमित हो अगर, फिर नये राष्ट्र का रुप जाये उभर।
राष्ट्र की हम करें साधना-संतुलित।। काश हम .....

(ii) जो ईटें पक नहीं सकेंगी, उन ईटों में प्राण न होगा।

नींव नहीं मजबूत तो, शिखरों का निर्माण न होता।।
परिष्कार करना ही होगा, हमको चिंतन का, चरित्र का।
व्यक्ति नहीं निर्माण हुआ तो, फिर कुछ भी निर्माण न होगा।।

(2) लक्ष्य- स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज-

'स्वास्थ्य' सम्पदा है, जीवन भर उसे कमाना है।
तन को स्वस्थ्य और मन को भी स्वच्छ बनाना है।।
व्यक्ति और परिवार स्वस्थ हो, स्वस्थ समाज बनें।
शील और संयम के द्वारा, सभ्य समाज बनें।।
घर-घर, ग्राम नगर सब में ही स्वर्ग बसाना है।।स्वास्थ्य सम्पदा .....

(3) संकल्प:- "मनुज में देवत्व का उदय एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण"

जब मानव 'देव' बना करते, यह धरा 'स्वर्ग' बन जाती है।
तब 'साधन धाम' मनुज काया, देवों का मन ललचाती है।।
'उज्जवल भविष्य', का मंत्र यही, युगसृष्टा ने बतालाया है।
मानव को देव बनाने का उसने संकल्प उठाया है।।
देखो प्राची की अरुणाई 'उज्ज्वल भविष्य' अब लाती है। जब मानव .....

(4) लोक मंगल- "गायत्री एवं यज्ञ के लोकव्यापीकरण द्वारा"

गायत्री के तत्व ज्ञान का सब मिल वरण करें।
विश्वशान्ति के लिए सभी अब सद्आचरण करें।।
महाशक्ति है सबके ही प्राणों की त्राता है,।
जाति धर्म व लिंग भेद तज सबकी माता है।।
माँ से स्नेह, शक्ति संवर्धन सब मिल ग्रहण करें। गायत्री के तत्वज्ञान....×××
'यज्ञ' हैं सुर संस्कृति के पिता, प्रजा के साथ अवतरण हुआ।
यज्ञ से वृष्टि, वृष्टि से अन्न अन्न से जीवन सरजन हुआ।।
यज्ञ बरसाते है 'पर्जन्य,' प्राण को मिलती शक्ति अकूत।
प्रदूषण को करते हैं दूर, शुद्ध-जलवायु सुयज्ञ प्रसूत।।
यज्ञ से बदल वातावरण, मुक्तिदायी परिवर्तन हुआ।
यज्ञ संस्कृति ने 'देव' दिये, धरा पर 'स्वर्ग' अवतरण हुआ।।

(5) मानवीय पीड़ा पतन की वेदना :- "दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन, सत्प्रवृत्ति संवर्धन"

1. आओ संघर्ष करें अपने दुर्गुण, दुर्व्यवहारों से।
दुश्चिंतन से, दुर्व्यसनों से दुर्भावो दुष्टाचारों से।।
दीनों, दुखियों के शोषण का, उत्पीड़न का प्रतिकार करें।
विकृतियों, क्रूर प्रथाओं के दुर्गम गढ़ को मिसमार करें।।

मानवता ही दानवता को दलने साहस दिखलाती है।
'देवों को दुर्लभ देह' मनुज काया तब ही कहलाती है।।
आओ! जूझे अपने दुर्गुण, औरों के आत्याचारों से! दुश्चिंतन से.....

2. स्वार्थ निर्मम छोड़, ममता से सनीकरुणा जगाएं।
चलो! संवेदन-सुधा, पीड़ित मनुजता को पिलाएं।।
स्वार्थ का संसार, पापों की पतन की यामिनी है।
मनुज की संवेदना ही शुभ्र शीतल चाँदनी है।।
बसायें वह स्वर्ग, सब ही स्नेह सिंचित हो रहे हो,
क्या न अब करुणा जगेगी, दीन जन जब रो रहे हों।
मानवी-संवेदनायें सुस्त हैं, उनके जगायें।। चलो संवेदन .....

(6) उदात्त मानवीय दृष्टि:-"घृणा-द्वेष, भेदभाव रहित विश्व परिवार की ललक"
देवसंस्कृति विफल हुई फिर, मानवता की पीर से।
आज मनुष्यता कसी हुई है, नफरत की जंजीर से।।
वसुधा थी परिवार, मनुज थे आपस में भाई-भाई,
एक पिता की सब सन्तानें, धरती थी सबकी माई।
'मानव धर्म' एक सबका था, सब ही थे धर्माचारी।
भाषा एक भाव की ही थी, बोली-बोली थी प्यारी।
स्नात हो रही थी मानवता, संवेदन के नीर से। आज मनुजता .....

(7) लोक मंगल के लिए समर्पण :-
समझदार सब ही प्राणी में प्रभुत्व ने हमें बनाया।
इसीलिए तो श्रेष्ठ सभी से मानव तन कहलाया।।
गौरवमय इतिहास, इसी से हमने भी रच डाला।
त्याग, तितीक्षा, सेवा, संयम और समर्पण वाला।।
समता, ममता, स्नेहभाव से, भू पर स्वर्ग रचाया। (सिद्धान्त पंक्ष)
खोल कर रखें खिड़कियाँ द्वार, प्रकाशित हो चिन्तन का कक्ष।
परोसा जाए श्रेष्ठ चिन्तन, अरे! जन-मन के आज समक्ष।।(व्यवहार पक्ष)

(8) कवि धर्म- आचार्य शर्मा ने कवि-धर्म निर्वाह हेतु जिस आचार-संहिता की बात कही है, वह श्री मंगल विजय की निम्न रचना में दृष्टव्य है-

कवि तुम गाने लगे लोरियां, कौन भैरवी-राग सुनाये।
तुम मदहोशी लगे पिलाने, कौन सृजन की सुधा पिलाये।।× × ×
कवि कामुक कायर बन बैठा, कविता भी बन गई कामिनी।
रह न सकी कवि को वाणी से निस्रत कविता, भव्य-भावना।

मीरा! निर्मलता खो बैठी, कौन प्रेम का पाठ पढ़ावे। कवि तुम जाने लगे.....
कवि! तुमने 'स्वान्तः सुखाय' की परिभाषा कर ली मनमानी। जन मानस को
लगी जन मानस को लगी पिलाने विष-विलास अमृत मय वाणी।।
तुलसी राग रंग में डूबे, जन मानस को कौन जगाये। कवि तुम .....
कौन शौर्य को करे साधना, कवि वैभव के हाथ बिक गये।
पराधीनता का पथ पकड़ा, स्वाभिमान के चरण थक गये।
भूषण! चाटुकार बन बैठे कौन शिवा की गाथा गाये। कवि तुम .....
युग परिवर्तन की बेला में कवि ने धर्म नहीं पहचाना।
तो फिर पूर्ण न हो पायेगा, नये सृजन की स्वप्न सुहाना।
कवि 'युग निर्माता' होता है यह विश्वास न विष पी जाये। कवि तुम .....

(9) साधना से सिद्धि :- श्री मंगल विजय की लेखनी अपने आराध्य एवं पूज्य आचार्य जी (आचार्य श्रीराम शर्मा) को ही समर्पित हो गयी और शेष जीवन भी आपने लोकमंगल को समर्पित कर दिया-

आप क्या मिल गये, 'स्वर्ग' ही मिल गया।अब न ऐसी घड़ी तो कभी आयेगी।
'साधना' सिर पटकती रहे जन्मभर, 'सिद्धि'-ऐसी कभी भी नहीं पायेगी।।

कवि की प्रेरणा है कि भाग्यवाद के सहारे निष्क्रियनहीं रहें,प्रबल पुरुषार्थ करते रहे-

साधना-सैनिको! साधना है समर । एक क्षण भी न रहना अरे! बेखबर।
हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठना, कल्पना-सेज पर मत तनिक लेटना।।
साधना के समर में सदायुद्ध है, और साधक, समर हेतु कटिबद्ध है।
साधको! तुम समर से न जाना मुकर।। साधना सैनिको.....

(10) प्रतिगामिता के प्रति आक्रोश:- अन्धविश्वास, वाह्य आडम्बर, रूढ़ियों-कुप्रथाओं का विरोध कवि की निम्न रचना में अवलोकनीय है।

'जाके पाँव न फटी बिंबाई, वह क्या जाने पीर पराई।'
क्रूरप्रथाओं ने कितनों का जीना ही दूभर कर डाला,
मूढ़-मान्यताओं के भ्रम ने, मानव को कायर कर डाला।
मानव के सुख की दुनियाँ में मानव ने ही आग लगाई।। जाके पाँव .....
धर्म बन गया गोरख धंधा, भेद धर्म का समझ न आया।
बने मार्गदर्शक जो, वे खुद भी भटके-जग को भटकाया।
लोभ-मोह के फंदे डाले, ऐसे फंसे कि मुक्ति न पाई। जाके पाँव .....
सामाजिक प्राणी है मानव, सामाजिकता तनिक न आई।
स्वार्थ सिद्धि के दीवाने बन, मानव ने पशुता अपनाई।
अपने बेटे बेंच, किसी की बेटी को बेरहम जलाई।। जाके पाँव न .....

संस्कृति की आबरु उतारी और कला की की बदनामी।
फूहड़ कामुकता भड़काई, कलाकार बन बैठा कामी।
नेता बने राष्ट्र के शोषक, उन्हें तनिक भी लाज न आई।। जाके पाँव न .....
जो मानव पीड़ा से पीड़ित, वे मर्माहत आगे आयें,
विकृत चिन्तन, विकृतियों से मानवता के मुक्ति दिलायें।
संवेदनशीलों से ही तो, मानवता ने आश लगाई।। जाके पाँव न .....

(11) उद्दाम राष्ट्र भावः- राष्ट्रोत्थान हेतु 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुराहिताः' का उद्घोष :

शान्ति के स्वप्न ही देखते मत रहो, खूनियों के इरादे बडे क्रूर हैं।
उन्हें क्या मनुजता बचे- नबचे, राष्ट्र की संस्कृति से बहुत दूर है।।
पर जिन्हें विश्वबन्धुत्व से प्रेम है, वे तनिक देव-भुजबल दिखाते चलो।
शौर्य-सामर्थ्य अपनी जगाते चलो।।

(12) आश्वमेधिक पुरुषार्थः- देवसंस्कृति दिग्विजय -

अश्वमेध परिचय भारत के पौरुष की पहचान के।
कहीं न पौरुष की, प्रतिभा की परम्परा बदनाम हो।
गरिमा युग-भामाशाहों की, कहीं नहीं गुमनाम हो।
चन्द्रगुप्त-चाणक्य वहाँ है, शिवा-समर्थ्य राष्ट्र पोषक।
कहाँ विवेकानन्द दयानन्द, देवसंस्कृति उद्घोषक ।
'अश्वमेध,' नररत्न गढ़ेंगे, नर रत्नों की खान के । अश्वमेध परिचय.....

(13) नारी जागरणः- मातृशक्ति की गरिमा एवं नारी का सर्वोत्मुखी विकास-

1. धरती पर स्वर्ग अगर होगा, नारी द्वारा निर्मित होगा।
संवेदन शून्य-मरुस्थल में, संजीवन-स्रोत स्रवित होगा।।
तप, त्याग, समर्पण, सेवा की जीवित-प्रतिमा ही नारी है।
वह देवी है, जग जननी है, क्षमताओं की बलिहारी है।।
वह शक्ति स्वरूपा है, उससे जग जीवन परिवर्तित होगा। धरती पर.....
स्नेहार्द्र लताएं ममता की, सृष्टा ने भूपर लहराई।।
कोमलता करूणा, क्षमा, विनय की बल्लरियाँ भू पर छाई।
इन कुंजों में ही थके हुए 'पौरुष' का भार शमित होगा।। धरती .....×××
'नारी युग' के ही साथ-साथ, धरती पर स्वर्ग सृजित होगा।

2. जिस समाज की क्षमताओं का आधा अंग शिथिल हो।
वह समाज कैसे सशक्त हो, कैसे पूर्ण सबल हो।।
निर्माणों के छंद रचें हम, तुम दो गति की तालें।
तुम विश्वास दिलाओ, हम विकृतियों को ललकारें।

फिर कुरीतियों, क्रूर प्रथाओं से, न समाज निबल हो
जन मंगल के लिए जनक जननी दोनों का बल हो।।

(14) वेदोक्त, ब्राह्मणोचित जीवन दर्शन- 'सादा जीवन उच्च विचार' वाली त्यागवादी संस्कृति का अभ्युदय अवलोकनीय है-

1. ब्राह्मणोचित न जीवन जिया जा रहा, है मनुज भोगवादी हुआ जा रहा।
व्यक्ति पुरुषार्थ में तो न करता कसर, भोग में खप रही शक्ति सारी मगर।
मितव्ययी ब्राह्मण रह सके हम नहीं, तप तितिक्षा, तपन सह सके हम नहीं।
त्याग की मूर्ति-ब्राह्मण गिरा जा रहा, मन कलुष-कामना से घिरा जा रहा।

2. जब 'साधना' चलेगी, अरु अनवरत चलेगी।
तब आज नहीं तो कल, वह 'ब्राह्मण' ढलेगी।
फिर राष्ट्र-पुरोहितों का क्यों कर अभय न होगा।
प्राचीन 'ब्रह्मवर्चस' क्यों कर उदय न होगा।
तब लोकसेवियों की पीढ़ी नयी ढलेगी।। जब साधना चलेगी.....

(15) समन्वय दृष्टि:- नवयुग की आधार शिला- धर्म और विज्ञान का समन्वय अवलोकनीय है-

अगर समन्वय नहीं हो सका धर्म और विज्ञान का।
निश्चिता ही अवरुद्ध रहेगा, पथ समग्र-उत्थान का।।
धर्म रहा सीमित होकर यदि, केवल पूजा पाठ में।
ढंढ़े यदि विज्ञान सत्य को केवल मात्र पदार्थ में।
पथ प्रशस्त फिर कैसे होगा, मिले जुले अभियानका। अगर समन्वय ....
धर्म अगर साधन विहीन है, तो क्या-क्या कर पायेगा।
'सभी सुखी हो', स्वप्न जुवानी जमा खर्च रह जायेगा।
मानवता को लाभ मिलेगा, कैसे अनुसंधान का। अगर समन्वय .....
ध्वंस-सृजन पर नहीं नियन्त्रण पर कर पाता विज्ञान है।
जुटा रहा वह निरी मौत का, अनजाने सामान है।
नंगा नाच रुकेगा कैसे, स्वार्थान्ध हैवान का। अगर समन्वय .....

(16) शक्तिपीठों-प्रज्ञापीठों की स्थापना :-

'युगतीर्थ' जागरण के नवमंत्र पढ़ रहे हैं।
ये 'शक्तिपीठ' जाग्रति के केन्द्र बन रहे हैं।।
सद्ज्ञान रवि उगेगा, अज्ञान-तम मिटेगा।
ले ज्ञान की मशालें, रवि पुत्र बढ़ रहे हैं।।ये शक्तिपीठ.....
आडम्बरों भ्रमों से, भटकाव के क्रमों से।

हो मुक्त लोक मानस, यह साध कर रहे हैं।ये शक्तिपीठ.....
भ्रम भेद को भगाने, समता-सुधा पिलाने,
बसुधा कुटुम्ब ही है यह भाव भर रहे हें। ये शक्तिपीठ .....
कुत्सा, कुरीतियों के, कुंठा, कुरुढ़ियों के,
व्यवधान ही प्रकृति के, पथ बीच अड़ रहे हैं। ये शक्तिपीठ .....
इनसे सहज छुड़ाने, घातक प्रथा मिटाने।
वातावरण बनाने, अभियान चल रहे हैं। ये शक्तिपीठ .....
वातावरण-प्रदूषण, निकृष्ट, हीन चिंतन।
दूषित करे न युग को, चिंतन बदल रहे हैं। ये शक्तिपीठ .....
हो स्वर्ग का सृजन फिर, देवत्व अवतरण फिर।
युग-साधना निरत हों, सोपान चढ़ रहे हैं। ये शक्तिपीठ .....
युग-तीर्थ में चलें हम, व्यक्तित्व को ढले हम,
निर्माण साधना में, युग स्वप्न पल रहे हैं। ये शक्तिपीठ .....

(प्रज्ञा अभियान, वर्ष 2, अंक 5)

मुक्तामाल (चतुष्पदियाँ)- श्री मंगल विजय ने अपनी कृति 'मुक्तामाल' में अपनी चतुष्पदियों का संग्रह किया हैं। कतिपय चतुष्पदियों अवलोकनीय है-

1. कर दिया अमर कितने नश्वर-गानों को, कितने ढाँचों में डाल दिया प्राणों को।
   गिरतों की बाँहें थाम, स्नेह सम्बल दें, उत्थान बनाया कितने अवसानों को ।।
2. देव मानव बनानाआपकी कारीगरी है।उसे जनहित में नचाना, आपकी बाजीगरी है।
   औरदेनावहहृदय, पर पीरसेजो तिलमिलाये,स्नेह-संवेदनजगाना,आप की जादूगरी है।।
3. जो जन दुनिया के सुख-दुख का हँसकर हम जोली हो जाता।
   उस जन का ही पूरा जीवन, पर्वो की टोली हो जाता है।
   जन-हिताय जीने वालों का जन्म दिवस बनता 'दीवाली'।
   जनहित में मरने वालों का मृत्यु दिवस 'होली' हो जाता है।।
4. हमने जिया कि नैतिक जीवन, जीने नहीं दिया लोगों ने,
   हमने पिया शान्ति का अमृत, पीने नहीं दिया लोगों ने।
   धोते रहे विकारों को हम, सीते रहे घाव हम अपने,
   लेकिन दुखते घावों को भी, सीने नहीं दिया लोगों ने।।
5. पत्थर का इतिहास न लिखता, अंकित करुण-कथा होती है।
   मुर्दा मौन साध सकता है, मुखरित मनुज-व्यथा होती है।
   मानवता की पीड़ाओं को अनुभव कर सकता मानव ही,
   शोषण के सन्मुख रोदन की सारी पीर वृथा होती है।।

6. आज कुछ उल्टी हवा ऐसी चली है। आज की हर द्रोपदी जिसमें पली है।
इस हवा में दु:शासन मायूस क्यों हो, द्रौपदी खुद नग्न होने को तुली है।।

7. तम कादोष नही,दोषी तो प्रकाशहै।उसने किया कहाँ ? तम हरने का प्रयास है।
तम क्या है,केवल प्रकाशकाहीअभावतो, तमही तो होगा,प्रकाशही जब निराश है।।

8. कोढ़ जैसी कामनाएं रिस रही है आज।और उन पर वासनाएं बन रही है खाज।
भरसकेगाकिसतरहफिर यह रसीला घाव,क्या सड़नही हैमनुजकी जिन्दगी का राज।

9. धर्म लिपटाया कफन सी कथाओं के आवरण में,
धर्म का 'दर्शन' कहाँ, इस मरघटी वातावरण में।
पूजने की पोथियों में सड़ रहे सिद्वान्त के शव,
क्योंकि वे मृत हो गये, अनुयायियों के आचरण में।।

10. कितनों का मैलापन धोया, कितनों की गंदगी छुड़ा दी।
कितनों को नवजीवन देकर, उनकी बिगड़ी बात बना दी।।
किने अंधों को आँखें दी, कितने गूंगे मुखर हो गये।
कितने शब्द अमर कर डाले, कितने स्वर को सुधा पिला दी ।।

पर्वो की व्याख्याओं के पद्यानुवाद :-

आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा काव्य सृजन को प्रोत्साहन देने वाली गतिविधियों के अन्तर्गत युग निर्माण मिशन के मूर्धन्य कवि श्री मंगल विजय ने पूज्य आचार्य जी की प्रेरणा से यज्ञ, संस्कार, आश्वमेधिक कर्मकाण्ड एवं पर्वो की स्वस्थ परम्परा में की जाने वाली व्याख्याओं के पद्यानुवाद किये। जिसमें से यज्ञ, संस्कार, एवं अश्वमेधिक कर्मकाण्ड के पद्यानुवाद अध्याय- 2 ख-10 में अवलोकनार्थ शोधकर्ता द्वारा दिए जा चुके हैं। कवि द्वारा किये गये पर्वो की व्याख्याओं के पद्यानुवाद अवलोकनीय हैं-

पर्व प्रकरण :-

नवरात्रि:- नवरात्रि संधि बेला ही ही, ऋतुसंधि काल कहलाती है।
संध्या वंदन की तरह पुनीत, पावन यह मानी जाती है।।
इन दिनों साधना, अनुष्ठान तप-त्याग मय हो जाते हैं।
सामूहिक-साध अगर हो तो, युगशक्ति प्रकट हो जाती है।।

रामनवमी:- श्री राम युगों से 'मर्यादा पुरुषोत्तम' माने जाते है।
क्योंकि जीवन के हर एक क्षेत्र उनसे प्रेरणएं पाते हैं।।
वे शील-शौर्य का प्रतिमा है, अन्यायों से लड़ने वाले।
अपनी सामर्थ्य गुप्त रखकर,सहचर को सुयश दिलाते है।।

गायत्री जयन्ती:- गंगा, गायत्री दोनों का अवतरण इसी दिन होता है।
गंगा है पतित पावनी तो गायत्री ज्ञान प्रदाता है।।
गंगा निर्मल करती, गायत्री हरती है, अज्ञान-तिमिर।
भागीरथ, युग ऋषि के तप से, जनमानस पावन होता है।।

गुरुपूर्णिमा:- गुरु व्यक्ति नही तप, त्याग और प्रज्ञा की प्रतिमा होता है।
और शिष्य न केवल शिक्षार्थी, अनुशासित, अर्पित होता है।।
गुरु का आचरण सिखाता, शिष्यों को जीवन विद्या।
श्रद्धा से समर्पण से, शिष्य प्रमाणित कर देता है।।

रक्षा बन्धन:-ब्राह्मणत्व, ऋषित्व के अभिवर्धन का है प्रतीक श्रवणीय पर्व।
सद्ज्ञान और सद्भावों का प्रेरक है यह श्रावणी पर्व।।
गतवर्ष हुए दोषों, पापों का करते है प्रायश्चित्त इस दिन।
समता वे स्नेह के बंधन का पावन प्रेरक श्रावणी पर्व।।

जन्माष्टमी:-जन्माष्टमी पर्व जन जन हिताय अवतार ब्रह्म का होने का ।
एवं व्यामोह ग्रसित अर्जुन जैसों को, गीता ज्ञान है देने का ।।
गीता जयन्ती है 'कर्मयोग' निष्काम भाव से जीवन को जी लेने का।
प्रत्यक्ष विश्व में ही प्रभु से साक्षात्कार कर लेने का।।

विजयादशमी:-विजयादशमी असुरत्व हनन के लिए शक्ति साधना है।
देवों की संगठित शक्ति, दुर्गा अवतरण धारणा है।।
दुर्गा की अष्ट भुजाएं है, इन आठ शक्तियों की प्रतीक।
तन, शौर्य, बुद्धि, धन, कर्म, शास्त्र, चातुर्य, मनोभावना है।।

दीपावली:- है दीपावली आय-व्यय का लेखा-जोखा कर लेने को।
अपव्यय बुराइयों को तज कर, अच्छाई ग्रहण कर लेने को।।
अन्दर बाहर को स्वच्छ बना, लक्ष्मी का आवाहन करते।
पौरुष व सदाचरण द्वारा, समृद्धि-सुख वर लेने को।।

बसन्त पंचमी:- माँ शारदा का अवतरण दिवस, विद्या न कला बढ़ाने को।
उत्साह, उमंग भरा जीवन, सुमनों जैसा महकाने को।।
साक्षर, शिक्षित करने जन-जन को शिव संकल्पों का दिन है।
सद्गुण, सद्भावों, सविचार से धरती स्वर्ग बनाने को।।

महाशिवरात्रि:-शिव-शंकर है शिव के प्रतीक, कल्याण सदा करने वाले।
सादा जीवन उच्च विचारों की सत् प्रेरणाएं देने वाले।।
हम 'शिव भूत्वा शिवं जयेत्', का सूत्र जीवन में धारे।
सब दोष-दुर्गुणों को तजकर, बन जाएं शिव करने वाले।।

होली पर्व:- होली है वार्षिक-यज्ञ, जिसमें नवान्न आहुतियाँ डलती हैं।
समता व स्नेह सरसता की सब पर फुहार बरसती हैं।।
अश्लील चित्र, अश्लील साहित्य की होली अरे! जलाकर के।
शालीन व्यक्तियों सभ्य समाज की उत्तम छवि निखरती है।।

हनुमान जयन्ती:- 'हनुमान' शील, संयम, साहस व शौर्य समर्पण के प्रतीक ।
बिन राम काज के चैन नहीं, जीवन को अर्पण के प्रतीक ।।
हम भी उनके गुण धारण कर, संस्कृति-सीता की पीर हो ।
उन जैसे सेवाभावी बन, होवे आकर्षण के प्रतीक ।।

तुलसी जयन्ती:- तुलसी थे एक क्रान्ति दृष्टा, जिनने जन मानस चेताया ।
कर शील-शौर्य के राम खड़े, भोगी शासक से छुड़वाया ।।
रचकर राम चरित मानस, आदर्श कर दिये कई खड़े ।
बन गये सहज 'लोकनायक' ऐसा 'स्वान्तः सुखाय' गाया ।।

राष्ट्रीय पर्व: पन्द्रह अगस्त-स्वतन्त्रा दिवस
'पन्द्रह अगस्त' आजादी के प्रति बलिदानों की गाथा है।
स्मरण शहीदों का करके, श्रद्धा से झुकता माथा है।।
उस आजादी को स्वार्थ सिद्धि के हाथों बेंच नहीं डाले,
है राष्ट्रद्रोह अपराध बडा, जो माफ नहीं हो पाता है।।

गणतन्त्र दिवस: 'गणतंत्र दिवस' अपने ऊपर अपना शासन करने का दिन ।
26 जनवरी उच्छृंखलता का नही, अरे! आत्म-अनुशासन करने का दिन ।।
फिर भेद-भाव व ऊँच-नीच, जाति-धर्म घातक होगें,
समरसता, राष्ट्र चेतना का जीवन यापन करने का दिन ।।

गाँधी जयन्ती: यह दिन है सत्य, अहिंसा के आराधक बापू वंदन का ।
2 अक्टूबर सादा जीवन व उच्च विचारों के साधक अभिनंदन का ।।
क्या हुआ उसी का देश अरे! हिंसा, असत्य से ग्रसित हुआ ।
यह दिन है आत्म विवेचन का व राष्ट्रभक्ति संवर्द्धन का ।।

शिक्षक दिवस: है शिक्षक दिवस सोचने का, शिक्षक अतीत को याद करें ।
5 सितम्बर भारत को गुरु बनाने वाले, गुरुओं से संवाद करें ।।
जब झोपड़ियों में जा झुपते थे, महलों के भी राज मुकुट ।
आचरणों से आदर्श नहीं देने में नही प्रमाद करें ।।

मूल्यांकन- व्यक्ति के मूल्याँकन के संदर्भ में युग कवि श्री मंगल विजय की स्वयं की पंक्तियाँ अवलोकनीय है-

जीवित रहते, पद पैस का सम्भव है सम्मान।

किन्तु मृत्यु पर साथ न जाता कोई भी सामान।।
स्वार्थ सिद्धि के लिए इकठ्ठी हो सकती है भीड़।
स्वार्थ पूर्ति की छाया में बन जाते अनगिन नीड़।।
चाटुकार गाते रहते हैं श्री मन् का गुणगान।।
लेकिन पद-पैसा छिनते ही लेते है मँह मोड़।
दुर्दिन में सब सगे स्वार्थ के देते हैं संग छोड़।
दुर्दिन में सद्गुण का सम्बल पाता है इंसान।।
सद्गुण की सम्पत्ति संजायें, जनहित जीवन ध्येय।
और मरण पर जन-जन द्वारा सदाचरण हो गेय।
जब जायें तो जन-जन रोयें, सिसक उठे श्मशान।।"1

काव्य मानव के मानसिक स्तर को ऊँचा उठाता है, उसमें देवत्व के गुणों की प्रतिष्ठा करता है। इसीलिए तो परम पिता परमात्मा को भी कवि के रूप में अभिहित किया गया है -

"कवि मनिर्मनिषी परिभू स्वयं भू।" प्रसिद्ध पाश्चात्य आलोचक मैथ्यू आर्नाल्ड ने एक स्थान पर लिखा है- "जो काव्य नैतिकता के प्रति विद्रोही है वह स्वयं जीवन के प्रति विद्रोही है और जो काव्य नैतिक भावनाओं के प्रति उपेक्षापूर्ण है वह जीवन के प्रति भी उपेक्षा पूर्ण है।" अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि शैली का मत है- "कविता सदैव आनन्द संयुक्त रहती है। परन्तु उसका प्रभाव अलौकिक अकाल्पनिक और नागरिक चेतना से ऊपर होता है।"

युग निर्माण योजना की पावन सुरसरि के भागीरथ आचार्य श्रीराम शर्मा आचार्य के प्रेरणा पूर्ण दिव्य आहवन के फलस्वरूप लोकमंगल के लिए समर्पित युगकवि श्री मंगल विजय भारतीय काव्याकाश का एक ऐसा दिव्य नक्षत्र है जिसमें अनुपम आभा के साथ-साथ लोकमंगल का पावन संदेश है जिससे सम्पूर्ण 'गायत्री परिवार' गौरवान्वित है।

चिन्तक, मननशील, भावुक और सिद्धान्तों पर दृढ़ आस्था रखने वाले कविवर श्री मंगल जी मध्य प्रदेश के सुयोग्य शिक्षाविदों में एक हैं। जीवन के प्रति आस्था, नवनिर्माण, उज्जवल भविष्य का स्वप्न और नव निर्माण का प्रयास आप की कविताओं की विशेषता है। आपकी कविताएं भाव, प्रवाह, प्रसाद, गुण और गेयत्व की दृष्टि से उत्कृष्ट स्तर भी है।

आज जब कि देश के सामने पाश्चात्य मानव मूल्यों और भोगवादी

---

1. मंगल विजय 'विजय वर्गीय' - व्यक्ति का मूल्यांकन, युग निर्माण योजना, 28 जुलाई 1980

संस्कृति के कारण नैराश्य छाया हुआ है, भक्ति पथ के अतिरिक्त कोई सहारा दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। रामानन्द और बल्लभाचार्य ने जिस भक्ति रस का संचय किया, कबीर और सूर आदि की बाग्धारा ने जिसका संचार जनता के बीच किया था, साथ ही कुतबन, जायसी आदि कवियों ने अपनी काव्य रचना द्वारा प्रेम पथ की मनोहरता दिखा कर आशा, उल्लास का संचार किया था, कवि श्री मंगल विजय ने उसके प्राचीन भागवत रूप को नवीन विकास के रूप में प्रस्तुत किया हैं। उसमें देश की समाज व्यवस्था, परिवार शासन, प्रजा की हालत आदि अनेक नये अछूते विषयों को भी आपने चिन्तन का विषय बनाया है। उनके वृहद काव्य संग्रह 'वन्दना के बोल' का मूलस्वर इसी भक्तिभाव से ओतप्रोत है।

युग कवि श्री मंगल विजय ने भक्ति को बडी व्यापक परिधि में लिया है। भक्ति ईश्वर के प्रति, गुरु के प्रति, राष्ट्र के प्रति और विश्व मानवता के प्रति, उनमें भक्तिभाव का विपुल विस्तार है। वे जीवन के सूत्रधार, संरक्षक अपनी गुरुसत्ता (प.पू.पं. श्रीराम शर्मा आचार्य) से अनन्य भक्ति भाव से जुड़े है। परिणामतः आस्था, विश्वास, समर्पण एवं सद्गुणों के प्रति उनका यत्र-तत्र मुखर हो उठा है।

श्री मंगल विजय जी के काव्य से देव परिवार-गायत्री परिवार के परिजन सदा से परिचित हैं। अखण्ड ज्योति के पृष्ठों पर उनकी कविता की किरणें प्रायः झिलमिलाती रहती हैं। उनमें वेदना, टीस, करुण, क्रान्ति, अनुराग भक्ति एवं सद्ज्ञान के प्रबोध का जो सौन्दर्भ रहता है, उससे लाखों हृदयों को छुआ है।

व्यक्तिगत रसानुभूति कवित्व एवं कवि का जन्म देती है और सामाजिक रसानुभूति पढ़ने वाले सहृदय पाठक को। दोनों के मिलन से सर्व हितकारी साहित्य का सृजन होता है। महर्षि अरविन्द का कहना है कि "अस्मिता का विस्तार ही कला है, अस्मिता से मुक्ति ही कविता है।" श्री मंगल विजय की काव्य-सृष्टि में कला और कविता दोनों एक साथ हैं उनकी काव्य कृति प्रज्ञावतार आत्म विस्तार एवं आत्ममुक्ति का अद्भुत संगम है।

श्री मंगल विजय को अपने काव्य में अध्यात्म, राष्ट्रीयता, मानव मूल्यों के उन्नयन जैसे भावों के साथ श्रृंगार एवं व्यंग के प्रयोगों में भी शालीनता के साथ चुटीलापन लाने में सफलता मिली है। गेय से लेकर मुक्त छंद तक, काव्य-खण्डकाव्य से मुक्तकों तक सभी विधाओं का प्रयोग करके आपने हिन्दी काव्य जगत को समृद्ध किया है। राष्ट्र की विविधता को एकता के

सूत्र में बाँधकर रखने की आपकी भावना ने, जहाँ मन्दिर के साथ मस्जिद को याद किया है, वहीं हिन्दी के साथ उर्दू में भी सार्थक भाव व्यक्त कराये है।

वस्तुतः कविवर श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' भक्ति काव्य में आधुनिक युग का नेतृत्व कर रहे है। उनके चिन्तन में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं गायत्री परिवार की गरिमा तथा प्रगतिशीलता स्पष्ट परिलक्षित होती है।

श्री लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र"

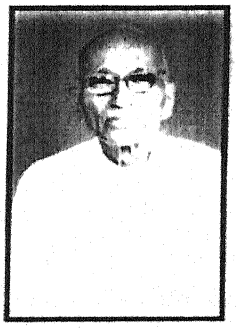

हिन्दी जगत में ऐसे अनेक साहित्यकार पैदा हुए जिनका सम्पूर्ण जीवन काव्य- साधना को ही समर्पित रहा किन्तु आत्म प्रचार से दूर रहते हुए माँ सरस्वती के सौम्य व शालीन सेवक की भाँति समाज के नव निर्माण हेतु एकान्त में अपनी सशक्त लेखनी के चलाते रहने के कारण उनकी प्रतिभा का अधिक प्रचार-प्रसार नहीं हो सका। श्री लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र" उन्हीं कवियों में से एक है।

जन्म एवं पारिवारिक प्रवृत्ति :-

ग्राम व पत्रालय बरौलीपार, जनपद इटावा (उ0प्र0) में 3 अगस्त 1928 को श्री लाखन सिंह भदौरिया जी का जन्म हुआ। आपको धार्मिक प्रवृत्ति अपने परिवार से प्राप्त हुई। आपके पूजनीय पिता जी का श्री रामचरित मानस के पठन-पाठन एवं कथा श्रवण से अति लगाव रहा। आपके घर परिवार जनों को साधु संतों की सेवा और भजन संकीर्तन से अनुराग था। दयानन्द इण्टर कालेज के रविवासरीय आर्य समाज के उत्सवों में आप अपने अध्ययन काल से जुड़ गये। तेरह वर्ष की आयु में आप मैनपुरी में अपनी बडी अम्मा जी (ताई जी) के पास आकर गुरुजनों के सम्पर्क में रहे तथा साहित्यिक गोष्ठियों में बाल्यावस्था से ही सम्मिलित होने का सुयोग बना। श्री शिशुपाल सिंह 'शिशु', श्री बलवीर सिंह 'रंग', कुँ. हरिश्चन्द्र देव वर्मा 'चातक' आदि कवियों की सुसंगति से आपके अन्दर साहित्यानुराग विकसित होता गया।

आपकी पाँच संतानें हैं- दो पुत्रियाँ श्रीमती अर्चना (एम0ए0) और श्रीमती अरुणा (बी0ए0)। सबसे बड़ा पुत्र चि0 आशुतोष भदौरिया अजमेर में हिन्दी-संस्कृत के व्याख्याता है। दूसरे पुत्र चि0 प्रबोध कुमार भदौरिया एम0ए0बी0एड0, सैण्ट थामस विद्यालय, मैनपुरी में संस्कृत व हिन्दी के शिक्षक है। तीसरे पुत्र

प्रवीण कुमार भदौरिया अपनी हाई स्कूल शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात व्यवसाय से जुड़ गये। आपकी बड़ी पुत्र वधू श्रीमती सन्ध्या सेण्टमेरी इण्टर कालेज, अजमेर में अपने पति के साथ हिन्दी शिक्षिका है।

शिक्षा व्यवसाय एवं सेवायें-

श्री सौमित्र की शिक्षा एम0ए0, 'साहित्यरत्न' 'साहित्यालंकार' तक हुई। पारिवारिक विपन्नता के कारण इण्टरमीडिएट के बाद पढ़ाई छोड़कर श्री सौमित्र ने वर्ष 1953 से प्रेम पाठशाला, मैनपुरी में अध्यापन कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। एक आदर्श शिक्षक के रूप में छात्रों की पढ़ाने के साथ-साथ इन्होने अपने अध्यवसाय से हिन्दी व संस्कृत विषय में स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्राप्त की। संस्कृत शिक्षा से सेवानिवृत्त होकर अब आप भोजपुरा, मैनपुरी में ही निवास कर रहे हैं।

व्यक्तित्व:- 'मुक्तक सम्राट' के रूप में ख्याति प्राप्त श्री सौमित्र जनपद मैनपुरी के ही नहीं बल्कि राष्ट्र के एक दैदीप्यमान नक्षत्र हैं। सौम्य, सरल व शान्त प्रकृति के श्री भदौरिया अपने रहन-सहन और आचरण से भारत की ऋषि परम्परा को जीवन्त बनाये हुए हैं। जनपद की शहरी सीमा से सटे ग्राम भोजपुरा में कवि की कुटिया किसी तीर्थस्थल से कम नहीं है। पक्के आवास के बाहर कवि श्री सौमित्र ने अपने लिए एक घास-फूस की कुटिया बना रखी है। श्री भदौरिया का प्रारम्भिक जीवन संघर्ष पूर्ण रहा।

अपनी आयु के 77वें पड़ाव पर भी श्री भदौरिया अत्यन्त स्फूर्तिवान हैं। खद्दर का कुर्ता धोती और सदरी व कंधे पर लोई या उत्तरीय डाले हुए मैनपुरी की सड़कों पर प्रात: वह आज भी पैदल टहलते मिल जाते हैं। आपके चेहरे पर सदैव एक मुस्कान रहती है जो किसी को भी अपना बना लेती है उनकी कविताओं में उनके व्यक्तित्व के अनुरूप ही सरलता, सहजता व सादगी के साथ अत्यन्त गहरे अर्थ होते हैं।

काव्य साधना- श्री सौमित्र के छात्र जीवन से ही उनकी रचनाओं का प्रकाशन क्षेत्रीय पत्र पत्रिकाओं में प्रारम्भ हो गया था। हिन्दुस्तान (दैनिक), आर्य मित्र (लखनऊ), कल्पना (इलाहाबाद), वीणा (इंदौर) एवं वर्ष 1965 से अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, युग शक्ति गायत्री में आपकी रचनाएं प्रकाशित होती रहीं है।

श्री सौमित्र ने अपने छात्र जीवन में भारत विभाजन के बाद लहूलुहान आजादी का प्रभात देखा था और उनकी कविता बरबस फूट पड़ी- 'सो रही कहाँ आर्य संतान,' फिर अंग्रेजी भाषा की प्राथमिक पढ़ाई में ही "मै

अंग्रजी से परेशान" का प्रभावी स्वर गूँज उठा। दयानन्द विद्यालय मैनपुरी के आपके शिक्षक श्री राजेन्द्र सिंह चौहान और संस्कृत शिक्षक श्री भूदेव शास्त्री का कविता प्रेरक के रूप में प्रवल प्रोत्साहन इन्हें प्राप्त हुआ। यहीं से आपकी कविताओं का प्रकाशन एवं कविता पाठ की गतिशीलता बढ़ी। वर्ष 1950 से अब तक शताधिक पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएं प्रकाशित हुई है।

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन के प्रभाव विषयक साक्ष्य एवं तथ्य-

नवम्बर 1965 में पूज्य आचार्य शर्मा जी ने गायत्री तपोभूमि मथुरा से श्री बलराम सिंह परिहार के हस्तलेख में अपने हस्ताक्षर सहित एक पत्र लिखवाकर श्री सौमित्र को भेजा। पत्र में उल्लेख किया कि-

आत्मीय, श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'

"तुम्हारी रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में देखकर प्रसन्नता हुई, यदि हो सके तो गायत्री तपोभूमि, मथुरा आकर मिलें।" इससे पूर्व ही श्री सौमित्र अपने आर्य समाजी जीवन में गायत्री मंत्र एवं आर्य समाज के उत्सवों में कविता पाठ से जुड़े थे साथ ही पूज्य आचार्य शर्मा के गायत्री परिवार के साप्ताहिक यज्ञीय कार्यक्रमों में तथा मैनपुरी के स्थानीय कार्यक्रमों में सम्मिलित होते रहते थे।

वर्ष 1965 में ही श्री सौमित्र आचार्य शर्मा जी से उनके घियामण्डी मथुरा स्थित निवास पर मिले। पूज्य गुरुदेव (आचार्य शर्मा) व वन्दनीया माता जी (श्रीमती भगवती देवी शर्मा) के प्रथम दर्शन उन्होने किये। आचार्य शर्मा की माताजी पूजनीया दानकुंवरि के प्रथम दर्शन का सौभाग्य भी कवि को प्राप्त हुआ। वन्दनीया माताजी के हाथ से बनाई दाल रोटी और एक-एक मक्का की रोटी भी भोजन प्रसाद के रूप में इन्हें प्राप्त हुई। पूज्य आचार्य शर्मा ने इसी समय कविवर श्री सौमित्र के काव्य-सृजन हेतु प्रोत्साहित किया और कहा कि "तुम हमारे होनहार एक प्रतिभा सम्पन्न कवि हो, अखण्ड ज्योति के लिए लिखा करो।"

पूज्य आचार्य जी की गहरी संवेदनशीलता का संस्पर्श पाकर एवं उनकी ओर से निरन्तर जुड़े रहने के आह्वान से श्री सौमित्र अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना (साप्ताहिक एवं मासिक),युग शक्ति गायत्री, महिला जाग्रति अभियान, आदि पत्र-पत्रिकाओं एवं स्मारिकाओं के लिए अपनी रचनायें भेजते रहे एवं उनकी रचनाएं सतत् प्रकाशित होती रही। आचार्य शर्मा ने वर्ष 1966 में कवि की रचनाओं का एक संकलन "अपना दीप जलाओ" प्रकाशित भी कराया। आचार्य शर्मा जी के जीवन काल के सभी सूत्रों में लेखन सत्र, प्राण प्रत्यावर्तन सत्र तथा युग निर्माण सम्मेलनों में श्री सौत्रित की प्रतिभागिता होती रही।

पूज्य आचार्य और वन्दनीया माता जी के हस्तलिखित पत्र भी कवि श्री सौमित्र के पास से शोधकर्ता को उपलब्ध हुए जिससे स्पष्ट होता है कि श्री सौमित्र को पूज्य आचार्य जी का आत्मीय सान्निध्य प्राप्त था। समय-समय पर आचार्य शर्मा जी कवि श्री सौमित्र को अपने पास बुलाकर परामर्श-प्रेरणाओं का क्रम भी चलता रहा। वर्ष 1971 में पूज्य आचार्य श्री की मथुरा से विदाई काल के विराट आयोजन में भी कवि ने प्रतिभाग किया। शांतिकुंज, हरिद्वार के सभी महत्वपूर्ण आयोजनों एवं आचार्य जी के महाप्रयाण के बाद के विराट आयोजनों के प्रत्यक्ष दृष्टा व भागीदार कवि श्री सौमित्र रहे हैं।

साहित्यकारों के सम्पर्क -

श्री सौमित्र ने युग निर्माण सम्मेलनों में क्रमशः राठ (हमीरपुर), महोबा, छतरपुर, भोपाल, झाँसी, कुलपहाड़, जयपुर, गायत्री तपोभूमि मथुरा, आगरा, भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, उरई, होशंगाबाद पहुँचकर 'युग निर्माण कवि सम्मेलनों' में पहुंच कर काव्य पाठ किया है जिसका विवरण उस काल के समस्त प्रमाणिक प्रकाशनों एवं समाचार पत्रों में हुआ। डा0 रामस्वरूप खरे (उरई), श्री बाबूलाल जैन 'जलज', डा0 हरगोविन्द सिंह, श्रीमती माया वर्मा (ग्वालियर) श्री मंगल विजय (भोपाल) से आपका सतत् सम्पर्क रहा। हिन्दी काव्य मंचों पर एवं आकाशवाणी पर सोम ठाकुर, श्री सुमित्रा नन्दन पंत, बेढव बनारसी, बेधड़क बनारसी, नागार्जुन, रामधारी सिंह दिनकर, शिवमंगल सिंह सुमन, वीर सावरकर, पं.श्याम नाराण पाण्डेय, शिशु पाल सिंह 'शिशु', बलवीर सिंह 'रंग', पद्म श्री गोपाल दास 'नीरज', श्री अंचल जी, रामावतार 'त्यागी', वीरेन्द्र मिश्र, मुकुट बिहारी 'सरोज', चन्द्रसेन 'विराट', आदि हिन्दी के मूर्धन्य कवियों के साथ एक बार नहीं अनेक बार श्री सौमित्र ने काव्य पाठ किया है। हिन्दी के सामूहिक काव्य प्रकाशनों में भी उक्त काव्य मनीषियों के साथ श्री सौमित्र की रचनाएं भी प्रकाशित हुई हैं।

सम्मान उपाधियाँ व प्रेरणास्रोत कार्य -

1. उ0प्र0 हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मैनपुरी अधिवेशन में श्री सौमित्र को 'राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त अलंकरण' से अलंकृत किया गया।
2. इटावा की हिन्दी सेवा संस्था ने आपको 'गंगदेव पुरस्कार' से सम्मानित किया।
3. पं. लीलापत शर्मा महोत्सव समिति भिण्ड ने आपको 5 अप्रैल 1998 का 'युग निर्माण कवि सम्मान' अपने आश्वमेधिक वर्षगाँठ के अन्तर पर प्रदान किया। इस अवसर पर श्री चैतन्य जी (मथुरा), श्री बलराम सिंह परिहार

(शांतिकुंज हरिद्वार), श्रीमती माया वर्मा (ग्वालियर), श्री मंगल विजय (भोपाल), व शचीन्द्र भटनागर (मुरादाबाद) के साथ श्री सौमित्र भी सम्मानित किये गये।

4. आर्य सेवक शताब्दी समारोह नागपुर (महाराष्ट्र) के 27-28 दिसम्बर 2003 के विराट आयोजन में श्री सौमित्र को "कविरत्न" की उपाधि से विभूषित किया गया। इस अवसर पर आपको रजत पदक, ग्यारह सौ एक रूपये, शाल, श्रीफल आदि मानद वस्तुयें देकर अंलकृत किया गया।

5. हिन्दी जगत में श्री सौमित्र 'मुक्तक सम्राट' की मानद उपाधि से विभूषित किये गये ।

6. आर्य समाज द्वारा संचालित हिन्दी आन्दोलन में चण्डीगढ़ के अम्बाला कारागार में राष्ट्र हित में लगभग चार माह आपने कारागार का कष्टपूर्ण जीवन भी व्यतीत किया है।

कृतित्व :- श्री सौमित्र की प्रकाशित एवं अप्रकाशित कृतियाँ अवलोकनीय हैं-

1. माटी और मुक्तक (मुक्तक काव्य) वर्ष 1964 में प्रकाशित
2. अपना दीप जलाओ (कविता संग्रह)गायत्री तपोभूमि मथुरा से वर्ष 1967 में प्रका.
3. ज्योति के फूल (कविता संग्रह) (निजी सामर्थ्य से प्रकाशित) वर्ष 1971 में प्रका.
4. आँसू डूबी मुस्कानें वर्ष 1964 में प्रका.

अप्रकाशित रचनाएं :- वर्ष 1969 से हिन्दी के मंचीय महारथी सोम ठाकुर के पास आपके पाँच सौ मुक्तक प्रकाशनार्थ रखे हैं साथ ही आपकी सहस्त्राधिक रचनाएं प्रकाशन हेतु इनके पास प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं। श्री सौमित्र की काव्यकृतियों की समीक्षा अवलोकनीय है-

1. माटी और मुक्तक:- (मुक्तक काव्य)

श्री सौमित्र का प्रत्येक मुक्तक उस सीप के समान है जो अपने में एक बहुमूल्य विचार रूपी मोती छिपाये हुए है। भाषा प्रयोग में सफाई और छंद की बंदिश की सराहना करते हुए डा0 पदम सिंह शर्मा लिखते है- "कि उनके मुक्तक की जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है।" श्री सौमित्र के कतिपय मुक्तक अवलोकनीय है-

"प्रीति का दीपक जलाकर फिर नमन तुमने किया है।
फिर किसी एकान्त में दृग-आचमन तुमने किया है।।
झुक रहे हैं गीत के बादल बरसने को अधर से,
लग रहा है भावनाओं का हवन तुमने किया है।।"

श्री भदौरिया के मुक्तकों में प्रेम की पीर तो है ही, अध्यात्म का संदेश भी है ओर जीवन की चुनौतियों से जूझने के स्वर भी-

"प्राण बोले प्रीति अन्तस में छिपाना जानते हैं।
अधर बोले पीर को हम गुन-गुनाना जानते हैं।
प्रथम तो सकुचे मगर फिर यों लजीले नयन बोले,
हम धधकती आग को पानी बनाना जानते हैं।।

स्वामी विवेकानन्द ने भारत के उत्थान के लिए यहाँ के युवकों में इस्पात-सी दृढ़ माँसपेशियों और धमनियों, शिराओं में वैसी ही दृढ़ता से भरी स्फूर्ति-चेतना और शक्ति के एक प्रवाह की आकांक्षा की थी। श्री सौमित्र ने उसे प्रकारान्तर से भोजपूर्ण किन्तु सरस काव्य शैली इस प्रकार कहा-

"आदमी बन जो धरा का भार कंधों पर उठाए।
बाँट दे जग को न अमृत बूँद अधरों से लगाए।।
है जरूरत आज ऐसे आदमी की सृष्टि को फिर।
विश्व का विष सिन्धु पी जाए मगर हिचकी न आए।।"

जीवन की की चुनातियों को स्वीकारते हुए उन्होने कहा -

"अनय और हम आमने सामने है। समय और हम आमने-सामने हैं।
सृजन-ध्वं कुरुक्षेत्र में आ खड़े हैं, प्रलय और हम आमने-सामने है।"

आशा, विश्वास, आस्था व त्याग की मूर्ति श्री सौमित्र वर्तमान से निराश हैं। आज की कविता के सम्बन्ध में उनका कहना है कि कविता केवल शब्दों की बाजारी या मसखरापन नहीं है। शब्द ब्रह्म है उसमें अनन्त शक्ति है। साधना करने वाला कवि ही उस शब्द ब्रह्म के मर्म को समझकर उसका सम्मक उपयोग कर सकता है। कवि धर्म अत्यन्त कठिन है। कविता तात्कालिक निदान नहीं है। वह तो शाश्वत सत्य है।" उनका मानना है कि साहित्य साधना के लिए विष का घूँट पीकर नीलकण्ठ बनना पड़ता है तब कहीं काव्य का सृजन होता है।" श्री सौमित्र का एक और मुक्तक अवलोकनीय है-

"सर्पदंशिता पीड़ाओं को कितने जन्म पड़ा लहराता।
तब अभाव के नीलकण्ठ से फूठ रहा मद भरा तराना।
रुँधा-रुँधा पीड़ा का स्वर है, अपना राग सुनाएं कैसे,
इतना सरल नहीं होता है विष के घूँट कण्ठ से गाना।।"

2. अपना दीप जलाओ (कविता संग्रह):-

अपना दीप जलाओ (कविता संग्रह) का प्रकाशन वर्ष 1967 में कवि के उत्साह वर्धन एवं लोकमंगल हेतु वेद मूर्ति तपोनिष्ठ आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा गायत्री तपोभूमि, मथुरा से किया गया। इस संग्रह में कवि के इक्तालीस गीत संग्रहीत हैं। प्रमुख गीतों के शीर्षक इस प्रकार हैं-

1. जिन्दगी जीना कला है
2. सवेरा हो रहा है
3. तपोवन में प्रकाश उतरा
4. नये भोर का आगमन
5. मनुज का करना है निर्माण
6. क्रान्ति की जवानी
7. तनय की कामना
8. दीन पर होती दया
9. गुरु कृपा है
10. गुरुपर्व का नमन
11. दो न आँसू की दुहाई
12. उर की पुकार

कुछ गीतों के अंश अवलोकनीय हैं-

1. जिन्दगी जीना कला है और जीवन साधना है।
जिन्दगी सोना नहीं है जिन्दगी तो जागना है।।
हर सृजन, पूजन, भजन, हर कर्म तप है, अर्चना है।
भाव में भगवान है तो, क्या नहीं आराधना ।।
हर पसीना अर्घ्य, निष्ठावान दिव्य उपासना है। जिन्दगी जीना .....×××
यह समय बहती नदी है, हाथ में आती नहीं है।
सामने ही भागती है, दूर भी जाती नहीं है।।
हर तृषातुर अंजली को तृप्ति की संभावना है। जिन्दगी जीना .....
("जिन्दगी जीना कला है" शीर्षक से)

2. तुम समय की रागिनी गाओ, सवेरा हो रहा है।
रात श्रृंगार भागा जा रहा देखो, सो चुका संसार जागा जा रहा देखो।
दीप की लौ और उकसाओ, सवेरा हो रहा है। तुम समय की .....× × ×
रात में रजनीचरों का बोलवाला था, बंद कारा में पड़ा रोता उजाला था।
सूर्य का दायित्व बतलाओ, सवेरा हो रहा है। तुम समय की .....
सिन्धु खारी है नहीं, रस-सिक्त गागर है, भावना के मोतियों से रिक्त सागर है।
साधना के स्वाँति-बन छाओ, सवेरा हो रहा है। तुम समय की .....
("सवेरा हो रहा है" शीर्षक से)

3. लगा रहा है पुकार कोई- नया सवेरा पुकारता है।
अखण्ड दीपक की, ज्योति जागी, बना दिया है, प्रभात बगी,
न काम देगा खुमार कोई-नया उजेला पुकारता है। लगा रहा है.....
जगी तपस्या, अनीति भागी। मिटी रूढ़ियां कुरीति भागी,
नये सृजन का श्रृंगार कोई-नया चितेरा सँवारता है लगा रहा है .....
नयी नहीं है, कथा पुरानी, सुनो समय की भविष्य वाणी,
किया न जिसने सुधार अपना, उसे न कोई उबारता है। लगा रहा है .....
("तपोवनों में प्रकाश उतरा" शीर्षक से)

4. नया भोर हँसता आता है, मुसकाती आती उषायें।
चलो समय का शंख बजाकर, युग की नयी आरती गायें।।
मधु अमृत उमड़े पड़ते है, भर्गः तेज तरल हो आया।
प्राची का सूरज, हिमगिरि के शिखरों पर चढ़कर मुस्काया।।
भागीरथी भावनाओं की उमड़ी, कण-कण प्राण नहाया।
जागे वेद मंत्र, ऋषि जागे, जाग रही है नयी ऋचायें । नया भोर.....
गायत्री के अमृत छन्द में, महाप्राण की क्षमता उतरी।
सबका मंगल लिए हृदय में, मानवता की ममता उतरी।।
जीवन उतरा श्वाँस-श्वाँस में, जनमानस में समता उतरी।
तप उतरा मंगल-घट साधे, उतरी भू पर कल्प लताऐं ।।

("नये भोर का आगमन" शीर्षक से)

5. जड़ता में चेतनता जागी, चेतन में गति के प्राण जगे,
प्राणों में रस लीला जागी, रस में सोये भगवान जगे।
प्राणों का पर्व नहाने को, वेला वरदानी आयी है,
युग का यौवन अँगड़ाया है, ले क्रान्ति जवानी आयी है।।

("क्रान्ति की जवानी" शीर्षक से)

6. दीन पर होती दया, सम्मान तो होता नहीं!
इन्द्र का ऐश्वर्य पाकर,दीन भटकी भावनायें,
दानियों को लूटती हैं क्षुद्ररूखी याचनायें,
याचकों को भीख मिलती, दान तो होता नही! दीन पर होती दया .....
देह प्रभु की देन है, जो मिल गयी नर को अजाने,
साँस की गति ने नहीं पर, जिन्दगी के अर्थ जाने।
आदमी की शक्ल से, इन्सान तो होता नहीं।दीन पर होती दया.....× × ×
बीज के बलिदान ने, निर्माणं का परिचय दिया।
त्याग को मुस्कान ने, छविमान का परिचय दिया,
बिन किये विषपान नर, भगवान तो होता नहीं। दीन पर होती दया .....

("दीन पर होती दया" शीर्षक से)

7. पीर की बेचैनियों में, प्यार बनती गुरु-कृपा है।
फँस भंवर-आलिंगनों में जब किनारा छूटता।
जब थपेड़ो से थका हारा, हुआ मन डूबता।
तब उफनती धार में, पतवार बनती, गुरु कृपा है। पीर की बेचैनियों में .....
जब भटकती जिन्दगी को रास्ता मिलता नहीं है,

जब अटकने पाँव का, गति का पता मिलता नहीं है,
तब स्वयं ही ज्योति का आधार बनती गुरुकृपा है। पीर की बेचैनियों में .....

("गुरु-कृपा" शीर्षक से)

3. ज्योति के फूल (कविता संग्रह):-

ज्योति के फूल (कविता संग्रह) कवि श्री सौमित्र ने अपनी सामर्थ्य से वर्ष 1971 में प्रकाशित कराया जिसमें एक सौ सत्ताइस कविताओं एवं गीतों का संग्रह है। प्रमुख कविताओं के शीर्षक इस प्रकार है-

1. हमारी विडम्बना (गजल)
2. अगर हम समय पर जाग पाये
3. सन्त-वाणी
4. बस! प्यास चाहिए
5. चाहिए कुछ और ही आराध्य को
6. मातृ-वंदना
7. महानता की पहचान
8. ऐसी ज्योति जगे माँ तेरी
9. मानवता के भोर की अकुलाह
10. उद्‌बोधन
11. दो न आँसू की दुहाई
12. आज में जो जिया सो जिया

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन को प्रकाशित करने वाले कुछ गीतों के अंश अवलोकनीय हैं-

1. अपने ही आपसे तो, रूठे हुए है हम। अपनी ही जिन्दगी में, झूठे हुए है हम।
अपना ही फन पटककर अपने को आप डसकर,
लोहूलुहान दिखते, लुटे हुए हैं हम। अपने ही आप से तो .....
आक्रोश है गगन पर, सब रोष है धरनि पर,
अपने ही पोर-पोर से, टूटे हुए हैं हम। अपने ही आपसे तो
छलते रहे स्वयं को, नित कोसकर धरम को,
अपने ही भाग्य जैसे, फूटे हुए है हम। अपने ही आप से.....
दिन-रात छटपटाते, गलती न समझ पाते,
अपनी ही मुठ्ठियों से, छूटे हुए हैं हम। अपने ही आप से तो .....

("हमारी विडम्बना" शीर्षक से)

2. अगर हम समय से नहीं जाग पाये, किरन क्या कहेगी, गगन क्या कहेगा।×××
जगो प्राण के पंछियो गीत गाओ, धरा की उदासी, प्रभाती बनाओ।
किरन प्रात की नाचती आ रही है- नयी भैरवी के नये स्वर जगाओ।
नही गीत ने प्रीति के प्राण फूंके- महाभाव का आचरण क्या कहेगा? अगर हम....

("अगर हम समय पर जाग पाये" शीर्षक से)

3. सुनो-सुनो आवाज दे रही देव, सन्त की वाणी।
उतर रहा प्रज्ञा युग भू पर ले मधु ऋतु कल्याणी।।× × ×

वह बसन्त आया है जिसमें-ज्ञान मशाल जलेगी।
बासन्ती जिन्दगी मनुज की, फूले और फलेगी।।
कोई तन बीमार न होगा, कोई मन बेजार न होगा।
सबकी सेवा में सब होंगे, कोई जन बेकार न होगा।
सबके दुख का अन्त करेगी, गुरु अनन्त की वाणी। उतर रहा .....

("सन्त-वाणी" शीर्षक से)

4. हमको तो बस, प्यास चाहिए।
तुम भेंटो सुख के सपनों से, हम भेंटे दुखियों अपनो से।
तुम खेलो कलियों-सुमनों से, नहीं गुलाबी हास चाहिए। हमको तो बस .....
नहीं नर्क से हम डर जायें, स्वर्ग खींच इस भू पर लायें।
अनय-अनीति देख थर्राएं, हमें नहीं सन्यास चाहिए। हमको तो बस .....

("बस! प्यास चाहिए" शीर्षक से)

5. चाहिए कुछ और ही, आराध्य को आराधना में,
पड़ गई पूजा पुरानी और बासी भावनाएं।
भर रहीं कितनी उदासी, हैं रुँवासी अर्चनायें,
चाहिए उपचार नूतन, आज पूजन अर्चना में। चाहिए कुछ और.....× × ×
हो पसीना, अर्घ्य, आँसू का पिलाओ नीर पावन सर्जना में,
मंत्र हो मुध सिक्त वाणी भेंट हो चैतन्य जीवन।।
हो समर्पित भक्ति जाग्रत मानवी-संवेदना में। चाहिए कुछ और .....

("चाहिए कुछ और ही आराध्य को" शीर्षक से)

6. नये साज-स्वर सजा रही माँ, विवेक वीणा बजा रही माँ।
प्रणव-नादिनी, जगी ऋचायें, वरद भुजायें उठा रही माँ।।
अगाध रस के अनादि निर्झर, अबाध गति से बहा रही माँ।
अमृत सुतों को, सुधा के प्याले, बुला-बुला के पिला रही माँ।।

("मातृ वन्दना" शीर्षक से)

7. आज में जो जिया सो जिया आदमी।
गत-अगत का नहीं, मर्सिया आदमी।
भूत का या भविष्य का 'कल' नामदे, भूल के साथ भटका किया आदमी।
कल ही कल के लिए हाय रोता रहा, आज को छोड़कर चल दिया आदमी।×××
रोशनी का पता पूछता और से, देख तू ही है जलता दिया आदमी ।।
लोकहित के लिए जो हलाहल पिये, शिव अमृत पुत्र वो बन गया आदमी ।

("आज में जो जिया सो जिया" शीर्षक से)

सहगान कीर्तन में प्रकाशित रचनाएं:-

युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा द्वारा प्रकाशित सहगान कीर्तन में कवि श्री सौमित्र की रचनाओं को आचार्य शर्मा द्वारा महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। कुछ गीतों के अंश अवलोकनीय हैं-

1. उठो उठो हे मातृशक्ति अब, समय प्रभाती सुना रहा है।
धुएं में धरती की दम घुटी है, घृणा की लपटों से जल उठी है,
धधक रहे हैं अनल अंगारे, मनुजता सारी उबल उठी है।
कहीं न पलभर है चैन पड़ता, कलह का जीवन जला रहा है।
उठो उठो हे मातृशक्ति .....×××
हठी समय को बनो भवानी, नचाओ इंगित से आग पानी,
तनी भृकुटियों से क्रान्ति जागे। कदम-कदम पर लिखो कहानी।
ओ देवी दुर्गे! तुम्हीं हो नारी, तुम्हारा गौरव बुला रहा है। उठो उठो हे मातृशक्ति..
("उठो उठो है मातृशक्ति" शीर्षक से)

2. धर्म की स्वर ध्वजाएं उड़ाओ नहीं, कर्म में धर्म का ध्यान देते चलो।
लाश अपनी स्वयं ढो रहा आदमी, साँस चलती है इंसान जिंदा नहीं,
उठ रहा है धुआँ बढ़ रही है घुटन, साँस रोके खड़े साधना के चरन,
उक्त वातावरण के लिए कौन सा, मुक्ति वरदान लाए हो देते चलो।। धर्म की ...
× × × × × × × × × × × × × ×
धर्म धारा गया है हृदय में सदा, वह उतारा गया है क्रिया में सदा।
सिर्फ व्याख्यान से धर्म फैला नहीं, धर्म पीकर जिया जिन्दगी की सुधा।।
धर्म कहता है तुम धैर्य धारण करो, शान्ति से विघ्न सारे निवारण करो।
धर्मदिता नही भीरुता को जगह, शौर्य का शक्ति का दान देते चलो। धर्म की .....

प्रज्ञागीत में प्रकाशित रचनाएं:-

युग निर्माण योजना, मथुरा से प्रकाशित प्रज्ञागीत में सुकवि श्री सौमित्र की रचनाएं भी प्रकाशित हुई। प्रमुख रचनाओं के अंश अवलोकनीय हैं-

1. आ जाना बन ध्यान, हमारे कीर्तन में।
भर जाना माँ प्राण, हमारे जीवन में।।
आये गिरकर हमें संभालना, आये भूली राह बदलना, सीखें हम काँटों पर चलना,
ध्रुव प्रहलाद समान, न हारें जीवन में। आ जाना बन ध्यान .....× × ×
कामधेनु के नहीं पुजारी, कल्पवृक्ष के नहीं भिखारी, तपसी बनें देव अधिकारी,
धीर, वीर, गम्भीर बनें हम जीवन में।। आ जाना बन ध्यान .....
("गायत्री कीर्तन" शीर्षक से)

समूहगान में प्रकाशित रचनाएं:-

युग निर्माण योजना, मथुरा से प्रकाशित गीत संकलन समूह गान में श्री सौमित्र जी की रचनाएं भी प्रकाशित हुई। एक उदाहरण अवलोकनीय है-

तुम प्रीति रूपहो माँ, परतीति रूप हो माँ।
तुम वेदकी ऋचाहो, संगीत रूप हो माँ।।
माँ हारकर तुम्हेंही, मन की व्यथा पुकारे, छलती रहोगी कबतक, माया स्वरूप धारे।
तुम हो पुकारमें भीआकुल गुहार में भी, बजते हृदय स्वरोंके, हर तार तार में भी।।
तुम हार में समाई, तुम जीत रूप हो माँ।
तुम हो उछाह उर में, हर गीत रूप हो माँ। तुम प्रीति रूप हो माँ.....× × ×
अभिशाप ताड़ना में, हर यातना में तुमहो, हरवेदना व्यथा में, आराधना में तुम हो।
यह जानते हुए भी, पहचानते हुए भी, हर बार भूलते है, सब मानते हुए भी।।
हर भोर साँझ में तुम, हर याम रूप हो माँ,
हर शीत-ग्रीष्म ऋतु में, हर धाम रूप हो माँ। तुम प्रीति रूप हो .....

("तुम प्रीति रूप हो माँ" शीर्षक से प्रकाशित)

युगगायन (प्रेरणागीत संग्रह) भाग- 1, 2, 3 में कवि की प्रकाशित रचनाएं-

युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा प्रकाशित प्रेरणा गीतों का संग्रह युग गायन भाग 1, 2, 3 में श्री सौमित्र जी की रचनाओं को सम्यक स्थान दिया गया है। प्रमुख गीतों के शीर्षक निम्नवत है-

1. विज्ञान हमें वह रचना है
2. प्रार्थना
3. हे अभयदा तारिणी माँ
4 माँ दो हमको हदय उदार
5. तब सुनते तुम टेर सदगुरु
6. जीवन बडा महान
7. झुका न नीचे अपना भाल
8. वह जीवन ही कलाकार है

कुछ गीतों के अंश अवलोकनीय हैं-

1. दिल की धड़कन के साथ चले, विज्ञान हमें वह रचना है।
नभ में उड़ता है पंक्षी-सा, जल में रह लेता मछली सा।
भूगर्भ छेदकर दिखलाया, चंदा तक दौड़ लगा आया।
हिल-मिलकर धरती पर रहले, इंसान हमें वह रचना हैं दिल की धड़कन ...
दुनियाँ में अंधी दौड़ मची, कुछ दिशाहीन सी होड़ मची।
भटकन से जग को बचा सके, मंजिल तक पथ जो बना सके।।
पद-चिन्हों पर पीढ़ियाँ चलें, प्रस्थान हमें वह रचना है। दिल की धड़कन ...

("विज्ञान हमें वह रचना है" शीर्षक से)

2. जीवन बडा महान भाइयों जीवन बडा महान।

इस काया में ही जन्में हैं, राम-कृष्ण भगवान।।
किन जन्मों के पुण्य फले, जो मिली मनुज की काया।
इस काया में हमने तुमने, कितना वैभव पाया।
नहीं खोजकर निरखा-परखा, हीरा जन्म गंवाया
जीवन के जौहरी जागते, पाते मूल्य सवाय।।
अपनी ही कीमत की हमको, अभी नहीं पहचान। जीवन बडा महान.....
चिन्तन और चरित्र, आचरण में परिवर्तन लाओ।
क्या-क्या भरा हुआ जीवन की पेटी खोल दिखाओ।।
समझदार-ईमानदार और जिम्मेदार जवानो।
करो वक्त का मूल्य समझ से, अपने को पहचानो।।
तुम माटी ही नहीं, तुम्हीं सोने-हीरे की खान। जीवन बडा महान .....

("जीवन बडा महान" शीर्षक से)

3. ले जाग्रति की नयी मशाल, झुका न नीचे अपना भाल!
बाधाओं संहार न मान, करता चल संघर्ष महान।
इनको अपना साथी मान, बना सफलता के सोपान,
देख उधर प्राची का भाल, लगा प्रगति का टीका लाल।
बनकर सागर-सा गम्भीर, बढ़ सुकर्म पथ पर तू वीर,
छिपा हृदय में जग की पीर, हँसना, होना नहीं अधीर।
ग्रसे न तुझे मोह का व्याल, ले कर में चल ज्ञान मशाल,
सरल संयमित और उदार, भरे हृदय में उच्च विचार।
प्रेम शान्ति समता की धार, बहे कि हो सबका उद्धार,
सदा सत्य का शुभव्रत पाल, सुलझे जिसमें यह जग-जाल।।

("झुका न नीचे अपना भाल" शीर्षक से)

4. जिसने जीना जान लिया है, वह जीवन ही कलाकार है।
पत्थर में करूणा उभार दे, दिव्य कला वह निर्विकार है।।
शुचिता, शिवता, सुन्दरता ही, किसी कला के अमर प्राण हैं।
जो भू पर सुरपुर उतारती, मानव को करती महान है।
कुरुचि, कुवृत्ति, कुभाव न जगते, भव्य भाव जिसके श्रृंगार है जिसने जीना.....×××
नीरस करुणाहीन, कुशलता जिससे नहीं मनुजता आती।
कला नहीं वह तो विषकन्या, जो जीवन को जहर पिलाती।
कालकूट की तरह त्याज्य वह कला नही है विष-विकार है।। जिसने जीना.....

("वह जीवन ही कालकार है" शीर्षक से)

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएं-

श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' ने पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा व उनके युग निर्माण मिशन से जुड़कर हजारों की संख्या में कविताएं लिखी जो आचार्य जी द्वारा सम्पादित पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होती रही। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उनकी रचनाओं के शीर्षक अवलोकनीय है-

1. अखण्ड ज्योति में प्रकाशित रचनाएं -

	कविता का शीर्षक	पंक्ति	वर्ष
1.	जिंदगी जीना कला है जिंदगी जीना कला है और जीवन साधना है,		मई 1976 में
2.	सवेरा हो रहा है	तुम समय की रागिनी गाओ	सितम्बर 1976
3.	तपोवनों में प्रकाश उतरा	लगा रहा है पुकार कोई	नवम्बर 1976
4.	कारवाँ रोको नहीं,	कारवाँ रोको नहीं निर्माण का	मार्च 1977 में
5.	जिंदगी इन्सान के तप की कला है		जून 1977 में
6.	नये भोर का आगमन	नया भोर हंसता आता है	फरवरी 1977
7.	हम खुली सीपी सहस्रों जन्म की		मई 1978 में
8.	उद्बोधन	तुम बनो विश्व की वह विभा	दिसम्बर 1979
9.	आज में जो जिया सो जिया आदमी		जनवरी 1980
10.	अगर हम समय पर जाग पाये		अप्रैल 1981 में
11.	दो न आँसू की दुहाई साधनाओं के सुमन दो		सितम्बर 1951
12.	आत्मसूर्य का आह्वान	सूरज का तेज नहीं घटता	फरवरी 1983
13.	हम प्रज्ञा-प्राण-क्रान्ति लाये-	भू पर परिवर्तन लाने को	जून 1983 में
14.	सन्त वाणी	सुनो सुनो आवाज दे रही	सितम्बर 1983
15.	प्रयाणगीत,	ज्ञान की मशाल है सूर्य लाल लाल है	फरवरी 1985
16.	जीवन ज्योति प्रदाता,	तप की धनी ज्ञान के सागर	अक्टूबर 1985
17.	जब अभीप्सा जगे,	तो अभीप्सित मिले	मार्च 1987
18.	आत्मा से,	खो रही हो कहो किस खनक में यहां	जून 1987
19.	मात्वन्दना,	नये साज स्वचर सजा रही माँ	सितम्बर 1987
20.	चाहिए कुछ और ही आराध्य को आराधना में		जनवरी 1988
21.	बस प्यास चाहिए,	हम को तो बस प्यास चाहिए	मई 1988
22.	है तुम्हारा ही भरोसा,	है तुम्हीं में प्राण ठहरे	जुलाई 1988
23.	अन्त:पुकार	हारने लगे तुम्हें पुकारने लगे	सितम्बर 1988
24.	मानवता के भोर की अकुलाह आज मनुज का खडा अविष्यत		जनवरी 1989
25.	ऐसी ज्योति जगे माँ तेरी		अप्रैल 1989

26. महानता की पहचान क्षुद्रता जीकर यहाँ कोई महान हुआ नहीं सितम्बर 2003

2. युग निर्माण योजना (साप्ताहिक एवं मासिक) में प्रकाशित रचनाएं-

1. वह जीवन ही कलाकार है	जिसने जीना जान लिया है	सितम्बर 1986
2. जो जागा सो रोया	जाग-जाग क्यों सोया रे	फरवरी 1988
3. हे तुम्हारा ही भरोसा,	है तुम्हीं में प्राण ठहरे	जुलाई 1988
4. उर की पुकार,	हे जग को सरसाने वाले	अक्टूबर 1988
5. तनय की कामना,	माँ हमें सुन्दर बना दो	5 अक्टूबर1974
6. सप्त सरोवर में भागीरथी का दृश्य,		5सितम्बर 1974
7. गुरु-कृपा है पीर की बैचैनियों में प्यार	बनती गुरूकृपा है	20 फरवरी 1975
8. दीन पर होती दया-सम्मान तो होता नहीं		5 जून 1973
9. गुरु पर्व का नमन,	ओ हिमालय के शिखर	20.6.1973
10. क्रान्ति की जवानी,	युग का यौवन अंगड़ाया है	5.4.1975
11. उद्‌बोधन,	तुम बनो विश्व की वह विभा	
12. चरण मातुके हैं,	शिलाकण नहीं ये, नही धातु के हैं	
13. हमारी विडम्बना (गजल), अपने ही आप से तो रूठे हुए है हम		20 अगस्त 73
14. नहीं भगवान बनकर आ-नया इंसान बनकर आ		5 अगस्त 1973
15. नई प्रभाती गाओ, नयी प्रभाती गाओ, पंक्षी नयी प्रभाती गाओ		5अगस्त 1973
16. साधना चल पडी,	साधना चल पडी भोर के रास्ते	22 दिसम्बर 80
17. चल पडा कारवाँ निर्माण का, हो सृजन की कामना तो साथ दो		5 जून 1975
18. सृजन का करना है निर्माण,	जगे माँ निज महिमा का ध्यान	20 सितम्बर 75
19. उर की पुकार, हे जग को सरसाने वाले		अक्टूबर 1988

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन का आलोच्य काव्य में प्रतिफलन :-

1. मनुष्य निर्माण :-

जगे माँ निज महिमा का ध्यान, मनुज का करना है निर्माण।
तुम तप प्रीति की प्रतिमा करूणा लिए पीर की गरिमा
शील में लिये शक्ति की शान। जगे माँ.....
क्षमा, शान्ति, शुचिता उजयारी, मनुष्यता-ममता की लाली।
उमा, रमा तुम गिरा-भवानी, सावित्री-सविता कल्याणी,
तुम्हीं जनती, अमृत सन्तान। जगे माँ.....

2. जनजागरण :-

युग का यौवन अंगड़ाया है, ले क्रान्ति जवानी आई है।

दानवता-दैत्य नचाने को-क्षमता कल्याणी आयी है।
पीड़ा ने शंख बजाया है, करुणा ने वाणी पायी है।
लेकर कर में जलती मशाल, करने अगवानी आयी है।
प्राणों का पर्व नहाने को, बेला वरदानी आयी है।। युग का यौवन अंगड़ाया है, ...
("क्रान्ति जवानी" कविता से)

3. योगसाधना एवं साधना से सिद्धि:-
साधना चल पडी भोर के रास्ते देख लो जन-कमल मुस्कराने लगे।
अधमुदे जग-नयन, जगमगाने लगे, छू गयी युग प्रभा थरथराने लगे।।
भूमि आकाश में, हम कहाँ पर नहीं, एक ही साँस में हम कहाँ पर नहीं।
है वहाँ कुछ नहीं, हम जहाँ पर नहीं, इंगितों की प्रतीक्षा लिए दृष्टियाँ
चल पडा हर पथिक, जागते-जागते.....

4. समाज का अभिनव निर्माण:-
चल पडा है कारवां निर्माण का, हो सृजन की कामना तो साथ हो।
तप चला है जिन्दगी की राह पर, हो विजय की चाहना तो साथ हो।
सब विरोधी शक्तियां चरणों झुकीं, हो चरण की साधना तो साथ दो।
क्रूरता की आँख़, आँसू भर रही, हो सुमन की याचना तो साथ दो ।
है जनम नूतन प्रभा के प्राण का- तुम नयी सम्भावना का साथ दो।
रह न जाएं प्राण ही निष्प्राण बन, हो लगन की चेतना तो साथ दो।
("चल पड़ा है कारवाँ निर्माण का" कविता से)

5. दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन- सत्प्रवृत्ि0त संवर्धन :-
तुम बनो विश्व की यह विभा, भोर की रश्मि गाने लगे।
तम यहाँ बस रहा, इस तरह सो रहे रोशनी के दिये।
चेतना तीर मारो उन्हें, जो पड़े वारुणी को पिये।।
तुम जगो ज्योति के देवता, तम भगे तिल मिलाने लगे।
युग कुहासा मिटे, पौ फटे, सुप्त जन छटपटाकर जगे।
जग करे ज्योति आराधना, साधना मुस्करा कर जगे।।
खिलखिलाये मनुज चेतना, भावना मुस्कराने लगे।। (अनुबोधन कविता से)

6. यज्ञमय-गायत्रीमय जीवन :-
तुम वशिष्ठ, विदेह, विश्वामित्र, युग के व्यास तुम,
तुम अगस्त्य अधीर, विष के सिन्धु की ले प्यास तुम।
अवतरित भू परहुएप्रज्ञा विभाअवतार तुम,आदमी के रूप मेंउतरे धरा पर प्यार तुम।
ओ दधीचिउदार देकर,प्राण काअनुदान तुम, राम कृष्णसमानही श्रीराम नाम महान तुम।

कर रहा तर्पण मनुजता का, ऋषि-सा आचरण,
ओ हिमालय के शिखर गुरुता तुम्हारी को नमन।। (अधूरी कविता से)

7. आचार पद्धति :-

जिन्दगी को मैं तपाये दे रहा हूं, स्वर्ग को कुन्दन बनाये, दे रहा हूं।
आंधियों को रोशनी मिलती रहेगी-प्राण के दीपक जलाये दे रहा हूं।।× ××
कह रहा स्वर-दीप मेरा, मैं ऋचाओं से जलाहूँ।
भागते तम के पडी पीछे किरण का फासला हूँ।
शब्द वेधी, बाण लेकर युद्ध आया है तो आये
बाण-वेधी अंगिरा की मैं गिरा लेकर चला हूँ।।

8. इक्कीसवीं सदी-उज्जवल भविष्य :-

धीमी गति को देख, धैर्य का साथ नहीं छोड़ों।
लेकर क्रान्ति मशाल, शान्ति का हाथ, नहीं छोड़ो।
कुरुक्षेत्र में खडा राष्ट्र के अर्जुन का रथ है-
तुम सारथी सुजान, जिधर चाहे रथ को मोड़ो।
जिससे मिटे कुहासा, उन्मन अर्जुन के मन का
वह विराट झाँकी दिखलाओ, कांपे गात नहीं
झंझाबत रहेंगे हर दम ऐसी बात नहीं।।

9. शक्तिपीठों-प्रज्ञापीठों की स्थापना :-

ये प्रज्ञा संस्थान मनुज के जीवन को बदलेंगे।
ये प्रज्ञा अभियान विश्व का कायाकल्प करेंगे।।
दांव लग गया अंधकार का, सूरज को ढांका है।
बुद्धिवादियों ने जीवन का गलत मूल्य आंका है।
पर ये प्रज्ञादीप अंधेरे का अभिशाप हरेंगे। ये प्रज्ञा संस्थान .....
लगता है- कि सो गई है, वैदिकी सप्राण ऋचायें।
लगता है- निष्प्राण हो गई ऋषिमुनि प्रसु गिराएं।
जग जाहे वह, ऐसी, शंख-ध्वनि ये केन्द्र करेंगे। ये प्रज्ञा संस्थान .....

मूल्याँकन

सुप्रसिद्ध आलोचक डा0 कमलेश ने श्री सौमित्र के बारे में कहा- जहाँ भी सन्ताप, उत्पीड़न, अन्याय और अनर्थ का सामाज्य होता है, वहीं उन्हें मिटाने को सौमित्र परिचय देने पहुँच जाता है। उन्होने श्री भदौरिया के काव्य का मूल्याँकन करते हुए लिखा है कि- "श्री भदौरिया की कविताओं में बलिदान, आस्था, आशा, विश्वास और चुनौती का स्वर मुखरित हुआ है।"

कुँवर हरिश्चन्द्र देव 'चातक' ने लिखा है- "भदौरिया जी पहले मानव और बाद में कवि हैं। उनके अनुसार "मेरा 'लाखन' लाखन में एक है जिसने अपनी अनब्याही साधों की भाँवर कभी भी सत्ता सुन्दरी के साथ नहीं डाली है जो घर पर फावड़ा व खुरपी चलाता है, रहन सहन में नितान्त ग्रामीण पर काव्य में ग्राम्यत्व दोष कहीं भी नहीं है।"

श्री सौमित्र ने अपनी काव्य रचनाओं में काव्य सौन्दर्य को कहीं भी क्षीण नहीं होने दिया। गीतों में लय, छंद व गति का अपना सहज रूप विद्यमान है। वह प्रकाशन की स्पर्द्धा से दूर हैं। श्री गोपाल दास 'नीरज' के सम्पादन में प्रकाशित 'हिन्दी की श्रेष्ठ रुबाइयाँ', में भी श्री सौमित्र की रचनाएं संकलित हैं। हास्य व्यंग की ताजी तरंग मुक्त छंद में अतुकान्त तथा 700 मुक्तकों की 'मुक्तक सतसई' अभी तक अप्रकाशित है।

श्री सौमित्र के हृदय में एक पीड़ा यह भी है कि वर्ष 1990 तक प.पू. गुरुदेव (आचार्य शर्मा जी) के गायत्री परिवार की 'युग निर्माण योजना, मथुरा' एवं 'प्रज्ञा अभियान', शान्तिकुंज, हरिद्वार का मत्स्यावतार रूप बढ़ने से आचार्य शर्मा जी के समकालीन कवियों की रचानाएं अनाम, अज्ञात होकर लुप्त होती जा रही है। अब वहाँ हमारी पीढ़ी के कवियों के नाम पुरानी पत्र-पत्रिकाओं में ही शेष रह गये हैं। किन्तु ऐसा नहीं- परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक काव्य लिखवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित होता रहा, वह समग्र काव्य सृजन पृथक से ' पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य वाड्.मय' क्रमांक 105 में 'काव्य गीत मंजूषा' शीर्षक से प्रकाशनाधीन है जिसमें आचार्य शर्मा के समकालीन समस्त कवियों की उत्कृष्ट रचनाएं शीघ्र ही हिन्दी काव्य जगत के समक्ष लाने का भगीरथ प्रयास किया जा रहा है।

श्री शचीन्द्र भटनागर

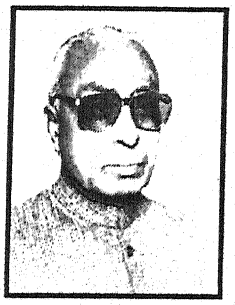

जन्म, पारिवारिक प्रवृत्ति, शिक्षा एवं सेवायें :-

सुकवि श्री शचीन्द्र भटनागर का मूल नाम महेन्द्र मोहन भटनागर है। आपका जन्म 28 सितम्बर 1935 में फैजाबाद, उ0प्र0 में हुआ। आपके पिता स्व0 रविशंकर भटनागर एवं जन्मदात्री माता स्व0 किरन देवी भटनागर थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा पडरौना (उ0प्र0) में; हाईस्कूल मथुरा से; तथा उच्च शिक्षा एम0ए0 अंग्रेजी, हिन्दी तथा बी0टी0 आगरा से पूर्ण हुई। आपका विवाह वर्ष 1957 में हुआ था। आपकी सहचारीका नाम श्रीमती कृष्णा जिनकी शैक्षिक योग्यता एम0ए0, बी0एड0 है और वे जो गृहणी हैं। श्री शचीन्द्र जी के चार संस्कारवान पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः अतुल, अमित, अनुज, व अक्षत हैं। साढ़े सात वर्ष सहायक अध्यापक के रूप में, एक वर्ष अंग्रेजी प्रवक्ता के रूप में तथा 28 वर्ष प्राचार्य पद पर कार्य करने के पश्चात आप जून 1995 में सेवानिवृत्त हुए।

काव्य-यात्रा :- वर्ष 1946 में ग्यारह वर्ष की आयु में सर्वप्रथम आपने गीत रचना की। सन् 1948 में विद्यालय स्तर पर आपका गीत पुरस्कृत हुआ। सन् 1949 में श्री हरिवंश राय बच्चन जी की अध्यक्षता में प्रथम बार सार्वजनिक कवि मंच से आपने काव्य-पाठ किया। वर्ष 1980 के पश्चात आपकी लेखनी पं. श्रीराम आचार्य के प्रति समर्पित हो गयी। तत्पश्चात आप के गीत केवल अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, युग निर्माण मिशन द्वारा प्रकाशित गीत-संग्रहों एवं स्मारिकाओं में प्रकाशित हुए। शान्ति कुंज के ऑडियों-वीडियों कैसिट तथा सीडी के माध्यम से आपके शताधिक गीत प्रसारित हो रहे हैं। आप के लगभग पचास गीतों को वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा के श्रीमुख से गाये जाने का सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ।

साहित्यिक उपलब्धियाँ :- श्री शचीन्द्र भटनागर के गीत एवं निबन्ध शीर्षक हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं यथा- 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'कादम्बिनी', 'धर्म युग', 'माध्यम', 'शताब्दी', 'सरिता', 'मुक्ता', 'परम्परा', 'वातायन', 'त्रिपथगा', 'रुपाम्बरा', 'लय', 'मधुवंती' आदि में प्रकाशित होते रहे।

श्री शचीन्द्र भटनागर के गीत श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन', गोपाल दास 'नीरज', भूपेन्द्र कुमार 'स्नेही', डा0 गिरिराज शरण अग्रवाल, एवं आचार्य शशिधर इत्यादि द्वारा सम्पादित संकलनों में भी संकलित किए गये। आकाशवाणी के लखनऊ, रामपुर, मथुरा-वृन्दावन एवं दिल्ली केन्द्रों से आपके गीत एवं रेडियो

रूपक प्रसारित हुए।

राजस्थान, मध्य प्रदेश, एवं उत्तर प्रदेश के अनेकानेक कवि सम्मेलनीय मंचों से आपने काव्य पाठ किया। अनेकानेक शोध प्रबन्धों एवं पुस्तकों-पत्रिकाओं में आप चर्चित एवं संदर्भित रहे।

साहित्यिक सम्मान :-

क्रमांक	वर्ष	सम्मान का विवरण	संस्था
1.	1963,	अखिल भारतीय स्तर की 'कादम्बिनी गीत प्रतियोगिता' में आपका 'विवशता' शीर्षक गीत सर्वश्रेष्ठ घोषित हुआ। इस हेतु 350 रूपये की राशि पुरस्कृत की गयी।	
2.	1988,	अखिल भारतीय ब्रज साहित्य संगम आगरा द्वारा अपको 'ब्रज विभूति' उपाधि प्रदत्त की गयी।	
3.	1988,	हिन्दी प्रकाश मंच सम्मेलन द्वारा 'साहित्य मर्मज्ञ' उपाधि से आप अलंकृत किए गये।	
4.	1996	'रचना' साहित्यिक संस्था बहजोई द्वारा हिन्दी दिवस पर सम्मान समारोह में आप को अभिनन्दन पत्र एवं उत्तरीय प्रदत्त किया गया	
5.	1998	गायत्री शक्तिपीठ भिण्ड (म0प्र0) द्वारा युग निर्माण कवि सम्मान के रूप में अभिनन्दन एवं 2400 रूपये की राशि भेंट की गयी।	
6.	1999	साहित्य सुरभि बरेली द्वारा आपका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया साथ ही अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।	

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन के प्रभाव विषयक साक्ष्य एवं तथ्य-

श्री शचीन्द्र भटनागर को आचार्य शर्मा के सर्वप्रथम दर्शन का सौभाग्य वर्ष 1954 में आगरा में प्राप्त हुआ। तब आपके पिताजी आगरा के बाग मुजफ्फर खान में किराये के मकान में रहते थे। आपके मकान मालिक पं. गोपीनाथ मिश्र के निवास पर पूज्य आचार्य जी पधारे थे। श्री शचीन्द्र जी अपने पिता जी के साथ वहाँ गये। श्री मिश्र जी के आँगन में 25-30 व्यक्तियों के मध्य एक मसनद के आगे खड़े होकर आचार्य शर्मा जी ने प्रवचन किया। कवि शचीन्द्र (आयु 19 वर्ष) मसनद के पीछे बैठे, अपनी आदत के अनुसार प्रवचन के नोट्स ले रहे थे। अपनी बात समाप्त करने के पश्चात आचार्य जी ने श्री मिश्र से इनके बारे में पूँछा। फिर इन्हें अपने पास बुलाकर इनके नोट्स वाली पुस्तिका का अवलोकन किया और अपनी ओर से इन्हें तीन पुस्तकें आर्शीवाद स्वरूप प्रदान की जिनके नाम इस प्रकार हैं-

सुख शांति दायिनी गायत्री, गायत्री उपासना कैसे, और गायत्री का यज्ञ से

सम्बन्ध। उल्लेखनीय है कि पूज्य आचार्य जी के उस दिन के प्रवचन के कवि द्वारा लिए गए नोट्स ही 'श्रद्धा-विश्वास' शीर्षक से इनके सर्वप्रथम लेख के रूप में आगरा की 'मानव' मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुए।

आकाशवाणी मथुरा में श्री शचीन्द्र 1970 तक रिकार्डिंग के लिए जब भी जाते थे तब गायत्री तपोभूमि, मथुरा जाकर पूज्य आचार्य शर्मा जी का सान्निध्य अवश्य प्राप्त करते थे। श्री शचीन्द्र भटनागर शान्तिकुंज, हरिद्वार वर्ष 1973 में गये। तब तक बहजोई में 'गायत्री परिवार' की स्थापना हो चुकी थी। प्रत्येक गुरुवार को वहाँ साप्ताहिक यज्ञ होता था एवं कभी-कभी विचार गोष्ठी भी हुआ करती थी। श्री शचीन्द्र जी ने वहाँ के शाखा कार्यवाहक के रूप में कार्य किया। उस सम्बन्ध में आप पूज्य गुरुदेव आचार्य श्रीराम शर्मा से परामर्श भी लिया करते थे। शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा निर्धारित सभी कार्यक्रमों को श्री शर्मा जी आयोजित कराते थे किन्तु युग निर्माण मिशन के लिए गीत इत्यादि लिखने का विचार अभी मन में आया ही नहीं था। श्री शचीन्द्र जी कहते हैं कि- "यह परम पूज्य गुरुदेव (आचार्य श्रीराम शर्मा) का लीला-संदोह ही था कि जिस समय से मुझे लेखनी उनके चरणों में समर्पित करने की प्रेरणा हुई तब से कवि सम्मेलनों के मंचों पर रचना पाठ, पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन, पाठकों के प्रशंसा भरे पत्र एवं आकाशवाणी से प्रसारण मुझे खिलौने जैसे प्रतीत होने लगे।"1

तब से श्री शचीन्द्र जी ने सहस्राधिक गीत युग निर्माण मिशन के लिए लिखे हैं। इनके शताधिक गीत ऑडियो-वीडियो, कैसिट्स एवं सीडी में स्थान प्राप्त कर चुके हैं। परम वन्दनीया माता जी (आचार्य शर्मा की सहधर्मिणी) ने इनके लगभग पचास गीत अपने मुख से गाकर उन्हें धन्य कर दिया है। इन गीतों के सम्बन्ध में श्रद्धेया शैलबाला पण्ड्या (मुख्य प्रबन्ध संचालिका) अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज, हरिद्वार ने लिखा है- "मुझे एक अनुपम सौभाग्य मिला, जब परम वन्दनीया माता जी अपने गीतों को रिकार्ड करवाती, काफी देर तक अभ्यास चलता। मैं छाया की तरह उनके साथ ही बनी रहती थी। कभी-कभी भाव प्रधान इन गीतों को गाते समय मैंने मातृ सत्ता को छलछलाते भी देखा है, कभी उन दिव्य भावों में डूबते देखा है जिन के माध्यम से उनने इस संगठन को अपनत्व के सूत्र में बाँधा है। इन गीतों को सुनते सुनते मैंने भी काफी कुछ सीखा है एवं स्वयं को ढाला है-"2

---

1. श्री शचीन्द्र भटनागर- आत्म परिचय, करिष्ये वचनं तव, पृष्ठ 3
2. श्रीमती शैलबाला पण्ड्या- कुछ अन्तस के बोल, करिष्ये वचनं तव, पृष्ठ 5

व्यक्तित्व :- श्री शचीन्द्र भटनागर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय में डा0 प्रणय पण्ड्या लिखते हैं कि- "कविवर श्री शचीन्द्र भटनागर बडे ही भावनाशील, लोकमंगल के लिए समर्पित जीवन जीने वाले पद्य कौशल की धनी विद्वान मनीषी हैं। इनकी कविताएं युग निर्माण योजना के मंच पर वर्षो से गाई जाती व लाखों व्यक्तियों को अनुप्राणित करती रही है।× × ×

कवि के भाव इतने निर्मल हैं कि लगता है हृदय में भरे रक्त रूपी स्याही में कलम डुबोकर अपनी वेदना को व्यक्त किया गया है।"1× ×

स्व0 पं. लीलापति शर्मा (पूर्व व्यवस्थापक, गायत्री तपोभूमि मथुरा) के हृदयोद्‌गार अवलोकनीय है-

"युग निर्माण मिशन के मूर्धन्य कवि श्री शचीन्द्र भटनागर के नाम को परिचय की आवश्यकता नहीं है। हिन्दी साहित्य जगत में चालीस वर्ष पूर्व से ही चर्चित, प्रशंसित तथा पुरुस्कृत उनकी लेखनी जब युग निर्माण मिशन के लिए समर्पित हुई तो प्रज्ञागीतों के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति आ गई। मात्र दस वर्ष की अवधि में उनके गीतों की गणना प्रथम कोटि में की जाने लगी है। परमपूज्य गुरुदेव (आचार्य शर्मा जी) के चिन्तन की गहराई, विषयानुकूल भाषा एवं लयात्मकता आपके गीतों की विशेषताएं हैं।"2

श्री शचीन्द्र जी ने पूज्य आचार्य शर्मा की महती कृपा से माँ गायत्री की सफल साधना-आराधना द्वारा व्यष्टि कल्याण से परे समष्टि कल्याण के लिए अपने अमर स्वरों से जो जन-जागरण अभियान को गति दी है, एतदर्थ राष्ट्र ने आपको उच्चता के आसन पर बिठाया है और सम्मान से सराहा है। आप जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ-वहाँ आपको पूज्य गुरुदेव (आचार्य शर्मा जी) का विशिष्ट प्रतिनिधि मानकर सभी कोई अपनी आँखों पर बिठाता है और आपसे स्फूर्ति-प्रेरणा पाता है। वस्तुतः आपका महिमा मण्डित व्यक्तित्व महनीय, पठनीय तथा अनुकरणीय है।

सरल हृदय व्यक्ति का एक मात्र उद्‌देश्य सेवा करना है। सरलता एवं सौभ्यता किसी सम्पत्ति से कम नहीं होती। तभी तो आपके काव्य में सरलता एवं पवित्रता व्याप्त है, जो सबका मन मोह लेती है। आपकी काव्य ध ार्मिता अनुकरणीय है आपकी काव्य-वाणी घनघोर अंधेरे में आत्मिक आलोक बिखेरती है, ध्येय प्राप्ति की ओर उन्मुख करती है तथा आस्था की लौ जलाती है। डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया सहायक हिन्दी प्राध्यापक (सेवानिवृत्त) शासकीय

1. डा0 प्रणव पण्ड्या- करिष्ये वचनं तव, पृष्ठ 6-7
2. पं. लीलापत शर्मा- भूमिका, क्रान्ति के स्वर, पृष्ठ 4

महाविद्यालय, डबरा ग्वालियर लिखते हैं- "शचीन्द्र जी के प्रज्ञागीत मन को छू लेने वाले सहज-सरल गीत हैं। जिनमें सतत् गतिशीलता की प्रेरणा है, लोकमंगल का सन्देश है, विधेयात्तक स्वर हैं और प्रत्येक शब्द में युग ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के चिन्तन का सहज संप्रेषण है उनके प्रज्ञागीतों की भाषा, शब्द-चयन, प्रतीकात्मकता, उनके उपमान, उनमें प्रयुक्त सरल शब्दों की नई अर्थवत्ता के पीछे प्राय उनका नवगीतकार झाँकता हैं यही कारण है कि उनके प्रज्ञागीत युग निर्माण मिशन के संदेश-संप्रेषण के साथ-साथ साहित्यिक कसौटी पर भी खरे उतारते हैं।"1

कृतित्व :- श्री शचीन्द्र जी की अभी तक चार काव्य कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं-

1. 'खंड खंड चाँदनी' (नवगीत संग्रह) 1974 में प्रकाशित
2. 'क्रान्ति के स्वर' (प्रज्ञागीत संग्रह) 1999 में प्रकाशित
3. 'हिरना लौट चलें' (नवगीत संग्रह) 2003 में प्रकाशित
4. 'करिष्ये वचनं तव' (गीत संग्रह) 2003 में प्रकाशित

शान्तिकुंज, हरिद्वार से प्रकाशित महत्वपूर्ण काव्य संग्रह प्रज्ञागीत, युगगायन, समूहगान 'क्रान्तिगीत' एवं गरिमागान आदि में आपके गीतों को विशेष स्थान दिया गया।

अप्रकाशित कृतियाँ :- श्री शचीन्द्र भटनागर की चौदह काव्य-कृतियाँ प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं-

एक गीत संग्रह, तीन प्रज्ञागीत संग्रह, चार मुक्तक-संग्रह
एक गजल संग्रह, दो खण्ड काव्य, एक महाकाव्य, एक विविध-विद्या संग्रह (निबन्ध रेडियो, रूपक, नाट्य रूपान्तर, पत्र, रिपोर्ताज) तथा एक समीज्ञा ग्रन्थ इस तरह कुल चौदह कृतियाँ प्रकाशनाधीन हैं।

विधाएं :- श्री शचीन्द्र जी ने गीत, गजल, मुक्तक, प्रबन्धकाव्य, रेडियोरूपक, नाट्य, रूपान्तर, एवं समीक्षात्मक निबन्ध आदि विविध रूपों में अपनी लेखनी का परिचय दिया। कुछ लोकप्रिय गीतों की प्रथम पंक्ति जो युग निर्माण मिशन की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए और जिनने राष्ट्र व्यापी लोकप्रियता अर्जित की-

1. हमने आँगन नहीं बुहारा, कैसे आयेंगे भगवान
2. अब नवयुग की गंगोत्री से बही ज्ञान की धारा है
3. धरा पर अँधेरा बहुत छा रहा है, दिए से दिए को जलाना पडेगा
4. न सोचो अकेली किरण क्या करेगी, तिमिर में अकेली किरण ही बहुत है

---

1. डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया- खण्ड-खण्ड चाँदनी, पृष्ठ 4

5. चलेंगे हम जगतजननी तुम्हारे ही इशारों पर
6. ऐसी कृपा करो जग जननी, जीवन गायत्रीमय हो
7. तुम्हारे पद्म चरणों में नमन सौ बार है गुरुवर
8. चलो, गुरुदेव के सपने सजाने की शपथ ले लें
9. तुम्हारी शपथ हम निरन्तर तुम्हारे चरण-चिन्ह की राह चलते रहेंगे
10. सीख नहीं पाए चादर ओढ़ने का ढंग रे
11. श्रद्धा सहित जो आया गुरुदेव की शरण में
12. धन्य है जिन्दगी यह हमारी, नाथ पाकर सहारा तुम्हारा
13. हमने पाई थाह आज माँ! तेरे मन की पीर की
14. किए मंत्र-जप माला फेरी, पूजन आठों याम का
15. मानवता का पतन देखकर आज धरा अकुलाई है
16. राम नाम का अर्थ यही है, काम करें श्री राम का
17. गुरु बिन ज्ञान नहीं, नहीं रे
18. क्यों करता अभिमान देह का, यह माटी की ढेरी रे
19. चलो रे मन, शान्तिकुंज सुखधाम
20. ओ धर्म की पताका, फहरो धरा-गगन में
21. लाँघ चला सारी सीमाएं, तोड़ चला जंजीर रे
22. जाति धर्म की भेद भाव की बातें हुई पुरानी हैं
23. अब तेरा दुख-दर्द हृदय का माँ! हमने पहचाना
24. नींव के पत्थरो! यह मिशन का भवन युग-युगों तक तुम्हारा रहेगी ऋणी
25. है यह सत्य अटल, यह दुनियाँ बदलेगी
26. आज कमर कसकर आए दुनियाँ के युग निर्माणी
27. मन मैला ही रहा अगर तो उजला तन बेकार है
28. थोड़ी सी साँसें पाई हैं, इनको नहीं गँवाना है
29. तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे
30. भटक रहा है जनम-जनम से हंसा भूखा प्यासा रे
31. बहुत हुए सूराख नाव में, मत जा तू मझधार रे
32. गवाँ दिया हमने जीवन में धर्म और ईमान
33. भारत है देश सबकी शुभ कामना जहाँ है
34. हाथ पर यूँ हाथ रखकर तुम न बैठो सोच लो अब यह समय संक्रान्ति का है
35. महामंत्र गायत्री को अब सारा जग अपनाएगा — मार्च 99 अखण्ड ज्योति
36. तूफानी मौसम में जो तूफानी चाल दिखाएगा, — मई 2002 अखण्ड ज्योति

37. पथ भूले मानव को, तुममें आशा का दिनमान मिला जुलाई 1996 अखण्ड ज्योति
38. शक्ति सम्पन्न कल का दिवाकर रहे इसलिए हम सभी फरवरी 99 अखण्ड ज्योति
39. आज जरूरत है मानव को आध्यात्मिक उपचार की अगस्त 1999 अखण्ड ज्योति
40. देश के जवान तुम्हें देश का नमन सितम्बर 99 अखण्ड ज्योति
41. भरी रही जो भूमि सदा से स्वस्थ सुगंधित फलों सेमार्च 94 अखण्ड ज्योति
42. इतनी शक्ति हमें दो भगवन! जन जन का मंगल कर मार्च 97 अखण्ड ज्योति
43. घोर तप से ज्ञान-गंगा की बहायी पुण्यधारा जून 97 अखण्ड ज्योति
44. आज कमर कसकर आए दुनियाँ के युगनिर्माणी नवम्बर 97 अखण्ड ज्योति
45. बार बार मन होता है जिनके चरणों में झुक जाने का सित.व जून 98 यु.नि.यो.
46. सुहानी सृष्टि प्राणों से अधिक प्यारी प्रभू की फर0 98 यु.नि.यो.
47. आँगन-आँगन चौक पुरे है, द्वार-द्वार रंगोली मार्च 2005 अखण्ड ज्यो.
48. गुरूवर की अमृत वाणी हम तुम्हें सुनाने आये है जून 99 यु.नि.यो.
49. हे विभूतिवानो! होती है तेज समय की धार यहाँ अक्टूबर 2000 यु.नि.यो.

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएं- श्री शचीन्द्र भटनागर की रचनाएं युग निर्माण मिशन की समस्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं। एक रचना अवलोकनीय है-

संस्कार एक औषधि

आज जरूरत है मानव के आध्यात्मिक उपचार की।
संस्कार हैं एक मात्र औषधि व्याकुल संसार की।।

विद्या शिक्षा बनी, गुरु बस शिक्षक रहे, पढ़ाने में,
और शिक्षक की शक्ति लग गई ध्वंस-वृत्ति अपनाने में
धन-अर्जन के लिए समर्पित हुए कर्म दिन-रातों में
उच्छृंखलता दिखी युवा-व्यवहार-वेश में, बातो में।
चाल उलट देनी है अब तो उनके इस व्यवहार की। संस्कार है एक मात्र .....×××
आओ लें संकल्प कि फिर से संस्कार अपनाएंगे ,
ऋषि प्रणीत जीवन-शैली से प्रबल प्रेरणा पायेंगे
श्रद्धा और विश्वास जगेगा, अस्तिकता लहराएगी।
मानवता फिर एक विलक्षण जीवन का पथ पाएगी ,
राह तजेगी दुनियाँ पतन-पराभव-पापाचार की। संस्कार है एक मात्र औषधि.....

(अखण्ड ज्योति, अगस्त 1999 में प्रकाशित)

शचीन्द्र भटनागर प्रणीत काव्य-कृतियों का समालोचनात्मक अनुशीलन -

1. करिष्ये वचनं तव (गीत संग्रह)- यह गीत संग्रह श्री शचीन्द्र भटनागर ने

ऋषि युग्म वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा की प्रेरणा से लिखा जिसका प्रकाशन युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा से गायत्री जयन्ती वर्ष 2003 में हुआ। इस काव्य कृति का समर्पण पूज्य आचार्य जी एवं वन्दनीया माताजी के प्रति करते हुए कवि ने लिखा है-

जीवन-लक्ष्य समझ हम पाए, जिनके पद चिन्हों पर चलकर,
मार्ग दिखाया हमें जिन्होने, दीपक-सा जीवन भर जलकर।
प्रखर प्रेरणा-स्रोत बने है, जिनके शब्द और जिनका स्वर,
कल्पवृक्ष-सा वरदायी है, जिनकी अनुकम्पा का निर्झर।
उस समर्थ सत्ता के चरणों में है मेरा शत-शत वंदन,
जो कुछ मिला कृपा से उनकी, उसका उन्हें विनम्र समर्पण।,

इस काव्य कृति की 'मंगल कामना' में साहित्य-मनीषी श्री वीरेश्वर उपाध्याय लिखते है-

"युग ऋषि की सत्प्रेरणा बसी चित्त मे आय।श्री शचीन्द्र के काव्य मे जुड़े नए अध्याय ।।"
आहुतियां दी काव्य की ज्ञान-यज्ञ के हेत, आदर्शो की राह में बने काव्य के सेतु।।
गुरु की करुणा से मिली भक्ति और नवदृष्टि, कवि-कौशल के योग से हुई काव्य की सृष्टि।
शरणागति के भाव से जागे शुभ संकल्प, परिष्कार-प्रक्रिया से उभरा जीवन कल्प।।
'गुरुसत्ता के रूप' में हुई अनुभूति विराट, 'परा गिरा निर्देश' ने भेद दिए सब पाट।।
'है अकाट्य जो कर्मफल' उसकी हुई परतीति, तब 'ईश्वर की खोज' हित जागी अंत: प्रीति।।
'आध्यात्मिक चिंतन' फला मिट गए सारे क्लेश, कविता मे ढालने लगे युग ऋषि के संदेश।।
काव्याहुति चलती रहे, गुरु का मिले प्रसाद। धारा नव उल्लास की हर ले जन अवसाद।।
युग ऋषि के निर्देश का हो कवितामय गान, युग-परिवर्तन-यज्ञ का बने सफल अभियान।।
हम सबकी शुभ कामना, गुरुवर का आशीष, पूर्ण करें माँ शारदा, गणपति, गोरी, गिरीश।।

'कुछ अंतस के बोल' शीर्षक से श्रीमती शैलबाला पण्ड्या लिखती है-

"आत्मीय भाई श्री शचीन्द्र भटनागर के काव्य ने युग निर्माण योजना को जिस भक्ति व शक्ति के भाव से सराबोर किया है, उसकी तुलना और किसी पुरुषार्थ से संभव नहीं। एक सद्गुरु के सच्चे शिष्य के रुप में उनकी अभिव्यक्ति मुझे अन्तर तक स्पर्श कर जाती है, जब मै परम वन्दनीया माताजी के स्वर में उनकी लिखी पंक्तियाँ सुनती हूँ-

युग-युग से मैने हे भगवन, बस गीत तुम्हारे गाये है,
संकेत मिले जो भी तुमसे, उस पथ पर कदम बढ़ाये है।
उस पावन अमृत वाणी की, हे प्रभुवर! मै अभिलाषी हूँ।"

इस कृति भूमिका में डा0 प्रणव पण्ड्या लिखते हैं-

"गीता के ज्ञान, कर्म, भक्ति तीनों योगों का सार-संक्षेप काव्य रूप मे शचीन्द्र जी ने इस काव्य संग्रह में पिरो कर रख दिया है। सचमुच ही लगता है मानो माँ सरस्वती साक्षात उनसे लिखवा रहीं हो" × × ×

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इस काव्य-संकलन से कई गीत वन्दनीया माताजी (श्रीमती भगवती देवी शर्मा) के श्रीमुख से भी गाये जा चुके हैं। आज भी वह स्वर शान्तिकुंज सहित अनेक शक्तिपीठों, तीर्थ, स्थलों पर गुंजित हो रहे हैं। कविवर शचीन्द्र जी के साधुवाद! भाव भरी बधाईयाँ एवं ढेरों मंगल कामनाएं! उनके आध्यात्मिक उत्कर्ष हेतु समर्पण में और अधिक बढ़ोत्तरी हो।"

'करिश्ये वचनं तव' (गीति काव्य) को कवि ने आठ खण्डों में विभक्त किया है। प्रत्येक खण्ड में उसके विषय से सम्बन्धित गीतों को चुनकर रखा गया है। प्रत्येक खण्ड एवं उसके गीतों की संख्या निम्नलिखित है-

खण्ड 1	शरणागति	24 गीत
खण्ड 2	संकल्प	28 गीत
खण्ड 3	परिष्कार प्रक्रिया	22 गीत
खण्ड 4	गुरुसत्ता का विराट् रूप	11 गीत
खण्ड 5	परावाणी के निर्देश	10 गीत
खण्ड 6	कर्मफल अकाट्य	12 गीत
खण्ड 7	ईश्वर की खोज	14 गीत
खण्ड 8	अध्यात्म चिंतन	28 गीत

इस प्रकार इस संग्रह में समर्पण कविता मिलाकर कुल 150 गीतों का संग्रह है। प्रत्येक खण्ड से कुछ गीतों के अंश अवलोकनीय है-

खण्ड 1. शरणागति :-

1. तुम्हारे पद्म चरणों में नमन सौ बार है गुरुवर,
कृपा की एक किरण दे दो, दुखी संसार है गुरुवर।
हुआ चिन्तन विषैला है, हुई हर भावना मैली,
यहाँ चुभते बबूलों- सी बहुत दुष्वृत्तियां फैली।
तुम्हारे पास ही इसका सरल उपचार है, गुरूवर। तुम्हारे पद्म चरणों में.....×××
तुम्हीं ने सूत्र सिखलाया, विचारों को बदलने का,
तिमिर में आचरण-बल से, दिए की भाँति जलने का,
प्रखरता की मिली तुमने हमें पतवार हे, गुरुवर। तुम्हारे पद्म चरणों में .....

तुम्हारी ज्ञान-गंगा की, सुधा सबको पिलाएँगे,
हृदय निष्प्राण हैं जिनके, सरस उनको बनाएँगे,
बने जीवन्त वे, जिनको सृजन स्वीकार है, गुरुवर। तुम्हारे पद्म चरणों में ...
("तुम्हारे पद्म चरणों में नमन सौ बार" शीर्षक से)

2. हे तपोनिष्ठ! हे वेद मूर्ति! अब, शक्ति दो, संगठन यह सघन बन सके,
आपने बीज बोये यहां जो प्रभो! उनका अब अंकुरण-पल्लवन हो सके।
व्यक्ति हो तुम नही, चेतना-शक्ति हो, आदमी में परिष्कार की वृत्ति हो,
अब सभी को समझ आ रहा सत्य यह, अब इसी भाव का जागरण हो सके।
हे तपोनिष्ठ! हे वेदमूर्ति!.....× × ×
विश्वभर के मनीषी दिशा पाएँगे, ज्ञान से श्रेष्ठ जीवन बना पाएँगे,
हो सके देवसंस्कृति धरा पर मुखर, आसुरी शक्ति का यूं क्षरण हो सके।
हे तपोनिष्ठ! हे वेदमूर्ति!.....

3. ऐसी कृपा करो जग जननी, जीवन गायत्री मय हो,
सत्चिन्तन, सद्भाव जगें, सत्कर्मो की जग में जय हो।
कण-कण में अणु-अणु में माता, रूप तुम्हारा पाए हम
अपना ही परिवार मिले माँ, जहाँ कहीं भी जाएं हम
धूप खिले नयनों में उजली, मन में नव सूर्योदय हो। सत्चिंतन.....× × ×
ऐसा अन्त:करण हो माता, जैसा मान सरोवर हो,
वाणी हो वेदों-सी पावन, कर्म सुमन-से सुन्दर हो,
कृपा तुम्हारी पाकर माता, मन पावन देवालय हो। सत् चिंतन.....
("ऐसी कृपा करो जग जननी" शीर्षक से)

4. जिन्दगी भर निरन्तर दिए- से जलें, माँ! इसी श्रेष्ठ सद्बुद्धि की शक्ति दों
रूढ़िवादी प्रथाएं न रौकें हमें, मूढ़ सी मान्यताएं न टोकें हमें,
सर्वदा हम सही मार्ग पर ही चले, दुर्गुणों के लिए माँ, अनासक्ति दो। माँ!....
हर समय हम किसी की भलाई करें, जिन्दगी में न कोई बुराई करें,
विश्व के वास्ते बीज-से हम गलें, माँ! हमें वह समर्पित सहज भक्ति दो। माँ!...×××
सद्विचारों-भरा श्रेष्ठ व्यवहार दो, आचरण का हमें श्रेष्ठ आधार दो,
इक नए स्वर्ण युग के लिए हम ढलें, इस तरह की हमे आज अभिव्यक्ति दो।माँ!....
("जिन्दगी भर निरन्तर दिएसे जलें" शीर्षक से)

5. बहें हम न तेजधारों में, माँ आज वही शक्ति हमें दो।
रहें हम निडर प्रहारों में, माँ आज वही शक्ति हमें दो।
सभी की सदा भलाई करें, समाज के लिए हम मरें

रहे लोकहित विचारों में, माँ आज वही शक्ति .....
बड़प्पन कभी नहीं दिखाएं हम, गले सभी को लगाएं हम
जगे आस बेसहरों में। माँ आज वही शक्ति.....
वही श्रेष्ठ आचरण कर सकें, सभी जो अनुकरण कर सकें,
हो प्रभाव फिर पुकारों में माँ आज वही शक्ति .....

2. संकल्पः-

1. तुम्हारी शपथ हम निरन्तर तुम्हारे, चरण चिन्ह की राह चलते रहेंगे,
करेंगे हरेक स्वप्न पूरा तुम्हारा, उसी यत्न से पग मचलते रहेंगे।
वही युग-पुरुष, आज जिसने गलाया, मनुज के लिए बीज-सा ही स्वयं को ,
अंधेरा मरण का भला क्या करेगा, कि जिसने मिटाया सघन घोर तम को,
तुम्हारी शपथ हम सभी अंकुरित हों, सदा सत्य बनकर निकलते रहेंगे। तुम्हारी शपथ...

× × × × × × × ×

तुम्हारी बताई हुई राह पर ही, अंधेरी निशा को किरण मिल सकेगी,
कि निष्प्राण होने लगी जो मनुजता, तभी फूल जैसी पुनः खिल सकेगी
तुम्हारी शपथ हम इसी पर चलेंगे, न अब हम दिशाएं बदलते रहेंगे। तुम्हारी शपथ....

("तुम्हारी शपथ हम निरन्तर तुम्हारे" शीर्षक से)

2. चलेंगे हम जगत्-जननी तुम्हारे ही इशारों पर,
न है चिंता कि डूबे या पहुँच जाएं किनारों पर।
भटकते ही रहे अब तक अंधेरी बीथियें में हम,
रहे बस खोजते मोती तटों की सीपियों में हम
बडे सौभाग्य से आये यहां माँ के दुआरों पर। न है चिंता.....
सुसंस्कृति की सुरक्षा को विवेकानन्द हम होंगे,
कि बंदा बैरागी से हम जरा भी तो न कम होंगे
जमाना नाज कर लेगा, पुनः इन पंच प्यारों पर। न है चिन्ता.....

("चलेंगे हम जगत-जननी तुम्हारे ही इशारों पर" शीर्षक से)

3. अब तेरा दुख दर्द हृदय का, माँ हमने पहचाना,
इसीलिए तो पहन लिया है, यह केसरिया बाना।
बहती जो पंजाब असम में, प्रबल आग की धारा
आज दहकने लगा उसी में, है कश्मीर हमारा,
सीमाएं जल रही देश की, देती हमें दिखाई
अरे उसी बढ़ती ज्वाला में, जलती है तरुणाई
हर पल बढ़ती हुई आग से हमको देश बचाना । इसीलिए तो .....

जिसके ऋषियों ने धरती को अनुपम ज्ञान दिया था,
वैभव संस्कृति-शान्ति-व्यवस्था का अनुदान दिया था,
जिसका है आभार विश्व के हर अणु पर हर कण पर
है प्रभाव मानवी चेतना पर, चरित्र-चिंतन पर,
उसी देवसंस्कृति का ध्वज, फिर जग में है फहराया। इसीलिए तो.....

("अब तेरा दुख दर्द हदय का माँ" शीर्षक से)

4. हमने पाई थाह आज माँ! तेरे मन की पीर की,
चले चदरिया ओढ़ बसेती, हम बलिदानी वीर की।
यही बसंती चादर ओढ़ी नानक ने, रैदास ने,
ऊँच-नीच का भेद मिटाया था, श्रद्धा-विश्वास ने,
सीता राम भय सारे जग को जाना तुलसीदास ने,
'मोको कहाँ ढूंढ़े बन्दे', मैं तो तेरे पास में।
गूंज उठी थी इसी वेश में बानी संत कबीर की। चले चदरिया ओढ़.....×××
माँ! है शपथ तुम्हारी, हम सब जाएंगे संसार में,
मन न किसी का रहने देंगे, भंवरों में, मझधार में
शान्तिकुंज से निकल पडे, हम, इस वासंती देश में
पाएगा संसार शान्ति अब, गुरुवर के संदेश मं
चिंता रही न इमको धन की, साधन और शरीर की। चले चदरिया ओढ़ ...

("हमने पाई थाह आज माँ" शीर्षक से)

6. ले लिया संकल्प अब हम दीपकों ने, जगमगाएंगे धरा की हर डगर को,
हम बहुत छोटे व मिट्टी के बने हैं, किंतु दृढ़ चट्टान-सा संकल्प बल है
ज्योति की झिलमिल असंख्यों रश्मियों से, भूमि भरने की हमें इच्छा प्रबल है,
प्रखर, पर शीतल-सुखद आलोक से हम, सहज ही लज्जित करेंगे दोपहर को।लेलिया...

× × × × ×

आज भी निर्दय दहेजी वेदियों पर, हर दिवस जलती-झुलसती नारियाँ हैं
आज भी, अपमान, परदेसी प्रथा में, त्रास-शोषण बीच पलती नारियाँ हैं,
संगठित होकर, मिटाएंगे स्वयं हम, नारियों पर बरसते भीषण कहर को।ले लिया.....

("ले लिया संकल्प अब हम दीपकों ते" शीर्षक से)

3. परिष्कार-प्रक्रिया :-

1. धन्य है जिन्दगी यह हमारी, नाथ! पाकर सहारा तुम्हारा,
हे प्रभो! हम समर्पित खड़े हैं, शेष जीवन है सारा तुम्हारा।
हर तरफ था भयंकर समुंदर, जीर्ण थी नाथ! जीवन की नैया,

क्या पता यह कहाँ डूब जाती, जो न मिलता किनारा तुम्हारा। धन्य है जिन्दगी....××
हर तरफ जब अंधेरा घिरा हो, और कोई नहीं आसरा हो,
रास्ता तब दिखाए गगन से, ध्रुव सरीखा सितारा तुम्हारा। धन्य है .....
("धन्य है जिन्दगी यह हमारी" शीर्षक से)

2. हे गुरूदेव! तुम्हारी वाणी बदल रही संसार, तुम्हारा वंदन बारम्बार।
शापित मानवता मे तुमने नूतन प्राण जगाए, संस्कृति के मरुथल मे तुमने अमृत कण बरसाये
निर्मम हृदयों में सरसाई करूणा की रसधार। तुम्हारा वंदन.....
सहज-सरल वाणी से तुमने जन-जन को अपनाया
जटिल और दुर्लभ दर्शन को तुमने सरल बनाया
सुलभ हुए सारी मानवता को उत्कृष्ट विचार, तुम्हारा वंदन.....× × ×
तपः पूत लेखनी तुम्हारी, रही जगाने वाली
हर हताश के हृदय मनोबल सतत् बढ़ाने वाली,
दिया दुःखी दुनियाँ को तुमने ही अमोघ उपचार। तुम्हारा वंदन .....
("हे गुरूदेव! तुम्हारी वाणी" शीर्षक से)

4. गुरुसत्ता का विराट रूप :-

1. तुम्हें गुरुदेव! जब हम ठीक से पहचान पाएंगे,
तुम्हारे रूप में साकार हम भगवान पाएंगे।× × ×
यहाँ हठवादिता, पूर्वाग्रहों से जो न जकड़ेगे,
तुम्हें आदर्श मानेंगे तुम्हारी राह पकड़ेंगे
अनेको पीढ़ियाँ जिस पर नजर रखकर सफल होंगी,
युगों तक हम नहीं ऐसा पुन प्रतिमान पाएंगे। तुम्हारे रूप .....
स्वयं जो आँख मूंदे हों, उन्हें कैसे दिखे दिनकर
रखे जो हाथ कानों पर, सुनें कैसे तुम्हारा स्वर
कि तुम आकाश से हर पल हमें संकेत देते हो,
अभी जो चल पडेंगे वे अमिट अनुदान पायेंगे। तुम्हारे रूप में .....
("तुम्हें गुरुदेव! जब ठीक से पहचान पायेंगे शीर्षक से)

5. परावाणी के निर्देश :-

1. भले हो दूर पर माँ के हृदय का प्यार पाओगे,
करोगे ध्यान जब भी तुम, हमें हर बार पाओगे।
कभी बेचैन हो जब मन हमें तब याद करना तुम,
हृदय में एक पल को भी नहीं अवसाद करना तुम,
हमारे तुम हृदय अन्तःकरण के पास हो हर दम,

हमारी स्नेह, क्षमता पर तुम्हें विश्वास हो हर दम,
हरेक तूफान में अपना सबल आधार पाओगे। भले हो दूर.....
हमारे द्वार तुम सबके लिए हरदम खुले होंगे,
हमारे स्वर वहाँ पर भी हवाओं में घुले होंगे
हमारी शक्ति तुमको हर निमिष साहस बँधाएगी,
अगर आलस्य ने घेरा तभी तुमको जगाएगी,
भंवर में नाव जब होगी, तभी पतवार पाओगे। भले हो दूर.....

("भले हो दूर पर माँ के हृदय के प्यार" शीर्षक से)

6. कर्मफल अकाटय :-

किए मंत्र-जप माला फेरी, पूजन आठों याम का।
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का ?
हर पूनो, हर पर्व नहाए, गंगा जी के नीर में
पर मन डूब न पाया बिल्कुल, किसी दु:खी की पीर से;
करते रहे सफर हम, निष्ठुर मन से चारों धाम का। रहे भाव संकीर्ण .....
प्रगति देखकर औरों की हम, भरे द्वेष में लोभ में
पूर्ण न हो पाई इच्छा तो, भरे तीव्र विक्षोभ में
ध्यान रहा हर समय हमें तो, अपने ही धन-धाय का। रहे भाव संकीर्ण ...

("किए मंत्र-जप माला फेरी" शीर्षक से)

7. ईश्वर की खोज :-

गिरजे की घंटियाँ यही कहतीं, स्वर यह अजान का,
ईश्वर का आवास रहा है, हृदय दु:खी इंसान का।
गौड, खुदा या राम नाम के लिए लडे बिन बात में,
काम न अच्छे किए, भरे हम रहे सदा जजबात में।
मुख से किया पाठ गुरुवाणी, गीता, वेद, पुराण का। ईश्वर का आवास .....
दान दिए तो केवल भरकर अहंकार की शान में,
अनुष्ठान कर के भी कमी न आ पाई अभिमान में।
ईश्वर भूख नहीं दिखावे का, या धन-सम्मान का। ईश्वर का आवास .....
धर्मी वही कि जिसके मन में मानवता से प्यार हो,
संत-पीर है वह जिसमें सज्जनता, सद्व्यवहार हो,
यही अमर संदेश बाइबिल, गीता और कुरान का। ईश्वर का आवास.....

("गिरजे की घंटियां यही कहती" शीर्षक से)

8. अध्यात्म चिन्तन :-

1. सीख नहीं पाए चादर ओढने का ढंग रे, मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे। हमें मिली चादर उजली, मैली कर डाली, जिधर गए हमने उतनी, कालिमा लगा ली, मैला अब अंतरंग है, मैला बहिरंग रे। मैली चादर पर कैसे.....× × × × निर्मल आचरण बनेगा, चमकेगा चिंतन, बहुत-बहुत चौड़ा होगा, भावों का आँगन, नहीं कभी होगी मन की गली कहीं तंग रे। मैली चादर पर कैसे .....

("सीख नहीं पाए चादर ओढने का ढंग रे" शीर्षक से)

2. जिस दिन चरित्र- चिंतन अध्यात्म से जुड़ेगा,
मन में तभी उमड़ता उल्लास मिल सकेगा।
इच्छा सदैव पाली हमने अनन्त धन की, चाहा कि जिन्दगी यह शय्या बने सुमन की। सुख के असीम साधन निशि दिन यहाँ जुटाए, लेकिन बढ़े निरन्तर दुःख के अछोर साये संकीर्ण भावना से जब हम उबर सकेंगे, सच्चा तभी सुखों का मधुमास मिल सकेगा
जिस दिन चरित्र चिंतन.....
तब प्यार दिव्यता का वाहक स्वयं बनेगा, व्यवहार सोम्यता पा साधक स्वयं बनेगा सम्भाव से भरे सब इंसान है सकेंगे, हम एक ही पिता की संतान हो सकेंगे होगी हरके मुख पर निश्छल, सरस मधुरता, हर व्यक्ति को सुपावन निःश्वास मिल सकेगा
जिस दिन चरित्र चिंतन.....

2. क्रान्ति के स्वर (भाग-1) आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा संचालित सप्तक्रान्तियों पर आधारित गीत संग्रह क्रान्ति के स्वर का प्रकाशन युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा वर्ष 1999 में किया गया। इस संकलन में श्री शचीन्द्र भटनागर के तेइस गीत हैं।

इस संकलन के लिए सप्तक्रान्ति आन्दोलन की दोनों धाराओं, रचनात्मक तथा संघर्षात्मक से सम्बन्धित प्रेरणाप्रद गीतों का चयन किया गया है। ये गीत नारी जागरण, दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन, सत्प्रवृत्ति संवर्धन, कुरीति उन्मूलन, व्यसनमुक्ति एवं विवाहोन्माद प्रतिरोध विषयक है। इन गीतों में एक ओर छुआछूत की भावना एवं ऊँच-नीच की विचार धारा का प्रतिरोध किया गया है तो दूसरी ओर कर्म से ब्राह्मणत्व अपनाने पर बल दिया गया है। इनमें अश्लीलता का प्रतिकार है तो परदा प्रथा, मृत्युभोज, भिक्षा व्यवसाय तथा आभूषणों के प्रति मोह की निरर्थकता बताई गई है। जनसंख्या, वृद्धि एवं व्यसनों के भंयकर परिणामों का यर्थात परक चित्रण किया गया है। एक ओर वैवाहिक प्रदर्शन तथा दहेज को असंगत बताते हुए दहेज माँगने वालों की भर्त्सना की गई है तो दूसरी ओर कन्या के आत्म-निर्भर बनने की प्रेरणा भी

दी गई है। आपके सभी गीत गेय हैं। प्रमुख गीतों के शीर्षक इस प्रकार हैं-

1. युग सैनिक की आचार संहिता
2. दहेज लोभी से
3. नारी के प्रति अन्याय
4. बंदिनी नारी
5. आत्मघाती शराब
6. नशे का नया रूप
7. मृत्यु-भोज एक अत्याचार
8. वैवाहिक प्रदर्शन
9. माँ का कुन्दन
10. हम ब्राहमण कहलाएंगे
11. माँग की निरर्थकता
12. युग निर्माणी का संकल्प
13. जाग्रत नारियों का समूहगान

कुछ गीतों के अंश अवलोकनीय हैं-

1. सब कुछ गंवा दिया है बोतल के वास्ते, पल भर कभी न सोचा है कल के वास्ते
घर में सभी को लगते हो तुम बहुत पराए, वैसा दुलार होता, बच्चे न जान पाए,
जीवन में सिर्फ समझा पत्नी को देह तुमने, समझे न भावनाएं, बाँटा न स्नेह तुमने,
गंगा को भूल बैठे, दलदल के वास्ते। सब कुछ गँवा दिया है.....
बीमार पुत्र क्यों है, तुमने कभी न जाना, बच्चे बिलख रहे क्यों, कब से मिला न खाना,
अधनंग बालकों को देखा न जाते-जाते, लौटे शराब पीकर मदहोश लडखड़ाते,
क्या जिन्दगी मिली इस जंगल के वास्ते। सब कुछ गँवा दिया है ....× × ×
तुम जिसको पी रहे हो, वह तुमको खा रही है, यह नरक सा तुम्हारा जीवन बना रही है,
चन्दन-सा श्रेष्ठ अनमोल तुमने पाया, तुमने जला-जला कर कोयला इसे बनाया,
कुछ सोच लो कुकर्मों के फल के वास्ते। सब कुछ गँवा दिया है.....

(व्यसन मुक्ति पर आधारित-"आत्मघाती शराब" शीर्षक से)

2. ओ दहेज लोभी! बच जाओ बेटे की नीलामी से,
अरे! न क्यों डरते तुम अपने पुरखों की बदनामी से।
कन्या के गुण-रूप और शिक्षा में कमी न चाहोगे,
फिर भी धन-साधन की लम्बी सूची देख सराहो गे,
क्या चिन्ता तुमको दहेज के दूषित घृणित प्रभावों की,
समधी के मन को पल पल बोझिल करते दुर्भावों की,
ऊपर से सत्कार चाहिए, कैसे कुटिल लुटेरे हो,
तुरत भड़क उठते तुम उसकी यहाँ जरा-सी खामी से। ओ दहेज लोभी .....×××
अगर न अब भी संभले, तो हम विद्रोही बन जाएंगे,
और तुम्हारे पुत्र अवज्ञा के दोषी कहलाएंगे,
तुम दहेज मांगोगे लेकिन पुत्र नहीं स्वीकारेंगे,
घोर पाप के लिए तुम्हें युग सेनानी धिक्कारेंगे,

नहीं कहीं आदेश चलेंगे अब दंभी वर वालों के,
कन्या वाले न हीं चलेंगे अब केवल अनुगामी-से। ओ दहेज लोभी.....

("दहेज लोभी से" शीर्षक से)

आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन की आलोच्यकाव्य में अभिव्यक्ति-

(1) कर्मफल के सिद्धान्त की अनिवार्यता :-

(i) जैसे जो कर्म करेगा, वैसे ही फल पाएगा,
आम नहीं बोए तूने, मीठे फल क्यों खाएगा।
करले प्रायश्चित्त अब भी, कल की उस भूल का।
बोया है पेड़ तूने जब यहाँ बबूल का, × × ×

(ii) हमारे कर्म-फल का तो यहाँ मिलना सुनिश्चित है,
हमारे हर प्रबल पुरुषार्थ का लेखा सुरक्षित है।

(iii) "कर्म की श्रेष्ठ पतवार ले हाथ में, नाक जो जिन्दगी की यहाँ खे सके,
काल की धार में पार वे ही हुए, पुण्य परमार्थ का लाभ वे ले सके,
भाग्य के ही भरोसे अकर्मण्य बन, हर समय गिड़गिड़ाना न भाता उन्हें।"

2. ईश्वर प्राप्ति के लिए मन की निर्मलता आवश्यक :-

(i) मन मैला ही रहा अगर, तो उजला तन बेकार है,
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है।
मानव जन्म पुण्य का फल है, रहो न इस अभिमान में,
यह तो धूल भरा सोना है, रखा हुआ खदान में,
इसे तपाना भी तो है, यह कभी न आया ध्यान में,
जो न खरा कुंदन बन पाया, वह कंचन बेकार है। जनहित में .....× × ×

(ii) दिव्य अनुदान पाना अगर चाहते, स्वच्छ पहले करें पात्र मन का स्वयं,
लोकहित के प्रबल ताप में हम सभी स्वार्थ अपना गला दें, मिटा दें अहं।

("पात्रता-विकास")

3. धर्म का स्वरूप :-

तुमने कहा कि धर्म सभी का पोषक है, सुख दाता है,
धर्म धूप है जिसे किसी में अन्तर नजर न आता है,
नर-नारी सबको गायत्री का अधिकार दिलाया है,
देश-प्रान्त-भाषा का तुमने सारा भेद मिटाया है।

4. गुरु का स्वरूप :-

(i) शिष्य-मन में स्वाँति की बूंदे गिराता है गुरु,
शिष्य के मन को अमल मोती बनाता है गुरु,

भाव में शुचिता, विचारों में विमल उत्कृष्टता,
कर्म में निष्काम निष्ठा का प्रदाता है गुरु।

(ii) "गुरु वही पारस, जिसे छू लौह-कण कंचन बने,
जो रहा था व्यर्थ अब तक, वह विटप चन्दन बने,
है न वह सद्गुरु कि फूंके मंत्र जो हर कान में,
गुरु वही, सान्निध्य में जिसके सफल जीवन बने।।"

5. गुरु-सान्निध्य का विलक्षण प्रभाव :-

"अरे जिस भक्त पर कण भर कृपा गुरुदेव की होती,
बना करता वही उस स्वाँति जल से, सीप में मोती,
अनौखी क्रान्ति से भरपूर होता मन-वचन उसका,
सभी से भिन्न हो जाता सुपावन आचरण उसका।"

6. ईश्वर प्राप्ति का मार्ग :-

(i) हमें ईश्वर मिलेगा यदि सरल मन हो हमारा, सहज संवेदन से जो तरल मन जो हमारा उसे ढूंढे नही हम बुद्धि के इन मरूथलों में, मिलेगा वह न तर्को के कंटीले जंगलो में न मोटी पोथियो मे ज्ञान के अभियान मे है, नही वह जागरण मे है, न जप-तप- दान मे है। स्वयं प्रभु आएंगे, यदि स्वच्छ आँगन हो हमारा।"

2. "मन क्यों गली-गली भरमाए, प्रभु के दर्शन यहीं मिलेंगे।× × ×
जहाँ अंधेरा हो उस घर की देहरी दिया जलाएं,
जिसका कोई न हो, अब उसका थामें हाथ, उठाएं,
नर का रूप धरे, ना जाने कब नारायण यहीं मिलेंगे।।"

अध्यात्म का वैज्ञानिक प्रतिपादन -

(आत्म नियंत्रित विज्ञान एवं विज्ञान सिद्ध अध्यात्म)-

1. "लाँघ हम आये बहुत दुर्भेद्य सीमाएं स्वयं,
चन्द्रतल पर घूमकर हैं लौट आए ये चरण,
हम बने स्वामी स्वयं के, दूरियों को जीतकर,
वर्ष दिन हो जाएंगे अब, दिन बनेंगे मात्र क्षण।"

2. हर प्रगति पर आज फिर अध्यात्म का अंकुश लगे,
लोकमंगल के निकष पर वह उसे पहले कसे।

3. अध्यात्म के बिना तो विज्ञान है न पूरा,
जो न हो तर्क सम्मत, वह धर्म है अधूरा,
गतिशील विश्व को हैं दोनों बहुत जरूरी, दोनों न हैं विरोधी, उनमें तनिक न दूरी,
विज्ञान धर्म दोनों पूरक बनें परस्पर, केवल तभी जगत का उत्थान हो सकेगा।

साधन असख्य हमको विज्ञान से मिले है, अध्यात्म के बिना क्या कल्याण हो सकेगा?

समन्वयात्मक दृष्टिकोण :-

न विज्ञान छोड़े, न अध्यात्म छोड़े, नहीं एक में शक्ति का क्षय करें हम,
प्रबल शक्ति दोनों बहुत, इसलिए इन, महाशक्तियों का समन्वय करें हम।"

इक्कीसवीं सदी नारी सदी :- नारी के भविष्य के प्रति आशा -

"वही शौर्य की मूर्ति, वही लक्ष्मी बाई थी, वही साहसी दुर्गावती, अहिल्याबाई
स्वतंत्रता-संग्राम बीच नारी ने ही तो, जन-जन के मन में थी नवचेतना जगाई।
अनाचार से वही पुनः संघर्ष करेगी, दबी घुटी वाणी उसकी ओजस्वी होगी।
मातृशक्ति अब जागी है, तेजस्वी होगी, नई सदी में नारी फिर वर्चस्वी होगी।"

कवि का नारी से निवेदन :-

"बहनो गंदे चित्र हटाओ, सबको सत्साहित्य पढ़ाओ,
ऐसा तेज चले अभियान तुम्हारे हाथों बहनें,
होगा नव युग का निर्माण, तुम्हारे हाथो बहनों।"
न यूँ पश्चिमी सम्भयता के सहारे, मिटे शील सौन्दर्य के गुण तुम्हारे,
बहुत श्रेष्ठ संस्कृति पुरातन हमारी, न अब अनुकरण यूँ करो बिन विचारे।""

उद्दाम राष्ट्रभाव :-

"राष्ट्रबंध पाता नहीं भूगोल के परिमाप में, राष्ट्र मिटाता है न अत्याचार या संताप में,
राष्ट्र के प्रतिप्रेम से उत्थान होता व्यक्ति का,
जो झलकता भाव-चिंतन-आचरण की छाप में।

राष्ट्र गौरव :-

भारत है देश सबकी शुभ कामना जहाँ है। सर्वे भवन्तु सुखिनः की प्रार्थना यहाँ है।
ऋषियोंने विश्वमानव कोदृष्टि में रखा था, सबप्राणियों में उनको निजरूपी ही दिखा था,
माँगा सदा प्रकृति से, सबके लिए ही उनने,
बसुधा कुटुम्ब ही है, शुचि भावना यहाँ है। सर्वे भवन्तु सुखिन.....× × ×
सद्ज्ञान के सहारे, भारत जगद्गुरु था, सोनी की चिड़िया बनने पुरुषार्थ कल्पतरु था,
था शक्तिशाली इतना, थे देवता बुलाते,
अध्यात्म संग भौतिक संयोजना यहाँ है। सर्वे भवन्तु सुखिनः .....
अब क्रान्ति विचारोंकी अनिवार्य हो गई है, विधि सप्तक्रान्तियों की स्वीकार्य हो गई है।
हो देश मुक्त व्यसनों, आडम्बरों-छलों से,
उज्जवल भविष्य वाली अब सर्जना यहाँ है। सर्वेभवन्तु सुखिनः .....

मूल्याँकन

जब नवगीत शैली के गीतकारों की चर्चा आती है तो सुकवि शचीन्द्र भटनागर का नाम सम्मान पूर्वक लिया जाता है। कारण यह है कि उन्होने कथ्य की अर्थ-लय की मार्मिक तरंगों पर शब्द की स्वर-लहरियों को सहज रूप में बहने दिया हैं न स्वर अर्थ के लिए बाधक बने है और न विशिष्ट अर्थ को अभिव्यक्त करने वाले शब्द स्वर की राह में अवरोध बने हैं।

कुशल और उच्च स्तरीय गीतकार को स्वर-लय तथा अर्थ-लय को एक रूप करके अपनी आत्मा में उतारना पड़ता है और तब जो आत्माभिव्यक्ति होती है, वह गीत को उसकी सम्पूर्ण गरिमा के साथ प्रस्तुत करने वाली होती है। स्वर की लय को साधते हुए यह ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं अर्थ की लय न टूट जाए। अर्थ-लय को दृष्टिपथ में रखने के क्षणों में ये ध्यान रखना पड़ता है कि स्वर की लय बाधित न हो।

प्रतिष्ठित गीताकर एवं सम्पादक श्री शचीन्द्र भटनागर जी की रचनाएं प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं विशेषकर अखण्ड ज्योति एवं युग निर्माण योजना में प्रकाशित होती रहीं हैं। अनेक कवि सम्मेलनों के मंचों से उन्हें सुना जाता है। श्री शचीन्द्र जी स्वाभिमान के धनी, युगबोध के पक्षधर, छंद और शैली की पुरातन सीमाओं को लाँघकर साहित्य के आधुनातम रूप के साथ चलने वाली अभिव्यक्ति में नवीनता के हामी, सर्वथा नवीन प्रतीक एवं बिम्ब-प्रधान के समर्थक युग निर्माण योजना के मूर्धन्य कवि हैं।

डा0 गिरिराज शरण अग्रवाल, एम0ए,पी-एच.डी. रीडर एवं अध्यक्ष, वर्द्धमान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिजनौर उनके विषय में लिखते हैं-

"हिन्दी गीतकारों में शचीन्द्र भटनागर एक ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं जिनकी गीत-सृष्टि में प्रकृति और प्रणय, व्यष्टि और समष्टि या व्यक्ति और समाज को पूर्ण संतुलन के साथ अभिव्यक्ति मिली है।× × ×

गीत लिखना उनके जीवन की अनिवार्य विवशता है, परन्तु इस विवशता में विषयों का अनुक्रम एक दम नवीन है। पारम्परिक छंदों की अपेक्षा उनमें नए प्रयोगों का सफल प्रयत्न हुआ है, साथ ही बासी शब्दाबली और रूप-विधान से उनको कोई लगाव नहीं है उनके गीत जीवन से पूर्णरूपेण संपृक्त हैं। सामाजिक वैषम्य के प्रति जहाँ इन गीतों में आक्रोश का महत्वपूर्ण स्वर उभरा है, वहाँ पर वह इस जीवन को सही ढंग से जीने की सलाह देते हैं, पलायन से सर्वथा विमुख होकर।"

---

1. डा0 गिरिराज शरण अग्रवाल- खण्ड-खण्ड चाँदनी, पृष्ठ 6

श्री जितेन्द्र रघुवंशी

व्यक्तित्व एवं कृतित्व-

'इक्कीसवीं सदी-उज्जवल भविष्य' धरती पर स्वर्ग के अवतरण एवं मनुष्य में देवत्व के उदय हेतु युगदृष्टा पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के आह्वान पर माँ भारती के जिन लाड़ले सपूतों ने अपने जीवन को महाकाल के चरणों में समर्पित किया, उनमें से एक हैं कवि हृदय श्री जितेन्द्र रघुवंशी। आपका जन्म 1 मार्च सन् 1954 में पिण्डरा, सतना (मध्य प्रदेश) के एक सम्पन्न क्षत्रिय परिवार में हुआ। इनकी जन्मदात्री माता धन्य है जिसके एक नहीं तीन-तीन सपूतों ने अपने घर-परिवार की विलासिता भरा जीवन त्यागकर सेवा और कर्मठता भरे जीवन को स्वीकारा और शांतिकुंज, हरिद्वार के देवपरिवारों में अपनी कार्यपद्धति एवं नेतृत्व क्षमता से अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया। आपके अतिरिक्त आपके दो सहोदर भाई श्री सुरेन्द्र रघुवंशी एवं श्री बृजेन्द्र रघुवंशी भी शान्तिकुंज, हरिद्वार में जीवनदानी के रूप में निवास करते हुए प्रशिक्षण कार्य, पत्राचार एवं टोली के कार्यो में महत्वपूर्ण योगदान किया। श्री जितेन्द्र रघुवंशी ने प्रशिक्षण एवं टोली की अतिरिक्त शान्तिकुंज की न्यूज एण्ड फीचर सर्विस में भी अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दी। आप पूज्य आचार्य जी के श्रीचरणों में 15 मई 1975 को समर्पित हुए थे और इसी तिथि को वे अपना वास्तविक जन्म मानते है। लेखन की प्रेरणा श्री जीतेन्द्र रघुवंशी को पूज्य आचार्य शर्माजी ने ही दी। उन्हीं के शब्दों में- "परम पूज्य गुरुदेव ने जब, जैसे, जिससे चाहा वह लिखवा लिया। हमें भी अश्विन नावरात्रि वर्ष 1978 में प्रेरणा मिली ओर जो कुछ गुरुदेव ने चाहा वह लिखवाया।" दिनाँक 16 मार्च 1999 को शोधकर्ता को भेजे गये अपने एकपत्र में आपने लिखा-

"20 वर्ष की आयु में वर्ष 1974 में परमपूज्य गुरुदेव (आचार्य श्रीराम शर्मा) ने सेवा का अवसर प्रदान किया। 25 वर्ष तक एक-एक क्षण युग निर्माण मिशन के कार्य में लगा है। दिनाँक 2 मार्च 1999 को आप 16 वर्षीय पुत्री और 12 वर्षीय पुत्र तथा पत्नी सहित परम पूज्य गुरुदेव (आचार्य शर्मा) पर पूर्ववत् विश्वास रखते हुए शांतिकुंज की सारी सुविधाएं छोड़कर बाहर आ गये तथा वर्तमान में श्री महाकालेश्वर महादेव मन्दिर, प्रज्ञाकुंज, जगजीतपुर पो0कनखल, हरिद्वार में श्री गणेश गायत्री परिवार ट्रस्ट (रजि.) के मुख्य प्रबन्ध संचालक के रूप में विभिन्न समाज सेवा के कार्य एवं संगठन का कार्य देख रहे हैं। वर्ष 1995 से 1999 तक देश के प्रायः सभी समाचार

पत्रों में युगदर्पण शीर्षक से आपके लेख प्रकाशित होते रहे।

शांतिकुंज को आज भी श्री जितेन्द्र रघुवंशी अपना गुरुद्वारा मानते हैं। वे लिखते हैं- "शांतिकुंज हमारा गुरुद्वारा है, पच्चीस वर्षों तक रहकर हमने स्वर्गोपन पुण्य भूमि में प्राण ऊर्जा प्राप्त की है। अन्तिम साँस तक हमारी श्रद्धा और निष्ठा इसी पुण्य भूमि से जुड़ी रहेगी। कोई कितना ही प्रयास करे, हमारी श्रद्धा का तोड़ नहीं सकता। 'प्रज्ञाकुंज' की स्थापना हमने किसी प्रतिद्वन्दिता में नहीं बल्कि परमपूज्य गुरुदेव (आचार्य शर्मा जी) को सौंपे गए जीवन को उन्हीं के कार्य में लगाने के संकल्प की पूर्ति के लिए की है।"1

सम्मान:- 1. शान्ति कुंज, हरिद्वार में अपनी पच्चीस वर्षीय सेवाओं के क्रम में श्री जितेन्द्र रघुवंशी का राष्ट्रव्यापी शांतिकुंज टोली आयोजनों में स्थान-स्थान पर सम्मान व अभिनन्दन हुआ। श्री जितेन्द्र रघुवंशी शान्तिकुंज, हरिद्वार के सूत्र संचालकों- पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा, वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा पश्चात डा0 प्रणव पण्ड्या एवं श्री बलराम सिंह परिहार के तूफानी अभियान कार्यक्रमों की विधि व्यवस्था बनाने हेतु उनके साथ रहे।

2. तीन जुलाई 2003 को 'अमेरिकन बायोग्राफिकल इन्स्टीट्यूट' ने श्री जितेन्द्र रघुवंशी को 'मैन ऑफ दी यीअर 2003' हेतु चुना। इस सम्मान को वह पूज्य आचार्य जी की असीम अनुकम्पा और प्रेरणा ही मानते हैं।

सम्मान पत्र की भाषा यथावत अवलोकनीय है-

ABI **AMERICAN BIOGRAPHICAL INSTITUTE, INC**

MR. Jitendra Raghuvanshi,
Pragya Kunj, Jagjitpur, Kankhal, Haridwar, INDIA
REPLY REQUESTED: MAN OF THE YEAR -2003

Dear Mr. Raghuvanshi,

I am delighted to announce your nomination for the prestigious titleMAN OF THE YEAR-2003. The institute's international Board of Research decided on your nomination due to your overall accomplishments and contribution to society .

We have the pleasure of reviewing the endeavors men around the world because of our list of recognized who's who titles. Singling out a limited number to receive the accolade MAN OF THE YEAR has been difficult indeed. Much deliberation was held to choose those whose achievements and dedication towards exemplary goals were among the best we have seen. My congratulation to you on your nomination.

Mr. Raghuvanshi , the enclosed documents describes the Award we have chosen to commemorate the occasion and indicates a reply request by August 24, 2003. I wish you much continued success and nomination for the 2003 MAN OF THE YEAR.

Sincerely
Sd. (J.M. Evans) President

1. श्री जितेन्द्र रघुवंशी-बसन्त प्रेरणाञ्जलि, पृष्ठ 31

कृतित्व:- श्री जितेन्द्र रघुवंशी ने कविता के क्षेत्र में लेखन वर्ष 1978 से प्रारम्भ किया। आपकी रचनाएं युग निर्माण योजना (मासिक) में प्रकाशित हुई। पहली रचना आपकी वर्ष 1982 में पाँच क्रान्तियों पर प्रकाशित हुई। आपने शताधिक रचनाएं लिखी जो शांतिकुंज, हरिद्वार एवं युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा से प्रकाशित काव्य संकलनों, पत्र-पत्रिकाओं एवं स्मारिकाओं में प्रकाशित हुई। शांतिकुंज के ऑडियो-वीडियो के माध्यम से भी आपके अनेक गीत प्रसारित हुए। प्रात:कालीन गीत मंजरी में आपका प्रार्थना गीत 'माँ तू हम सबको वर दे' अभी भी शांतिकुंज एवं विभिन्न प्रज्ञा संस्थानों में गुंजित होता है।

प्रकाशित काव्य संकलन :- वसन्त प्रेरणांजलि में आपकी रचनाएं अवलोकनीय है-

1. विश्व के आधार हो या कर्णधार हो।
कुछ भी हो सृजेता तुम, विश्व के प्रकाश हो।।
कर्म हैं किए ऐसे, दिखते जहान को, धर्म को सजाया ऐसे, प्रेरे इंसान को।
प्रेरणा ले विश्व जिससे, ऐसी खुली किताब हो। कुछ भी हो सृजेता.....
गिरों को उठाया मग से, ज्ञान के प्रकाश से, पतितों को उठाया तुमने अपने पुरुषार्थ से
भ्रमितों को मिलता पथ,ऐसे तुम चिराग हो। कुछ भी सृजेता.....
संगठन बनाया इतने स्नेह व दुलार से, रीछ वानरों को जोड़ा तप की पुकार से,
निभाया है वचन जिनने, वही तुम अवतार हो। कुछ भी हो सृजेता.....
("पूज्य गुरुदेव के प्रति कविता" से)

2. पुष्प चढ़े चरणों में उसके, मोड़ी जिसने युगधारा,
यह मानव है इस जगती का परिवर्तक, प्रेरक न्यारा।
मानवता की करुण व्यथा ने, इनका दिल दहलायाहै,
मिटे असुरता इस भू पर से, वह अभियान चलाया है।
तम की महा निशा चलकर, फैलाया है उजियारा। यह मानव है इस जगती का ....
पावन पर्व बसन्त सदा ही, शक्ति प्रेरणा देता है,
माध्यम बनकर स्वयं सदा ही, सबको राह दिखाता है,
और नही है कोई ? जिसने, मिटा दिया है अंधियारा। यह मानव है इस जगती का..
बैठा नहीं एक क्षण भी जो, व्यवधानों से टकराया,
आँसू पोंछे जाने कितने, जीवन सबका सफल बनाया।
अर्जित तप की सारी पूँजी, लगा सभी को है तारा। यह मानव है .....
अपनी व्यथा सभी में भरने, करुण पुकार लगाई है,
चैन ले सके मानव फिर से, ऐसी राह दिखाई है।

इस युग स्रष्टा, दृष्टा को अब, करें समर्पण हम सारा। यह मानव है .....

("समर्पण" शीर्षक से)

3. युग निर्माण की झाँकी :-

आओ लोगों तुम्हें दिखाये झाँकी युग निर्माण की।
जिसने बदली युग की धारा, गति मोड़ी इंसान की।। वेद मातरम्.....
इस परिवार से हमें जोड़ता, इसका हर सेनानी है
बदल के रख दी जिसने पहले अपनी ही जिन्दगानी है,
पढ़ा नहीं है जिसने केवल, उसको स्वयं उतारा है।
सुना नहीं है जिसने केवल, जीवन में भी धारा है।
पूरी कर ली पहले जिसने, मंजिल निज निर्माण की। जिसने बदली..... वेदमातरम् ....
इस परिवार का हर सेनानी, कर्तव्यों से प्यार करें
विमुख नहीं होता वह घर से, उनको भी संतुष्ट करे
अपने उत्तरदायित्वों का, पूरा ही निर्वाह करे
घर परविार तथा सम्बन्धी, सबका ही उद्धार करे।
परिवार बदल कर जिसने दे दी, दिशा विश्व उत्थान की। जिसने बदली .....

4. उत्साह को जगाने :-

आया बसन्त हमको, झक झोरने उठाने, नवयुग के सैनिकों में, उत्साह को जगाने।×××
व्यामोह के क्षणों में, आवाज फिर लगाई, आए सदा जो संग में, उनको पुनः दुहाई,
नल-नील,ग्वाल वालों! पौरुष वही दिखाओ, युगकीविभीषिका से, जग का तुम्हीं बचाओ
क्यों मौन हो रुके तुम? आए हैं पथ दिखाने। नवयुग के सैनिकों में .....
पावन वसन्त फिर से, उपहार लेके आया, देखा जहाँ 'मनीषा' उनको यहाँ जुटाया,
है दर्द जो हमारे, उसको जरा बँटाओ, आशा जोहमको तुमसे,वह फिर से कर दिखाओ
संकल्प ले लें सब तो, गूँजे नये तराने । नवयुग के सैनिकों .....

5. युग पुकार :-

दिव्य शक्ति ने टेर लगाई, घड़ी निकट अब आई है,
मिटे असुरता इस जगती से, फिर आवाज लगाई है।× × ×
कौन सुनेगा? करुण व्यथा को, मानवता की पीड़ा को,
माँ बहनों का शोक मिटा दे, दानवता की क्रीड़ा को,
मानव भटक रहा निज भ्रम में, उसको राह दिखाने को,
दाव पनप रहा चहुं दिशि में, उसका राज्य मिटाने को,
लाज लुट रही मातृशक्ति की, दानवता अब छाई है। मिटे असुरता इस जगती से..

6. हम सबको वर दे :-

माँ तू हम सबको वर दे,
भटक रहे थे हम निज भ्रम में, भौतिकता की चमक-दमक में,
भूले-भटके डगर-डगर में, अब आए है मातु शरण में,
माँ तू पार हमें कर दे। माँ तू .....
महिमा तेरी ऋषि-मुनि गायें, प्रभु भी तेरा ध्यान लगायें
जो भी साधक तुमको ध्यायें, दीपक बन कर राह दिखायें
माँ तू फिर जग मग कर दे। माँ तू.....
आदि शक्ति है नाम तुम्हारा, सारा जग है धाम तुम्हारा।
जब-जब संकट भू पर आया, तब तब आकर उसे मिटाया
माँ तू हमको सत् साहस दे। माँ तू .....

("युग गायन हैं गरिमा गान")

7. प्रगतिशील जीवन के पाँच सोपान :-

प्रगतिशील जीवन जीने के मात्र पाँच सोपान हैं।
धारण करते जो जीवन में बने वही महान हैं।
दिया हममें बचपन से जिसने उसके हित अब श्रम करना,
नियमित दिनचर्या अपनाकर, कार्य समय पर है करना,
'विद्यासागर' और 'जवाहर' इनके यह उद्‌गार हैं। धारण करते जो .....
करें कार्य सब मनोयोग से कभी प्रमाद न छाये।
कुरुपता ही सुव्यवस्था में, परिवर्तित हो जाये।
राणा, शिवा, भगत, नेताजी करते यही बयान है। धारण करते जो .....× ×
प्रगतिशीलता के पथ पर अब, जिसको आगे है बढ़ना,
पंचशील है ये सत युग के देव इन्हीं से है बनना,
युग परिवर्तित करने वाले इसके स्वयं प्रमाण है। धारण करते जो जीवन में .....

8. आत्म समीक्षा :-

आत्म समीक्षा ऐसी हो जो, बना सकें इंसान को।
दृष्टि हमारी पैनी हो, फिर भगा सकें हैवान को।।
प्रभु ने दी है हमें अपरिमित शक्ति, सृजन निर्माण की,
उसको हमने कर दी निष्क्रिय, बना उसे शैतान की,
समय अभी भी कहता हम से, बदलें अपने आपको। दृष्टि हमारी.....
मनोयोग से होने वाला, कार्य सफल हो जाता है
रहे प्रसाद अगर जीवन में, सभी नष्ट हो जाता है।
तन्मयता से लग जायें तो चमका दें हर काम को। दृष्टि हमारी .....

9. इससे ही उद्धार :-

प्रगतिशील जातीय संगठन, की अब लगी पुकार,
परम्पराओं और प्रथाओं, में अब करें सुधार।
कुरीतियों व अन्धप्रयासों, से समाज यह जकड़ा है,
सम्प्रदाय की विषम कगारों, में ही मानव अकड़ा है।
आए हैं सब एक जगह से जाना भी है एक जहाँ,
पैदा होते भेदभाव फिर, सोचो यह है उचित कहाँ
ऊँच-नीच की इस खाई ने, मचा दिया चीत्कार! परम्पराओं और प्रथाओं .....
विकृतियों ने ही दहेज के दानव को जन्म दिया,
बनी समस्या जो इस युग की मानव का सुख छीन लिया।
इस दहेज के दावानल में, कितनी बहनें भेंट चढ़ी,
करी आत्महत्या कितनों ने कितनी घर क्वाँरी बैठी।
दशा देखकर जो चुप बैठे, उनको है धिक्कार। परम्पराओं और प्रथाओं.....

10. युग देवता है छाया :-

समय परीक्षा का यह, युग सैनिकों के आया।
पाकर आज्ञा अब प्रभु की युग देवता है धाया।

11. विदाई गीत :-

नवयुग के तुम सृजन साधको, कार्य क्षेत्र में जाओ।
मिला तुम्हें जो ज्ञान यहाँ से, घर-घर में फैलाओ।।× × ×
समय, सम्पदा, प्रतिभा का तुम सही नियोजन करना,
लगे अधिक से अधिक लोकहित, समय यहीं है सुनना,
सुना नहीं यदि युग पुकार को, आगे पछताना हो,
फंसे रहे फिर भी निज भ्रम में, अपने पर रोना है,
दिखा रहे है हम जिस पथ को, आगे बढ़ते जाओ। मिला तुम्हें जो ज्ञान.....

12. माता की करुण वेदना :-

माता की करुण वेदना को, पुत्रों! हृदयों में ले लेना,
हमने दायित्व निभाया है, तुम निज कर्तव्य समझ लेना।
जीवन यात्रा हर क्षण की, कठपुतली थी गुरुवर की,
माया गाथा दो तनकी, आत्मा संगी हर पल की।
मै तो थी बस उनकी छाया, आशीष उन्ही से ले लेना। हमने दायित्व.....× × ×
गुरुवर ने पौधा रोपा, मिल-जुल कर उसे बढ़ाया,
थी शक्ति मात्र उनकी ही, अपनो को श्रेय दिलाया,

यह है ऋषियों की परिपाटी, इस परम्परा को मत खोना। हमने दायित्व.....× × ×
प्रत्यक्ष भूमिका इसकी, तुम बच्चों के कंधों पर,
अपना पुरुषार्थ दिखाना, आस्था रख गुरु चरणों पर,
यदि थक जाओ मेरे बच्चो! डैनो का आश्रय ले लेना। हमने दायित्व.....
गुरुवर निर्देश तुम्हारा, सबको लगता है प्यारा,
गूँजे जन-जन का प्यारा, उज्जवल भविष्य का नारा,
गुरुवर! भगवान जगत स्वामी, बच्चों को पार लगा देना। हमने दायित्व.....

13. स्वर्ण जयन्ती :-

स्वर्ण जयन्ती सभी मनाएं, युग संदेशा लाई,
मानव में देवत्व जगाने, ज्योति अखण्ड जलाई।
धधक रही थी उर में ज्वाला, स्वतंत्रता का वरण करो,
पराधीनता की बेडी को, काटो, फेंको नहीं डरो,
इस ज्योति से महाकाल ने, सच्ची राह दिखाई। मानव में देवत्व.....× × ×
दिखने वाले शत्रु यहाँ से, विदा हुए हुंकार से
आजादी मिल गयी सपूतों की कुर्बानी त्याग से
अन्तः के कल्मष कषाय से, मानव मुक्ति दिलाई। मानव में देवत्व .....

14. कुंदन बन दिखलाओ :-

सौंपी है यदि बागडोर तो, कठपुतली बन जाओ,
खोला श्रेय का द्वार साथियों, जीवन सफल बनाओ।
जन्म लिया है भागीरथ ने, जग का ताप मिटाने,
युगों-युगों की परम्परा को, फिर से आज निभाने,
भटक रही है आज मनुजता, उसको राह दिखाने,
भूल गये जो अपना पौरुष, उसको पुनः जगाने।
पथ दिखलाकर बाँग लगाई, तन्द्रा से उठ जाओ।खुला श्रेय का द्वार.....

15. महायज्ञ की पूर्णाहुति :-

महायज्ञ की पूर्णाहुति में, मिल जुल हाथ बँटाएं,
महाकाल के आवाहन पर, जीवन सफल बनाएं,
समय हुआ विपरीत, विषमता और शत्रुता छाई,
व्यक्ति और परिवार दुखी है, मानवता अकुलाई,
दैवी अनुकम्पा का भी तो, आश्रय सदा मिला है,
फिर मानव होकर निराश क्यों? पौरूष भुला दिया है
समय यही है अनुपम इसमें श्रद्धा-सुमन चढ़ाएं। महाकाल के आवाहन पर .....

..

16. आश्रम एक महान है :-

अभिनव संरचना का अनुपम, आश्रम एक महान है,
रहते यहाँ स्वयं सेवक सब, आदर्शो की खान है।
निजी स्वार्थ की नहीं महत्ता, पंचशील अपनाते है,
श्रम से प्यार सभी को दिल से, सुव्यवस्था दिखलाते हैं।
करते मिलजुल काम सभी ही, उसमें ही रम जाते हैं,
आपस का व्यवहार मधुर रहे शिष्ट सभी कहलाते है।
रहन-सहन व खानपान में, मितव्ययिता ही शान है रहते यहाँ स्वयंसेवक .....
देव संस्कृति की संरचना के सांचे कहलाते हैं,
करें अनुकरण अन्य हमारा यह आदर्श निभाते हैं।
वेतनभोगी नहीं यहां पर सेवा भावी लोग यहाँ,
रहते है परिवार सहित पर वानप्रस्थ की रीति जहाँ ।
योगदान करती महिलायें इससे सबका मान है। रहते यहां स्वयं सेवक .....

17. सहस्रबाहु बन जाओ :-

नवयुग का निर्माण हो रहा, प्रज्ञा के संग आओ
महाकाल के आवाहन पर, जरा हाथ बन जाओ।
घूम रहा यह सृष्टि-चक्र है, कभी नहीं रूक पाता,
इतिहास स्वयं दुहराता है, कभी नहीं झुठलाता।
संचालक की गतिविधियों में जीवन धन्य बनाओ। महाकाल के आवाहन .....
प्रकृति संतुलन बिगड़ रहा है लोक चेतना सोई
महायुद्व की ढेर लगा रही, मानवता है खोई
समाधान अध्यात्म करेगा, सहयोगी बन जाओ। महाकाल के आवाहन पर .....
युग की करूण व्यथा को सुनकर, यगु प्रहरी है आया,
तम की महानिशा में जलकर, नव प्रकाश फैलाया
बनो वंशधर युग प्रहरी के, तेल बाति बन जाओ। महाकाल के आवाहन पर .....

श्री जितेन्द्र रघुवंशी ने देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान के अन्तर्गत सम्पन्न हुए अश्वमेध यज्ञों के शंखनाद हेतु भी गीत लिखे हैं।

देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के शुभारम्भ का प्रथम शंखनाद था- जयपुर अश्वमेध यज्ञ। इस हेतु कवि के उद्गार इस गीत में अवलोकनार्थ प्रस्तुत है-

अश्वमेध की ध्वजा उठाओ, आज सुअवसर आया है।
महाकाल ने राजस्थानी वीरों तुम्हें बुलाया है।।
गोदावरी 'कामखेड़ा' पर महावीर की छाया में,
पुनः 'रंगबाडी का मन्दिर', शौर्य जगाने काया में,
पवन पुत्र को श्रीराम ने फिर से आज जगाया है। महाकाल ने राजस्थानी .....×××
'देवी माता इन्दरगढ़' की, वीरों ने थे शीश दिए,
पहुंचे थे गुरुवर पर्वत में, पशुबलि जाकर बंद किए,
मानव में देवत्व जगाते, रणथम्भौर बनाया है। महाकाल ने .....× × ×
पाश्चात्य संस्कृति को भारत से हम आज भगायेंगे,
अपनी देव संस्कृति का ध्वजा हम दुनियाँ में फहरायेंगे,
परम पूज्य गुरुदेव और माँ ने आँचल फैलाया है। महाकाल ने.....

("राजस्थानी सपूतों से" शीर्षक से)

2. वर्ष 1994 में सम्पन्न हुए चित्रकूट अश्वमेध यज्ञ हेतु कवि की रचना अवलोकनीय है-

सुनो हो रहा चित्रकूट में अश्वमेध फलदाई।
जीवन सफ़ल बनाने आओ-अवसर है सुखदाई।।
तीर्थराज की पावन महिमा, रेवांचल की स्वरलहरी,
गुंजा रहे है आज चतुर्दिश, विन्ध्य क्षेत्र के युग प्रहरी।
चलो संवारे उस गरिमा को, गुरु ने राह दिखाई।। जीवन सफल बनाने.....
सोन, नर्मदा आज सुनायें पावन तीर्थ कहानी।
कहें अमरकण्टक की धरती ऋषियों की शुभवाणी।
चलो सजायें पुनः धरा को, राम-दूत बन भाई। जीवन सफल .....
धन्यभूमि वह जहाँ राम वन, रघुवर का गुणगान करे,
मैहर में रह मातु शारदा, वीरों में उल्लास भरें।
आल्हा-ऊदल की प्रतिभा का- वरण करें तरुणाई।। जीवन सफल .....
छत्रसाल का शौर्य पुकारे मातृभूमि के वीरों को
बुला रहे है प्राणनाथ प्रभु, फिर तेजस्वी हीरों को।
उठो रामराजा के वंशज, मानवता अकुलाई।। जीवन सफल .....
कालिंजर का दुर्ग अभी भी गौरव भान कराता ,
झाँसी की रानी के पूतो-नवयुग तुम्हें बुलाता।
नवयुग के आजाद कहाँ हो? माँ ने टेर लगाई।। जीवन सफल .....

श्री जितेन्द्र रघुवंशी ने पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा जी की प्रेरणा

से सामयिक गीत लिखे जो अलवर से प्रकाशित 'सतयुग की वापसी' (मासिक) में भी प्रकाशित हो रहे हैं।

आचार्य शर्मा के जीवन-दर्शन की आलोच्य काव्य में अभिव्यक्ति -

(1) युग परिवर्तन के प्रयास -

युग परिवर्तन के इस क्षण में, दिव्य शक्ति के संरक्षण में।
करें प्रतिज्ञा हम सब मिलकर, स्वर्ग उतारें इस धरती पर।।
सबमें सृजन शक्ति तू भर दे। माँ तू हम सबको शुभ कर दे।।

(2) तपोमय जीवन -

भौतिकता की चकाचौंध से, गहकर बाँह उठाया,
नरपामर, नरपशु से ऊपर नरमानव तक लाया।
गला-तपाकर अपना जीवन प्रेरक पथ दिखलाया
मानव में देवत्व जगाने का संदेशा लाया।
सरंजाम तो जुटा हुआ है, कारीगर बन जाओ।
खुला श्रेय का द्वार साथियो! जीवन सफल बनाओ।

(3) योगसाधना-सूक्ष्मीकरण साधना -

सूक्ष्मीकरण साधना युग के, युग दृष्टा की पूर्ण हुई,
वातावरण समर्थ बनाया, प्रकृति वहीं अनुकूल हुई,
बने देवमानव हर जन, कुण्डलिनी शक्ति जगाएं,
पहचाने अपनी गरिमा को, महापुरुष बन जाएं।।
मिलता अवसर किसी-किसी को, समय न व्यर्थ गंवाएं।।

(4) युग तीर्थ-शांतिकुंज की स्थापना -

समतावादी नीति यहाँ की, वर्ग विहीन समाज यहाँ,
आदर्शो के लिए समर्पित, मर्यादित समुदाय जहाँ,
औसत भारतीय स्वर का, करते सब निर्वाह यहाँ
सेवा ही है लक्ष्य सभी का, आपाधापी नहीं जहाँ,
सद्भाव भरा व्यवहार सभी का, साहस ही तो जान है,
अभिनव संरचना का अनुपम, आश्रम एक महान है।

(5) युग संधि महापुरश्चरण -

युग सन्धि का समय अनौखा, लोभ मोह को छोड़ो,
सत्याग्रही, रीछ-वानर बन, श्रेय सुअवसर जोड़ो,
जाग्रत आत्मा बनकर संग में, सहस्रबाहु बन जाओ।
महाकाल के आवाहन पर जरा हाथ बन जाओ।।

भाव संवेदना-विस्तार-

समिधा की तरह जले हैं, पीड़ा हरने जनता की,
रोतों के आँसू पौछें, बाँटी सुगन्ध ममता की,
तुम भी ऐसी करना पुत्रो! जग की पीड़ा को हर लेना,
हमने दायित्व निभाया है, तुम निज कर्तव्य समझ लेना।।

आत्माशक्ति से युग शक्ति का अवतरण -

कौन कहेगा ? आत्म शक्ति से, आए हाथ बँटाने को,
युग पुकार को सुन अब जाते, दानव से टकराने को।
तन-मन-धन सब अर्पण करके स्वर्ग धरा में लाने को,
अवतरित हो चुकी 'युग शक्ति' यह, संदेशा पहुँचाने को।।

गायत्री परिवार की स्थापना -

स्वार्थ छोड़ परमार्थी होता, इसका हर अनुयायी है,
भटकों को वह राह बताता, दु:खियों को सुखदायी है,
नहीं रूढ़ियाँ विचलित करतीं, कुप्रथाओं से लड़ता है,
बने देव अब हर नर-नारी, यत्न यही वह करता है।
दिन रात देखता स्वप्न एक ही, केवल युग निर्माण की,
जिसने बदली युग की धारा, गति मोड़ी इंसान की।।

युग निर्माण योजना -

आओ लोगों तुम्हें दिखायें, झाँकी युग निर्माण की,
जिसने बदली युग की धारा, गति मोड़ी इंसान की।

आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित होकर युग निर्माण कवि श्री जितेन्द्र रघुवंशी के आलेख जो युग दर्पण शीर्षक से प्रज्ञा अभियान से सम्बद्ध न्यूज एण्ड फीचर सर्विस के तत्वावधान में प्रकाशित हुए तथा इन्हीं विषयों पर श्री जितेन्द्र रघुवंशी ने कविताएं भी लिखी, उनके शीर्षक अवलोकनीय हैं-

1. कथा एक मानव की, कथा एक दानव की
2. पारिवारिकता को महत्व न देना मनुष्यता के लिए घातक
3. बच्चों के प्रति एक आंख प्यार की दूसरी सुधार की
4. पारिवारिकता की सच्ची उपलब्धि प्राणवान प्रतिभाएं
5. पारिवारिकता के विकास के अक्षुण्ण सुख-शांति की प्राप्ति
6. बच्ची के विवाह की चिन्ता से ऐसे मुक्त हों
7. मृतक भोज जो जीवितों को खाता है

8. विवेक की कसौटी पर मृतक भोज
9. मृतक भोज खाकर लोक-परलोक न बिगाड़े
10. पारिवारिक प्रसन्नता का आधार-परस्पर सहयोग
11. सुधारवादी समझदारी दिखायें दिवालिया न हों
12. आदर्श परिवार ही सुसंस्कृत समाज की आधारशिला
13. पाठशाला, प्रयोगशाल एवं महामानवों की टकसाल है-परिवार
14. नारी उत्थान से विश्व में अमन-चैन संभव
15. जननी ही नहीं, मातृत्व का भी गौरव पाएं
16. भारतीय नारी के लिए दोनों अतियां घातक- स्वछन्दता और मूढ़ मान्यता
17. वरिष्ठता में पुरुष आगे है या नारी ?
18. समर्पण एवं सहयोग में छिपा है- वैवाहिक जीवन का आनन्द
19. भौतिक संसाधन में विलीन होता वैवाहिक का आनन्द
20. माँ के स्वरूप को इस तरह न बिगाड़े
21. नारी की स्वतंत्रता पर प्रश्न चिन्ह न लगाएं
22. नारी स्वरक्षित क्यों नहीं है?
23. नारी मानवीय गुणों की साकार प्रतिमा
24. क्या नारी बड़प्पन की अधिकारिणी नहीं है ?
25. नारी स्वयं भी अपनी गरिमा को पहचाने

उपर्युक्त विषयों पर श्री 'रघुवंशी' के विचार एवं एवं कविताएं अलवर से प्रकाशित "सतयुग की वापसी" (मासिक) में प्रकाशित हुए। साथ ही इसके पूर्व आपके लेख आलेख भी इन विषयों पर 'शान्तिकुंज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस' के तत्वावधान में "प्रज्ञा अभियान" से सम्बद्ध होकर राष्ट्र भर के प्रमुख समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुए।

मूल्यांकन - श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि- "कविता अब कान से सुनने की चीज न रहकर आँख से पढ़ने की चीज बन गई है। काव्यगत झंकार से पाठक अब भुलाने से नहीं आता; वह आँख से पढ़ने के बाद कविता में सार खोजता है। वह आवेग कम्पित कम होता है, बुद्धिचालित अधिक। ग्राहक इन्द्रिय के परिवर्तन के साथ ही आस्वाद्य वस्तु में भी परिवर्तन हुआ है। जो कवित्व मनुष्य को घुमा फिरा कर जहाँ का तहाँ छोड़ देता है उसमें गति तो है लेकिन प्राण नहीं है।"

---

1. डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी- साहित्य का मर्म, पृष्ठ 5

श्री रघुवंशी ने युग की आवश्यकता को पहचान कर शान्ति के मसीहा, प्रेम के पुजारी और अहिंसा के दूत बनकर जग को अमृत बाँटा है तो दूसरी ओर एक दार्शनिक की भूमिका में वह जीवन को एक गतिशील पथ की संज्ञा देकर उसके पथिक 'मानव' के लिए पाथेय जुटाने के प्रयास में निरत है।

कविवर श्री जितेन्द्र रघुवंशी नवनिर्माण-युग निर्माण की बात कहकर पानी में दीवार उठाना नहीं चाहते, वह उसके मूलाधार 'श्रम एवं जयते' का नारा बुलन्द कर मनुष्य को आलस्य, जड़ता और निद्रा का त्याग कर न केवल कर्म करने की प्रेरणा देते है, प्रत्युत श्रम करने के लिए वह देश के हर नागरिक तथा कृषकों और श्रमिकों का आह्वान भी अपनी रचनाओं के माध्यम से करते हैं।

इस प्रकार उनका आलोच्य काव्य संकलन 'वसन्त प्रेरणांजलि' एवं अपनी प्रकाशित रचनाओं के माध्यम से कवि ने मानव को जीवन-पथ पर सदा अग्रसर होने का संदेश दिया है। कवि की उस परम सत्ता एवं अपने सद्गुरु (आचार्य श्रीराम शर्मा) में परम आस्था हैं। उनके हृदय में वह विशालता है जो समस्त मानव जाति को अपने कविता कलेवर में समेट लेना चाहती है। श्री रघुवंशी का सौभाग्य है कि उनके पास पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा की लेखनी से निःसृत अमूल्य धरोहर का भाण्डागार भी सुरक्षित है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि श्री 'रघुवंशी' का काव्य सृजन एवं उनके गीत सुकुमार भावनाओं से ओतप्रोत सौन्दर्यानुभूति एवं कला सौष्ठव से परिपूर्ण हैं। ये गीत प्रीति के रस से भी आप्लावित है। इनमें जीवन के प्रति पूर्ण निष्ठा और हृदय की सच्चाई भरी हुई है। हिन्दी साहित्य को इस उदीयमान कवि से अभी बहुत कुछ आशाएँ हैं।

डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया-

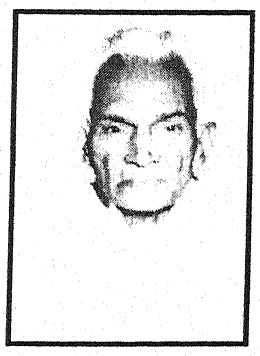

कवि परिचय- डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया 'जमुना' के नाम की सार्थकता में साम्य है। शान्ति का दूसरा नाम जमुना, यानी यमुना। गंगा चंचल है, यमुना शान्त है यह किंवदंती है। साधु पुरुष श्री बड़ैरिया का जन्म ग्राम उचाढ़ जिला दतिया में प्रसिद्ध समाजसेवी श्रीजगन्नाथ प्रसाद बड़ैरिया के घर 15 नवम्बर 1931 को हुआ था। वर्ष 1931 से ही आपके पिताजी, उचाढ़ से डबरा आ गए और वहाँ वह एक सफल समाजसेवी व्यवसायी के रूप में वह प्रतिष्ठित रहे। डबरा में ही श्री जमुना प्रसाद जी की शिक्षा-दीक्षा प्रारम्भ हुई। उनका मन व्यवसाय में नहीं लगा, तो वे साहित्य के कर्मयोगी की तरह एक नये कल्पना लोक में खो गये।

श्री बड़ैरिया की शिक्षा का क्रम एक प्रकार से पारिवारिक स्थिति के कारण छिन्न-भिन्न रहा, पर आपने अथक परिश्रम से एम0ए हिन्दी तक की शिक्षा अच्छे अंकों में उत्तीर्ण की। साथ ही पी-एच0डी0 की उपाधि भी अपने आचार्य गुरुवर डा0 रामाधार शर्मा के निर्देशन में प्राप्त की। स्व0 रामाधार शर्मा जो आचार्य श्रीराम शर्मा के शिष्य परम्परा में थे। उन्होने अपना समस्त जीवन शैक्षणिक कार्य में लगाया एवं उत्कृष्ट शोधकार्य करवाए। श्री शर्मा एक ईमानदारी, भक्त व कर्तव्य निष्ठ महामानव थे। श्री बड़ैरिया जी के अनुज श्री द्वारिका प्रसाद चैतन्य शासकीय सेवा को त्यागकर गायत्री तपोभूमि, मथुरा में विगत 32 वर्षो से समाज, संस्कृति एवं राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। श्री चैतन्य जी का 'युग निर्माण योजना' पत्रिका के सम्पादन के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान हैं। श्री चैतन्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी भी उनके युग निर्माण योजना तथा समाज सेवा कार्य में सदैव निस्पृहता से हाथ बँटाती हैं। श्री जमुना प्रसाद जी की समाज सेवा का आदर्श अप्रतिम है। एक शिक्षक की गरिमा का श्री बड़ैरिया जी ने अपने जीवन में अक्षर-अक्षर पालन किया।

श्री बड़ैरिया जी शोधकर्ता को लिखे अपने पत्र में लिखते हैं - "यह मेरा सौभाग्य रहा कि पत्नी मुझे ऐसी 'देवी' मिली जिसने सारे जीवन भर मेरे साथ अभावों का, दुखों का जीवन जीते हुए भी सदैव मेरा साथ दिया। उसके निस्पृह सहयोग के कारण ही मैं वर्ष 1944 में हिन्दी मिडिल करने के बाद वर्ष 1973 तक एम.ए. तक की अपनी शिक्षा पूर्ण कर पाया तथा वर्ष 1982 में मैंने पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।" वर्ष 1973 से

1991 तक शासकीय सेवा में प्राध्यापक के पद पर इन्होने सेवा कार्य किया। यह सब उनकी धर्मपत्नी के सहयोग के कारण ही संभव हो सका। डा0 बड़ैरिया लिखते हैं कि संतान, मकान, आभूषण किसी भी प्रकार की सुख सुविधा मै अपनी धर्म पत्नी को नहीं दे सका। अन्त में आठ फरवरी 2004 को वह स्वर्गवासिनी हो गयी।

व्यक्तित्व – हिन्दी साहित्य का यह मौन कर्मयोगी जीवन जगत में 'सहयेाग' का पावन आधार स्तम्भ है। आज भी यह किंवदंती सार्थक है कि बढ़ते हुए शिक्षक छात्र-छात्राओं को आर्थिक सहायता देना, पुस्तकें उपलब्ध कराना, अध्ययन में रूचि पैदा करना उनका एक असाधरण मानवीय स्वभाव बन गया है। श्री बड़ैरिया का सहज उत्तरदायित्व साहित्य साधना में रत व्यक्तित्व की कृति के प्रकाशन में सहयोग देना है। वर्ष 1973 में प्राध्यापकीय जीवन में प्रवेश उनके लिए वरदान सिद्ध हुआ।

श्री बड़ैरिया जी के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके कृतिव पर है। वे सत्य कहने में जरा भी नहीं हिचकते, भले ही थोड़ी देर की बुराई हो, पर सत्य कटु होता है, को भली-भांति जानते हुए, वे अपनी बात कह दी देते हैं। उनकी काव्यगत रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना "सत्य" के रूप में ही उभरी है। सत्य का बीज उनके मन मस्तिष्क की स्थायी कुंजी है। श्री बड़ैरिया जी ने यह स्वीकार किया कि "आधुनिक जीवन खंड-खंड हो रहा है।" उनका प्रयास था कि खंड-खंड जीवन को जोड़कर समग्र किया जाय। पग-पग पर जो समस्याएं है, चुनौतियां है, उन्हें नई स्थितियों में ढाला जाय। जीवन परिवर्तनशील है। श्री बड़ैरिया जी इस परिवर्तन को ईमानदारी के स्वीकार करते हैं, पर अपनी सादगी में परिवर्तन नहीं करते। यह उनका अपना व्यावहारिक दृष्टिकोण है।

उपाधि एवं सम्मान- साहित्य में राष्ट्रीयता की खोज डा0 बड़ैरिया के मन में भावनात्मक एकता के रूप में सामने आई। यही कारण है कि महान कवि "श्री जयशंकर प्रसाद के नाटकों का राष्ट्रीय दृष्टि से अनुशीलन" विषय पर आपने शोधकार्य पूर्ण कर वर्ष 1982 में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि प्राप्त की। प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीय जीवन को खोजने का प्रयास उन्होने अपने इस शोधकार्य के माध्यम से पूर्ण किया। 29 सितम्बर 2004 को शास्त्री भवन नईदिल्ली में इसी शोधकृति पर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा 5500 रूपये का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

2. ग्वालियर चम्बल सम्भाव की मुरैना साहित्य सभा द्वारा आयोजित काव्य

प्रतियोगिता में आपको प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा 'मैथिलीशरण गुप्त काव्य प्रतियोगिता' में आपको द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

3. राष्ट्रीय एकता का द्वितीय पुरस्कार 10,000 रूपये (संयुक्त रूप से) आपको अपनी शोधकृति 'श्री जयशंकर प्रसाद के नाटकों का राष्ट्रीय दृष्टि से अनुशीलन पर प्राप्त हुआ।

साहित्यकारों से सम्पर्क-

श्री राधाबल्लभ शर्मा, प्रो0 एवं अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग रा0क0क0स्व0महावि0 ग्वालियर, आचार्य राधारमण दास, कुलपति जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, डा0 रामकृष्ण गुप्त, सहा.प्राध्यापक एवं सम्पादक 'शोध यात्रा' जे.सी.कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर, डा. जी.एस.दातार, डा. गंगा सहाय 'प्रेमी', डा0 रामाधार शर्मा, डा. महेन्द्र भटनागर, डा0 कान्तिकुमार जैन, श्री सीताराम जी धूसर एवं युग निर्माण मिशन के मूर्धन्य कवियों तथा साहित्यकारों से आपका सतत् सम्पर्क रहा।

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन के प्रभाव विषयक साक्ष्य :-

श्री बड़ैरिया को आचार्य श्रीराम शर्मा जी के प्रथम दर्शन वर्ष 1951 की जन्माष्टमी पर्व पर मथुरा में हुए। इसके पूर्व वर्ष 1944 से ही वह 'अखण्ड ज्योति' के पाठक थे। वर्ष 1953 में गायत्री तपोभूमि, मथुरा की स्थापना हो चुकी थी। उसकी प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम में कवि पुनः मथुरा गये। जून 1954 में आचार्य शर्मा द्वारा आयोजित प्रथम 'सरस्वती शिविर' में भी आपने प्रतिभाग किया। वहाँ कोटा के प्रसिद्ध विद्वान *डा0 रामचरण महेन्द्र* जो कि वर्ष 1956 तक 'अखण्ड ज्योति' के सहायक सम्पादक रहे, से इनकी भेंट हुई। उन्होने उनकी डायरी आदि देखकर काव्य क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु इन्हें प्रोत्साहित किया। इस प्रकार वे पूज्य आचार्य जी के व्यक्तिव, कृतित्व एवं जीवन दर्शन से प्रभावित होकर काव्य रचनाएं करने लगे।

श्री जमुना प्रसाद जी की श्रद्धा वर्ष 1984 से आचार्य शर्मा के प्रति और भी अधिक प्रगाढ़ हुई जब उनके जीवन में एक चमत्कारिक घटना घटित हुई। शान्तिकुंज से वापस लौटने पर आचार्य जी ने इन्हें मना किया कि रात्रि में मत जाना। प्रातः दिल्ली होकर जब वह मथुरा पहुँचे तो पता चला कि रात्रि वाली बस बहुत भयंकर रूप से दुर्घटनाग्रस्त हो गई। उस दिन पूज्य आचार्य जी की कृपा से ही उनके प्राण बचे। उनका मानना है कि आचार्य शर्मा की अतीन्द्रिय क्षमताओं का अन्त नहीं है।

एक बार के प्रसंग में आचार्य शर्मा ने कहा था "तुम्हारी आँखें

आज देख रही हैं-मेरी आँखें पच्चीस वर्ष बाद के समय को देख रही हैं। देखना- बृजमण्डल का यह (गायत्री तपोभूमि, मथुरा स्थल) श्रेष्ठ दर्शनीय स्थल होगा।"1 उनकी वाणी सत्य हुई इसलिए तो उन्हें 'युग दृष्टा' कहते हैं। आचार्य शर्मा जी की सादगी एवं सरलता को देखकर श्री जमुना प्रसाद जी अत्यन्त प्रभावित हुए। वह यह मानते हैं कि आत्मीयता का स्नेह पूर्ण व्यवहार आचार्य शर्मा जैसा अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

काव्य यात्रा- ग्वालियर की गौरव स्वर्गीया श्रीमती माया वर्मा की प्रेरणा से भी श्री जमुना दास जी ने युग निर्माण मिशन के लिए कविताएं लिखी। जो विभिन्न मासिक, साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं। 'दैनिक आचरण', 'आज', 'नवभारत टाइम्स' आदि पत्रों में भी आपके आलेख प्रकाशित हुए। इसके पश्चात आलेख लेखन के स्थान पर आप छोटी-छोटी कविताएं लिख रहे हैं। श्री बड़ैरिया का मानना है कि "अहंकार त्याग कर व्यक्ति को अपने मन को निर्मल बनाना चाहिए। अन्यथा हर क्षेत्र में वह असफल ही रहेगा। कोई कितना ही बडा तपस्वी, सिद्ध, विद्वान क्यों न बन जाए पर अहंकार का रंचमात्र भी प्रवेश होने से उसका पतन सुनिश्चित है। जो समस्याएं हैं, चुनौतियाँ हैं उन्हें नयी स्थितियों में ढाला जाय।"2 जीवन परिवर्तनशील है। डा0 बड़ैरिया जी इस परिवर्तन का ईमानदारी से स्वीकार करते हैं, पर अपनी सादगी में परिवर्तन नहीं करते, यह उनका अपना व्यावहारिक दृष्टिकोण है।

कृतित्व :- डा0 बड़ैरिया के द्वारा सम्पन्न किये गये शोधकार्य एवं उनकी प्रमुख रचनाओं का विवरण अवलोकनीय है-

1. "श्री जयशंकर प्रसाद के नाटकों का राष्ट्रीय दृष्टि से अनुशीलन"

यह शोधग्रंथ श्री बड़ैरिया का मौलिक एवं महत्वपूर्ण शोधकार्य है। जिसे उन्होने अपने कई वर्षो के गहन अध्ययन से प्रसाद जी के नाटकों का चिंतन-मनन करके अपने विद्वान निर्देशक स्व.डा0रामाधार शर्मा जी के निर्देशन में प्रस्तुत किया था। यह वस्तुतः पठनीय है और समस्त भारतीय समाज के लिए उपयोगी है।

इस ग्रंथ में शोधकर्ता ने स्पष्ट किया है कि धर्म, भाषा, प्रदेश आदि के नाम पर अलगाव की भावना को दूर करना आवश्यक है। हममें से संकीर्णता की भावना दूर होनी चाहिए। श्री बड़ैरिया के निष्कर्ष सर्वथा नए, अभूतपूर्व तथा मौलिक हैं। ग्रंथ पर पर्याप्त परिश्रम कर सर्वथा नई और मौलिक

1. डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया- मेरी डायरी के पृष्ठ, पृष्ठ 9-10
2. डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया- श्री जयशंकर प्रसाद के नाटकों का राष्ट्रीय दृष्टि से अनुशीलन, पृ.13

दृष्टि से समग्र 'प्रसाद' सहित्य को अनुशीलित किया गया है। निश्चय ही आलोचना जगत में इस शोध ग्रंथ का समुचित सम्मान होगा।

श्री बड़ैरिया जी की इस शोधग्रंथ में वर्णित पंक्तियाँ अवलोकनीय है-

"कामायनी के मनु-प्रसाद का-जीवन मूर्तिमान संघर्ष,
श्रेष्ठ नाटकों में दिखलाया, प्राच्य राष्ट्र का ही उत्कर्ष।।
देश भक्ति की प्रबल भावना, प्रेरक बन करती उद्घोष।
प्रगति-पथ पर बढ़े चलो तुम, करके सदा राष्ट्र-जयघोष।।"

2. श्री बड़ैरिया जी की युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि से प्रकाशित काव्य संकलन 'जागो प्रहरी', 'युग संदेश' एवं 'उद्बोधन' में प्रकाशित प्रमुख रचनाओं के सारगर्भित अंश अवलोकनीय हैं-

1. आनन्द का निर्माण -

"आनन्द का निर्माण कर लो, जिन्दगी में उठो! नव जीवन जगाओ।
चतुर्दिक नवचेतना का श्रेष्ठ वातावरण बनाओ।।
धोखा न दो, मत झूठ बोलो, षडयंत्र रचकर मत ठगो तुम।
तुच्छ, छोटा, पतित बनकर, मत कमीना ही बनो तुम।।
स्वयं की शक्ति भले तुम नष्ट कर लो,
अन्य का अनहित नहीं वश में तुम्हारे।
अनिष्ट निश्चित ही तुम्हारा, निज दुर्गुणों के सहारे।।
ईमान पर कायम रहो, उचित साधन से प्रगति अपनी करो।
शक्तिशाली बनकर जगत में, सुख शांति का जीवन वरो।।
मत बनो असहाय, दुर्बल, अभागे, पुरुषार्थ से आगे बढ़ो।
विश्व-'बेचारा' न कह पाए तुम्हें, संघर्ष कर गौरव गढ़ो।।
जीवित रहे यदि लाश बनकर, यह जिन्दगी है खाक बदतर।
जिन्दा दिली से चंद घंटे भी जिए, मुर्दा दिली से लाख बेहतर।।

2. मन को जीत लिया है जिसने, सारा जग ही जीत लिया -

मन को जीत लिया है जिसने, सारा जग ही जीत लिया।
प्रबल शत्रु है मन यह अपना, किन्तु इसे वश अगर किया।।
वश में रहने वाला यह मन, बन जाता है मित्र घनिष्ट।
संयम में मन रहने वाला, नहीं करेगा कभी अनिष्ट।।
मानव का जीवन है जैसा, मन उसके अनुकूल बनेगा।
जीवन पतित रहा तो मन भी, जीवन में प्रतिकूल चलेगा।।
पापी का मन भी उसकी, दुर्गति खूब कराता है।

कठपुतली मानव बन जाता, मन ही नाच नचाता है।।
मन चंचल, उद्दण्ड, अशांत है, बिना कार्य के वह शैतान ।
मन पर तीव्र नियंत्रण रखकर, सत्कर्मो पर रखिए ध्यान।।
प्रवल वासना जब भटकावे, स्थिर-चित्त कर बुद्धि जगाओ।
मन के कार्यो के दृष्टा बन, उसे शीघ्र संयम में लाओ।।

3. कर्म के बीज विचार -

जगत-पिता-प्रभु बड़े न्याय प्रिय, सब पर दया करें भगवान।
संकीर्ण-स्वार्थ-सीमा बंधन का, नहीं रखा कोई स्थान।।
कोई रहे दरिद्र दुःखी, प्रभु को कभी नहीं स्वीकार।
संकीर्ण-स्वार्थ से मन जब दूषित, करता खोटै कुटिल विचार।।
बुद्धि भेद है, भाग्य फिर गया, लिखी गरीबी ही जीवन में।
सदा दुःखी वे बने रहेंगे, जिनका चिंतन ऐसा मन में।।
अपने विचार ही बीज कर्म के, कर्मो से ही मिलता सुख-दुःख।
चिन्तन श्रेष्ठ, कर्म यदि उत्तम, तो सौभाग्य सदा ही सम्मुख ।।

4. तपस्यामय जीवन बनाइए -

धातु-खण्ड, घर्षण-रगड़ सह, तपता फिर अंगार में।
दिव्य सुन्दर रूप पाता, पुजता सदा संसार में।।
प्रकृति का है नियम यह तो, संघर्ष से मिलती सफलता,
डरता रहा कठिनाईयों से-भाग्य में उसके विफलता।।
इस जग में जिसने जो पाया, तप करके ही पाया,
जितना कष्ट सहा जीवन में, नही निखर कर जग में आया।।
मूलतत्व तप का यह केवल, कष्ट में भी मुस्कराओ।
साहसी बन, प्रतिकूलता में भी, पग निरन्तर तुम बढ़ाओ।।

5. सारी दुनिया वैसी, जैसा मन है हमारा-

जैसा मन वैसा ही तन है, जैसा तन वैसा ही मन है।
क्रिया-प्रतिक्रिया का क्रम चलता, वैसा ही बनता जीवन है।।
तन में पीड़ा जब होती है, मन भी हो जाता है क्लान्त।
मन का दुःख तन पीड़ित करता, तथ्य सत्य है पूर्ण नितान्त।।
जग की गतिविधि का होता है, मन के द्वारा ही निर्माण।
यह अकाट्य वेदान्त सत्य है, नहीं किसी का इससे त्राण।। × × ×
ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ-अनल में, जलना अपने हाथ हमारे।
कंटक मय जीवन अपनायें, ये सब मन के मात्र इशारे।।

अपने मन को निर्मल कर लें, सद्गुण से सम्मान बनाएं।
अन्तर्मन में शान्ति बसालें, तो सुख का भी जीवन पाएं।।

6. मन से भय की भावनाएं भगाइए -

भय तो उचित नहीं मानव को, डरना तो है उसकी हार।
प्रकृति चाहती नहीं जरा भी, मानव ढोए भय का भार।।
सब चिन्ताएं, भय, दु:ख तुमने, स्वयं जगाए अपने मन में।
मन को मरघट-सा कर डाला, प्रेत, पिशाच बसा जीवन में।।
हानि न कोई कर सकता है, बाल न बांका कर पाएगा।
निशंक, विवेकी निर्भय ही तो, सुख सौभाग्य जुटा पाएगा।।
भय से शंका मन में जगती, सदा डराती ही वह रहती।
मन-मंदिर से दूर करें भय, सुख-सरिता तब मन में बहती।।
यदि आनन्दित रहना है जग में, यह अनिवार्य बात है भाई,
भय की सभी कल्पना मेटो, जो मन में है रही समाई।।

7. पाषाण भी भगवान-

साधना कर-कर पुजारी साधना, एक प्रतिमा की सतत आराधना!
भावन पावन सुहावन भावना, याचना मत कर किसी की याचना!!
बंद कर ले नयन जग की ओर से- नियति मन में ज्योति का वरदान होता है।
भाव से पाषाण भी भगवान होता है।।
पंथ को मत देख अजमा निज चरण, क्योंकि गति जीवन, यहाँ यति ही मरण।
घूप तप ले छांह की मत ले शरण, स्वेद से नव-शक्ति हो संचरण।।
एक पग ही एक युग की है परिधि, चरण-रज से पंथ का निर्माण होता है।।भाव से...
तू अडिग रह और तू होगा अभय, तू सदय बन और तू होगा अजय।
हार से मत डर यही तेरी विजय, तू नियति को त्याग, कर ले कर्म क्रय।
काव्य की नवसृष्टि का आधार भी, सत्य, शिव, सुन्दर भरा मृदु गान होता है।
भाव से पाषाण भी..... (श्रद्धांजलि पृष्ठ 33)

8. क्या है युग निर्माण योजना-

तुमने मुझसे पूंछा साथी क्या है "युग-निर्माण योजना",
हम बतलायें आगत युग के नये सृजन की नवल कल्पना।।
स्वस्थ शरीर, समाज सभ्य, निर्मल मन की नवविमल कामना।
तब न रहेगा, यह अविवेक, अनाचारी सब हाथ मलेंगे।
हटने को अज्ञान तिमिर हम, स्वयं दीप बन सतत् जलेंगे।।
तब न स्वार्थी, मनुज किसी को, धोखा देकर कभी छलेंगे।

सुख की साँस भरेगा मानव, दर्द, दुख, भय, क्लेश टलेंगे।।
राह बनाने हेतु करेंगे, संघर्षो का सभी समाना। हम बतालायें .....
तब न छीन पाएगा कोई, 'दूध' दुधमुँहे शिशु के मुख से,
नहीं कर सकेंगे निर्बल को, पीड़ित, तब बलशाली दु:ख से।।
भष्टाचार, लोभ लिप्सायें में, सिमट भगेंगी अपने रूख से।
निर्ममता, आलस्य, काहिली, छोड़-रहेगा मानव सुख से।।
सहना नहीं पड़ेगा सज्जनता को फिर दु:ख दर्द यातना। हम बतलायें ...

(काव्य-कैलाश) पृ. 78

9. आत्म निर्माण -

अपना निर्माण करो पहले, जग का निर्माण स्वयं होगा।
हर फूल महकने लगा अगर, सुरभित उद्यान स्वयं होगा।।× × ×
सब ही यदि शिव-संकल्प हुए, साहस के सूत्र न स्वल्प हुए।
वृक्ष से होगी जो स्वर्ग-सृष्टि, स्रष्टा भगवान स्वयं होगा। अपना निर्माण करो.....
हर शब्द अगर उत्तम होगा, हर भाव भव्य उद्‌गम होगा।
जो धन्य बनेंगे इस तम से, अनुपम वह गान स्वयं होगा। अपना निर्माण करो ..

('जागो प्रहरी' पृ.103)

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएं

(1) राग-द्वेष सब अरे! मिटा दें

जितने कलुषित भाव हृदय के, मिलकर उनकी चिता जलादें।
अहं-तुष्टि, मैं-मेरापन त्यागें, राग-द्वेष सब अरे! मिटा दें।।
धन-पद-यश-प्रभुता पाने को, पर-श्रम, पर-अधिकार न हड़पें।
लाशों पर चढ़ आगे मत बढ़िए! कभी भूलकर अरे! न हड़पें।।
निज-श्रम से ही हम सब मिलकर, एक नया इतिहास बना दें। जितने कलुषित .....
जाति-धर्म-भाषा विवाद ने, हमको वर्गो में है बाँटा।
आरक्षण के टुकड़े देकर, भाई को भाई से काटा।।
क्षेत्रवाद के घातक विष को, आओ! मिल कर धता बता दें। जितने कलुषित .....
अधरों पर मुस्कान मधुर है, हृदय कुटिलता से है भारी।
सौम्य-सादगी स्वप्न हुए सब, शंकित-त्रस्त सभी नर-नारी।।
निर्मल मन, जन अपना करलें, दुर्भावों को दूर लगादें। जितने कलुषित .....

(युग निर्माण योजना, अक्टूबर 1998)

2. सृजन-शिल्पी! इन्द्रधनुषी, सात आंदोलन चलाओ-

सृजन-शिल्पी! इन्द्रधनुषी, सात आन्दोलन चलाओ।

एक गुरु के शिष्य हो तुम, अहं को अपने गलाओ।।
अहमन्यता, लोकेषणा को दूर मन से है भगाना।
स्नेह गुरु जैसा हृदय में, त्याग-सेवा है दिखाना।।
हो परस्पर प्रेम सब में, हृदय को निर्मल बनाओ। सृजन-शिल्पी .....
पर्यावरण दूषित हुआ, रोगी बने हैं आज मानव।
शुचिता तिरोहित हो गई है, बन रहे हैं सभी दानव।।
शील, संयम, सत्य-ऋजुजा-आचरण में अरे लाओ। सृजन शिल्पी.....
श्रद्धा बिना विश्वास के यज्ञ-जप-तप व्यर्थ है।
निष्काम सेवा-प्रेम-करुणा साधना का अर्थ है।।
कथनी-करनी एक हो बस, द्वैत मन का तुम मिटाओ। सृजन शिल्पी ..

('युग निर्माण योजना' दिसम्बर 2001)

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन की आलोच्य काव्य में अभिव्यक्ति

(1) संस्कार सामर्थ्य -

इच्छा; भाव, कल्पना जैसी और वासना अपनी होती।
अंग-प्रत्यंग हमारे तन के, बनते जाते संस्कार वश दुनियाँ होती।।
माता-पिता परिस्थिति, आयु, स्वास्थ्य, जन्म भिन्न-भिन्न तन।
अपने मन पर ही सब निर्भर , संस्कार वश जाते हैं सब बन।।
जो प्रसुप्त संस्कार हमारे, वाह्य जगत उनकी ही छाया।
जग अपने में बुरा न उत्तम, अन्तर्मन प्रतिकृति यह माया।।

(2) अचिन्तय चिंतन-अनुपयुक्त आचरण -

चिंतन जब दूषित हो जाता, होते रहते हैं दुष्कर्म
दुखी, विपन्न, दरिद्र हो जाते, मिटते जाने सब सत्कर्म।।
खेतों में जैसे उग आते, बिना उगाए खरपतवार।
गुप्त शक्ति, सामर्थ्य, आत्मबल, हरते मन के बुरे विचार।।

(3) मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है-

जैसे होते कर्म हमारे, भाग्य सदा वैसा ही बनता।
अपने ही खोटे कर्मो का फल, सदा भोगती रहती जनता।।
बुद्धि भेद है, भाग्य फिर गया, लिखी गरीबी है जीवन में।
सदा दु:खी वे बने रहेंगे, जिनका चिंतन ऐसा मन में।।

(4) कुरीति एवं दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन-

कुरीतियों के दास बनकर, पतित करते क्यों ये जीवन।
रूढ़ियां, पाखण्ड छोड़ो, पावन करो, तन और निज मन।।

मिथ्या प्रदर्शन और अपव्यय से बचो, सबको बचाओ।
दुष्प्रवृत्ति बढ़ रही है, भ्रष्ट जीवन कर रही है।
वासनाएं दासता की, संतप्त सबके कर रही है।।
शान्ति पाना चाहते हो, तो इन्हें जल्दी हटाओ।।

(5) विवाहोन्माद –

विवाहों में बने पागल, होलिका धन की जलाई।
नाक ऊँची ही रहे बस, फूंक दी श्रम की कमाई।।
होकर ऋणी घर बेच डाले, कंगाल! अब तो होश लाओ।

(6) जनजागरण –

व्यसन-वासना के गुलाम बन, जीवन भर ही तो हम भटके।
ग्रसित रहे संकीर्ण स्वार्थ में, अरे, आज भी तो हैं अटके।।
मुक्त दासता से होकर अब, जन-जागृति के गीत सुना दों।
जितने कलुषित भाव हृदय के, मिलकर उनकी चिता जला दो।।

(7) विश्व शान्ति –

जल-थल-नभ को दूषित करके, जग का अहित किया है कितना ?
सभ्य अधिक जितने हम होते, पर्यावरण प्रदूषित उतना।।
सुन्दर भविष्य बनाने फिर से, मानव को सत्पथ दिखला दें।
बैर-घृणा-ईर्ष्या के कंटक, आओ! मिलकर आज गला दें।।

मूल्यांकन

डा0 जमुना प्रसाद जी बड़ैरिया हिन्दी जगत के वरिष्ठ विद्वान, सुकवि, पूर्वप्राध्यापक एवं सजग अनुसंधानकर्ता हैं। डा0 बड़ैरिया की नई खोजें भी विचारणीय हैं। उन्होने जो नया संदेश दिया है, वह संजीवनी विद्या है। वह लिखते हैं-

"राष्ट्र के निवासी अकर्मण्यता से हटकर प्रबल कर्मानुष्ठान में प्रवृत्त रहते हुए राष्ट्र का विकास करें.....भारत का प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व समझे अपने को पूर्णतः राष्ट्र के उन्नति विषयक विचारों में लगा दे। सम्पूर्ण मानव समुदाय में एकता, समानता, सौहार्द्र, पारस्परिक सहयोग की पूर्ण भावना बढ़ती रहे, यही हमारी कामना है।"1

श्री बड़ैरिया ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देशवासियों को

1. डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया- श्री जयशंकर प्रसाद के नाटकों का राष्ट्रीय दृष्टि से अनुशीलन, पृ.6

उनके कर्तव्य बोध से अवगत कराया है और राष्ट्र में राष्ट्रीयता का जो क्षरण हो रहा है, इस जवलंत समस्या की ओर देशवासियों का ध्यान अपनी रचनाओं के माध्यम से आकृष्ट किया है। यह सत्य है कि राष्ट्र का मस्तिष्क उसका समाज ही होता है। राष्ट्र की सीमाएँ उसका कलेवर हैं तथा 'आत्मा' ही उसकी पूर्णता का अहसास दिलाती है। मनुष्य की परम्परागत मान्यताओं, आचार-विचार, अनुभवों ने मानव मूल्यों को साँस्कृतिक रूप से विकसित कर जीवन्त रखा है। डा0 बड़ैरिया जी के अनुभव तथा ज्ञान ने हिन्दी साहित्य को जो गति प्रदान की है, उसमें एक अनुशासन है, जो सहज एवं सरलता के रूप में दिखाई देती है।

डा0 आर.पी. कर्मयोगी

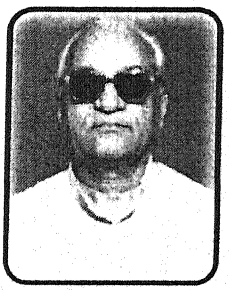

परम पूज्य गुरुदेव (आचार्य श्रीराम शर्मा) द्वारा स्थापित पावन तीर्थ शान्तिकुंज, हरिद्वार रूपी नक्षत्र मण्डल में दैदीप्यमान डा0 कर्मयोगी रूपी ध्रुवतारा का पूरा नाम डा0 रामप्रकाश 'कर्मयोगी' है। आपकी जन्म तिथि- 26 जुलाई 1932 तथा जन्म स्थान- ग्राम नदरोई जिला-अलीगढ़ (उ0प्र0) है। आपकी शिक्षा एम0ए0 (हिन्दी), डिप. भाषा विज्ञान, एम0एड0, पी0-एच0डी0 (शिक्षा) है।

व्यवसाय एवं सेवाए :-

डा0 कर्मयोगी मध्य प्रदेश शासन शिक्षा विभाग में प्राचार्य के पद पर रहे, कार्यकारी प्राध्यापक रहे, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद म0प्र0 (अंग्रेजी भाषा शिक्षण संस्थान) में उपप्रबन्धक तथा मध्य प्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम से सेवानिवृत्त हुए। वर्तमान में आप देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज, हरिद्वार में कुलसचिव के पद पर कार्यरत हैं।

साहित्य तथा अध्यात्म के संस्कार- डा0 कर्मयोगी प्रारम्भ से ही विश्लेषणात्मक बुद्धि रही फलस्वरूप लेखन के प्रति इनकी रूचि जागृत हुई। भाषा बोध बढ़ा और इन्होने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य प्रारम्भ कर दिया। भक्ति कालीन साहित्य में विद्यार्थी जीवन से ही आपकी रूचि थी। अध्यात्म के प्रति अभिरुचि भी बीज रूप में प्रारम्भ से ही विद्यमान थी। इसका प्रस्फुटन और विकास परम पूज्य आचार्य पं. श्रीराम शर्मा जी के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन और उनके लिखे साहित्य पठन से हुआ। डा0 कर्मयोगी कहते हैं कि "मुझे पूज्य आचार्य जी (आचार्य शर्मा) के अतिरिक्त और किसी ने प्रभावित नहीं किया।"

पुनर्जीवित करना।

(2) जीवन निर्माण का प्रेरणादायी साहित्य ही लोगों के व्यक्तित्व को ऊँचा उठा सकेगा।

(3) यज्ञ में समाहित शिक्षण को सार्वजनिक करके जनता को यह समझाया जाय कि यज्ञीय जीवन ही यथार्थ जीवन है।

(4) व्यक्ति को ऊँचा उठाने, श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए व्यक्ति को अपनी सोच बदलनी होगी।

(5) प्रबुद्ध वर्ग को पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा बताई गई विचार-क्रान्ति करनी पड़ेगी।"1

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन के प्रभाव विषयक साक्ष्य

डा0 कर्मयोगी का पूज्य आचार्य शर्मा जी से व्यक्तिगत परामर्श का क्रम वर्ष 1960 के दशक से प्रारम्भ हुआ। आप शान्तिकुंज, हरिद्वार में वर्ष 1970-71 से ही सम्पर्क में आ गए। अब यहीं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में कुलसचिव पद पर कार्यरत हैं। उनका मानना है कि पूज्य आचार्य शर्मा जी ने अध्यात्म को आकाश से नहीं अन्तस से जोड़ा है। इसे मन्दिर, मस्जिदों का विषय हीं, अपितु जीवन का विषय निरूपित किया। विचार और आचार को पूरा-पूरा महत्व दिया। यही दो आधार लोक और परलोक के साथी है।

डा0 कर्मयोगी पूज्य आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन के इन विन्दुओं अधिक प्रभावित हुए-

(1) अतीन्द्रिय क्षमताओं के विकास में पूजा-पाठ के साथ-साथ आडम्बर रहित सीधी-सरल जीवन शैली।

(2) जीवन में 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' का समावेश

(3) 'सत्संकल्प की दिशा धारा,' 'जीवन निर्माण के स्वर्णिम सूत्र' तथा 'ईश्वरीय न्याय' जैसी पुस्तकों ने डा0 कर्मयोगी के जीवन को नई दिशा दी। 'सभी समस्याओं का हल अध्यात्म' ने उनके अन्दर एक नयी सोच पैदा की।

(4) आचार्य जी का क्रान्तिधर्मी साहित्य किसी भी प्रबुद्ध वर्ग के व्यक्ति के जीवन को सार्थक मोड़ देने के लिए पर्याप्त है। बहुसंख्यक लोग ऐसे हैं जिन्होने पूज्य गुरुदेव (आचार्य शर्मा जी) और वन्दनीया माता जी (श्रीमती भगवती देवी शर्मा) से कभी साक्षात्कार नहीं किया, केवल उनका साहित्य पढ़कर ही अपने जीवन का दृष्टिकोण बदल लिया। भ्रष्टाचारी से सदाचारी बन

1. डा0 आर.पी. कर्मयोगी- महापूर्णाहुति स्मारिका, पृष्ठ 64

गए। जीवन में सादगी और सरलता डा. कर्मयोगी ने पूज्य आचार्य जी से ही सीखी। डा0 कर्मयोगी जी की प्रकाशित कृतियां अवलोकनीय हैं-

(1) ज्ञान-रश्मि :- (कविता संग्रह) ज्ञान रश्मि (दोहावली) का प्रकाशन युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा से हुआ। डा0 कर्मयोगी द्वारा लिखित समर्पण की पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं-

"मैंने ही क्या लिखा तुम्हीं ने, मुझसे यह लिखवाया,
शब्द तुम्हारे भाव तुम्हारे, मैने तो बस कलम चलाया।
मेरी क्षमता कहाँ कि लिख दूँ, तुमने ही उकसाया।
जो कुछ मुझमें विद्यमान है, तुमसे ही सब पाया।
हर दोहे का बोल तुम्हारा, तुमको ही अर्पित है,
नतमस्तक हो गुरुवर मेरे, तुमको करू समर्पित ।।

इस काव्य कृति के प्राक्कथन में डा0 प्रणव पण्ड्या लिखते हैं- "हमारी संस्कृति में सत्प्रेरणाएं देने वाले साहित्य की भरमार है एवं नीति उपदेशों, सुभाषित, पंचरत्न की कथाओं, प्रेरक दृष्टान्तों के रूप में हम जीवन के हर पक्ष को उनके द्वारा स्पर्श होता देख सकते हैं। प्रस्तुत पंक्तियां "ज्ञान-रश्मि" परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की सूक्ष्म प्रेरणा से ही देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा.आर.पी.कर्मयोगी द्वारा लिखी गई हैं। इस पुस्तिका में बड़े प्रेरक दोहे हैं। ये दोहे उसी प्रकार हैं, जिनके बारे में कहा गया है- "देखन में छोटे लगें, घाव करें गम्भीर।" कब कौन सी प्रेरणा छू जाए और उसके जीवन का कायाकल्प हो जाय, कहा नहीं जा सकता। बहुत ही सरल भाषा में खड़ी बोली में पन्द्रह शीर्षकों के अन्तर्गत नैतिक मूल्यों, जीवन जीने की कला, सद्गुणों की महिमा आदि विषयों को रुचिकर ढंग से पिरोया गया है। निश्चित ही इनका प्रभाव उन सभी पर पड़ेगा जो इन पर मनन-चिंतन करेंगे? बच्चों के लिए जो देवसंस्कृति के कार्य को जानना चाहते हैं, प्रगति के हर मोड़ पर मार्गदर्शन चाहते हैं ये दोहे बहुत उपयोगी होंगे। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि हर छात्र, किशोर-युवा एवं सामान्य जन इन प्रेरक सूत्रों को हृदयंगम कर अपने अन्दर की ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करें, सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा पाएं एवं जीवन को सही ढंग से जीना सीख सकें। ऐसा हो सका तो कवि का परिश्रम होगा। पूरे अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से कवि डा. कर्मयोगी को हार्दिक साधुवाद मंगल कामनाएं।"1

1. डा0 प्रणव पण्ड्या- ज्ञान-रश्मि, पृष्ठ 4

मंगल-कामना शीर्षक से श्री वीरेश्वर उपाध्याय शांतिकुंज, हरिद्वार की रचना अवलोकनीय है-

"नाम कर्मयोगी रहा, रहे कर्म में व्यस्त।
युगऋषि ने फिर कर दिया, सद्चिंतन में मस्त।।
कर्म हुआ बाधित-शिथिल, लख काया की चोट।
चिन्तन ने पेंगें-भरीं, इस विराम की ओट।।
गुरु के चिन्तन-भाव को, किया पद्य आबद्ध।
नवल सृजन के सूत्र शुभ, जीवन से सम्बद्ध।।
ऋषि के जीवन सूत्र नव, प्राप्त करे हर वर्ग।
'ज्ञान-रश्मि' के नाम से विकसे पन्द्रह सर्ग।।
'जीवन विद्या' समझ लें, प्रिय 'जीवन व्यवहार'।
जीवन की धारा-दिशा, 'जीवन दर्शन' सार।।
'जीवन पथ' सबको मिले, दर्शन दिव्य ललाम।
सरल 'ज्ञान दीक्षा' सरस, दे सद्गति अविराम।।
थोथें रस्म-रिवाज जल, 'जीवन सूत्र' सधाहि।
ईश्वरत्व उन्मुख सभी, 'दिव्य लोक' विकसाहिं।।
सदा 'कर्म फल' ध्यान रख, मन साधहिं धीमान्।
बात चीत की कला से, पाएं शुचि सम्मान।।
मनुजं 'जियें तो इस तरह', जीवन सफ़ल बनाएं।
धर्म, अर्थ के साथ ही, काम मोक्ष सध जाएं।।
हम सबकी शुभ कामना, गुरुवर का आशीष।
सफल करहिं पुरुषार्थ यह, गणपति, गौरि, गिरीश।।"1

"डा0 कर्मयोगी जी द्वारा रचित दोहे का यह संग्रह निश्चय ही पठनीय है। खास बात यह है कि जिस सरल-सहज भाषा शैली में गूढ़ से गूढ़ तत्व ज्ञान का कवि ने व्यावहारिक रूप से उद्घाटित किया है, उसे एक सामान्य बालक तक आसानी से समझ सकता है। दोहों के माध्यम से दिया ज्ञान व किया गया आह्वान बाल मन को दिशा बोध तो देगा ही, उसे सही दिशा में सोचने और करने को भी प्रभावित करने में सफल होगा।"2

यह दोहावली छोटे-बडे सबके लिए समान रूप से पठनीय ही नहीं बल्कि विद्यालयों और पुस्तकालयों के लिए तो विशेष रूप से संग्रहणीय है।

1. श्री वीरेश्वर उपाध्याय- ज्ञान-रश्मि, पृष्ठ 5
2. श्री नंदनन्दन प्रसाद पाण्डेय- ज्ञान-रश्मि, पृष्ठ 8

इस दोहावली की विषय सामग्री को डा0 कर्मयोगी ने निम्नलिखित पन्द्रह शीर्षकों में विभाजित किया है-

1. जीवन विद्या
2. जीवन व्यवहार
3. जीवन की दिशाधारा
4. जीवन दर्शन
5. जीवन पथ
6. दिव्य जीवन
7. ज्ञानदीक्षा
8. थोथे रस्म रिवाज
9. जीवन सूत्र
10. ईश्वरत्व
11. दिव्यालोक
12. कर्मफल
13. मन
14. बातचीत की कला
15. जिएं तो इस तरह

प्रत्येक शीर्षक से दो-दो रचनाएं अवलोकनीय हैं-

सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति है, जिसका हृदय विशाल। मन छोटा करता नहीं, चले न टेढ़ी चाल।।
सत्य बोल बोलों सदा, रहें असत् से दूर।सबका हित साधन करें, दयाभाव भरपूर।।

(जीवन विद्या)

सुर दुर्लभजीवन मिला,शिक्षा समझ अनेक।भेड़चाल से बच चलें, चलें चाल सब नेक।।
शुभ कर्मो परहै टिका,जीवन का सुख सार।अशुभ कर्म में यदिफंसे,निश्चित होगी हार।।

(जीवन व्यवहार)

धीरज ही धारण करें, हों नहिं कभी अधीर।प्यार भरा जीवन जिएं, उड़त गुलाल अबीर।।
इन्द्रिय संयम यदि सधे, सधे सभी व्यवहार।चित्त शुद्ध होता रहे, मन पर भी अधिकार।।

(जीवन की दिशा धारा)

अनुशासन अन्दर उगे, जीवन में रम जाए।ऊपर से थोपा हुआ, हरदम काम न आय।।
मेरा हित केवल नहीं, सबका ही हित होय।ऐसा उभरे सोच तब, मेल सभी का होय।।

(जीवन दर्शन)

ऐसे परिजन चाहिए, सुख-दुःख में हों साथ।संकट में भागें नहीं, मिले हाथ से हाथ।।
जो प्रतिभा के है धनी, करते नहीं गुमान।उनके पीछे यश फिरै, बढ़ा-चढ़ा सम्मान।।

(जीवन पथ)

सदाचार ही धर्म का, सच्चा रूप-स्वरूप।बिना विचारे ही हुआ, यही रूप विद्रूप।।
दृष्टिकोंण ऊँचा रखे, निर्मल करें स्वभाव।इच्छा जो सीमित रखें, उनको नहीं अभाव।।

(दिव्य जीवन)

थोथे रस्म रिवाज में उलझा मनुज समाज।भेड़ चाल कब तक चलें, कुछ तो सोचें आज।।
रीति-कुरीति बन गई, संकट विकट अपार।लोहा लेना है अगर, मिलकर करें प्रहार।।

(थोथे रस्म रिवाज)

पर पीड़ा हरते रहें, जीवन भर जो लोग। उनके जीवन में रहा, सदा सुखद संयोग।।
संयम साधे जे रहें, रहें व्यसन से दूर। होंई निरोगी लोग वे, लहें शक्ति भरपूर।।

(जीवन सूत्र)

प्रभु को खोजे हम कहां, जाएं किसके पास। कण-कण मे वह बल रहा, हृदय निकट आवास।।
श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पूजन, वंदन होई।फिर भी मन मैला रहा, लाभ कहां से होई।।

(ईश्वरत्व)

श्रम साधक ही जीतते, जीवन का संग्राम।इससे मुख जो मोड़ते, उनको हुआ हराम ।।
प्रामाणिक बनकर जिएं, निर्मल रखें स्वभाव।गुण कर्मो में श्रेष्ठ हों, चारों ओर प्रभाव।।

(दिव्यालोक)

जीवन में बस ढो रहे, निज कर्मो का बोझ।सुख चाहों तो भेंट से, अपकर्मो का खोज।।
शुभ कर्मो के पुण्रू से, नवयुग आता जाय।बदलेगी आकृति नहीं, प्रकृति बदलती जाय।।

(कर्मफल)

चंचल मन को रोक लें, समझाएं बार हजार। इतने पर माने नहीं, कसके दें उपचार।।
मत घोड़ा बिगड़ैल है, टिकां न एकां ढाम। चिंतन चाबुक गहि रहे, संयम सख लगाम।।

(मन)

बाचचीत के दौर में, तोल तोल कर बोल।व्यंग भरी बातें नहीं, हृदय खोलकर बोल।।
सही बात का सब जगह, करते सब सम्मान।चर्चा झूठ फरेब की, पकड़ाती अपमान।।

(बातचीत की कला)

आदत ऐसी डालिए, व्यसनों से हो दूर। चिंतन चरित्र निखारिए, श्रेय मिले भरपूर।।

तत्पर, तन्मय हो रहें, रहें निडर निर्बैर।पग पग पर बढ़ते चलें, यह जीवन की सैर।।

(जियें तो इस तरह)

(2) विद्यार्थी जीवन की दिशाधारा - डा0 कर्मयोगी द्वारा लिखित यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त मूल्यवान है। विद्यार्थी जीवन समग्र जीवन की एक प्रयोगशाला है। यहीं बुद्धि बढ़ती, व्यवहार ढलता और व्यक्तित्व संवरता है। विद्यार्थी अपने जीवन का उद्देश्य समझें, स्वयं को समाज का एक महत्वपूर्ण अंग मानें और लक्ष्य की ओर बढ़ चलने के लिए मनोयोग पूर्वक जुट जाएं तो बड़ी से बड़ी उपलब्धि उनके हाथ लगेंगी।

"डा. कर्मयोगी जी ने कठिन विषयों को सरल शैली में शीर्षकों के सहारे प्रस्तुत कर सहज बोधगम्य बनाया। इससे छात्रों में स्वाध्यायी प्रवृत्ति बढ़ेगी और उसकी अभिरुचियों का भी परिमार्जन होगा। एक नया पाठ 'संस्कारों का महत्व' जोड़कर संस्कारों की अवधारणा और उनके वैज्ञानिक महत्व को

स्पष्ट किया गया है। जो छात्रों को आस्थावान बनाने और उनमें मानव मूल्यों को विकसित करने के लिए नई समझ पैदा करेगा। स्वाध्याय, स्वास्थ्य के स्वर्णिम सूत्र और पर्यावरण पाठों की विषय वस्तु को और अधिक बोधगम्य बन जाने से इस पुस्तक का महत्व बढ़ा है। आशा है यह पुस्तक छात्र और शिक्षक दोनो के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।"1

कवि की इस कृति की एक रचना अवलोकनीय है-

कोई काम न बड़ा कहाता, और न कोई छोटा,
जो जन ऐसा नहीं समझते, उन्हें बुद्धि का टोटा।
ऊँच न कोई, नीच न कोई नहिं अछुत कोई भाई,
पैदा किया सभी को प्रभु ने, दुनियाँ सुघड़ बनाई।
जाति-पाँति का भेद नहीं है सब हैं भाई-भाई,
हिममिल कर सब रहें प्रेम से यही रीति सुखदाई
कोई बात बुरी नहिं सोचें सबकी करें भलाई,
सुख दु:ख में एक हाथ बटाएं सीखें यह चतुराई।

('सीखें यह चतुराई' शीर्षक से)

(3) जीवन विद्या में प्रकाशित रचनाएं -

युगान्तर चेतना, शान्तिकुंज, हरिद्वार से प्रकाशित पुस्तक जीवन विद्या में सुकवि डा. कर्मयोगी की रचना अवलोकनीय है-

आओ मित्रो पता लगाएं ईश्वर कौन कहाँ है,
कैसे उसने सृष्टि बनाई सारा चकित जहाँ है।
इसमें क्या कठिनाई आई, उत्तर अभी बतादूं
या चाहों तो साथ चलो मै तुमको अभी दिखा दूँ।
दोनों चले खोजने प्रभु को दुखियारे गाँवों में,
मरहम मलता संत मिला तब कोढ़ी के पाँवों में।
आगे बढ़े काँपती करुणा सिकुड़ा दैन्य खड़ा था,
हिचकी लेती दया आ गई सेवा भाव बड़ा था।
मित्र कहाँ तक और चलोगे अब तो भेद बताओ,
इच्छा मेरी प्रबल हो उठी प्रश्न अभी निपटाओ।
मै तो समझा समझ गये तुम अब क्या प्रश्न बचा है,
सेवा की अनुभूति करो तो ईश्वर स्वयं खड़ा है।(ईश्वरानुभूति शीर्षक से)

1. श्रीमती शैलबाला पण्ड्या- विद्यार्थी जीवन की दिशा धारा, पृष्ठ 4

(2) आओ हम इतिहास रचेंगे-

सुरसा सा फैलाया जिसने, मँह उसका हम बंद करेंगे। आओ हम इतिहास रचेंगे।
कुरीतियों के घृणित पंक में, रह-रहकर जो धँसते जाते,
उनसे उनको मुक्त करेंगे। आओ हम इतिहास....
रूढ़िवादिता लिपटी जिनसे, मैली की जिसने मन चादर,
उसको हम सब स्वच्छ करेंगे। आओ हम इतिहास .....(इतिहास रचेंगे शीर्षक से)

(3) बड़े-बडों से सीखा करते बच्चे क्रियाकलाप,
तैसी उनमें आदत पड़ती करते जो माँ बाप।
रहें कमल कीचड़ में जैसे नीची बात न सोचें,
व्यसनों से कोसों रहें दूर सब अच्छी करनी खोजें।। (युग सहज बदल जाएगा)

(4) कलियुग की कालिमा ने, कालिख दई है पोत,
चारों लंग देखो घोर अन्धकार छायो है।
बने है लोग लंपट, ध्रष्ट-भ्रष्ट व्यभिचारी हैं,
काले कारनामे, ऊधम भारी ही मचायो है।
दुबके से बैठे लोग, सहमे से बैठे लोग,
काहू ने न बाँधी पार, नोंच-नोंच खायो है,
मन्दिरों में जाते लोग, मस्जिदों में जाते लोग,
तऊ जाने कौन ठौर प्रेम बिरमायो है।। ("कलियुग की करतूत" शीर्षक से)

(5) जो देखता है सर्वत्र मुझको मैं दृश्य होता सदा ही उसे हूँ,
जो याद करता सदा ही मुझे है, उसे मैं कभी विसराता नहीं है।
मुझे प्यार है ज्ञान, गुण-सम्पदा से, सहयोग श्रम और सदा भावना से,
जो प्यार इसको करता रहेगा, छुड़ाना रहँगा उसे आपदा से।(परमात्मा का प्यार)

(6) जाग उठा अब युवक देश का, करवट नई बदलकर,
हैं बुलन्द उसकी आवाजें, चलें साथ सब मिलकर।
बहनों में साहस जागा है, अन्दर का सब डर भागा है,
ओ दहेज के लोलुप दानव, हो सचेत मानव जागा है।
पिछड़ी नहीं रहेंगी बहनें, कहीं न अब शोषण होगा,
उनकी उन्नति और प्रगति का जबरदस्त नारा होगा।
जिस दहेज के कारण जलती बहनें सुघड़ सलौनी,
उस दहेज का गला घोंटकर मेटेंगे प्रथा घिनौनी।। (मेटेंगे प्रथा घिनौनी शीर्षक से)

(7) खुदा एक नूर है जिसमें रोशन जहाँ सारा,
यही तो तेज सविता का बहाता प्राण की धारा।

कोई जिस्म हो इसका कि कोई शक्ल औ सूरत हो,
इबादत में जरुरी है नहीं कि लाजिम उसकी मूरत हो। (इबादत शीर्षक से)

(8) धर्म ज्ञान विज्ञान शक्ति और है अद्वैत महान।
यह अनुशासन है जीवन का, हो तो जन कल्याण।
कि भैया है अद्वैत महान। × × ×
करूणा दया धर्म की बेटी योग बड़ा है बेटा,
श्रद्धा भक्ति भावना से जो विमुख हुआ है हेटा।
अर्चन वंदन करें नित्य यों होगा जग कल्याण। कि भैया है अद्वैत महान।
(है अद्वैत महान शीर्षक से)

(9) मैं ज्योति पुंज मैं 'दिव्यतत्व', मैने समझा अपना महत्व।× × ×
प्रेय नहीं मुझको भाया, मै श्रेयस का अधिकारी हूँ,
सात्विक शुद्ध विचारों का, मै नित्य रहा उपकारी हूँ।
मै भेंड़ नहीं जो भेडों के पीछे ही चलता जाऊँगा,
यारों! मै राह बनाने आया हूँ, उस पर ही बढ़ता जाऊँगा। (आत्मसम्मान शीर्षक से)

(10) कोई काम न ऐसा कर दूँ, पड़े देखना नीच,
बड़ी अदालत में जब पहुँचूँ, माथा हो तब ऊँचा,
ओ आत्मतत्व ओ प्राण तत्व, तुम दावानल बन जाओ,
भस्मीभूत करो जड़ता को, निज सम्मान बचाओ। तुम निज सम्मान बचाओ।।
("मुझको तो चिंता बस इतनी" शीर्षक से)

आचार्य शर्मा के चिन्तन की आलोच्य काव्य में अभिव्यक्ति

(1) ईश्वरानुभूति :- सेवा की अनुभूमि करो तो, ईश्वर स्वयं खड़ा है।× × ×
मानव और भगवान में ऐसा है अनुबंध। जनसेवक का स्वयं वे, करें विशेष प्रबन्ध।।

2. मानव मात्र-एक समान -ऊँच न कोई नीच न कोई, नहिं अछूत कोई भाई,
पैदा किया सभी को प्रभु ने, दुनियाँ सुघड़ बनाई।।
जातिपांति का भेद नहीं है सब हैं भाई-भाई,
हिलमिल कर सब रहें प्रेम से, यही रीति सुखदाई।।

जीवन विद्या :- जन्म मिला संसार में, शुभ कर्मो के काज।
अशुभ कर्म फिर भी किए, इससे दुखी समाज।।

संयम साधना :- समझदार वे लोग हैं, जिनकी पैनी दृष्टि,
जिनके भीतर अनवर, हो संयम की सृष्टि।

जीवन और कायसत्ता :- जन्म मिला जीवन खिला, यह अवसर अनमोल।

आलस में बीते नहीं, चलिए आँखें खोल।।

जीवन दर्शन :- भटके जो जन लक्ष्य से, करें भूल पर भूल।
फँसे अनेक विपत्ति में, चुभें शूल पर शूल।।

मनुष्य में देवता:- कष्ट कठिन पहलें लगे, बाद सुखद ही होंइ,
मनुज न घबराएं कभी, तपकर कुंदन होंइ।।

योगसाधना :- साधना में रत रहें, साधन में न लगाव।
ऐसे जन को हरि भजै, उसको नहिं भटकाव।।
कर्मो का फल भोगता, होता है बेहाल।। × × ×
संकट अरु सौभाग्य के, बुरे भले ये कर्म।
सावधान इनसे रहें, जीवन का यह मर्म।।

जीवन जीना एक कला- कड़ी समीक्षा नित करें दिन में हुआ जो काम।
गलत अगर कुछ हो गया, कभी न लें फिर नाम।।
दिवास्वप्न देखें नहीं, दिव्य बनें प्रभु काज।
प्रखर करें चैतन्य को, साजें ऐसा साज।।

प्रतिभागिता के प्रति आक्रोश - अनीति और अन्याय का, डटकर करें विरोध।
लोहा लें मिलकर सभी, नहिं केवल अनुरोध।।

आचार-पद्धति :- धोते पहले बसन को, बाद रंगाई होइ।
मन मैला भी धोइए, दाग न बचिया कोइ।।
अनुचित-उचित विचारिए, तब कीजै कुछ काम।
बिना विचारे यदि किया, सुखद कहाँ परिणाम।।

मूल्यांकन

युग परिवर्तन को जीवन का ध्येय बनाकर पूज्य आचार्य पं. श्रीराम शर्मा एवं माता भगवती देवी शर्मा द्वारा प्रदर्शित पथ के अजस्त्र पथिक डा0 कर्मयोगी ने स्वानुभूत सुन्दर रचनाओं के माध्मय से पाठकों के अन्त:करण में सीधे उतार देने वाली क्षमता से परिपूर्ण सरल व सहज भाषा में हिन्दी काव्य सृजन का एक सफल एवं सार्थक प्रयास किया है। शोधकर्ता का स्पष्ट अभिमत है कि इस प्रयास से समाज को अपेक्षित लाभ अवश्य मिलेगा।

श्री महेश चन्द्र पंत लिखते हैं-

"ज्ञानरश्मि को मैंने आद्योपान्त पढ़ा। वस्तुत: दोहा शैली में प्रस्तुत, ये ऐसी ज्ञान रश्मियाँ है जो निश्चित ही पाठकों के गहन अन्तराल में घुसे अंधकार को विदीर्ण करके ही रहेंगी। इन रचनाओं में ज्ञान के साथ-साथ

व्यवहारों के परिमार्जन का ऐसा सामंजस्य है जो जीवन को पूर्णता की ओर ले चलने की सार्थक पहल कर सकेगा। सार्वजनिक जीवन में संव्याप्त संघर्ष आपाधापी, ओछे और घिनौने विचार तथा कीचड़ में धंसे जीवन में मनुष्यता का संचार कर देवत्व की ओर ऊँचा उठा सकेगा।"1

कवि की अन्तर्दृष्टि एक्स-रे की भाँति अन्तःमन, अन्तर्जगत और परोक्ष में चल रही सभी प्रकार की गतिविधियों को पढ़ लेती है। सम्भवतः यही कारण है कि डा0 कर्मयोगी के शब्द मात्र बोलते नहीं हलचल पैदा कर देते हैं। ज्वार भाटा जैसे उफान उत्पन्न कर मन की दिशा को किसी भी ओर मोड़ने की शक्ति कवि की रचनाओं में समाहित है। डा0 कर्मयोगी द्वारा रचित काव्य में आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन की गाथा है, वह मर्म है जिसे कवि ने जिया है, उस अनुभव पर आधारित गीत है, जिसे कवि ने उन्मुक्त भाव से गाया है। इनके काव्य में जहाँ एक ओर दार्शनिकता का भाव उत्पन्न हुआ है वहीं दूसरी ओर ये जीवन को व्यावहारिक बनाने में स्वयं सफल और सक्षम हैं।

स्मृति शेष श्री लक्ष्मी नारायण गुप्त 'कमलेश'

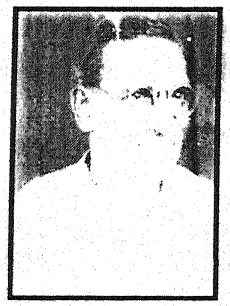

जीवन परिचय- सरस्वती के वरद पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण जी 'कमलेश' ने चतुर्मुखी प्रतिभा पाई थी। इस प्रतिभावान महामानव का जन्म वर्ष 1915 में दीपावली के पावन पर्व पर श्री लक्ष्मी पूजन के समय जन्मदात्री माता शिवदुलारी देवी की गोद में घाटमपुर (कानपुर देहात) में हुआ। आपके पूज्य पिता श्री सरजू प्रसाद जी ओमर बडे ही दयालु और सरल स्वभाव के और धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे। शिशु अवस्था में आप छः माह के ही हुए थे कि इनके पिता श्री इस असार संसार को छोड़कर गोलोकवासी हो गए। मौदहा निवासी आपके नाना भी मथुरा प्रसाद जी ओमर जो 'मथुरा मन्दिर' के निर्माता थे, इन्हें अपने पास बुला लिया और गोद ले लिया। आपकी शिक्षा-दीक्षा अपने मातामह के घर पर ही हुई और बड़े होने इन्होने इनका विवाह पिपहरी (बांदा) निवासी श्री मेघेलाल जी ओमर की सरल, विनम्र, सुशील, सात्विक एवं उदारहृदया सुकन्या शैलकुमारी के साथ कर दिया। श्रीमती शैलकुमारी से आपको

1. श्री महेश चन्द्र पंत- (शिक्षा निदेशक, उत्तांचल)- ज्ञान-रश्मि, पृष्ठ 7

एक पुत्र और एक पुत्री दो सन्तानें प्राप्त हुई। विवाह के सात वर्ष बाद आपकी धर्मपत्नी का भी देहावसान हो गया। श्री कमलेश जी को अपने जीवन काल में अनेक बार पक्षाघात के दौरे पड़े और वे ठीक होते रहे किन्तु 62 वर्ष की आयु में चलने-फिरने में असमर्थ इस भक्तहृदय कवि का 3 फरवरी 1977 तद्नुसार माघ शुक्ल 14 गुरूवार में निधन हो गया।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व :- साहित्य तथा अध्यात्म के अद्भुत सामंजस्य के ध नी मानस वेत्ता साहित्य के पुजारी सद्गृहस्थ होते हुए भी योगी श्री कमलेश जी हिन्दी साहित्य काव्य के जगमगाते नक्षत्र थे। आपने अपने सम्पूर्ण जीवन को माँ सरस्वती की आराधना एवं समाजोत्थान में लगा दिया। उनकी ओजस्वी वाणी ने समाज को अभिनव दिशा प्रदान की। वे उच्चकोटि के लेखक एवं कवि थे। आपकी रचनाएं सुकवि सरस्वती, कल्याण, अखण्डज्योति, दिव्यवाणी एवं मानसमणि आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं हैं। आपने एक हस्त लिखित 'मधुप' पत्रिका समाज के सम्मुख प्रस्तत की जिससे प्रेरणा पाकर 'अखिल भारतीय ओमर वैश्य महासभा' ने आपको स्वर्णपदक, मूल्यवान उत्तरीय एवं मुद्राओं से पुरस्कृत किया।

अन्य दूसरी साहित्यिक संस्थाओं ने भी 'मधुप' को एक सम्मान पूर्वक पुरस्कृत किया। आपकी काव्य रचनाएं शुद्ध परिष्कृत हिन्दी में हैं।

साहित्यकारों से सम्पर्क:- श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार, सम्पादक 'कल्याण', बाबू गुलाब राय, सम्पादक साहित्य संदेश, पू. आचार्य श्रीराम शर्मा सम्पादक अखण्ड ज्योति, से प्रकाशित होती थी। श्री शारदा प्रसाद, सम्पादक 'मानस मणि' (सतना), डा0 रामचरण जी महेन्द्र, श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री सियाराम शरण गुप्त, श्रीश्री 108 महाराज रामदण्डी जी, आत्मविज्ञान प्रतिष्ठान राम नगर ऋषिकेश, श्री रामरक्षित जी, 'रामायणी', श्री लक्ष्मी नारायण जी आनन्द (मौदहा) आदि ख्यातप्राप्त साहित्यकारों से आपकी घनिष्टता रही। श्री सीताराम जैपुरिया, स्वदेशी भवन कानपुर, श्री सत्यनारायण जी ओमर तथा श्री भोलानाथ जी कछवाँ, मिर्जापुर से आपके बहुत अच्छे सम्बन्ध रहे। जो भी श्री कमलेश के सम्पर्क में आया, इनके स्नेह पाश में बँधता चला गया। आप बहुत ही सरल, विनम्र एवं गंभीर स्वभाव के थे जो कठिनाइयों का सामना करते हुए भी सदैव मुस्कराते रहते थे।

प्रेरणास्रोत कार्य-

(1) आपने मौदहा (हमीरपुर), उ0प्र0 'अखिल भारतीय सत्संग समिति' की स्थापना की। जिसका संरक्षक आपने श्री हनुमन्त लाल जी को बनाया। इसके

अन्तर्गत प्रति रविवार को प्रात: 7 बजे पर सामूहिक प्रार्थना का आयोजन होता था। इस समिति के तत्वावधान में श्री कमलेश जी की प्रेरणा से अनेक शाखाएं गाँव-गाँव में फल-फूल रही हैं।

(2) वर्ष 1959 से आपने भक्ति, ज्ञान, वैराग, सदाचार आदि अध्यात्मवाद की पोषक 'दिव्यवाणी' (मासिक) का कुशल सम्पादन व प्रकाशन किया। आपने इस पत्रिका का एक 'प्रार्थना अंक विशेषांक' निकाला था। दिव्य वाणी के सभी प्रकाशित अंक देश और समाज को उज्जवल मार्ग प्रदर्शित करने वाले, सत्य-प्रेम और न्याय को प्रतिस्ठापित करने वाले मंगल प्रकाशन हैं।

'दिव्य वाणी' मानव के शान्त हृदय में सुख शांति की स्थापना के निमित्त प्रकाशित हुई। इसमें भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सदाचार पूर्ण देश के सुविश्चात सन्त, महापुरुष, विद्वान एवं महान विभूतियों के सारगर्भित और अनुभूत आलेख प्रकाशित हुए। इन आलेखों में श्री कमलेश जी ने भगवत प्रप्ति के उपाय, उपासना के विविध प्रकार एवं चरित्र निर्माण सम्बन्धी विषयों का विशद विवरण प्रकाशित किया। इस पत्रिका के प्रत्येक अंक में श्री कमलेश जी ने पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा जी के अनुभव पूर्ण लेख भी प्रकाशित करते हुए लिखा- "आज का मानव मानवोचित गुणों को त्यागकर अपने मार्ग से कितनी दूर भटक गया है, इसे समझाने के लिए प्रात: स्मरणीय पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, जी के पावन संदेश को जन-जन तक पहुंचाया जाना आवश्यक है।" श्री कमलेश जी की अनेक काव्य रचनाएं युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा से प्रकाशित विभिन्न काव्य संकलनों में प्रकाशित हुईं। कवि का मानना था कि साधना विहीन जीवन भी कोई जीवन है अत: रुको नहीं, साधना को आगे बढ़ाते चलो। प्रगतिपथ पर चलने से क्यों हिचकर रहे हो। बिना श्रम के सफलता संभव नहीं है। इस छोटे से जीवन के बारे में सोचने के बजाय जो चढ़ा भी है उसका सही उपयोग कर डालो। अभी तो तुम्हारी मंजिल बहुत दूर है फिर बीच में ही कैसे रुक गये। आलस्य प्रमाद से काम पूरा ही होता है। यदि कदम डगमगा रहे हों तो संभल जाओ और हिम्मत करके आगे बढ़ जाओ × × × जिसने साधना की है वह खाली हाथ नहीं लौटा। उसकी झोली सिद्धियों से भर दी गई है। तुम तुम्हारी साधना व्यर्थ कैसे जायेगी? रचना अवलोकनीय हैं-

(1) क्यों रूके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।
क्यों प्रगति पथ में तुम्हारे हो रहा उत्पन्न भय ?
श्रम बिना ही चाहते हो क्या सफलता पर विजय ?

सोचते हो क्या ? गिने क्षण ही तुम्हारे पास हैं-
हाथ में आया हुआ क्यों खो रहे हो अब समय ?
बढ़ चलो निर्द्वन्द्व, कोरी कल्पनाएं मत गढ़ो। क्यों रुके हो ?
दूर जाना था अचानक रुक गए तुम तो यहीं,
इस शिथिलता से तुम्हारा, कार्य कुछ होगा नहीं,
गिर पड़े हो तो सँभल जाओ, उठो हिम्मत करो,
कठिनाइयों के पंक में अब फिर न फंस जाना कहीं।
हीनता का दोष अपने शीश पर तुम मत गढ़ो। क्यों रुके हो ?
("साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो" शीर्षक से)

कवि की अन्य रचनाएं अवलोकनीय है-

(2) दयामय हममें वह बल हो कि जिससे धन्य धरातल हो,
हमारे मन में भी बल हो, हमारे तन में भी बल हो।
हमारे धन में भी बल हो, हमारे प्रण में भी बल हो।
हमारा उर अति निर्यत हो। दयामय हममें वह .....
न हममें मान, मोह ही हो, न हममें राग द्वेष भय हो,
न हममें स्वार्थपूर्ण लय हो, न हममें रंचक अविनय हो।
न हममे कभी कपट छल हो। दयामय हममें वह.....
प्रेम मय सारा जीवन हो, परम उत्साह भरा मन हो,
हर्ष से विकसित आनन हो, सदा परहित में रत तन हो।
न अपना लक्ष्य चलाचल हो। दयामय हममें वह .....
सुमति का संचित सागर हो, शक्ति का उदय सुधाकर हो।
कष्ट से हृदय न कातर हो, सभी में प्रेम बराबर हो।
हमारा उन्नतिमय कल हो। दयामय हममे वह.....("दैनिक प्रार्थना" शीर्षक से)

श्रीलक्ष्मी नारायण 'कमलेश' जी ने अपने भावुक हृदय से ईश प्रार्थना पर विशेष बल दिया। वह अपने दैनिक सत्संग के कार्यक्रमों में इन प्रार्थनाओं का सामूहिक पाठ कराया करते थे। इसीक्रम में एक प्रार्थना अवलोकनीय है जिसे वे अपने साप्ताहिक सत्संग के क्रम में बडे भक्तिभाव से अपने सत्संग प्रेमियों के साथ भाव विह्वल होकर गाया करते थे। ज्ञातव्य है कि इस प्रार्थना को मानस मर्मज्ञ होने के कारण उन्होने रामचरित मानस से लेकर सत्संग सभाओं में प्रचारित किया था-

जय जय सुरनायक, जन सुखदायक, प्रनतपाल भगवंता।
गोद्विज हितकारी, जय असुरारि, सिन्धु सुता प्रिय कंता।।

पालन सुर धरनी, अद्भुत करनी मरम न जाने कोई।
जो सहज कृपाला, दीनदयाला, करहु अनुग्रह सोई।।
जय जय अविनाशी, सब घटवासी, व्यापक परमानन्दा।
अविगत गोतीतम् चरित पुनीतम्, मायारहित मुकुन्दा।
जेहि लाग विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनि वृन्दा।
निशि वासर ध्यावैं गुन गन गावहिं जगति सच्चिदानन्दा।।
जेहिं सृष्टि उपाई, विधि बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करहु अघारी, चिन्त हमारी, जानहिं भक्ति न पूजा।
जो भव मय भंजन, मुनि मन रंजन, गंजन विपति बरूथा।
मन-वच-क्रम वाणी छांड़ि सयानी सकल सुरजूथा।।
शारद श्रुति शेषा ऋषभ अशेषा, जाकहु कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन प्यारे, वेद पुकारे द्रवउ सो श्री भगवाना।
भव वारिधि मंदर सब विधि सुन्दर गुन मंदिर सुख पुंजा,
मुनि सिद्धि सकल, सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा। (रामचरित मानस)

(4) प्रार्थना :- श्री कमलेश जी की एक प्रार्थना जो राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है तथा सम्पूर्ण भारतवर्ष के शिक्षा मंदिरों एवं गायत्री शक्ति पीठों-प्रज्ञापीठों के दैनिक प्रार्थना में गाई जाती है, अवलोकनीय है-

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जाएं,
परसेवा पर उपकार में हम, निज जीवन सफल बना जाएं।
हम दीन दुखी निबलों विफलों के, सेवक बन संताप हरें,
जो हैं भूले भटके बिछुड़े, उनको तारें खुद तर जाएं।
छल, दम्भ, द्वेष, पाखण्ड, झूठ, अन्याय से निशि दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधा रस बरसाएं,
निज आन मान मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे-अभिमान रहे।
जिस देवभूमि में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जाएं। वह शक्ति हमें दो....
("वह शक्ति हममें दो दयानिधे" शीर्षक से)

(5) जब हम सारे जन अपने को प्रभु का प्रेरित मानेंगे,
और यहाँ प्रभु ने हमको क्यों भेजा है, यह जानेंगे।
जब अपने कर्तव्य कर्म पर हम आरूढ़ बनेंगे सब,
जग बदलेगा, युग बदलेगा, मानवता निखरेगी तब।।
सब शरीर को स्वस्थ रखेंगे, उसे प्रभु का मन्दिर जान।
पर-स्वारथ में उसे लगाएं तब ही होता, युग निर्माण ।।

केवल तन ही नहीं स्वच्छ मन को भी अब करना होगा।
स्वार्थ-लोभ सब तजकर मन में भव्यभाव भरना होगा।
कुविचारों दुर्भावों को अब नहीं पास रखना होगा।
सदाचार सद्‌गुण से आलोकित पथ पर चलना होगा।
कर्तव्यों को करना होगा, जन-हित में अपना हित मान।
तुच्छ स्वार्थ को तजना होगा, तब ही होता युग निर्माण।।
मन जीवन का केन्द्र बिन्दु है, इसे नहीं हम भूलेंगे,
उसको सुन्दर और समुन्नत कर हर्षित हो फूलेंगे।
संयय, सेवा, त्याग, साधना का हम पाठ पढ़ेंगे जब,
सज्जनता का सुखद सुमंगल वातावरण बनेगा तब।
परम्पराओं से विवेक को जब हम देंगे ऊँचा स्थान। तभी ही होता .....

("युग निर्माण कब होगा? शीर्षक से उद्‌बोधन") पृ. 63

(6) ज्योति जीवन की जलाये, भव्य सपनों को सजाये,
बढ़ रहा संघर्ष परथ पर, दु:ख को भी सुख समझकर। मै ज्वलित अन्त:करण हूँ।
कर रहा निर्माण-चिंतन, आज अन्तर में चिरन्तन
विश्व में मै प्राण भरता, ज्योति जीवन की वितरता। क्रान्ति का बढ़ता चरण हूँ।
पथ बना कंटक-बिछौना, मृत्यु है मेरा खिलौना;
होमकर सर्वस्व अपना, देखता में मुक्ति सपना। चेतना मय जागरण हूँ।

("साधना का एक क्षण हूँ शीर्षक से उद्‌बोधन में प्रकाशित पृ. 63")

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन का आलोक्त्य काव्य में प्रतिफलन-

(1) साधना से सिद्धि -

रिक्त लौटा है न कोई साधना के द्वार से,
सब समय, सब कुछ मिला सबको इसी भंडार से,
साम्राज्य सारी सिद्धियों का है सुरक्षित सर्वदा-
फिर तुम्हीं वंचित रहो क्यों दिव्य निज अधिकार से।
जोड़ो अतीत भविष्य का इतिहास अब आगे बढ़ो।
क्यों रुके हो ? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।।

(2) प्रतिगामिता के प्रति आक्रोश -

नहीं विरोधक रोक सकेंगे निन्दक होवेंगे अनुगायी,
जन-जन इसकी वृद्धि करेंगे इसकी गति न थमेगी थामी।
बस इसकी हुंकार मात्र से दुष्ट लगेंगे आप ठिकाने।
डटे हुए हैं राष्ट्र-धर्म पर विपदाओं में सीना ताने।।

आज चुनौती अखिल विश्व को, भला बुरा चाहे जो माने।

(3) धरती पर स्वर्ग अवतरण –

अन्य स्वर्ग की नहीं कामना, यहीं स्वर्ग हम लायेंगे,
सबमें प्रेम प्रचार करेंगे, अमृत-रस बरसायेंगे।
नहीं रहेगा अब यह कलियुग, इसको बदलाना होगा,
इस दुनियाँ में फिर सेहमको, अब सत युग लाना होगा।
आओ, मित्रो! पूर्ण करें हम सब मिल यह संकल्प महान।
युग बदलेंगे, युग बदलेंगे और करेंगे युग निर्माण।। ("उद्‌बोधन" पृ. 128)

(4) हारिए न हिम्मत – श्री कमलेश जी के विचार 'हारिए न हिम्मत' शीर्षक से अवलोकनीय हैं-

शक्ति हीनता के विचार मनुष्य को निकम्मा, निष्क्रिय और निर्जीव सा बना देते है। आप आज उदास बैठे हुए अपने में असमर्थता का अनुभव कर रहे हैं, पर साहस करके देखिये तो सही- आपका जीवन क्षण भर में विद्युत की तरह चमक उठेगा। आप हिम्मत के साथ निश्चय करके अपनी इस प्रकार दृढ़ भावना बनाएं कि- "मैं असमर्थ, निर्बल और हताश नहीं हूँ। मुझमें नवीन जीवन का संचार हो रहा है। मैं बडे वेग से अपने जीवन पथ पर आगे बढ़ रहा हूँ। बस ऐसे विचार आते ही अपने में नवीन शक्ति का प्रकाश होने लगेगा और आप अपने जीवन को आनन्दमय तथा सफल बना सकेंगे। आइए, उठिए, और दृढ़ संकल्प के साथ अपने में शान्तिपूर्ण जाग्रति के विचार उत्पन्न कर अपने को शक्तिशाली बनाइए। संसार का कोई भी कार्य आपके लिए असंभव प्रतीत नहीं होगा।"1 उपर्युक्त विषयक कवि की एक रचना अवलोकनीय है-

तुम नर हो क्यों होते निराश? आहत मन! फिर भी बात सुनो।
साहस की निधियाँ मत फेकों, कष्टों की चर्चा बन करदे।
जन सेवा का व्रत अपनालो, असफलताएं मत दुहराओ। आहत मन.....
छल,दम्भ, पाप, विद्वेष से, माना अभिशापित मानव है,
मानव के ये वरदान नही, मानव जीवन का त्राण करो। आहत मन.....
धरती सिर्फ मिट्‌टी ही नहीं, इसमें नंदन वन खिलता है,
जीवन से ऊब रहे तुम क्यों। आहत मन .....

1. श्री लक्ष्मी नारायण 'कमलेश'- शक्तिमय जीवन, 'दिव्य वाणी', वर्ष 1, अंक 1, (जनवरी 1959)

मूल्याँकन

स्मृतिशेष श्री लक्ष्मीनारायण 'कमलेश' जी के गीतों में भावुक हृदय को स्पर्श करने वाली अनौखी शक्ति है। अनुभूति एवं अभिव्यक्ति का मणि कांचन संयोग आपके गीतों में सर्वत्र होता है।

श्री मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में- "श्री कमलेश जी की काव्यात्मक रचनाएं सरल तथा हृदय स्पर्शी हैं।"

श्री गुलाबराय के शब्दों में- "इनके गीतों में प्राणों का तारुण्य तथा साधना की चमक है, एवं आशा-आश्वासन का संगीत है।

डा.रामस्वरूप खरे के अनुसार- "आपके गीत प्रेरक, उत्साहवर्द्धन और भावपूर्ण हैं।भाषा में सरलता है और छंदो में प्रवाह है गीतों में भाव बोध प्रभावशाली है। लयात्मकता, संगीतात्मकता और सजीवता आपके गीतों में सहज ही प्राप्त हो जाती है। छंदों का भावनुकूल प्रयोग सौन्दर्य एवं रस-सृष्टि में सहायक है।"

श्री कमलेश जी के पौत्र श्री प्रेमनारायण 'सरोज' के कथनानुसार- "मैंने अपने पूज्य दादा जी (श्री लक्ष्मीनारायण 'कमलेश') के दुलार में बचपन में उनको नहीं समझा, वह जीते जागते समाज के मध्य समाज के अनमोल रत्न थे, मानस में उनके अथाह भाव भरे थे, कवि थे अच्छे लेखक एवं स्नेह के सागर थे जो उनकी कविता में अवलोकन करने से परिलक्षित होता है।"

'गुण भूषित दूषण रहित' आपके गीतों की हृद्तन्त्री की मधुर झंकार हैं जो चेतना का दबाव पाकर अचानक बज उठे हैं। संगीत की रसधार कवि हृदय से निकलकर पाठकों को स्नात कराती है। आपकी प्रार्थनाएं राष्ट्रीय स्तर पर स्थान पा चुकी हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर नि:संदेह यह कहा जा सकता है कि श्री कमलेश जी की कविताओं एवं गीतों का भाव तथा अभिव्यक्ति पक्ष दोनों ही सबल हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण 'कमलेश' के सुपौत्र श्री प्रेमनारायण 'सरोज' भी एक कवि है जिनकी रचनाएं युग निर्माण योजना, मथुरा से प्रकाशित विभिन्न काव्य संकलनों में प्रकाशित हुई है। इनका जन्म चैत्र कृष्ण मंगलवार विक्रम 1991 में मौदहा में हुआ। आपके दादा-दादी ने अपने साथ रखकर इन्हें सभी प्रकार के सुख प्रदान किए और शैशव अवस्था से ही ध्रुव, प्रहलाद, मोरध्वज, हरिश्चन्द्र एवं रामायण की कथाएं सुनाई।श्री सरोज की कतिपय रचनाएं अवलोकनीय है-

1. सारे जग को अपना लेंगे, अपना पुनीत परिचय देकर,
   जीवन आदर्श बना लेंगे, सद् हृदय प्रेम परिचय देकर,

वाणी को मधुर बना लेंगे, कटुता का सदा त्याग करके,
वंधुत्व भाव अपना लेंगे, शुचिता 'प्रेम' परिणति करके,
समता का भाव जगा लेंगे, अपना अनुराग हृदय देकर,
अपना सौभाग्य बना लेंगे, निर्वल जन-मन की सेवा कर।"

2. भावना बन जाती भगवान, भावना से है विश्व महान।
भावना पग-पग बने प्रयाग, भावना जीवन बने महान"

3. सुख बांटा करो, दुख बटाया करो, दुखी जीवन को सम्बल बनाया करो।
हास्य जीवन जगाने का ही नाम है, सबके दुःख दर्दो को भी मिटाया करो।।"

4. माँ की ममता के मानस में, संतान प्राण से प्यारी है,
माँ प्रेम भरा सुख सागर है, नौका संतान सहारा है।।

श्री 'कमलेश' जी एक जागरूक प्रहरी की भाँति देश के युवाओं को निरन्तर सावधान करते रहे: "बढ़ चलो मंजिल स्वयं ही पास आयेगी!

मेघ काले सूर्य पर छाते रहेंगे, दुःख तो आते रहे आते रहेंगे।
पर कभी विश्वास की निधि लुट न पायेगी, बढ़ चलो मंजिल स्वयं ही पास आयेगी॥
क्यों रुका संकेत पर निष्ठुर नियति के, पथिक तेरे चरण तो प्रिय हैं प्रकृति के।
यह कँटीली राह खुद कलियाँ बिछायेगी, बढ़ चलो मंजिल स्वयं ही पास आयेगी॥
कामना निःस्वार्थ होगी सिद्धि तेरी, ज्योति में दिप जायेगी रजनी अंधेरी।
भावना की दीपमाला जगमगायेगी, बढ़ चलो मंजिल स्वयं ही पास आयेगी॥"

× × × × × "शंखनाद" पृ० २०-२१

"प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के सहोर पर।
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर॥
बढ़ चलते, बढ़ चलते, न चिन्ता दूर मंजिल की।
कभी तो पार पाएँगे, सबल मन के इशारे पर॥
न मुड़कर देखते पीछे, कठिन मंजिल सतत साथी।
जिन्हें कुछ काम करना है, नहीं मिटते मिटाने पर॥
अमिट विश्वास का बल ले, कुटिल जग में उतरते जो—
वही तो सिद्ध कहलाते, बराबर आजमाने पर॥
यही इतिहास कहता है— चढ़ा दो प्राण जनहित में।
सफलता तो सदा मिलती, स्वयं ही को मिटाने पर॥
अचल निज ध्येय पर होकर, मिला स्वातन्त्र्य भारत को।
कमर कसलो अरे हमने, नया भारत बसाने पर॥" "शंखनाद" पृ० २२

अस्तु हिन्दी की राष्ट्रीय धारा की कविता के क्रम में श्री 'कमलेश' जी का योगदान स्मरणीय है।

शोधकर्ता के मतानुसार "ऐसे प्रयास किए जाने चाहिए कि आचार्य शर्मा के जीवन-दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों के साहित्यिक योगदान से देश की नई पीढ़ी न केवल परिचित हो, उन सबकी स्मृति को चिर स्थाई भी बनाया जा सके।"

चतुर्थ अध्याय

आलोच्य काव्यों में युग निर्माण की प्रतिध्वनि

(क) लक्ष्य

(ख) संकल्प

(ग) लोक मंगल की कामना

(घ) महापुरुषों का गौरव गान

(ड.) जनजागरण के अभियान की स्वीकृति

(च) जीवन-संघर्ष का आह्वान

(छ) मानव मूल्यों की शिक्षा

आलोच्य काव्यों में युग निर्माण की प्रतिध्वनि

आचार्य श्रीराम शर्मा ने एक स्थान पर लिखा था- "अपने समन्वित स्वरूप की समग्रता के कारण इस युग के महानतम अभियान के रूप में 'युग निर्माण आन्दोलन' की ही गणना होगी। समय की आवश्कता, युग की पुकार और ईश्वरीय इच्छा का सम्मिश्रण इस भविष्यवाणी को सत्य सिद्ध करके रहेगा कि निकट भविष्य में ही सड़ी-गली और अवाँछनीय मान्यताएं एवं गतिविधियाँ अपना अस्तित्व खो बैठेंगी और विवेक, न्याय और औचित्य के आधार पर एक नए सिरे से जनमानस की मनोवृत्तियाँ, चिन्तन की दिशाओं, कार्यपद्धतियों एवं आचार संहिताओं का निर्धारण होगा। अब सारी दुनियाँ वैज्ञानिक विकास के कारण दिन-दिन अधिक छोटी होती जा रही है। सुदूरवर्ती प्रदेश गली-मुहल्ले की तरह एक दूसरे के समीप होते जा रहे हैं। एक स्थान की घटनाओं का प्रभाव व्यापक क्षेत्र पर पड़ता है और वसुध ैव कुटुम्बकम का आदर्श अब जाने-अनजाने, चाहने या न चाहने पर भी एक प्रत्यक्ष तथ्य बनता चला जा रहा है। एक विश्व, एक राष्ट्र, एक जाति, एक संस्कृति, एक आचार और एक विचार की आवश्यकता लोग तेजी से अनुभव कर रहे हैं और पूरी संभावना इसी आधार पर नये संसार का-नये समाज का और नये व्यक्ति का बनते, बदलने के अतिरिक्त जीवित रहने का और कोई उपाय नहीं है।"1 युग निर्माण आन्दोलन बदलते समाज के अनुरूप व्यक्ति और समाज बनने और संवरने की तीव्र प्रक्रिया होने के कारण अपनी स्वाभविक उत्कृष्टता सिद्ध करता है।

आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों के काव्य में युग निर्माण की प्रतिध्वनि स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। कतिपय उदाहरण कविवार अवलोकनीय है-

(1) श्री शचीन्द्र भटनागर-

"अब नवयुग की गंगौत्री" शीर्षक से - श्री शचीन्द्र भटनागर की एक रचना की कुछ पंक्तियां दृष्टव्य है-

अब नवयुग की गंगोत्री से बही ज्ञान की धारा है।
हम युग का निर्माण करेंगे, यह संकल्प हमारा है।। × × ×
धरती के कोने-कोने में, गली-गली में जायेंगे।

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा- हमारी श्रद्धा अब सक्रियता के रूप में बदले, अखण्ड ज्योति, वर्ष 31, अंक 9, पृष्ठ 56-57

तपी हवाओं से मुरझायी, कली-कली विकसायेंगे।।

गुरु का चिन्तन दुखी मनुजता की शीतल रसधारा है। हम युग का निर्माण करेंगे...

(2) श्री वीरेश्वर उपाध्याय- की एक रचना की कुछ पंक्तियां देखिए जिसमें युग निर्माण की प्रतिध्वनि स्पष्ट है-

प्रज्ञा युग आने वाला है-युग ने ली अंगड़ाई।
'युग निर्माण योजना' लेकर-नया संदेशा लाई।।

(3) श्री बलराम सिंह परिहार- की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं-

बहुत सताई गई मनुजता उसने बहुत चोट खाई।
अब तो उसे पुनर्जागृत करने की पुण्य घड़ी आई।।
'युग निर्माण योजना' वह संदेश मनोरम है लाई।
मन्दिर है तैयार प्रतिष्ठा की वेला भी बन आई।।

(4) श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय'- की रचना देखिए-

नए युग का हम ही सितारा बनेंगे, अगर मिट गए हैं, दुबारा बनेंगे।
नए युग का निर्माण करना है हमको, नए युग की दृढ़ नीव रखना है हमको।।
सृजन-साधना से न डरना है हमको, श्रम की ध्वजा बन फहरना है हमको।

(5) श्रीमती माया वर्मा- की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

उठो वीरो! कि तुमको युग नया निर्माण करना है।
सुकृति से, ज्ञान से, फिर सभ्यता की माँग भरना है।।
चढ़ा जो रंग पश्चिम का, उसे तुम पोंछ डालो प्रिय,
हमारी मान्यताएं गिर रहीं, उनको सम्हालो प्रिय।।

(6) श्री शिवशंकर मिश्र- की रचना देखिए-

करो न बंदी स्वार्थ, अहं से सर्वसिद्धि की कल्पना,
सब मिल जुलकर नर-नारायण की करो आज अभ्यर्थना,
कभी न रह पाते अपूर्ण अन्तरतम के संकल्प हैं,
निश्चय का सम्मोहन करता युग का काया-कल्प है,
सर्जन करो सबल हाथों से नया रूप इंसान का!
महायज्ञ प्रारम्भ हो गया आज नवल निर्माण का।।

(7) डा. रामस्वरूप खरे- की पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं-

परिवर्तन की होड़ लगेगी, जन बदले जीवन बदलेगा।
वह तूफान उठेगा जिससे, निर्माणों का तन बदलेगा।
अपना कर्म-स्वरुप सुधारो, अपना रूप अनूप करो तुम,
नव-पल्लव की ऋतु आने दो पीत-पात का क्रम बदलेगा।

बदले अपने को पहले तुम, निश्चय सारा जग बदलेगा!!

(8) स्व. श्री बाबूलाल जैन 'जलज' की पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं-

(1) सब मिलकर युग निर्माण करो,
द्वेष दम्भ की लंका में तुम, वीर बनो हनुमान बनो।
प्राणों का प्रत्यावर्तन कर, देव बनो भगवान बनो।
ज्ञान यज्ञ में आहुति देकर, जीवन सफल महान करो। सब मिल कर .....

(2) हँस-हँस कर जो लोहा लेता, आँधी से तूफान से,
जान हथेली पर रखकर जो भिड़ जाता पाषाण से,
अपनी आत्म चेतना से जो करता युग निर्माण है,
तम पहाड़ से जूझ-जूझ कर लाता नया विहान है।
जिसे नाम की नहीं काम की चिंता आठों याम है,
उसका ही जीवन इस जग में धन्य-धन्य अभिराम है।।

(9) डा0 हरगोविन्द सिंह- की एक रचना देखिए-

रह न जाय साधना अधूरी, कहता उर में राम है;
युग-निर्माण करो सब मिलकर, यह हरि का ही काम है।
आये जितने भी बलिदानी, वे घर-घर बन गये कहानी;
राम काज में जो खो जाये, वह हनुमान बने, जय पाये;
त्यागी तो पारस बनता है, खोता नहीं क्षदाम है। युग निर्माण करो सब मिलकर.....

("निर्माण-साधना" कविता से)

(10) श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'- की पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं-

(1) हम चले विपरीत आँधी में हमारे, वक्ष से तूफान टकराते चले।
हम बवाण्डर बिजलियों के दौर में, रोशनी के फूल बिखराते चले।
सब विरोधी शक्तियाँ चरणों झुकी, हो चरण की साधना तो साथ दो।
चल पड़ा है काँरवा निर्माण का, हो सृजन की कामना तो साथ दो।।

(2) आदि के अध्याय लिखती, अश्रु की गीली कथा।
जागती नवचेतना में विश्व की करुणा-व्यथा।
सूखती भागीरथी का युग प्रवाह उमड़ पड़ा,
अंगिरा, आदित्य का युगवंशधर तनकर खड़ा,
डूबती मनु-पीढ़ियों को, दे सहारा प्राण का।
जागरण दृग में बसाये, स्वप्न युग निर्माण का।।
ओ हिमालय के शिखर, गुरुता तुम्हारी को नमन।

(11) डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया- की पंक्तियाँ देखिए-

संतप्त युग की वेदना को, अब तुम्हें ही है मिटाना।
सत्य प्रेम-श्रद्धा हृदय में, दिव्य भावों को जगाना।।
सात रंगों की घटा, युग निर्माण करके तुम दिखाओ।
सृजन-शिल्पी! इन्द्रधनुषी, सात आन्दोलन चलाओ।

(12) श्रीमती विद्यावती मिश्र- की पंक्तियाँ बलिदानों की नींव पर ही राष्ट्र का निर्माण करने का संकेत करती हैं-

स्वतंत्रता-श्री का यह निश्चित इष्ट और संदेश,
सर्वोन्नति है सर्व त्याग का ही मोहक परिवेश,
आज कर्म याचक न कीर्ति का जय न उसे श्रृंगार,
अग्नि परीक्षा पंथ व्रती का और मरण त्योहार,
संघर्षो के अभिशापों में ही प्रकटे वरदान!
बलिदानों की नींव राष्ट्र का करती है निर्माण!!

(13) डा0 त्रिलोकी नाथ 'ब्रजवाल'- की पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं-

विश्व के हर पंथ में हम फूल भर दे,
विघ्न के हर शैल को हम धूल कर दें,
निर्वलों में बल भरें मिलकर चले सब,
सृष्टि को नवरुप दे हम फिर सजायें। ('पाथेय' पृ. 38)

4.1 लक्ष्य

अपने विकास के सिद्धान्त के अनुरूप आचार्य श्रीराम शर्मा ने मानव में देवत्व एवं धरती पर स्वर्ग के अवतरण की घोषणा की। अन्य गंभीर विचारकों की तरह उन्होने भी मानव के वर्तमान संकट को देखा और परखा; परन्तु वह बौद्धिक विकृतियों से उपजे इस संकट का समाधान एक नयी बौद्धिक पहेली के रूप में नहीं देते हैं। उनके अनुसार समाधान मानव का देवमानव की ओर आरोहण है। उनका समस्त जीवन इसी कार्य के लिए अर्पित था। वर्तमान स्थिति कितनी भी निराशावादी क्यों न हो, फिर भी आचार्य शर्मा के आशावाद के अपने कारण हैं, उनमें से एक है व्यक्तित्व का रूपान्तरण।

व्यक्तित्व के रूपान्तरण का अर्थ है- चरित्र, चिन्तन, व्यवहार का रूपान्तरण, गुण, कर्म, स्वभाव में बदलाव। मानवी चेतना के इसी उत्कर्ष को आचार्य जी ने मानव में देवत्व का उदय कहा है। एक साक्षात्कार वार्ता में डा. प्रणव पण्ड्या शोधकर्ता को उत्तर देते हैं- "जहाँ तक समग्र रूपान्तरण की बात है, हमने ऐसे व्यक्ति के रूप में गुरुदेव (आचार्य शर्मा जी) एवं

माताजी (माता भगवती देवी शर्मा) को देखा है। उनके जीवन को गहराई से जाना-परखा है। परन्तु ऐसे लोग भी कम नहीं है जो रूपान्तरण की इस प्रक्रिया में बहुत दूर तक जा चुके है। यदि एक अर्थ में यह कहा जाय कि वैज्ञानिक अध्यात्म के तत्वदर्शन व प्रयोग प्रक्रियाओं का अपने जीवन में आत्मसात करने वाला समूचा 'गायत्री परिवार' इस रूपान्तरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है तो कोई अत्युक्ति न होगी। रूपान्तरण के पश्चात गायत्री परिवार के सदस्य देवमानव के परिवार में बदल जायेंगे। क्योंकि इस प्रक्रिया का लक्ष्य यही है इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए आचार्य शर्मा जी ने गायत्री परिवार का एक नाम 'देव परिवार' भी रखा था। यही आध्यात्मिक समाज का आधार है।"1

'युगशिल्पी की योजनाबद्ध कार्य पद्धति' में युग शिल्पियों के सप्त महाव्रत के अन्तर्गत ब्रह्मवर्चस के नाम से आचार्य शर्मा लिखते है- "युग शिल्पियों को आत्मकल्याण और लोकमंगल का दुहरा उत्तरदायित्व संभालना है, इसमें उन्हें अपना व्यक्तित्व अपेक्षाकृत अधिक पवित्र, प्रखर एवं व्यवस्थित बनाना है।"2 आचार्य शर्मा क मतानुसार कुछ विशेष सद्गुणों को बढ़ाने के लिए अनवरतप्रयत्नकरना चाहिए। जोसमझना और बढ़ाना है, वह इस प्रकार हैं-

लक्ष्य और चिंतन- आचार्य शर्मा के मतानुसार "जीवन को ईश्वर प्रदत्त सर्वोपरि उपहार समझा जाय और उसका उद्देश्य स्रष्टा के विश्व-उद्यान को अधिकाधिक समुन्नत -सुसंस्कृत बनाना मानें। इस प्रयास में आत्मकल्याण और विश्वकल्याण के दोनों उद्देश्य पूरे होते है। बड़प्पन की महत्वाकांक्षाओं को घटायें। महानता प्राप्ति की उत्कंठा उभारें। वासना-तृष्णा के, लोभ-मोह के भवबन्धनों में न जकड़े। सद्उद्देश्यों के आकाश में सत्प्रवृत्तियों के पंख पसारें और जीवन मुक्तों की तरह परम 'लक्ष्य' की उपलब्धि के लिए उड़ चलें। पीछे मुड़कर न देखें। वर्तमान का संभालें, भविष्य की सोचें। ज्ञानयोगी की तरह सोचें, कर्मयोगी की तरह पुरुषार्थ करें, भक्तियोगी की तरह सहृदयता उभारें और उसे पतन-पराभव के निराकरण में नियोजित करें।"3

ईश्वर विश्वास से लक्ष्य की प्राप्ति- चारों वेदों में वर्णित गायत्री महामंत्र न केवल लक्ष्य की खोज में सहायक है, बल्कि साररूप में स्वयं ही जीवन का परम लक्ष्य है। पापनाशक परमात्मा को अपनी अन्तरात्मा में धारण करके और सन्मार्ग पर दृढ़ता से चल करके ही मनुष्य अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। लक्ष्य के बिना जिन्दगी भूल भुलैयों का भटकाव भर है। जब तक साध्य

1. डा0 प्रणव पण्ड्या- साक्षात्कार वार्ता
2. आचार्य श्रीराम शर्मा- युगशिल्पी की योजनाबद्ध कार्य पद्धति, पृष्ठ 23
3. ब्रहमवर्चस- सृजन शिल्पी की योजनाबद्ध कार्य पद्धति, पृष्ठ 230

का ही पता नहीं तब तक साधना और साधन सभी अर्थहीन है। लक्ष्य को निर्धारित किए बगैर अपनी आन्तरिक शक्तियों के प्रयोग की सही दिशा ही निश्चित नहीं होती। सम्भावनाएं साकार होने के पहले ही मुरझाने लगती हैं। ऐसा न हो, इसके लिए परम आवश्यक है- लक्ष्य की खोज। लक्ष्य को खोजते समय-उसे निर्धारित करते समय अपने अर्न्तमन की पड़ताल करना जरूरी है, क्योंकि इसी से मिलने वाले तथ्यों का विवेचन करके हम सही जीवन-लक्ष्य का निर्धारण कर सकते है। अन्तर्मन की पड़ताल में निम्न बिन्दु अवलोकनीय है-

पहला बिन्दु स्वयं में समायी प्रतिभा की पहचान यानि कि एक-एक करके उन सभी विशेषताओं को जानना, जो अपनी अभिव्यक्ति के लिए छटपटा रही है, कसमसा रही हैं।

दूसरा बिन्दु ईश्वर प्रदत्त वह स्फुरणा, जो प्रारम्भिक दिनों से हमें तरंगित करती रही है। इस स्फुरणा को पहचानने के लिए बस, यह जानना जरूरी है कि वह कौन-सी प्रेरणा है जिसने बार-बार अपने मन के मर्म को छुआ है।

तीसरा बिन्दु वे चुनौतियाँ, जो बार-बार हमारी राहों में आकर खड़ी हुई और जिन से हम आज भी घिरे हैं। लक्ष्य निर्धारित करते समय इन चुनौतियों की गहरी छान-बीन अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इनसे उबरे बिना हम अपने लक्ष्य की ओर नहीं बढ़ सकते।

चौथा बिन्दु के रूप में हमारे अपने जीवन मूल्य है, जिन्हें अपनी सांसों में हमने बसा रखा हैं प्रायः ये कुछ श्रेष्ठ विचार एवं श्रेष्ठ कर्तव्यों के रूप में हमारे साथ होते हैं और इन्हें हम किसी भी हाल में छोड़ना नहीं चाहते।

पाँचवाँ बिन्दु उन संसाधनों के बारे में है, जो हमारे पास अभी हैं,क्योंकि यही वह पूँजी है, जो लक्ष्य की ओर बढ़ते समय हमारे काम आएगी।

छटा बिन्दु उन सुअवसरों के बारे में है, जिन्हें नियति ने हमें प्रदान कर रखा है।

इन छः बिन्दुओं पर भली भाँति विचार करके हमें अपने लक्ष्य की खोज और उसका निर्धारण करना चाहिए। लक्ष्य की खोज के बाद आवश्यकता होती है उस पर सम्पूर्ण एकाग्रता की।

सम्पूर्ण एकाग्रता का तात्पर्य है, सारा व्यक्तित्व उस लक्ष्य में घुल जाएं, यहाँ तक कि लक्ष्य परिभाषित होने लगे। दृढ़ता, भक्ति एवं निष्ठा इन तीनों के आ मिलने से फिर लक्ष्य का पूरा होना सुनिश्चित है। सारे असम्भव कार्य संभव होने लगते हैं। लक्ष्य की ओर बढ़ते कदमों में अपने आप ही वेग आ जाता है। यहाँ तक कि उपयुक्त अवसर भी स्वयं ही पनपने लगते हैं। साथ ही सफलताओं की कतार भी नजर आने लगती है। युग द्रष्टा स्वामी

विवेकानन्द कहते हैं- "जिन्हें अनुभव है वे जानते हैं कि मस्तिष्क में दैवी सहायता का विचार आते ही एक ऐसी अद्‌भुत शान्ति मिलती है, जिसका शब्दों में वर्णन करना कठिन है। जब कभी मैने अपने लक्ष्य की साधना में अकेलापन महसूस किया है, ईसा का एक प्रेम पूर्णवचन हमेशा याद आता है। भयभीत न हो, निराश न हो, क्योंकि मै तुम्हरा भगवान, तुम्हारा ईश्वर सदा तुम्हारे साथ हूँ। जहाँ-जहाँ भी तुम जाओगे मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"1

आचार्य शर्मा जी के मतानुसार- "दैवी सहायता एवं दैवी अनुभूति के ऊर्जावान क्षण सदा ही पवित्र एवं उच्च लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक बने है। हाँ, इतना अवश्य है कि लक्ष्य यदि व्यापक एवं विराट है तो हमें उसे कई कदमों में पूरा करना चाहिए। इसके लिए अच्छा हो कि हम प्रत्येक वर्ष, महीने एवं पाक्षिक उद्‌देश्यों का निर्धारण कर लें और शनैः-शनैः किन्तु दृढ़ता, भक्ति एवं निष्ठा के साथ उस ओर बढ़ें। परमेश्वर को अपना सहायक मानें और गायत्री महामंत्र का स्वयं का संबल। इस दैवी संबल से लक्ष्य की दूरी सहजता पूर्वक तय करने की एक अपूर्व रहस्यमयी क्षमता व्यक्तित्व में पैदा हो जाती है बस, इस क्रय में लक्ष्य की ओर बढ़ते कदमों के साथ अपने स्वास्थ्य की अनदेखी न करें।"2

"लक्ष्य" की इस अवधारणा को आचार्य शर्मा जी के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं में अभिव्यक्त किया है, उदाहरण अवलोकनीय हैं-

1. श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' की कविता का एक अंश अवलोकनीय है-

आचरण के शिल्प की ही साधना है,
यज्ञ-युग निर्माण का जिसने रचा है, पढ़ रहा नूतन सृजन की ही ऋचा है।
यज्ञ-युग निर्माण का साधारण नही है, सिद्ध सृष्य की अनूठी कल्पना है।आचरण .....

2. श्री शचीन्द्र भटनागर- की रचना 'ऐसी कृपाकरो जगजननी', की पंक्तियों दृष्टव्य हैं-

"जीवन-लक्ष्य, सुझाया तुमने, कभी न उसको भूलें हम,
धन-साधन-सम्मान मिले तो, जरा न मद में फूलें हम,
कहीं न हों पग डगमग-डगमग, पल भर भी न कभी भय हो,
सत्‌चिंतन, सद्‌भाव जगे, सत्कर्मो की जग में जय हो,
ऐसी कृपा करो जग जननी, जीवन गायत्री मय हो।।"

1. स्वामी विवेकानंद- विवेकानन्द साहित्य, खण्ड-1, पृष्ठ 128
2. आचार्य श्रीराम शर्मा- ईश्वर विश्वास से लक्ष्य की प्राप्ति, अखण्ड ज्योति, वर्ष 68, अंक 1,

3. श्री जितेन्द्र रघुवंशी- की एक रचना का अंश देखिए-

"कौन कहेगा ? "दिव्यशक्ति" से, आए हाथ बँटाने को,
युग पुकार को सुन अब जाते, दानव से टकराने को।
तन-मन-धन सब अर्पण करके, स्वर्गधरा में लाने को।
अवतरित हो चुकी, 'शक्ति' पुनः यह, संदेशा पहुँचने को।।"

4. श्री रामकुमार भारतीय- की पंक्तियाँ दृष्टव्य है-

"अब दूर नहीं है, वह दिन जब, सबमें मानवता आएगी,
सब ओर विश्व में सत्य-न्याय की, धर्म ध्वजा फहराएगी।
टूटेंगे अब सब क्षुद्र बाँध लहराएगा सागर विशाल।
अब फिर से सतयुग आएगा यह बोल रहा है महाकाल।।× × ×
परमपिता परमेश्वर हमको दो ऐसा वरदान,
अच्छाई की राह चले सब नेक बने इंसान।
ऐसा करें प्रयत्न, बने यह धरती स्वर्ग समान।।

5. स्व0डा0 हरगोविन्द सिंह- की पंक्तियाँ देखिए-

"कहाँ छुपा बैठा है अब तक वह सच्चा इंसान,
खोजते जिसे स्वयं भगवान।
जिसने जानी पीर पराई, परहित में निज देह तपाई,
जिसने लगन दीप की पाई, तिल-तिल जलकर ज्योति जलाई,
उसकी आभा से ही होगा देवों का सम्मान। खोजते जिसे.....

"लक्ष्य अपना पूर्ण करले, सफल पूर्णाहुति वही हो,
मंत्र हों सिद्धान्त जिनमें त्याग की ध्वनि रम रही हो।
आरती ऐसी करें परमार्थ हो जगमग जगत में।।"

6. स्व. श्रीमती मायावर्मा- की पंक्तियाँ देखिए -

(1) फिर अपनी क्या बात ? व्यर्थ सहयोग प्राप्ति की आशा करना,
अपने ही श्रम और शक्ति पर जीवन लक्ष्य हमें है वरना।।
ऐसे ही जन का इतिहासों ने, श्रद्धा से नाम लिया है।
उतना ऊँचा उसका जीवन, जितना जिसने जहर पिया है।।× × ×

(2) कह दो संस्कृति की सीता से, विरह काल अब बीता।
हार चला रावणत्व और देवत्व मनुज का जीता।।× × ×

(3) जिसका चरित्र गंगा जल-सा, है स्वच्छ विमल पावन निर्मल,
जिसके उर में सद्भावों की धारा बहती कल-कल, छल-छल,
वह है लक्ष्मण जिसने पर नारी का समझा माँ सीता है।

उसका हर आँसू रामायण, प्रत्येक कर्म ही गीता है।।
औरो के हित जो मरता है औरों के हित जो जीता है,

7. श्री बलराम सिंह परिहार- की कविता 'स्वर्ग को चल पड़े स्वर्ग के देवता' अवलोकनीय हैं-

लो हुआ मुक्त अब आदमी तोड़कर, युग युगों से लगी मोह की अर्गला।
एक ही शह लगी-मात खाने लगी, काम की, क्रोध की, लोभ की श्रृंखला।।
मेखला बाँधकर कर्म की देह-से श्रम जगा, तम भगा, शक्ति मिलने लगी।
स्वर्ग को चाल पड़े, स्वर्ग के देवता- इस धरा पर असुर वृत्ति हिलने लगी।।

8. स्व0 श्रीमती विद्यावती मिश्र- की रचना देखिए-

(1) जन-जन के प्रति विमल भावना, सबके हित की रहे कामना।
यह जीवन ही बने साधना
मेरे मन में कर्तव्यों के प्रति अनुराग भरो। आज तुम ऐसी कृपा करो।।
मातृभूमि से प्यार हमें दो, निर्मल हृदय उदार हमें दो, अपना मृदुल दुलार हमें दो,
लक्ष्य दीप बनकर के मेरे मानस में निखरो। आज तुम ऐसी कृपा करो

(2) मैं चाहती अगणित स्वरों में, विश्व को यह दूँ बता। इंसान मेरा देवता।
पट बंद हों ऐश्वर्यता के, अब सदा को आज से,
भगवान अब बाहर न होगा, लोक और समाज से।
देवत्व का ही नाम होगा मनुजता। इंसान मेरा देवता।।

9. महात्मा आनन्द सागर- की पंक्तियाँ अवलोकनीय है-

इबादत है किसी नाशाद को फिर शाद कर लेना,
इबादत है किसी बरबाद को आबाद कर देना। × × ×
बजा घण्टी, न जा मन्दिर, न मस्जिद में सजदा करना।
न मत्था टेक गुरुद्वारे, न गिरजा में दुआ करना।।
सभी जीवों के दिल को मसजिदो मन्दिर बना लेना।
यही पूजा है सुख के फूल हर दिल पर चढ़ा देना।।
यही सीखा है 'सागर' हमने मुर्शद के कदम छूके,
खुदा से हो अगर मिलना पता खुद का लगा लेना।।

10. श्रीमती उमाशर्मा (पूर्व नाम सुश्री उमा बुधौलिया) की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

नये जगत के निर्माताओं, आगे कदम बढ़ाओ,
दिव्य ज्योति का अवलम्बन ले, धरती स्वर्ग बनाओ।
अपनी कुछ परवाह न करना, किन्तु दूसरों के हित मरना।
जीवन की इस बागडोर को, जग उपवन में अर्पित करना।।

होता हो कल्याण विश्व का ऐसी ज्योति जलाओ। दिव्य ज्योति का .....

11. डा. रामस्वरूप खरे- की पंक्तियाँ देखिए-

"तेरा है सुन्दर स्वप्न नया, कल्पना नई भावना नई।
है अर्चन-पूजन प्रेम भरा, है लक्ष्य नया, है राह नई।।
गाओ तो कवि! गीत नया अब, लय बदलेगी, स्वर बदलेगा।
मौसम भी बदलेगा साथ, युग बदलेगा, युग बदलेगा।।
बदलो अपने को पहले तुम, निश्चय सारा जग बदलेगा।"

11. श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' की पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं-

संगीत मार्ग में भटक गया, सुर असुर भाव में अटक गया,
जो आदर्शों को जगा सके, वाणी की गरिमा निभा सके।।
मन में दैवी उल्लास भरे, युग गान हमें वह रचना है।
हिलमिल कर धरती पर रहले, इंसान हमें वह रचना है।
दिल की धड़कन के साथ चले, विज्ञान हमें वह रचना है।।

12. श्री बाबूलाल जैन 'जलज'- की रचना अवलोकनीय है-

श्रेष्ठकर्म के चरण बढ़े हैं, धरती पर इंसान के।
सदियों बाद जगत में अब फिर स्वर गूँजे निर्माण के।।
आदर्शों की फसल न सुखे, रहे न जग में कोई भूखे।
समता-भाव हृदय में जागे, गये लगाएं बढ़कर आगे।।
परहित में जो अर्पण करता, वही निकट भगवान के।। सदियों बाद .....

13. श्री वीरेश्वर उपाध्याय- की रचना की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं-

दिव्य ज्ञान धरती पर लाये, युग के भागीरथ कहलाये,
मानव में देवत्व जगाने, इस धरती को स्वर्ग बनाने।
मानवता को दिव्य सम्पदा देकर माला-माल किया, सचमुच बड़ा कमाल किया।
जन्म लिया आँवलखेड़ा में, सारा जगत निहाल किया।।

14. डा0 त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल- गुप्त की भांति "पाथेय" का कवि डा0 ब्रजवाल इस भूतल को स्वर्ग बना लेना चाहता है-

"स्वर्ग का संसार हम भू पर बसायें।
आज नव निर्माण के हम गीत गायें।"

(ख) संकल्प -

युग निर्माण जिसके परिप्रेक्ष्य में 'गायत्री परिवार' अपनी निष्ठा और तत्परता पूर्वक अग्रसर हो रहा है, उसका बीज सत्संकल्प है। इसी आधार पर

आचार्य शर्मा के युग निर्माण मिशन की सारी विचारणा, योजना, गतिविधियाँ एवं कार्यक्रम संचालित होते हैं, इसे युग निर्माण मिशन का घोषणा पत्र भी कहा गया है। संकल्प की शक्ति अपार है। यह विशाल ब्रह्माण्ड परमात्मा के एक छोटे संकल्प का ही प्रतिफल है। यह सृष्टि परब्रह्म के संकल्प से ही उपजी है। परमात्मा में इच्छा उठी "एकोऽहं बहुष्याम"- मै अकेला हूँ, बहुत हो जाऊँ, इस संकल्प के फलस्वरूप तीन गुण, पंचतत्व उपजे और सारा संसार बनकर तैयार हो गया। मनुष्य के संकल्प के द्वारा इस ऊबड़-खाबड़ दुनियाँ को ऐसा व्यवस्थित रूप मिला है। यदि ऐसी आकांक्षा न जगी होती, आवश्यकता अनुभव न होती तो कदाचित् मानव प्राणी भी अन्य वन्य पशुओं की भाँति अपनी मौत के दिन पूरे कर रहा होता।

इच्छा जब बुद्धि द्वारा परिष्कृत होकर दृढ़ निश्चय का रूप धारण कर लेती है, तब वह संकल्प कहलाती है। मन का केन्द्रीकरण जब किसी संकल्प पर हो जाता है, तो उसकी पूर्ति में विशेष कठिनाई नहीं रहती। मन की सामर्थ्य अपार हैं जब भावना पूर्वक मनोबल किसी दिशा में संकल्पित हो जाता है, तो सफलता के उपकरण अनायास ही जुटते चले जाते हैं। बुरे संकल्पों की पूर्ति के लिए भी जब साधन बन जाते हैं, तो सत्संकल्पों के बारे में कहना ही क्या है? धर्म और संस्कृति का जो विशाल भवन मानव जाति के सिर पर छत्रछाया की तरह मौजूद है, उसका कारण ऋषियों का संकल्प ही हैं संकल्प इस विश्व की सबसे प्रचण्ड़ शक्ति है। विज्ञान की शोध द्वारा अगणित प्राकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त करके वशवर्ती बना लेने का श्रेय मानव की संकल्प शक्ति को ही है। शिक्षा, चिकित्सा, शिल्प, उद्योग, साहित्य, कला, संगीत आदि विविधा दिशाओं में जो प्रगति हुई है अथवा आज दिखाई पड़ती है उसके मूल में मानव का संकल्प ही सन्निहित है, इसे प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष कहा जा सकता है। आकांक्षा को मूर्त रूप देने के लिए जब मनुष्य किसी दिशा विशेष में अग्रसर होने हेतु दृढ़ निश्चय कर लेता है, तो उसकी सफलता में कोई संदेह नहीं रह जाता।

आज प्रत्येक विचारशील व्यक्ति यह अनुभव करता है कि मानवीय चेतना में वे दुर्गुण पर्याप्त मात्रा में बढ़ चले हैं, जिनके कारण अशान्ति और अव्यवस्था छाई रहती हैं इस स्थिति में परिवर्तन की आवश्यकता अनिवार्य रूप से प्रतीत होती है। आचार्य शर्मा जी के मतानुसार यह कार्य केवल आकांक्षा मात्र से पूर्ण न हो सकेगा, इसके लिए एक सुनिश्चित दिशा निर्धारित करनी होगी और उसके लिए सक्रिय रूप से संगठित कदम बढ़ाने होंगे। इसके

बिना हमारी चाहना एक कल्पना मात्र बनी रहेगी। *युग निर्माण सत्संकल्प* उसी दिशा में एक सुनिश्चित कदम है। युग परिवर्तन के लिए जिस अवतार की आवश्यकता है, वह पहले आकांक्षा के रूप में ही अवतरित होगा। इसी अवतार का सूक्ष्म स्वरूप आचार्य शर्मा का युग निर्माण सत्संकल्प है, इसके महत्व का मूल्यांकन गंभीरता पूर्वक किया जाना चाहिए।

संकल्प जितना सुनिश्चित होगा, कार्य उतना ही व्यवस्थित होगा। संकल्प जितना प्रखर होगा कार्य उतना ही प्रभावपूर्ण होगा। इसलिए हर श्रेष्ठ कर्म के पहले देवशक्तियों के समक्ष अपने उद्देश्य की स्पष्ट एवं सुनिश्चित घोषणा संकल्प के माध्यम से की जाती है।

विकसित संकल्प शक्ति ही आध्यात्मिक प्रगति की परिचायक –

अथर्ववेद की एक ऋचा है- "यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा यावदापः सिष्य दुर्यावदग्निः।
ततस्त्वमसि ज्यायान विश्वहा महांस्तस्मै त काम नम इत् कृणोमि।।"

अर्थात्- हे संकल्प शक्ति! जितने विस्तार में द्युलोक और पृथिवी है, जितना जल फैला हुआ है और जितनी आग फैली हुई है, उससे बड़ी तुम हो। तुम सदा महान हो। ऐसे तुमको ही मैं नमस्कार करता हूँ।"1

संकल्प में समायी शक्ति का मूल स्वरूप आध्यात्मिक है। व्यक्ति जब अपनी कल्पना की तरंगों के बुद्धि से संवारता है कल्पनाओं के संजाल को बुद्धि की कैंची से काट-छाँटकर इनके बहुत्व को एकत्व में बदलता है, जब सारी कल्पनाएं एकाग्र हो एक कल्पना का रूप लेती हैं, संकल्प का अंकुरण शुरू होता है। इनसे जब हृदय की समूची भावनाओं, अस्तित्व में समूची प्राण शक्ति और सम्पूर्ण मानसिक ऊर्जा उढ़ेली जाती है, तब संकल्प शक्ति अपना आकार पाती है। समूचा अस्तित्व, सम्पूर्ण व्यक्तित्व इस पर आ टिकता है। जो ऐसा करने में सक्षम होते हैं, उन्हीं के जीवन में संकल्प शक्ति के चमत्कार देखने को मिलते हैं।

जब हम स्वयं में दृढ़ संकल्पित हो जाते हैं, जब एक बार कोई काम हाथ में ले लेते हैं अथवा अपने मन में कुछ पाने का निश्चय कर लेते हैं, तो बस अपार धीरज के साथ उसको पूरा करने के लिए संलग्न हो जाते हैं। आध्यात्मिक दृष्टिकोण के अभाव में ही बाधाएं-समस्याऐं हमें हताश और निराश करती हैं और हमारा संकल्प क्रमिक रूप से दुर्बल होकर टूट जाता है।

संकल्प शक्ति के क्षय होने, संकल्प क दुर्बल होने अथवा टूट

1. अथर्ववेद-9/2/20

जाने के कारणों से हमारा परिचय जरूरी है, क्योंकि इन्हें पहचान कर ही इनसे बचा जा सकता है। इन सबमें से प्रमुख है- चिंता करने की आदत। प्राय: हम इस सत्य की उपेक्षा कर देते हैं कि यह संसार एक दिव्य ईश्वरीय योजना और उन्हीं प्रभु की इच्छा से नियन्त्रित है। इस सत्य की अवहेलना करने वाले व्यक्ति को ईश्वर के प्रति समर्पित होने की कला नहीं आती। परिणामत: मन में चिंता उद्वेग एवं अनेक तरह की उलझनें उत्पन्न हो जाती हैं। जब चिन्ता करने की आदत गहरी हो जाती है तो फिर हम कितनी भी अच्छी स्थिति में क्यों न रहें, हमें सदा ही चिंता सताती रहती है। ऐसे चिन्तित व्यक्ति का संकल्प सदा ही दुर्बल रहता है। यदि हम विधेयात्मक चिन्तन की कला में प्रवीण हो जाते हैं तो हमारी आन्तरिक शक्तियाँ प्रबल होती जाती हैं और हमारा संकल्प-बल बढ़ता रहता है। इसके विपरीत यदि केवल नकारात्मक सोच के शिकंजे में रहते हैं तो अपने आप ही संकल्प शक्ति दुर्बल होती रहती है।

आचार्य शर्मा के मतानुसार "यदि कभी यह मालूम करना हो कि व्यक्ति में आध्यात्मिक जीवन कितना विकसित हुआ है। तो यह परखना चाहिए कि उसकी संकल्प शक्ति कितनी विकसित हुई है।"1 संकल्प शक्ति को विकसित करने की कुछ महत्वपूर्ण बातें आचार्य शर्मा ने सुझाई हैं जो अवलोकनीय हैं-

1. अपनी असफलताओं को पूर्ण परिपक्वता के साथ स्वीकारें। संकल्प शक्ति के अभाव में ही हम असफल होते हैं। इसलिए प्रत्येक असफलता के बाद अपनी गहरी छान-बीन करें। अपने दोष दूसरों के मत्थे मढ़ने के बजाय उन्हें स्वीकारें और सुधारें। इस तरह संकलप शक्ति का तीव्र विकास होता है।
2. सच्चे अर्थों में बड़े बने इसका अर्थ केवल इतना है कि अहंकार का बढ़ाने के बजाय अपने सद्‌गुणों को बढ़ायें । इस तरह स्वाभाविक ही संकल्प-ऊर्जा बढ़ेगी।
3. परमेश्वर द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं का स्वागत करें। विश्वास करें, जीवन में प्रत्येक कष्ट हमारी योग्यता का विकसित करने के लिए आता है। यदि कष्टों से उचित रीति से निपटा जाएगा तो संकल्प शक्ति का असाधारण विकास होगा।
4. विरोधी एवं बुरे व्यक्तियों के साथ व्यवहार की कला सीखें। जब तक हम इस संसार में हैं, तब तक सभी तरह के व्यक्तियों से व्यवहार करना सीखना

1. ब्रहमवर्चस- जीवनपथ, पृष्ठ 18

पड़ेगा, यहाँ तक कि उनसे भी, जो हमारे विरोधी और बुरे हैं। उनसे व्यवहार करते समय भी सहिष्णु और उदार बने रहें। इनके जीवन की केवल अच्छाइयों से मतलब रखें बाकी निषेधात्मक पक्षों से दूर रहें।

5. शारीरिक तप की शुरूआत करें। संकल्प शक्ति की बढ़ोत्तरी में शारीरिक तप का भी भारी महत्व हैं उपवास, अस्वाद व्रत, मौन आदि प्रयोगों में संकल्प शक्ति का बड़ा ही त्वरित विकास होता है। इस प्रक्रिया में सजल संवेदनाओं का भी असाधारण महत्व हैं जिनकी भावनाएं ईश्वरोन्मुख हैं, उनके संकल्प कभी अधूरे नहीं रहते।

आलोच्य काव्यों में "संकल्प" की अभिव्यक्ति-

आचार्य श्रीराम शर्मा के संकल्प की अवधारणा के सन्दर्भ में अभिव्यक्ति उनके चिन्तन से प्रभावित समकालीन कवियों ने अपनी विभिन्न रचनाओं में की है, उदाहरण अवलोकनीय है-

1. श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' की रचनाएं दृष्टव्या है-

(1) संकल्पों के बिना न आता, प्राणों बीच उछाल,
अब उज्जवल भविष्य को कोई समझे नहीं मखोल।
कोटि-कोटि शिव संकल्पों ने द्वार दिए है खोल,
स्वागत इक्कीसवीं सदी का, लेकर लाल मशाल।

(2) हुआ सृष्टि निर्माण न यूँ ही, हुआ ब्रह्म संकल्प से,
है संकल्प शक्ति अनूठी, रहती रहित विकल्प से।
श्रेष्ठ कर्म के लिए घोषणा करते हैं संकल्प ही,
कार्य नहीं पूरे हो पाते, केवल साहस-स्वल्प से।

(3) "कुछ भी नहीं असम्भव होता जब संकल्प किए जाते हैं,
संकल्पों को जब साहस के सुदृढ़ चरण दिए जाते हैं।
बाधाओं की क्या बिसात फिर रुख तूफान बदल सकता है,
बदला जाये दृष्टिकोण यदि तो इंसान बदल सकता है।"

2. श्री वीरेश्वर उपाध्याय- ने मन को सदा शिव संकल्पमय बने रहने की प्रार्थना *शिव संकल्पोपनिषद्* के पद्यानुवाद के माध्यम से की है जो अवलोकनीय है-

"तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु "

"जो तीव्र गति से सर्वत्र गामी, जाग्रत अवस्था या स्वप्नमय हो।
है ज्योतिमानों में स्वप्रकाशित,वह मन सदा शिव संकल्पमय हो।।1।
जिसके सहारे सब कर्मयोगी, यज्ञादि-सत्कर्म करते सदय हों।
सब प्राणियों में, प्रकृति में सुशोभित, वह मन सदा शिव संकल्पमय हो।।2।।

जो बुद्धि में, चित्त-अन्तः करण में, रहता अमर ज्योति के साथ लय हो।
जिसके बिना कर्म रहते असंभव, वह मन सदा शिव संकल्पमय हो ।।3।।
जो भूत भावी सहित हर समय को, धारण किये रहता बोधमय हो।
करते यजन जिससे सप्त-होता, वह मन सदा शिव संकल्पमय हो।।4।।
ऋक-साम-यजु वेद जिस पर टिके हैं, धुरे पर *'अरे'* ज्यों टिका शक्तिमय हो।
टिके हैं उसी पर सभी हित प्रज्ञा के, वह मन सदा शिव संकल्पमय हो।।5।।
अश्वादि को सारथी ज्यों चलाता, मन हाँकता इन्द्रियों को अभय हो।
हृदयस्थ जो है अजर शक्तिशाली, वह मन सदा शिव संकल्पमय हो।6।।"1

3. श्री बाबूलाल जैन 'जलज' की पंक्तियां देखिए-

आज नया जन्म मिला, आज नयी शक्ति मिली।
लेकर संकल्प नया, आज नयी ज्योति जली।
कुटियों के भाग्य जगे, धरती मुस्काई है।
तुलसी के चौरे पर, खुशियाली छाई है।।
गली-गली, द्वार-द्वार लगते हैं आज भले,
सुधियों के आँगन में प्राणों के दीप जले।
निज का संकल्प लिए उत्साहित हर्षाये, मन में स्नेह भरे ज्योति दान ले आये।।
("प्राणों के दीप जले" कविता से)

4. श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' की एक कविता का अंश दृष्टव्य है-

मुस्कराना हमारा रुकेगा नहीं, गीत गाना हमारा रुकेगा नहीं।
चेतना का तराना, रुकेगा नहीं, शोर को शान्ति का मंत्र देते हुए। ×××
जा रहे हैं गगन के चरण नापते ।।
कौन है? रोक ले जो प्रगति के चरण, कौन? जो रोक ले, जगमगाती किरण,
कौन? जो रोक ले, सनसनाती पवन, जागते शक्ति संकल्प के हौंसले।
दानवी-दस्युदल भीति से काँपते, साधना चल पड़ी भोर के रास्ते ।।

5. डा0 हरगोविन्द सिंह- की पंक्तियां दृष्टव्य हैं-

"चले हम नया आज संकल्प लेकर, बदल दें जमाना स्वयं को बदलकर।
कहीं आसुरी वृत्तियाँ रह न जाएं, किसी को न पीड़ा-पतन अब सताएं;
नहीं राज्य-ऐश्वर्य की चाह हमको, प्रथम कामना है-सुधारें स्वयं को;
दिशाएं पलट दें नयी दृष्टि देकर। बदल दें जमाना "पुष्पांजलि"

6. श्री शचीन्द्र भटनागर- ने संकल्प शीर्षक से अट्ठाइस कविताओं की रचना की जिसमें कुछ के अंश अवलोनीय हैं-

(1) हमने करी प्रतिज्ञा, हम गुरुवर का पथ अपनाएंगे,

गुरुसत्ता की माला के हम भी मोती बन जाऐंगे।
बहुत गँवाते रहे अभी तक अपना समय प्रचारों में,
उलझेंगे हम नहीं प्रदर्शन, भाषण में या नारों में,
पुनर्गठित प्रतिभाएं होंगी और प्रखरता जागेगी,
दु:खी धरा दैवी संस्कृति से फिर पथ-दर्शन माँगेगी,
गुरुवर के अनुशासन में तप कर कुंदन कहलाएंगे।
गुरुसत्ता की माला..... "करिष्ये वचनं तव", पृष्ठ 68

(2) बहाई करुण-धार जो इस धरा पर, उसे हम कभी सूखने ही न देंगे,
हराहर मरुस्थल बनें, बस इसी का, प्रबल यत्न दिन-रात करते रहेंगे।
धनीभूत करुणा तुम्हारी संजोए, तुम्हारी शपथ हम पिघलते रहेंगे।
तुम्हारी शपथ हम निरन्तर तुम्हारे, चरण-चिन्ह की राह चलते रहेंगे।।

7. डा0 रामस्वरूप खरे जी की पंक्तियां देखिए-
दिव्य संस्कृति का करने का पावन पुनरुत्थान।
'शान्तिकुंज' से आज चले हम, कर संकल्प महान।
सदाचार, सेवा, संयम का सजा आरती-थाल।
बढ़े धरा का तम हरने को, बन किरणों का जाल।।
'वसुधा ही परिवार हमारा'- है आदर्श विशाल,
सुपथ प्रकाशित करें विश्व का लेकर लाल मशाल ।।
मानवता को भूल न जाना, ओ मनु की संतान।
'तपोभूमि' से आज चले हम, कर संकल्प महान।।

8.श्रीमती विद्यावती मिश्र की कृति 'युगवीणा' की एक कविता की पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं-

(1)जीवन जलता प्रश्न सुलगती जिज्ञासा है, एक पहेली की उलझी-सी परिभाषा है,
नयी चेतना, सबल प्रेरणा, विकल वेदना, मृदु मानस की एक मनोहर अभिलाषा है,
मानवता का पशुता से संयोग नहीं है। जीवन है संकल्प-साधना भोग नहीं है।।

(2) जीवन के संकल्प नियम के सदृश अनित्य बनाओ।
बनो नहीं देवता स्वयं को मानव किन्तु बनाओ।।

9. श्री वीर सक्सेना की कविता 'सुदृढ़-संकल्प' की पंक्तियाँ देखिए-
सृजनशील हैं हम नव रचना से नूतन उपलब्धि खोजते,
किसी दूसरे के श्रम से अर्जित सुविधाएं नहीं भोगते,
इतनी क्षमता नहीं किसी में प्रगति रोक ले सन्मार्गी की,
जब तक हम जीवित है चरणों का अपमान न होने देंगे।।

10.श्री प्रेमनारायण 'सरोज' की पंक्तियाँ प्रस्तुत है-

आज सृष्टि के अंचल में हम, अपना विमल ओज चमकाएं ।
स्वयं चलें, सबको सत्पथ पर, चलने का संदेश सुनाएं।।
विषम परिस्थिति में भी दृढ़-व्रत हों, न कभी किंचित घबराएं।
सोये हुए जगाएं, गिरते हुए उठाएं, राह बताएं।।
यही 'सत्य संकल्प' हमारा-प्राणि मात्र को सुख पहुँचाना ।
यही परम-पूजा है प्रभु की-मानवता का धर्म निभाना ।।

11. डा0 जमुनादास बड़ैरिया की कविता 'तपस्यामय जीवन' की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

(1) मूल तत्व तप का यह केवल, कष्ट में भी मुस्कराओं।
साहसी बन, प्रतिकूलता में भी, पग निरंतर तुम बढ़ाओ।।
वांछित सभी जग में मिलेगा, दृढ़ संकल्प रख बढ़ते रहेंगे।
प्रतिकूलता में भी जब निरन्तर, दीप सम जलते रहेंगें।।

(2) यदि आनंदित रहना है जग में, यह अनिवार्य बात है भाई।
भय की सभी कल्पना मेटो, जो मन में रही समाई।।
आओ! आज प्रतिज्ञा कर लें, भय को पास न आने देंगे।
श्रद्धा-विश्वास जगा कर मन में, निर्भय हो प्रभु तक पहुँचेंगे।।

12.श्री राजकुमार वैष्णव की कविता 'विश्वविद्यालय का परिवार' की पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं-

देवसंस्कृति जिसका आधार, विश्वविद्यालय का परिवार।
गुरुवर हम इस अभियान को जग में पहुँचाएंगे।
युग ऋषि ने संकल्प किया था वही हुआ साकार।
दिव्य हिमालय सप्त सिंधु भी जिसका है आधार।।
तपस्या विद्या मूलाधार, सद्गुरु शिष्यों का संसार।
हे ऋषिवर पावन ज्ञान को जग में फैलाएंगे।।
देव संस्कृति रक्त प्राण जीवन में आज समाया।
इसके हित में सदा जियेंगे यही हमें है भाया।
मिटायेंगे दुनियाँ से पीर, गढेंगे बलिदानी और वीर।
धरती पर सतयुग काल को लाकर दिखलाएंगे।।

13. श्री लक्ष्मीनारायण 'कमलेश' की पंक्तियाँ अवलोनीय है-

अन्य स्वर्ग की नही कामना यहीं स्वर्ग हम लाएंगे।
सबमें प्रेम प्रचार करेंगे अमृत रस बरसाएंगे।।

नहीं रहेगा अब यह कलियुग इसको बदलाना होगा
हमको फिर से इस धरती पर अब सतयुग लाना होगा।।
आओ मित्रो! पूर्ण करें हम सब मिल यह संकल्प महान।
हम बदलेंगे-हम बदलेंगे और करेंगे युग निर्माण।।

(ग) लोक मंगल की कामना

सामाजिक न्याय का सिद्धान्त ऐसा अकाट्य तथ्य है कि इसकी एक कदम के लिए भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। एक वर्ग के साथ अन्याय होगा तो दूसरा वर्ग कभी भी शांतिपूर्ण जीवन-यापन न कर सकेगा। सामाजिक न्याय सबको समान रूप से मिले, प्रत्येक मनुष्य मानवोचित अधिकारों का उपयोग दूसरों की भाँति ही कर सके ऐसी स्थिति पैदा किए बिना हमारा समाज शोषण मुक्त नहीं हो सकता। आर्थिक समता की बात समाजवादी विचार धारा के द्वारा राजनीतिक स्तर पर बड़े जोरों से कही जा रही है। साम्यवादी देश उग्र रूप से और समाजवादी देश मंथर गति से इसी मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं। अध्यात्मवाद की शिक्षा भी सनातन काल से यही रही है। यहाँ परिग्रह को सदा से पाप माना जाता रहा है। आचार्य शर्मा के मतानुसार सामान्य जनता के स्तर से बहुत अधिक सुख-साधन प्राप्त करना या धन सम्पत्ति जमा करना यहाँ सदा से पाप कहा गया है और यही निर्देश किया गया है कि सों हाथों से कमाओ भले ही; पर उसे हजार हाथों से दान अवश्य कर दो अर्थात अगणित बुराइयों को जन्म देने वाली संग्रह- वृत्ति को पनपने न दो।

अनुदारता नहीं उदारता- कोई भी व्यक्ति अपने पास सामान्य लोगों की अपेक्षा अत्याधिक धन तभी संग्रह कर सकता है जब उसे कृपणता, खुदगर्जी, अनुदारता, और निष्ठुरता की भावना आवश्कता से अधिक मात्रा में भरी हुई हो। जबकि दूसरे लोग भारी कठिनाइयों के बीच अत्यन्त कलुषित और अभावग्रस्त जीवन यापन कर रहे हों, उनके बच्चे शिक्षा और चिकित्सा तक से वंचित हो रहे हों, तब उनकी आवश्यकताओं की ओर से जो आँखे बंद किए रहेगा, किसी को कुछ भी न देना चाहेगा, देगा तो राई-रत्ती को देकर पहाड़-सा यश लूटने का अवसर मिलेगा तो ही कुछ देगा, ऐसा व्यक्ति ही धनी बन सकता है। "सामाजिक न्याय का तकाजा यह है कि हर व्यक्ति उत्पादन तो भरपूर करे पर उस उपार्जन के लाभ में दूसरों को भी सम्मिलित रखे। सब लोग मिल-जुल कर खाएँ, जिएँ और जीने दें। दुःख और सुख को सब लोग मिल

बाँटकर भोगे। यह दोनों ही भार यदि एक के कंधे पर आ पड़ते हैं तो वह दब कर चकनाचूर हो जाता है, पर यदि सब लोग इन्हें आपस में मिलकर बाँट लेते हैं तो किसी पर भार नहीं पड़ता, सबका चित्त हल्का रहता है और समाज में विषमता का विष भी उत्पन्न नहीं हो पाता है।"1

मानवीय उत्कृष्टता की कसौटी- गुण, कर्म स्वभाव-

जिस प्रकार आर्थिक समता का सिद्धान्त सनातन और शाश्वत है, उसी प्रकार सामाजिक समता का-मानवीय अधिकारों की समता का आदर्श भी अपरिहार्य है। इसको हम चुनौती नहीं दे सकते। किसी जाति वंश या कुल में जन्म लेने के कारण किसी मनुष्य के अधिकार कम नहीं हो सकते और न ऊँचे माने जा सकते हैं। छोटे या बड़े होने की, नीच या ऊँच होने की कसौटी गुण, कर्म, स्वभाव ही हो सकते हैं। अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के कारण किसी का न्यूनाधिक मान हो सकता है; पर इसलिए कोई कदापि बड़ा या छोटा नहीं माना जा सकता कि उसने अमुक कुल में जन्म लिया है। इस प्रकार की अविवेक पूर्ण मान्यताएं जहाँ भी चल रही हैं वहाँ कुछ लोगों का अहंकार और कुछ लोगों का दैन्यभाव ही कारण हो सकता है। अब उगती हुई दुनियाँ इस प्रकार के कूड़े-कवाड़े जैसे विचारों को तेजी से हटाती चली जा रही है। अफ्रीका और अमेरिका में जहाँ गोरी, काली जातियों के बीच ऊँच-नीच की भावना मौजूद है उनका विरोध विश्व का सारा लोकमत कर रहा है। विचारशील क्षेत्रों में इस भेद-भाव की भरपूर भर्त्सना की जा रही है और यह निश्चित है कि यह भेद-भाव चंद दिनों का मेहमान है। सामाजिक समता की-लोकमंगल की मान्यता को ही सर्वत्र स्वीकार किया जाएगा। भारत में जातियाँ, नियत कामों और व्यवसायों को वंश-परम्परा के साथ अधिक दक्षता के साथ उन्नत करते चलने की दृष्टि से बनी थी। उनके निर्माताओं ने कभी स्वप्न में भी यह न सोचा होगा कि एक दिन इस पुनीत परम्परा में नीच-ऊँच का विष भी मिल जायेगा, पर आज यह विडम्बना चल रही है। गुण, कर्म, स्वभाव की उपेक्षा करके लोग केवल वंश और जाति के आधार पर ऊँच-नीच होने की मान्यता माने बैठे हैं। आचार्य शर्मा की मान्यता के अनुसार "इस निरर्थक मूढ़ता का अन्त होना ही है। विवेक का उदय जैसे जैसे होता जायेगा, वैसे ही वैसे मूढ़मान्यताएं समाप्त होती चली जाएंगी। समय रहते हम अपनी समझदारी का परिचय देते हुए कुछ पहले ही छोड़ सकें, तो यह एक प्रशंसा की बात ही होगी।

1. ब्रहमवर्चस- जीवन पथ, पृष्ठ 31-32

नर और नारी एक समान- स्त्रियों के बारे में पुरुषों ने जो ऐसी मान्यता बना रखी है कि वे उनकी गाय, भैंस जैसी सम्पत्ति हैं, यह बहुत ही अनुपयुक्त है। कुछ शारीरिक अवयवों में भिन्नता रहने मात्र से नर-नारी में से किसी की हीनता या महत्वा नहीं मानी जा सकती है। इतिहासकार जानते हैं कि लाखों वर्षो तक संसार में 'मातृकुल पद्धति' का प्रचलन रहा है। माताएं अपने परिवार की स्वामिनी होती थीं, नर उन्हीं के अनुशासन में रहते थे। अभी भी भारत में केरल प्रान्त में मातृकुलों का प्रचलन है। इससे यह सिद्ध होता है कि स्त्री बड़ी और पुरूष छोटा हैं यह सुविधा और व्यवस्था की बात है उपार्जन कार्य जिसके हाथ में होता है वह इस पूंजीवादी युग में स्वतः बडा माना जाने लगा है। आम तौर से पुरुष कमाते हैं, जहाँ पुरूषों को उनका अनुशासन मानना पडता हैं यह अर्थतंत्र की एक प्रतिक्रिया मात्र है। मानवीय अधिकारों की मूलभूत आस्था पर इसका प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। स्त्रियाँ पुरुषों की दासी हैं, यह मान्यता किसी भी प्रकार सामाजिक न्याय के अनुकूल नहीं है। परस्पर प्रेम और सद्भाव से तो कुत्ते तक मनुष्य के ऊपर प्राण निछावर करने को तैयार हो जाते हैं। फिर स्त्री, पुरुष जिनकी अपूर्णता ही एक दूसरे के द्वारा पूर्ण होती है। प्रेम और सौजन्य होने पर दो शरीर एक प्राण बनकर क्यों न रहेंगे ? यह कार्य बंधनों और प्रतिबंधों द्वारा संभव नही हो सकता।

आचार्य शर्मा के मतानुसार "हमें हर मानव प्राणी के मौलिक अधिकारों को स्वीकार करना ही चाहिए। हर व्यक्ति समान नागरिक अधिकार लेकर जन्मा है, इस तथ्य को स्वीकार किया ही जाना चाहिए। जब तक उनके सामाजिक अधिकारों को स्वीकार न किया जाएगा, उन्हें कैद खाने का पशु मात्र बनाकर रखा जाएगा, तब तक हमारी आधी जनसंख्या गुलाम की गुलाम ही बनी रहेगी; पर अभी भी स्त्रियों के रूप में आधा भारत उस अधिकार से वंचित है। पिछड़ो की एक चौथाई जनता भी इन अधिकारों से वंचित हैं। इसे यों कहा जा सकता है कि उच्च वर्ण के पुरुषों को, जिनकी संख्या मूल आबादी की एक चौथाई मात्र है, मानवीय स्वाधीनता के अधिकार मिले हैं। तीन चौथाई जनता को भी यह अधिकार मिलने चाहिए। इसके बिना हमारी एक चौथाई स्वाधीनता सर्वथा अपूर्ण और अपर्याप्त ही बनी रहेगी।"1

जाति और राष्ट्र का अस्तित्व इसलिए है कि विशाल जनता उसमें आत्मसात हुई होती है। पृथकता की भावना रखने वाले भिन्न स्वार्थो, भिन्न

1. ब्रहमवर्चस- जीवनपथ, पृष्ठ 74

आर्दशों और भिन्न मान्यताओं वाले लोग कहीं बहुत बड़ी संख्या में इकठ्ठे हो जाए तो वे एक राष्ट्र, एक समाज, एक जाति नहीं बन सकते। एकता के आदर्शों में बंधे हुए और उस आदर्श के लिए सब कुछ न्योछावर कर देने की भावना वाले व्यक्तियों का समूह ही समाज या राष्ट्र है। शक्ति का स्रोत यही है परस्पर मिल-जुलकर ऐसी लोक मंगल की भावना का विकास करने से ही हमारी सर्वांगीण प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

व्यक्तिगत स्वार्थ को सामूहिक स्वार्थ के लिए उत्सर्ग कर देने का नाम ही पुण्य-परमार्थ है, इसी को देशभक्ति, त्याग, बलिदान, महानता आदि नामों से पुकारते है। इसी नीति को अपनाकर मनुष्य महापुरुष बनता है, लोकहित की भूमिका संपादन करता है अपने आदर्शों से अनेकों को प्रेरणा देता है और अपने समाज का मुख उज्जवल करता हैं मुक्ति और स्वर्ग का रास्ता भी यही है। भगवान को प्राप्त करने की मंजिल भी यही है। आत्म की शान्ति और सद्गति भी उसी पर निर्भर है। इसके विपरीत दूसरा रास्ता वह है कि जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए सारे समाज का अहित करने के लिए मनुष्य कटिबद्ध हो जाता है। दूसरे चाहे जितनी आपत्ति में फँस जाएं, चाहे कितनी हानि और पीड़ा उठाएं पर अपने स्वार्थ के लिए किसी की कुछ परवाह न की जाए। अपराधी मनोवृत्ति इसी को कहते हैं। नर्क का रास्ता यही है। देश-द्रोह, समाज-द्रोह, धर्म-द्रोह इसी को कहते है। आत्म-हनन का, आत्म-पतन का मार्ग यही है। इसी पर चलते हुए व्यक्ति नारकीय मंत्रण से भरे हुए सर्वनाश के गर्त में गिरता हैं ध्यान रहे कि लोकमंगल एक पवित्र यज्ञ है।

आचार्य श्रीराम शर्मा ने अपनी पुस्तक "श्रीमद् भागवत के प्रेरक तत्व" में लिखा है- मैं भगवान से आठों सिद्धियों से युक्त परमगति नहीं चाहता। और तो क्या, मैं मोक्ष की भी कामना नहीं करता। मैं चाहता हूँ कि मैं सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में स्थित हो जाऊँ और उनका सारा दुःख मैं ही सहन करूँ। जिससे और किसी भी प्राणी को दुःख न हो-

"न कामये ऽहं गतिमीशवरात परा- मष्ट द्धियुक्ता मपुर्नभवं वा।
आर्ति प्रपद्येऽखिल देह भाजा- मन्तः स्थितो येन भवन्त्य दुःखः"-श्रीमद् भागवत

सबके स्वार्थ में अपने स्वार्थ का समर्पण करके, व्यक्तिगत स्वार्थ से सामूहिक स्वार्थ का अधिक ध्यान रखने का आदर्श, युग निर्माण संकल्प में इसीलिए रखा गया है। कि हमारा सर्वांगीण विकास संभव हो सके। सब लोग परस्पर मिल-जुलकर एक दूसरे को आगे बढ़ाने, ऊँचा उठाने, सुखी बनाने में सहयोग करेंगे, तो वह युग समीप ही दिखाई देगा जिसकी पुनः स्थापना के लिए आचार्य शर्मा जी कटिबद्ध हुए थे।

आलोच्य काव्यों में लोक मंगल की भावना की अभिव्यक्ति

1 **श्री मंगल विजय** की एक रचना का अंश अवलोकनीय है–

। **लोक मंगल ही हमारी साधना हो, लोक सेवा ही प्रभु आराधना हो**

इन दिनों पीड़ा, पतन कुछ कम नहीं है। सॉस! बंशी बजाने का क्षण नहीं है।

लोक सेवा–साधना युग धर्म है अब, सांस! अब युग धर्म की ही धारणा हो। लोकमंगल ही .....

।। **सद्–संकल्पों का साहस लेकर, हम आगे आएँ,**

ज्ञान यज्ञ की ले मशाल, हम जन–जन तक जाएँ।

पुनः जगा उत्साह, प्राण में जीवट लाना है, मिलकर करें प्रयास हमें परिवर्तन लाना है।।

2 **डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया** की पंक्तियॉं देखिये–

देते–देते ही जीवन में जितना हम पाते जाते है,

खाली होते–होते पैसे, भरते उफनाते जाते हैं।।

दानी बादल को सागर ने देने की होड़ लगाई है, सारी दुनियॉं परिवार मान, हर बार मशाल जलाई है।।

3 **श्री बलराम सिंह परिहार** की कविता 'प्रतिभाओं से' की पंक्तियॉं देखिये–

रखा प्रगति के धोखे में, क्यों प्रतिभाओ! संसार को।

अटका दिया स्वार्थ में केवल, जीवन के व्यापार को।।

करते हैं विनम्र आवेदन, तुमसे नवयुग के प्रहरी।

जागो प्रतिभाओ! विभूतियो! त्यागो यह निद्रा गहरी।।

जनमंगल की करो साधना, देवों के आगार में। भ्रमित करो मत और जगत को, ऑधी और गुबार में।।

4 **डा0 हर गोविन्द सिंह** का **'कला और लोकमंगल'** विषय पर एक मुक्तक देखिये–

। **आज का जीवन दहकते कारखाने में ढला हे, होटलों की वादियों में रोशनी पीकर पाला है;**

इन्द्रियों के हाथ में है पंचनामा बुद्धि–मन का , पूछती है हर कला अब '–लोक–मंगल' क्या बला है?

।। **दुष्प्रवृत्तियों का दशकंधर फिर से आज प्रबल है,**

बिलख रही संस्कृति की सीता, त्रस्त लोक मंगल है;

युग संकट की विषम घड़ी में ज्योतिर्मय आत्माओ, बढ़कर निज वर्चस्व दिखाओ, वह विभूति बन जाओ।।

5 **श्री मती विद्यावती मिश्र** की कविता 'प्रभु सबका कल्याण हो!' की पंक्तियों में लोक मंगल की कामना दृष्टव्य हैं– **मेरे शुभ कर्मों के फल का सब जग साझेदार हो,**

सबके लिए समान रूप से जय–श्री का उपहार हो,

मेरा स्वेद बिन्दु मानव के हित अमृत का दान हो! प्रभु सबका कल्याण हो!!

एक–एक से मिल जग बनता एक–एक की कामना, उदय करेगी मानव मन में मंगलमय सद्भावना,

क्या विषमय यदि जीवन का अभिशाप स्वयं वरदान हो! प्रभु सबका कल्याण हो।।

6 **श्री शचीन्द्र भटनागर** का गीत 'यदि लक्ष्य जिन्दगी का, निज सुख रहा न होता' की पंक्तियॉं देखिये–

अपने लिए सदा हम, चिन्तित यहाँ न होते , केवल न हम सुखों को, अपने लिए सँजोते,

इस विश्व बाटिका का, हर फूल हम खिलाते, हम जोड़ते सबों को, बिछुड़े हृदय मिलाते,

सबके लिए लगाते श्रम और साधनों को, यह मन अगर हमारा, परवश रहा न होता।

यदि लक्ष्य जिन्दगी का, निज सुख रहा न होता।।

7 **श्री राम कुमार भारतीय** की कविता '**यही धर्म सच्चा है**' की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

सबसे हिल–मिल रहना सीखो , करो न द्वेष किसी से,

सबसे मीठी बोली बोलो, होगा भला इसी से।

जो अनाथ हैं, उन्हें सहारा देना बड़ी खुशी से , तुच्छ न समझो कभी किसी को रखना स्नेह सभी से।।

गिरे हुए हैं उन्हें उठाओ यही मार्ग अच्छा है। सबसे करना प्रेम जगत में यही धर्म सच्चा है।।

8 **श्री सत्यपाल पथिक** की कविता '**उसे इन्सान कहते हैं**' की पंक्तियॉ देखिये–

यों भरने को तो दुनियॉ में पशु भी पेट भरते हैं।

लिए इन्सान का दिल जो वो नर परमार्थ करते है।।

पथिक जो बॉटकर खाये उसे इन्सान कहते है।, पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते हैं।

9 **सुश्री वीणापाणि** की कविता 'समय रहते जगो साथी' की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं–

समय रहते जगो साथी न किंचित देर हो जाये।

सजाते ही रहो तुम दीप–जब तक भोर हो जाये।

भटक जाये न कोई राह से संकेत हों निश्चित। न मुरझाा जाये नव अंकुर प्रथम कर दो उन्हें सिंचित।।

नया युग आ रहा है भाव स्वागत के न सो जायें। सजाते ही रहो .....

10 **श्री शिवशंकर मिश्र** की कविता '**जीने का अधिकार** उसी को' की पंक्तियॉ अवलोकनीय है–

हँस–हँस कर एक मस्ती लेकर, जिसने सीखा है बलि होना।

अपनी पीड़ा पर मुस्काना, औरों के कष्टों पर रोना।।

जिसने सहना सीख लिया हे, जीने का अधिकार उसी को।।

जिसने मरना सीख लिया है, जीने का अधिकार उसी को।।

11 **श्री बाबूलाल जैन 'जलज'** की कविता '**वह जीवन भी क्या जीवन है**' की पंक्तियॉ देखिये–

। **वह जीवन भी क्या जीवन है, जो काम किसी के आ न सके।**

विश्वास किसी को दे न सके, विश्वास किसी का पा न सके।।

पड़ा रहा जीवन घट रीता, हृदय किसी का न जीता,

धर्म क्षेत्र में कार्य क्षेत्र में, झुठलायी रामायण गीता,

जो बात हृदय की कह न सके , बात प्यार की सुन न सके। वह जीवन भी क्या जीवन है.....

आजीवन ही स्वार्थ साधना, परहित की जागी न कामना,

नहीं समझने दिया अहं ने, कभी की दिव्य भावना,

मानव दर्द भरे जंगल में साथ किसी का दे न सके। वह जीवन भी क्या जीवन है–

12 **श्री मती माया वर्मा** की काव्यकृति **'गागर में सागर'** का एक मुक्तक अवलोकनीय है–

। **आज का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है–ऋषि ऋण चुकाना।**
हर अमंगल, कुंचितन को मानवी मन से हटाना।।
विश्व का हित हो सभी सुख से जियें निष्काम होकर।
ये विचार हरेक मन में यत्न कर करके जगाना ।।

13 **श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'** की कविता **विज्ञान हमें वह रचना है'** की पंक्तियॉ देखिये–

मन का संताप मिटादे जो, रोतों को सहज हँसा दे जो।
दुर्भाव सताते हैं मन को, इसकी पीड़ा जन–जन को।
जो सुधा प्रेम की बाँट सके, रस प्राण दूसरा हमें वह रचना है।
दिल की धड़कन के साथ चले, विज्ञान हमें वह रचना है।

श्री बाबूलाल जैन 'जलज' की एक अन्य कविता **'स्वर गूँजे निर्माण के'** की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं–

।। **श्रेष्ठ कर्म के चरण बढ़े हैं, धरती पर इनसान के। X X X**
आदर्शों की फसल न सूखे, रहे न जग में कोई भूखे।
समता भाव हृदय में जागे, गले लगाएँ बढ़कर आगे।।
परहित में जो अर्पण रहता, वही निकट भगवान के।
सदियों बाद, जगत में फिर से स्वर गूँजे निर्माण के।।

14 **डा0 रामस्वरूप खरे** की काव्य–कृति **'शतमन्यु'** की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं–

। **लोकमंगल का सुन्दर सूर्य, उदित होता कर तम–अवसान।**
फैलता भव में नव आलोक, विश्व लग उठता स्वर्ग–समान।।

।। **हो न कहीं ऐसा बुझ जाये – शपथ तुम्हें अरमानों की ।**
हो न कहीं ऐसा, झुक जाये – शपथ तुम्हें अरमानों की।।
सबल करों में थाम, बढ़े हम – चिन्ता क्या व्यवधानों की।
गूँज उठेगी जय, तब निश्चय – युग के नव अभियानों की।।
दिव्य संस्कृति की द्योतक यह, विश्वमेल की माल है।
युग परिवर्तन की प्रतीक यह, जलती लाल मशाल है।।

स्व0 श्री मती माया वर्मा की निम्न पंक्तियॉ विशेष रूप से अवलोकनीय हैं–

। **देखकर पीड़ित किसी को तड़प जाना सीख लें हम,**
दर्द सा दिल में उठे– जो आँख कोई देख लें नम।
सब दिखें अपने स्वजन से हो परस्पर स्नेह नाता,
हर युवा भाई बहिन, सब प्रौढ़ सबके पिता–माता।
विश्व है परिवार यह अनुभूति हम अपनी अपनी बना लें,
मनुजता के पात पीड़ित प्राण जिसमें शान्ति पालें।

एक्य की यह भावना सुख शान्ति का पहला चरण है,

मनुज में देवत्व – भू पर स्वर्ग–सुख का अवतरण है।। X X X

।। कर रहे आज हम ऐसे नये युग का सृजन, आन्तरिक संवेदना से खिल उठेगे श्रान्त मन।

कामना सौहार्द्र की, सौजन्य की बढ़ जायेगी, पीर को बढ़कर करूणिमा स्वयं कंठ लगाएगी।।

।।। **परमार्थ भाव :– कोई भावुक मन प्यासा हो, छा गयी असीम निराशा हो**

अपने उर से आशा, उछाह, विश्वास वहॉ बरसाता चल

जग की कुण्ठा से बहुत त्रस्त कोई उर दिखे अभाव ग्रस्त

अपने उदार संवेदन से, उसके दुःख दर्द मिटाता चल।। X X X

IV वही है आदमी जो कष्ट से–संघर्ष से खेले ,

सहे जो कष्ट औरों के, पिये गम से भरे प्याले।

भुला दे दर्द अपना–दूसरों की पीर के सम्मुख,

सभी को बॉंटकर ममता–जगत का प्राण प्यारा बन।। X X X

V **"हर प्यासे को जल, हर दुखिया को स्नेह रसधारा,**

पहुँचाए बिन चैन न पाऐं यह संकल्प हमारा।

अन्धे की लाठी, गूँगे की वाणी हम बन जाएँ, शक्तिहीनता का कर थामे, थकितों के चरण दबाऐं।।

हुदय–हृदय में फैलादें शुचि प्यार भरा उजियारा।" X X X

साहस को बाधाएं रोक नहीं पाती हैं, साहस से चट्टाने रेती बन जाती हैं

प्रणय जोड़ते जो अपना परमार्थ लक्ष्य से, के स्वार्थों से कभी विवाह नहीं करते हैं।

4(घ) महापुरुषों का गौरव गान :–

महापुरुषों का जीवन–प्रसंग जन सामान्य के लिए अनुकरणीय माना गया है। उनमें भी जो जन्मजात कठिनाइयों से, अभाव और असहायता की परिस्थितियों से संघर्ष करके ऊँचा उठते हैं, वे ओर भी आदरणीय होते हैं और उन्हीं को हम अपना मार्गदर्शक चुनते हैं। कारण यही है कि साधन, सुविधा, और सहायकों के पूरी तरह होने पर तो सभी आगे बढ़ सकते हैं और ऊँची पदवी प्राप्त कर सकते हैं, पर जो लोग विपन्न और विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी अपने परिश्रम, लगन त्याग और तपस्या के आधार पर आगे बढ़ते है, वे ही सामानय लोगों के लिए मार्गदर्शन करा सकते हैं। वे देखने अथवा–सुनने में सामान्य ही जान पड़ते हैं, पर उनमें कोई ऐसा सत्य तथ्य निहित हरता है कि बहुत समय व्यतीत हो जाने पर भी हम उनके याद करते और उनसे उत्तम प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

अँगल भाषा के महाकवि लॉंग फेलो की पंक्तियॉं हैं–

" lives of great man all remind us

we can make our lives sublime.

And departing leave behind us

Foot-prints on the sands of time." - Long fellow

अर्थात महापुरूषों के जीवन हमें यह शिक्षा देते हैं कि हम भी अपने जिन्दगी को महान बना सकते हैं और लोक से प्रस्थान करते समय काल की रेती पर अपने पद–चिन्ह छोड़ कर जा सकते हैं। महापुरूषों के प्रति साधारण जनता का आकर्षण प्रचीन काल से ही रहा है। स्वयं श्री कृष्ण ने गीता में कहा है :–

यद्यदा चरित श्रेष्ठ स्तत्त देवेतरो जनः।

स यत्प्रमाणं कृरते लोकस्तुदनु वर्तते।।– श्रीमद् भगवद् गीता

अर्थात् श्रेष्ठ पुरूष जेसा आचरण करते है और जिसे प्रमाण मानते है, साधरण जनता भी उसी का अनुगमन करती है।

सामान्यतया देखा यह जाता हे कि जो लोग साधन सम्पन्न हैं, सामर्थ्यवान हैं, विद्या और बुद्धि की दृष्टि से प्रसिद्ध हैं और धर्म, नीति, दर्शनशास्त्र के सिद्धान्तों के भी ज्ञाता है, वे भी व्यवहार में प्रायः अनुचित मार्ग का अवलम्बन लेते हैं। व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए देश, समाज व संस्कृति की तरफ से आँखें फेर लेते हैं और जब कोई उनके गलत कार्यों पर आक्षेप करता है तो यही बहाना पेश करते हैं कि आजकल की दुनियाँ में चालाकी, तिकड़म और असत्य के बिना काम ही नहीं चल सकता। कितने ही व्यक्ति इससंसार को एक प्रपंच कहते हैं, माया का खेल बताते हैं और इन्हीं बातों की ओट में प्रायः अपनी बहुत–सी त्रटियों, अनैतिक कार्यों को क्षम्य समझ लेते हैं। वे कहते हैं कि इस संघर्षमय और आपाधापी से भरे संसार में रहकर मनुष्य सदैव सत्य, न्याय, समानता आदि का व्यवहार नहीं कर सकता।

किन्तु महापुरूषों का, देशभक्तों का, शहीदों का मार्ग इससे भिन्न होता है। वे अपने सामने एक ऊँचा आदर्श रखते हैं। और उसके लिए आवश्यकता होने पर न केवल स्वार्थ का बलिदान करने वरन अपने जीवन का उत्सर्ग करने को तैयार रहते हैं। उनकी कथनी और करनी एक होती है। यही कारण है कि वे जो कहते हैं वही कर भी दिखाते है। वे अपनी सफलता द्वारा यह सिद्ध कर देते हैं कि निर्धनता, शारीरिक त्रुटियॉ या साथी–सहायकों का अभाव ऐसी बातें नही है जिनके कारण हम प्रगति पथ पर अग्रसर होने से निराश हो जाएँ, वरन कठिनाइयों की ऐसी अग्नि मनुष्य में वह शौर्य , साहस, संकल्पशक्ति, दृढ़ निश्चय और कर्मण्यता का गुण उत्पन्न कर देती है, जिनसे वह निर्धारित लक्ष्य की ओर प्रगति मार्ग में बहुत तेजी से बढ़ता है और शक्ति, बुद्धि एवं साधन सम्पन्न लोगों से आग्र निकल जाता है।

आचार्य शर्मा ने भारत वर्ष ही नहीं वरन् संसार भर के शौर्य , साहस एवं बुद्धि , कर्म की धनी प्रतिभाओं, महामनीषियों, महामानवों, उत्कट देशभक्तों एवं सफल जननायेंकों के प्रेरणाप्रद चरित्रों, जीवन प्रसंगों का संकलन किया है। उन्होंने जिन महापुरूषों के जीवन प्रसंग दिए है, उनमें यही विशेषता है कि उन्होंने जन–जीवन मैं अपने आपको खपा देने एवं परतंत्रता की बेड़ी को उखाड़ फेंकने को ही सबसे बड़ी आत्मसाधना और परमात्मा की प्राप्ति समझाा और तदनुसार आजीवन ऐसे कार्यों में लगे रहे, जिनसे दूसरे लोगों का कल्याण हो, उनके दुख और अभावों में कमी हो सके। साधारण स्थिति से जीवन प्ररम्भ करते हुए इन महामानवों ने संसार में ऐसे महान कार्य कर दिखाये, जिनसे

करोड़ों लोगों का कल्याण हुआ और जिसके लिए आज भी उनका नाम न केवल बड़े आदर और श्रद्धा के साथ लिया जाता है, वरन् वह हम सबके लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

"जिन महापुरूषों ने अपना सारा जीवन देश, समाज और संस्कृति की रक्षा में खपा दिया, तप, त्याग, बलिदान, और लोकमंगल ही जिनका जीवनोद्देश्य रहा, ऐसे महामानवों के जीवन चरित्र आज भी उतने ही प्रासंगिक एवं प्रेरणादायी है, जितने कि तब थे। उनके लिए आध्यात्मिकता का प्रथम पाठ देश भक्ति ही था और उसी के लिए वह समर्पण भाव धारण कर कर्मरत रहते थे। आज भी वह परम्परा जीवित है। स्वामी विवेकानन्द, महीर्ष अरविन्द, महात्मा गॉधी, सुभाष चन्द्र बोस आदि महानता की जिस ऊँचाई क पहुँच सके, उसकी मूल प्रेरणा और शक्ति उनकी स्वदेश भक्ति में ही निहित रही।"1 **आचार्य श्री राम शर्मा** ने भी अपनी जीवन–साधना का शुभारम्भ देश भक्ति से करते हुए अपने जीवन की अन्तिम श्वास तक स्वदेश चिन्तन की आहुति देते हुए अपने जीवन यज्ञ को पूर्णाहुति प्रदान की। आचार्य शर्मा ने देश'–विदेश के जिन कर्मवीरों, देशभक्तों एवं लोकनायकों के जीवन–चरित्रों को लिखा है, उनमें छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, भामाशाह, सरदार पटेल, लाला लाजपत राय, राष्ट्रपति कैनेडी, वन्देमातरम् के दृष्टा बंकिम चन्द्र, चन्द्रगुप्त, विद्यारण्य, बहादुरशाह 'जफर', सिकंदर, नेपोलियन जेसे शौर्य और साहस के सुदृढ़ स्तम्भ सम्मिलित हैं। आचार्य जी ने महापुरूषों के उन अविस्मण्रणीय जीवन–प्रंसगों को लिया है जिनसे अनेकों ने राह पायी है एवं जो आज प्रासंगिक हैं। भगवान परशुराम, महात्मा बुद्ध, कुमार जीव, सम्राट अशोक, ईसा, महावीर, संत सुकरात, कन्फ्यूशियस, महात्मा जरथुस्त्र, अरस्तु, महर्षि पाणिनि, चाणक्य, शंकराचार्य एवं रामकृष्ण परमहंस जैसे महापुरूषों के जीवन प्रसंगों द्वारा आचरण को ऊँचा उठाने और जीवन के रोजमर्रा की समस्याओं का सुलझाने वाले ऐसे प्रसंग वर्णित किये हैं जो प्रेरणादायी हैं और सही अर्थों में व्यक्ति की अन्तःचेतना को दिशा देने वाले है।

आलोच्य काव्योंमेंमहापुरुषों का गौरव गान

आचार्य श्री राम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों ने अपने काव्य में महापुरूषों का गौरवगान किया है। उदाहरण अवलोकनीय हैं–

1 मंगल विजय **'विजय वर्गीय'** की कविता में यही भाव अभिव्यक्त हुए हैं–

प्रतिभा का परिचय मिलता है, पद से नहीं प्रभाव से
प्रतिभा रहती निरत–लोकमंगल में सहज स्वभाव से।
शिवा, प्रताप, गोविन्द सिंह सब की प्रतिभा के अनुदान थे
भामाशाह, बिनोबा, गॉधी में प्रतिभा के प्राण थे
इनकी पीड़ा कसक उठी थी, मानवता के घाव से।। प्रतिभा का परिचय .....

2 **श्री देवीशरण शर्मा** के गीत में महापुरूषों का गौरव गान देखिए–

1. ब्रहमवर्चस–महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग (वांड्मय क्रमांक–51)

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर, कुछ नाम लिखाए जाएँगे।

जो महाकाल के न्योते पर, कुछ नया सृजनकर पाऐंगे।

जिनने पहचाना समय और, हिम्मत कर आगे आऐं हैं।

वे यश पायेंगे दुनियॉ में, जीवन की शान बढ़ायेंगे।।

सदियों तक नाम अमर होगा, जग याद करेगा उन सबको,

उनके चरणों में श्रद्धा के, कुछ सुमन चढ़ाए जाऐंगे।।

3 **श्री बलराम सिंह परिहार** की पंक्तियॉ में यही भावना व्यक्त है–

बन्दा बैरागी ने इस माटी को शीश नवाया,

वीर भगत ने इस मिट्टी पर हँस–हँस शीश चढ़ाया।

इस हल्दी घाटी माटी पर जूझ गये बलिदानी,

यही एक अपने गौरव की बाकी बची निशानी।।।।

" **'युग ने तुम्हें पुकारा'** शीर्षक से इनकी दूसरी रचना में महापुरूषों का गौरव गान देखिए–

विश्वासों के दीप जलाकर युग ने तुम्हें पुकारा।

सूर्य चन्द्रमा इस जगती में चमके भाल तुम्हारा।।

सदियॉ बीत गईं कितनी ही छाया घोर अँधेरा, पल–पल बढ़ता ही जाता है महानाश का घेरा।

जगो शंकराचार्य सनातन संस्कृति को जीवन दो, जगो विवेकानन्द विवेकी भारत का हर जन हो।।

जागो बुद्ध तोड़ दो जग से अब बन्धन की कारा। सूर्य चन्द्र सा .....

अनाचार का शीश काटने परशुराम अब जागो, जागो भामाशाह राष्ट्र के हित में सब कुछ त्यागो।

हरिश्चन्द्र जागो असत्य की छलकी रोको आँधी, राजनीति का छद्म छुड़ाने जागो फिर से गाँधी।

टूटी हे पतवार आज नौका के बनो सहारा। सूर्य सन्द्र सा .....

सावित्री इस सत्यवान को यम से उठो छुड़ाओ, लक्ष्मी बाई जागो फिरंगी संस्कृति से टकराओ।

निद्रा त्याग जागता जब जब उगता सूर्य अकेला। जागो नव विभूतियो फिर से आज जागरण वेला,

राह दिखाओ इस भटके जग को बनकर ध्रुवतारा। सूर्य चन्द्र सा .....

4 **श्री बाबूलाल जैन 'जलज'** की पंक्तियाँ पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा के गौरव गान के विषय में देखिए–

किस विधि बंदन करूँ आज मैं, विश्ववन्द्य गुरूदेव तुम्हारा।

आज तुम्हारी प्रभु पूजा में, गाऊँ गीत कौन सा प्यारा।। X X X

उबल पड़े तुम तुरत देखकर, दीनों की आँखों का पानी।

भौतिकवादी चट्टानों को, चूर–चूर करने की ठानी।।

शान्ति, अंहिसा, सत्य, त्याग, तप, समता का परचम फहराया।

प्यार डगर से हटी चटकती, तम विनाश की कालीछाया।।

मानव जीवन संहारों के, दाहक गीत न तुमको भाये।

तुमने अपनी आत्म ज्योति से, जगमग जगमग दीप जलाये।।

तपबल के रावण को तुमने, आगे बढ़ने से ललकारा। किस विधि बंदन करूँ .....

बीन बीन कर पथ के काँटे, तुमने मंजिल को दुलराया।

जीवित साँसों ने सरगम पर; प्रण का यह संगीत सुनाया।

देते रहे जन्म से ही तुम, तिमिर पुंज को खुली चुनौती।

डूब–डूब गहरे में, लाये आत्म ज्ञान के सच्चे मोती।

जीवन कला पुस्तिका के तुम, बिखरे पृष्ठ जोड़कर लाये।

मानसरोवर के हंसों को, मानस के मोती चुगवाये।

हँसकर पिया हलाहल तुमने, पर जग को दी अमृत धारा।। किस विधि बंदन करूँ .....

5 श्री मंगल विजय की रचना '**संस्कृति रही कराह**' की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं–

संस्कृति रही कराह न मेरा रूप बिगाड़ो रे। अगर मनुजता को सँवारना मुझे निखारो रे।।

ऋषि दीधीचि ने जीवन देकर उसकी शान रखी। उसे बचाने बिके हरिश्चन्द्र शैब्या साथ बिकी

भोगवाद के चक्कर में मत उसे बिसारो रे, न मेरा रूप बिगाड़ो रे।

इसे सँवारा अनुसुइया ने, कुन्ती,मीरा ने, शंकर, ज्ञानेश्वर, नानक, चैतन्य, कबीरा, ने।

भेद–भाव से ऊँच–नीच से इसे उबारो रे। न मेरा रूप बिगाड़ो रे।

6 श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' की आचार्य श्रीराम शर्मा के प्रति पंक्तिय्रॉ देखिए–

ओ हिमालय के शिखर, गुरूता तुम्हारी को नमन। X X X

तुम वशिष्ठ, विदेह, विश्वामित्र, युग के व्यास तुम,

तुम अगस्त्य अधीर, विष के सिंधु की ले प्यास तुम,

अवतरित भू पर हुए, प्रज्ञा विभा अवतार तुम,

आदमी के रूप में उतरे धरा पर प्यार तुम।

ओ दधीचि उदार देकर प्राण का अनुदान तुम। रामकृष्ण समान ही 'श्री राम' नाम महान तुम।।

कर रहा तर्पण मनुजता का, ऋषि–सा आचरण। ओ हिमालय के शिखर .....

7 श्री राज कुमार वैष्णव की निम्न भाव पूर्ण पंक्तियॉ देखिए–

वेद का ज्ञान तुझमें समाया हुआ, ईश का ध्यान तुझमें समाया हुआ।

नित्य दर्शन, हवन यज्ञ जप तू ही है, विश्व ब्रह्माण्ड नभ में समाया हुआ।

धड़कनों से ये जगती धड़कने लगा। आपके दर्शनों को मन मचलने लगा

आपकी दृष्टि से युग बदलने लगा। X X X

लेखनी गुरूदेव की चलती सदा अविरल, साधना का शोध होता है यहाँ प्रतिपल।।

ध्यान, प्राणायाम योगी सिद्ध हैं करते। वेदमाता की यहाँ माला सभी जपते।।

ऋषियों का अनुदान सदा से पाया है।।

वेद के सूत्रों से जन–जन प्रेरणा लेंगे। ब्रह्मवर्चस शोध जग में शक्ति भर देंगे।।

मानसिक भटकाव को भी रोक ही देंगे।। गुरूवर (श्री राम) का अनुदान सभी ने पाया है।

रजत जयन्ती ब्रह्मवर्चस का आया है। धर्म और विज्ञान साथ में लाया है।।

8 **श्री शचीन्द्र भटनागर** की काव्य–कृति '**करिष्ये वचनं तव**' के गुरू '**सत्ता का विराट रूप**' (आचार्य श्री राम शर्मा) शीर्षक की एक कविता का अंश देखिये–

देह त्याग कर तुम अनन्त विस्तार हुए, स्वयं देह की सीमाओं के पार हुए।

सूक्ष्य हुए इतने कि तुम्हारी करूणा ने, छुआ धरा–नभ के हर कोने, हर कण को।
तुमने सोची जाति वंश की बात नहीं, लक्ष्य तुम्हारा था सँवारना जन–जन को ।
आत्मचेतना का इतना विस्तार किया, काया छोटी पड़ी, तुम्हीं अवतार हुए।
विश्वामित्र, वशिष्ठ और ब्रह्माजी ने, जिस गायत्री को कर सिद्ध, प्रसन्न किया,
प्रतिबंधित हो रही, उसी गायत्री को, मुक्त किया, जन–श्रद्धा से सम्पन्न किया,
प्रबल वेग धारण कर उसका, स्वयं तुम्हीं, ज्ञान–शिखर बन, सुगम गंग की धार हुए
तुमने दीप दिखाया यूँ मानवता को, स्वयं तुम्हीं सम्पूर्ण विश्व की दृष्टि बने,
तुमने किया प्रयत्न कि खण्डहर संस्कृति पर, श्रेष्ठ विचारों वाली नूतन सृष्टि बने,
ऐसी भीषण क्रान्ति विचारों में की, जो, युग–दृष्टा तुम, युग के नवल विचार हुए।।

9 **श्री मती माया वर्मा** के आचार्य श्री राम शर्मा के प्रति भावोद्‌गार देखिए–

धरती पर आकाश कुसुम बन किया असंभव को संभाव्य।

संवेदन से पूर्ण तुम्हारा अंतर था शिव रस का काव्य।।
चंदन सम सद्‌गन्ध बिखेरी, सात्विकता से ओत प्रोत।
फैला प्रेम प्रकाश, धर्म का डूबा–सा रवि किया उदोत।।
मृत प्रायः सी पड़ी संस्कृति में किया मनुजता का संचार।
कथा सुनो गायत्री सुत की जो है तेज पुंज साकार।।

10 **श्री शिवशंकर मिश्र** की कविता '**मानवता के श्री चरणों में**' की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

। **परवशता की तिमिर निशा में मुक्ति–मना जीवन है।**

मानवता के श्री चरणों में गाँधी एक नमन है।।
नमन सत्य की अरूण उषा को नव प्रकाश के पथ को,
जन जन हित की नवल कामना के अनुरागी अथ को,
जिससे ज्योतिर्मान हो गया सम्मोहित कण–कण है'

।। **गाँधी बाबा का अनुयायी, उनका सच्चा तपा सिपाही,**

अंग्रेजों से छिड़ी लड़ाई, तब उसने निज शक्ति दिखाई,
आँधी पानी और प्रलय में था स्वदेश हित ढाल। वीर जवाहर लाल जयति जय वीर जवाहर लाल।
जो नहीं देश का ही केवल आत्मा का भी अधिवासी था,
वैभव की गोदी में पलकर जो वीत राग सन्यासी था,
भय, भ्रम, शंका जिसको न डिगा पाती ऐसा विश्वासी था,
माना काया थी नाशवान पर प्राण अमर अविनाशी था,
पी कालकूट कल्याण विश्व का करने वाला शंकर था।। ऐसा वह वीर जवाहर था।

।।। पाठ त्याग का हमें पढ़ाया,दया धर्म का पंथ दिखाया,
राजनीति को भी दी तुमने–आत्मशान्ति की शीतल छाया,
स्वागत जो इस पथ पर आवे। जय जय सन्त बिनोवा भावे।।

11 **श्री मती विद्यावती मिश्र** की **'युग–निर्माता'** कविता की पंक्तियॉ देखिए–

जिसने सूने खेतों में भी भरदी चाँदी। अमर बना दी हाथों के बल से आजादी।।
अपने चरणों से जितने चट्टानें तोड़ी, निज सीने को अड़ा–प्रबल युग की गति मोड़ी।।
उस ही मानव को कब से युग बुला रहा है। जिसकी नौका बनकर सागर स्वयं बहा है।।
सत्य शक्ति है और अहिंसा जिसकी गति है, जो अपना स्वामी, जिसकी सेविका नियति है"
आत्म ज्ञान पाथेय ध्येय, कल्याण भावना, मानव की निष्ठा, मानवता की उपासना।।
है जग का आकर्षण जिसको कभी न छलता, उसके हित जीवन पथ बनकर सम्मुख चलता

12 **डा0 हरगोविन्द सिंह** जी का एक मुक्तक अवलोकनीय है–

भले उपहास होता हो, न पथ से रंच हिलता है,
विरोधों से न घबराता, न सुविधा पर मचलता है,
पराजित कर दिया जिसने प्रलोभन को, प्रवचन को
नया सूरज उगाने को, उसी को श्रेय मिलता है।

13 **श्री जितेन्द्र रघुवंशी** के पूज्य गुरूदेव (आचार्य श्री राम शर्मा) के प्रति भाव देखिए–

विश्व के आधार हो या कर्णधार हो, कुछ भी हो सृजेता तुम, विश्व के प्रकाश हो। X X X
गिरों को उठाया मग से, ज्ञान के प्रकाश से। पतितों को उठाया तुमने, अपने पुरूषार्थ से।
भ्रमितों को मिलता पथ, ऐसे तुम चिराग हो। कुछ भी हो .....
संगठन बनाया इतना, स्नेह व दुलार से। बानरों को जोड़ा फिर से, तप की पुकार से
निभाया है वचन जिनने, वही तुम अवतार हो। कुछ भी हो .....

14 **श्री रघुवर दयाल 'करीश'** की पंक्तियॉ देखिये–

मूर्ति स्थापना हुई, हृदय में, श्रद्धा अति गहराई है।
गुरूवर का हम कार्य करेंगे, मिलकर शपथ उठाई है।। X X X
तिल–तिल गला दिया तन जिसने, मानव पीड़ा हरने को।
मानव में देवत्व जगाने, धरा स्वर्ग सम करने को।
विचार क्रान्ति अभियान चलाकर, नई दिशा दिखलाई है। गुरूवर का हम .....
माता जी ने ममता बॉटी, और सजलता दिखलाई।
हम सबकी सच्ची मॉ बनकर, स्नेह दयालुता सिखलाई।
जितना मिला दुलार–प्यार, न उसकी सीमा पाई है। गुरूवर का हम .....

15 **डा0 रामस्वरूप खरे** की कविता **'प्राची की झॉकी'** की पंक्तियॉ देखिए–

यही देश जिसमें सतियों ने 'जौहर' सीखा आन पर,
दीवालों में हँसकर चुनते बच्चे अपनी बान पर।

यही देश, जिसमें '**बन्दा वैरागी**' का बलिदान अमर।
वीर **शिवा राणाप्रताप** का त्याग और आदर्श समर।।
यहाँ उर्वशी भीख माँगती, फैलाकर आँचल का छोर।
संयम का **अर्जुन** हो उठता, मातृ–भाव से स्वयं विभोर।।
यही देश, जिसमें **'शिवि'** ने अपने जीवन का दान दिया।
प्राण कण्ठगत रन्ति देव ने अहो, अतिथि–सम्मान किया।
यही देश जिसमें सुरसरि को **भागीरथ** भू पर लाये।
ब्रह्म स्वयं ही बालरूप धर 'मनु' के आँगन में आये।।
यहाँ **कृष्ण** की गीता गूँजी, हुआ मुरलिया का भी शोर,
त्याग **बुद्ध** राहुल–रमणी को, हँसकर चले लक्ष्य की ओर।।

4ड़ जनजागरण अभियान की स्वीकृति :–

युग निर्माण का कार्य भागीरथी कार्य है। विगत ढाई हजार वर्षों में बड़े–बड़े आन्दोलन हुए। भगवान बुद्ध का, भगवान महावीर का आन्दोलन आया। उसने विश्व को नयी दिशा दी। सारे विश्व में बौद्ध धर्म फैल गया। ईसवी सदी के आरम्भ से पूर्व (दो हजार चार वर्ष पहले) समुद्रगुप्त, पुष्यमित्र का समय, भारत का स्वर्ण युग,गुरू गोरक्षनाथ, आचार्य शंकर, भक्ति काल के सन्तों का आविर्भाव तथा कबीर जैसे फक्कड़ फकीर एवं समर्थ राम दास, स्वामी विवेकानन्द जैसे योद्धा सन्यासी आये। रामकृष्ण परमहंस ने जिस समय शुरूवात दी, महर्षि अरविन्द ने, महर्षि रमण ने उसे आगे बढ़ाया। इन्ही दिनों भारत परतन्त्रता की बेड़ियों से स्वतन्त्र हुआ। यह आजादी राजनीतिक, थी, नेतृत्व अंग्रेजों के हाथ से गया, हमारे लोगों के हाथ में आया, पर सॉस्कृतिक परतन्त्रवाद तब भी बना ही रहा। हम पूर्णरूपेण आजाद नहीं हुए। भ्रष्ट, निकम्मे, पुत्रमोह से ग्रस्त, अति महत्वाकांक्षी राजनेताओं ने बागडोर सँभाल ली एवं राष्ट्र, खोखलाकर दिया। विगत सत्तावन वर्षों का हाल यही रहा। एक अत्यधिक संभावनाओं से भरा राष्ट्र, जिसके पास सर्वाधिक जन शक्ति है, लगभग खोखला कर दिया गया है। गरीबी व अमीरी के बीच सबसे अधिक खाई है, शहरीकरण बढ़ता जा रहा है एवं गाँव क्रमशः नष्ट होते जा रहे हैं। जो कार्य स्वतन्त्रता आन्दोलन में हुआ था, उससे भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य आचार्य श्री राम शर्मा ने अपने जिम्मे लिया एवं वह स्वयं भगवान ने उन्हें सौंपा, वह है राष्ट्र को पुनः सॉस्कृतिक दृष्टि से आजद कराने का। इस हेतु आचार्य शर्मा ने विगत पचास वर्षें से जन जागृति का अभिनव अभियान चलाया।

आचार्य शर्मा की युग निर्माण योजना के अन्तर्गत चलाया गया 'जन जागृति अभियान' जन–जन में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण करने वाला स्वतन्त्रता आन्दोलन से भी हजार गुना महत्व वाला आन्दोलन है। उसी के माध्यम से भारतवर्ष पुनः जगद्गुरू विश्व सम्राट बन सकेगा। समस्त संभावनाएँ यहाँ विद्यमान हैं। मात्र आध्यात्मिकता के विचार–प्रवाह के विश्व

व्यापी विस्तार से, गायत्री महाशक्ति के जन–जन तक विस्तर से युग परिर्वतन हो सकेगा। यह एक भवितव्यता है एवं आगामी पन्द्रहवर्ष इस तथ्य को चरितार्थ करेंगे, यह सुनिश्चित मानकर चलना चाहिए। आचार्य श्रीराम शर्मा लिखते हैं– "रात्रि की तमिस्रा सदा नहीं रहती, दिनको भी प्रकट होने का अवसर मिलता है। तब छोटे पक्षी ही नहीं, गजराज भी अपनी चिंघाड़ और वनराज अपनी दहाड़ से दिशाओं को गुजिंत करते दिखाई देते है। ऐसा ही सुयोग इन दिनों आ रहा है, यह आशा सबके रखनी चाहिए।"1

आचार्य शर्मा ने महाक्रान्ति के वर्तमान दौर को दो पहलवानों की लड़ाई की संज्ञा दी। यह लड़ाई असुरता और देवत्व के बीच चल रही है। असुरता चाहती है कि देवत्व किसी भी स्थिति में जीतने न पाए। उसी का वर्चस्व हावी रहे। दूसरी ओर सन्धिकाल की इस पराकाष्ठा वाले समय में देवत्व असुरता का मान–मर्दन करने हेतु पूरीतैयारी कर चुका है। जब दो पहलवान अखाड़े में लड़ते हैं, तो कभी–कभी लगता है कि सामने वाले पहलवान को दूसरे पहलवान ने इस तरह गिरा दिया है कि वह संभवतः अब उठ नहीं पाएगा। हो सकता है, वह हार जाए। लेकिन ऐसा नहीं हो पाता। कोई–न–कोई अचूक दाँव उसके पास भी होता है, जो वह अंतिम समय में चलाता है एवं अन्ततः वह अजेय माने जाने वाले अपने प्रतिपक्षी को पटखनी दे ही देता है। अभी असुरता का वर्चस्व हावी देखकर सभी को लगता है कि देवत्व कभी भी उभर नहीं पाएगा। लेकिन ऐसा नहीं है। देवत्व अपनी पूरी ताकत लगा कर असुरता को पटकनी देगा एवं अन्तःचारो ओर से असुरता मिटती चली जाएगी, देवत्व ही सभी ओर छाया दिखाई देने लगेगा।

इस प्रतिपादन में सबसे महत्वपर्ण है– 'आचार्य श्री राम शर्मा की विधेयात्मक दृष्टि' जिसके साथ उनकी दिव्य दृष्टि भी जुड़ी है। निराशाजनक दृष्टिकोण वाले कभी–कभी असुरता की विजय से प्रभावित नजर आते है।, पर यह क्षणिक है। अंततः असुरता पराजित होगी एवं देवत्व का वर्चस्व स्थापित होगा। इसी सन्दर्भ में आचार्य श्री राम शर्मा ने 'अखण्ड ज्योति', जुलाई 1984 में विशिष्ट लेखमाला लिखी थी उसमें 'ध्वंस हार चुका है–सृजन जीत गया है', 'तृतीय विश्व युद नही होगा', 'कैसा होगा प्रज्ञा युग का समाज', 'मनीषा को झकझोरने की चेष्टा' जैसे विषयों का प्रतिपादन था। शोधार्थी ने उन लेखों को पढ़ा, तो लगता है किएक दृष्टा महापुरूष ने भविष्य के गर्भ में झाककर सब कुछ देख लिया था। रूस का विराट साम्राज्य टूट–टूटकर बिखरने , अमेरिका की 'स्टार वार' की असफलता से लेकर बर्लिन की दीवार टूटने एवं उदारवाद की बयार बहने लगने तक का घटनाक्रम यही बताता है। प्रज्ञायुग का समाज किस तरह आदर्शों को स्थापित करेगा, कैसे आगामी ~~दस~~ ग्यारह वर्षों (1984 से 2015) में परिवर्तन दृष्टि गोचर होने लगेगा। यह सब हुआ व हो रहा देखकर लगता है कि यग परिवर्तन सुनिश्चत है। क्रमशः विचार क्रान्ति अभियान की लपेट में सारा विश्व आने जा रहा है, यह मानकर चलना चाहिए। ज्ञातव्य है कि 'अखण्ड ज्योति' का यह जो लेखन चला, उस समय वे (आचार्य शर्मा) सूक्ष्मीकरण की साधना में निरत थे और पॉच वीर भद्रों का निर्माण कर रहे थे।

आचार्य शर्मा ने स्थान–स्थान पर लिखा है कि " युग परिवर्तन को संकल्पित युग निर्माण

1. आचार्य श्री राम शर्मा – युग की माँग प्रतिभा परिष्कार– भाग–1 पृ0 21

मिशन एक दैवी अभियान है। यह नवयुग का मत्स्यावतार है।" यह विराट रूप लेता जा रहा है एवं आज 9 से 10 करोड़ व्यक्तियों तक फैल चुका है। उसी तरह जिस तरह जंगल में लगी दावानल, बड़वानल की तरह फैलती चली जाती है, ठीक उसी प्रकार विचार क्रान्ति की आग सारे समाज– विश्व को शीघ्र अपनी चपेट में ले लेगी।

गायत्री महाविद्या का पुनरूद्धारः सर्वोपरि उपलब्धि :–

आचार्य शर्मा के 'जन जागरण अभियान' की विगत उपलब्धियों को देखकर इस बात का अंदाजा लगया जा सकता है कि 'गायत्री महाविद्या' का पुनरूद्धार हुआ है एवं यह महाविद्या जन–जन को सुलभ हो गई है। जो ज्ञान कुछ व्यक्तियों तक सीमित था, जिसके लिए महामंडलेश्वर, शंकराचार्य तक भी पुरूषों में मात्र ब्राह्मण को छोड़कर अन्य किसी लिंग, जाति या वर्ण के लिए प्रतिबंधित, शापित, कीलित बताते थे, वह ज्ञान जन–जन तक पहुँचा। लाखों–करोड़ों नर–नारियों ने जाति का भेद तोड़ते हुए आचार्य श्री राम शर्मा के संरक्षण में गायत्री उपासना आरम्भ की, यज्ञ करना व कराना आरम्भ कर दिया एवं सभी वर्ग के लोग ब्रह्मणत्व अर्जित करते चले गए। नारी शक्ति के विषय मे कहा जाता था कि वह यदि गायत्री का जप करेगी तो वह बाँझ हो जाएगी, उस पर कहर टूट पड़ेगा पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। ढेरों सुसंततियाँ जन्मी एवं युगनिर्माण मिशन को समर्पित प्रतिभाओं के रूप में विकसित हुई। गायत्रीमय जीवन जीना एवं लौकिक, अध्यात्मिक सुख लेना सबको संभव हो गया क्योंकि एक समर्थ सत्ता (आचार्य शर्मा) ने सबका योगक्षेम अपने ऊपर ले लिया।

गायत्री महामंत्र जोरों से उच्चारित करना वर्जित था, पर अब इसका संकीर्तन, पाठ स्थान–स्थान पर होता दिखाई दे रहा है। सीडी एवं कैसेट्स स्थान–स्थान पर उपलब्ध है। 'सबके लिए सद्बुद्धि–सबका उल्लवल भविष्य' की प्रार्थना के रूप में यह महामंत्र सभी धर्म–सम्प्रदायों द्वारा स्वीकृत–अंगीकृत हो गया। सारे देश व विश्वभर के लगभग 100 से अधिक देशों में विगत साठ वर्ष में तेजी से गायत्री चेतना का विस्तार हुआ है, उसी अनुपात में सुख–शान्ति की समृद्धि भी आई है।,

यज्ञ बना एक आन्दोलन :–

भारतीय संस्कृति का अभिभावक 'विश्व भुवन की नाभि' माना जाने वाला यज्ञ आज एक आन्दोलन का रूप ले चुका है। अगणित व्यक्ति यज्ञीय जीवन जीने लगे। इसके पूर्व यज्ञ कुछ विशेष कर्मकाण्डी ब्राह्मणों तक ही सीमित था। वे ही इन्हें संम्पन कराते थे। कलियुग की पराकाष्ठा आते–आते यज्ञ का पुरातन सौम्य रूप नष्ट हो गया एवं इसका स्थान मनोकामनापूर्ति प्रधान देवी–देवताओं के नाम पर किए जाने वाले यज्ञों ने ले लिया। यही नहीं ये यज्ञ इतने मँहगें थे कि इन्हें कराना सबके वश की बात नहीं थी। इनमें भी अनेक तरह की विकृतियाँ आती चली गयी । भौतिक लाभों के लिए इन्हें मनमाने ढंग से सम्पन्न किया जाने लगा, इनका प्राण तो मानो नष्ट– सा हो गया।

याज्ञवल्क्य परम्परा को पुनः प्राण देते हुए **युग ऋषि आचार्य शर्मा** ने यज्ञ के ज्ञान–विज्ञान को जन–जन के समक्ष रखा उन्होंने कहा कि यज्ञसभी कर सकते हैं। इससे प्रदूषण नहीं होता, बल्कि प्रदूषण नष्ट होता है। उसके प्रमाण हेतु एक यज्ञ विज्ञान की प्रयोगशाला (ब्रह्मवर्चस

शोध संस्थान) उन्होंने स्थापित की। वैज्ञानिक अनुसंधानों और प्रतिपादनों द्वारा उनने बताया कि पर्यावरण संतुलन, समुचित निरोग जीवन का मूल आधार यज्ञ है, साथ ही यह दैवी प्रयोजनभी पूर्ण करता है।

सरल अर्थो वाले कर्मकाण्ड सम्पन्न करने वाले लाखों विभिन्न जातियों के नर–नारी प्रशिक्षित कर उनने यज्ञ को इस स्तर पर लाकर खड़ा कर दिया कि कोई भी इनके समक्ष खड़ा नहीं हो सकता। आश्वमेधिक स्वर– विज्ञान पर आधारित कर्मकाण्ड शैली उनने विकसित की एवं **ब्रह्मवादिनी महिलाओं–बहिनों** से इन्हें सम्पन्न करा के दिखा दिया। यही नहीं **दीप यज्ञ** की अभिनव विद्या को उनने जन्म दिया, जिसमें लाखों–करोड़ों की भावनात्मक भागीदारी होती हैं। आज ये संस्कार प्रधान, आन्दोलन प्रधान एवं सामान्यतीय यज्ञ देश–विदेश में सम्पन्न होते देखे जा सकते हैं। **आचार्य शर्मा** ने यज्ञ को जीवन जीने की पद्धति के रूप में विकसित किया, निष्काम भाव से जीते हुए अपने संस्कारों के निर्माण की प्रक्रिया को उनने यज्ञ की संज्ञा देकर लाखों व्यक्तियों के जीवन में उनने यज्ञ उतार दिया। यज्ञ के अतिरिक्त किए गए सभी कर्म बन्धन का कारण बनते हैं–

"यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्म बन्धनः" गीता की इस उक्ति को उनने समाप्त कर अपने जीवन से प्रारम्भ कर करोड़ों व्यक्तियों के जीवन में सार्थक कर दिया। यह सर्वोपरि उपलब्धि है कि यज्ञीय जीवन जीना, दान (समय दान, अंशदान, विभूतिदान) , देवपूजन (व्यक्तित्व का परिष्कृति करण) तथा संगतिकरण (सहगमन–संगठन) जैसे यज्ञ के अर्थों को जीवन में उतारना एक सामान्य क्रम बन गया एवं उस क्रम में ढेरों व्यक्ति ढलते चले गए।

अध्यात्मः जीवन जाने की कला के रूप में प्रतिष्ठितः :–

अध्यात्म संजीवनी विद्या है, जीवन जीने की कला है एवं इसे इसी परिप्रेक्ष्य में समझाना चाहिए, यह युग ऋषि आचार्य शर्मा की व्याख्या जन–जन प्रतिष्ठित हुई। यह तीसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि है। अध्यात्म को दुर्भाग्यवश पलायनवाद से जोड़कर धर्मतंत्र की विकृति का रूप दे दिया गया था। विज्ञानसम्मत अध्यात्म यदि जीवन में उतरे तो कैसे वह क्रांतिकारी परिणाम दे सकता है– यह आचार्य शर्मा ने प्रतिष्ठित किया। यही नहीं उनने धर्म के तीन तत्वों की तत्व मीमांसा (मेटा फिजिक्स), नीतिशास्त्र (एथक्सि) एवं अध्यात्म (स्प्रिचुएलिटी) की युगानुकूल व्याख्या प्रस्तुत कर आज की पीढ़ी के लिए उसका चिर नवीन प्रस्तुतीकरण किया। लगभग हर पक्ष पर उन्होंने विपुल साहित्य का सृजन किया। लगभग तीन हजार दो सौ से अधिक छोटी–बड़ी पुस्तकें मात्र एक ही व्यक्ति-आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा लिखी गईं एवं इनने अध्यात्म को समाज में प्रतिष्ठित कर दिया। वर्ष 1945 से 2004 तक के लोकमानस को इस अध्यात्म प्रधान चिन्तन से नई दिशा मिली। उपासना की पूरक आराधना है, यदि परमार्थ–प्रधान समाज सेवा नहीं की जाए, तो उपासना अधूरी रहती है, यह प्रतिष्ठा भी आचार्य शर्मा ने की। एक बहुत बड़ी उपलब्धि समाज को आचार्य शर्मा ने 'जन–जागृति अभियान' के माध्यम से दी है। क्योंकि इससे पूर्व यही माना जाता था कि किसी आयु विशेष में पहँचकर परिपूर्ण भोग करने से पश्चात ही धर्म की ओर अभिमुख हुआ जाता है।

अध्यात्म की प्रगतिशील व्याख्या प्रस्तुत करते हुए आचार्य शर्मा ने कहा कि– "अध्यात्म हर श्वांस चौबीसों घंटों जिया जाना चाहिए।" यह मान्यता देश की युवा शक्ति ने भी स्वीकार की एवं लाखों–करोड़ों अन्य आयु वर्ग के व्यक्तियों ने भी। **संजीवनी–साधना** के रूप में अध्यात्म–साधना, शिक्षण स्थान–स्थान पर शक्ति पीठों–प्रज्ञापीठों में चलने लगे एवं लाखों-लाखों व्यक्तियों ने शांतिकुन्ज साधना आरण्यक में संजीवनी साधना शिविरों में भागीदारी की। हस्तामलकवत सभी साधकों ने अनुकूल परिणाम भी पाया। उनका जीवन परिष्कृत हुआ एवं देखते–देखते उन्हें लौकिक–पारलौकिक लाभ हस्तगत होते चले गए।

'समयदान' की युगधर्म के रूप में प्रतिष्ठा :–

आचार्य शर्मा के जन–जाग्रति अभियान की एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि है– समयदान की युग धर्म के रूप में प्रतिष्ठा। समय भी एक पूँजी है एवं यदि इसका नियोजन सही एंग से किया जा सके तो परमार्थ के लिए इसे प्रयुक्त किया जा सकता है, यह बात लाखों व्यक्तियों ने जानी। प्रतिदिन दो घंटा समय अथवा सप्ताह में एक दिन अथवा वर्ष में एक दो या तीन माह का समय युग निर्माण मिशन के लिए–पारमार्थिक प्रयोजनों के लिए देने वाले ढेरों व्यक्ति तैयार होते चले गए। 'समयदान' युग निर्माण मिशन की सबसे कीमती पूँजी है।

समयदान ने ही लोक सेवियों की एक बहुत बड़ी टीम खड़ी की हैं। कइयों ने तो जीवनदान देकर स्वयं को महाकाल के इस विशष्ट कार्य हेतु केन्द्र (शान्ति कुन्ज हरिद्धार, एवं गायत्री तपोभूमि मथुरा) के हाथों अपनी बागडोर दे दी। अगणित व्यक्ति स्थानीय स्तर पर अथवा क्षेत्रीय प्रज्ञासंस्थानों के निर्देश पर अन्य स्थानों पर जाकर युग ऋषि आचार्य शर्मा के सन्देश वाहक के रूप में उनका सन्देश देते है। वेतन भोगी कर्मचारियों के स्थान पर स्वैच्छिक समयदानियों–स्वयं सेवकों का तंत्र इतना विराट प्रयोजन पूरा कर सकता है? इसका एक जीता–जागता उदाहरण है 'अखिल विश्व गायत्री परिवार' का 'प्रज्ञाअभियान' एवं 'युगनिर्माण मिशन'।

आचार्य श्री राम शर्मा का आश्वासन यही है कि "'जन–जागृति अभियान' के माध्यम से अब अगली महाक्रान्तियाँ बड़ी तेजी से आने वाली है। आभास भी नहीं हो पाएगा कि कब राजनीति से भ्रष्टाचार मिट गया, कब कलातंत्र पूरी तरह परिष्कृत हो गया, कब नारी जागरण हो गया एवं कब सारा समाज दुर्व्यसनों से मुक्त हो गया। यह लगता तो असंभव–सा है, पर होगा। देख वही पाएगा, जिसकी ऑखें होंगी अर्थात जिसके विवेक के चक्षु खुले होंगे, जो प्रज्ञावान होगा। दूरदर्शी विवेकशील ही इन क्रान्तियों का द्रुत गति से आ पाना देख पाएगा।"[1] **पं0 जवाहर लाल नेहरू** का कथन है– "अभी तक कथित बड़े लोगों की शक्ति पर ध्यान दिया गया पर अब समय आ गया है जबकि जन साधारण की सम्मिलित शक्ति को समझा जाये। दूसरी बात यह है हम उसे विकास करने का मौका दें। जनता को मानसिक स्तर पर विकास के लिए तैयार करना होगा। यह कार्य व्यापक लोक शिक्षण एवं जन जागृति से ही संभव है।"[2]

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा – महान अभियान की विराट यात्रा, अखण्ड ज्योति वर्ष 68, अंक 11 पृ0 65
2. पं0 जवाहर लाल नेहरू– युग निमार्ण योजना (पाक्षिक) वर्ष 1, अंक 1, पृ0 1

एक अन्य विचारक का कथन है– "देवत्व हर व्यक्ति के अन्तःकरण में प्रचुर मात्रा में विद्यमान है, कोई भी व्यक्ति नितान्त बुरा नहीं होता। अन्तस्तल में प्रसुप्त श्रेष्ठता को उभार दिया जाये तो बुरे से बुरा व्यक्ति भी महान् बन सकता है। X X X

बुराइयाँ किसी के अन्दर नहीं, अपनी दृष्टि में हैं। हम अपनी दृष्टि रचनात्मक और इतनी पैनी कर लें कि भीतर से भीतर छिपे सद्भाव को पहचान लें और फिर उसे उभारने– अभिसिंचित करने जुट जायं तो कोई भी शक्ति नहीं जो जन–जन के जीवन में उज्जवल प्रकाश भरने से रोक सके।"1

रोग जिस स्तर का होता है, उसके निवारण के लिए उसी स्तर के प्रयास– उपचार करने पड़ते हैं। युग निर्माण योजना मिशन के कोटि–कोटि जीवंत–जागरूक स्वंय सेवक क्रान्ति सैनिक बनकर जन–जागृति हेतु निकल पड़े हैं। भयंकर महामारी की भाँति फैली हुई सामाजिक विषाक्तता को समाप्त करने के लिए इससे कम में काम भी तो नहीं चल सकता। वैचारिक क्रान्ति की पक्षधर क्रान्ति सेना समाज के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश करके कार्य कर रहा है। डा० प्रणव पण्ड्या लिखते हैं–

"अधुनातन साधनों से अछूते गाँव हों या भेड़ चाल चलते नगर; दुर्व्यसनियों के दल हों या पर्यावरण प्रदूषण के क्षेत्र; कलुषग्रसत मन हों अथवा कुपोषण ग्रस्त नई पीढी; त्रस्त अपमानित नारी जाति हो या अशालीन उच्छृंखल जीवन–शैली; कोई भी क्षेत्र अब जन–जागृति अभियान से अप्रभावित न रह सकेगा।" 2.

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों ने उनके जन–जागरण अभियान की अभिव्यक्ति अपने काव्य में अपने–अपने स्तर से की। जैसा कि **श्री गोपालदास 'नीरज'** की कविता **'जलाओ दिये पर'** की पंक्तियों में जन जागृति का संदेश देखिए–

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए। X X X

सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी,
चलेगा सदा नाश का खेल यूँ ही भले ही दीवाली यहाँ रोज आए। जलाओ दिये पर .....
मगर दीप की दीप्ति से सिर्फ जग में कहीं मिट सका है धरा का अँधेरा,
उतर क्यों न आयें नखत सब गगन के नहीं कर सकेंगे हृदय में उजेरा,
कटेगी तभी यह अँधेरी घिरी जब, स्वयं धर मनुज दीप का रूप आए। जलाओ दिये पर .....

आलोच्य काव्यों में जनजागरण के अभियान की स्वीकृति–

1. **श्री बाबूलाल जैन 'जलज'** की कविता **'आज विश्व में ऊँचा कर दो!'** की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

(I) **आज विश्व में ऊँचा कर दो, भारत माँ का भाल।**
अन्धकार अज्ञान हटादो लेकर ज्ञान मशाल।। X X X
लेकर अपना ज्ञान नगीना, ऊँचा मस्तक चौड़ा सीना।
आज धरा को स्वर्ग बना दो–बहा–बहाकर खून पसीना।
जग जाहिर है पास तुम्हारे,सत्य अहिंसा ढाल। आज विश्व में ऊँचा कर दो .....

---

1. अल्बर्ट श्वाइत्जर - युग निर्माण योजना (पा०) वर्ष 1 अंक 1 पृ० 1
2. डा०प्रणव पण्ड्या - अखण्ड ज्योति, वर्ष 68, अंक 11, पृ० 65

।। **फैला भ्रष्टाचारी कुहरा, द्वार–द्वार पर तम का पहरा,**

बीत गये कितने संवत् सर, भरा न घाव हृदय का गहरा।

युग–युग के अज्ञान तिमिर को हॅस–हॅस कर तुम पीते रहना।

दुःख की रात गुजर जायेगी, प्राणदीप तुम जलते रहना ।।

उखड़ेगा असुरो का डेरा , होगा ध्वस्त तिमिर का घेरा,

भौतिकता के पंख कटेगे, होगा शाश्वत ज्ञान सवेरा।

द्वार–द्वार पर अलख जगाकर तक प्रमाद को हरते रहना। दुःख की रात .....

2 **स्वामी सत्य भक्त** के **जागरण गीत** की पंक्तियॉ देखिए–

अब खोल नयन कर ले विचार, कत्तर्व्य पन्थ दिखता अपार।

ढोना है तुमको अमित भार, अब हैं दिन में बस प्रहर चार।

जड़ता की शैय्या त्याग त्याग। सोने वाले अब जाग जाग।

उदया चल पर आये दिनेश, अणु–अणु पर छाया किरण राग। सोने वाले .....

निशि गई गया अब तमस्तोम, फैला है भूतल पर प्रकाश।

ऑखों की उलझन हुई दूर, हो रहा जगत का भ्रम विनाश।

दिख रहा कुपथ पथ का विभाग। सोने वाले .....

4 **श्री मती माया वर्मा** की निम्न पंक्तियों में '**जनजागरण**' की प्रेरणा देखिए–

। **"चल पड़े हल खेत में होने लगी धरती सगर्भा,**

खिल रही है कृषक के मुख पर चमकती दिव्य आभा,

हो गया प्रारब्ध नव अध्याय श्रम का सामने वह

चिमनियों से धूम्र उठता प्रगति सूचक चिनह–सा यह

एक ही रास्ता परिश्रम का , सफलता को वरेगा,

देश की माटी, पसीना अब हमारा नम करेगा।

हम मना लेंगे प्रबल पुरूषार्थ से निज भाग्य रूठा

जागरण फैला जगत में, नींद औ आलस्य छूटा।"

।। **समय अब आ गया साथी! कि बदलेगी पुरानी मान्यताएँ।**

पहन कर फिर नया परिधान सद्गुण की सजेंगी सभ्यताएॅ।

मगर लानी पड़ेगी क्रान्ति इसके हित विचारों में सभी के,

लगानी अब पड़ेगी आग, इसके हित, विकारों में सभी के।। "

।।। **"तोड़ो अपनी सीमाएँ, छोड़ो मन की कुंठाएँ**

कब रोक सकी बाधाएं उनको जो आगे आएॅ

देखो साहस मुसकाया, संदेश नया युग लाया।

अपनी प्रतिभा विकसाओ, अपनी सामर्थ्य बढ़ाओ

जग को परिवार बनाओ, मन की ममता विकसाओ।

उठ सबको गले लगाओ, क्या अपना और पराया।।

सन्देश नया युग लाया संक्रान्ति काल है आया।।"

5 श्री मती विद्यावती मिश्र :– कवयित्री के **जीवन, जय और जागृति** का सन्देश देने वाले भावना–प्रधान गीतों के अभूतपूर्व संकलन 'युग–वीणा' के अधिकांश गीतों को जन–जागरण गीत कहा जा सकता है। इस संग्रह की अधोलिखित कविता 'जीवन इसी का नाम है' मनुष्य को कर्म पथ पर निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है–

"चलता चले वह आदमी, बढ़ता चले वह आदमी

उत्सर्ग पथ पर शूल से, लड़ता चले वह आदमी

है आदमी तो वह कि जिसका धर्म ही संग्राम है! जीवन इसी का नाम है!!" "**युग वीणा**" पृ0 15.

इस रचना का भाव **राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त** की उन पंक्तियों से मिलता है जहाँ उन्होंने कहा है– **"नर हो न निराश करो मन को, कुछ काम करो कुछ काम करो,"**

"वही मनुष्य है जो कि मनुष्य के लिए मरे"

" सब तीर्थों का एक तीर्थ यह , हृदय पवित्र बना लें हम,

आओ यहाँ अजात शत्रु बन , सबको मित्र बना लें हम,

रेखाएं प्रस्तुत हैं, अपने मन का चित्र बनालें हम,

सौ–सौ आदर्शों को लेकर , एक चरित्र बना लें हम।।" – गुप्त

इसमें हमें **'स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवाः'** वाले पावन आदर्श का आभास मिलता है।

कवयित्री श्री मती मिश्र के एक गीत से "**जियो और जीने दो**" का सिद्धान्त परिलक्षित होता है–

"माँग रही है आज मनुजता रहो और रहने दो,

क्योंकि ताप के अन्तराल में पली यहाँ पर छाया।

ढलती निशि के अन्धकार ने राग ज्योति का गाया,

अगणित बज्रों से निर्मित हिमगिरि की दृढ़ छाती पर

छोटे से पौधें ने अपना है अधिकार जमाया,

माना तुम निर्भय सागर सम, प्रलय वेग से बहते,

किन्तु निकट ही तुष्टिदायिनी सरिता भी बहने दो, रहो और रहने दो।।"

एक अन्य गीत में कवयित्री ने **गीता के निष्काम कर्मयोग** को प्रतिपादित किया है–

शब्द–जाल से सुधार हो न सकेगा, पंख के बिना कहीं विहंग उड़ेगा!

कर्म करो सिद्धि की न कल्पना करो! साधना करो!! X X X

भाग्य से न फल, परन्तु स्वेद से मिला, शूल सहसका तभी प्रसून है खिला,

कुम्भकार दिव्य दृष्टि सर्जना कर! साधनाकर!!

एक अन्य जागृति गीत जो "**जागृति**" पत्रिका में सन् 1966 में '**अभियान का समय है**' शीर्षक से प्रकाशित हुआ वह इस प्रकार है–

"बैठो न शान्त रहकर अभियान का समय है, जागो स्वदेश वीरो बलिदान का समय है।

घेरे हुए दिशायें संघर्ष का सवेरा, उतरा विशद तिमिर का पट चीर कर सवेरा, X X X

पग पर प्रकाश फैला प्रस्थान का समय है। बैठो न शान्त रहकर .....

6 **श्री शिवशंकर मिश्र** :– कवि देश के रक्षक पहरेदारों को सचेत करता है–

। **राष्ट्रदेवता जाग रहा हे तुम्हीं पहरूए सो गए।।**

सभी ओर दुश्मन हैं फैले– गन्दे, घातक और विषैले,

भेद न अपना बतलाते हैं – भॉति भॉति से भरमाते हैं।

सावधान कल लगे तुमको तुम ही वन्दी हो गए।। राष्ट्रदेवता .....

गैरों ने भ्रम जाल बिछाए – अपने तुमको लगे पराए,

है बिलगाव भाव उपजाया – हर अपना ही लगा पराया।

लगता भूल भुलैया में फॅस आपने में ही खो गए। राष्ट्रदेवता .....

कवि की एक कविता में **गायत्री महामंत्र** के जप करने की **सार्वभौमिक** प्रेरणा दृष्टव्य है–

।। **करो नित गायत्री का जाप।**

रहेगा मन में क्लेश न, शेष, रहेगा नहीं किसी से द्वेष,

मिलेगा जगती में सम्मान– अलौकिक जीवन का सन्देश।।

यहाँ प्रति अक्षर में वरदान, यहॉ प्रति अक्षर रहता ताप। करो नित गायत्री का जाप।

मिलेगा तुमको परमानन्द, सत्य की पावन ज्योति अमन्द

दिखेगा पुण्य मुक्ति का पन्थ – टूट जायेंगे सब भव बन्ध

अरे कैसा सम्मोहक मंत्र कि, आशिष–सा बन जाता शाप। करो नित गायत्री का जाप।

स्वयं होगा कुंठा का नाश, त्याग नव होगा, नव विश्वास,

विगत तम की छाया से दूर, बनेगा नव मानव इतिहास।

करो तुम पूर्णहूति दे क्षार जन्म भर के संचित– सन्ताप ।। करो नित गायत्री का जाप।

।।। कवि एक अन्य गीत में स्वयं को बदलने की प्रेरणा दे रहा है–

स्वयं को भी जरा बदलो अगर दुनियाँ बदलनी है।

कहाँ तक सत्य का सूरज अँधेरे में टटोलोगे, कहाँ तक तुम पराजित जीत की जयकार बोलोगे।

कदम आगे रखो केवल कहो बस पहुँच चलना है। स्वयं को भी जरा बदलो .....

न होता कर्म कहने से, न निभता धर्म सहने से

नहीं निर्माण होता है, महज मीनार ढहने से

सँभालो दूसरों को किन्तु तुमको भी सँभलना है। स्वयं को भी जरा बदलो .....

7 डा0 **राम स्वरूप खरे** की कविता **'सुनाओ जग को मंगल–गान'** की पंक्तियॉ देखिए–

उठो, जागो भारत–संतान, सुनाओ जग को मंगल–गान।

मनुज की बुद्धि ध्वंस में निरत, स्वार्थ में अन्ध, युद्ध में व्यस्त।

आसुरी शक्ति उदित–सी जान, धरा सक्षम हो उठती स्त।।

करो तुम मानवता का त्राण और नैतिकता का उत्थान। उठो, जागो .....

धधकती प्रतिहिंसा की ज्वाल, बुझाओ, ब्रहा अहिंसा–धार।

दूर कर पारस्परिक विभेद, प्रवाहित करो शक्ति की धार।।

सिखाओ कर्म योग का ज्ञान, बढ़ो ओ ऋषियों की सन्तान। उठो, जागो .....

8 डा0 आर0 पी0 **कर्मयोगी** की पंक्तियों से जीवन व्यवहार का संदेश देखिए–

संकल्पों के सामने, टिक न सकें अवरोध।

साहस के बल बढ़ चलें, कहीं न बैर–विरोध।।

जन्म मिला जीवन खिला, यह असर अनमोल।

आलस में बीते नहीं, चलिए ऑखें खोल।।

9 **श्री राम कुमार भारतीय की एक रचना की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–**

उठो जवानों निकल पड़ो अब नवयुग के निर्माण को।

तुम ही कर सकते हो फिर से भारत के उत्थान को।।

आज तुम्हारे कंधों पर उज्जवल भविष्य का भार है,

आज तुम्हारी ही गतिविधि को देख रहा संसार है।

आज तुम्हारे ही हाथों में इस भारत की लाज है,

तुम ही इसको बना सकोगे धरती का सिरताज है।।

तुम अपनी हुंकारों से मुखरित कर दो सुनसान को। उठो जवानो .....

आँख खोलकर देखो, आया नया सवेरा द्वार पर, जाने कितनी सदियों का अन्धेरा भागा हारकर।

आज नया सूरज उगा हे और नया आकाश है, नये फूल मुस्काते, धरती पर बिखरा उल्लास है।।

कोने–कोने में फैलादो, तुम अपने अभियान को। उठो जवानो .....

10 **श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय'** की जन जागरण की एक रचना की भावपूर्ण पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं– **जाग उठे दीपक की पीड़ा, तो फिर हम भी जल सकते है।,**

प्रज्ञापुत्र निकल आये ले, ज्ञान यज्ञ की मशालें,

तो फिर मानस में अभाव ज्ञान दीप वे सहज जलालें

शान्ति कुन्ज का चले करवां, दम्भ तिमिर का दल सकते है।। जाग उठे .....

11 पं0 **श्री राम गोपाल दीक्षित** अपने गीत के माध्यम से तरूणाई का आहवान करते हैं, पंक्तियाँ देखिए– **उठो जवानो! तुमने ऐसी वह तरूणाई पाई है,**

जिसके बिना किसी भी युग में, क्रान्ति नहीं हो पाई है।

जहाँ कहीं भी आफत आई, तरूणाई ने लाज बचाई।

नापी ब्योम ऊँचाई जिसने सागर की गहराई।।

घर्राता है गगन तुम्हारी, जोश भरी ललकारों से,

हो उठती हैं ध्वनित दिशायें होश भरी हुंकारों से
काल की चाल बदलने वाले, आन–बान पर मरने वाले।
तुम जागे तो जग जागा है, युग ने ली अँगड़ाई है। उठो जवानो .....

12 **डा0 हरगोविन्द सिंह** की कविता '**जगो हे युवा रक्त**' की पंक्तियॉ राष्ट्र की तरूणाई को निहारकर ही लिखी गयीं–

"कर दिया रूढ़ियों औ कुप्रथाओं ने अशक्त, मेटने अंध–विश्वास, जागो हे युवा रक्त।।
बढ़ता जाता दानव दहेज का वृत्यासुर, झंकृत न हुए इसके भय से कितने नूपुर।
पायल सहमी, सिन्दूर बनया इन्तजार, कितनी कन्याओं को इसने दी अश्रुधार।।
ले वज्र–अस्त्र मारो इसको, है यही वक्त।। मेटने अंध–विश्वास ..... X X X
ऐसी ही कई दीमकों ने खाया जीवन, लग गया मानवों के विवेक को शायद घुन।
तुम उठो और इन सब पर प्रबल प्रहार करो, अज्ञान दैत्य से मानव का उद्धार करो।।
पीड़ा इतनी गहरी है, हो सकती न व्यक्त। मेटने अंध–विश्वास जगो हे ....."

13 **श्री झलकन लाल वर्मा 'छैल'** की एक रचना की पंक्तियॉ देखिए–

"दीप जलाते चलो, उजाला चलो फेंकते राह में–
मिल जाऐगी किसी दिवस मंजिल तुमको विश्राम की। X X X
आगे बढ़ते चलो, न देखो पीछे आता कौन है, पीछे हटने वलो बढ़कर कभी न करते सामना,
अपना ध्येय अटल है–है गम्भीर हमारी साधना, तो अवश्य मीठे फल देगी अपनी पावन कामना।
बढ़ते रहे सदैव, दिखाई पीठ न यदि कर्त्तव्य को –
दृष्टि कभी टेढ़ी हो सकती नहीं विधाता नाम को।"

14 **श्री बलराम सिंह परिहार** की कविता '**शान्त सुधा रस**' की पंक्तियॉ देखिए–

"बन्द करो बारूद" बनाना मानवता को जीने दो,
मत वारूणी पिलाओ जग को शान्त सुधा रस पीने दो
खोलो हृदय कपाट, रोशनी को भीतर तक जाने दो, सूख गये है भाव स्नेह रस देकर उन्हें जगाने दो।
जोड़ सको तो अन्तर जोड़ो मत विष बुझी संगीनें दो। मत वारूणी पिलाओ .....
घृणा नहीं फैलाओ, दुनियॉ संवेदन की प्यासी है,
बन्द करो हिंसा पहले ही घर घर घोर उदासी है
रोक सको तो छीना झपटी भीगे नयन नगीने दो। मत वारूणी पिलाओ ....."

15 **श्री शचीन्द्र भटनागर** :– श्री भटनागर वैचारिक क्रान्ति की पक्षधर क्रान्तिसेना को नैतिक समर्थन देते हुए उसका मनोबल ऊँचा बनाए रखने हेतु आह्वान करते हैं–

"रह सकेगी न कोई धरा दलदली, क्रान्ति सेना चली, क्रान्ति सेना चली।
गॉव हो या नगर, रात दिन दोपहर, हर तरफ आ रही चेतना की लहर,
काफिला चल पड़ा है सृजन के लिए, साहसी आ रहे अनुगमन के लिए,
सो सकेगी न कोई डगर या गली। क्रान्ति सेना चली .....

एक है अब युवा शक्ति का संगठन, हो सकेगा न दुष्वृत्ति कर संक्रमण,
नर्क जीवन करेगा न कोई व्यसन, हम करेगे यहॉ स्वच्छ वातावरण;
फिर मनुजता नहीं जा सकेगी छली। क्रान्ति सेना चली ....."

16 **श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'** के एक गीत की पंक्तियॉ अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं–

I **"धीमी गति को देख, धैर्य का साथ नहीं छोड़ो,**
लेकर क्रान्ति मशाल, शान्ति का हाथ , नहीं छोड़ो।
कुरूक्षेत्र में खड़ा राष्ट्र के अर्जुन का रथ है– तुम सारथी सुजान, जिधर चाहो रथ को मोड़ो।
जिससे मिटे कुहासा, उन्मन अर्जुन के मन का– वह विराट झॉकी दिखलाओ, कॉपे गात नहीं।
झंझावात रहेंगे हरदम, ऐसी बात नहीं।।"

II **कारवॉ रोको नहीं निर्माण का, है सृजन की कामना तो साथ दो।**
हम चले विपरीत आँधी में हमारे, वक्ष से तूफान टकराता चला।
चल बवण्डर बिजलियों के दौर से, रोशनी के फूल बिखराता चला।।
सब विरोधी शक्तियाँ आकर झुकीं, हो चरण की साधना तो साथ दो। कारवाँ रोको नहीं निर्माण का"

17 **डा0 जमुना दास बड़ैरिया की** रचना **'आनन्द का निर्माण'** की पंक्तियॉ देखिए–

"आनन्द का निर्माण कर लो, जिन्दगी में उठो! नव जीवन जगाओ।
चतुर्दिक नव चेतना का श्रेष्ठ वातावरण बनाओ।।
आत्मा की प्रगति से ही सदा, आनन्द का निर्माण होगा।
जिन्दा दिली से जिएँ जीवन, तभी जग में त्राण होगा। "

4च जीवन संघर्ष का आह्वान :–

मनुष्य जीवन में यदि कुछ सौन्दर्य है तो वह है उसकी संघर्ष–शीलता। संघर्ष विहीन जीवन बिल्कुल मृतप्राय और भयावह लगता है– रूखा, नीरस और उद्देश्य हीन। जिस जीवन में कोई हलचल न हो, कोई उद्देश्य न हो, लड़ने का साहस न हो, परिश्रम और पुरूषार्थ न हो वह जीवन निस्सार और बेकाम ही माना जायेगा। भय, विषय, आहार और निद्रा की साधारण क्रियायें तो पशु भी प्रसन्नता पूर्वक कर लेते हैं, मनुष्य की जीवन–पद्धति भी इन्हीं तक सीमित रहे तो उसमें फिर मनुष्य होने की प्रशंसा और महत्ता क्या रही? मनुष्य में अपने सौभाग्य निर्माण की विशेषता है, वह न हो तो उसे भी सामान्य श्रेणी का ही कोई जीव गिना जाना चाहिए। यह विशेषता संघर्षों से ही अक्षुण्ण रहती है। संघर्ष मनुष्य जीवन का देवता है जो उसे मन चाहा वरदान प्रदान करता हैं। महर्षि कर्वे के अनुसार– "मानव जीवन अमित विभूतियों का पुंज है उसमें अगणित रत्नों और सिद्धियों का भाण्डागार छिपा पड़ा है। पर वह प्राप्त उन्हें ही होता है जो संघर्ष के लिए कटिबद्ध रहते हैं।" जीवन संग्राम में विजय प्राप्त कर सकना केवल उन्हीं के लिए सम्भव है जो शूरवीर सेनानायककी तरह हर मोर्चे पर लड़ने के लिए सदा प्रसन्नता पूर्वक तत्पर बने रहते है। पौराणिक गाथा के अनुसार समुद्र मन्थन कर चौदह रत्न प्राप्त किये गये थे। जीवन वह समुद्र है ---

जिसे यदि साहस, सतर्कता और प्रसन्न मुद्रा के साथ मथा जाय तो उसमें से इतना अधिक प्राप्त होने की सम्भावना है जिसका परावार नहीं। संसार में सत्पुरूषों ने जीवन का स्वरूप और मूल्य समझा है। उसके सुदपयोग करने का साहस किया है, फलतः वे अपने साथियों की तुलना में अत्यधिक ऊँचे उठे दिखाई पड़ते हैं। सद् उद्देश्य के लिए अनवरत एवं बाधाओं से संघर्ष करके मनुष्य खोता कुछ नहीं, पाता ही पाता है।1"

मनुष्य की शक्तियों और सामर्थ्यों का कुछ ठिकाना नहीं है फिर भी अधिकांश व्यक्ति अविकसित ही देखे जाते हैं। इसका कारण और कोई दूसरा नहीं, साधन और परिस्थितियों का अभाव भी नहीं होता वरन् उनकी उत्साह और संघर्ष की भावना मर चुकी होती है। उन्हें सामान्य जीवन में ऊँचे उठने की कोई कल्पना नहीं होती। परिश्रम से वे मुँह छिपाते हैं। उनके जीवन की कोई व्यवस्थित आकाँक्षा नहीं होती। इस स्थिति को 'सन्तोष' की स्थिति नहीं कहेंगे। सन्तोष तो मनुष्य का गौरव विकसित होने से ही होता है। यह स्थिति जीवन हीन होने से, निरूद्देश्य होने से नहीं प्राप्त हो सकती। उद्देश्यों, आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए विधिवत् विचार आन्दोलन और कठिनाइयों से मोर्चा लेना पड़ता है। सफलता या असफलता तो बाद के परिणाम हैं पहले तो आन्तरिक कुरूक्षेत्र को ही उत्तेजित करना पड़ता हैं। संघर्ष–शील व्यक्ति का ही जीवन जागृत जीवन माना जाता है। आचार्य श्रीराम शर्मा के मतानुसार– "अपने पैरों पर खड़े होने वाले का विवेक जागृत होता है, कठिन परिस्थितियों से जूझने का बल होता है फलस्वरूप वे अपने लिए कोई उचित मार्ग कहीं न कहीं से ढूंढ निकालते हैं। किसी व्यक्ति की सहायता का बोध इसी से हो सकता है कि उसमें अपनी आंकांक्षाओं की पूर्ति के लिए संघर्ष चल रहा हे अथवा नहीं? अपने विचारों को प्रदर्षित करने की उसमें क्षमता है या नहीं?2"

जीवन संघर्ष का उद्देश्य :– जीवन निःसन्देह एक संग्राम हैं वीर पुरूषों के लिए यह एक चुनौती है कि वे उठें और अपना गौरव सिद्ध करें। दुनियाँ में फैली हुई बुराइयाँ एक चुनौती है, जो हमें ताल ठोंककर अपने से लड़ने के लिए ललकारती है। कायर और निकम्मे व्यक्ति इन बुराइयों को देखकर उरते, घबराते और कॉपते हैं। वे कभी ईश्वर को दोष देते हैं कि उसने यह बुराइयॉ क्यों बनाईं, कभी दुनियॉ को दोष देते हैं कि यह ऐसी घृणित हे, कभी कुछ सोचते हैं, कभी कुछ कहते हैं। यह बहाने बाजी और कोसना, झुंझलाना हमारी नपुंसकता का चिन्ह है। ईश्वर का इसमें कुछ भी दोष नहीं है। वह जीवों को तुच्छता से महानता की ओर ले जाना चाहता है, छोटे से बड़ा बनना चाहता है। अपने पुत्र को सच्चा युवराज बनाकर, उसे उततराधिकार प्रदान करने की यह सब तैयारियॉ हैं। ईश्वर कर्म निष्ठ है, वह घोर कर्म में लगा हआ है, उसकी सृष्टि का एक–एक कण अहर्निश बिजली की तेजी से अपनी धुरी पर घूम रहा है। सम्पूर्ण ग्रह , नक्षत्र, जड़, चैतन्य सभी बिना एक पल की भूल किये अपने कार्य में लगे हुए है। चैतन्य तत्व का सर्वोपरि धर्म है 'कर्म करना'।

1. महर्षि कर्वे– सद्उद्देश्य के लिए अनुवरत श्रम, युग निर्माण योजना (पाक्षिक) वर्ष 1, अंक 14, पृ01
2.आचार्य श्री राम शर्मा संघर्ष ही मानव जीवन का देवता है। युग निर्माण योजना (पा0) वर्ष 1, अंक 14,

आचार्य श्रीराम शर्मा लिखते है– "यदि सब कठिनाइयाँ–संसार में से उठा ली जावें तो जीवन नाम की कोई वस्तु ही शेष न रहेगी। सारा विश्व प्रलय की मृत्यु निद्रा में पड़कर सो जायेगा। इसलिए संसार में फैले हुए अन्यायों को देखकर न तो डरिये, न घबराइए, न झुंझलाइए, न किसी पर दोषारोपण कीजिए वरन ऐसा मानिए कि विश्व की व्यायामशाला में पाप के मुगद्र हमारे उठाने के लिए रखे हुए है, ताकि हम अपने को कर्मयोगी बनाते हुए परमात्माके सच्चे उत्तराधिकारी बन सकें। वे आगे लिखते हैं– "मनुष्य जीवन हमें चुनौती के पान की तरह दिया गया है। उस चूनौती को भूलिऐ मत जीवन एक संग्राम है, समय रणक्षेत्र है। घड़ी की टिक–टिक करती हुई सेकेण्ड की सुई हमें ललकारती और चिढ़ाती है। मानो वह हर सेकेण्ड कहती है कि मूर्ख ! मैं चल रही हूँ पर तू सो रहा है? साहस के साथ मानव जीवन का पान का बीड़ा उठाकर आप अपनी प्रतिज्ञा को क्या इसी तरह अज्ञान की मस्ती में पूरा करेगें? हाय, हम उस ललकार तथा चुनौतीको सुनते हैं और फिर मोह–मदिरा की खुमारी में झूम जाते है। इस मोह और अज्ञान को धिक्कारता हुआ जीवन का रणक्षेत्र हमें ललकारता हुआ चुनौती देता है कि हे महान पिता (परम पिता परमेश्वर) के अमर पुत्र! उठ, गाण्डीव को उठा और अन्याय–अनाचार से जूझते हुए अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर।1"

आध्यात्मिक जीवन में व्यावहारिक जीवन की अपेक्षा कहीं अधिक कड़े संघर्षो का सामना करना पड़ता है। भारतीय अध्यात्म की यह सबसे बड़ी विशेषता है। हिन्दू धर्म संघर्षो का प्रतीक है जिसमें व्यक्तिगत जीवन में कुविचार और कुकर्मों से होड़ लेकर सदाचार विकसित किया जाता है। सामाजिक जीवन में अनात्म–तत्वों के साथ प्रति स्पर्धा की शिक्षा मिलती है। सत्य और सदाचार की प्रतिष्ठा में निर्भयता और रूचि प्रदर्शित करके ही संघर्षशील होने का दावा किया जा सकता है। जिसके जीवन में ऐसा उत्साह, ऐसी कर्मठता, लगन और प्रकाश आ जाय, संसार–संग्राम में उन्हें ही विजय मिलती है। संघर्ष ही मनुष्य का सच्चा जीवन है। संघर्ष ही सफलता का प्रवेश द्वार है। संघर्ष से बचकर कोई महान कार्य पूरा नहीं किया जा सकता। हमारे अन्दर संघर्ष करने की भावना जाग जाय तो वह सब कुछ पूरा कर सकते हैं, जिसके लिए मनुष्य शरीर मिला हुआ है। आचार्य श्रीराम शर्मा की प्रेरक विचार अवलोकनीय है– "संसार को जीतने की इच्छा करने वाले मनुष्यों! पहले अपने को जीतने की चेष्टा करो। यदि तुम ऐसा कर सके तो एक दिन तुम्हारा विश्व विजेता बनने का स्वप्न पूरा होकर रहेगा। तुम अपने जितन्द्रिय रूप से संसार के सब प्राणियों को अपने संकेत पर चला सकोगें। संसार का कोई भी जीव तुम्हारा विरोधी नहीं होगा।2" एक अन्य पुस्तक में आचार्य शर्मा जीवन संग्राम को ही वास्तविक महाभारत की संज्ञा देते हुए लिखते हैं– ""आत्मा की पुकार है– उत्कृष्टता की ओर बढ़ते की ! परन्तु बहिरंग उलझा रहता है, आकर्षणों और लिप्साओं में मानवी गरिमा के अनुरूप आदर्श वादिता का मार्ग अपनाने कें लिए कुसंस्कारों रूपी कौरवों से महाभारत लड़ना होता है। इस जीवन संग्राम में विजयी मानव ही युग पुरूष कहलाने का श्रेय पाते है।3"

---

1. आचार्य श्री राम शर्मा– क्या है जीवन संग्राम का उद्देश्य, अखण्ड ज्योति जुलाई 1942 पृ0 28
2. आचार्य श्री राम शर्मा– हारिए न हिम्मत, 32
3. आचार्य श्री राम शर्मा– जीवन संग्राम ही वास्तविक महाभारत, पृ0 17

संघर्ष ही जीवन है और जीवन ही संघर्ष :–

आचार्य श्री राम शर्मा इस सन्दर्भ में लिखते हैं– "संघर्ष अपने अन्तःकरण से, संघर्ष अपने वाह्य वातावरण से और संघर्ष ही मानव का उद्देश्य हो। संघर्ष सत्य की प्राप्ति के लिए, ईश्वरतत्व की प्राप्ति के लिए, जीव मात्र के कल्याण के लिए हो। बिना संघर्ष किए प्रगति असम्भव है। आप असफल हो सकते हैं, हार सकते हैं किन्तु" असफलता यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से हुआ।" पुनः खड़े होइये, अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा को पुनः केन्द्रित करिये और लड़ पड़िये अपने दोषों से, अन्धकार से और संकीर्ण विचारों से । यह संसार युद्ध क्षेत्र है, आपके आराम के लिए नही, बल्कि समाज को आरामदायक बनाने के लिए है। दुःखों के, कष्टों के क्षण आयेंगे; पर निराश न हों, विचलित न हों। ये कठिन क्षण स्थायी नहीं, अपितु क्षणिक होंगे। जब तक ये कष्टों के बादल छँट न जायें, धीरज रखें और प्रतीक्षा करें उस सूरज का जो और अधिक तीव्रता के साथ आपके जीवन में चमकने वाला है। संघर्ष करें निराशा जनक (ऋणात्मक) विचारों के तालाब से निकलने के लिए। आशावादी बनें, उस परम सत्ता का याद करें जो कि सदैव आपके साथ है, आपके सहयोग का तत्पर, सहारा देने को तत्पर। संघर्ष समाज के विघटन के लिए नहीं, एकीकरण के लिए करें। एकीकरण का अर्थ है– ईश्वरत्व की ओर उन्मुख होना; क्योंकि ईष्वर एक हैं। यह संघर्ष समझदारी के साथ करना होगा जो कि त्याग व तपस्या द्वारा ही सम्भव है।1"

जीवन कैसे जिएँ? आचार्य श्री राम शर्मा के मतानुसार "जीवन को ऋषियों ने एक संग्राम की संज्ञा दी है। जीवन रूपी संग्राम में कोई कुशल व वीर योद्धा ही विजयी हो सकता है। इस संसार में धूप भी है और छाया भी। इस संसार में फूल भी हैं तो कॉटे भी, सुखी भी हैं तो दुखी भी और जीवन भी तो मृत्यु भी। हार–जीत व रात–दिन के युग्म की तरह जीवन में उतार–चढ़ाव का आना अवश्यम्भावी है। संघर्ष शील जीवन ही निखरता है। जो व्यक्ति डूबने से डरता है वह तैरना नहीं सीख सकता। जितने भी महान पुरूष हुए हैं उनक जीवन में संघर्ष व कष्ट आते रहे है। और उन्होंने हॅस–हॅस कर उनका मुकाबला किया है। रोने किलपने वाले कायर व्यक्ति के चरण कभी सफलता नहीं चूम सकते। अतः साहस, धैर्य व विवेक जैसे सद्गुणों को धारण करने पर ही जीवन सुखी होता है।2"

आलोच्य काव्यों में जीवन संघर्ष का आह्वान :–

1 **डा0 राम स्वरूप खरे** के एक तरूण गीत '**अरे यह जीवन है संग्राम** ' की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

विजय पाना ही तेरा काम, अरे यह जीवन है संग्राम।
भयानक चक्रव्यूह रच आज–खड़े हैं अनगिन शत्रु समक्ष।
रोक, तेरी उन्नति का द्वार–ग्रहण कर अनाचार का पक्ष।।
पहिन संयम का कवच ललाम, रोक आघातों को अविराम!
क्रोध को जीत, लोभ को जीत – प्रेम से, बन सन्तोषी धीर।

---

1. आचार्य श्री राम शर्मा– उज्जवल भविष्य के ज्योति कण पृ0 34–35
2. ब्रहमवर्चस – संस्कृति सौरव पृ0 9

काम को जीत, मोह को जीत – विरागी बन, त्यागी गम्भीर।।

सत्य बन, शिवम् और अभिराम, अनृत को जीत हृदय को थाम!

2 **श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय'** की रचना **'संघर्ष सामर्थ्य'** की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

"संग्राम जिन्दगी है, लड़ना उसे पड़ेगा। जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा।। X X X

आओ! लड़ें स्वयं के कलुषों से कल्मषों से, भोगों से, वासना से, रागों के राक्षसों से।

कुन्दन वही बनेगा, जो आग पर चढ़ेगा। संग्राम जिन्दगी है .....

घेरा समाज को है कुंठा कुरीतियों ने, व्यसनों ने रूढ़ियों ने निर्मम अनीतियों ने।

इनकी चुनौतियों से, है कौन जो भिड़ेगा? संग्राम जिन्दगी है .....

चिन्तन चरित्र में अब विकृति बढ़ी हुई है, चहुँ ओर कौरवों की सेना खड़ी हुई है।

क्या पार्थ इन क्षणों भी व्यामोह में पड़ेगा? संग्राम जिन्दगी है .....

।। **देवत्व को बचाने, संघर्ष भी किये हैं। हमने दधीचि बनकर, निज प्राण तक दिये है।,**

विकृत–विचार विष से, फिर जल रही मनुजता, देवत्व डर रहा हे, खुश हो रही दनुजता।

विष से उसे बचाने, संकल्प शिव किये हैं। देवत्व को बचाने .....

3 **श्री मती विद्यावती मिश्र** अपनी कविता **'जीवन इसी का नाम है'** में जीवन संघर्ष हेतु आह्वान करतीं है–

। **"चलता चले वह आदमी, बढ़ता चले वह आदमी,**

उत्सर्ग पथ पर शूल से लड़ता चले वह आदमी,

है आदमी तो वह कि जिसका धर्म ही संग्राम है।। जीवन इसी का नाम है।

कल की न कर तू कामना, बल की न कर तू याचना,

रक्षित सदा रख पास अपने – बस प्रगति की भावना,

शाश्वत प्रवासी का हृदय प्रभु का अलौकिक धाम है। जीवन इसी का नाम है।।"

।। **है जीवन रहा पुकार हार मत मानो।।**

संघर्ष करो तुम पथ की विपदाओं से, संघर्ष करो तुम पथ की बाधाओं से।।

कर्मों से अवनी अम्बर तक ले जाओ, नभ भूपर लाओ पौरूष की बॉहों से।

ऐसा तो कुछ भी नहीं असम्भव जो हो,

केवल तुम निज में निहित शक्ति पहचानो। है जीवन रहा.....X X X

यह हार जीत तो बस मन की माया है, है हार निराशा और विजय आशा है।

कियमाण पार्थ जग गीता गूँज रही है, बस पान्चजन्य अन्तर की अभिलाषा है।

है कर्म योग सन्देश आज के युग का , कर्त्तव्य यहॉ का यही कि धनु सन्धानो।। है जीवन रहा .....

।।। **विवशता स्वयं मृत्यु का नाम, जिन्दगी स्वयं एक संग्राम।**

मुझे बस केवल करना काम, भले जो हो उसका परिणाम।

बढ़ाते पथ पर पग जाओ! समय है हिम्मत अजमाओ!! X X X

न बाधाओं से भय खाओ, समय हे हिम्मत अजमाओ!!

3 **श्री बलराम सिंह परिहार** की कविता '**अब अँधेरा रह न पाएगा**' की पंक्तियॉ देखिए–

मिटाएँगें धरा पर, अब अँधेरा रह न पायेगा।

खुशी से देश सारा, यह हमारा लहलहाएगा।। X X X

समझ लो चरण विश्वासी, हमारे रूक सकते। किसी के सामने हम चिरप्रवासी, झुक नही सकते।

दुहाई देश देता है, हमें मंजिल बुलाती है। अनेकों दीन–दुखियों की हमें पीड़ा रूलाती है।।

अगर दो साथ तुम भी, तो चमन यह चहचहाएगा। खुशी से देश सारा .....

(4) **डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल** – जीवन और जगत की वास्तकिता से परिचित कवि मृत्यु के आतंक से ग्रस्त हो साहस नही खो बैठा है अपितु उसे विश्वास है कि वह जीवन की दुर्दमतीयता पर विजय प्राप्त कर लेगा, संकल्प कविता में कवि के दृढ़ निश्चय का दर्शन इस प्रकार परिलक्षित होता है–

कुछ नहीं खोऊँगा, रिक्त नहीं होऊँगा।

श्वासों को ढोऊँगा, किरणों के पांव पर।

पराजित हुआ अंधकार, किस वन में ठहरेगा।

सागर की सीमा को, लांघेगा मानव ही ।। पत्थर की नौका पर, विश्व भ्रमण होगा ।

एक डाल, तीन फूल, '(काव्य संग्रह) में कवि कहता है–संघर्ष में तपकर निखार प्राप्त होता है–

दीप सदा जलकर हँसता है, बीज सदा गलकर उगता है।

सुन्दर प्रतिमा तब बनती है, जब पत्थर चोटें सहता है। जीवन तप कर ही बनता है ।।

(5) **श्री मती माया वर्मा** :– श्री मती माया वर्मा की जीवन संघर्ष के प्रति प्रेरणा निम्न पंक्तियों में देखें–

"हमें चाहिए अपने बल पर हम हर मुश्किल पार करें,

आलस त्यागें औ श्रम के प्रति आस्था का संचार करें

अपने पैरों से चलकर ही हम अपनी मंजिल पाएँ।।"

।। मनुष्य में यदि साहस न हो तो वह किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। प्रतिकूलता को अनुकूलता में परिवर्तित करने के लिए मनुष्य को साहस का ऐसा धनी होना चाहिए, जो अपनी मंजिल पाने के लिए प्राणों की भी बाजी लगा दे। उसके समक्ष उफनते हुए महासागर की प्रचण्ड लहरें या घोर झंझावात, हृदय में साहस की प्रचण्ड ज्वाला उसे उसके लक्ष्य तक पहुँचाने की सतत् शक्ति दे। अगस्त 1972 की '**अखण्ड ज्योति** ' पत्रिका में प्रकाशित कवयित्री की इन्हीं भावनाओं को देखिए–

अब नहीं हमारी राहों को राके कोई, ज्वाला मुखियों सा वेग हमारे दिल में है।

यदि हम से पूँछे कोई, प्राण कहॉ पर है? तो उत्तर यही मिलेगा, वह मंजिल में है।

अब ज्वार सिंधु का भी न डुबा सकता है, जल चुकी हृदय में, ज्वाला ऐसी साहसमय।।

(iii) कर्तव्य पालनमें हिम्मत के साथ सदैव तत्पर रहने की प्रेरणा देती कवयित्री जी की पंक्तियाँ देखिए–

" विश्व हितों में जो बढ़कर, मिटने की हिम्मत दिखलाएगा।
उसका ही वर्चस्वि जगत में, युग युग तक पूजा जाएगा ।।
माना कठिनाई होती है, पहले पहल सूझ जाने में।
माना कुछ हिम्मत गिरती है, अपना ही बल अजमाने में ।।
किन्तु जिन्दगी की परिभाषा ही संघर्ष और हिम्मत है।
सतत प्रयास से मिट जाता जो, उसकी ही स्मृति चिर शाश्वत है ।। "अखण्ड ज्योति"
अप्रैल 1971

(IM) कवयित्री का हृदय यह कभी स्वीकार नहीं करता कि हम दूसरों की सहायता पर निर्भर हों, हम स्वयं अपने जीवन के कंटकों को चुनकर हटाते हुए न्याय की शक्ति से अपनी जिन्दगी के अधिकार को प्राप्त कर हम बिकें नहीं, प्राणों में साहस जगाएँ–

अब न माँगेगे किसी से हम दया के कण, आज हमने प्राण का साहस जगाया है।।
हाथ से अपने चुनेंगे, मार्ग के कण्टक, और लेंगे न्याय बल से जिन्दगी का हक।
मात्र रोटी में मनुजता बिक न पाएगी, भावना ही भाव की कीमत चकाएगी।
अब न औरों दया पर रहेंगे निर्भर, आज हमने प्यार अपना ही लुटाया है।।

(V) जीवन के उल्लास से टूटे मन को जीतना चाहिए। एक दूसरे को दुःख में सदैव उपकार करके ही हमें संघर्षों से साहस को साथ टकराते हुए लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ते रहना चाहिए। मार्च 1975 की 'अखण्ड ज्योति' में कवयित्री के अपने शब्दों में यही भाव अभिव्यक्त हुआ है–

"**कुंठा को साहस से, गहन उपेक्षाओं को प्यार से,**
रूठे हुए हृदय को, ममतामय मीठी मनुहार से।
गहन निराशा को आशामय सहज मधुर विश्वास से,
और टूटते मन को जीतो, जीवनमय उल्लास से।।
आतप के दिन बीतेंगे ही , बातें करो बहार की,
एक दूसरे का दुःख समझो, जय बोलो उपकार की।
तट की बात न सोचो, सोचो बातें मझधार की,
संघर्षों की साहस की, टकराहट की, उस पार की।"

6 **श्री बाबूलाल जैन 'जलज'** की कविता '**वाणी में भगवती विराजे**' की पंक्तियॉ देखिए–

हॅस–हॅस कर जो लोहा लेता, ऑधी से तूफान से।
जान हथेली पर रखकर जो, भिड़ जाता शैतान से।
अपनी आत्म चेतना से जो, करता युग निर्माण है,
तम पहाड़ से जूझ–जूझ कर, लाता नया विहान है।।
जिसे नाम की नहीं काम की, चिन्ता आठों याम है,
उसका ही जीवन इस जग में, धन्य–धन्य अभिराम है।।

7 कवि श्री '**शलभ**' की पंक्तियों के भाव देखिए–

रे उठो आज! रे सजो साज, संघर्षों का युग आया है।
बढ़ चलो वीर लेकर मशाल, जन–जन ने तुम्हें बुलाया है।।
तोड़ो बन्दी कारा अपनी, तोड़ो बन्धन की जंजीरें।
हम आग लगाकर इस जग में, फिर दुनियॉ नई बसायेंगे।
जीवन के बुझते दीपों में, हम फिर नव ज्योति जलायेंगे।।

8 '**धरा जगमगाओ**' कविता की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

बदल दो जमाना धरा जगमगाओ, पसीना बहा धूल सोना बनाओ।। X X X

खड़े मौन क्यों शक्ति अपनी दिखाओ, न नाचो स्वयं विश्व को तुम नचाओ।

कि संसार को हे तुम्हारी जरूरत, हटो तुम न पीछे न ही मुँह छिपाओ।। बदल दो जमाना ...

9 **श्री वीरेश्वर उपाध्याय** की कविता 'दिव्य शक्ति की धारा' की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं–

उत्तर से आ रही निरन्तर दिव्य शक्ति की धारा,

फिर क्यों साहस टूट रहा हे,पथ के गीत तुम्हारा।

अन्तर में विश्वास लिए तुम आगे बढ़ते जाओ, मिलें फूल या कॉटे लेकिन पग पीछे न हटाओ।

माना होगी चुभन किन्तु सन्तोष इसी में होगा, सतत लक्ष्य तक चलने का परितोष उसी में होगा।

क्लान्त निराशा सा यदि होगा, मन कभी तुम्हारा, आशा और उल्लास मिलेगा, बनकर सुदृढ़ सहारा।।

10 **श्री सुरभि कुलश्रेष्ठ** की कविता '**ओ नारी कल्याणी**' की पंक्तियॉ देखिए–

बहुत सो चुकी अब तो जागो ओ नारी कल्याणी ।

परिवर्तन के स्वर में भर दो, निज गौरव की बाणी।। X X X

बनो अहिल्या बाई अपनी आत्मशक्ति फिर दिखलाओ,

लक्ष्मी बाई बन अनीति का, गर्व चूर कर बतलाओ।।

दुर्गावती बनो शासन की डारे थामने आजाओ, सावित्री बन सत्यवान को यम से पुनः छुडा लाओ।।

रच दो अपनी गौरव गरिमा की फिर नई कहानी। बहुत सो चुकी अब तो जागो .....

11 **श्री जितेन्द्र रघुवंशी** की कविता '**मॉं हम को वर दे**' की पंक्तियॉ देखिए–

आदि शक्ति है नाम तुम्हारा, सारा जग है धाम तुम्हारा,

जब–जब संकट भू पर छाया, तब–तब आकर इसे मिटाया।

मॉं तू सबको सत्साहस दे। मॉं तू हम सबको शुभ वर दे।।

12 **श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'** की कविता '**दीपों का जय पर्व**' की पंक्तियॉ देखिए–

"वक्षस्थल चीरेंगे हम रजनी काली का, जग पर्व मनायेगा युग–युग दीवाली का,

हम नयी ज्योति धर भू अम्बर में जागेगे

तब अमा क्षमा मॉगेगी नर वर मॉगेगे। X X X

हो गया पराजित तिमिर, भोर तक चले दीप, तम झंझाओं बीच अकम्पित रहे दीप।

तबसे दीपों का विजय पर्व यह आता है,

तम से लड़ने वाला ही पूजा जाता है। "

13 **कीर्तिशेष डा0 हर गोविन्द सिंह** की कविता '**वीरों की राह**' की पंक्तियॉ अवलोकनीय है–

यह राह नहीं है फूलों की, कॉटे ही इस पर मिलते हैं।

ले दर्द जमाने का उस पर बस हिम्मत वाले चलते है।।

अब किसने कहा था ईसा से, तुम शूली के सोपान चढ़ो,

किसने सुकरात को समझाया, विष के प्याले की ओर बढ़ो;

जिसने असली आवाज सुनी, उसने यह मंजिल खुद ही चुनी';

युग–प्रहरी के उर के स्वर ही बनकर तूफान मचलते हैं। ले दर्द जमाने का .....

14 **कीर्ति शेष श्री शिवशंकर मिश्र** की कविता '**परिस्थिति देखकर विपरीत**' की पंक्तियॉ देखें–

"परिस्थिति देखकर विपरीत, यों ही तुम न झुक जाओ। समय को राह दिखलाओ।।

समुंदर देखकर आगे नहीं तूफान रूक जाता,

स्वयं की गति लिए आता स्वयं की गति लिए जाता।

अड़े जब सामने हों शूल मुस्काओ। समय को राह दिखलाओ।।

(छ) मानव मूल्यों की शिक्षा :–

मानव जीवन ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक शानदार उपहार है। इस संसार के दो स्वरूप हैं,– एक जड़ और दूसरा चेतन। इस चेतन स्वरूप को ही जीवन कहते हैं जीवन का सुखी व दुखी होना, यह व्यक्ति के दृष्किोंण पर निर्भर हैं। एक ही परिस्थिति में दो प्राणी सुखी व दुखी देखे जा सकते हैं। जीवन जीने की कला के अभाव से दुख व जीवन जीने की कला में निपुण होना ही सुख का कारण बनता हैं। अतः व्यक्ति को व्यावहारिक जीवन जीने की कला का ज्ञान होना आवश्यक है। सामान्य दृष्टि से देखा जाए तो मानव और मानवेतर प्राणियों में आहार, निद्रा, भय, मैथुन समान रूप से दिखाई देते है। कैसे कहें इसे श्रेष्ठ और विशिष्ठ? जबकि मनुष्य न तो चील और चिड़ियों क भॉति आकाश में उड सकता है, न बन्दरों की तरह एक डाल से दूसरी डाल पर छलॉग लगा सकता है, न बैलों की तरह बजन ढो सकता है और न वह अश्वशक्ति का मुकाबला ही कर सकता है। शारीरिक दृष्टि से तो वह ऐसे अनेक प्राणियों से कमजोर है फिर उसमें ऐसी कौन सी विशेषता है जिसके आधार पर उसे सृष्टि का मुकुट मणि कहा जाता है। यह एक विचारणीय प्रश्न है।

मानवेतर प्राणी केवल पेट–प्रजनन तक ही सीमित रहते हैं परन्तु जब मानव जीवन पर दृष्टिपात करते है ज्ञात होता है कि मानव पेट–प्रजनन से आगे कुछ और भी है। उसके पास बुद्धि–चातुर्य और कर्म कौशल दो ऐसी शक्ति धराऍ हैं जिनके आधार पर वह पशुवत भोगयोनि से उठकर मानव की कर्मयोनि में प्रवेश करता है और इसी पराक्रम के बलपर समूचे संसार का ढॉचा बदलने और उसे उन्नति के शिखर पर ले जाने में समर्थ हुआ है। जो मानव देह पाकर भी उस सत्य को गहराई से नहीं समझते, वे इस सुरदुर्लभ देह से कष्ट भोगते और इसे व्यर्थ गवॉ देते है। क्या यह सुघड़ शरीर इसी तरह गॅवा देने के लिए मिला है? क्या जीवन का यही सत्य है?

आचार्य शर्मा के मतानुसार जो भी मनुष्य इस संसार में आया है उसके साथ परमात्मा का एक अनुबन्ध है– और वह यह कि मनुष्य तू मेरे सृष्टि रूपी बगीचे की समुचित देखभाल करते हुए उसे सुन्दर और समुन्नत बनाने की भरपूर चेष्टा करना, मैं तेरे कुशलक्षेत्र की रक्षा करता रहूँगा।

"योगक्षेमं वहाम्यहम्।।"–गीता

परमात्मा ने इस अनुबन्ध के साथ ही मनुष्य को विवेक–बुद्धि के मानसिक बल से मुक्त करके ठीक उसी प्रकार भेजा जैसे युद्ध भूमि पर रण–प्रांगण में गमन करने के पूर्व किसी सैनिक को

आधुनिकतम हथियार से लैस करके भेजा जाता है। यदि मनुष्य इस तथ्य से बेखबर रहता हे और इस जीवन सम्पदा का कोई बेहतर उपयोग नहीं करता तो वह मनुष्य जन्म पाकर भी कृमि–कीटिकों की तरह समय ही काटता रहेगा। यह तो उस अनुबन्ध की अवहेलना तथा जगन्नियन्ता के साथ विश्वासघात हुआ। हमें अपने जीवन पर दृष्टिपात करना चाहिए। परमात्मा को मनुष्य को कोरा बुद्धिवादी ही नहीं बनाया बल्कि बुद्धि के साथ–साथ उसमें भावनाओं और संवेदनाओं का भी बड़ी गहराई तक समावेश किया है। इसके पीछे उस जगन्नियन्ता का एक ही उद्देश्य परिलक्षित होता है और वह है व्यक्तिगत जीवन में सरसता, सहानुभूति, आत्मिक सौंदर्य, हर्ष उल्लास और अपार आनन्द की अनुभूति। सामाजिक जीवन में प्रेम, सौहार्द्, सेवा और सहयोग। इसी से संभव है आत्मीयता का विकास ओर सृष्टि का सौन्दर्य।

इस विवेचना से इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि व्यक्ति का जीवन बुद्धि–विवेक और भाव संवेदनाओं का अनौखा सम्मिक्षण हैं आचार्य श्री राम शर्मा लिखते है– "आप सोचिए कि ज्ञान, गुण, कर्म, स्वभाव का ऐसा सम्मिक्षण आपके जीवन में किस सीमा तक है? यदि यह सब नहीं है तो आप अपने जीवन के विषय में क्या सोच रहे हैं? कहीं चिन्ता, कुण्ठा, निराशा, आत्म प्रताड़ना और आत्महीनता के चंगुल में फॅसकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ की स्थिति में तो नहीं पहुँच गए हैं? यदि ऐसा है तो यही वह मानसिक स्थिति है जो सब कुछ होते हुए भी उस भिखारी की सी स्थिति बना देती है जो जेब में रखे रूपयों से बेखबर होकर भिक्षा मॉगता फिरता है।1"

मानव जीवन का उद्देश्य :–

निश्चित ही मनुष्य को जो मिला है, वह उसकी पात्रता देखते हुए किसी प्रयोन के लिए धरोहर रूप में दिया गया है। प्राप्त विभूतियॉ ऐसी हैं जिनका महत्व उपभोक्ता को तो प्रतीत नहीं होता पर जब वे छिन जाती हैं तो स्मरण आता है कि जो सौभाग्य अपने को हस्तगत हुआ था उसे प्राणिजगत के साथ तुलना करने पर अनुपम अद्भुत ही कहा जा सकता था। उसका सदुपयोग न कर सकने पर जो पश्चाताप होता है उसकी व्यथा और श्रृंखला इतनी लम्बी होती है कि जन्म–जन्मान्तरों तक उस भूल की पीड़ा व्यथित करती रहे। करना क्या चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर आचार्य शर्मा लिखते हैं– "शरीर को जीवित रखने भर के साधन जुटा देने के उपरान्त जो सामर्थ्य शेष रहती है उसे आत्म–कल्याण कर सकने वाले परमार्थ में लगा देने का साहस करना चाहिए।2" इसी प्रश्न के उत्तर में वे एक अन्य स्थान पर लिखते हैं– "दृष्टिकोंण साफ कीजिए जड़ता से जागिए। स्वस्थ शरीर और स्वच्छ मन के लिए भरपूर कोशिश कीजिए। जीवन में उदारता और कर्त्तव्य परायणता को ऊँचा स्थान दीजिए। आत्म संपदा अर्जित कीजिए। इन सबके अभाव में "मनुष्य ज्ञानवान और धनवान होते हुए भी मणि विहीन सर्प की तरह निष्प्रभ ही रहेगा। आत्मिक सम्पदाओं से सम्पन्न व्यक्ति ही जीवन का सच्चा आनन्द ले पाते है।3"

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा–जीवन विद्या पृ0 6,
2. आचार्य श्रीराम शर्मा–जीवन देवता की साधना आराधना पृ0 6.2
3. ब्रहमवर्चस–जीवन विद्या पृ0 8

जीवन एक संग्राम है–जिसमें अवाँछनीयताओं से जूझना होता है, कुरीतियों और कुण्ठओं की जड़ें हिला देनी होती है, अनगढ़ताओं के दॉत खट्टे करने होते हैं तथा ईर्ष्या, द्वेष और बैर–विरोध को जीवन से उखाड़ फेकना होता है।

जीवन एक व्यवस्था है– जिसका केन्द्र बिन्दु मनुष्य है जो शरीर, मन, आत्मा और प्राण का समुच्चय है। हमें इनमें से प्रत्येक के स्वास्थय की देखभाल करनी चाहिए। शरीर पुष्ट, मन पवित्र, आत्मा प्रबल और प्राण प्रखर हो। कषाय कल्मष इन्हें छू न पाएँ। अन्यथा रोता झींकता, कलपता व्यक्ति ही पृथ्वी पर भारभूत बना दिखाई देता है। क्या करें? इसके उत्तर में **आचार्य शर्मा** के मतानुसार "हम जीवन के प्रति सावधान रहें। कोई गलत विचार मन मस्तिष्क में घुसने न दें। कठिनाइयों से डरें नहीं बल्कि उनसे जूझने के सही तरीके अपनाएँ। सात्विकताओं के सहारे समस्याओं के स्थाई समाधान खोजें। सात्विक भाव में जीवन जीने का अभ्यास करें। हमें जीवन में उन मानव मूल्यों का विकास करना होगा जिनसे व्यक्तित्व तराशा जा सके, जो अस्मिता की रक्षा करने में सहायक हो तथा जिनसे व्यक्ति की योग्यताओं, क्षमताओं और दक्षताओं में वृद्धि हो। हमें कोशिश करनी होगी कि नम्रता, निर्भीकता, निडरता, नियमितता हमरे जीवन का अंग बने। हमारी प्रमाणिकता पर ऑच न आने पाए। हमें अपने जीवन में स्वच्छता, सादगी, सन्तोष, सेवा सौहार्द्र, संयम, समयपालन, स्वाबलम्बन, स्वाध्याय, सदाचार, शिष्टता, सज्जनता, प्रेम और सत्यवादिता जैसे **मानव मूल्यों को** पिरोना होगा। हमारे अन्दर की घड़कन हो विश्व बन्धुत्व। ये मानव मूल्य ही जीवन के सशक्त आधार है। इनमें जीवन को समुन्नत और उच्चतम शिखर पर पहुॅचाने की अद्भुत सामर्थ्य है।1"

मानव मूल्यों का प्रभाव :– मानव मूल्यों के कारण निम्नवत हैं–

– व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय आकर्षण उत्पन्न होता है जिससे समाज में फैली प्रतिभाएँ खिची चली आती है।

– मैत्री भाव पैदा होता है। मित्रों और सहयोगियों की संख्या बढ़ती है।

– चित्त शान्त और हृदय प्रफुल्लित रहता है

– एकाग्रता को अवसर मिलता है। अध्ययन में मन लगता है।

– समझ सहन शीलता और धारण शक्ति में निरन्त वृद्धि होती है।

– मानव मूल्यों के आधार पर व्यक्ति दूसरों के आदर और सम्मान का पात्र बनता है, प्रशंसा पाता है

– नेत्त्व का अवसर मिलता है।

– दूसरों का विश्वास अर्जित करते है। नैतिक और अध्यात्मिक चिन्तन की बुनियाद बनती है।

– व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का निर्माता सिद्ध होने लगता है।

इस प्रकार मानव मूल्य जीवन में व्यष्टि से समष्टि तक की यात्रा को सरल व सफल बनाते है। हमें मूल्य परक जीवन में जीना चाहिए जिससे हम श्रेय के अधिकरी बन सकें।

आचार्य शर्मा ने अपने चिन्तन, जीवन एवं दर्शन में जिन मानव मूल्यों की व्यावहारिक शिक्षा दी, उनका उल्लेख इस प्रकार है–

मानव मूल्य और उनका विकास

शीर्षक	विकास किया
1 स्वास्थ्य से सम्बन्धित	
(क) शारीरिक	
I आहार–विहार	आहार के नियम, संतुलित आहार
II योग व्यायाम	प्रज्ञायोग, आसन, प्राणायाम और ध्यान
III संयम	इन्द्रिय संयम , समय संयम, विचार संयम, अर्थ संयम का अभ्यास
IV शाकाहार	अंकुरित अन्न के लाभ एवं सात्विक आहार
V नशा और दुर्व्यसनों से मुक्ति	नशा उन्मूलन के प्रयास, नशा निवारण, नशा विरोधी रैली हाट–बाजारों में नशा विरोध के शिविर, तम्बाकू गुटका धूम्रपान एवं शराब के सेवन के धातक परिणाम, नशा और दुर्व्यसन परित्याग के संकल्प।
(ख) मानसिक	
I मनोविकारों का उन्मूलन	ईर्ष्या, द्वेष, अश्लील चिंतन एवं अश्लील व्यवहार आदि मनोविकारों के दुष्परिणामों के बारे में बताना
II सद्विचार एवं उनका कियान्वयन	स्वाध्याय एवं सत्संग के माध्यम से
2 शालीनता से सम्बन्धित :–	
I अनुशासन	जिम्मेदारी के कार्य सौंपकर शालीन व्यवहारों का अभ्यास
II शिष्टाचार	शालीनता के प्रेरक प्रसंग
III सज्जनता	सद्गुणों को अपनाने का संकल्प
IV सहनशीलता	सहनशीलता के उदाहरण पर परिचर्चायें
V सभ्यता	सभ्यतापूर्ण व्यवहार
3 स्वाबलम्बन से सम्बन्धित :–	
I आत्म निर्भरता	आत्मनिर्भरता के गुण
II आत्म विश्वास	सफलता में आत्म विश्वास के उदाहरण
III श्रमशीलता	श्रमशील एवं स्वाबलम्बी व्यक्तियों का चयन
IV सहकारिता	मिलकर काम करना, सक्रिय संगठित समूह बनाना, सहकारी भावना
V स्वच्छता	स्वच्छता अभियान चलाना, मन के गन्दे विचारों से बचना

4 सेवा भावना से सम्बन्धित :–

लोक कल्याण एवं सेवा साधना	जरूरत मंदों की सहायता, दैवी आपदाओं में सहायता करना

5 शैक्षिक :–

I स्मृति का विकास	अभ्यास द्वारा स्मृति का विकास
II अभिव्यक्ति	काव्य पाठ, भाषण, निबन्ध लेखन, व्याख्यान माला, विचार मंच,
III सृजनात्मकता	मैलिक चिंतन, मौलिक लेखन, एक विधा को दूसरी विधा में बदल कर लिखना, छोटी–छोटी कविताएँ एवं गीत लिखना, खिलौने, मॉडल, चित्र आदि बनाना।

6 आध्यात्मिक मानव मूल्य :–

I आत्म बोध	आत्मस्वरूप, शरीर से, आधिक आत्मा का महत्व
II आत्म बल	आध्यात्मिक मूल्य
III संकल्प शक्ति	संकल्पवान व्यक्तियों के संस्मरण
IV आत्मानुशासन	स्वप्रेरणा सें अनुशासित रहना
V निर्भयता	निःसंकोच अपनी बात कहना, निडर रहना
VI निर्बैरता	किसी से बैर, विरोध और ईर्ष्या–द्वेष न रखना
VII सत्य	हर स्थिति में सत्य बोलना
VIII ईमानदारी	ईमानदारी, व्यक्तिनिष्ठा, साहस आदि गुणों से सम्पन्न व्यक्तियों का सम्मान
IX कर्त्तव्य बोध	जीवन के उद्देश्यों को समझते हुए अपने कर्त्तव्यों का ठीक–ठीक निर्वाह
X संवेदनशीलता	दुसरों के दुख में दुखी और सुख में सुखी होना, दैवी आपदाओं में सहयोग के लिए प्रेरित करना
XI उपासना	उपासना का दर्शन और व्यवहार समझना, गायत्री मंत्र जप, सर्व धर्म प्रार्थना

आलोच्य काव्यों में मानव मूल्यों का विकास :–

आचार्य श्री राम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों ने अपनी रचनाओं में मानव मूल्यों की शिक्षा दी है जिसका उल्लेख निम्नवत् है–

श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' की कविताओं में 'मानव मूल्यों के विकास की शिक्षा अवलोकनीय हैं ।

मानव मूल्य नहीं शिक्षा में तो शिक्षा हित नही करेगी
जानकारियों का जंगल ही मनोभूमि में खड़ा करेगी।

सेवा स्नेह समर्पण श्रद्धा–बीज न आरोपित शिक्षा में

समता,ममता, दया क्षमा के मानव मूल्य न हों शिक्षा में

शोषण उत्पीड़न का विष ही, शिक्षा की गागर छलकेगी।।

।। **आओ! जीवन सफल बनाएँ, जीवन विद्या को अपनाएँ।**

सूर्योदय से पूर्व उठें हम, धरती माँ को नमन करें ।

उगे सूर्य को शीश नवाएँ। जीवन विद्या को अपनाएँ।।

पिएँ पेटभर निर्मल पानी, हमें शौच में हो आसानी।

तन को मलमल रोज नहाएँ। जीवन विद्या को अपनाएँ।।

आपस में सब प्यार करें हम, मिलकर सहकार करें हम

पढ़ने में हम ध्यान लगाएँ, जीवन विद्या को अपनाएँ।।

देश धर्म को प्यार करें हम, प्यार भरा व्यवहार करें हम,

भले नागरिक हम कहलाएँ, जीवन विद्या को अपनाएँ।

करें प्रणाम पिता माता को, सभी बड़े भगिनी भ्राता को

आशीर्वाद बड़ों से पाएँ। जीवन विद्या को अपनाएँ।।

सच बोलें पर दया करें हम, बुरे काम से सदा डरें हम

सुख बाँटें व दुःख बँटाएँ। जीवन विद्या को अपनाएँ

सरल बनें शालीन बनें हम, सेवा पर उपकार करें हम

मानव जीवन सफल बनाएँ, जीवन विद्या को अपनाएँ।।

2 **श्री मती माया वर्मा** ने मानव मूल्यों की शिक्षा अपने काव्य में इस प्रकार दी है–

यह मानव तन पाने को देवता तरसते हैं,

पर हम पाकर भी कब इसका मूल्य समझते हैं।।

लेना सीख लिया मानव ने इससे दीन रहा।

देना सीखा उनने, इससे उनको देव कहा।।

मानव वैसा बन सकता है, जैसा खुद चाहे।

इसीलिए तो हुआ चाँद और सागर अवगाहे।।

बात हाथ की है, वह देव बने या फिर दानव।

सर्वोत्तम है सही अर्थ में बन जाए मानव ।।

पुरूषार्थी पर सदा दिव्य अनुदान बरसते हैं।। यह मानव तन .....

जीने की कलाः–

। **"मोड़ो गतिविधियाँ जीवन की, बनो शान्ति मर्माहत मन की।**

केवल अपनी पीर न देखो, कष्ट दूसरे का भी देखो।

करो प्रयत्न सदा ऐसा हो सुखी व्यक्ति प्रत्येक। "

।। **'स्वयं मिटकर और का निर्माण', जीवन की कला है**

है 'असम्भव' या 'कठिन' कब कुछ किसी पुरूषार्थी को

त्याग तप जग हित मरण भी खेल है परमार्थी को,

पाएगा मंजिल कि दृढ़ संकल्प लेकर जो चला है।

प्रेमः– (।) **"परस्पर करें सभी फिर प्यार, त्याग हो भोगों का आचार**

व्यक्ति हों शान्त, नम्र और धीर, करें अनुभव औरों की पीर।"

।। **भाव संवेदना :–**

मनुज जुटा ले चाहे जितने सुख के साधन, चाहे जितने उपकरणों से भर ले जीवन।

किन्तु न यदि मिल सके भावनाओं का सागर, इतने सुख में भी लगता है जीवन दूभर।

एक प्यार के बिना सदा आत्मा रोती है।

परोपकार :–

हर प्यासे को जाय, हर दुखिया को स्नेह रसधारा,

पहुँचाए बिन चैन न पाएँ यह संकल्प हमारा।

अन्धें की लाठी, गूँगेकी वाणी हम बन जाएँ,

शक्ति हीन का कर थामें थकितों के चरण दबाएँ

हृदय हृदय में फैला दें शुचि प्यार भरा उजियारा।।"

जीवन मूल्य :–

"भावना में बहा आदमी नीर–सा, जिन्दगी माँगती थी मगर संतुलन,

कल्पना त्याग–कर्तव्य के प्रति लगन, ज्ञान विजयी हुआ भावना पर सदा।

भ्रांत मन में उठीं कामनाएँ बहुत, यह लगा हर खुशी को करें हस्तगत

एक के बाद दूजी बढ़ी कामना, जिन्दगी बन गई भोग की साधना

त्याग विजयी हुआ कामना पर सदा।"

(3) **श्री शिवशंकर मिश्र** की कविता **'बन दीप जलो'** की पंक्तियों में मानव मूल्यों के अभाव की परिणति दृष्टव्य है–

नैतिक मूल्य शून्य की गति पर मर्यादा टूटी,

विश्व प्रेम क्या देश प्रेम क्या बना प्रश्नवाचक।

यह विकास तो अर्थ नीति की जटिल पहेली है– यही आत्म निर्भरता हम बहुतेरों के याचक।

मृत्युमुखी जीवन विनाश के लिए बसेरा है, दिन पर दिन गहराता जाता घना अँधेरा है।

या तो लय कर दो या बन दीप जलो।।

4 कीर्तिशेष श्री बाबूलाल जैन **'जलज'** की कविता **'जगमग जगमग जगमगायेगा'** की पंक्तियों में मानव मूल्यों की शिक्षा अवलोकनीय है–

सदाचार के पेड़ लगेंगे, मानवता के गाँव में।

ज्ञान यज्ञ की चर्चा होगी, गली–गली हर ठाँव में

शान्ति सृजन की लहर लिखेगी, हर पन्ना इतिहास का
जगमग जगमग जगमगायेगा, ध्रुवतारा उल्लास का।। X X X
आत्म–ज्ञान गंगा के तट पर, गॉव बसेगा प्यार का।
निशदिन पारिजात महकेगा, शुचि आचार–विचार का।
सारा नक्शा बदल जायेगा, कुंठित मन संसार का।
सत्पथ पर बढ़ता जायेगा, नूतन चरण विकास का।।

5 डा0 **हरगोविन्द सिंह** की कविता '**घर–घर' में निराली ज्योति जले**' की पंक्तियॉ देखिए–

घर–घर में निराली ज्योति जले

घर–घर में निराली सुख शान्ति देने वाली ज्योति जले।। X X X
हों हम सब आचार–परायण, घर–घर में प्रगटें दैवी गुण।।
आधि–व्याधि हर लेने वाली, हर लेने वाली प्रीति पले। घर–घर में निराली ज्योति जले।।
जन–मन के कल्मष धो डालें, स्वार्थ नहीं परमार्थ सम्हालें।।
हो नन्दन–वन सी हरियाली, वन सी हरियाली गगन तले। घर–घर में निराली ज्योति जले।।

6 **श्री लक्ष्मी नारायण सक्सेना 'कमलेश'** की कविता '**कमर कस ली हमने**' जो शंखनाद काव्य संग्रह में प्रकाशित हुई, की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

"यही इतिहास है कहता– चढ़ा दो प्राण जन हित में।
सफलता तो सदा मिलती, स्वयं ही को मिटाने पर।।
अचल निज ध्येय पर, होकर मिला स्वातन्त्र्य भारत को।
कमर कस ली अरे हमने, नया भारत बसाने पर।।"

7 डा0 **त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल** के एक गीत की पंक्तियों में जीवन का सुन्दर रूप व्यक्त हुआ है। हृदय के भावों को कवि कितने सरल ढंग से व्यक्त करता है–

कैसे होती प्रीति किसी इन्सान से, परिचित से मत पूछ, पूछ अनजान से,
कैसे जगता प्यार किसी के नयनों में कैसे बॅधता हृदय किसी के वचनों में
ज्ञानी से मत पूछ, पूछ नादान से।। कैसी होती प्रीति

कवि का दृष्टिकोंण विस्तृत है। वह नवनिर्माण के द्वारा देश की प्रगति के साथ–साथ विश्वकल्याण की बात कहना भी नहीं भूला है। यहीं वह मानव मूल्यों का भी पक्ष घर बनकर आया है। विश्व का कल्याण मानव मात्र के कल्याण में निहित है और मानव का कल्याण मानव मूल्यों की रक्षा में निहित हैं। इसलिए कवि हिंसा, पाशर्वकता, अन्याय, अत्याचार, ऊॅचा–नीच और जातिगत भेदभाव को मिटाकर शान्ति, शुचिता, प्रेम और बन्धुत्व का विचार करने भी बात कहता है। कवि का अटल विश्वास है कि–

प्रेम से जीवन में सुख अर्जित किया जा सकता है–

"हिंसा कभी न करपायी है जीवन को सुख दान।
प्रेम सदा ही करता आया जीवन का निर्माण।
धर्मभूमि भारत में अब गूॅजेंगी यही पुकार।
बहुत हो चुका और न होगा पशुता का विस्तार।।"

8 डा0 आर0 पी0 **कर्मयोगी** के दोहों में मानव मूल्यों के जीवन सूत्र देखिए–

परहित में डूबे रहें, कपट न फटके पास। **करूणा दया उदारता, प्यार–प्रीति घनघोर।**
ऐसे जन आगे बढ़े, करें न काऊ आस।। ऐसा जीवन फूलसा, महके चारों ओर।।

सहन शक्ति पैदा करें, जागृत करें विवेक।
बोलें कुछ इससे प्रथम, सोचें बार अनेक।।

9 **श्री मती विद्यावती मिश्र** की कविता 'सब से अधिक महान' की पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं–

सबसे अधिक महान, मनुज ही सबसे अधिक महान!
युग–वीणा का गायन है, दया–क्षमा का आराधन है,
स्वयं पूर्ण होकर के ही यह बन जाता भगवान! मनुज ही सबसे अधिक महान!!
इसको ही पूजो आराधो, छोड़ो सभी इसी को साधो,
युग–युग से सिखलाते यह ही गीता, वेद, पुराण! मनुज ही सबसे अधिक महान!!

10 **श्री शचीन्द्र भटनागर** का **'परिष्कार–प्रकिया'** का गीत तुमने क्या छू लिया हमारे मन–प्राणें को की पंक्तियॉ देखिए–

तुमने क्या छू लिया हमारे मन–प्राणों को, हमें यहॉ माटी से कंचन बना दिया।
हम थे विकल यहॉ पर झुलसाते झोंको से, तुमने हमको शीतल चंदन बना दिया।।
जहॉ स्वार्थ की धूल भरी ऑधियॉ थीं, वहॉ बहाई तुमने करूणा की रस–धारा,
तुमसे मिलकर हुआ, पूज्य गुरूदेव! अजाने, प्राणों तक का कैसा काया कल्प हमारा!
धोकर मन की कलुष–कालिमा, तुमने हमको, अनजाने गंगा–सा पावन बना दिया।।

"करिष्ये वचनं तव" पृ0 87

11 डा0 **रामस्वरूप खरे** की कविता '**सफल हो जीवन यज्ञ महान**' की भावपूर्ण पंक्तियॉ देखिए–

सफल हो जीवन–यज्ञ महान।
काम, क्रोध, मद, लोभ मोह, को त्याग बनो प्रिय धीर।
अपनी दे मुस्कान, हरो तुम सारे जग की पीर।।
विहॅस दो तन–मन–धन का दान। सफल हो जीवन–यज्ञ महान।। X X X
स्वार्थ त्याग, निष्काम साधना, हो जीवन का अंग।
करो भला, तुम स्वयं भले बन, नियम न हो, यह भंग।
यही हो उद्‌बोधन का गान। सफल हो जीवन–यज्ञ महान।।

12 **श्री बलराम सिंह परिहार** की रचनाओं के अंशों में मानव मूल्यों की शिक्षा दृष्टव्य हैं–

इतना प्रेम कि पशु–पक्षी तक, प्रणों से भी प्यारे,
इतनी दया कि जीव मात्र सब, परिजन–सखा हमारे।
श्रद्धा अपरम्पार कि पत्थर, में भी प्रीति जगाई।
और पराक्रम ऐसा जिसकी, रिपु भी करे बड़ाई। X X X

मानवता के लिए हड्डियों, तक जिनने दे डालीं।
माताओं की हुई अनेकों, बार गोदियॉ खाली।।
पर न पाप के आगे उनने, अपना शीश झुकाया
संस्कृति का सम्मान बढ़ाने, हॅस–हॅस शीश कटाया।।

।। **आप शंकर बन जहर, पीते रहे संसार का,**
पर न व्रत छोड़ा कभी भी, आपने, उपकार का
दर्द इतना भर लिया था, जिन्दगी में आपने,
ध्यान तक आया नहीं, क्षण भर कभी अधिकार का।।

13 **श्री जितेन्द्र रघुवंशी** की कविता '**प्रगति शील जीवन के पाँच सोपान**' की पंक्तियाँ देखिए–

। **मुस्कायें हम फूलों जैसे, बोलें मीठे स्वर से,**
स्वच्छ रहें हम हंसा जैसे, नेक बने फिर तप से ।
तुकाराम, सुकरात संत सब ऐसे ही अनुदान हैं।
स्वार्थ नहीं परमार्थ देखे फिर, अधिकरों को भूलें,
मिल–जुलकर सब रहना सीखें, निज सुख में न फूलें। X X X

।। **निजी स्वार्थ की नहीं महत्ता, पंचशील अपनाते हैं**
श्रम से प्यार सभी को दिल से, सुव्यवस्था दिखलाते हैं।
करते मिल–जुल काम सही ही, उसमें ही रम जाते है।
आपस का व्यवहार मधुर है, शिष्ट सभी कहलाते हैं।।

14 **श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'** की कविता 'वह जीवन ही कलाकार है' की पंक्तियाँ देखिए–

। **जिसने जीना जान लिया है, वह जीवन ही कलाकार है**
पत्थर में करूणा उभार दे, दिव्य कला वह निर्विकार है।
शुचिता, शिवता, सुन्दरता ही किसी कला के अमर प्राण हैं
जो भू पर सुरपुर उतारती, मानव को करती महान है।।
कुरूचि , कुवृत्ति, कुभाव न जगते, भव्य भाव जिसके श्रृंगार हैं। जिसने जीना जान लिया .....
विद्या, बुद्धि कला–कौशल को, जिससे मिले प्रखरता पावन।
संयम, सद्भावों की छवि में, जिसने रंग भरे मन भावन।
ऊर्ध्वगामिता की क्षमता में, उठा रहा जो ज्योति ज्वार है।। जिसने जीना जान लिया .....

।। कवि की एक अन्य कविता '**जिन्दगी जीना कला है**' की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

जिन्दगी जीना कला है और जीवन साधना है,
जिन्दगी सोना नहीं है जिन्दगी तो जागना है।।
हर सृजन, पूजन, भजन, हर कर्म तप है, अर्चना है।
भाव में भगवान है तो, क्या नहीं आराधना है।।
हर पसीना अर्घ्य, निष्ठावान दिव्य उपासना है। जिन्दगी जीना कला है–

15 **कीर्तिशेष श्री बाबूलाल जैन 'जलज'** की कविता **हे मॉ ऐसी आत्म शक्ति दो** की पंक्तियाँ देखिए– **त्याग तपस्या मय हो जीवन, पर हित में अर्पित में हो तन–मन।।**
सुख समाधि की रहे न इच्छा, मॉगे नहीं स्वार्थ की भिक्षा।।
कर्त्तव्यों से विमुख न हों हम , संकल्पों को पूर्ण करें।
हे मॉ ऐसी आत्म शक्ति दो, दुखियों का दुख दुर करें।।

16 **डा0 सरोज बाला चौधरी** का गीत '**सतयुग फिर से आएगा**' की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

जीवन उसने जीना सीखा, जिसने निज को जीता,
दीन, दुखी, पीड़ित मानव की सेवा का सुख पीता।
बन जा प्रेम दया का सागर, सतयुग ऐसे आएगा।।
हमने छोड़ी नहीं बुराई, कलयुग कैसे जायेगा।

पंचम अध्याय

आलोच्य काव्यों में सामाजिक प्रगतिशीलता की अभिव्यक्ति

क उदात्त मानव दृष्टि एवं प्रतिष्ठा

ख नर–नारी सम्बन्ध

ग जाति भेद, रूढ़ि, कुरीति, मूढ़मान्यता, दुष्प्रवृत्ति एवं अन्धविश्वास उच्छेद

घ नारी महत्ता एवं नारी जागरण

ड़ राष्ट्रीयता एवं विश्वबन्धुत्व का भाव

च सात्विक जीवन यापन की भावना

छ युवा शक्ति का आह्वान

अध्याय– 5 **सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति :–**

सामाजिकता की मर्यादा :– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से अलग मनुष्य की कल्पना तक भी नहीं की जा सकती। हमारा पास–पड़ोस हमारे सबसे निकट का समाज है। हम पर उसका पूरा प्रभाव पड़ता है तथा उसी प्रकार हमारा भी कुछ न कुछ प्रभाव हमारे आस–पास के समाज पर पड़ता है। इसलिए हमें यह मानकर चलना चाहिए कि हमारा सुख हमारे पास–पास पड़ोस का सुख है तथा पास–पड़ोस का सुख ही हमारा सुख है। एक विचित्र किन्तु दुखद संयोग यह है कि आज की स्वार्थी एवं स्वकेन्द्रित विचारधारा के कारण समाज में एक गम्भीर ईर्ष्या–द्वेष का वातावरण पनपता जा रहा है। कहा जाता है कि आज आदमी अपने दुख से उतना दुखी नहीं है, जितना कि व दूसरों के या अपने पास–पड़ोस के लोगों के सुख से दुखी है। मानसकार ने इसका ज्वलन्त चित्रण किया है–

" जो काहू की सुने बड़ाई, श्वांस लेइ जनु जूड़ी आई।
जो काहू की देखहि विपत्ति, सुखी भये मनु जग नृपति।।"– रामचरित मानस

अर्थात् अगर आस–पास किसी की बड़ाई सुनते हैं तो ऐसी लम्बी–लम्बी श्वास लेते है जैसे इनको जूड़ी–बुखार चढ़ आया हो और यदि किसी पड़ौसी को विपत्ति में पड़ा देखते है तो ऐसे सुखी हो जाते हैं मानो सारे संसार का राज्य इन्हीं को मिल गया हो। कितनी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है यह। ऐसे पड़ौस के ही विषय में रहीम कहते हैं–

"बसि कुसंग चाहत कुसल, कह रहीम, जिय सोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावन बस्यों पड़ौस।।"– रहीम

सत्य तो यह है कि विकास और सुधार की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति से परिवार, परिवार से पास–पड़ौस व समाज, सामज से राष्ट्र से पूरा विश्व वसुन्धरा का विकास होना चाहिए, किन्तु खेद है कि आज के दुर्व्यसन एवं कुविचार व्यक्ति–परिवार से समाज को प्रदूषित करते हुए पूरे राष्ट्र तथा विश्व समुदाय को प्रदूषित कर देते हैं। **आचार्य श्रीराम शर्मा** का अभिमत है कि यह स्थिति बदलनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को सद्गुण सम्पन्न एवं सुसंस्कारित बनना चाहिए। उसकी सुवास आप–पास के पड़ौस से होते हुए पूरे समाज में फैलनी चाहिए। इस प्रकार जन–जन में देवत्व के विकास से यह पूरी धरती स्वर्ग समान बन सकती है। किन्तु देखने में यही आता है कि कुवचिारों की महामारी तो बड़ी तेजी से सारे आस–पास के समाज में फैलती जाती है, लेकिन सद्विचार जरा देर से फैल पाते हैं। यदि सद्गुणों की सुगन्ध एवं सत्कर्म का प्रकाश थोड़े से भाग में भी फैल जाय तो वह अपने प्रभाव को चिर स्थायी एवं टिकाऊ बनाए रखता है, फिर वह सुधार प्रक्रिया निरन्तर जारी रहनी चाहिए।

मनुष्य एक विकसित प्राणी है इसलिए उसकी बढ़ी हुई मानसिक आवश्यकताऐं तभी पूरी होती है जब मिल जुलकर रहने का–समाज बनाकर रहने का उसे अवसर मिलता है। विवाह की परिपाटी इसीलिए चली। कुटुम्ब इसी दृष्टि से बने। इनके अभाव में मनुष्य खोया–खोया सा

अपूर्ण बना रहता है, उसकी प्रसन्नता एवं प्रगति का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है। यदि सामाजिकता न हो तो फिर मनुष्य को करोड़ों वर्षपूर्व जैसी आदिम अवस्था में जाना पड़ेगा।

जब सामाजिकता मानव जीवन का अविच्छिन्न अंग ही ठहरी तो यह आवश्यक है कि उसे शुद्ध और परिष्कृत रखा जाये। मानव समाज में सामाजिकता भी जब इर्ष्या, द्वेष, छल, कपट, शोषण, अहंकार आदि स्वार्थ पूर्ण संकीर्ण प्रवृत्तियों से दूषित हो जाती है तो उससे अगणित प्रकार के क्लेश, कलह और शोक सन्ताप उठ खड़े होते हैं। एक कुटुम्ब के सदस्य यदि प्रेम, सद्भाव और सहयोग पूर्वक रहते है तो वे सभी सुव्यवस्थित और शान्तिमय जीवन व्यतीत करते हैं, पर यदि वे परस्पर द्वेष, दुर्भाव रखें, छल, प्रपंच करते रहें और साथियों की उपेक्षा कर अपना लाभ सोचें तो उस परिवार में ऐसी विषम परिस्थितियॉ उत्पन्न हो जायेंगी कि सभी नारकीय कष्ट का अनुभव करने लगेंगे।

समाज भी एक बड़ा परिवार ही है। घर से बाहर रहने वाले कुटुम्ब से अतिरिक्त अन्य लोगों के सहयोग पर भी हमें आश्रित रहना पड़ता हैं वह उचित मात्रा में तभी मिलता है जब अपनी ओर से समुचित सद्भाव बरता जाय। पाश्चात्य विचारक **कार्लाइल** का कथन है– "हमें सज्जन बनना चाहिए, और उन गुणो को विकसित करना चाहिए, जिन्हें नैतिकता एवं मानवता के नाम से पुकारते है। धर्म एवं संस्कृति का विशाल ढॉचा इसलिए बनाकर खड़ा किया गया है कि उनसे प्रभावित मस्तिष्क में संयम से रहने और सद्व्यवहार करने की आस्था उत्पन्न हो। आस्तिकता और ईश्वरीय न्याय का मूल प्रयोजन यह है कि मनुष्य अपने ऊपर अदृश्य शासन का नियंत्रण अनुभव करे और गुप्तरूप से शरीर से ही नहीं, मन से भी दुष्कर्म करने का– दुष्प्रवृत्ति अपनाने का साहस न करे। यह आत्म–नियंत्रण और आत्म परिष्कार इसलिए आवश्यक है कि मनुष्य सज्जनता सीखे और उदारता बरते। यही वह राजमार्ग है जिससे हम सच्चे अर्थों में सामाजिक प्राणी बनते है। सामाजिकता के नियमों का पालन ही व्यक्तिगत और सम्मिलित सुखशान्ति को सुरक्षित रखने का–प्रगतिशील बनाये रखने का एक मात्र उपाय है।"

जिस समाज में परमार्थ वृत्ति नहीं होगी उसका अस्तित्व कायम रहना असंभव होगा। अभिभावकों द्वारा बच्चों की सेवा, पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा का ध्यान न रखा जाय और यह वृत्ति समाज में व्यापक बन जाय तो मानव जाति का ह्रास आने लगेगा। परिवार, समाज, व्यावहारिक सम्बन्धों में परस्पर प्रेम और सहानुभूति जन्य आत्मयता की भावनाऍ नष्ट हो जाऍ तो समाज के अविकसित, असमर्थ, अक्षम लोगों का जीवन निर्वाह कठिन ही होगा और वृद्ध, अपंग, अपाहित, रोगी, दुःखी लोगों की जीवन दूभर हो जायेगा। मनुष्य की प्रवृत्तियॉ इस परमार्थ वृत्ति से जितनी ही शून्य होत जाऍगी उतनी ही सामाजिक व्यवस्था दोषयुक्त बनती जायेगी। व्यक्तिगत लाभ, स्वार्थ सिद्धि, समृद्धि के लिए मनुष्य कितना भी क्यों न करें, वह उतना ही सम्पन्न और वैभव शाली क्यों न बन जाय; किन्तु परमार्थ के लिए किसी भी तरह उपयोगी सिद्ध नहीं होता। उससे समाज के विकास में कोई योग नहीं मिलता। साथ ही उसका स्वयं का भी विकास रूक जायेगा; क्योंकि समाज के साथ ही व्यक्ति का और व्यक्ति थे द्वारा ही समाज का विकास सम्भव है।

समाज या बड़ा परिवार :– समाज को **आचार्य श्रीराम शर्मा** ने व्यक्ति एवं परिवारों का संयुक्त बड़ा स्वरूप कहा है। यदि श्रेष्ठ समाज बनाना है, तो उसे पारिवारिक आदर्शों के आधार विकसित करना

होगा, यह तथ्य विश्व स्तर के मनीषियों द्वारा स्वीकार किया जा चुका है। हमारे ऋषिगण विश्व परिवार, वसुधैव कुटुम्बकम् के स्थापक सदैवे से ही रहे हैं। अस्तु युग निर्माण के उद्देश्य की सिद्धि के लिए हमें जन–जन को उन सभी सूत्रों से जोड़ना होगा, जो आचार्य शर्मा द्वारा व्यक्ति निर्माण एवं परिवार निर्माण के लिए सुझाये गये हैं। "समाज निर्माण में अपने सुनिश्चित भूमिका के लिए हमारे कुछ संकल्प होने चाहिए। इसके लिए सबसे सहज एवं तत्काल प्रभावी ढंग है अपने विचार परिवार, गायत्री परिवार के सदस्यों में गहन पारिवारिक प्यार और सहकार विकसित करना। यदि इसमें सफलता मिलने लगी तो धरती पर स्वर्ग के नमूने गॉव–गॉव, नगर–नगर विकसित होने लगेंगे।1"

स्वार्थ ही नहीं परमार्थ भी :– स्वार्थ प्रधान, निजी लाभ रखने के दृष्टिकोंण द्वारा सुखी, सम्पन्न, विकसित समाज का निर्माण नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में मनुष्य आपाधापी की भावना से प्रेरित होकर परस्पर छीना–झपटी, एक दूसरे के प्रति षड्यन्त्र, ईर्ष्या–द्वेष में लीन हो जायेगा। समाज में एक दूसरे के प्रति अविश्वास, सन्देह, भय, शंका की वृद्धि होगी और इससे समस्त समाज में विकृतियॉ पैदा हो जाऐंगी। धोखेबाजी, ठगी, भ्रष्टाचार, लूट–खसोट डकैती, शोषण जैसे भंयकर अपराधों का सूत्रपात मनुष्य की इस स्वार्थ प्रधान, निजी लाभ की संकुचित मनोवृत्ति के कारण ही होता है। इस स्थिति में व्यक्ति अपने जीवन में कितना भी समृद्ध, शक्तिशाली, सम्पन्न क्यों न हो, सुख–शान्ति औ आनन्द से वंचित रहेगा। क्षण–क्षण, पल–पल उसे नई चिन्ता, षड्यन्त्र, संघर्ष तथा दूसरों के आक्रमण का सामना करना पड़ेगा। जीवन उसके लिए कए अभिशाप सिद्ध होगा। समाज में परस्पर सहानुभूति, सौजन्य, सेवा, सहायता, सहयोग, संगठन आदि पर समाज का विकास निर्भर करता है। ये सब परमार्थ से ही संभव है। स्वार्थ और संकीर्णता से तो समाज में विघटन, संघर्ष आदि का ही पोषण होता है।

आचार्य शर्मा लिखते है– "हमारा समाज जितना श्रेष्ठ और प्राचीन है उतनी ही कुरीतियों और बुराइयॉ भी उसमें प्रवेश कर गई हैं। जिस प्रकार सिर में पड़ जाने वाले जुओं को बीन बीनकर फेंक दिया जाता है उसी कसौटी पर रीति–रिवाजों को कसना होगा, जो उपयुक्त हों उनको प्रोत्साहन देने जो अनुपयुक्त हों उनका परित्याग करने के लिए हमें तत्पर होना होगा।2"

अपने लिए ही नहीं, समाज के लिए भी जिऍ :–

आचार्य श्री रामशर्मा के मतानुसार आवश्यकता इस बात की है कि हमारा जीवन, हमारे सभी क्रिया कलापों का आधार व्यक्तिगत न होकर समष्टिगत हों, सार्वभौमिक हों, रचनात्मक और दूसरों के लिए हितकारी हों। मनुष्य अपने लिए न जिए वरन् समाजके लिए, संसार के लिए जिए। इसी सत्य पर व्यक्ति का विकास–उत्थान संभव है और साथ ही समाज में परस्पर सहयोग, आत्मीयता, सौजन्य के सम्बन्ध स्थापित होते हैं विश्व–यज्ञ में मनुष्य का प्रत्येक प्रयास परमार्थ आहुति डालने के सदृश हो, तो धरती पर ही स्वर्ग की कल्पना साकार हो उठे।

मनुष्य द्वारा उपार्जित अर्थ सामग्री उसके स्वयं के उपभोग अथवा संग्रह के लिए नहीं वरन् सदुपयोग के लिए होनी चाहिए। इसलिए वेद के ऋषि ने आदेश दिया है– 'सौ हाथें से कमा और

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– भव्य समाज की नव्य रचना, पृ0 42

2. आचार्य श्रीराम शर्मा– समाज निर्माण , पृ0 14

हजार हाथों से दानकर'। आम्र वृक्ष कुछ ही व्यक्तियों से श्रम–सेवा और पोषण से प्राप्त करता है; किन्तु जो प्राप्त करता है, उसे असंख्यों मधुर फलों के रूप जन–जन को लुटा देता है।

अपनी शक्तियों का उपयोग दूसरों को ऊँचा उठाने के लिए करें–

किसी क्षेत्र में शक्ति, सामर्थ्य अर्जित करके मिला हुआ उच्च पद–प्रतिष्ठा बुरी नहीं है। जीवन के सर्वांगीण विकास में इनकी भी आवश्यकता है; किन्तु शक्ति, सामर्थ्य, पद, सत्ता का उपयोग गिरे हुओं को उठाने के लिए, जीवन पथ में भटके हुओं को निकालकर आगे बढ़ाने, आगे बढ़ने वालों का सहारा देने में हो तभी इनकी सार्थकता है। जो अपनी सामर्थ्य, शक्ति, सत्ता, पद के अभियान में चूर होकर दूसरों को गिराते हैं, दूसरों को हानि पहुँचाते है।, दुःख कष्ट देते हैं, मानव होकर भी मानवता पर अत्याचार करते है उन्हें समाज के व्यवस्थापकों ने क्रूर कर्मी, पापी, दुष्ट कहकर हेय बताया है। इससे समाज काअहित और विघटन होता है और परस्पर संघर्ष, अशान्ति और क्लेश को जन्म मिलता है।

हमारे जीवन की समस्त प्रवृत्तियों का आधार **'बहुजन हिताय'**– परमार्थ परायाणता होना चाहिए, स्वार्थ परायणता नहीं। इसी में हमारे सवयं के और समाज–जीवन के विकास, प्रगति का मंत्र सन्निहित है। सबका हित, सबका सुख, सबका लाभ, सबका कल्याण हमारा, जीवन दर्शन होना चाहिए। मंत्र द्रष्टा ऋषि ने इसी सत्य भी प्रेरणा देते हुए कहा है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख माप्नुयात्।।

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी निरामय हो, सब मंगलमय हों, कोई दुखी न रहे। समूहगत प्रयत्नों में प्रकाश, उन्नति, कल्याण का रास्ता निहित है। हमें अपने समस्त भेदभाव, स्वार्थ–प्रधान लाभ, हानि छोड़ सम्मिलित प्रयत्नों से विकास–यात्रा पर चलने के लिए दृढ़ प्रयत्न करना आवश्यक है, तभी हमारा और समाज का भविष्य उज्जवल होगा।

'प्रज्ञा युग'की समाज व्यवस्था :– आचार्य श्रीराम शर्मा ने अपने अध्यात्मिक समाजवाद में समाज व्यवस्था को सर्वोपरि स्थान दिया है। उनके अनुसार–"अगले दिनों मनु, याज्ञवल्क्य, विशिष्ठ जैसे विचारक मानव प्रकृति की सूक्ष्मताओं का गहन अध्ययन करके, देश–काल–परिस्थिति के परिवर्तित होते सवरूप को ध्यान में रखकर नई रीतियों, प्रथाओं, परम्पराओं, संस्कारों की रचना करेंगे। ये युग स्मृतियॉ बदलते युग को अनुरूय लेती रहेंगी। समाज व्यवस्था के इस गतिशील और विकास शील स्वरूप में मूढ़ताओं, कुरीतियों एवं दुराग्रहों का कोई स्थान न रहेगा।1"

प्रज्ञायुग में हर व्यक्ति अपने आपको संमाज का एक छोटा सा घटक; किन्तु अविच्छिन्न अंग मानकर चलेगा। निजी लाभ–हानि का विचार न करके विश्वहित में अपना हित जुड़ा रहने की बात सोचेगा। सबकी महत्तवाकाक्षाएँ एवं गतिविधियाँ लोकहित पर केन्द्रित रहेंगी न कि संगीर्ण स्वाथ परता पर। एक कुटुम्ब के लोग जिस प्रकार मिल–बॉटकर खाते और एक स्तर का जीवन जीते हैं, वही मान्यता व दिशाधारा अपनाये जाने का औचित्य समझा जाएगा। ऋषि–मुनिगण परिवार बसाकर पर्ण

1. डा0 मन्दाकिनी श्रीमाली–प्रज्ञापुरूष का समग्र दर्शन पृ0 8.30

कुटियों में रहते थे, लेकिन समाज से कटे नहीं थे। उन दिनों लोभ–मोह के बंधनों को काटने के प्रयास योग–साधना, तप–पुरूषार्थ द्वारा सम्पन्न से होते थे एवं सुनियोजन सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन हेतु होता था। अब उसी कार्य को चिन्तन की उत्कृष्टता, जीवन क्रम के निर्धारण एवं वातावरण के प्रभाव से सम्पन्न कराया जायेगा।

बड़े आदमी नहीं महामानव :– प्रज्ञा युग के नागरिक बड़े आदमी बनने को नहीं– महामानव बनने की महत्तवाकांक्षा रखेंगे। सच्ची प्रगति इसी में समझी जाएगी कि गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से किसने अपने आपको कितना श्रेष्ठ, समुन्नत बनाया। कोई किसी के विलास, वैभव की प्रति स्पर्द्धा नहीं करेगा, वरन् होड़ इस बात की रहेगी कि किसने अपने आपको कितना श्रेष्ठ, सज्जन एवं श्रद्धास्पद बनाया। आज के प्रचलन में सम्पदा को सफलता का चिन्ह माना जाता है। अगले दिनों यह मापदण्ड सर्वथा बदल जायेगा और यह जाना जायेगा कि किसने मानवीय गौरव–गरिमा को किस प्रकार और कितना बढ़ाया।

चिन्तन की उत्कृष्टता और आचरण की सभ्यता :– प्रज्ञा युग के समाज में चिन्तन, आचरण एवं व्यवहार के सभी पक्षों में कायाकल्प जेसे हेर फैर होगा। यही युग परिवर्तन का आधार दूरदर्शी विवेक शीलता की कसौटी पर कसकर अपनाया गया औचित्य ही होगा। पिछले दिनों क्या सोचा, माना या किया जाता रहा है, इसे भावी रीति–नीति का आधार नहीं माना जाएगा, वरन तर्क, तथ्य, प्रमाण, न्याय एवं लोकहित की हर कसौटी पर कसने के उपरान्त जो खरा पाया जाऐगा उसी को अपनाया जाऐगा न किसी को आग्रह होगा और न कोई भविष्य की अवज्ञा करेगा। वर्तमान का निर्धारण करते समय आज की आवश्यकता और उज्जवल भविष्य की संभावना को ही महत्व दिया जाएगा। यह आज निर्धारण पूर्वाग्रहों से मुक्ति पाये हुए अन्तःकरण ही कर सकेंगे।

सामाजिक मर्यादाओं का महत्व :– प्रज्ञायुग में हर व्यक्ति सामाजिक नीति–मर्यादाओं को महत्व देगा। कोई ऐसा काम न करेगा, जिससे मानवी गरिमा और सामाजिक व्यवस्था को ऑच आती हो। शिष्टाचार, सौजन्य, सहयोग, ईमानदारी, वचन का पालन, निश्छलता जैसी कसौटियों पर पारस्परिक व्यवहार खरा उतरेगा। अनीति का न तो सहयोग किया जाएगा और न प्रत्यक्ष–परोक्ष समर्थन दिया जाएगा।

आहार–विहार का संयम :– प्रज्ञायुग में शारीरिक और मानसिक व्याधियों से सहज ही छुटकारा मिल सकेगा। क्यों कि लोग प्रकृति के अनुशासन में रहकर आहार–विहार का संयम बरतेंगे और अन्य प्राणियों की तरह अन्तः प्रेरणा का अनुशासन मानेंगे, फलतः न दुर्बलता सतायेगी न रूग्णता। असमय बुढ़ापा आने तथा अकाल मृत्यू से मरने का भी तब कोई कारण रहेगा।

जनसंख्या नियंत्रण :– धरती की उपार्जन शक्ति से कहीं अधिक इन दिनों जनसंख्या का भार बढ़ गया हैं अब सन्तान बढ़ाने की कहीं कोई गुंजाइश नहीं रही। आचार्य शर्मा के मतानुसार प्रज्ञायुग में हर व्यक्ति परिवार बसाने से पहले हजार बार विचार करेगा कि क्या उसमें साथी के प्रगति तथा सुविधा के लिए समुचित साधन जुटाने की सामर्थ्य है? क्या उसमें नये बालकों को सुसंस्कारी,

संभ्रान्त एवं स्वाबलम्बी नागरिक बनाने की योग्यता है? यदि है, तो समय एवं धन की कितनी मात्रा, साथी तथा नई पीढ़ी के लिए लगा सकने की स्थिति बन सकती है?

विवाह कामुकता की तृप्ति के लिए, रूप सौन्दर्य से खेलने के लिए नहीं; वरन साथी को स्नेह, सहयोग, सम्मान देकर जीवन की अपूर्णता को दूर करने एवं मिल–जुलकर अधिक उच्चस्तरीय प्रगति करने की आदर्शवादिता से प्ररित होकर ही किये जाया करेंगे।

महर्षि अरविन्द का कथन है– "युग कोई वस्तु नहीं, जो एक नियम समय पर ही आएगा और फिर चिरकाल के लिए दृष्टिपथ से ओझल हो जाएगा। हम अपना सतयुग और कलियुग अपने प्रेरणा से आप बना सकते है। जब मुनष्य इस जाग्रत–जीवन के अधिकार को भूलकर स्थान पर पहुॅच जाता है, तथा वासना, कामना, तृष्णा, अहंता से नाता तोड़ लेता है, उसी समय सतयुग का पुनः उदय हो जाता है।"

जब महायोगी श्री अरविन्द से सतयुग–आगमन के विषय में जिज्ञासा की कई, तो उन्होंने यही समझाया "कि सतयुग–कलियुग का निर्माता मनुष्य स्वयं ही है। वह चाहे तो सत्कर्म करता हुआ सतयुग बुला ले और चाहे तो दुष्कर्मो मे लिप्त रहकर कलियुग की स्थापना करता रहे। पुराणों की कथाओं के अनुसार सतयुग में हिरण्यकश्यप और त्रेता में रावण जैसे असुर थे, जो अपने कर्मो से दानव और राक्षस कहलाए और जिन्होंने धर्म विरूद्ध कार्यो द्वारा पाप–युग का दृश्य उपस्थित कर दिया। इधर कलियुग कहे जाने वाले समय में **विक्रमादित्य और भोज** जैसे राजाओं की कथायें प्रसिद्ध हैं, जिनके राज्य में शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते थे। इसलिए यही मानना पड़ता है कि जिस जमाने में जैसे व्यक्तियों तथा कर्मों की प्रधानता होगी, वैसा ही युग बन जाएगा।

आत्म भाव की स्थापना :– आगामी युग में सबसे बड़ा परिर्वतन होगा, वह मुनष्य–मनुष्य के बीच में आत्मभाव की स्थापना होगी। अध्यात्म–भावना के प्रसार का परिणाम यह होगा कि मनुष्यों का दृष्टिकोंण विशाल बनेगा और वे विश्व–मानव की भावना को ग्रहण करने लगेंगे। तब एक ऐसा समय आ जाएगा, जबकि एक परमपिता के पुत्र होने के नाते समस्त मनुष्य अपने को एक ही मानव जाति का सदस्य समझने लगेंगे ।

संसार में–समाज में इस प्रकार के मानव–धर्म का विकास होने से वर्तमान समय में जो विभिन्न मजहब वालों में पारस्परिक घृणा की भावना पाई जाती है, वह प्रेम भाव में बदल जाएगी। लोग समझने लगेंगे कि अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाना और उस पर–सेवा परोपकार में लगाना ही सच्चा धर्म है। शेष बातें कर्मकाण्ड मात्र है, जिनको अपनी इच्छानुसार किया जा सकता हैं यदि मूल ठीक दशा में रहेगा, तो फूल और फल अपने आप ठीक हो जाऐंगे। इस पर आजन्म चलते रहने से लौकिक लाभों के साथ अन्त में मोक्ष का सुख मिलना स्वभाविक है। **आचार्य शर्मा** का कथन है कि– "ऐसा समय आने पर आज कल के भौतिकवाद की अधिकता के कारण व्यक्तियों तथा समाज में जो दोष–दुर्गुण पाये जाते है।, उनका स्वयमेव निराकरण हो जाएगा। वास्तव में जब ऐसा समय आएगा, तब अध्यात्म कहने–सुनने या मन के भीतर ही गुप–चुप जप या भजन करने विषय नहीं रहेगा; वरन उसका उपयोग नित्य प्रति जीवन की प्रत्येक क्रिया में होगा। जिससे खाने–कमाने के कार्य ज्यों के त्यों रहने पर भी

समाज की स्थिति में जमीन आसमान का अन्तर पड़ जाएगा और दुःखों का सबसे बड़ा कारण दूर हो जाएगा। धर्म और समाज विषयक विचारों में इस प्रकार संशोधन हो जाने से अन्य छोटी–बड़ी विधियों, संस्कारों, परम्पराओं आदि में स्वयमेव सुधार हो जाएगा।1"

अन्ततः व्यक्ति समाज का ही सबसे अधिक ऋणी है और उसे इस सच्चाई से इन्कार नहीं करना चाहिए। इस तथ्य को स्वीकारते हुए समाज का ऋण चुकाने के लिए तत्परता पूर्वक अपने दायित्वों को पूरा करते जाना चाहिए। क्या समाज के प्रति हमारा कोई दायित्व नहीं? इसके उत्तर में युगचिन्तन शीर्षक से **डा0 प्रणव पण्ड्या** लिखते है– "जिस समाज में हम रहते है।, उसके प्रति नैतिक रूप से हम उत्तरदायी है। जो लोग मेहनत करते है व खाते है या अपने प्रयत्नों का लाभ उठाते है। ऐसा ही दृष्टिकोण रखते और स्वार्थ पूर्ण रीति–नीति अपनाते हैं, औरों की तो बात अलग, पहले अपनी आत्मा को ही प्रताड़ना सहनी पड़ती है। जो सामूहिक दृष्टि से न सोचकर केवल अपने व्यक्तिवाद को ही महत्व देने में लगे रहते हैं, वो सारे समाज को उसने वाले विषधर की तरह हैं और उन्हें कभी शान्त, सुखी नहीं देखा जा सकता।2" आचार्य श्रीराम शर्मा के मार्गदर्शन में चलाई गई सुधार सेवा और सम्मान की सतप्रवृत्तियों से समाज लाभान्वित हुआ है।

नीरज व्यक्ति से अधिक महत्व समाज को देते हैं। उनकी सामाजिक चेतना इतनी प्रबुद्ध है कि कवि को नितान्त वैयक्तिक क्षणों में भूल नहीं पाया है। समाज में फैली अनाचार और अत्याचार की गंध उन्हें किसी गुलाब को गले लगाने का समय नहीं देती। समाज पग–पग पर उन्हें पुकार उठता है–

"मुफलिसी भूख गरीबी से दबे देश का दुःख,
डर है कल मुझको कहीं खुद से न बागी कर दे,
जुल्म की छॉह में दम तोड़ती सॉसों का लहू,
स्वर में मेरे न कहीं, आग अंगारे भर दे।"

चूड़ियॉ टूटी हुई नंगी सड़क की शायद कल तेरे वास्ते कंगन न मुझे लाने दें,
झुलसे बागों के धुऑ खाये हुये पात को सुन, गोरे हाथों में न मेंहदी का रंग आने दें।।"– नीरज

आज की जर्जर सामाजिक व्यवस्था में न सिर्फ पूँजी और श्रम का ही संघर्ष है वरन् चमक के भ्रम में स्वर्ण को ताम्र और ताम्र को स्वर्ण भी समझा गया है। कोयल को कौवे का अनादर दिया गया है। कला भी इस पाषाण युग में उपेक्षित है। स्वर्ण के आगे उसे भी झुकना पड़ा है– कवि कहता है–" **स्वर्ण की झंकार ने ऐसा किया दल समय से,**
चातकों की प्यास तक बाजार में बिकने लगी है,
सूलियों पर भी नहीं गर्दन हुई जिसकी कभी खम,
वह कलम कुछ कुर्सियों के सामने झुकने लगी है।।"– नीरज

1. ब्रह्मवर्चस–देवदूत आया–हम पहचान न सके (स्मारिका), पृ0 119
2. डा0 प्रणव पंण्ड्या-क्या समाज के प्रति हमारा कोई दायित्व नहीं, शान्तिकुंज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस (प्रज्ञा अभियान से सम्बद्ध)

आलोच्य काव्यों से सामाजिक अभिव्यक्ति के उदाहरण :–

आचार्य श्री रामशर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन प्रगतिशीलता की अभिव्यक्ति हुई है। कवियों की रचनाओं के उदाहरण अवलोकनीय है–

1 **श्रीमती विद्यावती मिश्र** :– श्रीमती विद्यावती मिश्र की अनेक रचनाओं मे समाज की प्रगतिशील विचारधारा परिलक्षित होती है। उनकी एक कविता सबको प्यार करो' की पंक्तियॉ देखिए–

"त्याग, दया ममता से पावन यह संसार करो, सबको प्यार करो।"

सामाजिक अभिव्यक्ति का एक अन्य उदाहरण अवलोकनीय है–

अकर्मण्य रह ऋद्धि सिद्धि की मॉग रहे जो भीख,
मौन नियति की कटुता उनको सिखलाती है सीख,
पौरूष की गुरूता से वंचित रह जिसका कल्याण।
जग को जहर बताने वाले जीवन से अनजान।। '**युग धर्म**' शीर्षक से

2 **श्री बलराम सिंह परिहार** की कविता '**क्रान्ति का अध्याय**' की पंक्तियॉ सामाजिक विषमता के सन्दर्भ में अवलोकनीय हैं–

आज दुनियॉं में भयानक भेद है टकराव है,
जो हमारे है उन्हीं में बैर है, विखराव है।
उन सभी के ही लिए गंगा बहादी ज्ञान की, जिन दिलों मे द्वेष है, दुर्भाग्य है, दुर्भाव है।।
हम सभी मिलकर रहेंगे एक बनकर नेक बन, आपने जो कुछ सिखाया है– भुलाएँगे नहीं।।
क्रान्ति का अध्याय लिखकर दे गऐ हैं आप जो।।

3 **श्री शचीन्द्र भटनागर** की कविता '**चलो गुरूदेव के सपने, सजाने की शपथ ले लें,** की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

पताका देव–संस्कृति की, स्वयं हर देश में लेकर,
दवा हर रोग की, गुरू के सहज संदेश में लेकर,
नगर और गॉव में, घर में, डगर के बीच जाएँगे,
अलख गुरूदेव का घर–घर जगाने की शपथ ले लें।
सुखी सुरधाम–सी वसुधा बनाने की शपथ ले लें।
चलो गुरूदेव के सपने, सजाने की शपथ ले लें।।

4 **श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय'** की रचना 'धरती को स्वर्ग बनाना है, की पंक्तियॉं अवलोकनीय है–

सम्बन्धी, मित्र पड़ोसी से निष्कपट मधुर व्यवहार करो,
उनके सुख में तुम सुखी रहो, सेवा कर उनके दुःख हरो,
निर्बल सज्जन डरो सदा बलवान दुष्ट से भी न डरो। X X X
जिस ग्राम नगर में बास करो उसको आदर्श बनाओ तुम,
दुर्गन्ध गन्दगी दूर हटा विद्या घर–घर फैलाओ तुम।

अज्ञान हटाकर इस जग का फिर से आलोक जगाना है।
ऐ धरती के रहने वालो, धरती को स्वर्ग बनाना है।।

5 **कीर्तिशेष डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल** के खण्ड काव्य '**अनुताप** में अपने सुख का विस्तार करके भी प्रेरणा से सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति का सन्देश है–

यही है जीवन जग–सार, करें सुख का बहु विस्तार।
धन्य हों जिससे यह निज देह, अन्यथा व्यर्थ बनेगी क्षार।। X X X
याद कर अपनी पिछली बात, बही अविरल दृग से जलधार।
हृदय में उमड़ा प्रीति प्रवाह, परम पावन था यह अभिसार।।

6 **डा0 आर.0 पी0 कर्मयोगी** '**जीवन विद्या**' शीर्षक से सामाजिकता का संदेश देते हैं–

सर्वश्रेष्ठ वह व्यक्ति है, जिसका हृदय जिसका हृदय विशाल।
मन छोटा करता नहीं, चले न टेढ़ी चाल।।
मनुज जन्म जग में मिला, पर कारज के काज।
तन मन धन अर्पण करें, ऐसा बने मिजाज।।
साथ–साथ मिलकर चलें, साथ–साथ हो बात।
हम सबके मन एक हों, हो न कभी प्रतिघात।।

7 **डा0 रामस्वरूप खरे** अपनी कविता '**नयी बीन, नया स्वर**' में साथ मिलकर चलने की प्रेरणा देते है– **"अगर साथ मिलकर चले तुम परस्पर, अनौखी लगन से सफलता मिलेगी,**
प्रगति–गंग–धारा उतर कर स्वयं ही, विहॅस स्वर्ग से, आ धरा पर बहेगी।।
नयी चेतना की भरो मॉग श्रम से, नयी प्रेरणा नव–स्जन मॉगती है।
बिगुल अब बजा दो, नयी क्रान्ति का तुम, नयी बीन यह स्वर नया मॉगती है।"
नये युग का अभिनव निर्माण –पृ01

8 **कीर्तिशेष श्रीमती माया वर्मा** अपनी कविता में 'आदर्श समाज की कल्पना' का चित्र कुछ प्रकार खींचती है– **"उस युग में होगी न कहीं पर पर पीड़ा या कटुता मन में**
एक अपूर्व शान्ति होगी, प्रत्येक, मनुज के जीवन में।
इसके लिए किन्तु तुमको कृतकार्य होना होगा
मानव मन का अहं स्वार्थ संकीर्ण भाव धोना होगा।
आदर या श्रद्धा का कारण होंगी उच्च भावनाऐं।
उसके लिए मिटाने होंगे ऊॅच नीच के पैमाने।
जाति, रंग, धन के बल पर कोई न कोई किसी को लघु माने,
बने उच्चता का आधार 'प्रकृति गुण, कर्म नीति बदलो
बदलो युग की चाल गलत, मानवता को मत और छलो।।
उसके लिए तोड़नी होगी, जड़ ममत्व की सीमाऍ"
और सिखाना होगा सबको, उर अम्बर सम विकसाऍ।।" **नये सन्दर्भ** पृ0 18

9 डा0 **जमुना दास बड़ैरिया** ने अपनी कविता '**सृजन शिल्पी! इन्द्र धनुषी,सात आन्दोलन चलाओ**' शीर्षक से राष्ट्र सेवा एवं समाज सेवा हेतु आचार्य शर्मा द्वारा चलाये गये सप्त आंदोलनों– साधना शिक्षा स्वास्थ्य पर्यावरण नारी जागरण स्वाबलम्बन एवं व्यसन मुक्ति तथा कुरीति उन्मूलन को अभिव्यक्त किया है–

सृजन शिल्पी! इन्द्र धनुषी की, सात आन्दोलन चलाओ।
एक गुरू के शिष्य हो तुम, अहं को अपने गलाओ X X X
आस्तिकता–श्रद्धा जगाकर, ज्ञान का दीपक जलाओ ,
पर्यावरण दूषित हुआ रोगी बने हैं आज मानव।
नारियों परा जुल्म करते, बन रहे हो क्यों निरंकुश,
दहेज लोभी चेत जाओ, क्रूरत पर लगे अंकुश।।
सम्मान नारी का करो, गौरव स्वयं अपना बढ़ाओ।। सृजन शिल्पी .....
कुरीतियों के दास बनकर, पतित करते क्यों ये जीवन।
रूढ़ियों, पाखण्ड छोड़ो, पावन करो तन और निज मन।।
मिथ्या प्रदर्शन और अपव्यय से बचो, सबको, बचाओ। सृजन शिल्पी .....

यु0 नि0 यो0 दिसम्बर 2001

10 डा0 **हर गोविन्द सिंह** की '**आवाह्न**' कविता की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं–

"यह जीवन भी कैसा जीवन? अपनी ही सुविधा का चिन्तन!
समझें औरों का सुख–दुख भी, ऐसा निर्मल हो अब यह मन,
चॉद सितारे भी कहते हैं, हम सब मिल–जुलकर मुस्काएँ।
सादर सबका आवाह्न है, साथ हमारे आप भी आएं।।" **यु0 नि0 यो0** जनवरी 1987

11 **श्री बाबूलाल जैन 'जलज'** की कविता '**कण–कण** में चेतन मुस्काता' की पंक्तियॉ अवलोकनीय है– **आत्म चेतना यदि न जगाती, मंजिल में ही सोता रहता,**
मन–मन्दिर में छाया रहता, दिन में ही भीषण अँधियारा। X X X
सेवा भाव न जागृत होता, करूण पुकार न यदि सुनपाता,
व्यथा–कथा यदि सुनी न होती, जीवन–तप निष्फल हो जाता।
हाथ पकड़ती अगर न ममता, समता का कुछ बोध न होता,
सॉसों की गति एक न होती, बढ़ता अगर न भाई चारा।। मन मन्दिर में छाया रहता .

'अखण्ड ज्याति' जुलाई 1973

12 **श्री वीरेश्वर उपाध्याय** की पंक्तियॉ '**साधक की चाह**' शीर्षक से देखिए–

चाह नहीं लौकिक वैभव की, मेरा धन प्रभु तेरा प्यार।
पाऊँ तुमसे बॉटू जग को, धन्य बने सारा संसार।।
पावन प्रेम प्रवाहित हो प्रभु! डूब जाय सारा अभिमान,

दुर्बल दीन–दुखी की खातिर, हो जाऊँ हँस–हँस बलिदान।। **'अखण्ड ज्याति' जुलाई 1973**

यह समस्त कविताएँ कवयिों की प्रबुद्ध सामाजिक चेतना का स्पष्ट उद्‌बोधन करती है। पर कवि केवल सामाजिक विषमताओं, अत्याचारों एवे अनाचारों से ही प्रभावित नहीं हुए हैं, जहॉ भी मानवता विजयी हुई है वहॉ भी उसने उसके यशोगीत भी गाये हैं।

इस प्रकार आलोच्य काव्य कवियों की सामाजिक चेतना की सममता का सजीव उदाहरण है। जीवन जहॉ भी पीड़ित हुआ है, दलित हुआ है, या विजयी हुआ है– सदैव कवियों ने उसे देखा–परखा है और अपने काव्य में अंकित भी किया है। समाज की हर गंदगी, रूढ़ि गर्हितपरम्परा, हठ धर्मिता के वे विराधी है। और व्यक्ति और मानव की विजय के उद्‌घोषक हैं। यद्यपि उनसे बहुत से प्रति क्रियावदी तत्व भी मिल जाते है परन्तु अन्ततः वे प्रगतिशील ही अधिक है। तथा उन पर आचार्य श्री राम शर्मा के जीवन दर्शन की स्पष्ट छाप अंकित है।

5 क उदात्त मानव दृष्टि एवं प्रतिष्ठा :–

लोंजाइनस ने एक स्थान पर कहा है: 'औदात्य महान आत्म की प्रतिध्वनि है।' वस्तुतः हृदय की विशालता ही कविता को उदात्त रूप में प्रस्तुत कर सकती है। कवि ने निकट वयक्ति और समाज सबकी विकृति परिष्कृति होकर महान और उज्जवल बन जाती है। कवि एक शिल्पकार है जो जमीन की धूल, गर्द, कंकड़, पत्थरों से एक शिव और सौन्दर्य से मण्डित मूर्ति की गढ़ना करता है और सिर्फ उसे गढ़ता ही नही, उसमें अपनी 'स्निग्ध पियूषी धारा' के द्वारा प्राण संचार भी करता है। यों तो काव्य मं हर विकृति उदान्त होकर ही अभिव्यक्त होती है परन्तु हर काव्यात्मक अभिव्यक्ति उदात्त काव्य की श्रेणी में नहीं आ सकती। उदात्त का अर्थ केवल उदात्तीकरण या केवल परिष्कार नहीं है, वरन वह 'अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उत्कृष्टता' का नाम है। इसलिए हर काव्य परिष्कृत होकर भी औदात्यपूर्ण नहीं हो सकता है। औदात्य काव्य अनेक अन्तरंग एवं बहिरंग गुणों पर आधारित रहता है। **आचार्य श्रीराम शर्मा** के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों के काव्य कमल भी समाज और व्यक्ति की हर कीचड़, हर दलदल पर खिले हुए हैं।

समाज की हर विकृति, हर अधूरापन वहाँ अपनी परिष्कृति और पूर्णता की खोज करता है। **लोंजइनस** ने उदात्त का प्रमुख अन्तरंग कारण महान धारणाओं की क्षमता और उद्‌दाम प्रेरणा प्रसूत आवेग को माना था। महान धारणाओं की क्षमता को वह महान कलाकार की सबसे बड़ी स्वीकृति मानता है। उसने कहा 'सच्चे वाग्मी (कलाकर) को निश्चय ही क्षुद्र और हीनतर भावों से मुक्त होना चाहिए क्योंकि यह सम्भव नहीं है कि जीवन भर क्षुद्र उद्‌दश्यों और विचारों में ग्रस्त व्यक्ति कोई स्तुत्य एवं अमर रचना कर सके।' आलोच्य काव्य में भी हमें कहीं कभी कोई क्षुद्र अथवा हीन बात देखने को नहीं मिलती। उनके काव्य की सभी भावनाएँ–सभी विषय महान हैं। प्रेम की शारीरिकता भी उदात्त होकर विश्व प्रेम अथवा रहस्य भावना के निकट पहुँच गई है।

लोंजाइनस कहते है– 'महान शब्द उन्हीं के श्री मुख से निःसृत होते है जिनके विचार

गम्भीर और गहन हों।' आलोच्य काव्य की महानता में भी आचार्य श्रीराम शर्मा के गम्भीर चिन्तन और जीवन दर्शन का आधार है। उनका हर विचार भव्य और महान रूप में ही प्रस्तुत होता है। व्यक्तिगत पीड़ा–भौतिक स्तर पर सही गई या मानसिक स्तर पर अनुभूति की गई,– सभी को उन्होंने उदात्त रूप में लिया। बड़े–से बड़े अपराधों को क्षमा कर देना आचार्य की पवित्र आत्मा की उदारता को प्रकट करता है। अन्याय के प्रति यह क्षमा उदात्त की ही स्वीकृति है। उनकी आत्मा इतनी विशाल है कि व्यक्ति की पीड़ा वहॉ विश्व की पीड़ा बनकर आती है। मानव मात्र के सुख–दुःख में उनका व्यक्तिगत सुख–दुःख लय हो जाता है। उनका 'स्व' 'पर' के लिए समर्पित हो जाता है। 'अहं' का 'पर' में विलय उनके हृदयों विशालता और महानता का ही परिचायक है। उनका काव्य एक ऐसा कोष है जहॉ मानव मात्र का प्रत्येक सुख दुःख में सहेज कर रखा गया है।

शैव दर्शन मे कविता का लक्ष्य 'चिदावर्ण अंग' माना गया है। अर्थात् काव्य आत्मा के ऊपर पड़े समस्त अवरणों को हटा देता है, आत्मा को ऊपर उठाता है और शुद्ध बुद्ध चैतन्य तत्व बना देता है। **कबीर** ने 'घूँघट के पट खोल री' कहकर इसी ओर प्रयास किया था। आलोच्य काव्य भी इसी ओर प्रयत्नशील है। आलोच्य कवियों का आत्म परिष्कार, आत्मोत्थान का यह प्रयास उनको औदात्य के बहुत निकट ले जाता है। यह आत्म परिष्कार मात्र व्यक्ति का नहीं मानव का भी हैं। उनका लक्ष्य व्यक्ति से होकर विश्व तक पहुँचना ही है।लोंजाइनस ने काव्य के इसी तत्व को अनन्त विस्तारण कहकर प्रकट किया था, जहॉ संसार की प्रत्येक वस्तु को हमारी कल्पना अपनी भावनाओं में समेट लेती है।

कवि और सहृदयता का सम्बन्ध :– डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार" "प्राचीन काल में काव्य के गुण–दोष विवेचक अनेक ग्रंथ लिखे गये पर यह सर्वत्र स्वीकार किया गया है कि सहृदय वह काव्य के उत्कर्ष–अपकर्ष का निर्णय कर सकता है। **अभिनव गुप्त** ने बताया है कि सहृदय वह व्यक्ति होता है, जिसके मन रूपी मुकुर में–मनोमुकुर जो काव्यानुशीलन से स्वच्छ हो गया होता है– वर्णनीय विषय के साथ तनमय हो जाने की योग्यता होती है ऐसे ही हृदय–संवाद के भाजन रसिक जन सा हृदय कहलाते हैं। पर हृदय संवाद का भाजन होना क्या मामूली तप का फल है? केवल शब्द और अर्थ की निरूक्ति जानने मात्र से यह दुर्लभ गुण नहीं प्राप्त हो जाता। कवि का अभिप्राय सब समय शब्दों द्वारा प्रकट ही नहीं जो जाता, कभी कभी वह एकदम शब्द गोचर होता ही नहीं। उसके शब्दों में जो आर्द्रता होती है, उसे सब नहीं समझ पाते। आज जो बात सबसे अधिक है उपेक्षित हुई है वह यह है कि काव्य में साधारण मनुष्य को संकीर्णता से ऊपर उठाने की शक्ति होनी चाहिए और दुर्जन को सुजन बनाने की शक्ति होनी चाहिए। काव्य केवल कौशल नहीं है, वह मनुष्य को पशु के सामान्य धरातल से ऊपर उठाकर मनुष्य के उच्चासन पर बिठाने का साधन भी है। X X Xजिस काव्य को सुनकर या पढ़कर मात्सर्याहत चेता व्यतक्ति रोमांच कंटकित न हो उठे, उसका सिर अपने आप न हिल उठे, उसके कपोल प्रदेश पर लालिमा न दौड़ लड़े, उसकी ऑखों में ऑसू न आ जायें और उसकी वाणी अध्यारोपित वस्तु के कीर्तन में तन्मय न हो उठे, तो वह काव्य भी भला कोई काव्य है?1"

डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी– साहित्य का मर्म, पृ0 25

काव्य सर्जक है, वह मनुष्य की दुनियॉ में नये भावों की सृष्टि करके विधाता के भाव जगत में वृद्धि कर करता आ रहा है। नाना भॉति के ऊपरी और परिवर्तन धर्मी कल्पनाओं को मनुष्य का मौलिक सत्य मान लेने से सभी सच्चे काव्य सभी सच्चे काव्य सहृदयों को प्रेरणा नहीं पाते। लोक में इन कल्पनाओं को 'संस्कार' कहा जाता है। मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ साधना साहित्य के रूप में प्रकट हई है।

उत्कृष्ट एवं स्थायी प्रभाव क्षमता :– उत्कृष्ट एवं स्थायी प्रभाव क्षमता भी **उदात्त काव्य** का प्रमाण हैं उदान्त का प्रभाव अतयन्त 'प्रबल और दुर्निवार' होता है। प्रभाव की इस दुर्निवार क्षमता का प्रमाण आलोच्य काव्य की अनेक रचनाएँ देती है। जो अत्यन्त लोकप्रिय हैं। उनकी बढ़ती हुई लोकप्रियता का कारण वह प्रभाव ही है जो कविता या गीत को एक बार सुनने या पढ़ने के बाद श्रोता या पाठक उसे भूल नहीं पाते–

'चन्दन है इस देश की माटी, तपो भूमि हर ग्राम है,'
'युग युग तक जग याद करे तुम ऐसे कर्म करो,'
'संग्राम जिन्दगी है लड़ना उसे पड़ेगा,' 'राही जाना मत पथ भूल,'
'कहाँ छुपा बैठा है अब तक वह सच्चा इंसान,'
'जिस दिन होगा मिलन विश्व में धर्म और विज्ञान का,'
'जिन्दगी भर निरन्तर दिये से जलें,' 'कर्मों के फल से न बचोगे,'
'इसीलिए तो पहन लिया है यह वासन्ती बाना,' 'माँ तेरे चरणों मे हम शीश झुकाते हैं।'
'नये देश को मैं नयी शक्ति दूँगा' 'देवियाँ देश की जाग जाएँ अगर,'
'आदमी आदमी को सुहाता नहीं,' 'संस्कृति रही कराह न मेरा रूप बिगाडो रे,'
'जाग रे कबीरा जाग,' 'आज दॉव पर लगा देश का स्वाभिमान सेनानी,'
'बिगुल बज गया महाक्रान्ति का,' 'अब फिर से सतयुग आयेगा,'
'औरों के हित जो जीता है औरों के हित जो मरता है,'
'युग की यही पुकार वसंती चोला रंग डालो,' 'सावधान हो जाओ नवयुग आता है,'
'बदलो अपनी चाल नया युग आने वाला है,'
'बदला जाये दृष्टिकोंण यदि, जीवन बड़ा महान भाइयो,' 'अब फिर से सतयुग आयेगा,'

'गिरजा गिरे न मिस्जिद टूटे वह मन्दिर निर्माण करें' आदि सैकड़ों रचनाएँ हिन्दी काव्य की अमूल्य निधि हैं। उनकी लोकप्रियता उनकी उदात्तता की ही परिचायक है।

आज की सामाजिक तथा अन्य समस्याएँ इतनी विकट और भीषण है कि वहॉ उल्लास को खोज पाना ही असम्भव है। आज के संघर्ष शील युग में उल्लास व हर्ष के गीत गाना युग की ओर से आखें मूँदकर एकान्त कीर्तन–भजन करने के समान हैं। इसीलिए आलोच्य कवियों के निकट मानवता और विश्ववन्धुत्व ही हृदय की विशालता और उदात्तता का लक्ष्य बन गये है।

आलोच्य काव्य में सर्वत्र मानव की ही प्रतिष्ठा है, जिस प्रकार '**नीरज**' की पंक्तियों में मानव प्रेम का स्वर सुना जा सकता है–

कोई नहीं पराया मेरा घर सारा संसार है,

मैं न बँधा हूँ देश काल की जंग लगी जंजीर में,

मैं न खड़ा हूँ जांति पांति की ऊँची-नीची भीड़ में,

मेरा धर्म न कुछ स्याही शब्दों का सिर्फ गुलाम है

मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट–घट में राम है,

मुझसे तुम न कहो, मन्दिर मस्जिद पर मैं सर टेक दूँ

मेरा तो आराध्य आदमी, देवालय रहर द्वार है।। **–नीरज**

सभी धर्मों– सभी कर्मकाण्डों से मानव ऊपर है। आलोच्य कवियों की मानव के प्रति यह श्रद्धा ही वह विश्वास है जो उनसे '**जगत सत्यं ब्रहम मिथ्या**' की घोषणा तक करवा लेता है। वस्तुतः यह काव्य मानव मे उनके अदम्य विश्वास, अपार प्रीति का द्योतक है। मानव का सुखदुख, आशा निराशा कवियों के इतने निकट है कि जगत को वह मिथ्या नही पाते। धर्म के अध्यात्मिक अर्थात दाशर्निक रूप के कवि समर्थक हैं पर उसके वाहयाडम्बर और मिथ्याचार को कवि सहन नहीं करते। वे विश्व मानवता के समर्थक है। धर्माडम्बर से वे घृणा करते है। क्योंकि व्यक्ति–व्यक्ति के बीच उसने ही सबसे बड़ी, सबसे मजबूत दीवार खड़ी की है। भक्ति और दर्शन परक गीतों में कवियों का मानवतावादी स्वर अधिक मुखरित हुआ है। उनके काव्य का ध्येय ही मानव की मानव से मैत्री कराना, कुटियों को महल से, खंडहरों को अट्टालिकाओं से परिचित कराना तथा हर पर्दे में कैद प्रेम को जीवन के बीच ने आना है। समष्टि में औदात्य के सभी अंगों का समुचित प्रयोग हमें आलोच्य काव्य में मिल जाता है। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि आलोच्य काव्य में उदात्त मानव दृष्टि एवं उसकी प्रतिष्ठा की गयी हैं ।

आलोच्य काव्यों में उदात्त मानव दृष्टि की अभिव्यक्ति

1 **श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय'** की कविता '**अध्यात्मिक दिग्विजय करना पड़ेगा**' की पंक्तियॉ उदात्त मानव दृष्टि के सन्दर्भ में देखिए–

। **"भारतीय अध्यात्म का संदेश लेकर, शील संयम त्याग का परिवेश लेकर,**

विश्व को अध्यात्मवादी ही बनाने देव संस्कृति दिग्विजय करना पड़ेगा।।

दीजिए! दीजिए! देव बनने दीजिए,

प्यार के बिन तरसते हजारों अभी, मिल न पाईं कि संवेदनाएँ कभी।

जो घिरे है निराशा से हर ओर से, प्यार के बोल उनको अरे दीजिए।।"

।। **घर–परिवार, राष्ट्र की दुर्गति तुम्हें पुकार रही है,**

युग–युग से पीड़ित मानवता तुम्हें पुकार रही है।।

किन्तु उपेक्षा–उदासीनता देख तुम्हारी नारी,

मानवता छटपटा उठी है, मन में पीड़ा भारी।। **(नारी तुम हो शक्ति राष्ट्र की 'कविता से)**

2 **श्री बलराम सिंह परिहार** की कविता '**गिरजा गिरे न मस्जिद टूटे**' की पंक्तियॉ देखिए–

(i) **"बहुत सताई गई मनुजता, उसने बहुत चोट खाई।**

अब तो उसे पुनर्जागृत, करने की पुण्य घड़ी आई।।

"युग निर्माण योजना" वह संदेश मनोरम है लाई।

मंदिर है तैयार प्रतिष्ठा, की वेला भी बन आयी।।

हो मंगल अभिषेक प्रेम का, दूर सभी विषवाण करें।

यह प्रभु करूणा का सागर है, उसे नहीं पाषाण करें।।

गिरजा गिरे न मस्जिद टूटे, वह मन्दिर निर्माण करें।

प्रतिमा करें प्रतिष्ठित जिसमें, मानवता के प्राण भरें।।

(ii) **भक्ति हमारी दृढ़ हो प्रभु को क्षण भर कभी न भूलें,**

इतना ऊँचे उठें उनके ज्योति कलश को छूलें।

लेकिन मानव की पीड़ा से टूटे कभी न नाता,

यह केसरिया केतु हमें है बार–बार सिखलाता।।

3 **श्री महात्मा आनन्द सागर** की कविता '**सच्ची भक्ति**' की पंक्तियॉ देखिए–

इबादत है किसी नाशाद को फिर शाद कर देना,

इबादत है किसी बरबाद को आबाद कर देना।।

जिन्हें दुनियॉ ने ठुकराया उन्हें भी प्यार से मिलना,

किसी बेकस•मुसीबत में फॅसे का दुख मिटा देना।।

तुझे बदनाम जो करते हों, न उनसे गिला करना,

बुरा भी चाहते हों गर तो न उनका बुरा करना।।

मुझे बरबाद करने वाले दुनियॉ में सदा जिऐं,

रहें लाखों बरस आबाद यह उनको दुआ देना।।

4 **श्री शचीन्द्र भटनागर** की पंक्तियों में मानवता की प्रतिष्ठा देखें–

I **"अब आया है समय मनुजता की मधुरिम मुस्कान का,**

सज्जनता के लिए स्वयं पर, गौरव का, अभिमान का,

दिव्य शक्तियों का सुसंगठन अब कुछ कर दिखलाएगा,

दुर्गा–शक्ति जगेगी, उसको रोक न कोई पाएगा।।"

II **यदि लक्ष्य जिन्दगी का निज सुख रहा न होता,**

तो भ्रान्तियॉ न होती, अपयश रहा न होता।।

अपने लिए सदा हम, चिंतित यहॉ न होते, केवल न हम सुखों को, अपने लिए सॅजोते,

इस विश्व वाटिका का, हर फूल हम खिलाते, हम जोड़ते सबों को, बिछुड़े हृदय मिलाते,

सबके लिए लगाके, श्रम और साधनों को, यह मन अगर हमारा, परवश रहा न होता।।

5 **डा0 हर गोविन्द सिंह** की कविता '**घर–घर अलख जगायेंगे**' की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

| **मानव मात्र समान यहॉ पर, एक समान यहॉ नारी नर।**

जाति वंश का भेद न तिलभर, गूँज रहा जय घोष निरन्तर।।

व्यक्ति और परिवार सजाकर सारा विश्व जगायेंगे।

धरती में देवत्व जगाने घर–घर अलख जायेंगे।।

|| **फूलों की शय्या को तज कर, जो कॉटों का पथ अपनाता।**

वह मानव ही इस बसुधा पर, नर से नारायण बन जाता।।

तप त्याग भरा जिसका जीवन परहित में अर्पित तन–मन–धन।

जिसके मुख से पुलकित जन–जन, जो है शोषित का संजीवन।।

जो दीपक–सा तिलतिल जलकर, पथ आदर्शों का दिखलाता। वह मानव ही.....

मिल जाते जो भी दीन कहीं, बन जाता उनका बन्धु वहीं

निज वैभव में आसाक्ति नहीं खोजें अपनी ही मुक्ति नहीं।।

जग का सन्ताप मिटाने को, जो सुख समाधि को ठुकरात। वह मानव ही .....

6 **श्री चन्द्र प्रकाश 'अज्ञेय'** की कविता **'नया संसार बनायेंगे'** में सम्पूर्ण मानवता की एकता का सन्देश देखिए–

"विश्व हमारा घरती अपनी विश्व पिता के लाल,

नया संसार बसायेंगे। नया इंसान बनायेंगे.....

एक करेंगे मानवता को , सीचेंगे ममता समता को,

'श्रेय साधना' की असि लेकर, नैतिकता की ढाल, भूमि का भार मिटायेंगे।।"

'नया इंसान बनायेंगे, **प्रज्ञागीत** पृ0 51

7 **कीर्तिशेष श्री बाबूलाल जैन 'जलज'** जी की पंक्तियों में उदात्त मानव दृष्टि देखिए–

वाणी में भगवती विराजे

मानवता का मान बढाने, हो जाता बलिदान है।

जन सेवा ही व्रत है जिसका, सारी वसुधा धाम हैं

उसकी ही वाणी सस्वती, अन्तर में श्री राम है।।

नहीं रूढ़ियों को पोषक जो, शोषक हीं गरीब का।

अपना दर्द समझता है जो, दुनियॉ के हर जीव का,

मंजिल में चलते जाना ही, जिसका लक्ष्य महान है।।

उसका ही जीवन इस जग में, धन्य–धन्य अभिराम है।।

जीवन तप संचित थाती से, जो देता अनुदान है।

कॉंटे और फूल दोनों ही, जिसको एक समान है।

धर्म कर्म का मर्म का समझता, करता जन कल्याण है,

खोल–खोल कर गॉंठें मन की, जो हरता अज्ञान हो उसका ही जीवन इस जग में ...

प्रज्ञागीत पृ0 52

।। **हो गया आकर खड़ा मैं, द्वार पर भगवान तेरे।।**

कामना मेरी यही है, दूसरों के काम आऊँ,

चिर अमा की रात में भी, ज्योति जीवन की जलाऊँ।।

मानवी कत्तर्व्य पथ में, हों चरण गतिमान मेरे, दिव्य अभिनव ज्योति पाकर आज पुलकित प्राण मेरे।।

दानवी दुर्भावना से, अन्त तक लड़ता रहूँ में मानवी सद्भावना की, मूर्ति तब गढ़ता रहूँ मैं।

त्याग, तप निष्ठा, सृजन के, गीत नित गाता रहूँ मै। मृत्यु का पाकर निमंत्रण, शान से हॅसता रहूँ मै।।

ज्ञान गंगा में नहाकर, जी उठें नव गान मेरे। हो गया आकर खड़ा मैं, द्वार पर भगवान तेरे।।

8 **श्री आरसी प्रसाद सिंह** की कविता **'हम मानव की जय गाते हैं'** की पंक्तियाँ देखिए–

हम मानव की जय गाते है!

हम सैनिक है सत्य मार्ग के, हम न किसी से भय खाते हैं।।

कोई दुश्मन नहीं हमारा, प्रेम निकेतन भूतल सारा।

सब के प्रति समभाव दिखाते, सब जन को हम हैं अपनाते।

समता, मैत्री, मुदित, मधुकरण, जन–जन में हम करते वितरण

अरूणोदय के किरण दूत बन, हम निशान्त में मुस्काते है।। हम मानव की जय गाते हैं

9 **श्री सत्यपाल 'पथिक'** की कविता **'उसे इन्सान** कहते हैं' की पंक्तियों में उदात्त भाव दृष्टव्य हैं–

किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते है।

पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते हैं।

यों भरने को तो दुनियॉ में पशु भी पेट भरते हैं, लिए इन्सान का दिल जो वे नर परमार्थ करते हैं।

'पथिक' जो बॉटकर खाये इसे इन्सान कहते हैं। किसी के काम आये .....

10 **श्री मती माया वर्मा** की एक रचना के अंश में मानवीय गरिमा का बोध देखिए–

। **जब भी धर्मनष्ट होता और बढ़ता है अज्ञान।**

स्वार्थ निरत हो, तुच्छ कर्म करते हैं सब इन्सान।।

लक्ष्य बिन्दु के चरण भटकते होते आकुल प्राण।

तब तब में करता रहता हूँ सतत गरल का पान।

मैं मानव हूँ दिव्य तेज का स्रोत शक्ति आगार, मेरे इंगित पर चलती, जग–नौका की पतवार।।

।। एक अन्य कविता में उदात्त तत्व को कवयित्री नवयुग की आवश्यकता बताती है–

युग माँग रहा चेतना नयी–विश्वास नया, युग माँग रहा भावना नयी–उल्लास नया।

तुम करो संगठित शक्ति आज बिखरी बिखरी।।"

(iii) 'उनके लिए जिऐं हम' शीर्षक से कवयित्री की एक रचना देखिए–

" जिनका कोई नहीं जगत में, उनका हम ही बनें सहारा ।

अपने रहते कोई न कहने पाये, मैं किस्मत का मारा ।।

ऐसे सकारी हृदयों को बाँटें अमृतमय अपनापन । उनके लिए जिऐं हम जो –

मर-मर कर जीते हैं जीवन । 'जीवन सुरभि' पृ० 74

।।। एक अन्य कविता में कवयित्री सिसकती मानवता का साथ देने का आह्वान करती है–

देख मानवता सिसकती, आँख अपनी भर गई थी,

मनुज की चीत्कार उर में, घाव गहरा कर गई थी।।

चीख सुन जाओ जरा, आवाज तुमको दे रहा हूँ।। साथ दे जाओ जरा .....

मैं तभी से एक क्षण भी, चैन से कब बैठ पाया। भेटने यह ताप खुद को, सूर्य के व्रत–सा तपाया

ज्योति फैलाओ जरा, आवाज तुमको दे रहा हूँ। साथ दे जाओ जरा .....

11 **श्री मती विद्यावती मिश्र** ने मानववाद अर्थात विश्व प्रेम विषय पर **'मनुज–मनुज में भेद'** नामक गीत से इसी भाव को व्यक्त किया है–

। **मनुज मनुज में भेद करोगे तुम जब तक स्वीकार!**

तब तक नहीं मुक्ति मन्दिर का खुल पाएगा द्वार।।

सेनानी बढ़ता है बाधाओं को ठोकर मार, युग निर्माता मोड़ा करता है चिन्तन की धार,

नया मनुज नूतन समाज है देखो रहा पुकार, देता है संघर्ष चुनौती करो उसे स्वीकार।।

।। एक अन्य गीत में कवयित्री मनुज को ही श्रेष्ठ बताती हुई कहती है–

सबसे अधिक महान, मनुज ही सबसे अधिक महान।

कला और संस्कृति की निधि है, धर्म कर्म की यह ही विधि है,

इस पर ही आश्रित जगती है, जगती का कल्याण! मनुज ही सबसे अधिक महान। X X X

इसको ही पूजो आराधो, छोड़ो सभी इसी को साधो।

युग–युग से सिखलाते यह ही गीता, वेद पुराण। मनुज ही सबसे अधिक महान।।

12 **श्री शिवशंकर मिश्र** की कविता **'मनुज की गरिमा'** की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

श्रम के स्वर में आज मनु की गरिमा बोल रही है।

सपनों का उल्लास कर्म के चरणों की रेखा है, साधक वही कि जिसने तप का विजय–वरण देखा है,

राजमार्ग के शूल–फूल का स्वामी बना बटोही, जीवन मन के संकल्पों का श्वॉसों से लेखा है,

मलयज नहीं समीर प्राण की घर–घर डोल रही है। श्रम के स्वर में आज मनुज की .....

'श्रम के स्वर' (कविता संग्रह) पृ0 80

13 **श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'** की पंक्तियॉ **"अच्छा है पथ में मुस्काना"** शीर्षक से देखें–

अपनी जलन न देकर जग को, अच्छा रंच प्यार दे जाना।

अपने घाव छिपा, औरों का, अच्छा है दुख–दर्द बंटाना।।

सुख में साझीदान बनाकर, दुखी पड़ौसी को अपनाना।

दुख के एकाकी जीवन से, अच्छा है मिलकर मुसकाना।।

14 **डा0 सरोज बाला चौधरी** की कविता **' युग पुरूष की कामना'** की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं–

नये युग के बीज बोयें आज अभी इस वर्ष के,

लाभ के कल्याण, के सद्ज्ञान के उत्कर्ष के।

गुरूदेव ने पहले विचारों की चलाई आँधियॉ,
लोभ, शोषण, द्वेष की फिर जलाई डालियॉ।
दुष्टता और भ्रष्टता तो आज पीसी जायेगी,
त्याग का–बलिदान का ही गीत प्रज्ञा गायेगी।
घोषणा कर दी मनुजता का चमन लहरयेगा,
विश्व मानव ब्रह्म कमल का फूल ही बन जायेगा।।

'युग निर्माण योजना' जनवरी 1998 में प्रकाशित

15 **डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल** की आस्था है कि अथक परिश्रम और प्रतिदान की भावना रहित दान ही जीवन को ज्योतिर्मय करते है। वह लिखते हैं–

दीप सदा जलकर हँसता है, बीज सदा गलकर खिलता है,
सुन्दर प्रतिमा तब बनती है, जब पत्थर चोटें सहता है।
जीवन तपकर ही बनता है।

कवि का दृष्टिकोंण विस्तृत है, वह नव निर्माण द्वारा देश की प्रगति के साथ–साथ विश्व–कल्याण की बात कहना भी नहीं भूला है–

यही है जीवन का जग–सार, करें हम सुख का बहु विस्तार।
धन्य हो जिससे यह निज देह, अन्यथा व्यर्थ बनेगी क्षार।

'अनुताप' (खण्ड काव्य) से

16 'नारी युग' शीर्षक से **श्री मंगल विजय** की एक रचना नारी के प्रति उदात्त भाव रखने की प्रेरणा देती है– **पुरूष के आतंक का अब अन्त होना चाहिए।**
विश्व में अविलम्ब 'नारी तंत्र' होना चाहिए।।
पुरूष के ही अहं में , जीवित जलाया विश्व को।
पुरूष की उद्दण्डता ने, विष पिलाया विश्व को।
विश्व वैश्यालय बनाती, पुरूष की कामेषणा,
खत्म अब लोकेषणा षड्यंत्र होना चाहिए। विश्व में अविलम्ब ..... X X X
विश्व को अब चाहिए, नारी सुलभ–संवेदना,
स्नेह समता और ममता मय हृदय की भावना।
शील, संयम, त्याग, सेवा, श्रम, समर्पण चाहिए।
आस्था, विश्वास, श्रद्धा, भक्ति का धन चाहिए।
क्षुब्ध –मानव मुग्ध हो, वह तंत्र होना चाहिए। विश्व में अविलम्ब .....X X X
प्रायश्चित करले मनुज यदि आज अपने आप ही,
वह करे क्षति पूर्ति अब तक जो किया उस पाप की।
तो धरा हो स्वर्ग–सी नारी–पुरूष सहयोग से।
विश्व का कल्याण हो, शिव–शक्ति के संयोग से
पुरूष सहयोगी, नहीं सामन्त होना चाहिए। विश्व में अविलम्ब .....

5. (ख) नर–नारी सम्बन्ध

सारे भारत में ही नही, पूरे विश्व में कन्या पूजन का महत्व है । एक बार नहीं; बल्कि प्रतिवर्ष दो बार देश के करोड़ो लोग नवरात्रि के अवसर पर कन्या पूजन करते हैं। बंगाल का दुर्गा पूजा पर्व उतना ही महत्वूपर्ण है, जितना महाराष्ट्र का गणेश–उत्सव, केरल का ओणम या पंजाब की बैसाखी। मनु महाराज ने तो यह घोषणा ही कर दी थी कि जहां नारी का सम्मान होता है, वहीं देवता निवास करते हैं – **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'।** भारतीय मान्यताओं में नारी दुर्गा है, शक्ति है, लक्ष्मी और सरस्वती है । पर खेद है कि केवल शब्दों का ही उच्चारण होता है, इनसे भावनाए नहीं जुड़ी । इसलिए उनका हृदय से कोई सम्बन्ध नहीं रहा । वे केवल कैसैट के मशीनी गान है; गायक की भावनाओं का उसमें कोई अंश नहीं ।

नर का नारी के प्रति तथा नारी का नर के प्रति पवित्र दृष्टिकोंण होना आत्मोन्नति, समाजिक प्रगति एवं सुख–शान्ति के लिए आवश्यक है । ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने वाले, अविवाहित नर नारियों के लिए व्यवहार एवं चिंतन में एक–दूसरे के प्रति पवित्रता का समावेश अनिवार्य है ही, किन्तु अन्यों को भी उसकी उपेछा नहीं करनी चाहिए । अपवित्र पार्शविक दृष्टि रखकर कोई भी वर्ग, दूसरे वर्ग की श्रेष्ठता का न तो मूल्याँकन कर सकता है और न उसका लाभ उठा सकता है । इस हानि से बचने की प्रेरणा अधोलिखित वाक्यों में दी गई है ।

आचार्य शर्मा के मतानुसार "नारी संसार की सर्वोत्कृष्ट पवित्रता है । जननी के रूप में वह अगाध वात्सल्य लेकर इस धरती पर अवतीर्ण होती है । पत्नी के रूप में त्याग और बलिदान की, प्रेम और आत्मदान की सजीव प्रतिमा के रूप में प्रतिष्ति होती है। बहन के रूप में स्नेह, उदारता और ममता की देवी जैसी परिलक्षित होती है। पुत्री के रूप में इस नीरस संसार को सरस बनाती रहती है। परमात्मा ने नारी में सत्य, शिव और सुन्दर का अन्नत भंडार भरा है। उसके नेत्रों में एक अलौकिक ज्योति रहती है, जिसकी कुछ किरणें पड़ने मात्र से निष्ठुर हृदयों की मुरझाई हुई कली खिल सकती है।" **1.**

नारी की महत्ता अग्नि के समान है। अग्नि हमारे जीवन का स्रोत है। उसके अभाव में हम निर्जीव और निष्प्राण बनकर ही रह सकते हैं। उसकी उपयोगिता की जितनी महिमा गाई जाए, उतनी ही कम है, पर इस अग्नि का दूसरा पहलू भी है, वह स्पर्श करते ही काली नागिन की तरह लपलपाती हुई उठती है और छूते ही छटपटा देने वाली, भारी पीड़ा देने वाली परिस्थिति उत्पन्न कर देती है। नारी में जहाँ अनन्त गुण है, वहाँ एक दोष ऐसा भी है जिसके स्पर्श करते ही असीम वेदना से छटपटाना पड़ता है। वह रूप है–नारी का रमणी रूप। रमण की आकांक्षा से जब भी उसे देखा, सोचा और छुआ जाएगा तभी वह काली नागिन की तरह अपने विष भरे दंत चुभो देगी। बिच्छु की बनावट कैसी अच्छी होती है, सुनहरे रंग का यह सुन्दर जीव कितना मनोहर लगता है, पर उसके डंक को छूते ही विपत्ति खड़ी हो जाती है। नारी के कामिनी और रमणी के रूप में जो एक विष की छोटी–सी पोटली छिपी हुई है, उस सुनहरी कटार से हमें बचना ही चाहिए। 'नारी के प्रति भोग्याभाव, यह है पशुओं का वर्ताव।'

---

1. आचार्य श्री राम शर्मा– इक्कीसवीं सदी का संविधान पृष्ठ 67

डा0 सिंह अपने से बड़ी आयु की नारी को माता के रूप में, समान आयु वाली को बहन के रूप में, छोटी को पुत्री के रूप में देखकर, उन्हीं भावनाओं का अधिकाधिक अभिवर्द्धन करके हम उतने ही अह्लादित और प्रमुदित हो सकते है, जैसे माता गायत्री, मां सरस्वती, माता लक्ष्मी, माता दुर्गा के चरणों में बैठकर उनके अनन्त वात्सल्य का अनुभव करते हैं।

दाम्पत्य जीवन में संतानोत्पादन का विशेष प्रयोजन या अवसर आवश्यक हो तो पति–पत्नि कुछ समय के लिए वासना की एक हल्की सी धूप–छाँह का अनुभव कर सकते है। शास्त्रों में तो इतनी भी छूट नहीं है, उन्होनें तो गर्भाधान संस्कार को भी एक पवित्र धर्मकृत्य माना है और इसी दृष्टि से उस क्रिया को सम्पन्न करने की आज्ञा दी है, पर मानवीय दुर्बलता को देखते हुए दाम्पत्य जीवन में एक सीमित मार्यादा के अन्तर्गत वासना को छूट मिल सकती है । इसके अतिरिक्त दाम्पत्य जीवनी भी ऐसा ही पवित्र होना चाहिए जैसा कि दो सहोदर भाइयों का या दो सगी बहनों का होता है। विवाह का उद्देश्य दो शरीरों को एक आत्मा बनाकर जीवन की गाड़ी का भार दो कन्धों पर ढोते चलना है, दृष्प्रवतित्यों को प्रोत्साहित करना नहीं । यह तो आजकल के सिनेमा का, गंदे चित्रों का, अश्लील साहित्य का और दुर्बुद्धि का प्रसाद है, जो हमने नारी की परम पुनीत प्रतिमा को ऐसे अश्लील, गन्दे और गर्हित रूप में गिरा रखा है। नारी को वासना के उद्देश्य से सोचना या देखना, उसकी महानता का वैसा ही तिरस्कार करना है, जैसे किसी देव मन्दिर की प्रतिमां को चुराकर, केवल पत्थर को अपनी किसी आवश्कता को पूर्ण करने के उद्देश्य से देखना । यह दृष्टि जितनी निंदनीय और घृणित है, उतनी ही हानिकर और विग्रह उत्पन्न करने वाली भी है। **आचार्य शर्मा जी** के मतानुसार–हमें उस स्थिति को अपने भीतर से और सारे समाज से हटाना होगा और नारी को उस स्परूप में पुन : प्रतिष्ठित करना होगा, जिसकी एक दृष्टि मात्र से मानव प्राणी धन्य हो जाता है।

उपरोक्त पंक्तियों में नारी का जैसा चित्रण नर की दृष्टि से किया गया है, ठीक वैसा ही चित्रण कुछ शब्दों के हेर–फेर के साथ नारी की दृष्टि से नर के सम्बन्ध में किया जा सकता है। जननेन्द्रिय की बनावट में राई–रत्ती अन्तर होते हुए भी मनुष्य की दृष्टि से दोनों ही लगभग समान–क्षमता, बुद्धि, भावना एवं स्थिति के बने हुए हैं। यह ठीक है कि दोनों अपनी –अपनी विशेषताएँ और अपनी–अपनी न्यूनताएँ है, उनकी पूर्ति के लिए दोनों एक दूसरे का आश्रय लेते हैं यह आश्रय पति–पत्नी के रूप में केवल काम–प्रयोजन के रूप में हो, ऐसा किसी भी प्रकार आवश्यक नहीं ।

आचार्य श्री राम शर्मा लिखते हैं **"नारी के प्रति नर और नर के प्रति नारी पवित्र,** पुनीत, कर्तव्य और स्नेह का सात्विक एवं स्वर्गीय सम्बन्ध रखते हुए भी माता, पुत्री या बहन के रूप में सखा, सहोदर, स्वजन और आत्मीय के रूप में श्रेष्ठ सम्बन्ध रख सकते है, वैसा ही रखना भी चाहिए । पवित्रता में जो अजस्रबल है वह वासना के नारकीय कीचड़ में कभी भी दृष्टि गोचर नहीं हो सकता । वासना और प्रेम दोनो दृष्टिकोण एक–दूसरे से उतने ही भिन्न है, जितनी स्वर्ग से नरक में भिन्नता है। व्यभिचार में द्वेष, ईर्ष्या, अधिपत्य, संकीर्णता, कामुकता, रूप–सौन्दर्य, श्रंगार, कलह, निराशा, कुंढ़न, पतन, ह्रास, निंदा आदि अगणित यंत्रणाएँ भरी पड़ी है, पर प्रेम इन सबसे सर्वथा मुक्त है । पवित्रता में त्याग, उदारता, शुभ कामना, सहृदयता और

शान्ति के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता ।"1. आचार्य शर्मा एक अन्य स्थान पर लिखते हैं– "नारियों के प्रति कोई अशिष्ट आचरण करना ही नहीं उनके प्रति भाव भी पवित्र रखना आवश्यक है। वयस्क नारियों की ओर ओछे मनुष्यों की तरह घूर–घूर कर देखना, उसके साथ ठहाके मारकर हँसना या उद्धतता पूर्ण ढंग से बात चीत करना भारतीय समाज के सर्वथा प्रतिकूल है। आचार्य शर्मा के निर्देशानुसार जवान स्त्री पुरूष एक–दूसरे की ओर आँख नीची करके देखें, पलक नीचे रखकर बात चीत करें, अपनी सगी बहिन, बेटी या माता के साथ जिस ढंग से बातचीत या व्यवहार करना उचित है उससे जरा भी कमी अन्य नारियों के साथ न होनी चाहिए । वयस्क नारियों के लिए भारतीय सभ्यता का एक प्रमुख सन्देश यह है कि वे अपने केश विन्यास, श्रृंगार एवं वेश–भूषा का ऐसा उत्तेजक प्रदर्शन न करें जिससे पुरुष वर्ग को उसकी ओर कुदृष्टि से देखने का प्रोत्साहन मिले ।" 2.

यह बातें चाहे उनकी दृष्टि से 'कला' या शोभा ही क्यों न हों, पर उसमें अश्लील प्रवृत्तियों को भड़काने का भारी खतरा मौजूद है। यदि खतरे की ओर से सावधानी न बरती गई; लड़कियां पेरिस तथा अमेरिका की नकल कर उत्तेजक वेश–विन्यास की ओर बढ़ती गईं तो परिणाम भी उन्हीं देशों जैसा होगा । यहाँ की परमागत शालीनता और शील–भावना को भारी आघात लगेगा । हर सभ्यताभिमानी के लिए शिष्टाचार की दृष्टि से इस खतरे से अपने घरों की लड़कियों को पूरी तरह सजग कर देना चाहिए ।

इस पृथ्वी पर दैवी तत्व का एक मात्र प्रतीक मातृत्व है। उसके प्रति उच्च–कोटि की श्रद्धा रखे देवत्व की पूजा एवं साधना नहीं हो सकती और इसके अभाव में पुरुष को दवत्व से वंचित रहना पड़ेगा । नारी कामधेनु है, पर जब उसे वासना, सम्पत्ति, दासी की दृष्टि से देखा जाता है, तो वह हमारे लिए अभिशाप बन जाती है। हमे नारी की दिव्य–शक्ति को पहचानकर उसके चरणों में श्रद्धा के आँसू चढ़ाता सीखना चाहिए । अन्यथा इस अभाव के कारण हमें देवत्व से वंचित रहना पड़ेगा ।

आलोच्य काव्य में नर–नारी सम्बन्ध :

आचार्य शर्मा जी के मतानुसार इक्कसवीं सदी में पूर्ण होने वाले नर–नारी के पवित्र सम्बन्ध के निर्धारण में आध्यात्मिक समाज की व्यवस्था का भव्य रूप उभरेगा, इसे दृष्टिगत रखते हुए उनके जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों ने काव्य रचना की जिनके उदाहरण अवलोकनीय हैं–

1. **श्री मंगल विजय 'विजयवर्गीय'** नर–नारी सम्बन्ध को इन पंक्तियों के माध्यम से प्रकट करते हैं–

(i) प्रभु ने नहीं अकेला भेजा, प्रकृति सहचरी साथ लगाई।
एक दूसरे के पूरक बन, नर–नारी की देह बनाई।
तालमेल बिठला आपस में, ऋषि जीवन शैली अपनाएँ।
सादा जीवन–उच्च विचारों से धरती को स्वर्ग बनाएँ।

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– इक्कीसवीं सदी का संविधान, पृष्ठ 70
2. बृहमवर्चस– जीवन पथ, पृष्ठ 51

(ii) **बिलख उठे है पुत्र, मातृ शक्ति ! अब दुलार दो,**
तुम ममत्व–मूर्ति देवि ! मानवों को प्यार दो।।

तुम्हें बिसार मानवी ! बहुत भटक लिया मनुज, उसे न मिल सका कहीं दुलार, प्यार मानवी–
बिलख रहे मनुष्य माँ उन्हें स्नेह–धार दो।। तुम मर्मत्व–मूर्ति देवि !.....
हर जगह छला गया, मनुज जहाँ जहाँ, धर्मशार, अर्थनीति, राजनीति के यहाँ ।
मिल सका कहीं न समाधान शांति का उसे, शांतिमूर्ति ! तुम उसे सुशान्ति का श्रृंगार दो।।तुम ममत्व...

2. **श्रीमती माया वर्मा** के नर नारी सम्बन्ध पर भाव अत्यन्त भावपूर्ण हैं–

(i) **बहुत ऋण नारियों का है, कहो कितना चुकाया पाए ।**
लिया ही है पुरुष ! तुमने, न कुछ प्रतिदान दे पाए।
न केवल रोटि माँ देकर, उऋण हो पाओगे पुरुषो !
न समता हो सकेगी त्याग की, चाहे तपो वर्षो।।
हृदय की सीप के मोती लिए हैं, भावना वाले,
चुभाए किन्तु तुमने व्यंग्य–वाणों के सदा भाले।
समर्पित कर दिया उसने, समर्पित तुम न हो पाए। बहुत ऋण नारियों का है .....

(ii) **आज अंतर नारियों का छटपटाना चाहता है,**
छटपटाकर दासता से मुक्ति पाना चाहता है।
जन्म से लेकर मरण तक पुरुष इन पर आश्रित है।
माँ बिहन पत्नी व पुत्री की गहन ममता अमित है।
किन्तु फिर भी नारियों की क्या दशा है–सोचकर यह,
हूक उठती है कलेजे में, तड़ित की भाँति रह–रह ।
दर्द भीतर का पिघलकर आज आना चाहता है,
है समय अब भी, सम्हल जाओ, अन्य की राह छोड़ो।
त्यागकर 'स्वामित्व' अपना स्नेह–समता–सूत्र जोड़ो।।
अन्यथा मन नारियों का, कुछ सिखाना चाहता है।
छटपटा कर दासता मुक्ति पाना चाहता है।

(iii) **एक अन्य कविता की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–**
पुरुषों ! नारी को ऊपर उठ जाने दो, अपनी सोयी क्षमताएं विकसाने दो।
इनकी भी अलग विचारमयी है सत्ता, उनकी भी है कुछ अपनी अलग महत्ता!
अवसर दोगे तब ये आगे आएँगी, फिर देखो क्या–क्या करके दिखलाऐंगी;
इनके मरु में भी सावन सरसाने दो । पुरुषो ! नारी को उठ जाने दो ।।

(iv) **पुरुषो ! नारी की ममता की नापो तो गहराई।**
अपना हृदय गलाकर भी, उसने रसधार बहाई।।
जिसे कर दिया 'अपना' उसको फिर आजन्म निभाया।
न्यौछावर कर दिया सभी कुछ, कुछ भी नहीं बचाया।।
तन की क्या बात ? समर्पित की मन की इच्छाएँ।

आत्मा तक कह उठी कि अगले जन्म तुम्हें फिर पाएँ।।

3. **श्री वीरेश्वर उपाध्याय** की कविता–'नारी को विश्वमंच पर आना है' की पक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

"राम बिना, सीता लव–कुश को, संस्कार दे सकती है।
कुन्ती बिना पाण्डु के भी, निज पुत्रों को गढ़ सकती है।।
शकुन्तला अपने बल बूते, भरत ढाल दिखलाती है।
मदालसा चारों पुत्रों को, जीवन मुक्त बनाती है।
मातृशक्ति के बिना सृजन का, दिखता नहीं ठिकाना है।
नारी को फिर विश्वमंच परा करतब नये दिखाया है।।"

4. **डा0 हरगोविन्द सिंह** की कविता, **'शक्ति स्वरूपा कन्याओं से' की पंक्तियाँ** देखिए–

(i) **जो करती निर्माण मनुज का, अपन रक्त माँस के द्वारा,**
मिट्टी को फौलाद बनाती, जिसके आँचल की रसधारा।
पराधीन कैसे वह देवी ? जिसके आश्रित है जग–जीवन,
जिसके इंगित पर हो सकता क्षण भर में ही युग–परिवर्तन–
उसके लिए अशक्य बताया, केवल अपना भार उठाना।
जो दहेज माँगे, उसके घर बहिनो नहीं भूलकर जाना।।
आजीवन क्वाँरी रहकर भी, तुम निज कर्त्तव्य निभाना ।

(ii) **लेकर तुमसे बन जाते हैं– सभी देवता देने वाले,**
पाकर कृपा–कटाक्ष तुम्हारा बनते योगिराज मतवाले।
भूले कितनी बार तुम्हें हम, पर तुम हमको नहीं भुलाती।।

(iii) **"चाहती है चिन्मयी माँ वक्ष का पीयूष देकर,**
पुष्ट कर दे लाड़ [illegible] को, प्राण में देवत्व भरकर,
किन्तु आकर्षक खिलौने [illegible]ोड़ना शिशु को न भाता,
बस इसी से जुड़ न पा[illegible] शक्ति से अक्षुण्ण–नाता।।"

5. **श्री शचीन्द्र भटनागर** अपनी कविता 'बहन को विवश भाई की सलाह' शीर्षक से सर्वाधिक महत्व परिवार की कन्याओं को शिक्षित संस्कारवान एवं आत्मनिर्भर बनाने को दे रहा है ताकि विवाह होने पर वह सम्मान का जीवन जीने योग्य बने और यदि अविवाहित रहें तब भी उन्हें पराश्रित एवं पराधीन न रहना पड़े–

अपने पैरों पर खड़ी होना री बहिना मेरी,
पर दहेज के लोभी से व्याह मत रचना री बहना
ब्याह मत रचना, चाहे क्वारी रह जाना।
बेटे से ज्यादा अपना पैसा हो प्यारा जिसको, दो दिन का सुख–साधन ही हो यहाँ सहारा जिसको,
मन में उस घर को कोई स्वान मत सजाता री बहना। स्पप्न मत सजाना, चाहे क्वाँरी रह जाना।।

× × × ×

रात दिन भिखारी–से वे माँगते रहेगें हरदम, मर्यादा की हर सीमा लाँघने रहेगें हरदम,
ऐसे घर में जीवन को नर्क मत बनाना री बहिना। नर्क मत बनाना, चाहे क्वाँरी रह जाना ।

("क्रान्ति के स्वर" पृष्ठ 20–21)

6. **श्रीमती विद्यावती मिश्र** की कविता **'देव तुम मै हूँ पुजारिन !'** की पंक्तियाँ मे कवयित्री ने नारी को त्याग, बलिदान, साधना, भक्ति भावना की साकार मूर्ति मानते हुए नर नारी सम्बन्ध को इस प्रकार प्रकट किया है–

"प्रिय तुम्हारे द्वार पर की देहली, पुजती रही पुजती रहेगी।
कमल–चरणों पर किसी के आँसुओं की धार बहती ही रही कहती रहेगी, × × ×
ब्रह्म तुम मैं प्रकृति की आराधना हूँ, दूर हो पाई न, हो पाई नहीं लय,
तुम सुखद संदेश हो में हूं प्रतीक्षा, तुम मिलन का हर्ष हो मै प्रथम परिचय,
तुम उदय को हास मैं निस्तब्ध संध्या– रात आती, छूटता दिन; देव तुम मैं हूँ पुजारिन।।"

("ज्योति" पृष्ठ 31)

7. **डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल** कवि की एक कविता में अपने प्रिय के प्रति समार्पण की भावना है और वह अपने प्रिय पर सर्वस्व निछावर करने को तत्पर है । इसी समर्पण की भावना से कवि दृढ़ता के साथ एक गीत में कहता है–

"मैं तुम्हारे प्रेम का आधार पाकर, वेदना सारे जगत की ढो रहा हूँ।
घोरतम है, ज्योति कम है पंथ दुर्गम अति विषम है,
मैं तुम्हारी अमितछवि को प्राण में भर, दिव्य आभा से विजन को धो रहा हूँ।।"

("मीत मेरे, गीत तेरे" पृष्ठ 26)

8. **कीर्तिशेष श्री शिवशंकर मिश्र** प्रिय के प्रति तन्ममयता ही कवि को गीत–सृष्टि के लिए विवश करती है। वह स्वीकर करता है–

"प्रतीक्षा हुई पूर्ण सुन एक आहट, उदासीनता बन गई मुस्कराहट।
पर ध्वनि लगी देहरी देव ग्रह की–कि जिसके कभी बन्द होते नहीं पट।
प्रिये काव्य से यदि न तुझको सजाऊँ–बताओ कि लिख गीत भाँति पाऊँ ।
तुम्हें एक दिन यदि न मैं देख पाऊँ–बताआ कि वह रात कैसे बिताऊँ।।

("सुधियों की बरसात" पृष्ठ 14)

9. **डा0 रामस्वरूप खरे** अपनी कविता **'राही जाना मत पथ भूल'** में नर–नारी के सम्बन्धों को अश्लीलता से दूर रखने के प्रति सावधान करते है–

"अनगिन आकर्षण आ जायें, स्वर्ण–शैल बहुपथ मिल जायें।
कीर्ति–उर्वशी को पाकर भी तनिक न जाना फूल ।। राही जाना मत पथ भूल ।।"

("नये युग का अभिनव निर्माण" पृष्ठ 12)

10. **डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया** अपनी कविता **'राग–द्वेष सब अरे ! मिटा दे'** में नर नारी सम्बन्ध पर अपने भाव कुछ इस तरह व्यक्त करते हैं–

अधरों पर मुस्कान व मधुर है, हृदय कुटिलता से है भारी।
सौम्य–सादगी स्वप्न हुए सब, शंकित–त्रस्त सभी नर नारी।।
निर्मल मन, जन अपना कर लें, दुर्भावों को दूर भगा दें।
जितने कलुषित भाव हृदय के, मिलकर उनकी चिता जला दें।।

(युग निर्माण योजना, अक्टूबर 1996)

11. **श्री बाबूलाल जैन 'जलज'** की कविता तपोभूमिं वह देव धाय है, जहाँ वास करते भगवान

की पक्तियाँ देखिए–

माता–बहिन–सुता–पत्नी का जिस घर में होता सम्मान,
तपोभूतिं वह देव देव धाम है जहाँ वास करते भगवान।।

घृत के दीप प्रखर जलते है, सुरभित भाव सुमन खिलते हैं।
जहाँ प्रेम से पार्वती शिव–समता ममता से मिलते हैं।।
खुश होते हैं देख देखकर, एक दूसरे का उत्थान,
जीवन की मंजिल में दोनों, गाते सृष्टि सृजन का गान।।
एक दूसरे के पूरक हैं, तन है एक दूसरा प्राण । तपोभूमिं वह देव धाम है .....
पुरुष बसबल पौरुष गुणधारी, नारी पूनम की उजियारी,
दोनों करें साधना ऐसी, झूंम उठे जीवन फुलवारी।।
एक दूसरे के बढ़ चढ़कर, क्षमता प्रतिभा है अनमोल,
दोनों की गरिमा महिमा से, बढ़ जाता जीवन का मोल।
जीवन रथ के दोनों पहिये, विजय हार बनते अमलान। तपो भूमिं वह देव धाम है.....

12. श्री बलराम सिंह परिहार की कविता **'पाश्चात्य संस्कृति से खुलकर युद्ध करो** की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

"अगर सिनेमा श्रृंगारिकता–तक ही रह जाता, तो यह अन्तर्द्वन्द्व न शायद–इतना दुःख पाता।
लेकिन वह तुल पड़ा नारियों को नंगा करने, खलनायक सीधे घुस आया–है अपने घर में।
अस्त्र करो धारण, जन–मानस को भी क्रुद्ध करो ।
पाश्चात्य संस्कृति से अब लो खुलकर युद्ध करो।। **("क्रांन्ति गीत" पृष्ठ 22)**

5 (ग) जाति, रूढ़ि, कुरीति एवं अन्धविश्वास उच्छेद :

प्राचीन काल में कार्य और व्यवसाय विभाजन की दृष्टि से समाज को ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्व और शूद्र इन चार वर्गो में बाँटा गया था। इस विभाजन से वंश परम्परा से चली आने वाली कुशलता में अक्षुण्णता एवं अभिवृद्धि होती चलती है। योग्यता , प्रकृति, परिस्थिति एवं अभिरूचि के अनुसार इस कार्य विभाजन में किसी वर्ग को ऊँच और किसी को नीच बताया जाने लगे। दुष्टता भरे दुष्कर्म करने वाले को नीच कहा जाये और उनके सामाजिक बहिष्कार का क्रम बनाया जाये तो बात समझ में आती है । ज्ञान, सेवा, सद्‌गुण, सदाचार के आधार पर किसी को बड़ा, ऊँचा, माना जाये और सम्मानित किया जाये, इसके पीछे भी कारण है। पर गुण कर्म–स्वभाव की समानता होते हुए भी केवल जाति वंश के आधार पर कुछ लोक ऊँचे समझे जायें और कुछ को नीचा कहा जाये, यह बात किसी तर्क या कारण की परख पर उचित नहीं ठहरती । किसी वंश में न तो सभी लोग अच्छे हुए है, न बुरो सबको उनकी उत्कृष्टता, निकृष्टता के अनुरूप मान, तिरस्कार मिलता रहा है। उत्कृष्टता किसी वंश की बपौती नहीं । हर वर्ग एवं जाति में श्रेष्ठ व्यक्ति होते रहे हैं।

आचार्य शर्मा के मतानुसार ऊँच–नीच का विभेद सर्वथा अवाँछनीय है। कोई ईमानदार और समझदार व्यक्ति इसका समर्थन नहीं कर सकता । भारतीय धर्म शास्त्र इस मान्यता का सर्वथा विरोधी है। यहाँ अपने श्रेष्ठ कर्मो के कारण शूद्रवेश के अगणित व्यक्ति

ब्राह्मण पद पाते हैं। इन प्रमाणों से भारतीय इतिहास–पुराणों का पन्ना–पन्ना भरा पड़ा है। मध्यकाल में भी रैदास, कबीर, नानक, दादू, नामदेव, विवेकानन्द आदि अनेक संत ब्रह्ममणेत्तर जातियों में, कितने ही तो शूद्र–वर्ण में पैदा हुए, पर उनकी गरिमा किसी ब्रह्मण से कम नहीं आँकी गई । गाँधी, बुद्ध, महावीर भी तो ब्रह्ममण जाति में पैदा नही हुए थे। राम–कृष्ण क्षत्रिय थे। पर उनकी पूजा ब्राह्मण भी करते हैं । श्रेष्ठता को जातीयता की सीमा में आबद्ध नही किया जा सकता । **आचार्य शर्मा लिखते हैं**– "वर्तमान ऊँचनीच परक वंश जाति की मानताएँ हिन्दु समाज की न्याय निष्ठ पर भारी कलंक लगाती है। समाजिक दृष्टि से हम छिन्न–भिन्न, विभाजित और अस्त–व्यस्त होते हैं । अच्छा हो हम समय रहते रोतें । अपनी भूल सुधारें और मानव मात्र की एकता एवं समता के सार्वभौम न्याय सिद्धान्त को स्वीकार करें। ऊँच–नीच की मान्यताओं का जितना शीघ्र उन्मूलन हो उतना ही हमारा कल्याण है।" **1.**

इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि उच्च वर्ण अथवा वंश में जन्म लेने के कारण कुछ वर्ग भी आज स्वयं को अन्य से श्रेष्ठ मानते है तथा उसी मिथ्या अहंकार में अपने दुष्कर्मों एवं अन्य के सत्कर्मों की अनदेखी करते है। इसका दुष्परिणाम होता है आत्म परिस्कार एवं आत्मोत्थान के प्रति **'गायत्री परिवार'** की स्थापना की थी। वह जानते थे कि परिवार का स्वरूप की ऐसा होता है कि जो जितना वरिष्ठ होता है उसे उतना की अधिक उत्सर्ग करना पड़ता है। परिवार में छोटों की आवश्यक्ताओं की पूर्ति करना, उनका मार्गदर्शन करना एवं उन्हें आगे बढ़ाना बड़ो का धर्म कर्तव्य होता है।

श्रेष्ठ सामाजिक सुव्यवस्था की दृष्टि से समाज में जो कार्य विभाजन किसी समय किया गया था, कलान्तर में एक **रूढ़ि** होकर किसी के लिए अहंकार प्रदर्शन का आधार बन गया तो किसी के लिए अपमान एवं उपेक्षा का **'मानव मात्र एक समान'** का उद्घोष करने वाले पं0 श्री राम शर्मा आचार्य ने लोकसेवियों की आचार संहिता की व्याख्या करते हुए बताया कि "नैष्ठिक कार्यकर्ता जात–धर्म की सकींर्णता से ऊपर उठकर की कार्य कर सकते हैं। भारतीय संस्कृति में गुण–कर्म–स्वभाव के आधार पर ही व्यक्ति को मान अपमान, अपनत्व–तिरस्कार आदि मिले हैं, जाति धर्म के आधार पर नहीं । इसी आधार पर राम ने केवट को गले लगाया तथा शबरी के झूठे बेर खाये थे । श्रेष्ठ आचरण, श्रद्धा–निष्ठा, शालीनता एवं प्रामाणिकता से मनुष्य महान बनता है, किसी धर्म अथवा जाति विशेष में जन्म लेनें से नहीं। तभी तो भक्त रैदास की कठौती में पाप नाशिनी गंगा स्वयं प्रकट हो गई थी।

अंधविश्वास : हमारे देश की एक बड़ी विचित्रता है कि एक ओर तो यहाँ ऊँचे से ऊँचे दार्शनिक और बौद्धिक सिद्धान्तों की चर्चा सुनने में आती है और दूसरी ओर मद् से मूढ़ अन्धविश्वासों के दृश्य भी दिखाई पड़ते हैं। उदाहरण के लिए **मुहूर्त–सम्बन्धी विचार** को लेते हैं– छोटा बड़ा कोई कार्य करना हो, ऐसे लोग सबसे पहले उसके लिए 'शुभ मुहूर्त' पूछने को पण्डित जी के पास दोड़े जाते हैं। जन्म से मरण तक की जितनी सामाजिक क्रियायें और संस्कार है उनके लिए तो मूहूर्त देखा ही जाता है पर किसी के लिए दस–बीस किलोमीटर की यात्रा करने, नई दुकान खोलने, नय मकान में रहने के लिए भी मुहूर्त देखा जाता है। इस का

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– नैतिक शिक्षा द्वितीय भाग, पृष्ठ 71

ब्राह्मण पद पाते हैं। इन प्रमाणों से भारतीय इतिहास–पुराणों का पन्ना–पन्ना भरा पड़ा है। मध्यकाल में भी रैदास, कबीर, नानक, दादू, नामदेव, विवेकानन्द आदि अनेक संत ब्रह्ममणेत्तर जातियों में, कितने ही तो शूद्र–वर्ण में पैदा हुए, पर उनकी गरिमा किसी ब्रह्मण से कम नहीं आँकी गई । गाँधी, बुद्ध, महावीर भी तो ब्रह्ममण जाति में पैदा नही हुए थे। राम–कृष्ण क्षत्रिय थे। पर उनकी पूजा ब्राह्मण भी करते हैं । श्रेष्ठता को जातीयता की सीमा में आबद्ध नही किया जा सकता । **आचार्य शर्मा लिखते हैं**– "वर्तमान ऊँचनीच परक वंश जाति की मानताएँ हिन्दु समाज की न्याय निष्ठ पर भारी कलंक लगाती है। समाजिक दृष्टि से हम छिन्न–भिन्न, विभाजित और अस्त–व्यस्त होते हैं । अच्छा हो हम समय रहते रोतें । अपनी भूल सुधारें और मानव मात्र की एकता एवं समता के सार्वभौम न्याय सिद्धान्त को स्वीकार करें। ऊँच–नीच की मान्यताओं का जितना शीघ्र उन्मूलन हो उतना ही हमारा कल्याण है।" **1.**

इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि उच्च वर्ण अथवा वंश में जन्म लेने के कारण कुछ वर्ग भी आज स्वयं को अन्य से श्रेष्ठ मानते है तथा उसी मिथ्या अहंकार में अपने दुष्कर्मों एवं अन्य के सत्कर्मों की अनदेखी करते है। इसका दुष्परिणाम होता है आत्म परिस्कार एवं आत्मोत्थान के प्रति '**गायत्री परिवार**' की स्थापना की थी। वह जानते थे कि परिवार का स्वरूप की ऐसा होता है कि जो जितना वरिष्ठ होता है उसे उतना की अधिक उत्सर्ग करना पड़ता है। परिवार में छोटों की आवश्यक्ताओं की पूर्ति करना, उनका मार्गदर्शन करना एवं उन्हें आगे बढ़ाना बड़ो का धर्म कर्तव्य होता है।

श्रेष्ठ सामाजिक सुव्यवस्था की दृष्टि से समाज में जो कार्य विभाजन किसी समय किया गया था, कलान्तर में एक **रूढ़ि** होकर किसी के लिए अहंकार प्रदर्शन का आधार बन गया तो किसी के लिए अपमान एवं उपेक्षा का **'मानव मात्र एक समान'** का उद्घोष करने वाले पं0 श्री राम शर्मा आचार्य ने लोकसेवियों की आचार संहिता की व्याख्या करते हुए बताया कि "नैष्ठिक कार्यकर्ता जात–धर्म की सकीर्णता से ऊपर उठकर की कार्य कर सकते हैं। भारतीय संस्कृति में गुण–कर्म–स्वभाव के आधार पर ही व्यक्ति को मान अपमान, अपनत्व–तिरस्कार आदि मिले हैं, जाति धर्म के आधार पर नहीं । इसी आधार पर राम ने केवट को गले लगाया तथा शबरी के झूठे बेर खाये थे । श्रेष्ठ आचरण, श्रद्धा–निष्ठा, शालीनता एवं प्रामाणिकता से मनुष्य महान बनता है, क़िसी धर्म अथवा जाति विशेष में जन्म लेनें से नहीं। तभी तो भक्त रैदास की कठौती में पाप नाशिनी गंगा स्वयं प्रकट हो गई थी।

अंधविश्वास : हमारे देश की एक बड़ी विचित्रता है कि एक ओर तो यहाँ ऊँचे से ऊँचे दार्शनिक और बौद्धिक सिद्धान्तों की चर्चा सुनने में आती है और दूसरी ओर मद् से मूढ़ अन्धविश्वासों के दृश्य भी दिखाई पड़ते हैं। उदाहरण के लिए **मुहूर्त–सम्बन्धी विचार** को लेते हैं– छोटा बड़ा कोई कार्य करना हो, ऐसे लोग सबसे पहले उसके लिए 'शुभ मुहूर्त' पूछने को पण्डित जी के पास दोड़े जाते हैं। जन्म से मरण तक की जितनी सामाजिक क्रियायें और संस्कार है उनके लिए तो मूहूर्त देखा ही जाता है पर किसी के लिए दस–बीस किलोमीटर की यात्रा करने, नई दुकान खोलने, नय मकान में रहने के लिए भी मुहूर्त देखा जाता है। इस का

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– नैतिक शिक्षा द्वितीय भाग, पृष्ठ 71

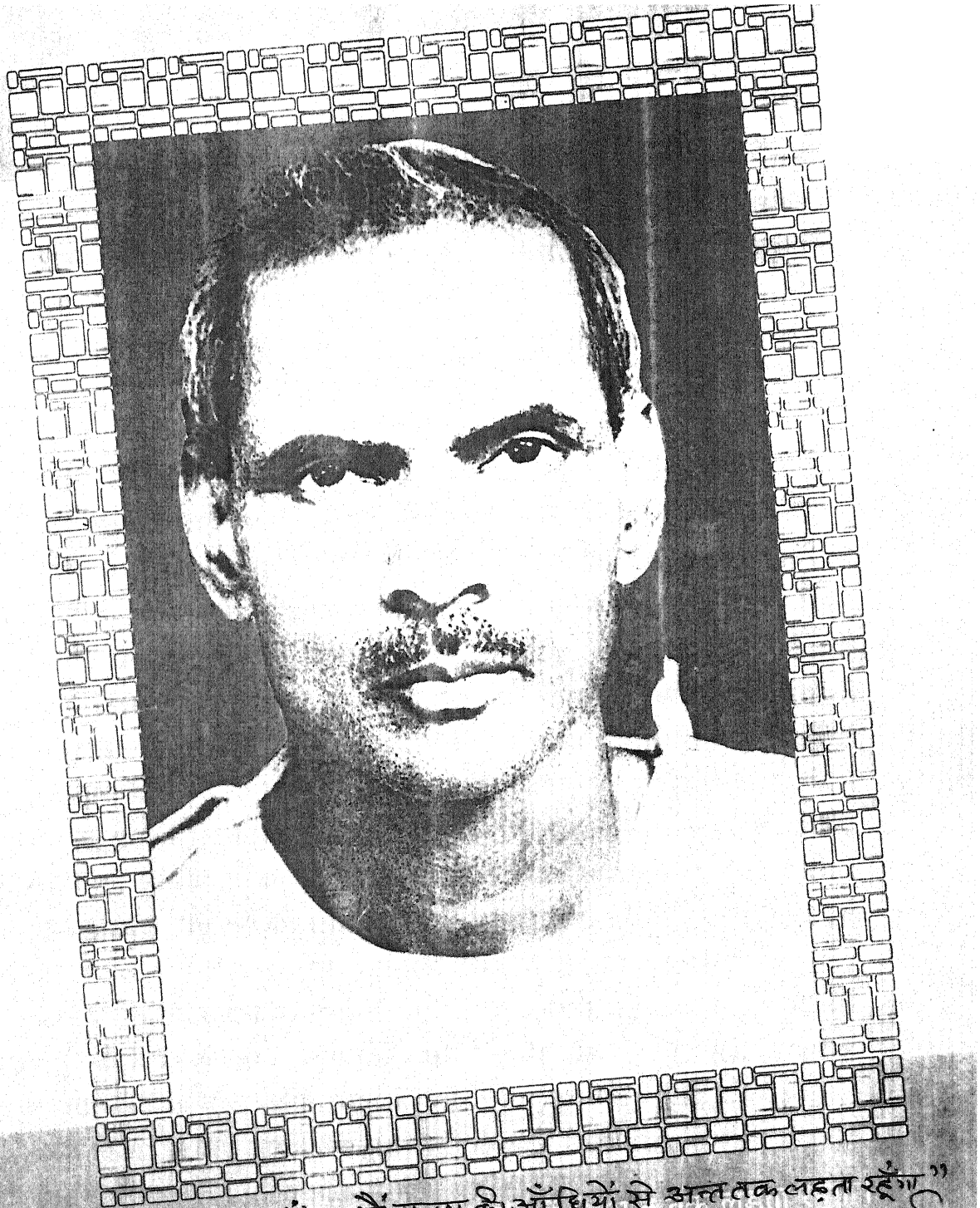

"मैं दीप हूँ जलता रहूँगा, मैं प्रलय की आँधियों से अन्त तक लड़ता रहूँगा"

- आचार्यश्री

परिणाम यह होता है कि अनेक आवश्यक कार्यों में विलम्ब होने से हानि हो जाती है और बहुत से कार्य सुविधा जनक समय को छोड़कर असुविधापूर्वक करने पड़ते हैं।

शकुन : के सम्बन्ध में भी ऐसी ही बात देखने में आती है। छींक आने, बिल्ली के रास्ता काट जाने, भरा या खाली पानी का घड़ा सामने से आते देखकर लोग कार्य की सफलता–असफलता की भावना पहले से ही कर लेते हैं और अकारण ही कार्य को स्थगित कर अपनी हानि करते हैं। छोटी श्रेणी के लोगों में विशेषतः स्त्रियों में जादू–टोना, मंत्र–तंत्र, झाड़–फूँक, नजर–गुजर, उद्‌भिज देवी –देवताओं का बड़ा दौर दौरा है और इनके बड़े–बड़े दुष्परिणाम समय–समय प देखने में आते है। भूत–परीत, जिन्द प्रेत आदि के विषय में जितने किस्से यहाँ सुनने में आते है, उतने संसार के किसी देश में नहीं सुने जाते ।

आचार्य शर्मा लिखते हैं– "खेद है कि आज निराकार परमात्मा की उपासना करने वाली जाति भूतों (मुर्दों) की पूजा कर रही है और आज अपने सुख–दुख, सौभाग्य दुर्भाग्य का निणभिक मान बैठी है।" 1.

कुरीतियाँ : सामाजिक जीवन में आज अनेकों कुरीतियाँ प्रचलित हैं । अवसर के अनुरूप उनकी शक्ल दिखाई पड़ती है पर उनकी जड़ एक ही है– पतनोन्मुख हीनवृत्ति ।

दहेज का सामाजिक पाप हर हिन्दू के लिए गले की फाँसी बना हुआ है। कन्याओं का जन्म इसलिये अभिशाप माना जाता है। विवाह के लिए धन जुटाने की चिन्ता में सीमित आय वालों को अनीति से धन कमाने एवं पाप कर्म करने को विवश होना पड़ता है। कितनी ही सुयोग्य कन्यायें अयोग्यों के गले बाँध दी जाती है। कोई व्यवस्था न होने पर निराशा के वातावरण में आत्म हत्यायें होती रहती है। आशा से कम दहेज मिलने पर कई लड़कियाँ ससुराल वालों द्वारा तिरस्कृत या बहिष्कृत कर दी जाती है। कई बार तो उन्हें इस उत्पीड़न में प्राण तक गँवाने पड़ते है। सुनदर, सुशिक्षित, सुशील पुत्रबधू के साथ–साथ 'माँगे हुए उपहार' भी आज विवाह की अनिवार्यता बन गए है। वर–पक्ष की ओर से कन्या के पिता से आज निस्संकोच पूछा जाता है, **"कितने की शादी करेगें ?** " अथवा क्या एस्टीमेट है आपका अपनी बेटी के विवाह के लिए ? स्वेच्छा से दिए जाने वाले उपहारों के स्थान पर रेफ्रिजरेटर, रंगीन टी0वी0, स्कूटर – मोटर साइकिल, बी0 सी0आर और न जाने कौन –कौन से भौतिक सुख–साधन पुत्र के विवाह के बहाने अपने घर में भर लेने और उन्हें 'स्टेटस सिंबल बनाने के लिए वर के माता–पिता आज लालायित रहते हैं।'

पुत्र के विवाह के लिए आय कन्या पक्ष वालों से आज जिस प्रकार धन की माँग की जाने लगी है उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो पुत्र की नीलामी हो रही हो । जो अपनी कन्या के आदर्श विवाह की बात करते हैं अथवा दीनहीन स्थिति का रोना रोते रहते हैं वही अपने पुत्र के लिए सज्जन से यह कहते दिखाई पड़ते हैं अमुख तो हमारे बेटे की शादी में दस लाख देने की कह गए हैं। ऐसा लगता है वह शालीन भाषा में कह रहे हों कि हमारे बेटे की दस लाख की बोली तो लग चुकी है, आप इससे अधिक बोली लगाएँ तो हम अपना 'माल' आपको बेच सकते हैं।

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– रुग्ण समाज और उसका कायाकल्प पृष्ठ 47

वैवाहिक प्रदर्शन एवं विवाहोन्माद : विवाहों में वर मात्रा का जो स्वरूप आज दिखाई देता है वह उद्धत अहंकार का प्रदर्शन एवं अनुशासन हीन उच्छृंखलता क ही घोतक है। तेज प्रकाश से झिलमिलाते अश्व, रथ अथवा अन्य किसी वाहन पर सवार, वर, आगे–आगे कर्ण भेदी शोर से ध्वनि–प्रदूशण उत्पन्न करते बैंड–बाजे देखकर ऐसा नहीं लगता है कि वद वेद मंत्रों से अनुप्राणित वातावरण में अग्नि को साक्षी मानकर किसी कन्य का जीवन–सहचरी के रूप में वरण करने जा रहा हो । मदिरा पान करके नशे में झमते, नाचते, हवा में नोट उछालते या अशीलीन हरकतें करते किशोर युवा पौढ़ौं को देखकर ऐसा आभास नहीं होता है कि वे जीवन–यज्ञ में, प्रत्येक परिस्थिति में साथ–साथ आहुति देने का संकल्प लेने वाले दो अपरिचित युवा–हृदयों के साक्ष्य बनने जा रहे हों।

मृत्यु भोज एक कुरीति : आज शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से हो रहा है किन्तु इसके साथ–साथ प्रदर्शनी प्रवत्ति भी बढ़ती जा रही है जिसकी अभिव्यक्ति मृत्यु भोज जैसी सामाजिक कुरीतियों में भी दिखाई देती है। अब तो गंगा अथवा अन्य किसी पवित्र नदी के तटपर दाह–संस्कार के पश्चात् घाटपर ही मुँह जुठारने के नाम पर भोजन कराने का रिवाज चल पड़ा है जो नितान्त अप्रासंगिक एवं असामयिक है कभी–कभी तो शव पहँचाने के पूर्व ही घाट पर हलवाई तक भेज दिया जाता है। तेरहवीं पर तो और भी उत्सव जैसा वातावरण बन जाता है । दावत में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति हँसी–मजाक करते हैं । सुहागिन से विधवा बनने की वेदना अथवा पिता की लाड़ली सन्तान से अनाथ बन जाने का दुःख दूर होने के लिए मात्र बारह दिन की अवधि पर्याप्त नहीं होती । पर मृत्यु भोज में सम्मिलत होने वालों को इससे क्या ? इस प्रकार की विवेकहीन, अपव्यय पूर्ण, संवेदना रहित, क्रूर प्रथओं–कुरीतियों का प्रतिकार करने का बीड़ा उठानें की प्रेरणा आचार्य श्री राम शर्मा ने अपने युग सैनिको–शिष्यों को दी ।

नशा एवं दुर्व्यसन : यह कहावत सत्य है के शराब उसी को खाती है जो उसे पीता है । शराब की बोतल का ध्यान आते ही शराबी को न तो अपने पति–धर्म का ध्यान रह पाता है और न ही पिता के रूप में अपने कर्तव्य का । कब भूखे बच्चे सो गए कब बेटी विवाह–योग्य हो गई, उसे इन सब बातों से कोई सरोकार नहीं रहता । रोगी बच्चे के उपचार की व्यवस्था है अथवा नहीं, बच्चों के तन ढकने के लिए कपड़े है अथवा नहीं, उनके पेट भरने योग्य अन्न घर में है अथवा नहीं, जीवन भर मुँह बन्द रखने वाली पत्नी की कोई इच्छा है अथवा नहीं, इन सबकी ओर से उदासीन वह आत्महीनता ग्रस्त, आत्म केन्द्रित मद्यप घर से निकल जाता है और शाम को, नशे में धुत, लड़खड़ाते कदमों से घर में प्रवेश करता है। पत्नी के समस्त आभूषण बिक गए, खाने के बर्तन भी बिक गए । जब भूख से बिलखते बच्चे माँ से न देखे गए तो कह थोड़े से चावल लाने के लिए कह बैठी; इस पर शराबी पति से उसे मिली मार । इस नारकीय सिथति से परिवारों को मुक्ति दिलाने की प्रेरणा आचार्य श्री राम शर्मा के समकालीन कवियों ने अपने काव्य में अभिव्यक्त की है– 'पिटती पत्नी बिकते जेवर, बदल शराबी अपने तेवर ।'

नशे का प्रचलन आज चरम सीमा पर है । स्मैक, ब्राउन सुगर, नशीली सिगरटें हैं और गुटखों के पाउचों में भरा तम्बाखू का जहर नई पीढ़ी को शारीरिक मानसिक रूप से जिस तरह खोखला कर रहा है, उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो मृत्यु को निमंत्रण दिया जा

रहा हो । नशा केई भी हो, न तो उससे शरीर बल में वृद्धि होती है और न ही बुद्धि–बल में । कुछ लोग कहते है कि वे अपना दुःख दूर करने के लिए नशा सेवन करते हैं पर यह कोरा भ्रम है । नशा अनेकानेक रोगों का मूल कारण है; इससे व्यक्ति की आयु कम होती है; आत्मबल क्षीण हो जाता है; उसका दृहष्टकोण निराशाजनक हो जाता है।

आचार्य शर्मा के मतानुसार नशा कुछ और भी है । भारत की पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने का नशा था स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों में; मातृभूमिं की सरहदों की रक्षा करने का नशा होता है जाँबाज सैनिकों में ; गिरते हुए को उठाने का नशा होता है समाज सुधारकों में, ईश्वर से प्रेम का–भक्ति का नशा कुछ और ही निराला होता है।

आलोच्य काव्य में जाति, रूढ़ि, कुरीति उन्मूलन, व्यसनमुक्ति एवं अन्धविश्वास उच्छेद :–

प्रगतिशील विचार धारा के साहित्यकारों एवं कवियों की यह विशेषता रही है कि वे समाज में फैली हुई कुप्रथाओं, बुरी परम्पराओं एवं रूढ़ियों के प्रति सदैव जागरूक रहे हैं। आचार्य शर्मा के समकालीन कवियों ने भी अपने काव्य के माध्यम से उनका विरोध किया है । जैसा कि **'नीरज'** ने कहा है

"मैं विद्रोही हूँ जग में विद्रोह कराने आया हूँ,
क्रान्ति–क्रान्ति का सरल सुनहरा राग सुनाने आया हूँ।। – **नीरज**

आलोच्य काव्य में जाति, रूढ़ि, कुरीति उन्मूलन, व्यसनयुक्ति एवं अन्धविश्वास उच्छेद की अभिव्यक्ति लगभग समस्त कवियों ने अपने ढंग से की है जिन्हें उदाहरणों के माध्यम से अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है–

(1) श्री मंगल विजय, 'विजय वर्गीय' जाति, रूढ़ि और अन्धविश्वास उच्छेद हेतु कहते है–

(i) जाति, पांति, रंग भेद राष्ट्र के कलंक हैं, नारी–नर में अन्तर, अहंकार–डंक हैं,
मनुज मात्र धर्म दृष्टि से समान–चाहिए ।
नया युग स्नेह, समता और श्रम सहकार का युग है,
भाव संवेदनाओं का छलकता प्यार का युग है,
पुरानी आदतों का युग करें ! कैसे नया होगा,
अंध विश्वास, आडम्बर अगर अब भी टिका होगा।
कुरीति से, कुरूढ़ि से ! इन्कार का युग है ।

श्री मंगल विजय अपनी एक अन्य कविता 'मानवता की पीर' में क्रूर प्रथाओं के दुष्परिणामों पर विचार करने को प्रेरित करते हैं–

(ii) क्रूर प्रथा के दुष्परिणामों पर तो करें विचार;
मानव अपने विवेक को, क्यों कर दिया बिसार ;
कन्याओं, मृतकों, पशुओं की, पीड़ा रही पुकार, महावीर का और बुद्ध का, याद करो प्रतिकार,
सुनो मनुजता की गुहार, अब पीटो नहीं लकीर, ओ निष्ठुर पहचानों अब तो मानवता की पीर

2. डा0 हरगोविन्द सिंह की कविता धर्म और विज्ञान का मिलन की पंक्तियां दृष्टव्य हैं–

(i) परम्पराओं की तुलना में तब विवेक ही वन्दित होगा ।
रूढिवाद की रात्रि मिटेगी, नव प्रभात अभिनन्दत होगा।। × × ×

रंग वर्ग जातीय भेद की टूटेंगी ओछी दीवारें।
नहीं सत्य का हनन करेंगी सम्प्रदाय की विषय कगारें।
जागेगा देवत्व देह धर, तोड कवच पाषाण का।
जिस दिन होगा मिलन विश्व में धर्म और विज्ञान का।।

(ii) बिछुड़े हुए मिलाएँ सबको गले लगाएँ । युग का नया तराना हम एक साथ गाएँ।
है जन्म से यहाँ पर, कोई बड़ा न छोटा, है जाति वंश भर से कोई खरा न खोटा।
तब क्यों न हर मनुज को, अपना स्वजन बनाएँ ।। युग का नया तराना .....
होता समाज में है, गुण–कर्म से विभाजन, गीता सिखा रही है सच्चा नियम–सनातन।
जो हैं दलित युगों से, झुककर उन्हें उठाएँ ।। युग का नया तराना .....× × ×
जिसने हमें डसा है वह नाग–पाश तोड़े, वसुधा कुटुम्ब हो अब, ऐसा विधान जोड़े।।
हम कौन थे ? हुए क्या ? यह सब नहीं भुलाएँ ।। युग का नया तराना ....

("युग गायन" भाग –1 पृ0 4)

(iii) न रूढिवादी बने रहें हम, नया सवेरा जगा रहा है।
स्वतन्त्र चिन्तन का राग कोई विवेक वीणा पर गा रहा।।
कुरीतियों ने हमें गिराया, दिन–रात हमने कुधान्य खाया;
कुचक्र शोषण चला रहा है, अनिति का रस पिला रहा है।
जो अन्धविश्वासों का बसेरा, जिसे है आडम्बरों ने घेरा;
टिकेगा जग में न धर्म ऐसा, यों सत्य डंका बजा रहा है।

डा0 सिंह की निम्न पंक्तियाँ भी अवलोकनीय हैं –

(iv) "ब्याह सौदा बन गया है हर कदम पर चाल बाजी
बिन कराए खर्च क्यों हो बेटियों के बाप राजी
नाम के समधी मगर दिल में भरे तीखी विषमता,
भेटते से जान पड़ते खान अफजल औ शिवाजी।" **(पुष्पांजलि)**

(v) अनमेल विवाह डुकरै चढ़ि आई है ज्वानी, नये ब्याव की ठानी ।
झर गये दांत खाल झुरयानी, तेउ न ममता मानी ।।
दै कै लोभ खरीदी मौड़ी,'माधव'मति बौरानी ।
तुम तो टिकट कटायें बैठे, उनकी किनने जानी।। **(फाग– मंजरी पृष्ठ 34)**

3. श्रीमती माया वर्मा की एक रचना में आदर्श समाज के नवनिर्माण हेतु समाधान परक पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

(i) "महलों में झोपड़ियों तक पगडण्डी जोड़े रास्ता।
हलों हथौड़ों और कलम का हो आपस में वास्ता।।
बिकें कहीं भी नहीं 'लाज' के बदले में अब रोटियाँ, ब्याही जायें बिन दहेज के सब समाज की बेटियाँ।
अस्थि, माँस मज्जा है सबकी एक, एक खून है, अरे ! विधाता का सब के ही लिए एक कानून है।
तब हम ही क्यों सीमाएँ–रेखाएँ खींचे बीच में, हिलमिल कर ही क्यों न रहे जो चिर सुख का आधार है।
तब कह सकते हम सगर्व 'यह मानवीय संसार है'"।।

(ii) अब मोह रूढ़ियों का, हम छोड़ने चले हैं,नाता विवेक पथ से, हम जोड़ने चले हैं।

जिनने हमें गिराया, वे है कुरीतियाँ ही। जकड़े रहीं अभी तक, हमको अनीतियाँ ही।।
पर आज हम ये बंधन , झकझोरने चले हैं । अब मोह रूढ़ियों का .....

(iii) श्रीमती माया वर्मा की कविता 'इस दहेज के कारण की पंक्तियाँ देखिए

तीस बरस की क्वारी कन्या–उठती हूक नयी।
इस दहेज के कारण भरी जवानी रूठ गई।। × × ×
रोज–रोज की माँग न पूरी कर पाये घर वाले।
तो दुःख ऐसे दिय बहू को सम्हले नहीं सम्हाले।।
जीवित हाय जलाया मानवता भी छूट गयी । इस दहेज के कारण .....
युवकों ! उठो तुम्हीं मेटो इस समाज के कैन्सर को ।
चाँदी पर मत बिको न मरघट बनने दो निज घर को ।
मनका सुख घर की समृद्धि यह कुप्रथा लूट गयी । इस दहेज के कारण .....

4. श्री शचीन्द्र भटनागर पुत्र को बेचने, नीलाम करने अथवा दहेज की भीख माँगने वाले पिता को अपमान जनक स्थिति से उबरने और सुसंस्कार की शानदार परम्परा को विरासत में देने वाले गौरवशाली पिता का सम्मान प्राप्त करने की प्रेरणा देते हैं–

(i) ओ दहेज लोभी ! बच जाओ बेटे की नीलामी से।
अरे, न क्यों डरते तुम अपने पुरखों की बन्दनामी से। × × ×
अगर न अब भी सँभले, तो हम विद्रोही बन जाएँगें, और तुम्हारे पुत्र अवज्ञा के दोषी कहलाएँगें, तुम दहेज माँगोगे लेकिन पुत्र नहीं स्वीकारेंगे, घोर पाप के लिए तुम्हें युग सेनानी धिक्कारेंगे, नहीं नहीं आदेश चलेंगे अब दंभी वरवालों के, कन्या वाले नहीं चलेगें अब केवल अनुगामी–से।।

("क्रान्ति के स्वर" पृष्ठ 16)

(ii) 'माँग की निरर्थकता' पर श्री शचीन्द्र भटनागर की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

"बिना पुरुषार्थ के सब कुछ कमाना चाहते हो,
अरे ! माँगा हुआ वैभव दिखाना चाहते हो,
कि जो है आँख का तारा, दिया कुल का तुम्हारा,
उसी को वस्तु विक्रय की बनाना चाहते हो ।"

(iii) एक अन्य कविता में कवि संक्रान्ति–बेला में बदलते युग की माँग को समझने और अन्य पावन यज्ञों, संस्कारों एवं अन्य धार्मिक कृत्यों की भाँति विवाह के अवसर पर भी पवित्र–प्रॉजल–दिव्य वातावरण के सृजन का संकल्प नेले की प्रेरणा देता है–

"पुत्र के पणिग्रहण को तुम न रण का रूप दो,
व्याह को दोनों कुलों के सम्मिलन का रूप दो
झिलमिलाये अश्व पर सुत को बिठाया किसलिए, कर्ण मेरी शोर का साधन जुटाया किसलिए, आज यह ऐश्वर्य–वैभव का प्रदर्शन क्यों किया, धन व साधन माँगने का आज यह मन क्यों किया, इस अमर्यादित प्रदर्शन को न समझो ब्याह तुम, तुम इसे शालीन सुन्दर आचरण का रूप दो।"

(iv) विवेकहीन अपव्ययपूर्ण, संवेदना रहित, क्रूर कुरीतियों के प्रतिकार का बीड़ा उठाने हेतु कवि युग सैनिका का आह्वान करता है–

"मृत्यु शोक से उबर न पाया अब तक जो परिवार है,

मृत्यु भोज सब वहीं खा रहे, कैसा अत्याचार है। × × ×

अगर तनिक–सी भी श्रद्धा है तुम्हें मृतक के नाम से,

तो तुम कर दो नाम अमर उसका, सेवा के काम से,

धर्म–कृत्य निश्चित करवाओ, जिससे आत्मोत्थान हो,

पर कुछ काम करो जिससे जनमंगल हो, कल्याण हो,

सच्चा श्राद्ध यही है भाई", मृत्यु भोज बेकार

(v) एक अन्य कविता में कवि नशेड़ियों को कोई लोकहित कारी नशा अपनाने प्रेरणा देता है–

"है भयंकर नाश की जड़ हर नशा, छोड़ो इसे,

बुझ न सकती है कभी इसकी तृषा, छोड़ो इसे । × × ×

स्मैक या सिगरेट, गुटकों में जहर जो भर रहा, नयी पीढ़ी को वही कमजोर जड़ से कर रहा,

आधुनिकता या बड़ाप्पन की निशानी है नहीं, मृत्यु को देना निमंत्रण बुद्धिमानी है नहीं,

जिन्दगी में यह सब बहुत भीतर धंसा, छोड़ो इसे । है भयंकर नाश की जड़ . × × ×

हो गिरे इन्सान को ऊँचा उठाने का नशा, व्यक्ति को मृत मान्यताओं से बचाने का नशा,

बाँटकर सुख, दूसरों का दुख, छज्ञेड़ा इसे । है भयंकर नाश की जड़ .....

5. **श्री बलराम सिंह परिहार** की कविता **'दुनियां नई बसायें'** में रूढ़ियों को मिटाने एवं अविवेक को भगाने की प्रेरणा देखिए–

"दुनियाँ नई बसायें यह जग हुआ पुराना, सदियों के बाद फिर से आया नया जमाना।

अज्ञान का अँधेरा अपना समेट डेरा, अब दूर जा रहा है लेने कहीं बसेरा।

सब रूढ़ियाँ मिटाकर अविवेक को भगाना । रुढियों के बाद फिर से .....

6. **श्री बाबू लाल जैन 'जलज'** की कविता **भारत की हम नारियाँ,** की पंक्तियाँ देखिए–

आज रूढ़ियों का करना है, डटकर हमें मुकाबला ।

हमें मिटाना है हिम्मत से, ऊँच–नीच का फासला।। × × ×

नयी रोशनी लायेंगी हम, लायेगी आकाश नया।

मूढ़ मान्यताये बदलेगीं, भ देगी विश्वास नया ।।

युग–कुरीतियों में रख देगी, हम भीषण अंगार नया।

त्याग–तपस्या से कर देंगी, हम युग का श्रृंगार नया।।

युग निर्माण योजना को हम, करती है तैयारियाँ।

कर देगीं उद्धार देश का, भारत की हम नारियाँ।।

7. **श्रीमती विद्यावती मिश्र** ने अपने काव्य में कुत्सित परम्पराओं एवं रूढ़ियों का विरोध किया है। उन्होने समाज में कुरीतियों एवं रूढ़ियों का विरोध करते हुए उनसे मुक्त होने की प्रेरणा इस प्रकार दी –

(i) **मुक्ति नही यदि दो कम से कम खोलो आज हृदय की कारा ।**

कर्म काण्ड के निर्मम प्रहरी, और रूढ़ियों की जंजीरे,

खींच रहीं जीवन के पट पर, कुछ अटपटी अजब तस्वीरें,

घोंट रहा है गला तनुज का भोगवाद का वैभव सारा ! खोलो आज हृदय की कारा।। ×

शिथिल करो युग–युग के बन्धन, एक बार दो बल अजमाने,

नया पन्थ कब बतला पाये, मृत्कों के पद–चिन्ह पुराने,
जहाँ कहीं मरूथल बाकी हो, मोड़ो वहीं श्वाँस की धारा ! खोलो आज हृदय की कारा !!

(ii) **'मनुज मनुज में भेद' शीर्षक** गीत में कवयित्री ने समाज में फैली जाति–पाँति की भावना, कुत्सित परम्परायें एवं रूढ़ियों को राष्ट्र की एकता के लिए खतरनाक बताया है–

"धर्म एकता का स्वरूप है, नहीं फूट की राह,
जाति–पाँति बस अहंपूर्ति की है व्यवसायी चाह।
रूढ़ि अन्ध–विश्वास चाहते जीवन–सिन्धु अथाह, करती है मान्यता विवशता से मानो व्यापार!"

8. **डा0 आर0पी0 कर्मयोगी** के **थोथे रस्म रिवाज शीर्षक** कविता की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

मान्यताएँ मूढ़ हों, अन्धा हो विश्वास। ऐसे मानव से भला, क्या रक्खोगे आस।।
परम्पराओं से जुड़े, व्यक्ति अनेक–अनेक । ढोंग दिखा कर रहं, नहीं काम यह अनेक ।
आज चतुर्दिक हो रहा, भारी भ्रष्टाचार । अगर मिटाना है इसे, बदलो निजी विचार।।

9. **डा0 राम स्वरूप खरे** की कविता 'बहाओ तुम समता की धार' की पंक्तियाँ देखिए

(i) **"विषमता का करके संहार, बहाओ तुम समता की धार ।**
जाति से कोई ऊँच न नीच, श्रेष्ठ जो करता सदा सुकर्म।।
विप्र भी बन जाता है अधम, भूलता जब वह अपना धर्म।।
करो निज जीवन श्रृंगार, सतत् करके शुभ कर्म अपार ।। बहाओ तुम समता की धार ।।"

(ii) कवि के खण्ड काव्य 'शतमन्यु' की पंक्ति अवलोकनीय हैं–

"यही है जागरूक का धर्म, लड़े अन्याय अनय के साथ।
न्याय पर कर दे प्राणोत्सर्ग, झुकाये कभी न अपना माथ।।"

5. (घ) नारी महत्ता एवं नारी जागरण :

सृष्टा ने नर के साथ नारी की उत्पत्ति कर, इस सृष्टी को विकास के मार्ग पर अग्रसर किया और उसे विधाता ने माता की उपाधि दी । मातृ शक्ति ने यदि प्राणियों पर अनुकम्पा न बरसाई होती, तो उसका अस्तित्व ही प्रकाश में आता । भ्रूण रूपी सूक्ष्म बिन्दु को परिपक्व बनाकर, प्रसव वेदना सहकर वही उसके बन्धन खोलती है । यदि नारी के रूप में माता समय–समय पर अनेक प्रकार के अनुग्रह न बरसाती तो किसी को भी इस ब्राह्मण में स्थान न मिलता । सृजन शक्ति वे रूप में इस संसार में जो कुछ भी सशक्त, सम्पन्न, विज्ञ और सुन्दर, उसकी उत्पत्ति मे नारी तत्व की अहम् भूमिका है । श्रृद्धा प्रज्ञा, निष्ठा, क्षमता, कला, कुशलता, दूरदर्शिता के रूप में उसी नारी महा शक्ति के सूक्ष्म का वरण किया जाता है । यही नहीं उसने पत्नी, पुत्री, बहन बनकर महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई हैं। नारी के अनुदान कभी भी हल्के स्तर के नहीं रहे । उसने धरित्री के, ऊर्जा के, वर्षा के, प्राण वायु के सदृश अपनी विभूति वर्षा से संसार के कण–कण को सरस, सुनदर, सुमन्नत बनाया है । करूणा, दया,, सेवा, समर्पण और उसकी अनुकम्पा ही है जो इस संसार को सुरभ्य और सुसंस्कृत रखे जा रही है।

नारी सृष्टा की जीवान्त कला–कृति :– नारी इस सृष्टि का सौन्दर्य है। उसे सृष्टा की जीवान्त कलाकृति के रूप में देखा जा सकता है । स्नेह उसकी प्रवृत्ति एवं अनुदान उसका स्वभाव है । जीवन संचार के सभी तत्वों को उसमें कूट–कूट कर भरा है। मनुष्य के पास

अपना कहलाने को जो कुछ भी है वह नारी का अनुदान ही है । वह मानुषी–सत्ता की सृजन–कर्त्री जननी है, वही परिपोषक है । शिशु का प्रारम्भिक आहार ममतामयी माँ के वक्षस्थल से टपकता है । मां का दुलार पीकर अन्तरात्मा हुलसती है। सृजन की देवी का समर्पण पाकर व्यस्क पुरुष अलौकिक आनन्द से भरता और तृप्ति अनुभव करता है। सृजन की यह देवी जिस घर में पहुँचती है वहाँ गृहलक्ष्मी की भूमिका सम्पन्न कर मिट्टी के घरोंदें में स्वर्ग का अवतरण किस प्रकार हेाता है,यह अहसास कराना मात्र नारी का ही कर्तत्व है।

उत्कृष्टता की जीवन्त प्रतिमा–नारी : मनुष्य का वरिष्ठ भाग नारी है । उसकी शोभा कोमलता का नयनाभिराम होना ही प्रारम्भिक परिचय है । अभिवावकों को पुत्री से बढ़कर मृदुलता का दर्शनिक कदाचित हीं अन्यत्र हो । कन्या की पवित्रता देवोंपम है। उसका पूजा प्रचलन सर्वत्र सार्थक है । देवत्व की जीवन्त प्रतिमा का दर्शन भोली सुकुमार कन्या में सहज हो सकता है । भाई के लिए वह बहन है । बहिन का भ्रातमाव कितना निर्मल, सौम्य और उत्कृष्ट स्नेह सम्बन्ध, हो सकता है इसे प्रेम की दुनियाँ में अनौखी उपलब्धि ही कहा जा सकता है । पति के प्रकत स्वेच्छा से समर्पण उसके लिए सब कुछ अर्पित कर देने का उत्साह देखते बनता है। संतान के लिए अपने शरीर, मन और श्रम को जिस प्रकार वह बाँटती–बिखेरती है, उस आधार पर उसे त्याग–बलिदान की देवी ही कहा जा सकता है । नारी पिता के कुल और पति के कुल के साथ भावभरा अनुदान प्रस्तुत करती है । वह बताती है कि विशुद्ध प्रेम क्या है ? इसके मधुर फल इसी जीन में चखे जा सकते है।

देवत्व की मूर्तिमान प्रतिमा–नारी : नारी कीमहिमा महान है। **कवि रस्किन** ने कहा है– **"माता का हृदय" एक स्नेह–पूर्ण निर्झर है**, जो सृष्टि के अदि से अनवरत झरता हुआ मानवता का सिंचन कर रहा है। **"मातृ देवों भव"** कहकर उननिषद के ऋषि ने माता के लिए लोकोत्तर सम्मान प्रदान किया है सचमुच साधारण प्राणियों से भर इस धरती पर माता हृदय एक दैवी–विभूति ही है ।

माता धरित्री, जननी दयार्द्रहृदया शिवा। देवी त्रिभुवन श्रेष्ठा निर्दोष सर्व दुःखहाः।।
आराधनीया परमा शान्तिः क्षमा धृतिः।स्वाहा स्वधा च गौरी च पद्मा च विजया जया"

आवश्यकता है सही दृष्टिकोंण की । जिन्हें ज्योतिर्म दृष्टि मिली है उनके लिए बारी के कलेवर में मूर्तिमान देवत्व झाँकता है। वह आद्यशक्ति की प्रतीक है, लक्ष्मी है, सरस्वती है। उसकी वीणा कलात्मक झंकार गुंजित होती है । वह प्रत्यक्ष दुर्गा है क्योंकि जब वह प्रकट होती है तो कोई महिषासुर उसकी क्रोधाग्नि को सहन नहीं कर पाता है ।

कहते हैं कल्पवृक्ष पर चार फल–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष लगते हैं। नारी प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है । वह पिता का वात्सल्य उभारती है, भाई को पवित्रता प्रदान करती है, पति को अपूर्णसेपूर्ण बनाती है और सनतन का तो वह प्राण है । एक नगण्य से जीवाणु को मनुष्य के दिव्य कलेवर में परिणत कर देना उसकी सृजन शक्ति का चमत्कार है ।

वैदिक युग की आदर्श नारियाँ : वेदों में हमें नारी के कन्या, पत्नी, माता और ऋषिरूप में दर्शन होते है। वैदिक काल में उपनयन के बाद भाई बहन दोनों गार्हत्य अग्नि के पावन वातावरण में वेद और वेदांगों की, शास्त्र और शस्त्र की शिक्षा पाते थे । कुछ समय बाद कन्या के विषयों में कुछ विभाजन अवश्य हो जाता था–

द्विबिया : स्त्रिया : । ब्रहम वादिन्य : सद्योवध्वश्च ।" 1.

शतपथ ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य ऋषि की धर्मपत्नी मैत्रेयी को ब्रह्मावादिनी कहा, गया है–

तयोर्ह मैत्रेयी ब्रहम्वादिनी बभूव ।" 2.

सद्योवधू (जो जल्दी विवाह करना चाहती हो) और **ब्रह्मवादिनी** (जो ऋषि बनने की कामना रखती हो) परन्तु बाल विवाह का कोई संकेत वेदों में नहीं है । **ब्रह्मवादिनी** कन्याओं की शिक्षा काफी लम्बे समय तक चलती थी बड़ी उम्र में विवाह बाधा नहीं था । ऋग्वैदिक ऋषि **घोषा** के काफी बड़ी अवस्था में विवाह में विवाह करने का उदाहरण मिलता है । वैदिक काल में विवाह हेतु–पति का चुनाव नारी की पसन्द पर होता था । माता–पिता और गुरुजन की उपस्थिति में स्वयंवर आयोजित होते थे और कन्या पति का चुनाव करती थी।

एक पत्नीव्रत वैदिक काल का साधारण नियम था । उस काल में विधवा विवाह की कोई समस्या नहीं थी । पर्दा पर्था का उल्लेख भी उस काल में नहीं है ।न ारी को अपनी मर्यादा में घूमते– फिरने और लक्ष्य चुनने का अधिकार था । वे आचार्य, दार्शनिक या ऋषि बन सकती थीं । अपाला, घोषा, मैत्रेयी, गार्गी उसी युग की विदुषी महिलाएँ थी । इतिहास पर दृष्टिपात करें तो नारी का अतीत स्वार्णिम रहा है । उसे पुरुष के बराबर अधिकार एवं समाज में पुरुष से अधिक महत्व व सम्मान प्राप्त था।

अन्धकार युग में नारी के साथ अन्याय :– प्राचीन काल में नारी की गौरव गरिमा, तेजस्वता और समूची मानवता को ऊँचा उठाने में संलग्न प्रतिमा की तुलना आज की गयी–गुजरी नारी से करें तो लगता है मीनार पर चढ़े व्यक्ति को गहरी खाई में धकेल दिया गया है । यह अवाँछनीय परिवर्तन आखिर हो कैसे गया ? सूर्य पश्चिम में कैसे उदय हो गया ? गंगा भी धारा आखिर उल्टी कैसे बहने लगी ? इस पहेली बुझाने के लिए आचार्य श्रीराम शर्मा लिखते हैं "हमें मात्र एक हजार वर्ष मध्य कालीन अन्धकार युग का लेखा जोखा लेने उन कारणों का पता चल जाता है। शायद उन दिनों की क्षुद्रबुद्धि ने सोचा होगा जंगल कानून अधिक लाभदायक है । मत्स्य न्याय अधिक स्वाभाविक है ।" सामन्ती लूटपाट धन सम्पत्ति तक सीमित न रहा । तरुण युवतियाँ और युवक भी लूट के माल में सम्मिलित कर लिये गये । बढ़े आदमी के पास बड़ा महल खजाना ही नहीं बड़ा हरम भी होना चाहिए । अन्त : पुर में जितनी स्त्रियाँ, उतपत्नियाँ, दासियों होगी वह उतना ही बड़ा आदमी कहा जाने लगा । एक व्यक्ति के पास जितनी अधिक पत्नियाँ होती वे अधिक असन्तुष्ट रहती । वे भागने या प्रतिशोध का ताना–बाना बुनती । इस विद्रोह को कुचलने के लिए तरह–तरह के प्रतिबन्ध लगे । घर की दहलीज के बाहर स्त्रियों का पाँव रखना भी निषेध कर दिया गया । अन्तः पुर पर कड़े प्रतिबन्ध को उचित को उचित ठहराने हेतु अनेक तर्क गढ़े गये । देवताओं, ऋषियों को अनेक पत्नियाँ रखने वाला सिद्ध करने के लिए अथलोलप संस्कृतज्ञ भी तत्पर हो गये और इस हेतु पुराण के पुराण लिख दिये गये । यहाँ तक कि भगवान श्री कृष्ण को भी इस दुश्चक्र में उस समय नहीं छोड़ा गया। पतिव्रत धर्म के लम्बे चौड़े महात्म्य, सतीप्रथा का प्रचलन, वेद पाठ का

---

1. हारीत धर्मसूत्र
2. शतपथ ब्राह्मण– 14/7/3/1

निषेद भी उस समय के वितण्डावाद का ही परिणाम है। घूँघट प्रथा, पर्दा प्रथा, अशिक्षा का बोलबाला उसी युग की देन है जो कालान्त में अधिक प्रबल हो गई वर्तमान समाज के लिए नारी उत्पीड़न एक कलंक है ।

इतिहास के मध्य काल में नारी के लिए निकृष्टतम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई थी। बाल विवाह, पर्दा प्रथा सती प्रथा आदि कुप्रथायें इन्ही का परिणाम थी । **आचार्य श्री राम शर्मा** ने इक्कीसवीं दसी को नारी–युग कहा। मध्यकालीन परिस्थितियाँ अब नहीं है। अतः नारी को पर्दे में सीमित करने की बात समयोचित नहीं है। आवश्यक्ता है पर्दा–प्रथा के कारण में जन्मी आत्महीनता, आत्मभीरुता, अनुभवहीनता एवं कूप मंडूकता से उसे मुक्त किया जाए । नारी को पर्दे से बाहर निकलकर खुली हवा में साँस लेने का अवसर दिया जाए, तभी वह व्यवहार कुशल, उपयोगी एवं प्रभावपूर्ण हो पाएगी ।

बंदिनी नारी : आज भी स्थिति यह है कि शैशवावस्था से ही, **'पराया धन'** अथवा ससुराल जाना है– कहकर कन्या के बार–बार भयभीत किया जाता है । उसे बचपन में 'मातापिता के युवावस्था में ससुरालवालों के और वृद्धावस्था में बेटे के अनुशासन में रहना पड़ता है।' भले ही अतिशयोक्ति हो यह कथन, पर आज की नारी की दयनीय दशा की ओर स्पष्ट संकेत करता है । विवाह के पूर्व हर कन्या के मन में अपनी ससुराल के कुछ सपने होते हैं; अपने सास–ससुर तथा दाम्पत्य जीवन की कुछ कल्पनाएँ होती है। पर अधिकांशतः देखा जाता है कि विवाह के अलप समय पश्चात् ही यर्थाथ की पथरीली धरती का उसे आभाष होने लगता है। स्नेह–ममत्व के अभव एवं निमंत्रण–अनुशासनों के बीच आशंकित मन लिए घुटन भरी जिन्दगी जीना उसकी मजबूरी बन जाती है।

नारी जागरण :– लोक कल्याण की विद्यायिका, पथ प्रदर्शिका और संरक्षिका शक्ति का नाम ही देवी है। अपने इस रूप में भारतीय नारी आज भी उन प्राचीन गुणों को धारण किये हुए है, जिनके द्वारा अतीत काल में उसने समाज के समग्र विकास में योगदान दिया था। यद्यपि वह तेजस्विता आज धूमिल पड़ गई है, तथापि यदि उस पर पड़े, मल आवरण के विक्षेप को हटा दिया जाए तो नारी सत्ता अपनी पूर्ण महत्ता को फिर से ज्यों की त्यों चरितार्थ कर सकती है ।

आचार्य शर्मा के मतानुसार "अपनी गौरव गरिमा" को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए पिछड़ापन और तथाकथित आधुनिकता के दोनों ही अतिवादी किनारों से नारी को बचना होगा और अपने विवेक का प्रयोग कर मध्यमार्गी मार्ग अपनाकर संस्कृति को विश्व को विश्व के शिखर पर पहुँचाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी ।" 1.

इक्कीसवीं सदी –नारी सदी : समय–समय पर विभिन्न अतीन्द्रिय द्रष्टा–भविष्यवक्ता उसका संकेत करते हैं । अपनी प्रसिद्ध कृति **'माई लाइफ एण्ड प्रोफोसीज'** के आठवें अध याय में **जीन डिक्सन** लिखतीं है कि–**"21 वीं सदी नारी प्रधान होगी।"** विभिन्न क्षेत्रों का नेतृत्व महिलाएँ सँभालेगीं ।" स्वामी विवेकानन्द के अनुसार– "माँ परिवार का केन्द्र और हमारा उच्चतम आदर्श है। वह हमारे लिए ईश्वर ही प्रतिनिधि है। एक नारी ऋषि ने ही बसे पहले ईश्वर की एकता को प्राप्त किया और इस सिद्धान्त को वेदों की प्रथम ऋचाओं में कहा ।" 2.

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– इक्कीसवीं सदी बनाम उज्जवल भविष्य, भाग 1, पृष्ठ 39
2. स्वामी विवेकानन्द– विवेकानन्द साहित्य, खण्ड 10, पृष्ठ 302

आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे वह नारी समाज निर्भय होकर राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को भली–भाँति निभा सके 'पवित्रता और त्याग की मूर्ती बनकर अपने बल और शक्ति से गौरवशाली भारत का निर्माण कर सके । भारतीय नारी को यदि उचित शिक्षा देने का मार्ग खुले तो वह संसार की सर्वश्रेष्ठ आदर्श नारी बन सकती है । विचारणीय प्रश्न है– क्या नारी होना एक अपराध है ? जिसके कारण उसके स्वाभिमान को ताक पर खूब दिय गया और उसके साथ मनमाना, भौंड़ा व्यवहार किया जा रहा है।

आचार्य श्री राम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों ने इन ज्वलन्त प्रश्नों को– नारी महत्ता को एवं नारी जागरण के विषय में आचार्य शर्मा ने जो समाधान प्रस्तुत किये, उन्हें अपने काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है ।आचार्य शर्मा के बताए सूत्रों को अपनाकर अलोच्य कवियों ने लोक शक्ति का आह्वान किया है कि नारी के बारे में जो सोचा–समझा जा रहा है, उसके साथ जो व्यवहार किया जा रहा है, उसे बदलने के लिए सोचा–समझा जा रहा है, उसके साथ जो व्यवहार किया जा रहा है, उसे बदलने के लिए लोगों के मस्तिष्क बदलने की बात जिससे उज्जवल भविष्य के राजमार्ग पर चलते हुए नए युग को धरती पर ला दिखाने का लक्ष्य निश्चित रूप से पूरा किया जा सकेगा ।

आचार्य शर्मा के नारी जागरण के जिन सूत्रों को उनके समकालीन कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है, वे निम्नवत् हैं–

1. "पर्दे का बन्धन दुराचार रोक सकता है– यह सोच बेकार है । मनुष्य का शरीर कपड़े से ढका जा सकता है उसकी नीयत नहीं । मन को नियन्त्रित करने के लिए स्वाध्याय–सत्संग को आवश्यक मानकर श्रेष्ठचिन्तन और मनन करना होगा ।
2. दहेज के दानव को मिटाने के अभियान को स्वयं से प्रारम्भ करना होगा । देने की अपेक्षा, लेने वाले स्वयं पर अंकुश लगाएँ और लेने से परहेज करें ।
3. परिपक्व होने पर ही कन्या के विवाह करने की सोचें। इससे बाल–विवाह जैसी कुरीति से छुटकारा मिलेगा । इसके दुष्परिणामों से समाज को शिक्षित करना होगा ।
4. पुत्र और पुत्री के भेद को मिटाकर दोनों का प्रगति का एक सा अवसर प्रदान करें। कन्या एवं पुत्र समान हैं इसलिए इस भ्रम को मन से निकाल दें कि वंश केवल पुत्र से ही चलता है
5. अनावश्यक श्रंगार सज्जा, अपव्यय भरा प्रदर्शन, आडम्बर एवं रूढ़ियों में न तो बड़प्पन और न ही शान। "सादा जीवन उच्च विचार" के सिद्धान्त को अपनाना होगा । अश्लील प्रदर्शन न स्वयं करें, न करने दिया जाए ।
6. विचारशीलों का दायित्व है नारी शिक्षा में कमी न रहने दी जाए । उसे अपने महान उत्तर दायित्वों का बोध कराया जाए । उसे दासी नहीं स्वाबलम्बी बनने दिया जाए ।
7. स्त्री पुरुष दोनों मिलजुलकर परिवारवली गाड़ी को चलाएँ ।
8. महत्वपूर्ण उत्तदायित्वों के निर्वाह में स्वस्थ शरीर, सन्तुलित मनोबल एवं कौशल उपेक्षित है। नारी को उस योग्य बनने का अवसर मिलना आवश्यक है । उसे अनीति भरे प्रतिबन्धों में जकड़कर दुर्गतिग्रस्त न किया जाए ।
9. नारी की सहज दुर्बलता के कारण उस पर कहीं कोई अत्याचार न होने पाये इस के लिए सभी की जागरूकता की आवश्यकता है । अनीति करने वाले दण्ड से न बचने पाएँ ऐसी

व्यवस्था मूर्धन्यों को बनाने का साहस करना होगा ।

10. परम्परा, व्यामोह के कारण उसकी प्रतिभा को घर की चार दीवारी में न सड़ने दिया जाए ।" 1.

यह कहना अनुचित न होगा कि जीवन में जो कुछ शुद्ध और धार्मिक है, सित्रियाँ उस सबकी विशेष संरक्षिका है । भविष्य में नेतृत्व उसी के हाथों में ही तो किसी को आश्चर्य नहीं करना चाहिए। श्री अदविन्द अशुभ की संचालिका श्री माँ के अनुसार– "नारियों को ही सबसे पहले यह महान परिवर्तन साधना होगा ; क्योकि उनका विशेष कार्य है।" अब नारियाँ बिल्कुल सामान्य रहती हुई गम्भीर समस्याओं का भी वे शान्ति पूर्वक सामना करतीं हैं मानों वह एक सामान्य बात हो । इसी के परिणाम स्वरूप इन दिनों लड़कियों–महिलाओं द्वारा सेना पुलिस, एअरपोर्ट, राजनीति, शिक्षा, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, आदि विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व किए जाने की संख्या में भारी वृद्धि हुई है।

आचार्य शर्मा जी का मन्तव्य :– आचार्य श्री राम शर्मा के अनुसार–"इक्कीसवीं शताब्दी–नारी वर्चस्व की शताब्दी है । उसमें उपेक्षित आधी जनसंख्या को ऐसा महत्व और श्रेय मिलने जा रहा है । जिसकी वह अधिकारिणी तो आदि काल से थी, पर उसके वैभव का किसी दुर्दान्त दैत्य ने अपहरण कर लिया था । अब वह उसे नए सिर से, नए रूप में प्राप्त होने जा रहा है । उसे शक्ति, समर्थता और साहसिकता के वे बल–वैभव फिर से प्राप्त होने जा रहे हैं, जिसके बल पर वह अपनी सत्ता की महत्ता भली प्रकार प्रकट व प्रमाणित कर सके । इस उदीयमान उषा का सुनहरा आलोक इस रूप में दृष्टिगोचर होगा, मानों वह कायाकल्प स्तर का नया कलेवर लेकर स्वर्ग से धरती पर उतरी हो । उसके क्रियाकलापों में वे सृजनात्मक स्वर ऊँचे स्तर पर उभरेंगे जो अब तक प्रायः अपना कार्य क्षेत्र घर –परिवार तक ही सीमित रखे रहते थे । अब वह समाज और संसार के हर क्षेत्र को अपने तेजस् और वर्चस् से प्रभावित करेगी । राजनीति में उसे उत्साहपूर्वक प्रवेश और अप्रत्याशित सफलता मिलने के आसार बन रहे हैं इसकी चर्चा और विवेचना भारत में ही नहीं विश्व के कोने–कोने में इन दिनों विशेष रूप से चल पड़ी है । भारत में इस सन्दर्भ में कुछ ठोस काम होने जा रहा है, ताकि पूर्व से उदय होने वाला सूर्य अपने आलोक से दिग्–दिगन्त को आलोकित करने की परम्परा का निर्वाह कर सके ।" 2.

आचार्य शर्मा के मतानुसार "इक्कसवीं शताब्दी में शासन, सुव्यवस्था की जिम्मेदारी नारी के हाथ में होगी, पुरुष उसका सहायक भर होगा । कालचक्र पूर्णरूप से गतिमान है । भवितव्यता नारियों पर अपने अनुदानों की वर्षा करने पर उतारा है ।" 3.

आचार्य शर्मा आगे लिखते हैं– "अब न सिर्फ नारी के भाग्य में स्वतः की बेड़ियों से मुक्ति लिख दी गई है, वरन् विधाता ने उसे मुक्तिदूत बनने का गरिमापूर्ण दायित्व भी सौंपा है । यह अपने युग का सुनिश्चित निर्धारण है । जो इन्हीं दिनों पूरा होने वाला है ।" 4.

इक्कसवीं सदी में पूर्ण होने वाले इस निर्धारण में आध्यात्मिक समाज की व्यवस्था का निश्चित ही भव्य रूप उभरेगा ।।

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– नारी प्रधान होगी अगली शताब्दी अखण्ड ज्योति वर्ष 54 अंक 2
2. आचार्य श्रीराम शर्मा– नारी ही लाएगी अब सतयुग, अखण्ड ज्योति वर्ष 57 अंक 10 पृष्ठ 25
3. आचार्य श्रीराम शर्मा– नारी अबला नहीं परम शक्तिशाली है, अखण्ड ज्याति वर्ष 52 अंक 10
4. आचार्य श्रीराम शर्मा– नारी अभ्युदय का नवयुग पृष्ठ 2

5(घ)नारी महत्ता एवं नारी जागरण के गीत–

(1) श्री मती माया वर्मा कवयित्री नारी महत्ता पर प्रकाश डालती हैं।

' सनातन सत्य, शाश्वत शिव, सतत सौदर्य है नारी।

उसी की चेतना मे जी रही है मुनष्यता सारी।। नारियों के प्रति कवयित्री के उद्‌गार हैं–

फूलों के सम हंसो और कलियों जैसी मुस्काओ, बहनो विश्व गगन को नव उषा बनकर चमकाओ ।
ध्रुव तारा बन दिशा–ज्ञान दो शशि बनकर शीतलता,बनो जाहनवी मधुर तृप्ति दो–जी जाए मानवता ।
पिला सोमरस श्रद्धा का , तुम जीवन रसमय कर दो,अपनी सद्‌गंध देवि! मानस पुत्रों में भर दो ।
सीचो तपती मनोभूमि को प्राणांकुर सरसाओ । बहनो विश्व गगन को .....

यद्यपि हमारे देश में नारी को देवी कहकर उसका बड़ा सम्मान दिया गया है, पर वास्तविकता कुछ और ही है। उसे भोग्या, वासना तृप्ति का साधन मानकर आए दिन उस पर अत्याचार किए जाते है। कवयित्री रचते हुए मार्च 1973 की अखण्ड ज्योति में कहती है–

जब सम्मान भुला देता जग, चिर सम्मार नारी का!बढ़ता हाथ छिपी लज्जा पर,,जब चिर अत्याचारी का !!
केवल भोग्या रमणी रूप नारी का जब रह जाता ! नंगी तस्वीरें निहार, रो उठता स्वंय विधाता !!
जब जब दुःश्सान उतारता द्रुपद सुता की साड़ी ! तब तब युग का कृष्ण तार में तार सिया करता है!!
हर युग केवल कुछ ही दुष्प्रवृत्तियॉ छाई हैं। किन्तु आज तो सारी ही बस एक साथ आई है !!

नारी उत्थान के लिए श्रीमती वर्मा का कवि हृदय सदैव अत्यन्त उद्विग्न रहा है। उन्होंने पुरूषों का आह्‌वान करते हुए नवम्बर 1975 की अखण्ड ज्योति पत्रिका में लिखा है–

" मत रखों अब तो इन्हें अब तो बंदिनी बनाकर, लेने दो सॉस खुली धरती पर आकर !
दो अवसर अपनी प्रतिभा विकसाने का, बनकर सुगन्ध गृह बगिया महकाने का !!
माता सुयोग्य ही संतति योग्य जनेगी, जिसके बल पर कल जगती स्वर्ग बनेगी !
इनको भी युग निमात्री कहलाने दो, अपनी सोयी क्षमताएँ विकसाने दो !!
पुरूषो नारी को ऊपर उठ जाने दो !!

कवयित्री नारियों को भी स्वयं आगे आने की प्रेरणा फरवरी 1979 की अखण्ड ज्योति में देते हुए लिखती हैं कि स्वाबलम्वन तथा स्वाभिमान की भावना जाग्रत कर अब तुम्हें आगे आना है। विवशता छोड़ना है, किसी के आश्रित भी नहीं रहना है, मूढ़ता, दुराचार, अनीति को कुचल कर नव युग निर्माण करने आगे आना है, जिसमें एकता, ममता, समता एवं शुचिता का सर्वत्र प्रसार हो –

" हो गया पुराना यह जग, इसे बदल डालो, मूढ़ता दुराचरण, अनीति को बदल डालो !
एकता बढ़े सबमें ममता, समता आये, शुचिता का ताज पहनकर मानवता मुस्काए !!
ऐसे सद्‌गुण सबके प्राण प्राण विकसाओ ! छोड़ो भ्रम शंकाएं, कुंठित कोई न रहे
जर्जरित किया जिनने तत्व वे मिटा जाओ, फिर नवयुग सृजन हेतु नारी आगे आओ!!

कवयित्री की मान्यता है कि नारी जागरण के बिना युग परिवर्तन सम्भव नहीं। इसीलिए अपने काव्य में बार बार महिलाओं के उत्थान और जागरण की बात वे सदैव करती रही है–

संवेदन–शून्य मरूस्थल में, संजीवन स्रोत स्रवित होगा !

नारी का है सम्मान जहाँ दैवी गुण वहीं निखरते है,स्वर्गिक समृद्धि साथ लेकर देवता वहीं उतरते है !

'नारी–युग' के ही साथ–साथ धरती पर 'स्वर्ग' स्रजित होगा ! धरती पर स्वर्ग अगर होगा .....

(3) श्री बलराम सिंह परिहार की कविता 'तुमने अगणित बार' की पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

अपने स्वाभिमान को बहनो! फिर से आज जगाओ तुम,

भटकी हुई मनुष्य जाति को नूतन राह दिखाओ तुम।

जाग्रत करो गुणों को अपने तन को नहीं सजाओ तुम,अपनी पावन मर्यादाओं को समझो अब न लजाओ तुम।

आशा की नव ज्योति जलाकर मेटो सारी अंधियारी,तुमने अगणित बार देश को जीवन दान दिया नारी।।

(4) श्री शचीन्द्र भटनागर–

1. कवि नारी को पर्दे की संकीणर्ता से मुक्त कराने का संकल्प दिलाते हैंताकि यह इक्कीसवीं सदी–नारी युग में अपने लिए, अपने परिवार एवं समाज के लिए उपयोगी बन सके–

"नारी को पर्दे में रखने वालो! साचो, तुमने उसके प्रति कितना अन्याय किया है ।

ढककर उसे रखा जाता जो निन्दनीय हो, घ्रणा पूर्ण हो, विकृत और अवॉझनीय हो,

मुख तो केवल डाकू चोर ढका करते है, जो सबका सुख–चैन–नींद–जीवन–हरते हैं,

सबको सुख देने को लालायित नारी से, कितना तुमने दूर हरेक समुदाय किया है। नारी को परदे ..

परदे में हर नारी अनुभव हीन बनी है, आत्म–भीरू, आशंकित, दुर्बल, दीन बनी है,

ऐसी नारी से समाज का क्या हित होगा, दे दो उसको मुक्ति, तभी प्रायश्चित्त होगा,

चिंतन खुलने दो, प्रतिभा बढ़ने दो उसकी, बंधन में जिसको तुमने कृशकाय किया है। नारी को .

2. जाग्रत नारियों का समूह गान– कवि का आह्वान है आइए, पाश्चात्य सभ्यता के तीव्र झंझावातों से देश के भावी कर्णधारों को बचाते हुए उन्हें प्रकाश– पुंज बनाने का संकल्प लेने वाली बहनों को हम सब मिलकर अपना स्नेह, समर्थन एवं आशीश प्रदान करें–

" जाग गई पूरे भारत की नारी हैं, हुई संगठित दुर्गा–शक्ति हमारी है।

वन में पति के दुःख में साथ निभाती है, मीरा बनकर वह विष भी पी जाती है,

वह नारी ही तप–बल से पति का जीवन, यम के हाथों से भी लौटा लाती है,

परित्यक्ता होकर भी वह व्रतधारी है। जाग गयी पूरे भारत की नारी है .....

अनपढ़ नहीं रहेंगी हममे से काई, नहीं रहेंगी आत्महीन रोयी–रोयी,

इस समाज से हम फिर से वापस लेगी, युग–युग से जो अपनी गरिमा है खोई,

अब तो हर नारी जलती चिनगारी है। जाग गयी पूरे भारत की नारी है।

3. पुरूष की शक्ति– सृजन के गुरूतर दायित्व के निर्वाह में अब वह मात्र अनुचरी बनकर पुरूष के पीछे चलती नहीं रहेगी। वह प्रगति का आधार बनकर, पुरूषार्थ सहचरी बनकर युग का नेतृत्व करेगी–

" नारियाँ ही कांति का अब स्वर बनेंगी, हम पुरूष की शक्ति है, सहचर बनेंगी ।

बंद घर में दीपकों जैसा हमें अब, स्वार्थ में सीमित न कोई कर सकेगा,

श्रेष्ठता का छीनकर अधिकार हमसे, अब न हमको हीनता से भर सकेगा,
हम बंधे जल–सी न होकर, दिव्यता के, नीर से कल–कल विमल निर्झर बनेंगी ।

4. उच्छृंखलता–रहित जागृति

" कुप्रथा मृतमान्यताएँ त्याग देंगी, नये युग की नारियाँ निर्बल न होंगी,
रूढ़िगत अज्ञान से और अंधता से, मुक्त होंगी, किन्तु उच्छृंखल न होंगी,
क्षुद्र सरिता–सी न उफनेंगी कभी हम, मुक्ति पाकर संयमी सागर बनेगीं ।
अब नये युग के गगन चुम्बीभवन की,नारियॉ ही नींव का पत्थर बनेंगी, ।।
जागरण है यह, न यह स्वच्छंदता है, है न पश्चिम–सी हमारी एषणाएँ,
हम मशालें थामकर आगे बढ़ी हैं, देव संस्कृति से मिली सत्प्रेरणाएँ"

5. नारियों का संकल्प–

" हम बच्चों को अच्छे गीत सुनाएगे, भड़कीले कपड़े न उन्हें पहनाएंगे,
हृदय हीन पश्चिमी सभ्यता सूखी है, करूणा–धारा से उसको सरसाएगे

नारी के भविष्य के प्रति कवि की आशा–

" वही शौर्य की मूर्ति, वही लक्ष्मी बाई थी, वही साहसी दुर्गावती, अहिल्या बाई,
स्वतंत्रता–संग्राम के बीच नारी ने ही तो, जन–जन के मन मे थी नव चेतना जगाई
अनाचार से वही पुनः संघर्ष करेगी , दबी–धुटी वाणी उसकी ओजस्वी होगी,!
मातृ शक्ति अब जागी है तेजस्वी होगी, नई सदी में नारी फिर वर्चस्वी होगी !!

6. कवि का नारी जाति से निवेदन–

" बहनो, गंदे चित्र हटाओं, सबको सत्साहित्य पढ़ाओ,
ऐसा तेज चले अभियान, तुम्हारे हाथों बहनो !
होगा नव युग का निर्माण, तुम्हारे हाथों बहनो !"
न यूँ पश्चिमी सभ्यता के सहारे, मिटें शील सौन्दर्य के गुण तुम्हारे,
बहुत श्रेष्ठ संस्कृति पुरातन हमारी, न अब अनुकरण यूँ करो बिन विचारे !!

(5) डा0 हरगोविन्द सिंह–

1. नारी की गरिमा–

" शक्ति वह अर्धांगिनी, जब देवता पशु को बनाती !
है बहिन, जब दृष्टि नर की जाहनवी–जल से धुलाती;
और कीचड़ में सना जीवन उठाती गोद में जब–
विश्व उसको नमन करता , तब वही माता कहाती ।" "पुष्पांजलि पृ0 68"

2. नारी का शील–

" मुक्ति नारी को मिली कुछ ऐसी कही है, किन्तु अब भी राग माला सब वही है,
कौन कहता है कि चकले मिट गये है? देह तो विज्ञापनों में बिक रही है ! "

3. नारी की मर्म वेदना–

भूल कर अधिकार हमने श्रेष्ठ निज कर्तव्य जाने, दे दिया सर्वस्व अब उपकार जग माने न माने ।
कौन सी वह यातना है, जो अपरिचित या नयी है?प्राप्त कर आहुति हमारी , आग भी सकुचा गयी है;
व्यक्तिगत सुख दुख बचा शायद नहीं कुछ भी हमारा, जन्म से ही मिल रही, उपहार बनकर क्रूर कारा
चेतना दीपक जहाँ तिल–तिल जले तम को पचाने। दे दिया सर्वस्व .....

(4) उर्मिला का आदर्श–

लखन को उर्मिला ने ही महामानव बनाया था, पतिव्रत धर्म का आदर्श जीवन में दिखाया था, ×××
बनाये देवता पति को यही कर्त्तव्य नारी का ,विषय सुख ही नहीं सब कुछ, यही संकल्प पाया था !"

(5) बहनों से–

बहनो, अपनी शक्ति जगाकर जुट जाओ निर्माण में,संस्कृति का सौभाग्य छिपा है नारी के उत्थान में।
जब तक शक्ति तुम्हारी सोई, दिखा सकेगा न राह कोई,
नव युग के संकल्प अधूरे, होंगे सब तुमसे ही पूरे;
सद्विचार हो तुम्ही कर्म में, आत्म तत्व विज्ञान में !संस्कृति का सौभाग्य .....

(6) श्री बाबूलाल जैन 'जलज'– भारत की नारियाँ–

सत् शिव,सुन्दर भावोंकी हम, शान्ति कान्ति चिनगारियाँ !
कर देगी उद्धार देश का, भारत की हम नारियाँ !!
आज रूढ़ियों का करना है, डटकर हमें मुकाबला,
हमें मिटाना है हिम्मत से, ऊँच नीच का फासला !
हम सीचेंगे जीवन जल से, मानवता की क्यारियाँ। कर देंगी उद्धार देश का ×××
नयी रोशनी लायेंगी हम, लायेंगी आकाश नया,
मूढ़ मान्यतायें बदलेंगी, भर देंगी विश्वास नया !
युग–कुरीतियों में रख देंगी, हम भीषण अंगार नया,
त्याग–तपस्या से कर देंगी, हम युग का श्रृंगार नया,
युग निर्माण योजना की हम करतीं हैं तैयारियाँ । कर देंगी उद्धार देश का .....

(7) श्री वीरेश्वर उपाध्याय– आज दुनियाँ भाव शून्य होकर नरक बनती जा रही है, और हृदय हीन मानव हवस का नंगा नाच कर रहा है। अतः महाकाल के स्रजन कार्य में नारी सकिय भूमिका निभायेगी–

" महाकाल को नये सृजन का, नव अभियान रचाना है,
नारी को फिर विश्व मंच पर करतव नये दिखाना है !!
भाव शून्यता ने फिर दुनियाँ को, नर्क बनाने की ठानी,
हृदय हीनता को आगे कर, ध्वंस कर रहा मनमानी,
महाकाल ने सृजन साधना, का अब शंख बजाया है !

इसीलिए सद्भाव मूर्ति, नारी को पुनः जगाया है
मातृशक्ति के सृजन में प्रभु का हाथ बताना है!
नारी को फिर विश्व मंच पर.. "शक्ति के स्वर" पृष्ठ–13

(8) श्रीमती विद्यावती मिश्र– छायावादी काव्य में नारी को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। उसे त्याग, बलिदान, साधना, भक्तिभावना की साकार मूर्ति माना गया है। श्री मती मिश्र ने नारी को अधिक महत्व दिया। "प्रतीक्षा" का गीतांश देखिए जिसमें नारी के बलिदान की भावना को व्यक्त किया गया है। वह अपने प्रियतम की खुशी के लिए पूजा का अधिकार दूसरे को दे देती है–

(1) "इससे क्या यदि तुमने मेरे बदले सुमन चढ़ाये !
बिना पुजा तो रहा न मेरे मन–मंदिर का स्वामी, धूप–दीप अक्षत से पुलकित मेरा अंतरयामी ,
मेरी तो अभिलाषा केवल, मेरा प्रभु मुस्काये। इससे क्या यदि तुमने ....."प्रतीक्षा" पृ0 53

(2) "ज्योति" के "देव तुम मै हूँ पुजारिन" शीर्षक कविता में इन्हीं भावों को देखिए–
देव तुम मैं हूँ पुजारिन !
प्रिय तुम्हारे द्वारा पर की देहलीज, पुजती रही पुजती रहेगी,
कमल–चरणों पर किसी के ऑसुओं की धार बहती ही रही बहती रहेगी,
और मैं पाती रहूँगी तुष्टि प्रतिक्षण–प्रिय तुम्हारे भक्त गिन गिन ; देव तुम मैं–"ज्योति" पृ0 31

(9) श्री शिव शंकर मिश्र के नारी के प्रति सम्मान के भाव अवलोकनीय है–
धन्य तम मुझको करोगी, शीघ्र ही आकर !
है हुआ उपकृत सुखदमय,यह सूचना पाकर !!
पुण्य पावन श्री चरण का है नमन मेरा, छवि तुम्हारी ही संजोये है सपन मेरा,
लग रहा पद चाप के अब आ रहे हैं स्वर ।धन्य तुम मुझको करोगी!!"सुधियों की बरसात" पृ0 23

(10) सुश्री सुरभि कुलश्रेष्ठ की कविता " ओ नारी कल्याणी की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–
बहुत सोचुकी अब तो जागो ओ नारी कल्याणी ! परिवर्तन के स्वर में भर दो, निज गौरव की वाणी !!
बन कौशल्या आज देश को फिर से राम महान दो,और सुनयना बनकर, फिर से , सीता सी संतान दो !
वीर जननि हो तुम संताने अर्जुन भीम समान दो, भारत माता मॉग रही है वापस उसकी शान दो !!
केवल तुम ही बन सकती हो नूतन युग निर्माणी ! बहुत सो चुकी अब तो जागो .....!
बनो अहिल्या बाई अपनी आत्म शक्ति फिर दिखलाओ,लक्ष्मी बाई बन अनीति का,गर्व चूर कर बतलाओ !
दुर्गावती बनो शासन की डोर थामने आ जाओ, सावित्री बन सत्यवान को यम से पुनः छुड़ा लाओ !!
रच दो अपनी गौरव गरिमा की फिर नयी कहानी। बहुत सौ चुकी अब तो जागो.....

11) प्रो0 रामकृष्ण कुलमित्र की कविता ' स्नेह सलिला मातु भगवती' की भाव भरी पंक्तियॉ माता भगवती देवी के प्रति अवलोकनीय हैं–
सरल चित्त,शालीन, सौम्य, निज मातु पिता की प्रिय "लाली"
जप, यज्ञ,योग,तप"मंत्त" राम की, करने वाली रखवाली !!

लक्ष–लक्ष प्रज्ञा पुत्रों का, सृजन–जतन करने वाली !

श्रद्धा, निष्ठा, शुचिता, ममता से रहा न "कर" तेरा खाली !!

माली बन गुरूवर ने "युग परिर्वतन" का जो पोध लगाया !

ताल तरू सा उस पौघे को, स्नेह सलिल से सींच बढ़ाया !!

जीवनधन की सतत सहचरी, सकल परिजनों की माता !

केवल इस जीवन का नही, है जनम जनम का यह नाता !!

भाग्यवान,"भगवती सुमन" हम, एक रहेंगे, नेक रहेंगे !

वसुधा के परिवार बनाने, तापत्रयी हंस हंस के सहेंगे !!

नारी, सारी प्रतिभा लेकर, नव युग का नेतृत्व करेगी !

सुर वाला, सुर जननी बनकर, कलुष रहित मातृत्व वरेगी !! 'युग निर्माण योजना' अप्रैल 1996 में प्रकाशित

(12) डा0 जमुना प्रसाद बड़ेरिया की कविता ' सृजनशिल्पी ! इंद्र धनुषी सात आंदोलन चलाओ' की पंक्तियों में नारी जागरण का संदेश दृष्टव्य है–

" नारियों पर जुल्म करते, बन रहे हो क्यों निरंकुश, दहेज लोभी, चेत जाओ, कूरता पर लगे अंकुश !
सम्मान नारी का करो गौरव स्वयं अपना बढ़ाओ, सृजन शिल्पी ! इंद्र धनुषी सात आंदोलन चलाओ !!

(13) डा0 आर0पी0 कर्मयोगी की कविता 'इतिहास रचेंगे' की पंक्तियॉ अवलोकनीय है–

1. जहाँ नारियाँ पूजी जाती, देव शक्तियाँ मन हरषाती,

कभी न हम अपमान करेंगे, आओ हम इतिहास रचेंगे

पत्नी नही मात्र भोग्या है, महाशक्ति पावन भार्या है,

कुंठाओं से मुक्त करेंगे, आओ हम इतिहास रचेंगे !!

2.बहनों मेंसाहस जागा है,अन्दर का सब डर भागा हैओ दहेज के लोलुप दानव,हो सचेत मानव जागा है
पिछड़ी नहीं रहेंगी बहनेंकहीं न अब शोषण होगा,उनकी उन्नति और प्रगति का, जबरदस्त नारा होगा
जिस दहेज के कारण जलती बहनें सुघढ़ सलोनी, उस दहेज का गला घोंट कर मेटे प्रथा घिनौनी !"

(14) श्री लाखन सिंह भदोरिया 'सौमित्र' की लम्बी कविता कैसी प्रथा चली भारत में, की कुछ पंक्तियाँ देखिए –

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, यह सम्बोधन किसे मिलेगा ?

प्राणों का मुस्काता नन्दन इस धरती पर कहॉ खिलेगा ?

जीवन मरघट बन जायेगा, उस मरघट में कौन रहेगा ?

अमृत–स्रोत सूख जाने पर, रस प्रवाह फिर कहॉ बहेगा XXX

तेरा कर अपमान धरा पर पनपा कौन मही अभिमानी,

पानी भर भर आग लगती, तुम करूणा तुम शक्ति भवानी !

तुम्हीं शान्ति से जी न सकी, कौन जियेगा शान्ति पुजारी,

तुमने विप्लव राग रचाये, फिर जागो हे! कान्ति कुमारी !! "यु0 नि0 यो0" (पा0) 20.1.73

5. (ड.) राष्ट्रीय एवं विश्व बन्धुत्व का भाव :

(1) **राष्ट्रधर्म** :– 'राष्ट्र' शब्द सुनते ही जिस मनुष्य को अपने विराट स्वरूप का अभास नहीं होता, रोमांच से जिसका शरीर प्रफुल्लित नहीं होता और गौरवपूर्ण सम्मान से जिसकी आत्मा पुलकित होकर सुख सीकरों के रूप में व्यक्त नहीं होती, उसमें मनुष्यता के किसी तत्व की कमी ऐसा मान लेने में कोई अनौचित्य नहीं है । 'राष्ट्र' जड़ चेतनमय किसी एक ऐसे भूखण्ड को नहीं कहते हैं जिसके निवासी उस पृथ्वी को अपने निवास तथा आजीविका देने वाली समझकर उसे दूसरों से बचाने में अपने प्राणों की बाजी लगा दे । 'राष्ट्र' वास्तव में उस भावना को कहते है।– जो एक विशिष्ठ सभ्यता, एक मौलिक संस्कृति के प्रति आत्मीयता में निहित रहती है । जिसके नदी, पर्वत, वन उपवन और यहाँ तक कि अरुर बंजर और मरुस्थली भूमि का एक–एक कण, एक–एक चप्पा किसी समभाव मानव समुदाय को श्रद्धा से भरकर आदर से नम्र बना दे । वह भूमि, पृथ्वी वह वसुमती और वह वसुन्धरा अपनी अविभाज्य आबादी के साथ एक राष्ट्र है– एक देश है और उसके अंचल में निवास करने वाले, उसके जीवन तत्व से अमरत्व पाकर पीढी दर पीढी की परम्परा से चलते हुए अपने अस्तित्व को अक्षुण्ण रखने वाले निवासियों को उसकी सम्मान रक्षा में अपने प्राण दे देना ही वह उपासना है जिसे देश प्रेम, राष्ट्र–भक्ति अथवा धर्मधारणा कह सकते हैं।

क्रान्ति वीर **सुभाषचन्द्र बोस** का कथन है– "अपने राष्ट्र को सबसे बड़ा देवता मानना ही सच्चा धर्म है।" राष्ट्र के अस्तित्व से ही हमारे मन्दिरों और उनमें स्थापित देवताओं का अस्तित्व है । जहाँ राष्ट्र नहीं वहाँ यह कुछ नहीं । संसार में पहले **राष्ट्रदेवता** की स्थापना हुई और उसी के वरदान स्वरूप सारी सभ्यता और संस्कृति का जन्म हुआ । हामरा धर्म और हमारी उपासना पद्धति भी इसी राष्ट्रीय सभ्यता की शाखा है । हमारा विश्वास भी हमारी साँस्कृतिक विचार गंगा की एक उन्नत तरंग है।

राष्ट्र की पूजा करना ही सबसे बड़ी पूजा है । किन्तु इसकी पूजा पद्धति अन्य पूजा प्रकारों से सर्वथा भिन्न है । राष्ट्र की पूजा पारस्परिक स्नेह–संगठन और सहयोग से होती है । निर्भीकता सत्यता, साहस और पुरुषार्थ के प्रसाद से राष्ट्रदेवता प्रसन्न होते है। हमें अपने चरित्रिक गुणों के प्रसूनों से ही राष्ट्र देव का श्रृंगार करना चाहिए ।" **1.**

राष्ट्र देवता की रक्षा में जिन वीरो का शीश बलिवेदी पर झुका रहता है, जिसकी पूजा में उनके प्राण प्रसून हथेली पर रखे होते है, उनका देश उनका राष्ट्र देवता संसार में गौरवपूर्ण तेज से मानवता को आलोकित करता हुआ न केवल स्वयं ही अमर रहता है प्रत्युत् अपने आत्म–जातों को भी अमर बना देताहै । युग–युगान्तर से आज तक हम अपने जिस राष्ट्रदेवता के गौरव की रक्षा करते आये है, पराधीनता काल में भी हमने जिसके स्वाभिमान को अवनत न होने दिया और जीवन के लाखों दीपक जलाकर जिसके अस्तित्व को अन्धकार में विलीन होने से बचाया है, उस राष्ट्र को आज स्वाधीनता की स्थिति में किसी द्वारा अपमानित, अपदस्थ अथवा पद–दलित होते देख सकेंगे ऐसी दुराशा किसी भी स्वाभिमानी देश–भक्ति से नही करनी चाहिए । **आचार्य श्री राम शर्मा** लिखते हैं–, "भारत आज प्रबुद्ध ही नहीं सन्नद्ध भी है ।

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– राष्ट्र देवता की पूजा, युग निर्माण योजना (पा0) वर्ष 2 अंक 6

वह किसी भी अमानवीय चुनौती का सामना करने में पीछे न हटेगा । उसका संकल्प है कि जिस प्रकार उसने आदि काल से अब तक मानवता की रक्षा की है उसी प्रकार आज भी न केवल अपनी बल्कि मानव सभ्यता की रक्षा में अपना सर्वस्व प्रदान कर देगा । लाख बिजलियाँ चमकें, बादल गरजें और भूचाल आयें, भारतवर्ष न कभी विचलित हुआ और न आज होगा । उसका सत्य, उसकी धर्म निष्ठा और उसकी अखण्ड राष्ट्रीयता भावना, उसकी रीति–नीति और न्यायप्रियता न केवल उसकी रक्षा करेगी, बल्कि उसे वह अमोध बल प्रदान करेगी जिसके बल पर दुरभि संधियों को पद दलित कर सकता सम्भव हो सके।" 1.

आचार्य शर्मा के मतानुसार "देश पर आज संकट है । उसकी स्वतन्त्रता के शत्रु उसे अपमानित करने और हानि पहुँचाने के लिए प्रयत्न शील रहते है। किन्तु हम अनेक इस कलुषित प्रयत्न को सफल न होने देगें । हम सब अपने कर्तव्यों में लग जाएँ । घर से लेकर रण क्षेत्र तक फैले हुए कर्तव्य विस्तार में से अपने अनुसार काम चुनकर तन–मन–धन से उसमें लग जाएँ । भोजन से लेकर भजन तक हमारे जो भी नित्य–नैमित्तिक कर्म हैं, उनको राष्ट्र देवता को समर्पित करते हुए **राष्ट्र यज्ञ** में अपनी आहुतियां समर्पित करें ।"

राष्ट्रधर्म : मनुष्य जिस राष्ट्र भूमि की गोद में पलता, बढ़ता, विकास करता है, जिसकी संस्कृति से जीवन को सभ्य–सुसंस्कृत बनाता है, जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जिसके अनेकानेक उपकारों–अनुदानों से अनुग्रहीत होता व प्रगति करता है, उस राष्ट्र के प्रति हमारा भी कर्तव्य है कि हम उसके उन्नयन–विकास की बात सोचें और ऐसी रीति–नीति अपनायें जिसमें उसका हित साधन समाहित हो, तभी सच्चे अर्थों में उस राष्ट्र ऋण से उऋण हो सकते है। जो जीवन भर हम पर लदते रहते है

मातृभूमिं को जननी के समतुल्य माना गया है–

"यद्यपि स्वर्णमयी लंका लक्ष्मण ! मे न रोचते।
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।" **–बाल्मीकि रामायण**

जिस देश के हम नागरिक हैं, जिस धरती ने हमें जन्म दिया, साधन सुविधाएँ दी और मनुष्य कहलाने योग्य बनाया, वह भूमिं निश्चय ही **'माँ'** कहलाने योग्य है तभी तो अपने देश का **'भारत माता'** कहकर पुकारते है । **आचार्य श्री राम शर्मा** का कथन है– "जिन कार्यो से युग–धर्म की निर्वाह होता हो, देश प्रगति शीण बनता हो, समाज में एकता–समता, स्नेह, प्रेम की आधारशिला खड़ी होती हो, उन सबको **राष्ट्रधर्म** माना गया है । हर व्यक्ति को ऐसे कार्यो में संलग्न रहकर सेवा धर्म का निर्वाह और राष्ट्र–धर्म का परिपालन करना चाहिए। इसे आपत्तिकाल का सबसे बड़ा पुण्य–परमार्थ माना गया है ।" 2.

राष्ट्रीय एकता एवं विश्व बन्धुत्व का भाव : एकता में ही शक्ति सन्निहित होती है, इस तथ्य को सभी लोग भली–भाँति जानते है । इसे बनसये रखने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने को राष्ट्रीय मशीन का एक प्रामाणिक पुर्जा मानकर चले । बिलगाव की प्रवत्ति को दूर करके केन्द्रीकरण की दिशा में अग्रसर हों । व्यक्तिगत अहंता एवं स्वार्थ परता को घटाने चलने और समष्टि के विकास में भाग लेकर सन्तुष्ट रहने की प्रवत्ति ही हमें

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– युग निमार्ण योजना (पा0) वर्ष 2 अंक 6 पृष्ठ 1
2. आचार्य श्रीराम शर्मा– राष्ट्र चिन्तन प्रथम भाग, पृष्ठ 10

एकता की ओर ले जाएगी । इसी दिशा में चलते हुए वसुधैव कुटुम्बक् का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है ।

मनुष्य को मनुष्य से अलग करने वाली दो दुष्प्रवत्तियाँ उसकी सामुदायिक प्रवत्ति में अभी भी घुसी हुई है । उनमें से एक है संकीर्णता और दूसरी है बिखराव । इन दोनों का एक दूसरे का अनन्य सहयोगी कहा जा सकता है । स्वार्थपरता और अहंता का आग्रह यह रहता है कि अपना स्वतन्त्र ढकोसला खड़ा किया जाए, अपनी कमाई का लाभ स्वयं लिया जाए । अत : मानव को एक दूसरे से अलग करने वाली सभी दुष्प्रवत्तियों औार संकीर्णताओं का अन्त किया जाना चाहिए ताकि लोग परस्पर एकता का अनुभव कर सकें । वर्गभेद उत्पन्न करने वाली हर प्रवृत्ति को निरुत्साहित किया जाना चाहिए । भाषा क्षेत्र, समुदाय, जाति, धर्म आदि के नाम पर इतने विभेद पिछले दिनों खड़े कर दिये है कि उननें न केवल आदमी–आदमी के बीच खाई खोदी है वरन् परस्पर एक दूसरे को विराना, अपरिचित, विरोधी भी बना दिया है ।" प्रगति के इस युग में भाषा की अनेकता तथा विविधता के कारण कितनी ही समस्याओं का सामना करना पड़ता है । विश्व स्तर पर न सही राष्ट्रीय स्तर पर ही सोचें तो अपने देश में इन दिनों कई प्रान्तो में पृथक भाषा भाषी होने के कारण अपने–अपने वर्ग को अलग मानते और राष्ट्रीय धारा से कटकर अपनी विशेष भूमिं, विशेष पहचान बनाने की प्रवृत्ति चल पड़ी है ।

आचार्य श्री राम शर्मा का अभिमत है कि–"राष्ट्रीयता एकता को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि अनेकता को हटाकर एकता का समावेश किया जाए । किसी एक भाषा को, राष्ट्रीय मान्यता दी जाय । सरकारी एवं शैक्षणिक.कार्यो की भाषा एक हो जिससे समूचे देशवासी अपने विचारों का आद–प्रदान कर सकेंगे, साथ ही एक भाषा, एक लिपि के अभाव से ज्ञान के आदन–प्रदान में जो भारी बाधायें उपस्थित हैं, वे भी न रहेगीं ।" 1.

कुछ ऐसे देश है जिन्होने राष्ट्रीय स्तर पर एक भाषा के विकास में सफलता पाई । वहाँ एक ही भाषा जन सम्पर्क का माध्यम है । चीनी भाषा उनमें से एक है। एक अरब से अधिक चीनियों के विचार विनिमय की भाषा चीनी है । यदि हमे मानवीय एकता का लक्ष्य प्राप्त करन है तो संकीर्णता एवं विखराव की प्रवृत्ति को निरस्त करना होगा।साथ ही देश में एक भाषा के विकास के लिए प्रयास करना होगा । ज्ञान की परिधि को विश्व व्यापी बनाने के लिए **एक विश्वभाषा** बनाए बिना काम चल ही नहीं सकता । **एक राष्ट्र, एक भाषा, एक सार्वभौम धर्म** को आधार बनाकर ही हम सर्वतोन्मुखी घनिष्ठ एकता की ओर अग्रसह हो सकते हैं। यह एकता नवयुग का महत्वपूर्ण आधार होगी ।

विश्व व्यापी एकता और मानव भ्रातृत्व को एक मधुर कल्पना के रूप में प्रस्तुत किया जाता है । **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के आदर्श को एक सरस स्वप्न मात्र माना जाता है । समय आ गया है कि इन कल्पनाओं को साकार बनाया जाय । **आचार्य श्री राम शर्मा** के मतानुसार " एकता की उपयोगिता एवं आवश्यक्ता को यदि हम समझते–स्वीकार करते हैं तो हमें उनके आधारों को ढूँढना होगा। पलंग के चारों पायों की तरह एकता के भी चार स्तम्भ होते है – **धर्म , संस्कृति, भाषा और शासन** । विश्व को एकता के सूत्रों में आबद्ध करना हो तो इन चार आधारों में भी सार्वभौम स्तर पर एकता उत्पन्न करनी होगी ।" 2

1–2. आचार्य श्रीराम शर्मा– नवयुग की आधारशिला देगें क्रान्तिदर्शी ऋषि,अखण्ड ज्योति वर्ष 53 अंक 1

राष्ट्रीय एवं विश्व बंधुत्व के भाव विषयक रचनाएः–

1. श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय'

I. राष्ट्र साधना करें, राष्ट की वंदना करें ! विश्व शान्ति का प्रतीक शान्ति का यह राष्ट्र है !!
सृजन क्रान्ति का प्रणीत क्रान्ति का यह राष्ट्र है ! विश्व राष्ट्र के लिए समवेत अर्चना करें !!

II. राष्ट्र साधना

साधना से साध्य नैतिक–राष्ट्र का निर्माण ! कल्पनाओं से न सम्भव राष्ट्र का उत्थान !!
चलो !लिखनें राष्ट्र का इतिहास आज नवीन,राष्ट्र का हर नागरिक हो पुण्य–पात्र–कुलीन !
मानवी आदर्श को करते चलें क्रियमाण !! तपस्वी हो राष्ट्र के निर्माण की हर ईंट !
और सुदृढ़ राष्ट्र–मन्दिर की बनें हर भीत ! नागरिक हो भव्य नैतिक नींव के पाषाण !!

III राष्ट्रीय भावना –

राष्ट्र पूजा बने, व्यक्ति की साधना, जाग जाये अगर राष्ट्रीय भावना
फिर जियेगा नहीं व्यक्ति अपने लिए, खपेगी नहीं शक्ति अपने लिए
स्वार्थ के जाल, फिर वह न बुन पायेगा, स्वार्थ के ही सगों को न सुन पायेगा
रोक देगी उसे राष्ट्र की चेतना । जाग जाये अगर xxx
स्वार्थ की भावना को कुचलते चलो, राष्टीय भाव को शक्तिबल दे चलो,
राष्ट्र यह पूर्व गौरव पुनः पायेगा, फिर से सोने की चिड़िया यह कहलायेगा
स्वार्थ बलि से करें राष्ट्र–आराधना ! जाग जाये अगर .....

IV राष्ट्र का शौर्य–

राष्ट्र का शौर्य बल जब मचल जायेगा, फिर संभाले नहीं वह संभल पायेगा !!
यह सही है कि यह शांति का देश है, मानवीय–प्रेम का दिक संदेश है,
प्रेम के गीत गाती है मीरा यहॉ और भ्रम को मिटाता कबीरा यहाँ
मित्र के संग मिलन की गजल गायेगा। राष्ट्र का शौर्य ..... x x x
न्याय के साथ है, नीति के साथ है, छल कपट रहित प्रीति के साथ है
द्रोह है तो इसे राष्ट्र के द्रोह से, शोषकों के घृणित लोभ से मोह से
घात की चाल कोई न चल पायेगा । राष्ट्र का शौर्य .....

5. जुझारू जवानों को संदेश–

"लड़ रहे है आप सीमा पर अकेले ही नहीं, आपके पीछे खड़ी हे, शक्ति पूरे राष्ट्र की !!
जान को लेकर हथेली पर डटे हैं आप जो, आज उस पर है समर्पित भक्ति पूरे राष्ट्र की !! xxx
दे रही आशीष, माताएँ करोड़ों राष्ट की , राखियॉ तुमको समर्पित है करोड़ों हाथ की !!
भावना संवेदना, शुभकामनाएं कर रहीं, स्वस्तिवाचन कर रही अनुरक्ति पूरे राष्ट्र की !!"

6. संकल्पित जवानी

विश्व राष्ट्र व विश्वशान्ति का चिन्तन जिनको खलता है,

जिन्हें विश्व बंधुत्व न भाता नफरत का विष पलता है
जो आतंकवाद के हामी, प्रस्तुत उन्हें कुचलने को !
संकल्पित हो रही जवानी, माँ की पीड़ा हरने को ।। xxx
दुनियाँ भर पर हावी होने का चढ़ा हुआ जुनून जिनको, खून खराबा तक करने में, दर्द नहीं होता जिनको,
मचल उठी है उन्हें जवानी , पैरों तले मसलने को ! संकल्पित हो रही .....

5. 'प्रज्ञावतार' (काव्य ग्रंथ) में स्वतंत्रता– संग्राम शीर्षक की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं–

कवि की पीड़ा परतंत्र भारत माता के प्रति इन शब्दों में व्यक्त हो उठी –

"भारत माँ रह गयी विलखती,बल वैभव नाकाम हुआ!'जगतगुरू' सोने की चिड़िया वाला देश गुलाम हुआ।
' श्री राम ' ने भी बापू का सत्याग्रह आह्वान सुना !राष्ट्र भक्ति से प्रेरित होकर, सत्याग्रह का मार्ग चुना
लहूलुहान हो गए, लेकिन, झंडा मुँह में दबा लिया !हो बेहोश गिर पड़े, लेकिन, राष्ट्रध्वजा को बचा लिया।"

(2) श्रीमती माया वर्मा की राष्ट्र प्रेम, विश्ववन्धुत्व और जन चेतना विषयक पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

1. " भरो भावना विश्व में ऐक्य की अब, विखर कर सुखी रह सका कोन है कब ?
ध्वजा एक हो–धर्म हो एक सुन्दर, सभी को करो संगठित वीर ! सत्वर ।
चलो राष्ट्र भू की शपथ आज लेकर ।।"

2. ज्ञान बढ़ाकर गतिविधयों में लाओ नित्य नवीनता मिटे–पेट के लिए–किसी के सम्मुख अपनी दीनता।
बनें आत्म निर्भर, हम खुशहाली छा जाये देश में, नजर न आए 'अपना भारत' याचक के परिवेश में !
लिख ले, अपना भाग्य स्वयं हम, अब वे ही दिन आ गये ।"

3. राष्ट्र प्रेम– " राष्ट्र के हित जो कफन बॉधे खड़ा है, है सफल वह जन्म–वह जीवन बड़ा है।
देश मेरे ! तुम सदा ही मुस्कराओ, और मुझको मृत्यु का उपहार दे दो !"

विश्व प्रेम– विश्व है, परिवार हम उसकी इकाई, फिर न क्यों व्याकुल करे पीड़ा पराई?
विश्व मेरे ! तुम सदा ही मुस्कराओ, और मुझको गगन–सा विस्तार दे दो ।"

4. मानव–मानव रहें प्रेम से, यही हमारा ध्येय। बने विश्व परिवार एक–हो मानव जाति अजेय।।
"सियाराम मय सब जग" काहो जाए सभी को ज्ञान,प्राणि मात्र से परम चेतना का कर लें सब भान !!
मन–मन्दिर में भाव की पूजा–आत्मा ही भगवान ।मन का दीप–प्यार की ज्योति जग हो ज्योतिर्मान

3. श्री लक्ष्मीनारायण 'कमलेश' की कविता ' कायर नहीं कहाऊँगा' की पंक्तियॉ देखिए–

भारत माँ के सुत हैं हम तो, निज कर्त्तव्य निभायेंगे!
चाहे प्राण भले ही जायें, कायर नहीं कहायेंगे ।। x x x
भरत पुत्र हैं शेर खिलाते हुलसित होकर आँगन में,सीने पर हैं खड्ग झेलते पुलकित होकर के मन में!
भारत माँ के चरणों में निज जीवन–सुमन चढ़ायेंगे! चाहे प्राण भले ही जाये ....."शंखनाद" पृ0 17

4. श्री चन्द्र प्रकाश 'अज्ञेय' की कविता ' नया इंसान बनायेगें ' की पंक्तियॉ देखिए–

"विश्व हमारा धरती अपनी, विश्व पिता के लाल, नया संसार बसायेगें ।। नया इन्सान बनायेंगें।
" सत्यम, शिवं, सुन्दरम, के स्वर , गूँजेगे आदर्श घरा पर
दूर ग्रहोंतक देश हमारा , जिसकी नहीं मिसाल–विश्व परिवार बनायेंगें ।नया इन्सान बनायेंगें।

धारण करके मंत्र सुमिति का, अपनायेंगे मार्ग प्रगति का,

" प्रेम भाव विस्तार" करेंगे सबको सदा निहाल, नया विस्वास जगायेंगे, नया इंसान बनायेंगे

5. श्री चन्द्रसेन 'विराट' की कविता ' गढ़ फिर कोई दीप नया ' का अंश देखिए–

गढ़ फिर कोइ दीप नया तू मिट्टी मेरे देश की !!

देव भूमि यह जन्म दिया जिसने, अनगिनत अवतार को

ज्योति शिखा बन हरती आई, यह जग के अंधियार को

हमको है विश्वास कि धरती बॉझ नहीं इस देश की फिर से की नया मसीहा , देगी इस संसार को !!

इसकी मिट्टी उड़कर बैठी, सूरज के भी भाल पर !

नित उभरी आवाज यहॉ से , शान्ति, प्रेम संदेश की !! "युग गायन" भाग 1 पृ0 30

(6.) श्री बलराम सिंह परिहार का गीत ' अब अँधेरा रह न पाएगा ' का अंश दृष्टव्य है–

1. मिटायेंगें धरा पर, अब अँधेरा रह न पायेगा !खुशाी से देश सारा , यह हमारा लहलहायेगा !!

प्रगति उनकी , रूकी रहती , भरोसे भाग्य जो रहते , समय आलस्य में खोते , थपेड़े हैं वहीं सहते !!

नहीं पाते कभी मंजिल, कि जो बहते कगारों पर,सफलता है टिकी संकल्प, साहसमय विचारों पर !!

युवक अब देश का कोई, न श्रम से जी चुरायेगा ।

2. राष्ट्र गौरव गरिमा विषयक एक अन्य गीत ' सूरज की आवाज' की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

" उठो सुनो प्राची से उगते सूरज की आवाज , अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज !!

देश कि जिसने सबसे पहले जीवन ज्योति जलाई, और ज्ञान की किरणें सारी दुनियाँ में फैलाई !!

मोह निशा में फँसे विश्व को बंधन मुक्त कराया, भातृ भावना का प्रकाश सारे जग में फैलाया !!

अगणित बार बचाई जिसने मानवता की लाज, अपना देश बनेगा ..... सरताज !!

मानवता के लिए हड्डियाँ तक जिनने दे डाली, माताओं ने करी अनेको बार गोदियॉ खाली, !!

पर न पाप के आगे न उनने अपना शीश झुकाया, चोटी नहीं कटाई जिनने हंस–हंस शीश कटाया

रहा शिवाजी, अर्जुन जैसा निज चरित्र पर नाज ! अपना देश बनेगा ..... सरतजा !!

(6) श्री गोपाल दास ' नीरज '– के निकट धर्म और सत्य का सबसे बड़ा मापदण्ड मानव प्रेम है। इसलिए उनकी कविता व्यक्ति की नही ही समाज की भी है, राष्ट्र की भी है, और विश्व की भी है। वह एक ऐसी वाणी है जो तार–स्वर में गा सकती है–

" काई नहीं पराया, अपना घर सारा संसार है। हमें मिली है प्यास विषमता का विष पीने के लिए,

हम जन्में हैं नहीं स्वयं–हित जन–हित जीने के लिए हमें दी गयी आग कि इस तम में हम आग लगा सकें,

गीत मिले इसलिए कि घायल जग की पीड़ा गा सके, अपना दर्द नहीं अपना हैं सबका हाहाकार है! "

(8) श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' की पंक्तियॉ देखिए–

" धीमी गति को देख, धैर्य साथ नहीं छोड़ो, लेकर क्रान्ति, मशाल शांति का हाथ नहीं छोड़ो !

कुरूक्षेत्र में खड़ा "राष्ट्र" के अर्जुन का रथ है–तुम सारथी सुजान, जिधर चाहो रथ को मोड़ो–

जिससे मिटे कुहासा, उन्मन अर्जुन के मन का– वह"विराट" झाँकी दिखलाओ ,काँपे गात नहीं !

झंझावात अपार रहेंगे हरदम ऐसी बात नहीं !!

(9) डा0 हरगोविन्द सिंह की कविता ' चन्दन है इस देश की माटी' की पंक्तियॉ देखिए–

1. चन्दन है इस देश की माटी, तपो भूमि हर ग्राम है !
हर नारी देवी की प्रतिमा, बच्चा–बच्चा राम है ।। XXX
रही सदा मानवतावादी इसकी, संस्कृति–धारा,
मिलकर रहते मन्दिर, मसजिद, गिरजाघर, गरूद्वारा !!
सागर इसको अर्ध्य चढ़ाता, हिमगिरि करे प्रणाम है। हर नारी .....

2. एक अन्य कविता ' आयेगा अब नया उजाला' की पंक्तियॉ प्रस्तुत हैं–
चहक रहे घरती के पंछी, महक रहा आकाश है,
आयेगा अब नया उजाला, यह हमको विश्वास है !
युग द्रष्टा की निर्मल वाणी राह दिखाती है कल्याणी,
फैला युग संगीत पवन में, भरता सत्य भाव जन–जन में,
ललित कला के मंगल–घट में संस्कृति का उल्लास है ।आयेगा .....
अब न यहॉ अन्याय टिकेगा, नही शील–ईमान बिकेगा ;
सदाचार का मान बढ़ेगा, विश्व प्रगति सोपान चड़ेगा ;
जागृति का अभियान अनौखा बना रहा इतिहास है ! आयेगा ....."अखण्ड ज्योति" अगस्त 1986 में

राष्ट्रीय एकता हेतु आवाहन–
मॉ की सेवा को निकले हम, घर–घर युग संदेश सुनाएं !
सादर सबका आवाहन है, साथ हमारे आप भी आऍ !!
मन्दिर, मस्जिद, या गुरूद्वारा, एक यही है सबका नारा,
अपने को इंसान बनाओ, उज्जवल हो कर्मो की धारा,
यार करे कल आने वाला, कुछ ऐसा जग में कर जाऍ । सादर .....

3. ''वीरों की राह'' शीर्षक से पंक्तियॉ देखिये–
आजाद भगत सिंह, विस्मिल ने भी राह यही अपनायी थी,
हम में ही बूढ़े सीने पर बापू ने गोली खाई थी ;
कुछ और भले ही मत मानो, पर कीमत अपनी पहचानो ;
बलिदान के सॉचे में सच्चे इंसान के सिक्के ढलते हैं
लें दर्द जमाने का उस पर बस हिम्मत वाले चलते हैं ! "प्रज्ञा अभियान" जनवरी 1983

(10) श्री मती विद्यावती मिश्र– 1. कवयित्री ने छायावादी कवियों की तरह मानव को केन्द्र बिन्दु मानकर अपने हृदय में मानव प्रेम, स्वदेश प्रेम, राष्ट्रीयता, विश्व मैत्री आदि के सुन्दर विचारों को अपने काव्य में व्यक्त किया है–

बड़ी विषम इस युग के मानव की परिभाषा ! बड़ी निराशा अपने कर्म–मर्म के प्रति है,
लक्ष्य अलक्षित, दुर्गम पथ है, निर्बल गति है, अन्धकार से भरी लड़खड़ाती दोपहरी,

और प्रलय से पूर्व शान्ति सी खड़ी नियति है, विश्वासों का जीवन–घट अब भी पूरित है,
किन्तु बहुत ही क्षीण सफलता की हैं आशा !! "श्रद्धा" पृ0 10

2. कवयित्री की एक अन्य कविता "राष्ट्र देवता ने तम्हें पुकारा" अवलोकनीय है–

नए स्वरों में राष्ट्र देवता ने फिर तुम्हें पुकारा !
आओ मंगल पथिक पंथ की जड़ता को हर जाओ,
आओ मंगल पथिक तुम्हारा आमंत्रण है, आओ,
जग का हर्षोल्लास विजय के स्वर हो गये पुराने।
जन, मन, जीवन में नवचेतना भरने को आओ,
भेद भाव का कलुष मिटादो तोड़ो भ्रम की कारा !! नए स्वरों .....
हिमगिरि का पौरूष कहता है झुकना हे मिट जाना,
गंगा का संदेश पंथ पर रूकना हे. मर जाना,
प्रिय अतीत का स्वप्न और रूचि वर्तमान की माया–
कहीं हमारी कुण्ठा के हित आये बन न बहाना ,
सत्य साधना का वह व्रत लो जो दुनियॉ से न्यारा, नए स्वरों में .....

3. कवयित्री एक अन्य रचना 'देव तुम्हारी ज्योति अमर हो !' मे विश्व मन्दिर का भाव दृष्टव्य है–

जिससे आदिकाल से व्यापक, जग का अंधकार मिट जाये!
सत्यं, शिवंम्, सुंदर के द्वारा, मानव निज आदर्श बनाये !!
मानवता के पद पखारने को, बहती कल–काव्य लहर हो ! देव तुम्हारी.....
इसका प्रिय प्रकाश यह व्यापक बसुन्धरा परिवार बना दे
कुविचारों के कारागृह को, भव्य मुक्ति का द्वार बना दें
विमल विश्व मन्दिर में इसकी, आभा अक्षय हो, अक्षर हो। देव तुम्हारी.....

(11) डा0 राम स्वरूप खरें की कविता "एक बार फिर लहराओ" की पंक्तियॉ देखिए–

1. आदिकाल से देते आये तुम्हीं जगतगुरू बनकर ज्ञान !
आशान्वित जो उन्हें शान्ति दो , उठो ओर जागो कर ध्यान !!
सभी क्षुब्ध हैं, सभी सशंकित होते जाते आकुल प्राण!
बन दधीचि सर्वस्व दान दे कर दो मानवता का त्राण !!
पावन बन सीचो धरती को जल–पूरित हो घहराओ !
दे अपने प्राणों की बलि भी शरणागत को ठहराओ !!
आज हिमालय की चोटी पर एक बार फिर लहराओ !

2. कवि की एक अन्य रचना "अपनी धरती से प्यार करो" की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं

कल्पनालोक की मृग मरीचिका को छोड़ दो, धरती वालो, अपनी धरती से प्यार करो,!!
मत ललचाई ऑखों से देखो कल्प वृक्ष,– अपनी यमुना तट के कदम्ब क्या कुछ कम हैं!

उर्वशी, मेनका, किन्नरियॉ, सुन्दर परियॉ – क्या ये अनुसुइया, सीता सावित्री सम हैं !!
इन्द्रासन का मत लोभ दिखाओ बहलाकर–छोड़ा है कितनी बार न अब मनुहार करो !!धरती वालो..

"युग–संदेश" पृ0 24

3. एक अन्य कविता "नव युग निर्माण" की पंक्तियों में राष्ट्र का गौरव दृष्टव्य है–

यही देश सबसे पहले जिसने सिखलाया जग को ज्ञान,
प्रलयंकर शंकर ने हंस–हंस जग हित किया गरल का पान!
यही देश जिसमें दधीचि ने स्वेच्छा से की अस्थि प्रदान ,
जिससे बज्र बना दिया, रिपु–दल का हुआ विनाश सुरों का त्राण
गंगा यमुना के अन्तर से उठती रहती सदा हिलोर !
अपनी पावनता दे हरतीं औरों को कल्पष सा घोर !! युग संदेश पृ0 64

(12) इसी क्रम में आचार्य शर्मा ने राष्ट्रकवि श्री सोहन लाल द्विवेदी की कविता 'जाग! जनगण" को अपने काव्य संकलन ' उद्‌बोधन' में महत्व पूर्ण स्थान दिया । पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

1. जाग! जनगण! आज प्रलय विषाण बाजे काल परदे ताल शत फण ! जाग! जनगण!
जाग नवयुग के विधाता ! दीन दुर्बल दलित त्राता !
जाग ओ जनता जर्नादन ! हो छली का दम्भ मर्दन ! जाग ! जनगण !
जाग प्रलयंकर मयंकर ! जाग ! त्रिनयन ! जागशंकर !
भस्म हो अभिशाप युग का ! मुक्त हो गतिरूद्ध जीवन ! जाग ! जनगण ! "उद्‌बोधन" पृ0 47

2. "जय जवान जय किसान" शीर्षक से श्री सोहनलाल द्विवेदी की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

जवानों ने चुनौती शत्रु की स्वीकार की जैसे,
किसानो! यह चुनौती भी तुम्हें स्वीकार करना है,
न लेकर अन्न ओरों का हमें है दासता लेनी,
युगों की दासता का अब तुम्हें संहार करना है,
किसानो ! हों तुम्हारे भी कदम पीछे नहीं रण में,
जवानों के कदम पर ही कदम तुमको मिलाना है,
भले भूखे रहेंगे, हम नहीं हथियार मॉगेंगे
भेले भूखे रहेंगे हम नही उपहार मांगेगे !
किया है देश ने संकल्प लो संसार के आगे, समर की बात है तो, हम समर त्योहार मानेगें!

13. श्री बाबूलाल जैन "जलज" की कविता "नया पैगाम" की पक्तियॉ अवलोकनीय है।–

राष्ट्रदेवता ने भेजा हैं आज नया पैगाम रे,
नयी विचार क्रान्ति करना है, डगर डगर हर ग्राम रे।
आज नया संरक्षण देना खेत और खलियाान को, सबको मिलकर गले लगाना नव जाग्रति अभियान को महल झुके कुछ, कुटी उठे कुछ, समता का व्यापार हो, देश समाज बढ़े कुछ आगे मानवता से प्यार हो कठिन परिश्रम करना सबको है आराम हराम रे। राष्ट्र देवता ने भेजा है .... यु0 नि0 यो0 (पा0) 20.2.77

(14) श्री सीता राम गुप्त की कविता ' राष्ट्र जीवन की जय' की पंक्तियॉ देखिए–

तिमिर चीरती नये क्षितिज पर उगती नयी किरण की जय
अपने जन–गण–तन्त्र राष्ट्र की जय, अपने जन गण की जय
पाकर जिसका स्पर्श प्रज्वलित हो जाये बुझता जीवन,
पाकर जिसकी शक्ति धूल का कण–कण हो जाये चेतन
आत्म घात कर तिमिर गरल पी सोजाये चिर निद्रा में
जिसके इंगित पर मुस्काएँ शत–शत स्वर्णिम नई किरण

उस चिंनगारी और राष्ट्र जीवन के आलिंगन की जय अपने जन–गण..यु0 नि0 यो0 (पा0) 20.8.1973

(15) श्री जयशंकर प्रसाद की कविता "हमारा प्यारा भारतवर्ष" को आचार्य शर्मा ने अपनी पाक्षिक युग निर्माण योजना पत्रिका में सम्मान पूर्ण स्थान दिया । कुछ पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेक।।
वही है रक्त, वही है देश, वही है साहस, वैसा ज्ञान।
वही है शान्ति, वही है शक्ति,वही हम दिव्य आर्य संतान
जिये तो सदा इसी के लिए,यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व,हमारा प्यारा भारत वर्ष।।

(16) श्री मती सुमित्रा कुमारी सिन्हा की पंक्तियॉ देखिए–

आदि शक्ति भारत माता है, शत शत–वन्दन, कोटि नमन ।
हिमगिरि मुकुट धारिणी जननी, गंगा, यमुना कटिबंधन।
काश्मीर–केशर–वसना मॉ, सुरभित मलयाचल चंदन।
हिंद सागर का गर्जन, तव महिमा गायक के चरण। आदि शक्ति .....

(17) श्री विमल राजस्थानी की कविता ' रोको अनाचार की द्रुतगति' की पंक्तियॉ देखिये–

शन्ति–शान्ति चिल्लाने वालो आज कांति की वेला है।
सच पूँछो तो भारत अबं भी रण में निपट अकेला है
नहीं साथ दे पाया नगपति, वृद्ध हो चला कमर झुकी वीहड़ घने जगलों की, रक्षा रेखा भी थकी–थकी।।
भिक्षा–पात्र हमारे कब तक, भरा करेगी यह दुनियॉ ?मॅगनी की तलवारों का, उतरा होता है पानी रे।।
बादल गरजे, बिजली चमके, वरसे रिमझिम पानी रे। ऐसे में कह लें, सुन लें, अपनी राम कहानी रे।।
उगलो आज 'कलम के स्वामी', स्वप्न भंग हो झकझोरो तंद्र में तैरते देश को कांति महोदधि में बोरो
रोको अनाचार की द्रुत गति,भंग करो यह सन्नाटा
कुचलो लिप्सा की नागिन को जिसने जन–जन को काटा
बंदूके जब ठंडी होती आग उगलती हैं कलमें
जन–जन में ज्वाला बिखेरती कविता और कहानी रे। ऐसे में.....

5. (च) सात्विक जीवनयापन की भावनाः—

आचार्य शर्मा जी के मतानुसार गायत्री मंत्र का बारहवाँ अक्षर 'व' मनुष्य को पवित्र व सात्विक जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देता है—

"वसतां न पवित्रः सन् वाहयतोऽभ्यन्तरस्तथा ।
यतः पवित्रताया हि रिजतेऽति प्रसन्नता ।।"

अर्थात् मनुष्य को बाहर और भीतर से पवित्र रहना चाहिए । क्योंकि पवित्रता में ही प्रसन्नता रहती है । पवित्रता में चित्त की प्रसन्नता, शीतलता, शान्ति, निश्चिन्तता, प्रतिष्ठा और सच्चाई छिपी रहती है । कूड़ा—करकट, मैल—विकार, पाप—गंदगी, दुर्गन्ध, सड़न अव्यवसथा और घिचपिच से मनुष्य की आन्तरिक निकृष्टता प्रकट होती है। आलस्य और दरिद्र, पाप और पतन जहाँ रहते है, वहीं मलिनता या गन्दगी का निवास रहता है । जो ऐसी प्रकृति के है उनके वस्त्र, घर सामान, शरीर मन व्यवहार, वचन लेन—देन सब में गन्दगी और अव्यवस्था भरी रहती है । इसके विपरीत जहाँ चैतन्यता, जागरूकता, सुरुचि, सात्विकता होगी वहाँ सबसे स्वच्छता की ओर ध्यान जाएगा ।

पवित्रता एक आध्यात्मिक गुण है । **आचार्य शर्मा** के अनुसार पवित्रता के कई भेद हैं— **1. शारीरिक पवित्रता 2.मानसिक विचारों और भावों की पवित्रता**

3. आर्थिक मामलों की पवित्रता जैसे अजीविका, लेनदेन आदि में शुद्ध व्यवहार श्रेष्ठ गुण समझा जाता है। 4. व्यावहारिक विषयों की पवित्रता ।

आन्तरिक विकारों के दुष्परिणाम :— प्रायः जिस बात से शरीर में विकार तथा विविध व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं उनका प्रधान कारण शरीर का संचित मल है । भोजन बन्द कर देने से रक्त अस्वच्छ और विषाक्त नहीं होने पाता और अनेक रोग उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं रहती । उपवास में शरीर के अन्दर एकत्रित भोजन उपयोग प्रारम्भ हो जाता है ।

व्रतशीलता : सात्विक जीवन यापन हेतु व्रतशीलता आवश्यक है । व्रतशीलता मनुष्य के मनोबल, कौशल और व्यक्तित्व को बढ़ाती, परिष्कृत करती है । विभिन्न रूपों में उसका अभ्यास करना आत्म कल्याण एवं जन कल्याण दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण होता है। सात्विक जीवन हेतु व्रत प्रमुख है—उपवास और व्रत या संयम ।

व्रत :—व्रत अर्थात संकल्प—ब्रह्मचर्य व्रत यानि ब्रह्मचर्य का संकल्प यानि वासना संयम । (अ) ब्रह्मचर्य — शरीर और मनदोनों को मजबूत और स्थिर बनाता है । परिणाम स्वरूप शरीर को 'ओज' और मन को 'तेज' प्रदान करता है ।

उपवास से मानसिक पवित्रता एवं सात्विकता : स्वास्थ्य, आरोग्यता, सात्विकता, दीर्घायु के अतिरिक्त आध्यात्मिक दृष्टि से उपवास का विशेष महत्व है । शरीर की शुद्धि होने मन पर भी प्रभाव पड़ता है । शरीर तथा मन दोनों में परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध होता है, सम्पूर्ण पाप की जड़ अधिक भोजन, विशेष राजसी कामोत्तेजक भोजन करना है । पेट का विवेक, शान्ति, धर्म बुद्धि इन तत्वों को ध्यान में रख हमारे महापुरुष अतीत काल से उपवास को मानसिक एवं आत्मिक स्वास्थ्य के लिए अपनाते रहे है। महात्मा गाँधी के उपवास इसी कोटि में आते हैं । उन्होने जितने भी उपवास किए, सभी लगभग नैतिक ध्येय से किए आचार्य शर्मा ने उपवास करने के दो बड़े लाभ बताए हैं— (अ) पेट को आराम मिल जाने से पाचन क्रिया

सुधरती है तथा अधिक सक्रिय हो जाती है । (ब) भूखा रहने से प्राण ढीला पड़ जाता है । प्राण और मन का जोड़ा है, इसलिए मन भी ढीला पड़ जाता है, उसकी उछल–कूद अर्थात चंचलता कम पड़जाती है । यह स्थिति जप, ध्यान, स्वाध्याय के लिए बड़ी उपयोगी है ।

सादा जीवन उच्च विचार :– मानवी सत्ता शरीर और आत्मा का सम्मिश्रण है । शरीर प्रकृति पदार्थ है । उसका निर्वाह स्वास्थ्य, सौन्दर्य, अन्न–जल जैसे प्राकृति पदार्थों पर निर्भर है । आत्मा चेतन है । परमात्मा चेतना का भण्डागार है । आत्मा और परमात्मा की जितनी निकटता–घनिष्टता होगी, उतना ही अंतराल समर्थ होगा, व्यक्तित्व विकसित–परिस्कृत होगा । शारीरिक प्रखरता और चेतना क्षेत्र जिस अनुपात में बढ़ता है, उतना ही आत्मा और परमात्मा के बीच आदान–प्रदान चल पड़ता है। महानता के अभिवर्धन का यही मार्ग है । इसी निर्धारण पर सच्ची प्रगति एवं समृद्धि अवलम्बित है। आत्मा और पामात्मा को आपस में जोड़ने वाली **उपासना** यदि सच्ची हो, तो उसका प्रतिफल सुनिश्चित रूप से यह होना चाहिए कि जीव और ब्रह्म में गुण–कर्म–स्वभाव की समता दृष्टिगोचर होने लगे । "उपासना निकटता को कहते है। इसके लिए साधक को साध्य के प्रति समर्पण करना होता है । उसके अनुशासन को जीवन नीति बनाना पड़ता है । जो इतना साहस और सदभाव जुटा सके, वही सच्चा भक्त है । भक्त और भगवान की एकता प्रसिद्ध है । भक्त को अपनी आकांक्षा, विचारणा, आदत एवं कार्य पद्धति में अधिकाधिक उत्कृष्ठता का समावेश करना होता है।" **1.**

सदाशयता के प्रति प्रगाढ़ आस्था बनाने में जिसका अन्तराल जितना सफल हुआ, वह उसी स्तर पर **सात्विक जीवन यापन** करता है । सात्विक व्यक्ति का गुण, कर्म, स्वभाव ईश्वर से सहचर पार्षदों जैसा होना चाहिए । जिस ईश्वर भक्ति के प्रतिफलों का वर्णन स्वर्ग, मुक्ति, ऋद्धि–सिद्धि आदि के रूप में किया गया है, उसमें **एकत्व, अद्वैत, विलय, विसर्जन** की शर्त है। साधक भगवान को आत्मासात करता है और उसके निर्धारण, अनुशासन में अपनाने को ही गर्व–गौरव और हर्श–संतोष अनुभव करता है । गुण–कर्म–स्वभाव में, चिंतन और चरित्र में उत्कृष्टता, आदर्शवादिता का समावेश करता है । आत्मशोधन और आत्मपरिष्कार की इस उभयपक्षीय प्रक्रिया को गलाई, ढलाई, घुलाई, रँगाई भी कहते हैं। इन्होने प्रखरता को युग्म भी कहते हैं। सज्जनता और सात्विकता का समन्वय ही आत्मिक प्रगति का सच्चा स्वरूप है । इस प्रगति के साथ भौतिक क्षेत्र के जंजाल, प्रपंच स्वभावतः घटने लगते है और **'सादा जीवन, उच्च विचार'** अक्षरशः चरितार्थ होने लगते है।

उपासना, साधना, आराधना : अन्न, जल, वायु पर शरीर की स्थिरता एवं प्रगति निर्भर है। आत्मा की प्रगति के लिए **उपासना, साधना** एवं **आराधना** तीन आधार चाहिए । **आचार्य शर्मा के मतानुसार– उपासना** अर्थात ईश्वर की इच्छा को प्रमुखता, उसके अनुशासन के प्रति अटूट श्रद्धा, घनिष्टता के लिए निर्धारित प्रक्रिया में भाव भरी नियमितता **साधना** अर्थात जीवन साधना।संचित कुसंस्कारों एवं अवाँछनीय आदतों–मान्यताओं का उन्मूलन। **आराधना** अर्थात–लोक मंगल की साप्रवृत्तियाँ को अग्रगामी बनाने में उदार सहयोग, श्रमदान, अशंदान यह तीनों ही प्रयास साथ–साथ चलने चाहिए । इनमें से एक भी ऐसा नहीं जो आपने

---

1. डा0 प्रणव पण्ड्या– सादा जीवन उच्च विचार, पृष्ठ 38

आप पूर्ण हो । इसमें से एक भी ऐसा नहीं, जिसे छोड़कर सात्विक जीवन यापन को चरितार्थ किया जा सके।

आत्मीयता पूर्ण सद्व्यवहार : सत्विक जीवन यापन करने हेतु एक दूसरे के प्रति सद्व्यवहार करना आवश्यक है । एक दूसरे के प्रति सद्व्यवहार करने से परस्पर स्नेहा सन्तोष और सद्भाव उत्पन्न होता है । प्रेम का उद्गम सज्जनता और सद्व्यवहार से होता है । मन में दुष्टता और दुबुर्द्धि की भावनाएँ रहें तो किसी के प्रति सद्व्यवहार न बन पड़ेगा । नीति और चतुरता के माध्यम से नकली, बनावटी एवं झूठां शिष्टाचार बढ़ता जाता है, वह देर तक किसी को भ्रम मं नहीं रख सकता । उसकी कलई सहज ही खुल जाती है, किन्तु जहाँ स्वाभाविक, सरल एवं सच्ची सद्भावनाएँ रहती है, वहाँ प्रेम और स्नेह अपने आप हो जाता है ।

निकट समीपता एवं सद्भावना से प्रेम की उपज होती है। यही प्रेम ही आत्मीयता का कारण बनता है । परिवार, रिश्तेदारी और मैत्री ये सभी निकटतम रिश्ते है। फिर भी देखा जाता है कि अनेक परिवारों में पिता पुत्र में और भाई–भाई के बीच कितना वैमनस्य दिखाई देता है कि एक दूसरे के साथ रहने में दुःख अनुभव करते हैं। इतना ही नहीं कभी–कभी तो वे एक दूसरे के जान के ग्राहक बन जाते हैं। पति–पत्नी को एक दूसरे का जीवन साथी कहा जाता है, पर न जाने कितने पति–पत्नी ऐसे हैं जिनके बीच आपसी मनो–मालिन्यता इतनी बढ़ जाती है कि इस रिश्ते को तोड़ ही नहीं देते है, वरन् एक दूसरे की जान लेने को भी उतारू हो जाते हैं । रिश्तेदारों में कितने लोग ऐसे होते हें, जो केवल औपचारिकता तक सीमित होते हैं । दुःख तकलीफ आ जाने पर उनसे आँखे फेर लेते है। मित्रों मं अधिकांश मतलब के होते हैं। संकट आने पर वे भी पल्ला झाड़ लेते हैं। जिनसे पहले निकटता थी, आज वेगाने लगते है, आखिर क्यों ? इसके मूल जाने पर पता चलता है कि परिवार, मैत्री, विवाह, रिश्तेदारी आदि समीपस्थ रिश्ते आन्तरिक सद्भावना के अभाव के कारण ही अवास्तविक सिद्ध होते हैं।

कुछ लोग ऐसे भी होतें है, जो कि किसी रिश्ते के बंधन में न बँधे होने के बाबजूद भी केवल मानवता एवं सज्जनता के नाम पर एक दूसरे के लिए बहुत कुछ कर गुजरते है और इतना सद्व्यवहार रखते हैं कि उसकी तुलना में रिश्तेदारी आदि का सम्बन्ध नगण्य सिद्ध होता है । सच्चे प्रेम से उत्पन्न होने वाला सुख निःसन्देह इस संसार का सबसे बड़ा वादान है । वह जिसे भी प्राप्त होता है, इस निश्चय ही बहुत सौभाग्यशाली कहा जाता है । अपने अन्दर दूसरों के साथ आत्मयीता और ममता पूर्ण सद्व्यवहार करने की प्रवत्ति जाग्रत हो तो कोई कारण नहीं कि उसके सम्पर्क में आया हुआ व्यक्ति मिठास एवं आत्मीयता अनुभव न करे । आत्मीयता पूर्ण व्यवहार के अभाव में बनावटी शिष्टाचार आसानी से पहचान लिया जाता है । औपचारिक्ताओं का प्रभाव उतना ही सीमित होता है, जितना कि उथले मन से किये हुए व्यवहार का ।

(ब) ब्रह्मचर्य व्यक्ति जोवन में उभंग जगाकर कर्मनिष्ठ बनाता है, सामाजिक जीवन में सेवाभाव को जाग्रत करता है । इसलिए जो बुढ़ापे को लम्बे समय तक दूर रखना चाहते हैं एवं मन को मजबूत औश्र स्थिर कर जय, ध्यान, स्वाध्याय मं प्रगति करना चाहते हैं, उन्हें केवल गुरूवार एवं रविवर को ही नहीं, वरन् अधिक से अधिक समय तक वसना संयम–इन्द्रिय

संयम करना चाहिए । पति–पत्नी में प्रीति शरीरों की निकटता से नहीं, मनों व हृदयों की निकटता से सिद्ध होती है।

बड़प्पन नहीं महानता :– सात्विक जीवन यापन हेतु जीवन–क्रम हल्का–फुलका होना चाहिए लिप्सा–लालसाओं से लदी जिन्दगी बहुत भारी पड़ती है । महत्वाकांक्षी लोग न चैन से बैठते हैं न दूसरां को बैठने देते हैं। बड़प्पन का नशा प्रचलित नशों में सबसे बुरा है। यदि विलास और वैभव ही सब कुछ रहे और अहंता के प्रदर्शन के बिना चैन न पड़े तो एक बात और भी समझ लेनी चाहिए कि इस प्रयास मे वे सभी संभावनाएँ समाप्त हो जाऍगी जो हर घड़ी प्रसन्न बनाए रखती है और जिनके कारण चेहरे पर मुस्कान और अंतराल में सन्तोष भरे उल्लास को छलकते देखा जाता है । मानवी गरिमा को अक्षुण्ण औज्ञर सुविकसित बनाए रखने के लिए कुछ सोचना और बहुत कुछ करना होता है । इस हेतु जिन साधनों की आवश्यक्ता पड़ती है, उन्हें पड़प्पन का व्यामोह अजगर की तरह निगल जाता है।

औसत भारतीय स्तर का जीवन अपनाएँ :– **'सादा जीवन उच्च विचार'** का सिद्धान्त ऐसा है कि जिसमें जीवन की सार्थकता, सफलता जुड़ी हुई है एवं प्रसन्नता के समस्त सूत्रों का समावेश है । सादगी, मितव्ययिता और बिना विलास वैभव का सीधी–साधा निर्वाह **सत्विक जीवन** की श्रेणी में आता है । इसके लिए औसत भारतीय स्तर का मापदंड मानकर चलना होता है अन्यथा यह पता न चलेगा कि जिस वैभव का उपयोग चल रहा है उव आवश्यक है या अनावश्यक, उचित है या अनुचित । **आचार्य शर्मा** के मतानुसार "बढ़ा हुआ वैभव रुदन के अतिरिक्त और कुछ उत्पन्न नहीं कर सकता उससे दुर्व्यसन और अहंकार समय रूप से बढ़ते है– अधिक जोड़ने की अधिक भोगने की ललक में मनुष्य कुकृत्य तो करते ही हैं उसका खर्च भी सीधे रास्ते नहीं होता, या तो मनुष्य स्वयं उसे दुर्व्यसनों में उड़ाता है या फिर उसे ईर्ष्यालुओं के आक्रमण का शिकार बनना पड़ता है । पारा किसी को पचता नहीं ।"1.

महानता और बड़प्पन में एक प्रकार से शत्रुता है। जहाँ एक के पैर जमेगें वहाँ दूसरे को पलायन करना पडेगा । तथ्य की यथार्थता एवं गंभीरता को समझने वाले **वाजिश्रवा** जैसे **सर्वमेध यज्ञ** रचाते और अपने शरीर के कपड़े तक उतारकर परमार्थ प्रयोजन के लिए दान करते रहे है। ऋषि परम्परा यही है । **बुद्ध, गाँधी** का ही नहीं, प्रत्येक साधु और ब्राह्मण परंपरा अपनाने वालों को अपना प्रथम प्रयास यही से आरम्भ करना पड़ा है । त्याग–वैराग्य की शास्त्रकारों ने श्रेय मार्ग पर चलने वालों के निमित्त पग–पग पर आवश्यकता बताई है, उसमें कही रहस्य है कि जब तक तृष्ण के पिंड न छूटेगा तब तक श्रेष्ठता में न मन लगेगा और न मन जुटेगा । परस्पर घोर मत भेद रखने वाले **अध्यात्मवाद** और **साम्यवाद** को इस केन्द्र पर सर्वथा एक मत देखा जा सकता है कि व्यक्ति को औसत भारतीय स्तर का निर्वह क्रम अपनाने के लिए बाध्य किया जाए ।

श्रम द्वारा अर्जित धन ही ग्राहय : वस्तुतः धन मनुष्य के श्रम, समय और कौशल का ही प्रतिफल होना चाहिए । उसके लिए न्यूनतम अपने लिए और अधिकतम सत्यप्रवत्ति से संवर्द्धन के निमित्त लगाना चाहिए । जिस प्रकार सम्पन्नता उपार्जन के लिए अपना सब कुछ

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– जीवन जीने की कला, भाग 2 पृष्ठ 37

न सही बहुत कुछ नियोजित करना पड़ता है ठीक उसी प्रकार महानता अर्जित करने के लिए भी श्रम, समय एवं मनोयोग का बहुत बड़ा भाग नियोजन करना पड़ता है । पसीने से ही सम्पदा कमाई जाती है या कमाई जानी चाहिए । लाटरी से लेकर जुए–सट्टे का, जमीन में गड़ा, उत्तराधिकार में मिला या उजड्डपन से बटोरा वैभव औचित्य क मर्यादाओं से हटकर होने के कारण आग्रहय एवं अवाँछनीय है । **आचार्य श्री राम शर्मा लिखते हैं**–

"**सादा जीवन उच्च विचार** का राजमार्ग हर किसी के लिए श्रेयस्कर है । उसमें आवश्यकताओं और सुविधाओं पर इतना अंकुश लगाना पड़ता है जिसमें शरीर के लिए मात्र औसत नागरिक जितनी व्यवस्था जुट सके । वैयक्तिक आकांक्षाओ को इतना ही स्वल्य एवं सीमित रखना चाहिए ताकि संसार में जितने साधन है उन्हें मिल बांटकर खाया जा सके ।"**1.**

आलोच्य काव्यों में कवियों द्वारा अपनी रचनाओं के माध्यम से सात्विक जीवन यापन की भावना की अभिव्यक्ति की गई है जिसको उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है–

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– जीवन जीने की कला, भाग 2 पृष्ठ 40

(5च) आलोच्य काव्य में सात्विक जीवन यापन की भावना विषयक रचनाएं–

(1) श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' की कुछ रचनाओं के अंश अवलोकनीय हैं–

1 'साधना संघर्ष है आओ लड़े, आध्यात्मिक क्रान्ति कर आगे बढ़ें।।

जूझना है हमें अपने आप से, छद्मवेशी आस्तीनी सॉप से

बन हितैषी भी अहित ही जो करें,साधना संघर्ष हैं.....

साधना व्यक्तित्व गढ़ देगी अनूठा, कोई संकल्प फिर होगा न झूठा

2. ऐसा जीवन जिये हमारा जीवन ही पूजा बनजाये

पूजन की पावनता जैसी, जीवन में पावनता आये।। xxx

सुनते रहें जिंदगी भर हम संवेदित हो करूण कथायें

अगर हृदय को छूने पायी, दुखी जनों की मर्म व्यथायें

तो समझो वेदांत सुन लिया और सुनी रामायण–गीता

दर्द मिटाने गये किसी का, वह ही सच्चा तीर्थ कहाये।। ऐसा जीवन जियें ....

3. प्यार तो है हमें जिंदगी से बहुत किन्तुं जीना हमें हाय आता नहीं।

क्योकि जिससे जिसे प्यार होता अधिक, वह उसे व्यर्थ यूँ ही गंवाता नहीं

हम मनुज है मनुज की अदा से जियें मानवी संस्कृति संपदा से जियें

यह मनुज जन्म पशुवत बितायें न हम, श्रेष्ठ है तो उसे सभ्यता से जियें

त्याग–तप सादगी जिंदगी की कला, वासना से कला का तो नाता नहीं।। प्यार तो है हमें ...

4. ढर्रे का जीवन–

घिसे पिटे–ढर्रे का जीवन जीने वालो ! ऐसे जीकर जीवन को बदनाम करो मत !

ऐसे लोगों का जीना तो नहीं जरूरी , यूँ जीकर केवल जीने का नाम करो मत !! xxx

तुम मानव हो, मानव जैसा जीना होगा, मानव सा खाना, मानव सा पीना होगा ।

श्रेष्ठ, व्यवस्थित जीवन जीना एक कला है,

अस्त–व्यस्त–मद्यप के कर का जाम बनो मत। घिसे–पिटे .....

वैभव, श्रेष्ठ–जिंदगी की पहचान नहीं है, स्वार्थ लिप्त कोई भी हो, इंसान नहीं है।

मानव जीवन है दैवी–क्षमता का स्वामी,

इसको भोगों का दिन रात गुलाम करो मत। घिसे–पिटे .....

5. जीना– ऐसा जीना भी क्या जीना जैसा सभी जिया करते हैं

यूँ तो जननी जन्म भूमि को पीड़ा सभी दिया करते हे।

पशुवत जीवन जीने वाला मानव ही तो पशु कहलाता जनहित में जीने वाला मानव ही देव तुल्य हो जाता

जिनके करूणा–कंठ सभी की पीड़ा के ऑसू पी लेते वे मानव ही शिव हो जाते जो पर–पीर पिया करते हैं

जो ममता से मर्माहत हो सबके घावों को सहलाते दे सांत्वना दीन दुखियों को उनका दुखिया पन बहलाते

वही 'बुद्ध'कहाते जग में वे ही महावीर हो जाते जो संवेदित–सॉसों में सबके ही, घाव सिया करते हैं

6. 'देव संस्कृति' सिखाती जियें प्यार से। देव मानव बने स्नेह सहकार से।।
देव वे हैं, सदा ही जो देते रहें दूसरों के लिए कष्ट सहते रहें।।
आत्मवत है सभी देव संस्कृति यही, सब हमारे है काई पराया नहीं
विश्व–परिवार है दिव्य संस्कार से, देव संस्कृति सिखाती .....

(2) श्री मती माया वर्मा– के काव्य में सात्विक जीवन यापन की भावना अवलोकनीय है–

1. "जगहित ही जीवन का व्रत हो, मनुज सत्य हित संकल्पित हो
दुष्पृवत्तियॉ रहें न धरा पर, छाये सुखद शिवं औ सुन्दर।
लाना है देवत्व सभी की हो बस ऐसी टेक।।"

2. जुलाई 1979 की अखण्ड ज्योति पत्रिका में कवयित्री युग के वातावरण परिशोधन के लिए संवेदन शील हृदयों का आवाहन करते हुए कहती है कि युग के निर्माण के लिए सात्विक जीवन यापन की भावना रखते हुए स्वार्थ परितः छोड़ें, हमारे प्रत्येक कर्म प्रभु समर्पित हों--

प्रभू समर्पित कर्म हों सारे हमारे, स्वार्थ के आगे कभी कोई न हारे।
दूसरे का हित हमेशा ध्यान में हो, गहन आस्था मनुज की भगवान मे हों।
ललक जागे सद्गुणों के शुभ वरण की, कर सकेगी शुद्धि इस वातावरण की।
धर्म से प्ररित व्यवस्था आचरण की।।

3. मनुष्य को चाहिए कि वह करूणा,ममता, आदि सद्गुणों का विकास कर अपनी भावना शक्ति को निरंतर प्रबल बनाने का प्रयास करता रहे। यही प्रेरणा मार्च 1980 की अखण्ड ज्योति में प्रकाशित कवयित्री की निम्न पंक्तियों को देखिए–

" करूणा" ममता को विकसाकर कोमल हृदय बनाएं। सेवा करें दीन हीनों की स्नेह दया अपनाएं।।
त्याग हमारा धर्म बने, कर्तव्य हृदय की शोभा, प्यार भरा हो इतना उसकी मुख पर छाये आभा।।
संवेदन इतना कि समूचा जीवन ही उज्जवल हो, हो न निराशा कभी, हमारी इच्छा शक्ति प्रबल हो।।
हो शरीर बल चाहे कम पर सुदृढ़ भावना बल हो।।

4. एक अन्न कविता में कवयित्री ने सुखद जीवन बिताने की कला इस प्रकार बताई है–

स्वार्थतज हित दूसरों का साधने ही जो चला है।
पास उसके ही सुखद जीवन बिताने की कला है।। xxx
और फिर हम मनुज हैं, क्यों न हम यह व्रत निवाहें।
चोट लग जाये किसी के तो, जरा हम भी कराहें।।
दर्द कम करने किसी का, साधने ही जो चला है।
पास उसके ही सुखद, जीवन जीने की कला है।।

(3) श्री लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र" की एक रचना की पंक्तियॉ देखिए–

सारे जग का मल घुल, जाये तुम इतने निर्मल बन जाओ

कन–कन में जीवन मुस्काये, उँमगो गंगा जल बन जाओ।।

पावत उर की उड़ेल दो, व्यवहारों को मिले विमलता।

तुम अपनी सौम्यता घोल दो, जीवन भी पा जाये सरलता।।

सफल कुटिलताएं गल जायें इतने प्राण ! सरल बन जाओ। सारे जग का .....

तिनकों जैसे उड़े जा रहे, शब्दों के भारी आश्वासन।

पॉव न टिक पाते निष्ठा के, बहे जा रहे हैं श्रद्धा कण।

बहिर्मुखी युग के प्रवाह में, तुम शाश्वत संबल बन जाओ। सारे जग का.....

(4) श्री गौरीशंकर द्विवेदी "शंकर" की कविता ' अंतरात्मा की शक्ति' की पंक्तियॉ देखिए–

मानव, मानस–मंदिर में निज, जीवन–ज्योति जगाएं;

जय तप संयम, नियमादिक से, उसे बलिष्ट बनाएं।

अन्तर–कलुष–लोभ–तम त्यागें, विमल–बुद्धि–बल पाएं;

परम पवित्र पुण्य–प्रद जिससे, जग–जीवन बन जाये। यु0 नि0 यो0 पा0 20 अप्रैल 1974

(5) डा0 हरगोविन्द सिंह– की कविता ' आएगा अब नया उजाला' की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं–

1 मन मंदिर को स्वच्छ बनाएं सद् विचार के पुष्प सजाएं

प्रेम, एकता, भाईचारा गूँजे नव रचना का नारा।।

2. एक अन्य रचना ' नर से नारायण' की पंक्तियॉ देखिये–

फूलों की शैय्या को तजकर जो काटों का पथ अपनाता

वह मानव ही इस वसुधा पर नर से नारायण बन जाता

तप त्याग भरा जिसका जीवन, में परहित में अर्पित तन–मन धन

जिसके सुख से पुलकित जन–जन, बनता शोषित का संजीवन;

जो दीपक–सा तिल–तिल जलकर, पथ आदर्शों का दिखलाता । वह मानव .....

3. एक अन्य कविता "महान वह, देवता वही है" की पंक्तियां दृष्टव्य है–

दिया निरन्तर जगत को जिसने महान वह, देवता वहीं है।

वहॉ बही हे पवित्र धारा, जो लोक हित में सदा बही है XXX

जहॉ न काई कषाय –कल्मष, वही व्यवस्था है स्वर्ग सुख की ,

वही है सतयुग का बोलवाला, जहॉ मनुज की दिशा सही है,

सशक्त बन निर्बलों को पीसा, हृदय न जिसका कभी पसीजा,

विलास–वैभव अहं अपरिमित ,पिशाच ने गति यही गही है।। "पुष्पांजलि" पृ0 22

4. एक अन्य कविता "वह युग जल्दी ही आयेगा" में कवि ने 'सादा जीवन ऊँचा चिन्तन' को को सात्विक जीवन मापन हेतु आवश्यक माना है–

आदर्श सभी का होगा जब सादा जीवन ऊँचा चिन्तन

ओजस्वी होगा तरूण रक्त तज फैशन का दीवानापन

पशु की श्रेणी में होगा वह जो इन्द्रिय सुख अपनायेगा। वह युग जल्दी ही आयेगा .....

(6) श्री राम कुमार भारतीय की रचना "यह जीवन ऐसा बन जाये" की पंक्तियों में सदाचार युक्त जीवन जीते हुए जीवन को धन्य बना लेने का संदेश है–

प्रभु का ही दर्शन हो सबमें जीवन ही प्रभुमय बन जाये, यह जीवन ऐसाबन जाये।
तन से मन से जो कर्म करें, सबको प्रभु की पूजा मानें।
अपना हमसे कुछ भी न रहे, सब कुछ प्रभु का है यह जानें।।
जैसा प्रभु चाहें हम चाहें, उसकी इच्छा ही मनभाये, यह जीवन ऐसा बन जाये।
निर्लिप्त रहें सब विषयों से, सब कर्मों से, सब भोगो से ।
दुःख –सुख मे समभाव रहें, विचलित न बनें भव रोगों से ।।
ऐसा मन हो जाये अपना, चिर शान्ति हृदय में छा जाये, यह जीवन ऐसा बन जाये।।
दुर्भावों को हम दूर भगा, सद्भावों का सम्मान करें।
ईर्ष्या न किसी से मन में हो, संतोष सुधा का पान करें
हो निर्मल निश्छल बुद्धि सदा, कुविचार कदापि न आ पाये, यह जीवन ऐसा बन जाये।।

(7) डा0 त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल के खण्ड काव्य "अनुताप" में सात्विकजीवनयापन के भाव दृष्टव्य है–

1. यही है जीवन का जग–सार, करें हम सुखका बहु विस्तार
धन्य हो जिससे यह निज देह अन्यथा व्यर्थ बनेगी क्षार।
त्याग दो अपने मन का ताप, करो निज जीवन पर उपकार।
स्वस्थ हो सेवा में संलग्न, तजो निज मन से हीन विचार।" "अनुताप" पृ040,41

2. एक अन्य रचना "विपदा का वरदान" में कवि के भाव दृष्टव्य हैं–
चुभ रहे जो शूल उनको फूल समझो, इस तरह हर वेदंना आसान होगी,
सोचलो प्रतिकूल भी अनुकूल अपने, इस तरह विपदा स्वयं वरदान होगी।
त्याग दो पथ में खड़ी चट्टान बाधा, त्याग दो मन में उठी अपनी विकलता।। (8) श्री मती विद्यावती मिश्र की कविता "जीवन को इस विधि मत बॉधो" की पंक्तियॉ देखिए–

मै कहती हूँ जीवन को इस विधि मत बॉधों , जल के कण ही रूक कर कीचड़ बन जाते हैं
क्योंकि कुभावों के नाले इसमें मिलते हैं नित नूतन अनुभव मज्जन करने आते हैं।
अगति यहॉ पर नाश प्रगति ही सार्थकता है ,युग मानव ने तो तोड़ी मोन मरण की कारा,
शिव ने अपनी जटाजूट जब खोली तब ही , नभ से अमनी पर उतरी सुरसरि की धारा,
पिटी पिटाई लीक मनुज के लिए नहीं है , खोजो –खोजो सर्वसिद्धि का तुम अक्षय धन

(9) श्री शिवशंकर मिश्र की रचना "इस युग का यज्ञ" की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

जल जाती जिसकी वेदी पर जग में व्याप्त विषमता, जीवन सौम्य सरस कर देने की है जिसमें क्षमता
अनाचार अविचार, दुखद व्यापार जहॉ मिट जाते, हिंसा–प्रतिहिंसा के दुर्वल भाव नहीं है आते,
शपथ जिसे निष्काम कर्म की, विज्ञ वही इस युग का।जीवन को जागृति–मय कर दे,यज्ञ वही इस युग का
मन के कलुषित भाव स्वयं ही जलकर के मिट जाये, मन मरूथल में मधु से प्लावित हो सुरसरि लहराये,

मन्दिर–सा व्यक्तित्व सत्य की प्रतिमा को बिठलाये, प्रति आंगतुक जहॉ अतिथि के सम ही आदर पाये
स्वयं पूर्ण करदे आभाव को जब मानस का सृष्टा, भाव–यज्ञ के लिए चिरंतन है कवि मन की निष्ठा।।

युग संदेश पृ0 13

(10) श्री राज बहादुर 'विकल' की कविता 'भारतीय मानवो से' की पंक्तियॉ देखिए–

मत अंगार बिखेरो, बसुधा आज मॉगती पानी । xxx

घृणा द्वेष के बीज न बोओ, वेदों के अनुगामी , पशुता से क्यों प्यार कर रहे, उपनिषदों के स्वामी।
नवल उषा की लाली लखकर, सामगान फिर गूॅजे, हो न कहीं वैषम्य आज मानव मानव को पूजे।
काल–सर्प के फन पर बैठी, संस्कृति अमृत बॉटे, अखिल विश्व चरणों पर झुककर ही बन जाये ज्ञानी

जीवन संगीत पृ0 50

(11) श्री गिरधारी लाल शास्त्री जी की कविता 'आदर्श जीवन की पंक्तियों' मेंसात्विक जीवन के भाव इस प्रकार व्यक्त हुए–

तुम किसे रिझाते रे! निर्जन वन में करके नर्तन मयूर,
कोकिल! नीरव तरू डाली पर स्वर्गीय स्वरों को गाती हो,
ठहरो. ठहरो ओ सरित! – – – हे सूर्य सतत रह जागरूक – – – हे सुमन! तम्हीं बतलादो ना,
बोलो, हॉ शशि ,बोलो बोलो ! – – – सबके स्वर मिलकर गूॅज उठे– जीवन का केवल एक ध्येय,
निष्काम कर्म, निष्काम कर्म, निष्काम कर्म – ही प्रेय श्रेय।
जीवन अनादि जीवन अनन्त संचरण और जागृत जीवन
चेतना पूर्ण संघर्ष, प्रगति उत्थान, विजय सच्चा जीवन ।। "जीवन – संगीत" पृ0 54

(12) डा0 रामस्वरूपखरे की कविता 'धरती से प्यार करो'की पक्तियॉ अवलोकनीय है–

1. अम्बर की ओर न देखो अब टकटकी बॉध– हर घर को अपने श्रम से स्वर्ग बनाओ तुम !
दृढ़ लगन , सत्य–संकल्प , संगठन के द्वारा–स्वर्णिम अतीत को पुनः धरा पर लाओ तुम !!

2. इनकी एक अन्य कविता 'जिओ और जीने दो' की पंक्तियॉ देखिए–

असफलता के सोपानों पर , निर्भय चरण धरो !
संयम , शील–सत्य–श्रद्धा का, उर से वरण करो !!
सदा निशा के मृदुल अंक में पाया पुण्य–विहान ,
गहन अमा ही बनती आई पूनम की पहिचान !
उठो , हृदय में नव आशा ले भूल मोह अभिमान ,
बने 'विश्व–परिवार' प्रेम से कर ऐसा अभियान !
'जियों और जीनो दो' इसका, शुभ अनुकरण करो !
समता के पावन मन्दिर में , नव–उपकरण धरों !!

(13) श्री बलराम सिहं परिहार की रचना 'कान्ति का अध्याय' में भाव पूर्ण पंतियॉ देखिये जो उहोंनें आचार्य शर्मा के सात्विक जीवन पर लिखी है–

आप शंकर बन जहर पीते रहे संसार का , पर न व्रत छोडा कभी भी आपने उपकार का !

दर्द इतना भर लिया था जिन्दगी में आपने ,ध्यान तक आया नही , क्षण भर कभी अधिकार का !xxx
इन्द्र सा ऐश्वर्य पाकर भी सदा वामन रहे , आह तक निकली न मुख से घाव है कितने सहे,
घूँट जीवन भर प्रभो ! अपमान का तुमने पिया , भूल पाते हैं न कितना दर्द दनुजों ने दिया !!

(14) श्री बाबूलाल जैन ' जलज' की कविता 'मानव नहीं देवता' हैवह की पंक्तियों मेंसात्विक जीवन यापन के भाव दृष्टव्य हैं–

सुर , दुर्लभ मानव तन पाकर , जो प्रभु के गुण गाये !
सत्य सरोवर में जिसका मन , सतदल–सा खिल जाये !!
सुनकर करूण पुकार दीन की ,तुरत दौड़कर जाते !अपनी बाहों में फैलाकर ,हंस कर गले लगाते !!
पर सेवा जीवन–सुख समझे , आत्म धर्म पहचाने , मानव नहीं देवता है , जो पीर पराई जाने !!

"अखण्ड ज्योति" 1984

2.कवि की एक अन्य कविता "देव मानवों को उद्‌बोधन" की पंक्तियां देखिए–

ज्ञान मशाल हाथ में लेकर , आगे बढ़ते जाना !
मन मन्दिर में संकल्पों के , पूजा थाल सजाना !!
श्रद्धा , दृढ़ विस्वास तुम्हारा , जीवन का हो संबल !
हृदय सरोवर में खिल जाये , श्रम सयंम के शतदल !!
जीवन का हो लक्ष्य तुम्हारा , सबसे नेह निवाहें ! देव मानवो उठो तुम्हीं पर , सबकी टिकी निगाहें !!

"यु0 नि0 यो0" फरवरी 1976

(15) श्री बेखुद पिहान्वी की रचना "हमे दो मॉ" की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

भौतिक सुख विष से दूर रहें , वह शुद्ध विचार हमे दो मॉ !
हम जीवन पथ अडिग रहें , वह सुख का सार हमे दो मॉ !! xxx
पर–धनकी हमको चाह न हो , पदवी की भी परवाह न हो !
जीवन का हो उज्जवल भविष्य , वह शुचि आधार हमें दो मॉ !! भौतिक सुख .....
हम आस तुम्हारी रखते हैं , मीठे–मीठे फल चखते हैं !
हर तरल वस्तु के माध्यम से , अमृत की धार हमें दो मॉ !!भौतिक सुख .....
मन के भंडार पिघल जायें , मन के विकार सब जल जायें !
वह पूर्ण आत्म बल संयम का,जलता अंगार हमे दो मॉ !! भौतिक सुख .."यु0 नि0 यो0" फरवरी 99

(16) डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी की कविता "युग सहज बदल जायेगा" की पंक्तियॉ देखिए–

बड़े–बडों से सीखा करते बच्चे किया कलाप वैसी उनकी आदत पडती करते जो मॉ बाप
रहें कमल कीचण में जैसे, नीची बात न सोचें व्यसनो से कोसो दूर रहे ,अब अच्छी करनी खोजे ।।

(2) कवि की कृति "ज्ञान–रश्मि" से कुछ पंक्तियॉ "जिये तो" इस तरह शीर्षक से दृष्टव्य है–

सच्चा सुख है त्याग में देत रहे दिन रैन। रही कृपणता अगर तो, केहि विधि पाये चैन।।
छल प्रपंच को छोड़कर निर्मल करे स्वभाव। सीधा मारग गहि रहै, प्रभु की मिले सहाय।।
सभ्य शिष्ट शालीन जो, आत्मभाव भरपूर सुख से जीवन वे जिएँ रहैं कलह से दूर ।।

धोते पहले वसन को बाद रंगाई होइ,। मन मैला भी धोइए, दाग बचिया कोइ।।

सहयोगी बनकर जिए, करें प्रेम विस्तार। स्वारथ में डूबें नही, यह जीवन का सार।।

(16) श्री शचीन्द्र भटनागर का गीत "तुमने क्या छू लिया हमारे मन प्राणों को"की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं–

तुमने क्या छू लिया हमारे मन प्राणों को, हमें यहॉ माटी से कंचन बना दिया ।
हम थे विकल यहॉ पर झुलसाते झोको से, तुमने हमको शीतल चंदन बना दिया ।। XXX

जहॉ स्वार्थ की धूल भरी ऑधियॉ भरी थी वहॉ बहाई तुमने वरूणा की रस धारा ,
तुमसे मिलकर हुआ पूज्य गुरूदेव! अजाने, प्राणों तक का कैसा काया कल्प हमारा ,
धोकर मन की कलुष–कालिमा तुमने हमको , अंजाने गंगा–सा पावन बना दिया।।करिष्ये वचनंतव पृ0 4

2. एक अन्य गीत "सीख नहीं पाये चादर ओढ़ने का ढंग रे" की पंक्तियॉ देखिए

आओ हर कल्मष मन का सेवा से घोलें सबको अपना लें मन से हम सबके होलें,
सेवा है सच्ची पूजा, सेवा सत्संग रे। मैली चादर .....
सबका दुख–दर्द बटाएँ अपना सुख बॉटे, हृदय–हृदय की खाई को हंसकर हम पाटे
किए नहीं तीर्थ चाहें, गए नहीं गंग रे। मैली चादर .....

3. सीधा–सादा सा जीवन हो, अम्बर–सा मन का ऑगन हो,
छल सके न हमको व्यसन कभी जन–जन के प्रति अपना पन हो,
संतोष–सादगी का जीवन सुख साधन अक्षय हो जाए
भगवान! वसो मेरे मन में तुम, यह मन देवालय हो जाए।। "करिष्यें वचनंतव" पृ–143

(17) श्री मंगल विजय की एक अन्य रचना – "युग समाधान ब्राम्हणोंचित जीवन" की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

ब्राहम्णोंचित अगर जिंदगी जी सके, तो स्वयं व्यक्ति भगवान बन जायेगा,
व्यष्टि ही जब समस्या बनेगा नहीं, सृष्टि भर का समाधान हो जायेगा।।
ब्राहम्णत्व लोभ का मोह का त्याग है, ब्राहम्णत्व विश्वबंधुत्व का राग है।
ब्राहम्ण के लिए ब्रम्हमय सृष्टि है,आत्मवत भाव ही ब्राम्हण दृष्टि है।।
भाव कैसे रहेगा घृणा द्वेष का,जबकि अद्वेत का भाव हो जायेगा। ब्राहम्णोंचित..... XXX
हम सभी ब्राहम्णोचित जीवन जिएँ,सादगी की सुधा मुस्कराकर पियें
विष विषमता नहीं विष पिला पायेगी,सृष्टि समतामयी फिर सृजी जायेगी
ब्राहम्ण, आचरण के चरण चल पड़े,ब्रम्ह युग का ही निर्माण हो जायेगा । ब्राहम्णोंचित .....

"आरोग्य एकादशी"शीर्षक से आचार्य शर्मा जी की स्वयं की रचना अवलोकनीय है–

ब्रह्म मुहुरत शयन तजि, करिये प्रभु को ध्यान। सुखों, स्वास्थ्य में होयगी, इससे वृद्धि महान।।
भक्ष्याभक्ष्य पदार्थ को, करि पुनि पूर्ण विचार। कम खाओ, चाबो अधिक, होय न उदर विकार।।
प्राकृत वेगों की कबहुँ, गति मत रोको भूल। कबहु पनप न पाएगी, विविध रोग की मूल।।
सुखद स्वास्थ्य के वास्ते, हॅसिबों है अनिवार्य। शुद्धि वृद्धि हो रक्त की, अरू संचालन कार्य।
नित्य सात घन्टे शयन, कीजै आप अवश्य। न्यूनाधिक सोना बुरा, लाता है आलस्य।।

"प्रज्ञा अभियान" 16 मार्च 2002

5 छ

युवा शक्ति का आह्वान–:

मनोरंजन के नाम पर आज जो कुछ नई पीढ़ी को मिल रहा है, उसे देखकर ऐसा लगता है मनो तीव्र झंझावातों के बीच उसे फॅसाकर अस्तित्वहीन कर देने के लिए कोई भयंकर षड्यंत्र रचा जा रहा हो। धनोपार्जन के उद्देश्य से दूरदर्शन , केबिल टी वी तथा विज्ञापन कलैंडर, पोस्टर एवं चित्रों का प्रस्तुतीकरण , सब कुछ इए प्रकार से हो रहा है जिससे भोगवादी संस्कृति क शिंकजे में नयी पीढ़ी का मन मस्तिष्क बुरी तरह जकड़ता चला जा रहा है। आचार्य शर्मा की युगनमिार्ण योजना के स्वयंसेवी परिजानों का दृढ़ संकल्प इस घने अंधकार में आशा की एक किरण बनकर उभरा है। विश्व भर के युगनिर्माणी आज इसकी आवश्यकता अनुभव करने लगे हैं आइए, भोगवादी संस्कृति के चकव्यूह में फॅसी किशोर –युग पीढ़ी के अभिमन्यु के सहयोगी बनने का संकल्प लें"

आचार्य शर्मा के मतानुसार "यदि हमारे युवक–युवतियॉ अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों के पहनावे, श्रृगार, मेकअप, फैशन, पेन्ट, बुश्शर्ट जीन्स , साड़ियों का अन्धानुकरण करते रहे तो असंयमित वासना के द्वार खुले रहेंगे। गन्दी फिल्में निरन्तर हमारे युवकों को मानसिक व्यभिचार की ओर खींच रहीं है। उनका मन निरन्तर अभिनेताओं एवं अभिनेत्रियों के रूप, सौन्दर्य, फैशन और नाज–नखरों में भॅवरे की तरह अटका रहता है। लाखों करोड़ों न जाने कितने तरूण–तरूणियों पर इसका जहरीला असर हुआ है फिर हम इसे मनोरंजन मानते हैं। "1 आचार्य शर्मा के सूक्ष्म संरक्षण में राष्ट्रव्यापी स्तर पर संचालित "भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से संस्कृत निष्ठ बालप्रतिभायें जीवन साधना के प्रायोगिक चरण में प्रवेश कर रहीं हैं साथ ही विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना का जागरण हुआ है। आज गायत्री परिवार श्रेष्ठ नागरिकों को तराशने के अपने ध्येय पर पूरी निष्ठा के साथ सक्रिय है। ज्ञातव्य है कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा युग निर्माण मिशन का एक अत्यंत लोकप्रिय अभियान का रूप ले चुका है। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा विस्तार और व्यसन मुक्ति का विशेष संकल्पित आन्दोलन भी चलाया जा रहा है।

जिला , राज्य एवं विभिन्न तहसीलों में प्रवीणता प्राप्त छात्र–छात्राओं के नैतिक प्रशिक्षण शिविर एवं पुरस्कार वितरण समारोह एवं सत्कार्य अभिनन्दन के कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न हो रहे हैं " उल्लेखनीय है कि वर्ष 2004 में पचास लाख से अधिक छात्र–छात्राओं की इस परीक्षा में भागीदारी रही और इस माध्यम से मानवीय गरिमा व देव संस्कृति का किशोरों एवं युवाओं को बोध कराया गया। संस्कृति के उत्थान व नैतिक–चारित्रिक विकास हेतु वे संकलपित हुए।

देश का भविष्य संवारने का गुरूतर दायित्व युवा पीढ़ी पर है। वही देश तरक्की कर सकता है जिसकी युवा पीढ़ी के मन में अपने भूतकाल का गौरव, वर्तमान की पीड़ा और भविष्य के प्रति सुनहरे सपने होते हैं। प्रत्येक देशवासी को यह जानना बहुत आवश्यक है कि हम क्या थे और हमें बनना क्या है–

---

1 आचार्य श्रीराम शर्मा– यह बोल रहा है महाकाल, पृ0 17

हम कौन थे, क्या हो गये, और क्या होंगे अभी ।
आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्यायें सभी।। –गुप्त

दुर्भाग्य से हमारी नयी पीढ़ी नहीं जानती कि उसका गौरव पूर्ण इतिहास क्या है। इसमें नयी पीढ़ी का दोष नहीं बल्कि उस शिक्षा पद्धति का दोष है जिसने इन्हें इनकी जड़ों से काट दिया है। यही कारण है कि मानसिक दृष्टि से हम अपना गौरव भूल गए और हमारी दृष्टि पश्चिम केन्द्रित हो गयी। आचार्य शर्मा ने देश की युवा पीढ़ी का आह्वान किया कि शक्ति सम्पन्न होने के लिए आत्म गौरव का भाव जगाएं। अपने साहित्य में अनेक उद्धरणों उदाहरणों तथा प्रसंगों के माध्यम से आचार्य जी ने छात्र–छात्राओं को यह समझाने का प्रयत्न किया कि अपने मातृ भूमि से एवं देव संस्कृति से जुड़े रहें। उन्होने कहा कि हमारा अंग्रेजी से कोई विरोध नहीं है। हम अंग्रेजी सहित फ्रेंच, जर्मन, रसियन या चीनी आदि विदेशी भाषाएं सीखें, यह अच्छी बात है। किन्तु यह बहुत आवश्यक है कि आठवीं तक की शिक्षा मातृ भाषा में दी जाए। "मातृ भाषा से कट जाने के कारण व्यक्ति उस पूरे भाव–जगत से ही कट जाता है जो उसे उसके इतिहास से जोड़ता हैं उसके आदर्श बदल जाते हैं। अंग्रेजी शासन काल में मैकाले द्वारा शिक्षा पद्धति में किए गए षड्यंत्रों का ही यह कुफल है। कि स्वतंत्रता के बाद भी कुछ लोग अपनी प्राचीन और महान संस्कृति तथा अपने गौरव पूर्ण इतिहास का विरोध करते हैं। इन मैकाले पुत्रों के साथ मार्क्स के वे मानस पुत्र भी जुड़ गये हैं जिन्होने हमें राष्ट्रविराधी कार्य किया। इनसे सावधान रहने की आवश्यकता है।"1 आचार्य शर्मा ने युवा पीढ़ी को स्मरण दिलाया कि ज्ञान, विज्ञान, तकनीकि, आदि प्रत्येक क्षेत्र में भारत की मेधा सबसे आगे थी। वैदिक काल से ही हमने सम्पूर्ण विश्व का अपनी बुद्धि के बल पर मार्गदर्शन किया। हम विश्व गुरू कहलाए तो अपनी शक्ति के बल पर नहीं बल्कि अपनी बुद्धि के बल पर। भारत में ही सबसे पहले किताबें लिखीं गईं और बुद्धि और ज्ञान का प्रसार भी यहीं से हुआ– "सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा"–यजुर्वेद 7/14

आज हम ऐसी बहुत–सी चीजों के आविष्कार कर्ता के रूप में पश्चिम को देख रहे हैं, पश्चिम से अभिभूत हैं, जो कभी हमारे ही ऋषियों–मुनियों ने उन्हें दी थी। महान गणितज्ञ सुश्रुत और बोधायन जैसे ऋषियों ने यदि दशमलव और शून्य का ज्ञान न दिया होता तो गणित की पहेलियॉ आज भी अनसुलझी रहती। पिछले एक हजार वर्ष की परतंत्रता के काल खण्ड में हमारे इस गौरवशाली इतिहास को झुठलाने का प्रयास किया गया।

अंग्रेजों ने ऐसे मानसिक रूप से गुलाम लोगों की पीढ़ी तैयार कर दी जो आज भी ऐसे किसी भी प्रयास का विरोध करते हैं जो उन्हें उनके गौरव पूर्ण इतिहास से जोड़ता हो। आचार्य शर्मा ने वर्तमान परिदृश्य को युग संधि काल की संज्ञा देते हुए कहा कि जब समाज व राष्ट्र में व्यापक बदलाव आता है तो अनेक प्रवृत्तियॉ (सत्प्रवृत्ति या दुष्प्रवृत्ति) उफान पर होती हैं। विश्व में आज जो कुछ भी चल रहा है, वह एक व्यापक बदलाव का संकेत है। श्री अरविन्द की भविष्यवाणी का उल्लेख आचार्य शर्मा ने अनेक स्थान पर करते हुए कहा कि सन् 2011 में भारत एक बार फिर विश्व की

1 श्री कुप. सी. सुदर्शन – पान्चजन्य, चैत्र कृष्ण 9, 2060

महाशक्ति बन जाएगा ओर विश्व गुरू के स्थान पर पुनः आरूढ़ होगा। आचार्य शर्मा ने युवा पीढ़ी का आह्वान किया कि भविष्य के इस सपने को मन धारण कर शक्ति सम्पन्न, बल सम्पन्न बने और राष्ट्र को बलशाली, समृद्धशाली बनाने के लिए आगे बढ़ें। भारतीय समाज में व्यापत नैतिक पतन से त्रस्त होकर स्वामी विवेकानन्द ने एक बार कहा था– "मैं भारत में लोहे की मॉसपेशियों और फैलाद की नाड़ी तथा धमनी देखना चाहता हूँ, क्यों कि इन्हीं के भीतर वह मन निवास करता है, जो बज्रों से निर्मित होता है। शक्ति , पौरूष और ब्रम्ह तेज के समन्वय से भारत में नयी मानवता का निर्माण होना चाहिए।"

प्रसिद्ध अमरीकी विद्धान श्री डेविड फ्राली उपाख्य वामदेव शास्त्री का कहना है–भारत की महान ऋषि संस्कृति ने उन्हें सदैव अपनी ओर आकृष्ट किया है। भारत–भूमि पर जन्में ऋषि–मुनियों द्धारा रचें गये वेदों, उपनिषदों के ज्ञान का अध्ययन करने पर उन्होंने पाया कि भले ही आज पश्चिमी जगत विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में श्रेष्ठता के लिए जाना जाता हो, पर उसके पास वह दृष्टि नहीं है जो मानव मात्र को शान्ति दे सके, मोक्ष दे सके। यह दृष्टि केवल भारत ही दे सकता है। आध्यामिक ज्ञान की जो धारा इस ऋषि–भूमि से निकली है, वही सम्पूर्ण विश्व को शांति का मार्ग दिखा सकती है। उन्होंने युवा पीढ़ी का आह्वान किया कि इस ऋषि–संस्कृति का अध्ययन कर उसे नए संदर्भों में विश्व के समक्ष प्रस्तुत करें। श्री फ्राली ने कहा कि "भारत आध्यात्मिक उर्जा का स्रोत है। यह दुर्भाग्य की बात है कि आधुनिक भारत अपने प्राचीन वैभव एवं गौरव के प्रति उदासीन है। हर भारतीय को समझना होगा कि वह अपनी आध्यात्मिक उर्जा के बल पर ही शक्ति सम्पन्न हो सकता है। व्यक्तिगत स्वार्थो की संकुचित परिधि को बढ़ाकर उसका सम्पूर्ण सृष्टि से तादात्म्य स्थापित करने की आध्यात्मिक दृष्टि केवल भारत में जन्मी ऋषि परम्परा ने दी है। इस दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व में अपनी पहचान बनाने के लिए भारत के युवाओं को चाहिए कि वे अपनी प्राचीन ज्ञान परम्परा का अध्ययन करें।"[1] देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह के अवसर पर महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत ने युवाओं से कहा– "प्रिय विद्यार्थियो , आप देश व समाज के उत्थान में योगदान देने के लिए कोई भी मार्ग चुनें, उसके लिए मेरी शुभ कामनाएं हमेशा आपके साथ रहेंगी। आपकी व्यक्गित उपलब्धियाँ आपके लिए ही नहीं, बल्कि इस विश्व "विद्यालय के लिए भी गर्व का विषय बनेंगीं। मैं चाहता हूँ कि आपमें गरीबों के प्रति सहृदयता हो, उनके उत्थान के लिए चिंतन व प्रतिबद्धता हो। मैं समझता हूँ कि इससे हम विकसित राष्ट्र बनाने का स्वप्न साकार कर सकते हैं।"[2]

आचार्य शर्मा के मतानुसार– "युवा से तात्पर्य है साधक युवा–सुसंस्कारिता राष्ट्र, शालीन युवा–श्रेष्ठ राष्ट्र , सेवा भावी युवा–सुखी राष्ट्र, स्वस्थ युवा–सशक्त राष्ट्र एवं स्वाबलम्बी युवा–संम्पन्न राष्ट्र। आचार्य शर्मा के युग निर्माण के युवा सम्मेलनों का उद्घोष भी यही रहा। यही युवा आन्दोलन समूह अपने हाथों में लेंगे एवं व्यसन मुक्ति आन्दोलन से लेकर आदर्श विवाहों, दहेज मुक्ति से जुड़े राष्ट्र व्यापी अभियानों को गति देंगे।[3]

---

[3] आचार्य श्रीराम शर्मा– अखण्ड ज्योति वर्ष 69 अंक दो पृष्ठ 65

[1] पाञ्चजन्य (साप्ताह) से साभार

[2] प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक) में प्रकाशित

नशा उन्मूलन समय की सबसे बड़ी मॉग है। अनन्त सम्भावनाएं होते हुए भी हमारा युवा समुदाय नशे की गिरफ्त में आनें के बाद पंगु हो जाता है। और जवानी में ही बूढ़ा हो जाता है। नशे का यह व्यापार भिन्न–भिन्न रूपों मे सारे देश में फैलता जा रहा है। आचार्य शर्मा के मतानुसार–" हमें ऐसे मरजीवड़े खड़े करने होंगे, जो स्थान–स्थान पर इस सम्बन्ध में जन चेतना जगायेंगे और हर छात्र–छात्रा, युवक–युवतियों को इस आन्दोलन में सम्मिलित करेंगे। असुरता अपना ताण्डव नृत्य दिखाएगी, प्रतिरोध होंगे परन्तु देखते–देखते वातवारण बदलने लगेगा। ढेरों संस्थाएं जब एक साथ मिलकर इस महायज्ञ में जुट जाएंगी तो नशे के व्यापार को मिटना ही होगा।" डा0 प्रणव पण्ड्या लिखते है–" स्वाबलम्बन एवं स्वास्थ्य आंदोलन भी ऐसे हैं, जो तरूणों को ही चलाने हैं। नैकरी पर निर्भर न रहकर अब हमारा युवा स्वदेशी की भावना से स्वाबलम्बन में जुट जाएं, अपनी स्वउद्यमिता के सहारे आत्मनिर्भर बने , अपना स्वाभिमान भी जाग्रत करे एवं राष्ट्रीय स्तर इस चेतना को फैलाये तो कोई कारण नहीं कि वैश्वीकरण, बहुराष्ट्रीयकरण को चुनौती न दी जा सके। ढेरों कार्य ऐसे पड़े हैं, जिन्हें हाथ में लेकर हमारी युवा शक्ति चाहे तो इस देश को आर्थिक महाशक्ति के रूप में वर्ष 2011 तक ही बनाकर खड़ा कर सकती है। आचार्य शर्मा की प्रेरणा एवं पूर्व में दिये उनके मार्ग दर्शन से स्वाबलम्बन के ढेरों प्रयोग रचनात्मक प्रकोष्ठ शान्तिकुंज हरिद्वार एवं ग्राम प्रबन्धन विभाग देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा हाथ में लिए गये है। सारे राष्ट्र में उत्साह पैदा हुआ है। 1

सबसे महत्वपूर्ण व चौंका देने वाली घोषणा आचार्य शर्मा ने अक्टूबर 1975 में की जब उन्होंने देव कन्याओं के जत्थे क्षेत्रों में नारी सम्मेलन हेतु भेजे जाने पर निर्णय लिया व नवम्बर में उन्हें रवाना कर दिया। बन्दनीय माता जी (माता भगवती देवी शर्मा), पूज्य गुरूदेव (आचार्य शर्मा) द्वारा प्रशिक्षित उन तपस्विनी देव कन्याओं के जहॉ–तहॉ ओजपूर्ण व्याख्यान हुए इस प्रकार एक नई क्रान्ति का तूफान आया। सभी ओर महिला नेतृत्व की , युगपरिर्वतन की दुदुभि बजती चली गयी। वह दृष्य देखने योग्य था कि जिस सभा को बड़े–बड़े वक्ता नहीं सॅभाल पाते उसे गेरूआ वस्त्रधारी इन देव कन्याओं और बाद में ब्रह्मवादिनी महिलाओं ने न केवल बॉधे रखा, बल्कि आचार्य शर्मा के चिन्तन को भली भॉति झकझोरा।यह कम नवम्बर 1975से1979 तक और बाद में वर्ष1994 से अब तक निर्वाध गति से चल रहा है। शक्ति पीठों–प्रज्ञापीठों के निर्माण की घोषणा कर आचार्य शर्मा ने क्षेत्रीय कार्यकमों को एक नई दिशा प्रदान की। देव कन्याओं के प्रशिक्षण के साथ त्रैमासिक महिला प्रशिक्षण शांन्तिकुंज में सतत् चलता रहा। अब उसका परिवर्द्धित स्वरूप "युग शिल्पी प्रशिक्षण" के रूप में चलता है जिसमें स्वाबलम्बन , संगीत, कर्मकाण्ड एवं संभाषण कला का बहुमुखी शिक्षण युवाओं को दिया जाता है। विद्यालयों के ग्रीष्मावकाशों में गायत्री तपोभूमि मथुरा में "माता सरस्वती शिविरों" का आयोजन किया जाता है। इन शिविरों में राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान मे युवाओं का योगदान, जीवन जीने की कला, व्यक्तित्व परिष्कार, प्रतिभा संवर्धन, स्वास्थ्य संवर्धन एवं योगासान प्राणायाम का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

---

1 डा0 प्रणव पंण्ड्या– अखण्ड ज्योति, वर्ष 69 अंक 2 पृ0 65

भविष्य तरूणाई का है, युवाओं का है, हर उस व्यक्ति का है, कार्यकर्ता का है जिसके अन्दर वासन्ती उमंग है। हम अपने अन्दर से उसी तरूणाई को जगायें एवं सक्रिय, स्फूर्तिवान, प्राणवान बनकर सारे पिछड़ेपन को , निषेधात्मक चिंतन को प्रवाह को उखाड़ फेंके, यही युवाओं के लिए आचार्य शर्मा आह्वान है।

आलोच्य काव्यों में युवा शक्ति का आह्वान विषयक रचनाएं–

1. मंगल विजय 'विजय वर्गीय' की आत्मबोध शीर्षक से पंक्तियॉ देखिए–

नौजवान देश के, शक्तिमान देश के। प्राणवान देश के, कीर्तिमान देश के
तुम अतीत के शिखर, वर्तमान हो प्रखर। और तुम भविष्य के, शिल्पकार हो सुघड़।
राम काज के लिए, हनुमान देश के। नौजवान देश के .....
ऋषियों के ब्रह्मानन्द, विवेकानन्द, दयानन्नद मैत्रेयी अपाला घोषा के मधुर छन्द।
तरूण तरूणियो तुम हो , कीर्तिमान देश के। नौजवान देश के .....
रामकृष्ण महावीर, गौतम गॉधी सुधीर। गुरूनानक मीरा तुम रविदास व कबीर।
तुम शिवा प्रताप, भगत सिंह शान. देश के। नौजवान देश के .....

"जाग उठी तरूणाई" पृ0 23

2. श्री बलराम सिंह परिहार– राष्ट्र को जीवन दो भगवान।

देश भक्ति की ज्योति जगा दो, धर्म धाम का द्वार दिखा दो।
कर्मवीर बनना बतला दो, कर दयालुता दान। राष्ट्र को .....
बाहों में हो कर्म प्रतिष्ठा, श्रम की सभी जगह हो।
फैले ज्ञान प्रकाश चतुर्दिक ऐसी शुर्भ सुबह हो।
रहे न कोई जगती तल पर लम्पट कोधी कामी।
बने शुभ्र संसार हमारा हे प्रभु अन्तर्यामी। सहगान कीर्तन, पृ0 46

3. श्री "कमलेश" सक्सेना– प्रवासी रूक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर।

कदम हटते नहीं पीछे, पहुॅचते है किनारे पर। X X X
न मुड़कर देखते पीछे, कठिन मंजिल सतत् साथी,
जिन्हें कुछ काम करना है, नहीं मिटते मिटाने पर। प्रवासी .....
यहॉ इतिहास कहता है, चढ़ादो प्राण जनहित में, सफलता तो सदा मिलती, स्वंय को ही मिटाने पर।
अचल निज ध्येय पर होकर मिला सम्मान था हमको, कमर कस ली अरे हमने, नया गौरव जगाने पर।।

4. श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' –

हठी समय को बनो भवानी, नचाओ इंगित से आग पानी ,
तनी भृकुटियों से कान्ति जागे, कदम–कदम पर लिखो कहानी।
ओ देवी दुर्गे! तुम्हीं हो शक्ति, तुम्हारा गौरव बुला रहा है,
उठो–उठो हे मातृ शक्ति, समय प्रभाती बुला रहा है।

5. श्री देवी चरण शर्मा– इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर , कुछ नाम लिखाए जायेंगे।
जो महाकाल के न्यौते पर, कुछ नया सृजन कर पायेंगे। X X X
कर्त्तव्य बुंलाता है सबको उनको जिनमें कुछ जीवन है।
यह समय चुनौती देता है, स्वीकार करें जिनका मन है।
अँधियारा चाहे जितना हो, दीपक को बुझा नहीं सकता,
छोट से हैं तो भी दीपक ही विजय अन्त में पायेंगे। इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर .....

6. श्री वीरेश्वर उपाध्याय–
मॉग रही है देव संस्कृति, निष्ठावानों से कुर्बानी।
देव भूमि की शपथ उठाकर–आगे बढ़ो वीर बलिदानी।
शीश चढ़ाकर कभी सपूतों ने माटी का कर्ज चुकाया,
भेंट चढ़ा निज पति–पुत्रों को महिलाओं ने फर्ज निभाया।
आज मॉगता महाकाल वश समय तनिक सा प्रतिभाओं से
स्वार्थ घटा परमार्थ साधना को जोड़ें निज क्षमताओं से ।
समय और श्रम से रचनी हैं , नये सृजन की नई कहानी। देव भूमि की शपथ उठाकर .....
"क्रान्तिगीत" पृ0 34

7. श्री शिवशंकर मिश्र–
कल तो मॉ ने दिया निमंत्रण बन्धु तुम्हें बलिदान का।
महायज्ञ प्रारम्भ हो गया आज नवल निर्माण का ।
जीवन के अभिनव स्वप्नों को भू पर तुम्हें उतारना,
पावन स्वर्ग गंगा लाने को करो भगीरथ साधना,
कल्पबृक्ष बोओ तुम जिसमें सर्व सिद्धि का फल लगे।
राग प्रभाती का गाओ जिसमें प्रसुप्त जीवन जगे
अपनाओ पथ तुम जन–जन के हित का जग कल्याण का। महायज्ञ प्रारम्भ हो गया .....

8. श्रीमती विद्यावती मिश्र– "हार मत मानो" से–
औरों के मत को मत निजमाप बनाओ, तुम दिव्य शक्ति हो जो चाहो बन जाओ।
है कुरूक्षेत्र सम्मुख तुम बाट न जोहो, फूलों–शूलों पर चरण बढ़ाते जाओ।
अपराजित तो तुम रहे सृष्टि के कम में, तुम जन्म मृत्यू के स्वामी ओ दीवानों!
यह हार–जीत तो बस मन की भाषा है, है हार निराशा और विजय आशा है,
म्रियमान पार्थ जग गीता गूँज रही है, बस पान्चजन्य अन्तर की अभिलाषा है।
है कर्म योग संदेश आज के युग का, कर्त्तव्य यहॉ का यही कि धनुसंधानों।
युग नौका कर्णधार जो है बलिदानी, अभिनन्दन करती है उसका युग वाणी।। X X X
युग निर्माण योजना, 22 मार्च 1965

9. श्री मती माया वर्मा– एक बार फिर भारत भू की जाग उठी तरूणाई।

हुई कान्ति प्रारम्भ विश्व में जो नव जागृति लाई।।

जब–जब बढ़ी अनीति धरा पर दुराचार फैला है।

जब–जब मानवता ने पशुता का नाटक खेला है।

तब–तब तुमने ही बढ़कर दीवार अनय की तोड़ी।

दिशा हीन हो गई मनुजता की धारा है मोड़ी।

मानवता को व्याकुल करती, दानवता सदा मिटाई। हुई कान्ति प्रारम्भ .....

10. डा0 हरगोविन्द सिंह – 'प्रतिभाओं की दशा'

मूल्यवान नओ रक्त माटी–मोल दिसाहीन, कहूँ फिरे दारू पिएँ कहूँ गांजौ सुलगायँ,

जुग की पुकार कर अनसुनी, रससिद्ध– कामिनी के अंक–बीच मूड़–माथौ चिपकायँ।

लखा रहे सुरलोक, धरम के ठेकेदार, नरलोक नकर भी , एकी नइँ कछू भायँ,

देश की, समाज की, न पीर रंच व्याप रहीं, कैसे हिए प्रतिभा के कैसे मन–बुद्धि आयँ!

11. श्री शचीन्द्र भटनागर की कविता का एक अंश देखिए–

आज कमर कसकर आए, दुनियॉ के युग निर्माणी,

बहुत हो चुकी, और न होने देंगे हम मन मानी।

जो किशोर–मन को भड़काए, नहीं मनारंजन है, जो अपराधों को उकसाए नहीं मनोरंजन है,

लूटपाट–हिंसा–हत्याएं इसीलिए होती हैं, दुराचार की घृणित कियाएं इसीलिए होती है,

यही महामारी समाज की जड़ से हमें मिटानी। बहुत हो चुकी .....

घर–घर जो अश्लील चित्र हैं उन्हें जलाएंगे हम, बच्चों को भड़कीले वस्त्र नहीं पहनाएंगे हम,

बुक स्टाल पर जहरीला साहित्य न बिकने देंगे, मानवीय मूल्यों के आगे इन्हें न टिकने देंगे,

कहीं न रहने देंगे कोई कुत्सित कथा–कहानी। बहुत हो चुकी .....

12. राम कुमार भारतीय की एक कविता की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

फिर से हमारा भारत सरताज हो जहॉ का। उठो जवानों ऐसे, कुछ काम कर दिखाएं।

जन्नत से भी हो बढ़कर, आलय यहॉ हमारा, बन जायें सब फरिश्ते, ऐसा कदम उठाऐं।

है सब बुराईयों की जड़, एक खुदपरस्ती। उसको खुदापरस्ती में, गर्क कर डुबोएं।

अपने वतन के खातिर, कुर्बान होंगे हम सब। 'पागल' का ख्वाब है यह, सच करके हम दिखाएं

युग निर्माण योजना, 7 अप्रैल 1965

राष्ट्र कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी की निम्नलिखित पंक्तियॉ युवाओं को राष्ट्र सेवा तथा राष्ट्र के प्रति भक्ति एवं निष्ठा की प्रेरणा देती हैं जिन्हें आचार्य शर्मा ने अपने काव्य संकलन में प्रकाशित किया–

"नहीं हम चन्द टुकड़ों के लिए सम्मान बेचेंगे। नहीं हम चन्द टुकड़ों के लिए विश्वास बेचेंगे।

नही हम चन्द्र टुकड़ों के लिए ईमान बेचेंगे। नहीं हम चन्द्र टुकड़ों के लिए इतिहास बेचेंगे।।"

षष्ठ अध्यायः

आलोच्य काव्यों में धार्मिक सद्भाव

(क) आत्म चिंतन

(ख) जीवन दर्शन

(ग) स्वर्गावतरण की कामना

(घ) धर्म और कर्तव्य की महत्ता एवं प्रतिष्ठा

(ड.) नैतिक एवं साँस्कृतिक उत्थान और धर्म

(च) आध्यात्मिक तत्व चिंतन

(छ) पर्वो एवं संस्कारों की धार्मिक परम्परा

आचोच्य काव्यों में धार्मिक सद्भाव :

6. सर्वधर्म समभाव :– धर्म शब्दों में नही आचरण से प्रस्तुत किया जाता है । महाभारत में धर्मराज युधिष्ठर ने इसी वाक्य का उल्लेख किया था, 'सत्यम्वद', 'धर्मम्चर' ! कर्मफल, संयम, समाचार, प्रेम, परोपकार, उदारता, कर्तव्य पालन जैसे अनेक विश्वासों का सौर–मण्डल धर्म रूपी सूर्य के इर्द–गिर्द घूमता है । धर्म अध्यात्म का परिष्कृत दृष्टिकोंण अपनाने और धार्मिक जीवन जीने से परलोक में सद्गति तथा आत्मा को शान्ति प्राप्त होती है । व्यवहारिक जीवन में इसकी महती आवश्यकता है। व्यक्ति को सुखी और समाज प्राप्त होती है। व्यवहारिक जीवन में इसकी महती आवश्यकता है। व्यक्ति को सुखी और समाज को समुन्नत बनाने में इसी की महती भूमिका है। सच मायने में धर्म ही जीवन की धुरी है।

धर्म और सम्प्रदाय : धर्म शब्द को इन दिनों प्रायः सम्प्रदायों के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है । जबकि दोनों भिन्न है । सम्प्रदाय उपासना विधानों, कर्मकाण्डों और रीति–रिवाजों का समुच्चय है । प्रथा परम्पराएँ इन्ही में सम्मिलित होती है। कितनी ही मान्ताएँ भी अपने–अपने रूप में इनके साथ जुड़ी हैं। इनके लक्षणों में भिन्नता रहती है। क्योंकि वे देश, काल, स्थान, पात्र क्षेत्र, परिस्थिति आदि पर अवलम्बित होती है। अनेक धर्म इसी रूप में दृष्टि गोचर होते हैं । ये भिन्नताएँ अपने अनुयायियों को कट्टर रहने के लिए प्रेरित करती हैं। फलतः उदारता, सहिष्णुता का परस्पर ताल–मेल न बैठने से व्यक्ति आपस में टकराते हैं, अपने पक्ष को सत्य और दूसरे के पक्ष को असत्य ठहराते है और विग्रह के बीज बोने लग जाते है ।

धर्म के लक्षण : धर्म की व्याख्या भिन्न–भिन्न तत्वदर्शियों ने भिन्न–भिन्न प्रकार से की है । शास्त्र में धर्म के दस लक्षण बताये गये हैं–

"धृति क्षमा दमो अस्तेयं शौचं इन्द्रिय निग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ।।" .....

धैर्य, क्षमा, मन को वश में करना, चोरी न करना, पवित्रता, इन्द्रियों पर विजय, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध न करना– ये धर्म के दस लक्षण हैं । **आचार्य शर्मा ने** आज की परिस्थिति में जिन दस लक्षणों को मानव धर्म की परिधि में लिया है वे इस प्रकार हैं–

"1. सत्य 2. विवेक 3. संयम 4. कर्तव्य पालन 5. अनुशासन
6. व्रतधारण 7. स्नेह–सौजन्य 8. पराक्रम 9. सहकार 10 परमार्थ ।"1.

गहराई से विचार किया जाय तो कोई धर्म इन दस लक्षणों से हटकर नहीं है तो एक दूसरे मतावलम्बियों के बीच यह वैमनस्यता, दुर्भावना, झगड़े क्यों ? **आचार्य शर्मा** के मतानुसार "होना तो यह चाहिए कि मानव किसी भी धार्मिक मान्यता को अपनाये किन्तु वह आपस में एक दूसरे की भावना को सम्मान दे । स्नेह और सहकार बना रहे तो जीवन में कटुता का अन्त होगा और प्रत्येक अपनी –अपनी विधि से धर्म को जीवन में उतारेगा । हमने अध्यात्म को धर्म से जोड़ दिया, धर्म को सम्प्रदाय से जोड़ा और उसका कर्ताधर्ता यह महत्वाकांक्षी मनुष्य बन बैठा जो महत्वाकांक्षाओं के कारण झगड़े करता है ।"

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– धर्म के अभिनव दस लक्षण, पृष्ठ 3

"आचारः प्रथमों धर्मः, धर्मस्य प्रभुरच्युतः"

अर्थात आचार को ठीक र खना मानव मात्र का पहला धर्म है तथा धर्म परायण एवं धर्म पालक व्यक्ति के वश में भगवान रहते हैं । इतना ही नहीं **वृत्तस्तु हतोहतः**– अर्थात वृत्त चरित्र से हीन तो हीन (पतित) ही है, बस समझो की नष्ट ही हो चुका है ।

आचारवान व्यक्ति की वाणी में एक प्रकार का जादू होता है उसके वचन अकाट्य एवं वेदवाक्य माने जाते है। जिनके चरित्र का सम्यक निमार्ण हो चुका है, उन जगत वन्द्यय सच्चरित्र महापुरूषों के मुखार बिन्दु से जब कहीं सदउपदेश रूपी पीयूष वृष्टि होती है, तो उसका पान कर दूषित प्राणी के हृदय का भी अज्ञान मल तुरन्त धुल जाता है ।

सभी धर्मो क आधार सही आचरण और व्यवहार पर निर्भर है जो किसी भी हाल में परनिन्दा की आज्ञा नहीं देता । **आचार्य शर्मा** का मानना है कि धर्म के सही स्वरूप को समझकार **सर्व पंथ** सम्भाव के सिद्धान्त को जीवन में धारण करना ही श्रेयस्कर है। उन्होनें एक स्थान पर लिखा है–"धर्म सम्प्रदायों के नाम पर भाषा, जाति प्रथा, क्षेत्र आदि के नाम पर जो कृत्रिम विभेद की दीवारें बन गई हैं, वे लहरों की तरह अपना–अपना प्रदर्शन भले ही करती रहें, पर वे सभी एक ही जलाशय की सामयिक हलचल भर मानी जाएँगी । पानी में उठने वाले बबूले थोड़ी देर उछलने–मचलने का कौतूहल दिखाते हैं, इसके बाद त्वरित ही उनका अथाह जलराशि में विलय, समापन हो जाता है। मनुष्य को अलगाव और बिखराव में बाँधने वाले प्रचलन इन दिनों कितने ही पुरातन–शास्त्रसम्मत अथवा संकीर्णता पर आधारित होने के कारण कितने ही प्रबल प्रतीत क्यों न होते हों, पर अगले तूफान में इन बालुई घर–घरोंदों में से एक का भी पता न चलेगा । मनुष्य जाति अभी इन दिनों भले ही एक न हो, पर अगले ही दिनों वह सुनिश्चित रूप से एक बनकर रहेगी ।" 1. आचार्य जी आगे लिखते हैं–

आरम्भिक दिनों में सर्व–धर्म समभाव, साहिष्णुता, बिना टकराए अपनी–अपनी मर्जी पर चलने की स्वतंत्रता अपनाए रहना ठीक है, काम चला अनीति है। अन्ततः विश्वमानव का एक ही धर्म 'मानव धर्म' होगा । उसके सिद्धान्त चिंतन चरित्र और व्यवहार के साथ जुड़ने वाली आदर्शवादिता पर अवलम्बित होगें । विश्वधर्म की बात आज भले ही सघन तमिस्रा में कठिन मालूम पड़ती हो, पर वह समय दूर नहीं जब एकता का सूर्य उगेगा और इस समय जो अदृश्य एवं असम्भव प्रतीत होता है, वह उस वेला में प्रत्यक्ष एवं प्रकाशवान हो कर रहेगा । आचार्य शर्मा ने समस्त धर्मो के प्रमुख सिद्धान्तों को अपनाकर मानव धर्म की व्यावहारिकता पर बल दिया जिसे रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट किया गया है । आचार्य शर्मा के कथन की पुष्टि संत विनोबा के इस कथन से होती है– "धर्म का निरन्तर शोधन होता रहे, शुद्धि होती रहे। हमें देखना है कि हिन्दू उत्तम हिन्दू बने, ख्रिस्ती उत्तम ख्रिस्ती बने, ऐसा होगा तो हमारा काम बन जायगा। किसीको धर्म बदलने की बिल्कुल जरूरत नहीं। बल्कि धर्मान्तरण की प्रक्रिया बिल्कुल गलत है। धर्मान्तरण की बात में मेरा कतई विश्वास नहीं। जगह-जगह ख्रिस्ती-धर्म का जिस प्रकार प्रचार होता है, उससे ईसामसीह प्रसन्न होते होंगे, ऐसा मैं नहीं मानता।[2]

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– इक्कीसवीं सदी का संविधान, पृष्ठ 89

2. संत विनोबा– विज्ञान युग में धर्म, पृष्ठ-59

हिन्दु धर्म की उदारता और महानता :– संसार में मुख्यतः दो प्रकार के धर्म है 1. कर्मप्रधान 2. विश्वास प्रधान। हिन्दु धर्म, कर्म प्रधान है । जैन, बौद्ध और सिक्ख ये तीनों ही हिन्दु धर्म के अन्तर्गत है। इस्लाम, ईसाई और यहूदी धर्म विश्वास प्रधान है ।

हिन्दु धर्म में यही उदारता है कि सबको निज विश्वासानुसार पूजा एवं उपासना की स्वतन्त्रता है परन्तु सदाचार और सद्व्यवहार का बन्धन है । हिन्दु धर्म लोगों को निज विश्वास के अनुसार ईश्वर या देवी–देवताओं को मानने व पूजने की और यदि विश्वास न हो तो न मानने–न पूजने की स्वतंत्रता देता है। जबकि अन्य धर्म ऐसी स्वतंत्रता प्रदान नहीं करते । अन्य धर्म अपने अनुयायियों को किसी विशेष व्यक्ति या विशेष पुस्तक पर विश्वास लाने के लिए वाध्य करते है। ऐसे निज विश्वासनुसार वहां किसी देवता को मानने व पूजने की स्वतंत्रता नहीं है। हिन्दु धर्म उपासना भेद के कारण किसी को पापी या नरक गामी नहीं मानता परन्तु जो सदाचार एवं सद्व्यवहार से रहित है उसे पापी मानता है ।

जहां एक और हिन्दु धर्म अपने अनुयायियों को उपासना पद्धति और धर्मग्रन्थों के अध्ययन की छूट देता है, अन्य धर्म यह छूट नहीं देते। यही आज के साम्प्रदायिक वैमनस्यता का कारण बनता है ।

धर्म का मूल :– विश्व में विभिन्न धर्म और विभिन्न उपासना पद्धतियाँ प्रचलित है परन्तु सबका मूल ईश्वर को माना जाता है । उसे बताते हुए सन्मार्ग पर चलना है । तलवार या बन्दूक के बल पर या धन के लालच में एक मतावलम्बी को दूसरे में दीक्षित करने–धर्म परिवर्तन करने की कुचेष्टाओं से ही साम्प्रदायिक सद्भावना नष्ट होती है । साम्प्रदायिक वैमनस्य ही लड़ाई झगड़ो का आधार बनता है । वर्तमान विश्व के तनावों को कम करने के लिए पंचशील के सिद्धान्तों के अवलम्बन पर बल दिया गया है । **आचार्य शर्मा** के मतानुसार भगवान बुद्ध के पंचशील सिद्धान्तों की भाँति ही अध्यात्म जगत के पंचशील सिद्धान्त का पालन साम्प्रदायिक दावानल को शान्त करनें में सक्षम है ।

पंचशील : महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह के दिनों में पंचशील सिद्धान्तों की घोषणा की थी । उस समय की आवश्यकता को देखते हुये देश भक्तों द्वारा उन्हें अपना जाना अत्यावश्यक था । वे पंचशील थे– **1. निर्भयता 2. शारीरिक श्रम 3. अस्वाद 4. सर्व धर्म समभाव 5. अस्पृश्यता निवारण ।**

ये पंचशील उस समय के सत्याग्रही स्वयं सेवकों के लिए अपनाया जाना आवश्यक था । इसी प्रकार पंचशील सेवाभावी उदार चेता लोगों के लिए अपनाये जाने योग्य **आचार्य श्री राम शर्मा** ने घोषित किये जो इस प्रकार हैं–

1. अपने सम्पर्क क्षेत्र में आस्था अर्थात देश भक्ति 2. मानवता के आदर्शों में आस्था अर्थात आदर्शनिष्ठा 3. स्वतन्त्र अभिव्यक्ति में आस्था अर्थात न्याय निष्ठा 4. ईश्वर में आस्था अर्थात आस्तिकता 5. अध्यात्मिकता एवं कर्तव्य परायणता ।

यह पंचशील जन साधारण के लिए उपयोगी है । **आचार्य शर्मा** का आह्वान है कि हमसें प्रत्येक को इन्हीं सर्वोपयोगी पंचशीलों को धर्म चेतना का सार समझते हुए अपना विश्वास एवं उत्साह व्यक्त करन चाहिए ।

साम्प्रदायिक सद्भाव : यद्यपि विश्व के अनेकों धर्मों में धार्मिक कट्टरता के भाव पाये जाते हैं परन्तु गीता में भगवान कृष्ण ने सर्व धर्म सम्भाव का सिद्धान्त प्रतिपादित किया है–

"यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।
तस्य तस्या चलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ।।
स तया श्रद्धया युक्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ।।" 1.

अर्थात जो मनुष्य जिस–जिस स्वरूप में देवपूजन करना चाहता है, मैं उस भक्त की उसी देवता के प्रति श्रद्धा को स्थिर रखता हूँ । वह भक्त श्रद्धा से उस देवता का पूजन करता है और उसका वही फल प्राप्त करता है जिसे मैंने नियत किया है । इतना ही नहीं आगे चलकर इस बात को उन्होनें और स्पष्ट किया है–

"येऽप्यन्यदेवताभक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विता :।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्य विधि पूर्वकम् ।।" 2.

लोक मान्य तिलक लिखते हैं– "जो मनुष्य श्रद्धायुक्त भाव से अन्य देवों के भक्त बनकर उपासना करते हैं, वे सभी विधिपूर्वक न हों तो भी मेरा ही भजन करते है।"3.

भगवान श्री कृष्ण के कथन का आशय यही है कि धर्म के विषय में मनुष्य को उदार होना चाहिए । किसी धर्म का उसके जन्मदाता के प्रति अवज्ञा भाव प्रदर्शित न करना चाहिए क्योंकि ऐसे सभी महापुरुष ईश्वरीय विधान की पूर्ती के लिए जगत में प्रकट होते है। यद्यपि उन्हें देश और काल के अनुसार जिस शैली में कार्य करना पड़ता है उसमें वाह्य अन्तर अवश्य होता है जिससे अल्पबुद्धि धर्म प्रचारकों में मतभेद होता है। परन्तु ईश्वर उपासना का मार्ग अपने आप में पूरा है। अतः साम्प्रदायिक दुराग्रहों से भरकर सत्य मार्ग से अलग हटकर आपस में वैमनस्य न बढ़ाया जाना ही श्रेयस्कार है।

श्री मद्भगवद् गीता में आदेश है कि सभी धर्मो के आचार्यों के प्रति सम्मान का भाव रखते हुए इधर–उधर जाते रहना अथवा धर्म परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है । जिस धर्म के आचरण करने का आपको अभ्यास हो चुका है उसी का सच्चाई के साथ पालन किया जाय

गीता का यह सिद्धान्त कितना ऊँचा और सर्वव्यापी है, विवेचना से सहज ही समझा जा सकता है । किसी धर्म की प्रतिष्ठा इसमें नहीं है कि वह दूसरे धर्मों की निन्दा करके उसके अनुयायियों को उनकी श्रद्धा से विचलित करे वरन् सच्चा धार्मिक वहीं है कि जो प्रत्येक मनुष्य को वह चाहे जिस स्थान पर रहे, चाहे जिस धर्माचार्य के सान्निध्य में रहे, सदैव सच्चाई और मनुष्यता के साथ व्यवहार की शिक्षा दे । महात्मा ईसा का भी मुख्य सिद्धान्त यही था । उन्होनें अपने उपदेश में ईश्वर को पिता की संज्ञा दी । ईश्वर किसी व्यक्ति या जीन का पिता नहीं हो सकता । अगर वह जगतपिता है तो सम्पूर्ण मानव जाति उसके पुत्र हैं, फिर सभी मानव भाई हैं तो आपस में स्नेह सम्बन्ध ही होना चाहिए । उसमें राग,द्वेष, वैमनस्यता को किसी भी स्तर पर स्थान नहीं है ।

---

1. श्रीमद् भगवत गीता– 7–21–22
2. श्रीमद् भगवत गीता– 9/23
3. लोक मान्य तिलक– गीता रहस्य, पृष्ठ 156

(6)–1 आलोच्य काव्यों मे धार्मिक सद्भाव की रचनाएँ–

1. डा0 हरगोविन्द सिंह की कविता "युग–युग से हम खोज रहे हैं" की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

युग–युग से हम खोज रहे है, सुर पुर के भगवान को।
किन्तु न खोजा अब तक, हमने धरती के इंसान को।
खोजे मंदिर–मस्जिद–गिरजे, अनगिनते परमेश्वर सिरजे।
किन्तु कभी ईमान न खोजा, कभी खेत खलिहान न खोजा,
दुनियॉ के मेले में देखा, नित्य नये सामान को। किन्तु न देखा अब तक हमने धरती के इंसान को।।

2. कवि की एक अन्य रचना "मानव–धर्म" की पंक्तियॉ देखिए–

तरह–तरह की दीवारों से घिरा हुआ इंसान है, हृदय सभी का जोड़ सके जो ऐसा धर्म महान है।
आपस में करते यदि केवल कटुता का संचार है तो मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, गिरजे सब बेकार है,
अग्नि परीक्षा आज सभी की गूँज रहा आह्वान है। हृदय सभी .....

(2) श्री मती माया वर्मा की कृति "गागर में सागर" के कुछ मुक्तक अवलोकनीय है–

I– न मानो धर्म, को पर आदमीयत को न झुठलाओ,
भले मत अर्ध्य दो लेकिन त्रसित तक नीर पहुँचाओ ।
लुटाओ दीन दुखियो पर सहज आत्मीयता ममता ,
यही है धर्म, सच्ची आस्था परमार्थ में लाओ।

II– सबका मंदिर,सबकी मस्जिद गिरजा घर गुरूद्वारा,हिंदू मुसलिम सिक्ख ईसाई भारत सबको प्यारा।
एक एक से मिलकर बनता संघ शक्ति का बल,मंजिल तेरे पग चूमेगी आज नहीं तो कल।।

III – धर्म है कब चीज मंदिर मस्जिदों की ,न ही चमत्कारी कला जादूगरों की ।
सद्गुणों के रूप में बसता हृदय में, धर्म ही तो है वसीयत ऋषिवरों की ।।

(3)श्री चन्द्रवीर सिह की रचना "जन्नत इसे बनाये" की पंक्तिया अवलोकनीय है–

दुनिया बनी है दोजख, जन्नत इसे बनाये। बैकुंठ से भी सुन्दर, धरती को हम सजायें।।
मजहब के नाम से, ये लडते है भाई भाई, शैतान की है पूजा, भगवान की है दहाई,
पानी में इन्हें देखे, क्या आग है लगाई, उसको जहर बनाया, जो दिल की है दवाई ।
अब इस जहर के बदले, आओ सुधा बहाये।। XXX दुनिया बनी है.....
इन्सान के दिलो में, ईमान की कमी है ,रहते पड़ोस में, पर पहचान भी नही हैं ,
विश्वास की कमी है , सम्मान की कमी है, इन्सानियत की देखो, इन्सान में कमी है ।।
इन्सान को सही अब, इन्सान हम बनाये, दुनिया बनी है दोजख ....."युग गायन" भाग 3 पृ0 44

(4) श्री लाखन सिंह भदोरिया 'सौमित्र'की रचना "कर्म में धर्म का ध्यान" की पंक्तियॉ देखिए –

तुम जहॉ पर जियो, धर्म जीने लगे, घूंट कर्तव्य के विश्व पीने लगे।
साथियों की वहॉ वाट जोहो नही, प्यार दो हर दुखी को कि सीने लगे ।
अश्रु पोछो किसी के तनिक आह पर, धर्म उतरे धरा पर नया रुप धर।।
वेद की यह ऋचायें भुलाओ नही, टूटती सांस को प्राण देते चलो।।

(5) श्री बलराम सिंह परिहार की रचना "मानवता का मन्दिर" की पंक्तियॉ दृष्ठव्य है –

गिरजा गिरे न मस्जिद टूटे वह मन्दिर निर्माण करें ।

प्रतिमा करे प्रतिष्ठित जिसमें मानवता के प्राण भरे ।।

पिता हिमालय की गोदी से गंगा चली लहर खाती।

सबने स्वागत किया जाह्नवी जहॉ जहॉ होकर जाती ।।

हिन्दू–मुस्लिम, सिक्ख–पारसी का न भेद मन में लाती ।

बालक हो अथवा नर नारी बड़े प्रेम से नहलाती।।

हरिद्वार से कलकत्ता तक गंगा जन कल्याण करे।

बिना किसी दैहिक विभेद के सारे जग का त्राण करे। गिरजा गिरे न .... x x x

दीपक एक जलाकर रख दो गिरजा या गुरूद्वारा हों।

वन हो या पर्वती गुफा हो ऊसर या गलियारा हो ।।

जल–जल ज्योति सदा फैलता जहॉ –जहॉ अंधियारा हो।

हम भी वैसे जलें कि जिससे धर–ऑगन उजियारा हो।। "शंखनाद" पृ0 11

(6) डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी की कविता "इबादत" की पंक्तियॉ देखिए–

1. खुदा एक नूर है जिससे, रोशन जहॉ सारा। यही तो तेज सविता का, बहाता प्राण की धारा।।

कोई जिस्म हो इसका, कि काई शक्ल–औ सूरत हो,

इबादत में जरूरी है नही, कि लाज़िम उसकी मूरत हो,

2. प्रतिमा तक सीमित ,नहीं ईश्वर ब्रम्ह विराट।

जड़–चेतन में रम रहा, कहॉ खोजते बाट।। "ज्ञान रश्मि" पृ0 46

(7) श्री शचीन्द्र भटनागर के "ईश्वर की खोज" विषयक शीर्षक से एक गीत की पक्तियॉ देखिए–

गिरजे की घंटियॉ यही कहती, स्वर यही अजान का ,

ईश्वर का आवास रहा है, हृदय दुखी इंसान का।

गौड ,खुदा या राम नाम के लिए लड़े बिन बात मे,

काम न अच्छे किये, भरे रहे हम सदा जजबात के,

मुख से किया पाठ गुरूवाणी गीता वेद पुराण का। ईश्वर का आवास रहा है .....

धर्म वही कि जिसके मन में मानवता से प्यार हो, संत पीर हैं वह जिसमें सज्जनता सद्व्यवहार हो,

यही अमर संदेश बाईबिल, गीता और कुरान का। ईश्वर का आवास रहा हे .....

भेद नहीं है जहॉ, धर्म वह विमल सुपावन धार है ,जो ईश्वर को बॉटै, ऐसी नहीं कोइ दीवार है,

धर्म स्रोत है सहनशीलता, स्नेह, आत्म सम्मान का .। ईश्वर का आवास रहा है '

"करिष्ये वचनं तव' पृ0 36

(8)श्रीमती विद्या मिश्रा की रचना इंसान मेरा देवता की पंक्तियॉ देखिए जसमें कवयित्री मानव–कल्याण की दिशा में सतत जागरूक है। पंत, महादेवी वर्मा , प्रसाद, निराला, सभी छायावाद के

प्रमुख कवियों ने मानवता वादी दृष्टिकौण अपनाया है; यथा –

'सुन्दर हैं विहंग, सुमन सुन्दर, मानव तुम सबसे सुन्दरतम् ।।'– पन्त

श्रीमती विद्यावती मिश्र के गीत में मानवता बादी दृष्टिकोण दष्टव्य हैं –

1. पट बन्द हों ऐश्वर्यता के अब सदा को आज से,
भगवान अब बाहर न होगा लोक और समाज से,
देवत्व का ही नाम होगा मनुजता! इंसाफ मेरा देवता ।। – युग वीणा पृ0 28

2. सबसे अधिक महान, मनुज ही सबसे अधिक महान।
इसको ही पूजो आराधो, छोड़ो सभी इसी को साधो
युग–युग से सिखलाते यह ही गीता, वेद, पुराण। मनुज सबसे अधिक महान .....

3. एक अन्य रचना 'सर्वोदय का करती है आह्वान' की पंक्तियॉ देखिए –

धर्म–जाति के अन्तर से हैं मुक्त नवीन समाज, मानव की दुनियॉ में केवल मानवता का राज,
यहॉ नियम केवल ममता का ,समता स्वयं विधान,बहुजन हित के संरक्षक हैं , ज्ञान और विज्ञान ।
बॅधा हुआ परिवार सूत्र से प्रतिप्राणी निर्वेद , सिंधु–सतह में लय होत हैं सारे मंद विभेद।।

(9) श्री गोपाल दास नीरज की कविता का अर्थ भी मनुष्य है और इति भी मनुष्य है। वही उनके निकट मानवता की सबसे बड़ा प्रमाण है इसलिए मानव के प्रति ही उनकी कविता का शीर्ष गीत बन गया है–

"पर वही अपराध मैं हर बार करता हूँ, आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ।"

(10) वीरेश्वर उपाध्याय–

मनुष्य और मनुष्य के बीच की किसी दीवार, किसी पर्दे को कवि सह नहीं सकता । कवि धर्म–कर्म ,जाति–पाति विधि निषेधों से परे सिर्फ मानव प्रेम का गायक है–

आज युग ने हमें है पुकारा, पीर रोते हुओं की मिटाएँ
दुख भ्रम में भटकते हुओं को, रास्ता नेक सच्चा दिखाएँ।
यूँ पढ़ो शास्त्र या गीता गाओ, लेके कुरान हाथों में आओ,
ग्रंथ साहब नु मत्था टिकाओ, या कि बाईबिल को दिल से लगाओ !
बनके इंसा ओ ईश्वर के भक्तो–बन के इसां ओ अल्लाह के वन्दो
आओ खुशियों का गुलशन खिलाएँ ! आज युग ने हमें पुकारा .....

कवि हर अत्याचार हर उठती हुई तलवार के विराध में है–

" है कॉप रहीं मन्दिर, मस्जिद की दीवारें , गीता कुरान के अर्थ बदलते जाते हैं !
ढहते जाते है दुर्ग द्वार मकबरे महल , तख्तों पर इस्पाती बादल मंडराते हैं
अॅगड़ाई लेकर जाग रहा इंसान नया , जिन्दगी कब्र पर बैठी बीन बजाती है ,
हो सावधान , संभलो ओ ताज तख्त वालो , भूखी धरती अब भूख मिटाने आती है !!" – 'नीरज '

(11) श्री मंजुल मयंक की कविता ' दिल की जुबान एक है ' की पंक्तियॉ देखिए–

1 गुलशनों, गुल जुदा–जुदा , बागवान एक है ! चाहे जमीन बॉट लो आसमान एक है !
तर्जे बंया अलग–अलग लेकिन बयान एक है। लव की जुबानें और हो दिल की जुबान एक है !!

2. श्री मंजुल मंयक की एक अन्य रचना अवलोकनीय है–

गाते हैं अम्बर के तारे , धरती की कंकड़िया रे
आपस में जंजीर न खीचों टूट न जाये कड़िया रे ! xxx
कोई जीता छालें खाकर , कोई खाकर पत्तियॉ ,
भारत मॉ के लाल छिपाये अपनी अपनी खत्तियॉ !
बुझते गये अगर कुल दीपक , बढ़ती गई विपत्तियॉ ,
क्या होगी फिर गॉव–गॉव जाकर बिजली की बत्तियॉ
ओ आजादी के दीवानों , कुछ तो सोचो कुछ तो मानो
आजादी के हाथों में अब पड़े न फिर हथकड़ियॉ रे !!आपस में जंजीर .....

(12) डा0 रामस्वरूप खरे की कविता ' नीर भरे बादल कब गरजे ? ' की पंक्तियॉ देखिए–

सब गिरजाघर मन्दिर मस्जिद आज लगाते नारा , हम भारत के ,भारत सबका , है प्राणों से प्यारा !!
देख हमारी प्रगति जले तुम , कैसा जाल पसारा पर न ज्ञात ,
यह शान्ति–गगन पर , चमक रहा ध्रुवतारा !!
नीर भरे बादल कब ग़रजे ? मत ऐसे धबराओ !
हमें पता ध्यानस्थ श्वेत बक ! अब मत घात लगाओ। "नये युगका अभिनव निर्माण" पृ0 9

(13) श्री राम कुमार भारतीय की रचना ' युग निर्माण का मन्दिर ' की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

मन्दिर समझो मस्जिद समझो गिरजा समझो या गुरूद्वारा !
यह युग निर्माण का मन्दिर है आता है यहॉ हर मतवाला !! xxx
हिन्दू मुसलिम सिक्ख ईसाई सब एक डोर में बॅधे यहॉ
यहॉ ऊॅच नीच का भेद नहीं सबका है बरांबर मान यहॉ
यह विश्व प्रेम का मन्दिर है , हर जन यहॉ सबको है प्यारा !
यह युग निर्माण का मन्दिर है .....
यहॉ वेद पुराण कुरान बाईबिल पर चर्चाये होती है '
हर देश प्रदेश की भाषाऍ इस मंच पर मुखरित होती हैं
यह सर्व धर्म का महामंत्र हर धर्म यहॉ सबको प्यारा । यह युग निर्माण का मन्दिर है.....

6 (क) –: आत्म चिन्तन :–

बाहरी दुनियॉ की जानकारी चाहे कितनी ही अधिक क्यो न प्राप्त कर ली जाए,पर अपने सम्बन्ध में आवश्यक ज्ञान प्राप्त किये बिना वह बहुत कुछ जानना भी अधूरा रहेगा । यह ठीक हैकि हमें सांसारिक वस्तुओं तथा परिस्थितियों से पाला पड़ता है और उनके सहारे प्रगति–अवगति का आधार बनता है,इसलिए दुनियॉ की जानकारी अधिकाधिक मात्रा में प्राप्त करना आवश्यक हैं। यह भी ठीक है कि सम्पर्क में आने वाले और विविध सूत्रों से अपने जीवन कम में जुड़े हुए व्यक्ति हमें असाधारण रूप से प्रभावित करते हैं , उनकी गतिविधियों का अपने प्रसन्नता–के साथ सघन संबन्ध रहता हैं, इसलिए उनके सम्बन्ध देना एवं व्यवस्था बनना अवश्यक है। परिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों का सही तरह निर्वाह किया जा सके , इसी लिए लोक व्यवहार की जानकरी संग्रह की जानी चाहिए ।

इतना सब होते हुए भी यदि अपने सम्बन्ध में अभीष्ट ज्ञान प्राप्त न किया जा सका तो समझना चाहिए कि संसार से सम्बन्धित सुविस्तृत ज्ञान अपूर्ण और अपंग रह गया ।

आचार्य शर्मा के कथनानुसार–"अपने सम्बन्ध में जानकरी प्राप्त करने का तात्पर्य है– आत्म ज्ञान। मोटी जानकारी तो अपने सम्बन्ध में सभी को होती है । नाम, पता, वंश, स्वास्थ्य , शिक्षा ,धन, परिवार , पद आदि के सम्बन्ध में पूँछने पर कोई व्यक्ति आसानी से अपना परिचय दे सकता है , पर यह तो बहिरंग परिचय हुआ , भौतिक जानकरी रही । आत्म ज्ञान का तात्पर्य इससे गहरा है । अपनी सत्ता का तात्विक स्वरूप , जीवन का लक्ष्य , अंतःचेतना की गरिमा , इच्छा और संकल्प शक्ति का महत्व , आदतों एवं आस्थाओं की प्रतिकिया आदि कितनी ही जानकारियॉ ऐसी हैं , जिन्हें यदि ठीक तरह हृदयंगम न किया जाये तो व्यक्तित्व का विकास सम्भव न हो सकेगा एवं प्रस्तुंत समस्याओं का हल न निकाला जा सकेगा ।" 1

विचारों के आधार पर क्रिया कलाप की दिशा बनती है। दोनों के समन्वय से अभ्यास का स्वभाव बन जाता है । मन के रूझान को "स्वभाव" कहते है , और शरीर के अभ्यास को "आदत" कहते हैं। स्वभाव और आदतों का नाम ही व्यक्तित्व है। विचारणाओं की असंख्य धारायें इस संसार में बिखरी पड़ी है । वे एक दूसरे से सर्वथा भिन्न स्तर की हैं । उनमें से किन्हें अपनाया जाये और किन्हें दूर रखा जाये , यह निर्णय करना आस्थाओं का काम है । मूल मान्यताएँ इन्हीं को कहते हैं । हमें क्या बनना है? क्या करना है ? क्या प्रिय है? क्या अप्रिय है? जैसे महत्व पूर्ण निर्णय आस्थओं के क्षेत्र में ही किये जाते है । बुद्धि इन निर्णयों का सहज समर्थन करने लगती है । उसका काम आस्थओं के पक्ष में तर्क, प्रमाण , उदाहरण आदि एकत्र करके कुशल वकील की तरह अपने ग्राहक का केस तैयार करना होता है। बुद्धि के निर्णय स्वतंत्र नहीं होते , उनके पीछे संचित आस्थाओं के साथ पूरा पूरा पक्षपात जुड़ा रहता है । निश्पक्ष चिन्तन कर सकने वाला तत्व दर्शी–विवेकवान तो कोई विरला ही होता है।

हमें क्या बनना है, क्या प्राप्त करना है ? यह निष्कर्ष आस्थाऐं ही प्रस्तुत करती हैं। इस निर्णय को कार्यान्वित करने के लिए पहले मस्तिष्कीय शक्तियॉ आगे आती हैं। इसके बाद शरीर की हलचलें भी उसी दिशा में चल पड़ती हैं। मन स्वच्छा चारी नहीं है और बुद्धि में स्वतंत्र निर्णय की क्षमता है । उन्हें आस्थाओं का गुलाम बनकर रहना पड़ता है। सबको समान वस्तुऍ या समान परिस्थतिर्या प्रिय नहीं होती । लोगों की अभिरूचियों में जमीन आसमान जैसा अन्तर पाया जाता है। एक को जो कुछ प्राण प्रिय लगता है वह दूसरे को फूटी ऑखों भी नहीं सुहाता । व्यक्तिव्य को ढालने और उसे दिशा देने काम पूरी तरहअपनी चेतना ही करती है। इस मर्म स्थल कोई सही रूप से समझा सके और इसे अवांछनीयता से हटाकर श्रेय साधना में लगाया जा सके तो समझना चाहिए कि आत्मज्ञान और आत्मबल की प्रखरता सिद्ध हो गयी ।

---

1. ब्रह्मवर्चस– ऋषि चिन्तन, पृ0– 12

आचार्य शर्मा के अनुसार मनुष्य की इसी प्रकार तीन गतियॉ होती हैं गलकर परमार्थ प्रयोजनों में सलग्न हो अनेकों के काम आयें, स्वयं यशस्वी जीवन जिये और अनकों को ऊपर उठायें। दूसरी गति है अपने शरीर एवं परिवार की परिधि में आबद्ध हो पेट प्रजनन तक की समस्याओं की पूर्ति में उलझा रहे, पशु स्तर की जिंदगी बितायें और घिनौनी स्थिति को प्राप्त हों। तीसरी गति है । संकीणर्ता एवं स्वार्थ परता ,जिससे न ही स्वार्थ ही सधता है न परमार्थ अतिकृपण स्वार्थ बुद्धि वाले ऐसे व्याक्ति अन्ततः सबसे हीन योनि को प्राप्त होते है।''

मानव जीवन की सार्थकता उपलब्ध क्षमता की तारीफ तभी है, जब वह प्रथम गति को वरण कर देव मानव बनने का प्रयास करे। गलकर पुष्पित–पल्लवित हो अनेकों को सन्मार्गगामी बनाये। रास्ते तीनों ही खुले है। जो चाहे, अपनाकर अपनी गति को प्राप्त कर सकता है। नित्य दैनन्दिन व्यहार मे यही तो हम देखते भी हैं।

नीतिमत्ता :– धर्म कसी प्रथा , प्रचलन , कर्मकाण्ड या पूजा विधान को नहीं कहते, वरन वह एक ऐसा राजमार्ग है। जिस पर चलने वालों को बायीं ओर रहना और बिना टकराये चलना पड़ता है । नीतिवान ही धर्मात्मा है । धर्म और सहकार की एकात्मकता पर ही समाज का ढॉच खड़ा है । नीति मर्यादाओं का पालन ही धार्मिकता हैं जहॉ भी इनकी अपेक्षा होगी, मनमर्जी बरती जायेगी , अराजकता फैलेगी और समाज संचरना का ढॉचा ही बिखर जायेगा। अध्यात्म अनुशासन का तकाजा व्यक्ति को इसी दृष्टि से नीति नियमों के सम्बन्ध में रहने हेतु बाधित करता है ।

आनन्दानुभूति :– वस्ततुः यह आनन्द अध्यात्म वेत्ताओं की दृष्टि में उस पूर्णता का पर्याय है, जिनकी प्राप्ति की, पुरूषार्थ साधना हेतु ऋषि मनीषियों ने गहन मन्थन किया है एवं उसे योग की चरम उपलब्धि ा घोषित किया है । उपनिषद्कारों के अनुसार – ज्ञान, भक्ति एवं कर्म योग की सभी धारायें चाहे वह किसी वाद का सर्मथन क्यो न करती हों , अन्ततः आनन्दवाद ही है । इसी कारण मुण्डकोपनिषद में विद्वान ऋषि कहते हैं – 'तद्विज्ञाने न परिपश्यन्ति धीरा , आनन्द रूपमर्मृतम् यद्विभाति ।' अर्थात– ज्ञानी विज्ञान से अपने अन्तर में स्थित उस आनन्द रूपी ब्रम्ह का दर्शन कर लेते हैं एवं ज्ञानियों में भी परम ज्ञानी हो जाते हैं ।' आनन्द, साधक की साधना की चरम उपलब्धि है , चाहे उसकी अनुभूति के रूप भिन्न–भिन्न ही हों ।

आत्म विजेता ही विश्व विजेता :– आचार्य शर्मा के मतानुसार –साधना से तात्पर्य है– ' आत्मानुशासन ' । अपने ऊपर विजय प्राप्त करने वालों को सबसे बढ़कर योद्धा माना जाता है। दूसरों पर आक्रमण करना सरल है। वेखवर लोगो पर हमला करना तो और भी सरल हैं इसीलिए आक्रमणकारियों को योद्धा कहने का कोई औचित्य नही है । असली शत्रु हमारे कुसंस्कार है , जो पशु प्रवत्तियों को रूप में अंतरंग की उत्कृष्टता को दबाये बैठे रहते हैं और उत्कृष्टता की दृष्टि में एक कदम बढ़ाने की तैयारी करते ही भारी अड़चन बनकर द्वार रोकते हैं । इनसे निपटना कम बहादुरी का काम नहीं है ।यदि हम अपने असली शत्रुओं को समझ पायें और उनकी जड़ों को उखाड़ पायें तो समझना चाहिए कि परम पुरूषार्थ करने में सफलता पायी ।

ऋषि–मनीषी इसलिए बार–बार कहते आये हैं– अपने को जानो , अपने आप को पहचानो , देखो और सुनने का प्रयास करो । भवार्थ यही है कि अपने अन्दर क्या है , हमसे अच्छा कौन जान सकता है? दूसरों के दोष देखना सरल हैं, अपने दोष देख पाना सबसे कठिन है । जो ऐसा आत्मपरिष्कार कर लेता है– ऐसा आत्म विजेता ही विश्व विजेता कहलाता है ।

धर्म न तो अवैज्ञानिक है और न अनुपोगी :– आचार्य शर्मा के मतानुसार धर्म की आधार शिला अति सुदृढ़ है । धार्मिकता का अवलम्बन लेकर कोई घाटे में नही रहता वरन् सर्वांगीण प्रगति का पथ ही प्रसस्त करता है । धार्मिक मान्यतायें न तो अवैज्ञानिक हैं , और न ही काल्पनिक । किन्हीं साम्प्रदायिक रीति–रवाजों अथवा कथा किंवदन्तियों को धर्म का परिवर्तन शील कलेवर कहा जाता है । उसमें सुधार और परिष्कार होता रहता है । धर्म की मूल आत्मा द्वारा उच्च मानवीय सद्गूणों का प्रतिपादन होना सनातन एवं शाश्वत है । धर्म का तात्पर्य है– सदाचारण , सज्जनता , संयम , न्याय करूणा और सेवा । मानव प्रकृति में इन सनातन तत्वों को समाविष्ट बनाये रखने के लिए धर्म–मान्यताओं को मजबूती से पकड़े रहना पड़ता है ।

जीवो ब्रम्हैव नापरः :– मानव शरीर इस निखिल ब्रम्हाण्ड का छोटा स्वरूप है। इस काया को व्यापक प्रकृति की अनुकृति कहा गया है। विराट का वैभव इस पिण्ड के अंतर्गत बीज के रूप में प्रसुप्त स्थिति मे विद्यमान है । कषाय–कल्यषों का आवरण चढ़ जाने से उसे नर पशु की तरह जीवन यापन करना पड़ता है । यदि संयम और निग्रह के आधार पर इसे प्रखर और पवित्र बनाया जा सके , तो इसी को ऋषि–सिद्धियों से ओत प्रोत किया जा सकता है । कोयला ही हीरा होता है । पारे से मकरध्वज बनता है। यह अपने आप को तपाने का –तपश्चर्या का चमत्कार है ।

आचार्य शर्मा के मतानुसार– "जीवात्मा परमात्मा का अंशधर ज्येष्ठ पुत्र , युवराज है । संकीणर्ता के भव–बन्धनों से छूटकर वह "आत्मवत् सर्व भूतेषु" की मान्यता परिपुष्ट कर सके , वसुधैव कुटुम्बकम की भावना परिक्क कर सके , तो जीवन में स्वर्ग और मुक्ति का रसास्वादन कर सकता है । जीव को ब्रहं की समस्त विभूतियॉ हस्तगत करने का सुयोग मिल जाता है।" 1

बड़प्पन की सही कसौटी :– आचार्य शर्मा के मतानुसार जो अपने को जितना संयत, सज्जन और अनुशासित बना सका , वह उतना ही महान है। धर्म चिन्हों या प्रचलनों से कोई धर्मात्मा नहीं बनता । जिसने आदर्शों के प्रति अपनी निष्ठा जिस सीमा तक परिपक्व की है, वस्तुतः उसी का बड़प्पन सफल और सराहनीय है।

समग्र श्रेष्ठता विकसित करें :– आचार्य शर्मा के मतानुसार ईश्वर का निवास किसी एक स्थान पर नहीं हैं वह सत्प्रवृत्तियों का सुमच्चय समझा जाता है। ईश्वर की आराधना के लिये आवश्यक है कि व्यक्ति के समग्र पक्ष को श्रेष्ठ और समुन्नत बनाया जाये। स्वयं में सत्प्रवृत्तियों का समावेश कर उसके समकक्ष बनने का समावेश किया जाये।

पतन नहीं उत्थान का मार्ग अपनायें:– आचार्य शर्मा के मतानुसार उत्थान और पतन के परस्पर विरोधी दो मार्गों में हम जिसको भी चाहें अपना सकते है पतन के गर्त में गिरने की छूट है । यहॉ तक कि आत्महत्या पर उतारू व्यक्ति को भी बलपूर्वक बहुत दिल तक रोके नहीं रखा जा सकता। यही बात उत्थान के सम्बन्ध में भी है। वह जितना चाहे उतना ऊँचा उठ सकता है। पक्षी उन्मुक्त आकाश में विचरण करते

1. ब्रह्मवर्चस–ऋषि चिन्तन , पृ0 22

लम्बी दूरी पार करते , सृष्टि के सौन्दर्य का दर्शन करते है। आचार्य शर्मा कहते है– "आश्चर्य है कि लोग अपनी क्षमता और बुद्धिमत्ता का प्रयोग पतन के गर्त में गिरने के लिए करते हैं। यह तो अनायास भी हो सकता है। ढेला फेंकने पर नीचे गिरता है और बहाया हुआ पानी नीचे की दिशा को पकड़ लेता है। दूरदर्शिता इसमें है कि ऊँचा उठने की बात सोची और वैसी योजना बनायी जाये । जिनके कदम इस दिशा में बढ़ते हैं वे नरपशु न रहकर महामानव बनते हैं ।"

<u>प्रार्थना करें, याचना नहीं :–</u> आचार्य शर्मा के मतानुसार भगवान से प्रार्थना कीजिये, याचना नहीं प्रार्थना कीजिये कि आपका प्रसुप्त आत्मबल जाग्रत हो चले । प्रकाश का दीपक जो विद्यमान है वह टिमटिमाये नहीं वरन् रास्ता दिखाने की स्थिति में बना रहे । मेरा आत्म बल मुझे धोखा न दे। प्रार्थना कीजिये कि हम हताश न हों , लड़ने की सामर्थ्य को पत्थर पर घिसकर धार रखते रहें । योद्धा बनने की प्रार्थना करनी है , भिक्षुक बनने की याचना नही , जब अपना भिक्षुक मन गिडगिड़ाये तो उसे दुत्कार देने की प्रार्थना भी भगवान से करते रहें।"

<u>आत्म–देव को साधें :–</u> परोक्ष देवता अगणित हैं और उनकी साधना उपासना के महात्म्य तथा विधान भी बहुतेरे हैं । किन्तु इतने पर भी यह निश्चत नहीं कि वे वे अभीष्ट अनुग्रह करेंगे ही –इच्छित वरदान देंगे ही। यह भी हो सकता है क निराशा हाथ लगे । आचार्य शर्मा के मतानुसार –

'इस बुद्धि वादी युग से देव मान्यता के सम्बन्ध में सन्देह भी प्रकट किया जाता है। यहॉ तक कि अंविश्वास एवं उपहास भरी चर्चाएं भी होती है। ऐसी दशा में हमें सार्वजनीन देवता का आश्रय लेना चाहिए जो साम्प्रदाय अन्धविश्वासों से ऊपर उठा एवं सर्वमान्य हो। साथ ही जिसके अनुग्रह और वरदान के सम्बन्ध में उँगली उठे । ऐसा देवता एक है और वह है–"आत्मदेव"। अपना सुसंस्कृत आपा एवं परिष्कृत व्यक्तित्व । इसका आश्रय रहने पर कोई न आभावग्रस्त रह सकता है और न निराश तिरस्कृत । आत्मदेव की सत्ता सबके भीतर समान रूप से रहते हुए भी उसे उत्कृष्ट बनाने के लिये निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता होती है। अपने चिन्तन , चरित्र , और व्यवहार को ऊँचे स्तर का बनाने के लिये आत्म विकास का आश्रय लेना पड़ता है। यही है सुनिश्चित फलदायिनी आत्म देव की साधना ।"

<u>अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम :–</u> विकसित व्यक्तित्व की एक ही पहचान है– उच्च चरित्र । आचार्य शर्मा के मतानुसार चरित्र क्या है – सद्गुणों का समुच्चय ।

सद्गुण सामाजिक दृष्टिकोण के फलस्वरूप उतन्न होते है।

स्व' को सुविस्तृत बना लेने पर ही यह अनुभूति होती है कि हम किसी विराट के छोटे अंग है। अपना स्वार्थ–सार्वजनीन स्वार्थ–परमार्थ के साथ अविच्छिल रूप से जुड़ा हुआ है। शरीर के समूचे ढॉचे के समक्ष रहने पर ही उसके अंग विषेश का हित है । अन्यथा उस अकेले के परिपुष्ट पर भी अन्यों के कष्टग्रस्त रहते किसी भलाई की सम्भावना नहीं है।"[1]

<u>साधना रूपी बीज की परिणति–सिद्धि –:</u> आचार्य शर्मा के मतानुसार साधना को बीज समझा और उसकी परिणति को सिद्धि कहा जा सकता है। इस प्रकिया को बीज के वृक्ष बनने से उपमा दी सकती

1. डा0 प्रणव पण्ड्या – ऋषि चिन्तन, पृ0 38

है। बीज का 'सक्षम होना ही पर्याप्त नहीं , उसके लिये उपयुक्त भूमि, खाद ,सिंचाई और रखवाली की भी जरूरत पड़ती है। यह साधन न मिले तो बोने वाले की आकॉक्षा एवं बीज की सामर्थता का उपयुक्त प्रतिफल उपलब्ध न हो सकेगा। आचार्य शर्मा आत्म चिन्तन हेतु कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं की ओर संकेत करते है–

(1) समय जैसी जीवन की बहुमूल्य विधि का ठीक प्रकार सदुपयोग करते है या नहीं ? आलस्य और पभाद में उसकी बरबादी तो नहीं होती ?

(2) जीवन लक्ष्य की प्रप्ति का हमें ध्यान है या नहीं ? शरीर सज्जा में ही इस अमूल्य अवसर को नष्ट तो नहीं कर रहे ? देश ,धर्म,समाज और संस्कृति की सेवा के पुनीत कर्त्तव्य की उपेक्षा तो नही करते ?

(3) अपनी विचार धारा और गतिविधियों को हमने अंधानुकरण के आधार पर बनाया है या विवेक , दूरदर्शिता एवं आदर्शवादिता के अनुसार उनका निर्धारण किया है ?

(4) मनोविकारों एवं कुसंस्कारों के शमन करने के लिये हम संघर्षशील रहते है या नहीं ? छोटे–छोटे कारणों को लेकर हम अपनी मानसिक शान्ति से हाथ धौ बैठने और प्रगति के सारे मार्ग अवरूद्ध करने की भूल तो नहीं करते ।

(5) कटुभाषण , छिन्द्रान्वेषण एवं अशुभ. कल्पनायें करते रहने की आदतें छोड़कर सदा संतुष्ट , प्रयत्नशील एवं हॅसमुख रहने की आदत हम डाल रहे हैं या नहीं ?

(6) शरीर , वस्त्र , घर तथा वस्तुओं को स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित रखने का अभ्यास आरम्भ किया है या नही? श्रम से घृणा तो नहीं करते ?

(7) परिवार को सुसंस्कारी बनाने के लिए आवश्यक ध्यान एवं समय लगाते हैं या नहीं ?

(8) आहार सात्विकता प्रधान होता है न ? चटोरेपन की आदत छोड़ी जा रही है न ? सप्ताह में एक समय उपवास , जल्दी सोना , जल्दी उठना , आवश्यक ब्रहम्चर्य का नियम पालते है या नहीं ?

(9) ईश्वर उपासना , आत्म चिंतन एवं स्वाध्याय को अपने नित्य नियम में स्थान दे रखा है या नहीं ?

(10) आमदनी से अधिक खर्च तो नहीं करते ? काई दुर्व्यसन तो नहीं ? बचत करते हैं न ? "

महत्तर चेतना के प्रति पूर्ण आत्म समर्पण :– आचार्य शर्मा के मतानुसार मनुष्य अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए भी पूर्णेता को प्राप्त कर सकता है। यदि कर्म को निष्ठा के साथ और सच्चे हृदय से, उसे फल की इच्छा राखे बिना किया जाये तो वह पूर्णता की ओर ले जाता है।

मानवता समय–समय पर ऐसे कालों से गुजरती है जब गहरी उथल–पुथल होती है और कभी–कभी अच्छाई के विधान को एक प्रकिया बनने का अवसर देने के लिये बल का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है। हमें इस संसार में, जैसा कि यह है, रहते हुए कर्म करना होता है और साथ ही इसे सुधारने के लिये भरसक प्रयत्न करना होता है। यदि हम गीता की निष्कामता और समर्पण की भावना के अनुसार कार्य करें और अपने शत्रओं तक से प्रेम करें तो हम संसार को युद्धों से मुक्ति दिलाने में सहायता करेंगे।"

यदि हम कर्म के फल में अनासक्ति और परमात्मा के प्रति समर्पण की भावना विकसित कर लें तो निर्द्वन्द्व कर्म करते रह सकते है तथा पूर्णता के लक्ष्य की ओर भी अग्रसर होते रह सकते है।

समर्पण की भावना से अनासक्त रहते हुए हम कर्म करें और तब जो कुछ हमें प्राप्त हो, उसी में सनतेष करें तथा वह भी छिन जाये तो कोई क्षोभ या ग्लानि न हो तो हम गृहस्थ रहते हुए भी नित्य संन्यासी ही हैं।

ज्ञान सदा पूर्ण और विशुद्ध है । वह किसी कर्म का फल नहीं है। एम सनातन उपलब्धि I है जिसमें कोई परिवर्तन नही होता , वह किसी क्षणिक कर्म का परिणाम नहीं है परन्तु कर्म ज्ञान के लिये मनुष्य को तैयार करता है। शंकराचार्य ने कहा है–"मुक्ति ज्ञान द्वारा प्राप्त होती है , परन्तु ज्ञान हृदय को पवित्र किये बिना उत्पन्न नहीं हो सकता । अतः हृदय की शुद्धि के लिये मनुष्य को श्रुतियों और स्मृतियों द्वारा विहित वाणी मन तथा शरीर के सब कर्म करने चाहिए और उन्हें परमात्मा को समर्पित कर देने चाहिए। इस प्रकार की भावना से किया गया कर्म यज्ञ बन जाता है। यज्ञ का अर्थ है– परमात्मा के निमित्त पवित्र बनना। यह वचन नहीं स्वतः स्फूर्त आत्मदान है, एक ऐसी महत्तर चेतना के प्रति आत्म समर्पण जिसकी सीमा हम स्वयं है। इस प्रकार के आत्म समर्पण द्वारा मन मलीनताओं से शुद्ध हो जाता है और भगवान की शक्ति तथा ज्ञान में भागीदार बन जाता है। और यही नहीं तब भगवान हमारा स्वयं मार्गदर्शन करने लगते हैं।

आलोच्यकाव्य में आत्मचिंतन विषयक रचनाएँ–

1 श्री मंगल विजय ' विजय वर्गीय '

I. अपने पन से , संवारे इसको , रोज सेवा से , साधना से बुहारें इसको ।
क्षमा , करूणा , दया , का भाव उभारा जाये ।।जन्म मानव का मिला है .....

III सम्पदाय हैं ,अनेक प्रेम भाव एक हो , भाषायें हैं अनेक , आत्मभाव एक हो ।

IV राग , द्वेष , दंभ की आओ ! वर्जना करें !! संत , संस्कृति , ज्ञान काई एक ही थाती नहीं ,
अन्यथा सुर संस्कृति ' विश्व संस्कृति ' हो पाती नहीं ।

(V) सबसे अधिक जरूरी होता है अपना निर्माण।क्योंकि स्वयं से लड़ते रहना, काम नहीं आसान !!
अपने ऊपर अपने हाथों करनी होती चोट , बन कठोर खुद ही निकालनी पड़ती अपनी खोट ।
अपने ही अन्दर असुरों को मारे जाते वाण । सबसे अधिक .....

(2) श्री मती माया वर्मा –: शाश्वत सत्य –:

' असद 'सें 'सत्य'की ओर खेना नाव जीवन की,चढ़ाना सत्य पथ पर बलि , सदा इस लालची मन की,
सदा ही 'सत्य जीता है 'सदा ही 'सत्य जीतेगा'असद ' का पात्र चटका है, समय के साथ रीतेगा "!

साहस –: " साहस नाम जिंदगी का–जीवन के धन का , साहस ही पाथेय सदा होता है मन का ,
साहस से सभी संकल्प पूरे होते हैं , जीवन नाम ,कंटकों पर चलने का ही है !
कठिनाई–कष्टों में हॅस जलने का ही है , किन्तु अधर तब ही सूखे , मुस्का पाते है।
जब साहस औ धैर्य हृदयतल में रहते हैं!"

चेतनता –: " छोड़ो जड़ता का तम गहरा , चमकाओ रवि नया सुनहरा ।
ज्ञान ज्योति लखकर तम भागे , नव युग का नव मानव जागे !

संचालित सब किया कलापों को बस करे विवेक !!

बिखरी सब शक्तियॉ जुटाओं लक्ष्य बनाओ एक , नए युग का कर लो अभिषेक !!

(3) डा0 त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल –:

' इंदु एक बिन्दु दो ' में कवि का चिन्तक रूप दार्शनिकता के धरातल पर उतर आया है। अपनी " आत्म परिचय " शीर्षक कविता में कवि कहता है–

"कालिमा अतीत की , मानस पर गहरी है । वर्तमान का विषाद , चिन्तन पर प्रहरी है ।
भावी निज सपनों पर , धूमिल शशि छाया है ! श्वासों की गंध परी , माटी की काया है
किस पर विश्वास करूँ , सब कुछ क्षण भंगुर है । शीशे की कंदुक पर एक बूँद ठहरी है !"

।। कवि के चिन्तन प्रधान काव्य संग्रह " अपरिभाषित सत्यांश " में कवि ने जीवन के सूक्ष्म विषय की विवेचना इस प्रकार की है–

में अभी अतृप्ति हूँ , तुम्हारी अतृप्ति पुरातन है , फिर नूतन क्या है
सत्याभाष, तुम चारों ही जाओगे ?· नहीं हम पॉच है। पॉचवॉ कौन है ?
वह है जो तुम्हारे पास है। मेरे पास , कहॉ , यही तो भूल है तुम्हारी ,
क्या , अपने साथी को पहचाना नहीं , इसकी सदा अपेक्षा जो की है ,
मैंने अपेक्षा की है। हॉ, यह देखों । यह है आत्मा, आत्मा , तुम्हारे अस्तिव का बोध ।"

(4) श्री रामकुमार भारतीय की रचना 'मनुज भगवान जब होगा 'की पंक्तियॉ देखिए–

नहीं दिन दूर है अब वह ,मनुज भगवान जब होगा ।नए इंसान का –युग का नया निर्माण अब होगा ।।
जगेगी जब हृदय में , आदमी के विश्व की ममता। सुरों का सिर झुकादेगी, हमारी यह नई जनता ।।
नये निर्माण का पत्थर, बनेगा प्रेम मानव का । करेगा स्वर्ग भी क्या फिर , हमारे विश्व की समता ।।
मनुज के आत्म गौरव का , पुनः उत्थान जब होगा। नहीं दिन दूर है.....

(5) श्री मती विद्यावती मिश्र–: की रचना "यह तन है साधन है साध्य नहीं" की रचना दृष्टव्य है–

यह तन साधन है साध्य नहीं ।
इससे तुम पावन कर्मकरो,इससे नित अनुपम धर्म करो,यह तो मन्दिर की देहरी है,
समझो इसको आराध्य नहीं । यह तन साधन है साध्य नहीं ।
नश्वर तन है आत्मा अक्षर, उसमें ही बसता है ईश्वर ।
यह मन तन की गति पर चलने, के लिए कभी भी बाध्य नहीं । यह तन साधन.....
इसमें ही निज को मत बॉधो , इसको ही मत तुम आराधो, तन पर का सम्भव सरल सहज
यह काईरोग असाध्य नहीं । यह तन साधन है साध्य नहीं ।। "युग वीणा" पृ0 55

(6) श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा–: की रचना ' न टूटे मनोबल ' की पंक्तियॉ देखिएं –:

मनोबल कहीं न जाये टूट !
भूत का छूट गया है छोर , कौन जाने भावी किस ओर। आज तो वर्तमान की लूट । मनोबल .....
पूर्ण हो वरदानों की चाह , निरन्तर बहता काल– प्रवाह। न जाये जीवन का घट फूट। मनोबल .....

एक को कर दो आज अनेक , व्यष्टि की हो समष्टि में टेक । तार निष्ठा के रहें अटूट। मनोबल ...

"शंखनाद " पृ0 21

(7) सुश्री वीणापाणि की रचना' इंसान बनकर जी' की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

एक दिन ही जी मगर इंसान बनकर जी, एक दिन ही जी जगत की शान बनकर जी। XXX

एक छोटी नाव,उसके ही सहारे पार जाना । हो भले तूफान राही सोचनामत जूझ जाना ।

कष्ट सहकर भी स्वयं इस विश्व का उपकार करजा,छोड़ जा पद चिन्ह अपने तीर्थ नव निर्माण कर जा।।

एक दिन ही जी मगर वरदान बनकर जी । एक दिन ही जी .....

चमक बिजली सी गगन में, जब कभी छायें घटायें । बन अडिग चट्टान ! तुझसे ऑधियॉ जब जूझ जाएँ

कुछ नहीं कठिनाइयॉ , विश्वास की ज्वाला जला ले, युग नया निर्माण करने की अटल सौगंध खाले।।

एक दिन ही जी सफल अभियान बनकर जी । एक दिन ही जी ....." शौर्य–साधना " पृ0 13

(8) श्री नरेन्द्र चंचल की रचना 'अपने को अनुशासन में बॉधो' की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–:

पत्थर मत मारो इस दर्पण को तुम । अपने को बॉधो अनुशासन में तुम ।

यह समय नहीं है भूल भुलावे का, सुख की मरीचिका , दुःख के दावे का।

नारे उछाल कर देश नहीं बनता, थक चुकी व्यर्थ हड़तालों से जनता ।।

उजले–उजले संकल्प करो मन में । आगत भविष्य के आकर्षण हो तुम ।अपने को बॉधो .....

सुख की बॉटो तो दुःख की उमर घटे , हंसते गाते यह जीवन पथ करे ।

यह देश गलत गतिविधि से ऊबा है , झुलसा हिंसा में , जल में डूबा है ।।

मिलकर कुछ ऐसे सघन प्रयास करो ।तुतली पीढ़ी कें संवर्धन में तुम ।अपने को बॉधो .

(9)श्री शचीन्द्र भटनागर की कविता 'जन–जन में अपनापन फैलाकर देखें' की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

जन–जन में अपनापन फैलाकर देखें , यही विश्व आनन्द कोष बन जायेगा ।

अपनापन जिसमें हो वह प्रिय लगता है, हर कुरूप चॉदनी नहाया लगता है,

पर अपनेपन के अभाव में जीवन में , अपना भी तो बहुत पराया लगता है,

हम सबसे आत्मीय भावना को जोड़े , फिर जीवन यह आत्म–तोष बन जाएगा। जन–जन मे..

जब कि कार्य में आत्मीयता न होती है, मन उससे तत्काल ऊबने लगता है ,

पर आत्मीय भाव से किए परिश्रम मे ,आनंदित हो हृदय डूबने लगता है ,

फिर कठोरतम कार्य सुगम–सा लगता है, हर प्रयास फिर नया जोश बन जाएगा । जन–जन मे

सृष्टि भरी है सुन्दरता से, किन्तु स्वयं , आत्म–भाव हम अगर दृष्टि से लाएँगे,

अंतस का आनन्द उछलकर बिखरेगा, अमृत–सा उल्लास सृष्टि मे पाएँगे,

परिष्कार–परिवर्तन फिर होगा ऐसा ,जीवन पावन विजय–घोष बन जाएगा। जन–जन में

।। एक अन्य गीत मे कवि प्रार्थना करता है कि हे मॉ ! हम जीवन भर प्रकाशित दीपक की तरह जलते रहें, ऐसी बुद्धि और शक्ति दीजिए–

जिन्दगी भर निरन्तर दिये–से जले , बस यही बुद्धि दो, मॉ हमें शक्ति दो।

रूढ़िवादी प्रथाये न रोकें हमे , मूढ–सी मान्यताएँ न टोकें हमें ।
सर्वदा हम सही मार्ग पर ही चलें, दुर्गुणों के लिए माँ ! अनासाक्ति दो । जन्दगी भर निरन्तर.....
हर समय हम किसी की भलाई करें , जिन्दगी में न कोई बुराई करें ।
विश्व के वास्ते बीज से हम गलें , माँ ! हमें वह समर्पित सहन शक्ति दो । जिन्दगी भर निरन्तर.....

(10)श्री बाबूलाल जैन 'जलज' का गीत "मन मन्दिर का उजाला "की पंक्तियॉ में कावि काभाव है कि– अन्तरात्मा से जिस दिन सत्य का गीत फूट पड़ेगा उस दिन मानव की महानता का कीर्तिमान बन जायेगा। अगर हम अपने हृदय में ईमान का एक दीपक जलालें तो अज्ञान–अन्धकार दूर होते देर न लगेगी –

"रहे न नाम निशान धरा पर , अंधकार –अज्ञान का । अगर जलले मन–मन्दिर में , एक दीप ईमान का ।।
भ्रम का कुऑ खोदते रहते , चमत्कार के अभ्यासी, अन्तर्मन का मैल छुड़ाने जाते है कावा–काशी ।
धर्म–कर्म से टूटा मानव , लेता शरण अंधेरे की , पास न पाती दुर्बल आत्मा, स्वर्णिम किरण सवेरे की ।
नई चेतना से भर जाए, कुंठित मन इंसान का ।। अगर जला लें मन मन्दिर में .....
जिस दिन फूटेगा भीतर से, एक गीत सच्चाई का , बन जावेगा कीर्तिमान ,नव–भानव की ऊँचाई का ।
कठिन प्रश्न हल हो जायेगा, भूख–प्यास बीमारी का , बीज न बोयेगा जब कोई , छल प्रपंच मक्कारी का
भाग्य सितारा चमक उठेगा, नव युग के निर्माण का ।। अगर जलालें .....

(11) श्री बलराम सिंह परिहार अपनी कविता ' गीत गाते चलो ' में प्रेरित करते हैं –

यह समय आलस्य की गोद में सोने का नहीं है और पापों की कीचड़ में फॅसे रहने का भी नहीं है । कर्म के पवित्र जल से स्नान करते चलने और प्रगति पथ पर पग बढ़ाने का समय है–

गीत गाते चलो गुनगुनाते चलो । तुम प्रगति पथं पर पग बढ़ाते चलो ।।
छा रहा है धरा पर अँधेरा बहुत , दूर दिखता अभी है सवेरा बहुत ।
ज्ञान के पुण्य दीपक जलाते चलो। गीत गाते चलो .....
बैर करना किसी से बुरी बात है, क्रोध तो आत्मघाती महा पाप है।
खुद हंसो और जग को हंसाते चलो । गीत गाते चलो .....
सोरहे घोर आलस्य के अंक में , क्यों पड़े हो फॅसे पाप के पंक में ।
कर्म के श्रेष्ठ जल से नहाते चलो ।गीत गाते चलो ..... ' आत्म चिन्तन ' पृ0 11

(12) श्री वीरेश्वर उपाध्याय का चिन्तन है कि– अनाचारी तभी बढ़ते हैं जब सदाचारी चुप्पी साध लेते हैं और उसका विरोध नहीं करते । हमें किसी भी मूल्य पर अनीति के सामने नहीं झुकना चाहिए। प्रजातंत्र शासन के सफल होने का एक ही सूत्र है– नागरिक कर्त्तव्य परायण और गुणवान हों तथा नेता सेवा भावी और मनस्वी हों–

"अनाचार बढ़ जाता है तब , सदाचार चुप रहता है जब ।
सिर अनीति को नहीं झुकायें , चाहे प्राण भले ही जायें।
यह संकल्प जगाओ प्रभु जी, हमको राह दिखाओ प्रभु जी ।।
प्रजातंत्र सार्थक तब होता , जनता गुणी मनस्वी नेता ।

मंदिर सब युग धर्म निभायें, जन–जागृति की ज्योति जगायें।

सच्चा धर्म सिखाओ प्रभुजी, हमको राह दिखाओ प्रभुजी "।। "आत्म चितन" पृ0 11

(13) श्री डा0 हरगोविन्द सिंह की कविता ' अरे बावले ' की पंक्तियॉ देखिए–

(1) अरे बावले तू अपने ही मद में बैठा चूर है।

इसीलिए तो परमेश्वर वह तुझसे कोसो दूर है ।। x x x

सींच रहे ईश्वर की बगिया , जो अपने श्रम–नीर से ,

कभी न तेरा हृदय पसीजा उनकी गहरी पीट से,

विषय–वासना में ही फूँकी तूने जीवन–भूर है। इसीलिए तो परमेश्वर वह .....

उसे न वश मेंकर सकता तूँ , सोने के भण्डार से, वह तो बिना मोल बिकता है, सदाचार से प्यार से,

जुड़ा न अब तक सीधा नाता कोई कभी जरूर है । इसीलिए तो परमेश्वर वह .....

(2) ऊर्ध्व गति –

" आदमी में खामियॉ है–यह सभी को ज्ञात है, कह दिया विज्ञान ने –यह बन्दरों की जात है किन्तु जब भी पंक से ऊपर उठा कोई कमल –कह उठा कवि का हृदय –क्या बात है। क्या बात ।"

(3) अधोगति

" आदमी पीयूष के गुण गा रहा है, किन्तु चुपके से जहर ही खा रहा है ;

खूब पंचामृत पिलाओ प्रवचनों का – कण्ठ से नीचे कहीं पर जा रहा है ? "

(14) डा0 रामस्वरूप खरे का गीत "राही जाना पथ मत भूल " की पंक्तियॉ देखिए –

चहुँदिशि छाये जग अंधियारा , गरजे धन बरसे जल धारा।

धीरज से ले काम अभय तू , निज साहस मत भूल ।। राही जाना पथ मत भूल ।।

परहित शिव–सा विष पी जाना , स्वार्थ–सुधा को हॅस ठुकराना ।

प्रेम शान्ति समता के बोना , सारे जग में फूल राही जाना पथ मत भूल ।।

" नये युग का अभिनवनिर्माण " पृ0 12

(15) डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी की कृति ' ज्ञान–रश्मि में आत्म बोध विषयक भावों को व्यक्त करते हुए आचार्य शर्मा के चिन्तन प्रधान बिन्दु अपने शब्दों में उद्घृत करते हुए लिखते है।

1 व्यक्तित्व को प्रामाणिक, प्रखर और प्रतिभावान बनाने के लिए एड़ी–चोटी का जोर लगाया जाए, इसी में जीवन सार्थक है ।

2 मनोविकारों की जड़ें उखाड़ने के लिए उत्कंठा पैदा की जाए।

3 सहयोग और सम्मान पाने का अवसर उन्हें नहीं मिलता जो स्वार्थ और संकीर्णता से जकड़े हैं रहते हैं।

4 अनीति के आगे सिर न झुकाएँ , संघर्ष करें , अनीति संघर्ष से ही मिटेगी ।

5 ईमानदारी के सहारे कोई व्यक्ति किसी का विश्वासपात्र और प्रमाणिक बन सकता है।

6 जब तक मनुष्य स्वयं प्रयारस न करेगा तब तक ऊपर से भेजी गई सहायता उसका भ्ला न कर सकेगी

7 भेड़ों की तरह दूसरों के पीछे न चलते रहें,बल्कि आगे बढ़कर नेतृत्व करने की क्षमता भी पैदा करें ।

"ज्ञान रश्मि" पृ0 16

' जीवन की दिशा धारा ' शीर्षक से उनकी काव्य पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

जन्म मिला जीवन खिला , यह अवसर अनमोल । आलस में बीते नहीं , चलिए ऑखें खोल ।।
भाखा असत बखानकर ,निर्भय बना न कोइ। सत जीवन में लाइए, उन्नति तब ही होइ ।।
आत्म बोध पहलेकरें , जगत प्रबोधें बाद । जीवन लक्ष्य महान है, रखें सदा यह याद ।।
धीरज ही धारण करें , हों नहि कभी अधीर । प्यार भरा जीवन जिऍं , उड़त गुलाल अबीर ।।

(16)श्री लक्ष्मीनारायण'कमलेश 'की कविता'साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो'की पंक्तियॉ अवलोकनीय है।–

क्यों प्रगतिपथ में तुम्हारे हो रहा उत्पन्न भय ?
श्रम बिना ही चाहते हो क्या सफलता पर विजय ?
सोचते हो क्या ? गिने क्षण ही तुम्हारे पास हैं–
हाथ में आया हुआ क्यों खो रहे हो अब समय ?
बढ़चलो निर्द्वन्द्व , कोरी कल्पनाऍं मत गढ़ो।
क्यों रूकेहो ? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो ।।
दूर जाना था अचानक रूक गये तुम तो यहीं ,
गिर पड़े हो तो संभल जाओ , उठो हिम्मत करो ,
कठिनाइयों के पंक में अब फिर न फॅस जाना कहीं
हीनता का दोष अपने शीश पर तुम मत मढ़ो । क्यों रूके हो ? " आत्म चिन्तन " पृ0 56

(17) डा0 जमुनाप्रसाद बड़ैरिया – की कविता ' आनन्द का निर्माण ' की पंक्तियॉ देखिए–

" जीवित रहे यदि लाश बनकर , यह जिन्दगी है खाक बदतर ।
जिन्दा दिली से चंद धटे भी जिए , मुर्दा दिली से लाख बहतर ।।
आत्मा की प्रगति से ही सदा , आनन्द का निर्माण होगा।
जिन्दा दिली से जिऍं जीवन , तभी जग में त्राण होगा ।।
आनन्द का निर्माण कर लो , जिन्दगी में उठो ! नव जीवन जगाओ ।
चतुर्दिक नव चेतना का श्रेष्ठ वातावरण बनाओ ।।

(17) श्री जितेन्द्र रघुवंशी की रचना ' आत्म समीक्षा ' की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

स्वयं समीक्षक बनकर अपनी गलती स्वयं निकालें ,
करें सुधार स्वयं ही फिर से, अद्भुत क्षमता पालें ,
एकलव्य बालक ने पाया, ऐसे गुरू महान को,
दृष्टि हमारी पैनी हो फिर , भगा सकें हैवान को ।।

(18) श्री शिवशंकर मिश्र की कविता 'खोल दो नयी सुवह के द्वार ' में उनका दृढ़ विश्वास स्पष्ट रूप से उभरा है–

खोलदो नयी सुबह के द्वार , अँधेरा खुद ही होगा दूर ,
दूर हो जाने को मजबूर ,रात चल देगी चादर ओढ़,

उजाला फैलेगा भरपूर , धरा पर अली–कली का हास
व्योम पर किरणों का श्रृंगार ।। खोल दो .....
द्वार यह तो नव युग का द्वार , स्वप्न की सुधियों का संसार ।
जहॉ पर नहीं राग या द्वेष , प्यार ही प्यार, प्यार ही प्यार ।
दया , ममता , समता, सद्भाव बने जिस देहरी के उपहार ।।खोल दो ...." अवशेष पुष्प " पृ0 55

6(ख) जीवन दर्शन –

वर्तमान दर्शन की प्रभात वेला में बुद्धिवाहियों ने स्वयं सिद्ध सिद्धान्तों से विनियोजित ज्ञान के रूप में दर्शन को परिभाषित करने की कोशिश की है । इसको बुद्धिगम्य और गणितमय बनाने की इस कोशिश का कारण इसमें यथार्थता लाना था। लेकिन सिर्फ विचार के माध्यम से दर्शन कभी गणित की तरह यथार्थ होने का स्वप्न नहीं सॅजो सकता ,क्योंकि विचार सत् भले हों पर सद्वस्तु नहीं हो सकते । अयथार्थता को दर्शन की दुर्बलता और सबलता दोनों कहा जा सकता है। दार्शनिक ज्ञान का प्रेमी तो है, पर उसके सर्वाधिकार पूर्ण स्वामित्व का दावा कभी नहीं कर सकता ।

असीम चिरन्तनता का ससीम के द्वारा पूर्ण ज्ञान कोरी तार्किक दृष्टि से नितान्त असम्भव है। यद्यपि मानव का कर्त्तव्य तो उसकी और निरन्तर बढ़ते जाना ही है । परम सद्वस्तु को तत् और सत् , विषयी और विषय ,रूप और तत्व में बॉट देने वाला मानव विचार सद्वस्तु का प्रतिनिधित्व कदापि नहीं कर सकता जो कि एक सर्वव्यापी आध्यात्मिक सत्ता है । तर्क और गणित को आगमन–निगमन का विषय नहीं बनाया जा सकता । क्योंकि परम तत्व रासायनिक सूक्ष्मता से भी अधिक सूक्ष्म है और इसलिए नाम और रूप के तत्वों को मानदण्ड बनाकर उनमें विचार से चलने वाली बुद्धि के आगमन, निगमन, अनुमान अथवा खोज का विषय नहीं हो सकता । जैसे रेखागणित के नियमों को रसायनशास्त्र पर लागू नहीं किया जा सकता उसी तरह वे दर्शन पर भी लागू नहीं हो सकते । अनुभव के प्रत्येक नवीन क्षेत्र के अपने नियम हैं। अपरोक्ष अनुभव स अपना नाता तोड देने पर दर्शन मानव बुद्धि की भूल–भुलैया में अपना रास्ता खो देता है ,जिससे उसका कहीं भी पहुॅचना सम्भव नहीं ।

यूनानी दार्शनिक अरस्तू जब भौतिक विज्ञान का अध्ययन कर चुके तब उन्होने मेटाफिजिक्स की रचना की । मेटा फिजिक्स का शाब्दिक अर्थ है भौतिक शास्त्र के पश्चात । इसे उन्होंने विज्ञानों का विज्ञान और समस्त विज्ञानों की जननी बताया । आचार्य श्रीराम शर्मा के अनुसार – "विज्ञान मात्र प्रकृति के कुछ रहस्यो का पर्दा उठाता है किन्तु दर्शन विश्व चेतना के अनेकपक्षों पर प्रकाश डालता है, बताता है कि चिंतन की धाराऍ किस प्रकार परिष्कृत की जा सकती है । प्रकृति की क्षमताऍ उपभोग में लाकर अनेक सुविधाऍ पायी जा सकतीं है, पर उन सुविधाओं का समुचित उपभोग करने के लिए मनुष्य की चिन्तन प्रकिया का क्या आधार हो सकता है , यह बताना दर्शन का काम है। विज्ञान जहॉ केवल प्रतीति जगत् की कियाओं से सम्बन्धित है, वहीं दर्शन का सम्बन्ध सत् और संभूति दोनों से है । इस तरह विज्ञान को भी इसके अंतर्गत मानना पड़ेगा। आचार्य जी के शब्दों में "दर्शन बृक्ष है विज्ञान उसकी एक टहनी।"[1]

1. आचार्य श्रीराम शर्मा – दर्शन की उपयोगिता विज्ञान से भी अधिक है, अखण्ड ज्योति वर्ष 35 अं0 12

मानव के अनुभवों में नित्य और अनित्य दोनों का स्थान है । अतः मानव के सम्पूर्ण अनुभव की व्याख्या के रूप में दर्शन सर्वांगीण सत्य की खोज है । हेनरी वर्ग सां के अनुसार–"दर्शन केवल बौद्धिक गवेषणाओं को ही सरल नहीं बनाता, वह हमको कार्य औरजीवन की शक्ति भी देता है ,क्योंकि उसके साथ हम अपनेको मानवता में एकाकी नहीं पाते और न ही मानवता उस प्रकृति में पृथक प्रतीत होती है, जिस पर वह हावी है।"1 अन्त में बर्गसां का बुद्धि विरोध वहीं तक है, जहॉ तक बुद्धि से उनका अभिप्राय का व्यहारिक जीवन में उसकी साधारण सामर्थ्य से है , अर्थात ऐन्द्रिक प्रत्यक्ष से कार्य करने वाली बुद्धि । अन्यथा सहज ज्ञान की साम्रगी को एकत्रित करके और प्रवाहमय प्रत्ययों का निर्माण करके बुद्धि संबोधि ा से सहयोग कर सकती है। तर्क और सम्बोधि दोनो ही दर्शन के अनिवार्य साधन हैं।

"समकालीन दर्शन का क्षेत्र बड़ा अव्यवस्थित है। सद्वस्तु के विशय में अलग–अलग मतों को प्रतिपादित करने के लिए सभी तरह के कार्य प्रयुक्त हुए हैं । बड़े–बड़े वादों के नाम पर अनगिनत प्रकिया में उपज रही है । प्रकार की प्रणालियों की परीक्षा ली जा चुकी है । परन्तु इस सब मत–मतान्तरों की उलझन क पीछे प्रकृति का उद्देश्य एक ऐसे पूर्वदर्शन का प्रदुर्भाव करना प्रतीत होता है, जो सभी समन्वय करें और सभी से श्रेष्ठ विचार को उसकी हठ मयी तन्द्रा से जगा दे । सच्चा दर्शन सद्वस्तु की एक सार्वभैम झॉकी है । वह वस्तु जगत के मैलिक सत्य की बौद्धिक खोज है ।"

विचार दर्शन –: "मानव जीवन सदैव हरा भरा है । सुन्दर है , मधुर है जैसे चॉद की हंसी।' फूल की सुगन्धि , पक्षी का कलरव , नदी की लहर जो हमेशा आगे बहना जानती है, फैलती है, तो जैसे पलक खुल रही है। और वह पलभर में संसार का तट छूलेती है ।" डा0 रामकुमार वर्मा कहते हैं कि मेरे विचार में जीवन की परिभाषा इससे अधिक क्या हो सकती है? इसमें सुख है , रूप है औरऐसी प्रगति शीलता है जो अपने से निकलकर सारे संसार को छूलेती है ।"

साहित्य ने भी इस बात का प्रयत्न किया कि वह जीवन को अधिक से अधिक ऊॅचे धरातल से साथ और वह केवल अपने में ही सीमित न रहे, वरन् समस्त विश्व को छूकर विश्वजनीन हो जाये। अधिक से अधिक व्यापक होने का भाव यह है कि संसार के सारे रूपों को सार रूप से ग्रहण कर छोटे आकार मेंबड़े आकार का गुण रख सके।इस सम्बन्ध में ईशावास्योपनिषद के आरम्भ में आर्य श्लोक अवलोकनीय है–

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किन्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मा गृद्यः कस्यस्विद्धनं ।। "

अर्थात जो सारा संसार है , वह ईश्वर के द्वारा अच्छादित है। तू इस संसार के नाम रूप आदि विकारों को त्यागकर वास्तविक या सच्चे तत्व का स्वाद ले और किसी के धन की इच्छा मत कर । हमारे ऋषियों ने जीवन को समझने के लिए कितनी बरीकी नजर से संसार को देखने की कोशिश की । साहित्य और दर्शन दोनों ने ही जीवन को अधिक से अधिक विचार देना स्वीकार किया है। वह किसी तालाब की तरह सीमाओं से घिरा हुआ नहीं है । वरन् वह सूरज की किरण की तरह चारों दशाओं में ज्योति लेकर फैलता है और वह इतनी गति लेकर चलता है कि मालूम ही नहीं होता कि वह यहॉ से वहॉ जा रहा है। सूरज निकला और प्रकाश फैल गया । सूरज की किरणें कीड़े की तरह नहीं रेंगती । वह अनुभव की तरह

1. हेनरी वर्ग सां – क्रिएटिव इवाल्यूशन , पृ0 285

संसार के हृदय में समा जाती हैं ।

डा0 वर्मा के मतानुसार –वह जीवन को कीड़े की तरह रेंगते हुए नहीं देखना चाहते । वह चाहते हैकि जीवन फूल की तरह खिले और सुगन्ध की तरह संसार में समा जाय। वह जीवन के रूप में आकषर्ण को कम नही समझते । उससे जीवन में जागरण आता है प्रकृति में जो कुछ भी आकर्षक है उसकी ओर ऑखें उठ जाना स्वाभाविक है । लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि रूप आदर्श केवल इन्द्रियों के बाहरी धरातल तक ही न रहे , वरन् इन्द्रियों को पारकर वह आत्मा कातार हिलादे।" 1

सूफी और संतकवियों ने जो मिलन और विरह के चित्र खींचे हैं वे इन्द्रियों की पुकार से नहीं बने वे आत्मा की आवाज से बने हुए है। रूप की सार्थकता भी यही है। ऊपरी रूप तो केवल एक वार्निश या पालिश भर है ;

क्या शरीर है? शुष्क धूल का थोड़ा सा छवि–जाल ।
उस छवि में ही छिपा हुआ है वह भीषण कंकाल ।।"

इसलिए यह स्पष्ट है कि जीवन सौंदर्य और सुख का केन्द्र है। ऐसे सौंदर्य का जो कभी पुराना न हो, जिससे कभी बुढ़ापा न आये और ऐसे सुख का जो विपत्ति के बादल से धँधला न होने पाये। बादल आतें उड़कर चले जाते हैं । लेकिन सूरज प्रतिदिन निकलता है और आकाश पर दिन भर राज्य करके आखिर में चला जाता है । उसका जीवन ही दिव्य और गौरवमय है।

भारतीय विचारों पर सबसे पहले शोधप्रबन्ध प्रस्तुत करने बाले यूरोपीय विद्धान अलैक्जेण्छर ही थे । जिससे अपनी पुस्तक ' हिस्टरी आफ इण्डिया' में इस विषय पर विशद प्रकाश डाला हैं। भारतीय दर्शन ने उन्नसिवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड की अपेक्षा जर्मनी को ही नहीं सुदूर अमेरिका को भी प्रभावित किया था। इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण रैल्फ वाल्डो एमरसन (1803–1882) द्वारा प्रवर्तित शान्ति आन्दोलन है। उनका मुख्य विषय यह है कि सभी अस्तित्व वाले पदार्थ एक ही विशुद्ध सर्वव्यापक शक्ति का प्रतिबिम्ब मात्र है । वह भारतीय दर्शन के पुनर्जन्म सिद्धान्त से आकर्षित हुए। उनके शब्दों में – " तब मैंने ' संसार का रहस्य 'जान लिया कि सभी पदार्थ नित्य है '। कोई भी मरता नही है, केवल कुछ समय के लिए ऑखों से ओझल हो जाता है और बाद में पुनः लौट आता है ।"

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे स्वामी विवेकान्द ने दो बार संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्राएँ की और दोनों ही बार उनके विचारों का उत्साह पूर्ण स्वागत हुआ। उनके द्वारा प्रतिपारित भारतीय दर्शन के तत्कालीन विचारक गहराई से प्रभावित हुए । इन्हीं में एक नोबुल पुरस्कार विजेता रोमोरोला भी थे। उन्होंने श्री रामकृष्ण जीवन–चरित्र लिखा , जिसमें उन्होने ये उद्‌गार व्यक्त किये –"मैं यूरोप में नये शरद का ऐसा फल लाया हूँ , जिससे यहॉ के लोग अभी तक अपरिचित हैं यह भारत की स्वर लहरी में आत्मा का सन्देश है, जिसका नाम रामकृष्ण है " 2

रोमोरोला के अतिरिक्त विलियम बटलर यीट्स , टी.एस. इलियट, एडवर्ड –कारपेंटर , हैवलॉक ऐससि , आल्डुअस हक्सले और डी0एच0 लोरन्स आदि दार्शिनिकों के विचारों में भारतीय विचारों

1. डा0 रामकुमार वर्मा – विचार दर्शन पृ0 86
2. रोमा रोला – लाइफ ऑफ रामकृष्ण , पृ12,13

का प्रभाव स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता है। भारतीय विचारधरा का यह प्रभाव पश्चिमी दर्शन और साहित्य तक ही सीमित नहीं है। वहॉ के वैज्ञानिकों ने भी इसके प्रभाव को स्वीकारा है। आचार्य शर्मा के अनुसार –" ऋषियों की चिन्तन सम्पदा के वेदान्त दर्शन ने क्वांटम भौतिकी के वैज्ञानिक वारनर हाइजेन वर्ग की सोच में व्यापक उलट–फेरबदल दी । हाइजेनवर्ग सन् 1929 में भारत आये। विश्व कवि रीवन्द्र नाथ टैगोर से इस चिन्तन के विशेष विन्दुओं पर गम्भीर चर्चा हुई और वापस लौटकर अपने प्रयोगों में जुट गयें।कुछ ही समय बाद उन्होने भोतिकी जगत को"अनिश्चितता का सिद्धान"दिया जो और कुछ नही वेदान्त के इस तत्व की व्याख्या है कि पदार्थ का स्वरूप प्रतिक्षण अनिश्चित है। उन्होंने अपने ग्रन्थ'फिजिक्स एण्ड फिलास्पी'में यहॉ के चिन्तन से स्वयं के प्रभावित होने का मार्मिक वर्णन किया है।

इस तरह भारत में उदित हुए विचारों ने विश्व विभिन्न भू भागों में अपना विकास और विस्तार किया , वर्तमान के विश्व परिसर में फैली हुई विचारों की इस विविधता के मुख्यतः तीन रूप मिलते हैं धर्म , दर्शन और विज्ञान " दर्शन को मुनष्य के प्रारम्भ उत्थान–पतन और उसके प्रेम के पात्रों का कीर्तन करने वाला व्यापक और संयत काव्य मानने से उसकी उन्नति के प्रश्न पर प्रकाश पड़ सकता है । उन्नति कविता में भी नहीं हुई है । प्रत्येक कवि अन्ततः वही है, जो वह है। हर महानकवि मौलिक होता है, लेकिन मानव और प्रकृति के जगत में रहता हुआ वह प्रेम , मृत्यु और भाग्य के पुरातन विषयों को नूतन विश्वास देता है। दर्शन के सम्बन्ध में भी यही सत्य है। " 1

यह सर्वसम्मत लक्ष्य है कि दर्शन को अनुभव पर आधारित होना चाहिए लेकिन जैसा कि देखा जा चुका है कि प्रायः अनुभव का अर्थ कुछ विशेष क्षेत्रों तक ही सीमित कर दिया गया है । दर्शन के सभी परस्पर विरोधी मत मतान्तरों की जड़ में मुख्य दोष यही है– केन्द्र से परिधि की ओर स्थानान्तरण, पूर्ण के स्थान पर अंश की प्रतिष्ठा । बुद्धि की सीमित पहुॅच से परे सभी कुछ का कट्टर निषेघ ओर अन्त में असीम के विषयों में सीमित के तर्क की अनाधिकार स्थापना । इस दोष से दर्शन का जो स्वरूप बन पड़ा है , उसे आचार्य शर्मा जी के शब्दों मेंकहें तो " तर्क ,तथ्य, प्रमाण , उदाहरण ढूॅढकर अपने–अपने पक्ष का समर्थन करने और उसे सत्य ठहराने का कौतुक ज्ञान की पिटारी में से ही निकलकर बाहर आया है। सत्य एक है, पर उसे इतने लोगों ने इतनी तरह से प्रस्तुत –प्रतिपादित किया है कि उसे समूचे जंजाल को देखते हुए हॅसते–हॅसते लोट–पोट हो जाने का मन करता है। अपना–अपना सूर्य यदि हर कोई गढ़ने लगे, जिसकी दूसरे के साथ कोई संगति न बैठती हो तो उस बहम को मानसिक विक्षिप्तिता ही कहा जाएगा ।" आचार्य जी के मतानुसार इस मानसिक विक्षिप्तिता से उबरना तभी सम्भव है, जब यह समझा जा सके कि दर्शन को सर्वग्राही , स्वीकारात्मक ,समन्वयवादी और आध्यात्मिक होना चाहिए।

फिलासफी शब्दिक अर्थों में ' ज्ञान का प्रेम' (फिर्लोस = प्रेम + सोफिया = ज्ञान) उपनिषदों का मत है उस वस्तु का ज्ञान है , जिसके ज्ञान से सभी वस्तुओं का ज्ञान हो जाता है । ' कस्मिन्न खलु भगवो विज्ञाने सर्वमिदि विज्ञातं भवति ।"

इस प्रकार दर्शन परम सद्वस्तु का ज्ञान हैं। लेकिन यह सद्वस्तु जैसाकि वैदिक ऋषियों ने यथार्थ ही माना है , केवल सत्ता मात्र न होकर चैतन्य ओर आनन्द भी है। अतः परम सत्य की खोज मे दर्शन मूल्यों का श्रेष्ठतम विज्ञान है। उसको केवल तथ्यों की आलोचना नहीं करनी , बल्कि मानव अनुभूतियों को भी

सन्तुष्ट करना है । उसको मूल और सत्ता, धर्म और विज्ञान में समन्वय करना है। उसे वस्तु जगत के यथार्थ के साथ सद्सत्ता की यथार्थ खोज करना चाहिए , ताकि मानव अपनी सता के नियम, उद्देश्य और पूर्णता के सिद्धान्तों को समझ सके ।

धर्म का दर्शन –: धर्म तर्क का विषय नहीं है, परन्तु उसको तार्किक आलोचना के सम्मुख भी अपने प्रमाण–पत्र उपस्थित करने योग्य होना चाहिए। सच्ची भक्ति यर्थात सत्य पर आधारित होना चाहिए, अतः धर्म को अनुशासित करना धर्म के दर्शन का पवित्र कर्त्तव्य है। तर्क की उपयोगिता बुद्धि द्वारा निम्न तत्वों पर नियंत्रण करके मानव को बुद्धि से परे का संकेत देने में है। यह कहना सत्य अवश्य है कि आत्म तत्व और ईश्वरीय तत्व के कारण धर्म अनिर्वचनीय है । लेकिन फिर भी धर्म से समस्त तर्कहीन तत्वों को दूर करने के लिए दर्शन की उपयोगिता है। परन्तु इसके बावजूद यह धर्म के तत्व का विशलेषण करने में सक्षम नहीं है। जहॉ तक धार्मिक अनुभूतियों की बौद्धिक व्याख्या करने का सवाल है, इसके लिए आवश्यक है कि धर्म का विवेचन करने वाला दार्शनिक स्वयं भी धार्मिक हो । स्वयं व्यक्तिगत अनुभव किए बिना कितना भी बौद्धिक मनन करनेसे धर्म समझ में नहीं आ सकता ।धर्म के दर्शन का आधार अनुभव ही है क्योकि समस्त धार्मिक समस्यायें आस्था, उपासना, परम्परा , अनुभूति और अमरत्व इत्यादि अनुभव के अन्तर्गत ही आती है । और जब बिना किसी यथार्थ अनुभव की सहायता के तर्क धर्म की आलेचना करने लगता है तभी धर्म दर्शन में गड़बड़ी पैदा होने लगती है। इस प्रकार की सारी कोशिशें बच्चों के खेल की तरह हैं , जो कि वयस्क जनों के कार्य का मूल्यॉकन नहीं कर सकते । केवल निरीक्षण,वर्गीकरण ओर सामान्यीकरण पर आधारित एक धर्म का दर्शन बनाने के सारे प्रयत्न हैं क्यों कि धार्मिक ज्ञान के उन अंशों में भी भी जहॉ कि वे बौद्धिक निर्णय नहीं बल्कि अनुभव प्रेरणाये , सहज ज्ञान और सहज प्रत्यक्ष इत्यादि होते हैं जो कि चेतना के उच्चतम स्तर से हमारे पास आते हैं । इसलिए धर्मदर्शन के अध्येयता को योगी होना अनिवार्य है। क्योंकि इससे बिना तथ्यों का संग्रह , उनका वर्गीकरण तुलना सम्भव नहीं है। और इस सबके बगैर सामान्य सिद्धान्त बनाकर धर्मिक अनुभूति के तत्व को नही जाना जा सकता । यही कारण है कि कभी–कभी दर्शन को असम्भव करार दे दिया जाता है। मानवीय बुद्धि उस परम सत्य को कभी नहीं समझ सकती क्योंकि उसकी अपनी सीमा है।"

दर्शन और धर्म एक दूसरे से इतने पृथक नहीं है, जितना उन्हें धर्म–दर्शन के आलोचक मानकर चलते हैं । यदि धर्म सत्य से रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है तो दर्शन उस सत्य को बौद्धिक रूप से समझना चाहता है। सत्य की उपासना धर्म भी करता है और दर्शन भी । अन्तर केवल इतना ही है कि धर्म की उपासना में भावना के पुष्प होते हैं और दर्शन की अर्चना में विचारों की किरणें । धर्म को दर्शन की आवश्यकता है, ताकि वह अपनी भावना में असत्य को सत्य समझकर न पूजने लगे और दर्शन को ध र्म की आवश्यकता है क्योंकि जिस सत्य को प्राप्त कर लिया गया है , उसे जीवन में उतारना ही पड़ेगा अन्यथा दर्शन एक सहज वैचारिक विलास होगा जिसका मूल्य कम से कम तात्विक दृष्टि से नही हो सकता ई अतएर्व कहना यही होगा कि राका के चन्द्रमा में जिस तरह प्रकाश और आनन्दमय स्निग्धता घुल–मिलकर एककार हो जाते हैं ,उसी तरह धर्म और दर्शन मिलकर सत्यार्थी के लिए एक आनन्दमय सृष्टि का निर्माण करते हैं।

उपरोक्त स्पष्टीकरण से यह सिद्ध हो जाता हे कि धर्म का दार्शनिक अध्ययन सम्भव है । इसके द्वारा तर्क के तराजू पर धार्मिक मान्यताओं को परखकर उसका समालोचनात्मक परीक्षण किया जाता है। राबर्ट लीट पेटरसन के अनुसार ' धर्म दर्शन का कार्य धार्मिक मान्यताओं को आदर किन्तु पूर्णता के साथ परखना है ' थामस मेकफर्सन के मतानुसार धर्म दर्शन का कार्य धर्म के क्षेत्र में वस्तुओं को स्पष्टता प्रदान करना है। " आचार्य श्री राम शर्मा के मतानुसार – " तर्कहीन मनः स्थिति का नाम धार्मिकता नहीं है। ऑखें बन्द करके किसी के भी वचन को गले नहीं उतारना चाहिए । अपने लोग कहते हैं या पराए , बात संस्कृत या अरबी भाषा में कही गयी है अथवा बोलचाल की भाषा में, इससे कुछ बनता–बिगड़ता नहीं। स्वीकार करने योग्य वही है जिसमें तथ्य गुड़े हों और जिसे विवेक की कसौटी पर खरा सिद्ध किया जा सके । बिना खोज परख के जो धर्म के नामपर किसी भी मान्यता या प्रथा को स्वीकार करले, वह सवस्थ दृष्टि नहीं है।" इस स्वस्थ दृष्टि का नाम ही धर्म दर्शन है।

दर्शन ओर जीवन :– दर्शन ओर जीवन के लिए आवश्यक हे दर्शन की जीवन से निकटता। सत्य के लिए सत्य की खोज में दर्शन का अपना महत्व है ओर उसके व्यावहारिक प्रभाव में कुछ भी सन्देह नहीं है। लेकिन जैसाकि श्री अरविन्द कहते हैं– फिर भी , एक बार ज्ञात हुआ सत्य हमारी अन्तरात्मा और हमारी वाह्य कियाओं में उतरने योग्य होना चाहिए । यदि ऐसा नहीं है तो उसका सर्वांग नहीं केवल बौद्धिक महत्व होगा । वह केवल बुद्धि के लिए सत्यहोगा और हमारे जीवन के लिए वह किसी विचार पहेली के हल, एक आमूर्त सत्ता औरएक मृतक वस्तु से अधिक नहीं होगा ।

दर्शन से मानव जीव के व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों पहलू प्रभावित होते हैं जैसा कि अल्डुअस हक्सले शब्द हैं– मनुष्य अपने जीवन दर्शन , अपने विश्व सिद्धान्त के अनुसार रहते हैं। " आचार्य शर्मा के मतानुसार – " दर्शन संस्कृतियों को जला देता है और उसी के अनुरूप बनने वाली मान्यताएँ प्रथा–परम्पराएँ बन जाती हैं।"

अपने समय का अस्तित्व वादी विद्रोह – इसी मॉग का प्रदर्शन है । यह एक तरह के विश्लेषणवादी , बुद्धिवाद , तार्किक व्यवस्था और मतिभ्रम विचार के प्रति सबल विद्रोह है, जो कि जीवन सच को सोखकर उसको ऐसे सिद्धान्तो की निरर्थक खोज मात्र बना देते है, जिनका हमारे व्यवहारिक जीवन से कोई सम्बन्ध ा नही है। उसी प्रकार व्यवहारवाद सत्य के व्यवहारिक मूल पर जोर देता है। मानवता वाद मानववादी कसौटी में होमो मिनोरा का प्रोटोगोरियन सिद्धान्त पुनर्जीवित होता है । साधनवाद जीवन में सफल कर्म के साधन मात्रक रुप में सबको परिभाषित करना है ।

इन सभी विचार धाराओं में एक महत्वपूर्ण सत्य यह है कि ये सब दर्शन को प्रयोजन युक्त बनाने पर जोर देते है । लेकिन उसे मनुष्य जीवन तक की संकीर्ण परिधि में बॉधने की वह गलती करते है। मूल्यों के विज्ञान के रुप में दर्शन का चरम मूल्य ईश्वर तक पहुॅचना चाहिए । सत्य के व्यवहारिक मूल्य को मूल्यों की व्यवस्था में समुचित स्थान मिलना चाहिए , परन्तु वह सर्वोच्च अथवा एक मात्र मूल्य नहीं हो सकता । पूर्ण मनुष्य होने के लिए मानवता की वर्तमान सीमा को लॉघना आवश्यक है । अतः मानव नहीं देव मानव ही सभी वस्तुओं का मानदण्ड है। दर्शन जीवन के लिए है, परन्तु जीवन आत्मा के लिये है, अतः जीवन नहीं बल्कि आध्यात्मिकता ही दर्शन का अस्तित्व है ।

इस तत्व को न समझ पाने के कारण ही– " दर्शन शास्त्र को प्रत्यक्षवादियों द्वारा शब्दाडम्बर, वाग्विलास , कल्पना, काव्य आदि व्यंग्गय शब्दों से सम्बोधित किया है, पर वस्तुतः वह वैसा है नहीं । विचार करने की अस्त–व्यस्त शैली को कमबद्ध और दिशाबद्ध करने का महान प्रयोजन दार्शनिक शैली से ही सम्भव हो सकता है। अन्यथा उच्छृंखल गतिविधियॉ और अनगढ़ मान्यताओं का मिला–जुला रूप ऐसा विचित्र बन जाएगा, जिसे अपनाकर कोई किसी लक्ष्य तक न पहुॅच सकेगा। उसे अन्धड़ में इधर–उधर उड़ते –फिरते रहने वाले तिनके की तरह कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर सकने में सफलता न मिलेगी । योजनाबद्ध कार्य करना होगा जिस प्रकार आवश्यक है, उसी प्रकार योजनाबद्ध चिन्तन की भी उपयोगिता है। यह कार्य दार्शनिक रीति –नीति से ही सम्भव हो सकता है।" जीवन में एक तथ्य की स्वीकारोक्ति का परिणाम होगा 'मनुष्य में देवत्व का उदय।'

नव युग का नवीन दर्शन :–

आचार्य शर्मा सिर्फ नवयुग का सन्देश देकर ही मौन नही हो जाते, वह भविष्य के मानव के लिए आचार–विचार की पद्धति , भावी जीवन की रीति–नीति की व्यापक रूपरेखा भी प्रस्तुत करते हैं । साथ ही वे उपाय भी प्रस्तुत करते हैं जिनको अपनाकर आज का मानव स्वयं को देवमानव में बदल सके तथा धरती को स्वर्ग बना सके। अपने युग की सभी मॉगों को पूरा करने के कारण इसे युगदर्शन भी कहा जा सकता है। अपने सर्वांगीण स्वरूप में इसमें प्राचीन और नवीन, पूर्व एवं पश्चिम, यथार्थवाद और आदर्शवाद, भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद का अपूर्ण समन्वय है। जहॉ गति हीन , मायावादी और आदर्शवादी सिद्धान्त जीवन को पलायन व निराशा के गर्त में धकेलते हैं एवं सामाजिक तथा राजनैतिक व्यवस्था को विश्रृंखलित करते हैं , वहीं भौतिकवाद, वैज्ञानिक जड़वाद मनुष्य से उसके चेतनात्मक विकास के सारे अधिकार ही छीन लेता है। ऐसे में मनुष्य की जीवन की सभी समस्याओं को सुलझाने और ज्ञान–विज्ञान की सभी प्रणालियों को अपनी सर्वांगीणता में पूर्णता से व्यवस्थित करने वाला दर्शन ही मानवता की यथार्थ सेवा कर सकता है ।

आचार्य श्री रामशर्मा ने यही सर्वांगीण प्रयास किया है। उनका यह प्रयास वर्तमान का विवेचन एवं भविष्य की दृष्टि तो देता है ; पर भावी शोध के लिए गतिरोध उत्पन्न नहीं करता । उल्टे उनके द्वारा निर्मित नवयुग के इस नवीन दर्शन में भावी दर्शनिक ऐसा सुस्पष्ट मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं , जिसको आधार बनाकर वे मानव जति के नव जागरण में पूरी ईमानदारी से अपनी भूमिका निभाते हुए इस नव युग के नवीन दर्शन की अनेकों शाखा–प्रशाखाओं का व्यापक विस्तार कर सकते हैं ।

आलोच्य काव्यों में जीवन दर्शन विषयक रचनाएँ :–

जीवन दर्शन के लगभग सभी बिन्दुओं पर आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावति समकालीन हिन्दी कवियों ने रचनायें लिखी हैं जिनके उदाहरण अवलोकनीय है–

(1)श्री बाबूलाल जैन 'जलज' की कविता 'कण कण में चेतन मुस्काता' में जीवन दर्शन परिलक्षित हैं–

" आत्म चेतना यदि न जगाती , मंजिल में ही सोता रहता ,
'मन मन्दिर में छाया रहता , दिन में ही भीषण अॅधियारा ,

जीवन जलता रहता क्षण–क्षड़ , अहंकार के अंगारों में ,

द्वेष –दम्भ का ताना–बाना , बुनता रहता पतझारों में ,

हरा भरा साधो का सावन , वियावान जंगल बन जाता –

मानवता यदि बांह न गहती ,गिरते को मिलता न सहारा , XXX

ले जाते बरमार लूटकर, सदाचार संयम की थाती ,

त्याग तपस्या की फसलों को, खेतो में दीमक चर जाती ,

मारा मारा फिरता रहता , दुष्प्रवृत्तियों के जंगल में

नही टोकता यदि विवेक तो, जीवन बन जाता बनजारा , XXX

नयन मूँद कर , हृदय खोलकर , जिस दिन पढी धर्म की भाषा ,

अपने आप समद्ध में आई , जीवन दर्शन की परिभाषा ,

आत्मा की आवाज गूँजती , कण–कण में चेतन मुस्काता ,

एक समान दिखाई देता , मन्दिर,मस्जिद औ गुरूद्धारा।", अखण्ड ज्योति जुलाई 1973

(2)डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल की एक कविता में जीवन दर्शन परिलक्षित होता हैं–

" समय बदलता रहता प्रतिपल , दुख–सुख समझ समान ।

अपने प्रिय जीवन को साथी ! भूल नहीं पहिचान ।।

प्रतिदिन उठते ही प्राची में , देखा नया सवेरा , और सांझ होते ही भूपर , देखा घोर अधेंरा।

सुबह को हॅसने वाला सूरज , सन्ध्या को मुख म्लान । अपने प्रिय जीवन को साथी .....

जो रजनी ओढे आती है, नम में चादर काली , वही रात विखराकर जाती , प्रातः जग में लाली ,

रात न आती तो क्या जग को , मिलता स्वर्ण–विहान ? अपने प्रिय जीवन को साथी ..

सूर्य–चन्द्र दोनों पर चलती , राहु केतु की माया ,और सदा ही कुछ क्षण रहकर उड़ती धूमिल छाया ,

यही सृष्टि का नियम बताता , स्थिर कुछ मत जान , अपने प्रिय जीवन को साथी ..."

(3) डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी की कृति ज्ञान रश्मि–(दोहावली) के दोहों में जीवन दर्शन परिभाषित है–

भटके जो जन लक्ष्य से , करे भूल पर भूल । फॅसे अनेक विपत्तियॉ में , चुभें शूल पर शूल ।।

शर्तभरा जीवन नहीं , सहज भाव अपनाइं। जो जन ऐसी ही जिऍ नित प्रति के सुखपांइ ।।

शरीर सब कुछ है नहीं इसे चलाता प्राण । शक्तियॉ तीन है, इच्छा क्रिया ज्ञान।।

सत्य और ईमान की , महिमा बड़ी अनन्त । झूठ डुबाता मनुजा को , कैसा होगा अन्त ।।

(3) श्री मंगल विजय'विजय वर्गीय'की कविता जीवन–कला की पंक्तियों में जीवन दर्शन अवलोकनीय है–

(i) " पशुवत जीवन जीने वाला ही मानव देव तुल्य हो जाता ।

जन हिताय जीने वाला ही मानव देव तुल्य हो जाता ।

जिनके करूणा–कण्ठ सभी की पीड़ा के ऑसू पी लेते ,

वे मानव ही शिव हो जाते जो पर–पीर पिया करते हैं ।।

जो ममता से मर्माहत हो सबके घावों को सहलाते ,

दे सान्त्वना दीनदुखियों को उनका दुखिया मन बहलाते
वे ही 'बुद्ध कहाते जग में , वे ही महावीर' हो जाते ।
जो संवेदित साँशों द्वारा सबके घाव सीया करते हैं ।
ऐसा जीना क्या जीना , जैसे सभी जिया करते हैं।
यूँ तो जननी , जन्म भूमि को पीड़ा सभी दिया करते हैं । "ज्ञान रश्मि " पृ0 6

(ii) "साधना के स्वर " काव्य संग्रह में कवि ने , अपने जीवन दर्शन को दस कविताओं में व्यक्त किया है, वे हैं – "जीवन–भार " साधना गीत , सफलता का रहस्य , असफलता का कारण , बड़ी बात है, जीवन, समय की साध, बक्त कीमती है, जिन्दगी फूल और हॅस न पाओगें ।

इन कविताओं में जीवन भर का सुख दुख , विरह –मिलन होना साधना ओर मृत्यु का सामना करने की आवश्यकता तथा सर्वार्थ को सामने रखना समय की मूल्यवत्ता, जीवन को खुले में जीने देना और परिस्थितियों को आगे होकर बदल देने जैसे विचार प्रस्तुत किए गए हैं । कुछ कवताओं की पंक्तियॉ अवलोकनीय है–

जीवन भारः– दुःख सुख दोनों के कन्धों पर जीवन भार ढुला करता है,
विरह–मिलन के दो पंखों पर सधकर प्यार पला करता है।

सफलता का रहस्यः

संघर्षो से संघर्ष किया है , जूझा हूँ तब कहीं आज इस तरह सफल हो पाया हूँ
कंटक की कीचड़ को पैरों से रोंदा है, तब कही आज उन्मुक्त कमल हो पाया हूँ ।।

साधना–गीत :

रे ! साधक ! कहीं , ऊँघ जाना कहीं तुम , सफलता सतत् साधना मॉगती है।
उपासक ! सुमन सूँघ लेना नहीं तुम, सुमन–शुद्ध आराधना मॉगती है।।
जीवन सतत सॉस की ही लड़ी है, सतत सॉस ही जिन्दगी की निशानी।
प्रथम सॉस से आखरी सॉस तक , जिन्दगी मौत का सामना मॉगती है ।।

(2) श्रीमती माया वर्माः की काव्य रचनाओं में जीवनदर्शन अवलोकनीय है–

1 "त्याग दें सभी छद्म छल द्वेष , न रावण रखे साधु का वेष
न खोले कोई द्रुपदा केश , मनों का मिट जाये सब क्लेश ।
करे कोई न कभी अभिमान , स्वर्ण पर बिके नहीं ईमान।
जति रंग लिंग भेद को जान , न हों आपस में सब असमान ।"

2 जीवन में सच्ची समता हो , सबके मन में मृदु ममता हो
मनुज मात्र में बढ़े एकता , जनमानस में बढ़े दिव्यता ।
मानवता का मन्दिर जिसमें, जीवन शाश्वत और चिर जिसमें
प्रभु की ऐसी मूरत बॉकी , जन–जन में ईश्वर की झॉकी ।। "

3 हर सफलता के लिए, व्यवधान आते राह में हैं जीत उनको ही मिले , आनन्द ऐसी चाह में है।।

यों सुकृत कर जिन्दगी को, जो मनुज सुन्दर बनाते । वे विवेकी और पुरूषार्थी सदा सम्मान पाते ।।
यों करो कुछ और सबकी, जिन्दगी सुन्दर बनाओ ।प्यार की मृदु गंध वाले फूल उपवन में खिलाओ ।।
जो जिया ऐसे ,सही ढंग से वही समझो भला है ।। "

4 "सतत् प्रयासरत रहने की प्रेरणा :

सॉस चलती है सतत , तब ही हमारे , रह सके जीवित अभी तब प्राण प्यारे ।
घूमता हे रवि निरन्तर चक के सम् ,चलरहा आश्रित उसी पर सृष्टि का क्रम ।
लक्ष्य के प्रति हो तुम्हारी प्रीति ऐसी , तो सफलता भी तुम्हारे हाथ होगी ।
काल को भी तुम पराजय दे सकोगे , यदि निरन्तरता तुम्हारे साथ होगी ।"

(5) श्री मैथिलीशरण गुप्त की कविता ' नवयुग की चुनौती ' को आचार्य शर्मा ने आपने काव्य संकलन ' युग–संदेश ' में महत्वपूर्ण स्थान दिया, पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

1 जिस युग में हम हुए वही तो अपने लिए बड़ा है । अहो, हमारे आगे कितना कर्म क्षेत्र पड़ा है।।
जीर्ण वस्तुओं की ममता से घर की कूड़ा होगा ।अहो आज का कुसुम हार भी कल का कूड़ा होगा ।।
2 निरूत्साह से साहस शुभ है , जीवन एक समर है।। भव भंगुर है, रहे किन्तु यह आत्मा आप अमर है।।
बिगड़ गया यदि यही लोक तो क्या पर लोक बनेगा।कहॉ जायॅगे नारायण तब,जब नर लोक बंनेगा ।।

(6) श्री शिवशंकर मिश्र की कविता ' इस युग का यज्ञ' की पंक्तियों में जीवन दर्शन दृष्टव्य है–

जल जाती जिसकी वेदी पर जग में व्याप्त विषमता, जीवन सौम्य, सरस कर देने की है जिसमें क्षमता,
अनाचार, अविचार , दुखद व्यापार जहॉ मिट जाते , हिंसा – प्रतिहिंसा केदुर्बल भाव नहीं हैं आते,
शपथ जिसे निष्काम कर्म की,विज्ञ वही इस युग का।जीवन को जागृतिमय करदे,यज्ञ वही इस युग का ।।

X X X X

मनके कलुषित भाव सवयं ही जल करके मिट जायें मन–मरूथल में मधु से प्लावित हो सुरसरि लहराये,
मन्दिर–सा व्यक्तित्व सत्य की प्रतिमा को बिठलाये, प्रति आगंतुक जहॉ अतिथि के सम ही आदर पाये ,
स्वयं पूर्ण कर दे अभाव को जब मानस का सृष्टा । भाव–यज्ञ के लिए चिरंतन है कवि मन की निष्ठा ।।"

(5) श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा की कविता श्रम–साधना की पंक्तियों में जीवन दर्शन देखिए–

श्रम ने उपजायी धरती से न भी शक्ति की गीता। हुई देश की मयदि ; के संग वही परिणीता ।।
सूरज की किरणें श्रम–सौरभ से करतीं जग पावन । मलयानिल प्राची के पथ पर छिड़क रही है चन्दन
श्रम का नया धनुष ले मानव देता है टंकारें । नवल सृजन कर रहे तीर हैं , ढहती दुःख दीवारें ।।
श्रम ने तपकर लौह गलाया , अगणित यंत्र बनाये । श्रम के पौरूष ने बंजर में शत–शत सुमन खिलाये।।
चमक उठा श्रम आज क्षितिज पर विहंसा है उजियारा गूॅजेगी वंशी समृद्धि की नीचे मुरली वाला ।।
श्रम के चरणों पर कवि श्रद्धा के शुचि कुसुम चढ़ाओ श्रम के पावन राजमार्ग पर आओ जन–जन आओ

"युग संदेश "पृ0 69

(6) श्री लाखन सिंह भदौरिया की कविता 'तनय की कामना 'में जीवन दर्शन देखें–

1 मां हमें सुन्दर बनाओ।

हम कुढ़न विष पी रहे हैं, मृत्यु को ही जी रहे हैं । जिन्दगी जलघर बना दो । मॉ हमे .....
हम कुरूप कुभाव वाले, दीन–हीन स्वभाव वाले । सौम्य शीध्र सुधर बना दो । मॉ हमें .....
तम पियें मुस्कान भर दें , प्राण में वह तान भरदें । पीर , वंशी स्वर बना दो । मॉ हमें .....

(7) आचार्य श्री राम शर्मा के जीवन दर्शन पर कवि श्री सौमित्र की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

कंठ से फूटी तुम्हारे ज्ञान की सविता किरन । कर रहा तर्पण मनुजता का ऋषि–सा आचरण ।
देह वामन –सी लिए , लघु, हो विराट विचार से, दर्प कलि का चूर करने को कुलिश –कुंठार से ।
गर्वयुत लघुता, सरलता, सहजता साकार तुम , पीर–नीर कराह करूणा का किये श्रृंगार तुम ।
'कल्पवृक्ष' अभाव के हित, भाव को भगवान तुम , त्रस्त शापित मनुजता को मिल गये वरदान तुम ।
स्वाभिमान अतीत के तुम आज के अभिमान तुम , वर्तमान अजान फिर भी हो भविष्य महान तुम ।
कृष्ण की युग वांसुरी हो , राम के धनु–वाण तुम , काम तो श्री राम जैसे देखते हनुमान तुम ।
गा ना पाती है गिरा महिमा तुम्हारी प्राणधन । ओ हिमालय के शिखर , गुरूता तुम्हारी को नमन ।।

(8) श्रीमती विद्यावती मिश्र :–

श्री मती मिश्र ने रहस्यात्मक संकेतों द्वारा उस अव्यक्त एवं अगोचर चैतन्य सत्ता का जो कि सम्पूर्ण जगत का संचालक है, मार्मिक चित्रण किया है।

1 " ज्योति " काव्य संग्रह का यह गीत अवलोकनीय है–

पद में लय का गुंफन डाला, उर पर भावों की जयमाला,
प्रिय मुझसे भी अधिक इन्होंने तुमको पाने का व्रत साधा। इन गीतों ने तमको बॉधा ।
बीच–धार जीवन सरिता की मध्य–बिन्दु मेरी कविता की, xxx
मेरे ओर तुम्हारे में है रखे अभी भी अन्तर आधा । इन गीतों ने तुमको बॉधा । "ज्योति" पृ0 27

2 "श्रद्धा"काव्य संग्रह में भी कवियत्री ने जीवन दर्शन एवं रहस्यवाद का सुन्दर वर्णन किया और उस अभिव्यक्त सत्ता के प्रति अपने भावों को प्रकट किया –

"चाहे इसको अधिकर न मेरा मानो।
पूजा करने जब मैं मन्दिर में आती , जाने क्यों हे भगवान कहीं छिप जाता ,
तब मेरा अन्तर अपनी ही धड़कन में मुखरित होते पद–चाप किसी की पाता,
बस दया करो , पूजा की स्वीकृति दे दो , भिक्षा समझो, उपहार न मेरा मानो।" " श्रृद्धा " पृ0 8

3 कवयित्री ने अज्ञात सत्ता को प्रियतम के रूप में माना है। इन पंक्तियों में जीव व परमात्मा का एक्यविध ाान परिलक्षित है–

" अब दूरी में मिली निकटता और हुआ विश्वास ,
मेरे प्रभु की चरण –चाप है यह मेरी प्रतिश्वास,
अपने को अपने से कैसे हो आदान–प्रदान ।
अब तो प्रिय हो गया सुमन की माला का निर्माण। "प्रतीक्षा" पृ0 60

(9) श्री साकेत बिहारी की रचना' पारस स्पर्श की अनुभूति 'की पंक्तियों में आचार्य शर्मा का जीवन दर्शन देखिए

गुरूदेव ! आपने तन–मन में , शुचिता की शुभता सुरभित की ।
जीवन– पंकज की पंखड़ी पर , मृदु ज्ञान–कर्म छवि अंकित की ।।
दैनन्दिनयापन सहज बना, नैराश्य –निष्ठुरता बिदा हुई ।
साहस– सद्मति की छाया में, आत्मानुभूति से ग्लानि हुई ।।
अब कर्म खिलेगा ज्ञानरूप, पुरूषार्थ प्रेम की विस्तृति की । गुरूदेव । आपने तन–मन में.....
गंदलापन सारा गत जैसा , गंगा –गरिमा में मिलने से
श्रद्धा का पुण्य–विपिन महका है स्नेह–सुमन के खिलने से ।
सम्पूर्ण शुद्वता उमरेगी ,जड़–जीवन में नव–जागृति दी । गुरूदेव । आपने तन–मन में .

(10) डा0 हर गोविन्द सिंह की कविता ' में जीवनदर्शन देखिए–

(1) जिसने सुपन्थ दिखाया करें उस शक्ति का जयकार।
मोड़ी हे जिसने जमाने की धारा , विखरी मनुजता को जिसने संवॉरा ।।
नव विश्वास जगाया करें उस व्याक्ति की जयकार । जिसने सुपन्थ दिखाया .....
राग मरण का हंस हंस कर गाया , मस्तक न अन्यायी को झुकाया ।।
माता का मान बढ़ाया , करें उस मुक्ति का जयकार ।। जिसने सुपन्थ दिखाया .....

।। कवि की एक अन्य कविता ' जीवन–यज्ञ' में जीवन दर्शन परिलक्षित है–

"कान्ति के यजमान हैं हम, यज्ञमय जीवन हमारा ।
अग्नि है सच्चा पुरोहित ज्योति जिसकी ऊर्ध्व गामी,
आत्मवत सबको बनाये , उष्णता–निष्ठा अकामी,
यह पवित्री करण करदे शुद्ध तन के साथ मन भी ,
आचमन पावन करे अन्तः करण, प्रज्ञा, वचन भी ;

।।। डा0 सिंह की एक अन्य कविता ' भगवान बुद्ध' में जीवन दर्शन अवलोकनीय है–

" निकल पड़े सुख – भोग छोड़कर , वे गौतम भगवान बने ।
करूणा के अवतार तथागत , मानवता के प्राण बनें ।।
करते हम स्वीकार नहीं , धर्म स्वार्थ में सना हुआ ; ग्रहण करेगें बात सही , नीर चाहिए छनना हुआ;
नहीं चाहिए वह पूजा जो निरपराध पशु –जीव हनें । करूणा के अवतार तथागत –
हमने अपने ही घर में , ज्योति–अहिंसा की पायी ,
जो अशोक ने जग भर में , धर्म–चक्र से फैलायी ;
उसी मार्ग पर चलकर देखो , बापू महा महान बने । करूणा के अवतार तथागत –

(11)श्री रामकुमार भारतीय की कविता 'बढ़ता चल क्रान्ति के पथ पर ' की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं –

प्राणों के पंखों में भरले श्रद्धा और विश्वास , नयनों से टकराता होवे वह ऊँचा आकाश ।
अपने बल पर सत्य बनाले स्वप्न सभी साकार , चरण चूमने आयेगा , तब यह सारा संसार।।
पद चिन्हों पर चलते हैं सब , यह सब दुनियॉ के चाल । बढ़ता चल कान्ति के पथ पर .....

(12) स्व0 आनन्द मिश्र की कविता ' नया–पथ ' में जीवन दर्शन परिलक्षित है–

मैं गोताखोर, मुझे गहरे जाना होगा, तुम तटपर बैठ भँवर की बातें किया करते ।
मै पहला खोजी नहीं अगम भव सागर का , मुझसे पहले इसको कितनों ने थाहा है,
तल के मोती खोजे , परखे,बिखराये हैं– डूबे हैं पथ पर मिटटी का कौल निबाहा है
मैं खोजी हूँ , मुझसे उनमें है भेद यहीं मैं सबसे मँहगे उस मोती का आशिक हूँ '
जो मिलान नहीं , वह पा लेने की धुन मेरी, तुम मिला सहेजो घर की बाते किया करो।तुम तट पर

(13) डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी के काव्य में जीवन दर्शन परिलक्षित है–

भटके जो जन लक्ष्य से , करें भूल पर भूल । फँसे अनेक विपत्ति में , चुभें शूल पर शूल ।।
स्वारथ सिद्धि की ललक आया दीन्हा खोइ ।संवेदन से शून्य हो , लोक बिगाड़े दोइ ।।2।।
जड़ता जीवन में जगी , करें कोई उपचार ।ऐसा जीवन भार है, सीखें सद्व्यवहार।।3।।
चिन्तन थमा न एक क्षण , मनोकोष स्पन्द ।वैचारिक अति द्रन्द्र ने , दूर रखा आनन्द ।।4।।
अपना पन पनपा नहीं , केवल कोरी बात । ऐसे जन कैसे जुड़ें , उनकी कहाँ विसात ।।5।।
शरीर सबकुछ है नही इसे चलाता प्राण । प्राण शक्तियाँ तीन हैं, इच्छा क्रिया ज्ञान।।

(14)डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबल– कवि के गीतसंग्रह 'एक डाल ,तीन फूल' के गीतों में कवि धीरे–धीरे दार्शनिकता की ओर उठता प्रतीत होता है फिर भी निराशा ,हताशा , या घुटन के धूम से कवि का मानस आवृत्त दिखाई नहीं देता । धरती पर व्याप्त घुटन के कारण वह आकाश की ओर नहीं निहारता अपितु,धरती और आकाश के बीच उसे एक क्रमिक गति शीलता दृष्टि गोचर होती है।तभी वह कहता है–

"श्रेष्ठ सृष्टि में है मानवतन , मानव तन में भी जीवन ,
जीवन में अति पावन श्वांसें , श्वांसों में सत् केवल चेतन , चेतन में है ब्रह्म सनातन ।।

" कवि की मान्यता है कि – "तृप्त धरा हो अग्नि पवन हो , चाहे जलता नील गगन हो,
काल–यज्ञ मेंकर्म साधना , करने वाले करते ही हैं।'

कवि के मन में कहीं कहीं रहस्यवादियों की सी जिज्ञासा भी प्रकट हो गई है–

किसका आँचल है यह श्यामल ?
नभ के पथ पर विखर विखर कर लगता जैसे फैला काजल ।"

(15) श्री बाबूलाल जैन'जलज'की कविता'कालजयी वह बन जाता'की पंक्तियों में जीवन दर्शन देखिए–

संयम कवच बाँधकर जिसने , काम कोध , मद को जीता ।
जला–जला कर प्राण–दीप जो , सारी रात तिमिर पीता ।।
मौन तपस्ती बनकर जिसने, मानव सेवा व्रत पाला ।
माया को मथने के पहले, आत्म सिंधु को मथ डाला ।।
पत्थर की छाती पर चढ़कर , भक्ति–शक्ति ध्वज फहराता ।
संकल्पों से कभी न डिगता कालजयी वह बन जाता ।।

(16)श्रीशचीन्द्र भटनागर के गीतों में"गुरूसत्ता का विराट रूप"शीर्षक से जीवनदर्शन परिलक्षित है–

1 सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान , मैं ही अदृश्य , मैं दृश्यमान,
मै उद्‌गम , मैं ही विलय स्वयं ,फिर क्या मेरा उद्‌भव–प्रयाण ?
तन की सीमासे आर–पार , बिल्कुल अछोर मेरा प्रसार ,
मैं अखिल विश्व का स्वयं मूल , मैं ही कारण मैं ही निदान । सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान ।। xxx
मैं चाहू तो बढ़चले सूर्य , मेरी इच्छा से ढले सूर्य
पाकर मेरा संकेत मात्र, रूक जाता नभ में अंशुमान । सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान ।।
मैं स्वयं बना नश्वर शरीर , हरने को जग की गहन पीर ,
संघर्ष असुरता से करके , करने धरती का परित्राण । सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान ।।
मेरे वंशज मेरे सपूत! बढ़ चलो कान्ति के अग्रदूत ।
पुरूषार्थ तुम्हारा , सावधान , लाएगा कल नूतन विहान ।। सम्पूर्ण सृष्टि .....

2 एक अन्य गीत में आचार्य शर्मा का जीवन दर्शन है–

तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम ,
हृदय से दूर हो कैसे, हृदय भी भावना हो तुम ।
बताओ चेतना कैसे किसी तन से अलग होगी, सुकोमल भावना कैसे सरल मन से अलग होगी ,
करें कैसे बिदा वे स्वर, तुम्हारी प्रेरणाओं के , थकन मे जो मिले तुमसे, सुखद झोके हवाओं के ,
बिछुड़ सकते भला कैसे हमारी कामना हो तुम ? हृदय से दूर हो केसे .....
हमारी हर प्रगति हर कार्य में तुम ही समायेओ हो कि संकट में सुरक्षा–चक लेकर दौड़ आए हो ,
दिखाया लक्ष्य तुमने ही तुम्ही न राह बतलाई, हमें पतवार तुमने जलधि की थाह बतलाई ,
हमारे साध्य और साधन तुम्ही हो, साधना हो तुम। हृदय से दूर हो कैसे .....

17. मेरे चिन्तन की धारा से , ऋषियों का प्रादुर्भाव हुआ
मेरे जब ऋचा उचारी तो , सुर सस्कृति का फैलाव हुआ ।।
मै याज्ञवल्क्य , मैं ही वशिष्ठ मैं परशुराम भागीरथ हूँ।
जो कभी अधूरा रहा नही, मैं ऐसा प्रवल मनोरथ हूँ।।
प्रण पूरा करने महाकाल हूँ काल चक्र अवरोधक हूँ।
मेरा क्या परिचय पूछ रहे रचयिता रक्षक , पोषक हूँ।। –मंगल विजय

18. आप तव भी व्यक्ति कब थे शक्ति की प्रतिमूर्ति ही थे।
पार्थिव द्वारा , हमारी लालसा की पूर्ति ही थे।।
चाह रहती थी हदय में , पार्थिव तक दौड़ने की
और अपनी वेदना की अश्रुधारा छोडने की।।
विश्व व्यापी शक्ति का सामीप्य, अव तो हर घड़ी है।
आप तो थे ही बड़े , यह और भी उससे बड़ी है।
सामने पार्थिव न पर आदर्श की प्रतिमा खड़ी है।।

6ग

स्वर्गावतरण की कामना

(1) मनुष्य में देवत्व का उदय :– धर्म एवं अध्यात्म विद्या का उद्देश्य मनुष्य प्राणी की अन्तः चेतना को पिघलाकर श्रेष्ठ एवं उत्कृष्टता के ढॉचे में ढालना है। आत्मा का कल्याण उस तम प्रवृत्ति में, आसुरी प्रवृत्ति में पड़े रहने से नही हो सकता, जिसमें मायामोहित अगणित जीव पाशबद्ध स्थिति में पड़े रहते हैं । इनबन्धनों को काटे बिना कल्याण का और कोइ मार्ग नहीं । आत्मा की पुकार 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की है। वह अन्धकार से प्रकाश की ओर जाना चाहती है, देवत्व की ओर विकसित होना चाहती है किन्तु हमारे अन्तः प्रदेश में निरन्तर चल रहें देवासुर संग्राम में तमोगुण का असुर हावी रहता है और हमें माया में फॅसाये रहता है। हमारा अन्तःकरण ही वह धर्मक्षेत्र है जिसमें आसुरी और दैवी प्रवृत्तियों के मध्य सदा संघर्ष चलता रहता है ।

गीता में जिस महाभारत का वर्णन है और अर्जुन को जिसमें लड़ाया गया है , वह वस्तुतः आध्यात्मिक युद्ध ही है । अध्यात्य की भाषा में इसे ही ' साधना–समर ' कहते हैं । इस समर में विजय होने वाले व्यक्ति महामानव , ऋषि एवं इत बनकर पूर्णता के लक्ष्य को प्रापत करते है। साधना से मनुष्य देवत्व को प्राप्त करता है । युगनिर्माण योजना का अभ्युदय एवं विशाल गायत्री परिवार का गठन जिस लक्ष्य को लेकर हुआ है –' मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण , परम पूज्य गुरूदेव ने युगपरिवर्तन की सम्भावना के साथ जिस उज्जवल भविष्य की कल्पना को साकार होने की घोषणा की है, उसमें मनुष्य में देवत्व का उदय प्रमुख आधार है। इस तथ्य को उन्होंने अपने जीवन में प्रत्यक्ष कर दिखाया है कि मनुष्य का समग्र विकास देवता के रूप में होनाचाहिए । यह उत्कर्ष की चरम सीमा है। देवत्व ही वह वैभव है, जिसकी परिणति अनेकानेक ऋद्धि–सिद्धियों के रूप में प्रकट–परिलक्षित होती है। देवत्व को अमृत , पारस , कल्पवृक्ष , ब्रसास्त्र आदि नामों से पुकारा जाता है और असाधारण विशेषताओं तथा क्षमताओं से सम्पन्न बन जाता है। इन्हें ही विज्ञान वेत्ता 'सुपरमेन' व अध्यात्मवेत्ता , अतिमानव , महामानव, सिद्धपुरूष , पर के रूप में नारायण आदि नामों से विभूषित करते हैं । पवित्रता एवं प्रखरता , सम्पन्न ऐसे व्यक्तित्व जिस की अवांछनीयता पर टूट पड़ते है , उसे निस्सार करके रख देते हैं कभी ऐसे ही समुन्नत व्यक्तियों का बहुल्य अपने भारत वर्ष में था । वे देवमानव, महानव कहे जाते थे और प्रतिष्ठा जगतगुरू , चकवर्ती , महाप्राज्ञ , एवं स्त्रजत , प्रणेता के रूप में होती थी । उन्होंने ही अपने निवास भूमि को "स्वर्गादपिगरीयसी" बनाया था। निश्चय ही किसी समाज की , समय की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि महामानवों, देवमानवों की उत्पन्न करने की दृष्टि से उसे सहारा ओर स्मृरण रखा जाए । देवमानवों का बाहुल्य समूची मानव जाति के लिये वरदान है।

व्यक्तित्व के परिष्कार एवं देवत्व के उदय को अध्यात्म जगत का परम पुरूषार्थ माना गया है। विकासवाद की यह चरम सीमा है। यही वास्तविक मानवी प्रगति का स्वरूप है। यों तो इस सम्बन्ध ा में पश्चात्य विचारकों , दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों ने अपने–अपने चिन्तन के अनुसार अलग–अलग स्वरूप बनाया है। परिस्थितियों के दबाव को प्रमुखता देने वाले नात्से , व्यक्ति की निरंकुश सत्ता का प्रतिपादन करने वाले ऐनार्किस्ट, 'ब्रेनवाशिंग' को ही प्रमुख उपाय मानने वाले साम्यवादी ,रसायन , औषधियों वाले

आयुर्वैज्ञानिक, कृत्रिम संसर्ग या नियोग पद्वति द्वारा उच्चवंश की उत्पत्ति का प्रतिपादन करने वाले दार्शनिक , जेनेटिक इंजीयनियरिंग के माध्यम से मनुष्य की नयी कलम लगाकर उच्च विकसित ' सुपरमैन' की वकालत करने वाले विज्ञानवेत्ताओं आदि केअपने–अपने पक्ष और प्रयोग हैं वे सभी अपने उपाय–उपचारों से मनुष्य को अधिक सामर्थ्यवान बनाना चाहते हैं, किन्तु अध्यात्म वेत्ता इससे भिन्न प्रकार के उपाय बताते हैं।परमपूज्य गुरूदेव ने मनुष्य की में देवत्व की सम्भावना को विचार विज्ञान एवं ब्रहमविद्या की परिधि में लिया है और मनः स्थिाति को प्रधानता दी है। इसी को विविध सधनात्मक उपाय उपचारों से परिष्कृत कर देवोपम परिस्थितियॉ बनायी जा सकती हैं।

देवत्व हर व्यक्ति के अन्तःकरण में पर्याप्त मात्रा में मॅजूद है, पर वह प्रसुप्त और विखरा पड़ा है , उसे अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं । लंका लॉघन से पहले हनुमान को और महाभारत के युद्ध को जीतने से पहले अर्नुन को जिस तरह अपने ऊपर विश्वास नहीं था, पर जब उन्हें आवश्यक ज्ञान और प्रोत्साहन दिया गया, तो दोनों ही अपने उद्देश्य में सफल हो गये। इसी तरह जनमानस की परिष्कार और सत्प्रवृत्ति–संवर्धन में निरत प्रज्ञा अभियान के माध्यम से आचार्य जी ने मनुष्य में देवत्व का उदय और ध ारती पर स्वर्ग के अवतरण का सपना देखा था , और उसे साकार कर दिखाने के लिए वे प्राणपण से संलग्न रहें।

(2) स्वर्गावतरण की कामना :–अपने विकास के सिद्धान्त के अनुसार आचार्य श्री राम शर्मा ने मानव में देवत्व के साथ धरती पर स्वर्ग के अवतरण की घोषणा की । अन्य गम्भीर विचारकों की तरह उन्होने भी मानव के वर्तमान संकट को देखा और परखा , परन्तु वह बौद्धिक विकृतियों से उपजे इस संकट का समाध ाान एक नयी बौद्धिक पहेली के रूप में नहीं देते है । उनके अनुसार समाधान मानव का देव मानव की ओर आरोहण हैं । उनका समस्त जीवन इसी कार्य के लिए अर्पण था । वर्तमान स्थिति कितनी भी निराशावादी क्यों न हो फिर भी आचार्य जी के आशावाद के अपने कारण हैं जिनकी विस्तृत विवेचना शोध ाार्थो द्वारा''वैज्ञानिक अध्यात्म''एवं''आध्यात्मिक समाज'' के अन्तर्गत द्वितीय अध्याय में की जा चुकी हैं ।

आचार्य शर्मा के अनुसार देवमानव का विकास ही धरती को स्वर्ग में बदलेगा । यह सब मानवीय विकास का क्रमिक सोपान होने के साथ ही दैवी योजना के अनुरूप होने के कारण एक अवश्यम्भावी नियति है। इसका मूर्त रूप ही मानव की वर्तमान समस्याओं का स्थाई हल होगा । यों मनुष्य ने अपनी समस्याओं के लिए अब तक अनेको बौद्धिक युक्तियॉ खोजी है , पर हर युक्ति ने अनेकों नयी समस्याओं को जन्म दिया है । आचार्य जी का कहना कि समाधान बौद्धिक हल नहीं मानव का चेतनात्मक विकास है । जिसे वह देव मानव की संज्ञा देते हैं । आचार्य जी का यह समाध ाान सैद्धान्तिक रूप से अन्य सभी समाधानों से कहीं अधिक उपयुक्त एवं समीचीन हैं । इसके सैद्धान्तिक स्वरूप को उनके द्वारा किये गये व्यावहारिक प्रयास यथार्थ पूर्णता देते हैं । इन सबको देखते हुए यह मानना पूर्ण रूप से युक्तियुक्त है कि उनके प्रयास धरती पर नवयुग लाकर रहेंगे ।

आचार्य शर्मा के मतानुसार धरती पर स्वर्गातरण कैसे होगा, इस सन्दर्भ में उनके विचार है'– ''वास्तव में स्वर्ग धरती पर ही हैं । अन्यत्र ऊपर नीचे कही नहीं । अतः वह धरती पर ही विनिर्मित किया जा सकता हैं । अपने पुरूषार्थ एवं प्रयत्नों द्वारा स्वर्ग यहीं निर्मित करना है । इसी

आशा भरे सन्देश को पूरे भूमंडल पर फैलाने का भगीरथ कार्य आचार्य जी ने किया कि धरती को ही स्वर्ग बनाना है । पं0 लीलापत शर्मा अपनी पुस्तक "पर्वपीयूष" में लिखते है–

"जब परिवारों में पिता–पुत्र , पति–पत्नी , भाई–भाई सभी आपस में में प्रेमपूर्ण व्यवहार करने लगेंगे , सास–बहू , देवरानी –जेठानी , ननद – भौजाई भी प्यार से रहने लगेंगे , तकरार समाप्त हो जायेगी तो परिवार ही स्वर्ग बन जायेंगे । अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़, सबके हित में प्रसन्न रहना सीख लें और धृणा –द्वेष को त्याग सभी जन प्रेम की धारा में बहने लगें और रोना धोना छोड़ प्यार का संगीत गाने लगें तो यह धरती अवश्य ही स्वर्ग बन जायेगी ।" आचार्य शर्मा जी के मतानुसार – सम्बन्धियों और पड़ौसियों से हमारा निष्कपट व्यवहार हो ,सबके सुख एवं दुःख कें साथी बनें, सेवा करें, सज्जन निर्बल भी हो तो उसका सम्मान करें और दुर्जन बलशाली हो तो भी न डरें। इस तरह सच्चे मनुष्य बन जायें तो यह धरती स्वर्ग बन जायेगी । जिस गॉव या शहर में हम वास करें , उसे हर तरह से आदर्श बनाया जाये । वहॉ की गन्दगी आदि दूर करके उस स्वच्छ रखें , घर–घर में शिक्षा का प्रचार –प्रसार करें, इस प्रकार इस संसार से अज्ञान , अभाव , अशक्ति को हटाकर इसधरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है।"

प्रसुप्त देवत्व और उसका पुनर्जागरण :–

विचारक अल्बर्ट श्वाइत्जर ने लिखा है– "देवत्व हर व्यक्तित्व अन्तःकरण में प्रचुरमात्रा में विद्यामान है, कोई भी वयक्ति नितान्त बुरा नहीं होता । अन्तस्तल में प्रसुप्त श्रेष्ठता को उभार दिया जाये तो बुरे से बुरा व्यक्ति भी महान बन सकता है । यह भाव लेकर मैं पहली बार अफ्रीका गया और वहॉ के जीवन ने मेरी उक्त धारण की पुष्टि कर दी । अधिक कुटिल और दुष्ट कहकर लोगों न जिनकी उपेक्षा कर दी थी उनके पास गया और पाया कि उनके हृदय में प्रेम पाने की उत्कट अभिलाषा थी पर किसी ने उन्हें प्यार नहीं दिया । जिन्हें स्वार्थी और संकीर्ण कहा जाता था उन्हें भी छोटे छोटे बच्चों के प्रति , पेड़ और पौधों के प्रति स्नेह और उदारता व्यक्त करते देखकर मेरे मन ने कहा स्वार्थ और संकीर्णता सामयिक विकार है, सनातन नियम नही, यदि उनकी स्नेहवृत्ति और उदारता को प्रोत्साहन मिलता तो वही व्यक्ति समाज के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध हो सकते थे । आत्म जिज्ञासा तो नास्तिक व्यक्ति में भी होती है। मुझे एक हबशी मिला जो किसी भी तर्क से यह मानने के लिए तैयार नहीं था कि संसार में कोई ईश्वरीय सत्ता भी हो सकती है? इतने पर भी उसे अपने आपको जानने की प्रबल इच्छा थी और वह बताती थी कि मैं नास्तिक हो सकता हूँ किन्तु मेरा अंह नास्तिक नहीं । यदि उस वयक्ति की जिज्ञासाओं को उभारा गया होता और उसे सनातन सत्ता की शोध के लिये प्रेरित किया गया होता तो वह बहुत पहले ही इतना बड़ा आस्तिक होता जितना आस्तिक होने का गौरव कोई भी निर्वाण प्राप्त व्यक्ति कर सकता है।"

कटु बोलने वाला भी मीठा सुनने को लालायित रहता हैं। प्यार और प्रशंसा पाने की भूख किसे नहीं होती ? सर्प भी माधुर्य का अभिलाषी होता है यद्यपि प्रकृति नें उसे अत्यधिक क्रोधी और विषैले स्वभाव का बनाया है। श्रेष्ठताओं से रिक्त कोई अन्तःकरण नहीं पर जब उनकी उपेक्षा की जाने लगती है तो वहीं संस्कार दबते चले जाते हैं और मानवीय सद्गुणों के स्थान पर दुर्गुणों की प्रतिमा प्रतिष्ठा पाने लगती है। वही व्यक्ति धीरे–धीरे बुरा होने लगता है । फिर वह बुरा ही नही रहता, बुराई फैलाने भी लगता

है। इसलिए बुराई को दूर करने का सबसे अच्छा उपाय उसे मारना या निन्दा करना नहीं वरन् उसके स्थान पर अच्छाई को विकसित करना होता है ।जहॉ एक बार प्रकाश आ जाता है वहॉ फिर अन्धकार नहीं रह सकता ।जहॉ एक बार सद्गुण और श्रेष्ठता स्थापित होगई वहॉ बुराई अपने आप ही नहीं रह सकती ।

गरम राख का ढेर जमा हो जाने पर भी भीतर आग की उष्मा नष्ट नहीं होती , उसी प्रकार बुरे से बुरे व्यक्ति के अन्तःकरण में अच्छाई का एक कण भी विद्यमान न हो,ऐसा कभी हो नहीं सकता । उस एक कण कोही फूँक मार कर जगा दिया जाये तो व्यक्ति जादू के असर की भॉति दिनों दिन श्रेष्ठता के शिखर चढ़ता चला जा सकता है । आचार्य श्रीराम शर्मा के मतानुसार – "आज के समाज की मूलभूत अवश्यकता हे प्रसुप्त देवत्व के पुनर्जागरण की । बुराइयॉ किसी के अन्दर नहीं , अपनी दृष्टि में है। हम अपनी दृष्टि रचनात्मक और इतनी पैनी कर लें कि भीतर से भी भीतर छिपे सद्भाव को पहचान लें और फिर उसे उभारने – अभिसिंचित करने में जुट जायें तो कोई भी शक्ति नहीं जो जन–जन के जीवन में उज्जवल प्रकाश भरने और धरती पर स्वर्ग लाने से रोक सके ।"1

आचार्य शर्मा का कथन है–" स्वर्ग और नरक के लिए अन्य लोकों में जाने की आवश्यकता नहीं, सत्कर्मों के परिणाम स्वर्ग के रूप में तथा दुष्कर्मों के परिणाम नरक के रूप में हमें इसी जीवन में प्राप्त होते हैं । " भगवान कपिल देवमाता देवहुति से कहते है–

"अत्रैव नरकः स्वर्ग इति मतः प्रचक्षते ।
या यातना वै नारक्यस्ता इहप्युपलक्षिताः ।। " अर्थात् माताजी । ऐसा कहा गया है कि स्वर्ग और नरक तो इसी लोक में है, क्योंकि जो नारकीय यातनाएँ हैं , वे यहॉ भी देखी जाती है।

वास्तव में स्वर्ग और नरक इसी पृथ्वी पर है । गहराई से विचार करते हैं तो यह हमारे चिन्तन में ही निवास करते है। "उत्कृष्ट चिंतन ही स्वर्ग तथा निकृष्ट चिन्तन ही नरक है । जिस समय सद्गुण हमारे चिन्तन में रहते है। तथा हृदय में सत्वगुण की प्रधानता रहती है, उस समय हम स्वर्ग में ही निवास कर रहे होते हैं ," स्वर्गः सत्वगुणोदयाः" इसी तरह जब दुर्गुण हमारे विचारो में छा जाते हैं तथा हमारे हृदय में तमोगुण की प्रधानता रहती है तब हम नरक में ही रहते हैं । सूत्र है– "नरकस्तमउन्ना" अब हृदय हमारी किया पद्धति पर निर्भर है कि हम स्वर्ग में निवास करें या नर्क में ।"

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'मनुष्यत्व ही मुक्ति का द्वार हैं' को आचार्य शर्मा जी ने अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान देते हुये अपने काव्य संकलन "जीवन संगीत" में प्रकाशित किया–

बनालो जहॉ ही वहॉ स्वर्ग है, नहीं स्वर्ग कोई धरा–वर्ग है।
खलो कों कही भी नही स्वर्ग है, भलों के लिये तो यही स्वर्ग है।।
सुनो स्वर्गक्या है? सदाचार है। मनुष्यत्व ही मुक्ति का द्वार है।
यहीं स्वर्ग चाहे बना लीजिये, यहीं नारकीय सृष्टियॉ कीजिये ।
नहीं कौन सी साधना है यहॉ , वहीं सिद्धि है साधना है जहॉ ।।
महा साधना क्षेत्र संसार है, मनुष्यत्व ही मुक्ति का द्वार है ।। xxx

1. आचार्य श्रीराम शर्मा – मनुष्य में देवत्व का उदय , पृ0 81

जहॉ स्वार्थ का सर्वथा त्याग है, सभी के लिए एक सा भार्ग है ।

जहॉ लोक–सेवा महाधर्म है , जहॉ कामना छोड़के कर्म है।।

वहॉ आप ही आप उद्धार है । मनुष्यत्व ही मुक्ति का द्वार है।। बनालो जहॉ .....–गुप्त

आचार्य शर्मा के प्रयासों की परिणति–धरती पर स्वर्ग का अवतरण –

आचार्य जी ने शान्तिकुंज को आध्यात्मिक समाज बनाते–बसाते समय लिखा था– " गायत्री नगर बनाने का संकल्प इसी दृष्टि से उठा कि धरती पर स्वर्ग के अवतरण का स्वप्न छोटे रूप में साकार करके दिखाया जाये । यह स्वप्न केवल आज अपने मूर्त रूप में ही नही है , बल्कि अपनी स्वगीय परिस्थितियों को विश्वव्यापी बनान में तत्पर है। शान्तिकुंज की वर्तमान गतिविधयों के पीछे आचार्य जी द्वारा संचालित वह सूक्ष्म प्रकिया है– जिसका उल्लेख उन्होंने अपना दृश्यमान कलेवर छोड़ने के थोड़े ही सयम पूर्व किया था। उन्हीं के शब्दों में " पिछले दिनों दृश्य काया से, परोक्ष सत्ता के मार्गदर्शन में जो कर्तव्य बन पड़ा वह सबके सामाने है। साधाना द्वारा आत्म परिमार्जन, युग साहित्य का सृजन , लाखों का संगठन, समर्थ सहायकों का विकास, लोकसेवियों का निर्माण, युगसन्धि का शिलान्यास , विचारकान्ति का सूत्र संचालन जेसे कितने ही विलक्षण कार्य लोगों ने अपनी ऑखों से देखे हैं। यह सब काया द्वारा बन पड़ी गतिविध ायों का संक्षिप्त परिचय है। "1

अब जीवन का दूसरा अध्याय प्रारम्भ होता है। अब इसमें जो होना है उसे और अधिक महत्वपूर्ण मूल्यवान माना जा सकता है। स्थूल के अतिरिक्त सूक्ष्म व कारण शरीरों का अस्तित्व अध्यात्म विज्ञानी बताते रहे हैं । उन्हें स्थूल शरीर की तुलना में असंख्य गुना शक्तिशाली कहा गया है। उन्हीं का प्रयोग अब एक शताब्दी तक किया जाना है। "आचार्य जी ने यह कार्य 1990 के वसन्त पर्व से आरम्भ किया था। वहॉ से लेकर सन् 2000 तक दस वर्ष तक के समय को उन्होने युग संधि समय घोषित किया तथा इस अवधि में जो गतिविधियॉ चली। उनका केन्द्र शान्तिकुंज हरिद्वार रहा।

युग चेतना का विस्तार इन्हीं दिनों हुआ। भारत के कोने कोने में और विदेशों में बसे भारतीय मूल के विशिष्ट जनों के माध्यम से युग सन्धि का सवरूप व्यापक बनाया गया । इसके लिये जिस आध यात्मिक साधना कि–रचनात्मक क्रियालापों की आवश्यकता पड़ी, उसका विस्तार भी इन्ही दिनों होता चला गया । यह कार्य आचार्य जी के सूक्ष्म शरीर द्वारा सम्पन्न हुआ । स्थूल शरीर तो इससे पहले ही साथ छोड़ चुका था। कारण स्पष्ट हैं कि स्थूल शरीर की विधि व्यवस्था में ढ़ेरों समय खर्च हो जाता था, जबकि सूक्ष्म शरीर बिना किसी संझट के , व्यापक क्षेत्र में अपना कार्य द्रुतगति से करता–कराता रह सकता है।

आचार्य शर्मा का कथन है – "कारण शरीर की शक्ति बड़ी है। उसका कार्य क्षेत्र भी बड़ा है । अदृश्य जगत में जो घटित होने जा रहा है उसमें हस्तक्षेप की सामर्थ्य भी कारण शरीर में होती है। इक्कीसवी सदी में कई अनर्थों से जूझने की आवश्यकता पड़ेगी और कई ऐसे प्रयास सम्पन्न करने पड़ेगे जो न स्थूल शरीर से बन सकते हैं ओर न उन्हें सूक्ष्म शरीर ही कर सकता हैं। ब्राह्मी चेतना से जुड़कर

1. आचार्य श्री राम शर्मा – नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी, पृ0 29,30

दिव्य कारण शरीर ही उस सब कार्यों को कियान्वित करता है जिन्हें प्रायः अद्भुद एवं आलौकिक कहा जाता है। वे आगे लिखतें है – "युग परिवर्तन की प्रस्तुत वेला में इस महान कार्य के लिये जो सुविधाएँ सामने आयेंगी उनका उद्भव अदृश्य जगत से होगा । अदृश्य से ही दृश्य गतिविधियॉ प्रकट होंगी । जो कुछ भी किया जाना है वह ब्राह्मी चेतन से जुड़ा कारण शरीर ही सम्पन्न करेगा। इक्कीसवी में ऐसे ही परिवर्तन होगें , पर यह प्रतीत न होगा कि यह केसे हो रहे है, कौन कर रहा है? चूँकि पिछले दो हजार वर्ष की गड़बड़ियॉ सौ वर्षों में ही ठीक होनी है इसलिए सुधार की गतिविधियॉ अपनी चरम सीमा पर होंगी । इसे सामान्य साधन और प्रयासों से नहीं किया जा सकता।इसके लिए विशिष्ट प्रयास अनिवार्य है।"1 आचार्य शर्मा के मतानुसार –"शान्तिकुन्ज और उसके सूत्र संचालको द्वारा किये जा रहे इन विशिष्ट प्रयासों की परिणति धरती पर स्वर्ग के अवतरण के रूप में होगी । भावी अध्यात्मिक समाज में रहने वाले लोगों की मनः स्थिति में देवत्व की उत्कृष्टता भरी होगी , वहीं व्यवहार में स्नेह , सहयोग , सृजन, सौन्दर्य की हलचलें दृष्टिगोचर होंगी ।वसुन्धरा देवों की निवास भूमि स्वर्ग के रूप में दिखाई पड़ने लगेगी।" 2

मनुज में देवत्व और धरती पर स्वर्गावतरण की कामना विषयक रचनाएँ

(1) श्री मंगल .विजय'विजयवर्गीय'की एक रचना की पंक्तियों में स्वर्गावतरण की कामना परिलक्षित है–

(।) "अन्त है पीड़ा पतन का अब मनुजता मुक्त होगी,
स्नेह , श्रम ,सहकार से, भू स्वर्ग के उपयुक्त होगी,
अब न शोषक और शोषित में मनुज धरती बॅटेगी ।
अब सुनिश्चित ही कुचिंतन –कालिमा –कलुषित कटेगी ।।"

(।।) श्री मंगल विजय की एक अन्य रचना ' धरती को स्वर्ग बनाना है' की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं

ऐ धरती के रहने वालो । धरती को स्वर्ग बनाना है।
है स्वर्ग कहीं यदि ऊपर तो , उसंको ही भू पर लाना है।
है स्वर्ग लोक इस धरती पर ऊपर अथवा अन्यत्र नहीं,
तुम उसको यही तलाश करो, आओ न ढूढ़ने और कहीं ,
अपने पुरूषार्थ प्रयत्नों से कर दो उसका निर्माण यहीं ।
यह आशा का संदेश तुम्हें भू मण्डल में फैलाना है।।ऐ धरती के रहने वालो....

।।। आओ नया समाज बनाएँ, इस धरती पर स्वर्ग बसाएँ।
हम सुधरेगें, युग सुधरेगा , हम बदलेगें, युग बदलेगा
सच्चा तभी प्रकाश मिलेगा , जब निज उर में दीप जलेगा ,
घर–घर सद् विचार फैलाएँ । आओ नया समाज बनाएँ।

IV श्री मंगल विजय ' विजय वर्गीय ' की रचना ' समर्थ व्यक्तित्वों से 'में मनुज में देवत्व और धरती पर स्वर्ग, के भाव देखें–

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा– 21वीं सदी – उज्जवल भविष्य , पृ0 138
2. डा0 मन्दाकिनी श्रीमाली– प्रज्ञा पुरूष का समग्र दर्शन

नव युग का निर्माण आज तो , सृजन सैनिकों को करना है।
युग परिवर्तन के चरणों को परिवर्तन–पथ पर धरना है।।
ज्ञानयज्ञ की लिये मसालें लड़ना है अज्ञान–तिमिर से ।
सद्विचार का सद्भावों का वातावरण बनायें फिर से ।
मनुजों को इस धराधाम पर करना होगा स्वर्ग–अवतरण ,
मनुजों में देवत्व –उदयहित, सदाचार को बढ़ना होगा। यु0 नि0 यो0 (पा0) 28 सितम्बर 1978

(2) डा0 हर गोविन्द सिंह की कविता ' स्वर्ग का अवतरण ' की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं –

। आज बेचैन हैं स्वर्ग की शक्तियॉ, हे मनुज तुम उठो , दिव्य अनुदान लो । XXX
कब उठे, ऊर्ध्वगामी बने जाति यह , देव सत्ता प्रतीक्षा यही कर रही
तुम बढ़ाते नहीं पात्र अपना वहॉ, है जहॉ से सुधा अनवरत झर रही ;
प्यार मॉ का अपरिमित दलकता वहॉ, तुम स्वयं को यहॉ पुत्रवत मान लो ।

।। एक अन्य कविता ' नया संकल्प' की पक्तियॉ अवलोकनीय है–
चले हम नया आज संकल्प लेकर । बदल दें जमाना , स्वयं को बदलकर ।
कहॉ आसुरी वृत्तियॉ रह न जाएँ; किसी को न पीड़ा–पतन अब सताएँ;
नहीं राज्य–ऐश्वर्य की चाह हमको , प्रथम कामना है– सुधारें स्वयं को ;
दिशाएँ पलट दें नयी दृष्टि देकर । बदल दें जमाना .....
सिखा जो रहे बालकों को निरन्तर , स्वयं भी चले यदि उसी पर बड़े नर –
सुनिश्चित समझ लो , यहीं स्वर्ग आए , यही धूल सोना बने, जगमगाए,
बसें देवता सब यहीं देह धरकर । बदल दें जमाना .....

(3)श्री बलराम सिंह परिहार की कविता 'अर्चना' की पंक्तियों में स्वर्गावतरण के भाव देखिए–
इस धरा पर जो प्रगति नूतन निरन्तर छा रही है।
आज " युग निर्माण " के उन नव स्वरों की अर्चना ।।
उन्नयन कर्ता ! नमनशत!! घोष तव पावन तमुल हो,
इस सृजन की काश्यपी पर ज्ञान संवर्द्धित विपुल हो,
छॅट रहे व्यामोह के घन–असित शुचिता आ रही है।
अमर हो देवेश की गुरू–गौरवान्वित गर्जना ।। XXX
देव! कर देंगे विचारों की कुरति को चूर्ण हम, शक्ति दो ! रख दें बदल कर विश्व यह सम्पूर्ण हम
व्यथा–बोझिल आत्मा जग की जनक ! मुरझायी है वंद्य ! पूर्ण प्रकाश दो , साकार हो अभ्यर्थना।।

(2) श्री बलराम सिंह परिहार की कविता'बने यह धरती स्वर्ग समान 'की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–
परम पिता परमेश्वर हमको दो ऐसा वरदान ,
ऐसा करें प्रयत्न बने यह धरती स्वर्ग समान ।।
रोग शोक से पीड़ित कोई भी न रहे नर–नारी, खिले फूल सी हो प्रमुदित प्रभु ! तेरी वसुधा सारी ।।

फैले विमल प्रकाश ज्ञान की पावन ज्योति जगायें , द्वेष दुर्गुणों को पावन जगती सू दूर भगायें ।
जाति का जीवन बने महान विश्व का हो पावन उत्थान । ऐसे करें प्रयत्न बने यह .....

(4) श्री राम कुमार भारतीय की रचना ' है अगर प्रभु प्रेम पाना ' की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं–

" है अगर प्रभु प्रेम पाना , तो मनुज से प्यार कर लो , दूर कर दुर्भावनायें तुम हृदय में प्यार भर लों।।

जल रही है आग हिंसा , द्वेष की संसार में ,
आज जकड़ा है मनुज , पानी दनुज के कूर कर में ।।

अब उठो युवको ! बहाओ ।शान्ति की धरा धरापर ,
प्रेम–जल को सींचकर , सन्तप्त जन की पीर हर लो ।।

बोल मीठे बोलकर सारा जगत अपना बना लो,
पद–दलित पीड़ित जनों को उठकार उर लगा लो ।।

स्वर्ग आयेगा उतर फिर देखना सचमुच यही पर,
तुम अगर संसार में शुचि , प्रेम का विस्तार कर लो।।

है अगर प्रभु प्रेम पाना तो ..... ''युग–निर्माण संगीत'' भाग 9 पृ0 25

(5)श्री रमेशचन्द्र गुप्त की रचना'धरती मुझको सौ स्वर्गों से प्यारी'की पंक्तियों में स्वावतरण दृष्टव्य है

तुम मुझसे बात करो मत चॉद सितारों की , धरती मुझको सौ स्वर्गों से ज्यादा प्यारी ।
मेरी धरती में कुछ ऐसा आकर्षण है , गंगा भी छोड़ स्वर्ग को इस पर बहती है।
ऋतुओं की रानी, परी प्रकृति, की दोनों ही , इस पर ही आकर रूप सॅवारा करती है।
इस धरती पर ही राम उतर कर आए थे, लीला की थी राधा ने ऑर कन्हैया ने ।
लिख डाले छन्द चन्द , सूर और तुलसी ने गाए थे गीत यही मीरा बाबरिया ने ।
है कण –कण में भगवान यहॉ, ऐसी न्यारी । धरती मुझको सौ स्वर्गों से .....

(7) श्रीमती माया वर्मा की कविता ' नयी दुनियॉ बसायेंगे ' में स्वर्गावंतरण के भाव देखें –

कुमति, अज्ञान मेटेंगे , सुखद सद्गुण बढ़ायेंगे।
हुई प्राचीन यह दुनियॉ , नयी दुनियॉ बसायेंगे ।
न उसमें जाति का आधार पर कोई अलग होगा , न रंग या रूप के कारण कहीं कोई विलग होगा।।
मिलेगा आदमी से आदमी तब बॉह फैलाकर , खिलेंगे एक से ही पद्म सबके हृदय में सुन्दर ।।
प्रकृति , गुण, कर्म के आधार पर सब मान पायेंगे । हुई प्राचीन यह दुनियॉ XXX
अशिक्षा या अविद्या का नहीं अस्तित्व तब होगा,रहेगा तब नहीं अज्ञान,अविनय भी न तब होगा ।।
सभी अर्जित करेंगे ज्ञान ,विद्या पायेंगे शिक्षा, तपस्वी योग्य गुर देंगे सभी को आत्मबल –दीक्षा ।।
सुखद सत्यं शिवम् सुन्दरं वाली व्यवस्थायें बनायेंगे। हुई प्राचीन यह दुनियॉ .....

(8) डा0 रामस्वरूप खरे की कविता ' तुम बदले तो युग बदलेगा ' की पंक्तियों में कवि स्वर्गावतरण हेतु कर्म सुधारने पर बलदेते हैं–

परिवर्तन की होड़ लगेगी , जन बदले जीवन बदलेगा ।
वह तूफान उठेगा जिससे निर्माणों का तन बदलेगा ।।
अपना कर्म 'स्वरूप' सुधारो , अपना रूप अनुप करो तुम ,

नव–पल्लव की ऋतु आने दो पीत–पात का कम बदलेगा ।

बदलो अपने को पहले तुम, निश्चय सारा जग बदलेगा ।,

मौसम भी बदलेगा साथी , युग बदलेगा युग बदलेगा ।। यु0 नि0 यो0 (पा0) 6 दिसम्बर 1980

(9) श्री लक्ष्मी नारायण ' कमलेश ' की रचना 'इन्सान में भगवान' की पंक्तियॉ देखिए–

अन्तर में क्यों फिर किसी स्वर्ग की चाह पले

इन्सानों का यदि रूप लिये भगवान मिले ।।

कुछ और अधिक हो जायें हमारे मन निर्मल , भावना सिंध बन जाए पावन गंगा जल,

हो जीवन नैया की समता पतवार सबल, आस्थाएँ हों जीवन के प्रति सबकी अविचल ,

दुखियों का सुन सन्ताप हमारा मन पिघले । इन्सानों का यदि रूप लिये भगवान मिले ।।

फिर पूजा जाए सत्य सदा मन्दिर –मन्दिर ,सौहार्द्र और समता से जीवन जाए भर ,

निर्मल भावों के हृदयों में फूटें अंकुर , परमार्थ भावना जन जीवन में पड़े विखर,

जग में बिखेरने गंध हृदय का सुमन खिले । इन्सानों का यदि रूप लिये .....

(9) श्री वीरेश्वर उपाध्याय की कविता ' जय महाकाल में ' स्वर्गावतरण देखिए–

आओ देवत्व जगाने को , धरती को स्वर्ग बनाने को ।

अपनत्व सभी में विकसा दो , हे सज्जन के मानस मराल । जय महाकाल .....

हे प्रभु सद्बुद्धि हमें दे दो , शुभ सृजन शक्ति हममें भर दो ।

उज्जवल भविष्य तक पहुचादो , मानवता को कर दो निहाल ।। जय महाकाल .

(10) श्री शचीन्द्र भटनागर की कविता 'सच्चा सतयुग आएगा 'में स्वर्गावतरण के भाव अवलोकनीय हैं

महामंत्र गायत्री को अब सारा जग अपनाएगा,

इस कलियुग में निश्चय ही अब सच्चा सतयुग आएगा ।

कंठ सूखता जो मानवता का मरूस्थली हवाओं में ?,

तन–मन–अन्तःकरण घिरा जो रोगों में , विपदाओं में

गंगोत्री से बहा ज्ञान – जल घर–घर तक जब जायेगा

तब जीवाणु भृष्ट चिन्तन के जड़ से सभी मिटाएगा,

दैवी संस्कृति का अमृत जल नूतन प्राण जगायेगा । इस कलियुग में .....

संप्रदाय के लिए न अब तो घर ऑगन बॅट पाएँगे ,

जाति, प्रांत ,भाषा के कारण कहीं न मन बॅट पाएँगे ,

मिलने की आवाज उठेगी फिर उठती दीवारों से

छलकेगा फिर प्रेम हृदय के कोमल–कूल कछारों से ,

क्षुद्र स्वार्थ के लिए न कोई मानव को छल पाएगा । इस कलियुग में

(11) डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी के काव्य में स्वर्गावतण के भाव देखिए–

श्रम कर्मो के पुण्य से, नवयुग आता जाय। बदलेगी आकृति नहीं , प्रकृति बदलती जाए ।।

जीवन की जड़ पुण्य में , पुण्य करे सब कोई । पाप कर्म से दूर हों ,स्वर्ग धरा पर होइ।।

(12) श्री शिवशंकर मिश्र की कविता हम 'धरती पर नया सवेरा लायेंगे ,में स्वर्गावतरण परिलक्षित है–

हम 'धरती पर नया सवेरा लायेंगे ,

जब न यहाँ अज्ञान तिमिर रह पायेगा ,

ज्ञान सूर्य जब नयी ज्योति ले आयेगा।

उषा इंदिरा–सी हमको नव किरण मिली ,

नवल स्फूर्ति हम कण–कण में बिखरादेंगे । XXX

अब न मनुजता वैभव की होगी चेरी,

रामराज्य आने में अब न अधिक देरी ।

मरूथल में भी नव जीवन सरसाने को –

स्वयं भगीरथ बन स्वर्ग गा लायेंगे ।।

साथ हमारे भावों की अमराई है ,

साथ हमारे प्राणों की तरूणाई है।

जग उपवन अब नंदन–सा बन जायेगा,

घर ऑगन को सब मिल स्वर्ग बनायेगे ।

हम धरती पर नया सवेरा लायेंगे ।। "अवशेष पुण्य" पृ0 101

(13) श्री मती विद्यावती मिश्र की कविता ' देवता धरती पर आओ।' की पंक्तियॉ देखिए –

नभ पर रहकर कौन भूमि की बात समझता हे,

तुम्हें भला क्या पता कौन –सी सिद्धि मुनजता है,

इसे जान लेने को क्षण भर मानव बन जओ । देवता धरती पर आओ !!

तुम हो नर की उपज नियन्ता को कैसे भूले ,

पाकर के सम्मन , जगा अभिमान और फूले ,

जिस पर आश्रित सत्ता उसको यों मत ठुकराओ । देवता धरती पर आओ ।।

नगर–ग्राम के जन- समूह में मिलो ओर विचरो,

बना सांस्कृतिक बुद्धिवाद की सीढ़ी अब उतरो ,

पूर्ण मनुज देवता सत्य यह शत स्वर में गाओ ! देवता धरती पर आओ !!

(14) डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल का गीत ' आज नव निर्माण के हम गीत गायें ' की पंक्तियों में स्वर्गावतरण परिलक्षित है– आज नव निर्माण के हम गीत गायें।

अब तिमिर जग में अधिक क्या रह सकेगा,

चेतना का रवि नई रचना रचेगा ,

नव सृजन होगा नई हर बात होगी –

स्वर्ग का संसार हम भू पर बसायें । आज नव निर्माण के हम .....

6घ

धर्म/कर्त्तव्य की महत्ता और प्रतिष्ठा –

धर्म और जीवन दानों ही परस्पर घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध है। आस्था, विश्वास तथा जीवन मूल्यों की संस्थापना के लिये धर्म की आवश्यकता है।" धार्मिक अनुभूति मनुष्य को सार्वभैमिक आत्मा के रूप में प्रस्तुत करती है एवं इस कारण धर्म का महत्व सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्, ज्ञान, प्रेम, बौद्धिकता, सेवा, पवित्रता से भी बढ़कर है। "सर्वेषां या शुद्धनित्यं सर्वेषां च हितेरतां कर्मणा , मनसा , वाचा , स धर्म विद जाजले –"[1] महाभारत, शांतिपर्व

आचार्य श्रीराम शर्मा धर्म की समग्रता और जीवन में उसकी व्यवहारिकता को निरूपित करते हुए लिखते हैं कि– "धर्म अपरिवर्तनशील एवं शाश्वत है । " धर्म सार्वभौमिक शक्ति है । यह एक ऐसी सत्ता है , जो असीम है। इसका कार्य क्षेत्र समूचा ब्रह्माण्ड है । विश्व का प्रत्येक मानव इसके अन्तर्गत है । इसका कार्य क्षेत्र न केवल मानव मात्र के स्थूल शरीर तक ही है , वरन् उसके मन , चिंतन , स्वभाव , गुण और उसकी आत्मा तक विस्तृत है । यदि प्रत्येक मनुष्य उसके प्रति सचेतन हो जाये , तो वह स्वयं सत्तामय हो जाये ।"[2]

इस तरह यह सुस्पष्ट है कि धर्म बौद्धिक जिज्ञासा के साथ-साथ व्यवहारिकता भी है । यह संकीर्ण व स्वार्थ परक न होकर आध्यात्मवादी , व्यापक एवं परमार्थ मूलक है। अतएव व्यक्ति और समाज को परम साध्य का ज्ञान कराना तथा उसकी प्राप्ति का मार्ग बतलाना है।

इस प्रकार ' धर्म ' आदर्शों के समुच्चय के परिपालन का नाम है। धर्म का अर्थ सांप्रदायिक परंपराओं का निर्वाह नहीं , वरन् कर्त्तव्य पालन है। मनुष्य के विकास काल के प्रारम्भ से ही उस पर अनेक उत्तर दायित्यों का बोझ बढ़ता गया, जिसकी उपेक्षा करना मानवीय गरिमा के अनुकूल नहीं था फलस्वरूप धर्म का महत्व बढ़ता गया। आचार्य शर्मा के मतानुसार– " उत्कृष्ट चिन्तन की पृष्ठभूमि बनाने वाले तत्वज्ञान को ' आध्यात्म ' एवं आदर्श कर्त्तव्य में ' निष्ठा ' उत्पन्न करने की प्रक्रिया को धर्म कहा जाता है " इस तरह आध्यात्म की श्रद्धा एवं धर्म की निष्ठा का पूर्णतः ज्ञान प्राप्त करके ही देवोपम जीवन व्यतीत किया जा सकता है।

आचार्य शर्मा के मतानुसार – "बुद्धिपरधर्म का अंकुश अनिवार्य है। इस संदर्भ में वे मानवीय चेतना के दो क्षेत्रों , मन एवं बुद्धि का क्षेत्र एवं सुसंस्कारिता के क्षेत्र का उल्लेख करते हैं । " जब मन इन्द्रियों के वशीभूत एवं बुद्धि निम्न स्तर की होती है, तब मनुष्य अविकसित माना जाता है और जब मानवीय चेतना श्रद्धा एवं सुसंस्कारिता के रूप में कहलाता है ,तब मनुष्य आदर्शवाद की ओर ऊर्ध्वमुखी व प्रगतिशील कहलाता है । वस्तुतः इन्हीं आदर्श सिद्धान्तों का समन्वित दृष्टिकोण 'आध्यात्म' कहलाता है एवं इन्हीं सिद्धान्तों की प्रेरणा से किया गया कर्म, धर्म कहलाता है। " 2 भारत वर्ष सदैव सनातन धर्म का प्रधान केन्द्र माना जाता रहा है , इसका मुख्य कारण यहाँ वेदों में जो धर्म मान्य है, उसका यथार्थतः पालन होता है। महाभारत वन पर्व में कहा भी गया है– "वेदोक्तः परमो धर्मः"

सन्त विनोबा की दृष्टि में "अब धर्म का स्थान अध्यात्म ग्रहण करेगा अर्थात धर्म में व्याप्त विकृतियों को निष्कासित कर सनातन धर्म को पुनः प्रतिष्ठित किया जायेगा , जो सनातन धर्म नीति,सनातन धर्म नीति, सदाचार, न्याय और औचित्य पर आधारित है।"

आचार्य शर्मा यह भी मानते हैं कि "धर्म जीवन का प्राण है तथा सदाचार एवं कर्त्तव्य पालन की प्रेरणा-जिओ और जीने दो का संदेश धर्म की आत्मा है। " 3 अतः उनके अनुसार धर्म का उद्देश्य सत्य की खोजकर मनुष्य को ऐसा मार्ग दिखाना है, जिससे वह सहकारिता का वरण करे ।

---

1. महाभारत , शांतिपूर्व पृ0 361–9
2. आचार्य श्री राम शर्मा – धर्म और विज्ञान विरोधी नही पूरक , पृ0 3
3. आचार्य श्री राम शर्मा – क्या धर्म अफीम की गोली है ? पृ0 93

"धर्म का क्षेत्र व्यापक है। आचार, नीति , आध्यात्मिकता , मोक्ष , पूर्वत्व आदि उसी के विविध सोपान है। सामान्य अर्थों में इसका तात्पर्य उस कर्त्तव्य अथवा आचार –नीति से लिया जाता है, जिसका पालन हमारे जीवन के लिये श्रेयस्कर है। इसी कारण सामान्यता याधर्म किसी अशिव अथवा अशुभ तत्व को मान्यताप्रदान नहीं करता । डा0 देवराज के अनुसार –"धार्मिक तथा आध्यात्मिक अनुभूति एक रहस्यपूर्ण परिणति लक्ष्य अथव उपस्थिति (सत्ता) की प्रतीति है , जो जीवन के समस्त मूल्यों का मूल्य अथवा अधार समझी जाती है"1

यद्यपि "धर्म के स्वरूप –भेदों अर्थात विभिन्न धर्म–संप्रदायों के अनुरूप आस्था, श्रद्धा और विश्वासों में विविधता उत्पन्न हुई है, तथापि बाह्य भिन्नता होते हुए भी विभिन्न धर्मों में कुछ सामान्य मूल तत्व अथवा गुण उपलब्ध होते है, जिनका लक्ष्य जीवन के सर्वश्रेष्ठ मूल्यों की उपलब्धि है"1

धार्मिक अनुभूति ही जीवन तथा विश्व के वास्तविक एवं औचित्यपूर्ण मूल्यांकन का आधार है, इसीलिये इसकी आंतरिक चेतना को ग्रहण करना अपेक्षित है। धर्म की चेतना में वैयक्तिक स्वंतंत्रता, विश्वबन्धुत्व तथा मानवता के सभी तत्व समाहित है। धर्म–सत्य की उपलब्धि द्वारा जीवन का संरक्षक बनकर अनौचित्य और अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करता है।

"धर्म समस्त व्यक्तियों के व्यक्तित्व विकास हेतु समुचित मार्ग प्रस्तुत करता है। इसमें व्यावहारिक आदर्श की स्थापना की गयी है। इस सम्बन्ध में किसी रूढ़िगत सिद्वान्त को मान्यता नहीं दी गयी है। इसके द्धारा मानवीय चेतना में ऐसी सत्प्रवृत्तियों का समावेश होता है , जो,सदाचरण और कर्त्तव्य पालन के रूप में वातावरण को उल्लासपूर्ण बनाने में समर्थ हो सके ।" यही कारण है कि सभी धर्म सम्प्रदाय , मानव कर्त्तवय की व्याख्या कर व्यावहारिक जीवन उसकी उपयोगिता बताते हुए , मनुष्य को सत्कर्म के लिए प्रेरणा देते है। यदि मानव सच्चा सुख प्राप्त करना चाहता है, तो इसकी उपलब्धि का धर्म द्धारा निर्देशित मार्ग भी उसे जानना चाहिए । "2

वर्टेण्ड रसेल के अनुसार "धर्म का महत्व व्यापक है । वे लिखते है– "धर्म का सार अपने जीवन की संकीर्णता को , अपरिमित में तिरोहित कर देना ही है । मानव की द्विविध प्रवृत्तियों में पशु – प्रवृत्ति है । स्वार्थपरता भी संकीर्णता के कारण निज का कल्याण चाहती है । विश्व के साथ ऐक्य में की आत्मा को मुक्ति का अनुभव होता है ।" यह ऐक्य – विचार में ज्ञान , अनुभूति में प्रेम और इच्छा में सेवा के द्धारा अभिव्यक्त होता है । इस प्रकार जीवन में असीम की सिद्धि तथा प्राणी मात्र से एकता की अनुभूति में ही धर्म का लक्ष्य पूर्ण होता है ।

धर्म प्राणी मात्र के प्रति प्रेम और हृदय की पवित्रता पर बल देता है । विश्व जीवन को समझना और एक ही चैतन्य को सर्वत्र देखना , इसका तात्पर्य है । हम जिस विश्व में रहते है ,उसके प्रति उदासीन नही रह सकते । धर्म कर्त्तव्य बोध है , जो हमें सदैव सृजनशील रखता है । यह इस सृष्टि की व्याख्या मूलगत व्यापक एकता के सन्दर्भ में करता है , जिससे मानव अपने कल्याण की वास्तविकता समझकर भेद – बुद्धि की ध्वंसात्मकता से बच सके । धर्म अनाचार से दूर कर समुचित जीवन जीने का बोध कराता है । महाभारत में तुलाधार , जाजले को धर्म तत्व बतलाते हुए कहते है "हे जाजले ! उसी ने धर्म को जाना , जो कर्म से मन से और वाणी से सबका हित करने में लगा हुआ है और जो सभी का नित्य स्नेही है।"3

1 डा० नन्दकिशोर देवराज- संस्कृतिका दार्शनिक विवेचन, पृ० 41
2 RALPH BARTON PARRY- THE HUMANITY OF MAN, P. 42

आलोच्य काव्यों में धर्म और कर्त्तव की महत्ता एवं प्रतिष्ठा एवं युग विषयक रचनाएँ

1 श्री मंगल विजय ' विजयी वर्गीय ' की रचनाओं मे धर्म और कर्त्तव्य की महत्ता अवलोकनीय है–

(i) धर्मचिर महान है।

आदमी क्या है ? धर्म है , भावना का म्रर्म है।

आदमी का आचरण धर्म से महान है। xxx

सॉस चलती रहे सिर्फ खुद के लिए , यह मुनासिब नहीं आदमी के लिए ।

साँस सर्वार्थ में काम आई अगर, चार दिन भी चली तो हुई है अमर ।

लक्ष्य हो लोक मंगल अगर सॉस का ,देवता हो मनुज इस धरा के लिए ।।"

।। एक अन्य कविता "वसुर्धव–कुटुम्बकम्" की पंक्तियॉ में मानव धर्म स्वीकारने का संदेश कवि देता है–

सभी धर्म के श्रेष्ठ आचरण 'मानव–धर्म ?, अगर स्वीकारे ।

देवोपम आचार संहिता जीवन में हर व्यक्ति उतारें ।

मानव–धर्म सहज ही फिर तो सर्व हितैषी रूप धरेगा।।

जब तक अपनी–अपनी ढपली , अपना –अपना राग रहेगा ।।

तब तक विश्व , कर्ण–कटु–स्वर के आघातें की चोट सहेगा ।।

।।। कवि एक चतुष्पदी भी अवलाकनीय है–

धर्म' लिपटाया कफनसी कथाओं के आवरण में

धर्म का ' दर्शन ' कहॉ , इस मरघटी वातावरण में ,

पूजने की पोथियों में सड़ रहे सिद्धान्त के शव

क्योकि वे मृत हो गये , अनुयायियों के आचरण में

।v तन को तो मल मल कर धोया , मन का मैल नहीं धो पाये ।

मन का मैल नही धुल पाता , ज्ञान गंग में बिना नहाये ।

कर्मक्षेत्र में जब भी उतरें , भूल गये हम धर्म –ध्यान को ।

दिनचर्या में नहीं उतारा , धर्म तत्व के मूल ज्ञान को ।

अपने आचरणों से अपने धर्म ग्रंथ झुठलाये । मन का मैलन हीं धुल पाता .....

धर्म बन्धुओ । आस्तिक होकर , आस्तिकता बदनाम क्यों करें ,

धर्म लजाये , हम जीवन में ऐसा कोई काम क्यों करें।

हम आस्तिक हैं या नास्तिक, इसे आचरण ही बतलायें। मन का मैल .....

(2) श्री मती माया वर्मा की पंक्तियों में धर्म और कर्त्तव्य की महत्ता एवं प्रतिष्ठा अवलोकनीय है–

। "धर्म बड़ा वह– जोकि मनुष्यों को समीप लाता है।

कर्म बड़ा वह – जो औरों के लिए किया जाता है।

मार्ग श्रेष्ठ वह– जो पहुँचाए मानव को मंजिल तक ,

ऊँचा वह व्यवहार – न छीने कभी दूसरों का हक ।

दर्शन वही बड़ा है– जो कि मिटारे अन्तर के भ्रम ।
शिक्षा है वह बड़ी – जिसमें हो प्रेम प्यार की रस्में ।
बड़ी जिन्दगी वह –जिसमें हो लाभ दूसरों को भी ।
ज्ञान बड़ा वह – जो न बना पाये स्वार्थी या लोभी
कलाकर वह श्रेष्ठ–सत्य , शिवं सुन्दर का जो ज्ञाता।
सही दिशा दे जीवन को – हैश्रेष्ठ वहीं व्याख्या ।।

।। धार्मिक क्षेत्र में पुरोहितों से भी जून 1582 की अखण्ड ज्योति में कवयित्री अनुरोध करती है कि स्वयं तपकर राष्ट्र को अपनी साधना से नव चेतना प्रदान करो । आज अध्यात्म , आत्मदर्शन आस्त्रिकता सबका पलायन सा हो रहा है । पुरोहितो ! पहले तुम स्वयं को जगाना , फिर राष्ट् को जागृत कर अपना धर्म कर्त्तव्य निभाना –

" ओ पुरोहित राष्ट् के , जागो स्वयं सबको जगाओ ।
धर्म को जाग्रत रखेंगे, धर्म यह अपना निभाओ ।।
राष्ट्र को नव चेतना दो , साधना दो , स्वयं तपकर ।
लोकमंगल की सुरक्षा का बड़ा दायित्व तुम पर ।
भूल बैठे हैं सभी अध्यात्म विद्या , आत्मदर्शन ।
जागृत उसको करो सब व्यक्ति हों ईश्वर परायण ।
तुम रहे भूसुर धरा के , मान अपना मत गॅवाओ । ओ पुरोहित राष्ट्र के .....

।।। एक अन्य कविता ' ग्रंथों का सार ' की पंक्तियों में कवयित्री सारे ग्रंथों का सार बताती हैं –

"सभी धर्म उॅचे हैं लेकिंन , सबसे उॅचा पर उपकार ।
हम औरों के काम आयें , यह ही सारे ग्रंथों का सार ।।
कहा सभी ने कि हम बने हैं सबसे पहले बस इंसान ,
और जगत में सबसे बढ़कर चीज–सिर्फ अपना ईमान ।।
बिना भेद हम सबको बॉटें , अपनी सेवा , अपना प्यार , ।।सभी धर्म ऊॅचे होते हैं XXX
हम भी जितना बने , सदा बढ़कर औरों की पीर हरें ,
जो न कर सके अपना साथी , हम उसका वह काम करें ।
साथ सदा सबका देने को रहें प्रेम से हम तैयार ।। सभी धर्म ऊॅचे होते हैं ..

(3) श्रीमती विद्यावती मिश्र की कविता ' मनुज मनुज में भेद ' की पंक्तिया अवलोकनीय हैं –

मनुज–मनुज में भेंद करोगे तुम जब तक स्वीकार ।
तब तक नहीं मुक्ति मन्दिर का खुल पायेगा द्वार ।।
धर्म एकता का स्वरूप है नहीं फूट की राह ,
जाति–पॉति बस अहंपूर्ति की है व्यवसायी चाह ,
रूढ़ि अन्ध विश्वास चाहते जीवन–सिन्धु अथाह,
करती है मान्यता विवशता से मानो व्यापार। XXX

सेनानी बढ़ता है बाधाओं को ठोकर मार ,

युग निर्माता मोड़ा करता हैं चिन्तन की धार ,

नया मनुज नूतन समाज है देखो रहा पुकार ,

देता है संधर्ष चुनौती करो उसे स्वीकार । "युग वीणा पृ0 83"

(4) श्री बलराम सिंह परिहार की कविता ' ललकार ' की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

"चलो लेकर संकल्प महान , आपदाओं से फिर क्यों छोह ।

तोड़ने युग–युग की जंजीर ,उठो अब चलो करें विद्रोह ।।

बागवत जैसी बापू ओर बुद्ध ने कर दिखालाई है।

जवानों ! वही कसौटी आज तुम्हारे सम्मुख आई है।।

रहा है नहीं किसी में धर्म , जगाना होगा तुमको तेज

बेटियों की रक्षा के लिए , भगाना हो गा तुम्हें दहेज ।। XXX

दम्भ का पूर्ण हो चुका मान , दैत्य का खूब हो चुका राज ।

चलो अब इनका करें विनाश रचायें अभिनव समय समाज ।

ज्ञान की कर प्रज्वलित मशाल काल की दिशा मोड़ती है।

पड़ा यह कारागस्त समाज उठो हथकड़ी तोड़नी है।। "यु0 नि0 यो0 (पा0) 20 सित 1973"

।। एक अन्य कविता में नई दुनियॉ बसाने–नया जमाना लाने की बात परिलक्षित है–

" संसार में उजाला शुभ कर्म का मरेगे । सब प्रेम से रहेंगे सब घर दया करेंगे ।

सब एक आत्मा है यह पाठ है पढ़ाना । सदियों के बाद फिर से आया नया जमाना

दुनियाँ नई बसायें यह जग हुआ पुराना ।"

5) श्री गोरी शंकर द्विवेदी 'शंकर ' कीरचना ' मरते नहीं कभी बलिदानी ' की पंक्तियाँ देखिए –

उनने त्याग महान किया था ।।

राज्य सकल संकल्प करदिया, मरघट तक की , की रखवाली ,

पुत्र और रानी को बेचा किन्तु न त्यागी सत्य प्रणाली ।

जगत जानता हरिश्चन्द्र ने , अपना सब कुछ दान किया था । उनने त्याग महान किया था।

हास–विलास जगत का त्यागा, त्यागी जग –जन – जीवन माया,

काल कूट पीकर भी उसकी , हुई नष्ट कब कंचन काया ।

सधा बन गया काल कूट वह , जो मीरा ने पान किया था । उनने त्याग महान किया था ।। XXX

परम्परा से शिक्षा देती , भारतीय –वाणी–कल्याणी ,

चिर–अमरत्व प्राप्त कर लेते, मरते नही कभी बलदानी ।

मर–मर कर मिटने वालों ने , जीने का गुरू–ज्ञान दिया था । उनने त्याग महान किया था।"

(6) श्री रामेश्वर दयाल दुबे की रचना ' कर्मयोग ' की पंक्तियाँ अवलोकनीय है–

उस दिन सात द्वीप के ऋषिगण बैठे वट के नीचे ।

ज्ञान–धनी चिन्तन मुद्रा में, अर्ध नयन थे मीचे।।

(प्रश्न उठा क्या श्रेष्ठ ? प्रार्थना में क्या माँगा जाए ?
अपनी–अपनी बात कहें सब, जो कुछ जिसको भाए ।।
कहा एक ने अन्य माँगिए –अपर ने बल–बुद्धि – शान्ति –प्रेम त्याग–श्रद्धा। XXX
मौन तोड़ तब वट हँस बोला, व्यर्थ समय क्यों खोते ?
जों यों समय नष्ट करते हैं , सदा अन्त में रोते ।।
तुम से तो अच्छा किसान जो श्रम कर फसल उगाता ।
जिसका खाकर अन्न यहाँ यों यह विबाद है भाता ।।
छोड़ो तर्क, करो श्रम जी–भर ,इस 'कथनी' को छोड़ो
अगर चाहते सुख , तो नाता तुम 'करनी' से जोड़ो ।।यु0 नि0 यो0 (पा0) 20 दिसम्बर 62

(7) डा0 हरगोविन्द सिंह की रचना ' मानव धर्म ' की पंक्तियाँ अवलोकनीय है–

। क्षत–विक्षत हो गयी मनुजता , जाति वंश के भेद से ,
अभिसिंचन हो रहा असुर का, आज मनुज के स्वेद सें ;
घर–घर में संघर्ष छिड़ा , गली गली तूफान है
हृदय सभी का जोड़ सके जो, ऐसा धर्म महान् है।।
आदर्शों की भीड़ लगी है वाणी के बाजर में,
दुर्लभ है निष्ठा की पूँजी ,किन्तु लोक–व्यवहार में ;
टूट रही आस्था की "कड़िया शक्ति हर पहचान है।। हृदय सभी का .....

।। एक अन्य कविता "वह युग जल्दी आयेगा " की पंक्तियों में धर्म और कर्त्तव्य की प्रतिष्ठा देखिए–

जब धर्म और विज्ञान यहाँ मिलकर पूरक बन जाएँगे ,
कर्त्तव्य – परायण जन ही जब सच्चे आस्तिक कहलाएँगे ;
जब स्वर्ग स्वयं विह्वल होकर इस धरती की जय गाएगा वह युग जल्दी आएगा .....

पुष्पांजंलि, पृ0 33,57

(8) श्री शचीन्द्र भटनागर : के गीतों में धर्म–कर्त्तव्य की प्रतिष्ठा तथा कर्म सिद्धान्त दृष्टव्य है –

। गँवा दिया हमने जीवन में धर्म और ईमान , मिलेगें फिर कैसे भगवान ।
हमको दिया बहुत ईश्वर ने , हमने नहीं सहेजा ,
भूल गए किस लिए प्रभू ने , हमें धरा पर भेजा ,
कभी न मन से यहाँ सँवारा ईश्वर का उधान ,
किया इकट्ठा हमने केवल अपना सुख–सामान । मिलेगे फिर कैसे भगवान !

एक अन्य गीत में कर्म – सिद्धान्त देखिए –

।। "बोया है पेड़ तूने , जब यहाँ बबूल का ,अब क्यों परिणाम चाहें , गंध भरे फूल का
नहीं थके राही को दी , कभी धनी छाहें , तूने पैने काँटों से भर दी , जन–जन की राहे तूने।
देता उपहार सभी को, केवल तूँ शूल का । बोया है पेड़ तूने.....
जैसे जो कर्म करेगा वैसे ही फल जाएगा , आम नहीं बोए तूने , मीठे फल क्यो खाएगा ,
कर ले प्रायश्चित अब भी , कल की उस भूल का ।। बोया है पेढ़ तूने .....

।।। "धर्म , चिन्तन के प्रदूषण से हमारी ढाल है,
धर्म निष्ठों का सदा रहता समुन्नत भाल है,
धर्म अभ्युत्थान का पथ है, सवल सोपान है , यह प्रखर व्यक्तित्व गढ़ने की सही टकसाल है।।"

"करिष्ये वचनं तव" पृ0 116, 124

(9) डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी के दोहों में कर्मफल देखिए–

संकट और सौभाग्य के , बुरे भले यें कर्म । सावधान इनसे रहें , जीवन का यह मर्म ।।
कर्म सदा करते रहे , निजपन का निर्माण । सोचो समझो तब करो,जीवन बने प्रमाण ।"
दुष्कर्मों की मार से, साबूत बचा न कोइ , जैसा जिसका कर्म है, फल भी वैसा होइ ।।

"ज्ञान–रश्मि" (दोहावली) पृ 53,54

(10) श्री शिव शंकर मिश्र की रचना ' कैसा युग है ' की पंक्तियॉ देखिए–

"नीति, धर्म, आदर्श आज है बन्दी पुस्तक के पृष्ठों पर ,
मानव का कल्याण, पन्थ में खेया–सा बैठा आहें भर ,
पुरूष आज है पार्थ नहीं वह , कीड़ा–कलित अनंग बना है,
नारी है श्री हीन आज वह एक वासना है , सपना है, XXX
यह भी नहीं जानता पागल संसृति करवट बदल रही है ,
जब कि प्रलय होने को तूने तब सुधार की बात कहीं है,
ढह जायेगी एक रात में सोने के वैभव की लंका ,
हिमगिरि की चोटी से बजता आता परिवर्तन का डंका ,
रहा छिपाए इतने दिल तक , विजय ह्रास, यह कैसा युग है ।
समय खोलता शेष नाग का शिथिल पाश , यह कैसा युग है ? "युग–संदेश" पृ0 50,51

(11) श्री बाबूलाल जैन ' जलज 'की कविता 'कण–कण में चेतन मुस्काता ' की पंक्तियॉ देखिए –

प्यार न होता अगर हृदय में ,मानव मन पत्थर बन जाता ।
अन्त में यदि दया न होती , बुद्ध प्रबुद्ध नही बन पाता ।
गहरे में यदि नहीं पैठता, हाथ न लगता जीवन मोती ,
ज्ञान–सूर्य यदि पथ न दिखाता, मंजिल कामिलता न किनारा ।।

6 ङ– नैतिक , बौद्धिक, सॉस्कृतिक उत्थान एवं धर्म –

मानवीय सभ्यता का विकास , उसके द्वारा सम्पन्न की गयी कान्तिों का परिणाम है। अपने जीवन की शुरूआत से ही मनुष्य क्रान्तिधर्मी रहा है। पहली क्रान्ति उस समय धटी, जब मनुष्य अपने आरम्भिक कालमें छोटे–छोटे समूह बनाकर रहता था। सर्वथा अव्यवस्थित किन्तु उसके पास वे सारे उपकरण थे जिनसे जीवन में क्रान्ति घटे । हुआ भी ऐसा ही– मानवीय जीवन में पहली बार धर्म का उदय हुआ। इसे धार्मिक क्रान्ति भी कहा जा सकता है । आचार्य शर्मा के मतानुसार – धर्म के उदय ने आचार–मर्यादा और कर्त्तव्य की जंजीरों में उन आदिमकालीन क्रूरताओं को जकड़ा और सभ्यता का सृजन करके मनुष्य को

शालीनता एवं सामाजिकता का पाठ पढ़ाया। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है , जिसे अपने समय में धरती की समस्त सम्पदा से बढ़ी–चढ़ी माना जा सकता है। धर्म में क्रमशः पशुता के, असुरता के पर्तों को उखाड़ा है। और मनुष्यों को उस स्तर पर पहुँचाया है जिसमे वह बढ़ी–चढ़ी सम्पत्ति के आधार पर ही नहीं सुविकसित सभ्यता के आधार पर भी गर्व करने का अधिकरी बना है।"अखण्डज्योति वर्ष 38,अंक 3

इस प्रथम क्रान्ति में समूहों की व्यवस्था के सविधि संचालन के लिये राज्य का उदय हुआ। राजतंत्र पनपा । परस्पर के सम्बन्ध उदारतापूर्वक निभ सकें, इस हेतु समाजनीति निर्धारित हुई । विनिमय व्यवस्था ने अर्थनीति को जन्म दिया और मनुष्य के अंतरंग उन्नयन की प्रणाली ने आध्यात्म का रूप धारण किया। इस तरह प्रथम क्रान्ति से जीवन तीन अंगों में व्यवस्थित हुआ– राज्य –अर्थ –बुद्धि । ये सभी जिस सूत्र में पिरोय थे – वह था धर्म । राज्य का नियंत्रक राजा अथवा प्रशासक , अर्थ के नियंत्रक व्यापारी , और बुद्धि के नियामन मनीषी अथवा दार्शनिक हुए।

आचार्य शर्मा जी की विचार कान्ति निषेध की नहीं समन्वय और सामंजस्य की प्रकिया है । इसे श्रेष्ठताओं का समन्वय और विकृतियों का उन्मूलन भी कह सकते है। वे धर्म –दर्शन व विज्ञान में से किसी को अस्वीकार नहीं करते । वे तो यहॉ तक कहते है कि सारी विचार प्रणाली ही आध्यात्मिक है। क्योंकि सारी विचार प्रणाली ही मानव मे निहित सम्भावनाओं को व्यक्त करने के उद्देश्य से से रची गयी है । इस तरह अपने सर्वांगीण चिंतन मेंवे सम्पूर्ण मानवीय विकास का विज्ञान , व तकनीक संस्थापित करते है।

भारतीय संस्कृति का स्वरूप :–

भारतीय संस्कृति ही मानव संस्कृति है उसमें मानवता के सभी सद्गुणों को भली प्रकार प्राप्त करने वाले सभी तत्व मौजूद है।जिस प्रकार कश्मीर मैं पैदा होने वाली केशर, कश्मीरी केशर' अपनी जन्मभूमि के नाम से प्रसिद्ध है। इस नाम का यह अर्थ नहीं है कि उसका उपयोग केवल कश्मीर के निवासियों तक ही सीमित है। ठीक प्रकार भारतीय संस्कृति भी भारत में पैदा हुई संस्कृति है । किन्तु इसमें विश्व संस्कृति बनने के गुण है।इसमें सारे विश्व के मानवों को सन्मार्ग में प्रेरित करने की क्षमता है कूट–कूट कर भरी है।

आज मानव–समाज संस्कृति के अभाव में विकृति की ओर बढ़ रहा है। जिस प्रकार पेड़–पौधों को कॉट–छॉट कर सुन्दर और आकर्षक बनाया जा सकता है, उसी प्रकार मनुष्य की उच्छृंखल एवं अवांछनीय मनोवृत्तियों को सुसंस्कारों से नियंत्रित करके सभ्य, सुसंस्कृत एवं समाजोपयोगी बनाया जा सकता है। वेदों में कहा गया है–" सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा " अर्थात यही प्रथम और विश्व व्यापी संस्कृति है। भारतीय ऋषियों ने केवल "मेरे–तेरे" तक सीमित न रहकर पूरी वसुधा (पृथ्वी) को एक परिवार के रूप में माना है। "वसुधैव कुटुम्बम्" इनका आदर्श रहा है। यहॉ धरती को माता तथा मनुष्य मात्र को उसका पुत्र कहा गया है। "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"। वैदिक काल से ही यहॉ के ऋषि विश्व के कोने–कोने में भारतीय संस्कृति को प्रचारित एवं प्रसारित करते रहे हैं । आज भी अनेकों देशों में इस बात के ठोस प्रमाण मिलते हैं। हमारी मान्यता रही है–

माता मैं पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
भ्रातराः मनुजाः सर्वे स्वदेशो भुवनत्रयः ।।

अर्थात– पर्वतों को धारण करने वाली पृथ्वी मॉ–पार्वती , मेरी मॉ है,महाकल देवाधिदेव शंकर मेरे पिता है, सभी मनुष्य मेरे भाई हैं तथा पूरा ब्रह्मण्ड (तीनों लोक) मेरा स्वदेश ।

भारतीय संस्कृति का विस्तारः –

भारत के लोकसेवी सन्तों ने अपनी समाज सुधार की गतिविधियॉ स्वदेश तक ही सीमित नहीं रखी । उन्होंने सारे विश्व को अपना घर माना और धरतीवासियों को अपना परिवार । पिछड़ेपन से जूझने के लिये वे विकट से विकट और दुर्गम से दुर्गम क्षेत्रों में गये । यदि वापस लौटना आवश्यक नही लगा, तो वे वहीं डेरा डाल कर बस गये । 'जहॉ जन्मा जाय, वहीं रहा जाय'' , यदि यह आग्रह रहा होता तो हिमालय की बर्फ गलकर नदियों का रूप कैसे ले पाती ।

इस परिष्कृत दृष्टिकोण को लेकर भारतीय धर्म–प्रचारक और लोक सेवी विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में पहुॅचे । उन्होंने वहॉ की शासन प्रकिया को दिशा दी । उसे सुव्यवस्थित किया । जहॉ सम्पत्ति के अभाव में दरिद्रता व्याप्त थी, वहॉ कृषि , पशुपालन , शिल्प ,उद्योग आदि सुव्यवस्थाएॅ बनाई । सम्पन्नता के साधन जुटाकर उस क्षेत्र को सम्पन्न बनाया । उस क्षेत्र की अशिक्षा , अज्ञान एवं आभाव आदि को मिटाकर उन्हें सुसंस्कृत बनाया । इसलिए उन्हें जगत्गुरू का सम्मान मिला । यह उनकी जन–सेवा –साधना थी । भारत के ऐसी लोकसेवी संतो एवं साधकों का बहुमुखी लाभ समस्त संसार की जनता ने उठाया ।

भारतीय संस्कृति –देव संस्कृति :– भारतीय संस्कृति मूलतः देव संस्कृति है । देने वाले को देव तथा लेते रहने वालें को दैत्य कहते है। जो लेता ही रहता है, और कुछ भी नहीं देता , वही दैत्य है। संक्षेप में स्वार्थी को ' दैत्य ' और परमार्थी को ' देव ' कहते हैं । आचार्य शर्मा के मतानुसार "मनुष्य को सामान्य जीवात्मा से महात्मा तथा महात्मा से देवात्मा बनने का प्रयास करना चाहिए तभी वह परमात्मा में समाकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है। "

प्राचीन भारत में जहॉ अन्न , धन और विविध भौतिक सम्पत्ति के भण्डार थे, वहीं यहॉ दिव्य नर–रत्नों के रूप में असंख्य देव–मानवों की भी कभी कभी नहीं रही । यहॉ घर–घर में नर रत्नों की खान थी। हर वर्ग में, हर क्षेत्र में , गुणवान , विद्वान आत्मजयी , वीर योद्धा भरे पड़े थे , जिनके गौरवशाली अस्तित्व से भारत–माता की कीर्ति –ध्वजा दशों दिशाओं में फहर रही थी। उन्हीं के यश से भारत की गौरव –गरिमा के सामने समस्त विश्व नतमस्तक था।

मरणासन्न भारतीय संस्कृति :–

भारत वर्श में बड़ी संख्या में विदेशी आकमण कारी आये । उन्होंने सब तरह उत्पात मचाया लूटा, और जी भर कर सताया पर इस देश ने अपने संस्कृति कभी नहीं छोड़ी । तीन सौ वर्षों तक अंग्रेजों ने राज्य किया। उन्होंने यहॉ की परम्पराओं पर सर्वाधिक प्रभाव डाला किन्तु यहॉ की संस्कृति को वे नष्ट नहीं कर पाये । जैसे ही देश स्वाधीन हुआ–कहीं स्वेच्छा से कहीं जीवन निर्वाह की विवशता वश और सबसे अधिक पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव वाले सिनेमा , साहित्य , संगीत तथा मल्टीमीडियाने हमारी संस्कृति को रौंदकर रख दिया । यही स्थिति रही तो 21 वीं शताब्दी में भारतीय संस्कृति के पूरी तरह विलुप्त हो जाने का संकट आ खड़ा है , और हम है कि उधर से बिल्कुल ऑखें बन्द किये बैठे हैं ।

लंदन के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक नेक हेराल्ड ने छः वर्षों तक दुनिया भर की वेषभूषा का अध्ययन कर भारतीय वेश–भूषा को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया । उसे हम भारतीय हीदुकरा रहे हैं । नारियों ने किसी तरह साड़ी की लाज तो रखी है पर अब सिनेमा और मल्टीमीडिया उसे भी उतारने के लिये उतावला हो रहा है।

संसार की सर्वश्रेष्ठ कम्प्यूटर भाषा घोषित होन पर भी अपनी सांस्कृतिक विरासत संस्कृत भाषा अब अंतिम सॉसे गिन रही है। हिन्दी की बिन्दी अंग्रेजी ने उतार ली थोड़ी चिन्धी ही बची है। कान्वेन्ट संस्कृति और कान्वेंट स्कूलों का अजगर पूरी तरह राष्ट्रभाषा घोषित अपनी हिन्दी को निगल जाने की तैयारी में है।

शाकाहार भारतीय संस्कृति का श्रृंगार रहा है। पश्चिमी डॉक्टरों और वैज्ञानिकों ने शाकाहार को सर्वात्तम आहार माना है इसी कारण यूरोप में तेजी से शाकाहार बढ़ रहा है , वहीं अपने देश की स्थिति उल्टी है। कभी तीन प्रतिशत मॉसाहारियों की संख्या बढ़कर अब 58 प्रतिशत हो गई है दूसरी ओर अण्डों मण्डियॉ बढ़ रहीं हैं । और तो और सरकारी माध्यम, पत्र–पत्रिकाएँ, रेडियो, दूरदर्शन उसके प्रचार में लगे हैं। देश के पूरी तरह मॉसाहारी हो जाने का खतरा तेजी से बढ़ रहा हे ।

पर्व और संस्कार फीके पड़ रहे हैं। कभी पारिवारिक और सामाजिक जीवन में आनन्द, उमंग ओर उल्लास बिखेरने वाले पर्वों–त्योहारों की हालत दुर्दशाग्रस्त है । चोटी और यज्ञोपवीत की तो पूछे ही कौन अब विवाह जैसे पवित्र संस्कार फूहड़ नाच गानों की गिरफ्त में है। महीनों तक घरों को आनन्द विभोर रखनेवाले लोक गीतों की सिनेमा संगीत से लड़ाई चल रही है। यह फूहड़पन धीरे–धीरे आधिपत्य जमाता और संस्कारों की परम्परा को नष्ट करता चला जा रहा है।

आयुर्वेद हमारी प्राचीनतम और मानवीय प्रकृति के नितान्त अनुरूप उपचार पद्धति है । उसे अमेरिका और योरोपीय देश पूरी तरह अपनी गिरफ्त में लेने की साजिश रच रहे हैं। हमारे वकील किसी तरह हल्दी को छुड़ा लाये पर जड़ी बूटियॉ बच पायेंगी यह संदेहास्पद है। इधर जो औषधियॉ पश्चिमी देश अनुपयुक्त और अवैध घोषित कर चुके हैं, हम उन्हें ऑख मूदकर गले निगल रहे है। यह विचार करने का नही चिंग्घाड़ मारकर रोने या दहाड़कर कर्मक्षेत्र में उतरने का समय है।

इन सब बातों की उपेक्षा एक सीमा तक सही जा सकती है पर साहित्य , संगीत ,नृत्य, अभिनय , चित्रकला के क्षेत्र में अब संस्कृति का कैंसर जिस तेजी से बढ़ रहा है उससे रहे बचे जीवन मूल्यों और भारतीय संस्कृति के पूरी तरह समाप्तहो जाने का संगट खड़ा हो गया है । दिन प्रतिदिन बढ़ रहा नारी उत्पीड़न , पारिवारिक जीवन का विघटन और बलात्कार जैसी घटनाओं में तीव्र बृद्धि से भारतीय संस्कृति की अन्तरात्मा कॉपे उठी है। इधर ध्यान न दिया गया तो हमारा कोई अस्तित्व शेष नही बचेगा । संत एन्ड्रस , रौम्या रोलॉ , एनी बेसेन्ट , नोबुल मार्गरेट , जनरल बैवूर आदि ने भारतीय संस्कृति को दुनियॉ की सर्वश्रष्ठ संसकृति स्वीकार किया है और हम भारतीय ही उसे ठुकरा रहे है।

सांस्कृतिक पुनरूत्थान हेतु आचार्य शर्मा की भूमिका:–

राष्ट्रसंत पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपना सारा जीवन अपनी संस्कृति की रक्षा के लिये समर्पित

कर दिया । आजीवन उसी से जूझे और सृजन–प्रयत्नों द्वारा भारतीय संस्कृति को इतना सम्मान दिलाया कि अब उच्च शिक्षित बुद्धिजीवी भी उनके समर्थन में खड़े हो रहे है। पाश्चात्य अपसंस्कृति के विरूद्ध अन्होंने वर्ष 1970 में ही चेताया था पर किसी ने ध्यान नहीं दिया । 3 नवम्बर 1997 की प्रख्यात पत्रकार सुधीश पचौरी की रिपोर्ट है कि इस अपसंस्कृति के कारण दूरदर्शन की आमदनी दस गुना , अपराधों की पचास गुना बढ़ गई है। हमें पश्चिमी कला का यह विष बहुत दुख दे रहा है । इसी कारण भारतीय लोक कलाओं, लोक गायन, लोकमंच के पुनरूद्धार के लिये बड़े कदम उठाने का शान्ति कुंज हरिद्वार ने निर्णय किया। 15 व 16 नवम्बर 97 को देश भर की महत्वपूर्ण लोक कलाओं का शान्तिकुन्ज प्रॉगण में इसी उद्देश्य से प्रदर्शन किया ।

आचार्य शर्मा ने मानव – धर्म के शाश्वत सिद्धान्तों एवं आचरणों को निम्नलिखित 14 सूत्रों में बॉटा –

1 आस्तिकता 2 आध्यात्मिकता 3 धार्मिकता 4 प्रगतिशीलता 5 संयमशीलता 6 समस्वरता 7 पारिवारिकता 8 सामाजिकता 9 शालीनता 10 नियमितता 11 प्रमाणिकता 12 विवेकशीलता 13 परमार्थ–परायणता 14 प्रखरता ।

ये वे नैतिक सिद्धान्त है, जिनके पालन से मनुष्य में धर्म निष्ठा उत्पन्न की जा सकती है । यही सिद्धान्त व्यक्तित्व परिष्कार एवं समाज उद्धार में सहायक है। इन शाश्वत सिद्धान्तों को सभी धर्मों का समर्थन प्राप्त है। इन्हें सार्वभौम एवं सार्वकालीन भी कहा जा सकता है । ये सिद्धान्त देश काल एवं पात्र की भिन्नता पर भी , कुछ अपवादों को छोड़कर भिन्नता प्रकट नही करते है ।

मानव कल्याण , मानवीय मूल्यों की स्थापना तथा व्यक्तिगत विकास के लिए आदिकाल से ही विश्व के विचारक तथा चिंतक गंभीरता पूर्वक विचार करते रहे हैं । "यह एक सर्वमान्य तथ्य हे कि संसार के मानव इतिहास में किसी भी देशकाल में ऐसी कोई चिन्तन धारा नहीं रही, जिसमें मानव को केन्द्र मानकर चिन्तन न किया गया हो ।"1 अखण्ड ज्योति, वर्ष 51, अंक 12 , पृ0 43

आचार्य शर्मा भी मानते है कि "इतना होने पर भी सर्वांगीणता एवं सार्वभौमिकता की दृष्टि से विकसित जीवन के लिये आवश्यक सूत्रों को हृदयंगम करना धर्म की अपनी विशिष्टता है। "

धर्म के पर्याय "रिलीजन" शब्द का शब्दिक अभिप्राय एकता का सिद्धान्त है । रिलीजन शब्द लेटिन भाषा के religare से निकला है जिसका अर्थ होता हे 'बॉधना' । यदि इस व्युप्पत्ति के आधार पर रिलीजन को समझा जाये तो वह एक ऐसी वस्तु है, जो आराध्य तथा आराधक , उपास्य तथा उपासक , व्यक्ति तथा समाज को बॉधती है। आपे मूल रूप में धर्म का यही सृजनात्मक स्वरूप रहा है। वस्तुतः एकता एवं बॉधना इन दोनों शब्दों का भावार्थ मूलतः एक ही है। इस तरह मानव तथा ईश्वर अर्थात असीम एवं ससीम की चरम एकता तथा उसमें आस्था ही धर्म का आधार है।

उपर्युक्त सन्दर्भ में आचार्य शर्मा का मत है कि " जब से धर्म का अर्थ ' रिलीजन ' माना जाने लगा, तब से यह सीमित हो गया है। जबकि धर्म का अनिवार्य तत्व उदारता, महानता , सार्वभौमिक सत्ता में सन्निहित है, जो 'रिलीजन' अर्थ से प्रकट नही होता है। धर्म सार्वभोम, शक्ति है, जिसका लक्ष्य ' सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामया :' है। "संस्कृत में धर्म शब्द का अर्थ धारण करना है । यह 'धृ'

धातु से बना है अतः जो तत्व समस्त संसार के जीवन को धारण करें ,उसे 'धर्म' कहना समीचीन होता है। संस्कृत में 'धर्म ' शब्द को विविध रूप में परिभाषित किया गया है। यथा–

" धरति विश्वं यः स धर्मः " ' ध्रियतेऽधः पतन पुरूषोंऽने– नेति धर्मः ; ध्रियते जनैरिति धर्मः , ध रति लोकानिति धर्म : धरतीति धर्म ;' इत्यादि । अर्थात जो विश्व को धारण करे, वह धर्म है। जो मनुष्य का नैतिक और सांस्कृतिक उत्थान कर सके, वह धर्म है । जो लोकों को धारण करे, वह धर्म है और जो धारण किया जाये वह धर्म है । इस प्रकार ये धर्म की शाब्दिक व्युत्पत्तियॉ है । वैशेषिक दर्शन में धर्म की विवेचना इस प्रकार है–

" यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस्सिद्धिः सः धर्मः ।।" अर्थात जिससे इहलौकिक अभ्युदय और परम कल्याण (मोक्ष) की प्राप्ति हो , वह धर्म है। आचार्य शर्मा के अनुसार " जो वास्तविकता है, उसी की धारणा रखना धर्म है। वास्तविक है–चैतन्य , यह अविनाशी एवं शाश्वत है। " अधिकांश धर्मों में आत्मा को नित्य एवं माना गया है। इस तरह व्यापक अर्थो में धर्म का तात्पर्य एकता ओर सामंजस्य की स्थापना है। इस दृष्टि से वह धर्म जो मानव और ईश्वर के मध्य भेद की दीवार खड़ी करता है, अथवा सामंजस्य का विराध करता है , परोक्ष रूप से अपने धर्म कहलाने के अधिकार को समाप्त कर देता है। आचार्य शर्मा के द्वारा स्थापित 'मानव धर्म' के स्रोत को एक रेखा चित्र के माध्यम से समझा जा सकता है। श्री मद्भागवद् में लिखा हैं–

" वेद प्रणिहितो धर्मों ह्यधर्मस्तद् विपर्ययः "

अर्थात वेद मे जिन कर्मों का विधान किया है , वे धर्म है, और उनके विपरीत अधर्म है। प्राचीनकाल में मनुष्य कर्त्तव्य पालन को अपना परम धर्म समझते थे । वे धर्म की रक्षा हेतु अपने प्राणों का त्याग कर देते थे, परन्तु धर्म का त्याग नहीं करते थे। इसका एक दृष्टान्त धर्मराज युधिष्ठिर का चरित्र है , जिन्होंने धर्म की रक्षार्थ समस्त साम्राज्य का त्याग कर दिया था परन्तु धर्म का त्याण नही किया । युधिष्ठिर की कट्टर धार्मिकता के ही कारण श्री कृष्ण , भीष्म पितामह तथा द्रोणाचार्य आदि महापुरूषों ने एकमत होकर युधिष्ठिर को धर्मराज की उपाधि से विभूषित किया। गोस्वामी तुलसीदास ने भी रामचरितमानस में ऐसे महानुभावों का उल्लेख किया है । वे लिखते है–

" सिबि दधीचि , हरिचन्द्र नरेसू । सहेउ धरमहित कठिन कलेसू ।। "

नीति शास्त्रियों ने धर्म के नैतिक पक्ष को ही सर्वस्व मान लिया। ब्रेडले के अनुसार " नैतिकता एक अधिक ऊँचे के स्तर पर पहुँचती है। उसकी परिसमाप्ति जहॉ होती है, उसे हम धर्म कहते है। " इस प्रकार ब्रेडले की दृष्टि में " नैतिकता एक कर्त्तव्य है और वह कर्त्तव्य है धार्मिक होना ।" आचार्य शर्मा का यही मत है कि "धर्म का अर्थ, किसी वस्तु अथवा व्यक्ति की प्रकृति , गुण , कर्म एवं स्वभाव की अभिव्यंजना है। " कान्ट ने नैतिक या शुभ संकल्प की प्राथमिकता पर बल देते हुए भी ईश्वर को नैतिक पूर्ण मान्यता के रूप में स्वीकार किया है।

उपर्युक्त विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि धर्म वस्तुतः नैतिकता से परे है। यह समसत मानव मूल्यों का संस्थापक होते हुए भी इन सभी का अतिकमण करता है। एक चैत्य प्रेरणा के रूप में इसमें संकल्प , विचार व अनुमान सभी कुछ समाहित है, किन्तु फिर भी यह इन सबसे अधिक है।

आलोच्य काव्यों में नैतिक–बौद्धिक–सांस्कृतिक उत्थान एवं धर्म :–

(1) श्री मंगल विजय ' विजय वर्गीय' की रचनायें अवलोकनीय है –:

। "चोट संस्कृति पर निरन्तर हो रही है, पर तुम्हें पीड़ा न अन्दर हो रही है,
संस्कृति हर चोट पर ही चीखती है, क्या तुम्हें उसकी न तड़पन दीखती है।
क्या तुम्हारे प्राण , पत्थर हो गए हैं, संस्कृति कब से निरन्तर रो रही है।।
।।" अन्धकार इतना गहराया ,दिवा–क्रान्ति ही समाधान है।
तक के विष को निष्क्रिय करने, सुधा क्रान्ति ही समाधान है।।
ऐसे में सॉस्कृतिक क्रान्ति ही, समग्र क्रान्ति करने में सक्षम।
इसी क्रान्ति के द्वारा होगा, मानव मूल्यों का संरक्षण
देव संस्कृति ही सक्षम है, ऐसे में युगधर्म निभाने,
मानव में देवत्व, धरा पर स्वर्ग सृजन ही विधि–विधान है।।"

।।। हमने जिया कि नैतिक –जीवन, जीने नहीं दिया लोगों ने ।
हमने पिया शान्ति का अमृत , पीने नहीं दिया लोगों ने ।
धोते रहे विकारों को हम , सीते रहे धाव हम अपने ,
लेकिन दुखते घावों को भी, सीने नहीं दिया लोगों ने ।।

(2) श्रीमती माया वर्मा एक कविता में नैतिक आचरण परिलक्षित है–

। " ऊँचे विचार कितने है यह जाना जाता व्यवहारों से ।
किसको है क्या मान्यता प्रकट होता उसके आचारों से ।
मन्दिर में है झुकने वाला सिर परिचय देता आस्तिकता का ,
मानव का दर्द मिटाने वाला ही हामी होता मानवता का ।
मुख की आभा ही बतलाती है कौन व्यक्ति कितना स्नेहिल,
स्वर की कर्कशता या मृदुता कहती –उर भेंदी या कोमल ।
करता न पराया–अपना–जो वह मानव कभी न नास्तिक है।
जिसमें जितनी करूणा–ममता , वह उतना ही आध्यात्मिक है।"

।। एक अन्य कविता में कवयित्री ने ' मानव धर्म ' अपनाने पर बल दिया है–

"मन का फूल ,पराग प्रेम ,शान्ति सुगन्ध बहाओ तोड़ो सब सीमाएँ जग में मानव धर्म चलाओ ।
धर्म वही है जो इंसानों को समीप लाता है। एक डोर से गुथंकर माला बनाना सिखलाता है ।
जनमानस के बीच खिंची रंखाएँ उन्हें मिटाओं। "प्यार और परमार्थ –धर्म मानवता" का अपनाओ।।
ईश्वर ने सारे मानव केवल 'इंसान' बनाए । अपने अपने धर्म बनाकर सब हो गए पराये ।
किन्तु धर्म के माने प्रभू के प्रति श्रद्धा अर्पण है। मानव को मानवता का पावन कर्त्तव्य वरण है।।

।।। दायित्व बोध :–

कोई कृष्ण न रहे देखता अब मानवता का अपकर्ष ।
युग का दुर्योधन विनिष्ट हो–करने में हम पायें हर्ष ।।
दिखे नमक में बेईमानी धोखेबाजी , भ्रष्टाचार ।
तो हम मे वह साहस जागे– खाने से कर दें इनकार ।।
साग बिदुर का उगे सौ गुना ' सत्य प्रेम का हो उत्कर्ष ।। कोई कृष्ण न रहे देखता .....

(3)श्री बाबूलाल जैन 'जलज' की कविता "मन मंदिर का उजाला " की पंक्तियॉ देखिए –

'सरल नहीं है तिमिर ठोनना , केवल मीठी बातों से ।
सारी रात जूझना पड़ता ,तम के झंझावातों से।।
गौरी –शंकर की चोटी हो , चाहे हो खंदक खाई ।

निर्भय होकर झॉका करती , आत्मज्योति की परछाई।।

जीवन यज्ञ सफल हो जाए, आत्म–त्याग बलिदान का।।

अगर जलालें मन मंदिर में एक दीप ईमान का ।।

जिस दिन फूटेगा भीतर से एक गीत सच्चाई का ।

बन जाएगा कीर्तिमान , नव–मानव की ऊँचाई का ।।

कठिन प्रश्न हल हो जाएगा,भूख प्यास बीमारी का बीज न बोएगा जब कोई,छल प्रपंच मक्कारी का । भाग्य सितारा चमक उठेगा,नवयुग के निर्माण का ,अगर ज़लाले मन मंदिर में..''युग गायन''भाग 1पृ0 3

(4) श्री शचीन्द्र भटनागर की कविता " यह केसरिया बाना " में भारतीय संस्कृति को विश्व संस्कृति के रूप मेंप्रतिष्ठा दिलाने का सन्देश है–

" जिसके ऋषियों ने धरती को अनुपम ज्ञान दिया था।वैभव संस्कृति,शान्ति,व्यवस्था का अनुदान दिया था जिसका है आभार विश्व के हर अणु पर , हर कण पर।है प्रभाव मानवी चेतना पर, चरित्र –चिन्तन पर ।। ध्वज हमको अब इस संस्कृति का जग में है फहराना।इसीलिए तो पहन लिया है , यह केसरिया बाना ।।

।। एक अन्य कविता में सांस्कृतिक उत्थान हेतु लोकहित में समय श्रम और साधन लगाने की प्रेरणा देखिए–

"हम विवेकी बन चलेंगे , चाल जीवन की बदल कर , जो बंधे थे दायरों में आएँगे आगे निकलकर लोक हित में वे समय –श्रम और साधन दे सकेंगे, लोक सेवा के लिए वे शेश जीवन दे सकेंगे । "

(5) डा0 त्रिलोकी नाथ ''ब्रजबाल'' की कविता " पथ हारे मत कायर बन " की पंक्तियों में सांस्कृतिक उत्थान हेतु बढ़ते चलते–चलने का संदेश है–

मन की आशा बने निराशा , पर न डरो बढ़ने वाले ।

सुखतक तुम कैसे पहुंचोगे, लघु दुख से डरने वाले ।। मत कायर बन , पथहारे जन ।।

मिले विफलता या कि सफलता, पर न भ्रमों चलने वाले ।

मोती तुम कैसे पाओगे ,लहरों से डरने वाले । ओ दुर्बल मन पथ हारे जन।।

(6) डा0 रामस्वरूप खरे की कविता 'जागरण का शंख " में सांस्कृतिक पुनरूत्थान दृष्टव्य है–

। दिव्य संस्कृति के मन्दिर का, शिलान्यास करना होगा ।

बलिबेदी को आज बिहंस , सिर–सुमनों से भरना होगा ।।

गिर–गिर कर उठ , सँभल सँभल , गिरि–श्रृंगो पर चढ़ना होगा ।

लक्ष्य–पूर्ति हित कंटक पथ पर , साहस ले–बढ़ना होगा ।।

शंख जागरण का अब फिर से, मिलकर तुम्हें बजाना है।

नये राष्ट्रकी नई मूर्ति को, मिलकर आज सजाना है।।

आज संस्कृति की रक्षा हेतु, नूतन पाठ पढ़ाना है।

मर–मर कर जीना क्या जीवन, हँस–हँस कदम बढ़ाना है।

''युग कवि डा0 रामस्वरूप खरे का बाल सांहित्य' पृ0 89

(7) श्री कृष्ण 'सरल' की कविता "युग तुमसे वरदान मॉगता " की पंक्तियॉ देखिए –

"तुम सागर मंथन कर सकते , पर्वत से टकरा सकते हो ,
तुम जीवन का संगीत मौत के , घर में घुसकर गा सकते हो ,
तुम साहब के पुतले , साहस किसमें जो तुमको ललकारे ?
तुम अपनी ज्वाला से , ज्वाला मुखियों को शरमा सकते हो ,
धरती पर रह चॉद सितारों , को भी तुम दे रहें चुनौती ,
स्वयं काल भी तुम–सा बनने , है तुमसे वरदान मॉगता । युग तुम से वरदान मॉगवा ।।

'युग निर्माण योजना पा0 20 मई 1974

(8)श्री रतनपाल सिहं 'राकेश' की कविता 'विवेक को महत्व' में कवि ने नैतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान हेतु विवेक जागरण का संदेश दिया है–

परम्पराओं की तुलना में , हमें विवेक जगाना होगा ।
अन्धी परम्पराओं को फिर , जग से भार भगाना होगा ।।

~~(23)~~ × × × × × × ×

यहॉं वेश पूजा जाता है , धर्म यहॉं व्यवसाय बना है ;
मान मिल रहा आडम्बर को , मानव जीवन स्वार्थ बना है ;
निर्मल जीवन की काई को , फिर से दूर हटाना होगा । परम्पराओं की तुलना में .....
जन समाज में फैल रहीं है , सड़ी–गली निस्सार रूढ़ियॉ ,
पग–पग पर बाधा देती है , पैरों में ये पड़ी बेड़िया ,
इन्हें तोड़कर नूतन पथ पर , मिलकर कदम बढ़ाना होगा । परम्पराओं की तुलना में .....
जाति पांति की ऊॅच–नीच की , यहॉ खुदी है गहरी खाई ,
कैसी दुखदाई स्थिति है , अलग पड़े है भाई–भाई ,
घोर कालिका मानवता को , जड़ से इसे मिटाना होगा। परम्पराओं की तुलना में .....
इस दहेज के दानव द्वारा , कुचली जाती कितनी कलियॉ ।
अर्थ तंत्र पर भार बनी है , ब्याह बरातों की रंगरलियॉ ।
अदर्श विवाहों का प्रचलन कर , नव परिवर्तन लाना होगा । परम्पराओं की तुलना में .....
विस्तृत भोज यहॉं होते हैं , दुःखी दीन मृतक के घर पर ,
कहॉं देखने को दुनियॉं में , दृश्य मिलेगा ऐसा निष्ठुर ।
भेड़ चाल चलने वालों को , सही मार्ग दिखलाना होगा । परम्पराओं की तुलना में .....

युग निर्माण योजना (पा0) 20 जून 1974

(8)श्री बलराम सिहं परिहार की कविता "पॉंच प्यारों का बलिदान"में कवि ने धर्म के उत्कर्ष हेतु बलिदान का संदेश दिया है –

। "मॉंगती है आज दुर्गा आपसे बलिदान , क्योंकि होता जा रहा है धर्म का अवसान , XXX
हो गई गोविन्द सिहं की पूर्ण उस दिन मॉंग , पॉंच प्यारों ने किया जब धर्म हित तन त्याग ।

प्राण लेना था नही वह तो बहाना था , बलि प्रथा में राष्ट्र का गौरव जताना था ।।

प्राण देकर कर सकें जो धर्म का उत्कर्ष, चाहता है आज वैसे शीश भारत वर्ष ।। "

।। खिल रही जहाँ ज्ञानकी भोर , चलो बढ़े ! रश्मि–रथी उस ओर ,

विहंस कर मानस मन्जुकराल, लिये पावन पूजा के थाल,

शंख ध्वनि करते हुए दिगन्त , कह रहे उठो ! उठो ! ओ सन्त,

बढ़ रहे झंझा–वात कराल ,मिटाने कूर नियति का जोर । चलो बढ़े रश्मि–रथी उस ओर।।

"उद्‌बोदन" पृ0 28

(10) श्री लाखन सिहं भदौरिया की कविता "क्रान्ति की जवानी " की पंक्यिॉ अवलोकनीय है–

(।) युग का यौवन अँगड़ाया है , ले क्रान्ति जवानी आयी है।

भावों के भोले शंकर को , भस्मासुर ने बहकाया है। शिव के औढरदानीपन से , मनचाहे वर को पाया है।

दानवता –दैत्य नचाने को –क्षमता कल्याणी आयी है। युग का यौवन–

ताण्डव को मचले रूद्र चरण , गूँजा डमरू का डिम–डिम स्वर।

जागा समाधि से आत्म–बोध , शिव–शक्ति नाचाती सिहर–सिहर ।

पीड़ा ने शंख बजाया है, करूणा ने बाजी पायी है। युग का यौवन .....

मुर्दों में सोये हुए प्राण , जागे लेकर श्री राम–नाम। उमड़ी सविता की तेज–धार ,अमृत में डूबे धरा धाम

।।। लेवर कर में जलती मसाल , करने अगवानी आयी है। युग का यौवन .....

श्री लाखन सिंह भदौरिया " सौमित्र " की एक अन्य कविता 'युग पहरूओ जाग जाओ ' की पंक्तियाँ देखिए–

चेतना तुमको जगाती , युग–पहरूओ , जाग जाओ ।

कल्प वृक्षी टहनियों में आ रहा हे बौर फिर से, देव संस्कृति की नदी में उठी ज्योति हिलोर फिर से,

दीनता, दुख, दाह–पीड़ा से कहो तुम–भाग जाओ। चेतना तुम जगाती – X X X

यह प्रसव –पीड़ा समय की मॉगती है त्याग तुमसे , भेंटने को बाहुयें फैला रहा अनुराग तुमसे–

प्राण के स्पन्दनों में तुम नया जीवन जगाओ, मूर्छता त्यागो ,अमिय–मन्दाकिनी में फिर नहाओ ।

चेतना तुमको जगाती .....

(11) श्री मती विद्या वती मिश्र कवयित्री के काव्य पर साँस्कृतिक परिवेश का प्रभाव पड़ा । इस प्रकार नैतिक सांस्कृतिक उत्थान के विचार उनकी कविता 'मनुजता का कल्याण करो ' में दृष्टव्य है–

"मनुजता का कल्याण करों "

आत्मदीप से पंथी पथ को ज्योतिर्मान करो । मनुजता का कल्याण करो।।

जय श्री का संकल्प लिये जन जन की वाणी है, हुआ अवतरित शरद भूमि पर बन वरदानी है,

नया हास कलि ने कुसुमों की नयी कहानी है, अग्नि परीक्षा पूर्ण हो गई , कंचन बन निखरो। मनुजता का कल्याण करो।।

(12) श्री डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया की एक कविता "सारी दुनियॉ वैसी जैसा मन है रहा हमारा "की पंक्तियॉ देखिए–

जग की गतिविधि का होता है, मन के द्वारा ही निर्माण ।

यह अकाट्य वेदान्त सत्य है, नहीं किसी का इससे त्राण ।।

इच्छा भाव, कल्पना जैसी और वासना अपनी होती है।

(12) श्री डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया की एक कविता "सारी दुनियाँ वैसी जैसा मन है रहा हमारा "की पंक्तियाँ देखिए–

जग की गतिविधि का होता है, मन के द्वारा ही निर्माण ।
यह अकाट्य वेदान्त सत्य है, नहीं किसी का इससे त्राण ।।
इच्छा भाव, कल्पना जैसी और वासना अपनी होती है।
अंग–प्रयत्नं हमारे तन के , बनते जाते संस्कारवश दुनियाँ होती ।।
माता–पिता, परिस्थिति , आयु स्वास्थ्य , जन्म भिन्न–भिन्न तन ।
अपने मन पर ही सब निर्भर संस्कारवश जाते है सब बन।।
अपने मन को निर्मल कर लें , सद्गुण से सम्पन्न बनाएँ ।
अन्तर्मन में शान्ति बसालें , तो सुख का भी जीवन पाएँ ।।

(13)श्री चन्द्रप्रकाश ' अज्ञेय' की रचना "नया इंसान बनायेंगे " की पंक्तियों में नैतिक उत्थान एवं मानव धर्म प्रतिष्ठा दृष्टव्य है–" विश्व हमारा धरती अपनी, विश्व पिता के लाल ,
नया संसार बसायेंगे। नया इंसान बनायेंगे । XXX
एक करेगे मानवता को , सीचेगे ममता –समता को । श्रेय साधना की असि लेकर ,नैतिकता की ढाल ।
भूमि का भार मिटायेगें। नया इंसान बनायेगें .....
परम पिता की छाया होगी , दूर अविद्या माया होगी। ले संस्कृति की विजय पताका ,मानव धर्म मशाल
तिमिर को भार भगायेंगे।। नया इंसान बनायेंगे । .....

(6 च) आध्यात्मिक तत्वचिंतनः–

अध्यात्म का मूल आधार धर्म है और धर्म यथार्थतः मानव धर्म है। मानव धर्म उभयमुखी है। इसका आन्तरिक पक्ष कर्त्तव्य से एवं बाहय पक्ष उत्तरदायित्व से निर्मित हैं इसमें उत्कृष्टता प्राप्ति हेतु चिन्तन तथा चरित्र की विशेषताएं निर्दष्ट है। इस संदर्भ में चिन्तन को 'अध्यात्म' एवं चरित्र को 'नीति सम्बोधित किया जा सकता है। धार्मिक मान्यताओं आस्थाओं, विश्वासाों और धार्मिक अनुभूतियों को अध्यात्म कहा जा सकता है। वस्तुतः यह आत्मिक पक्ष है।

आध्यात्मिक मनोवृत्ति के कारण मनुष्य अपनी मूल सत्ता एवं उसकी सामर्थ्य में विश्वास कर समग्र प्रगति की ओर अग्रसर होता है। आत्मनिष्ठा उसे आत्मविश्वासी बनाकर, आत्मविस्तार की प्रेरणा देती है, फलस्वरूप,उसके गुणों में शिष्टता, शालीनता , सहृदय , चरित्रनिष्ठा, उदारता आदि सत्प्रवृत्तियों का समावेश होने लगता हैं। इस प्रकार आत्म सुधर आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्माण के ' त्रिविधप्रयत्न' प्रारम्भ हो जाते हैं जिससे मनुष्य लोभ मोह वासना व तुष्णा से ऊँचा उठकर लोकमंगल के लिये अपनी क्षमताओं को विनियोजित करने लगता है। यह सत्कृष्ट भावना ही मनुष्य को श्रेष्ठ और समाज को समुन्नत बनाती है। यही भावना ' आध्यात्मिकता' कहलाती है।

प्रत्येक व्यक्ति के कर्त्तवयों की भिन्नता के बावजूद उनके सिद्धान्तों में एक निष्ठा , समानता एवं एक उद्देश्य है यही सामंजसयता ' अध्यात्म है। इसका मूल आधार मानव धर्म है। 'धर्म' के बिना ' अध्यात्म ' की स्थापना असंम्भव है।

धर्म में जिन नैतिक मूल्यों का समावेश है, वे अध्यात्म को सुदृढ़ आधार प्रदान करते है। इस प्रकार परिष्कृत धर्म ही अध्यात्म है

वस्तुतः अध्यात्म 'तत्वदर्शन' है जिसके अन्तर्गत ब्रह्मविद्या अर्थात आत्मा, परमात्मा , सृष्टि (दृश्यमान जगत एवं परोक्ष जगत) मोक्ष ईश्वर–साक्षात्कार , साधना , उपासना , आराधना जैसे गूढ़ विषयों पर चिंतन – मनन किया जाता है।

भाव संवेदना , भावनाशील व्यक्तियों के अन्तःकरण से प्रस्फुटित होती है, ऐसे व्यक्ति ही दूसरों की व्यथा–वेदना को अनुभव कर सकते है। पाषाण हृदय व्यक्ति पर किसी की करूणाजनक स्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है , वरन् ऐसी स्थिति को कुछ व्यक्ति कहीं–कहीं स्थित प्रज्ञ की भांति निर्मम होकर देखते दृष्टिगोचर होते है एवं कहीं–कहीं हास्य विनोद भी करते देखे जाते है आचार्य श्री राम शर्मा के अनुसार " धर्म संवेदना का उद्‌गम स्रोत है, धर्म उपदेश नहीं वरन् उपचार है जिससे दिव्य चक्षुओं पर चढी हुई अज्ञान की परत को दूर किया जाता है । "1

फल स्वरूप ब्रह्मांड व्यापी चेतना की अनुभूति होती है , जिसे विश्वात्मा कहते है । इस विश्वात्मा का एक घटक 'आत्मा' है । विचार से पदार्थ के गुण , धर्म , स्वभाव और उपयोग को जाना जाता है एवं धर्म से 'आत्मा' का साक्षात्कार होता है । विचार क्षेत्र शिक्षा कहलाता है एवं इन्द्रियातीत संवेदनाओं का क्षेत्र ब्रह्मविद्या कहलाता है । दया , करूणा , प्रेम , सेवा , उदारता , त्याग , बलिदान , संयम , आत्मानुशासन जैसी दिव्य संवेदनाओं की पूर्ति के लिये मनुष्य सहर्ष कष्ट सहन करते है । "2

अस प्रकार आत्मिक प्रगति हेतु भावनाओं में दिव्य संवेदनाओं और उच्चस्तरीय आसथाओं को विकसित करना होता है , इसी को श्रद्धा–भक्ति कहते है । अतएव अध्यात्मवादी की उत्कृष्ट प्रतिपादनों के प्रति, गहन आस्था उसके अन्तः जगत का ज्ञान पक्ष है । इसे ही तत्वदर्शन अथवा ब्रह्मज्ञान कहा जाता है । इसके लिये सामान्य बुद्धि नही वरन् 'ऋतम्भरा प्रज्ञा' की अवशकता पड़ती है । आचार्य श्री राम शर्मा ने चैतन्य मानव के दो स्वरूप माने है , एक अन्तः चैतन्सय एवं दूसरा बाह्य चैतन्य । बाह्य चैतन्य के समस्त अवयव कियात्मक दृष्टि से स्वतंत्र सत्ता रखते है , परन्तु उपयोगिता की दृष्टि से प्रत्येक के भिन्न–भिन्न कर्त्तव्य है , जो अन्तः चैतन्य को बनाये रखने के लिये है। इस प्रकार बाह्यचैतन्य एवं अन्तः चैतन्य पृथक–पृथक होते हुए जिस एक चैतन्य के लिये गतिशील है , वही हिन्दू संस्कृति का मूलाधार है । "3

आचार्य शर्मा भी अध्यात्म के दो लक्ष्य मानते है– "मानव जाति के समग्र विकास हेतु सुनियोजन एवं धर्म के क्षेत्र में व्याप्त अवांछनीयताओं का उन्मूलन।"4 इसी के साथ उन्होंने अध्यात्म को अंतरंग जीवन के अनुसंधान तथा आत्मिक प्रगति के आयामोंको खोजने में साधक और साधना द्वारा आत्म साक्षात्कार हेतु पथ–प्रदर्शक माना । ऐसा ही डा0 राधाकृष्णन का विचार है , वे मानते हैं कि आध्यात्मिकता उच्चतम आत्मा को जानने , उसी में निरत् रहने तथा जीवन जीवन को उसके अंगों सहित उच्च बनाने की आवश्यकता पर बल देती हैं। आध्यात्मिकता धर्म का मर्म और आन्तरिक सार है । रहस्यवाद धर्म के इसी पक्ष पर बल देता है । "5

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा – धर्म और विज्ञान विरोधी नही पूरक, पृ0 56
2. आचार्य श्री राम शर्मा – क्या धर्म अफीम की गोली है ? पृ0 53
3. आचार्य श्रीराम शर्मा – ईश्वर का विराट दर्शन , पृ01
4. आचार्य श्री राम शर्मा – प्रजातन्त्र का मेरूदंड – समर्थ धर्म तन्त्र पृ0 7
5. डा0 राधा कृष्णन – प्राच्य धर्म और पाश्चात्य विचारक पृ0 77

आचार्य श्रीराम शर्मा उपयोगिता की दृष्टि से अध्यात्म और विज्ञान शब्द का अर्थ पृथक–पृथक स्पष्ट करते हुए कहते है "मनुष्य एक चैतन्य प्राणी है , उसके वाह्य चैतन्य स्वरूप के अन्तर्गत शरीर है । भौतिक शरीर की सुख–सुबिधा उपलब्ध करने में भौतिक विज्ञान सहायक है। दूसरी ओर अन्तः चैतन्य स्वरूप के अन्तर्गत आत्मा है , जो 'आत्मचेतन' है। उसकी आवश्यकता धर्म द्वारा ही पूर्ण हो सकती है ।" 1कुछ धार्मिक व्यक्तियों ने कहीं–कहीं धर्म और अध्यात्म को पर्यायवाची भी माना है । फेड्रिक श्लीआर मारकर के अनुसार "धर्म का सार पूर्ण नियंत्रण की अनुभूति में निहित है।"2 जूलियन हक्सले भी श्लीआर मारकर की भॉति धर्म की व्याख्या में अनुभूति को प्रधान मानते है । उनके अनुसार "मूलतः धर्म व्यक्ति की धार्मिक उद्देश्यों के प्रति सम्मान भावना के द्वारा अभिव्यक्त होता है जो उसे पवित्रता की अनुभूति कराता है। "3 ये विचारक धर्म को मोहक , उदात्त एवं रहस्यमय बताते हुए यह भी कहते है कि उसके सम्मुख हम कॉप उठते है , फिर भी हम आकर्षित होते है।सामान्यतः भिन्न–भिन्न व्यक्तियों मे अनुभव ,भिन्न–भिन्न स्तर के होते है । वस्तुतः भगवत्प्राप्ति में आस्था के रूप में यह आत्मिक स्तर का तथ्य है ।

आचार्य श्रीराम शर्मा अध्यात्म शक्ति का परिचय एक उदाहरण द्वारा देते हैं– चिकित्सक (डाक्टर) एक वैज्ञानिक की क्षेणी में आता है ,जिसे शरीर रचना और उसके रासायनिक परिवर्तनों की पूर्ण जानकारी होती है, परन्तु वह स्वयं रोगी की पीड़ा का अनुभव करने में असमर्थ है। वह मनुष्य की मृत्यु होने पर हृदय की धड़कन बन्द होना, मस्तिष्क की क्रियाशीलता रूक जाना या श्वांस गति रूक जाने में से कोई एक कारण बताता है। वस्तुतः मृत्यु और जीवन के सम्बन्ध में विज्ञान मौन है। वह किसी मृत व्यक्ति को प्राण देने में असमर्थ है। लेकिन अध्यात्म के इतिहास को देखने से ज्ञात होता है कि अध्यात्म की साधनात्मक शक्ति से असंख्यों व्यक्तियों को प्राणदान प्राप्त हुआ है। सर्वविख्यात सत्यवान–सावित्री का उदाहरण है, जिसमें सावित्री ने अपने पति की प्राण रक्षा अपने तपोबल से की थी।

सर्वविदित है कि जब 'स्काईलैब' गिरने की आशंका थी तब आचार्य श्रीराम शर्मा ने अखिल विश्व गायत्री परिवार के अपने नैष्ठिक उपासकों के पास पत्र के द्वारा संदेश भेजा था, जिसके अनुसार वर्ष 1979 में रात्रि 9 बजे से रात्रि 9.45 तक "सामूहिक गायत्रीमंत्र की सस्वर साधना" का उन्होने निर्देश दिया था। उस समय साधकों से यह ध्यान करवाया गया था कि गायत्री मंत्र से अन्तरिक्ष में एक छतरी जैसा सुरक्षा कवच तैयार हो रहा है, एवं मॉ गायत्री के हाथ में एक विशाल पत्थर है, जो समुद्र में गिर रहा है। 25 अप्रैल से लगातार 12 जुलाई तक यह साधना उनके सभी शिष्णों ने की थी। इन्हीं श्रद्धायुक्त प्रार्थनाओं के बल पर सम्पूर्ण विश्व के जन समुदाय की रक्षा हो सकी थी , इसमें कोई अतिशयोक्ति प्रतीत नही होती है सर्वप्रामाणिक है कि स्काईलैब प्रशान्त महासागर में गिरा था जिससें कोई जन हानि नही हुई थी। सत्य ही हे कि जब हम समस्त उपचारों से हार मान लेते हैं, तब प्रभु से प्रार्थना के अतिरक्त हमारे पास कुछ शेष नहीं रह जाता है। यही है "अध्यात्म "की वास्तविक शक्ति का परिचय , जो जीवनोपयोगी है।

श्री रामनरेश त्रिपाठी अपनी रचना 'ईश्वर की खोज में ' कहते हैं–

"मैं ढूँढता तुझे था जब कुंज और वन में , तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में ।।

---

1. आचार्य श्रीराम शर्मा – धर्म और विज्ञान विरोधी नही पूरक , पृ0 15
2. द इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलोसफी , पॉल एडवार्ड्स, वौल्यूम– 1 पृ0 149
3. जूलियन हक्सले– रिलीजन विदाउट रैवीलेशन, पृ0 111

तूँ आह बन किसी की मुझको पुकारता था– मैंथा तुझे बुलाता संगीत में , भजन में।।

मेरे लिए खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू – मै बाट जोहता था –तेरी किसी यमन में ।

बनकर किसी के ऑसू मेरे लिए वहा तू –आखें लगीं थी मेरी तब यार के वदन में ।।"

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि 'अध्यात्म' अर्थात 'तत्वदर्शन' ही मानव की समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकता है। आचार्य शर्मा का मत है कि विज्ञान द्वारा प्रदत्त निर्जीव पदार्थों की जानकारी एवं सजीव प्रकृति की जानकारियों के अतिरिक्त भी ऐसी महत्वपूर्ण जानकारियॉ हे, जिन्हें प्राप्त करना शेष रह जाता है और इन्हें 'अध्यात्म' के द्वारा ही ज्ञात किया जा सकता है। वस्तुतः विज्ञान अध्यात्म के बिना "अपूर्ण विज्ञान एवं अध्यात्म" विज्ञान के बिना "अपूर्ण अध्यात्म" कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं है। ज्ञातव्य है कि आइन्सटीन के "सापेक्षता का सिद्धान्त" एवं हाईसेन का "क्वांटम सिद्धान्त "आत्म चेतना "से सम्बद्ध होने के कारण सामान्य रूप से समझ में नहीं आते हैं । इन सिद्धान्तों का सम्बन्ध वस्तुतः अध्यात्म और धर्म से हे, जो वैज्ञानिक बुद्धि से नहीं , दार्शनिक बुद्धि से अनुभवगम्य है। इस प्रकार यदि यह कहा जाये कि जहॉ विज्ञान रूकता है, वहॉ से आगे का लक्ष्य अध्यात्म पूर्ण करता हे, तो यह अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं हैं।

आलोच्य कांव्यों में ' आध्यात्मिक तत्व चिन्तन' की रचनाएँ –

(1) श्री मंगल विजय ' विजय वर्गीय '

। "सिन्धु है परमात्म सत्ता , आत्म सत्ता बिन्दु है।

किन्तु तात्विक दृष्टि से तो, बिन्दु भी तो सिन्धु है।

लक्ष्यहीन जीवन जीना तो मानव की पहिचान नहीं है,

क्योंकि भोग योनि वाले पशु–पक्षी सा अनजान नहीं है,

देवों का दुर्लभ तन पाया, आओ! इस पर तनिक विचारें,

मानव जीवन की गरिमा को , पतन–गर्त से अरे! उबारें ,

हे जग, अरे ! प्राणवानों का, मुर्दों का शमसान नहीं है।। "

।। युग कवि श्रीमंगल विजय मूलतः भौतिक तावाद के विरोधी तथा अध्यात्मवाद के पक्ष घर है पर साथ ही आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित होकर दोनों में समन्वय की दृष्टि रखने की आवश्यकता भी अनुभव करते है। उनकी कुछ पंक्तियॉ अवलोकनीय है–

क्या होगा "जब ज्ञान –भानु , अज्ञान बदरिया छा देगी , तब रात नहीं होगी तो बोलो क्या होगा ?

जब आशा के प्रासाद , निराशा छा देगी, तब मात नहीं होगी तो बोले क्या होगा ।। XXX

अध्यात्म उपेक्षा भरी दृष्ट से देख तो, विज्ञान अगर अज्ञान नहीं तो क्या होगा ?"

प्रकृति–प्रेरणा :– यह मानव जाने भी अनजान किया, करता है सोच विचार।

समझ रखा है उसको जीत, कि है जिसमें जीवन की हार ।। XXX

चिरंतन है आत्मा के प्राण, आत्म का ज्ञान इसलिए सार ।

कभी होती भौतिकता भूत, चिरन्तन है आध्यात्म–आपार ।।

तुम–में –तुम झुकाते जा रहे , मैं झुक रहा हूँ । तुम नचाते जा रहे , मैं नच रहा हूँ ।।

क्यों मैं हूँ बूँद , तुम हो स्नेह सागर । क्योंकि मैं हूँ मीन तुम हो जल उजागर ।।

तुम चलाते जा रहे , मैं चल रहा हूँ । तुम झुकाते जा रहे XXX

तुम नहीं तो मैं नहीं हूँ फिर कहीं भी , प्रिय नहीं तो प्राण क्या रहते कहीं भी।

तुम दिखाते जा रहे मैं दिख रहा हूँ । तुम झुकाते जा रहें .....

चिंतन , मनन , अध्ययन जीवन :–

"भावों की भूमि पर चिंतन का बीज , यदि जमाया तो , सृजन के शिशु अवतरित होंगें ही ।

अध्ययन के उपवन में मनन की लतिका को , प्रतिमा की छाया में ,

यदि लहराया तो ;मौलिकता के सुमन मुकलित होगें ही ।

जीवन के सागर में संघर्षण रज्जु से कर्मों का मंथन यदि कराया तो;उपलब्धियों के रत्न हस्तगत होंगें ही प्राणो की वीणा के संयम के तारों पर , साधों का सरगम यदि उठाया तो , अनबोले बोल मुखरित होगें ही

(2) श्री मती माया वर्मा ने मानव का अहंकार जैसे दुर्गुणों से निकालकर विश्व–कल्याण की प्रेरणा दी है । उनकी "उदबोधन" कविता में तो भारतीय वाङ्मय की सन्दर्भ गर्मिता अनुस्यूत है–

(।)"प्राण और रयि के मिश्रण से प्रभु ने सृष्टि रचाई । पुरूष और नारी दोनो मिलकर हैं , पूर्ण इकाई ।।

'मनु' अर्जन कर के लाये और 'श्रद्धा' उसे संवारे । कार्य–क्षेत्र बने दोनो के केवल न्यारे–न्यारे ।। "

(।।) पवित्रता:– पूजा के उपकरण मॅजे हों–आवश्यक है । पर पूजा करने वाला मन भी पवित्र हो ।।

लोग दान करते हैं– अच्छी बात बहुत यह है । इसमें हित समाज का–जन कल्याण बड़ा है।।

कभी कहीं हो सब मिलकर पूरी करवाएँ। इसी तथ्य पर जीवन का आधार खड़ा है।।

किन्तु दान का साथ पुण्य यह काम तभी –जब , दिये जा रहे धन का अर्जन भी पवित्र हो ।।

"जीवन सुरभि" पृ0 6

।।। पैसा तोहैसाधन भाई :–

मातु –प्रकृति में अधिक बृद्धि बल है स्वार्थी संसार से दिल की आकृति बड़ी बनाई पैसे के आकार से । इसीलिए ईश्वर भी बस में होता आया भक्त के । मीरा शबरी , विदुर सुदामा , प्रभू पद मे अनुरक्त थे। प्रेमी को पुकारता वह भव–सागर के उस पार से ।। मातु–प्रकृति .....

पैसा तो साधन है भाई , साध्य यहॉ बस प्यार है। पंच तत्व से सृष्टि चलरही, क्योंकि वहॉ सह कर है। अतः लड़ोमत ज़र ज़मीन के हित हरकर संस्कार से । मातु–प्रकृति ..... "जीवन सुरभि" पृ0 97

(3) श्री शचीन्द्र भटनागर :– श्री भटनागर ने आध्यात्म –चिन्तन विषय पर शताधिक गीत लिखे हैं । उनके कुछ गीतों की पंक्तियॉ अवलोकनीय हैं–

(।) "जिस दिन चरित्र –चिंतन आध्यात्म से जुड़ेगा , मन में तभी उमढ़ता उल्लास मिल सकेगा ।

इच्छा सदैव पाली हमने अनंत धन की , चाहा कि जिंदगी यह शय्या बने सुमन की ,

सुख के असीम साधन निशिदिन यहॉ जुटाए, लेकिन बढ़े निरन्तर दुःख के अछोर साए,

संकीर्ण भावना से जब हम उबर सकेंगे , सच्चा तभी सुखों का मधुमास मिल सकेगा ।

तब लोकहित बनेगा सत्कर्म की कसौटी , संवेदना बनेगी तब धर्म की कसौटी ,
हर ओर से हवा तब सद्भावना भरेंगी, अपनत्व की फुहारें तब हर घटा झरेंगी,
उत्सर्ग जिन्दगी में आनन्द भर सकेगा , तप में प्रभु –कृपा का आभास मिल सकेगा।"

।। " प्रगति के नाम पर मानव बहुत निर्मम हुआ है,
जिधर भी वह चला , उस ओर उल्टा क्रम हुआ है।,
मनुज के आचरण का का खुब अवमूल्यन हुआ है,
भटकते आदमी का इष्ट केवल धन हुआ है। "

।।। भटक रहा हे जनम–जनम से , हंसा भूखा प्यासा रे ,
तुम जाए जब घाट–घाट से , फिर भी रहा उदासा रे ।
मोती का अभिलाषी हंसा , कैसे पत्थर खाए, मानसरोवर का वासी यह कीचड़ में अकुलाए,
तुमने इसे कषाय–कल्यषों में, हर समय डुबाया, दल दल में बोलो , फिर कैसे कर ले हंसा वासा रे ।
नीर–क्षीर का ज्ञान इसे है, पर कैसे समझाए , सद्गुण की पहचान इसे है, पर कैसे बतलाए,
काम–क्रोध –मद की कारा में बंदी इसे बनाया ,पराधीन वाणी से कैसे सबका करे खुलासा रे ।
हँसा भूंखा प्यासा ..... "करिष्ये वचनं तव" पृ0 142 ,150

(4) डा0 हरगोविन्द सिंह :– डा0 सिंहकी कविता " अपनी गरिमा भी पहचानों " में अध्यात्म चिंतन अवलोकनीय है– अध्यात्म का संदेश :–

। उन्नति के शिखर चढ़ो, लेकिन भौतिक ही सब कुछ मत मानो,
अध्यात्म यही तो कहता है, अपनी गरिमा भी पहचानों।
होते है अनुभव कुछ ऐसे ,कह पाते जिनको बोल नहीं,
कुछ ऐसी भी सेवाएँ हैं जिनका लग सकता मोल नहीं ।
इस भाव जगत की सीमाएं कैसी क्या हैं, कुछ तो जानों। अध्यात्म यही तो कहता है– X X X
रोटी, कपड़ा ,आवास सभी विज्ञान जुटाता बेशक है,पर आसन मानव का पशु से ऊँचा रह आवश्यक है,
कह रहे मनीषी इसीलिए , अब क्षेत्र चेतना का छानो । अध्यात्म यही तो कहता है–

कर्मठ अध्यात्म:–

"कर सकेगा ठीक केवल वह मनुज परलोक, जो दिखा सकता यहाँ निज लोक का आलोक ;
हो सुखदकैसे, भला उस व्यक्ति का वैराग्य– कर न पाया दूर जो गार्हस्थ्य–पथ का शोक।"

युग–शक्ति की तलाश :–

बिक रहा है आज कोई नोट के आगे, झुक रहा है आज कोई वोट के आगे;
है कहाँ व्यक्तित्व वह जिसके इशारे पर'–चीरती नगराज नैतिक चेतना जागे !

कर्मकाण्ड और नयी पीढ़ी :–

क्या प्रयोजन सिद्ध करता कर्मकाण्ड –विधान? अर्थ क्या किस कृत्य का? यह पूँछता विज्ञान;
जब न व्याख्या कर सकें है एक भी आप –पास में ही ताश लेकर जम गये मेहमान ।"

भक्तों की निगाहें:-

ढेर सारी अर्चनाएं देव-मन्दिर में चढ़ी थीं, विष्णुजी की दो भुजाएँ दान-मुद्रा में बढ़ी थीं;
किन्तु झुंझलाकर हुए पाषाण बनने को विवश वे- क्यों कि भक्तों की निगाहें सिर्फ लक्ष्मी पर गड़ी थी?

(6) डा0 आर0पी 0 कर्मयोगी की कविता"ईश्वरनुभूति " की पंक्तियॉ में अध्यात्म चिन्तन परिलक्षित है

आओ मित्रो पता लगाएँ ,ईश्वर कौन कहॉ है
कैसे उसने सृष्टि बनाई सारा चकित जहॉ है। इसमें क्या कठिनाई आई उत्तर अभी बता दूँ
या चाहो तो साथ चलो मैं तुमको अभी दिखा दूँ ।
दोनों चले खोजने प्रभू को -दुखियारे गॉव में, मरहम मलता सन्त मिला तब कोढ़ी के पॉवों में ।
आगे बढ़ी कॉपती करूणा सिकुड़ा दैन्य खड़ा था। हिचकी लेती दया आई सेवा भाव बड़ा था
मित्र कहॉ तग और चलोगे अब तो भेद बताओं इच्छा मेरी प्रबल हो उठी प्रश्न अभी निपटओं।
मैं तो समझा समझ गए तुम, अब क्या प्रश्न बचा है, सेवा की अनुभूति करो तो ईश्वर स्वयं खड़ा है।"

"जीवन विद्या" पृ0 69

(7) श्री बलराम सिंह परहिार की रचना 'अलिखा माग्य' में अध्यात्म-चिंतन दृष्टव्य है-

अपने ही कर्मों की माया ज्ञान भक्ति वैराग्य ।
नहीं लिखा जाता ऊपर से कोई अपना भाग्य ।।
जो श्रम से है जी न चुराते , मत आलस में समय गॅवाते
उद्यम करने में हरषाते, सहकारी जीवन अपनाते।।
पुरूष सिंह ही अर्जित करते आये सुख सौभाग्य । नहीं लिखा जाता ऊपर से .....
भाग्य भरोसे समय गॅवाते , वे आखिर पीछे पछताते
कष्ट भोगते हैं दुख पाते , नहीं किसी को भी वे भाते
और देश पर ढाया करने वे ही दुःख दुर्भाग्य । नहीं लिखा जाता ऊपर से .....
बुनो न यों मन में ही सपने , अपना भाग्य हाथ में अपने ।
श्रम के तप से खुद को तपने , उठो कर्म की गीता जपने ।।
इससे बड़ा नहीं कोई पुरूषार्थ और तप याज्ञ । नहीं लिखा जाता ऊपर से ..... यु0नि0यो0, 5.9.76

(8) श्री लाखन सिंह भदौरिया ' सौमित्र' की कविता "जिन्दगी इन्सान के तप की कला है ' की पंक्तियों में आध्यात्म चिंतन दृष्रूटव्य है- जिन्दगी इन्सान के तप की कला है-

"जिन्दगी इन्सान से जन्मी, कला है जिन्दगी ,शमसान का जीना नहीं है।, X X X
जिन्दगी में ताज है, गति है, लहर है सर्जना है। जिन्दगी तप के चरण से , राह नूतन , जन्मना है।
जिन्दगी से प्राण का दीपक जला है, जिन्दगी निष्प्राण का जीना नहीं है।
जिन्दगी अवतार है, अपनी दिशा में भावना का, जिन्दगी श्रृंगार का अपनी दिशा में साधना का ।।
जिन्दगी गतिमान जीवन का काफिला है। जिन्दगी चट्टान का जीना नहीं है।
जिन्दगी उगना विकसना , फूलना-फलना सलोना , जिन्दगी तो मृत्यू क घर में सतत् अमरत्व बोना
जिन्दगी का हर शिरा किसको मिला है, श्वास का सन्धान का जीना नहीं है।
जिन्दगी इन्सान के तप की कला है, जिन्दगी शमसान का जीना नहीं है।" अखण्ड ज्योति,जून 1977

(9) श्री बाबूलाल जैन 'जलज' की कविता "कालजयी वह बन जाता "की पंक्तियॉ देखिए-

आत्म-ज्ञान गीता जो पढ़ता , कर्म मंत्र को दुहराता।
संकल्पों से कभी न डिगता, कालजयी वह बन जाता।।
चट्टानों से दूध निचोडे, जो पौरूष के हाथों से, जो निकाल देता दीपित मणि , क्रूर काल के माथों से
तारे तोड़ गगन से लाता , विष पीकर जो मुस्काता । संकल्पों से कभी न डिगता -
चौंक-चौंक पड़ता सपने में सुनकर जग का कोलाहल , बना कूप-मंडूक खोजता, डबरों में जो गंगाजल।
बुझा हुआ दिल, गिरा हुआ मन , मुख निस्तेज गात दुर्बल
कभी न बन पाता , दुर्दिन में , जीवन मंजिल का संबल।।

अंधकार अज्ञान अनय से कभी नहीं जो घबराता । संकल्पों से कभी न डिगता .....

युoनिoयोo जन01978

(10) श्री राम कुमार भारतीय की रचना " है अगर–प्रभु प्रेम पाना " की पंक्तियों में आध्यात्म चिंतन अवलोकनीय है– है अगर प्रभु प्रेम पाना तो मनुज से प्यार करलों। X X X

" पंचतत्वों का खिलौना कब न जाने जाने टूट जाये ।

प्राण का सम्बन्ध तन में, कब न जाने दूर जाये।

इसलिए तुम दीन–दुखियों की कुटी में दीप बनकर ।।

तेल–बाती की तरह जल–जल सदा उपकार कर लो ।। है अगर प्रभु–प्रेम पाना तो.....

प्रेम ही भगवान है और प्रेम ही आराधना है। प्रेम ही है भक्ति यावन , प्रेम ही शुभ साधना है ।।

प्रेम सुख का मंत्र सच्चा,प्रेम जीवन का सुफल है।प्रेम अमृत–कुम्भ है , इससे हृदय का पात्र भरलो ।।

(11) डाo त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल की कृति 'एक डाल तीन फूल' की एक रचना में अध्यात्म चिंतन परिलक्षित है–

(I) श्रेष्ठ सृष्टि में है मानव तन , मानव तन में भी है जीवन ।

जीवन में अति पावन श्वासें , श्वासों में सत् केवल चेतन , चेतन में है ब्रह्म सनातन ।"

(II) कवि की 'इन्दु एक विन्दु दो' की एक रचना 'स्वानुभूति' में अध्यात्म चिंतन देखिए–

पतझर के पात सा , उड़ चला मन । अनव्याही श्वांसो का जमने लगा तन ।

सीमाएँ मौन ही–तोड़ उठी मान । चिन्तन पर छाने लगा , आगत का ध्यान ।

कैसी विवशता है ? जड़तामय ज्ञान । बँधे क्षण–धागों में ,हिल रहे प्राण ।"इन्दु एक विन्दु दो , पृ0 42

(III) कवि की कृति 'पाथेय' के एक गीत में अध्यात्म चिंतन देखिए–

"सजल नयन से देखो विश्व विराट को , मिले निराशा और उदासी छायेगी ।

हृदय सबल कर उठो जरा हर्षित होकर , सारी काली बदली खुद घट जायेगी ।

वहीं देख पाते अपना अपना मग रात में , जिनके दीप जला करते हैं प्राण में ।

प्राण डालने होते हैं पाषाण में , तब मिलते हैं रत्न नये निर्माण में ।"

(12) श्रीमती विद्यावती मिश्र–

आध्यात्मिक प्रेम भावना :– छायावादी कवियों में आध्यात्मिक प्रेम –भावना प्रचुर मात्रा में मिलती है । लेकिंन प्रणय में संयोग के अनन्तर वियोग होता है जबकि रहस्यवाद में साधक आरम्भ में विरह भावना कस अनुभव करने पर सिद्धि प्राप्त करने के बाद परमात्मा के साथ संयोग का अनुभव करता है । यथा– महादेवी वर्मा ने "दीपशिखा" में इस प्रकार कहा–

"तुम मूझमें प्रिय फिर परिचय क्या ?

मैं कण–कण में डाल रही हूँ , आसूँ के किस प्यार किसी का ।

मैं पलकों में पाल रहीं हूँ , यह सपना सुकुमार किसी का ।। " –महादेवी वर्मा

श्री मती विद्यावती मिश्र ने भी "श्रद्धा" काव्य संग्रह के एक गीत में इस प्रकार कहा–

"बना हुआ जब प्रिय का मन्दिर मेरा मन साकार ! मुझे क्या पूजा का अधिकार !
प्रस्तर दीवारों– सा मेरा सुदृढ़ , सुघड़ विश्वास , और तुम्हारा ध्यान अनवरत बना हुआ है द्वार ,
एक मधुर आशा का जगमग छाया यहाँ प्रकाश , "खड़े यहाँ अपलक पलकों के हैं प्रहरी सुकुमार ,
चरण धुलाती है निज प्रभु के नित आँसू की धार ! मुझे क्या पूजा का अधिकार ! श्रद्धा पृ0 6

(ii) "प्रतीक्षा" काव्य संग्रह में आध्यात्मिक प्रेम भावना का सुन्दर चित्रण हुआ है –

" यहाँ तो मन में ही भगवान ।
मुझे प्रतिपल देती है आस , भाव की मृदु– कलियाँ अम्लान ।
गूँजता नयनों में दिन रात , पुण्य गंगा का कल– कल गान ।
बना पूजा का यही विधान , स्वयं अपने सुख–दुँख का ध्यान ।
मुझे प्रतिपल देती हैं आस , भाव की मृदु– कलियाँ अम्लान ।
गूँजता नयनों में दिन रात , पुण्य गंगा का कल– कल गान ,
बना पुजा का यही विधान , स्वयं अपने सुख–दुख का ध्यान !
साधना यहाँ चरण की शक्ति ,याचना हो प्रिय की पहिचान ,
प्रेरणा यहाँ पन्थ की रीति , नीति संघर्षों का अवसापन ।
यहाँ प्रति श्वास लिये कल्याण , यहाँ पर हाथों में वरदान ।

6 छ – पर्वो एवं संस्कारों की साँस्कृतिक पृष्ठभूमि –

यह विश्व – प्रकृति , जिससे मानव तथा अन्य समस्त प्राणियों और भोतिक पदार्थों की उत्पत्ति हुई है, एक विशेष नियम से बँधी है। उस नियम से अनुसार ही मानव–प्रकृति का भी विकास हुआ है। इन्हीं नियमों को, जिनके आधारपर यह विश्व टिका हुआ है, जान लेना और उसके अनुकूल व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन की व्यवस्था करना, यही भारतीय संस्कृति और सभ्यता का सार है। यहाँ के प्राचीन ऋषि–मुनियों ने समाज और व्यक्तियों के लिए जो आचरण और कर्त्तव्य नियत किये है, उन सब में इसी गहन तत्व को दृष्टिगत रखा गया है। वे जानते थे कि मनुष्य का समस्त जीवन इन्हीं नियमों की एक श्रृंखला के रूप में है, इसलिये उनका कोई भी कार्य इनके विपरीत नहीं होना चाहिए अन्यथा प्रकृति उसे अवश्य दण्ड देगी । इसलिए उन्होंने हमारे छोटे–बड़े सभी कर्त्तव्यों और प्रातः काल से लेकर शयनकाल तक दैनिक कृत्यों को धर्म का रूप दे दिया, जिन पर आचरण करके ही हम सुख और शान्ति प्राप्त कर सकते है।

जिस प्रकार हिन्दू शास्त्रों में हमारे व्यक्तिगत कृत्यों को धर्म का रूप दिया गया, है उसी प्रकार सामाजिक कार्यों को भी धर्म का अंग बना दिया है , जिससे लोग उनके पालन में ढिलाई न करें और उनसे यथोचित प्रेरणा प्राप्त करते रहें। पर्व, संस्कार , त्योहार, धार्मिक और सामाजिक उत्सव तथा व्रत आदि का विधान वैसे संसार की सभी जातियों और देशों में पाया जाता है । सभी मजहवों को संस्थापकों और आचार्यों ने कुछ ऐसे विशेष दिन नियत कर दिये है, जिन पर वे अपने विशेष मनोभावों को प्रकट करने के लिए कुछ विशेष कृत्य करते देखे जाते हैं । दूसरा कारण यह भी है कि अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अनुसार मनुष्य सदा एक ही रस में रहना पसन्द नहीं करता । अगर वह वर्ष के 365 दिन नित्य–प्रति के कार्यों और नियमित व्यवसाय या नैकरी आदि में ही लगा रहे

तो उसके चित्त में अवश्य उद्विग्नता का भाव उत्पन्न हो जाता है। इसलिये यह आवश्यक समझा गया है कि उसको बीच–बीच में कीभी ऐसा अवसर मिलता रहे जिससे वह अपने जीवन में कुछ नवीनता तथा आमोद–प्रमोद का अनुभव कर सके और विश्राम भी पा सके।

अन्य समस्त जातियों के त्योहारों की भॉति उपर्युक्त सब उद्देश्य हिन्दू–जाति के त्यौहारों में भी पाये जाते हैं पर हमारे यहॉ इतनी विशेषता और है कि त्योंहारों को केवल छुट्टी का अथवा धर्माचार्यों की जयन्ती आदि का दिन ही न समझकर उससे मनुष्यों की आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक विकास का भी उद्देश्य सिद्ध किया जाता है। सच पूॅछा जाये तो हिन्दू–जाति अपनी प्राचीन सभ्यता ओर आचार–विचार को इतनी शताब्दियों के परिवर्तन के बाद भी जो अभी तक कायम रख सकी है, इसका बहुत कुछ श्रेय इन त्यौहारों और उत्सवों को ही है। साधरण जनता धर्म के गंभीर उपदेषों को नही समझ सकती और न आध्यात्मिक तत्वों पर अमल कर सकती है। उसको शिक्षा देने और सुमार्ग पर चालने का एक मात्र मार्ग धार्मिक कथा–कहानी श्रवण कराना और मनोरंजन के साथ धार्मिक कृत्यों के करने की विधि बतलाना ही है। यह उद्देश्य त्योहारों और व्रतोत्वस आदि से ही सुगमता पूर्वक सिद्ध हो सकता है।

उद्देश्यः– पर्वों और त्यौहरों की स्थापना मुख्यतः निम्नलिखित उद्देश्यों को लेकर की गई है–

(1) जनता में जागृति , सद्भावना , ऐक्य, संगठन की वृद्धि करना । लोगों को सुसंस्कृत, शिष्ट और सुयोग्य नागरिक बनाना । उसमें सच्ची सामाजिकता की भावना उत्पन्न करना ।

(2) किसी विशेष अवसर पर बड़े यज्ञ के लिये पर्व का आयोजन करना। यद्यपि शास्त्रों के मतानुसार 'यज्ञ' शब्द का अर्थ परोपकार के कार्यों के लिये होता है तथापि वैदिक कालीन पर्वो और उत्सवों में यज्ञ का अर्थ बड़े हवन से लिया जाता है।

(3) किसी विशेष ऋतु के परिवर्तन या फसल के तैयार होने पर सामाजिक समारोह के रूप में ।

(4) सर्वसाधरण के मनोरजन और हृदयोल्लास –प्रकाश के लिये ।

(5) किसी युग–प्रवर्तक महापुरूष , अद्वितीय कर्मवीर , शूरवीर , प्रणवीर , दानवीर, महान विद्वान , आदर्श प्रतापी की अथवा किसी महान राष्ट्रीय घटना की स्मृति मनाने के निमित्त ।

हमारे तत्ववेत्ता पूज्यपाद ऋषि–महर्षियों के बतलाये पॉचों उद्देश्यों के अनुकूल अनेक त्यौहार और पर्व के दिवस नियत कर दिये है और उन सब में लौकिक कार्यों के साथ धार्मिक तत्वों का ऐसा समावेश कर दिया हे कि उनसे हमको अपने जीवन –निर्माण में बड़ी सहायता मिलती है और समाज भी सुमार्ग पर अग्रसर हो सकता है। मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरणशील प्राणी है। दूसरों को कोई शुभ कार्य करता देख कर उसके मन में भी वैसा ही काम करने की इच्छा स्वतः उत्पन्न होती है। फिर यदि उस कार्य के करने वाले उसके कुटुम्बीजन अथवा पूर्वज हो तो उस कार्य में उसका अनुराग और भी बढ़ जाता है । यही कारण है कि प्राचीन काल में जिनके कुलों में उत्तम और सत्कर्म होते चले आये थे, उनकी सन्ताने भी प्रायः सनमार्गगामी होती थी । इसके विरूद्ध जिनके पूर्व पुरूष बहुत समयसे जघन्य आचार वाले अथवा

निन्दनीय वृत्ति वाले रहें हो,उनकी सन्तान का सुधार बड़ी कठिनाई से होता ,था क्योंकि बालक अधिकाश समय अपने बड़ों से ही आचरण सीखते हैं और उसी साँचे में ढलते है, जिसमें उनके पूर्व पुरूष ढले होते है।

जो बात एक व्यक्ति के सम्बन्ध में कही गयी है, वही समाज के सम्बन्ध में भी सत्य है, क्योंकि समाज या जाति व्यक्तियों के समूह का ही नाम हैं जिस समाज या जिस जाति में अधिक संख्या जैसे भले या बुरे , उन्नतशील अथवा अवनतिशील लोगों की होगी , वैसी ही वह जाति बन जायेगी । इसलिए सभ्य जातियॉ अपने महान कार्य करने वाले पूर्व पुरूषों महात्माओं , प्रतापवन व्यक्तियों की समृति को सुरक्षित बनाये रखने के लिए प्राणपण से यत्न करती है , जिससे आगामी पीढ़ियों को उनका श्रेष्ठ आदर्श प्रेरणा देता है इस समृति को स्थिर रखने और ताजा बनाये रखने के दो उपाय है–

(1) ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना और उनका पठन–पाठन जिससे बालकों और युवकों को हृदयों में अपने प्रातःस्मरणीय पुरूषों के कीर्ति –कलाप और उच्च आदर्श स्थान बना लेते हैं।

(2) उन खास तिथियों को, जब उन महापुरूषों के जीवन की कोई महान घटना घटी हो अथवा जिस दिन उनका जन्म हुआ हो उत्सव अथवा त्योहार मनाना है । इससे साधारण मनुष्यों को भी उन महापुरूषों के नाम लेने और उनके सम्बन्ध में कुछ चर्चा करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे वे सत् शिक्षा ग्रहण कर सकते है, अपनी जीवन को किसी उच्च लक्ष्य की ओर मोड़ सकते हैं संसार की सभी सभ्य जातियों में इस प्रकार से स्मारक–दिवस बड़े उत्साह और समारोह के साथ मनाये जाते है और किसी जाति की सभ्यता और उच्चता का अनुमान पूर्व पुरूषों के प्रति उसके सम्मान और वीर–पूजा से लगाया जाता है।

आचार्य श्रीराम शर्मा के मतानुसार त्योहार और धार्मिक उत्सव जाति के लिए नव–जीवन प्रदान करने वाले और स्फर्ति प्रदायक होते है, इसलिये उनका प्रचार बढ़ाना और उनको उत्साह से मानाना तो सभी समाज–हितैषियों का परम् कर्त्तव्य है, पर साथ ही यह ध्यान रखना भी परमावश्यक है कि हम उनके वास्तविक उद्देश्य और स्वरूप को न भूलें । हमें इस सम्बन्ध में सबसे पहले यह सूत्र याद कर लेना चाहिए कि "तमाम प्रथाएं " मनुष्यों के लिये बनाई गयी है न कि मनुष्य इन प्रथाओं के लिये " जो व्यक्ति ऐसा समझते है या ऐसा कहते है कि ये तमाम त्योहार ओर उनकी पद्धतियॉ सदा से ऐसी ही चली आई है और सदा ऐसी ही रहनी चाहिए, वे विचारशील कदापि नहीं हो सकते, बुरा न माना जाये तो उनको 'कूप–मंडूक' भी कहा जा सकता है।" त्यौहार और सामाजिक उत्सव सदैव कुछ न कुछ बदलते हरते है और उनके करने की विधियॉ तो आज भी हर प्रदेश में कुछ–कुछ भिन्न है । हजार दो हजार वर्ष की बात तो छोड़ दीजिए , अब से पॉच–सात सौ वर्ष पहले के साहित्यिक और ऐसतिहासिक ग्रन्थों की भी भली प्रकार खोज करते है तो मालूम पड़ता हे कि उस समय मनाये जाने वाले अनेकों त्योहार आज सामाप्त हो गये है और कितने ही नये प्रचलित हो गये है। कितने ही त्योहार और उत्सव जो हमारी बाल्याबस्था में धूमधाम से मनाये जाते थे, आज बिल्कुल खत्म हो गये या कम पड़ गये हैं।

त्योहारों और सार्वजिनक उत्सवों की विवेचना में शोधकर्ता का लक्ष्य यही है कि अपने पूर्व पुरूषों के अनुकरणीय और उज्जवल सत्कार्यों की स्मृति को कायम रखते हुए , हम उनको इस प्रकार मनावे जिससे वे हमारे लिये ही नहीं , मनुष्यमात्र के लिये कल्याण कारी सिद्ध हों। एक आवश्यक बात यह भी है कि "त्यौहरों की संख्या बहुत बड़ी होना कोई प्रशंसा की बात नहीं है। 'आठ बार' और नौ त्योहार' वाली स्थिति का नतीजा यह होता कि त्यौहारों का महत्व और विशेषता अनेक अंगों में समाप्त हो जाती है और लोग उनको भार–रूप समझने लगते है।" 1

पर्वों और त्यौहारों की उपयोगिता :–

पर्व या त्यौहार किसी भी श्रेणी में क्यों न हों और उनका बाह्य रूप कैसा भी क्यों न हो, उनको स्थापित करने में हमारे पूर्वजों का मुख्य उद्देश्य यही था कि सर्वसाधारण में धार्मिकता , सामाजिकता और परोपकार आदि की भावनाएँ बढ़े तथा लोगों की प्रवृत्ति भौतिकता की तरफ से आध्यात्मिकता की ओर हो। भारतीय संस्कृति का एक मुख्य लक्षण अन्तर्मुखी होना है । बाहरी चीजें चाहें कितनी भी चमक–दमक वाली आकर्षक जान पड़ें पर उनके द्वारा आत्मा का विकास नहीं हो सकता , उल्टा वे मनुष्य के विचारों को परमार्थ से स्वार्थ की तरफ प्रेरित करने वाली ही होती है इसलिए भारतीय ऋषि–मुनियों ने लोगो को यथाशक्ति अधिक से अधिक समय धार्मिक कृत्यों ,धर्मोत्सवों ,धार्मिक विधि–विधानों में लगाने की व्यवस्था की है जिससे वे जीवन के वास्तविक लक्ष्य को यादरखते हुए सन्मार्ग पर स्थित रहें।

धर्म और आध्यात्मिकता के भावों की वृद्धि के साथ ही धार्मिक और सामाजिक त्यौहारों का एक दूसरा बड़ा उद्देश्य सामूहिकता की वृद्धि करना भी है । मानव जीवन की सफलता के लिये जहॉ व्यक्तिगत उन्नति और सत्प्रवृत्तियों को ग्रहण करने की आवश्यकता है, वहॉ समाज संगठन का सुदृढ़ बनाना और पारस्परिक साहयोग के द्वारा सामाजिक हित की बड़ी योजनाओं की पूर्ति करना भी अत्यावश्यक है। इसके लिये लोगों में पारसपरिक एकता–भाईचारे की मनोवृत्ति का उत्पन्न होना आवश्यक है । हमारे यहॉ होली ,दिवाली , दशहरा , ईद वैशाखी, क्रिसमस डे और स्नाना आदि के जो त्यौहार एवं पर्व नियत किये गये हैं उनका विशेष उद्देश्य यही हे क लोग परस्पर प्रेम पूर्वक मिलें और सामूहिकता की भावना को सुदृढ़ बनायें।

जो त्योहार या उत्सव किसी प्राचीन महापुरूष या अवतार की जयंती के रूप में मनाये जाते है उनका एक बहुत बड़ा लाभ यह होता है कि जनता को उनके द्वारा सच्चारित्रता , नैतिकता ,सेवा, सद्भावना आदि की शिक्षा मिलती है। इस दृष्टि से जब हम भारत वर्ष की अवस्था पर विचार करते है तो यहॉ भी महापुरूषों का कोई अभाव दिखाई नहीं पड़ता । वरन् सत्य बात तो यही है कि हमारे देश में जितने अधिक आदर्श चरित्र के व्यक्ति हुए है, उतने संसार के किसी भी बड़े से बड़े देश में मिल सकता असम्भव है । राम, कृष्ण ,बुद्ध आदि ईश्वरीय श्रेणी मे महामानवों की बात छोड़ दीजिए , हमारे जितने भी ऋषि–मुनि, नरेश संत आदि हुए वे सभी आदर्श जीवन बिताने वाले महापुरूष थे और उनमे से प्रत्येक का जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है। हिन्दुओं के अधिकांश त्योहारों का ऐसी ही किसी न किसी दैवी विभूति से सम्बन्ध है और इस कारण वे हमारे लिये हर प्रकार से शिक्षाप्रद और कल्याणकारी मार्ग के प्रदर्शक हैं पर खेद का

1. आचार्य श्रीराम शर्मा – पर्वो और त्यौहारों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पृ0 12

विषय है कि जिस प्रकार हिन्दू समाज के संगठन में अन्य अनेक प्रकार की विकृतियाँ उत्पन्न हो गयी है, उसी प्रकार इन पर्वों ओर त्यौहारों के स्वरूपमें भी बड़ा अन्तर पड़ गया है । लोग उनके मूल उद्देश्य और वास्तविक नियमों को भूल गये हैं और स्वार्थी अथवा अशिक्षित लोगों द्वारा बीच में पैदा की गई रूढ़ियों की लकीर को ही पीट रहे हैं । इतना ही नहीं कितने ही हीन चरित्र के अथवा दुर्व्यसनी लोगों ने तो इन त्योहारों में अनेकों हानिकारक और गन्दी बातें शामिल कर दी है और उनकी निगाह में वे ही सार रूप होती है । उदाहरण के लिये अनेक जुएबाज दिवाली की राह बड़े शौक से देखते हैं और उसके आने पर एक दिन, घण्टे– दो घण्टे के लिये नहीं ,जितना संभव होता है दस–दस , बीस–बीस दिन तक जुए का बाजार गर्म रखते है । इसी प्रकार होली के अवसर पर गुण्डा और बदमाश श्रेणी के लोग तरह–तरह के उपद्रव मचाने और भले आदमियों को तंग करने के मौके ढूँढते रहते हैं । वे जानबूझ कर दूसरों की वस्तुओं को नष्ट करते है और हर किसी को बेइज्जत करने की कोशिश करते है। जहॉ होली सामूहिकता की भावना को बढ़ाने वाला हमारा सबसे प्रमुख त्यौहार था , वहॉ ऐसे नीच लोग उसे वैमनस्य और झगड़े का कारण बना देते हैं।

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य का मत है कि " अब समय बदल रहा है और हिन्दू जाति सावधान होकर अपनी त्रटियों को दूर करके, अपने संगठन को सुदृढ़ बनाने की कोशिश कर रही है।" भारतीयों की इसी आस्था , भक्ति, विश्वास एवं निष्ठा के कारण ही भारतीय संस्कृति अनेकों बाह्य रूप परिवर्तनों के बीच बहती हुई भी अपनी अखण्डता –अजस्त्रता–निरन्तरता संरक्षित रखे रही साथ ही सदा समय–समय पर आवश्यक परिमार्जन होते रहने के कारण कोई कालिमा कलंक इसमें नहीं लगने पाये और न आज भी उसमें कोई धूमिलता का लवलेश वहाँ टिकने पाया है। भले ही यह कहा जा सकता है कि आज उसे लक्ष्य के अनुसार आचरण करने वालों की संख्या में भारी कमी आ गयी है , पर व्यक्तिगत रूप से ही नही । सामाजिक रूप से भी उसका स्वरूप अव्याहत और अक्षुण्ण रहा हे । इसीलिए इस संस्कृति और धर्म को सनातन कहा जाता हैं।

भारत की आध्यात्मिकता में ही भारतीय संस्कृति का निवास है , यही भारतीयता हे, इसीलिये ही भारतीय संस्कृति एकमात्र आध्यात्मिक, आति मानसिक – अति बौद्धिक संस्कृति है। जिस प्रकार परमात्मा सृष्टि के सभी प्राणियों के कल्याण का विधान करता हुआ सृष्टि रक्षा और संहार करता है– उसी भॉति भारतीय संस्कृति सदा सद्गुणों की सृष्टि , उनका संरक्षण एवं कल्याण , विरोधी दुष्ट तत्वों के विनाश की व्यवस्था करती है।वस्तुतः यह मानवीय,विश्वव्यापी एवं सर्वलोकहितकारिणी संस्कृति है ।

पर्वो की रचना इसी दृष्टि से हुई कि प्राचीनकाल की महान घटनाओं एवं महान प्रेरणाओं का प्रकाश जनमानस में भावनात्मक एवं सामूहिक वातावरण के साथ उत्पन्न किया जायें। इसके लिए कितने ही पर्व–त्यौहार प्रचलित है । उनमें से देश–काल –पात्र के अनुसार जब यहॉ ,जिन पर्वो को उपयुक्त माना जाए , उन्हीं के माध्यम से सामाजिक चेतना को परिष्कृत करते रहने के लिये पर्वायोजनों की व्यवस्था बनाई जा सकती है। आज की स्थिति में पर्व आयेजनों की संख्या सीमित ही रखी जानी चाहिए । बहुत जल्दी–जल्दी किये जाने वाले आयेजन भार लगते हे, उनमें सामूहिकता के संस्कारों में शिथिलता आने की

संभावनाएँ बढ़ जाती है। इसलिये प्रयास यह करना चाहिए कि लगभग दो माह के अन्तर से कोई न कोई सामूहिक पर्व आयोजन होता रहे। इसे सामाजिक चेतना की, सामूहिक उल्लास की तथा जीवन्तता की कसौटी मानकर चलना चाहिए। प्राणवान व्यक्तियों को प्रयास करना चाहिए कि अपने क्षेत्र में इस प्रकार के पर्व–आयोजन होते रहें।

पर्वों का चुनावः–

हिन्दू धर्म में प्रचलित पर्वों की संख्या बहुत अधिक है। सामूहिक पर्वायोजनों के लिए ऐसे ही पर्व चुने जाने चाहिए , जिनका महत्व भी बहुत माना जाता हो और उनमें प्रेरणाएँ भी सशक्त उभारी जा सकती है, ऐसे पर्वों को भी क्षेत्र–क्षेत्र के अन्तर से ही कहीं कम, कहीं अधिक माना जाता हो और उन्हें सामूहिक रूप से मनाया जाना सम्भव हो ,उन्हें मनाने का क्रम बना लिया जाना चाहिए। वर्ष में चार–छः बार हर्षोल्लास के वातावरण में सामूहिक पर्व मनाने की व्यवस्था बनायी जा सकें तो क्षेत्र में सामाजिक चेतना को जीवन्त और प्रगतिशील बनाये रखने में बड़ी सुविधा मिल सकती है। इस प्रकरण में कुछ सर्वमान्य महत्वपूर्ण पर्व मनाने की पद्वतियॉ आचार्य शर्मा द्वारा दी गयी हैं । अपनी परिस्थिति और क्षमता को देखते हुए यह निर्णय विवेकपूर्वक किया जा सकता है कि कौन–कौन से कितने पर्व सामूहिक रूप से मनाये जाएँ?

आचार्य शर्मा ने जिन पर्वों के विधान दिये है तथा पर्वों की स्वस्थ्य परम्परा के अन्तर्गत इनके आयोजनों को सामूहिक रूप से सम्पन्न करने के निर्देश दियें है, वे इस प्रकार है –

(1)	चैत्र नवरात्रि	चैत्र शुक्ल 1 से चैत्र शुक्ल 9 तक
(2)	रामनवमी	चैत्र शुक्ल नवमी
(3)	गायत्री जयन्ती –गंगा दशहरा	ज्यैष्ठ शुक्ल दशमी
(4)	गुरूपूर्णिमा	आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा
(5)	श्रावणी –रक्षाबंधन	श्रावण शुक्ल पूर्णिमा
(6)	कृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण पक्ष अष्टमी
(7)	सर्वपितृ अमावसया	आश्विन की अमावस्या
(8)	शारदीय नवरात्रि	आश्विन शुक्ल एक से नवमी तक
(9)	विजया दशमी – दशहरा	आश्विन शुक्ल दशमी
(10)	दीपावली	कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या
(11)	गीता जयन्ती	मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी
(12)	बसन्त पंचमी	माघ शुक्ल पंचमी
(13)	महाशिवरात्रि	फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी
(14)	होली	फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा ।

संस्कारों की पुण्य परम्पराः–

मानव कल्याण की महान परम्पराओं में जितने भी आयोजन एवं अनुष्ठान हैं उनमें सबसे महत्वपूर्ण परम्परा संस्कारों की है। संस्कारों एवं धर्मानुष्ठानों द्वारा व्यक्ति एवं परिवार को तथा पर्व–त्योहारों के

माध्यम से समाज को प्रशिक्षित किया जाता हैं । इन पुण्य परम्पराओं पर जितनी ही बारीकी से हम ध्यान देते हैं उतना ही अधिक उनका महत्व एवं उपयोग विदित होता है । कुसंस्कारी व्यक्ति प्रायः अधपगले जैसी स्थिति में रहते है। वे अपनी आदतों के कारण अपने साथी –सम्बन्धियों की नाक में दम किये रहते है। उनसे प्रायः सभी लोग खिन्न एवं असन्तुष्ट रहते है,महत्वपूर्ण कार्य कर सकने की प्रतिभा उनकी नष्ट हो जाती है।

व्यक्ति निर्माण का उपयुक्त माध्यम : पर्व

इस महत्वपूर्ण समस्या पर ऋषियों अत्यधिक गम्भीरता पूर्वक विचार किया था । वह उपाय भी खोज निकाला था जिसके आधार पर मानवीय मन को एक विशिष्ट वैज्ञानिक पद्वति के आधार पर निर्मल , सन्तुलित एवं सुसंस्कृत बनाया जा सके । इस प्रकिया का नाम है'संस्कार पद्धति '। समय–समय पर षोडश संस्कारों का प्रयोग–उपचार मनुष्य के ऊपर इस प्रकार किया जा सकता है कि उसके मनोविकारों का शमन हो और उन सत्प्रवृत्तियों का विकास हो जिनसे व्यक्तित्व प्रखर बनता है। आज इन संस्कारों का प्रचलन एक प्रकार से समाप्त ही हो गया है। हमें क्रमशः उनका विकास करना चाहिए । आचार्य शर्मा के मतानुसार सौलह के स्थान पर अभी दस संस्कारों का प्रचलन पर्याप्त होंगा ताकि इस महॅगाई के युग में लोग इस भार को वहन करने से कतराने न लगें । इन दिनों समय, धन उत्साह , पारस्परिक सहयोग , धर्मनिष्ठा आदि सभी बातों की कमी है, इसलिए देश काल पात्र के अनुसार व्यवस्था बनानें, बदलतें चलने की ऋषि परम्परा के अनुरूप यह उचित ही होगा कि अभी दस संस्कारों का प्रचलन ही किया जाय।

कुछ असामयिक संस्कार :–

आचार्य शर्मा के मतानुसार यों प्रथम संस्कार गर्भाधान है । प्राचीनकाल में रतिक्रिया वासना के लिये नहीं , सन्तानोत्पादन के लिये ही होती थी। वह अन्य पशु–पक्षियों की तरह एक बारगी में ही पूर्ण सफल हो जाती थी, पर अब तो जबकि सब कुछ उल्टा ही हो गया है और एकानत मिलन का प्रयोजन वासना की पूर्ति मात्र रह गया है तब गर्भाधान संस्कार के लिये स्थान ही कहॉ रहा? फिर उसका परिणाम गर्भस्थापन के रूप में हो जाए, यह भी निश्चित नहीं, ऐसी दशा में अब उस संस्कार को असामयिक ही कहा जा सकता है । नाक , कान , छेदने की प्रथा अब असामयिक हो गयी है । लड़कों के कान छेदना तो बहुत दिनों से बन्द हो गये हैं । लड़कियॉ भी अब इसे पसन्द नहीं करती । अतएव कर्ण –वेध संस्कार को सोलह संस्कारों में से हटा दिया है। इसी प्रकार अब छात्र गुरूकुलों में गुरूओं के साथ रहने की परिपाटी के अनुसार नहीं वरन् अपने घरों मे रहते हुए स्कूल, कॉलेजों में पढ़ते हैं , ऐसी दशा में गुरूकुल प्रवेश के समय तथा छोडते जो वेदारम्भ, यज्ञोपवीत और समापवर्तन–यह तीन संस्कार प्राचीन काल में तीनबार होते थे, अब लोग इकट्ठे ही तीनो करा लेते है । इस तरह गर्भाधान , सीमान्त , जातकर्म, कर्णवेध, वेदारम्भ , समापवर्तन यह छः संस्कार कम करके शेष दस संस्कारों का प्रचलन करने का व्यापक कार्यक्रम आचार्य श्री राम शर्मा द्वारा किया गया।

दो नये , किन्तु उपयोगी संस्कार – आचार्य श्रीराम शर्मा ने समय व परिस्थिति को देखते हुए दो संस्कार इस पद्धति में नये बढ़ाये गये है। (1) जन्म दिवसोत्सव (2) विवाह दिवसोत्सव । जिन्हें हर व्यक्ति हर साल मना सकता है।

(1) मनुष्य के लिए इस जन्म दिवसोत्सव संस्कार में सबसे अधिक महत्वपूर्ण उसका अपना व्यक्तित्व निर्माण ही है।

(2) इसी प्रकार विवाह दिवसोंत्सव भी महत्वपूर्ण है। विवाह से ही हर व्यक्ति अपने नये परिवार एवं समाज का निर्माण करता है । आत्मभाव को द्विगुणित करने की अद्भुद आध्यात्मिक क्रान्ति विवाह दिवस द्वारा ही मूर्तिमान होती है। यह दिन हर गृहस्थ के लिये बड़ा प्रेरणा प्रद है।

आलोच्य काव्यो में पर्वों और संस्कारों की सॉस्कृतिक पृष्ठभूमि अवलोकनीय है--

(1) श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' की काव्य कृति "पर्व–पीयूष " पर्वों और संस्कारों के स्वस्थ एवं प्रेरक स्वरूप की झॉकी प्रस्तुत करती है। ताकि हम संस्कारों को स्वस्थ परम्परा को पुनः प्रारम्भ कर सके ।

(1) गंगा दशहरा –गायत्री जयन्'ती –

गंगा गायत्री दोनों का , पतित पावनी नाम है। कोटि कोटि जन का दोनों को बारम्बार प्रणाम है । सगर सुतो के हित , भागीरथ गंगा भू पर लाये थे । जन हित मे सहयोगी बनने शिवजी आगे आये थे । जन पीड़ा हरने को हिम नग , गलता आठों याम हैं। कोटिकोटि जन का दोनों को .....

गंगादशमी को गायत्री मॉ का भी उर द्रवित हुआ,जन मानस अज्ञानग्रसित था, तब ज्ञानामृत स्रवित हुआ आज ज्ञान गंगा के भागीरथ गुरूवर श्री राम हैं । कोटिकोटि जन का .....

भागीरथ सा तप, गायत्री की करूणा को पिछलाया,और ज्ञान गंगा को धर–धर,जिनके तपने पहुॅचाया । मानवता को मुक्ति दिलाने , जिसका तप निष्काय है। कोटि कोटि जन का ....."पर्व पीयूष" पृष्ठ 13

(2) गुरू पूर्णिमा–प्रेरणा–

पूर्णिमा पर पूर्ण–गुरू की वंदना कर लीजिए । पूर्ण की गुरूपूर्णिमा पर धारण कर लीजिए ।।

पूर्ण के प्रतिनिधि गुरू हैं बताती गुरू पूर्णिमा। सृजन , पोषण और रक्षण में निरत तप–साधना । गुरू ब्रह्मा , विष्णु , शिव है अर्चना कर लीजिए ।। पूर्णिमा पर .....

शिष्य अनगढ़ को बनाती सुगढ़ , उनकी साधना । स्नेह का अमृत पिलाती , भव्य उनकी भावना । अमंगल के शत्रु –शिव की साधना कर लीजिए ।। पूर्णिमा पर ..... "पर्व–पीयूष " पृष्ठ 15

(3) श्रावणी संदेश :–

उमड़ सावन– घटाओं सा ,धरा पर अब बरस जाओ । मनुजता बहुत प्यासी है, सजल–श्रद्धा ! छलक जाओ मनुज –संवेदनाएँ सूख कर कुम्हला रहीं हैं अब । स्वार्थ के शूल बन दुष्वृत्यिॉ झुंझला रही है अब मनुज की मनोभूमि में , मनुज प्रति प्रेम पुलकाओ।। उमड़ सावन घटाओं सा ..... X X X

मनाएँ श्रावणी का पर्व, प्रायश्चित करें पापों का, करें सद्गुणें को धारण , तजे जीवन –प्रलापों का । करो परिमार्जन , मन से सुपथ–संकल्प करवाओ ।। उमड़ सावन धटाओं सा .....

गुँजाएँ "वयम् राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः" के स्वर , जगाएँ ब्रह्मवर्चस बल संवारें क्षात्र बल के शर करों में ,देव संस्कृति से कि रक्षा–सूत्र बंधवाओ । उमड़ सावन घटाओं सा ....."पर्व पीयूष" पृ0 16

(4) श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर कन्हाई की याद शीर्षक से कविता अवलोकनीय है –

कब आओगे , कृष्ण कन्हाई । फिर से श्याम घटा घिर आयी ।।

भोगवाद की सघन घटाएँ , भादों के घन –सी मंडराएँ । कैसी अधियारी, घिर आयी ।। कब आओगे .

क्रूर कंस फिर से बौराए , देव संस्कृति पर मँडराए । देखो दानवता इतराई ।। कब आओगे .....

पतनपाप– पूतना विषैली दुष्प्रवृत्तियाँ हैं जहरीली । मानवता सहमी, सकुचाई ।। कब आओगे X

है धृतराष्ट्र मोह के अंधे , दुर्योधन के धोखे–धंधे। दुःशासन की बेशरमाई।। कब आओगे .....

पान्चजन्य में फिर स्वर फूँको कहो पार्थ से अरे! न चूको । गीताकी फूँकों तरूणाई ।। कब आओगे ..

देवसंस्कृति बुला रही है, करो दिग्विजय , समय यही है । परविर्तन की वेला आई ।। कब आओगे .....

"पूर्व पीयूष" पृ0 19

V नवरात्रि –साधना :–

देवी की पूजा करते हैं ,दो–दो नवरात्रि मनाते हैं ।फिर भी सम्मान न नारी का करतेहैं उसे सताते हैं ।।

देवी की पूजा कहती है, हम नारी का सम्मान करें ।

वह जननी है, जग जननी है, दैवी–गुण का गुण गान करें।

जो देवी रहती जीवन भर , क्या उसका कर्ज चुकाते हैं। देवी की पूजा .....

'नवरात्रि–साधना ' संयम का ,सेवा का पाठ पढ़ाती है।'सादा जीवन–ऊँचे विचार' का सूत्र हमें समझाती है।

बोनेकी बेला में , कितने अध्यात्म–बीज बो पाते हैं । देवी की पूजा करते हैं .....X X X

माँ गायत्री की छवि का ही, नारी में दर्शन हो जब।

साधक का मातृशक्ति के प्रति, सार्थक अर्चन–वदंन हो तब ।

नारी शोषण, उत्पीड़न के, सब द्वार बन्द हो जाते हैं । देवी की पूजा .....

साधना, सामूहिक संगठन शक्ति की ऊर्जा है, दुष्टता दमन के लिए वही अरिदल–विनाशनी दुर्गा है

जब देव संगठित होते हैं , दिग्विजय तभी कर पाते है। देवी की पूजा करते .....

"पर्व–पीयूष" पृ0 21

विजयादशमी का संदेश :–

उठो आत्माराम । कि अब प्रत्यन्चा तानो ,

द्वेष दर्प का दशकघर बौखला उठा है।

मद मत्सर क मेघनाथ की इस माया से ,

आज लक्ष्य का लक्ष्मण भी तिलमिला उठा है।। X X X

तुम्हें चुनौती देने आयी विजयादशमी,

अपने द्वेष , दम्भ के दशकंघर को तो मारो ।

विजयोत्सव की ऐसी धूम मचाने वालो ,

अपने ही रागों को रावण से मत हारो।

व्यक्ति और समाज समी के अन्दर वाला ,

रावण पूरी ताकत से खिलखिला उठा है। उठो आत्माराम.....

दशों इन्द्रियों पर दंभी दशकंधर हावी ,
सदाचरण की सीता भ्रष्टाचार ग्रसित है।
विश्वासों का वानर–दल मद मेघनाथ की,
माया के चक्कर में ताड़ित और त्रसित है।
ऐ ! पैरूष के पवन–तनय अपना बल जानों ,
सदाचरण –सीता का उर छलछला है। उठो आत्माराम.... पर्व –पीयूष पृ0 23

(7) रामनवमी पर्व–

राम! आपका राष्ट्र ,आपको करता आज नमन ।
राष्ट्र–भूमि हो गई, 'राम की जन्मभूमि' शुभ दिन ।।
सत्य, शील , सौंदर्य, शौर्य के हो अतुलित भंडार ,
आन–वान, मर्यादाओं, आदशों के आगार।
राजाराम प्रजावत्सल थे, जन–जन जीवन प्राण ,
क्योंकि प्रजा के लिए , बड़े से बड़ा किया बलिदान।।
"रामराज्य" में ही पा सकता नेह न्याय जन–जन । राम! आपका राष्ट्र ..... X X X.
भरा राष्ट्र की रग–रग मे है, राम आपका रक्त।
शक्ति आयेध्या के योद्धा की बतलाएगा वक्त
'आत्मबोध' का छेड़ेगें जब जाम्बंत प्रसंग ,
कूद पड़ेंगे आशा लगाकर पूँठों में बजरंग ।।
असुर मिटेंगे, सुर संस्कृति की सीता हुई हरण । राम! आपका राष्ट्र .....
'रामराज्य' स्थापित होगा , होंगे पूरन काज दैहिक ,
दैविक भौतिक तापों से हो मुक्त समाज ।।
ऊँच–नीच का भेद न होगा, शबरी हो या निषाद,'
'हरि को भजे सो हरि को कई' , इसमें कौन विवाद ।।
राम! आपके साम्यवाद की 'साम्यवाद' जूठन ।। राम! आपका राष्ट्र .....पर्वपीयूष पृ0 25

(8) दीपावली पर्व–प्रकाशपर्व :–

जन प्रकाश का पुंज द्रवित हो, स्वयं प्रकाश लुटाना चाहे।
तब प्रकाश पाने से कोई वंचित कैसे रह पाए।।
तम भी लाभ उठायेगा अब इन प्रकाश के अनुदानों का ।
क्यों अभिशप्त रहेगा कोई जब मौसम हो वरदानों का
तम का दर्प प्रकाश न समझे , कौन उसे फिर धीर बंधाए।
तब प्रकाश पाने से, कोई वंचित कैसे रह जाए।। X X X

स्वयं प्रकाशित होंगे , तब ही तो प्रकाश हम दे पाएँगे ।

तिल तिलकर जलते रहकर ही तो, हम प्रकाश फैलाएँगे ।

प्राण–प्रदीप जलाएँ अपना ऑधी जिसको बुझा न पाए। तब प्रकाश पाने से .....

हम प्रकाश–पुत्र तब ही हैं, तम के घर भी हो दीवाली ,

जन मानस में शेष न रहने पाए , तम की छाया काली।

निश्चित है 'उज्जवल–भविष्य' तो, हम तो मात्र श्रेय पा जाएँ । तब प्रकाश पानी से ....पर्व पीयूष पृ026

(9) होली–नवयुग की :–

विषमता, भेदभावों की चलो! होली जलाएँ अब।

स्नेह , सौहार्द्र, समता की , नई फसलें उगाएँ अब।।

अनैतिक –आचरण से ,प्राण का प्रहलाद पीड़ित है, मनुज–दुष्वृत्तियों से ,मनुजता का मुख कलंकित है।।

मनुज का आचरण विद्रूपताओं से हुआ विकृत , विसंगतियों से भरा जीवन , हुई सद्भाव का विस्मृत ।।

मनुज को राक्षसों जैसा , न भदरंगा बनाएँ अब ।। विषमता , भेद भावों की .....X X X

बहुत कीचड़ उछाला जा चुका है ,मनुज संस्कृति पर,

लगाए जा चुके हैं दाग अगणित ,मनुज –आकृति पर,

काटकर रात दिन जंगल , अरे ! लकड़ी जलाओ मत ,

दुखी है बहुत भारत मॉ कालेजा अब दुखाओ मत ।।

प्रसारित यज्ञ–संस्कृति कर, दिव्य –होली मनाएँ अब। विषमता , भेद भावों की .....

जलाना है कषायों, कल्मषो को अब जला डालें, गलाना है अगर रंग , तो अंह को हम गला डालें ।।

मनुजता स्नेह–रस से तरबतर हो, स्नेह छलकाए, मनुज के हृदय में सद्भावना का रंग, रंग लाए।

विश्व –परिवार हो फिर से ,धरा पर 'स्वर्ग' लाएं अब। विषमता ,भेद भावों की .....

पर्वपीयूष पृ0 29.

(10) वसन्त पर्व –

। बलिदानों का पर्व बसंती , उन्हें बुलाता है।

जन हिताय तपने, गलने से जिनका नाता है।।

वसुधा बासंती बाने को , तब धारण करती , हृदय चीरकर धरती , जब जन हिताय फलती।

आम्र बौर में श्यामा–स्वर , स्वस्ति –वाचन गाता है। बलिदानों पर्व बसन्ती ..... X X X

नवयुग के बसंत ने तपकर रूप संवारा है, बासंती –वैभव जनमानस बीच उतारा है

कौन बसंती –मस्ताना , बलिपथ पर आता है। बलिदानों का पर्व बसन्ती .....

चलो! बसन्ती –बाने की गरिमा को गरमाएँ, युग–बसंत के अनुदानों को, भू पर बरसाएँ ।।

स्वर्ग उतरकर धरती पर ऐसे ही आता है। बलिदानों का पर्व बसंती ..... "पर्व पीयूष "पृ0 31

|| अनुपम वसन्त :–

मनुज–मन वसन्ती हुआ जा रहा है, युगों बाद ऐसा वसन्त आ रहा है।।

गिरे जा रहे हैं गलित –पात मन के, सुसंकल्प फलने लगे हर सुमन के ।

मुखर हो रही मानवीय –भावनाएँ , बसन्त भावनाओं का मुस्का रहा है।। मनुज–मन वसन्ती .....

मनुज में मनुज –जन्म ममता जगी है, सभी के लिए स्नेह क्षमता जगी है।

मनुज के लिए स्नेह , समता संजोकर , मनुज नेह–रस धार बरता रहा है।। मनुज–न बसन्ती .....

विचारों में कुछ कान्ति सी हो गई है , दुराग्रह में ग्रह–शान्ति सी हो गई है।

झरे जा रहे पात–दुष्वृत्तियों के, वसन्त भव्यताओं का लहरा रहा है। मनुज–मन बसन्ती .....

मनुज आचरण अब महकने लगे हैं , प्रभाती स्वर अब चहकने लगे हैं।

ललकते हुए स्वर्ग का सुख –मनुज की धरा पर उंमगित चला आ रहा है।। मनुज–मन बसन्ती .....

||| नमन करें:–

हम बहुमुखी बसन्त को आओ! नमन करें ! सर्वार्थ सुखी –सन्त को आओ! नमन करें ।।

जिसने समग्र –वैभव हम पर लुटा दिया, जिसने हमे बनाने खुद का मिटा दिया ।

सर्वार्थ, जिसने स्वार्थ से ऊँचा उठा, दिया, जिसने हमें अभाव के भय से छुड़ा दिया।।

अपने अभाव –अन्त को आओ! नमन करें। हम बहुमुखी बसन्त को .....X X X

आया बसन्त हमको हंसाने के वास्ते , दुख और दर्द सबके मिटाने के वास्ते।।

सबके ही सुखद–स्वप्न सजानेके वास्ते, संसार को सरसब्ज बनाने के वास्ते।।

जनहित –प्रवर्त–पथ को हम भी चयन करें। हम वहुमुखी बसन्त को.....

IV लाया है बसन्त संदेशा , जीवनदान करो । बलिदानी वीरों–सी तन–मन में मुस्कान भरो।।

जनहित में बलिदान चढ़ाने, बासन्ती उल्लास उभारो।

आओ! लोकमंगल करने को हंसते हंसते प्राण विसारो।

बलिदानों का पर्व मानाने ,प्राणों में उल्लास जगाकर ,

पीड़ा मानवता की हरने को प्रस्थान करो । लाया है वसन्त सदेंशा .....

11 'महाशिवरात्रि पर्व पर शिवसाधना–

कल्याणदायिनी है, 'शिव' की उपासना। ' शिव' के बिना अपूर्ण है, जीवन की साधना।।

गिरिराज हिमालय की सुता ने , था तप किया, मन कर्म वचन हर तरह , शिव का ही जप किया।

शिव तब प्रसन्न हो सके, जपतप प्रबल हुआ । ' संयम ' से ' साधना का प्रणय , फिर सफल हुआ।।

शिवरात्रिको द्रवित हुई , संयम की वन्दना ।। कल्याण दायिनी है.....

शिव–साधना का अर्थ यही है, अशिव मिटे , भोगों का , वासनाओं का जंजाल सब कटें ।

क्षमता जगे विषपान की , देवत्व बचाने । बन जाए महाकल जो , असुरत्व मिटाने।।

कर दे सहज' द्रवित जिसे , दुखियों की वेदना।। कल्याण दायिनी है .....

शिव को मनाएँ, राष्ट्र का कल्याण हो सके, हो शक्ति की उपासना, तो त्राण हो सके।

आओ। उपासना करें , कि महाकाल की, गतिमोड़ दें, आओ चलो! कलि के कुचाल की।

'शिव–साधना' करेगी , नए युग की सर्जना। कल्याण दायिनी है ..... ' पर्व पीयूष ' पृ0 33

जगो! ब्रह्मवर्चस राष्ट्र के गरिमा पहचानो। गरिमामय मस्तिष्क तुम्हीं हो, यह रहस्य जानो।।
यदि शरीरके अन्य अंग हों शिथिल , न उतना भय । किन्तु तुम्हारे ही हाथों में, इसका अभ्योदय।।
क्योकि तुम्हीं पूरे समाज को, सभ्य बनाते हो, संस्कारित कर ज्ञान अग्नि से भव्य बनाते हो।।
तुममे विकृति आ जाए ! यह स्थिति अनुमानो । गरिमामय मस्तिष्क तुम्हीं हो .....
विकृत हो मस्तिष्क अगर तो जीना दूभर है, इतना ही क्यों , शारीरिक अनिष्ट का भी डर है।।
तुम से ही तो पूरा राष्ट्र प्रभावित होता है, मनचाहा निर्माण , सहज संभावित होता है।
तुम्हीं राष्ट्र निर्माता हो , यह तथ्य सत्य मानो।। गरिमामय मस्तिष्क तुम्हीं हो .....

"पर्व पीयूष" पृ0 35

गंगा दशहरा –गंगावतरण :–

द्रवित जब पीर से उर हो गया, पर–पीर पहिचानी ।
तपे सर्वार्थ भागीरथ , हिमालय हो गया पानी ।।
सगर–सुत शाप से हों मुक्त ,सद्जीवन लगे जीने । जहर –सी हो गई थी जिन्दगी, अमृत लगे पीने ।।
तभी भागीरथी पुरूषार्थ की गरिमा गई जानी । तपे सर्वार्थ भागीरथ .....
पुनः युग हो गया शापित बिना श्रम और साहस के , मनोबल गिर गया उसका , बिना संकल्प ढाढस के
चलो! सद्ज्ञान की, पुरूषार्थ की गंगा हमें लानी । तपे सर्वार्थ भागीरथ .....

बसंतागमन :–

देखो तो! बसंत आया है निखर–संवर कर वन –उपवन में।
बासंती –सुषमा विखेर दी , प्रकृति नटी ने धरा गगन में ।। X X X
आया है है बसंत सज–धजकर रे मानव। बाहों में भरले!
अपने तन , मन को जीवन को रे मानव। बासंती कर ले ।
निर्मल सरल स्नेह –रस निर्झर मानव के प्राणों से फूटें ,
नवोत्साह उल्लसित हो उठे, नवल जाग्रति का जन–जन में
बलिदानी –वसंत आया है, बलिदानों की होड़ लगा दो,
प्रतिस्पर्धा की नवयुग के संग बढ़ने की दौड़ लगा दो।
शिव–संकल्पों के सुमनों से महक उठे नवयुग की बगिया,
सत्यं, शिवं ,सुन्दर की निधि को संवार दो नये–सृजन में ।
देखों तो। बसंत आया है .....युग निर्माण योजना (पा0) 20 फर0 1973

नव रात्रि–आराधना :–

साधना के सृजन स्वर सजाये चलो ।
इस धरा पर अनैतिक बढ़े आचरण , कर रही है मनुजता, दनुजता –बरण ।।
शिष्टता और शालीनता का मरण , राम की विजय के आ गये आज क्षण।।
शक्ति के शील की राम अवतार हित । वन्दना के विमल गीत गाये चलो।। साधना के सृजन स्वर .....
इन दशों इन्द्रियों के है दशरथ हमीं , आचरण–यज्ञ करने में समरथ हमीं
प्राण देकर निभाते बचन–व्रत हमीं , लोकमंगल को देते रहे सुत हमीं।।
सो रही है हृदय में जो सुरवृत्तियां, सुप्त सुर–वृत्तियों को जगाते चलो।। साधना के सृजन –स्वर.....
हम करें आज नवरात्र –आराधना , शक्ति का स्त्रोत , संयम मयीसाधना ।।
है हमें शक्ति बिखरी हई बॉधना, आत्म बलका हमें भेद है जानना ।।
हो रहा विश्व सारा भ्रमित मोह में , सीख यज्ञाचरण की सिखाते चलो ।।, साधना के सृजन–स्वर

संस्कार परम्परा :–

संस्कार की परम्परा , जिस दिन से उठ गई। रत्नों की यह खदान, उसी दिन से लुट गयी ।।

होते हैं जन्म से तो सभी शूद्र –वृत्ति के । संस्कार बनातें है उन्हें सद्प्रवृत्ति के

संस्कार की तप–भट्टियों में में जो भी भी तपे थे । संस्कार दिव्य उनमें निरन्तर ही पके थे।

गहरी परत कषाय–कल्मषों की कट गई ।। संस्कार की वही परम्परा तो उठ गई ।।

थे सोलह संस्कार, शुभ निर्माण के लिए । वे सीढ़ियॉ थी व्यक्ति के उत्थान के लिए ।

सोई जो शक्तियॉ थीं , जगाते थे संस्कार । उत्कृष्ठ प्रेरणायें उठाते थे संस्कार।

संस्कार घट गए तो प्रेरणा भी घट गई । संस्कार की परम्परा जिस दिन से.....

गुरूदेव ने संस्कार की गरिमा को उछाला । गिरते हुए व्यक्तियों के स्तर को संभाला ।

तप–त्याग की भट्टी बनाया शन्तिकुज को । भाया नहीं अज्ञान –तम, प्रकाश पुंज को।।

यह भूमि संस्कार जगाने से जुटाई । जिन संस्कारों की परम्परा ही उठ गई।।

"पर्वपीयूष" 'पृ0 45

संस्कार सामर्थ्य :–

संस्कारित करते कुंभकार , माटी का मूल्य बढ़ाता है।

मानव को 'देव' बनाता जो वह 'संस्कार' कहलाता है। X X X

मानव भी आता है, पिछले जन्मों के कुसंस्कार लिऐ ,

उनको संस्कारित करने, ऋषियों ने सोलह संस्कार दिये

जीवन की लम्बी यात्रा में आते हैं नाजुक मोड़ कई ,

संस्कार भाव संवेदन को जागृत कर देता दिशा नई

श्रद्धा–प्रज्ञा–निष्ठा, से, संवेदन को जोड़ा जाता है। मानव को देव बनाता जो .....

परिवार उन्हीं संस्कारों से, अब वंचित होते जोते हैं,

पाश्चात्य संस्कारों से हम, अब पीड़ित होते जाते हैं।

है सिसक रही संस्कारों की , संस्कृति ऑखों पानी है।

डैडी मम्मी टाटा बाय बाय घर घर की पतन कहानी है।

'हैपी बर्थ डे टू यू' के दिन जलता दीपक बुझ जाता है। मानव को 'देव– बनाता जो ..

पाश्चात्य संस्कृति फैल रही , हा! बनकर आज महामारी

"संस्कार महोत्सव" द्वारा है, अब उपचारों की तैयारी

संस्कार कराने गॉव–गॉव व नगर–नगर जाना होगा,

दम तोड़ संस्कारों की संस्कृति में दम लाना होगा ।

वह कायर है दुर्दिन में भी जो घर बैठा रह जाता है । मानव को 'देव' बनाता जो .....

विद्यारम्भ संस्कार :–शिक्षा और विद्या

हो शरीर कितना भी सुन्दर प्राण बिना निष्प्राण।

शिक्षा तो है वाह्य कलेकर , विद्या शाश्वत ज्ञान ।।

शिक्षा देती वाह्य जगत की जानकारियाँ मात्र ,

जिससे बनता व्यक्ति वाह्य जीवन जीने का पात्र।

विद्या आत्मचेतना छूकर , करती आत्म विकास ,

मानवीय क्षमताएँ विकसा जगा आत्म विश्वास।

'आध्यात्मिक सामर्थ्यवान ' हो जाता विद्यावान । शिक्षा तो है ~~वाह्य~~ वाह्य कलेवर .....

शिक्षा रावण चारवाक हिटलर को देती जन्म ,

रोंद दिया करते वे निर्दय मानवता का मर्म

विद्या से ऋषित्व जगता है, गुरूता जाती जाग ,

करती है उज्जवल ज्ञानोदय तमसा जाती भाग ।

करती है चाणक्य– चन्द्रगुप्त, समर्थ–शिवा निर्माण। शिक्ष तो है वाह्य कलेकर .....

यज्ञोपवीत संस्कार–महिमा :–

दैवी गुणों की प्रेरणा ,यज्ञोपवीतहै, देवत्व की अवतारणा यज्ञोपवीत है।

धागे नहीं है सूत के केन्द्रित हैं शक्तियाँ , ब्रहमा , विष्णु , महेश की हे तीन ग्रंथियाँ

त्रिपदा का तीन लड़ों में दर्शन पुनीत है। दैवी गुणों की प्रेरणा.....

तीन लड़ों में नौ गुणों के रत्न जड़े हैं धारण जिन्होंने कर लिया' नर–रत्न बने हैं ।

जीवन में धर्म–धारणा यज्ञोपवीत है। दैवी गुणों की प्रेरणा.....

ब्रह्मचर्य सत्य अहिसा अस्तेय अपरिग्रह, तप त्याग सादगी भरे जीवन का आग्रह ।

दिव्य ब्राह्मणत्व की साधना यज्ञोपवीत है। दैवी गुणें की प्रेरणा..... X X X

कंधों पर है कर्त्तव्य –बोध का प्रतीक यह , संस्कृति समाज राष्ट्र धर्म है पुनीत यह ।

व्रत से स्वयं को बॉधना यज्ञोपवीत है । दैवी गुणोंकी प्रेरणा.....

शिखा स्थापन संस्कार : शिखा –गरिमा

मनुजतन देव मन्दिर है, शिखा उसकी पताका है

मनुजतन देव दुर्लभ है , दिव्यदर्शन बताता है ।।

मनुज सब प्राणियों में श्रेष्ठ होता , श्रेष्ठ चिन्तन से ,श्रेष्ठ चिन्तन कराता श्रेष्ठ कार्यों को , मनुज तन से।

मनुज को श्रेष्ठ चिंतन ही , सदा ऊँचा उठाता है । मनुज तन देव मन्दिर ..... X X X

शक्तियाँ खीच लेने को, शिखा ही उत्तरी ध्रुव है, तभी तो देव संस्कृति में , शिखास्थापना शुभ है ।

शिखा में ज्ञान–गंगा घर मनुज ही शिव कहाता है। मनुजतन देव मन्दिर ..... X X X

कटाये शीश तो अपने, न कटने दी शिखा हमने । मगर अब घेर रखा है हमें अज्ञान के तम ने

न जाने क्यों मनुज , देवत्व की गरिमा घटाता है। मनुजतन देव मन्दिर .....

हुआ विकृत मनुज चिन्तन , पतन से अब बचाना है, बता गरिमा शिखा की शिखर सा ऊँचा उठाना है

शिखा स्थापना अभियान प्रज्ञा की जगाता है। मनुजतन देव मन्दिर है .....

(2)श्रीशचीन्द्र भटनागर द्वारा किये गये पर्वो एवं संस्कारों की व्याख्याओं के पद्यानुवाद अबलोकनीय है ।

विवाहदिवसोत्सव :–

आज जरा मुड़कर ये देखें पिछली पर्वत–खाइयाँ, वे समतल मैदान और वे पथरीली ऊँचाइयाँ, चुभे कहाँ पर शूल पाँव में, कहाँ फूल की सेज थी, कहाँ मिलीं अनकूल बयारें, कहाँ आँधियाँ तेज थी , कहाँ शान्ति पायी ओर कब–कब सही वेदना दाह की ।यही कसौटी है इन दोनों के जीवन–निर्वाह की ।।

।। जन्मदिवसोत्सव :–

महामानवों की जयंतियों का यह ही उद्देश्य है, उनके हरेक संस्मरण से मिलता प्रेरक संदेश है , आज पुनः अवलोकन कर लें हम हर बीते वर्ष का,पुनः अध्ययन करे विगत प्रत्येक बिजय–संघर्ष का, यह पिछले अध्यायों के पुनरीक्षण का त्यौहार है। जन्म दिवस मानव के आत्म –निरिक्षण का त्यौहार है।।

।।। विवाह संस्कार :–

जीवन तुम दोनों के मिलकर सुख–शीलतता फैलाएँ, गंगा–यमुना –सी मिल जाएँ दोनों पावन धाराएँ । दुश्चिन्तन की दुष्ट आँधियाँ कभी न तुमको भरमाएँ, नष्ट नहीं हों क्षुद्र सुखों में कभी तुम्हारी क्षमताएँ, दायित्वों का वहन करो यूँ, जीवन स्वयं तपोवन हो, संयम–सेवा–सहिष्णुता से पावन हर जीवन–क्षण हो , जीवन से हर दिवस तुम्हारे , सभी प्रेरणा पाएँ जीवन तुम दोनों के मिलकर सुख –शीतलता फैलाएँ ।।

यह मनभावन होली:–

आँगन–आँगन चौक पुरे हैं, द्वार–द्वार रंगोली, सारे भेद मिटाने आई यह मनभावन होली।

जाति–पाँति का भेद और हर भेद बड़े–छोटे का , अंतर धनी और निर्धन का, और खरे–खोटे का, बाहर से भीतर तक सबकों केवल एक बनाने , प्यार भरें रगों में सबका अंग–अंग नहलाने,

हृदय–हृदय पर घृणा–द्वेष की लगी कालिमा धों ली। सारे भेट मिटाने आई.....

ऐसा करे जतन मिल–जुलकर, ऐसा विश्व बनाएँ, आतंकी पंजे न किसी को फिर से कभी डराएँ,

रहे न नफरत कहीं , सभी में पनपे भाईचारा, मालिक के बंदे न करें फिर मालिक का बँटवारा,

बल से बात नहीं मनवाए कहीं राइफल–गोली। सारे भेद मिटाने आई.....

गीता और कुरान, ग्रंथसाहब सब पढ़ें–पढाएँ, वेदमंत्र, आयतें बाइबिल की सब मिल दुहराएँ,

सबके लिए मने शुभ क्रिसमस, शब–बारात, दीवाली, गुझिया, खील, सिवइयाँ सबके मन को दें खुशहाली,

रहें ईद, होली, बैसाखी हिल –मिल कर हम जोली। सारे भेद मिटाने आई यह मनभावन होली।

अखण्ड ज्योति, मार्च 2005 में प्रकाशित

(3) श्री शिवशंकर मिश्र द्वारा रचित पर्वो के गीत अवलोकनीय है–

श्रावणी–रक्षाबन्धन पर्व–

पर्व रक्षाबन्धन का आज– मनाओ सब मिल सहित समाज ।। XXX

बहिन मन ही मन आज प्रसन्न– हाथ में है पूजा का थाल

प्रतीक्षा करती है सस्नेह– मिलेगा कब भाई का भाल ।

ध्यान है लगा ,द्वार की ओर प्रकट करने में आती लाज ।। XXX

कौन कहता नारी को निबल– प्रताड़ित , शोषित या निरूपाय।

शान्त रहने दो दे सम्मान– न यह हो वह दुर्गा बन जाय ।

जहॉ नारी की पूजा वहीं – सिद्धि , श्री, सुषमा का साम्राज्य।।

(4) श्री मती माया वर्मा द्वारा रचित पर्वो के गीत अवलोकनीय है –

⊢ सामाजिक व्यथा –:

त्यौहारों की खुशी न जाने कौन चुरा कर ले गया, बदले में चिन्ताएँ , कुण्ठाएँ , विपदाएँ दे गया ;

सावन अब आँखों में , होली जले हृदय में नित्य ही ।

जन–जन का सन्ताप निरखकर स्वयं रो उठा सत्य ही ।

तरस रहे गोपाल आज के , माता तक के दूध को,

मानव की या मानवता की , बोलो किसकी हार है।

भूल गये सब आज समझना दर्द, दूसरे प्राण का, इसीलिये सब ओर दिखाई देता दुख विस्तार है।।

।। दीवाली का महत्व :–

दीप जल जाऐ हृदय का, तो दिवाली है। संतुलन बन जाये व्यय का , तो दिवाली है।।

राम बन हम दर्प कुचलें , भ्रांत रावण का। मेट दे दुष्वृत्ति दुर्गुण रूप तन –मन।

शीष झुक जाये अनय का, तो दिवाली है। दीप जल जाये XXX

सूर्य का यशगान मानव मात्र द्वारा हो । आज नवयुग का नया नारा हमारा हो।।

अंत अधियारे समय का, तो दिवाली है। दीप जल जाये .....

।।। बनो वसन्ती ऋतु –

पतझारों से बोलो कोई क्या मॉगेगा । बनो बसन्ती ऋतु जग को जीवनदे जाओ ।।

देने में ही सार सत्व है इस जीवन का, "कोई पाये " यह सर्वोत्तम है सुख मन का ।।

ले लो यह सुख–धन , सागर , मधुबन बन जाओ । बनो वसन्ती XXX

शब्द पुष्प सम हो, सुगन्ध वाणी से फूटे । सबको बॉटो स्नेह न कोई पीछे छूटे ।।

कथा यीशु, नानक, गौतम की तुम दुहराओ । बनो बसन्ती .....

धरती प्यासी हुई आज मीठे बयनों की । जाने कहॉ खो गई है भाषा नयनों की।।

प्रिय! न करो अब देर निकल कर घर से आओ। बनो बसन्ती .....

मानो धर्म को, पर आदमीयत को न झूठलाओं ।

भले मत अर्घ्य दो लेकिन तृषित तक नीर पहुँचाओं।।

लुटाओं दीनदुखियों पर सहज आत्मीयता,ममता।।

यही है धर्म –सच्ची आस्था परमार्थ में लाओं।। – माया वर्मा

प्रज्ञा अभियान, 1 दिस0 2004 पृ0– 4

जन्म दिवस -व्रत–धारणा–

जन्म दिवस व्रत–धारण का त्यौहार है । जीवन ईश्वर का अनुपम उपहार है।।

कितने वर्ष व्यतीत हुए सोचो जरा । रवि के किने चक्कर काट चुकी धरा

सोचे क्या हम भी ऐसे गतिमान है? करते क्या, निज जीवन का उत्थान

कियाशील की जय –निष्किय की हार है। जन्म दिवस व्रत–धारण का त्यौहार है।।

(5) श्री मती विद्यावती मिश्र द्वारा रचित पर्वो के गीत अवलोकनीय है।

होली पर्व :– "होली के साथ–साथ जले सभी कालिमा"

अब उस प्रकाश को रोक कौन पायेगा!

निशि–तम को चीर आज सत्य सूर्य आयेगा, पथ पर का भेद–भाव सारा मिट जायेगा।

मानव सब एक, यही राग विश्व गायेगा , पूरव से उत्तर रही प्रेम भरी लालिमा ।

होली के साथ–साथ जले सभी कालिमा।। X X X

मेरे लिये दुखियों की सेवा ही धर्म है, दूर मैं पराई पीर करूँ यही कर्म है,

लक्ष्य के समीप पहुँचा दे वही मर्म है, दीनों की सेवा में बोलो क्या शर्म है,

मेरा मन जगती के कण–कण में है रमा। होली के साथ–साथ जले समी कालिमा।।"

(6) श्री बलराम सिंह परिहार द्वारा रचित संस्कारों एवं पर्वो के गीत अवलोकनीय हैं–

संस्कार परिपाटी –

फिर से संस्कार परिपाटी, घर–घर जाए मनाई । गुरू ग्राम की पावन माटी , यही संदेशा लाई ।।

यह वह परम्परा है जिसने, घर–घर दिये जलाए। सोलह संस्कारों के द्वारा वीर रत्न उपजाए

ध्रुव प्रहलाद ,राम लक्ष्मण सब, इसी ,ज्योति के जाए।

भरत, शत्रुघन और अभिमन्यु इसी ज्योति से पाये

नव निहाल बच्चों की फिर से , इस विधि करो गढ़ाई ।। फिर से संस्कारपरिपाटी.....

मुण्डन , विद्यारम्भ , अन्नप्राशन जो नहीं कराते । उनके बालक माटी के, माधव बनकर रह जाते ।

क्यों विवाह में आखिर जुड़ते इतने रिश्ते–नाते । यह संस्कार भॉवरों तक का भेद सभी बतलाते ।।

उनको समझा नही गृहस्थी , नाहक मूढ़ बसाई ।। फिर से संस्कारपरिपाटी.....

यह मनुष्य तन है अमूल्य , मत समझो इसको माटी। जिसने समझा नहीं उसे तो निपट मौत की घाटी ।

ज्ञानी सोच–समझकर काटै, मूरख रो –रो काटी । संस्कार हँस–हँस कर जीवन जीने की परिपाटी।।

परम्परा यह अति महान है जाए नहीं भुलाई ।। फिर से संस्कारपरिपाटी.....

।। गुरू पूर्णिमा :–

क्रान्ति का अध्याय लिखकर दे गए है आप जो। हम कदम उससे कभी पीछे हटाएंगे नहीं ।।

याद तो हरदम सताएगी गुरूजी आपकी । कायरों की भॉति हम ऑसू बहाएँगे नही ।। X X X

इंद्र सा ऐश्वर्य पाकर भी सदा वामन रहे,आह तक निकली न मुख से घात है कितने सहे ।

घूँट जीवन भर प्रभो! अपमान का तुमने पिया,भूल पाते है न कितना दर्द दनुजों ने दिया।

जानते है देव! हम उनको बहुत नजदीक से । किन्तु हम उनसे कभी बदला चुकाएगे नहीं ।। कान्ति का

।।। करो शक्ति का आह्वान :–

शक्ति की महिमा अतुल, अनंत, शक्ति से होती विजय प्रसूत ।

शक्ति की सुन प्रचण्ड हुँकार, भागते बनते भय के भूत ।। X X X

शक्ति ही है गौरव का चिन्ह , शक्ति का रूप स्वयं भगवान

शक्ति की महिमा बड़ी विशाल, इसलिये करों शक्ति आहवान ।

(7) डा0 हर गोविन्द सिंह द्वारा रचित पर्वो एवं संस्कारों के गीत अवलोकनीय है :–

दुर्गा का आह्वान :–

आओ हम सब जगदम्बा का मिल–जुल कर आह्वान करें,

संघ शक्ति की देवी दुर्गा , हर संकट से त्राण करें। X X X

सदाचार या हो की त्याग तप है विखरे वेकार सभी , राग न कोई दे सकते है , टूटे विखरे तार कभी

शक्ति और साहस दोनों का बाहन सिंह समान करें। आओं हम सब जगदम्बा का.....XXX

इसी शक्ति को पूज राम ने रण में रावण मारा था,

इसी शक्ति से कृष्णचन्द्र ने गिरि गोवर्धन धारा था,

क्या गाँधी , क्या बुद्ध सभी तो इसका ही गुणगान करें ।

संघ शक्ति की देवी दुर्गा हर संकट में त्राण करें। आओ हम सब जगदम्बा का

।। विवाह संस्कार :–

परम पवित्र हे विवाह केरौ संस्कार , दिपत मनुष्यता की शोभा, आन'–बान सौ,

पुज रहो ब्याह –सिद्ध शिव शक्ति रूप नित्य, जिन्दगी की तंत्रिका पै वेद की ऋचान–सौ,

हाय, कोई सुभ काज कितनों नसानौ आज? मोल–माव , दौंदरा नै करो बेतलान–सौ,

शास्त्र नें बताए हते जहॉपूरे आठ भेद , उतै एक राकछसी रूप भौ प्रधान सौ।।

(8) डा0 रामस्वरूप खरे द्वारा रचित पर्वो के गीत अवलोकनीय हैं–

गणतंत्र दिवस –

यह गणतंत्र दिवस अति पावन , राष्ट्रीय त्योहार है।

वीरों ने बलिदान किये जो, उनकी अमर कहानी है,

भारत की जय कहने वालों की , यह अमर निशानी है।।

आजादी का पर्व सुहाना यह स्वर्णिम संस्कार है। यह गणतंत्र दिवस.....XXX

करें न कोई ऐसाकाम, जिससे हों जग में बदनाम।

शान्ति, प्रेम , समता का धाम, शरणागत को दे विश्राम ।।

सत्य–अहिंसा का संबल ले , करना जग उजियार है। यह गणतंत्र दिवस.....

श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सामित्र' द्वारा रचित दीप पर्व की कविता अवलोकनीय हैं–

दीपकों का पर्व :–

उस दिन सूरज बोला– लो अब मैं जाता हूँ चलते चलते थक गया तनिक सुस्ताता हूँ।।

लो चॉद सम्हालो राजपाट इस धरती का । अब तुम पर है दायित्व तिमिर–भय जगती का ।। XXX

रवि शशि का सुन संवाद मृत्तिका कण बोले, धरती से शीश निकाल प्राण पण से बोले ।
तुम दोनों ही विश्राम करो हम जागेंगे । हम नहीं ज्योति कण आज किसी से मॉगेगे।
हमने प्रण ठाना है तम तोम निगलने का, हम लेते है दायित्व अमा में जलने का ।।
वक्षस्थल चीरेंगे हम रजनी काली का , जग पर्व मनायेगा युग दीवाली का
हम नई ज्योति भर भू –अम्बर में जागेंगे । तब अमा क्षमा मॉगेगी नर वर मॉगेंगे ।। XXX
हो गया पराजित तिमिर भोर तक जले दीप, तम झंझाओ के बीच अकम्पित जले दीप ।।
तब से दीपों का विजयपर्व ये आता है । तम से लड़ने वाला ही पूजा जाता है।।

(9) श्री झलकन लाल वर्मा 'छैल' द्वारा रचित एवं युग निर्माण योजना (पाक्षिक) में प्रकाशित पर्वों के गीत अवलोकनीय है–

। विजयादशमी का पर्व–

सिंहनाद, कर शौर्य दमकता रहे भाल पर जय का टीका,
इसीलिए तो पर्व मनाया जाता, सदा , विजयदशमी का।
डूब न जायें पौरूष के आदर्श निरादर की खाई में,
जाग्रत रहे गर्व भंजन करने की क्षमता तरूणाई में,
प्राप्त न हो पाये नृशंसता को अवसर ताण्डव करने का,
छोड़ न दे जीवन–धीरज की बॉह नाम सुनकर मरने का,
पच जाये अत्यन्त सरलता से अनुभूति भयंकरता की,
और अभय को जकड़ न ले बन्धन में विष बल्लरी व्यथा की ,
अवरोधों की शिला न रोके, पावन संकल्पों की गति को –
मोड़ सके पौरूष दृढ़ता के साथ हठीली क्रूर नियति को।
असफलता के तत्व ,काल की डाढ़ों में विलीन हो जाये–
सुमन लुटाता रहे अनवरत सिरपर वरदहस्त जय श्री का।इसीलिए तो पर्व मनाया जाता ...X X X
संस्कृति के प्रहरी राघव के ओजस्वी संस्मरण न भूलें,
जो असुरों के बीच जमाये गये अंगदी चरण न भूलें,
वीरों का यह पर्व–इसे तुम थोथी परिपाटी मत समझो,
जो जल में घुलकर बह जाये–ऐसी माटी इसे न समझो
भारत के प्रत्येक पर्व में प्राणवान जीवन होते हैं,
शस्त्र ,शास्त्र , वैभव , विराग , इन सबके भी दर्शन होते है,
केवल दर्शन मात्र हमारे लिए नहीं उजियाला देगा,
सजग रहेंगे तो भविष्य में यह विशाल बट वृक्ष बनेगा,
जब भी कोई शत्रु राष्ट्र के ऊपर अपनी ऑख उठावे–
निःसन्देह कूद कर रण में मर देना खप्पर चण्डी का। इसीलिए तो पर्व मनाया जाता .....

।। रामनवमी का सन्देश :–

मर्यादा के तरू को सींचा तुमने सतत् शील के जल से,
आदर्शों को किया अलंकृत तुमने त्याग स्नेह के बल से,
मानव के दुर्बल भविष्य को अजर अमर काया दी तुमने,
संस्कृति की पीड़ित आत्मा के लिए सुखद छाया दी तुमने,
किया नहीं वर्चस्व कभी स्वीकार स्वर्ण के सिंहासन का ,
प्रतिपादित औचित्य कर दिया तुमने 'वन' का वन जीवन का, X X X
और आज तो शील शूल हो गया त्याग त्रिशूल हो गया,
दुराचार हो गया शैल आदर्श की जैसे धूलि हो गया,
और शौर्य का स्रोत ही सूख गया , भाग्य प्रतिकूल हो गया,
आशाओं का कमल नहीं खिल पाया–खड़ा बबूल हो गया,
आज राम के आदर्शों को यदि हमने अपनाया होता ,
यह संकट का समय राष्ट्र के ऊपर कभी न आया होता ।।

।।। बढ़ते चलो , न देखो पीछे–

दीप जलाते चलो , उजाला चलो फेंकते चलो राह में –
मिल जायेगी किसी दिवस मंजिल तुमको विश्राम की ।
तम रोकेगा राह रोकने दी यह उसका काम है , और हमारा काम तिमिर को समर में ललकारना ।
दीप बुझाने को ऑधी आती है–आनेदो उसे , और हमारा काम दीप की बाती को उकसाना ।
इन बाधाओं से तो गति का बहुत पुराना बैर है
पर कर्मठ तो कभी नहीं सुधि खोता अपने काम की । दीप जलाते चलो ..... X X X
आगे बढ़ते चलो, न देखो पीछे आता कौन है,
पीछे हटने वाले बढ़कर कभी न करते सामना–
अपना ध्येय अटल है– है गम्भीर हमारी साधना,
तो अवश्य मीठे फल देगी अपनी पावन कामना
बढ़ते रहे सदैव, दिखाई पीठ न यदि कर्त्तव्यों को–
दृष्टि कभी टेढ़ी हो सकती नहीं विधाता नाम की। दीप जलाते चलो .....

(10) श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'–

। गुरू पर्व का नमन–

ओ हिमालय के शिखर , गुरूता तुम्हारी को नमन।
आदि का अध्याय पढ़कर, अश्रुकी गीली कथा ।
दीप्त ताल माशाल लेकर , जागती युग की व्यथा।।
सूखती भागीरथी का , चिर प्रवाह उमड़ पड़ा ।

अंगिरा आदित्य का, युग वंशधर तन कर खड़ा ।
डूबती मनु पीढ़ियों को, दे सहारा प्राण का।
देव संस्कृति को बचाने , स्वप्न युग निर्माण का।।
कर रहा तर्पण मनजुता का , ऋषि का आचरण। ओ हिमालय के शिखर .....
ओ वशिष्ठ, विदेह , विश्वामित्र, युग के ब्यास ।
ओ अगस्त्य अधीर , विष के सिन्धु की ले प्यास ।।
ओ दधीचि उदार देकर प्राण का अनुदान ।।
राम कृष्ण समान ही , 'श्री राम' नाम महान ।।
कण्ठ से फूटी तुम्हारे , ज्ञान की सविता–किरन
कालकूट पचा लिया ,बॉटा सुधा का आचमन ।। ओ हिमालय के शिखर .....

(11) श्री माधव पाण्डेय 'निर्मल' द्वारा रचित कविता अवलोकनीय है–

यही अभियान हमारा हो–

राम–समान बनें पुरूषोत्तम , कृष्ण समान महान , यही अभियान हमारा हो।
स्वर्ग धरा परा ला दें हम, जन–जन का कल्याण हो , यही अरमान हमारा हो।।
हर मानस में दीप ज्ञान का हमें जलाना है, तिमिर–असत्य–मरण को जग से दूर भगाना है,
ज्योति–सत्य–अमरत्व–सुधा का स्रोत बहाना है,
प्रेम–दया –फूलों से मन का बाग सजाना है
थर–थर कम्पित मानवता को मिले अभयता त्राण , यही अह्वान हमारा हो । राम समान.....X X X .
शस्य–श्यामला–रसवन्ती धरती का धानी ऑचल,
लहराये मधु गन्ध लिए कण–कण हो जाये निर्मल,
शिवि का त्याग दया गौतम की हो जीवन का सम्बल,
गाँधी का संकल्प हृदय में पुण्य पन्थ हो उज्जवल,
पान्चजन्य के सुर में छेड़े सदा विजय की तान, यही जयगान हमारा हो। राम समान.....

(12) श्री अनिल पटैरिया 'निर्झर' का गीत अवलोकनीय है–

तुम दीपक से जलते जाओ –

जब–जब ,सौ–सौ बाँह पसारे । खड़ा तिमिर हो बीच राह में, तुम दीपक से जलते जाओ।
उठती झंझाओं को आखिर इक दिन मिट जाना ही होगा।
बढ़े प्रलय तो उसे सहनकर आखिर रूक जाना ही होगा ।।
मंजिल दूर भले हो लेकिन उर में दृढ़ विश्वास यही है।
क्षुब्ध धरा के इस ऑगन में सुख को फिर आना ही होगा ।।
पग–पग से तुम डगर नापते। अंगारों पर चलते जाओ।। तुम दीपक से जलते आओ.....

(13) श्री राजेन्द्र सिंह रघुवंशी की कविता अवलोकनीय है–

सच्चा मनुज –

"दीपक जलता वही कि जिसके द्वारा तम का क्षय हो,मनुज वही है श्रेष्ठ कि जिसके द्वारा सृष्टि अभय हो
रूदन देखकर औरों का जो गंगाजल बरसाता हो ,तड़प देखकर औरों की जिसका दिल चीख लगाता हो।।"

सप्तम अध्याय

आचार्य शर्मा द्वारा प्रवर्तित जीवन दर्शन विषयक पारिभाषिक शब्दावली का आलोच्य काव्य में अनुसंघान

(क) शब्द चिन्तन

(ख) पारिभाषिक शब्दावली एवं शब्दकोश निर्माण

(ग) पारिभाषिक शब्दावली का महत्व

(घ) पारिभाषिक शब्दावली का वर्गीकरण

1 दार्शनिक शब्दावली

2 यज्ञ और संस्कारों से सम्बन्धित शब्दावली

3 प्रकति से सम्बन्धित शब्दावली

4 स्थान विषयक शब्दावली

5 वस्त्र एवं वेश विन्यास परक शबदावली

6 आचार–विचार से सम्बन्धित शब्दावली

7 सम्बोधन परक शब्दावली

8 सॉस्कृतिक शब्दावली

9 सामाजिक शब्दावली

10 शिष्टाचार से सम्बन्धित शब्दावली

11 जनपदीय शब्दावली

(ड.) जीवन दर्शन विषयक–पारिभाषिक शब्दावली का आलोच्य काव्यों में प्रयोग

(क) शब्द–चिन्तन :–

हमारा सम्पूर्ण जगत् शब्दमय है। हम सबसे अधिक शब्द से ही प्रभावित होते है और हमारा सामाजिक जीवन भाषा के द्वारा ही बनता है। भाषा और ज्ञान के योग से ही हमने प्रगति की है। ज्ञान की अनुभूति बिना शब्द की अभिव्यक्ति के नहीं हो सकती और न चिन्तन हो सकता है। ये तीनो शब्द के माध्यम से ही सम्भव है। शब्द जब अन्तर्जगत मे उत्पन्न होता है तब वह सूक्ष्म होता है और जब वह बहिर्जगत् में अभिव्यक्त होता है तब वह स्थूल हो जाता है। स्थूल शब्द ही हम सुनते हैं। हमारे कान यदि सूक्ष्म शब्दों को सुनने लगें तो हम एक क्षण भी शान्त नहीं रह सकते है क्योंकि, यह समूचा आकाश शब्द की सूक्ष्म तरंगों से प्रकम्पित है। शब्द में अनन्त शक्ति है। 'अ' से लेकर 'ह' तक प्रत्येक अक्षर का वर्ण है, उसका स्वाद है और उसका प्रभाव है। शब्द जब ज्योति में बदल जाता है तब वह 'मन्त्र' बन जाता है। शब्द का सौंदर्य, अर्थ ऐश्वर्य, शक्ति–संकेत और और छाया–बिम्ब अक्षम भाषा से व्यक्त नहीं हो सकते। अतएव, ऐसी स्थिति में शब्द–साधना में साहित्य–साधकों को कितनी सावधानी की आवश्यकता है, यह हम सभी के लिए विचारणीय हैं।

कविता क्या है ? यह हम सभी समझते हैं, किन्तु इसी बात को जब हम शब्दों में व्यक्त्त करना चाहै तो अत्यन्त कठिन होगा। कविता की पूर्ण परिभाषा देना सम्भव ही नहीं है। हर परिभाषा में कुछ न कुछ छूट जाता है। श्री सद्गुरूशरण अवस्थी लिखते हैं– " कविता अभ्यास से नहीं आती। जिसमें कविता करने का स्वाभाविक माद्दा होता है वही कविता कर सकता है। देखा गया है कि जिस विषय पर बड़े–बड़े विद्वान कविता नहीं कर सकते उसी पर अपढ़ और कम उम्र के लड़के कभी कभी अच्छी कविता लिख देते हैं। इससे स्पष्ट है कि किसी किसी में कविता लिखने की इस्तेदाद स्वाभाविक होती है, ईश्वर प्रदत्त होती है। जो चीज ईश्वर प्रदत्त है वह अवश्य लाभदायक होगी। वह निरर्थक नहीं हो सकती। उससे समाज को अवश्य कुछ न कुछ लाभ पहुँचता है। अतएव कविता एक असाधरण चीज है परन्तु विरले ही को सत्कवि होने का सौभाग्य प्राप्त होता है। जब तक ज्ञान–वृद्धि नहीं होती, जब तक सभ्यता का जमाना नहीं आता, तभी तक कविता में परस्पर विरोध है। सभ्यता और विद्या की वृद्धि होने से कविता का असर कम हो जाता है।" 1

बाहरी रूप से विचार करने पर मालूम होता है कि, कविता मनोभावों और कल्पनाओं की शब्द मय अभिव्यक्ति है किन्तु वस्तुतः भाव कल्पना ही सफल कविता के आधार नहीं है। " कविता का सामाजिक सन्दर्भ भी कविता के रसास्वादन में तथा उसके महत्व को व्यक्त करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। यही कारण है कि, किसी भी भाषा की कविता का अनुवाद उस कविता की वास्तविक सामाजिक अस्मिता को व्यक्त नहीं कर सकता।" आज का कवि यह स्वीकार करने में संकोच करेगा कि वह धन के लिए या यश के लिए या व्यवहार सिखाने के लिए लिख रहा है और पाठक भी उससे उन बातों की आशा नहीं करता। "कवि के हाथ से अनेक विभाग छिन गये हैं। कुछ कहानियों ने ले लिया है, कुछ उपन्यासों ने हथिया लिया है, कुछ निबन्धों ने छीन लिया है। पाठक उससे कुछ अधिक चाहता है। शायद वह 'जीवन की व्याख्या' चाहता है, शायद वह आत्माभिव्यक्ति चाहता है , या शायद वह मानवता के अन्तराल मे निहित एकता की उपलब्धि चाहता है , मानव–संस्कृति का निर्माण करना उसका लक्ष्य समझा जाने लगा है"

1.श्री सद्गुरूशरण अवस्थी – गद्य प्रकाश पृ0 32–33

अब से दरवार को जीतकर कवि यश पाने का अधिकारी नहीं माना जाता। अब यग चेतना को स्वर देना कवि का कर्त्तव्य माना जाने लगा है।"1

वर्तमान युग में एक चिन्तन उभरा है, वह व्यक्तिक जीवन को दो भागों में व्यक्त करता है– व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जवीन, किन्तु व्यक्तिगत जीवन सामाजिक जीवन से किस प्रकार अलग है, इसे स्पष्ट करना अति कठिन है। समाज से व्यक्ति का सम्बन्ध भाषा के कारण पूर्णतः अभिन्न है। भाषा के कारण व्यक्ति समाज से जीवन पर्यन्त जुड़ा रहता है। भाषा की उच्चतम साधना के कारण ही सन्त, दार्शनिक, साहित्यकार और शिक्षक समाज में आदरणीय बने है।

आज समाज में परिवर्तन की गति इतनी तेज है जितनी पहले कभी नहीं थी। आज हर पॉच–सात वर्ष में विश्व का रूप बदल रहा है। आवागमन और संचार–साधनों ने विश्व की भैगोलिक रेखाओं को मिटा–सा दिया है। विज्ञान और तकनीकि ने शब्द की महत्ता को आज जिस रूप में व्यक्त किया, उस प्रकार पहले कभी नहीं किया था राज्यों के सत्ताधारी शासक विनाश के अनेक साधनों के बल पर अपने राज्यों की सुरक्षा का भ्रम पाले हुए एक–दूसरे को चुनौती दे रहे हैं किन्तु, रेडियो, टेलीविजन, वायर लैस, तार, टेलीफोन, साहित्य और समाचार–पत्र आदि माध्यमों से जिस प्रकार से शब्द–शक्ति के कारण राज्यों की सीमाएँ महत्व हीन हो गयीं है , इस पर अभी उनका पूरा ध्यान नहीं गया है। अस्त्र–शस्त्रों की अन्तिम उपलब्धि है–विनाश । किन्तु शब्द की अन्तिम उपलब्धि है– परमानन्द की प्राप्ति । आश्चर्य है कि, आज का विश्व मानव शब्द की परम कल्याण कारी शक्ति से अधिक अपरिचित बनाया जा रहा है। " वास्तव में आज के विश्व–मानव के लिए ज्ञान–विज्ञान के साथ–साथ 'शुभ शब्द शक्ति ' की जितनी आवश्यकता है उतनी पहले कभी नहीं थी, हमें इसे विस्मृत नहीं करना चाहिए। " 2

पारिभाषिक शब्दावली एवं शब्द कोश–निर्माण –

कोश–निर्माण का कार्य भाषा–विज्ञान का अंग है। लोक–साहित्य का अध्ययन 'लोकभाषा' के परिचय के अभाव में संभव नहीं है। भाषा के अंगों में 'शब्द' की प्रधानता है। एक ही शब्द के दो–तीन या अधिक पर्याय भी हो सकते हैं। कोशकार को शब्द–संग्रह का कार्य ग्राम के प्रत्येक जीवन से सम्बद्ध व्यक्तियों के सहयोग से करना होता है। सूचक अवसावधानी से शब्द के गलत अर्थ भी बतला सकता है। अतः जब तक दस–बारह व्यक्तियों से उसका समर्थन प्राप्त न हो जाए तब तक उसे संग्रह में नहीं रखना चाहिए एक शब्द के एकाधिक पर्याय हो सकते हैं और प्रत्येक का किंचित अर्थ–वैविध्य भी हो सकता है। श्री रामचन्द्र वर्मा का कहना है कि "कोई शब्द किसी दूसरे शब्द का पर्याय या समानार्थी ही नहीं होता। प्रत्येक शब्द का एक स्वतन्त्र अर्थ होता है। "

" एक–दूसरे की जगह प्रयुक्त हो सकने के विचार से ही यह भी कहा जा सकता हे कि एक भाषा के शब्द आपस में ही एक–दूसरे के पर्याय होते हैं , किसी दूसरी भाषा के शब्द के पर्याय नहीं हो सकते। वारिधि , समुद्र और सागर एक–दूसरे के पर्याय तो माने जा सकते हैं , पर अरबी बहर या अंग्रेजी ओशन के पर्याय नहीं , बल्कि समानार्थ होंगे । प्रायः एक भाषा के वाचक शब्द दूसरी भाषा में होते हीहैं।"3 "

---

1. डा0 रामनिवास शर्मा 'अधीर'–कविवर डा0 ब्रजबाल और उनकी कृतियॉ , पृ0 115
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – साहित्य का मर्म, पृ0 10,11
3. हिन्दी –कोश – रचना प्रकार और रूप, पृ0 52

कोश निर्माण में शब्द–रूप , उच्चारण, व्याकरणिक रूप (संज्ञा, विशेषण, किया आदि) , व्युत्पत्ति (हिन्दी , अंग्रेजी , अरबी, फारसी आदि का) निर्देशक अर्थ के (एक से अधिक) उदाहरण (किसी प्रसिद्ध ग्रंथ से) दिये जाते हैं। यदि शब्द ठेठ बोली का है और साहित्य में प्रयुक्त है तो उदाहरण नहीं दिया जा सकता। यदि शब्द किसी मुहावरे मे प्रयुक्त हुआ है तो उसे दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए , सुहागा शब्द का विवरण हम डा0 अम्बाप्रसाद 'सुमन' की 'ब्रजभाषा शब्दावली' से लेते हैं– सुहागा रस सौभाग्यक–सोहयाज–सोहागा–जोत की भूमि को सौभाग्य या सौन्दर्य देने वाला। जुते हुए खेत को चौरस करने के लिए उसमें लकड़ी का जो चौड़ा और भारी तख्ता–सा फेरा जाता है उसे सुहागा कहते हैं। छोटा सुहागा सुहगिया या पटेलिया कहलाता है। सुहागा में प्रायः चार बैल और सुहगिया में दो बैल जोते जाते हैं। सुहागे के सम्बन्ध में पहेलियॉ प्रचलित हैं–

"धस पायँ धस पायँ। तीन मूँड़ दस पायँ।
बारह नैना बीस पग, और छियान्बे दन्त ।
हयाँ हैं मैं इतने गए, खोजु न पायों किन्तु । "[1]

शब्द के साथ चित्र भी दिया गया है। कई शब्दों के साथ संबद्ध लोकोक्तियॉ भी दी गई है, क्षेत्रीय बोली–कोश में यह भी निर्दिष्ट कर देना होता है कि इसी अर्थ में अमुक स्थान पर अमुक शब्द बोला जाता है। हिन्दी में जनपदीय बोलियों के एकाधिक भेद हैं, कई बोलियों में सामानार्थी शब्द प्रचलित है। प्रमुख बोली की उपबोलियॉ भी होती हैं। यदि शेधार्थी इन बोलियों–उपबोलियों का सर्वेक्षण कर उनके कोश तैयार कर सके तो जनपदीय संस्कृति की रक्षा हो सकेगी ।

हिन्दी बोली–कोश का मुख्य आधार–कोश तो ग्रियर्सन की 'पीजेंट लाइफ ऑफ बिहार' है। इसमें भोजपुरी , मगधी तथा मैथिली बोलियों के ग्राम–जीवन–संबधी शब्दों का संग्रह है। यह तीनों बोलियों के शब्दों के तुलनात्मक अर्थों को प्रस्तुत करता हैं। ग्रियर्सन के पूर्व भी लोकभाषा–कोश तैयार किये जा चुके थे। कार्नेगी, डंकन फर्ब्स, गिलकाइस्ट, विलियम कुक आदि पाश्चात्यों के बोली कोश अकारादि अथवा विषयकम से, व्यवसाय कम से नागरी अथवा फारसी लिपि में प्रकाशित हो चुके थे।

अंग्रेजों द्वारा कई कोश उनके प्रशासनिक कार्यों में सुविधा जुटाने के निमित्त निर्मित किये गये थे। फैलन के 'ए न्यू हिन्दुस्तानी इंग्लिश डिक्शनरी विद इलस्ट्रेशन फाम हिन्दुस्तानी लिट्रेचर एंड फोक लोर ' का लोकभाषा–कोशों में विशेष स्थान है। यह सन् 1879 में प्रकाशित हुआ था। यद्यपि यह किसी एक विशिष्ट बोली का शब्दकोश नहीं है फिर भी इसमें उत्तर भारत की बोलियों के लोक–जीवन सम्बन्धी शब्दों का वर्णमाला –कम से चयन लोकवार्ता सहित किया गया है। श्री प्यारेलाल गर्ग की कृषि–शब्दावली सन् 1943 में प्रकाशित हुई थी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डा0 हरिहर प्रसाद गुप्त का आजमगढ़ जिले के फूलपुर तहसील के अहिरौला परगना के जन–जीवन से संबद्ध कोश भी पी– एच0 डी0 उपाधि के लिये प्रस्तुत किया गया था। डा0 अंबाप्रसाद 'सुमन' का ब्रजभाषा की कृषक जीवन सम्बन्धी' शब्दावली (अलीगढ़ क्षेत्र की बोली के आधार पर) दो खण्डों में शोध–उपाधि I के लिये तैयार की गयी थी। यह कोश वर्णनात्मक तथा विवरणात्मक पद्धति पर तैयार किया गया है। शब्दों की व्युत्पत्ति भी दी गई है। चित्र देकर कोश को अधिक ग्राहय बनाया गया है।

---

1. डा0 विनय मोहन शर्मा – शोध प्रविधि, पृ0 88

कई शब्दों की व्युत्पत्ति देने से हमें भाषिक विकास की परंपरा से भी परिचय हो जाता हैं बोली–कोश में शब्दों के दो रूप मिलते है :– एक तो वे जो सर्वदेशीय होते, और दूसरे वे जो स्थानीय होते है। अतः कोशों में शब्दों के विवरण में यदि इस दिशा का भी संकेत कर दिया जाए तो वह और अधिक उपयोगी बन जाती है। छत्तीसगढ अंचल का बोली–कोश डा0 कांतिकुमार ने पी– एच0 डी0 उपाधि के लिये सश्रम प्रस्तुत किया है। उसमें छत्तीगढ़ी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन प्रुस्तुत कर दिया है।

बोली शब्द–कोश के निर्माताओं को अपने पूर्ववर्ती विभिन्न भाषा–बोली–कोशों का भी अध्ययन कर लेना चाहिए। श्री रामचंद्र वर्मा की कोश–कला से भी लाभ उठाया जा सकता हैं वर्माजी ने शब्द–विवेचन की जो पद्वति अपनायी है वह निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जायेगी–

उलट बांसी– स्त्री0 (हि0 उलटा + स0 बांची ?)

साहित्य में ऐसी उक्ति या पद्य जिसमें असंगति, विरोध, विचित्र, विषय, विभावना, विशेषोक्ति आदि अलंकारों से युक्त कोई भी ऐसी विलक्षण बात कही जाती है जो प्रकृति नियम या लोक–व्यवहार के विपरीत हो, पर जिसमें कोई गूढ़ आशय या तत्व छिपा हुआ हो, जैसे–

(क) पहिले पूत, पाछे भई माई। चेला के गुरू लागैं पाई। –कबीर

(ख) समंदर लागी आगि, नदिया जरि कोइला भई। –कबीर

शब्दों के अर्थ को निश्चित करने कभी–कभी कठिनाई होती है। बोलियों के शब्दों के अर्थ ग्राम के बूढ़े ग्रामवासी (पुरूष–स्त्री) पहले तो बतलाने में संकोच करते हैं और बतलाते भी है तो कभी उनका संदर्भ–अर्थ गलत होता है। वर्मा जी ने कोश–कला में अपनी इस दुविधा का एक उदाहरण दिया है। वे लिखते हैं – 'मीरा के पदों में से शब्द–संग्रह करते समय एक पद में ये दो चरण मिलते है–

मोती मानिक परतन पहिरै, मैं कब की नटकी।
गैयौ तो म्हारा माला , दोबड़ी और चंदन की कुटकी।।

एक सुयोग्य विद्वान ने– इनमें से पहले चरण के 'नटकी' शब्द का अर्थ किया है– अस्वीकार कर दिया है और दोबड़ी का अर्थ लिखा है– एक प्रकार का गहना। पर मुझे ये दोनों अर्थ ठीक नहीं जॅचे। 'नटना' किया तो ठीक है पर नटकना का प्रयोग नटना के अर्थ में नहीं होता। राजपूताने में नट जाति के लोगों विशेषतः बालकों और युवकों को 'नटना' भी कहते है जिसका अर्थ होता है– नट जाति का या नट की संतान। 'नटकी' इसी का स्त्री रूप है। मीरा कहती है– मैं कोई नट जाति की स्त्री नहीं हूँ जो रत्नों से अपने को सजाऊँ। दोबड़ी के सम्बन्ध में मैंने सोचा कि जिस मीरा ने राजसुख को लात मारी थी, वह भला कोई गहना क्यों पहनेगी? जिस पर वह स्वयं कह रही है कि माला दोबड़ी और चन्दन की कुटकी ही मेरे गहने है। अतः दोबड़ी और कोई चीज नहीं होनी चाहिए। मैंने अपने विचारणीय शब्दों की सूची में 'दोबड़ी' शब्द के साथ उक्त चरण लिख लिया। कोई छः महिने बाद 'कबीर साहित्य का अध्ययन' प्रकाशित हुआ, और मैं उससे शब्द संग्रह करने लगा।

तब उसमें एक जगह मिला– 'पांच गज दोबटी मांगी, चून लियों सानि। ' तब तुरन्त मेरा ध्यान मीरा की दोबड़ी की ओर गया और दोनों पक्षों को मिलाकर देखने पर मालूम हुआ कि दोबटी और दोबड़ी एक ही है। ये शब्द संस्कृत के द्विपट्ट से निकले जिसका अर्थ है–साधारण मोटा कपड़ा।

शब्द का अर्थ निश्चित करने के लिये कभी लिखित साहित्य, और कभी अलिखित जन–साहित्य का आश्रय लेना पड़ता हैं। अतः कोशकार को, चाहे वह साहित्यिक कोश को तैयार कर रहा हो, चाहे जन–भाषा या बोली–कोश तैयार कर रहा हो, लिखित और अलिखित दोनों स्रोंतों का सहारा लेना चाहिए। साहित्य भी लोकजीवन से शब्द लेता रहता है, वह तत्समता पर ही आश्रित नहीं रहता। कई भावों के सूक्ष्म रूप हमें लोक–भाषा में मिलते हैं। इसलिये लोकभाषा या लोक–कोश साहित्य की अभिव्यंजना–शक्ति बढ़ाने के लिये आवश्यक साधन सिद्ध होते हैं।

शब्दों की नियुक्ति स्थिर करना कठिन–साध्य कर्म है। एक ही शब्द चलते–चलते इतना घिस जाता है कि उसका उत्पत्ति–विकास स्थिर करना कठिन होता है। वर्ण के आगम, लोप , विपर्यय आदि के कारण शब्द का रूप कभी–कभी बहुत परिवर्तत हो जाता है।

वर्मा जी ने एक लोक प्रचलित शब्द 'लिबड़ी–बरताना' की व्युत्पत्ति की खोज की। खोज करते–करते उन्हें ज्ञात हुआ कि यूरोपियन यहाँ आकर अधिकारी बने। तब वे अपनी रक्षा के लिए सिपाही रखते थे और उन्हें पहनने के लिये वर्दी और हाथ में डंडा देते थे। वह वर्दी अंग्रेजी में 'लिबरी' कहलाती है और डंडा बैटन कहलाता है। कभी–कभी सिपाही अपनी वर्दी और डंडा लेकर भाग जाते थे। दूसरे सिपाही अपने साहब को सूचना देते हुए कहते थे–'साहब, वह सिपाही, लिबरी बटाना लेकर भाग गया। ' 'लिबरी बटाना' से ही 'लिबरी बरताना' बन गया।

जब बोली–कोश का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टि से किया जाता है तब शब्द के मूल रूप की खोज करनी पड़ती है। वर्णनात्मक अध्ययन में उसके वर्तमान रूप और अर्थ से ही संतुष्ट होना पड़ता है। डा.0 देवी शंकर द्विवेदी का शोध–प्रबन्ध बैसवाड़ी बोली–कोश से सम्बन्ध रखता है जिसमें उननें बोली–शब्दों का वर्णनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। अतः शब्द की व्युत्पत्ति की खोज उसकी विषय–सीमा के अन्तर्गत नहीं आती थी।

शोध की दृष्टि से कार्य करने में विषय और क्षेत्र की सीमा बांधनी पड़ती है पर विदेशों में बड़े परिश्रम से लोग कोश निर्माण का कार्य करते हैं। उन्हें अपने कार्य को व्यवस्थित रूप से सम्पन्न करने की धुन रहती है। उसमें वे वर्षों खपते रहते हैं 'बेब्सटर न्यू इंटरनेशनल डिक्सनरी' को प्रकाशित होने में 102 वर्षों का समय लगा। 1087 में बेब्सटर ने कार्य प्रारम्भ किया, जिसे उनके अन्य सहायक पीढ़ी दर पीढ़ी पूरा करने में जुटे रहें। फिर 'स्काटिश– नेशनल डिक्शनरी' को दस भागों में प्रकाशित करने की योजना बनी थी। वह लोक–भाषा कोश है।

लगभग 29 वर्ष तक कार्य करने के उपरांत डिक्शनरी के सन् 1958 तक केवल तीन खण्ड प्रकाशित हो सके। स्व0 डा0 विश्वनाथ प्रसाद ने उक्त'कोश के सम्पादक से प्रत्यक्ष भेंट कर उनकी कार्य विधि से प्रभावित हो बिहार प्रदेश के ग्राम–अंचल में प्रचलित कृषि –सम्बन्धी शब्दों का प्रमाणिक कोश तैयार
कर बिहार राष्ट्रभाषा परिषद से प्रकाशित कराया है। इस कोश में स्काटिश नेशलन डिक्शनरी के समान ही शब्दों के विभिन्न अर्थ, पर्याय और क्षेत्र आदि का निर्देश किया गया है। इसके अतिरिक्त भाषा–विज्ञानकी वर्णनात्मक और ऐतिहासिक पद्वति के अनुसार लोक–भाषा के शब्दों के वैयुत्पत्तिक और पुनर्निर्मित शब्द भी यथा संभव दे

दिये गये हैं। तुलना के लिये बिहार के बाहर की अन्य बोलियों के पर्याय भी, जो प्राप्त हो सके दे दिये गये हैं। उन्होंने अपने 'कोश–निर्माण के लिये जो कार्य–प्रणाली अपनायी थी, उसे यहाँ लोकभाषा–कोश के अनुसंधाताओं के लाभार्थ दिया जाता है। उन्होंने संग्रह– कर्त्ताओं को विशेष निर्देश दिये थे,जो अवलोकनीय है–'

शब्दावली संग्रह–कर्त्ताओं के लिये आवश्यक बिन्दुः–

(1) जन साधारण अथवा समाज के किसी वर्ग–विशेष में प्रचलित शब्दों का ही संग्रह करना होगा।

(2) जिस विषय या समाज के जिस वर्ग को लें, उससे सभी भेदों, व्यापारों, गुणों, लक्षणों, रीति–रिवाजों, खान–पान, रहन–साहन–सम्बन्धी शब्दों का संग्रह करना होगा ।

(3) जो शब्द जिस रूप में व्यवहृत हो, उसे ठीक उसी रूप में लिखना होगा। उसे साहित्य का रूप देने के लिये उसमें फेर'–बदल या संशोधन नहीं करना होगा।

(4) जिस शब्द को लें, उसको लेकर जो मुहावरे या कहावतें व्यवहृत हों , उन्हें भी वहीं सम्मिलित कर लेना होगा। पर कहावतों और फुटकर मुहावरों को एक पृथक और स्वतंत्र विषय समझा जायेगा।

(5) कार्य कर्त्ताओं को जिन व्यक्तियों या वर्गों के बीच जाकर काम करना होगा, उनके प्रति अपनी सेवा, सहानुभूति और सद्भाव के द्वारा उनमें बिल्कुल घुलमिल जाने की चेष्टा करनी होगी। जिससे उनकी पूरी सहानुभूति और सहयोग प्राप्त हो सके और उनके स्वयं संग्रह–कार्य के महत्व में विश्वास और दिलचस्पी पैदा हो सके ।

(6) शब्दों के स्थानीय उच्चारण पर विशेष ध्यान रखना चहिए और उनको ठीक उसी रूप में लिखा जाय।

(7) एक शब्द का एक ही अर्थ में अनेक बार उल्लेख नहीं करना चहिए ।

(8) अर्थ एवं विवरण पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। उन्हें स्पष्ट रूप से लिखना आवश्यक है।

(9) प्रत्येक विषय का पाभिाषिक शब्द यथासंभव एक साथ और पूर्ण रूप से लिखना चाहिए। निर्दिष्ट वर्गो में विषयों का विभाग और उप–विभाग भी कर लेना उचित है।

(10) जो पारिवारिक शब्द न हों, उन्हें अलग ही लिखना चाहिए ।

(11) निर्देश पत्र में दिये गये प्रत्येक नियम को ध्यान पूर्वक समझ या देखकर उपयोग में लाना आवश्यक है।

(12) शब्दों, कहावतों, मुहावरों और पहेलियों को पृथक–पृथक पत्रों पर लिखना चाहिए। जहाँ शब्द लिखे जाएं वहाँ दूसरे विषय न लिखे जाएं। इन निर्देशों के अनुसार शब्द–संग्रह करने के लिये एक मुद्रित तालिका तैयार की गयी, जो इस प्रकार थी–

शब्दावली संग्रह की तालिका विवरण :–

(1) (क) साथ में दी हुई सूची के अनुसार जिस विषय के शब्दों का संग्रह किया जाए, उसका यहाँ उल्लेख करना होगा।

(ख) सूची के अनुसार समाज के जिस वर्ग में काम किया जाए, उसका यहाँ उल्लेख करना होगा।

(2) जिस स्थान में काम किया जाए, उसका उसके सब–डिवीजन, जिला आदि का नाम देना होगा।

(3) भोजपुरी, मगधी, मैथली, नागपुरिया बुन्देली आदि जिस भाषा के क्षेत्र में काम किया जाए, उसका उल्लेख करना होगा।

(4) आबादी की संख्या ठीक–ठीक न मालूम हो सके, तो पूँछताछ से पता लगाकर अंदाज से देना होगा।

(5) जहाँ जिस स्थान (गाँव आदि) में काम किया जा रहा है , वहाँ की जनता मे हिन्दू , मुसलमान, क्रिस्तान ,जैन, आदिवासी ,चेरो, खरावारो, संताली, उरांव किसान, जमींदार , बढ़ई, लुहार आदि पेशे वालों मे कौन अधिक है, कौन कम है, आदि बातों का उल्लेख करना होगा ।

(6) सिलसिलेवार संख्या ।

(7) शब्दों के साथ उनके सम्बन्ध रखने वाले मुहावरों को दर्ज करना होगा। कहावतों को सवतंत्र विषय समझा जायेगा। शब्दों के लिंग का भी (स्त्रीलिंग, पुलिग नपुंसक लिंग, उभय लिंग या अलिंग) इस प्रकार उल्लेख करना होगा। ये शब्द वहाँ जनमानस में वस्तुतः जिस लिंग में व्यवहृत होते हैं, उसी का उल्लेख करना होगा साहित्यिक व्याकरण के अनुसार नहीं।

(8) यहाँ इसका उल्लेख करना होगा कि वह शब्द केवल उसी वर्ग–विशेष में प्रचलित है या उसके सामान्य जनसमूह में भी। जैसे–खटिया आदि शब्द जो सामान्यतः प्रचलित है, इन्हें सामान्य (सामा0) कहना होगा और 'पोर' ' परआ' परई' आदि जो केवल 'कानू' जातियों में प्रचलित है, विशेष (विशे0) कहे जाएंगे।

शब्दावली संग्रह–कार्य :–

शब्दावली संग्रह का कार्य निम्नलिखित विषय–सूची के अनुसार होता रहा है–

वृत्तियों की विषय–सूची :–

(1) पेशे के औजार और सामग्रियाँ, उनके भेद और हिस्से। उदा0 हल, बैल, खेत , बीज आदि ।

(2) पेशे के ढ़ंग और, उनके काम आने वाले जानवर ।

(3) पेशे की सवारियाँ, उनके भेद, हिस्से।

(4) पेशे के ढंग तथा उनकी विविध क्रियाओं और अवस्थाओं से सम्बन्ध रखने वाला शब्द। (जैसे–जुताई, बुआई, खुदाई, सिंचाई, खाद देना, सोहनी, रखवाली करना।)

(5) पेशे की पैदावार के भेद ।

(6) पेशे या पेशे की सामग्रियों की बाधाएं और ऐब ।

(7) पेशे या पेशे की सामग्रियों को बढ़ाने या मदद पहुचाने वाली चीजें।

(8) खाने–पीने की सामग्रियाँ, उनके हिस्से, भेद और उनसे बनने वाली चीजें।

(9) मसाले। (10) खाना बनाने की सामग्रियाँ, ।

(11) घर के सामान आसन शैय्या आदि । (12) कपड़े–लत्ते और कपड़ों के नाम (छींट आदि)।

(13) गहने और श्रृंगार के सामान।(14) पूजा–पाठ , इबादत की सामग्रियाँ और स्थान।

(15) जमीन और मिट्टी के भेद।(16) मौसम, हवा , पानी, बादलों , के भेद ।

(17) तोल और माप। (18) दूरी , दिशा और समयसूचक शब्द (घड़ी, मौसम आदि)

(19) घरेलू और पालतू जानवरों, उनके रंग–ढंग, रहन–सहन के भेद, रहने, के स्थान, बीमारी, चरगाह, भोजन आदि की सामग्री।

(20) पशु–पक्षी तथा अन्य जीव (मछली आदि)

(21) घर–बाहर तथा जल–थल के कीड़े। चूँटे चींटी , हड्डे साँप गोजर आदि।

(22) लेनदेन, माहवारी हिसाब । (23) जमीन के लगान और उसके भेद।

(24) घर, झोपड़े और मन्दिर –मस्जिद आदि के प्रकार, उनके हिस्से, और बनाने की सामग्रियॉ (जैसे–छत, छप्पर–छवाई आदि)।

(25) शादी विवाह के शब्द (26) शादी–विवाह के रस्म–रिवाज

(27) (क) जातकर्म – (ख) जनेऊ।

(28) मृत्यु संस्कार – (हिन्दुओं , मुसलमानों , किस्तानों , आदिवासियों आदि के क्र0 26–28)

(29) सोहनी–रोपनी की संस्कार विधियॉ ।

(30) पंचायत, समझौता , शपथ आदि तथा मामले–मुकदद्मे सम्बन्धी कचहरी के शब्द।(31) अंध विश्वास ।

(32) तिजारत और बाजार। (33) महाजन और कर्जदार के हिसाब–किताब

(34) जमींदार किसान के हिसाब–किताब (35) कर्ज, सूद रेहन आदि ।

(36) व्रत त्यौहार (तीज , छठ ,बसन्त , होली , गुरू पूर्णिमा बकरीद , किसमस आदि) और उनकी सामग्रियॉ।

(37) रिक्शा, टमटम, फिटिन, मोटर और हवाई जाहज के हिस्से।

(38) मारपीट और युद्ध के हथियार। (39) खेलकूद, आखेट, मनोविनोद, उनके भेद तथा, तत्सम्बन्धी सामग्रियॉ (ऑखमुंदौवल, कबड्डी गोटी–चौपड़, शतरंज, कुश्ती , कसरत, योगासन ,ध्यान , अखाड़े, गुल्लीडंडा पतंग, कबूतर बाजी आदि)।

(40) गाली–गलोज। (41) आशीर्वाद, सद्भावना तथा शिष्टाचार।

(42) नाच गान ,रामलीला कलामंच के शब्द और गीत

(43) मजहब , जातपांत के भेद। (44) फूल, फल, पेड़, पौधे, घास फूस, जड़ी बूटी और उनके भेद ।

(45) बीमारियों के भेद।

(46) घरेलू, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक सम्बन्धसूचक (मॉ बाप, भाई, बहन , चाचा, पड़ोसी परिजन)।

(47) गुण , भाव , सुख–दुख , रागद्वेष आदि मन के विकारों तथा अवस्थाओंके भेद और अन्य सांस्कृतिक और भावात्मक शब्द ।

(48) उत्पादक– (क) प्राकृतिक– भूचाल , ऑधी।

(ख) मानवीय– चोरी , डकैती , उसके भेद, व्यापार (सेंध आदि)।

आज हिन्दी – लेखन में शब्दों का प्रायः अनर्गल प्रयोग होने लगा है । प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति मे उसकी आत्मा छिपी होती हैं । जिसकी ठीक प्रहचान न होने के कारण ही उसके प्रयोग में 'अर्थ का अनर्थ हो जाता है । डा0 दुर्गा शंकर मिश्र ने ऐसे ही कुछ शब्द –प्रयोगों के अन्तर पर प्रकाश डाला है– प्रतियोगी– प्रतिभागी, निवेदन–आवेदन –प्रतिवेदन, बल –शक्ति ।

---

1 विनय मोहन शर्मा – शोध प्रविधि , पृ0 124– 1281

परिभाषिक शब्दावली का महत्व :–

मानक हिन्दी के शब्द–भंडार की समृद्धि में योगदान करके उसको सहज, सरल साश्क्त और सजीव अभिव्यक्ति देना–इस सम्बन्ध में कुछ मूर्धन्य विद्वानों के विचार प्रस्तुत कर देना ही उचित एवं पर्याप्त होगा ।" संस्कृत के बाहुल्य से हिन्दी कृत्रिम हो जाती है और उसमें वह ओज नहीं रहता जो बोलचाल की भाषाओं में होता है। नये शब्दों के लिए भी हम अपनी टकसाल को छोड़कर या तो अंग्रेजी शब्दों का सीधे अनुवाद कर लेते है या व्याकरण की सहायता से नये संस्कृत शब्द गढ़ते हैं। यदि हम खोज करें , तो इन जनपदीय बोलियां में अनेक शब्द मिलेंगे, जिनको हम ले सकते हैं। इन बोलियों का शब्दकोश तैयार करना होगा। "1 महाभारत में भी कहा गया है कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जिन शब्दों का व्यवहार होता है, उन सबके अर्थो का विचार वैयाकरण को करना चाहिए; क्योकि जो लोक का प्रत्यक्ष दर्शन करता है ; उसी का ज्ञान पूर्ण हुआ करता है–

"सर्वार्थानां व्याकरणाद वैयाकरण उच्यतें।
प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः।।" महाभारत, उद्योगपर्व 43/36

।। " हिन्दी का उसकी उर्वर प्रसव–भूमि के साथ सम्बन्ध जोड़ना होगा , तभी उसकी कृत्रिमता , सदा संस्कृत या अरबी–फारसी से ऋण लेने की प्रवृत्ति को हटाया जा सकता है।

अपनी गॅवारी बोली के साथ साहित्यिक भाषा का अटूट सम्बन्ध बना रहना उतना ही आवश्यक है, जितना शहरी बाबू लोगों का गॉव के कमेरों के साथ ।" 2

।।। साहित्य निबन्धावली के पृष्ठ 83 पर राहुल सांकृत्यायन जी ने अपने मत के साथ ही जर्मन लेखक अल्वर्ट शवइड्जर का यह कथन भी उछ्घाटित किया है–

" इन टू लिटरेरी जरमन दिअर फलोज कान्टीनयुली न्यूलाइफ फाम द डायलेक्टस विद विंहिच इन हैज कैप्ट इन इट। फैंच हैज लास्ट दिस एवरफ्रेश कान्टेक्ट विथ द स्टाइल। इट इज समथिंग फिनिश्ड। व्हाइल जरमन इन दि सेम सेंस रिमेन्स समथिंग अनफिलिश्ड । "3

IV जनता की बोलियों में सद्भव शब्द बहुत बड़ी संख्या में पाये हैं। साहित्यिक हिन्दी में इनकी संख्या कम होती जाती है , क्यों कि ये गॅवारू समझे जाते है। वास्तव में ये असली हिन्दी शब्द है और इनके प्रति विशेष समता होनी चाहिए। कृष्ण की अपेक्षा "कान्हा" व "कन्हैया" हिन्दी का अधिक सच्चा शब्द है। "

V " जिस मनचीते ढंग से जनपदीय शब्द मनोभावों को कह सकते है , वह बात संस्कृत की लठिया टेककर चलने वाली हमारी इस बोझिल पद्धति में कहॉ आ सकता है ? " X X X

" जब हमारी भाषा का सम्बन्ध जनपदों से जोड़ा जायेगा , तभी उसे नया प्राण और नयी शक्ति प्राप्त होगी। गॉवों की बोलियॉ हिन्दी भाषा का वह सुरक्षित कोश है जिसके धन से वह अपने समस्त अभाव और दलिद्दर को मिटा सकती है। "4

" हिन्दी भाषा में जनपदों के भंडार से लगभग पचास सहस्त्र नये शब्द आ जायेंगे और भौतिक वस्तुओं एवं मनोभावों को व्यक्त करने के लिए जोगाजोग शब्दावली पाने का हमारा टोटा मिट जायेगा। जनपदों के साथ मिलकर हमारी भाषा को अनेक धातुएं , मुहावरे और कहावातों का अद्भुत भंडार प्राप्त होगा। "5

---

1. आचार्य नरेन्द्र देव जनपद वर्ष 1, अंक 1, पृ0 98
2. राहुल सांकृत्यायन–मातृ भाषाओं का प्रश्न, साहित्य निबन्धावलि, पृ0 83
3. अल्बर्ट श्वाइट्जर (जर्मन लेखक)
4. डा0 धीरेन्द्र वर्मा – हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ0 60
5. डा0 बासुदेव शरण अग्रवाल–पृथ्वी–पुत्र, पृ0 204–46–56

VI " जनपदीय बोलियों से हिन्दी को समृद्ध बनाइए क्योकि इन बोलियों में भाव प्रकाशन के उपयुक्त अनेक ऐसे शब्द है जो न तो संस्कृत में है और न खड़ी बोली के साहित्यिक रूप में। इन शक्तिशाली शब्दो , मुहावरों का संकलन होना चाहिए और भाषा को नवीन शक्ति से तेजोद्दप्त बनाना चाहिए। "

VII " शब्द से भाषा बनती है, मगर शब्द भाषा से नहीं है और भाषा से साहित्य बनता है , मगर भाषा साहित्य नहीं है। साहित्य बनता है शब्द और भाषा का सही चयन करने वालों के द्वारा। तद्भव शब्दों को प्रथमिकता दी जाये, जैसे "हृदय" शब्द के स्थान पर "हिया" शब्द लिया जाय और अबीर गुलाल आदि शब्दों को न हटाया जाय तो हिन्दी का विकास सहज गति से संभव होगा। "1

VIII "वैज्ञानिक और पारिभाषिक शब्दावली को अधिक सजीव बनाने के लिए विभिन्न व्यवसायों की जनपदीय शब्दावली का संकलन अत्यन्त आवश्यक है। "2

प्राचीन साहित्य में प्रयुक्त अनेक शब्दों के सही अर्थ का स्पष्टीकरण –

'पद्मावत' और कीर्तिलता' की संजीवनी व्याख्या में डा0 वासुदेव शरण अग्रवाल ने अनेक शब्दों के वास्तविक अर्थ का उद्दार जनपदीय पृष्ठभूमि में लिया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ले "मेरी जन्मभूमि" शीर्षक लेख में अपने गॉव की भड़भूजे का का पेशा करने वाली "कान्दु" जाति को लेकर उस 'कुटुम्ब' शब्द का मूल अर्थ बड़े ही सुन्दर–सहज ढंग से से प्रस्तुत कर दिया है, जिसे एक बंगाली विद्वान अनेक कोशों और स्मृतियों के वचन उद्रधृत करके भी स्पष्ट नहीं कर पाये थे। वे लिखते हैं– "धर्मशस्त्रों के अनुसार कंटुपक्व अन्य स्पर्श–दोष से दूषित नहीं होता। X X X

नगर वे हमारे गॉव में आ गए होते तो उन्हें इतने परिश्रम के बाद इतनी गलत–सी चीज सिद्ध करने की कोई जरूरत नहीं होती। कंटु इन्हीं कान्दुओं के भाड़ का नाम है। कौन नहीं जानता कि भढ़भूजे की भुनी हुई सामग्री स्पर्श –दोष से रहित होती है, जिन पंडित जी की बात लिख रहा हूँ उनकी "विद्वता और बहुश्रुतता का मैं कायल हूँ और इसीलिए मुझे थोड़ा थोड़ा गर्व होता है कि मेरा गॉव इतने बड़े पंडित के जान में थोड़ा–सा अंश और जोड़ सकता था। "3

"हिन्दी ही नहीं अपभ्रंश से लेकर वैदिक संस्कृत तक के लिए अनेक शब्दों को समझने के लिए जनपदीय का अध्ययन परम आवश्यक है; इस सम्बन्ध राहुल सांकृत्यायन के निम्नलिखत उद्बोधन को भुलाया नहीं जा सकता–

" यदि हमने इन भाषाओं को बिगड़ने या नष्ट होने दिया , तो इसका परिणाम यही नहीं होगा कि हमें अपनी भाषा की आवश्यकताओं को अस्वाभाविक रूप से पूर्ण करना पड़ेगा, बल्कि वेद, ब्राहमण से लेकर पाली, प्राकृत के ग्रंथों तक में प्रयुक्त होने वाले उन कितने ही शब्दों के परम्परा से चले आये अर्थों को भी भूल जायेंगे, जिनका प्रयोग आजकल केवल इन्हीं भाषाओं में पाया जाता है। "4

---

1. डा0 भगवत शरण उपाध्याय के उद्घाटन–भाषण का एक अंश (30.10.68)
2. श्री धर लिन्में "भाषा" मार्च 1963 पृ0 55
3. डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी – अशोक के फूल पृ0 36–37
4. पुरातत्व निबन्धावली पृ0 194

शब्दावली का वर्गीकृत अध्ययन :–

शब्दावली के वर्गीकृत अध्ययन से इस बात का भी पता चलता है, कि जनपदीय जीवन का सम्बन्ध किन–किन वस्तुओं से अधिक रहा है। जिस वस्तु से जितना ही अधिक सम्बन्ध रहा है , उससे समबन्धित शब्दों संख्या भी उतनी ही अधिक है। वृक्षों में महुआ तथा पशुओं गो सम्बन्धी शब्द इसके उदाहरण है।

भाषा शास्त्रीय अध्ययन हेतु प्रचुर सामग्री–

"भाषा–शस्त्रियों के लिए तो जनपदीय बोलियॉं साक्षात् कामधेनु के समान है। X X X

जनपदीय शब्दावली के अध्ययन से ही हमारा निरूक्त शास्त्र भरा–पूरा बनेगा। हिन्दी–शब्द–निरूक्ति जनपदों की बोलियों का सहारा लिये बिना चल ही नहीं सकता। "1

हिन्दी की किसी भी बोली का व्युत्पत्ति सूचक कोष हिन्दी–भाषा–शास्त्र की प्रथम आवश्यकता है। विभिन्न क्षेत्रों की शब्दावली के तुलनात्मक अध्ययन से व्युत्पत्तियॉं खोजने में बड़ी सहायता मिलती है।

राष्ट्र की मूलभूत एकता के सूत्रों का अध्ययन –

शब्दावली अध्ययन की बहुत बड़ी विशेषता है कि यह राष्ट्र व्यापी ऐक्य का उद्घाटन करता है। आसेतु हिमाचल जो कुछ भी जनपदीय सामग्री अभी प्रकाश में आयी हैं , उसमें अद्भुत साम्य दृष्टिगोचर होता है। यह साम्य सुदूर अतीत के किसी एक ही मूल–स्रोत की सूचना देता है और समस्त वाह्य भेदोपभेदों के भीतर एकता के सूत्र को पुष्ट करना है। जनपदीय कार्य के अतिरिक्त हमारा राष्ट्रीय ऐक्य भाव किसी भी अन्य क्षेत्र में इतनी सरल–स्वाभाविक रीति से प्राप्त नहीं होता। "

जो बात राष्ट्रीय ऐक्य के लिए कही जा रही है, वही विश्व या भूमण्डल की एकता के लिए भी चरितार्थ हो सकती है। प्राचनी भाषाओं का अध्ययन इस दिशा में कुछ संकेत दे सका है। गम्भीर अध्ययन से और भी अधिक सामग्री प्रस्तुत हो सकती है।

हिन्दी भाषी क्षेत्र, के विभिन्न जनपदों की बोलियों में बन्देली,ब्रज तथा बिहार क्षेत्र में प्रचलित अनेक उपयोगी शब्ड समान या मिलते–जुलते रूपों में मिलते हैं। "2

आचार्य श्री राम शर्मा जी का जीवन दर्शन पूर्णतयाः वैदिक कालीन ऋषियों के समान था और वे युग द्रष्टा के रूप में विश्व विख्यात हुए। उनके जीवन का लक्ष्य था 'प्राणीमात्र की सेवा' एवं भारतीय संस्कृति का पुनरूत्थान । आपका जीवन यज्ञमय जीवनथा और यज्ञीय जीवन के माध्यम से वे संयम, शील, सत्य, अहिंसा , परोपकार तथा विश्वबन्धुत्व की भावना का प्रतिष्ठापन करना चाहते थे। इन्हीं भावनाओं को लेकर उनके समकालीन कवियों ने युग निर्माण मिशन का अग्रदूत बनकर काव्य सृजन किया।

आचार्य श्री राम शर्मा ने अपने विस्तृत साहित्य –सृजन मे यत्र तत्र जीवनदर्शन विषयक पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया है। पूज्य आचार्य जी द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग उनके जीवन दर्शन से प्रभावित लगभग सभी कवियों की रचनाओं में हुआ है।

---

1. पृथ्वी–पुत्र –पृ0 56
2. पृथ्वी –पुत्र–पृ0 248–249

पारिभाषिक शब्दावली का वर्गीकरण :–

1–दार्शनिक शब्दावली से संबन्धित कतिपय शब्द :–

जीवन देवता, युग देवता, ऋषितंत्र, मनुष्य में देवत्व , धरती पर स्वर्ग का अवतरण, तीर्थ चेतना, प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा, जन मानस का परिष्कार, भावनात्मक नव निर्माण, उपासना, साधना, आराधना, आत्मशोधन, जीवन शोधन, आत्म समीक्षा,आत्म निर्माण, आत्म विकास, आत्म सुधार, भाव सम्पता, विचार सम्पदा, अंतर्मुखी, शाश्वत सुख, क्षणिक सुख, इन्द्रिय सुख, आत्म बोध, तत्व बोध, परमानन्द, स्नेह–सहकार , जीवन–साधना, ब्रहमवर्चस, ब्रहम ऋषि, ब्राहमी चेतना, ब्रहम, जीव, जगत, ईश्वर, माया प्राणशक्ति, आत्मा, परमात्मा, बन्धन मुक्ति, आत्मदेव, साध ाना से सिद्धि, अवतरण, गंगावतरण,, तत्व चिन्तन, राष्ट्र देवता, ज्ञान गंगा, आत्म चेतना, देव भूमि, व्यष्टि, समष्टि, इष्ट, अक्षर ब्रहम ,अलख, अनादि, अनंत, लोक, परलोक, सिधुं में बिन्दु, जीवन–संध्या, आत्म ज्ञान, मनुजात्मा, दिव्यात्मा, तत्वज्ञान, अन्तर्जगत, बुद्धि–विवेक, राष्ट्र चेतना, आत्मदान, सृष्टि, युग चेतना, युगधर्म , सूक्ष्म, सूक्ष्मीकरण , काय, कारा , प्राण, प्राणशक्ति, युगवेदना, जीवन–श्रृंगार , नवजीवन, नवचेतना, जाग्रत आत्मा, युगवाणी, प्रज्ञाप्रवाह ..... आदि।

2 यज्ञ से सम्बन्धित शब्दावली :–

यजन , देव पूजन , संगतिकरण , दान, यज्ञीय जीवन, जीवन–यज्ञ, यज्ञीय चक्र, शरीर यज्ञ, ब्रहम यज्ञ, दीप यज्ञ, नर मेध यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, काय यज्ञ , प्रकृति यज्ञ, आत्माहुति, भावाहुति, विभूति यज्ञ, सूक्ष्मीकरण , कायाकल्प, पर्जन्य, देव–दक्षिणा, ज्ञान दान, पुष्पांजलि, पूर्णाहुति , संकल्प , विकल्प , मंत्र, आहुति, शन्ति यज्ञ, सत्कर्म, यज्ञविज्ञान , यजमान, पवित्रीकरण , आचमन, स्वस्तिवाचन, अग्नि स्थापन, ज्योतिदर्शन, गायत्री स्तवन, नीराजन–आरती, घृत अवघ्रण, क्षमायाचना, यज्ञशाला, प्रदक्षिणा, स्वधा, स्वाहा, त्याग, जिन्दगी है हवन, यज्ञमय कर्म , यज्ञाहुति , ज्वाला , समिधा , होम , हवन , अग्निहोत्र, ... आदि।

3 प्रकृति से सम्बन्धित शब्दावली :–

प्रकृति , विकृति , प्रकृति संतुलन, प्रकृति की क्षुब्धता, प्रकृति धर्म , समझदारी , ईमानदारी, जिम्मेदारी , बहादुरी, प्राकृतिक वातावरण, प्रकृति स्नहेंचल, प्राण ऊर्जा, वसंती सृजन, वासन्ती उल्लास, प्रदूषित वातावरण, पर्यावरण, पर्वत , सरिता, सिन्धु चन्द्र , वृक्ष , नक्षत्र , नियति , तपोमय जीवन , सौम्य जीवन, सद्चिंतन, दुष्चिंतन , ऋषि चिन्तन जनमंगल पथ, आचरण, आदर्श , उत्कृष्ट चिंतन , निकृष्ट आचरण , एषणात्रय , सैद्धान्तिक जीवन, जागरण, जागृति, विराग , राग, द्वेष, प्रलय , हिमगिरि, शीतल छॉव, गॉव, खेत , जेठ की दोपहरी, नीलगगन, श्याम बदरिया , गरमी, बरसा , ठंडी–ठंडी पवन , बगिया, पतझर, मत्त मयूर , पंछी चहके , पियापिया, चातकी सतरंगी अम्बर , भीनी भीनी गंध, ताल–तलैया, मेघ, पवमान नदी , निर्झर ,पत्थर , प्रस्तर , धारा , दिशायें , व्योम , विहंग, निशा, पौफटी , सुबह, रवि, नव प्रकाश , कुश–कॉटे, घन, झंझावात, ऑधी विटप , फलों की भेंट , बाढ़, भूकम्प , समुद्री तूफान, नीरवता, कोलाहाल , ऋतुयें, दिन–रात , सागर , विविधप्राणी , सौम्य नीलाकाश, मेघमाला, तरंगें, धरती का सुरक्षाकवच , धरा, लता, वनस्पति ,पर्वत , अन्दर से मजबूत , चॉद–सितारे , गिरिवर, किरणे, शशि , अम्बर , सुरसरि, जीवन–सागर, गगन, आलोक हिलोर, आभा , विभा ..

---

4 स्थान विषयक शब्दावली :–

देवात्मा हिमालय, गंगा की गोद, हिमालय की छाया, युग तीर्थ, नवयुग की गंगोत्री, ज्ञान गंगोत्री , दिव्य संगम, आध्यात्मिक त्रिवेणी, शान्ति कुन्ज, तपोभूमि, चित्रकूट, ऑवलखेड़ा , शक्ति पीठ , प्रज्ञापीठ , चरण पीठ ,स्वर्ग, नर्क, नन्दन कानन, सुरधाम, स्वप्न संसार, मानस भवन , प्रेमनगर, लक्ष्यतीर्थ, स्वर्ग का द्वार, कीढ़ा स्थल , आयेध्या, मरघट, , मन्दिर , मस्जिद, गुरूद्वारा, गिरजाघर, मथुरा , हरिद्वार , कलकत्ता, वन, पर्वती गुफा, गुरूग्राम, सुखसमाधि, मरूस्थल , उपवल, मरूथल , ऑगल, सप्तऋषि क्षेत्र , ब्रहमवर्चस , महल, झोपड़ी , ऑवलखेड़ा, गुरूकुल, तक्षशिला , नालन्दा , गंगोत्री , सेतुबन्ध, चिकित्सालय , राजस्थान, कामखेड़ा , रंगबाड़ी का मन्दिर, कर्णेश्वर, कामदगिरी , लकड़ेश्वर, गोपरनाथ, नागेश्वर, इन्दरगढ़, रणथम्मोर, बड़ी अदालत, मान सरोवर,..... ..... आदि।

5 वस्त्र एवं वेश विन्यास परक शब्दावली :–

वासन्ती बाना , उत्तरीय , बसन्ती चोला , फैशन (अश्लील वेशभूषा , उत्तेजक परिधान,) श्रृंगार , राज–छत्र, कपड़े , श्रीहीन, अंचल , फैशन का भूत ,परिधान, उत्तेजक परिधान , सात्विक परिधान , सहज वेशभूषा , सात्विक रूप,मन श्रृंगार , तन श्रृंगार , छवि , सौन्दर्य–स्वरूप, सोलह श्रृंगार , शुभ परिधान, चीर , वस्त्र , पूनम की उजियारी, शीलसनी ऑखें, जीवन्त कालाकृति, आभूषण ,· कंठीमाला , वासनाओं का धुऑ, चीथड़ा , केश , चोटी , जनेऊ , धॅसी ऑखें , सूखे केश, कृष–पीतदेह, शिथिल अंग, पीत–पुण्य परिधान, तिलक–अक्षत से शौभिल भाल, बिदाई का रृंगार , ऑचल, गरिमामय रूप, भव्य भावमय रूप, चदरिया, वेश वासन्ती, केसरिया बाना, गहनें कर्णफूल , कंगन, चमक–दमक,..... आदि।

6 आचार विचार से सम्बनधित शब्दावली :–

आचार, जीवन में पावनता, ऋषिकल्प जीवन, सात्विकता, शुचि, त्याग तपस्या, सदाचार संयम, सादाजीवन–उत्तम विचार , मार्यदा, अभिशप्त , अभिशापित गृहणी , शुद्धअन्तःकरण , अनाचार , दृष्टिकोण , निर्मल स्वभाव, सदआचरण, दूषित आचरण, अशुभ आचरण निर्मलता, परिष्कार, आदर्श और आचरण, जीवन में उल्लास , सादा जीवन , मर्यादित जीवन , कर्त्तव्यों के प्रति अनुराग , शुद्ध अन्तःकरण, विचार, घृणा और विद्वेष , घुटन से भरी कोठरी, दिव्यसोपान , तन मन पावन, आसक्ति , कालुष्य , कायाकल्प , हृदय में प्यार, दुर्भावनाऐं .... आदि।

7 सम्बोधन परक शब्दावली :–

परिजन , तपस्वी , ओजस्वी, तेजस्वी , मनस्वी , अग्रदूत , देवदूत , भगवान, महाकल , देवमाता, वेदमाता, विश्व माता, प्रज्ञावतार , वीर, युग साधक, सृजन साधक , इक्कीसवीं सदी , धर्ममीरू , धर्म प्राण , धर्मवीर , कर्मवीर , धर्मप्राण राष्ट्र , तपोनिष्ट , युगद्रष्टा , युग स्रष्टा , तपःपूत , कुलदीपक, सृजन–शिल्पी , जगतबन्ध मॉ , श्री राम , तेजपुंज , सर्जन हार , प्रिये , पुनीते , खेतों के भगवान , राष्ट्र देवता , प्रभू , अर्न्तयामी , देवता , शुभे , प्रज्ञा पुत्र , युग साधक , ओ चमन , ओ वतन, ओ निष्ठुर , पुनीते , ओ महामानव, ओ श्रृजन के देवता, पुजारिन , पुजारी, मेरे भगवान, देव मानव , है मॉ , हे नारी , साथी , मीत , रश्मिरथी , ओ सन्त , युग कवि

आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित सम कालीन हिन्दी कवियों की रचनाओं से साभार

ऋषि संतान , पृथ्वी पुत्र , युग पुरूष , स्वजन , महाप्राज्ञ , धरती रानी , युग–पहरूओ , सिहो , सपूतो , लाड़लो , प्रभु , कलाकार , प्रहरी , मानव , वेदमूर्ति ,ऋत्विजहोताओ , यशकामी श्रोताओ , पुरूषो , वीरो , कायरो , सृजन शिल्पी , ... आदि।

8 भोजन एवं खान पान से संबधित शब्दाली :–

अभक्ष्य भक्षण , शाकाहार , सात्विक भोजन, मॉसाहार , आत्मघाती शराब , आत्मघाती धूम्र पान , राजस भोजन , तामस भोजन , छाछ , घृत , चाय का चश्का , मृत्यू का ग्रास , मृत्यू भोज , रस मयी मिठाई , जूठे बेर, मीठे फल , शीतल नीर , क्षुधा पीड़ित , अतृप्त , शहद , फलों व शाक , गगरी प्यासी , अण्डा , मॉस , भारतीय भोजन , मदिरा , दुर्व्यसन , पियक्कड़ , अमृत , जहर, प्यास, पुरी–मालपुआ , रसोई , बोतल , जीने के लाले , नशा , धीमा जहर , भॉग , नशा खोरी , तम्बाकू , अमल मद्य , मधुर आहार , मिलबॉट कर खाएँ.

9 सांस्कृतिक शब्दावली :–

सत्य–प्रेम , त्याग–सेवा , सौहार्द्र , सेवा भाव , सद्भाव , सद्चिंतन , प्रेम , तपस्या , अहिंसा, न्याय , नीति, देवसंस्कृति विश्व संस्कृति , संस्कार परम्परा , एकता , समता , ममता, उदार आत्मीयता , करूणा चिंतन , चरित्र, भावना , विचारणा , श्रद्धा , याचक , भिक्षुक , बुद्धि–विवेक , कामना , भावना , प्रेरणा, तादात्म्य , अनुताप , सुसंस्कृत परिवार , कुसंस्कार, सुसंस्कारिता , राष्ट्रीय–संस्कृति , पाश्चात्य संस्कृति , दया , क्षमा , उत्सर्ग , कर्त्तव्य , उपकार , उपेक्षा , अपेक्षा , संघर्ष , करूणापुकार , शान्ति और सुख , शील , परमार्थ , सृजन , तप–तितीक्षा , याचना , विश्वास , पुरूषार्थ , सांस्कृतिक प्रतिबद्धता , स्नेह और संवेदना , लोक मंगल , लोक हित , आत्म संतोष , सत्साहस, देव संस्कृति दिग्विजय , पतित मानव , पीड़ित , आनन्द मग्न ..... आदि।

10 सामाजिक शब्दावली :–

नैतिक कान्ति , बौद्धिक कान्ति , सामाजिक कान्ति , विचार कान्ति , सप्त कान्ति , व्यक्ति निर्माण , परिवार निर्माण , समाज निर्माण , दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन , सत्प्रवृत्ति संवर्धन , सामाजिक कुप्रथाऐं , सामाजिक कुरीति , कुरीति उन्मूलन , नशा निवारण , युग निर्माण योजना , सृजन शील संगठन , गायत्री परिवार , प्रज्ञा परिवार , देव परिवार , शक्ति पीठ , प्रज्ञापीठ , प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल , नव युग दल , युग परिवर्तन , आदर्श विवाह अभियान , दानव–दहेज , जन्मोत्सव , समाज सुधार , सुधारक , मानवता आदि

11 शिष्टाचार से सम्बन्धित शब्दावली :–

परामर्श , अनुरोध , निवेदन , विनती, प्रार्थना , भक्ति भाव, याचना, समादर , स्वागत , आगत का अपमान , क्षमा प्रार्थना , मर्यादा , प्रणाम , कृपा, पूजन–अर्चन , नमन–बंदन , करूण पुकार, समर्पण , मंगलमय सद्भावना , सबके कल्याण की प्रार्थना , प्रियागमन , शुभागमन , अभिनन्दन , अभिबन्दन , दायित्व बोध , कृतघ्नता , निष्ठा की पूंजी , नतमस्तक , समर्पित भाव , आमंतण स्वीकार , अलंगीकार , अगवानी , रक्षणार्थ , सहायतार्थ , कृतार्थभाव , परार्थभाव , कल्याण , उत्कर्ष ..... आदि।

12 जनपदीय शब्दावली :–

लाने = लिए , नैनू = मक्खल , गिलारौ = कीचड़ , रपरिया = एक प्रकार की घटिया भूमि अखरी = खल जाना , खोरन–खोरन = आबादी की सकरी गलियॉ , मैरा = मचाल , रस्यान = रिसने लगना

---

1 आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों की रचनाओं से साभार

2 आचार्य श्रीराम शर्मा के विपुल साहित्य से साभार

रमतूला = रणतूर्य , साके = यशोगान , बेरबेर = बार–बार , ह्यां = यहाँ , ड़िंडयाने = आर्तनाद करना , धंदर = ऊँची लपटों वाली अग्नि , चेटका = चिता स्थली , कम ठानों = सरंजाम , साजे–साजिन = अच्छे –अच्छों बिरझानों = लक्ष्य बेध , बारै जाय = कार्य सम्पादित होना , खटात = टिकना , गमागम = खूब भरा हुआ , कचबात = शिथिल पड़ना , हूच = निर्धारित स्थान से टलना , भायँ = चिन्ता , आयँ = है , दरेस = दुरस्त , गरैं परो = गले पड़ जाना , सैंती = सामप्त कर दी , सुगरी = शुम घड़ी , सल = फँस , चओ = चिनाई का रद्दा , नउतम = नवीनतम , निरवक = नितान्त , खौंड़ा = भूमिगत अन्न भण्डार या खत्ती , घल रओ = चोरी हो रही, मुसरिहा = मुसटंडे , कमाउत = कहलवाते है , सपोटत = समेटकर निगल जाना , थओ = बड़ा थक्का , बहटाना = बहकना, भरजोर = शक्ति भर , दाँद = द्वन्द्व , उसार = सार–सँभाल , हिरानों = खोया , देख सिहात = देखना पसन्द करना , खूँत = खेतों में अवशिष्ट नुकीले डण्ठल , मिसठान = मिष्ठान्न , मसान = अग्नि मुक्त प्रेत , सार = पशुशाला , सराप = शाप , तमुखया = तम्बाकू का आदि , छ्याँव = कम , बखरी = आँगन , आवास ग्रह , ट्यावँ = टेव या आदत , भुंसारे = प्रातः काल , निरछल = निश्छल , बिसन = व्यसन , कौंरी = कोमल , रिहात = रूचना ऊनी = ध्यान में लाना , जलमे = जन्म के अवसर , दिन–तेरहँ = शुद्धि और त्रयोदशी , बँटवारे = बाँटने वाले हेड़ = समूह , मंघ न्यारे = भिक्षुक , सपरना = स्नान करना , सिरेकी = चोटी की या सर्वोच्च , तानैं = खींचें बंटाढ़ारी = बरबाद करना , ऊ = वह , उरतियाँ = खपरैल से पानी के निकास , गौरे नारे = गोरे चिट्टे चाईं–माईं = चकवत घूमकर खेला जाने वाला खेल , गिंजाई = कृमि विशेष , गिलाए = कीचड़ , झडां–झंडिया = झंडी लगाकर , डिंडयात = गाय की भाति आर्तनाद करती , तिरपत = तृप्त , तेरहीं = तेरहवें दिन का मरणोत्तर विधान , दूधा–भाती = प्रणय–कीड़ा , नायँ = इधर , माँय = उधर , पखनी–परखना = कीट पतंगे फिफयानों = उदास परेशान , या = यह , सुहारी = पीड़ी , दिपत = शौभा देता है , नसानौ = बिगड़गया , दौंदरा = धींगा मुश्ती अनवासो = पयुक्त करना , बारइ = प्रारम्भ , रमतूला = बड़ी तुरही जैसा बाजा , ठना–ठनी = युद्ध , मैंड़े = ग्रामों की सीमाएं , भांड़ रहो = चक्कर काटना , चिरौरी = आरजू–मिल्लत , मड़वा = कन्यापक्ष , फदियत = फजीहत टनकी = द्रुत गामी , चँगेल = बड़ी टोकरी जिसमे उपहारों का प्रदर्शन , सरैफर = दुरूस्त , मैंट = मिटाकर , टिपारे = पिटारे , भँजा के = भुनाकर , पटाकै = शान्त होकर , सबरौ = पूरा , धुजा = ध्वजा , हिरको = निकट आया , चिमाई = चुपचाप हो जाना , मैंड़ो परे = मिलान हो , अंगरे पे = खपरैल की चोटी पर , घटिया = घाटी तरी झार = तली तक साफ , फटफटिया = मोटर साईकिल , जाई = पैदा की , लाला जू = दामाद के लिए सम्मान सूचक शब्द , घूसा–कटिया = दुर्दशा , उरहाने = उलाहना , जात = सम्पन्न हो , टीका = द्वारचार माँय = चिन्ता , माँय–माँय = सूनेपन की भयानकता , मार = उपजाऊ भूमि विशेष , हरौ , चन्दर , कितनौ , मनकै , खेलिंगे , हमकूँ , पुरबइया , बूड़िगयौ , दयी , चारौलँग , छायौ , खायौ , तऊ , ठौर , बिरमायौ , चिलमन कुदरत , अश्क , शबनम , नजनें , परदानशी , मुमकिन , ... आदि।

---

1 आचार्य श्रीराम शर्मा के विपुल साहित्य से साभार

2. आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित सम कालीन हिन्दी कवियों की रचनाओं से साभार

जीवन दर्शन विषयक –पारिभाषिक शब्दावली का आलोच्य काव्यों में प्रयोग–:

1 दार्शनिक शब्दावली का प्रयोग –(शब्द रेखांकित है)

1 मंगल विजय 'विजय वर्गीय'

I. व्यक्तियों में, वस्तुओं में तो क्षणिक सुख लाइए । शाश्वत–सुख चाहिए , अंतर्मुखी हो जाइए ।।

आत्मबोध हो प्रभो । तत्व बोध हो प्रभो शक्ति हमें दीजिये ।

राग–द्वेष नष्ट हों , विश्व–प्रेम इष्ट हो स्नेह –सहकार से धरा स्वर्ग कीजिए ।।

2 व्यक्ति के निर्माण की आधार ' जीवन–साधना '

सुसंस्कृत–परिवार की आधार जीवन–साधना ।।

ब्रम्हवर्चस्व ब्रम्हऋषि की चेतना है और ब्राह्मी चेतना की साधना है।।

2 श्रीमती विद्यावती मिश्रा :– कवयित्री नैमिष का दर्शन लिखतीं हैं –

1. "धर्म–ग्रंथ सब जिसकी गरिमा का रहस्य गाते हैं , जिसकी पद रज चूम प्रेम से मस्तक झुक जाते है ,

पावनता की गंध यहाँ पर हर क्षण लहराती है, सात्विकता की मलय कलि–कुसुम छूकर मुस्काती है,

चिरनवीन ,चिर मुदित ,चिरंतन जिसकी कलित कहानी ,हे दधीचि के धाम तुम्हारी त्याग कथा वरदानी ।। 1"

II. नये स्वरों में राष्ट्र देवता ने फिर तुम्हें पुकारा ।

आओ मंगल पथिक पंथ की जड़ता को हर जाओ ,

आओ मंगल पथिक तुम्हारा आमंत्रण है आओ ,

जग का हर्षोल्लास विजय के स्वर हो गये पुराने–

जन , मन , जीवन में नव चेतना भरने को गाओ ,

भेद–भाव का कलुष मिटा दो तोड़ो भ्रम की कारा । नये स्वरों में....."युग वीणा " पृ0 77

3 श्री यादराम शर्मा रजेश :–

इतने अमूल्य मानक जीवन को , नाच नचायेगा क्या–क्या ?

कुल चार दिनों का जीवन था , दो काट चुके दो कटने हैं ,

दो दिन के बाकी जीवन में , संसार दिखायेगा क्या–क्या ? – – –

मैं तो पहचान नहीं पाया, तू ही जाने तेरी माया,

जीवन के इन व्यापारों में , मेरा क्या–क्या तेरा क्या–क्या ? " अखण्ड ज्योति " मार्च0 1982

4 डा0 त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल :–

(क) "आत्म–परिचय " शीर्षक कविता में कवि कहता है–

I. कालिमा अतीत की , मानस पर गहरी है।

वर्तमान का विषाद , चिंतन पर प्रहरी है।

भावी निज सपनों पर , धूमिल शशि छाया है।

श्वांसों में गंध परी , माटी की काया है।

किस पर विश्वास करनें , सब एक क्षण भंगुर है

शीशे की कंदुक , पर , एक बूँद ठहरी है।

---

1. सम्पादक– शिवशंकर मिश्र ,डा0 ताराशंकर पाठक – नेमिषारण्य पृ0 68,69

।। कवि मानव के भाव जगत से यथार्थ भूमि पर लाकर पीड़ा और मृत्यु की भयंकरता और अनिवार्यता के प्रति इंगित करता हुआ कहता है–

जल–परिमाण से, रस्सी है तिहरा। रस्सी से ज्यादा, कुआँ है गहरा।

कुआँ से ज्यादा, अधरों में प्यास । अधरों से जयादा, व्याकुल है श्वास।

श्वासों से ज्यादा, जीवन में पीड़ा । जीवन से ज्यादा , मृत्यु की कीड़ा । "

।।। आज खड़ा मैं चौराहे पर , देख रहा जगधार को ,

उठता वचपन, चढ़ता यौवन , थकते तन के भार को ।

उभरे चेहरे, बिखरे मोहरे , रूप बचे श्रृंगार को ।

धनवानों को कंगालों को , समरथ और लाचार को।

दीवानों की यह नगरी है , अजब यहाँ के खेल तमाशे।

मुझको राह दिखाने वाले , स्वयं रहे अँधियार में ।

IV स्वर्ग का संसार हम भूपर बसायें। आज नव निर्माण के हम गीत गायें । " पाथेय " पृ01

5 श्री बाबूलाल जैन 'जलज' :–

। अपनी आत्मचेतना से जो , करता युग निर्माण हैं।

तम पहाड़ से जूझ–जूझकर , लाता नया विहान है।।

जिसे नाम की नहीं , काम की चिन्ता आठों याम है।

उसका ही जीवन इस जग में, धन्य–धन्य अभिराम है।।

।। नूतन राष्ट्र–चेतना जागी , तन–मन जीवन प्राण में।

जय किसान की जय जवान की , जय श्रम के भगवान की ।।

।।। आत्म तत्वः–

गूँज रहा प्राण–गीत , यमुना के कूल । दूर मुझे करना है, दर्पण की धूल ।।

आत्म–ज्ञान–गंगा में, छट गया मैल, बड़ी साफ सुथरी है, जीवनकी गैल ।।

IV आत्म चेतना यदि न जगाती, मंजिल में ही सोता रहता ,।

मन–मन्दिर में में छाया रहता , दिन में ही भीषण अँधियारा।।"पा0 यु0 नि0 यो0" 20 जन0 1977

6 श्री बलराम सिंह परिहार :–

। तत्व ज्ञान भाषा संस्कृति के इसने अमित कमाल किए ,

मरे धर्म के लिए विहँस कर, जिए , धर्म के लिए जिए ,

पौरूष से रेखायें मेटीं विधि के लिखे विधान की।

भूली हुई कहानी फिर से याद करो बलिदान की।। 'यु0 नि0 यो0 " 20 दिस0 1963

।। अलिखा भाग्यः–

अपने ही कर्मों की माया ज्ञान भक्ति वैराग्य ।

नहीं लिखा जाता ऊपर से कोई अपना भाग्य।।

बुनो न यों मन में ही सपने, अपना भाग्य हाथ में अपने ।

श्रम के तप से , खुद को तपने, उठो कर्म की गीता जपने ।।

इससे बड़ा नहीं कोई पुरूषार्थ और तप याज्ञ । 'यु0 नि0 यो0 " 5 सित0 76

7 डा0 हरगोविन्द सिंह :–

। जिसने आत्म–सुधार किया हो, वह आगे आ जाये,
सृजन–सैन्य के जय–प्रयाण का अभिनव बिगुल बजाये ;
यह रण वही जीत पायेगा , जिसने खुद को जीता ,
जिसके भीतर गूँज रही हो कर्मयोग की गीता
जलते हुए दीप से अगणित दीप जलायेंगे ,
जमाना नया बनायेंगे , धरा पर सतयुग लायेंगे ।
।। आओ , नया समाज बनाएँ , इस धरती पर स्वर्ग बसाएँ ।
।।। प्रभु का प्यार वही पाएगा जिने आत्म–सुधार किया है।
मनुज नहीं , पशु है वह केवल , जो इन्द्रिय–सुख हेतु जिया है।।
जाति–वंश का अहंकार ले , जिसने निज को श्रेष्ठ बताया ,
सद्विचार की गंगा में जो एक बार भी नहीं नहाया ; – – –
वही अमरता का अधिकारी , मरना जिसने सीख लिया है ।
मनुज नहीं , पशु है वह केवल ..... "पुष्पांजलि " पृ0 32

8 डा0 रामस्वरूप खरे :–

मरूथल नन्दन–कानन होगा , श्रम की गंगा जब आयेगी ।
फसलें झूमेंगी खतों में धरती दुलहिन बन जायेगी ।।
खेलेगा ऑगन में भविष्य , नव कान्ति घटा घिर आयेगी ।
जीवन होगा सुन्दर सुखमय , चेतनता दीप जलायेगी ।। X X X
करके निश्चय अमरत्व प्राप्त , यह चोला नश्वर बदलेगा ।
मौसम भी बदलेगा साथी ..... "यु0 नि0 यो0 " 7 दिस0 80

9 श्री लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र" :–

जड़ता में चेतनता जागी , चेतन में गति के प्राण जगे,
प्राणों में रस लीला जागी , रस में सोये भगवान जगे ।
प्राणों का पर्व नहाने को , बोला वरदानी आयी है,
युग का यौवन अँगड़ाया है , ले कान्ति जवानी आयी है। " "यु0 नि0 यो0 " 5 अप्रेल 1975

10 श्रीमती माया वर्मा :–

। समय की माँग :–
पुकारती नयी धरा, पुकारता नया गगन, नये मनुष्य के लिए– नवीन प्राण चाहिए,X X X
पुकारती हृदय तपन पुकारता नया हवन , कि इस हविष्य हेतु आज आत्मदान चाहिए।
रचो नवीन सूर्य अब नये विहान के लिये , रचो नवीन तान तुम नवीन गान के लिये
रचो मनुष्य भी नया–कि ईश्वरत्व भी नया बने सुनीतियॉ नयी कि विश्व भी नया–नया
पुकारती नयी लगन–पुकारता नया सृजन । नये भविष्य के लिए सतत प्रयाण चाहिए ।। "नये संदर्भ"पृ0 1

।। सॉस बोली मनुष से , कि सुन लो जरा , मैं सतत चल रही , चल रही ये धरा ।।
है नियम सृष्टि का अनवरत घूमना , ध्येय में प्राण अपने सतत् फूँकना X X X
तब तड़पने लगी जो दिव्य मनुजात्मा । "मैं कहॉ खो गया था ओ परमात्मा ।।
आज युग धर्म मेरा बनी गति स्वयं । ज्योति बनकर जलेगा अखण्डित अहं ।।
।।। यह ब्रह्माण्ड उसी का घर है , प्राणि मात्र का वह सहचर है । किन्तु देह सबकी नश्वर है ।।"

11 श्री शचीन्द्र भटनागर :–

1 ज्ञान–गंगा का पर्व

घोर तप से ज्ञान–गंगा की बहायी पुण्य धारा । तभी गायत्री जयन्ती कह इसे जग ने पुकारा ।।
तप किया, फिर चेतना का कर लिया विस्तार तुमने । भेद सारे भूलकर अपना लिया संसार तुमने ।।
और तुम्हारे चरण–चिन्हों पर जगत ने पग बढ़ाया । किन्तु छोटी पड़ी तुमको तुम्हारी देह–काया ।।
हो गये तम सूक्ष्म इस दिन , तोड़ तन की जीर्ण–कारा। तभी गायत्री जयन्ती.."अखण्ड ज्योति जून 97

2 शक्ति सम्पन्न कल का दिवाकर रहे , इसलिए हम सभी साधना कर रहे ।
साधना वस्तुतः पात्रता–वृद्धि है, साधना तो स्वयं श्रेष्टतम सिद्धि है,
आत्मशोधन करें , साधना है यही , जागरण–प्रण करें, साधना है यही,
विश्व सारा सजग और तत्पर रहे , इसलिए हम सभी साधना कर रहे ।

"अखण्ड ज्याति" फरवरी 1999

12 डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी :–

जड़ता जीवन में जगी , करें कोई उपचार ।
ऐसा जीवन भार है, सीखें सद्व्यवहार ।।
शरीर सब कुछ है नहीं , इसे चलाता प्राण ।
प्राण शक्तियॉ तीन हैं इच्छा ,किया ज्ञान ।।
जीवन सच्चा देवता , बरसाता अनुदान ।
कल्प वृक्ष सब पाइए , इच्छा फल वरदान ।।
आत्मशक्ति संचित करें, बिखरें नहीं फिजूल ।
करें इबादत इस तरह , होगी तभी कुबूल ।।

"ज्ञान–रश्मि" पृ0 29 , 32

13 डा0 जमना प्रसाद बड़ैरिया :–

1 जितने कलुषित भाव हृदय के , मिलकर उनकी चिता जला दें।
अहं–तुष्टि , मैं–मेरापन त्यागें , राग–द्वेष सब अरे ! मिटा दें।।

"यु0 नि0 यो0 " अक्टू0 98

2 संतप्त युग की वेदना को, अब तुम्हें ही है मिटाना।
सत्य–प्रेम–श्रद्धा हृदय में, दिव्य भावों को जगाना ।। – – –

1 जिसका एक केवल इष्ट , जिसकी व्यष्टि स्वयं समष्टि , जिसका सब जगह आवास ।।

2 जो रहे चिर मूक मेरे छंद बोलो तो ।। बोलना जो बोल दो तुम ,

भेद मन का खेलदो तुम लोक के परलोक के संबध बोलो तो।।

"अवशेष पुण्य " पृ0 14 , 53

17श्री राम कुमार भारतीय :–

मुक्त होऊँ बन्धनों से मोह माया पाश टूटे । स्वार्थ, ईर्ष्या , द्वेष आदिक दुर्गुणों का संग छूटे ।।

प्रेम मानस मे भरा हो हो हृदय में शन्ति छाई, देखता होऊँ जिधर मै, दे उधर तू ही दिखाई ।। – –

सत्य को ही धर्म मानूँ , सत्य को ही साधना मैं , सत्य के ही रूप में तेरी करें आराधना मैं ।।

भूल जाऊँ भेद सब अपना पराया मान तेसा। दें प्रभो ! वरदान ऐसा, दे विभो ! वरदान ऐसा ।।

"उद्बोधन " पृ0 90

2 यज्ञ से सम्बन्धित शब्दावली :–

1 श्री मंगल विजय 'विजयवर्गीय ' :–

। यज्ञ के विज्ञान की अभिव्यक्ति होगी ,

यज्ञ में सूक्ष्मीकरण की शक्ति होगी । यज्ञ काया कल्प की संकल्पना है।।

।। यज्ञ बरसाते हैं पर्जन्य प्राण को मिलती शक्ति अकूत ।

प्रदूषण को करते हैं दूर शुद्ध जलवायु सुयज्ञ प्रसूत ।।

यज्ञ–देव–दक्षिणा में अर्पित है ज्ञान दान । श्रम दान , समय दान साधन का अंशदान।।

पुष्पांजलि मे अर्पित है प्रतिभाएँ , विभूतियॉ ।

महाकल ! स्वाहा हैं कोटि–कोटि विकृतियॉ।।

2 श्री शिवशंकर मिश्र :–

1 इस युग का यज्ञ– "युग सन्देश " पृ0 13 से

जलजाती जिसकी वेदी पर जग में व्याप्त विषमता ,जीवन सौम्य ,सरस कर देने की है जिसमें क्षमता,

युद्ध दमन , शोषण की जगमें जली हुई है ज्वाला ,बना हुआ प्रति राष्ट्र रक्त की आहुति देने वाला ,

बहुत दूर हैसत्य स्वयं जब शिव भय मान रहा है। पर मेरा मन शांति यज्ञ का दृढ़ व्रत ठान रहा है। "

कर्म और फल दोनों का हो भागी करने वाला । मानवता का अभिभावक यह जीवन–यज्ञ निराला ।।

स्वयं पूर्ण कर दे अभाव को जब मानस का सृष्टा । भाव–यज्ञ के लिए चरिन्तन है कविमन की निष्ठा

2 आज होता बनकर आओ, यज्ञ में आहुति दे जाओ ,

अखिल जगती में विखरा दो , यज्ञफल जो कुछ भी पाओ

स्वय की सत्ता मूल सकें वही तो है इस जग का विज्ञ! कर्म ही सच्चा जीवन यज्ञ !!

3 निर्माण यज्ञ!

कल तो माँ ने दिया निमन्त्रण बन्धु तुम्हें बलिदान का!

महायज्ञ आरम्भ हो गया आज नवल निर्माण का !!

आओं होता बनकर उसमें अपनी आहुति डाल दों,

मुक्ति –प्रभा के श्री चरणों में चढ़ा साधना थाल दों,

तुम्हें मिला जो अवसर अनुपम उसका कर उपयोग लो ,

बेला है सामूहिक श्रम की उसमें अपना योग दो।

3 श्रीमती विद्यावती मिश्र :–

करो मत श्रद्धा से व्यापार ! दूर से तुम मुझको देख , पूँछते , 'क्या लोगी वरदान' ?

चाहते हट जायें कुछ देर तुम्हारी पूजा पर से ध्यान ,

विसर्जन के बदले में देव , न देना करूणा मय उद्‌गार !

करो मत श्रद्धा से व्यापार ! "श्रृद्धा " पृ0 13

4 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल –

"लो सम्हालो तुम कुदाली फावड़े , आज युग तुमको निमत्रण दे रहा है ।

लो सुनो गूँजे गगन में मंत्र हैं , देश में नवयज्ञ अगणित हो रहे हैं ।

गा रहे हैं गीत धरती पर कृषक , बीज फसलों के लिए जो बो रहे हैं ।

देश लो नव रूप नव संसार का , आज का मानव यह तुमसे कह रहा है ।"

"पाथेय " पृ0 7

5 श्री बलराम सिंह परिहार :–

। चारों ओर पाप ने पहरे कठिन लगाये ,

चक्रव्यूह क्यों देशवासियो तोड़ न अब तक पाए।।

आज आपसे उत्तर पाने अश्वमेघ हैं आये ।।

।। परम तपस्वी हमें शक्ति दो , हमें दूर जाना है ,

अश्वमेघ यज्ञों की ज्वाला जगमें भड़काना है।

।।। प्राण लेना था नहीं वह तो बहाना था ,

बलि प्रथा में राष्ट्र का गौरव जताना था ।।

प्राण देकर कर सकें जो धर्म का उत्कर्ष ,

चाहता है आज वैसे शीश भारतवर्ष ।।

कर्म और फल दोनों का हो भागी करने वाला ।

मानवता का अभिभावक यह जीवन–यज्ञ निराला है।।

6 श्री डा0 हरगोविन्द सिंह :– जीवन यज्ञ

क्रान्ति के यजमान हैं हम , यज्ञमय जीवन हमारा ।

यह पवित्रीकरण कर दे शुद्ध तन के साथ मन भी , आचमन पावन करे अन्तःकरण , प्रज्ञा , वचन भी ,

स्वस्तिवाचन चाहता समभाव से कल्याण सबका – – –

स्थापना कहती अनल की, ब्रहम का वर्चस्व जागे , हो जहॉ भी ज्योतिदर्शन , शिर झुकाएँ गर्व त्यागें;

अधिष्ठाता –बन्दना है स्तवनगायत्री मनोहर, ज्ञान रूपी व्यजन से हो प्रभा प्राणों की प्रखरतर ; X X

फैले प्रभा परमार्थ की , यह व्यक्त करती आरती, घृत–घ्राण देता दिव्य वातावरण–पोषक भारती ;

'देह नश्वर है– न भूलो यह ' सिखाता भस्म धारण ,

रूष्ट स्वजनों को मना लें, करें त्रुटि हित क्षमा याचन

यज्ञ के आदर्श को हम दण्डवत् प्रणिपात करते ,

अशुभ चिन्तन हो न हमसे भावना यह नित्य भरते ; X X X

यज्ञशाला–प्रदक्षिण में कर्मपथ विधिवत् संवारा । क्रान्ति के यजमान हैं हम ... "यु0 नि0 यो0"(पा0)

7 श्री डा0 रामस्वरूप खरे :–

यज्ञ–रूप वर्चस्व प्रदायिनी, युग साधक की ढाल है।

युग–परिवर्तन की प्रतीक यह, जलती लाल मशाल है।।

नव विचार की क्रान्ति वाहिनी–प्रथम यज्ञ की दिव्य विभा ।

आदि पुरूष की प्रथम प्रेरणा–प्रकृति चेतना–स्वधा प्रभा।।

8 श्री लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र"

यह प्रसव पीड़ा समय की , मॉगती है त्याग तुमसे ।

भेंटने को बहुयें फैला रहा अनुराग तुमसे –

प्राण के स्पन्दनों में तुम नया जीवन जगाओ, मूर्छना त्यागो, अमिय–मन्दाकिनी में फिर नहाओ ।

।। प्रीति का दीपक जलाकर फिर नमन तुमने किया है,

फिर किसी एकान्त में दृग–आचमन तुमने किया है।

झुक रहे है। गीत के बादल बरसने को अधर से, लग रहा फिर भावनाओं का हवन तुमने किया है।।

9 श्री मती माया वर्मा :–

सुन महाकाल का आह्वान–चलपड़े–यही युग धर्म प्रबल।

जीवन यज्ञाहुति बन जाये–ज्वालाएँ धधकें मचल–मचल ।।

।। तुम जगाओ सुप्त आस्तिकता सखे। सीख जाएँगे सभी , करना नमन ।।

लोकमंगल हेतु समिधा बन जलो । स्नेह का घृत होम करते, तुम चलो ।।

कर्म की साकल्य–ज्वाला त्याग की। सीख जाएंगे सभी करना हवन।।

"यु0 नि0 यो0" फर0 84

10 डा0 सरोज बाला चौधरी :–

धन समय हों खाद पानी , बीज ही गुण धर्म हों, हर वस्तु साधन में लगे प्रत्येक का ये धर्म हो । परमार्थ फसलें ही उगें हर खेत से खलिहान से ,धैर्य ,संयम त्याग , सेवा फल मिलें उद्यान से X X खिल पड़े खिल पड़े ,मन का कमल ऐसी पड़ें रवि रश्मियॉ,

लोक मंगल में पड़ें सब श्वास की आहूतियॉ

मानवी मन में पले न अब कोइ दर्भावना , श्रेष्ठता अंकुरित हो, युग पुरूष की कामना ।

"यु0 नि0 यो0" जनवरी 1998

11 श्री शचीन्द्र भटनागर :–

1 अग्निहोत्र का लक्ष्य यही है , जीवन यज्ञ बने सारा।

यह अवसर है ज्ञान यज्ञ से चिंतन विमल बनाने का ।।

ज्ञान यज्ञ की हर चिनगारी दावानल बन जाएगी, उसकी लपटों में कोई दृष्प्रवृत्ति न बचने पाएगी। महाकाल की इच्छा हे यह निश्चय ही पूरी होगी , केवल वे पछताएँगे जिनकी उनसे दूरी होगी ।। कोई नहीं विकल्प आज है करने–मरने की वेला। आज नहै अवसर संशय में बिल्कुल समय गॅवाने का

2 है निहित इस यज्ञ में ही –राष्ट्र की अभ्यर्थना ।

बलवती होती बहुत–राष्ट्रीयता की भावना ।।

राष्ट्रहित पुरूषार्थ की–मिलती इसी से प्रेरणा, और दैवी शक्तियों में संगठन की चेतना ।। X X X श्रेष्ठतम इस यज्ञ से–भीषण उठा तूफान हे, दुष्टता के पॉव अब–जमना नहीं आसान है।। अब यहॅ दुष्वृत्ति कोई– भी नहीं टिक पायेगी, फिर धरा निर्मल बहुत सुख–शक्तिमय हो जायेगा ।।

"कान्ति–गीत" पृ0 7

12 वीरेश्वर उपाध्याय :–

कलि कलुष से विकृत उपेक्षित तिरस्कृत वह था हुआ ।

उस यज्ञ को नव रूप जिसने प्रखर तप से दे दिया ।। "

"प्रज्ञा अभियान" सितम्बर 1982

3 प्रकृति से सम्बन्धित शब्दावली :–

1 श्री मंगल विजय 'विजयवर्गीय' :–

I प्राकृतिक वातावरण में दिव्य धारा छलछलाती,

प्रकृति स्नेहांचल उड़ाकर प्राण ऊर्जा को पिलाती ।।

II गरिमा है दिव्यता की ' देवात्मा हिमालय ' महिमा है भव्यता की देवत्मा हिमालय।

III बसंती–सृजन का समय आ गया है , प्रकृति जीर्ण व शीर्ण को त्याग देगी ।

नई कोपलों मे रस पाग देगी बसंती करण का समय आ गया है।।

IV प्रकृति हमारी संगी–साथी । जनमंगल का पाठ पढ़ाती ।

करें न वातावरण प्रदूषित , हमको प्राण पीयूष पिलाती ।।

V प्राणियों का प्राण है पर्यावरण, स्वर्ग का सोपान है पर्यावरण ।।

VI परिर्वतन के बिना न होता , विभीषिक का नाश ।

मूर्धयो जागो मुरदों से , रही न कोई आश।। X X X

प्रकृति क्षुब्द हो उठी आज फिर सहा न जाता त्रास । मूर्धयो .....

ऋतु वसन्त आने से पहले , पतझर हो जाती है। नव शिशुको पाने से पहले मॉ पीड़ा पाती है।

2. श्री मती विद्यावती मिश्र :–

। तुझमें ज्योति इसी से ही तो सूरज चमका करता ,

तुझमें शन्ति इसे से चंदा शीतलता है भरता , X X X

हिमगिरि तुंग विशाल इसी से झुका न तेरा मस्तक ,

सरितायें गतिवान चरण ,की गति न सकी इससे रूक

नव–घन बन तुने जग–मरूथल पर जीवन सरसाया ,

देख रहा जो कुछ , वह तेरे ही भावों की छाया ।।

"ज्योति " पृ0 15

।। बहुत देर से गरज रहे हो , बिजली बनकर तरज रहे हो,

किन्तु भूमि पर अभी न छोड़ा एक भी जल ! कजरारे बादल ।।

तुम्हें जेठ ने दूर भगाया, पर असाढ़ ने पास बुलाया,

करती है संकेत निरंतर सावन की हलचल ! कजरारे बादल ।।

खेतों में जीवनबन बरसो, जग को पुलकित लखकर हरषो,

सौरभमय उपवन–सा करदो मानव का मरूथल ! कजरारे बादल ।।

"ज्योति " पृ0 19

3 श्री बाबूलाल जैन 'जलज' :–

जय श्रम के भगवान की

विष के बीज न बोने देंगे , भौतिकवादी खेत में।

झूठे महल न बनने देंगे, भ्रष्टाचारी रेत में ।।

समता की छाया फैली है , ममता के हर गॉव में।

आज नयी थिरकन आयी है, संकल्पों पॉव मे ।।

कठिन जेठ की दोपहरी भी, लगती शीतल छॉव सी,

आत्म–शक्ति जागी है नूतन अंगद के दृढ़ पॉव सी ।।

श्रम की देवी तिलक लगाती , भारत मॉ के भाल में,

आज सफलता की कुंजी है, निष्ठा रखो कुदाल में ।

गूँज रही वाणी घर–घर में , आत्म–त्याग बलिदान की,

जय किसान की जय जवान की , जय श्रम के भगवान की "यु0 नि0 यो0" 5 जन0 1975

4 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल :–

। नील गगन में श्याम बदरिया छा गई । गर्मी बीती अब तो बरसा आ गई ।

ठंडी–ठंडी पवन मस्त हो बह रही , फूलों की हर बगिया हँस कर कह रही ,

पतझर के दिन बीते एक खुमार में – अब तो नई जवानी हममे आ गई।X X X

झूम–झूम के नाचे मस्त मयूर है। , पंछी चहके नीड़ो से जो दूर हैं ,

पिया–पिया कर रही चातकी डाल पर– साजन की जब याद उसे तड़पा गई।

सतंरगी अम्बर पर उठी कमान है, बाला झूमे पर गाती मृदु गान है,

भीनी–भीनी गन्ध उठ रही भूमि से – ताल तलैयों में लहरें मुस्का गई । नील गगन में .....

"पाथेय" पृ0 20–21

5 श्री बलराम सिंह परिहार :– । करो शक्ति आह्वान :–

शक्ति ही मेघ, शक्ति ही सूर्य , शक्ति की प्रलय और पवमान ।

शक्ति की पूजा होती देख , शक्ति को वरण करो इन्सान ।।

।। नदी किनारे एक नारियल का था पेड़ खड़ा अति प्यारा।

और पास में वहीं बह रही थी सुन्दर निर्झर की धारा।।

ऊपर से नीचे गिरने में पत्थर एक टूटता आता ।

बार–बार बढ़ता धारा में उलट–पुलट यद्यपि हो जाता ।।

"यु0 नि0 यो0" 20 दिस0 1973

।।। टूटकर गिर पड़ी पॉव की बेड़ियॉ , ज्योति से हर दिशा जगमगाने लगी ।।

उड़ चले व्योम को भावना के विहंग , नाश की तम निशा डगमगाने लगी ।।

पौ फटी , राग फूटा , सुबह हो चली , घर , नगर , गॉव , दर–दर मुखर छा गया।

6 डा0 हर गोविन्द सिंह :– । शक्ति संचार :–

अँधेरी रात बीतेगी , बुझे दीपक जलाओ तो,

उदित होगा नया दिन मान , जागृति–गान गाओ तो ;

तुम्हारे ही इशारे पर नियति का चक्र घूमेगा,बदल देगा समय करवट,बिगुल बढ़कर बजाओ तो!

।। जब बरसाती रैन अँधेरी बन जाये तूफानी ,

घर के द्वार बन्द हो जाएँ , मिले न ज्योति निशानी –

तब सीने पर बज्रपात ले, पंजर स्वयं जलाये –चल

तू चलता रह एकाकी, अविचल कदम बढ़ाये। "पुष्पांजलि" 68, 42

7 डा0 रामस्वरूप खरे :–

रवि बिखेर देता है जैसे, नव–प्रकाश हँस घर–घर ।

करें प्रशस्त पंथ त्यों ही हम , कुश–कॉटे चुन चुन कर ।।

घन भी तो जग की करूणा लख–पिघल बरस पड़ते है।

व्यथा मिटाने तप्त हृदय की– अश्रु उमड़ पड़ते हैं।।

तृषित धरा की प्यास बुझाने , क्यों न बहें बन निर्झर।

'जब तक लक्ष्य न प्राप्त ' लड़े हम , बाधाओं से डटकर ।।

"यु0 नि0 यो0" 22 अप्रैल 1965

8 श्री लाखन सिंह भेदौरिया "सौमित्र"; राष्ट्र शिल्पियों से –

"झंझावत रहेंगे , हरदम ऐसी बात नहीं;

ऑधी टिकती नहीं, विटप तो फिर भी रहते हैं ,

लिए फलों की भेंट, थपेड़े अनगिन सहते है।X X X

चढ़ती बाढ़ उतर जाती , पर सरिता बहती है , झंझाबात चले जाते , नीरवता रहती है कियाहीन कोलाहल तब मुँह स्वयं छिपाती है– अब साकार किया प्रकटित हो सब कुछ कहती है।।

"यु0 नि0 यो0" 20 दिसम्बर 1976"

9 श्री मती माया वर्माः– ज्योति से ज्योति मिलाये जा!

जिसने ये नक्षत्र रचाये , ऋतुयें–दिन और रात बनाये।

सर–सरिता–सागर लहराये , और विविध प्राणी उपजाये।।

उसकी व्यापकता लखकर– उसका अनुमान लगाये जा। ज्योति से ज्योति मिलाये जा ।

10 श्री शचीलद्र भटनागर :–

। सौम्य नीलाकाश, हीरे–मोतियो जैसे सितारे ।

व्योम से झरते हुए वे मेघमाला के फुहारे ।।

निर्झरों की गोद में कल–कल उछलती–सी तंरगे, इन सभी से झर रहा उल्लास, नित–नूतन उमंगें ।।

।। अब न धरती का सुरक्षा–कवच दुर्बल और होगा ,

मॉ समझने का प्रकृति को , एक नूतन दौर होगा,

फिर न उसकी शक्यिों का और दोहन हो सकेगा ,

वायु जल अथवा धरा का फिर न शोषण हो सकेगा ।

जल न पायेंगी वनस्पतियॉ , न झुलसेंगी लताएँ ,

उपवानों में फूल मुरझाया झरा कोई न होगा। X X X

शान्ति सरिता में बहेगी , प्यार पर्बत से झरेगा "अखण्ड ज्योति " मई 2000

11 श्री वीरेश्वर उपाध्याय –:

रवि रूप तपता यज्ञ जो पर्जन्य का शुभ स्रोत हैं ।

देवत्व का आधार जिसमें प्राण ओत प्रोत है।। X X X

ओजस विमल तेजस प्रखर, वर्चस महत् के तत्वचित्।

भंडार में जिसके भरे सबसिद्धि सिद्ध्यादिक सहित ।। " "प्रज्ञा अभियान " सितम्बर 1982

12 डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी :–

जिम्मेदारी से करें , जो जन अपना काम। प्रतिभाशाली वे बनें , करते ऊँचा नाम ।।
मानव ऐसा चाहिए , अन्दर से मजबूत । डिगैन सत से एक क्षण, पक्का यही सबूत ।।
शुभकर्मों के पुण्य से , नवयुग आता जाय । बदलेगी आकृति नहीं , प्रकृति बदलती जाय ।।
सद्चिन्तन नियमित करें , सद्गुण करें सहाय । दुर्गुण से अति दूर हो, बुद्धि देंइ बिनसाय ।।

"ज्ञान–रश्मि " पृ0 34 , 36 , 54

13 श्री मदन लाल श्रीवास्तव :– आसान नहीं साथी –

राह रोक सके यह आसान नहीं साथी ! क्या रोक सके हम तुम नियति की नाट्य कला ?
क्या रोक सके प्राची का रवि जो निकल चला ?कब रोक सके उगने से चॉद–सितारों को–X X X
किसने रोकी कल–कल करती सरिता धारा ? धरा ने तो जड़ पत्थर को भी ललकारा!
किसने सिन्धु के उरकी अग्नि पहचानी–जो ज्वार बनी, लहरों पर उछली , तज कारा ।
बिन्दु में भी सिन्धु की आान रहीं साथी! राह रोक सके ....."यु0 नि0 यो0 " 20 अप्रैल 1974

14 श्री राघेश्याम पाण्डेय 'वत्स' :–

सुख के दिवस गुजारे तुमने , दुख का शेष चुकाना होगा ।
खेला है , फूलों से तो–शूलों को को भी अपनाना होगा ।। – – –
मैंने दिन मणि को सन्ध्या की –कुटिया मैं सोते देखा है।
मैंने किरणों की छाया में –गिरवर को गलते देखा है।।
यह तो सच हे सघन घनों में –पावस का आसार बहुत है।
लेकिन मनहर शशि का हॅसना ,अम्बर पर न बहाना होगा ।। – – –
धरती पर सुरसरि को लाने –किंचित जी न चुराना होगा ।
सुख के दिवस गुजारे ..... "यु0 नि0 यो0 " 5 जुलाई 1974

15 श्री राम कुमार भारतीय :–

क्षुब्ध न हो, भयभीत न हो, यदि आ जाये तूफान । आगे बढ़कर वक्ष अड़ा दे ,मत खो दे अवसान ।।
चला–चला पतवार हाथ की नौका कर विपरीत । बढ़ता जा जीवन–सागर में, इन लहरों को जीत ।।
प्राणों के पंखों में भर लो श्रद्धा और विश्वास । नयनों टकरात होवे वह ऊँचा आकाश ।।

"यु0 नि0 यो0" 5 जुलाई 1975

16 श्री सत्य प्रकाश बजरंग :–

पवन गाये लहर गाये गगन यह मंत्र दोहराये ,
उठो बलिदान का क्षण है यह बेला टल नहीं जाये।। X X X
गगन में उठ रही ऑधी प्रलय का राग गाती है ,
मचल कर कह रही गंगा करो ताण्डव बताती है
शपथ तुमको जवानी की शपथ जीवन कहानी की ,

तपो तुम सूर्य से तब तक यह दुश्मन गल नहीं जाये । यह बेला टल नही जाये ।।

"यु0 नि0 यो0 " 20 फरवरी 1975

17 श्री राम गोपाल दीक्षित :–

जहाँ कहीं भी आफत आई । तरूणाई ने लाज बचाई ।।

नापी व्योम ऊँचाई जिसने , सागर की गहराई ।।

घर्राता है गगन तुम्हारी , जोश भरी ललकारों से ।

हो उठती हैं ध्वनित दिशायें होश भरी हुंकारों से

काल की चाल बदलने वाले । आन–बान पर मरने वाले।। "यु0 नि0 यो0 "5 मार्च 1975

18 श्री झलकन लाल वर्मा 'छैल' :–

अमर रहेगी जग में गाथा तेरे यश की , तेरे बल की। – – –

तू बनकर आलोक बस गयी वीरों के इतिहासों में , तेरा शौर्य हिलोरें लेता जन जीवन की सॉसोंमें, तेरा गौरव गान थिरकता है रेवा के चंचल जल में , तेरा गौरव गान बिछाये है नव जीवन गढ़मण्डल आभा कभी मलीन न होगी रानी तेरे यशः कमल की। अगर रहेगी ... "यु0 नि0 यो0" 20 मार्च 75

4 स्थान विषयक शब्दावली का आलोच्य काव्य में प्रयोग :–

1 श्री मंगल विजय ' विजयवर्गीय :–

I गंगा की गोद छाया हिमालय की शान्ति कुन्ज है।

देवात्मा हिमालय के ऋषियों का तपपुंज है।।

II तपोभूमि की 'स्वर्ण जयन्ती ' तप को वरण करें।

युग महर्षि की तपोभूमि को आओ नमन करें ।।

III शान्ति कुन्ज युग तीर्थ है , तप–त्याग है ऋषि युग्म का ।

ज्ञान की गंगोत्री करती शमन छल छद्म का।।

IV साधना से सिद्धि का होता परीक्षण , स्वयं के द्वारा स्वयं का ही निरीक्षण ।

'ब्रहमवर्चस' समन्वय की साधना है , 'स्वर्ग' भू को बनाने की प्रेरणा है। "

2 श्री शिवशंकर मिश्र :–

I तुमने ही जब भेजा तब ही आया गृह ऑगन में ,

तुम्हीं बुलाओगे तब पहुचूँगा नन्दन कानन में ।

मेरे अपने वश में क्या है मैं तो दास अनाम ।।

तब तक मुझको स्वस्थ रखोगे तुम्हीं 'स्वयं ' श्री राम ।

II हम तो पंछी प्रेम नगर के हमें बसेरा क्या।

हम तो उड़ते ही रहते है , सहज वायुगति से बहते हैं ।

हर कोमल डाली पर घर है , हमें बसेरा क्या ।।

III मिले मुझे सुरधाम , देवता को करके बदनाम , मुझे स्वीकार नहीं ।

"अवशेष पुष्प" पृ0 18 , 26 , 41

3 विद्यावती मिश्र :–

I मानवता को कीड़ास्थल ये खेत और खलिहान हैं।

जहॉ कर्म की पूजा मेंरत तपसी–व्रती किसान हैं।। "मुक्ति " पृ0 55

II परम उदार दयालु धर्मरत थे दशरथ महाराज ।

धाम आयेध्या दूर–दूर तक फैला उनका राज ।। "भगवान राम" पृ0 4

III मुझे चाहिए जो मरघट की करें नित्य रखवाली ।

चाहे तपती हुई धूप हो काली वैकाली ।। "महाराजा हरिश्चद्र " पृ0 25

IV आगे बढ़कर चित्रकूट में प्रभु ने कुटी बनाई ।

निर्जन वन प्रदेश में मानो नूतन आभा छायी ।। "भगवान राम " पृ0 29

4 श्री बाबूलाल जैन 'जलज ':–

I माता–बहन–सुता–पत्नि का जिस घर में होता सम्मान ,

तपो भूमि वह देव धाम है जहॉ वास करते भगवान ।। "यु0 नि0 यो0"अक्टूबर 1996

II मन्दिर मस्जिद गुरूद्वारा में , भेद न भक्ति भाव धारा में ।। "यु0 नि0 यो0 " जुलाई 1982

5 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल –:

I बहुत युग पहले मथुरा–बीच , रूपसी रहती एक ललाम । "अनुताप" पृ0 1

II " स्वर्ग का संसार हम भू पर बसायें । आज नव निर्माण के हम गीत गायें। "पाथेय " पृ0 1

6 श्री बलराम सिंह परिहार :–

I गिरजा गिरे न मस्जिद टूटे वह मन्दिर निर्माण करें X X X

हरिद्वार से कलकत्ता तक गंगा जन कल्याण करे। X X X

दीपक एक जलाकर रख दो गिरजा या गुरूद्वारा हो।

वन हो या पर्वती गुफा हो उसर या गलियारा हो ।।

श्री मती माया वर्मा–:

हुआ है अश्वमेघ नया, नये सारे चलन होंगे।

चढ़ेगा बलि न घोड़ा–दोष दुर्गुण ही हवन होंगे।। X X X

जगेगा राष्ट्र का गौरव मिलेगा प्राण निष्ठा को,

पुनः ले आएंगे हम देश की खोई प्रतिष्ठा को।।

जगेगी चेतना नव गन्धमय जल औ पवन होगें। हुआ है अश्वमेघ .....

|| स्वर्ग को चल पड़े स्वर्ग के देवता , स्वर्ग के अभ्युदय का समय आ गया ||

"यु0 नि0 यो0" 20 दिसम्बर 1973

||| माटी गुरू ग्राम से आयी , माटी हरिद्वार आयी

माटी से शान्ति कुन्ज से आयी– अब तो जागो वीर प्रताप ।

कैसे बैठे हैं , चुपचाप–आप सब बैठे हैं चुपचाप ||

हालत क्या हो गयी हमारी–भारत माँ कर रही विलाप|| "यु0 नि0 यो0" दिसम्बर 92

7 डा0 हरगाविन्द सिंह :–

| जग का संताप मिटाने को , जो सुख समाधि को ठुकराता ।

वह मानव ही इस वसुधा पर ,नर से नारायण बन जाता है|| "यु0 नि0 यो0" अप्रैल 1997

|| जिसने मरूस्थल में उपवन लगाया , आँधी में आशा का दीपक जलाया ;

"यु0 नि0 यो0 " अक्टूबर 74

||| आज बेचैन हैं स्वर्ग की शक्तियाँ हे मनुज ! तुम उठो , दिव्य अनुदान लो ।

"पुष्पांजलि" पृ0 16

IV पायेगा निश्चय नरक वही , जो कुत्सित अर्जन करता है । "पुष्पांजलि" पृ0 21

V चन्दन है इस देश की माटी , भूमि तपो भूमि हर ग्राम है X X X

रही सदा मानवता वादी इसकी संस्कृति–धारा ,

मिलकर रहते मन्दिर मस्जिद गिरजाघर गुरूद्वारा ; "पुष्पांजलि" पृ0 34

8 डा0 राम स्वरूप खरे :– .

मरूथल नन्दन कानन होगा , भ्रम की गंगा जब आयेगी ।

फसलें झूमेंगी खतों में धरती दुल्हन बन जायेगी ।

खेलेगा आँगन में भविष्य , नव–कान्ति घटा घिर आयेगी । X X X

ये सब सीमा में बदलेंगी , गम की जंजीरे टूटेगी ।

मन्दिर मस्जिद गुरूद्वारों की भेदक दीवारें टूटेगी ।।"नये युग का अभिनव निर्माण " पृ0 5

9 श्री लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र" –: सप्त सरोवर में भागीरथी का दृश्यः–

सप्त ऋषि–सा तपो वन , समाधिस्थ है , प्राण–बनकर प्रभंजन , समाधिस्थ है ,

एक ही राग है राग–वैराग्य में , हर दिशा में निरन्जन , समाधिस्थ है !

नाद हर–हर गुँजाती मुखर जा रही । कौन–सा गीत गाती लहर जा रही ?

कूल अमृत छके , मुग्ध हैं , शान्त हैं ! भाव भगीरथी में बसे कान्त हैं !

दिव्य गिरि–श्रृंखला माला खड़ी , तृप्ति पी – व्यर्थ प्यासे विकल प्राण , दिग्भ्रांत हैं।

पाप संहार की तू किधर जा रही ? शान्ति का गीत गाती मधुर जा रही । "

10 श्री मती माया वर्मा :–

| महलों से झोपड़ियों तक , पगडंडी जोड़े रास्ता ।

हलों हथोड़ों और कलम का हो आपस में वास्ता ।। "यु0 नि0 यो0" 20 अगस्त 1974

।। मन्दिर में झुकने वाला सिर परिचय देता आस्तिकता का ।
मानव का दर्द मिटाने वाला ही , हामी मानवता का ।।

11 श्री वीरेश्वर उपाध्याय :–

। जन्म लिया आँवल खेड़ा में सारा जगत निहाल किया ।
हे युगऋषि श्री राम आपने सच मुच बड़ा कमाल किया ।।

।। चाह स्वर्ग प्राप्ति की पूर्ण क्यों नहीं ? कामना बनी रही , साधना हुई नहीं।।
स्वर्ग प्राप्ति की सुनो–राह कुछ कठिन नहीं।
मनुज बने देवता , स्वर्ग आयेगा यहीं ।। "कांन्ति गीत " पृ0 60 , 58

।।। शान्ति कुन्ज 'गुरूकुल ' है पावन , युग ऋषि का तप धाम है।
युग के तक्षशिला नालंदा , गुरूकुल तुम्हें प्रणाम है।। "अखण्ड ज्योति" मार्च 1996

12 श्री शचीन्द्र भटनागर :–

। घोर भगीरथ–तप से गंगा उतर धरा पर आयी थी ,
गुरू के तप से वही ज्ञान की गंगोत्री कहलायी थी ,
गंगोत्री का जल लेकर हम सेतु बन्ध तक जायेंगे ,
पूरब–पश्चिम , उत्तर–दक्षिण सबको एक बनायेंगे । "यु0 नि0 यो0" जून 99

।। तुम शंका मत करो स्वयं पर , गुरूवर साथ तुम्हारे हैं ,
तपो भूमि और शान्ति कुन्ज दो हाथ उन्हीं के न्यारे हैं , X X X
साधारण बीमार चिकित्सालय ले जाये जाते हैं ,
महारोग में किन्तु चिकित्सक दल घर–घर तक जाते हैं।"कांन्ति के स्वर " पृ 4 , 5

।।। शान्ति कुन्ज साधक गण का गुरूद्वारा है।
अखिल विश्व ने यही सत्य स्वीकारा है ।। – – –
जीवन जीना यहाँ सिखाया जाता है , ऐसा उन्नत भाव जगाया जाता है ,
जिससे अपने प्रति विश्वास हुआ करता है, मन न हीनता का फिर दास हुआ करता।
बहतीं यहाँ अजस्र , ज्ञान की धारा है। शान्ति कुन्ज साधक गण का गुरूद्वारा है ।।
"अखण्ड ज्योति " अगस्त 2004

13 श्री जितेन्द्र रघुवंशी :–

। तपोभूमि से शान्ति कुन्ज से , अगणित ज्योति जलाई ,
मानव में देवत्व जगाने ,ज्योति अखण्ड जलाई।। "स्वर्ण जयन्ती " शीर्षक कविता से

।। अश्वमेघ की ध्वजा उठाओ , आज सुअवसर आया है ।
महाकाल ने राजस्थानी वीरो तुम्हें बुलाया है ।।
गोदावरी , कामखेड़ा पर , महावीर की छाया में ।

V आज कुछ उल्टी हवा ऐसी चली है , आज की हर द्रोपदी जिसमें पली है।
इस हवा में दुःशासन मायूस क्यों हो , द्रोपदी खुद नग्न होने को तुली है।।

2 श्री शिव शंकर मिश्र :–

I कैसा युग है? दानव पहने हुए आज मानव के कपड़े ,
कैसा युग है ? वैभव अपने हाथों में ईश्वर को पकड़े , X X X
पुरूष आज है पार्थ नहीं वह , कीड़ा–कलित अनंग बना है ,
नारी है श्री हीन आज वह एक वासना है, सपना है,
विष से यहाँ बुझाई जाती , सरल प्यास, यह कैसा युग है। "युग–संदेश " पृ0 50

II मेरे पास प्रलोभन ही क्या जो मैं कर दूँ भेंट ,
किन्तु तुम्हारे ही अंचल में निज को लिया समेट ,
जब अवसान साँझ से पूँछे कितनी दूर विहान–भ्रमरों को कर लेने देना कलियों का रसपान ।।
करो तुम इतना ही अहसान ।। "सुधियों की बरसात " पृ0 35

3 श्री मती विद्यावती मिश्र :–

I राज–छत्र का जिसे न मोह हो सका । घोर संकटों में जो धैर्य न खो सका ।।
"युग वीणा " पृ0 60

II नया रूप जिसमें सात्विकता, मानव का श्रृंगार करेगी।
वह संजीवन शक्ति मिलेगी , जो जग का दुःखभार हरेगी।। "भगवान राम" पृ0 7

4 श्री बाबूलाल जैन 'जलज' :–

I मन श्रंगार एक काफी है तन के सौ श्रृंगार से । एक आत्म चिन्गारी काफी , सौ बुझते अंगार से ।

II पुरूष सबल पौरूष गुणधारी , नारी पूनम की उजियारी X X X
जीवन रथ के दोनों पहिए , विजय हार बनते अम्लान । "यु0 नि0 यो0" जुलाई 82

III जिसकी शील सनी आँखों में हुआ कभी कम प्यार नहीं ।
नारी को क्या अपने ढंग से , जीने का अधिकार नहीं ।। "यु0 नि0 यो0" मार्च 1983

IV विधि की तुम जीवन्त कलाकृति , मंगल मय कल्याणी X X X
श्रद्धा की साकार मूर्ति तुम , आदि शक्ति है नारी ।। "यु0 नि0 यो0" वि0 1981

5 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल–

वासवी, दर्पण लखि छवि सर्व , गयी सब विधि से हो सन्नद्ध ।
दिखाकर निज सौन्दर्य–स्वरूप , साधु से बोली यो कर बद्ध। X X X
सजाये तन पर शुभ परिधान , किये बहुश्रम सोलह श्रृंगार ।
खड़ी थी इक बाला सुकुमारि , जताने अपना पावन प्यार । "अनुताप " पृ0 4–6

6 श्री बलराम सिंह परिहार –

I शक्ति ही है गौरव का चिन्ह , शक्ति का रूप स्वयं भगवान ।

शक्ति की महिमा बड़ी विशाल, इसलिये करो शक्ति–आह्वान।। "यु0 नि0 यो0" 20 सित0 73

।। खिंचते चीर रो रही नारी – युग के दुःशासन से हारी "यु0 नि0 यो0" दिस0 1992

।।। इन्द्र–सा ऐश्वर्य पाकर भी सदा वामन रहे। "यु0 नि0 यो0" (कांन्ति विशेषांक) जून 1997

7 डा0 हरगोविन्द सिंह –

। पहिन गले में कंठी–माला ,पाला है शैतान को,किन्तु न पाला अब तक हमने धरती के इन्सान को ।

।। भूख से व्याकुल मनुज का अन्न में भगवान है ,
नग्नता को चीथड़ा भी कृष्ण का वरदान है ;
पर जिसे साधन यहाँ सुख–भोग के सारे सुलभ–खेद है, उसको सहोदर सूझता शैतान है।

।।। केश हैं सिर पर , मगर चोटी गँवायी , बन्दना , ध्वज की न गुरू नेही सिखायी;
क्यों न हो उपहास–भाजन वह जनेऊ–शक्ति जिसकी चाबियाँ भर टाँग पायी ।

IV वासनाओं के धुएँ को कह रहे श्रृंगार , बन गया सस्ता बहुत ही इश्क का बाजार ;
हो सकी क्या काव्य की फिर उस प्रणय से भेंट? खेलता हो सिंह से जिसका प्रथम उपहार ।
"पुष्पांजलि " पृ0 23 ,43 , 55 , 72

8 डा0 राम स्वरूप खरे –

। धँसी आँखें सूखे से केश , देह कृष–पीत, शिथिल सब अंग ।
दिखाई देते प्रेत समान, कर रहा हो जीवन ज्यों व्यंग।। X X X
पहिन कर पीत–पुण्य परिधान , भरे घट धरे शीश पर भव्य
सुशोभित थीं कुमारियाँ आज– दीप जलते थे नूतन दिव्य X X X
तिलक–अक्षत से शोभित भाल , बढ़ा शतमन्यु वेदिका–ओर । शतमन्यु " पृ0 1, 25 , 27

9 श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र':–

साँझ से आँखे मिचौनी खेलकर जी भर चुकी है, षोडशी बनकर निशा अठखेलियाँ सब कर चुकी है।।
चाँद के संग कर दिये हैं तप–पिताने हाथ पीले, अब विदाई का सभी श्रृंगार रजनी कर चुकी है।।
लो उषा ने माँग में सिन्दूर कब का भर दिया है। तार को यह बारात रह सकती नहीं है
भोर फूटेगी , अँधेरी रात रह सकती नहीं है। " "यु0 नि0 यो0 " 5 जून 1976

10 श्री मती माया वर्मा –:

। आखिर जलकर भस्म बनेगा तन का मत श्रृंगार करो,
साथ जाएँगे संस्कार शुभ सद्गुण से मन अतः भरो।
शाश्वत यात्री , आत्मा का पाथेय जुटाओ पौरूष से ,
होगी तृप्ति , अगर औरों पर तुम बनकर प्रेमांबु–झरो।। "

।। विज्ञापन का साधन न बनाओ उसका तन , लांछित न करो साहित्य बीच उसका जीवन।
तूलिका अंग में चुभा बनो मत दुःशासन , माँ कहे उर्वशी को –बन जाओ वह अर्जुन ।
आँचल के नीचे ढकी हुई लाज हरो, कृतियों में उसका गरिमामय ही रूप भरो।।

उसका केवल रमणी स्वरूप क्यों भाता है ? परिवेश आयु के साथ बदलता जाता है।।
क्यों ध्यान न उसकी पावनता का आता है ? हर नारी अन्तरतम से केवल माता है।।
उसका विराट और भव्य भावमय रूप व वरो । कृतियों में उसका .....

"गागर में सागर " पृ0 27 , 49

।।। युग की यही पुकार बसन्ती चोला रंग डालो ।
त्याग तितीक्ष का रंग है यह सुनो जगत वालो। बसन्ती चोला रंग डालो।।
इस चोले को पहन भगत सिंह झूला फॉसी पर ,इस चोले का रंग खिला था रानी झॉसी पर ।।
पद लोलुप मत बनो ओ ऊँचे पद वाले। बसन्ती चोला रंग डालो ।। "प्रज्ञागीत" पृ0 42

11 श्री शचीन्द्र भटनागर :–

। हमने पाई थाह आज माँ ! तेरे मन की पीर की,
चले चदरिया ओढ़ बसंती , हम बलिदानी , वीर की।
यही वसंती चादर ओढ़ी नानक ने , रैदास ने X X X
पहना था यह वेश बासंती , जब रणवीर प्रताप ने,
छुड़ा दिए छक्के दुश्मन के फिर चेतक की टाप ने,
इसी वेश में निकले विस्मिल ,भगत सिंह , आजद थे,
किए निछावर प्राण , न लेकिन मुख पर दुःख अवसाद थे। " "करिष्ये वचनं तव" पृ0 48

।। यह केसरिया बानाः–
अब तेरा दुःख दर्द हृदय का , माँ हमने पहचाना ।
इसीलिए तो पहन लिया है , यह केसरिया बाना X X X
यह बाना तप और त्याग की खरी प्रेरणा देगा ,
इसमें सारा विश्व नये युग की किरणें देखेगा।।
दुर्भावों से यही मनुज का रक्षक ढाल बनेगा ,
अँधियारे में यही धधकती हई मशाल बनेगा ।। "क्रान्ति गीत " पृ0 25

।।। लाद लिया तन पर क्यों बहनों ! इन गहनों के ढेर को ,
लगता तुम दे रहीं निमंत्रण सारे चोर लुटेरों को ।
चमक रहे हैं हीरे–मोती कर्णफूल गलहारों में ,
सबका मन मोहती मुद्रिका गली–सड़क–बाजारों में ,
कंगन पर मन महिलाओं का फिसल फिसल सा जाता है,
तन जेसे बन गया नुमाइश , जो सबको ललचाता है,
किया इकट्ठा चमक–दमक के बदले घने अँधेरों को। लगता तुम दे रही .....

'आभूषण प्रेमी बहिनों से " शीर्षक कविता से " क्रान्ति के स्वर' पृ0 44

12 श्री वीरेश्वर उपाध्याय :–

असुर तत्व हावी है सब पर , कैसे तुम्हें सुहाता है ,
वीर भूमि की ओ संतानों , युग ऋषि तुम्हें बुलाता है।
बहन–बेटियों की इज्जत पर गिद्धों से मंडराते ,
नेग दहेज और फैशन से , उनको डसते जाते ।

6 आचार विचार से सम्बन्धित शब्दावली का आलोच्य काव्यों में प्रयोग

1 श्री मंगल विजय ' विजय वर्गीय '–:

। अब सद्भाव और सद्चिंतन जन–जन में पल्लवित हो रहा ।
जन मंगल–पथ पर चलने को मानव–मन उल्लसित हो रहा ।।
आप स्वयं ऋतुराज बन गए तो बासंती सृजन हो गया।।
।। अगर आचरण नहीं मिले तो फिर आदर्श कहॉ जाएँगे ,
सिद्धान्तों के लिए एषणात्रय से हमको बचना होगा ।
सादा जीवन–उच्च विचारों वाली सृष्टि रचना होगा ।
सैद्धान्तिक जीवन जीकर ही हम सिद्धान्त बचा पाएँगे ।।
।।। आदर्श और आचरण :– रह सकेगा अपाहिज न आदर्श अब ,
अब उसे आचरण के चरण चाहिए।
उच्च–आदर्श को अब कथाएं नहीं , अब कियात्मक उसे आचरण चाहिए।। X X X
आचरण हीन आदर्श हे अब तलक , कल उसे प्राण का अवतरण चाहियए ।।
"यु0 नि0 यो0" 20 जन0 1977

2 श्री शिवशंकर मिश्र –:

। जहॉ पर नहीं राग या द्वेष , प्यार ही प्यार प्यार ही पयार
दया, ममता, समता, सद्भाव बने जिस देहरी के उपहार–खोलदो नयी सुबह के द्वार
।। भाव सुमन धरती पर विहॅसे , महके नीलाकाश ।।
जन–जन में हो नयी भावना, जन–जन में हो नयी कामना ,
जन–जन में हो नयी उमगें जीवन में उल्लास ।। X X X
सभी ओर विखरे सात्विकता , नया रूप ले जगे मनुजता,
ऋद्धि सिद्धि से परिपूरत हो हर संकल्प प्रयास ।। "अवशेष पुष्प " पृ0 8, 16

3 श्री मती विद्यावती मिश्र :–

। करती है संघर्ष मनुजता से मर्यादा वैभव की अभिलाषा रखता जीवन सादा ,
जिसके पतझर में भी मधुऋतु की आशा , जीवन मरण , भरण–पोषण ही जिसकी भाषा,
मध्य वर्ग की कुशल ,किन्तु अभिशापित गृहिणी ,
ऑसू से मुँह धोकर मुझसे पूँछ रही है–जीवन क्या है?
।। जन–जन के प्रति विमल भावना सबके हितकी रहे कामना ,
यह जीवन ही बने साधना । मेरे मन में कर्त्तव्यों के प्रति अनुराग भरो ।।

4 श्री बाबूलाल जैन 'जलज' :–

। करूणा , समता , सहिष्णुता, जीवन का श्रृंगार है।
क्षमा विजय की विश्व में , होती कभी न हार है।।
नयी शक्ति , सामर्थ्य , क्षमा देती है अनुपम ।
तन मन लेता मोह , क्षमा का स्रोत मनोरम ।।
अन्तर होता शुद्ध बुद्ध बन जाता मानव।

हो जाता है शान्त, क्रोध का दम्भी दानव
मानव उर में जब कभी, उठती क्षमा हिलोर है।
मन की ऊँची गुफा में , होती अभिनव भोर है।। " "यु0 नि0 यो0 " 5 जून 1973

।। ले जाते बटमार लूटकर , सदाचार संयम की थाती ,
त्याग तपस्या की फसलों को , खेतों में दीमक चर जाती – – –
प्यार न होता अगर हृदय में , मानव मन पत्थर बन जाता,
अन्तस में यदि दया न होती , बुद्ध प्रबुद्ध नहीं बन पाता। "यु0 नि0 यो0 " 20 जन0 1977

5 डा0 त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल :–
कोई लखता रूप रंग को , कोई चाल ढाल व्यवहार ,
कोई बोली , काई खोली पूँछ रहा कोई परिवार
कोई जाति , धर्म से कोई , कोई जॉच रहा आचार, कोई पैसा ,
कोई पद से , गुण–अवगुण सब रहे विचार
पर सच्चा , कोई मिला न मुझको, देखे कई हजार ,
जिसने मेरे मन को परखा, निरखा नहीं विचार में, सोच रहा हूँ। "पाथेय" पृ0 15

6 श्री बलराम सिंह परिहार –:
। रहा प्राणी प्राणी में नहीं , प्रेम सौमनस और सद्भाव ।
स्वार्थ की सुरसा ऐसी बढ़ी , कर रहे भाई–भाई दांव।।
।। लो हुआ मुक्त अब आदमी तोड़कर , युग युगों से लगी मोह की अर्गला ।
एक ही शह लगी– भात खाने लगी , काम की , क्रोध की , लोभ की श्रृंखला ।।
मेखला बॉधकर कर्म की देह से – श्रम जगा , तम भगा , शक्ति मिलने लगी । •
"यु0 नि0 यो0 " 20 दिस0 1973

7 डा0 हर गोविन्द सिंह :–
। धनबल जनबल बुद्धि अपार , सदाचार बिन सब बेकार ।
ऊँची विद्या , ऊँचे बोल , सदाचार बिन माटी मोल ।
अनाचार बढ़ता है कब ? सदाचार चुप रहता जब । "सद्वाक्य–मंजरी " पृ0 1
।। हर प्राणी जिसका सम्बन्धी , पर नारी है भगनी–माता ,
वह मानव ही इस वसुधा पर नर से नारायण बन जाता ,
।।। कमी कण्टकों की नहीं इस जगत में , अगर हो सके तो कुसुम कुछ उगाओ। X X X
घृणा और विद्वेष की अग्नि पाकर , बहुत जल चुकी चेतना की चिताएँ,
घुटन से भरी कोठरी जिन्दगी की , सिसकती विकल त्रस्त संवेदनाएँ ;
जहाँ हर लहर में जहर घुल रहा हो अगर बन सके सुधा पिलाओ। "पुष्पांजलि" 19, 25

8 डा0 राम स्वरूप खरे –:
। श्रम कर्म करो, यह कर्म–क्षेत्र , रचने नव–युग , अभियान करो।
रजनी में जब सो जाते सब , तब योगी जागा करते हैं।
अपनी संस्सृति को सुदृढ़ दिव्य , सोपान बनाया करते हैं।।
अवसर पड़ने पर कभी सिंधु , हम सहज पार कर जाते हैं,
बन जाते कभी कुसुम से मृदु तो कभी बज्र बन जाते हैं।
।। परहित शिव–सा विष पी जाना , स्वार्थ–सुधा को हँस ठुकराना !
प्रेम, शान्ति, समता के बोना , सारे जग में फूल ।। राही , जाना मत पथ भूल ।
"यु0 नि0 यो0 " 20 दिसम्बर 1973

9 श्री लाखन सिंह भदौरिया'सौमित्र'–:

तन मैला , मैला मन अपना ।

नहीं अर्घ्य अर्चन के साधन , आँसू अपना आराधन , स्वीकारो आँसू कन अपना !

अहंकार के काँच नुकीले छेद रहे मन को बर्छीले , झेल रहा है जीवन अपना ! X X X

परसो तन मन कर दो पावन बरसो सरसे जन–बृन्दावन , दो सम्बल जीवन–धन अपना।

"यु0 नि0 यो0 " 20 सितम्बर 1976

10 श्री मती माया वर्मा :–

। सुन दीन दुःखी की आहें जो , सुनकर संतप्त कराहें जो।।

बन मोम तुरन्त पिघल जाये , चुप बैठ रूके न–मचल जाये।। ऐसे मन को मेरा प्रणाम

जो सदा विवेक जगाता हो ,श्रम से जी नहीं चुराता हो ।।

आलस्य असंयम का वर्जन जो करे मनुजता का अर्जन ।। उस जीवन को मेरा प्रणाम ! X X X

जगहित का सदा विचार करे , विपदाओं से भी नहीं डरे

आसक्ति मिटा दे जो तन से , कालुष्य हटादें जो मन से ।। उस चिन्तन को मेरा प्रणाम !

11 श्री शचीन्द्र भटनागर –:

तुमने क्या छू लिया हमारे मन–प्राणों को , हमें यहाँ माटी से कंचन बना दिया।

हम थे विकल यहाँ पर झुलसाते झोको से , तुमने हमको शीतल चंदन बना दिया।

जहाँ स्वार्थ की धूल भरी आँधियाँ भरी थीं , वहाँ बहाई तुमने करूणा की रस–धारा ,

तुमसे मिलकर हुआ , पूज्य गुरूदेव ! अजाने , प्राणों तक का कैसा काया कल्प हमारा।

"करिष्ये वचनं तव" पृ0 72

12 श्री राम कुमार 'भारतीय ' :–

है अगर प्रभु प्रेम पाना , तो मनुज से प्यार कर लो।

दूर कर दुर्भावनाएँ तुम , हृदय में प्यार भर लो।। X X X

बोल मीठे बोलकर, सारा जगत अपना बना लो ,

पद–दलित पीड़ित जनों , को उठा उर से लगा लो ।।

स्वर्ग आयेगा उतर फिर , देखना सचमुच यहीं पर ,

तुम अगर संसार में शुचि , प्रेम का विस्तार कर लो ।। "यु0 नि0 यो0 " 5 सित0 1976

13 श्री झलकन लाल 'छैल':–

तुम चलो इस पथ पर , जिस पथ पर मैं चल रहा हूँ

मैं तुम्हें आलोक देने को युगों से जल रहा हूँ ।

मै अडिग परमार्थ का राही , न कुछ भी स्वार्थ मेरा ,

हूँ दुखित देखा नहीं जाता तुम्हारा पथ अँधेरा ।

चाहता हूँ तुम करो जाग्रत मुझे अन्तर्जगत में , हों खड़े ,

परिणाम के शुचि तरू–बिछे आनन्द पथ में ।

मैं सनातन से इसी सिद्धान्त पर अविचल रहा हूँ। मैं तुम्हें आलोक देने .....

"यु0 नि0 यो0 " 20 जून 1974

14 डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी –:

। सदाचार ही धर्म का , सच्चा रूप–स्वरूप ।

बिना विचारे ही हुआ, यही रूप विद्रूप ।।

दृष्टि कोंण ऊँचा रखें, निर्मल करें स्वभाव ।

इच्छा जो सीमित रखें , उनको नहीं अभाव ।।

गलत सोच जो गहि रहें , गलत करें सब काम ।

केहि विधि पावहिं विमल यश , रहें सदा बदनाम ।

सरल , विमल जीवन जिएँ , पिएँ प्यार के घूँट ।

यह मन माने जो नहीं , रहें ढूँट के ढूँठ।। "ज्ञान रश्मि " 35 , 36

7 सम्बोधन परक शब्दावली का आलेच्य काव्यों में प्रयोग :–

(1) श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय '

। युग साधको ! तुमको निमंत्रण आज सृष्टा ने दिया है।

।। 'सृजन साधक' इन क्षणों भी अभागे रह जाएँ क्यों !

साधना से सिद्धि की निधि से नहीं जुड़ जाएँ क्यों।।

।।। इक्कीसवीं सदी ! है शुभ आगमन तुम्हारा !

युग साधना–प्रखर में शुभ अवतरण तुम्हारा।

उज्जवल भष्विय लाए ! गतिमय चरण तुम्हारा।

वसुधैव कुटुम्बकम् हो सद्व्रत वरण तुम्हारा।

स्वर्ग आयेगाउतर फिर, देखना सच मुच यही पर,

तुम अगर संसार में शुचि , प्रेम का कर लो विस्तार ।।

धर्मभीरू मत बनो , धर्मवीर चाहिए।

धर्मप्राण राष्ट्र को कर्मवीर चाहिए।

IV हम सुरक्षित नहीं देश के वासियो। बाल विद्यार्थियों! गृही सन्यासियों! "कान्ति गीत " पृ0 53

V 'संस्कृति –पुरूष' पुकार रहा है, संस्कृति का सम्मान करें। "कान्ति गीत" पृ0 49

VI ओ वतन ! गम न कर , चल पड़े करावॉ । ओ चमन ! धैर्य धर , जग गये बागवॉ।।

VII जिसे कसे हैं क्रूर प्रथाओं की निर्मम जंजीर ।

ओ निष्ठुर ! पहिचानों अब तो मानवता की पीर ।। "प्रज्ञावतार" पृ0 178

2 श्री शिव शकर मिश्र –

। तुम जरा सोचो पुनीते ! बात मेरी , विजय तो यों ही तुम्हारी , मात मेरी।

।। ओ महामनव तुम्हीं से पूँछता हूँ कुछ बताओ । "अवशेष पुष्प " पृ0 22,50

ओ सुजन के देवता तुमको अनन्त प्रणाम ।

कर्म के अनुराग तुम , हो धर्म के अनुराग तुमहो ,

श्रोत राही के लिए तुम– बन गये सुख धाम । "अवशेष पुष्प" पृ0 23

3 श्री मती विद्यावती मिश्र –:

। प्रिय तुम्हारे भक्त गिन गिन; देव तुम मैं हूँ पुजारिन ! "ज्योति " पृ0 31

।। अब मेरे भगवान न बदलो X X X

निर्बल के आधार , लोक के प्राण , विश्व–कल्याण न बदलो !

प्रिय ! यदि इसमें अपमान न अपना समझो! X X X

'मैंने' तमुको भगवान सदा से माना "प्रतीक्षा" पृ0 13, 31

।।। देवता धरती पर आओ ! तुम हो नर की उपज नियन्ता को कैसे भूले ,

पाकर के सम्मान , जगा अभिमान और फूले , "युगवीणा" पृ0 42

4 श्री बाबूलाल जैन 'जलज ':–

। जीवन का संकल्प लिए तुम , पथ आलोकित करते रहना , .

दुःख की रात गुजर जायेगी , प्राणदीप तुम जलते हरना , "यु0 नि0 यो0"

।। ऊँचाँ मस्तक चौड़ी छाती , फौलादी हैं बाहे।

देव मानवो उठो तुम्हीं पर, सबकी टिकी निगाहें।

।।। हे माँ , ऐसी आत्म शक्ति दो, दुखियों का दुख दूर करें। "युग शक्ति गायत्री" अगस्त 80

IV त्याग तपस्या आत्म तेज की, तुलना नहीं तुम्हारी ।

श्रद्धा की साकार मूर्ति तुम, आदि शक्ति हे नारी ।। "यु0 नि0 यो0" सितम्बर 1981

5 डा0 त्रिलोकी लाल ब्रजबाल –

। समय सदलता रहता प्रतिपल , दुख–सुख समझ समान।

अपने प्रियाजीवन को साथी ! भूल नहीं , पहचान । "पाथेय" पृ0 22

।। मीत मेरे , गीत तेरे गा रहा हूँ ।

।।। एक तुमको जानता हू , मैं न जग को जनता , प्रिय !

IV प्रिय ! बीत रही है सहज रात, मत हो उदास , कर आज बात ।

"मीत मेरे , गीत तेरे " पृ0 1, 13 , 18

6 श्री बलराम सिह परिहार :–

। बगावत जैसी बापू और बुद्ध ने कर दिखलाई है।

जवानो ! वही कसौटी आज तुम्हारे सम्मुख आई है।।

।। खिल रही जहाँ ज्ञान की भोर , चलो बढ़ें ! रश्मि रथी उस ओर , X X X

शंख ध्वनि करते हुए दिगन्त , कह रहे उठो ! उसे !! ओ सन्त "यु0 नि0 यो0 " 13 मई 1978

7 श्री लक्ष्मी नारायण 'कमलेश' –

क्यों रूके हो ? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो । X X X

सोचते हो क्या ? गिने क्षण ही तुम्हारे पास हैं – हाथ में आया हुआ क्यों खो रहे हो अब समय?

बढ़ चलो निर्द्वन्द्व , कोरी कल्पनाएँ मत गढ़ो । क्यों रूके हो?

"यु0 नि0 यो0 " 20 दिस0 1973

8 डा0 राम स्वरूप खरे –

। मीत , मत कायर कहलाओ।

जग उठा है श्रम अगर तो सृजन हो कर ही रहेगा । X X X

कड़कती बिजली गिराओ। सैकड़ों तूफान लाओ।। मीत मत .....

।। नयी प्रेरणा नव जागृति का , नूतन शंख बजाओ

ओ युग कवि ! मत मौन रहो अब ,अंगारे बरसाओ ।

"नये युग का अभिनप निर्माण " पृ0 9

(iii) उसे सुप्त ओ ऋषि सन्तानो ! निशि गत हुई भोर आया।

देखो नव प्रकाश ऊषा का , जो है पूर्व ओर छाया।।

9 डा0 हर गोविन्द सिंह –

। यह कौन सिखाता , कब कैसे नास्तिक नगरी के मेहमानो ?

अध्यात्म यही तो कहता है अपनी गरिमा भी पहचानो ।। ,"सजल" श्रद्धा (स्मारिका) वर्ष 1985

।। कहते हैं परिजन , ओ पंछी ! पिंजरे से बाहर आ जाओ ,

बन्दी गृह में हो बन्द स्वयं , चेतो कुछ साहस दिखलाओ , X X X

संकल्प नये अब ले डालो , नव जागृति का युग आया है। "यु0 नि0 यो0" जून 1986

।।। युग दृष्टा ने तुम्हें पुकारा , पृथ्वी–पुत्रो आओ।

तरूणाई बेकार न जाए ,ऐसा पथ अपनाओ।। "अखण्ड ज्योति " अक्टूबर 1984

IV बना प्यार जिसका सुगंधित सुमन है , उसी युग पुरूष को हमारा नमन है , X X X

महाप्राज्ञ है जो सभी का स्वजन है। उसी युग पुरूष को .....

"यु0 नि0 यो0" मई 1982

V जिसे है मानवता से प्यार वही परिजन बन जाता है ।

हमारा यह सुन्दर परिवार नये युग का निर्माता है।।

10 श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'–

। नयी प्रभाती गाओ , पछी नयी प्रभाती गाओ !

चहक उठे उद्यान प्राण का , ऐसा राग सुनाओ ! पंछी नयी प्रभाती गाओ ! X X X

छेड़ो ऐसी तान कि जिससे झूमे धरती रानी ! चट्टाने गा उठें , पत्थरों को मिल जाये बानी ,
बॉसों से बॉसुरी बजे , फिर वह रागिनी जगाओ ! पंछी नयी प्रभाती गाओ !

"यु0 नि0 यो0" 5–8–73

।। चेतना तुमको जगाती , युग–पहरूओ , जाग जाओ ! X X X
प्राण के स्पन्दानों में तुम नया जीवन जगाओ , मूर्छना त्यागो , अमिय–मन्दाकिनी में फिर नहाओ !

"यु0 नि0 यो0" 2.0 जुलाई 1974

11 श्री मती माया वर्मा –

नर से नारायण बन जायें । प्रभु ! ऐसा ज्ञान हमें देना। X X X
पूरब की लाली बन–छायें । प्रभु ! ऐसा ज्ञान हमें देना। "यु0 नि0 यो0" 20 दिस0 1973

।। ओ कलाकार ! नारी को और न नग्न करो।

।।। उत्सर्ग तुम्हारा काल बलिदानों की श्रृंखला बनाएगा ।
प्रिय ! आज नहीं तो कल अवश्य हीरा पहचाना जाएगा।। "गागर में सागर " पृ0 49 ,18

IV सोये युग ने करवट बदली , जागो प्रहरी !

V मानस–मानस प्यासा है सौजन्य प्रेम का। मानव ! तुम सौहार्द्र–स्नेह के घन बन जाओ ।।

"नये सन्दर्भ " पृ0 56 , 57

VI . उठो ! सिंहो ! सपूतो ! लाड़लो ! नव युग बुलाता है !
निरखती संस्कृति , उद्धार करने कौन आता है ।। X X X
उठो वीरो ! कि तुमको युग नया निर्माण करना है ।

12 श्री शचीन्द्र भटनागर –:

। तुम्हें गुरू देव ! जब हम ठीक से पहचान पायेंगे , तुम्हारे रूप में साकार हम भगवान पायेंगे ।

।। मॉ ! तुम्हारे स्नेह की छाया हमें मिलती रही तो ,
हम कहीं पर म्लान–मुरझाया सुमन रहने न देंगे।

।।। वेदमूर्ति प्रभो ! हमें ऐसा विमल वरदान दो , हम न भटके भ्रान्तियों में , वह सुखद सद्ज्ञान दो।

"करिष्ये वचंन तव" पृ0 84 , 46 , 8

IV हे ऋत्विज होवाओ ! आओ, आओ यजन करो।
यश कामी श्रोताओ ! आओ , आओ यजन करो ।। "कान्ति गीत " पृ0 11

13 श्री राम कुमार भारतीय –:

हे पुरूष , पुरूषार्थ कर तू।।
है जगत के मंच पर अपना तुझे अभिनय दिखाना ।
रे ! पुरूष से है तुझे भगवान पुरूषोत्तम कहाना ।।
जान ले निज तत्व को पहचान ले निज सत्य को रे।
मूर्छना से जाग , कर्मठ बन दिखा अपनत्व को रे।

छोड़ दे भय भीरूता , निर्द्वन्द्व हो निर्भय विचार तू। हे पुरूष। पुरूषार्थ कर तू।।

"जीवन संगीत" पृ0 32

14 श्री झलकन लाल वर्मा 'छैल'–:

धरा रहेगी ऋणी , युगों तक अम्बर लेगा नाम तुम्हारा ,

दशों दिशाओं को आलोकित करता है यश "राम तुम्हारा"।

15 श्री वीरेश्वर उपाध्याय –:

I विगुल बज गया महा क्रान्ति का वीरो शौर्य दिखाना है।

असंमजस में समय गवॉकर कायर नहीं कहाना है। वीरो शौर्य दिखाना है ।

II असुर तत्व हावी है सब पर कैसे तुम्हें सुहाता है ।

वीर भूमि की ओ सन्तानों ! युग ऋषि तुम्हें बुलाता है ।।

III प्रज्ञा पुत्र कहाने वालो – जीवन धन्य बना लो ।

जाग्रत आत्मा बनकर – भाई सोये भाग्य जगा लो ।। X X X

महाकाल की सुनें गर्जना – जागें और जगायें

घोड़ा अश्वमेघ का छूटा – विजयी उसे बनायें ।। "क्रान्ति गीत " 17 ,21

IV सृजन सैनिको ! बढ़ो लगादो – बाजी अपने जान की ।

महाकाल अब बढ़ा रहा है , गति अपने अभियान की ।।

16 डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया :–

श्रृजन–शिल्पी ! इन्द्र धनुषी , सात आन्दोलन चलाओ ।

एक गुरू के शिष्य हो तुम अहं को अपने गलाओ ।। X X X

ईर्ष्या से विश्व कलुषित , प्रेम की गंगा बहाओ ।

शील–संयम सत्य ऋजुता– आचरण में अरे ! लाओ ।

सम्मान नारी का करो गौरव स्वयं अपना बढ़ाओ

मिथ्या प्रदर्शन और अपव्यय से बचो , सबको बचाओ ।

सुधरो स्वयं सबको सुधारो , प्रेरणा के गीत गाओ ।

कथनी–करनी में एक हो बस , द्वैत मन का तुम मिटाओ।।

8 भोजन एवं खान पान सम्बन्धित शब्दावली का आलेच्य काव्य में प्रयोग –

1 श्री मंगल विजय ' विजय' वर्गीय '

I लोग मॉसाहार को त्यागने लगे । और अभक्ष्य–भक्षण से भागने लगे ।।

II आत्मघाती धूम्रपान छोड़ रहे हैं । नाता शराब से तोड़ रहे हैं ।

III शाकाहार के प्रति रूचि जागने लगी । सात्विक भोजन ही वृत्ति मॉगने लगी ।।

नहीं बेर जूठा था, वह था पावन मधुरस प्याला ।। "तुलसी के राम " पृ0 26

IV चाय का चस्का –

कि जैसे बादलोंकी गड़गड़ाहट सुन पपीहे को कि अपनी चहेती जल बूँद की ज्यों याद आती है।

यूँ ही बस चाय के आदी जनों के कान को ,

मन को कहीं भी कप–बसी की खनखनाहट भर लुभाती है।।

अरे ! फिर केतली जो सामने आए तो क्या कहना , कि जैसे प्रेयसी की आ गई हो सामने डोली , हृदय की धड़कनों की उस समय फिर बात क्या कहना , कि जैसे आ गई सामने फलदार की थेली अगर फिर केतली से चाय प्याली में उतर आाए, तो समझो आ रही है प्रेयसी प्यासे अधर छूने । कि जैसे दूसरों की गॉठ का रूपया निकल आए, तभी धन के पुजारी के समझ लो सपन हो दूने ।। बसी में चाय को फिर डालकर , ऐसा कसा मानो, कि जैसे बाहुओं में प्रेयसी को बाँध रखा हो। लड़ाकर होंठ से पयाली को ऐसी चुस्कियॉ जानो, कि जैसे औंठ के ऊपर अधर को साध रखा हो मगर जब तक बसी में चाय लहराती जवानी सी, तभी तक वासना बेचैन थी, था एक एक आकर्षण । पहले मन लुभाती थी कि खनखन जो बसी कप की, उसी को हाथ से छोड़ा कि जैसे हो गरल दँशन यूँ ही मानव सदा से वासना को प्यार करता है, जहाँ निज स्वार्थ निकला इस तरह नजरें चुरा लेता । कि जिस पर वासना– स्निग्घ होकर जान देता था , उसी को वासना की पूर्ति कर ठोकर लगा देता ।

"साधना के स्वर " पृ0 43

V खून पसीना कर, मुश्किल से भरता कोई पेट ।

पालन पोषण में कन्या के सहता सभी चपेट।। X X X

समय, असमय बने कोई भी अगर मृत्यु का ग्रास।

तो उसके घर को कस लेता, 'मृतक भोज' का पाश ।।

एक ओर ऑसू की धारा सहती है आघात ।

और दूसरी और बैठती मृतक–भोज की पाँत ।।

गिद्ध जुटे हों भरी लाश पर, कौन बँधाए धीर।।

ओ निष्ठुर ! पहचानों अब तो मानवता की पीर ।।

VI व्यसन हमारी सभी शक्तियाँ क्षीण बनाते हैं।

तन से दुर्बल मन से हमको दीन बनाते है।।

कोई भी हो व्यसन , हमें कमजोर बना देता , उन्हें छिपाने, अनचा हे ही चोर बना देता।।

गाँजा , भाँग , तम्बाकू बीड़ी ,मदिरा जो पीते , जीते व्यसनों हेतु, स्वये के लिए नहीं जीते।।

जेब काटते और बुद्धि को हीन बनाते हैं। व्यंसन हमारी सभी शक्तियाँ .....

"प्रज्ञागीत–युगशिल्पी–1 " पृ0 15

2 श्री मती विद्यावती मिश्र –:

I राम नाम जापी जपता है सदा कर्म की माला ।

रंभा कहती थी मोहन से पियो राम–रस प्याला ।।

सत्य बात यह राम बनाता उनको वैभवशाली ।

जिसने भक्तिभाव से पी ली राम–सुधा–रस प्याली ।। "बापू के राम " पृ0 10 , 25

।। जल्दी–जल्दी कंदमूल वह थी वन से ले आई ।

चख–चख लगी परखने उनकी यह रसमयी मिठाई ।।

जो खट्टे थे उन्हें न प्रभू को शबरी दे पाती थी ।

केवल मीठे फल ही प्रभु के सेवन हित लाती थी।।

देख रहे थे सब प्रभु , जूठे बेर प्रेम से खाते ।

फिर आयुग्ध प्रशंसा करते मन ही मन मुस्काते ।।

वह शबरी का प्रेम भाव था उनके लिए निराला ।

2 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल–

। देह से उठती दूषित गंध , जलन से व्याकुल व्यथित शरीर ।

प्यास से सूख गया था कंठ , अधर को मिला न शीतल नीर ।। "अनुताप" पृ0 36

।। क्षुधा पीड़ित गिद्धों का , घिराव है चहुँओर ।

लाशों पर बैठे हुए , करते है काक शोर ।

कब्रो पर साया है निर्मोही शाखों का । धारा में तिर रहे , काठवत् प्राणी

कुटिल काल अतृप्त है , मूक हुई वाणी । "

'सुदुर्जर' शीर्षक कविता से "इन्दु एक बिन्दु दो" पृ0 32

4 श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'–

हम कुढ़न–विष पी रहे हैं , मृत्यू को ही जी रहे हैं। X X X

तम पियें, मुस्कान भर दें , प्राण मे वह तान भर दें।

5 श्री मती माया वर्मा–

। खाएं वही पदार्थ हम , जो न करें नुकसान ।

सिर्फ न देखें स्वाद ही , रहे गुणों का ध्यान ।।

अपने लिए न जो रूचे खान, पान, व्यवहार ।

वह न दूसरों को करो , यह सुख का आधार ।।

पेड़ बहुत ऊँचा जिसे , कहतें हैं ईमान ।

इसके फल मीठे बहुत , सिंचित करते प्राण ।।

रस लेकर देते शहद , मधुमक्खी के प्राण।

जितना लें हम जगत से, करें अधिक प्रतिदान ।।

फलों व शाकों में भरा , प्रचुर लाभ भण्डार ।

फिर हम तो इंसान हैं , क्यों न करे उपकार ।।

निश्चित समयावधि गए , मीठा होता आम ।

अपने अपने समय से , होता है हर काम ।।

"बाल–नीति शतक" पृ0 14, 19, 21 , 22 , 25

6 श्री शिवशंकर मिश्र–:

। कैसे पानी पियूँ यहाँ तो अधर–अधर में प्यास है।

कैसे भला बुझा पाऊँगा अरे प्यास से प्यास को, उपवन बना सका कब कोई मटमैले आकाश को।

सरिता का तट तजूँ अगर तो बतलाओ जाऊँ कहाँ–सभी ओर तो नगर–नगर में डगर–डगर में प्यास है।। क्या यह सम्भव नहीं बिना पानी के जीवन काट दूँ .....

।। सबको तृप्ति दिलाने वाली गगरी प्यासी है।

यही सोच पनघट पर छाई हुई उदासी है। "अवशेष पुष्प" पृ0 67 , 109

7 डा0 हरगोविन्द सिंह –:

। भारतीय भोजन :–

न अण्डा माँस खाते हम , न मदिरा ही कभी पीते,

अचम्भा है बड़ा उनको कि ये सब किस तरह जीते !

मिला वरदान है हमको, अरे, इस वसुमती माँ का,

जहाँ वे जन्म से हारे, वहाँ हम रोज शह जीते ।।

।। दुर्व्यसन :–

घी पिलाना ही नहीं सबसे बड़ा उपकार , श्रेष्ठतर है व्यक्ति के अतिसार का उपचार ;

दुर्व्यसन ने कर दिये हैं पात्र में यदि छिद्र टिक सकेगी क्या वहाँ पर सिन्धु की भी धार ? X X X

।।। दुर्दशा की भंग यह सारे कुएँ में पड़ गयी है,

IV न इसको मुँह लगाना तुम , बड़ी यह बेवफा हाला ,

प्रतिष्ठा , शील , सद्गुण का बना देती है मुँह काला ;

चले बनने पियक्कड़ जो , किया इसने , नहीं वे पी सके, उल्टे उन्हीं को पी गया प्याला । X X X

V है अमृत सस्ता , मगर भाता नहीं है, अति सहज सम्बन्ध जुड़ पाता नहीं है;

इस तरह वरदान पर अभिशाप छाया–बिन जहर खाये , जिया जाता नहीं है।'

VI असम्भव!

क्या कहा? जीते–जी अपना कफन छोड़ दूँ !

ये तमाखू , ये गाँजा , ये रतन छोड़ दूँ ?

मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ , अरे बन्धुओ! पर असम्भव हे कि अपना व्यसन छोड़ दूँ। '

VII प्रभुता पाई दशकंधर ने , मदिरा–माँस छको घर भर नैं ,

VIII जीभ से करेजे लौक लगा देत आगी–ऐसी , खून सब पानी होत , प्यास ना बुझात है,

बड़े–बड़े मानी बिना पानी एइ कर डारै , खात गुन–सील धन–धर्म ना अघात है।

IX बड़े–बड़े बैठ उते खात पुरी–मालपुआ , नावँ दिन–तेरहई , जुरत बरात है।

एक–एक दानौं अरे , अँसुवन सानो जहाँ , ऐसे की रसोई हाय, कैसे कैरिहात है।

"पुष्पांजलि" पृ0 78, 81, 95, 105, 107

8 श्री शचीन्द्र भटनागर –

आत्मघाती शराब :–

(I) सब कुछ गँवा दिया है बोतल के वास्ते, पल भर कमी न सोचा है कल के वास्ते । X X X

अब तक बिके थे जेवर , बरतन भी बेच डाले , घर में पड़े सभी के जीने के अब तो लाले ,

पीकर तुम्हें किसी पर बिल्कुल दया न आई , काल शाम तुमने की थी पत्नी की भी पिटाई ,

माँगे थे उसने पैसे चावल के वास्ते। सब कुछ गँवा दिया है ..... X X X

तुम जिसको पी रहे हो, वह तुमको खा रही , यह नरक–सा तुम्हारा जीवन बना रही है,

चंदन–सा श्रेष्ठ जीवन अनमोल तुमने पाया, तुमने जला–जलाकर कोयला इसे बनाया,

कुछ सोच लो कुकर्मो के फल के वास्ते। सब कुछ गँवा दिया है .....

"क्रान्ति के स्वर", पृ० 40, 41

नशे का नया रूप :–

(II) है भयंकर नाश की जड़ हर नशा, छोड़ो इसे, बुझ न सकती है कभी इसकी तृषा, छोड़ो इसे,

हो नशा कोई, न करता दूर दुख, आतंक, डर यह न पोषक है, न इससे बुद्धि ही होती प्रखर,

हर नशा करता मनोबल क्षीण , घटती है उमर, रोग का यह मूल कारण है यही धीमा जहर,

जी नहीं सकता जिसे इससे डसा, छोड़े, इसे। है भयंकर नाश की जढ़ ... X X X

स्मैक या सिगरेट, गुटकों में जहर जो भर रहा, नई पीढ़ी को वही कमजोर जड़ से कर रहा ,

आधुनिकता या बड़प्पन की निशानी है नही, मृत्यूको देना निमंत्रण बुद्धिमानी है नहीं,

जिंदगी में यह बहुत भीतर धँसा , छोड़ो इसे। है भयंकर नाश की जड़ ..... X X X

हो गिरे इन्सान को ऊचाँ उठाने का नशा , व्यक्ति को मृत मान्यताओं से बचाने का नशा,

बाँटकर सुख ,दूसरों का दुःख मिटाने का नशा, हो यहाँ कर्त्तव्य–पथ में डूब जाने का नशा ,

देश की जिससे बिगड़ती है दशा, छोड़ो इसे। है भंयकर नाश की जड़ .....

'क्रान्ति के स्वर' पृ० 42, 43

9 श्री सत्यपाल पथिक :–

"यों भरने को तो दुनियाँ में पशु भी पेट भरते है। सही इन्सान जो हैं वो सदा परमार्थ करते हैं।

सदा मिल–बाँटकर खायें उसे इन्सान कहते है। किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं।।

"युग गायन" भाग 3, पृ0 15

10 श्री श्रीप्रकाश –:

पास रहता हूँ तेरे सदा मैं अरे! तू नहीं देख पाये तो मैं क्या करूँ।

मूढ़ मृग तुल्य चारों दिशाओं में तू ढूँढ़ने मुझको जाये तो मैं क्या करूँ।। X X X

फूल–फल शाक मेवा व दुग्धदि सब, मधुर आहार मैंने तूझे हैं दिए ।

तूँ तमाखू अमल मद्य माँसादि खा , रोगतन पर लगाये तो मैं क्या करूँ ।।

"आत्म चिंतन" पृ0 45

।। डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया :–

व्यसन के ही दास बनकर, कुंठित हुआ है आज यह मन ।
वासनाने ही नचाया , कलुषित किया सम्पूर्ण जीवन।।
छोड़ो नशाखोरी सभी , पीछा अरे! इनसे छुड़ाओ। सृजन शिल्पी! इन्द्र धनुषी , सात

9 साँस्कृतिक शब्दावली का आलेच्य काव्यों में प्रयोग –:

1 श्री मंगल विजय ' विजय वर्गीय '

I व्यक्तिवादी – संस्कृति को अब बदलना चाहिए।
बॉटना सुख चाहिए व दुःख बॅटाना चाहिए।।

।। पारिवारिक कुसंस्कारों से समर होगा ।
तब कहीं परिवार संस्कारित प्रखर होगा।।

।।। देव मानव राष्ट्र तब ही बढ़ा पाएगा , युद्ध जब हर मोर्चे पर जड़ा जाएगा।।

IV धर्म की, विज्ञान की, साहित्य की, धन की, राजनेता और अभिनेता , प्रजा जन की राष्ट्र प्रतिमा को खरादा––गढा जाएगा, राष्ट्रीय–संस्कृति का गौरव उभर आएगा ।

V संस्कृति रही कराह न मेरा रूप बिगाड़ो रे।
अगर मनुजता को सॅवारना मुझे निखारो रे। – – –
संस्कृति बची, अगर तो मानवता बच जाऐगी, यदि न बची तो मानव में पशुता आ जायेगी।।
क्या पशुता स्वीकार विश्व को, तनिक विचारो रे।
न मेरा रूप बिगाड़ो रे। संस्कृति रही कराह .....

"प्रज्ञागीत " पृ0 29

VI संस्कृति वही , किया करती जो अनगढ़ मानव को संस्कारित।
इसी लक्ष्य को पूरा करने संस्कारों को किया प्रसारित ।।

"प्रज्ञावतार" पृ0 101

VIII संस्कारकी परम्परा , जिस दिन से उठ गई, रत्नों की यह खदान उसी दिन से मिट गई।। X
गुरूदेव ने संस्कार की गरिमा को उछाला , मिटते हुए व्यक्तियों के स्तर को सँभाला।
तप–त्याग की भट्टी बनाया 'शन्ति कुन्ज' को, भाया नहीं अज्ञान–तम , प्रकाश–पुंज को
यह भूमि संस्कार जगाने में जुट गई।। संस्कार की परम्परा , जिस दिन से उठ गई

"पर्व पीयूष " पृ0 45

VIII कितना भी गहरा अंधकार हो जीवन में, साहस का सूरज अस्त नहीं होने देंगे।
सूरज के बेटे जब तक जीवित हैं जग में, धरती को तम का भार नहीं ढोने देंगे।।
हो रहा हो संस्कृति–सीता–हरण , राम के हनुमान! तुम क्यों मौन हो।
निश्चरों से हीन करने को मही , राम के धनु वाण तुम क्यों मौन हो ।।

2 श्री शिवशंकर मिश्र :–

। जहाँ पर त्याग वहीं अनुराग , जहाँ सौहार्द्र वहीं सौभाग्य ।
लोक है जहाँ वहीं कल्याण। जहाँ पर भक्त वहीं भगवान ।

।। खोल दो नयी सुबह के द्वार ।
द्वार यह तो नव युग का द्वार
स्वप्न की सुधियों का संसार ।
जहाँ पर नहीं राग या द्वेष, प्यार ही प्यार , प्यार ही प्यार ।
दया, ममता, समता, सद्भाव बने जिस देहरी के उपहार ।। खोल दो.....

"अवशेष पुष्प" पृ0 24 , 25

3 श्री मती विद्यावती मिश्र :–

। प्रेम आदि है और सत्य है इति इस पथ का, कवि के पागल छन्द दौड़ते–बढ़ते जाते ,
यद्यपि अब वे बहुत दूर हो गये प्रेम से किन्तु स्वयं को चरम सत्य के पास न पाते ,
नहीं सुमन को किन्तु भ्रमर को ही चुभते हैं , जाने कैसे संघर्षों के शूल निराले !

"श्रद्धा" पृ0 23

।। क्षमा करें उपकार, त्याग, उत्सर्ग नहीं यह मैंने अना साधरण कर्त्तव्य निभाया !
केवल वह कर्त्तव्य जिसे पूरा करने की है समाज जन–जन से ही कर रहा अपेक्षा।

"मुक्ति" पृ0 46

4 श्री बाबूलाल जैन 'जलज ' :–

सेवा भाव न जागृत होता , करूण पुकार न यदि सुन पाता ,
व्यथा कथा यदि सुनी न होती, जीवन तप निष्फल हो जाता ।
हाथ पकड़ती अगर न ममता, समता का कुछ बोध न होता ,
सॉसों कीगति एक न होती, बढ़ता अगर न भाई चारा ।। "यु0 नि0 यो0 " 20 जनवरी 1977

5 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल –:

सोने वालो उठो , सवेरा हो गया , घोर निशा का तिमिर , क्षितिज में खो गया।
आज ध्वंस के बादल नभ में उमड़ घुमड़ कर छा रहे हैं ,
उठो ! मानवो ! मानवता के घातक बढ़ते आ रहे हैं।
ओ धरा के प्राण जागो आज तुम , प्रेम का स्वर विश्व में अब सो गया।
व्यथित निराशित व्याकुल केवल मॉग रहा अब पयार है,
शान्ति और सुख से जीने का सब को ही अधिकार है,
सत्य के ओ दूत ! कह दो जालिमों से , पूर्व में नव रवि उदय अब हो गया।

"पाथेय " पृ0 24

6 श्री बलराम सिंह परिहार –:

मानव हो तो मानव के दुःख हरण करो तुम।
इस प्रकार कुछ इस जग मे आचरण करो तुम ।।
उचित यही हे इन्हें कभी मत गले लगाओ ।
प्रेम पूर्ण व्यवहार विश्व में करो कराओ ।।
सत्य'–शील से युक्त , मुक्त हो , न्याय–निष्ठ हो,
नहीं किसी को तुमसे किंचित भी कनिष्ठ हो।
दीन दुःखी असहाय जनों के शोक हरो तुम ,
दिव्य ज्ञान का इस जग में आलोक भरो तुम ।
सेवा की , सत्कर्म–धर्म की राह न छोड़ो – कूर कामनाओं के पीछे दौड़ न दौड़ो ।।

"यु0 नि0 यो0" 22 अप्रेल 1965

7 डा0 हर गोविन्द सिंह –:

। निकल पड़े सुख भोग छोड़कर , वे गौतम भगवान बने।
करूणा के अवतार तथागत, मानवता के प्राण बने।।
बुद्धं शरणं गच्छामि , धम्मं शरणं गच्छामि ,संघंशरणं गच्छामि , बनें सभी सत्पथ गामी ;
परम्पराओं की तुलना में बुद्धि–विवेक प्रमाण बने। करूणा के अवतार तथागत .....

"यु0 नि0 यो0" 20 मई 1974

।। नहीं माँगते राज्य , स्वर्ग सुख , हमें मुक्ति की चाह नहीं ।
बस इतना कर दो, दुखियों में रहे कष्ट का दाह नहीं।।
जब पथ से विचलित जन मन , भूल जाये परमार्थ–प्रयोजन;
खोज अपना ही सुख साधन बढ़े असुरता का सम्मोहन
तब हम प्रतिपल तिल–तिल जलकर बनें ज्योति कीराह कहीं। बस इतना कर दो .....

"अखण्ड ज्योति " अक्टूबर 1975

।।। त्याग और तप के बल पर ही चलता है संसार ,
जहॉ नहीं तप–त्याग तनिक भी वह जीवन निस्सार । X X X
जहॉ सृजन है, वहॉ त्याग का गूँज रहा जयकार ।
तप करते हैं कृषक खेत में , तप करते मजदूर ,
तपसे ही उपजे वैज्ञानिक , उपजे तुलसी–सूर ;
दिया जिन्होने त्याग स्वर्ग–सुख , बने वही अवतार । जहॉ नहीं तप–त्याग .....

"पुष्पांजलि" पृ0 20

8 डा0 राम स्वरूप खरे –:

। तेरे चरणोंमें शक्ति नयी , तेरे प्राणों में भक्ति नई ।

जीवन में नव विश्वास भरा , गति आश नई, है चाह नई ।।

तेरा है सुन्दर स्वप्न नया , कल्पना नई , भावना नई ।।

है अर्चन–पूजन प्रेम भरा , है लक्ष्य नया , है राह नई ।। "यो0 नि0 यो0" 6 दिसम्बर 1980

।। पर धन भूमि पियारी लगती, सहोदरों में आज लड़ाई ,

प्रेम–शन्ति –समता –क्षमता का धरती पर दिखता अभाव है।

सुरासुरों में युद्ध छिढ़ा है हर प्रतिद्वन्द्वी विजय चाहता

किन्तु मोहिनी के स्वरूप पर , असुरों का ज्यादा लगाव है।।

"नये युग का अभिनव निर्माण " पृ0 5

9 लाखन सिंह भदौरिया ' सौमित्र ' :–

करूणा की किरण है हॅसे उर में , ऐसा प्रकाश पाऊॅ तुमसे ।

तुम पिघलो अपनी ममता से , मैं मधुर ह्रास पाऊॅ तुमसे ।।

याचना अपरिचित हो जाये , इठलाऊॅ वर पाता–पाता।

जीवन–वीणा मैं गाऊॅ वे गीत मुझे भी दो माता ।

मेरे अभाव को भाव भरें , मेरे भीतर वह प्यास जगे ।

प्राणों को वह सामीप्य मिले , हर श्वांस–श्वांस विश्वास जगे ।

कन–कन को प्यार लुटा जाऊॅ , इस धरती से जाता–जाता ।

जीवन वीणा पर मै गाऊॅ ..... "यु0 नि0 यो0 " 5 जून 1978

10 श्रीमती माया वर्मा :–

बहुत किया पुरूषार्थ जिन्होंने अनुपम कार्य अनेक किये।। X X X

। जीवन भर तप किया जिन्होंने शक्ति अपरिमित पाई थी।

पर, क्या अपने हित किंचित भी उन ने वह अपनाई थी।।

लेकिन जब इस पावन भू पर दनुजों की बन आई थी ।

दिया विहंस निज अस्थि जाल तब देवों ने जय पाई थी।।

त्याग बने आधार, विश्व में तप, संयम लायें।

कि जिनने अपने जीवन में तप, तेज , प्रेम की गरिमा विकसायें।।

"प्रभात किरण " पृ0 7

।। मनुज का मूल्य है करूणा , सरलता , त्याग औ ममता।

अहिंसा, प्यार , सर्वेदन, दया, परमार्थ , सज्जनता ।।

अरे! इस पंथ पर , थोड़ी दूर ही चलकर जरा देखो।

तुम्हें पाकर मनूजता धन्य अपने को बताती है।। "जीवन सुरभि" पृ0 88

11 श्री शचीन्द्र भटनागर :–

सॉंस्कृतिक प्रतिबद्धता का भाव हो मन में उदय , स्नेह और संवेदना से छलछलाता हो हृदय।

हम जहाँ जन्में पले , उसका चुकाऐं ऋण सभी , लोक मंगल को समर्पित रह सकें , निशि दिन सभी।
।। " आओ, हर कल्मष मन का सेवा से धो लें , सबको अपना लें , मन से , हम सबके हो लें ,
सेवा है सच्ची पूजा , सेवा सत्संग रे । मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे! "

"करिष्ये वचनं तव" पृ0 19, 144

श्री छलकन लाल वर्मा 'छैल' :–

संस्कृति को अपमानित करने लगे कुसंस्कृति के संस्थापक ;
नराधमों का गर्व चूर करना हो जाये अति आवश्यक , – – –
संस्कृति के प्रहरी राघव के ओजस्वी संस्मरण न भूलें;
जो सुरों के बीच जमाये गये अंगदी चरण न भूलें ,
वीरों का यह पर्व – इसे तुम थोथी परिपाटी , मत समझो,
जो जल में घुलकर बह जाये – ऐसी माटी इसे न समझो,
भारत के प्रत्येक पर्व में प्राणवान जीवन होते हैं;
शस्त्र, शास्त्र , वैभव , विराग, इन सबके दर्शन होते हैं ।

"यु0 नि0 यो0" 5 अक्टूबर 1973

13 श्री वीरेश्वर उपाध्याय –:

(।) देव संस्कृति घर–घर में अब स्थापित करना है, लगे प्राण की बाजी फिर भी हमें नहीं डरना है।।
हे भारत के वीर सपूतो ! अब तुम आगे आओ, संस्कृति की दिग्विजय हेतु तुम जौहर फिर दिखलाओ
संस्कृति के इस महासमर के बन जाओ बलिदानी। भरत माँ के गौरव की फिर –रचदो नई कहानी
(।।) माँग रही है देव संस्कृति – निष्ठावानों से कुर्बानी ।
देव भूमि की शपथ उठाकर –आगे बढ़ो । वीर बलिदानी ।।
शीश चढ़ाकर कभी सपूतो ने माटी का कर्ज चुकाया।
भेंट चढ़ा निज पति–पुत्रों को महिलाओं ने फर्ज निभाया ।।
आज माँगता महाकाल बस समय तनिक–सा प्रतिमाओं से ।
स्वार्थ घटा, परमार्थ साधना को जोड़ें निज क्षमताओं से ।
समय और श्रम से रचनी है, नये सृजन की नई कहानी । देवभूमि की शपथ उठाकर .....

"कान्ति गीत" पृ0 30

14 श्री राम कुमार भारतीय :–

सबसे करना प्रेम जगत में यही धर्म सच्चा है।
जो है जग में हीन पतित अति , उनको गले लगाओ ,
जो हैं दीन दुखी या पीड़ित उनको धीर बँधाओ।।
जिन्हे न कोई त्राता जग में उनको जा अपनाओ ,
जो रोते हैं उन्हें हँसाओ, सबसे प्रेम जनाओ।।

सबमें प्रभू का रूप निहारो, यही भाव अच्छा है ।। सबसे करना प्रेम ..... X X X

जहॉ निराशा का रूप निहारो, यही भाव अच्छा है ।। सबसे करना प्रेम .....

जहाँ निराशा, उदासीनता का हो गहन अँधेरा । आलस जड़ता निष्क्रियता का जहॉ पड़ा हो डेरा ।।

वहाँ ज्ञान का दीप जलाकर नव प्रकाश फैलाओ। सारा जग आनन्द मग्न हो , ऐसा राग सुनाओ ।।

"उद्‌बोधन " पृ0 53

10 सामाजिक शब्दावली का आलोच्य काव्य में प्रयोग :–

1 श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय ' :–

I है समाज अभाव से, अज्ञान से पीड़ित अरे !

क्या न करूणा छलछलाती हो गए निष्ठुर निरे।

II पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, परिवारों में घुस बैठा है।

इस भोगवाद के चक्कर में परिवार न कोई छूटा है।।

III राम नवमी , जन्माष्टमी भी ढंग से, जन्मोत्सव नहीं मनाते हैं ।

बर्थ–डे पर जाकर –मित्रों संग , चांकू से केक कटाते हैं।।

जल रही मोम बत्तियॉ बुझा , फिर खुशी मनाई जाती है

करके प्रकाश में अंधकार , तालियॉ बजाई जाती हैं।।

तमसोमा 'ज्योतिर्गमय' का संकल्प सिसकियॉ भरता है।।

क्या हुआ अरे! कुलदीपक ही घर में अँधियारा करता है।।

नारी–संवेदन शीला को पीड़ाएँ ही दी जाती हैं।

बचपन से बूढ़े होने तक, हा ! वही सताई जाती है।।

जो बहुएँ गाजे–बाजे से जिस द्वार से लाई जाती है।।

उस ही द्वारे से कुछ दिन में मरघट पहुँचाई जातीं हैं।।

'आदर्श विवाह–अभियान ' चला सामूहिक–आयोजन द्वारा ।

तरूणों से संकल्पित होकर , दानव–दहेज को दे मारा।।

IV वैचारिक कान्ति की अब अनिवार्य हो गई है।

'सप्त कान्ति –योजना ' अब अपरिहार्य हो गई है।।

कान्तियों का दौर है, बस कान्ति होना चाहिए!

साधना के समर मे साधक टिके रह पाएँगे।

कान्तियों के दौर में बस सैनिक डटे रह पाएँगे।।

जाग रही नारियॉ विकास के लिए , ज्ञान यज्ञ चल रहा प्रकाश के लिए ।

प्रतिगामी तत्तवों से जूझ–जूझ कर , नारी–नेतृत्व की होती तैयारियॉ

तुमुल घोष कर रहीं सप्त कान्तियॉ।।

V होगा ! होगा ! होगा ! युग परिवर्तन होगा , तम की छाती पर किरणों का नर्तन होगा।
रह नहीं सकेंगे , अब अज्ञान–अभाव शेष , देवत्व उदय होगा , प्रत्यावर्तन होगा ।।2

श्री शिवंशंकर मिश्र–:

। यह भी नहीं जानता पागल संसृति करवट बदल रही है,
जब कि प्रलय होने को तूने तब सुधार की बात कहीं है,
ढह जाएगी एक रात में सोने के वैभव की लंका ,
हिमगिरि की चोटी से बजता आता परिवर्तन का डंका ,
रहा छिपाये इतने दिन तक , विजय हास, यह कैसा युग है।
समय खोलता शेषनाग का, शिथिल पाश ,यह कैसा युग है? "युग सन्देश " पृ0 51

।। होली पावन पर्व प्रेम की गुरूता का , मधुर मिलन त्योहार नेह की शुचिता का ।
भेदभाव की रेख मिटादो जीवन से – चौपालों में फाग सुनाने के पहले ।। X X X
ऊँचा–नीच का भेद मिटा दो जीवन से – तुम होली में आग लगाने के पहले ।
होली में ही दीपावली मनाओ तुम , जगह–जगह पर अक्षर दीप अक्षर दीप जलाओ तुम
घर बाहर सब कुछ महकोओ चंदन से–रंग अबीर, गुलाल लुटाने के पहले ।।

।।। भेद–भाव अवशेष न रहने देंगे हम , किसी नयन से अश्रु न बहने देंगे हम ।
हम जन–जन में खुशी भरेंगे सपनों की , हम हर स्वर में गीत प्रेम के गायेंगे ।
अब न मनुजता वैभव की होगी चेरी, राम राज्य आने मे अब न अधिक देरी ।
मरूथल में भी नव जीवन सरसाने को – स्वयं भगीरथ बन स्वर्गगा लायेंगे ।
"अवशेष पुष्प " पृ0 78, 101

3 श्री मती विद्यावती मिश्र :–

। मेरे लिए दुखियों की सेवा ही धर्म है , दूर मैं पराई पीर करूँ यही कर्म है ,
लक्ष्य के समीप पहुँचा दे वही मर्म है, दीनों की सेवा में बोलो क्या शर्म है ,
मेरा मन जगती के कण–कण में है रमा! होली के साथ–साथ जले सभी कलिमा।।
"युग वीणा " पृ0 90

।। मुझसे अधिक समाज विषम, उलझा जीवन है , जटिल रूढ़ि, छल संस्कार के अगणित व्रण हैं ,
जितना–जितना व्यक्ति मुक्ति के लिए व्यग्र है, उतने–उतने सबल पुरातन के बन्धन हैं
भग्न भूत का भवन, भविष्यत् अस्त–व्यस्त है, वर्तमान को आत्म–सन्तुलन की जिज्ञासा !
बड़ी विषम इस युग के मानव की परिभाषा ! "श्रद्धा " पृ 10

4 श्री बाबूलाल जैन 'जलज' :–

नहीं रूढ़ियों का पोषक जो, शोषक नहीं गरीब का ।
अपना दर्द समझता है जो , दुनियॉ के हर जीव का ।
मंजिल में चलते जाना ही , जिसका लक्ष्य महान है,

जन सेवा ही व्रत है जिसका , सारी वसुधा धाम है।

उसका ही जीवन इस जग में, धन्य–धन्य अभिराम है। युO निO योO" 20 जून 1974

5 डाO त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल –:

। ऊँच–नीच औ जाति–पाँति है मानव का अपमान ,

मानव है तो हर मानव को समझें एक समान ।

फूल–शूल दोनों का जैसे सहती शाखा भार ,वैसा ही धरती पर सबको जीने का अधिकार ।।

मानव हैं यदि, तो हम करलें मानवता के काम,

मानव होकर करें न अब हम , मानवता बदनाम ।। "पाथेय पृO 5"

।।। "पुष्प खिला अनजाने जैसे, मैं भी जन्मा हूँ बस ऐसे,

माली–डाली से मुझको क्या –मैं तो समहूँ सबको वैसे।"मीत मेरे गीत तेरे " पृO 28

6 श्री बलराम सिंह परिहार –:

। मातृभूमि की सेवा के हित आज तुम्हारी है बारी ,

करना है निर्माण देश का आज करो वह तैयारी ,

यह जौहर का युग है अब तक पूर्ण व्यवस्था है सारी ,

हाथ तुम्हारे ही लगनी है नए सृजन की चिनगारी,

फिर से तुमको ही लिखनी है विमल कथा निर्माण की ।

भूली हुई कहानी फिर से याद करो बलिदान की ।। "युO निO योO" 20 दिसम्बर 73

।। जिन पर प्रजातंत्र का पावन भार गया था डाला ,

बेईमान हो गये , न उनने निज कर्त्तव्य सँभाला ,

सारा देश मूकदर्शक क्यों, बोल न कोई पाए, आज आपसे उत्तर पाने अश्वमेघ है आए।।

आज प्रशासन पड़ा मूर्छित देश रहा जग सारा ,

नैतिकता का नन्हा शिशु है घूम रहा अवारा ।।

कौन पढ़ाये पाठ उसे यह कोई नहीं बताए। आज आपसे उत्तर पाने .....

"कान्ति गीत " पृO 9

7 डाO हर गोविन्द सिंह –:

(।) है अभियान विचार कान्ति का , नये ज्योति का नारा,

' नव युग का निर्माण करेंगे '– यह संकल्प हमारा ।

जो भी हैं जागृत आत्माएँ –वे सब संघ–बद्ध हो जाएँ ,

जगमें निज पौरूष दिखलाएँ , सज्जनता का मान बढ़ाएँ ;

खोज रही व्याकुल मानवता कोई सबल सहारा ।

' नव युग का निर्माण करेंगे .....

पूजा–अर्चा रही अधूरी , प्राण –प्रतिष्ठा हुई न पूरी ;

चरम लक्ष्य की घटी न दूरी, पाश बनी मन की मजबूरी ;

सामाजिक हित में तोड़ेंगे व्यक्तिवाद की कारा । ' नव युग का निर्माण करेंगे .....

(।।) शासन और समाज–सुधार –

सभी सुधार राज्य कर देगा – यह आशा है कोरी जड़ता,

प्रजातंत्र का वाष्प शकट तो जनमत के ही पथ पर बढ़ता ;

अनुशासन का पर्व चले , तब शासन इतना कह पाता है–

सिगरेट की डिब्बी पर छापो – 'इसको पीकर स्वास्थ्य बिगड़ता'।

"पुष्पांजलि" पृ0 54 , 58

8 डा0 रामस्वरूप खरे –:

। तुम अपने पथ को आप स्वयं मोड़ो ! बन जागरूक प्रहरी, प्रमाद छोड़ो!!

इन पराधीनता की हथकड़ियों को– 'भारत मॉकी जय हो' कहकर तोड़ो!!

"मेरे स्वप्न तुम्हारे चित्र " पृ0 18

।। "ऊँच–नीच की सीमायें सब , जग की विहंस मिटाऊँ ,

समता त्याग प्रेम के द्वारा नया समाज बनाऊँ ,

पुलक उठे वसुधा का यौवन पुलक उठे हर अंग । क्रान्ति की उठती नयी उमंग!

सदा सभी को सुखी बनाऊँ , मेटू सब सन्ताप,

घिर बरसूँ प्यासी धरती पर मिटकर अपने आप

विश्व–प्रेम शत–दल पर गूँज बनकर मैं नव भृंग। क्रान्ति की उठती नयी उमंग।। "

"नये युग का अभिनव निर्माण " पृ0 26

9 श्री लाखन सिंह भदौरिया ' सौमित्र ' :–

सहो विघ्न–बौछार मगर शहनाई बन्द न हो, स्वप्न कुमारी वरो, रिक्त लौटे बारात नहीं।

कार्य मॉगता समय , कथन में क्या लगता बोलो– बाणी को कर्तृत्व –तुला पर रखकर तो तोलो ।

धीमी गति को देख , धैर्य का साथ नहीं छोड़ो , लेकर क्रान्ति –मशाल शान्ति का हाथ नहीं छोड़ो

कुरूक्षेत्र में खड़ा , राष्ट्र के अर्जुन का रथ है– तुम सारथी सुजान, जिधर चाहो रथ को मोड़ो ।।

जिससे मिटे कुहासा, उन्मन अर्जुन के मन का वह विराट झॉकी दिखलाओ कांपे गात नहीं। "

"यु0 नि0 यो0" 20 अप्रैल 1974

10 श्री मती माया वर्मा –:

। बिकें कहीं भी नहीं 'लाज' के बदले में अब रोटियॉ ।

ब्याही जायें बिन दहेज के सब समाज की बेटियॉ

अपनी नहीं समस्या सबकी, सब सुलझाएँ बैठकर ।

तब कह सकते हम सगर्व , "यह मानवीय संसार है। "

"यु0 नि0 यो0" 20 अगस्त 1974

सभी सुखी हों ..... X X X

कोई भटक न पाय–जलाये दीपक–पथ–चौराहों पर ।,

ज्योति ज्ञान की भी बॉटी जिससे प्रज्ञा हो जाये प्रखर ।।

सवित देव आराधे– हो प्रकाश आत्मा के गॉवों में ।।

सभी सुखी हों..... "जीवन सुरभि " पृ0 30

।। श्री शचीन्द्र भटनागर –:

। भारत है देश सबकी शुभ कामना जहाँ है । 'सर्वे भवन्तु सुखिनः ' की प्रार्थना यहाँ है।। X X X

पीड़ित नहीं हो कोई , अज्ञान अभावों में , निर्बल नहीं हो कोई,

दुःख क्लेश कुभावों में सुख बॉट दुख बंटाएं की प्रेरणा मिली है।

पर पीर से द्रवित हों, सेवेदना यहाँ है । 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' ..... X X X

अब क्रान्ति विचारों , अनिवार्य हो गयी है, विधि सप्त क्रान्तियों की स्वीकार , हो गयी है।

हो देश मुक्त व्यवनों , आडम्बरों –छलों से उज्जवल भविष्य वाली अब सर्जना यहाँ है

'सर्वे भवन्तु सुखिना ' ..... "अखण्ड ज्योति " फरवरी 2002

।। रह सकेगी न कोई धरा दलदली , क्रान्ति सेना चली , क्रान्ति सेना चली । X X X

एक है अब युवा–शक्ति का संगठन , हो सकेगा न दुष्वृत्ति का संक्रमण ,

नर्क जीवन करेगा न कोई व्यसन, हम करेंगे यहॉ स्वच्छ वातवरण ,

फिर मनुजता नहीं जा सकेगी छली। क्रान्ति सेना चली ..... X X X

पुत्र नीलाम होंगे न धन के लिए , ब्याह होंगे मनों के मिलन के लिए ,

अब न क्वॉरी रहेगी सुता दीन की , अब न दुख में दहेगी सुता दीन की ,

बिन खिले अब झरेगी न कोई कली। क्रान्ति सेना चली ....."क्रान्ति के स्वर " पृ0 8–9

12 श्री झलकन लाल वर्मा 'छैल' –:

आगे चलकर यह सुवर्ण का पशु–पशुता का रूप धरेगा;

दुराचार की खाई गहरी होगी –मानव डूब मरेगा ,

नहीं ! नहीं !! ऐसे अनिष्ट का उद्भव कभी न होने दूँगा ;

मानवता को चुभने वाले कॉटे –कभी न बोने दूँगा ,

कहा राम ने जैसा, वैसा किया लखा सम्पूर्ण जगत ने;

आदर्शों को दिया दीर्घ जीवन उनके अपनाये पथ ने, "यु0 नि0 यो0 " 5 अप्रैल 1973

13 श्री राम कुमार भारतीय –:

तू ही कर सकता है, जग में नव युग का निर्माण, तेरे ही हाथों में है अब, इस धरती का मान ।।

दिखलाते दुनियॉ को अपने पौरूष की पहचान , जिससे हर्षित हो गायेगें सब तेरा जय–गान ।।

अपने बल को अब भूले तू , तझमें शक्ति विशाल, बढ़ता चल क्रान्ति के पथ पर लेकर 'लाल–मशाल'

"यु0 नि0 यो0" 5 जनवरी 1975

14 डा0 आर 0 पी0 कर्मयोगी –:

उलटी रीति कुरीति ने, दुहरा दिया दबाव। मौलिक चिन्तन घट गया, जाता रहा प्रभाव।।
आज चतुर्दिक हो रहा , भारी भ्रष्टाचार । अगर मिटाना है इसे, बदलो निजी विचार ।।
जो विवेक विस्तार का , बीड़ा लेइ उठाए । रूढ़ि रीति पाखण्ड का, दे वह नाम मिटाइ।।
नव युग दस्तक दे रहा, सोता रहे न कोइ । मानव के निर्माण में, होड़ परस्पर पोइ ।।

"ज्ञान रश्मि" पृ0 41 , 42

श्री वीरेश्वर उपाध्याय –:

। तुम उज्जवल भविष्य रचते हो , हम उज्जवल चरित्र रच पायें ।
श्रद्धा–प्रज्ञा रूप तुम्हारा , प्रतिपल हम मन में रख पायें।।
प्राण होम, युगधर्म निभायें , बन जायें ऐसे व्रतधारी।
महा क्रान्ति हित हम जूझेंगे कार्य करेगी शक्ति तुम्हारी ।।
मॉ की ममता पीकर गुरूवर! हमने कर ली है तैयारी । "क्रान्ति गीत " पृ0 36

11 शिष्टाचार से सम्बन्धित शब्दावली का आलोच्य काव्य मे प्रयोग –:

। श्री मंगल विजय ' विजय वर्गीय ' :–

। न शोषण और उत्पीड़न टिकेगा अब कहीं पर भी ।
स्नेह–सहकार की दुनियॉ बसेगी इस मही पर ही ।
लात से वह बचेगा , बात से जो मान जाएगा ।

।। मनुज –जन्म श्रेष्ठ है यह भावना करो। श्रेष्ठ कर्म करने की कामना करो ।।

।।। संवेदन , स्नेह से मनुज मन पगे। श्रम की सहकार की भावना जगे ।

IV बुद्धि कौशल भावना से शून्य होकर, मनुजता के लक्ष्य पथ से भटक जाता है।
फिर मनुज की देह में रहते हुए भी, जिन्दगी नर पशु , पिशाचों–सी बिताता है।।

2 श्री शिवशंकर मिश्र–:

अब तो तुम तक पहुँचाने को, कुछ संदेश नहीं X X X
पहले पत्र न यदि मिल पाता– जाने कैसा मन हो जाता ,
अब तुम लिखो न लिखों हृदय में होता क्लेश नहीं ।।
खाली –खाली सा यह मन है ,सूना–सूना सा जीवन है।
परामर्श , अनुरोध , निवेदन, विनती शेष नहीं ।। "अवशेष पुष्प " पृ0 48

3 श्रीमती विद्यावती मिश्र –:

। स्वागत राष्ट्र पिता के प्रतिनिधि , भारत मॉ की सर्वश्रेष्ठ निधि ! X X X
धन्य जो कि इस पथ आगे , जय–जय संत विनोबा भावे !
स्वागत क्यों? कैसा ? जय कैसी? मुझको अपना मानो ,

मुझे पराया समझ न इस विधि आडम्बर की ठानों ,
मुझको निज परिवार वंश की एक इकाई समझो,
मत नेता समझो बस केवल अपना भाई समझो "मुक्ति" पृ0 51

।। एक–एक से मिल जग बनता एक–एक की कामना , उदय करेगी मानव मन में, ,
क्या विस्मय यदि जीवन का अभिशाप स्वयं वरदान हो ! प्रभु सबका कल्याण हो !!
मेरे शुभ कर्मों के फल का सब जब साझीदार हो,
सबके लिए समान रूप से जय–श्री का उपहार हो ,
मेरा स्वेद बिन्दु मानव के हित अमृत का दान दो ! प्रभु सबका कल्याण हो ।।
"युग वीणा" पृ0 56

4 श्री बाबूलाल जैन 'जलज'

। यह जीवन भी क्या जीवन है, जो काम किसी के आ न सके ।
विश्वास किसी को दे न सके, विश्वास किसी का पा न सके ।।
पड़ा रहा जीवन घट रीता , हृदय किसी का कभी न जीता ,
धर्म क्षेत्र में कर्म क्षेत्र में , झुठलाई रामायण गीता ।
बात हृदय की कह न सके जो, बात प्यार की सुन न सके । X X X
शिशु की भोली चितवन पर जो, क्षण" भर भी मुस्का न सके।
यह जीवन भी क्या जीवन है. ..... "यु0 नि0 यो0" 20 मार्च 1973

।। शक्ति पुंज है क्षमा , क्षमा वीरों का भूषण ।
दैवी गुण है क्षमा, क्षमा की ज्योति विलक्षण ।।
क्षमा व्यक्ति को शान्ति , कान्त निभ्रान्त बनाती है ,
अहं असत् को क्षमा , शन्ति का पाठ पढ़ाती है।। X X X
मानव उर में जब कभी, उठती क्षमा हिलोर है ,
मन की अन्धी गुफा में होती अभिनव भोर है ।। "यु0 नि0 यो0 " 5 जून 1973

5 डा0 त्रिलाकी नाथ ब्रजबाल –:

। शान्ति से बोले यों उपगुप्त , देर से मिला, क्षमा दे आप !
नहीं कर पाया था सत्कार , शेष था मेरे मन अनुताप । X X X
उठाया देकर भुज–अवलम्ब, चले लेकर निज धाम ,
बासवी बिलख उठी तत्काल , आप क्यों छूते दूषित चाम ? X X X
आपने दिया मुझे वह ज्ञान, मिटा जिससे मेरा अज्ञान।
गर्त से निकली मैं तज पाप , चूर भरपूर हुआ अभिमान ।। X X X
भुला दो अपनी पिछली बात , सजाओ जीवन में नवप्रात ।
हुआ जो होना था अनिवार्य , लिखा विधि का होता अज्ञात ।। X X X

धीर अब धरो , करो शुभ काम , विगत को भूलो सपन समान ।

इसी से होगी मन में शान्ति यही है सारयुक्त शुचि ज्ञान।। "अनुताप " खण्ड काव्य पृ0 42

6 श्री बलराम सिंह परिहार –:

। एक क्षण ऐसा लगा यह याचना भी व्यर्थ , प्राण देने के लिए था एक भी न समर्थ,
कम नहीं वे जो बहुत बढ़ बढ़ बनाते बात, जब परीक्षा की घड़ी आती दिखाते दाँत
कुछ खिसककर भाग गये, कुछ खड़े थे चुपचाप , कई ने गुरू के कथन को कहा भ्रान्त प्रलाप ।। X
पाँच प्यारों ने किया जब धर्म–हित तन त्याग ।। " "यु0 नि0 यो0 " 20 दिसम्बर 1973

।। अपने गौरव का ध्यान करें सब धर्मों का सम्मान करें ।
भूलें न विनम्र स्वभाव कभी , अपने मन में अभिमान करें ।।
थोड़े में ही सन्तोष करें वह तृप्ति हमें दो हे भगवान ,
जन जीवन का कल्याण करें वह शक्ति हमें दो हे भगवान ।। "यु0 नि0 यो0" 5 जुन 76

।।। हम जा रहे असुर संस्कृति पर–करने कठिन चढ़ाई ।
हे कामदगिरि ! हमें शक्ति दो– तुमको राम दुहाई ।। "क्रान्ति गीत" पृ0 14

7 डा0 हर गोविन्द सिंह –:

। तुम्हें जन्म दे मोद माने मनाया , पिलायी सुधा , अन्न प्राशन कराया ;
मिली ज्योति जो पूर्वजोंकी धरोर , उसे क्षीण क्यों कर रहे हो निरन्तर ;
अगर कामना है बहुत मुक्ति की तो, पितर –देवऋण और ऋषि ऋण चुकाओ । X X X
सफल है उपार्जन तभी साधना का, मनुज के हुदय की गरीबी मिटाओ ।
अभी विश्व को है तुम्हारी जरूरत , न गिरि –कन्दरा में स्वयं को छिपाओ ।
"यु0 नि0 यो0" 5 सितम्बर 1976

।। सत्य की शोध

" ग्रन्थ हो या पन्थ अथवा मान्य कोई व्यक्ति , आप मत रखिए किसी पर अंध श्रद्धा–भक्ति ;
जाँचिए हर तथ्य , लेकिन नम्र हो सविवेक, सत्य के दर्शन कराती , शोध की अनुरक्ति । "
"पुष्पांजलि" पृ0 90

8 डा0 राम स्वरूप खरे –:

। जीवन सचमुच यहाँ मृत्यु की पुण्य धरोहर! जल का ही पर्याय नहीं क्या भव्य पयोधर !!
अनचाहे ही मीत, बिदा बेला में आँखें– स्वागत कर उठती लेकर मुक्ताश्रु मनोहर ।।
लय होते नक्षत्र भोर के द्विरागमन पर! आतुर रहता हर विरही नित प्रियागमन पर !!,
जी भर रोऊँ याकि हँसू कुछ तो बतलाओ – अनायास मैं आज किसी के शुभागमन पर ।।,
तुमने मुझे बुलाया था। गिरता देख उठाया था!
नींद न आने पर थपकी दे – किसने मुझे सुलाया था!! X X X
गिर–गिर पड़ता था तब चलना सिखलाया! भूला जब , सद्पथ पर बढ़ना बतलाया ।।

करते रहे क्षमा मम त्रुटियाँ दोष सब– समझ न पाया फिर यह दिन क्यों दिखलाया।।

"मेरे स्वप्न तुम्हारे चित्र " पृ0 32 , 31 , 26

9 श्री लाखन सिंह भदौरिया ' सौमित्र '–:

। लोक–हित के लिए जो हलाहल पिये , शिव, अमृत पुत्र वो बन गया आदमी ।

"अखण्ड ज्योति " जन0 1980

।। तम से डरकर सो जाने से, अच्छा है जग कर कुछ गाना ।

अन्धकार पर गुर्राने से, अच्छा तम में दीप जलाना ।।

तूफानों का वेग देखकर , अच्छा पग उत्साह जमाना,

विघ्नों की बौछार शीश धर , अच्छा आगे कदम बढ़ाना ।।

कॉटों पर कुढ़कर चलने से, अच्छा है कुछ गीत गुँजाना,

जमुहाई , लेकर रूकने से , अच्छा है पथ में मुस्काना।।

घुँघुँवाकर जलने से अच्छा , एक निमिष धू–धू जल जाना ,

लम्बी उमर भार ढोने से ,अच्छा , कुछ करके मर जाना ।। "युग नि0 यो0 " मई 1987

10 श्री मती माया वर्मा :– दायित्व–बोध

। दुःशासन की मनमानी पर – पट बाद में लिये दौड़ो।

पहले ब्रहमदण्ड से उन दुष्टों के हाथ को तोड़ो ।।

नारी की यह दशा सुधारो , सहते हुए करोड़ों वर्ष X X X

चलन बना फिर से –नहीं दे सकते भाई को एक गॉव।

अब भी दिख जाता है शकुनि , कपट छलके लगवाता दॉव ।।

यह सब मेट स्थापित करने हैं जीवन में उच्चादर्श ।। "जीवन सुरभि " पृ0 31

।। प्राण पिलाया है तुमने हम भी कृतघ्नता नहीं करेंगे ।

अपने से छोटे घट आत्मसुधा रस से आजन्म भरेंगे ।।

मूल्य पीर का समझाया है तुमने हमें पीर खुद सहकर

हम भी स्वयं कष्ट सह–सहकार औरों का दुख दर्द हरेंगे ।।

"गागर में सागर " पृ0 46

11 श्री वीरेश्वर उपाध्याय :–

। सुनो कान खोलकर, महाकल कीपुकार, आमंत्रण स्वीकारो, ओ सपूत होनहार ।।

और आज जीवन को ऐसा कुछ मोड़ दो, ऋषियों की धारा में अपने को जोड़ दो ।।

साधक निज निष्ठा की पूँजी को तोल लो, अवसर है युग ऋषि की पीड़ा को मोल लो।।

।। आज कसौटी पर मानव को परख रही है मानवता ,

मानव में कितनी मानवता निरख रही है ऋषि सत्ता ।।

मानवता का मान बढ़ाना देखें किसको आता है? कौन दिखाता प्यार ऊपरी किसका सच्चा नाता है?

सबकी कठिन परीक्षा होगी, अब जाने अनजाने। विमल भावना भर भाषा में संदेशा भेजा माँ ने
हर सपूत तक पहुँचाना है – वह माने या ना माने ।। "कान्ति गीत" पृ0 58, 39

12 श्री शचीन्द्र भटनागर :–

बचे तो जिन्दगी के दिन, तुम्हारे काम आएँगे
मिले संकेत जब तुमसे, तभी अविराम आएँगे।
तुम्हारा स्वर भले ही चिलचिलाती धूप में आए ,
सदा आदेश मानेंगे, किसी भी रूप में आए। X X X
जरूरत यदि हुई तो त्याग कर धन–धाम आएँगे X X X
समय वह धन्य है, गुरूवर ! तुम्हारे काम जो आया,
परम सौभाग्य है, हम–सा अकिंचन जो तुम्हें भाया ,
प्रभो! तुम देखना, हम भूल सुख–विश्राम , आएँगे। मिले संकेत जब तुमसे .....

13 डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी :–

मेरी क्षमता कहाँ कि लिख दूँ, तुमने ही उकसाया ।
जो कुछ मुझमें विद्यमान है, तुमसे ही सब पाया ।।
हर दोहे का बोल तुम्हारा , तुमको ही है अर्पित ,
नतमस्तक हूँ, गुरूवर मेरे , तुमको करूँ समर्पित। " "ज्ञान रश्मि" पृ0 2

14 श्री देवेन्द्र कुमार देव :–

समय माँगता समर साथियों! आमंत्रण स्वीकार करो ।
जीवन गति का नाम बाँकुरो ! मरण न अंगीकार करो ।। X X X
प्राण फूँकदो हर सोये जीवन में किया कलापों से ।
मुक्त करो बोझिल समाज को कुंठा के अभिशापों से
वही अर्चना पूजा– होगी –जहाँ तुम्हारा पथ होगा ।
ऐश्वर्यों की अगवानी –में कर्त्तव्यों का रथ होगा ।।
नये सृजन के लिए वीर यह नूतन रण स्वीकार करो
मातृभूमि के आराधन हित यह रज कण स्वीकार करो ।। "कान्ति गीत " पृ0 32

15 श्री राम कुमार भारतीय :–

"राम में है तूँ रमा और कृष्ण का है रूप पाया, जिन, मुहम्मद, बुद्ध, ईसा इन सबों में तू समाया।
वेद, गीता, धम्म पद , श्रुति , शास्त्र सब तेरे बनाये, है कुरान पुरान में तेरे हृदय के भाव छाये ।
तू नियंता है नियति का कौन कहता क्षुद्र नर तू। है पुरूष, पुरूषार्थ कर तू।"जीवन संगीत" पृ0 32

16 श्री याद राम शर्मा 'रजेश' :–

आत्म बोधः–

तू अनन्त शक्ति है, अजेय है महान है। क्या तुझे अभी नहीं हुआ सवरूप ज्ञान है? X X X

काम–क्रोध–लोभ–मोह से तुझे न प्रीति हो , स्वार्थ घोरे शत्रु है, यही पुनीत रीति हो,

तू मनुष्य है तुझे मनुष्य से न भीति हो, प्राण भी विसार दे जहाँ कहीं अनीति हो।

क्या रहा महत्तव जो न शेष स्वाभिमान है। तू अनन्त शक्ति है ..... X X X

जन्म कर्मवीर का अवश्य की कृतार्थ है, प्राण धर्मवीर का गया सदा परार्थ है।

तू कभी खड़ा हुआ स्वबन्धु रक्षणार्थ है, तो सभी वुसन्धरा खड़ी सहायतार्थ है ।।

जो किया स्वरूप है यही पुनीत ज्ञान है । तू अनन्त शक्ति है ..... "जीवन संगीत " पृ0 53–54

17 श्री लक्ष्मी नारायण 'कमलेश' :–

दूर जाना था अचानक रूक गए तुम तो यहीं ,

इस शिथिलता से तुम्हारा , कार्य कुछ होगा नहीं,

गिर पड़े हो तो सँभल जाओ, उठो हिम्मत करो ,

कठिनाइयों के पंक में अब फिर न फँस जाना कहीं ।

हीनता का दोष अपने शीश पर तुम मत मढ़ो ।

क्यों रूके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो ।। "आत्म चिंतन " पृ0 57

18 डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया :–

निज–श्रम से ही हम सब मिलकर, एक नया इतिहास बना दें। X X X

क्षेत्रवाद के घातक विष को, आओ ! मिलकर उनकी धता बता दें।।

निर्मल मन, जन अपना कर लें , दुर्भावों को दूर भगा दें। X X X

बैर–घृणा–ईर्ष्या के कंटक , आओ! मिलकर आज गला दें।

जितने कलुषित भाव हृदय के , मिलकर उनकी चिता जला दें।। "यु0 नि0 यो0 " अक्टूबर 1998

19 डा0 सरोज बाला चौधरी :–

। नये युग के बीज बोयें आज अभी इस वर्ष के,

लाभ के , कल्याण के, सद्ज्ञान के, उत्कर्ष के ।

।। कर लो मिलकर नेक कमाई, सत युग फिर से आएगा।

हमने छोड़ी नहीं बुराई , कलियुग कैसे जाएगा।। X X X

मन से स्वार्थ हटा ले बंदे , सतयुग ऐसे आएगा ।। X X X

बन जा प्रेम दया का सागर , सतयुग ऐसे आएगा ।। X X X

मन मन्दिर में कर उजियारा , सतयुग ऐसे आयेगा ।। X X X

"यु0 नि0 यो0" जनवरी 1998 , नवम्बर 1999

12. जनपदीय शब्दावली का आलोच्य काव्यों में प्रयोग –:

1 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल –:

डा0 ब्रजबाल जी के काव्य का प्रारम्भ ब्रजभाषा की रचनाओं से हुआ था और उन्होंने ब्रजभाषा में अनेक सुन्दर कवित्त , सवैया, दोहा , पद आदि लिखे । सन् 1964 के बाद उन्होंने जनपदीय भाषा में नये गीत और नई रचनाएँ भी लिखीं।आपके इन गीतों में हर प्रकार के गीत हैं–ऋतु सम्बन्धी, त्योहारों से सम्बन्धी और भाव प्रधान गीत। लेकिन , गीतों में उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है– ब्रजभाषा के बालगीत लिखना इन गीतों में आपने गम्भीर से गम्भीर बात को भी अत्यन्त सरल रूप में कह दिया है। आपके गीतों में जनपदीय –शब्दावली का प्रयोग अवलोकनीय है–

। हरौ समुन्दर गोपी चन्दर , बोल मेरी मछरी कितनौ पानी ?
ऊपर अम्बर, नीचे जल ,सूरज चन्दा ऊँचे फल
मन कै भीतर गंगा सुन्दर , प्यासौ घूमें अग्यानी , सागर में गंदलो पानी । "

।। हम उछरिंगे, हम कूदिंगें, हम खेलिंगे , हम खेलिंगे ।
बरसै पानी चाहै तो परवत रोकै आयें तौ
देखैं, कौन झुकायै तो, हमकूँ रोक सतायै तौ
आसमान कूँ ही लिंगे । ..... हम खेलिंगे .....

।।। कवि के एक सामूहिक भावना प्रधान गीत में जनपदीय शब्दावली का प्रयोग देखिए –
तपन के दिन आये भैया! बौराई लूँ चलै
झिंझौरे दहकी पुरवैया। "कविवर ब्रजबाल और उनकी काव्य कृतियॉ " पृ0 103

ब्रजभाषा में कवि के नवीन प्रयोग –:

। सूखी सी देह , जिमि निर्जला नदी ।
ऊपरी दिखाव , जिमि बीसवीं सदी ।
तन–मन सम्बन्ध , जिमि अंक छत्तीस ।
जीवन की गति, जिमि धावन में टीस ।

।। एक दिना , मूलधन ब्याज में बूड़ि गयौ।
रिनिया नैं धर लियौ, लक्ष्मी पति नाम ।
समरथ कौ दास जगत बड़ौ भयौ दाम । "

"कविवर ब्रजबाल और उनकी काव्य कृतियॉ " पृ0 104

2 डा0 हर गोविन्द सिंह –: डा0 सिंह की बुंदेली की प्रतिनिधि रचनायें अवलोकनीय हैं–

। सत्पुरूष रतन
ऊ देस धन्न, वा भूमि धन्न, औतरे जहाँ सतपुरूष रतन । हम पूजत उनके विमल चरन ।।
सबके सुख के लाने जिन्नें निज कौ सुख –वैमौ त्याग दओ, – – –
पर दुख में नैनूं से पिघले जो उतरे बन कैं गंगधार–

जिनकी संगत में डरो–परो , बन गओ गिलारौ तक चंदन । बन गयी रपरियॉ नंदन बन ।। X

मानुस कौ पतन जिन्हें अखरो जे कमऊँ नींद भर ना सोए;– – –

जिनकी भस्मी कौ तिलक लगा, धॅस जात कांति खोरन–खोरन , ऊँघत ज्वानी खें झकझोरन।

मैरा सैं लैकै महलन लौ झनकार उठत जिनकी बानी,

हिरदे के सूके सोतन में रसयान लगत फिर सें पानी; X X X

जिनके बोलन की डोर पकर बज उठत नगारे रमतूला;

सींमा पै कौंधत बिजली –सी , करतीं रन भेरी घनन–घनन, जिनके है साके धरन–धरन ।

2. शुभ कर्म :– कर लेव साजे करम , मनुजतन बेर–बेर यौ नइँ पानैं; चरचा भर ह्यॉ रह जानैं।

के नैं , कब , हयॉ कैसी राखी – दिख रइ सब ईसुर की आँखी,

सबसें ऊँची ओकी साखी;

पुलिस–अदालत सैं बच जेहो अंत समै पै ड़िंड़याने। चरचा भर हयाँ रह जानें ।। X X X

छाँड़ी जेनें महल –हबेली , विपदा सबके हित में झेली, जोरी कभउँ न निज की घेली;

पुजत चेटका ऊ बापू की , दुनियाँ तीरथ –सौ मानैं। चरचा भर हयाँ रह जोनें ।

3 अजब तमाशा !

कहत में हँसी, दिखें जी दुखत तमासौ बड़ौ अजब चल रओ ।

एइ भारत भूमी के बीच आए ते सिबि, हरिश्चन्द्र , दधीचि ;

राम– से पूत , भरत – से भ्रात, जहॉ ती त्याग– सत्त की बात ,

ओइ गौतम– गांधी कौ देस –दलन के दलदल में सल रओ ।

इतइँ तौ जलमें सूर कबीर , बसे तुलसी जमना के

तीर; लगाकैं इश्ट देव कौ ध्यान–बिचारो धरती कौ कल्यान;

रचे उनने मन्दिर बेजोड़ उधेरत हम चन्दन कौ चओ। कहत में हँसी .....

सरसुती के सोरा उपचार – करे हमनैं नउतम तइयार;

आचमन बोतल कौ अभिराम , मंच पै सिगरट धूप ललाम;

दच्छिना के फैले छरछन्द जहाँ सें एक छंद गढ़ लओ। कहत में हँसी .....

लिखी जुन फाहियान नैं बात , आज बा निरबक गप्प दिखात ;

करत का दोरें तारों जड़ो ? बचत नहियॉ खौंड़ा कौं गड़ों;

लगी हे गिधवन जैसी घात दिनइँ –दुफरें हॅत्ता घल रओ । कहत में हँसी ....

मिटा कै दया–धरम कौ खोज मुसरिहा मूँछें टैंउत रोज;

अफसरन सैं उनके ब्यौहार, गिनत बे दो की जाघॉ चार;

देत सब बेवस उनकों साथ , कभाउत मार–मार कै 'हओ' । कहत में हँसी .....

इतइँ जलमे ते भामाशाह ? हमें तो जान परत अफवाह ।

नहींतर का उनकी सन्तान – निचोती ऐसें हिन्दुस्तान ?

तौंद में नहियाँ तनकउ साँस सपोटत जात थओ कौ थओ । कहत में हँसी ...

IV बुन्देलखण्ड के किसान –:

हम किसान बुन्देल खण्ड के हमें भूम या प्यारी है ।
ई धरती पै जलम–जुगन सें हमने काया गारी है।
जब औरन नें गंगाजल सें अपनी बगियाँ सींची जू ;
तब पाठिन की जर सैं हमनें स्रम कीं झिरें उलीची जू;
निज की विपदा तनक न सेंटी, हमें पिरानी पर–पीरा,
अपने दोरें मुरम बिछाई, बॉट दए बाहर हीरा;
मुरका डुभरी भोग लगा के परसी सदा सुहारी है। हम किसान .....
जब तुम ऊँघत बैठे–बैठे खस की टटियन में प्यारे
तब हम भैंटत लपट–धाम खें दौर–दौर कै उघरारे ;
साखन सें चल रही तपस्या, तपा तपत हो गऐ कारे ,
अब हम ठॉड़े रहत –पछारूँ जहाँ जुरत गोरे–नारे ;
जहाँ कसौटी होत हिए की, बस हवाँ जीत हमारी है । हम किसान .....

V खेतन की बहार –

का कहिए खेतन की बहार, मन होत मगन सोभा निहार ,
बलिहारी परिथी–पुत्रन की जुन रकत–पसीना रहे गार ।
नाठर –कुनकुट गुलजार करत ऊ पुरसारथ की बलिहारी ,
कंचन के झुमका उठा–उठा जै बोल रही क्यारी–क्यारी ,
ककरीले काबर की काया वन जात मार, बिलसत कछार । मिहनत की महिमा है अपार ।
छुन छुना उठत सन कौ गहनां टिलवा के ऊँचे मूड़ा पै
मुतियन की लरें लिपट जातीं जुंडी रानी के जूड़ा पै;
भर मॉग सुहागिन–सी धानें दै जाती मंगल समाचार।
आ जात चना पगिया सम्हार । X X X
केकी गुनभरी तपस्या सें कुदवन की कॅदिया किलक उठी ,
को सकुन्तला–सी बछवन खें दै चली समा फिर मुठी–मुठी
अनुराग बसो बैरा गिउ में , लग चलो कि है संसार सार ।
साजो घर सें सौ गुनों हार ।

कवित्त :– रसराज

सुनकै पराइ पीर गल जाय नैनू–घाईं एइ आय आदमी के हिर दे को सरबस ,
भूले निजी राग –रंग , बना देत बिस्व रूप मूल सुरतत्रिंका सें जोर देत बरबस;
छीन करै छुद्र भाव , दिव्य छबि प्रगटावै बस करै ब्रजधारी बिना तीर–तरकस,

और सब रस आयें दरवारी सहना –से छत्रपति स्वामी एक साँचों–सौ करून रस ।

पहचान

फिर फिपयानौं रोज , बारा मैंड़े भाँड रहो हुलिया पै हीन भाव जेसें करो पाप है,
गरब, गरूर , चालबाजी–भरी बातें सुन पियत कुनैन कै सौ घूँट चुप्प चाप है;
जन्म –तिथी बंस –बेल , रूप –रंग , कारबार , कहाँ कैसौ मोल–भाव बस एइ जाप है,
जेके ऐसे हालचाल देखें निज देख बीच बिना कहैं जान लेव बिटिया कौ बाप है।

मृतक भोज –:

बिलखत महतारी, छाई जहाँ अँधयारी घट करै भाँय–भाँय जैसें खायें जात है ;
लुटगो सुहाग –सोम , कौंरी बली मुरझानी बिघवा जवा गऊ–ऐसी डिंड़यात है।
बड़े–बड़े बैठ उतै खात पुरी –मालपुआ नौव 'दिन तेरहई' जुरत बरात है,
एक–एक दानों, अरे , अँसुवन–सानों जहाँ ऐसे की रसोई हाय , कैसे कें रिहात है ?

बरसे महाराज झड़ा झड़ियाँ –:

बरसे महाराज झड़ाझड़ियाँ , सो धरती जै–जैकार करै ,
पानी कौ पहलै झला गिरो, मुतियन की लर झिलमिला उठी ;
कुछ सौधी–सौधी महँक जगी, सोई माटी कुलबिला उठी;
वह चलीं उरतियाँ गलिन–गलिन , लरकन की गोलें जुरयाई ,
किलकत उघरारे निकट परे, वे खेल चले चाई–माई ;
सबनें जी–ऐसो पाओ है, या अमरित की रसधार झरै । सो धरती ..... X X X
निंगचली गिंजाई गैलघरैं, ई पखनी –पखना मौज करैं,
लजवन्ती बीर बहूटिन सें हरयारी से सेंदुर माँग भरें ।
फिर रहे केंचुआ पौहन के गुलगुले गिलाए में सरकत ,
कुछ ऐसउ कीरा चिर परे , जिनखें दिखतइँ छाती धरकत ,
मालिक कौ भारी कटखानौं अनगिनते जीव निकार धरै। सो धरती .....

3 डा0 राम स्वरूप खरे :–

I सुनहु भवानी – सुअन अब , करहु कृपा की कोर !
हो दयाल, कर दो दया, लख अवगुण मम घोर ।।

II कहाँ जाउँ केहि सौं कहौं ऐसौं कौन दयाल ।
चरण–शरण देकर अभय , तत्क्षण करे निहाल ।।

III जप तप संयम हीन मैं, अति मति–मन्द गँवार ।
है समदर्शी तज तुम्हें, जाऊँ केहि के द्वार ।।

IV सद्गुरू कौ दरबार तज, दूसर कहँ अस ठाँव।
रिद्धि–सिद्धि पीछे फिरत, मुक्ति पलोटत पाँव ।।

4 डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी –:

कलियुग की करतूत –:

कलियुग की कालिमा से, कालिख दई है पोत
चारौ लॅग देखो घोर अंधकार छायौ है
बने हैं लोग लंपट, घ्रष्ट–भ्रष्ट व्यभिचारी
काले कारनामें , उधम भारी ही मचायो है
दुबके से बैठे लोग , सहमें से बैठे लोग
काहू ने न बॉधी पार नोंच –नोंच खायौ है
मन्दिरों में जाते लोग, मसजिदों में जाते लोग ,
तऊ जानें कौन ठौर प्रेम बिरमायौ है ?

5 श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय '–:

श्री मंगल विजय ने अपने काव्य–संग्रह ' साधना के स्वर ' के उत्तरार्द्ध में संचित गजलों और नज्मों के भाव लोक में सम्मिलित है– आत्म विश्वास , मृत्यू के प्रति निर्भीकता हिम्मतवर लोग और उनसे जीवन शिक्षा, प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति मुग्धता, प्रकृति में किसी का रूप दर्शन, स्वयं की अनुपलब्धियों , दुख–तकलीफों की स्वीकार्यता, गम की अनुभूति, बेगम के अपने पास नहीं होने का प्रभाव , माशूक की तारीफ , प्रिय के दर पर जाते रहने का संकल्प, माशूक की स्मृति , उसका ध्यान, उसकी प्रतीक्षा पर उसका दीदार होने पर बेहोशी ।

कवि के 'चॅद आशार ' भी विविध विषयक हैं जिनमें है देशवासियों को एकता, समता और आत्मोत्सर्ग का संदेश , प्रिया का आने का आमंत्रण इन आशारों में आशिक , माशूक और मुहब्बत की चर्चा के अलावा अन्य अनेक भाव, विचार और जीवन–संदेश है नाम से कुछ नज्में–शेर जो कवि ने मंगल विजय बेताव ' लिखे, अवलोकनीय हैं –

। तारीफे–जिन्दगी –

जिन्दगी वह है जो मंजिल तक बढ़े बिन लड़खड़ाए।
कौन कहता है कि खम खाकर फिसलना जिन्दगी है।।
मुश्किलें आएँ तो क्या वाजिब हे नजरें डबडबाना।
फूल के मानिन्द कॉटों में महकना जिन्दगी है।

।। "हौसला अफजाई " –:

करेंगे तुम्हारा अरे! क्या तलातुम । तलातुल से कम हो अरे ! क्या भला तुम ।।
बलाएँ कहॉ तक भला रह सकेंगी , हो इन्सान सारे जहॉ की बला तुम ।।
दहकते शरारों की औकात क्या है । लिए ही दिलों में जलाले – शमा तुम ।।
सब्रो करार
बो खुद ही तड़प उठेंगे, जरा गुलशन में में बहार आने तो दो।

खुद खुल जाएगा परदा नशीं , चिलमन में उभार आने तो दो ।। X X X

हरगिज़ न असर होगा उन पर पैगामे–मोहब्बत का ऐसे ।

पैगाम उन्हीं का आएगा, खिरमन से पुकार आने तो दो।।

शुक्रे –खुदा खुदा ने उपनी हर एक कुदरत का फक्र तुम पर लुटा दिया है।

तुम्हारी नजरों की रोशनी ले, यह मेहरे तावॉ सजा दिया है।। X X X

दिले चमन से उठा बहारों , बहा सका वह वादे–बहारी ।

पुरनम नजर से ही अश्क लेकर , उन्हें ही शबनम बना दिया है।।

नजरिया

अगर है किसी से जो नजरें लगाना, तो उन बेसहारों से नजरें लगाओ ।

अगर चाहते हो जो ऑसू बहाना, तो जमाने के मारों पर ऑसू बहाओ ।। X X X

जरूरत जहॉ हो, जिगर, जिस्म अपना , वहीं पर लुटाओ तकाजा यहीं है।

वतन को जरूरत हे इन्सान की अब, अगर हो सके तो खयाफा दिखाओ ।।

तरीफे–माशूक –:

जुबॉ पे शीरी , लवों पे नगमें, नजर में जिसके कशिश बसी हो ।

हो बिजलियों सा जहॉ तबस्सुम , जो मेहरे–तावॉ से भी हंसी हो ।।

हों जुल्फें जिसकी अब्र पे गालिब हो सुर्ख सूरज से जिसके आरिज ।

जहॉ में जाहिर हो जो नज़ाकत, मगर गजब की परदा नशीं हो ।।

खुदा–परस्ती –:

खुदा परस्तो और जर परस्तो साथ रहना नहीं है मुमकिन ।

अगर हुआ हो तो खुदा परस्ती या जर परस्ती नहीं रहेगी ।।

खुदा परस्ती के जर परस्ती तो सिर पर चढ़कर बोलती है ।

खुदा परस्ती रही भी उसमें, खुदाई उसमें नहीं रहेगी ।। X X X

चनाचे कह दो खुदा परस्तो! खुदा परस्त से प्यार हो तो ।

ए जर परस्तो ! खुदा की दुनियॉ में जर परस्ती नहीं रहेगी ।।

"साधना के स्वर" पृ0 1 से 10

अष्टम अध्याय

आलोच्य काव्यों का अनुभूति पक्ष

(क) काव्य प्रयोजन

(ख) काव्य की मूल प्रेरणा

(ग) रस सिद्धान्त

(घ) स्थायी भ़ाव

(ड़) विभाव

(च) अनुभाव

(छ) संचारी भाव

(ज) रस योजना

(झ) आलोच्य कवियों का अनुभूति पक्ष

(क) काव्य प्रयोजन –:

आचार्य मम्मट ने काव्य के छः प्रयोजनों का उल्लेख अपने ग्रन्थ 'काव्य प्रकाश' में किया है क्योंकि

"प्रयोजन–मनुदिदश्य मन्दोऽपि प्रवर्तते "

इस कथनानुसार कोई मूर्ख व्यक्ति भी किसी लाभ के बिना अर्थात प्रयोजन विशेषको लक्ष्य किये बिना किसी कार्य से पृवृत्त नहीं होता है। कोई मन्द बुद्धि भी छोटे से छोटे कार्य को प्रयोजन के बिना नहीं प्रारम्भ करता है। क्योंकि जब तक कर्ता को विषय, प्रयोजन , सम्बन्ध तथा अधिकारी का ज्ञान नहीं होता है तब तक अनुबन्ध चतुष्टय ज्ञान के बिना कर्ता की कार्य में प्रवृत्ति नहीं होती है। इसलिए ग्रन्थकार ने विषय और प्रयोजन को स्पष्ट करने के लिये निम्न लिखित कारिका अवतरण किया है–

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
सद्य; पर निवृत्तये कान्तासम्मित तयोपदेशयुजे।।" 1

1 यश से :– प्रथम तो काव्य का प्रयोजन यश लाभ है क्योंकि भारतीय कर्णधारों तथा मनीषियों की मान्यता रही है कि यह पन्चभौतिक नश्र शरीर तथा अन्य सांसारिक चाकचक्य सब मिथ्या एवं नश्वर है। केवल यश ही चिरस्थायी है। अतः किसी ने शौर्य से, न्याय से, परोपकार से, देश भक्ति से लोककल्याण के लिए सदुपदेशों से एवं सद्रचना से यशप्राप्त करके यशः शरीर से अमरता को प्राप्त किया है। काव्य के निर्माण से यश प्राप्त होता है जैसो कि कालिदास, ब्यास, भावभूति, कबीर, सूर , तुलसी , मीरा, गुप्त, प्रसाद, पंत आदि महाकवियों ने काव्य–रचना करके विश्व में यश से परम प्रसिद्धि प्राप्त कर यशः शरीर से अमरत्व प्राप्त कर लिया है । सत्साहित्य की सृजन ही यश के लिये होता है । अतः काव्य का प्रथम प्रयोजन यश प्राप्ति है। आलेच्य कवियों ने भी काव्य रचना करके यश प्राप्त किया है ।

2 अर्थकृते–: काव्य रचना का द्वितीय प्रयोजन अर्थार्जन है, क्योंकि इस लोक में अर्थ के अभाव में जीवन दूभर हो जाता है । अतः योगक्षेम के लिये अर्थार्जन अनिवार्य है । अर्थ का अपरिहार्य प्रमूत्व अनुभव करके विद्वानों ने 'अर्थस्य पुरूषोदासः', 'सर्वगुणाकान्चानमा,' श्रयन्ति " इत्यादि सूक्तियॉ से अर्थ की आवश्यकता स्वीकार की है। यह अर्थ प्राप्ति भी काव्य रचना से हो सकती है जैसा कि प्रसिद्ध है कि ध ाावक आदि कवियों ने हर्ष आदि के नाम से रत्नावली नाटिका की रचना करके प्रचुर मात्रा में धन प्राप्त किया था इत्यादि अनेक उदाहण ने भोज प्रबन्ध में प्राप्त होते हैं अनेक हिन्दी कवियों ने अपनी काव्य कृतियों के माध्यम से प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी किया एवं अभी भी कर रहे हैं । अतः काव्य रचना का द्वितीय प्रयोजन धनार्जन करना है । कतिपय आलोच्य कवियों ने भी अपनी कृतियों के माध्यम से अर्थाजन किया है।

3 व्यवहार विदे –:

काव्य के सम्यक अध्ययन से लोक व्यवहार का ज्ञान प्राप्त होता है। लोक व्यवहार में ज्ञान के बिना

---

1. आचार्य मम्मट–काव्य प्रकाशः

सामाजिक जीवन के कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। अनेक विद्वान भी व्यवहार ज्ञान के बिना उपहास को प्राप्त हुये हैं। अतः व्यवहार ज्ञान के लिए साहित्य की अध्ययन परमावश्यक है। रामायण, महाभारत, रामचरित मानस , कबीर ग्रन्थावली , भारत भारती, प्रज्ञावतार आदि व्यवहार ज्ञान के लिये साहित्य सागर हैं। राजा तथा प्रजा को, पति–पत्नी को भाइयों को, मित्रों को, सेवकों को, शत्रुओं को कैसा व्यवहार करना चाहिए , इनकी शिक्षा एवं उपदेश इनके पात्रों से भली–भॉति प्राप्त हो रहा है। अतः व्यवहार ज्ञान के लिए काव्य का पठन, श्रवण एवं मनन अत्आवश्यक है। आचार्य शर्मा के समकालीन कवियों के काव्य के माध्यम से भी व्यवहार ज्ञानोपदेश प्राप्त हुता है ।

4 शिवेत्तरक्षतये –: काव्य–रचना का पठन एवं श्रवण अमंगल नाश में भी समर्थ है, यह काव्य का चतुर्थ प्रयोजन माना गया है। कादम्बरी के रचयिता बाणभट्ट के साले मयूरभट्ट भी कवि थे। दोनों ही धारा नगरी में रहते थे तथा प्रतिदिन अपनी अपनी नूतन रचनायें एक दूसरे को सुनाते थे । एक दिन बाणभट्ट से उनकी पत्नी किसी कारण अप्रसन्न हो गयी , रातभर बाणभट्ट पत्नी को मनाने का प्रयत्न करते रहे । इस प्रकार मनाने में व्यवस्त बाण तीन पदों की रचना करके पुनः चतुर्थ पद की योजना के लिये आवृत्ति कर रहे थे कि उसी समय प्रातःकाल के भ्रमणार्थ बाणभट्ट को साथ लेने की इच्छा से मयूर भट्ट द्वार पर आ गये और बाणभट्ट की रचना की आवृत्ति सुनकर रूक गये और जब चतुर्थ पर पूर्ण न होते देखा तो सहसा उन्होंने तीव्र स्वर से चतुर्थ पद की पूर्ति करके सुना दिया। यह सुनकर बाण की पत्नी ने क्रोध के आवेश में स्वर बिना पहचाने ही कुष्टी होने का शाप दे दिया। बाण की के पतिव्रतत्व के प्रभाव से मयूरभट्ट को कुष्ट रोग हो गया । जब उनकी पत्नी को ज्ञात हुआ कि मैंने यह क्या किया कि अपने भाई को शाप दे दिया तो पुनः कुष्ठ निवारणार्थ ' सुर्य शतक ' की रचना का उपदेश दिया जिससे मयूरभट्ट गंगातट पर जाकर एक वृक्षपर बैठ गये और एक रस्सी में सौ गॉठें लगाकर तथा लटकाकर 'सूर्य स्तवन–' की रचना करने लगे । एक श्लोक की रचना करने पर रस्सी की एक गॉठ काट देते थे। इस प्रकार सौ श्लोकोंकी रचना करने पर उनका कुष्ठ रोग दूर हो गया। अतः काव्य से अमंगलनाश होता है, यह काव्य का चतुर्थ प्रयोजन है। आलोच्य काव्यों की रचना से भी अमंगलनाश की पुष्टि हुई है।

5 सद्यः परनिवृत्तये – वस्तुत' काव्य के छः प्रयोजनों में सद्यपरनिवृत्ति ही मुख्य एवं श्रेष्ठ प्रयोजन माना जाता है। काव्य के पठन तथा श्रवण एवं दर्शन के द्वारा पाठक, श्रोत्ता , दर्शक अलौकिक रसास्वादन को प्राप्त करते हैं और परानिवृत्ति अर्थात पराशान्ति एवं अलौकिक आनन्द का अनुभव करने लगते हैं । आनन्दानुभूति काल में सांसारिक कष्टों की विस्मृति हो जाती है। यह आनन्दानुभूति ही सामस्त काव्य से अथवा आत्मचिंतन सम्बन्धी दर्शनशास्त्रों के रहस्य को जानने से ही हो सकती है। काव्यानन्द का आनन्द शर्करा मिश्रित दुग्ध के सदृश्य सरलता से बोध हो सकता है। इस लिए यह अलोकिक आनन्द ब्रहमानन्द सहोदर की अनुभूति केवल काव्य से ही प्राप्त हो सकती है। आलोच्य कवियों की रचनाओं के पठन, श्रवण एवं दर्शन द्वारा पाठकों , श्रोतओं एवं दर्शकों को अलौकिक रसास्वादन एवं आनन्दानुभूति हुई है।

6 कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे –:

काव्य प्रोजनों के अन्त में अन्तिम प्रयोजन उपदेश माना गया है। ये उपदेश तीन होते हैं।

1 शब्द प्रधान 2 अर्थ प्रधान 3 रस प्रधान ।

काव्य का उपदेश तो प्रभुसम्मित तथा सुहृत् सम्मित उपदेश की अपेक्षा भिन्न एवं विलक्षण होता है , क्योंकि कान्ता सम्मितोपदेश में शब्द की प्रधानता नहीं होती और न अर्थ की प्रधानता होती अपितु इस उपदेश में रस की प्रधानता होती है। इस रस प्रधान उपदेश शैली को ही कान्ता सम्मितोपदेश कहते हैं। जब कान्ता किसी कार्य में पुरूष को प्रवृत्त या निवृत्त करना चाहती है , तो वह अपनी सामर्थ्य से रसमय वातारण प्रस्तुत करके ही पुरूष को प्रवृत्ति या निवृत्ति के लिए प्रेरित करती है । काव्य के रसमय उपदेश कर्त्तव्य का ज्ञान सरलता से हो जाता है। काव्य से रसास्वादन के साथ–साथ कर्त्तव्य एवं समुन्नति के कार्यों में संहर्ष ही प्रवृत्त हो जाते हैं । यह सरल उपदेश ही काव्य का अन्तिम प्रयोजन माना जाता है। आलोच्य कवियों ने भी रसमय कान्ता सम्मितोपदेश प्रधान काव्य सृजन किया है–

ख रस सिद्धान्त–:

काव्य को परिभाषित करते हुए आचार्य विश्वनाथ ने "साहित्य दर्पण" में लिखा है कि ' वाक्यं रसात्मकं काव्यं 'अर्थात रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

तैत्तिरीय उपनिषद् में रस का महत्व प्रदर्शित करते हुए लिखा है कि –

' रसो वै सः यं लब्ध्याऽनन्दी भवति। '[1]

इस प्रकार रस को ब्रह्म प्रतिपादित करते हुए कहा है कि जिसको प्राप्त करके मानव आनन्द को प्राप्त करता है वह रस ही है। वेदव्यास जी ने भी रस का महत्व स्वीकार करते हुए काव्य का प्राण रस माना है जैसा कि निम्न पंक्ति से स्पष्ट हो रहा हैं–

'वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एंवात्र जीवितम् '

आदि कवि बाल्मिकि ने भी अपने आदि काव्य की रचना करूण रस प्रेरणा एवं करूण रस के उद्रेक से पेरित होकर ही की जो बाल्मीकि का करूण रस रूप पद्य लौकिक साहित्य का प्रथम छन्द स्वीकार किया जाता है । यथा–

"मा निषाद ! प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वती समाः ।
यत्क्रोन्चमिथुनादेकमं वधीः काममोहितम् ।।"[2]

रस सिद्धान्त के प्रतिपादनार्थ भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में इस सूत्र की रचना की । यद्यपि नाट्य शास्त्र से पूर्व रस का आविर्भाव हो चुका था। इस सिद्धान्त का सम्बन्ध वासुकि, नारद , ब्रह्मा आदि से भी था। , ऐसे संकेत प्राप्त होते है तथापि नारद, ब्रहमा , आदि के कोई ग्रन्थ प्राप्त न होने के कारण प्रमाणरूप में कुछ नहीं कहा जा सकता है अतः भरतमुनि को को ही रस का प्रवर्तक कहा

---

1. आचार्य मम्मट– काव्य प्रकाशः
2. आचार्य मम्मट– काव्य प्रकाशः

जाता है नाट्याचार्य भरतमुनि के मत से ' आस्वाद्य ' को रस कहते हैं । अर्थात् जिस प्रकार अनेक प्रकार के सुसंसकृत व्यन्जनादि भोज्य पदार्थ खाते हुए ' आस्वादन ' से आननदानुभूति होती है उसी प्रकार सहृदय अभिनयादि की निपुणता से व्यंन्जमान रस का अनुभव अथवा आस्वाद प्राप्त करते है। अतः रस के सम्बन्ध में भरतमुनि का मत है कि विभाव, अनुभाव, व्याभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। यही भाव भरत मुनि के प्रख्यात निम्नस्थ रस सूत्र में व्यक्त हो रहा है–

'विभावानुभाव व्याभिचारी संयोगाद्रसनिष्पति '1

भरत मुनि के इस रस सूत्र के आधार से ही रस स्वरूप का प्रतिपादन विभिन्न विद्वानों ने अपनी–अपनी प्रतिभा के अनुसार किया है। अग्निपुराण तो रस को चैतन्यस्वरूप तथा चमत्कार जनक स्वीकार करते हुए दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। भामह तथा दण्डी ने भी अलंकारों के प्रसंग में रसवद् अलंकारों की मान्यता स्वीकार करते हुए रस की महत्ता स्वीकार की है। आनन्दवर्द्धन ने रस का गौरव समझते हुए ध्वनि से तीन भेद करके ध्वनि अर्थात् मुख्य रूप से रस ध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकार किया है।
भरत मुनि ने मुख्य रूप से 4 रसोंकी सता स्वीकार करते हुए शेष 4 रसों की उत्पत्ति श्रंगारादि 4 रसों से मानी है। अग्निपुराण में भी भरतमुनि के मत का प्रतिपादन मिलता है।

रस की अलौकिकता :–

अलंकारशास्त्र मे अलंकारियों ने रस को वेद्यान्तर स्पर्श शून्य ब्रह्मानन्द सहोदर, अखण्ड, चिद्रूप , स्वयं प्रकाशक तथा अलौकिक स्वीकार किया है। इस ब्रहमानन्द सहोदर रस को सभी सामाजिक नहीं प्राप्त करते है।। कोई विरले ही सहृदय सामाजिक रसानुभूति के आनन्द को प्राप्त करते है। जैसे साधना करने वाले योगियों में कोई बिरला ही योगी ब्रहमानन्द की दशा को प्राप्त होता है । अतः काव्यानन्द की प्रप्ति सभी को नहीं होती क्योंकि रस अलौकिक है। वह लौकिक नियंत्रणों से सर्वथा रहित है। इसलिये अलौकिक वेद्यान्तर स्पर्श शून्य ब्रहमानन्द सहोदर रस अलौकक है और उसकी अनुभूति बिरले सामाजिकों को अथवा पाठकों को होती है।

रस की अलौकिक सिद्धि :–

अभिनव गुप्त ने रस को अलौकिक माना है, अर्थात् रस लौकिक वस्तुओं से सर्वथा भिन्न है। क्योंकि सांसारिक सभी वस्तुएं दो प्रकार ही होती है

1 कार्य 2 ज्ञाप्य ।

घटपट आदि कारण विशेष से उत्पन्न होने के कारण कार्य कहे जाते हैं तथा दूसरे प्रकार की वस्तुयें ज्ञाप्य होती हैं जैसे –दीपक के प्रकाश से घट का ज्ञान होता है तो यहॉ दीपक के द्वारा ज्ञात होने के कारण घट ज्ञाप्य कहा जाता है अर्थात पूर्व सिद्ध पदार्थ का किसी साधन के द्वारा ज्ञान होने पर उस पदार्थ को ज्ञाप्य कहा जाता है और जो पदार्थ पूर्व सिद्धि नहीं है, किसी कारण विशेष के व्यापार से जिसकी उत्पत्ति होती है तो वह पदार्थ कार्य कहा जाता है । परन्तु रस को न तो कार्य और नही ज्ञाप्य कह सकते हैं । कार्य

---

1. आचार्य मम्मट– काव्य प्रकाशः

इसलिए नहीं कह सकते हैं कि घट कारण अर्थात कुम्भ कार्य नष्ट होने पर भी विद्यमान रहता है परन्तु रस तो विभावादि के नष्ट होने पर प्रतीत ही नहीं हो सकता । अतः रस को कार्य नहीं कह सकते । इसके इसके अतिरिक्त रस को ज्ञाप्य भी नहीं कह सकते क्योंकि रस लौकिक वस्तु के समान पूर्व सिद्ध एवं ज्ञान के पश्चात् विद्यमान नहीं रहता है।रस की प्रतीति तो सहृदयों को क्षणिक होती है। अर्थात् रस का अस्तित्व अनुभव क्षण से पूर्व नहीं रहता तथा अनुभव के पश्चात् भी नहीं रहता है ।अतः रस को ज्ञाप्य भी नही कह सकते हैं।इस प्रकार रस कार्य और ज्ञाप्य दोनों से भिन्न होने के कारण रस की अलौकिकता सिद्ध हो रही है। यदि रस को नित्य कहें तो रस नित्य भी नहीं है क्योंकि विभावादि के प्रथम रसानुभूति असम्भव है। अतः जब रस की सता रसानभूति से पूर्व नहीं होती है तो रस को नित्य नहीं कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त रस को परोक्ष ज्ञान का विषय भी नहीं स्वीकार सकते हैं क्योंकि रस की प्रतीति साक्षात् आनन्द स्वरूप होती है। इस प्रकार रस प्रत्यक्ष भी नहीं है क्योंकि रस एक अलौकिक शब्द ज्ञान है। इससे भी रस की अलौकिकता सिद्ध होती है।

रसानुभूति को न निर्विकल्पक ज्ञान और न सविकल्पक ज्ञान कह सकते है जैसे घट को देखकर दर्शक के चित्त में "यह कुछ है " ऐसा ज्ञान होता है इसे निर्विकल्पक कहते हैं किन्तु रस तो विभावादि के ज्ञान से सम्बद्ध तथा आनन्द स्वरूप होने के कारण निर्विकल्पक ज्ञान की कोटि में नहीं आता है। सविकल्पक ज्ञान भी रस का सिद्ध नहीं होता है क्योंकि सविकल्पक ज्ञान तो जाति के नाम आदि की योजना से बद्ध होता है। इसलिये घटपट आदि नाम जाति आदि का ज्ञान आवश्यक होता है। इसलिए आदि घटपट आदि सविकल्पक ज्ञान के परिधि से नियंत्रित होते है किन्तु रस तो केवल अनुभूति का विषय है इसलिये रस से विकल्पक भिन्न होता है अतः रस के निर्विकल्पक तथा सविकल्पक ज्ञान न हो सकने कारण रस की अलैकिकता स्वयं सिद्ध हो रही है। वस्तुतः काव्य की आत्मा रूप , रस एक अनिर्वचनीय तथा विलक्षण वस्तु है क्योंकि अलैकिक वस्तुओं के समान रस के कार्य एवं ज्ञाप्य तथा कारण और ज्ञापक न होने के कारण रस एक अलौकिक तत्व है लेकिन सहृदय हृदयसंवेद्य, वेद्यान्तर , स्पर्श शून्य , अखण्ड , आनन्द स्वरूप, ब्रहमानन्द सहोर है। अतः रस एक अलौकिक एवं विलक्षण सहृदयालादक काव्य का प्राण तत्व है। इस प्रकार रस की अलौकिकता में सन्देह का स्थान नहीं है

काव्यानुभूति :– "कविता सौन्दर्य, रहस्य और वेदना में सुन्दर बनती है। कविता की शक्ति विज्ञान से अधिक है। विज्ञान वस्तु –विश्लेषण करता है किन्तु वह हमारे सौन्दर्य –मूलक भावों तथा हमारी गूढ़ जिज्ञासाओं का समाधान नहीं करता । जहॉ विज्ञान का कार्य सामप्त होता है, वहीं कविता का कार्य प्रारम्भ होता है । कवि को सौन्दर्य की सृष्टि रचने और उसे अभिव्यक्त करने की स्वंतत्रता है, किन्तु यह स्वंतंत्र,ता वैज्ञानिक को नहीं है। वैज्ञानिक पुष्प का रासानिक विश्लेशण कर उसका रहस्य बता सकता है, किन्तु वह पुष्प का जीवन भाव नहीं बता सकता। यह काम कवि ही की सकता है। यही मकारण है कि, कविता हृदय और मस्तिष्क दोनों को सन्तुष्ट करती है । "1"

1. श्री के0 चक्रपाणि – भूमिका ,स्मर–रेखा

परिवर्तित मूल्य बोध ओर बदलते हुए नये सन्दर्भों में आज की काव्य धारा कुछ मन्द और क्षीण सी दिखाई दे रही है । समकालीन जन–जीवन की विवशता, घुटन, यान्त्रिकता, और आर्थिक कटु यथार्थ ने काव्य की भाव–भूमि को आज समतल कविता के हाथों में सौंप दिया है । आज की कविता अध्यात्म और अनुराग से अनुप्रमाणित न होकर " भौतिक जीवन–दर्शन और चिन्तन से अनुप्राणित है। इसका यह परिणाम है कि विश्व–साहित्य में काव्य का स्थान अब गौण होता जा रहा है। पर , यही उचित है, ऐसा मैं नही मानता । मेरा विश्वास है कि, भविष्य में ज्यों–ज्यों भौतिक वाद बढ़ेगा त्यों –त्यों सत्यानुभूति के लिये काव्य का सहारा ही लिया जायेगा और वह काव्य अध्यात्म –अनुराग से अनुप्राणित ही होगा।"1

रसों के आधार भाव हैं । भाव मन के विकारों को कहते है, ये दो प्रकार के होते है– स्थायी भाव तथा संचारी भाव। यही काव्य के अंग कहलाते हैं।

काव्य, कविता, नाटक आदि के पठन, श्रवण तथा दर्शन से जो आनन्द प्राप्त होता है उसे रस कहा गया है। रस–विहीन काव्य, आत्मा विहीन शरीर के तुल्य होता है। रस के चार अंग माने गये है–

1 स्थायी भाव 2 विभाव 3 अनुभाव 4 संचारी भाव ।

ग स्थायी भाव :–

मनुष्य मात्र के मन में स्थायी रूप से निवास करने वाले भावों या विचारों को स्थायी भाव कहा जाता है। ये संख्या में 10 माने गये है–

1 रति 2 हास 3 शोक 4 उत्साह 5 उत्साह 6 भय 7 जुगुप्सा 8 विस्यम 9 निर्वेद 10 वात्सल्य ।

1 रति :– स्त्री पुरूष के बीच व्यक्त होने वाला प्रेम–भाव ' रति कहा जाता है।

2 हास :– किसी व्यक्ति की विचत्र वेष–भूषा , वाणी तथा चेष्टाओं से मन में उत्पन्न होने वाली प्रफुल्लता 'हास' कही जाती है।

3 शोक :– किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति के नष्ट होने से या सिकी अनिष्ट की आशंका से मन में जो कष्ट होता हे उसे 'शोक' कहते है ।

4 कोध :– किसी अपराधी को, शत्रु को या किसी के अप्रिय आचरण को देखकर मन में जो उत्तेजना उत्पन्न होती है , वह 'कोध ' है ।

5 उत्साह :– किसी कठिन कार्य या चुनौती को सम्पन्न करने की उमंग 'उत्साह' कही जाती है।

6 भय :– शारीरिक या मानसिक हानि होने की सम्भावना से उत्पन्न होने वाली व्याकुलता भय ' होती है।

7 जुगुप्सा :– घृणा उत्पन्न करने वाले दृश्य , व्यक्ति या वस्तु को देखकर मन में उत्पन्न मनोविकार जुगुप्सा है ।

---

1. डा0 चन्द्र किशोर पाठक'–द्रामा (काव्य–संग्रह)

8 विस्मय :–किसी असाधारण व्यक्ति या वस्तु को देखने से मन का आश्चर्ययुक्त होना ' विस्मय ' है।

9 निर्वेद :– मन का विकारमुक्त होकर शान्ति अनुभव करना 'निर्वेद' है।

10 वात्सल्य :– सन्तान के प्रति उत्पन्न स्नेह का भाव 'वात्सल्य' है।

स्थायी भाव और उनसे उत्पन्न रस –

1 रति–श्रंगार रस 2 हास–हास्य रस 3 शोक –करूण रस 4 क्रोध – रौद्र रस 5 उत्साह –वीर रस 6 भय –भयानक रस 7जुगुप्सा–वीभत्स रस 8 विस्मय–अद्भुद रस 9 निर्वेद–शान्त रस ,10वत्सल रस ।।

विशेष :– 1 स्थायी भाव रसानुभूति के पूरे समय तक उपस्थित रहता है किन्तु संचारी भाव जल में उठने वाली तरंगों के समान बीच–बीच में उठते और विलीन होते रहते है।

2 प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव निश्चित है किन्तु संचारी भाव एक ही रस में अनेक उत्पन्न हो सकते है तथा एक ही संचारी भाव एक से अधिक रसों में उपस्थित हो सकता है।

(घ) विभाव :–

स्थायी भाव को सक्रिय करने वाले कारण (व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति) विभाव कहे जाते है । विभाव के दो भेद है –आलम्बन और उद्दीपन । स्थायी भाव को जगाने वाले कारण 'आलम्बन' होते हैं जो दो प्रकार के होते हैं –'आश्रय' और 'विषय' । जिसके मन में स्थायी भाव जाग्रत है , वह 'आश्रय' होता है और उसे जगाने वाले कारण 'विषय' कहे जाते हैं । उद्दीपन वे विभाव होते है जो स्थायी भाव को तीव्रता प्रदान करते है।

(ङ) अनुभाव :–

आश्रय की चेष्टाओं को अनुभाव कहा जाता है। हाव–भाव , वचन विकार, अंग–संचालन आदि अनुभाव के रूप है। अनुभावों के निम्न चार भेद माने गये है–

1 कायिक – आश्रय की शारीरिक चेष्टाएं कायिक अनुभाव होते है।

2 मानसिक – आश्रय के मन में उत्पन्न होने वाले विकार (हर्ष , विषाद आदि) मानसिक अनुभाव होते हैं।

3 आहार्य – आश्रय द्वारा भावानुकूल वेश धारण करना आहार्य –अनुभाव कहे जाते हैं ।

4सात्विक –आश्रय में रसानुभूति से सहज भाव से प्रकट होने वाले लक्षण सात्विक अनुभाव कहे जाते है

(च) संचारी भाव :–

रसानुभूति के समय आश्रय के मन में बार–बार उत्पन्न होने ओर मिटने वाले भावों को संचारी या व्यभिचारी भाव कहा जाता है। संचारी भाव तैंतीस प्रकार के माने गये है–

विशेषायाभिसुख्येन चरणाद्व्यभिचारिणः । स्थायिन्युन्मग्नानिर्मग्ना स्त्रमस्त्रिशब्द तद्भिदाः ।।

सा0 द0 परि0 2 श्लोक 48

संचारी भाव के नाम है, निर्वेद , ग्लानि, शंका, श्रम, घृति , जड़ता , हर्ष , दैन्य , उग्रता, चिन्ता , त्रास , असूया , अमर्ष, गर्व , स्मृति , मरण, मद स्वप्न निद्रा, विवाद, क्रीड़ा, अपस्मार, मोह , मति आलस्य, आवेग , तर्क , अवहित्था, व्याधि , उन्माद, विषाद, औत्सुक्य और चंचलता ।

(छ) रस योजना :–

उपर्युक्त वर्णित विभाव, अनुभाव , तथा संचारी भाव के संयोग से स्थायी भाव रस दशा को प्राप्त होता है। रस को काव्य की आत्मा कहा गया है। कविराज विश्वनाथ और पण्डितराज जगन्नाथ जैसे विद्वानों ने भी इसी मत का समर्थन किया है ।

श्रृंगार रस :–

जहॉ काव्य में 'रति ' नामक स्थायी भाव, विभाव , अनुभाव, और संचारी भावों से पुष्ट होकर रस में परिणत होता है वहॉ श्रृगार रस होता है।

श्रृंगार रस के दो पक्ष होते है–संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार । जहॉ नायक और नायिका के मिलन का वर्णन को वहॉ संयोग श्रृंगार और दोनों के वियोग का वर्णन हो वहॉ वियोग श्रृंगार कहा जाता है। उदा0 संयोग श्रृंगार– कंज नयनि, मज्जनु किए ं ,बैठी ब्यौरति बार।

कच–ॲगुरी–बिच दीठि दै, चितवति नन्दकुमार ।।

यहॉ राधा और कृष्ण के प्रेम का वर्णन है । दोनों साथ है , अतः संयोग श्रृंगार की योजना है। कमल जैसे नेत्र वाली राधा स्नान करके बाल काढ़ रही है परन्तु बाल और ॲगुली के बीच से श्री कृष्ण के सुन्दर रूप को देखती जा रही है। यहॉ कृष्ण आलम्बन है। राधा आश्रय है। कृष्ण का रूप उद्दीपन है तथा बालों की ओर से देखना आदि कायिक अनुभाव है। लज्जा, औत्सुक्य आदि संचारीभाव है, अतः यहॉ संयोग श्रृंगार का वर्णन है। एक अन्य उदाहरण दृष्टक है–

2 "बतरस लालच लाल की , मुरली धरी चुराई । सौह करैं, भौहनु हॅसें , दैन कहें नटि जाई ।।"

वियोग श्रृगार या विप्रलम्भ श्रृंगार –:

1 सुनि–सुनि ऊधव की अकह कहानी कान, कोऊ, थहरानी कोऊ थानहि थिरानी हैं X X कोऊ स्याम स्याम कह बहकि बिललानी कोऊ , कोमल करे जौ थामि सहम सुखानी है।।

यहॉ गोपियों के श्री कृष्ण से वियोग की स्थिति का वर्णन है। श्री कृष्ण आलम्बन है, गोपियॉ आश्रय है। ऊधव की अकह कहानी 'उद्दीपन' है। कॉपना , श्याम–श्याम पुकारना , व्याकुल होना, हृदय को थाम लेना आदि अनुभव है और जड़ता , प्रलाप, उन्माद आदि संचारी भाव है। इस प्रकार यहॉ वियोग श्रृंगार का वर्णन है। एक अन्य उदाहरण देखिए–

"कै बिरहनि कूॅ मीचं दैं , कैआपा दिखलाई । आठ पहर का दझणा , मो पै सहया न जाई ।।"

2.हास्य रस :–

जब विभाव, अनुभाव , संचारी भावों से पुष्ट होकर 'हास' नामक स्थायीभाव रस दशा को प्राप्त होता है तो वहॉ हास्य रस की निष्पत्ति होती है यथा–

"घोट मोट सिर, भूगोल–सा पेट , चाल में भूचाल, मुख किचन का हो गेट हाल में फूट गया हॅसी का गुब्बारा, कहने लगे दर्शक " दोबारा , दोबारा । " यहॉ विचित्र आकृति वाला पात्र आलम्बन है दर्शक आश्रय हे पात्र का शरीर, चाल और चेष्टाएँ उद्दीपन है दर्शकों को हॅसना और उनके कथन अनुभाव हैं हर्ष, औत्सुक्य आदि संचारी भाव हैं इस प्रकार यहॉ हास्य रस की व्यंजना हुई है।

(3) करूण रस :–

जहॉ शोक नामक स्थायी भाव, विभाव आदि से संयुक्त होकर रस–दशा को प्राप्त होता है, वहॉ करूण रस कहा जाता है। यथा– "सोक विकल सब रोवहिं रानी । रूप, सील बल, तेज बखानी

करहि विलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमि तल बारहिं बारा ।।"

यहॉ महाराज दशरथ के मरण पर रानियों के शोक का वर्णन हैं , अतः स्थायी भाव शोक है। आलम्बन मृत दशरथ है। आश्रय रानियॉ है। रोना , राजा के बल, प्रताप आदि का वर्णन करना, बार–बार भूमि पर गिरना अनुभाव है। समृति, चिन्ता, प्रलाप, विषाद आदि संचारी भाव है, अतः इन काव्य–पंक्तियों में करूण रस की व्यंजना हुई है। एक अन्य उदाहरण अवलोकनीय है–

अर्ध रात्रि गयी कपि नहीं आवा। राम उठाइ अनुज उर लावा।।
सकइ न दुखित देखि मोहि काऊ। बन्धु सदा तव मृदुल स्वभाऊ।।
जो जनतेऊँ वन बन्धु बिछोहु। पिता वचन मनतेऊँ नहिं ओहु।।

आश्रय राम , आलम्बन लक्ष्मण उद्दीपन लक्ष्मण का मूर्च्छित शरीर रात का सूनसान समय। अनुभाव लक्ष्मण को उठाकर गले लगाना, अश्रु, स्वर भंग आदि व्याभिचारी भाव–आवेग चिंता विषाद आदि।

(4) 'रौद्र रस' :–

जब कोध नामक स्थायी भाव, विभावादि से पुष्ट होता हुआ रस–दशा को प्राप्त होता है तो वहॉ रौद्र रस माना है, यथा–

"भाखे लखन, कुटिल भई भौहें । रद पट फरकत नयन रिसौहें।।"

यहॉ लक्ष्मण के कुद्ध होने का वर्णन है। स्थायी भाव कोध है। आलम्बन जनक के वाक्य है । आश्रय लक्ष्मण है। सभा में उपस्थित राजा, धनुष का दर्शन आदि उद्दीपन है। भोंहों का कुटिल होना, होठों का फड़कना , नेत्रों का कोध पूर्ण होना कायिक अनुभाव हैं। आवेश, चपलता , उग्रता आदि संचारी भाव हैं अतः यहॉ सैद्र रस की योजना हुई है।

एक अन्य उदाहरण– उस काल मारे कोध के तन कॉपने उसका लगा।
मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा।

(5)वीर रस :–

जहॉ उत्साह नामक स्थायी भाव, विभाव अनुभाव तथा संचारी भावों से पुष्ट होकर रस–दशा को प्राप्त होता है, वहॉ वीर रस की व्यंजना होती है यथा–

1 फहरी ध्वजा, फड़की भुजा, बलिदान की ज्वाला उठी ।

निज मातृभूमि के मान में चढ़ मुण्ड की माला उठी ।। यहॉ मातृभूमि की रक्षा के लिये तत्पर वीरों का वर्णन है। स्थायी भाव उत्साह है । मातृभूमि की मान रक्षा विषय या आलम्बन है। वीर पुरूष या देशभक्त आश्रय है। ध्वजाएँ लहराना, भुजाओं का फड़कना , बलिदान होने की भावना आदि अनुभाव है तथा गर्व, हर्ष, ध्रृति आदि संचारी भाव है। अतः यहॉ वीर रस की व्यन्जना हुई है। एक अन्य उदाहरण देखिए –

"सामने टिकते नहीं गजराज पर्वत डोलते है।"
कॉपता है कुंडली मारे समय का व्याल ,मेरी बॉह में मारूत,गरूड़,गजराज का बल है । "

(6)भयानक रस –:

जहॉ 'भय' नामक स्थायी भाव , विभाव , अनुभाव और, संचारी भावों से पुष्ट होकर रस में परिणत होता है , वहॉ भयानक रस की व्यंजना होती है यथा–

"देखे जब बारात में भूत–प्रेत शिव व्याल।थर–थर कॉपे नारि–नर , भाग चले सब बाल "

यहॉ शिव की बारात को देखकर नर–नारियों के भयभीत होने का वर्णन है। स्थायी भाव 'भय' है। भूत, प्रेत और शिव के शरीर पर स्थित सर्प आलम्बन है।

नर–नारि और बालक आश्रय है। नर–नारियों का थर–थर कॉपना और बालकों का डरकर भागना अनुभाव है। त्रास , शंका, चिन्ता आदि संचारी भाव है। अतः यहॉ भयानक रस की व्यंजना हुई है।

एक अन्य उदाहरण – एक ओर अजगरहिं लखि , एक ओर मृगराय
विकल बटोही बीच ही , परयो मूर्च्छा खाय।।

(7)वीभत्स रस :–

'जुगुप्सा' नामक स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव , तथा संचारी भावों से पुष्ट होकर रस मे परिणत हो जाता है तो 'वीभत्स' रस की व्यंजना होती है, यथा –

घर में लाशें , बाहर लाशें , सड़ती लाशें , नुचली लाशें ,।
दुर्गन्ध घोटती है सॉसें, इन्सान हुआ लाशें – लाशें ।।

यहॉ बाग्लादेश में पाकिस्तानी अत्याचार का दृश्य प्रस्तुत किया गया है। स्थायी भाव ' जुगुप्सा ' या 'घृणा ' है लाशें घृणा का विषय या आलम्बन है। दर्शक लोग आश्रय है। लाशों का सड़ना तथा कुत्तों आदि के द्वारा नोंचा जाना उद्दीपन है तथा सॉसे घुटना , मुँह फेरना आदि अनुभाव है जड़ता , शंका त्रास , ग्लानि आदि संचारीभाव है अतः यहॉ भयानक रस की व्यंजना हुई ।

(8)'अद्भुद' रस –:

' विस्मय' नामक स्थायी भाव जब विभाव , अनुभाव तथा संचारी भाव से पुष्ट होकर रस दशा को प्राप्त करता है, तो अद्भुद रस की व्यंजना होती है यथा–

'माटी उगल ' कहा जब मॉ ने, हरि ने बदन पसारा ।
चकित–थकित हो गईं यशोदा, जब मुख बीच निहारा।।

यहॉ आलम्बन कृष्ण के मुख में दिखाई देने वाला विचित्र दृश्य है। आश्रय यशोदा है। कृष्ण का मुख खोलना उद्दीपन है यशोदा का चकित–थकित होना अनुभाव है तथा वितर्क , जड़ता आदि संचारी भाव है । इस प्रकार यहॉ अद्भुत रस की व्यंजना हुई है।

(9)शांत रस :–

जहॉ निर्वेद नामक स्थायी भाव , विभाव , अनुभाव आदि से पुष्ट होता हुआ रस दशा को प्राप्त होता है वहॉ शान्त रस माना जाता है यथा–

अब लौ न सानी , अब न नसैहों।
राम कृपा भवनिसा सिरानी जागे फिर न डसैहों । X X X
परबस जानि हॅस्यों इन इंद्रिन निज बस हैं न हॅसैहों ।
मन मधुकर पर करि तुलसी रघुपति पद कमल बसैहों ।

यहॉ तुलसी अपने हृदय की स्थिरता और संसार की व्यर्थता आदि का वर्णन कर रहे हैं। स्थायी भाव निर्वेद है। आलम्बन आयु का व्यर्थ जाना है । इंद्रियों द्वारा उपहास उद्दीपन है। ज्ञान प्राप्ति, संसार की असारता एवं मन को राम के चरणों में लगाने आदि के कथन अनुभाव है। धृति , वितर्क, मति , आदि संचारी भाव है। इस प्रकार यहॉ शान्त रस की व्यंजना हुई है।

(10)'वत्सल' रस :–

जहॉ काव्य में 'वात्सल्य' नामक स्थायी भाव, विभाव , अनुभाव तथा संचारी भावों से पुष्ट होता हुआ रस में परिणत होता है वहॉ' वात्सल्य ' रस की व्यंजना होती है। ये दो प्रकार का होता है–

1 संयोग वात्सल्य :–

जसोदा हरि पालनें झुलावें। हलरावै दुलराई, मल्हावै जोई सोइ कछु गावै। X X X
कबह पलक हरि मूँद लेत हैं कबहुँ अधर फरकावैं ।– – –
जो सुख 'सूर ' अमर मुनि दुरलभ सो नँदभामिनि पावै।।

यहॉ शिशु कृष्ण आलम्बन है, यशोदा आश्रय हैं कृष्ण की चेष्टाऍ–पलक मूँदना , अधर कड़काना आदि उद्दीपन विभाव है। यशोदा का प्रसन्न होना , दुलारना, हिलाना आदि अनुभाव है । हर्ष आदि संचारी भाव है। इस प्रकार यहॉ संयोग –वत्सल रस की अवतारणा हुई है।

2 वियोग वत्सलः–

जसोदा बार–यों भाखै।। है कोउ ब्रज में हितू हमारो चलत गुपालहिं राखौ। X X X
कमल नयन गुन टेरत–टेरत , अधर बदल कुम्हिलानी ।
'सूर' कहॉ लगि प्रगट जनाऊँ , दुखित नंदजू की रानी ।।

यहॉ कृष्ण बलराम के मथुरा गमन के अवसर पर यशोदा के दुखी होने का वर्णन है। यहॉ कृष्ण आलम्बन है और यशोदा आश्रय है। श्री कृष्ण की कीड़ाओं आदि का वर्णन उद्दीपन है। गुणों का कथन आदि अनुभाव है तथा चिन्ता , स्मृति आदि संचारी भाव है। इस प्रकार यहॉ वियोग–वत्सल रस की व्यन्जना हुई है।

(ज) काव्य की मूल प्रेरणा :–

काव्य को स्थायित्व केवल भाव और कला के समुचित सामंजस्य से ही प्राप्त हो सकता है। काव्य के अन्तर्गत प्रमुख स्थान भाव पक्ष का ही होता है। चूँकि कवि समाज का सृष्टा होता है अतः नयी भावनाओ का प्रादुर्भूत होना स्वाभाविक ही है। काव्य की मूल प्रेरणा राग या भाव तत्व को ही स्वीकार किया गया है अतः काव्य का प्राण भाव ही कहा जा सकता है।

युंग महोदय के अनुसार भाव की परिभाषा निम्न है–

"भाव व्यक्ति की अनुभूति, चेष्टाओं एवं पेशिक गतियों से सम्बन्धित वह अव्यवस्थित (या उद्दीप्त) अवस्था है जो कि विशेष मनोवैज्ञानिक परिस्थिति में उत्पन्न होती है।"1

इन्द्रियो से उत्पन्न संवेदनाओं के कारण मन पर जो विभिन्न प्रकार की प्रतिकियायें होती है। , वही अनुभूति कहलाती है। विभिन्न प्रकार की अनुभूतियों एवं मानसिक दशाओं का समन्वित स्वरूप ही भाव कहलाता है। "जहॉ तक अनुभूति का प्रश्न , वह तो स्थूल और गोचर जगत में भी सामान्य नहीं। प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि फूल को फूल ग्रहण कर ले, यह स्वाभाविक है, परन्तु सबके अन्तर्जगत में अनुभूति एक सी स्थिति नहीं पा सकती है।"2 X X X

प्रत्येक सच्चे कलाकार की अनुभूति प्रत्यक्ष सत्य ही नहीं, अप्रत्यक्ष सत्य का भी स्पर्श करती है।" वास्तव में गद्य और कविता में अन्तर उनके बाहरी रूप के कारण नहीं अपितु उनकी आत्मा भिन्नता के कारण किया जाता है। काव्य का प्रमुख तत्व भाव है। भाव से रहित शब्दाडम्बर मात्र पाठक के हृदय

1. डा0 गणपति चन्द्र गुप्त– साहित्य के तत्व, द्वितीय खण्ड, पृ0 109
2. साहित्यकार की आस्था पृ0 45,46

को विभोर नहीं कर सकता। कविता के इस भाव तत्व , उसकी आत्मा को समझने के लिए निम्न लिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है–

अनुभूति की तीव्रता :–

गद्य की अपेक्षा कविता में अनुभूति की तीव्रता अत्यधिक होती है। इसलिए कहा जाता है कि गद्य मस्तिष्क की वस्तु है तथा कविता हृदय की । वाल्मीकि के विषय में यह प्रसिद्ध है कि एक बार उन्होंने एक शिकारी द्वारा कोंच पक्षियों के जोड़े में से नर पक्षी को मारे जाते हुए देखा तो उस घटना से क्षुब्ध होकर उनके मुख से शिकारी के प्रति शाप के रूप मे कविता का प्रथम श्लोक फूट पड़ा था सामान्य जनों की अपेक्षा कवि कहीं अधिक संवेदन शील होता है । जीवनके सुख दुख के प्रति उसकी प्रति–किया कविता के रूप में फूट पड़ती है–

वियोगी होगा पहला कवि , आह से उपजा होगा गान।
उमड़ कर आँखों से चुपचाप , वही होगी कविता अंजान।। (पंत)

महान कवि श्री जय शंकर प्रसाद जी ने भी अनुभूति को ही अधिक महत्व दिया है।उनके अनुसार– "जहाँ आत्मानुभूति की प्रधानता है, वहीं अभिव्यक्ति अपने क्षेत्र में पूर्ण हो सकी है वहीं कौशल या विशिष्ट पर रचनायुक्त काव्य शरीर सुन्दर हो सका है । इसलिए अभिव्यक्ति सहृदयों के लिए अपनी वैसी व्यापक सत्ता नहीं रखती ,जितनी कि अनुभूति ,।"1

रसात्मकता और सौन्दर्य बोध :–

वास्तव में सौन्दर्य बाहर की वस्तु नहीं है, यह मन के भीतर की वस्तु है। इसकी पूर्णता के लिए अन्तः सत्ता की तदाकार परिणति आवश्यक है । जिसके प्रत्यक्ष ज्ञान या भावना से तदाकर परिणति जितनी अधिक होगी, उतनी ही वह वस्तु हमारे लिए सुन्दर कही जायेगी ।"2

विश्व के इतिहास का अवलोकन करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि किसी भी काव्य में सौन्दर्य वर्णन की सर्वप्रिय अनुभूति रही है। प्रत्येक प्राणी सौन्दर्य भावना से युक्त होता है। इसके अतिरिक्त कवि तो सौन्दर्य का ही उपासक होता है। मनुष्य की बात तो दूर हे, पशु–पक्षियों में भी इस भावना की अतिशयता दृष्टिगोचर होती है। सोन्दर्य का कला से अति घनिष्ट सम्बन्ध है।

जब किसी काव्य कृति में सौन्दर्य का सामंजस्य होता है तब वह कला होती है। कला और सौन्दर्य एक दूसरे के पर्याय है। कलाकार में जो सौन्दर्य बोधात्मक शक्ति होती है उसी की प्रेरणा से उसकी रचना में वह गुण उत्पन्न होता है ,जिससे वह लोगों को रूचता है और लोगों को आकृष्ट करता है।"3

कल्पना की उड़ान :–

कवि अपनी बात सामान्य भाषा में न कह कर कुछ ऐसी शब्दावली में कहता है, जो हमारी कल्पना शक्ति को जगा देती है। उसके कहने का ढंग ही वास्तव में कविता की संजीवनी शक्ति है। प्राचीन आर्यो

---

1. जयशंकर प्रसाद- काव्यकला तथा जन्य निबन्ध पृ0 44
2. गंगा प्रसाद पान्डेय – छायावाद और रहस्यवाद पृ0 35
3. कृष्ण प्रसाद गौड़– महादेवी की सौन्दर्य साधना पृ0 107

ने कवि की कथन शैली को इसीलिए बहुत महत्वपूर्ण माना है। ''कवि के कथन की भंगिमा ही प्रायः कल्पना तथा मन की अत्मिक शक्ति को स्वतः उद्‌बुद्ध करती है। कवि प्रायः नयी–नयी उद्‌भावनायें करता है। इसीलिए कहा जाता है– ''जहॉ न पहुँचे रवि वहॉ पहुँचे कवि'' – पर कल्पना की यह उड़ान हृदय की अनुभूति पर आधारित हो तभी वह सार्थक है । कोरी कलाबाजी पर आधारित कल्पना कविता के रस को भंग करती , पुष्ट नहीं।'' 1

भावों का उदात्तीकरण :–

" कविता उपदेश देने के लिए नहीं लिखी जाती । उसका एक प्रमुख उद्‌देश्य भावों को उदात्त बनाना अवश्य होता है। जीवन के घात–प्रतिघातों और मन की विभिन्न उलझनों को कवि इस प्रकार प्रस्तुत करता पाठक को अनायास ही कुटिलता , क्रूरता ,दम्भ एवं नीचता आदि के प्रति वितृष्णा हो जाती है तथा इसके विपरीत सद्‌गुणों के प्रति आकार्षण हो जाता है।"

''भावों एवं विचारों की उच्चता से काव्य में गरिमा भी आती है। सद्‌विचारों की अभिव्यक्ति स्वतः कविता को ऊँचा उठा देती है। इसी से बहुधा कवि महापुरूषों के जीवन को आधार बनाकर महाकाव्य रचते हैं।'' 2 आलोच्य कवियो में श्री मंगल विजय का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने आचार्य श्री राम शर्मा के जीवन को आधार बनाकर अपना प्रज्ञावतार महाकाव्य रचा है । कविता की प्रेरणाप्रद पंक्तियॉ निराशा में निमग्न लोगों का सहारा बन जाती हैं ऐसी बहुत–सी पंक्तियॉ जनता के बीच सूक्तियों के रूप प्रचलित हो जाती हैं कई बार भावों में उदत्तीकरण तथा परिर्वतन की यह प्रकिया सामूहिक आन्दोलन का रूप ले लेती है। भक्ति काल का काव्य एवं आधुनिक युग में प्रगति वादी कवितायें इसी प्रकार के साहित्यक आन्दोलनों से उपजी हैं । आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित सम कालीन कवियों की अधिकांश कविताऐं भी उनके विचार कान्ति आन्दोलन से उपजी हैं।

(छ) आलोच्य काव्यों में अनुभूति पक्ष

आलोच्य काव्यों में अनुभूति पक्ष के उदाहरण अवलोकनीय हैं जिनमें लगभग सभी रसों की व्यंजना कवियों के काव्य में हुई है–

1 श्रंगार रस

मानव मन अदिकाल से प्रणयानुभूति से स्पंदित रहा है। प्रकृति पुरूष का परस्पर मोहन विमोहन सृष्टि के प्रारम्भ से चला आ रहा है। मिलन के क्षणों की आनन्दानुभूति , उल्लखित भावोर्मियॉ वैदिक कालसे अभिव्यक्ति पाती रहीं है। सामवेद के गीतों में यह उल्लास मुखरित है।

कविवर श्री शिवशंकर मिश्र के गीत छायावादी रोमांटिक प्रवृत्ति से ओतप्रोत है। उनके गीतों में रोमांटिक प्रवृत्ति की सभी विशेषताओं के साथ उनकी वैयक्तिक अनुभूतियों की मौलिकता उन्हें अन्य गीतकारों से विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। वैयक्तिक सम्बन्धों की विविधता के साथ–साथ बहुलता उनके गीतों में मार्मिक भावुकता का स्रोत प्लावित करती है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। एक गीत प्रस्तुत है, जिसकी कहन तथा चित्रोपमता सराहनीय है–

हाथ का चुम्बन सरस इतना अधर का भगवान ही जाने।
विदा के पहले झुकाया माथ , और फिर चूमे तुम्हारे हाथ, तब लगा निज को विवश कितना

---

1 श्री प्रेमचन्द्र अग्रवाल (सम्पादक) - काव्यांजलि , पृ 10
2 वही, पृ 11

एक भिन्न भाव भूमि का गीत प्रस्तुत है–

मैं नहीं वह जो मुझे अनुमानती हो क्यों छिपाऊँ ?
शिष्ट हूँ पर पूर्णतः संयत नहीं हूँ , भक्त तो हूँ सदा अर्पित नहीं हूँ
मैं नहीं अविकार विषपायी जलधि–सा , मैं नहीं इस योग्य जितना मानती हो।
एक मन के रूप दो कैसी विसंगति , एक भीतर, एक बाहर कुछ अजब गति
एक होता तो उसे मैं रोक लेता किन्तु ऐसा तो नहीं तुम जानती हो।
कल्पना विहग जो तुम तक उड़े हैं , फूल बन करके यहाँ पर आ पड़े हैं,
मैं चरण पूजूँ कि अथवा ओठ चूमूँ बस यह दुविधा जिसे पहचानती हो।।

इसी भावके एक अन्य पक्ष को प्रस्तुत करता हुआ गीत अवलोकनीय है–

पास आना चाहता हूँ किन्तु भय है, क्या करूँगा यदि निगोड़ी प्यास जाग जाये।
देर करने का कभी हो जाये यदि मन, दूसरे ही ढंग का हो जाय जीवन,
क्या करेगी तूलिका ले पृष्ठ कोरे , साधना यदि सिद्धि पाने को मचल आये ।
प्यार तुमसे ही नही पाया कम, इसलिए मैंने नहीं वरता असंयम,
हो नहीं जाये अपावन मौन मर्यादा कामना से भाव निज बल न अजमाये।
बंद मैंने कर दिये सब द्वार पथ को, घुस नहीं आये कहीं अक्षर शपथ के,
निभ गया अब तक सदा निभता रहे वह यह नशीली कोकिला फिर–फिर नहीं गाये।

श्री मिश्र जी ने कुछ सवैया–छंद भी लिखे है। एक सवैया में श्रृंगार की छटा देखिये–

"प्राणाधिके लिख दो उस बार तो ऐसी मनोहर प्रेम कहानी ।
साधना सिद्धि बने, फिर सिद्धि के स्वयं हो कोटिक वर्ण के दानी ।।
अंग अनंग बने नहिं बाधक हो कुच कचुकी की मनमानी ।,
नेम की राह में,क्षेम की चाह में,श्याम की बाँह में राधिकारानी।।"

"साहित्य सेतु" पृ0 15 (पं0 शिव शंकर विशेषांक)' पृ0 15

2. श्री मती विद्यावती मिश्र :–

श्री मती मिश्र ने छाया–वादी अन्य कवि एवं कवयित्री की भाँति नारी को अधिक महत्व दिया ।

"प्रतीक्षा" के इस गीतांश में कवयित्री ने नारी को बलिदान की भावना को व्यक्त किया है। वह अपने प्रियतम की खुशी को पूजा का अधिकार दूसरों को दे देती है–

इससे क्या यदि तुमने मेरे बदले सुमन चढ़ाये !
बिना पुजा तो रहा न मेरे मन–मन्दिर का स्वामी ,
धूप, दीप , अक्षत , से पुलकित मेरा अन्तर्यामी,
मेरी तो अभिलाषा केवल , मेरा प्रभु मुसकाये !
इससे क्या यदि तुमने मेरे बदले सुमन चढ़ाये ! "प्रतीक्षा" पृ0 53

एक अन्य गीत "देव तुम मैं हूँ पुजारिन" । ' शीर्षक कविता में इन्हीं भावों को देखिए –

प्रिय तुम्हारे द्वार पर की देहली , पुजती रही पुजती रहेगी ,
कमल–चरणों पर, किसी के आँसुओं की धार बहती ही रही बहती रहेगी,
और मैं पाती रहूँगी तुष्टि प्रतिक्षण –प्रिय तुम्हारे भक्त गिन–गिन ;
देव तुम मैं हूँ पुजारिन । "ज्योति" पृ0 31

वियोग श्रृंगार :– श्रीमती की एक रचना दृष्टव्य है–

मिलन का फूल मुरझाता विरह के फूल खिलते हैं ,
गला रूँधता न मुख से शब्द कोई भी निकलते हैं
न कह पाते तड़पते प्राण, रसना तिलमिलाती है!
किसी को देखने की कामना जब जाग जाती है!!

श्री मती विद्यावती मिश्र के "प्रतीक्षा" काव्यसंग्रह में कितनी व्याकुलता प्रिय से मिलने के लिए विरही नायिका में चित्रित की गयी है, वह अवलोकनीय है–

"न यदि तुम मिले जिन्दगी का सफर यह चला ही करेगा ।
रूकेगा वहीं वर जहाँ तुम मिलोगे , वहीं मन विहंग को बसेरा मिलेगा ,
जहाँ स्वप्न के बन कुसुम तुम खिलोगे, वहीं म्लान सा मन–सुमन यह खिलेगा ,
असंतोष का वेग निर्वेद उन में पला ही करेगा । "

"श्रद्धा" काव्य संग्रह में भी विरह का सुन्दर चित्रण हुआ है यथा–

"कठिन ताप में आती है जब याद छाँह की बातें, नीद भरे प्रहरों मे अपलक जगने वाली रातें,
कर–कर के संकेत किरण से है तारे मुस्काते , तभी तुम्हारी सुस्मृति में प्रिय ऑसू भर भर आते।। "

(3) डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल :–

'मीत मेरे , गीत तेरे ' काव्य –सग्रह में कवि श्री ब्रजबाल ने अपने दर्द और सुख , मिलन और वियोग की अनुभूतियौ को सुरीले स्वर के माध्यम से रखा है प्रेमाकुल हृदय की स्वाभाविक किया प्रतिकिया , तदनुकूल स्वाभाविक मनः स्थिति इनके प्रत्येक गीत में प्राप्य हैं कवि के मुखरित गीत, मीत के अनुराग से अनुप्राणित हैं इन गीतों में एक संवेदनशील हृदय और तरूणाई की सरस झॉकी है। कवि में अपने प्रिय के प्रति समर्पण की भावना है और वह अपने प्रिय पर सर्वस्व निछावर करने को तत्पर है–

आरती का दीप बनकर जल रहा हूँ।
रत्न श्वासा, दीप्त , आशा, अर्चना में मूक भाषा ,
दीप में घृत –बिन्दु बनकर गल रहा हूँ। आरती का दीप बनकर जल रहा हूँ।

इसी समर्पण की भावना से और विश्वास से कवि दृढ़ता से एक गीत में कहता है–

मैं तुम्हारे प्रेम का आधार पाकर
वेदना सारे जगत की ढो रहा हूँ ।
घोर तम है, ज्योति कम है, पंथ दुर्गम , अति विषम है,
मैं तुम्हारी अमित छवि को प्राण में भर, दिव्य आभा से विजन को धो रहा हूँ

रूद्ध पग है, कुद्ध जग है, लूटने को काल ठग है,

मैं तुम्हारी चिन्मयी मुस्कान से पर ,

सबल निर्भय , मुक्त प्रतिक्षण हो रहा हूँ । मैं तुम्हारे प्रेम का .....

वियोग पक्ष :– इसी प्रकार प्रेम का वियोग पक्ष भी कवि की आत्मगत अनुभूतियों का परिचय देता है। वे प्रिय को संबोधित करते हुए कहते हैं –

1 प्रिय बताओ क्या करूँ मैं?

प्राण में जीवन सुधा का स्रोत सूखा, वासना का असुर तन में क्षुब्ध भूखा

उड़ रहा कंचन भ्रमर सा मत्त , साधना केसे करूँ मै ?

2 किया है मैंने निर्मल प्रेम , इसी कारण मुझको सन्ताप।

मुझे ही सहनी है अब पीर, भोगना होगा विरह–उताप ।

याद आता है प्रथम प्रंसग , आपको देखा पहली बार।

हार बैठी मैं हृदय हठात हुई थीं जब मिलि ऑखें चार।

लगा है मुझे प्रेम का रोग, पतन है यह अथवा उत्थान।

विकल रहती हूँ प्रतिपल नित्य, नहीं रहता किंचित भी ध्यान।

नहीं अब और बसी मन चाह , सभी वैभव लगते निस्सार ।

न पाया मैंने अब तक देव! किसी मानव का सच्चा प्यार । X X X

श्लथ गति, चरण हुए जड़मान , घूमती लगी नयन को धरा ।

मत यौवन था चकनाचूर, देह पर उतरी त्वरित जरा।

"सौंदर्य के प्रति जन साधारण में स्वामाविक रूप से आकर्षण विद्यामान रहता है। कवि के खण्ड काव्य 'अनुताप 'में वासवदत्ता का श्रृंगारिक रूप दृष्टक है–

सजाये तन पर शुभ परिधान , किये बहुश्रम सोलह श्रृंगार ।

खड़ी थी एक बाला सुकुमारि , जनाने अपना पावन प्यार ।।" – – –

शुभांगी ! स्वस्ति हुआ मै। धन्य पधारीं आप यहॉ किस काज ?

खड़ी क्यों हो बैठा सुकुमारी ! आगमन किस कारण से आज ।

कहा वासवदत्ता ने –हे देव ! सभी सुख औ वैभव है प्राप्त।

किन्तु ,इस मन में व्यथा महान, आपकी कृपा चाहती व्याप्त ।"

आप तो स्वामी हैं सर्वज्ञ, जानकर रहे न यों अनजान।

समझिए इस नारी की पीर, आप ही हैं जीवन–धन–प्राण। "

डा0 ब्रजबाल के अधिकांश गीतों में प्रणय और उत्कृट लगाव की भावना मुखरित है। यह भावना मॉंसल सौन्दर्य से प्रभावित प्रतीत होती हुई भी आध्यात्मिक अनुभूति से संपृक्त है। इन गीतों में कवि की आत्म – समर्पण और आत्म–निवेदन की प्रवृत्ति लक्षित हुई है। वे अपने प्रेमास्पद से निवेदन करते हैं–

'मन में तुम हो तन में तुम हो, प्रिय मेरे जीवन में तुम हो,

तुमसे मेरा जगमग आनन–तुमसे ही ज्योतिर्मय लोचन ,

तुम हो भीतर तुम हो बाहर– प्रिय मेरी धड़कन में तुम हो .....

(4) श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' :–

1 कवि ने सजनी आत्मा के पूर्ण श्रृंगार कर साजन से मिल जाने की बात 'सजन–मिलन ' में कही है–

सजनी चली सजन के देश, सजनी चली सजन के देश ।

संयम–साबुन को गल–गल कर, मन काम कीच मल–मल कर।

ममता –मैल छुड़ा तन–मन से , धोये कामन –केश। सजनी चली सजन के देश .....

तप का तेल लगा बालों में , जप की लाली भर गालों में

सम–रस का सुरमा नैनन दे, निरखन चली स्वदेश ।। सजनी चली .....

सत–सिंदूर माँग में भरकर , ब्रहमचर्य की बेसर धर कर ।

निर्मल भावों के बिछुए दे, मिलन चली अखिलेश।। सजनी चली .....

अहंकार –अंगिया प्रिय रंग रंग , सदाचार साड़ी से ढक अंग ।

साँस –सती शिव–मय ही होने –चली बना शिव वेष।। सजनी चली ... "साधना के स्वर"

।। अपनी साँस–साँस में साध-साध में प्रिय के समाए होने की बात 'साँस–सुहागिन' में कवि नेव्यक्त की है, जो उनकी स्वयं की आध्यात्मिक अनुभूति की परिचायक है–

"पीड़ा के पीहर में संयम की सहेली संग साँस की सुहागिन क्रो, साधों का सावन मनाने दो ।

भावों के भादों की अँधेरी के , मँडराए मेघों की बौछार खाने दो।

विद्युत की कड़कन उसे सह जाने दो फिर देखो ! साध्य के सज़ना लेने खुद आएँगे।

शरद के चंदा की , बिंदिया बनवाएँगे। दीपों की मणियों की माला पहनाएँगे । हृदय से लगाएँगे ।"

"साधना के स्वर" पृ0 68

।।। "प्रिय से अपेक्षा' शीर्षक कविता की पंक्तियाँ देखिए :–

लो! मैं सावन की सरस धार बन जाऊँ , तुम भू बनकर अपना आँचल फैला दो ।

मैं श्याम बदरिया बन, नभ में छा जाऊँ , तुम मस्त मयूरी बन पायल झनका दो ।।

IV 'विरहिन' शीर्षक कविता की पंक्तिों में वियोग पक्ष दृष्टव्य है–

"मैं आसूँ की भरी बदरिया , मुझ विरहिन से गीत न माँगों ।।

मेरी हार बना है छलिया , मुझ हारी से जीत न माँगो।

मुझ पर चन्दा ने तारो ने , अंगारे ही बरसाए है। कोयल ने मेरी कुटिया पर गम से भरे गीत गाये है।

तुम मुझसे उपवन की कोमल कलिका जैसी प्रीति न मॉगो।। मैं आँसू की की भरी .....

मैं चकोरिनी की साथी हूँ, जिसने चंदा देख न पाया।

मैं कुमोदनी की साथी हूँ जिसको उषा ने भरमाया

मुझ एकाकिन नीरवता से तुम कोई मीत न माँगों। मैं आँसू की भरी .....

इसी तारतम्य में कवि की रचना 'कवि –धर्म ' की पंक्तियॉ दृष्टक हैं–

कवि तुम गाने लगे लोरियॉ , कौन भैरवी –राग सुनाये।

तुम मदहोशी लगे पिलाने कोन सृजन की सुधा पिलाये।।

तुमने कजरारे –नयनो में अपनी कामुक –कलम डुबोई ।

काला मुँह हो गया कलम का इतनी तुमने कलम भिंगोई।

बाल्मीकि ! अलकों में उलझे, कौन पलक की पर मिटाये। कवि तुम गाने लगे लोरियॉ .....X X X

कवि कामुक कायर बनबैठा, कविता भी बन गई कामिनी ।

रह न सकी कवि की वाणी से निस्रत कविता, भव्य–भावनी ।

मीरा! निर्मलता खो बैठी , कौन प्रेम का पाठ पढ़ाये । कवि तुम गाने लागे लोरियॉ .....

(5) श्री मती माया वर्मा :–

श्री मती वर्मा की एक रचना 'पावस गीत ' में श्रृंगार का चित्रण देखिए –

स्नान करती है प्रकृति आकण्ठ डूबी । भर दिये बरसात ने सरिता, सरोवर ।।

तन सुखाने को चली सुरभित हवाएँ, केश पौंछे तो झड़ी मोती सुहाने

ये घटा में घुमड़ती हैं या कि जूड़ा बॉधते हैं प्रकृति के अनुचर सयाने ।।

मलय के वन ने सुवासित तेल भेजा , बिजलियों के बन गये मणिबंध सुन्दर ।। X X X

किसलियों केपट लताओं की चुनरिया, फूल टांके है‡ सुघर कारीगरों ने।

स्नान करके देव अर्चन हेतु निकली , तो शरद ने आ स्वयं ,आरति सजायी ।।

स्वर्ण किरणों अगरू–दंडक मनोहर , शुभ्र नभने गैलतारों की बनायी ।।

विजय लक्ष्मी–सी चली प्रभु–दरस पाने , बॉटती जग को समृद्धि–विकास सुखकर ।।

एक अन्य कवितांश में श्रृंगार का भाव देखें–

"गा उठा नर कभी मद भरी रात में, घूँट उसने पिये जब कि मधुपर्क के ।

गीत जन्मा, गये मेघ संदेश ले, बाण पैने बहुत हो गये काम के ।।

श्रृंगार के वियोग पक्ष को प्रस्तुत करती पंक्तियॉ अवलोकनीय है –"

"पीर को अनकहे राधिका ने पिया। अर्कजा के तटों पर वही वेदना

गीत जन्मा बना जब जहर का अमृत । रह सकी जब न मीरा बिना श्याम के।। X X X

इस प्रसव पीर से अन्तरात्मा दुखी । और घायल हुई मूंक संवेदना ।

गीत जन्मा , सिया जब चुरा ली गयी , और बहने लगे अश्रु श्री राम के।। "

कवयित्री की निम्न पंक्तियों में भी रति का स्थायी भाव दृष्टक है–

निर्मित होता मानव तन, नारी तन के ही कोने में;

नारी का रस, रक्त दूध पी गति आती लघु छौंने में ।।

औ वयस्क होकर जग का सुख मिलता नारी के संग ही।

सुख वृद्धों का भी नारी, करूणा ,सेवा संग होने में ।। X X X "गागर में सागर " पृ0 31

प्यार है संजीवनी , जीवन सुधा। तृप्ति आत्मा की अनेकों किस्म में ,

पर भटक जाता हरेक इन्सान जब, ढूँढने लगता उसे इस जिस्म में ।। "गागर में सागर " पृ0 25

(6) डा0 राम स्वरूप खरे :–

कवि के मुक्तक संग्रह 'मेरे स्वप्न तुम्हारे चित्र 'में एक सौ एक भाव चित्र है। स्वप्निल भी यथार्थ भी । इनमें कहीं मान है तो मनुहार भी, सौन्दर्य हे तो सरलता भी । कवि ने संयोग–वियोग, सौन्दर्य –श्रृंगार , राष्ट्रप्रेम और विश्व हित, श्रम और कर्मठता, आत्म–त्याग और नव युग निर्माण, नश्वर और अनश्वर पदार्थ आदि विषयों पर रमणीय भाव एवं मधुर विचार कहीं काव्यात्मक और कहीं गद्यात्मक शैली में व्यक्त किये है। कतिपय उदाहरण दृष्टव्य है–

1 संयोग श्रृंगार :–

"मुख पर मत चंचल अलकें विखराओं, नभ के चन्दा को यों मत शरमाओ।

भ्रमवश न कहीं राहु तुम्हें ग्रस ले –आओ मेरी बाहों में छिप जाओ । X X X

एक नायक अपनी प्रेयसी की रूप सुधा का पान करने पर भी अतृप्त रह जात है–

जाने क्या जादू है तेरी रूप सुधा में। बार–बार पीने पर भी प्यासा रह जाता हूँ । "

कवि श्री स्वरूप ने प्रेम, सौन्दर्य, यौवन एवं मादकता के रमणीय चित्र, अत्यन्त कौशल से खीचें हैं–

शोभा ही जिसके मृदुतन पर भार है, यौवन की मदिरा का मधुर खुमार है।।

तोड़ो मत यह कली अभी अनजान है– अन्तर में अनछुये प्यार का ज्वार है।"

कवि दृष्टि में मन का मीत प्राणों से भी अधिक प्रिय होता है–

"जो आजाये स्वतः कण्ठ में गीत है , जले शिखा–सी प्रिय पथ में वह प्रीत है।

जन्म मरण में कभी न छोड़े साथ जो–प्राणों से भी प्रिय वह मन का मीत है। "

डा0 स्वरूप के इस प्रेम में कहीं–कहीं रीति काली मॉसलता भी झलकाती है–

" तुमने मेरा हाथ खीचंकर रात में लिया हृदय पर रख बातों ही बात में ।

समझ न पाया शायद में अनजान था– जी भर तुम रोई जाने क्यों प्रात में!!

एक स्थान पर कवि यौवन के सुधा –सरोवर में न धॅसने का उपदेश भी करता है–"

"तुम केश –पाश के बन्धन में मत फॅस जाना। सौन्दर्य –सुधा का सिन्धु देख मत घॅस जाना ।'

आकर्षक इस उपवन के हर तरू की छाया– लख कलियों की मुस्कान , न राही हॅस जाना!!"

2. वियोग श्रृंगार :–

संयोग सुख क्षणिक होता है। पन्त ने कहा है–

" मिलन के पल दो चार विरह के कल्प हजार । " (पंत)

कवि स्वरूप का मानस भी इसी सत्य से चिन्तित हो कह उठता है–

"चाँदनी रात, निशा–कालिमा ढह जाती जायेगी , याद है सिर्फ जो तेरी यहाँ रह जायेगी ।

सोचले यह न कभी लौट के आ पाई है– उम्र पानी की तरह बहती है बह जायेगी ।।

एक नायक की इच्छा थी कि उसका साथ उसकी प्रेयसी से कभी न छूटे, पर वियोग और मृत्यु पर उसका

क्या वश था?संयोग–सुख में मग्न उसकी चेतना उस नश्वरता पर जा सकी,जिसका वर्णन कवि ने किया है– " अभी लगी थी हल्दी गोरे गात में ! मै सकुचाती थी सचमुच हर बात में !!

मुझे पता क्या था जी भर मिलती विहँस–मौत सौत आयेगी पहली रात में !!"

यहाँ पन्त के 'अभी तो मुकुट बँधा था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ' की छाया स्पष्ट है।

कवि की इच्छा है कि जैसे नायक वियोग –व्यथा को मौन रहकर सह रहा हूँ, वैसे ही उसकी प्रेयसी भी इसे किसी पर प्रकट न करे–

"अपने अन्तर का मर्म न कह जाना, जो भी आये दुःख उसे सह जाना !

उर जलता मेरे घाव सदा हँसते –मेरी भावुकता देख न बह जाना !!"

(7) डा0 हरगोविन्द सिंह

डा0 सिंह की एक श्रृंगार रचना देखिए जिसमें 'तम्बाकू और दम्पति' शीर्षक से वर्णन है–

कौनउँ तमुखिया की धरवाली एक दिना, लख कै संजोग भलौ पूँछ उठी प्यारे सैं–

"काए खैं मचाएँ तुम पिच्च–पिच्च धरी धरी, एक छयाँव गैल–घाट बखरी–दुआरे सैं

बोले श्रीमान–" अब न पूँछ कछू चन्द्र मुखी ,द्याँव परी छूटत ना बिसरे बिसारे सें ,

जेकउ खबाबै उहै थूँकत पचीस बेर, सिकै दई जैने उहै थूँकत भुंसारे से ।।"

"पुष्पांजलि" पृ०106

2 हास्य रस

1डा0 हरगोविन्दसिंह की एक हास्य रचना देखिए जिसमें विवाहों के अपव्यय का चित्रण है–

बस्ती से दूर अलग जनवासों अनवासों , बारइ सै जान परें जैसें कुछ तना–तनी

गोलन की भड़ा–भट्ट चकरी की चक्क मक्क हॉ तिन की टनाटन घोड़न की हिनी–निनी ;

रब्बी–रमतूला संग ढोलन की धमा–धम्म झाँझन को झमा–झम्म फरकाबै कनी–कनी ,

मंगल – समाज यौकि पल्टन कौ साज–बाज? लरका कौ ब्याव है कि समधी सैं ठना–ठनी ?

"पुष्पांजलि" पृ० 110

एक अन्य हास्य रचना देखिए –

पड़ गले में और के , हम तो पुज हैं, कौन कहता पिट गये? हमतो बजे है!

लाख भीतर पोल हो , पर ढोल हैं हम – हर घड़ी जोहर रचाने को सजे है।"

एक अन्य रचना, द्रष्टव्य है–

सुन लो समाज वालो बेटे का बाप हूँ मैं , जलवा सभी से है निराला – मेरा है बैल बिकने वाला।

जिसको हो ख्वाइश वर की सौदा तय करने आये , लाखों में एक मेरे हीरे की कीमत लाये

हिम्मत हो जिसमें असली है कोई ग्राहक दिलवाला। मेरा है बैल बिकने वाला X X X

छोड़ी पढ़ाई इसने अब है यह दादा पक्का, बच्चे नेताओं के सब कहते है इसको कक्का

दीपक यह मेरे कुल का मैंने जतन से इसे पाला मेरा है बैल बिकने वाला .....

2 श्री शिवशंकर मिश्र की एक हास्य रचना अवलोकनीय है–

आज तो जा रहे हो छलिया रस रंग भरी पिचकारी तार के,

खीझ के हैं सखियाँ कहती चढ़ते नहीं है कभी रंग उधार के।

जो कुछ भी कहना हो कहो हमें ताने बुरे लगते नहीं प्यार के

चाहते हो अपना भला तो फिर आना यहाँ जरा सोच–विचार के । "

श्री मिश्र की हास्य रस से ओतप्रोत एक अन्य रचना देखिए –

किस भाँति से आपका मान करूँ कितने दिनो बाद पधारे हैं आप।
भूली हुई जनवास की सूची, गली को समोद निहारे हैं आप।
आहट पाकर भागती भोंकती मोहनी को पुचकारे हैं आप।
मैं तो सदा से पराजिता थी, लगता मुझे आज तो हारे हैं आप।।""इलाइट"मासिक मई 1996

श्री मती विद्यावती मिश्र की एक हास्य रचना अवलोकनीय है–

"जनक को सूझा मनोविनोद न हमको अब तक पहचाना ।
हमारे यहॉ रहा ही नहीं कभी उनका आना–जाना।। इसी से नृप ने प्रण ठाना ।। X
तोड़ डालेगा वह ही नृपति शीघ्र जो आगे आयेगा ।
भाग्यशाली वह होगा जो कि सिया को यों ले जायेगा कौन पहले आ पायेगा ।। X
उठायेंगे हम पहले धनुष , हमें ही पहले बारी दो। अगर हम इसको डालें तोड़ हमें सीता सुकुमारी दो
और सबको बस हारी दो ।। "भगवान राम " (संगीत रूपक) पृ0 14–15

डा0 रामस्वरूप खरे :– "की गधा के कुछ प्रश्न " शीर्षक से हास्य पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

"काम मन लगाकर करता हूँ, श्रम से कभी न घबड़ाता ।
स्वामी की आज्ञा मानूँ मैं गधा कहो क्यों कहलाता।।
और किसी से कहो अगर गाली समझ उफन जाता।
और अनेक जानवर हैं माँ, उनसे कुछ न कहा जाता ।।
कपड़े, गुम्मा भार उठाता ,तनिक नहीं हूँ शर्माता ।
श्रम–साधक की यह दुर्गति क्यों ? जी रहता है अकुलाता ।।
मुझ सा धीरज वान न कोई लम्बकरण , गाना गाता ।
फिर क्यों मनुज मुझे दुत्कारे , माँ यह समझ नहीं पाता।।
इन सबको एकत्रित करके मैं नवसंघ बनाउँगा
गधा कहेगा जो भी मुझसे उसको दण्ड दिलाऊँगा ।।
गाँव गाँव हर नगर–नगर में , बहुमत है मेरा जानो।
लोक सभा तक कुछ जा पहुँचे , माँ मुझको नेता मानो।।
मैं भी अब की बार लडूँगा , लोकसभा का एक चुनाव ।
सबसे अधिक मिलेगा बहुमत दूँगा लगा सभी कुछ दाँव ।।
"युग कवि डा0 राम स्वरूप खरे का बाल साहित्य " पृ0 45

3 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल की हास्य प्रधान रचना अवलोकनीय है–

परावलम्बी :– किसी भी क्षण छड़ फेंका जा सकता हूँ अनुपयोगी समझ,
प्रयोग की पेंसिल का अन्तिम सिरा हूँ ।

घिसा हुआ तन है, चुका हुआ सुरमा –

स्वामी की इच्छा पर, हाथों में ठहरा हूँ । "इन्दु एक बिन्दु दो " पृ0 5

एक अन्य रचना देखिए–

"कोई लखता रूप रंग को , कोई चाल ढाल व्यवहार,
कोई बोली कोई खोली पूँछ रहा कोई परिवार ,
कोई जाति, धर्म से कोई, कोई जाँच रहा आचार ,
कोई पैसा कोइ पद से , गुण–अवगुण सब रहे विचार ,X X X
कैसी यह बहुरूप बजरिया, कंचन माटी में बिकता है,
लगी हुई रंगीन दुकानें जिनमें ग्राहक आ फँसता है,
कोई लेता , कोई देता , कोई निरख –परख करता है,
जो आता है ठग जाता है, पर सौदा प्रतिक्षण चलता है,
बड़ी अनौखी नगरी है, जो भी आया कहता आया,
आओ हम भी सौदा कर लें, लाभ बहुत व्यापार में ।। " "पाथेय " पृ0 15

श्री मती मायावर्मा की एक हास्य रचना उनके एक संगीत रूपक 'भगवान श्री कृष्ण' में अवलोकनीय है–

सूत्रधार – चला था सिलसिला यों बात हो पायी घड़ी भर रही।
खिसककर काँख से वे पोटली आखिर गई गिर ही ।
बँधी थी पोटली, लेकिन बिखर कर फैल जाती है।
सुदामा को बहुत इस बात की लज्जा सताती है।।

श्री कृष्ण – अरे तुमने हमें यह धन बताया क्यों नही पहले?
समय बदला , मगर मेरे सुदामा ! तुम नहीं बदले ।।
दिया था खाद्य कुछ पहले तुम्हें गुरू मातु ने उस दिन ।
कहा था भाग आधा कृष्ण को दे देना इसी में तुम ।
मगर तुमने न हमको वह हमारा भाग बतलाया। किया फिर कार्य कुछ–कुछ है वही ऐसा समझ आया।
हमें उपहार में भेजा था हमारी पूज्य भाभी ने, रहे चुपचाप अब तक, वह नहीं हमको दिया तुमने ।।

सूत्रधार – हँसे कह बात इतनी श्याम, हँसते थे सुदामा भी ।
हँसी में साथ देती रूक्मिणी–श्री कृष्ण बामा भी ।।
हँसी के गूँजते स्वर प्राण में भी प्राण भरते थे।
बहुत ही भाव डूबे कृष्ण हँस हँस बात करते थे।।

श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय':– की आधुनिक नारी शीर्षक से एक हास्य रचना अवलोकनीय है–

मैं थी आजादी की लपटों की पहली चिन्गारी , मैं नारी थी, पर पुरूषों की थी मैने ख्वारी ।। X X X
आज देश 'एडवांस' हुआ है, 'फ्रीडम' मुझे मिली है।
क्लब जाने को सॅजी–साथी टमटम मुझे मिली है।

पर्स सदा हाथों में रहता, बलखाती है साड़ी तीर तमंचे हुए पुराने, राइफल क्लब जाती हूँ।
'नाना की लक्ष्मी ' सिनेमा के गाने गाती हूँ , हार गई तब जीत न पाई , बेकवर्ड थी सॉरी।।
सेंडिल की एड़ी ऊँची है , इन्हें बुर्ज मानूँगी, ये दो चोटी ब्रहम –फाँस है, चाहे जिसे फाँसूँगी ।
घबराओ नहीं वीर बनी हूँ चूड़ी आज उतारी । मैं नारी थी.....

'आधुनिक–शिक्षा' शीर्षक कविता की पंक्तियों में भी हास्य रस दृष्टव्य है–

"अगणित विद्यालय आज बने हैं जनवासे, मानों वर –वधुओं के ही लिए सजाया हो ।
अध्यापक ऐसे सजे–धजे से लगते है , मानो मिलनी करने का अवसर आया हो।।
जैसे दूल्हा तौरन पर जाने से पहले, श्रृंगार सजाते , हाथों में दस्ती ले ले ।
हर छात्र इस तरह सजा–धजा है मानो कि, कालेज नहीं, ससुराल ब्याहने आया हो।।
छात्राओं का श्रृंगार लजाता दुल्हन को ,मानों तैयार खड़ी हो आकर लगन को ।
उनके ग्रुप 'गौरन' जैसे बागों में बैठे, मानों मिलकर बहिनों ने ब्याह रचाया हो ।।
विद्यालय में जनवासे सी है मची धूम। केन्टीन, मेकअप–रूम , साथ ही बाथरूम ।
लेक्चर्स सरस ढंग से यूँ होते है प्रतिदिन , मानों पुरोहित जी ने ज्यों ब्याह पढ़ाया हो।।

"साधना के स्वर " पृ0 82

श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' की एक रचना की पंक्तियों में हास्यास्पद भाव दृष्टव्य है–

"ज्ञान की मशाल है,सूर्य लाल लाल है। नींद आ रही तुम्हें कमाल है कमाल है।।
रात का पता नहीं , हँसा प्रभात ज्ञान का, प्राण–प्राणलीन है, चढ़ा खुमार ध्यान का, X X X
हँसी खुशी है पाँखरी सहस दल खिले–खिले
कि प्राण की बयार से हृदय कमल हिले–डुले ,
बौर से लदी–लदी कि कल्प वृक्ष डाल है। ज्ञान की मशाल है.....

एक अन्य हास्य रचना देखिए –

"हम उमर खय्याम होते किस तरह ?"

है जिन्हें हाला मिली उन्माद की ! याद उनको है सुरा के स्वाद की,
हम खुली सीपी, सहस्रों, जन्म की, ताकते हैं बूँद स्वाति, समाधि की !
चिर तृषा से ही अधर पपरा रंहे, हम सुराही और साकी जाम होते किस तरह ?

श्री बलराम सिंह परिहार की एक हास्य रस प्रधान रचना अवलोकनीय है–

गँवा दिया किस लिए बावरे यह जीवन अनमोल। कुछ तो बोलरे प्रवासी बोल ।।
वैरागी–गुरू अलख जगाया , एक नूर से जग उपजाया।
तू भी एक उसी की माया, उसे न यदि इस तन से पाया।
कितना बोले मधुर–मधुर पर रहा ढोल का ढोल । कुछ तो बोलरे प्रवासी बोल ।।

(3) करूण रस की रचनायें :–

काव्य में करूण रस का अपना विशेष महत्व है। इस रस का सुन्दर परिपाक आलोच्य काव्यों में हुआ है। उदाहरण अवलोकनार्थ प्रस्तुत है–

1 श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' – की कविता "महाप्राण का महाप्रयाण" की पंक्तियों में कवि की अभिव्यक्ति अत्यन्त मार्मिक है जिसमें आचार्य शर्माजी की अन्तिम यात्रा के बारे में उल्लेख किया गया है–

आयोजन की समाप्ति पर जब माता जी को सूचना मिली ।
ऐसा लगता था करूणा की, प्रतिमा पर क्रूर कुठार चली।।
अब वातावरण शान्ति कुन्ज का, निर्जन, निष्प्राण लग रहा था ।
धरती सिसकियाँ भर रही थी, नभ अश्रुपात कर रहा था।।
जैसे काया ही रही शेष, शान्ति कुन्ज , प्राण विहीन हुआ।
चिर शांत, शान्ति के दूत हुए , पर शान्ति कुन्ज गमगीन हुआ।।
पार्थिव अब शेष रह गया था, जन–जन में 'राम' रम गए थे।
पथराये –नयन परिजनों के , पार्थिव पर अथक टिक गए थे।।
जो नयन नेह छलकाते थे , परिजन निहारते क्यों न उन्हें ।
जिस मुख से प्यार बरसता था, हो मौन, रूलाता क्यों न उन्हें ।।
जो हाथ प्यार की थपकी दे, अन्तर पीड़ा हर लेते थे।
उन हाथों को निस्तब्ध देख , परिजन आहें भर लेते थे।।
वे चरण जिन्होंने लाखों ही परिजन को साथ चलाया था।
उन चरणों पर लाखों हृदयों ने पीड़ा को छलकाया था ।।
माता जी पार्थिव–प्रतिमा सी, बैठी थी पास पार्थिव के।
पथराई आँखें झरती थीं , वे क्षण इतने ही मार्मिक थे।।
परिजन के प्राणों की पीड़ा , अन्तिम दर्शन को पंक्ति बद्ध ।।
श्रद्धाश्रु समर्पित करते थे, आकुल–व्याकल आबालवृद्ध।।
लग गया ढेर पुष्पांजलि का , सुमनों के मन मुरझाये थे।
युग के बसंत को देख मौन पतझर जेसे झर आए थे।।
अंतिम–यात्रा–पथ की सीमा, हो गई सहज ही 'शान्ति कुन्ज ' ।
थे गुरूवर भी तो शान्ति कुन्ज , था शांतिकुन्ज , प्रियतम निकुंज ।।
अन्तिम'–संस्कार सम्पन्न हुआ , 'प्रखर–प्रज्ञा' के प्रांगण में।
रम गई' 'राम' की सूक्ष्म देह , प्रिय शान्तिकुन्ज के कण कण में ।।
उठती लपटें ' युग पुरोहित' का, परिचय ही देती जाती थी ।
हर क्षण ही ऊँचा उठने का, प्रेरक संदेश सुनाती थी।।
युग–दधीचि की अस्थियाँ , 'प्रखर प्रज्ञा' में अब थी संयोजित ।
ताकि दधीचि का हर वंशज, हो जन सेवार्थ सदा प्रेरित।।
क्षेत्रों में दुखद सूचना जब , पहुँची तो बज्राघात हुआ ।
लाखो परिजन के प्राणों पर, असह्य–पीड़ा का पात हुआ ।।– – –
माता जी विह्वल बच्चों को , ढाढस ही देती जाती थीं ।

अन्दर से मन मर्माहित था, पर बच्चों को सहलाती थीं।। "प्रज्ञावतार " पृ0 155 से 160

माता जी(श्रीमती भगवती देवी शर्मा) के विछोह का प्रसंग भी ऐसा ही मार्मिक है–

"करूणार्द हुई करूणा , ममता का उर उदाहरण ।

चिर मौन कर लिया था, करूणा मयी ने धारण ।।"

श्रीमती विद्यावती मिश्र :–

देश के प्रधानमंत्री स्व0 श्री लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के उपरान्त श्री मती मिश्र का एक गीत "शास्त्री के प्रति" शीर्षक से प्रकाशित हुआ जिसमें कवयित्री ने शास्त्री जी के प्रति अपनी भीवभीनी श्रद्धान्जलि अर्पित की जिसमें करूण रस अवलोकनीय है–

"क्या होगा सो गया पहरूआ जब कि अँधेरी रात में,

शोक मग्न है जन–जन, कण-कण करता करूण पुकार है,

शोक मग्न नौका , छोड़ कहाँ पर जाता कर्णाधार है,

सभी ओर हैं भ्रमित दिशायें तूफानी भववार है,

कौन बनेगा सम्बल लहरों के संघर्षी घात में ।।

वेदनानुभूति के स्वर यत्र-तत्र उनकी काव्य कृति 'ज्योति'में विखरे पड़े हैं एक उदाहरण अवलोकनीय है–

" अभी वह तिलमिलाता है, अभी वह छटपटाता है,

अभी उड़ दूर जाता है, अभी लय हो न पाता है, इसी से जान लेती हूँ ,

अभी निर्वाण बाकी है! और कुछ और जलदीपक! शलभ में प्राण बाकी है।

अभी तो चेतना बाकी, किसी की प्रेरणा बाकी, अभी अवहेलना बाकी , अभी है वेदना बाकी ,

अभी तो आह के स्वर में , मिलन का गान बाकी है।

श्री शिवशंकर मिश्र की एक रचना में करूणानुभूति का भाव दृष्टव्य है–

"दिन पर दिन गहराता जाता घना अँधेरा है।

या तो लय कर दो अपने को या बन दीप जलो।।

एक समस्या हो तो उस पर मैं टिप्पणी करूँ , यहाँ पंक्तियाँ खड़ी हुई है उलझाने वाली।

उलझूँ तो तब जब कि निकलना आता हो मुझको– उस पर तरह–तरह की बातें बहकाने वालीं ।

पथ ने ही तो नही दिशायें ने भी घेरा है ।। दिन पर दिन .....

नैतिक मूल्य शून्य की गति पर मर्यादा टूटी , विश्व प्रेम क्या देश प्रेम क्या बना प्रश्नवाचक ।

यह विकास तो अर्थनीति की जटिल पहेली है– यही आत्म निर्भरता हम बहुतेरों के याचक ।

मृत्युमुखी जीवन विनाश के लिए बसेरा है। दिन पर दिन गहराता जाता ....."

श्री बाबूलाल जैन ' जलज' की करूण रस से ओत प्रोत रचनाओं के अंश देखिए–

। "दुर्बलदीन अनाथ देखकर , उर में पीड़ा होती ।

नयन सीप में आँसू ढलकर, बन जाते हैं मोती ।। X X X

जीत–जीत कर जीवन बाजी , अबला बन तुम हारी ।

श्रद्धा की साकार मूर्ति तुम, आदि शक्ति है नारी ।। "

।। पग–पग पर दी अग्नि परीक्षा, हुआ किन्तु उद्धार नहीं।

नारी को क्या अपने ढंग से जीने का अधिकार नहीं ।।

।।। सेवा भाव न जागृत होता, करूण पुकार न यदि सुन पाता,

व्यथा–कथा यदि सुनी न होती, जीवन–तप निष्फल हो जाता । "

IV कथनी के बदले करनी में , जिसे आत्म सुख होता ।

सुनकर व्यथा–कथा दुःखियों की , जो न चैन से सोता ।।

जो न दुःखाता हृदय किसी का नहीं मारता ताने ।

मानव नहीं देवता है, जो पीर पराई जाने ।।

डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल के खण्ड काव्य 'अनुताप' में करूण रस देखिए–

आपका लख कर ऐसा हाल , हुआ मन मेरा बहुत अशान्त ।

आपने पाये थे सब रोग, साधु को भूल गयीं उपरान्त।।

सुनी मैंने , लोगों से बात, आपने तज कर निज धन–धाम ।

किया कहीं निर्जन में है वास , प्रभो का जपतीं है शुभ नाम । X X X

उठाया देकर भुज–अवलम्ब, चले लेकर अपने निज धाम ।

वासवी बिलख उठी तत्काल , आप क्यों छूते दूषित चाम ?

भोगने दें मुझको निज भोग , रोग–दुख , दारूण पीड़ा, कष्ट ।

अधम हैं मेरी यह निज देह, इसे हो जानें दें अब नष्ट।।

डा0 हर गोविन्द सिह की रचनाओं में करूण रस दृष्टव्य है –

। विकल जानकी का क्रन्दन सुन पत्थर भी गल जाते,

किन्तु दनुजता की टक्कर से सभी जीव कतराते;

।। इस कुरीति ने दृष्कृत्यों की बाढ़ भयंकर फैलायी,

घूस,मिलावट, चोर,–बाजारी, बेईमानी सिखलायी,

चिन्ता ही दहेज की निशिदिन किये जहाँ हैरान बड़ा ,

एक तरफ शादी का सौदा, एक तरफ ईमान खड़ा;

परेशान होकर बहुतों ने, छोड़ दिया संसार है।

इस दानव को मार भगाओ, यह समाज का भार है।।

3 लेखनी की दिशा–:

हो गया यह देश अपने आप पर निर्भर, अब नहीं परमाणु–बम की शक्ति भी डर;

पर बचाओ लेखनी पथ–भ्रष्ट होने से – अन्यथा हीरोशिमा बन जायेगा हर घर ।

4 सस्ता पुण्य :– पुण्य की इन आढ़तों ने कर दिया है पाप सस्ता,

हर पुराने घाट पर मिल जायेंगे दस–बीस बस्ता;

कर्म का कचरा मगर इतना अधिक अब गिर चुका है–

`रो रही भागीरथी, किसको दिखाएं हाल खस्ता ।। "पुष्पॉजलि " 59, 64 , 27 , 29

श्री शचीन्द्र भटनागर की एक रचना 'बंदिनी नारी' में करूण रस दृष्टव्य है–

किसी ने न पूछॉ उससे, आँख क्यों भिगोई है,

जागती रही है सारी रात, क्यों न सोई है ,

कैसा भी पति हो उसका करना अभिनन्दन है, नारी के लिए नियम है, सारा अनुशासन है ,

हीन–भावना में डूबी, अपने से ऊबी–सी, जीवित शब जैसा जीवन मिला थकी–हारी को ।"

एक अन्य रचना ' माँ का क्रन्दन ' की पंक्तियॉ देखिए –

"संतानों का बैर देखकर माँ करती है क्रुन्दन , तोड़ो अब तो ऊँच-नीच और जाति–पाँति के बंधन । "

श्री मती माया वर्मा की रचना 'इस दहेज के कारण ' में करूण रस की अभिव्यक्ति देखिए–

तीस बरस की क्वाँरी कन्या–उठती हूक नयी ।

इस दहेज के कारण भरी जवानी रूठ गयी ।। – – –

रोज रोज की माँग न पूरी कर पाये घर वाले, तो दुख ऐसे दिये बहू को सम्हले नहीं सम्हाले '

जीवित हाय जलाया मानवता भी छूट गयी ।। इस दहेज के कारण .....

।। 'बहन की पीड़ा' कविता में करूणा के भाव दृष्टव्य हैं

मैं ब्रह्मा की बेटी–भूतल पर आयी । दुःख हुआ –बहुत बिगड़े हैं मेरे भाई ।।

राखी बाँधू कैसे? न कलाई खाली । हाथों में हथकड़ी , गुनाहों वाली ।

दूँ तिलक भाल पर कैसे –दाग बहुत हैं। छल , दम्भ , झूठ , बेईमानी अंकित है।।

टीके कलंक के–या राई बिखराई। मैं ब्रह्मा की बेटी –

घर में रह तुमने मात इन्द्र को दे दी । तुमसे तो अच्छा था वह ' घर का भेदी '।।

मै बोली–' भइया! घर तक पहुँचा आना ' ।

वह बोला ' वह बोला "किन्तु बीच में ही है थाना "।।

अब तक मुश्किल से अपनी जान बचाई । मै ब्रह्मा की बेटी ..... X X X

अब सुनो ! बहन मैके तब ही आएगी । जब मानवता के गुण तुममें पाएगी ।।

आशा है– मानोगे तुम मेरा यह कहना। राखी का नेग तभी लेगी यह बहना।।

जब पीछे के रस्ते की हो न कमाई । मैं ब्रह्मा की बेटी .....' जीवन सुरभि ' पृ0 66

श्री लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र'की रचना'नहीं भगवान बनकर आ में करूणा के भाव दृष्टव्य हैं –:

" धरा की पीर गहरी है , दुखी हर साँस ठहरी है।

जहाँ सुख का सवेरा है– जहाँ दुख की दुपहरी है।।

अगर पहचानना खुद को , पिघलते प्राण बनकर आ। नहीं भगवान बनकर आ ....X X X

रूदन है, अश्रु है, क्रन्दन , दुराशा, दाह का दर्शन ।

मनुजता चीखती क्षण–क्षण , दनुजता नाचती निशि–दिन ।।

अगर गाना तुझे है क्रान्ति का आहवान बनकर गा।

नहीं भगवान बन कर आ , नया इन्सान बनकर आ। " "यु0 नि0 यो0 " 5 अगस्त 1973

श्री बलराम सिंह परिहार की रचना में करूण रस देखिए :–

शायद रूठ गई नारी से उसकी ही तकदीर ।

उसकी तोड़ी गई प्यार की सोने की जंजीर।– – –

प्यार स्वर्ग है उसे दे दिया लोहे जैसा रूप इस पवित्रता को कर डाला काला और कुरूप।

इसे न बेचो गलियारे में प्यार तत्व गंभीर । उसको तोड़ी गई .....

अरे सिनेमा वाले सम्भलो इतना करो न पाप , पड़े झेलना कहीं न संस्कृति को भारी संताप

प्यार खिलौना नहीं प्यार तो श्रद्धा की तस्वीर । उसकी तोड़ी गई .....

कवि की एक अन्य रचना की पंक्तियों में करूण रस दृष्टव्य है–

"आप शंकर बन जहर पीते रहे संसार का , पर न व्रत छोड़ा कभी भी आपने उपकार का ।

दर्द इतना भर लिया था, जिन्दगी में आपने ,ध्यान तक आया नहीं,क्षण भर कभी अधिकार का

इन्द्र सा ऐश्वर्य पाकर भी सदा वामन रहे, आह तक निकली न मुख से घात है। कितने सहे ।

घूँट जीवन भर प्रभो ! अपमान का तुमने पिया, भूल पाते हैं न कितना दर्द दनुजों ने दिया ।

श्री वीरेश्वर उपाध्याय की कविता ' युग ऋषि तुम्हें बुलाता है ' में करूण भाव देखिए –"

बहिन–बेटियों की इज्जत पर गिद्धों से मंडराते ,

नेग दहेज और फैशन से, उनको डसते जाते ।

असुर भाव उद्दण्ड हो रहा , देव भाव शर्माता है,

असुर भाव हावी है सब पर, कैसे तुम्हें सुहाता है ।

डा0 राम स्वरूप खरे की खण्ड काव्य ' शतमन्यु ' में करूण रस दृष्टव्य है–

"न मिलता जब देवों को भाग, तभी वे होते क्षुब्ध नरेश।

उन्हें यदि दे हम उनका भाग दूर हो सकता तब यह क्लेश ।।" X X X

व्यथायें जग भर की ले मोल –बॉट की स्वयं दिव्य मुस्कान ।

वही ले आया नूतन प्राप्त – धरा पर , कर तम का अवसान ।।

एक अन्य रचना 'नवजीवन–संचार' देखिए–

आज विकल है आँगन–उपवन , उन्मन –सा गतिशील पवन ।

हैं गंभीर–सिंधु भी आकुल जाने क्यों विक्षुब्ध गगन ।।

सूना पनघट , अब न खनकती सुघर चूड़ियॉ खन–खन–खन,

गुमसुम –सी बाहर चौपाले कूजन–गुंजन , चुप मधुवन ।।"

रौद्र रस :–

आलोच्य काव्य में रौद्र रस की अभिव्यक्तियॉ भी कवियों द्वारा यत्र–तत्र की गई है। अवलोकनार्थ उदाहरण दिये जा रहे हैं–

1 डा0 हर गोविन्द सिंह की एक रचना ' बलिदानी जटायु 'की निम्न पंक्तियों में रौद्र रस देखिए –

"जब आवाहन पर जटायु के कोई साथ न आया–
तब एकाकी बढ़कर उसने निज कर्त्तव्य निभाया ,
झपटा वज्र–समान टूटकर रावण को ललकारा,
निन्दा कर उसके कुकृत्य की, बुरी तरह फटकारा ;
वृद्ध गीध का देख मनोबल, दानव था हैरान ।
अमर हुआ जग में जटायु का वन्दनयी बलिदान ।।"

2 डा0 राम स्वरूप खरे कविता में अप्रिय आचरण को देख मन में उत्तेजना उत्पन्न हुई जो निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है– "मनुज की बुद्धि ध्वंस में निरत ,स्वार्थ में अंध , युद्ध में व्यस्त।
आसुरी शक्ति उदित –सी जान, धरा सक्षम हो उठती स्त।। X X X
बढ़ी दानवता आती घोरे, तुम्हारी पुण्य–भूमि की ओर ।
बचाओ युग के आकुल प्राण , निहारो इन कलियों की ओर ।।

3 श्री बलराम सिंह परिहार की रचना ' जागरे कबीरा " की पंक्तियों में रौद्र रस देखिए –

(।)" छापा तिलक लगाने वाले ,पौथी पाठ पढ़ाने वाले।जग को ज्ञान सुनाने वाले,तन के उजले मन के काले।"
हंस बने बैठे ऊपरसे, भीतर विषधर नाग । X X X
हिन्दू, मुसलिम, सिक्ख ईसाई , जैन, पारसी बौद्ध, बहाई ।
आपस में सब भाई–भाई लेकिन इनको समझ न आई।।
खेल रहे हैं एक दूसरे से सब खूनी फाग। फिर से जाग रे कबीरा जाग।। " "क्रान्ति गीत " पृ0 38

(।।) ऐसी भी क्या कायरता इतना तो नहीं डरो।। "
पाश्चात्य संस्कृति से अब तो खुलकर युद्ध करो।
बात वेश भूषा तक रहती ,तो चुप रह जाते । खान–पान से भी बच जाते– कभी न टकराते ।।
दुश्चरित्रता लेकिन अब तो हद तक बढ़ आई । कर लेना बर्दाश्त उसे तो अतिशय दुःखदाई ।
विष पीकर मर जाना अच्छा–मन न अशुद्ध करो।
अगर सनेमा श्रृंगारिकता तक ही रह जाता, तो यह अन्तर्द्वन्द्व न शायद–इतना दुःख पाता ।
लेकिन वह तुल पड़ा नारियों को नंगा करने , खलनायक सीधे घुस आया है अपने घर में ।।
अस्त्र करो धारण, जन–मानस को भी कुद्ध करो ।

4 श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' की रचना में रौद्र रस देखिए –

। "आक्रमण पशु शक्तियों का हो रहा है, देश विकृति जन्य पीड़ा ढो रहा है।
हर अशिक्षित दुष्प्रथाओं से कसा है, शिक्षितों पर भोग–संस्कृति का नशा है।।"

।। मेरे ही अपने घर आँगन में मुझको बदनाम कर दिया ,
मुझको बाजारों चौराहों पर लाकर नीलाम कर दिया।।
मंदिर और मठों में मुझको नंगा किया गया मनचाहा ,
कोई जगह न बची अछूती जीना मुझे हराम कर दिया ।

होता गया क्षीण तन मैं तो, मेरा हर पण्डा है मोटा ,

आग लगी घर के चिराग से मेरा भाग्य हुआ यूँ खोटा।। " "ज्ञान–रश्मि " पृ0 32

5 श्री शचीन्द्र भटनागर की एक रचना 'यह केसरिया बाना' में रौद्र रस देखिए –:

। "बहती है अब देश–देश में , उग्रबाद की धारा ,लगता जैसे लगा दाँव पर है अस्तित्व हमारा ।।

नफरत से हर हृदय झुलसता देता हमें दिखाई , अरे उसी बढ़ती ज्वाला में जलती है तरूणाई।। "

।। अब किसी को भी न छोटे या बड़े का ध्यान है, अब बरातों में न बिल्कुल स्नेह या सम्मान है,

सब यहाँ मदिरा पिए निर्लज्जता से घूमते, नाचते फिरते सड़क पर लड़खड़ाते–झूमते,

लग रही बरात , जैसे मद्यपों की भीड़ हो, यूँ न इस पावन प्रथा को दुर्व्यसन का रूप दो। "

6 श्री शिवशंकर मिश्र की रचना 'अपने से या तुमसे पूँछू' में रौद्र रस अवलोकनीय है–

कहाँ पर चला जा रहा देश, उचित नहीं है दोष गिनाना,

अपनी जंघा खोल दिखाना, सब कुछ खुद ही दिखला देगा घर आँगन परिवेश।।

सब सबके ही आलेचक हैं, सब सबके पोषक, शोषक हैं,

सब सबको ही धर्म न्याय का देते है संदेश ।

जो निज को त्यागी बतलाते, क्षण भर भूल न निज हित पाते,

सहन नहीं कर पाते पलभर छोटा सा भी क्लेश ।।

अपने से या तुमसे पूछूँ प्रश्न एक ही शेष ।। " " अवशेष पुष्प " पृ0 111

7 श्री मती विद्यावती मिश्र की काव्य कृति ' भगवान राम 'में रौद्र रस दृष्टव्य है–

। नृपों का समवेत स्वर –

न्याय नहीं यह केवल छल है, हम देखेंगे किसमें बल है।।

जो सीता का वरण करेगा यों धोखे के हरण करेगा ।।

हम से लोहा लेना होगा अग्नि परीक्षा देना होगा ।।

बढ़ो आगे होकर तैयार। मरेंगे या डालेंगे मार ।।

।। लक्ष्मण – यों तो सदा बना रहता है, सेवक भाव हमारा ।

किन्तु युद्ध के लिए किसी ने यदि हमको ललकारा ।।

तो फिर क्षात्र धर्म के वश हम, वज्र रूप बन जाते ।

जो भी है जिस तरह निपटता उसको मजा चखाते है।

अन्यायी के आगे झुकना कोरी कायरता है, अस्त्र–शस्त्र से भय खा जाना भी अधर्मपरत है।

8 श्री बाबूलाल जैन ' जलज' की एक रचना प्राणदीप तुम जलते रहना' में रौद्र रस देखिए –

"असुरो ने उत्पात मचाया, नफरत का सागर लहराया ;

दाँयें बाँये डोल रही है, ईर्ष्या , द्वेष, दम्भ की छाया । X X X

फैला भ्रष्टाचारी कुहरा , द्वार–द्वार पर तम का पहरा ,

बीत गये कितने संवत्सर, भरा न घाव हृदय का गहरा।

कवि की एक अन्य रचना 'यह जीवन कैसा ' पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

पड़ा रहा जीवन घट रीता, हृदय किसी का कभी न जीता ; X X X

धर्म क्षेत्र में कर्मक्षेत्र में, झुठलायी रामायण गीता ।

आजीवन ही स्वार्थ साधना , परहित की जागी न कामना,

नहीं समझने दिया अहं ने कभी किसी की दिव्य भावना ।

धर्म कर्म का मर्म न जाना, जीवन पन्थ नहीं पहचाना ,

बुनता रहा व्यर्थ ही निशिदिन कुण्ठाओं का ताना बाना । "

9 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल की रचना 'असहमति' में रौद्र भाव दृष्टव्य है–

नहीं ! नहीं !! नहीं !!! अमान्य है विनिमय ।

असन्तुलित तुला , असंयमित आधार, निर्धारण का माध्यम असहय है।

फूलों को लोहे से, तोलना अन्याय है। पासंग की रीति भी एक छल, दम्भ है।

साम्यता विहीन सब, व्यापार झूठा है। "

ए 5 अन्य रचना में कवि ने ' सामर्थ्य हीनता ' शीर्षक से यही भाव वयक्त किये हैं–

"मैं हर वस्तु का मूल्याँकन कर सकता हूँ ।

किसी भी सीमा का भय नहीं मुझको । किन्तु अपने ही रूप का मुझे नहीं बोध है।

इसलिए सृष्टा पर , अतिशय मुझे कोध है। " "इन्दु एक बिन्दु दो " पृ0 20 , 10

5 वीर रस :–

आलोच्य काव्यों में वीर रस की अभिव्यक्ति भी हुई है। उदाहरण अवलोकनार्थ प्रस्तुत है–

1 श्रीमती विद्यावती मिश्र की रचना "उठो जवानो देरी का क्या काम है" में वीर रस दृष्टव्य है–

" एक इंच भी भूमि शत्रु पाये नहीं , एक कदम भी आगे बढ़ जाये नहीं ,

अपने हाथों में त्रिशूल लेकर खड़ा , भोले बम भोले शंकर का धाम है,

हिमगिरि टेर रहा लेकर नाम है। उठो जवानो देरी का क्या काम है।

सीने को दो अड़ा राह तुम रोक दो , दृष्टि उठाये इधर उसी को ठोकदो ,

एक शत्रुभी जब तक अपने देश में, तब तक कैसा चैन कहाँ विश्राम है "

"चीन को चुनौती " पृ0 90

कवयित्री की एक अन्य रचना में वीर रस देखिए–

सोच लेगा जग कि पौरूष में कमी है, यदि कहीं तूफान से भय मानलोगे ,

जो चरण आगे बढ़े वे रूक न पायें, लक्ष्य कैसे पा सकोगे ओ प्रवासी ,

पथ पथिक का भेद यदि तुम जान लोगे । यदि कहीं तूफान से भय मान लोगे । "

एक अन्य रचना 'देवता अब इन्सान बनो' में वीर रस देखिए–

तुमने नहीं सुना क्या पौरूष का बजता डंका ,

नहीं देखते सजी–साजयी रावण की लंका , राम अब क्या भ्रम क्या शका

सोमनाथ मत बनो पार्थ के अभ्युत्थान बनो ! देवता अब इंसान बनो !!

अधः पतन का जाल चुनौती देने आया है, भावों की झंझा ने पथ का दीप बुझाया है ,

मनुज भूला भरमाया है, सत्य,न्याय , समता, क्षमता के गौरव गान बनो ! देवता .....

कवयित्री की निम्न पंक्तियों में साहस के संचार की अभिव्यक्ति देखिए–

"निज लक्ष्य पथ पर के पथी हिम्मत नहीं हैं हारते – – –

चाहें चुभे हो शूल अथवा फूल उलझाये हुए

मन में सदा कर्त्तव्य के प्रति चिर सजग निष्ठा भरो । साहस करो साहस करो!!

सब रूप उस भगवान के अपना पराया कौन है

सम्भव जहाँ तक हो मनुज के ताप–शापों को हरो

2 डा0 हर गोविन्द सिंह की एक रचना उद्‌बोधन में उत्साह का स्थायीभाव दृष्टव्य है–

जमाना नया बनाएँगे , धरा पर सतयुग लाएँगे ।

ईश्वर की प्रिय सृष्टि अधिक नहीं अब दिन कुत्सित नहीं रहेगी

वसुन्धरा यह यह अधिक नहीं ाब अत्याचार सहेगी ;

दानवता का अट्‌टास हो चुका बहुत अब जागो , पृथ्वी पुत्रो, सावधान हो जाओ ,निद्रा त्यागो

हम सब मिलकर मानव में देवत्व जगाएँगे । धरा पर सतयुग लाएँगे।। "पुष्पांजलि " पृ0 51

3 श्री बाबूलाल जैन 'जलज'– की रचना "देवमानवों को उद्‌बोधन " में वीर रस की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है–

ऊँचा मस्तक चौड़ी छाती , फैलादी है बाँहें ।

देव मानवों उठो तुम्हीं पर, सबकी टिकी निगाहें।

शक्ति पुंज तुम करो सामना , बाधायें यदि आयें ।

देख तुम्हारे मन की दृढ़ता , पर्वत शीश झुकायें।

यह कुरीतियाँ रोक न सकतीं , कभी तुम्हारी राहें । देव मानवों उठो ..... X X X

नयी विचार कान्ति करके तुम ,मन की भ्रान्ति भगाओ ।

आत्म–त्याग पौरूष तप बल से, सोया भाग्य जगाओ ।

जति–पांति के ऊँच–नीच के , सारे बन्धन तोड़ो । रखो मनोबल अपना ऊँचा , विषधारा को मोड़ो

4 डा0 रामस्वरूप खरे :– की रचना "माँ की यही पुकार है " पंक्तियों में वीर रस देखिए –

आज चतुर्दिक छाया भीषण, तम का हाहाकार है।

बढ़ो हाथ मे ले मशाल तुम, माँ की ही पुकार है।।

अन्यायी बढ़ता आता है, पुण्य धरा को लूटने !

गोले देखो लगे वेग से धाँय–धाँय कर छूटने!!

भारत माँ की जय का नारा लगा गगन में फूटने!

सुन रन मेरी लगा शत्रु का साहस सहसा टूटने !!

हटना कभी न पीछे वीरो ! शपथ तुम्हें सौबार है!

क्योंकि तुम्हारे दृढ़ हाथों में नौका की पतवार है!! "नये युग का अभिनव निर्माण " पृ0 27

डा0 रामस्वरूप जी के खण्ड काव्य 'शतमन्यु ' की पंक्तियों में वीर रस अवलोकनीय है–

बढ़ा , कह तभी युवा शतमन्यु , यज्ञ होगा निश्चय ही भूप ।

आत्म–आहुति देकर मै आज–भरूँगा रिक्त सरोवर –कूप । X X X

मरी आगे बढ़ने की चाह , हृदय में है जिनके उत्साह ।

निकट आजाता लक्ष्य महान, बनाते वे जग में नव–राह ।। X X X

लगन हो दृढ़, यदि सच्ची राह, निकल सकता बालू से तेल ।

उगा सकते ऊसर में अन्न , और पाषाणों में मृदु बेल ।। "शतमन्यु " पृ0 20 , 29 , 37

डा0 रामस्वरूप की निम्न पंक्तियों में भी वीर रस की व्यंजना अनूठी है–

"खुला है सदा मुक्ति का द्वार –कटे जब पहले भाल विशाल ।

चाहता धर्म सदा बलिदान , कह रहे चुने भित्ति के लाल ।। " "शतमन्यु " पृ0 11

5 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल की एक रचना "जीवन लक्ष्य महान"में वीर रस की भावना देखिए –

ओ बाधाओ ! यह मत समझो मैं दुर्बल इन्सान ।

मेरे इस जर्जर तन में भी है चेतन भगवान ।।

मैने हार न अब तक मानी, मेरा साहस है अभिमानी ।

भीषण से भीषण चाटों को सहता शैल समान ।। ओ बाधओ !.... X X X

तुम चाहे कितनी भी आओ , आआकर के पंथ डिगाओ ।

चलने वाला कभी न रूकता जीवन पंथमहान । ओ बाधाओ । .....

"अखण्ड ज्योति " जनवरी 1960

6 श्री शिवशंकर मिश्र की एक रचना में वीर रस अवलोकनीय है–

आज युवा ने किया देश का आमंत्रण स्वीकार । बोलदो उसकी जय जय कार ।।

बनकर सूर्य चमकता नभ में –है जिसका उल्लास।

गति का सहचर बना हुआ है मौन आत्म विश्वास ।

स्वयं सिद्धि की सुरसरि लाया युग मरूथल के द्वार।। बोल दो उसकी जय जयकार ।

संघर्षो से भय न शूल से –हुआ न जो भयभीत ।

सरस सुमन भी बदल न पाए जिसकी राह पुनीत ।

सत्य कसौटी , कर्म प्रेरणा वह पौरूष साकार ।।

बोल दो उसकी जय जयकार।। "सुधियों की बरसात " पृ0 36

7 श्री वीरेश्वर उपाध्याय की कविता में वीर रस के भाव स्पष्ट हैं–

"शीश चढ़ाकर कभी सपूतों ने माटी का कर्ज चुकाया।

भेंट चढ़ा निज पति–पुत्रों की महिलाओं ने फर्ज निभाया ।।

आज मॉगता महाकाल बस समय तनिक सा प्रतिभाओं से ।

स्वार्थ घटा , परमार्थ साधना को जोड़ें निज क्षमताओं से ।।

समय और श्रम से रचनी है, नये सृजन की नई कहानी ।

देव भूमि की शपथ उठाकर आगे बढ़ो वीर बलिदानी

वीरभूमि की संतानों ! तुम कायर बन मत पीठ दिखाना ।।

रत्न प्रसूता माताओं ! तुम अरे कोख को नहीं लजाना ।।

परिवारों से एक व्यक्ति यदि सृजन वीर बन आ जायेगा ।

तो अपना गौरव इस जग में प्राण –प्रतिष्ठा पा जायेगा ।

भय मत करना साथ हमारे हैं रक्षक युग ऋषि वरदानी ।

देव भूमि की शपथ उठाकर ....." "कान्ति गीत " पृ0 30

8 श्री शचीन्द्र भटनागर की एक रचना में उमंग और उत्साह के भाव दृष्टव्य है–

। मॉ! हम है। संतान तुम्हारी, क्यों कपूत कहलाएँगे हम ?

कंधों का अब भार तुम्हारा, मिलकर सभी उठाएँगे हम । X X X

जिधर आप संकेत करेंगी, कदम बढ़ाते जाएँगे हम ,

आयेगा आलोक लिए जो उस कल का अनुमान बनेंगे,

सूख गई करूणा मानव की , हर मन रेगिस्तान बना है,

गंगा–सी धारा से अब तो , हर मरूथल सरसाएँगे हम ।

2. एक अन्य कविता में वीर रस दृष्टव्य है–

हमने पाई थाह आज मॉ! तेरे मन की पीर की ,

चले चदरिया ओढ़ वासंती , हम बलिदानी वीर की । X X X

पहना था यह वेश वासंती , जब रणवीर प्रताप ने,

छुड़ा दिए छक्के दुश्मन के फिर चेतक की टाप ने ,

इसी वेश में निकले विस्मिल , भगत सिंह , आजाद थे,

किए निछावर प्राण, न लेकिन मुख पर दुःख–अवसाद थे,

कड़ी बनेंगे हम भी, बलिदानों की उस जंजीर की । चले चदरिया औढ़ .....

"करिष्ये वचनं तव " पृ0 47 48

9 श्री मंगल विजय 'विजय' वर्गीय ' की एक रचना 'तरूणाई' में वीर रस दृष्टव्य है–

1. तरूणाई ने ली अँगड़ाई , विपदाओं की शामत आई ।

तूफानों ने भी रूख मोड़ा, आँधी ने इतराना छोड़ा ।

नजरें मिला न पाया कोई । तरूणाई ने नजर उठाई ।।

तरूणाई जब चली झूमते , अवरोधक भी चरण चूमते ।

धूल चाटने लगे शूल भू , तरूणाई की ठोकर खाई ।। X X X

संकल्पों की शक्ति आँकती , असफलताएँ बगल झाँकती ।।

प्रतिरोधी भी हुए समर्थक , प्रतिकारों की हुई विदाई ।।

फूल उठा धरती का सीना, नभ को भी आ गया पसीना ।

भारत मॉ आश्वस्त हुई अब घड़ अब उज्जल भाविष्य की आयी।।

एक अन्य कविता में "संकल्पित जवानी"में नौजवान भारत माँ की पीड़ा को हरने संकल्पित होते हैं –

2. "संकल्पित हो रही जवानी , माँ की पीड़ा हरने को ।

विखरी शक्ति संगठित करके, दुष्प्रवृत्ति से लड़ने को ।। X X X

दुनियाँ पर हावी होने का चढ़ा हुआ जुनून जिनको।

खून खराबा तक करने में , दर्द नहीं होता उनको ।।

मचल उठी है उन्हें जवानी पैरों तले मसलने को ।

संकल्पित हो रही जवानी ..... "जाग उठी तरूणाई " 20, 21

10 श्री बलराम सिंह परिहार की कविता ' विचार क्रान्ति का युग ! 'की पंक्तियों में कठिन चुनौती को सम्पन्न करने की उमंग देखिए –

"भूतल अम्बर में छा जाता जब आर्तनाद। युग का शंकर तबले त्रिशूल ताण्डव करता ।

जब बहुत विफल हो जाता धरती का विषाद। दुःख –दलित मनुजता ने पु ार की है फिर से तो तुम्हें तामिस्रा उसकी सब हरनी होगी । मानवी समयता के नूतन निर्माण हेतु-

नव युग की नई विचार –क्रान्ति करनी होगी ।। "

श्री परिहार की एक अन्य कविता में वीर रस दृष्टव्य है

करते हम संधान शरों का लो अब आप कमान सँभालो,

अपनी संस्कृति की सीता को निशाचरों से आज बचालो ।

नहीं रूके अब मरूत–वेग यह उठो गले से इसे लगालो,

लो कोई वरूणास्त्र हाथ में कोई आग्नेयास्त्र सँभालो

फूट पड़े हिमनद गहरे से ले ले सिन्धु उबाल ! क्रान्ति की जलने लगी मशाल ।।

11 श्री मती माया वर्मा की एक रचना "तुम्हें बुलाती" में वीर रस अवलोकनीय है–

"कर्मवीर फिर तुम्हें बुलाती राहै नव अभियान की।।

पहले भी रोई है ममता माता के अन्तस्तल की।

कितनी व्याकुलता पहले भी सागर के उर में झलकी

कई बार आकुलता प्रकटी है धरती के प्रान की ।। कर्मवीर फिर तुम्हें बुलाती .... X X X

और आज भी दुरितों से पीड़ित अन्तस्तल मॉ का।

पुत्र! सजाओ वीर वेष इस समय चुकाओ ऋण मॉ का।

दूर करो अज्ञान तिमिर यह, जले दीपिका ज्ञान की । कर्मवीर फिर तुम्हें बुलाती .....

6 भयाकन रस :–

आलोच्य कवियों ने अपनी रचनाओं में यत्र–तत्र शारीरिक या मानसिक हानि होने की सम्भावना से उत्पन्न होने वाली व्याकुलता की अभिव्यक्ति भी की है। उदाहरण अवलोकनीय है–

1 डा0 राम स्वरूप खरे के खण्ड काव्य 'शतमन्यु' की पंक्तियॉ देखिए –

"मर रहे थे वैसे असहाय–श्वानवत् नर –नारी दिन–रात ।
न था पर कोई प्रस्तुत आज –प्राण दे जो बातों ही बात ।।"
वरण कर पाते सभी न मरण, मृत्यु से होते सब भयभीत।
विहॅस जो देते प्राण परार्थ –वही सच्चे नर जग में, मीत ।। X X X
रहेगा क्या यह यज्ञ अपूर्ण , न देगा क्या कोई बलिदान ?
नहीं क्या कोई नर–वर शेष, धर्म–वेदी पर दे जो प्राण? "

2 डा0 हरगोविन्द सिंह की रचना'विचार क्रान्ति अभियान ' की पंक्तियों में व्याकुलता दृष्टव्य है–

जो भी हैं जागृत आत्माएँ– वे सब संघ–बद्ध हो जाएँ ,
जग में निज पौरूष दिखलाएँ , सज्जनता का मान बढ़ाएँ;
खोज रही व्याकुल मानवता कोई सबल सहारा।
नवयुग का निर्माण करेंगे–यह संकल्प हमारा ।।

डा0 सिंह के संगीत रूपक 'जटायु का बलिदान ' में व्याकुलता का भाव परिलक्षित है–

जटायु– अरे बन्धु ! यह कौन रो रहा है? शायद कोई अबला ।
फँसी कंसाई के चंगुल में कैसे निश्छल कपिला ।।
चलो झपट कर बेचारी को हम तत्काल छुड़ाएँ ,
अत्याचारी की ऑखों में तीखी चोच चुभाएँ ।।

3 श्री मती मायावर्मा की कविता "युद्धोत्सुक राष्ट्रों से " की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

"मनुज का मूल्य कुछ बारूद–बल में आँकने वालो।
तुम्हें व्याकुल , त्रसित, आक्रान्त मानवता बुलाती है।।
हृदय हो तुम–हृदय पर ये ज्वलित अंगार मत फैको।
मनुज हो तुम –मनुज की ही चिता पर हाथ मत सेंको।।
भरा है दर्द रग–रग में , कराहा भी नहीं जाता।
व्यथा यह मर्मभेदी ,क्यों नहीं तुमको हिलाती है
अभी है राख गर्म, हिरोशिमा के जख्म रिसते है ।
हमारे ही करूण चीत्कार हम पर आज हॅसते हैं ।।
सबक लेना पुरानी गल्तियों से –बुद्धिमानी है। हमें ठोकर ही आगे देखकर चलना सिखाती है ।"

4 बाबूलाल जैन 'जलज' की कविता "ढाई अक्षर पढ़ो प्रेम से " की पंक्तियॉ देखिए–

"अन्तर की पीड़ा बहती है जब , उमड़ उमड़ दृग –द्वार से ।
जीवन गीत मुखर हो उठते , निश्छल पावन प्यार से।। "
गहरी जाती जड़े ज्ञान की अनजाने पाताल में ।
शलभ–होम देता प्राणों का प्रेम दीप की ज्वाल में ।।

एक अन्य कविता"कण–कण में चेतन मुस्काता"की पंक्तियो में भय व व्याकुलता के भाव देखिए–

"जीवन जलता रहता क्षण–क्षण , अहंकार के अंगारों में,
द्वेष –दम्भ का ताना–बाना, बुनता रहता पतझारों में ।
हरा–भरा साधों का सावन वियावान जंगल बन जाता–
मानवता यदि बांह न गहती , गिरते को मिलता न सहारा।।
मन–मन्दिर में छाया रहता, दिन में ही भीषण अँधियारा। "

5 श्री लक्ष्मीनारायण 'कमलेश'की रचना "साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो " की पंक्तियॉ देखिए–

"क्यों प्रगति पथ में तुम्हारे हो रहा उत्पन्न भय ?
श्रम बिना ही चाहते हो क्या सफलता पर विजय ?
सोचते हो क्या ? गिने क्षण ही तुम्हारे पास है–
हाथ में आया हुआ क्यों ,खो रहे हो अब समय ?

6 श्रीशिवंशकर मिश्र की रचना "हम सब जिम्मेवार हैं"की पंक्तियों में भव व्याकुलता के भाव देखिए–

जो कुछ आज हो रहा उसके हम सब जिम्मेदार है।।
हिंसा अनाचार , व्यापक दुर्नीति हमी उपजा रहे,
आज नहीं हम तूफानों में गीत शान्ति के गा रहे ,
दोष किसे दें अपनी को ही देने को ही तैयार है। जो कुछ आज हो रहा
राम और रावण का लखकर युद्ध अगर भयभीत हम,
तो बतलाओं किस विधि से लंका पाएँगे जीत हम ,
पर न कमी हम मान सकेंगे हम बिल्कुल लाचार है।। जो कुछ आज हो रहा .....

"सुधियों की बरसात " पृ0 94

श्री मती विद्यावती मिश्र की काव्य कृति ' सेतुबन्ध ' में भय व आकुलता के भाव अवलोकनीय है–

लक्ष्मण – प्रभु के रहते संकट कैसे आ सकता है। जब सूरज है अंधकार छा सकता है।।
प्रभु की माया हम अबोध कुछ जान न पाते ।
इसीलिए हम बार–बार डरते अकुलाते ।। X X X
हैं प्रभु आप उदार इसे से वह निर्भय है,
भय उपजाये बिना भला कब मिलती जय है।

वानर– उस अशोक के वृक्ष तले अति दुखी पुनीता, काट रही पल–पल युग–युग सम माता सीता ।
उनकी चिंता बसी हुई हम सबके मन में, मर्यादा बस अमिट भक्ति श्री राम चरण में

8 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल की रचना "पथहारे मत कायर बन " में भयानक रस की अभिव्यन्ति देखिए–

दूखें यदि पग, मन हो डगमग , पर न सको बढ़ने वाले ।
फूलों तक कैसे पहॅचोगे , कॉटों से डरने वाले ।। होकर उन्मन , पथ हारे जन ।।

पथ में आयें बहु बाधायें, पर न झुको चलने वाले ।

मंजिल तक कैसे पहुँचोगे, ठोकर से डरने वाले ।। लेकर तड़पन, पथ हारे जन ।।

मन की आशा बने निराशा , पर न डरो बढ़ने वाले ।

सुख तक तुम कैसे पहुँचोगे , लघु दुख से डरने वाले ।। मत कायर बन पथहरे जन ।।

9 श्री यादराम शर्मा 'रजेश' की कविता "बढ़े चलो –बढ़े चलो "! में कराहती मनुष्यता की व्याकुलता देखें

"युगों –युगों गिरी हुई , डरी हुई, दबी हुई –घिसी हुई पिसी हुई मनुष्यता कराहती ।

युगों –युगों के रोग –शोक क्लेश–दंभ ढोंग से अधर्म के अनेक बन्धनों से मुक्ति चाहली !

तुम्हें उबारना इसे अभी सभी प्रकार है,

घिरा समस्त विश्व में अथाह अन्धकार है मशाल ज्ञान की लिये बढ़े चले !!"

10 श्री देवेन्द्र नाथ पाण्डेय शास्त्री की रचना "नश्वर प्राणी" में भव व चीत्कर के भाव दृष्टव्य है–

"हुए यहाँ अन्तर्हित कितने तुझ जैसे इन चार क्षणों में ।

अरे देख वह राख पड़ी है, तेरी ही तो धूलि कणों में।।

वे जो निज को नित्य समझकर बनावा गये बड़ी मीनारें।

उनके अरमां उन्हीं कंकड़ों मे अब करते है। चीत्कारें ।।

अरे देख हो या धराशायी उस गढ़ का आज कंगूरा ।

औ सुवर्णमय मुकुट सहित है वह कपाल भी चूरा–चूरा ।।

बचा–बचा ले चल नौका की लहरें उठती है तूफानी

अरे पता तो लगा कहॉ से इसमें बढ़ता आता पानी ।। X X X

आज चार नर कन्धे पर धर चले सत्यता सिखलाने को

श्वांस–हीन केवल मिट्टी से राम नाम के कहलाने को ।।

अरे रूप पर मरने वाले क्यों हो रहा आज मतवाला ?

क्या सुवर्ण सी है न सुन्दरी देख चितानल की यह ज्वाला ।।

लाल और नीलम से निर्मित अरे देख उद्धुम शिखाएं

चाह रही तेरा आलिंगन रूप गर्विता बनी चिताएं। "जीवन संगीत " पृ0 38

11 श्री लाखन सिंह भदौरिया ' सौमित्र' की कविता "है तुम्हारा ही भरोसा " में भय व आकुलता के भाव देखिए–

"पुत्र परिजन , मित्र सज्जन , स्वार्थरत , परिवार बन्धन ,

देखते सुनते न कुन्दन , डूबता , भव सिन्धु में मन,

चाहता तुमसे सहारा , हारते मन ने पुकारा,

है घने अवसाद घेरे , पास हो, भगवान ठहरे ।

है तुम्हारा ही भरोसा , है तुम्हीं में प्राण ठहरे।।

है न ज्ञान–विराग का बल, भागता मन सतत चंचल

काम, कोध, विमोह व छल , कर रहा है नृत्य खल–दल ,
अघ लपेटे मन विषयरत, सूझता कोई नहीं पथ,
इन्द्रियॉ खोले झरोखे, तोड़ती है ध्यान गहरे।
है तुम्हारा ही भरोसा, है तुम्हीं में प्राण ठहरे ।। "

12 श्री बलराम सिंह परिहार की कविता "पॉच प्यारों का बलिदान " में भयानक रस दृष्टव्य है–

"तभी एक तरूण कि जिसकी आयु होगी तीस, दयाराम कदम बढ़ा बोला कि लो यह शीश ,
गुरू उसे ले जा पृथक दी चला तलवार, वह चली तत्क्षण वहॉ पर एक शोणित धार
डर गये कुछ भाग गये कुद उन खड़ों में और, किन्तु आवश्यक अभी थे शीश कुछ सिरमौर
जब गुरू ने दी दुबारा फिर वहॉ आ बांग , धर्म दास खड़ा हुआ वह पूर्ण करने मॉग,
ले लिया गोविन्द सिंह ने शीश उसका दान, एक आकृति और होने को बढ़ी कुरबान ,
कहा उसने गुरू न होगी बलि–प्रथा यह बन्द , इस तरह अपना कटाया शीश मोहकम चन्द ।। "

13 श्री राम कुमार चंचल की पंक्तियों में भयानक रस देखिए –

"बुद्धि जीवियों पर गाज गिरेगी सब से पहले, कूटनीतिज्ञ अच्छी तरह जानते हैं ,
शस्त्र न साध पाये कोई इसलिए सबसे पहले शास्त्र को साधो ,
अभिव्यक्ति पर प्रतिबन्ध का कारण यही है । "

14 श्री मती सुमित्रा कुमारी सिन्हा की कविता "न टूटे मनोबल " में भय के भाव दृष्टव्य है–

मनोबल कहीं न जाये टूट ! भूत का छूट गया है छोर ,
कौन जाने भावी किस ओर । आज तो वर्तमान की लूट।
पूर्ण हो वरदानों की चाह , निरन्तर बहता काल–प्रवाह । न जीये जीवन का घट फूट।
एक को कर दो आज अनेक , व्यष्टि की हो समष्टि में टेक ! तार निष्ठा के रहे अटूट "

7 वीभत्स रस

आलोच्य कवियों द्वारा अपनी रचनाओं में आवश्यकतानुसार यत्र–तत्र घृणा उत्पन्न करने वाले दृश्यों , व्यक्तियों व वस्तुओं का वर्णन भी किया गया है। उदाहरण दृष्टव्य है–

1 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल की एक रचना 'सुदुर्जर' में वीभत्स रस की अभिव्यक्ति देखिए –

"क्षुधा पीड़ित गिद्धों का , घिराव है चहुँओर । लाशों पर बैठे हुए, करते है काक शोर ।।
कब्रों पर साया है, निर्मोही शाखों का, धारा में तिर रहे , काठवत् प्राणी ।।
कुटिल काल अतृप्त है, मूक हुई वाणी ।"

2 डा0 राम स्वरूप खरे की रचना " इसमें शक क्या ?" में वीभत्स रस देखिए

"देखा न जिसे उसकी चिन्ता , कैसा यह दीवानापन है।
जो प्राप्त , घृणा उससे , अप्राप्त को चाह रहा कैसा मन है ।।
लगता जो मन को प्रिय सुन्दर , सहसा वह छोड़ चला जाता ।
जिससे जग आशा करता वह ,अपना मुख मोड़ चला जाता ।। "
"नये युग का अभिनव निर्माण " पृ0 14

एक अन्य कविता में इसी रस का परिपाक हुआ है–

"पहले मुझे बता दो सच–सच विहँस –विहँस कर मरघट तक पहुँचाने , मुझको कौन चलेगा ?
रूप न होगा, मदिर नयन भी खुले न होंगे, सघन लटों से गौर–वदन –विधु घिरा न होगा ,
हास न होगा, अधर युगल भी खुले न होंगे, मृदुल कपोलों से, मेरामन गिरा न होगा ।।
प्राणों से भी अधिक समझ प्रिय , मुझ विदेह को –बना सुहागिन ,ले डोली में कौन चलेगा ?
आश न होगी इस धरती की बात न होगी , प्रतिमा तो होगी , पर उसमें श्वॉस न होगी ।
पॉश न होगी , बन्धन से भी मुक्ति न होगी, मिलन सुनिश्चित , किन्तु वासना वहाँ न होगी

"अर्चना " पृ0 13

3 श्री मती माया वर्मा की रचना "मानवता की रक्षा" में वीभत्स दृश्य उपस्थित हुआ है–

" ओ गरम युद्ध के दीवानो ! क्यों बौराये । फिर रहे मनुजता का नाम ही मिटाने को।।
हम देख चुके दो बार , प्रलय सा यह ताण्डव। प्रज्ञा निषेधती वही कथा दुहराने को ।।
मानवता को क्यों दफनकर रहे जीवित ही मनु भी बचेगा इसे पुनः विकसाने को ।।
होली, दीवाली सदियों तलक न आएंगी, होगा न कोई जब घर में दिया जलाने को ।। X X X
क्या विमल वायु को दूषित करके पाओगे, प्रभु भी न करेगा माफ–जहर फैलाने को ।।
मत खत्म करो मरियम, हौवा व यशोदा को, चाहिए कोई फिर भी तो लोरी गाने को।। X X X
क्या ऐसी सुन्दर सृष्टि पुनः रच सकते हो? फिर आमादा क्यों हो रस–रक्त बहाने को ।। "

(ii) श्री मती माया वर्मा की आधुनिक भौतिकता में आकंठ डूबे हुए विश्व को, युद्धकी विभीषिका से सावधान करने के लिए एक कविता है जिसमें वीभत्स रस देखिए–

"हृदय हो तुम, हृदय पर ये ज्वलित अंगार मत फेकों।
मनुज हो तुम , मनुज की ही चिता पर हाथ मत सेंको।।
भरा है दर्द , रग–रग में कराहा भी नहीं जाता ,
व्यथा यह मर्म भेदी क्यों नहीं तुमको हिलाती है।।
मनुज का मूल्य कुछ बारूद–बल मे आंकने वालो ..... (i) पृ० 34
"जीवन-सुरभि," पृ०88

4 वीरेश्वर उपाध्याय की कविता "समर्पण " में घृणा उत्पन्न करने वाले दृश्य देखें–

"प्रीति पावन कहीं खो गयी है, भाव संवेदना सो गयी है।X X X
बढ़ गया द्वेष सद्भाव है कम , आज इन्सान की ऑख है नम ।X X X
यह जगत भर गया कंटकों से, आज मानव घिरा संकटों सें।
स्वार्थ संकीर्णता की लहर है, लिप्त उसमें मनुज हर प्रहर है। "

"श्रद्धान्जलि गीत " पृ0 25

5 श्री शिवशंकर मिश्र की एक रचना "इस युग का यज्ञ " में घृणा उत्पन्न करने वाले दृश्य देखिए–

"युद्ध , दमन, शोषण की जग में जली हुई है ज्वाला,
बना हुआ प्रति राष्ट्र रक्त की आहुति देने वाला,
सृष्टि–तत्व को यदि तांडव का अभी न ज्ञान हुआ है,

व्यर्थ धर्म दर्शन संस्कृति का अनुसंधान हुआ है,
बहुत दूर है सत्य स्वयं जब शिव भय मान रहा है।
पर मेरा मनु शांति यज्ञ का दृटव्रत ठान रहा है। "

6 श्री भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य कृति "त्रिकाल संध्या " की पंक्तियों में घृणा के भाव देखिए

आज के बुद्धि जीवियों का कितना बड़ा हो गया है पेट ?
बड़े पेट का अर्थ है छोटा सा मुँह,
मक्खन चुपड़ी रोटी मुँह पर एक नही, कई –कई ताले लगाती है। "

7 श्री मती विद्यावती मिश्र की कविता "पापों का मूल" की पंक्तियों में वीभत्स रस देखिए–

क्रोध है सब पापों का मूल ! X X X
यही क्षण भर में करता द्वन्द्व , युद्ध संघर्ष और उत्पात,
उतर जाने पर इसका नशा, सभी कहते यह कैसी बात,
किन्तु इस बीच कई अनुकूल क्षुब्ध हो बन जाते प्रतिकूल ! क्रोध है सब पापों का मूल !!

कवयित्री की एक अन्य कविता "अमर–कान्ति " में वीभत्स रस अवलोकनीय है–

"दानवता है मुक्त औ पशुता ने है बल पाया
अनाचार है संयम , विषमता विश्व–मोहनी माया।
छल है साधन, लूट हॉ संयम , परबशता क्रम है
अट्टहास अनहद है, इसका सत्य स्वंय ही भ्रम है।
भूमि अस्थि बन चुकी, कफन बन करके अम्बर जागो,
राह देखता सर्वनाश जागो शिवशंकर जागो ।"

8 श्री बलराम सिंह परिहार की रचना "निष्ठा की सौगन्ध " में जुगुप्सा का स्थयीभाव दृष्टव्य है–

"भटके मानव के पाप ताप धोयेंगे हम,
दुखियों के दुःख सन्ताप शोक हर–हर , घर–घर X X X
कोसा है कितनी बार अभागी फूलों को, पर नहीं किसी ने उँगली टेक दिखाया पथ।
घावों पर छिड़का नमक हजारों ने बढ़–बढ़ , पर कोई आयुर्वेद न लाया सागर मथ
घुट–घुट , जल–जल तिल–तिल जीवन जीवेंगे–लँगड़े पाँवों की चल पग–पग, दर–दर , उतर
अम्बर से जयोतिर्वेद धरा पर लायेंगे । X X X
जो ही है वाट तुम्हारी साथी बहुत बार –हर बार दिया विश्वास रहे लेकिन पीछे ।
दिखला ढाले बस घाव खोल कर छाती के, पर रहे निरन्तर तुम अपनी ऑखें मीचे ।
यह घाव हाथ से ही सीचेंगे हम, जब तक शरीर में सॉस सहारे के खातिर । "

9 श्री याद राम शर्मा ' रजेश ' की "दधीचि का अस्थि–दान " में वीभत्स दृश्य अवलोकनीय है–

अस्थि–युग की बात है काफी पुरानी ..... X X X
शक्ति के अपने नशे में चूर था वह दस्यु , दानव हिंस–बर्बर क्रूर था वह ।

दुष्ट वृत्रासुर खुदी पर आ गया था, लोक पर आपत्ति बनकर छा गया था।

वह प्रजा पर खूब अत्याचार करता, सज्जनों को त्रास देता , बार करता ।

घूमता था सृष्टि का संहार करता, रक्त पीकर अस्थियों को प्यार करता ।

शान्ति–प्रिय, निर्बल जनों को भय दिखाता, हिंसकों को शक्ति देकर बल बढ़ाता ।

धर्म के अनुयायियों को लूटता था, पीड़ितों पर वज्र बनकर टूटता था ।

दूसरों की मौत बनकर जी रहा था , खून जनता का निरन्तर पी रहा था।

भूख , बीमारी, गरीबी ला रहा था, एक दानव भूमि सारी खा रहा था।

जो किसी का सर उठा तो वह कुचलता , राह चलते राहियों को मार चलता। X X X

बात बीती पर निशानी रहा गई , सीख देने को कहानी रह गई है। "

"हम उनकी जय गाये " पृ0 20

10 श्री झलकन लाल वर्मा 'छैल' की कविता "इन प्रश्नों के भी उत्तर दो " में घृणा उत्पन्न करने वाले दृश्य को देखकर मन में उत्पन्न मनोविकार देखिए–

"गगन गरजता , धरा कॉपती अश्रुसिक्त है दिग्वालाएँ ,

शुष्क सुधा के स्रोत , निरम्बर नाच रहीं है विषकन्याएँ।

कर्म क्षेत्र के बीच बह रही बल कर्मनासा की धारा,

अट्टाहास कर क्रूर नियति ने अपना इच्छित रूप निखारा ।।

कर्मठता हो गयी विवश हो आत्मघात की ओर अग्रसर ।। X X X

कुटिल बॉह पालित व्यालों ने विष से भरे विपुल फन पाये,

विष पीकर विश्वास मर गया जीवन के कण–कण थर्राये ।

बोलो तुम्हीं ! दीन मानवता किसे पुकारे ! किसे बुलाये ?

भुज–भुज उसे भुजंग बन गया किसके आलिंगन में जाये ।। "

"हम उनकी जय गायें" पृ0 107

12 डा0 हर गोविन्द सिंह की काव्य कृति "सद्विचार सतसई " में जुगुप्सा के भाव दृष्टव्य है–

अपनइँ मर साजौ लगत, जिहै न और सुहात, करिए का ई धरम कौ, रोजउँ मानुश खात।

घन , धरती औ धना पै, भइ जितनी तकरार , ओसें जादां धरम पै, बही रकत की धार ।।

म्लेच्छ असुर , काफिर , कहूँबेधरमा, किस्टान ,

साँचेउ खें मत भेद पै, मिलत एइ अभिधान ।

मालिक ने भैजो इतै, बना–बना इंसान,

खूँटन सें बँध–बँध, दिखौ, बने फिरत हैवान।

डा0 सिंह की एक अन्य चतुष्पदी में यही भाव देखिए–

दुष्टता सबको नचाये , क्या अरे औकात? पर शराफत ही दिये है, चूड़ियों को मात,

बाल बॉका कर न सकते बादलों के झुण्ड–सूर्य खुद डूबे , तभी होती यहॉ पर रात ।"

8 अद्भुत रस

आचार्य शर्मा के जीवनदर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों के काव्य में अद्भुत रस की भी सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। उदाहरणार्थ कुछ कवितांश प्रस्तुत है–

1 डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबालः–

डा0 ब्रजबाल की 'स्वाभाव्य' कविता की पंक्तियॉ अवलोकनीय है–

संवोगों की बाढ़, रूपहीन प्रेत । भावी नव मानव का, जीवन–संकेत ।
ऋतु–पद सिहरन में, उन्मत्त तार। रूप ही आकृति का , अद्भुत आकार । "

'इन्दु एक बिन्दु दो " पृ0 35

2 डा0 हरगोविन्द सिंह की एक चतुष्पदी ' पलायन–वृति ' में विस्मयकारी भाव देखिए –

"जब यहाँ जीवन –समर में प्राण–प्रण से हम लड़े
तब लिये डण्डा–कमण्डल , दूर कोसों तुम खड़े ,
विश्व को निस्सार कह, श्रम–सार उससे ले लिया ,
आग बस्ती में लगी , तुम मस्त मस्ती में पड़े।

3 डा0 राम स्वरूप खरे की कविता "आत्मदान की बेला " में विस्मय के भाव देखिए–

"खोली जबसे आँख मनुज ने कितने दीपे जलाये–
पर, तम ज्यों का त्यों धरती पर आज दिखाई देता ! X X X
सचमुच है यदि चाह , धरा से तिमिर दूर हो जाये !
घृणा–द्वोष का भी इस जग से उन्मूलन हो जाये !!
निश्चय ही तब विश्व–प्रेम के दीप जलाने होंगे 1
सहज भाव से दृढ़ साहस ले, गिरे उठाने होंगे !!"
लघु सीमायें तोड़ सभी अति व्यापक बनना होगा !
जिनने मन को जीत लिया है, सच्चावही विजेता ।। पर तम ज्यों का त्यों .....

'हम उनकी जय गायें " पृ0 126

डा0 स्वरूप के खण्ड काव्य 'शतमन्यु' की निम्न पंक्तियों में भी अद्भुत रस अवलोकनीय है–

"लगन हो दृढ़ , यदि सच्ची चाह, निकल सकता बालू से तेल ।
उगा सकते ऊसर में अन्न , और पाषणों में मृदु बेल ।।
चला सकते हम छाती चीर, सिन्धु के ऊपर भी जलयान ।
सूर्य बन हम कर सकते सतत ,सदा के लिए तिमिर अवसान ।। "

4 श्री शिवशंकर मिश्र की कविता "यह कैसा युग है " में अद्भुत रस देखिए–

"कैसा युग है ? जिसमें कोई भले बुरे का भेद नहीं है,
कैसा युग है ? नरको अपने महापतन पर खेद नहीं है।
कैसा युग है ? दानव पहने हुए आज मानव के कपड़े ,

कैसा युग है ? वैभव अपने हाथों में ईश्वर को पकड़े ,X X X

कैसा युग है ? जबकि व्यंग–सी लगती है विवेक की बाते,

कैसा युग है ? जब प्रभात–सी लगती हैं घन–शायी रातें,

कैसा युग है ? दूर–दूर तक व्यापक है मानव की क्रीड़ा ,

कैसा युग है ? जब अपने तकसीमित है प्रति जन की पीड़ा

चारों दिशा निनादित करतीं मौन श्वास, यह कैसा युग है ?

छाया–सा निस्पंद हृदय का, अट्टहास यह कैसा युग है ?

5 श्री मती माया वर्मा की कविता "काल पुरूष के सहचर बनो " की पंक्तियॉ देखिए–

"शशि एक चला तम हरने को, तो चले सहस्र तारागण

बोले–'न अधिक, थोड़ा साही , हम भी अँधियार मिटाएँगे । X X X

" है अभी अभी की बात–चली स्वातंत्र्य कान्ति की वह आँधी ।

था सूत्रधार वह दिव्यात्मा लेकिन तन से दुर्बल गांधी ।।

सुन उसकी एक पुकार घरों से लाखों व्यक्ति निकल आये–

बोले–'ये प्राण रहें–न रहें' –भारत स्वतंत्र करवायेंगे ।।"

है आज सामने फिर आई वैसी ही महती आवश्यकता बलिकी ।

स्थपित करना सव् प्रवृत्ति, है दशा बदलनी अब कलि की ।।

'युग बदलेंगे यह शपथ ग्रहण करके साथी! हम आज चले–

सुख सुविधायें क्या हैं ? कण्टक पथ विहँस आज अपनायेंगे ।

6 श्री प्रेमनारायण शर्मा (कानूनगो) की कविता "नश्वर संसार " की पंक्तियों में अद्भुत रस दृष्टव्य है–

"जीर्ण शीर्ण पत्तों से निर्मित यह नश्वर संसार,

मृत्यु और जीवन इसके आने जाने के द्वार ।

बड़े बड़े विद्वान , शूर , सामन्त, गुणी , धनवान,

हाथ पसारे चले गये सब , छोड़ साज सामान ।। X X X

जिन महलों में कल तक पुजती थी वैभव की रानी,

आज गूँजती उन्हीं खण्डरों में उलूक की बानी ।

जिन प्रासादों में था कल तक धन का, बल का डेरा,

आज वहॉ कौए चमगादड़ करते रैन बसेरा।।

चलती चक्की में आकर पिसते जाते हैं दाने,

फिर क्यों लगा अभागा मानव , इस पर भी इतराने ।

पानी भरी खाल जिसमें सांसों का ताना बाना,

कौन ठिकाना इसका वन्दे, आज रहे कल जाना ।।" 'जीवन संगीत ' पृ0 40

7 श्री बलराम सिंह परिहार की कविता "धर्मं शरणं गच्छामि " में विस्मय कारी भाव दृष्टव्य हैं–

"चन्द्रिका सदृश उज्जवल आनन पर खिलता था –उन्मुक्त हास।
जब लौघ्र पुरूष का अंगराग फैलाता था मादक सुवास ।। X X X
थी नृप अजात रिपु की बाँहों की हार और श्रृंगार कभी ।
थी मगध राज की नौका की बनने वाली पतवार कभी।।
जिसकी अपलक आँखें प्रतिदिन खोजा करतीं थीं मुक्त प्यार ।
जाने क्यों बैठी आज वही वैभव विलास की सुध बिसार ।। X X X
शाश्वत सुन्दरता के खातिर अपना सौन्दर्य घुना डाला ।
दुखियों की सेवा में लगकर तन का अनुराग जला डाला ।।
जब तक था मोह लोक यश से , धन से तब तक वह रही दीन ।
पर आत्म ज्ञान की उठी लहर हो गई ज्योति में ज्योति लीन ।। "

8 श्री मती विद्यावती मिश्र की कविता "निवेदिता की गुरूदीक्षा" से अद्भुत रस अवलोकनीय है–

"किया निवेदन निवेदिताने ,धन्य आपको पाकर ।
हुई , हो गया जीवन सार्थक भरत –भूमि में आकर ।।
गुरूबोले 'हे देवि, जन्म–भू सबसे ज्यादा पावन।
सबसे पुण्य कर्म उसका ही है पूजन आराधन।।
उसे छोड़ना उचित नहीं है मेरा कहना मानो।
जन्म –भूमि वापस जाने का निश्चय मन में ठानो।।
भगिनी कुछ क्षण मौन रही नयनों में जल–कण आये ।
वाणी के भी पूर्व जिन्होंने अपने भाव बताये।।
बोली "पृथ्वी मेरी जननी , जनक नीला अम्बर है।
भौगोलिक सीमा में बन्दी रहा न मेरा घर है।।
जहॉ कहीं राम गया हृदय , मैंने आवास बनाया।
काया के पहले ही मेरा अन्तस भारत आया ।। "

9 श्री बाबूलाल जैन 'जलज' की कविता " कालजयी वह बन जाता " में विस्मयकारी भावों की सृष्टि देखिए –

"कुंठा भय संत्रास छोड़कर , गीत सृजन के जो गाता ।
विश्वासों के पंख बाँधकर सात समुद्र लाँघ जाता ।।
मानव बनकर मानवता की , जो शाश्वत प्रतिमा गढ़ता ।
श्रद्धा सुमन प्रेम से सादर , देवों के सिर पर चढ़ता ।।
जिसकी सिद्धि साधना तप से, मानव परम शान्ति पाता ।
संकल्पों से कभी न डिगता , कालजयी वह बन जाता।।"

10 श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' की रचना "सत्संग का प्रभाव " में अद्भुत रस देखिए–

"मोहन ने बाल पन में हरिश्चंद्र खेल देखा, बस खिच गई हृदय में सत की अटूट रेखा।।

गॉधी बने महात्मा था सत्य को न छोड़ा, सत्याग्रही बने वे अनुगामियों को मोड़ा।।

नाटक को देखकर ही जीवन बदल लिया है। सत्संग ने कई का जीवन बदल दिया है।। "

कवि की एक अन्य रचना "सद्गुरू नानकदेव " में असाधारण व्यक्ति के प्रति विस्मयकारी भाव देखिए–

नर–तन से नारायण पाए, सद्गुरू नानक देव ने ।।

कृति से सत के पाठ पढ़ाए, सद्गुरू नानक देव ने।।

'सतनाम' की फेरी माला , और पाप पर ताना भाला ।

'सतनाम' में लगन लगाई , चढ़ी रही दिन–रात खुमारी ।

अमृत जैसे 'शबद' चखाए, सद्गुरू नानक देव ने।।। "वन्दना के बोल " पृ0 19

11 शचीन्द्र भटनागर की एक रचना में आचार्य शर्मा के असाधारण व्यक्तित्व में अद्भुत रस अवलोकनीय है–

"पथ भूले मानव को तुममें आशा का दिनमान मिला,

जिसने देखा तुम्हें , लगा बस मानव में भगवान मिला। X X X

बँटी हुई थी मानवता अनगिन ऊँची दीवारों में,

क्षुद्र अहंता और स्वार्थ के पैने प्रबल प्रहारों में,

उसको संवेदना–सूत्र से बॉधा , ऐसा प्यार दिया ,

अपने पन से भरा जगत को 'गायत्री परिवार' दिया,

संयम , सेवा , सहिष्णुता का हर घर को अनुदान मिला। जिसने देखा तुम्हें .....

जो कुछ कहा, स्वयंपर पहलेकरके सिद्ध दिखाया था,

स्वंय चले थे तुम उस पथ पर, जो पथ हमें सुझाया था ,

सद्गृहस्थ थे, संत–तपस्वी थे, सच्चे सेनानी थे,

युग–युग तक जो याद रहेगी , ऐसा अमर कहानी थे,

तुममें जीवन के मूल्यों का, जग को अटल प्रमाण मिला । जिसने देखा तुम्हें .....

12 डा0 सरोज बाला चौधरी की रचना "और दीपक से दीपक जलाते रहें " अद्भुत रस देखिए –

"विश्व सोया रहा गुरू जगाते रहे, जग की पीड़ा में खुद को डुबाते रहे ।

दीप ऐसा जलाया कि जलता रहे, और दीपक से दीपक जलाते रहे ।। X X X

थकते कदमों का बनकर सहारा कभी, चाह बढ़ने की देकर बढ़ाया कभी।

जिए औरों की खातिर थके न कभी , वे झुके भी नहीं मुस्कराते रहे ।। और दीपक से

बातें ऐसी कहीं जग सँभल जाएगा रात ढल जाएगी दिन निकल आएगा ।

नेक बनने की छोटी–सी एक बात के, युग बदलने की बातें बताते रहे ।।

और दीपक से दीपक ..... "यु0 नि0 यो0" जुलाई 2000 में प्रकाशित

13 डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया की कविता "राग–द्वेष सब अरे ! मिटा दे! " में अद्भुत रस का सामंजस्य देखिए –

"जाति –धर्म –भाषा–विवाद ने, हमको वर्गों में बॉटा ।

आरक्षण के टुकड़े देकर भाई को भाई से काटा ।।

क्षेत्रवाद के घातक विष को, आओ! मिलकर घता बता दें । X X X

धर्म–कर्म का तुमुल घोष है, किन्तु कर्म है कितने नीचे ।

संस्कृति केवल नृत्य बन गई , पाखण्डों के स्वर है ऊँचे

सन्यासी ए. सी. में रहते ! आडम्बर को आग लगादें

जितने कलुषित भाव हृदय के, मिलकर उनकी चिता जलादें ।।"

"यु0 नि0 यो0" अक्टूबर 1998

14 श्री वीरेश्वर उपाध्याय की कविता "युग पुरूष वन्दना " में अद्भुत रस दृष्टव्य है–

"कलि के प्रपंचों से उपेक्षित तिरस्कृत थी हो गयी ।

जिसके प्रयासों से पुनः वह माँ प्रतिष्ठा पा गयी ।

कलि कलुष से विकृत उपेक्षित तिरस्कृत वह था हुआ।

उस यज्ञ को नव रूप जिसने प्रखर तप से दि दिया ।।

उस महा प्रज्ञावान को–युग पुरूष जो है ज्ञानधन।

युग साधकों का देव संस्कृति सहित नित शतशत नमन।।"

"प्रज्ञा अभियान" सित0 1982

15 श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' के एक मुक्तक में अद्भुत रस दृष्टव्य है

"कह रहा स्वर–दीप मेरा, मैं ऋचाओं में जला हूँ।

भागते तमके पड़ी पीछे किरण का फासला हूँ।

शब्द वेधी , वाण लेकर युद्ध आया है तो आये–

वाण वेधी अंगिरा की मैं गिरा लेकर चला हूँ।"

श्री सौमित्र की एक अन्य रचना "जीवन –ज्योति–प्रदाता " में अद्भुत रस देखिए –

"तप के धनी , ज्ञान के सागर, चिन्तन के उद्गाता ।

युग दृष्टा , युग सृष्टा , प्रेरक , जीवन–ज्योति–प्रदाता ।। X X X

संस्कृति –सीता , शक्ति ,–सभीता को अब मुक्ति दिलाने ,

लिये अखण्ड–ज्योति –सा जीवन, युग का तिमिर मिटाने ।।

चले जा रहे देव , लक्ष्य की सीमाओं से आगे,

सोये नहीं एक पल को भी , नीद जीतकर जागे ।।

चिन्तन चरण वहॉ जा पहुँचे , जहॉ न कोई साथी,

साथी बनी राह में छायी केवल गहन निशा थी।।

धर्म–साधना अर्पित जीवन , साधक , सृजक विधाता । तपके धनी, ज्ञान के सागर ..... X X X

भव्य भारती भरे भाव से पुलक'–पुलक बलि जाये,

तप की गाथा प्रलय काल तक स्वयं शारदा गाये।। "

16 श्री जितेन्द्र रघुवंशी की रचना "समर्पण " की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं –

"पुष्प चढ़ें चरणों में उसके ,मोड़ी जिसने युग धारा ,

यह मानव है इस जगती का , परिवर्तक , प्रेरक न्यारा ।। X X X

बैठा नहीं एक क्षण भी जो , व्यवधानों से टकराया ,

आसूँ पोंछे जाने कितने , जीवन है सफल बनाया।

अर्जित तपकी सारी पूँजी, लगा सभी को है तारा। यह मानव है इस जगती का .....

9 शान्त रस :–

आलोच्य काव्यों में शान्त रस की भी सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। उदाहरण अवलोकनार्थ प्रस्तुत किए जा रहे है–

1 श्री मती माया वर्मा की कविता "शशि और सिन्धु का संवाद" में शान्त रस देखिए –

"पहचानो अपनी शक्ति–पूर्णता के स्वरूप–तुम दिव्य तेज के स्रोत शक्ति के भंडारी ।

तप त्याग सत्य शिव सुन्दर का लेकर सम्बल–मेटो , मेटो अज्ञान तिमिर की अँधियारी ।। "

कवयित्री की एक अन्य रचना "आशा" मेंशान्त रस अवलोकनीय है–

"लगता है अच्छे दिन आएँगे फिर इसी जहान के ।

सुखी बनेगा हर मानव जन–जन को अपना मान के ।। X X X

फिर न रहेगा भेदभाव–अपने पन, धन या मन का।

एक ताल में स्वर होगा सब के ही जीवन गान का।।

सेवा, सहचरत्व होंगे आधार जान पहचान के। X X X

अश्वमेघ आयोजन भी इस दिशि का एक पड़ाव है,

दुष्प्रवृत्ति से सत की ओर मोड़ना मन का भाव है।।

विनय बढेगी और ढाये जायेंगे गढ़ अभिमान के। लगता है अच्छे दिन .....

2 डा0 राम स्वरूप खरे की कविता " नई बीन नया स्वर " में शान्त रस देखिए –

नयी वीन पर तुम नया राग छेड़ो– नया स्वर रवानी अमर माँगती है।

अगर साथ मिलकर चले तुम परस्पर अनोखी लगन से सफलता मिलेगी ।

प्रगति गंग धारा उतर कर स्वयं ही , विहँस स्वर्ग से आ ,धरा पर बहेगी ।

नयी चेतना की भरो माँग श्रम से– नयी प्रेरणा नव सृजन माँगती है। "

(ii) कवि की निम्न पंक्तियॉ में भी शान्त रस की अनूठी व्यजना दृष्टव्य है–

"अहर्निश तेरा ध्यान करूँ।"

करूणा सिंधु कृपालु सर्वमय , तेरे चरण परूँ।।

मधुर मृदुल वंशी ध्वनि सुन–सुन तेरे संग विचरूँ।

जीवन नौका तुम्हें सोंपदी, मैं क्यो आज डरूँ।। "अर्चना " पृ0 6

3 डा0 त्रिलोकी नाथ 'ब्रजबाल ' की निम्न पंक्तियों में आशावादी स्वर प्रति ध्वनित होते है जिससे मन विकार मुक्त होकर शान्ति का अनुभव करता है। कवि कहता है–

"यह अमिट विश्वास मुझको –दूर मंजिल है नहीं अब।

सोच लूँ पथ शेष कितना, है नहीं अवकाश इतना,

हर कदम पर घट रहा पथ, राह मुश्किल है नहीं अब।

कवि भी एक अन्य रचना में शान्त रस की सुन्दर अभिव्यक्ति देखिए–

आओ हम तुम मन बहलालें! X X X

छोड़ो , यह दुख–सुख की चिन्ता ! आओ मिलकर हँसलें गालें ! X X X

अपने मन की जलन–पीर सब, आओ मन में स्वयं छिपा लें ! X X X

बोझ बढ़ रहा जो प्राणों पर आओ, उसका भार घट लें X X X

अपना है क्या अस्थिर जग में ? हम है राही चलते मग में !

यदि इस पथ बाधा ही , तो आओ , पथ फिर नय बना लें ! "

"मीत मेरे गीत तेरे " पृ0 24

4 श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' की कविता में शान्त रस उद्वेलित है–

"सारे जग का मल घुल जाये, तुम इतने निर्मल बन जाओ ।

कन–कन का जीवन मुस्काये उँमगों गंगाजल बन जाओ।

पावनता उर की उढ़ेल दो, व्यवहारों को मिले विमलता,

तुम अपनी सौम्यता घोल दो, जीवन –भी पा जाय तरलता,

सकल कुटिलतायें गल जायें इतने प्राण सरस बन जाओ।। X X X

देह सकल निःशेष बना दो , याचकता ,दानी बन जाये।

आत्मा की चिर तृप्ति लुटा दो, प्यास स्वयं पानी बन जाये।

सरसता का रस बरसादो , अमृत के बादल बन जाओ ।

सारे जग का मल घुल जाये ..... "अभिवन्दना " पृ0 22 , 23

।। श्री सौमित्र की एक अन्य कविता "निश्चय सत्य सूर्य निकलेगा " में निर्वेद का भाव अवलोकनीय है– "निश्चय सत्य सूर्य निकलेगा , भ्रान्ति तमिस्रा चीर एक दिन ! X X X

तेज ताप से पानी होंगे, मानी घन बे पीर एक दिन।

प्रज्ञा चक्षु निपट अन्धेरी , सदा नहीं माने जायेंगे ।।

मोती का मूल्यॉकन होगा , घोंघे पहचाने जायेंगे।।

नीर क्षीर का भेद करेंगे, न्यायी हंस सुधीर एक दिन। X X X

संस्रति –समर विजेताओं की उभरेगी तस्वीर एक दिन X X X

साधक की साधना सुरभि है बनती मलय समीर एक दिन।

निश्चय सत्य सूर्य निकलेगा ..... "हम उनकी जय गयें " पृ0 98

श्री राम कुमार भारतीय की रचना "नए इन्सान का नए युग का नया निर्माण अब होगा " में शान्त रस की अनुठी व्यंजना दृष्टव्य है–

"बुझेगी आग हिंसा की सलोने स्नेह के जल से,

दनुज मन रह न पायेगा अधिक संसार में छल से ।

उखड़ कर ही रहेंगे पेर बर्बट सभ्यता के अब, निकल कर ही रहेगा आदमी खूँखार दल दल से ।

सितारे व्योम मण्डल के बनेंगे आचरण भूपर –नये संसार का शासक , नया इन्सान तब होगा।

मिटेंगे ताप अब सारे मनुज के प्रेम के द्वारा , बहेगी एकता की अब धार पर एक नव धारा।

मनुज जब राह पर इन्सानियत की पग बढ़ा देगा ,

झुका देगा उसे मस्तक तभी संसार यह सारा ।

नया विश्वास जीवन में नया उल्लास लायेगा

जगत में शान्ति का हर कण्ठ से जयगान अब होगा ।

नहीं दिन दूर है अब वह , मनुज भगवान जब होगा,

नये इन्सान का , युग का , नया निर्माण अब होगा ।।

8 श्री मती विद्यावती मिश्र की रचना "पापों का मूल " में शान्त रस देखिए–

"शान्त रहकर सह लेना कोध , कोध का है सच्चा उपचार ,

आग से आग न होती शान्त, शान्त करती हे जल की धार ,

कोध का अवगुण यदि अवशेष और सबगुण हो जाते धूल!

कोध है सब पापों का मूल !!

कवयित्री की एक रचना 'अमर–कान्ति ' में निर्वेद का भाव दृष्टव्य है –

"शोषण का हो अन्त विश्व शोषित के स्वर में बोले,

'निर्बल की जय " सत्ता का शाश्वत सिंहासन डोले ।

परा प्रकृति के उपहारों के सब समान अधिकरी,

नहीं किसी तक सीमित भू की अचल सम्पदा सारी ।

जीवन बनकर फूट पढ़ो , नवयुग के निर्झर जागो;

राह देखता सर्वनाश, जागो शिवशंकर जागो । "युग सन्देश " पृ0 23

9 श्री बलराम सिंह परिहार की कविता "उद्‌बोधन " में शान्त रस देखिए–

"व्रत धारी , साधना–निष्ठ हों सभी राष्ट्र के लोग ।

सुख–सम्पत्ति का न्याय भाव के साथ करें उपभोग ।।

विद्यावान गुणी सुशील संभ्रान्त बनें बस साथ।

शक्ति–शौर्य से रहे अलंकृत उन्नत अपना माथ।।
करके फिर साकार दिखादे ऋषियों की अभिव्यक्ति
एक हाथ में दीप हमारे हर एक हाथ में शक्ति।। "

"हम उनकी जय गायें " पृ0 30

10 श्री बाबूलाल जैन 'जलज ' की कविता "टूटे पुल जोड़ेंगे श्रम से " में शान्त रस देखिए–

टूटे पुल जोड़ेंगे श्रम से , दिल जोड़ेगें प्रेम से।
नव युग का निर्माण करेंगे, त्याग तपस्या नेम से ।। X X X
आज जगाना है अन्तर में महाशक्ति श्री राम की ।
पूजा करना है मन्दिर में सदाचार सतकाम की।।
शाश्वत मूल्य मान्यताओं से, जीवित मूर्ति बनायेंगे।
भूली भटकी मानवता को, फिरे से गले लगायेंगे ।।
जीवन की उलझी गुत्थी , को प्रेम–शन्ति से सुलझायेंगे ।
त्याग तपस्या के मन्दिर में , श्रद्धा सुमन चढ़ायेंगे ।।
उजड़े बागों को भरना है, सुरभित प्रेम पराग से।
नव जीवन प्रज्वलित करना है है शान्ति क्रान्ति की आग से ।।

"उद्‌बोधन " पृ0 74 –75

11 डा0 हरगोविन्द सिंह के निम्न मुक्तकों में निर्वेद का भाव दृष्टव्य है–

विश्वास की निधि –:

पद नहीं ,पैसा नहीं, बँगले न अपने पास , रात मे तिनके बिछाकर ओढ़ते आकाश ;
किन्तु सीने से लगाये आप सबकी देन–इस अनास्था की घड़ी में मिल गया विश्वास ।।"

सत्य की शोध –:

ग्रन्थ हो या पन्थ अथवा मान्य कोई व्यक्ति, आप मत रखिए किसी पर अंध श्रद्धा–भक्ति ;
जाँचिए हर तथ्य लेकिन, नम्र हो सविवेक , सत्य के दर्शन कराती शोध की अनुरक्ति । "

डा0 सिंह के एक गीत "ज्योति जले " में निर्वेद का स्वर मुखरित है–

घर–घर में निराली ज्योति जले ।
जन–मन के कल्मष धो डालें, स्वार्थ नहीं परमार्थ, संभालें;
हो नन्दनवन की हरियाली, वन की हरियाली, गगन तले। घर–घर में निराली .....
माने सब जप–तप की गरिमा, जानें सब उस प्रभु की महिमा;
बन जिसकी बगिया के माली , बगिया के माली, हम निकले। " घर–घर में निराली 12

श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' की रचना "युग साधना " में शान्त रस देखिए–

"साधना सभी करें मिलकर, सुप्त देवत्व जगाने को।
भाव संवेदन छलकाएँ , धरा को स्वर्ग बनाने को।।

श्रेय ले लें , जो भी ले सकें , सृष्टि के नूतन –सर्जन का।

कर चुका पृष्ठ भूमि तैयार 'स्वर्ग' की युग का विश्वामित्र ।

देव संस्कृति ने खीच दिया 'विश्व बन्धुत्व भाव' का चित्र ।

साधको! मंगल–मंत्र पढ़ो ! उज्जवल–भविष्य ' आवाहन का ।।

समय है दिव्य जागरण का, समय है स्वर्ग अवतरण का।। "वन्दना के बोल " पृ0 79

13 श्री शचीन्द्र भटनागर के अध्यात्म–चिंतन में शान्त रस की अनूठी व्यंजना देखिए–

"राम नाम का अर्थ यही है, काम करें श्री राम का,

रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह और शाम का, काम करें श्री राम का । X

हो न जरा अभिमान हृदय मे, सरल–मधुर व्यवहार हो,

जन–जन में विश्वास जगाएँ , जन–जन के प्रति प्यार हो, X X X

जन–मंगल के लिए समर्पित हो मन में सद्भाव हो ,

छल–छद्मों से दूर रहें हम बिल्कुल नहीं दुराव हो ,

सबकी सेवा करें, समी को रूप समझकर राम का X X X

ऐसे बोएँ बीज कि जिनसे उगे फसल फिर आम की,

चर्चा हो कोने–कोने में सदा हमारे काम की,"

हो हिसाब सब साथ हमारा, निशि दिन आठों याम का।

रात न देखें , दिवस न देखें .....

।। श्री भटनागर के एक मुक्तक में भी शान्त रस देखिए–

अब नहीं आलस्य की होगी कहीं परछाईयाँ , अब अनय–अन्याय की होगी न गहरी खाइयाँ

हर हृदय में स्नेह–करूणा की बहेगी धार अब, हर तरफ होगी यहाँ शीतल घनी अमराइयाँ

14 श्री शिवशंकर मिश्र की रचना "पतित–पावन " में शान्त रस दृष्टव्य है–

"प्रभु तुम युग–युग से पतितों को पावन करते आये,

दीन–दलित असहाय–अनाथों के दुःख सभी मिटाये,

खड़ा हुआ मैं बहुत देर से द्वार तुम्हारे स्वामी,

मेरे मन की बात समझ लो हे प्रभु अन्तर्यामी । X X X

आदि , अनन्त अगोचर प्रभु को नमस्कार है मेरा,

सत्यंशिवं , सुन्दरं प्रभु को नमस्कार है मेरा,

चरम, सच्चिदानन्द अगम को नमस्कार है मेरा,

बहुत कठिन पर बहुत सुगम को नमस्कार है मेरा,

नमस्कार उसको जो मुझ में छिपा न मैं पहचाना।

अब तो प्रभु पहचान गया हूँ होगा कौन बहाना।। " "उद्‌बोधन " पृ0 87

15 श्री वीरेश्वर उपाध्याय की कविता "साधक की चाह " में शान्त रस दृष्टव्य है–

"इन्द्रिय सुख सौन्दर्य न चाहूँ , नहीं चाहिए सुविधा धाम।
तुमसे उपजे हैं यह सब, तुम्हें चाह कर रहूँ आकाम।
क्यों भटकूँ मैं इस माया में, तेरी राह चलूँ भगवान।। X X X
प्रभु पद कमलों का रस पाकर , देव राज का पद बेकार ।
स्वर्ग और अपवर्ग न चाहूँ, है पभु चरणों का आधार ।
ऐसा रस संचरित करो प्रभु ! बह जाये सारा अज्ञान।।
हुआ समर्पण मिटी चाह सब , अब दो प्रभु ऐसा वरदान ।। "

"अखण्ड ज्योति " नवम्बर 1996

श्री मती सुमित्रा कुमारी सिन्हा की कविताओं में शान्त रस दृष्टव्य है–

। निशा ढली चलो उठो! नया प्रभात आ रहा, युगों का अन्धकारमय निशा का दुर्ग ढह रहा।
नवीन चेतना–समीर–सिंधु स्वस्थ बह रहा, उषा चली है आ रही प्रकाश को संवारती।
नवीन सभ्यता की अ ज आरती उतारती। नवीन सभ्यता का लाल सूर्य जगमगा रहा।
निशा ढली चलो .... X X X
श्रम के देवता की अ ज हो रही है वन्दना, मनुज नवीन सृष्टि की है भित्तियाँ रहा बना।
मनुष्यता मनुष्य को है प्यार फिर सिखा रही, है जिन्दगी को जिन्दगी गले से फिर लगा रही।
युगों का त्रस्त फिर सृजन–प्रभातियाँ है गा रहा। निशा ढली .....

10 वत्सल रस –:

1 श्री शचीन्द्र भटनागर के मुक्तकों में सन्तान के प्रति स्नेह का भाव दृष्टव्य है

। "कहीं तुम विघ्न–बाधा में जरा भी लड़खड़ाओगे,
हमारा आसरा देता, वहीं आभास पाओगे ,
जरा सा भी तुम्हारा मन कहीं कमजोर जब होगा ,
हमारी शक्ति का संबल तुम्हारी ओर तब होगा ।
हमारे मोह में पल भर न बच्चो ! तुम दुःखी होना,
जरा सुन लो, हवाओं में घुला हर स्वर हमारा है,
सहज संवेदना का जल जहाँ से झर रहा होगा,
समझ लेना कि वाणी का वही निर्झर हमारा है।

।। हमारा मन तुम्हारी पीर हरने का खुला होगा,
स्वर वहाँ पर भी हवाओं में घुला होगा,
हमारी शक्ति तुम को हर निमिष, साहस बँधाएगी,
अगर आलस्य ने घेरा, तभी तुमको जगाएगी ।

हमारे सामने होती रही अनुभूति है जिसकी,

वही अस्तित्व जीवन भर सदा अनुभव करोगे,

तुम्हारा मन निराशा में अगर थकने लगेगा,

हमारे स्नेह का निर्झर सदा अनुभव करोगे

(वन्दनीया माता श्री मती भगवती देवी शर्मा का अपने मानस पुत्रों पर स्नेह का भाव)

।।। "हमारे स्नेह के निर्मल सरोवर से जुड़ा जो, नहीं कुम्हला सका ऐसा अरूण जलजात कोई ,

हृदय की वेदना हमसे तुम्हारी छिप पायी , रही क्या अनकही हम से तुम्हारी बात कोई!

न एकाकी कभी तुम थे, न एकाकी अभी हो, हमारी ज्योति तुमको प्रेरणा देती रहेगी,

नहीं इक साथ सबसे कंठ कह पाया कभी जो, परावाणी हमारी बात वह तुमसे कहेगी । "

(परम पूज्य आचार्य शर्मा का अपने शिष्यों–मानस पुत्रों के प्रति स्नेह भाव)

हमारे सामने होती रही अनुभूति जिसकी , कहीं अस्तित्व जीवन भर सदा अनुभव करोगे,

तुम्हारा मन निराशा में अगर थकने लगेगा ,हमारे स्नेह का निर्झर सदा अनुभव करोगे।

(परम पू0 आचार्य श्री राम शर्मा का अपने शिष्यों के प्रति स्नेह भाव) एवं मानस पुत्रो

2 डा0 हर गोविन्द सिंह की कविता "प्यार तुम्हारा ही तो माँ " में वात्सल्य भाव दृष्टव्य है–

"प्यार तुम्हार ही तो माँ, इन गीतों में साकार हो गया,

बरसाया पीयूष मरूस्थल , सोने का संस हो गया।

गला दिया तुमने निज जीवन, विश्व वाटिका यह लहराई,

ऑधी पानी में ऑचल ढक, बुझती दीपक शिखा जलाई । X X X

रोती ठोकर खाकर दुनियॉ , थपकी खाकर फिर सो जाती ,

उमड़ तुम्हारी करूणा धारा , फूलों पर मोती विखराती ।

प्यार तुम्हारा तूफानों में , नैया की पतवार हो गया । प्यार तुम्हारा ही तो माँ .....

किसे भला अवकाश कि सुन ले, क्षण भर मेरी करूण कहानी।

तुम्हीं न हो तो किन प्राणों में, ढालू इन ऑखों का पानी।

हाथ लगा दो करूण बस–मेरा बेड़ा पार हो गया । प्यार तुम्हारा ही तो माँ .....

3 श्री मती माया वर्मा की 19 सितम्बर 94 को वन्दनयी माता भगवती देवी शर्मा के महाप्रयाण पर भावान्जलि में वात्सल्य भाव देखिए–

"माँ! तुमने हम बच्चों को निज स्वत्व पिला कर पाला,

हमको बॉटा अमृत सदा खुद पिया जहर का प्याला।।

जगा दिया बेटी–बेटों को ठीक समय पर तुमने,

उन्मति प्रगति, स्वाबलम्वन का बॉटा दिव्य उजाला ।।

कवयित्री के एक अन्य मुक्तक में स्नेह का भाव देखिए–

मातृदुग्ध सा मेरा चिन्तन , घर–घर में पहुँचाना ।

मेरे बच्चो! जो सोंपा है , कार्य पूर्ण करवाना ।।

तुम ही अब उत्तर दायी हो, अपने विशद मिशन के,

बनना ऐसे श्री राम के सच्चे सुत कहलाना ।। "

4 आचार्य श्री राम शर्मा के गीत "आश्वासन " में वत्सल रस दृष्टव्य है–

तुन न घबराओ न ही ऑसू बहाओ अब, और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ ।

मैं खुशी के गीत गा–गाकर सुनाऊँगा ।

मानता हूँ ठोकरें तुमने सदा खाईं , जिन्दगी के दॉव में हारें सदा पाईं ।

बिजलियॉ दुःख की निराशी की सदा टूटी , मन गगन पर वेदना की बदलियॉ छाईं ।

पौंछ दूँगा मैं तुम्हारे अश्रु गीतों से, तुम सरीखे बेसहारों का सहारा हूँ ।

मैं तुम्हारे घाव धो मरहम लगाऊँगा , मैं विजय के गीत गा–गाकर सुनाऊँगा ।

तुम न घबराओ .....

5 श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय ' की विरह गीत "विरह वेदना " में वात्सल्य भाव दृष्टव्य हैं

"आप हिम्मत बॅधाकर हमें चल दिये, किन्तु सामीप्य की याद तो आयेगी ।

पास हमको बिठा , प्यार देते रहे, यह कृपा दृष्टि , कैसे न याद आयेगी ?

जब समस्या उठी, दौड़ हम आ गये, आपसे हर समाधान हम पा गये ।

दर्द जो भी हुआ आपने पी लिया, घाव को, स्नेह के सूत्र से सी दिया।

अब बिलखता हुआ, छोड़ कर चल दिये, अब कहो !

पीर किससे कही जायेगी ? आप हिम्मत बॅधाकर .....

गोद मॉ की , हमारे लिए रह गई , वह स्वयं भी,? विरह वेदना सह रहीं ।

किन्तु मॉ ने हृदय से लगाया हमें , हर तरह , प्यार अब तक पिलाया हमें ।

स्नेह से स्नात, मॉ की मृदुलगोद में, सुधि पिता की , सहज ही न क्यों आयेगी ?

"आप हिम्मत बॅधाकर ....."श्रद्धान्जलि " (गीत संग्रह) पृ0 27

6 श्री शिवशंकर मिश्र एवं श्री मती विद्यावती मिश्र के संगीत रूपक "महाराजा हरिश्चन्द्र " में वात्सल्य भाव देखिए –

शैव्या– सम्मुख रखा उस रोहिताश्व का शव है। जिसके आगे फीका जग का वैभव है।।

सुत मृतक किन्तु मैं जीवित है हत भागी , हैं खड़े सामने प्राणनाथ बैरागी।।

इस पर मैं रोऊँ या सिर धुन पछताऊँ । स्वामी मैं अपना अब क्या हाल बताऊँ ।

हरिश्चन्द्र– मेरा सुत , हॉ मेरा सुत जग की सम्पत्ति का स्वामी ।

वही आज बन गया कालपथ का सहसा अनुगामी।

किस विधि से संताप मानाऊँ पश्चाताप करूँ मैं ।

जीवन में क्या बचा कि जिसको अब अभिशाप करूँ मैं।

नवम् अध्याय

आलोच्य काव्यों का कला पक्षीय विवेचन

१. भाषा

२. शैली

३. अलंकार

४. छन्द

५. शब्द शक्ति

६. गुण

७. रीति

८. प्रतीक एवं बिम्ब

९. प्रकृति चित्रण

१०. आलोच्य काव्यों का अभिव्यक्ति पक्ष

1261

1. भाषा का अध्ययन

किसी भाषा या बोली का अध्ययन या तो ऐतिहासिक रीति से किया जाता है या वर्णनात्मक रीति से। ऐतिहासिक रीति से अध्ययन करने के लिये प्राचीन साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है। यदि हम खड़ी बोली पर ऐतिहासिक पद्धति से शोध करना चाहते हैं तो हमें यह ज्ञात होना चाहिये कि यह बोली किस प्रकार की है। हम जानते हैं इसका आर्य–परिवार है। अतः हमको यह खोजना होगा कि यह किस अपभ्रंश से विकसित हुयी है। इसके लिए अपभ्रंश–साहित्य जहाँ भी उपलब्ध हो, उसे खोजकर पढ़ना होगा और देखना होगा कि खड़ी बोली की प्रवृत्ति उसमें किस अंश में विद्यमान हैं। किसी भाषा के परिवार को जानने के लिये शाब्दिक ऐक्य ही पर्याप्त नहीं होता उसके व्याकरणिक ढांचे में भी एकता देखनी पड़ती है, विभक्ति कियारूपों आदि की परीक्षा आवश्यक नहीं होती। कोई हिन्दी शव्द–रूप विकास कम से संस्कृत पाली प्राकृत–अपभ्रंश से होते हुये वर्तमान भाषा–रुप को कैसे प्रा त हो गया इसका निर्धारण करना होगा। एक ही भाषा के क्षेत्र की भिन्नता से ध्वनि और अर्थ–तत्व भी परिवर्तित हो जाते हैं। लिंग–भेद भी हो जाते हैं। उदाहरण के लिये मराठी के सम्बन्ध में पहले यह धारणा थी कि इसका पाकृत के साथ सीधा सम्बन्ध है बाद में शोध से यह ज्ञात हुआ कि यह महाराष्ट्री भाषा अपभ्रंश से विकसित हुई है। हिन्दी शौरसेनी का विकसित रूप है और महाराष्ट्री शौरसेनी का ही पश्च रूप है। प्राचीन साहित्य के अध्ययन से ये तथ्य पकाश में आये हैं।

भाषा या बोली का वर्णनात्मक अध्ययन क्षेत्रीय कार्य पद्धति से सम्पन्न होता है। जिस भाषा का शोध करना हो उसके केन्द्र में जाकर रहना आवश्यक होगा। बोलियाँ संस्कारी भाषा के सम्पर्क में आ जाने के कारण अपना मूल रूप खोतीं जा रहीं हैं। अतः किसी बोली के अध्ययन के लिये शहर से दूर का क्षेत्र चुनना चाहिये साथ में ऐसे सूचक को लेना चाहिये जो हमारी तथा अनुसंधेय बोली दोंनों का ज्ञाता हो। सूचक दुभाशिये की तरह कार्य करेगा। हमें नगर–वातावरण से दूर के ग्राम में जाकर पहले तो वहाँ व्यक्तियों में मैत्रीभाव उत्पन्न करना होगा ताकि वे हमें संदेहास्पद व्यक्ति न समझें। व्यक्तियों के बीच बैठकर उनसे कोई कहानी सुनते हैं जो 'टेप' में रिकार्ड होती जाये। हम अपनी भी कोई ऐसी कहानी साथ में रखते हैं जिसमें पारिवारिक जीवन– सम्बन्धी शब्द तथा व्याकरण के रूप में समाविष्ट हों। जब हम सूचक के द्वारा 'बोली–भाषा' की कहानी रिकार्ड कर चुकें तब उससे अपनी कहानी का बोली–रूपान्तरण करवाते हैं और उसे भी टेप कर लेते हैं। टेप को बार–बार बजाकर हम बोली की ध्वनियों को पहचान कर उसकी वर्णमाला

(फोनोम) तैयार कर व्याकरण का ढांचा भी तैयार कर लेते हैं। **ग्रियर्सन** ने भाषा सर्वे का जो परिणाम अपनी कई जिल्दों में प्रकाशित किया है वह प्रत्यक्ष सर्व पद्धति पर आश्रित नहीं है। उन्होंने बाइबिल की एक कहानी चुनकर जिले के कर्मचारियों को भेजकर उसका बोली में रूपान्तरण करवाकर उस पर उसका पारिवारिक तथा व्याकरणिक रूप प्रस्तुत किया है। इस कार्य में शिक्षित ही नहीं अर्द्धशिक्षित, गाँव के पटवारी, मुकदमों आदि से भी सहायता ली गई। उन्होंने सामग्री–संग्रह में पूरी सावधानी बरती हो, यह नहीं कहा जा सकता। इसी से उनके पारिवारिक वर्गीकरण तथा अन्य कई निष्कर्षो पर विद्वानों ने तीव्र मतभेद भी प्रकट किया है। ग्रियर्सन के काल में भाषा के अध्ययन के वैज्ञानिक उपकरण भी उपलब्ध नहीं थे। अतः उसमें यत्र–तत्र दोषों का आ जाना स्वाभाविक था। अब भारतीय भाषा–विज्ञानी यह अनुभव करने लगे हैं कि देश की समस्त भाषाओं का वैज्ञानिक रीति से पुन सर्वेक्षण करना आवश्यक है। शिक्षा के प्रसार से बोलियाँ या तो परिनिष्ठित भाषा में रूपांतरित होती जा रही हैं या इतनी अधिक प्रभावित हो रहीं हैं कि उनका शुद्ध रूप खोजना कठिन हो रहा है। **स्वर्गीय डा. विश्वनाथ प्रसाद** ने बिहार के मानभूमि–भाग में प्रचलित बोलियों का 'सर्वे' कराया था जिससे बहुत–सी गलत धारणाओं का निवारण हुआ। हिन्दी में **डा. रामस्वरूप चतुर्वेदी** ने आगरे जिले की बोली पर सर्वे पद्धति से कार्य किया है। यदि प्रत्येक क्षेत्र की भाषा बोली का इसी प्रकार सर्वे किया जाये तो समस्त हिन्दी–प्रदेशों की भाषाओं का सर्वे हो सकता है। अहिन्दी क्षेत्र के विश्वविद्यालयों में भी यही पद्धति अपनायी जा सकती है पर सर्वे शुद्ध ज्ञान की द्वष्टि से किया जाना चाहिये; उसमें स्वभाषा–प्रीति या प्रादेशिक राजनीति का समावेश नहीं होना चाहिये।

वर्णनात्मक भाषा–विज्ञान की अध्ययन–प्रविधि का **पाणिनि** और **पतंजलि** ने आदर्श उपस्थित किया हैं। स्विटजरलैंड के भाषा विज्ञानी **फर्डिनांद द सोसुर** ने भाषा के सम्बन्ध में मौलिक विचार प्रस्तुत करते हुये कहा है कि– "भाषा के दो रूप होते हैं। एक तो वह जिसको वस्तुतः भाषा नहीं वाक् या भाषण मात्र कहना चाहिये। उसके लिये फ्रेंच भाषा में ल पैरोल कहा जाता है। वह व्यक्तिपरक तथा प्रसंगपरक है। प्रत्येक व्यक्ति के भाषागत व्यवहार में बहुत भेद हैं। एक ही व्यक्ति भिन्न–भिन्न प्रसंगों में, भिन्न–भिन्न क्षणों में भिन्न– भिन्न प्रकार की ध्वनियों, शब्दों और अर्थों का प्रयोग करता है। प्रत्येक बार जब कोई व्यक्ति बोलता है तो तब वह नई भाषाई घटनाओं का सृजन करता है। किसी व्यक्ति ने आज जिस ध्वनि का उच्चारण किया आज जिस शब्द के द्वारा जिस अर्थ का बोध किया वही कल ठीक–ठीक वैसा नहीं कर सकता। उसकी कल की भाषा–शैली आज की भाषा–शैली से भिन्न

होगी। एक ही व्यक्ति की भाषा में जहां इतने विभेद सम्भव हैं वहॉ जब अनेक व्यक्तियों के भाषा के सम्बन्ध की ओर ध्यान दिया जाता है तब सहज ही हम उनके गतिशील रूप का अनुमान लगा सकते हैं। इस प्रवृत्ति के कारण होने वाले भेद तत्काल भले ही न प्रकट हों परन्तु दो–तीन पीढ़ियों में अथवा कुछ कोसों की दूरी में उनके अन्तर स्पष्ट हो जाते हैं। डा विश्वनाथ प्रसाद ने इसी भाषा विज्ञानी के शब्दों में भाषा के दूसरे रूप का नाम 'एतात द लाग' दिया है जिसका अर्थ है किसी भाषा की निश्चित संख्या। यह वह भाषा है जो व्यक्ति या समाज निरपेक्ष होती है। जिसे हम परिनिष्ठित भाषा कह सकते है। यह जल्दी परिवर्तित नहीं होती है पर बहुत वर्ष या सदियों के व्यतीत हो जाने पर उसके रूप भी परिवर्तित हो जाते हैं। अतः भाषा–विज्ञान के अध्येता को समय–समय पर भाषा की प्रवत्तियों के विकास का पर्यालोचन करते रहना चाहिये। उसके लिये आवश्यक अभिलेख–पेषण क्षेत्र–सर्वे आदि प्रविधियों को प्रयोग में लाना चाहिये। विज्ञान शोध के नये–नये आयाम खोलता जा रहा है और उसकीं और उसकी प्रविधियों में भी नये–नये प्रयोग सामने आ रहे हैं। इसलिये जिस प्रविधि से अनुसंधेय विशय प्रतिपादित किया जाए, उसी का अवलंबन लेना चाहिए।

भाषा भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। किसी घटना या स्थान का देखकर जब किसी मानव द्वारा दूसरे के समक्ष उसका वर्णन किया जाता है तो वह भाषा का ही सहारा लेता है। मानव अपने मन के भावों को किसी अन्य के समक्ष भाषा के माध्यम से ही व्यक्त का सकता है या उसे लिखकर दे सकता है। भाषा का ज्ञान होने से ही मनुष्य संसार के अन्य सभी जीव जंतुओं से विकसित एवं श्रेष्ठ है

प्राचीन काल में आर्यों की भाषा विशुद्ध या वैदिक संस्कृत थी किन्तु जनसाधारण की भाषा थी प्राकृत। अशिक्षित जनसाधारण के उपयोग से प्राकृत भी दूषित हो गई और इससे अपभ्रंश का जन्म हुआ। इसे अपभ्रंश इसलिये कहा गया क्योंकि इसमें संस्कृत के शब्दों के अपभ्रष्ट (अत्यन्त भ्रष्ट) रूप ग्रहण किये गये। आगे चलकर प्राकत की इसी अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से हिन्दी भाषा और साहित्य का अविर्भाव हुआ है। अपभ्रंश किसी देश विदेश की भाषा नहीं अपितु मागधी आदि भिन्न–भिन्न प्राकृत भाषाओं के बिगड़े रूप वाली मिश्रित भाषा का नाम है। हिन्दी साहित्य का जब उदय नहीं हुआ था उस समय भी लोकभाषा होने के कारण इसमें लोक साहित्य की ही रचना होती रही।

कालान्तर में यही साहित्यिक भाषा बनीं। इसका साहित्य बहुत विस्तृत और उन्नत था। अपभ्रंश काव्य के अधिकतर विषय नीति, श्रृंगार, धर्म और लोकरंजन सम्बन्धी थ। प्रसिद्ध विद्वान महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन के अनुसार अपभ्रंश का

व्यधारा सातवीं सदी के मध्य से बारहवीं सदी तक अबाध गति से प्रवाहित होती रहीं। प्रत्येक प्रान्त की विभिन्न प्राकृत भाषाओं के समान ही प्राकृत की अपनी अपभ्रंश भाषायें भी थी। इनकी संख्या सत्ताईस थी किन्तु उसमें प्रमुख चार हैं–

1 नागरः– यह गुजरात तथा राजस्थान में प्रचलित थी।

2 ब्राचडः– यह सिंध में प्रचलित थी।

3 उपनागरः– यह नागर तथा ब्राचड बोले जाने वाले प्रान्तों की मध्य की भाषा थी।

4 प्राचीन हिन्दीः (अवहट्ट या अपभ्रश्ट):– यह अपभ्रंश और आधुनिक हिन्दी के बीच की भाषा थी।

अपभ्रंश के बाद आधुनिक भाषायुग का आरम्भ होता है। हिन्दी के दो प्रारम्भिक रूप मिलते हैं– 1: पूर्वी हिन्दी2: पश्चिमी हिन्दी

1: पूर्वी हिन्दीः– पूर्वी हिन्दी की मुख्य बोलियाँ हैं– अवधी, वघेली और छत्तीसगढ़ी।

2: पश्चि ी हिन्दीः– पश्चिमी हिन्दी की मुख्य बोलियाँ हैं– खडी बोली, व्रजभाषा, कन्नौजी और बुन्देली।

इनमें साहि ्यक द्वष्टि से अवधी, व्रजभाष़ा और खड़ी बोली का ही विशेष महत्व है। हाँ! अन्य बो लेयों में भी लोकगीतों की रचनायें अवश्य हुई हैं।

2. शैली

साहित्य के स्पष्ट रूप से दो पक्ष होते हैं जिन्हें हम भावपक्ष और कलापक्ष के रूप में जानते हैं। भावपक्ष का सम्बन्ध साहित्य के अन्तर्पक्ष या आत्मा से है जबकि कलापक्ष का सम्बन्ध उसके बाह्य या अभिव्यक्त पक्ष से है। भावें की अभिव्यक्ति के ढंग को ही शैली कहा जाता है। जिस ढंग से भावों का अभिव्यक्त किया जाता है, भाषा का वह माध्यम ही शैली के रूप में जाना जाता है।

शैली की परिभाषाः– पाश्चात्य आलोचकों और काव्य शास्त्रियों में से जिन्होंने शैली पर विचार किया है उनमें पोप, न्यूमैन तथा कार्लायल आदि प्रंमुख हैं। इन विद्वानों में से पोप का विचार है कि शैली विचारों का परिधान है, उन्होंने लिखा है–

"Style is the dress of thoughts."

जबकि कार्लायल इस विचार के पूर्ण रूप से विरोधी हैं। वे यह मानते हैं कि शैली लेखक या कवि का परिधान न होकर उसकी त्वचा है।उनके अनुसारः–

"Style is not the coat of writer but skin ."

इन विद्वानों में न्यूमैन शैली के सम्बन्ध में थोडा अलग हटकर विचार प्रस्तुत करते हैं। वे यह मानते हैं कि शैली बोलने या लिखने का अनवरत पद समुच्चय या रीति है:–

"Style is a constant and continual phrase or honour of speaking and writing."

आर्नाल्ड कहते हैं कि कविता के निर्माण में आत्मा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जबकि गद्य में विशेष रूप में मस्तिष्क कार्यरत रहता है। इस प्रकार उनके अनुसार गद्य और पद्य की शैलियों में पर्याप्त अन्तर होना चाहिये। **डा. शान्तिस्वरूप गुप्त** के अनुसार– उक्ति में कसावट, शुद्धता, स्पष्टता और संगीतात्मकता काव्य शैली के अनिवार्य गुण हैं और इन्हीं गुणों का समावेश होने के कारण उन्होंने ग्रे की काव्यशैली की प्रशंसा की है। उनके अनुसार गद्यशैली में नियमितता, एकरूपता, सटीकता और सन्तुलन होना चाहिये। शैली साहित्य का एक महत्वपूर्ण साधन है। वह विचारों का वाह्य और प्रत्यक्ष रूप होती है। लिखित विचारों को पढ़कर लेखक व कवि के ढंग और अभिव्यक्ति के तरीकों को हम सहज रूप से ही जान लेते हैं जिससे स्पष्ट है कि विचारों के वाह्य पक्ष का सीधा सम्बन्ध शैली से है।

विचारों को व्यक्त करने में शैली ।हुत अधिक सहायक होती है जिसके कारण विचार और शैली को अलग–अलग कर पाना असंभव है। यदि किसी व्यक्ति के पास अपार विचार सम्पदा है किन्तु उसके पास उस विचार सम्पदा को अभिव्यक्त करने के लिये अपेक्षित शैली नहीं है तो वह किसी प्रकार भी अपनी बात जिस रूप से वह सोचता है उसी रूप में श्रोता या पाठक तक प्रेषित करने में समर्थ नहीं हो सकता है । किन्तु यदि कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके पास कहने के लिये कुछ भी नहीं है और उसके पास अच्छी शैली है तो वह बडे ही आकर्षक ढंग से अपनी निरर्थक बात भी कह सकता है। इसीलिये प्रत्येक समर्थ साहित्यकार सदैव ही अपनी शैली को निखारने का प्रयास करता रहा है। अरस्तू भी इस बात को स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार–" शैली का मूल उद्देश्य श्रोताओं को मुग्ध करना होता है।" उन्होंने कहा कि प्रतिपाद्य विषय चाहे कुछ भी हो, भाषा साधनों का भी अपना विशेष महत्व होता है इसीलिये शैली को विचारों से अलग कर पाना असंभव माना जाता है।

प्रसिद्ध विद्वान **वाल्टरपेट** के अनुसार शैली व्यक्ति है किन्तु वह व्यक्ति नही जिसके मन की तरंग मनमानी और अतार्किक, असहज, अकृत्रिम है वरन् वह व्यक्ति है जिसकी अनुभूति उस वस्तु के सम्बन्ध में पूर्णतः ईमानदारी की है, जो उसके लिये सबसे बडा यथार्थ है। वाल्टरपेट के विचार से विचार व शैली में एकात्मयता है। इस प्रकार शैली ही साहित्य की अभिव्यक्ति का माध्यम है। बिना शैली के साहित्य की सर्जना असंभव है। शैली की विविधता के कारण ही कविता, उपन्यास, नाटक, कहानी एकांकी, रेखाचित्र आदि अनेक साहित्य रूप विधाएं विकसित

हुई हैं। अनेक प्रकार की लय और अनेक प्रकार के छन्दों का निर्माण हुआ है। प्रत्येक साहित्य रूप के अनेक भेद हुये है। इस प्रकार शैली का महत्व निर्विवाद है। शैली की विविधता ही साहित्य की विविधता का कारण है जिसका सम्बन्ध साहित्य के बाह्य रूप से है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विचारों के वाह्य और प्रत्यक्ष रूप से शैली का अभिन्न सम्बन्ध है।

3. अलंकार

काव्य शिल्प में अलंकारों की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। "अलंकार वाणी के विभूषण हैं।" सामान्य बात अलंकारों से विभूषित होकर एक विशेष मनोहरता से सम्पन्न हो जाती है। अतः अलंकार साधारण कथन न होकर चमत्कारपूर्ण उक्ति है।

अलंकार का अर्थ है शोभित या अलंकृत करने वाला। इसलिये उस सामग्री को अलंकार कहा जाता है जो किसी को सुशोभित करती हो। चाँदी, सोना, हीरा, नीलम आदि की बनी हुई बस्तुओं को धारण करने से शरीर की शोभा बढ़ जाती है। इस कारण इन गहनों अथवा आभूषणों को अलंकार कहते हैं। इसी प्रकार किसी कथन को रमणीय या रोचक ढंग से कहने से उसकी मनोहरता बढ़ जाती है। कथन की यही रीति या वर्णन करने की शैली भी अलंकार कहलाती है और यही काव्य को सुन्दरता पदान करती है।

अलंकार शब्द की व्याख्या करते हुए **वामनाचार्य** ने कहा है– **"अलंकारोतीति अलंकारः"** अर्थात किसी वस्तु को शोभा प्रदान करने वाला अलंकार कहलाता है। आचार्य दण्डी ने अलंकार की व्याख्या निम्न प्रकार से की है– "काव्यशोभा करान्ध मनिललंकारान्प्रचक्षते" अर्थात काव्य के बाह्य सौन्दर्य को बढ़ाने वाले धर्मो को अलंकार कहते हैं। साहित्य दर्पण के रचयिता विश्वनाथ कविराज ने इस निम्न प्रकार से परिभाषित किया है–

"शब्दार्थयोरस्थिरा यें धर्माः शोभाति शायिनः रसदिनिपु कुर्वन्तों लंकारास्ते"

अर्थात शोभा की वृद्धि करने वाले, इस भाव आदि की उत्कृष्टता को अधिक करने वाले शब्द और उनके अस्थिर धर्म को अलंकार कहते हैं। अलंकार मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं–

1: **शब्दालंकारः**– जिसमें शब्दों अथवा उनके अक्षरों के कारण उक्ति के सौन्दर्य की वृद्धि होती है।

2: **अर्थालंकारः**– जिनमें शब्दों के अर्थ के द्वारा वाक्य का उत्कर्ष अधिक प्रकट होता है।

3: **शब्दार्थालंकारः**– जिनमें शब्द और अर्थ दोनों कथन का सौष्ठव निर्भर रहता है। इन्हें उभयालंकार कहते हैं।

1. शब्दालंकारः— जैसा कि नाम से स्पष्ट है— कुछ शब्दों के द्वारा वाक्य की सुन्दरता बढ़ती है। ये मुख्य रूप से तीन हैं—

1. अनुप्रास 2. यमक 3. श्लेष

1. अनुप्रासः— जहाँ काव्य में व्यंजनों की बार—बार आवत्ति होने से चमत्कार उत्पन्न होता हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। स्वरों की आवृत्ति आवश्यक नहीं होती। अनुप्रास के पाँच भेद हैं—

1 छेकानुप्रासः— जहाँ एक या अनेक वर्णों की केवल एक बार आवृत्ति हो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार है; यथा—

"मन—मधुकर पद के पंकज ये क्षण में क्षीण करें भव—भीति।"

2 वृत्यनुप्रासः— जहाँ एक या अनेक वर्णों की अनेक बार आवृत्ति होती है, वहाँ वत्यनुप्रास अलंकार होता है, यथा—

"तन तड़प तड़प कर तप्त तात ने त्यागा।"

यहाँ त वर्ण की अनेक बार आवृत्ति हुई है अतः यहाँ वृत्यनुप्रास अलंकार है।

3 श्रुत्यनुप्रासः— काव्य में जहाँ एक ही उच्चारण स्थान से बोले जाने वाले वर्णो की आवृत्ति होती है, वहाँ श्रुत्यानुप्रास होता है, यथा— केका कलापि "कुंज—कुंज में कलित कीनी, गगन गम्भीर गरजे हैं घनघोर ते।"

यहाँ एक ही स्थान से उच्चरित होने वाले क, ग, घ वर्णों की आवृत्ति होने से यहाँ श्रुत्यानुप्रास अलंकार है।

4 लाटानुप्रासः— जहाँ अर्थ अपरिवर्तित होते हुए एक या अनेक शब्दों की या पूरे चरण की आवृत्ति होती है, वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है, यथा—

"पूत जो कपूत तौ वृथा हि धन संचे नर,
पूत जो सपूत तौ वृथा ही धन संचनौ।"

यहाँ पूरे चरण की आवृत्ति बिना अर्थ परिवर्तन के होने से लाटानुप्रास है।

5 अन्त्यानुप्रासः— जहाँ छन्द के चरणों की समाप्ति एक ही वर्ण से हाती है, उसे अन्त्यानुप्रास कहते हैं। इसे तुक मिलना भी कहा जाता है, यथा—

"भीष्म हों अथवा युधिष्टर, या कि हों भगवान,
बुद्ध हों कि अशोक,गाँधी हो कि ईशु महान।"

यहाँ छन्द के अन्त में एक ही वर्ण 'न' की आवृत्ति होने से अन्त्यानुप्रास अलंकार है।

2 यमक अलंकारः— जब एक ही शब्द की एक से अधिक बार आवृत्ति होती है किन्तु अर्थ भिन्न—भिन्न हों तो वहाँ यमक अलंकार होता है, यथा—

"उठा बगूला प्रेम का, तिनका चला आकाश।
तिनका तिनके से मिला, तिनका तिनके पास।।"

यहाँ 'तिनका' शब्द की एक से अधिक अर्थों में आवृत्ति हुई है। 'तिनका' का अर्थ तृण तथा 'उनका' है। अतः यहाँ यमक अलंकार है।

3 श्लेष अलंकारः— जब एक शब्द अनेक अर्थ व्यक्त करते हुए केवल एक बार ही प्रयुक्त होता है तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है। यथा—

सुबरन को खोजत फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर।

यहाँ 'सुबरन' शब्द के क्रमशः सुन्दर वर्ण, सुन्दर रूप तथा स्वर्ण अर्थ है, अतः यहाँ श्लेष अलंकार है। श्लेष अलंकार दो प्रकार का होता है— 1. अभंग पद श्लेष 2. सभंग पद श्लेष।

1. अभंग पद श्लेष — रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे मोती मानस चून।।

यहाँ पानी पद के विभिन्न अर्थ हैं जैसे मोती तथा चूना के अर्थ में जल।

2 सभंग पद श्लेषः— अज्यौ तर्यौना ही रह्यौ, श्रुति सेवत इक अंग।
नाक बास बेसरि लह्यौ, बसि मुकतन के संग।।

यहाँ पर तरयौना पद में सभंग श्लेष है। एक पक्ष में तो उसका अर्थ कान का आभूषण तथा दूसरे में उसके दो टुकडे करने से तरयों और न अर्थात तरा नहीं यह अर्थ होता है।

वकोक्तिः— यदि कोई किसी से कुछ कहे और सुनने वाला परिहास आदि के लिये उनके कथन का दूसरा ही अर्थ लेकर कुछ वैसा ही उत्तर दे तो वकोक्ति अलंकार होता है, ये दो प्रकार का होता है— 1. श्लेष वकोक्ति 2. काक वकोक्ति

1. श्लेष वकोक्तिः—

खरी होहु बारी नैकु, कहा में खोटी देखी,
सुनौ बैन नैक, सु तौ आनठाबजाइये।
दे तू मही मोहि सु तौ महीपति दे है कोउ,
दही देह दही है तौ सीरो कुछ खाइये ।

इसमें राधा कृष्ण का संवाद है। श्री कृष्ण राधा से कहते हैं कि खड़ी रहो किन्तु राधा शब्द का दूसरा अर्थ (अच्छा होना) लेकर कहती है कि मुझमें क्या खोटापन आप देखते हैं। इसी प्रकार बैन सुनो (हमारी बात सुनो) का दूसरे अर्थ में वीणा सुनो है, फिर कृष्ण मही (मटठा) माँगते हैं तो राधा मही का अर्थ पृथ्वी लगाती है और कहती है कि इसे कोई राजा ही दे सकता है।

2. काकु वकोक्तिः—

मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू, तुमहि उचित तप मो कहं भोगू।

यहाँ पर सुकुमार, बन जोगू, तप भोगू आदि शब्दो के उदाहरण में वकोक्ति की

ध्वनि मिलती है।

अर्थालंकारः— जहाँ पर अर्थ सम्बन्धी चमत्कार प्राप्त होता हैं वहाँ अर्थालंकार होता है। अर्थालंकार में शब्दों के रूप पर नहीं किन्तु उनके अर्थ पर ध्यान जाने से उक्ति की रमणीयता प्रकट होती है। ये निम्न प्रकार के होते हैं—

उपमा अलंकारः— रूप रंग गुण काहु को काहू के अनुसार।

ताको उपमा कहत हैं,जे सदबुद्धि आगार।।

जहाँ एक से धर्म, स्वभाव, शोभा तथा दशा वाले दो पदार्थों की तुलना की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। उपमा के चार अंग होते हैं—

1 **उपमेयः**— प्रस्तुत अथवा वर्ण्य विषय अर्थात जिसकी किसी अन्य वस्तु से तुलना की जाये।

2 **उपमानः**— अप्रस्तुत अर्थात जिस वस्तु से समता दी जाये।

3 **समान धर्मः**— उपमान तथा उपमेय का एक सा गुण

4 **वाचकः**— वे शब्द जो समान धर्म को प्रकट करते हैं। जैसे—

हरि पद कोमल कमल से ।

इस उदाहरण में हरिपद —उपमेय, कमल— उपमान, कोमल— समान धर्म,से— वाचक उपमा के दो भेद होते हैं— 1 पूर्णोपमा 2 लुप्तोपमा।

1 **पूर्णोपमाः**— जहाँ पर उपमा के उपर्युक्त चारों अंग वर्तमान रहते है वहाँ पर पूर्णोपमा होती है जैसे— नवल सुन्दर श्याम शरीर की, सजल नीरद सी कल कान्ति थी। इसमें नवल सुन्दर श्याम शरीर उपमेय, सजल नीरद—उपमान सी—वाचक तथा कलकान्ति— धर्म है।

2 **लुप्तोपमाः**— जहाँ पर उपमा के चारों अंगों उपमेय, उपमान, धर्म, वाचक में से एक, दो अथवा तीन का लोप हो जाये वहाँ पर लुप्तोपमा होती है, इसका एक एक उदाहरण देखिए—

1 **धर्म लुप्तोपमाः**— 'वचन सुधा सम वे उनके थे।'

यहाँ पर वचन उपमेय, सुधा उपमान तथा सम वाचक तोहै परन्तु साधारण धर्म माधुर्य आदि नहीं कहा गया है। इस कारण यहाँ धर्म लुप्तोपमा है।

2 **उपमान लुप्तोपमाः**— 'सुन्दर नन्दकिशोर सो जग में मिलै न और'

यहाँ पर उपमेय नन्दकिशोर, वाचक—सो तथा साधारण धर्म सुन्दर तो है किन्तु उपमान का अभाव है।

3 **उपमेय लुप्तोपमाः**— ' कल्पलता सी अतिशय कोमल।'

यहाँ पर उपमान—कल्पलता, वाचक— सी तथा साधारण धर्म कोमल तो है परन्तु उपमेय नहीं है इस कारण यहाँ उपमेय लुप्तोपमा है।

4: वाचक लुप्तोपमाः— दो बांह नदी के जुगल तीर, फैले थे कोमल गठित हीर,

यहाँ उपमेय (दो बाँह) उपमान (नदी के जुगल तीर) और धर्म (कोमल) है। किन्तु उपमेय ओर उपमान की तुलना सूचक समान या इसका समानार्थक कोई उपमा वाचक नहीं है।

5:मालोपमाः— जहां पर एक उपमेय के लिये अनेक उपमान लाये जाये वहां पर मालोपमा होती है अर्थात जहां उपमानो की माला सी बना दी जायें उदाहरण के लिये निम्न छन्द देखिए—

इन्द्र जिमि जंभ पर वाडव सुअंभ पर, रावण सदम्भ पर रघुकुल राज है।
पौन वारिवाह पर शम्भु रतिनाह पर, त्यों सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुम झुण्ड पर चीता मृग झुण्ड पर, भूशण वितुण्ड पर जैसे मृगराज है।
तेज तिमि अंस पर कान्ह जिभि कंस पर, त्यों म्लेच्छ वंश पर शेर सिवराज है

यहाँ पर उपमेय तो शिवराज है तथा इन्द्र, बाडव, रावण आदि उपमानों का 'शेर होना' समान धर्म बताया गया है। अतएव यहाँ पर मालोपमा है।

उत्प्रेक्षा अलंकारः— जहाँ उपमेय में उपमान की चमत्कारपूर्ण सम्भवना व्यक्त की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। उत्प्रेक्षा के तीन भेद हैं—

1 वस्तूत्प्रेक्षाः— जब किसी वस्तु में किसी अन्य बस्तु की सम्भावना व्यक्त की जाती है तो वस्तूत्प्रेक्षा अलंकार होता है; यथा—

'बालधी बिसाल बिकराल ज्वाल—जाल मानो,
लंक लीलिबे को काल रसना पसारी है।'

यहाँ हनुमान की विशाल जलती हुई पूँछ में काल की रसना(जीभ) की सम्भावना व्यक्त की गई है, अतः यहाँ पर वस्तूत्प्रेक्षा अलंकार है।

2 हेतूत्प्रेक्षाः— जहाँ अहेतु में हेतु की सम्भावना व्यक्त की जाती है, वहाँ हेतूत्प्रक्षा अलंकार होता है, यथा—

'लोहू पियौ जू वियोगिनि कौ सु कियो मुख लाल पिसाचिन प्राची।'

यहाँ पूर्व दिशा के लाल होने के कारण वियोगिनी का लोहू पीना बताया गया जो वास्तविक कारण नहीं है। अतः यहाँ हेतूत्प्रेक्षा अलंकार है।

3 फलोत्प्रेक्षा अलंकारः— जहाँ अफल में फल की सम्भावना व्यक्त की जाये वहाँ पर फलोत्प्रेक्षा अलंकार होता है, यथा—

' तव पद समता को कमल, जल सेवत इक पाँय।'

अर्थात मानो कमल तुम्हारे चरण की समता पाने को एक पैर से जल में खड़ा तप कर रहा है। यहाँ कमल के जल में उगने का फल चरणों की समता बताया जा रहा है, जबकि वास्तविकता यह नहीं है। अतः अफल में फल की

सम्भावना किये जाने से यहाँ पर फलोत्प्रेक्ष अलंकार है।

दृष्टान्त अलंकारः— जहां उपमेय–वाक्य और उपमान–वाक्य के साधारण धर्मों में बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव प्रस्तुत किया जाता है, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है। इसमें एक तथ्य का उल्लेख करके अन्य प्रसिद्ध तथ्य से उसका समर्थन किया जाता है। वाचक शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता है यथा–

संगति सुमति न पावई परे कुमति के धंध।
राखौ मेलि कपूर में हींग न होई सुगन्ध।।

यहाँ संगति से श्रेष्ठता न पाना' इस साधारण धर्म का दोनों वाक्यों में बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव है और समानता–सूचक किसी वाचक शब्द का उल्लेख नहीं है, अतः दृष्टान्त अलंकार है।

रूपक अलंकारः— जहाँ उपमेय में उपमान का भेद–रहित आरोप किया जाता है, वहाँ पर रूपक अलंकार होता है। यह तीन प्रकार का होता है–

सांगरूपकः–जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप सभी अंगों सहित होता है वहाँ पर सांगरूपक होता है, यथा–

प्रेम अमिअ मन्दर विरहु, भरत पयोधि गम्भीर।
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कपा सिंधु रघुवीर।।

यहाँ भरत के हदय स्थित प्रेम के प्रगट होने में समुद्र–मंथन का सर्वांग–सहित आरोप है। इसी प्रकार एक और उदाहरण देखिए–

सचिव विराग विवके नरेस। विपिन सुहावन पावन देसू।।
भट जम नियम सैल रजधानी। सांति, सुमति, सुचि सुन्दर रानी।।

यहाँ राज्य के सारे अंगों का आरोप विराग, विवेक आदि पर किया गया है अतः सांगरूपक है।

निरंगरूपकः— जहाँ केवल सामान्य रूप से उपमेय पर उपमान का आरोप प्रदर्शित हो, वहाँ निरंगरूपक होता है, यथा–

चरण कमल बन्दौ हरिराई।

अनन्वय अलंकारः— जहाँ उपमेय को ही उपमान के रूप में वर्णित किया जाए, वहाँ अनन्वय अलंकार है, यथा–

"आज गरीब निवाज मही पर, तो सौ तु ही सिवराज विराजै।"

यहाँ शिवराज को उन्हीं के समान वर्णित किया गया है, अतः अनन्वय अलंकार है। इसी प्रकार–

"उपमान–विहीन रचा विधि ने, बस भारत के सम भारत है।"

यहाँ भारत को भारत ही के समान बताया गया है, अतः अनन्वय अलंकार है।

प्रतीप अलंकारः— जहाँ प्रसिद्ध उपमान को उपमेय–रूप में वर्णित किया जाए, वहाँ प्रतीप अलंकार है। यह उपमा का उल्टा है। उपमा में उपमेय को उपमान के समान बताया जाता है। यथा–

'उसी तपस्वी से लम्बे थे देवदारू दो चार खडे।'

यहाँ देवदारू के वृक्षों को तपस्वी के समान लम्बे बताया गया है। इसी प्रकार

'फैला उनके तप–सा आपत, मन से सर सरसाए।'

यहाँ उर्मिला शरद के आतप को लक्ष्मण के तन के समान और सर को उनके मन के समान बता रही है। अतः उपमानों को उपमेय के समान कहने से प्रतीप अलंकार हुआ।

अतिशयोक्ति अलंकारः— जहाँ किसी के रूप, गुण या कार्य को बहुत बढ़ा–चढ़ाकर वर्णित किया जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है, यथा– 'दल के दरारन ते कमह करारे फूटे,

केरा के से पात बिहराने फन सेस के।'

शिवाजी की सेना के चलने से कच्छपावतार की पीठ का तड़प जाना और शेषनाग के फनों का केले के पत्तों के समान फट जाना, दिखाया गया है। यह वर्णन बहुत ही बढ़ा–चढ़ाकर किया गया है अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

सन्देह अलंकारः— जहाँ उपमेय में एक से अधिक उपमानों का संशय प्रकट किया जाता है, वहाँ सन्देह अलंकार होता है। इसे, कै, कैधों अथवा या आदि शब्दों से प्रकट किया जाता है, यथा–

'तुलसी सुरेश चाप, कैधों दामिनी कलाप,

कैधौं चली मेरू ते कृसानु सरि भारी है।'

यहाँ हनुमान की जलती हुई पूँछ में सुरेष–चाप (इन्द्रधनुश) दामिनी–कलाप (बिजलियों के समूह) तथा कसानु–सरि (अग्नि की नदी) का संषय प्रकट किया गया है। इसी प्रकार–

नारी बीच सारी है कि सारी बीच नारी है।

सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।

यहाँ वस्त्र से घिरी द्रोपदी साड़ी या नारी का सन्देह व्यक्त किया जा रहा है। अतः सन्देह अलंकार है।

भ्रान्तिमान अलंकारः— जहाँ उपमेय में उपमान का भ्रमपूर्ण निश्चय व्यक्त किया जाए, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है। सन्देह में तो संशय बना रहता है, निश्चय नहीं हो पाता परन्तु भ्रान्तिमान में भ्रम के कारण अन्य समान बस्तु की कल्पना कर ली जाती है; यथा–

"बादल से काले–काले केशों को देख निराले।
नाचा करते हैं निशि–दिन, पालतू मोर मतवाले।"

उल्लेख अलंकार :– जहाँ पर एक ही वस्तु का विभिन्न व्यक्तियों द्वारा अनेक प्रकार से उल्लेख किया जाये वहाँ पर उल्लेख अलंकार होता है। यह दो प्रकार का होता है। 1. प्रथम उल्लेख 2. द्वितीय उल्लेख।

प्रथम उल्लेखः– एक ही वस्तु का ज्ञाताओं के भेद के कारण उल्लेख करने को प्रथम उल्लेख कहते हैं जैसे–

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।
देखहिं भूप महा रन धीरा, मनहुं वीर रस धरे शरीरा।
डरे कुटिल नृप प्रभुहिं निहारी, मनहुं भयानक मूरति भारी।

यहाँ पर राम को विभिन्न व्यक्तियों ने अपनी–अपनी भावना के अनुसार अलग–अलग रूपों में देखा है।

द्वितीय उल्लेखः– जहाँ पर एक ही वस्तु का विषय भेद से अनेक प्रकार से उल्लेख किया जाये वहाँ पर द्वितीय उल्लेख होता है, जैसे–

दातर हैं पर दुख में, निज दुख में बिन पीर, है
हैं लोभी यश में सदा, सज्जन जन मत धीर। यहाँ पर सज्जनों के विभिन्न गुणों का अनेक प्रकार से उल्लेख किया गया है।

स्मरण अलंकार :–जहाँ पर पूर्व अनुभव किये हुए पदार्थ के समान किसी बस्तु को देखकर उसका स्मरण हो जाये वहाँ पर स्मरण या स्मृति अलंकार होता है, जैसे–'उदित चन्द नभ देखि कै, सुधि आवत शिशुचन्द' उदित हुए चन्द्रमा को देखकर शिशु के चन्द्रमुख का स्मरण हो जाता है।

अपन्हुति अलंकार :– अपन्हुति का अर्थ होता है छिपाना। जहाँ पर एक बात को छिपाकर कोई दूसरी बात कहकर दूसरे व्यक्ति का समाधान कर दिया जाये वहाँ पर अपन्हुति अलंकार होता है, जैसे–

मैं जु कहा रघुवीर कृपाला। बन्धु न होइ मोर यह काला। अथवा
अरी सखि यह मुख नहीं, यह है विमल मयंक

दीपक अलंकार :– जहाँ प्रस्तुत (उपमेय) तथा अप्रस्तुत (उपमान) दोनों का एक ही धर्म कहा जाता है वहाँ दीपक अलंकार होता है जैसे–

"देखे ते मन न भरै, तन की मिटै न भूख।
बिन चाखै रस न मिलै, आम, कामिनी, ऊख।"

यहाँ पर कामिनी उपमेय तथा आम और ऊख उपमान का एक धर्म बिन चाखे रस न मिले कहा गया है।

निदर्शना अलंकार :– जहाँ वस्तुओं का परस्पर सम्बन्ध संभव अथवा असंभव होकर उनमें बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव सूचित करता हैं वहाँ निदर्शना अलंकार होता है परन्तु उपमा की कल्पना द्वारा उसकी पूर्ति हो जाती है, जैसे–"कहाँ अल्प मेरी मति, कहाँ काव्यगत गूढ़।

सागर तरिवों उडुप सौ, चाहत हौ अति मूढ़।"

यहाँ पर काव्य ग्रन्थ की रचना करना तथा छोटी नाव से सागर पार करना इन दोंनों वाक्यों में सम्बन्ध दिखाया गया है जो असंभव है अतएव उपमा को सहारा लेकर दोंनों में सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

व्यक्तिरेक अलंकार :– जहाँ उपमान से उपमेय में गुणों की अधिकता का वर्णन किया जाये वहाँ व्यक्तिरेक अलंकार होता है। इसमें उपमेय के उत्कर्ष अथवा उपमान के अपकर्ष से उपमेय को असाधारण धर्म वाला बताकर उसे उपमान से अधिक गुण वाला कहा जाता है जैसे–

"विधि ते कवि सब विधि वडे, यामें संशय नाहिं।
शटरस विधि की सष्टि में, नव रस कविता माहिं।।"

यहाँ पर कवि उपमेय में वेधि उपमान से अधिक गुण बताये गये हैं तथा उसे बडा सिद्ध किया गया है।

सहोक्ति अलंकार :– जहाँ कई बातों का एक साथ होना सरस रीति से कहा जाता है वहाँ सहोक्ति अलंकार होता है। इसमें सह, समेत, साथ, संग आदि शब्दों के द्वारा एक शब्द दो पक्षों में लगता है, एक में प्रधान रूप से और दूसरे में अप्रधान रूप से जैसे–

"कीरति अरि कुल संग ही जलनिधि पहुँची जाय।".....

"नाक पिनाकहिं संग सिधाई।"

परिकरांकुर अलंकार :– जहाँ पर विशेष अथवा विशेष्यों का अभिप्राय कथन किया जाए वहाँ पर परिकरांकुर अलंकार होता है, जैसे–

"सुनिय विनय मम विटप अशोका, सत्य नाम करू हरू मम शोका।"

यहाँ पर अशोक शब्द साभिप्राय है इसका अभिप्राय शोक रहित करने वाला है।

अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार :– जहाँ अप्रस्तुत(उपमान) के द्वारा प्रस्तुत उपमेय का वर्णन किया जाये वहाँ पर अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार होता है, जैसे–

"दिन दस आदर पाय कै, करि लै आप बखान,
जो लौ काग सराध परव तौ लौ तो सनमान।"

यहाँ अप्रस्तुत काग के द्वारा किसी नीच अधिकारी का वर्णन है।

विभावना अलंकार :– जहाँ पर बिना किसी हेतु अथवा कारण के ही कार्य की

उत्पत्ति का वर्णन किया जाये वहाँ पर विभावना अलंकार होता हे। इसके छः भेद होते हैं जैसे–

"बिन पद चलै सुनै बिन काना, कर बिन कर्म करै विधि नाना।"

आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु बानी वक्ता बड योगी।"– मानस

यहाँ पर पद कर आनन बानी प्रसिद्ध कारणों के बिना ही चलने आदि कर्म करने रस भोगने बोलने आदि कार्यों का वर्णन किया गया है।

असंगति अलंकार :– जहाँ कारण कहीं हो और कार्य कहीं दूसरे स्थान पर तब असंगति अलंकार होता है। इस अलंकार में कार्य तथा कारण की स्थिति अलग–अलग स्थान पर दिखाई जाती है। इसके प्रथम असंगति, द्वितीय असंगति, तथा तृतीय असंगति के रूपमें तीन भेद होते हैं जैसे–

"हदय घाव मेरे पीर रघुवीरै,

पाई संजीवनि जागि कहत यौं प्रम पुलनि बिसराय शरीरै।" **तुलसी**

यहाँ पर शक्ति के घाव तो लक्ष्मण जी के शरीर में हैं किन्तु पीड़ा होती है रघुवीर को।

अर्थान्तरन्यास अलंकार :– जब किसी बात को कहकर उसकी पुष्टि किसी दूसरी बात से की जाती है तब वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है। इसमें प्रस्तुत अर्थ का समर्थन अप्रस्तुत अन्य अर्थ (अर्थान्तर) को स्थापित (न्यास) करके दिया जाता है। यथा– **"दान दीन को दीजिये, हरे दरिद्र की पीर।**

औषधि ताको दीजिये, जाके रोग शरीर।।"

यहाँ पर दरिद्र को दान देना चाहिए इस सामान्य कथन की रोगी को दवाई देने विशेष कथन से पुष्टि की गई है।

उभयालंकर (शब्दार्थालंकार):– कवि जब अपनी रचना करता है तो उसमें प्रायः कई अलंकार आ जाया करते हैं–

1 कभी कभी किसी कथन में कई शब्दालंकार एक साथ आ जाते हैं।

2 कभी कई अर्थालंकार, और

3 कभी कुछ शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों।

इसी तरह जब एक ही वाक्य या छन्द में एक से अधिक प्रकार के अलंकार होते हैं तब उसमें उभयालंकार माना जाता हे, जैसे–

1 "दीरघ सांस न लेहि दुख आईहि न भूल।

दई–दई क्यों करत है, दई–दई सु कबूल।"

(दई–दई मतलब हा देव, हा देव, हाय भगवान, दई–दैव, दई– दिया है)

यहाँ पर छेकानुप्रास तथा यमक इन दो शब्दालंकारों का सम्मिलन है।

2 "बंदउँ गुरू पद पदम परागा। सुरूचि सुवास सरस अनुरागा।"

इसमें वृत्यानुप्रास और पारम्परित रूपक ये दो भिन्न–भिन्न वर्गों के अलंकार है।

मानवीकरण अलंकार :– इस अलंकार में निजर्वि वस्तुओं तथा भावों को सजीव मानकर उन्हें व्यक्ति के रूप में वर्णन किया जाता है अर्थात् जहाँ अमानव में मानवीय गुणों का आरोप किया जाये, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता हे। यह अलंकार अँग्रेजी काव्य–षास्त्र से हिन्दी में लिया गया है।

उदाहरण– **"राई–सरसों, गोंहूँ–पिसिया झूमत गल बहियां डार–डार।"** डा.सिंह

विरोधाभासः– इस अलंकार में एक ही बस्तु में दो परस्पर विरोधी गुणों को दर्शाया जाता है। जहाँ स्थिति वास्तव में विरोधपूर्ण न होने पर भी, सुधियों की ग्रन्थियाँ खोलकर, बेसुध बैठने की बात विरूद्ध जैसी वर्णित है। यथा– शाप बन जाते हैं वरदान··· तिमिर ही बन जाता रजनीश! "श्रद्धा" पृ॰7

4. छन्द

छन्द वस्तुतः एक गति है। यह समझना ठीक नहीं है कि वह मात्राओं और यतियों का बन्धन है। जिस प्रकार नदी अपने दोनों किनारों से बँधकर ही वेगवती होती है। यदि किनारे के बन्धन न हों तो प्रवाह का वेग भी न होगा। वाणी भी मात्राओं और यतियों के बँधे किनारों के भीतर से वेगवती हो उठती है। कोई आश्चर्य नहीं है कि मनुष्य ने केवल छन्द को ही कविता का नाम दे दिया था। छन्द के प्रकट करने से साधारण बात में भी एक ऐसी गति आती है जो मनुष्य के चित्त की अनुवर्तिनी हो उठती है। संस्कृत साहित्य में छन्द का अर्थ प्रसन्न होना भी पाया जाता है। छन्द शब्द का मूल अर्थ है 'आनन्द देने वाला' ही हो सकता है। **पं0 विधुशेखर भट्टाचार्य** ने छान्दोग्य के मंत्र की इस प्रकार व्याख्या करके इस अर्थ की संगति बैठाई है (जो उचित जान पडती है) 'देवता लोग मत्यु से डरे हुये थे, उन्होंने वेद मंत्रों का ऐसा मधुर गान किया है कि मृत्यु मुग्ध हो गई। मुग्ध होने के कारण वह उन्हें देख नहीं सकी मानो वे इस प्रकार वेद–मंत्रों से आच्छादित हो गये और मत्यु के पंजों से छुटकारा पा सके।" इस व्याख्या से छन्द की मुग्धकारिणी शक्ति का आभास मिलता है और आच्छादित शब्द इसी अर्थ में लाक्षणिक भाव से प्रयुक्त जान पड़ता है। जो हो, छन्द शब्द मुग्धकारी और प्रसन्न करने वाले अर्थ में ही वह अधिक उपयुक्त जँचता है। छन्द के भीतर की गति ही उसे प्रसादक और मोहक बनाती है। **कविवर रविन्द्रनाथ ठाकुर** ने कहा है कि 'मनुष्य की सत्ता में अनुभूति लोक ही वह रहस्य लोक है जहाँ बाहर के रूप जगह का सम्पूर्ण वेग अन्तर का आवेग बन जाता है और यह अन्तर का आवेग बाहर रूप ग्रहण करने को उत्सुक हो उठता है। इसीलिये वाक्य जब हमारे अनुभूति लोक के वाहन के काम में नियुक्त होता है तो उसमें गति का होना आवश्यक हो जाता है।

केवल इतना ही नहीं, छन्द सामाजिक बन्धनों का भी वाहक है। वह केवल छन्दोरचयिता के अन्तर के वेग को ही नहीं प्रकट करता, उस वेग को दूसरे के चित्त में संचरित भी करता है। भारतीय काव्य शास्त्रियों ने इस तथ्य को निपुण भाव से अनुभव किया था। संस्कृत के नाटकों में बहुत शुरु से ही छन्दोबद्ध रचना द्वारा वक्ता के भावों का आवेग श्रोता के अन्तर में संचरित करने का प्रयास देखा जाता है। उचित ढंग से छन्दों का पाठ श्रोता को उसी आवेग में ले जाता है जिसे मूल रचयिता ने स्वयं अनुभव किया था। यही कारण है कि छन्द ने मनुष्य के सामाजिक सम्बन्धों को दृढ़ और स्थायी बनाने में बड़ा काम किया है। **राजशेखर** ने **काव्य–मीमांसा** में काव्य करने की अपेक्षा भी काव्य पाठ करने को अधिक महत्वपूर्ण माना है। क्योंकि पाठ से उस सामाजिक उद्देश्य की सिद्धि होती है जो मनुष्य का सहज धर्म है। आदमी संस्कृतात्मा हो तो काव्य जैसे तैसे बना ही लेता है किन्तु काव्य पाठ करना तो उसी को आता है जिसको सरस्वती सिद्ध होती है–

करोति काव्यं प्रायेण संस्कृतात्मा यथा–तथा।

पठितुम वेत्ति स परं यस्य सिद्धा सरस्वती।।" आचार्य मम्मट, पृ. 36 काव्य प्रकाश:

सभा में तो सुन्दर काव्य बनाने की अपेक्षा सुन्दर पाठ की अधिक आवश्यकता होती है। राजशेखर ने उस कवि को ही बाग्देवी का अत्यन्त प्रिय बताया है जो छन्दों को इस प्रकार पढ़ सके कि इसका आस्वादन गोपालों और अनपढ़ स्त्रियों तक को मिल जाये– **आगोपालकमायोषि दास्तामेतस्य लेह्यता।**

इत्थं कविः पठन् काव्यं वाग्देव्या अति बल्लभः।।

छन्द कविता की स्वाभाविक गति के नियमबद्ध रूप है। सामान्यतः जातीय संगीत और भाशावर्त्ति के आधार पर निर्मित लयादर्श की आवत्ति दंद कहलाती है। छन्द में निश्चित मात्रा और वर्ण की गणना होती है। संस्कृत में छन्द शास्त्र के सबसे पहले रचयिता भगवान के अवतार **पिंगलाचार्य** माने जाते हैं। उनका बनाया हुआ **'पिंगल छन्द शास्त्र'** इस विषय का पहला ग्रन्थ है। अतः इस शास्त्र के प्रवर्तक के नाम से इसे पिंगल शास्त्र कहते हैं। हमारी हिन्दी भाषा संस्कृत से ही विकसित हुई है।

चरणः– प्रत्येक छन्द में चार चरण आवश्यक होते हैं। इन्हें पद या पाद भी कहते हैं। चरण की रचना वर्णों (अक्षरों) या मात्राओं की संख्या और उनके नियमित प्रयोग के अनुसार हुआ करती है। कुछ छन्द ऐसे भी होते है जिनमें होते ता हैं चार चरण पर लिखने में वे दो ही पंक्तियों में आ जाते हैं (जैसे– दोहा, सोरठा, वरवै आदि) ऐसे छन्दों की प्रत्येक पंक्ति को दल कहते हैं। कुछ छन्दों में 6 चरण भी होते हैं।जैसे– छप्पय तथा कुण्ड़लिया। जिस छन्द के पदों में वर्णों की संख्या का नियम रहता ह उसे वर्ण वश्त्त या वार्णिक कहते हैं और जिसमें मात्राओं का नियम रहता है उसे 'मात्रिक'। 'मात्रिक' छन्द

का दूसरा नाम जाति है। उक्त दोंनों प्रकार के छन्दों (मात्रिक व वर्णवष्त) का वर्णन अवलोकनीय है– **1. मात्रिक वृत्तः– सम(साधारण)**

1.तोमरः– तोमर के प्रत्येक चरण में 12 भाशायें होती हैं। अंत में कमशः गुरु और लघु वर्ण होते हैं, जैसे **रिपु परम कोये जानि**–12 मात्रायें अंत में गुरु लघु

प्रभु धनुष सर संधानि–12 मात्रायें अंत में गुरु लघु

2. उल्लाला (चन्द्रमणि):– इसके प्रत्येक चरण में 8 और 5 मात्राओं पर यति देकर 13 मात्रायें होतीं हैं। जैसेः– **भजहु सदा राधा रमन** 13 मात्रायें 8,5 पर यति

वृन्दावन वासी बनौ 13 मात्रायें 8,5 पर यति

लहौ नित आनन्द घनौ 13 मात्रायें 8,5 पर यति

3. चौपाईः– चौपाई छन्द में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16 मात्रायें होतीं है। अन्त में जगण(1S1) अथवा तगण(SS1) नहीं आना चाहिये।

उदा0 S11 11 S11 11 SS 111 1S 11 S11 SS

गोपद जल बूढ़हि घट जोनि। सहज छूना बस छोड़हि छोनि।।

4: रोला छन्दः– रोला सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 24 मात्रायें होतीं हैं। 11वीं और 13वीं मात्राओं पर यति (अल्प विराम) होतीं हैं। उदा0– 1 1 1 1 S S 1 1 1 S 1 1 1 1 1 1 1 S S

तरनि तनूजा तट तमाल तरूवर बहु छाये ।

झुके फूलसों जल परसन जित मनहु सुहाये ।।

किधों मुकुर में लखत उझकि सब निज निज सोभा।

कै प्रनवत जिय जाति परम पावन फल लोभा ।।

5: गीतिका– गीतिका के प्रत्येक चरण में 14, 12 यति से 26 मात्रायें होती हैं। अन्त में क्रमषः लघु, गुरु होता हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में तीसरी, 10वीं, 17वीं और 24वीं मात्रा लघु होनी चाहिये और अन्त में रगण। ऐसा होने से यह अत्यन्त श्रवण सुखद हो जाता है; यथा–

" मातृ भू सी मातृ भू है, अन्य से तुलना नहीं।

यत्न से भी ढूढ़ने पर मिल नहीं सकती कहीं।

जन्मदात्री माँ हमारी, प्रेम में विख्यात है।

किन्तु वह भी मातृ भू के सामने बस मात है।।"

6: हरिगीतिका छन्दः– यह चार चरणों का सम मात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 28 मात्रायें होतीं हैं। 16 तथा 12 पर यति होती है। इस छन्द के प्रत्येक चरण के अन्त में 'रगण' का प्रयोग होता है। चरण के अन्त में एक लघु तथा एक गुरु वर्ण होता है; यथा–

"खग वृन्द सोता है अतः कल, कल नही होता यहाँ।
बस मंद मारूत का गमन ही, मौन खोता है यहां ।।" 28 मात्राएं

8: दोहा छन्दः– दोहा मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रथम तथा तृतीय चरण में 13 13 मात्रायें तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 11 11 मात्रायें होतीं हैं। अन्तिम वर्ण लघु होना चाहिये; यथा–

1 1 1 S 1 1 1 S 1 S S 1 S 1 1 1 S 1 13 11 मात्रायें

लसत मन्जु मुनि मण्डली, मध्य सीय– रघुचन्दु।
ज्ञान सभा जनु तनु घेरें, भगति सच्चिदानंदु।।

प्रस्तुत छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में 13–13 मात्रायें तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 12–12 मात्रायें होतीं हैं। अतः यह दोहा छन्द हैं।

9:सोरठा छन्दः– इसके चार चरण होते हैं। इसके प्रथम चरण तथा तृतीय चरण में 11–11 मात्रायें तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 13 13 मात्रायें होतीं हैं; यथा–

S 1 1 1 1 1 1 S 1 1 S S 1 1 1 S 1 1

बंदहु गुरु पद कंज, कृपासिन्धु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर।।

इस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरणों में 11–11 और द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में 13–13 मात्रायें होतीं हैं। अतः यह सोरठा छन्द है।

10:कुण्डलिया छन्दः– कुण्डलिया छन्द दो छन्दों के मेल से बना है। इसमें पहली दो पंक्तियाँ दोहा छन्द की और शेष चार चरण रोला छन्द के होते हैं। दोहा के अन्तिम चरण की रोला के प्रथम चरण में आवृत्ति होती है। दोहा के प्रथम चरण का प्रथम शब्द रोला का अन्तिम शब्द होता है; यथा–

S S S 1 1 1 S 1 S 1 S S 1 1 S 1

लाठी में गुन बहुत है, सदा राखिए संग।
गहर नदी नाला जहाँ , तहाँ बचावै अंग ।।
1 S 1 S S S 1 1 1 S S S S S

तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कूँ मारै।
दुसमन दावागीर होई, तिनहूँ को झारै।।
कहि गिरिधर कविराय सुनहु हो मेरे पाठी।
सब हथियारन छाँडि, हाथ में लीजै लाठी।।

इस छन्द में प्रथम छन्द दोहा है तथा द्वितीय छन्द रोला हैं। अतः यह कुण्डलिया छन्द है।

11:छप्पयः– छप्पय में कुल 6 चरण होते हैं। उनमें से पहले चार रोला के 24–24

मात्राओं के (11 और 13 के यति से) होते हैं और अन्तिम दो उल्लाला के 28–28(15 और 13 पर यति से) या 26–26(13–13 पर यति से) मात्राओं के होते हैं। इस प्रकार उल्लाला के दो प्रकारों के संयोग के कारण छप्पय के भी दो प्रकार होते है; यथा– 1: नीलाम्बर परिधान। हरित पट पर सुन्दर है।

सूर्य चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदियां प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं।
बन्दीजन खग वश्न्द, शेष कण सिंहासन है।
करते अभिशेक पयादे हैं,बलिहारी इस वेश की।
हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेषकी। 15,13
2:उज्जचल हिम का रम्य, रूप तज कर गलती है।
जन्म भूमि को छोड, शीघ्रता से चलती है।
अचल पिता का सभी, प्रेम पीछे रहता है।
करके वह पाषाण, हृदय सब कुछ सहता है।
पड़ता जो कुछ मार्ग में करती मटियामेट है।
किससे करने जा रही, तरंगिणी तू भेंट है। 13,13

वार्णिक छन्द

12: इन्द्रवज्रा:– इन्द्रवज्रा समवर्ण छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में तगण, तगण, जगण तथा गुरु, गुरु इस प्रकार 11 वर्ण होते हैं; यथा–

तगण तगण जगण गुरु गुरु
S S 1 S S 1 1 S1 S S
आया नहीं काम स्वदेष के जो,
गाया नही गान स्वतंत्रता का।
जीता हुआ भी वह देशद्रोही,
जीता नहीं है यह सत्य मानो।

13: उपेन्द्रवज्रा:– उपेन्द्रवज्रा समवर्ण छन्द है। इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण, तथा दो गुरु वर्ण के कम से 11 वर्ण होते हैं; यथा–

जगण तगण जगण गुरु गुरु
1S 1 S S 1 1 S 1 S S
गया उजाला अब शाम आयी
दिशा दिशा में छाने श्याम छाई।
हुए भी मौन विहंग देखो।

उगे शनैः तारक वृंद देखो।

14: वसंततिलका छन्दः— वसंततिलका छन्द समवर्ण वृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरु वर्ण के कम से 14 वर्ण होते है; यथा—

तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

S S 1 S 11 S 11 S 1 SS

आओ यहाँ मधुर–सी कुछ बात छेड़ो,
भूलो सभी विगत की कटु भावनाएँ।
आए नई मधुमयी ऋतु वटिका में,
कूकें वही पिक भरीं रस से यहाँ रे।।

15:मालिनी छन्द— मालिनी छन्द में चार चरण होते हैं तथ प्रत्येक चरण में 15 वर्ण। वर्ण कम में दो नगण, एक मगण तथा दो यगण होते हैं। आठ एवं सात वर्णों पर यति होती है; यथा—

न न म य य

1 1 1 1 1 1 S S S 1 S S 1 S

प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ ?
दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है
अब तक जिसको देख मैं जीती रही हूँ।
वह हृदय हमारा नेत्र तारा कहाँ है।

16: सवैया— 1. मत्तगयंद सवैया:— मत्तगयंद छन्द समवर्ण वष्त्त है। इसके चार चरण होते हें। प्रत्येक चरण में सात भगण और दो गुरु वर्णों के कम से 23 वर्ण होते हैं; यथा—

भगण भगण भगण भगण भगण भगण भगण गुरू गुरू ।

S11 S11 S11 S11 S11 S11 S11 S S

या लकुटी अरू कामरिया पर राज तिहुँ पुर कौ तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौं निधि को सुख नन्द की धेनु चराइ विसारौं।
आँखिन ते रसखान कबों ब्रज के वन बाग तडाग निहारौं।
कोटिक हूँ कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर बारौं।

2. **सुन्दरी सवैया:**— सुन्दरी सवैया में चार चरण होते हैं। पत्येक चरण में आठ सगण तथा एक गुरु के कमानुसार 25 वर्ण होते हैं; यथा—

सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण गुरु

1 1 S 11 S 11 S 11 S 11 S 11 S 11 S 11 S S

मरते मरते अरि के दल में वह भीषण मार मचा निकली थी,

झरते झरते कल कंज कली निज गंध यहाँ बिखरा मचली थी।
भरते भरते यश जीवन में शुभ दीपक–सी कुछ रात जली थी।
गिरते गिरते रण में अरि को चकचौंध गई बन के बिजली थी।

3. दुर्मिल सवैया:– आठ सगण 11 S अर्थात 24 वर्णों का दुर्मिल सवैया होता है। इसे चन्द्र कला भी कहते हैं; यथा–

1 1 S 11 S 11 S 11 S 11 S 11 S 11 S 11 S
इसके अनुरूप कहें किसको, बस कौन सुदेश समुन्नत है।
समझें सुरलोक समान इसे, उनका अनुमान असंगत है।
कवि कोविद वृन्द वखान रहे, सबका अनुभूत यही मत है।
उपमान विहीन रचा विधि ने बस भारत के सम भारत हैं।

17.मनहर कवित्त:– मनहर, वार्णिक मुक्त छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं। 16 तथा 15 वर्ण पर यदि होती है तथा अन्तिम वर्ण गुरु होता है; यथा–

हाट, बाट, कोट, ओट, अटनि, अगार, पौरि,
खोरि, खोरि, दौरि, दौरि, दीन्हि अति आगि है। 16 वर्ण
आरत पुकारत सँभारत न कोउ काहू,
व्याकुल जहाँ सो तहाँ लोग चले भागि हैं। 15 वर्ण

5. गुण

काव्य का प्रधान उद्देश्य व्यापक जीवन दृष्टि प्रदान करना है। आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि ''कविता श्रेष्ठ सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह का साधन है। वह इस जगत के अनन्त रूपों, अनन्त व्यापारों और अनन्त चेष्टाओं के साथ हमारे मन की भवनाओं को जोड़ने का कार्य करती है। यदि रसात्मक वाक्य को काव्य मान लिया जाये तो वाक्य में अन्तर्भूत शब्दार्थ पद समूह का रूप लेकर अपना ही व्यक्तित्व उपस्थित कर देता है। संभवतः इसी कारण प0 जगन्नाथ ने रमणीयार्थ प्रतिपादन शब्द को काव्य माना है।

'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्द काव्यं।'

आचार्य भामह ने काव्य को शब्द और अर्थ की अनिवार्यता के साथ जोड़ा है। 'शब्दार्थो सहितौ काव्यम।' आचार्य मम्मट का भी काव्य के सम्बन्ध में कुछ ऐसा ही अभिमत है– 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृतिः पुनः क्वपि' इस प्रकार स्पष्ट है कि काव्य शब्दार्थाश्रयी है। काव्य में वकता को महत्व देने वाले आचार्य कुन्तल भी शब्दार्थ की अनिवार्यता को नही त्याग पातजे। कालरिज के अनुसार–"काव्य उत्तम गतिमयता में सर्वोत्तम शब्द विधान है। इस प्रकार शब्दार्थाश्रयी अभिव्यक्ति

जब कल्पना एवं मनोवेग के साथ लोकजीवन का समाख्यान करती है तब अपनी रागात्मकता के कारण कविता या काव्य से अभिहित होती है और लोकरंजन में समर्थ होती है।

" संक्षेपाद् वाक्य मिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली ।

काव्यं स्फुरदलंकारं गुणवद्दोश वर्जितम ।।

जहाँ तक काव्य की व्यापकता का प्रश्न है इसमें हमें दो बिन्दु मिलते हैं। एक के मूल में कवि है– कवेः भावः काव्यम (कवि का भाव काव्य) और दूसरे के मूल में भामह का शब्दार्थ– शब्दार्थो सहितौ काव्यम। कवि भावलोक का जीवन्त दृष्टा है। प्रायः काव्य की समस्त परिभाषाओं में शब्दार्थ की उपादानता को स्वीकार किया गया है और निष्कर्षतः रमणीय शब्द और अर्थ को काव्य माना गया है।

जिस प्रकार शब्द शक्तियॉ काव्य के अर्थ को प्रकाशित और पुष्ट करतीं हैं उसी प्रकार गुण काव्य के रस को प्रकाशित और पुष्ट करते हैं। गुण सदा ही रस के साथ विद्यमान रहते हैं। रस तो आनन्द का ही दूसरा नाम है अतः यह अमूर्त है। परन्तु गुण उसका आवरण है और भिन्न होते हुए भी सदा उसके साथ प्रकट रूप में रहता है। इसलिए गुण को रस का नित्य धर्म कहा गया है। रस यदि आत्मा है तो गुण उसका शरीर है। **गुण काव्य का वह तत्व है जो रस के साथ सदा विद्यमान रहता है।** वृत्ति और रीति की तरह ही काव्य रचना में गुणों का भी बडा महत्व है। गुणों को रस का उत्कर्ष मानने वाला माना गया है। **दण्डी** के मतानुसार गुण काव्य के प्राण हैं। **वामन** ने गुणों को काव्य में काव्यत्व लाने वाले धर्म कहा है क्योंकि इनसे ही काव्य में काव्यत्व आता हैं। **भोजराज** ने अलंकृत काव्य को भी गुण हीन होने के कारण अश्रवणीय कहा है और **व्यास** जी ने लिखा है कि अलंकार युक्त काव्य भी गुण रहित होने से आनन्दप्रद नहीं होता।

भरतमुनि के अनुसार गुणों की संख्या दस तथा व्यास जी के अनुसार उन्नीस है। भामह ने तीन, दण्डी ने दस, वामन ने बीस और भोजराज ने चौबीस गुण माने हैं परन्तु **मम्मटाचार्य** ने अपने **काव्य प्रकाश** में गुणों की संख्या तीन ही मानी है और शेष सभी गुणों की निस्सारता सिद्ध की है। इस प्रकार प्रमुख रूप से काव्य के तीन ही गुण मान्य हैं–

1– माधुर्य 2– औज और 3– प्रसाद, जिनका वर्णन अवलोकनीय है–

1 माधुर्य– काव्य का वह तत्व जो पाठक या श्रोता के हृदय को द्रवित कर दे, उसके चित्त में मिठास या मधुरता भर दे, विरक्ति और कठोरता न आने दे, माधुर्य गुण माना जाता है। यह गुण श्रृंगार, करूण और शान्त रस के साथ सदा विद्यमान

रहता है। माधुर्य गुण से युक्त रचना में ट ठ ड ढ ण, द्ध, ड्ट, श्ण आदि वर्णों का निषेध होता है। इस गुण के कारण अन्तःकरण आनन्द से द्रवीभूत हो जाता है। यह गुण कमशः संभोग में, करूण से विप्रलम्भ में और विप्रलम्भ से शान्त रस में अधिकाधिक अनुभूत होता है। उदाहरण के लिये रचनाएं देखिए–

"**नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,**
खिला है ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन बीच गुलाबी रंग।" **(कामायनी)**

मंजुल मयंक की निम्नांकित रचना माधुर्य का सुन्दर उदाहरण है–

"रात ढलने लगी, चाँद बुझने लगा, तुम न आये सितारों को नींद आ गयी।
धूप की पालकी पर किरन की दुल्हन, काके उतरी खिला कर समनहर चमन।
देखो बजती है भौरो की शहनाइयाँ, हर गलरी दौड़ कर न्यौत आया पवन।
बस तड़पते रहे सेज के ही सुमन, तुम न आये बहुरों को नींद आ गयी।"[1]

2: **ओजः**– काव्य के जिस तत्व या गुण से सहृदय पाठक या श्रोतो के हृदय में तेज का संचार हो जाता है उसे ओज गुण माना जाता है। यह गुण वीर, रोद्र और वीभत्स रस के साथ विद्यमान रहता है। यह सहृदय व्यक्ति के चित्त को उद्दीप्त कर देता है। उपर्युक्त रस वाली रचनओं कर्कष पुरूष संयुक्त वर्णों का तथा उनसे बने खड़खड़ाने–गड़गड़ाने वाले शब्दों का अधिक प्रयोग होता है। इस गुण की रचना को पढ़ते ही या सुनते ही चित्त में स्फूर्ति आ जाती है। में तेज उत्पन्न हो जाता है और चित्त में एक अपूर्व दीप्ति उत्पन्न हो जाती है। यह ओज गुण कमशः वीर से वीभत्स में और वीभत्स से रौद्र में अधिक अनुभूत होता है; यथा–

"निकसत म्यान तें मयूखें प्रलै–भानु कैसी, फारें तम–तोम–से गयन्दन के जाल को,
लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहुबली, कहॉ लौ बखान करौं तेरी करवाल को।
प्रतिभट–कटक कटीले केते काटि काटि, कालिका–सी किलकि कलेउ देति काल को"

– भूषण

3: **प्रसादः**– काव्य के जिस गुण से पाठक या श्रोता के चित्त में अर्थ एकदम उतर जाता है उसे प्रसाद गुण कहते हैं। प्रसाद का अर्थ होता है स्पष्ट, निर्मल आदि। रचना पढ़ते ही जब पाठक के हृदय में पूरा अर्थ बिना बाधा के रम जाता है अर्थात चित्त उस अर्थ से व्याप्त हो उठता है, भर जाता है तो प्रसाद गुण के कारण ही होता है। प्रसाद गुण किसी रस का लक्षण नहीं वरन सारे काव्य का अनिवार्य लक्षण है। बिना किसी दुरूहता के अर्थ का सरल बोध चित्त को विशेष बौद्धिक संतोष प्रदान करता है। इस गुण की रचना को पढ़ते ही या सुनते ही वह शीघ्र समझ में आ जाती है क्योंकि प्रसाद गुण वाली रचना में अत्यन्त सरल, सुबोध एवं श्रवण मात्र से अर्थ प्रतीत कराने वाले शब्द रखे जाते हैं। कुछ कवियों की रचना में

1 मंजुल मयंक अभिनन्दन ग्रन्थ से साभार

ने तीन शब्द शक्तियों का विवेचन काव्य प्रकाश में किया है–

1 अभिधा(वाच्यार्थ ज्ञान के लिये)

2 लक्षणा(लक्ष्यार्थ ज्ञान के लिये)

3 व्यंजना(व्यंग्यार्थ ज्ञान के लिये)

महावैयाकरण नागेश ने अपने **मन्जूषा** ग्रन्थ में शब्दार्थ बोध के प्रसंग में तीन वृत्तियों को स्वीकार करते हुए लिखा है कि–

'सा च वृत्तिस्त्रिधा शक्तिर्लक्षणा व्यंजना च' इस प्रकार नागेश ने भी तीन शक्तियों को स्वीकार किया है। उन शब्द–शक्तियों के स्वरूप अवलोकनीय हैं–

1 अभिधाः– आचार्य मम्मट ने अभिधा का स्वरूप प्रदर्षित करते हुए लिखा है कि– **'स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते'**

वाच्यार्थ को स्पष्ट करने वाली शब्द शक्ति को अभिधा कहते हैं। यह अभिधा का व्यापार मुख्य–व्यापार माना जाता है। इसलिये अभिधा से बोधित अर्थ को मुख्यार्थ अथवा वाच्यार्थ तथा अभिधेयार्थ कहते हैं। इस प्रकार अभिधावृत्ति से साक्षात् सांकेतिक अर्थ को धारण करने वाले शब्द को वाचक शब्द कहते हैं। सांकेतिक अर्थ वह होता है जो श्रोता को सुनने से ही ज्ञात हो जाए। सांकेतिक अर्थ चार प्रकार का होता है। 1 जाति 2 गुण 3 किया 4 यदृच्छा।

महाभाष्यकार पतंजली ने **महाभाष्य** में लिखा है कि– **'चतुष्टयीशब्दानां प्रवृत्ति'** अर्थात जातिवाचक गौ की गुणवाचक शुक्ल की कियावाचक चल की, यदष्च्छवाचक डित्थ की प्रवृत्ति, निवृत्ति, जाति गुण किया संज्ञावाचक शब्दों की उपाधि में होती है। वाचक शब्द के वाच्यार्थ अथवा मुख्यार्थ ज्ञान के लिये अभिधा का आश्रय लिया जाता है। जैसे गाय की दो सींगे होती हैं। इस वाक्य में गाय, दो सींग आदि शब्दों का प्रयोग अपने प्रचलित अर्थ में हुआ अतः ये वाचक शब्द हैं। अभिधावषत्ति के अभाव में वाच्यार्थ भी ज्ञात नहीं होगा। अतः अभिधा के महत्व को सभी विद्वान मुक्तकण्ठ से स्वीकार करते हैं।

2:लक्षणाः–

इस शक्ति के द्वारा शब्द अपने प्रचलित अर्थ के स्थान पर कोई अन्य अर्थ प्रकट करता है। इस अर्थ को लक्ष्यार्थ तथा लक्ष्यार्थ प्रकट करने वाले शब्द को लक्षक कहते हैं। यथा; सवेरे–सवेरे ही शुक्राचार्य के दर्शन हुए। इस वाक्य में शुकाचार्य का प्रचलित अर्थ तो असुरों का गुरु है। परन्तु उनकी एक ही ऑख थी। इस आधार पर शुकाचार्य शब्द से 'काना व्यक्ति' यह अर्थ निकलने पर ही दिया हुआ वाक्य सार्थक हो सकता है। अतः यहॉ शुकाचार्य शब्द लक्षक है तथा काना व्यक्ति उसका लक्ष्यार्थ है। एक पद्य बद्ध उदाहरण भी दृष्टव्य है–

उनमें गोकुल के संस्कार गायों–भैसों का सुखद संग।
ईर्ष्या होती थी देख–देख वे दूध–दही से बने अंग। **(शिवमंगल सिंह 'सुमन')**

लक्ष्यार्थ को स्पष्ट करने के लिये लक्षणा का स्वरूप प्रदर्शित करते हुए आचार्य मम्मट ने लिखा है कि–

मुख्यार्थबाधे तदयोगे रूढितोऽर्थप्रयोजनात।
अन्योऽर्थो लक्ष्यतेत्सा लक्षणाऽऽयरोपिता किया।।

इसका आशय यह है कि मुख्यार्थ के बाघ अर्थात असंगत प्रतीत होने पर मुख्यार्थ से यह सम्बन्धित अर्थ में ही लक्षणा होती है अर्थात लक्षणा मुख्यार्थ से सम्बन्धित अर्थ में ही लक्षणार्थ को स्पष्ट करती है। किन्तु यह लक्षणा रूढ़ि अथवा प्रयोजन को मानकर ही प्रवृत्त होती है। जैसे **कर्मणि कुशलः** में कुषान जाति इस मुख्यार्थ (कुश लाने वाले अर्थ) का वाघ दिखाई पड़ रहा है, क्योंकि प्राचीनकाल में कुश लाने वाले को ही कुशल कहा जाता था परन्तु में कुश लाने वाले को ही कुशल कहा जाता था परन्तु आजकल किसी भी कार्य में निपुण देखकर 'कुशलोऽयं पुरुषः कहते हैं। जैसे 'गंगायां घोषः' में मुख्यार्थ (गंगा का जलधारा रूप अर्थ) के बाधित होने पर मुख्यार्थ से सम्बन्धित तट में लक्षणा शीतलता एवं पावनता रूप विशेष प्रयोजन को मानकर होती है। आचार्य मम्मट ने इस लक्षणा के मुख्य दो भेद 1 शुद्ध 2 गौणी मानकर पुनः शुद्धा के दो भेद 1 उपादान लक्षणा 2 लक्षण लक्षणा किया है। इसके बाद इन दोंनों के सारोपा और साध्वसाना दो भेद का प्रतिपादन किया है। शुद्धा और गौणी के दो भेदों को मिलाकर मम्मट के मत से लक्षणा के कुल 6 भेद होते है। इसलिए मम्मट ने द्वितीय उल्लास में लक्षण के भेद प्रदर्शित करते हुए लिखा है कि **'लक्षणा भाड्विद्या'।** जिस प्रकार अभिधा के बिना वाक्यार्थ का ज्ञान नही हो सकता है उसी प्रकार लक्ष्यार्थ का ज्ञान लक्षणा के बिना नहीं हो सकता है। अतः लक्षणा का काव्य में गौरव स्पष्ट ही सिद्ध है।

डा0 हंरगोविन्द सिंह की अधोलिखित रचना में रूढ़िलक्षणा का प्रयोग देखिए–

"आदमी में खामियां हैं, यह सभी को ज्ञात है।
कह दिया विज्ञान ने यह बंदरों की जात है,
किंतु जब भी पंक से ऊपर उठा कोई कमल,
कह उठा कवि का हृदय, क्या बात है क्या बात है!" यहां 'पंक से ऊपर उठा कोई कमल' का तात्पर्य है– निम्न स्थिति से किसी असाधारण व्यक्तित्व का उत्पन्न हो जाना। यह इसका रूढ़िगत अर्थ हुआ। कीचड़ से कमल का ऊपर उठ जाना। किंतु मुख्य अर्थ से किसी न किसी प्रकार सम्बद्ध है और रूढ़िगत भी है। इस कारण यहां रूढ़ि लक्षणा है। इनकी एक और रचना देखिए जो रूढ़ि लक्षणा का उदाहरण है–

"हो गया यह देश अपने आप पर निर्भर,
अब नहीं परमाणु बम की शक्ति का भी डर।
पर बचाओ लेखनी पथभ्रष्ट होने से,
अन्यथा हिरोशिमा बन जायेगा हर घर।।" 'पुष्पाँजलि' पृ० 34

3:व्यंजना:–

शब्दशक्ति ~~शब्द~~ की यह सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। इसके द्वारा शब्द ऐसा चमत्कार पूर्ण भाव व्यक्त करता है जो उसके वाच्यार्थ या लक्ष्यार्थ से बिल्कुल भिन्न होता है। काव्य में व्यंग्यार्थ सर्वश्रेष्ठ अर्थ माना जाता है। व्यंजना शक्ति के माध्यम से कवि कितने अनकहे भाव प्रकट करता है। उदाहरण अवलोकनीय है–

"हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ कल वहाँ चले।" **–भगवती चरण वर्मा**

जिस स्थल पर अभिधा लक्षणा का व्यापार समाप्त हो जाता है अर्थात अभिधा लक्षणा के विरत होने पर भी जिस प्रयोजनरूप अर्थ की प्रतीति स्पष्ट होती है, उस विशेष अर्थ का बोध केवल व्यंजना से ही हो सकता हे। व्यंग्यार्थ अथवा प्रयोजन विशेष अर्थ का बोध अभिधा से नहीं हो सकता है। अभिधा केवल सांकेतिक अर्थ को स्पष्ट करती है। अतः संकेत–ग्रह के अभाव में अभिधा की प्रवृत्ति ही सम्भव नही है। इसके अतिरिक्त जिस शीतलता– पावनता– को प्रयोजन मानकर लक्षणा की जाता है,वह लक्षणा भी शीतलता– पावनता– रूप अर्थ को ज्ञात नहीं करा सकती है, क्योंकि लक्षणा की प्रवृत्ति 1 मुख्यार्थ बोध 2 मुख्यार्थ योग 3 रूढ़ि अथवा प्रयोजन रूप तीन कारणों के होने पर ही होती है।

एक व्यंजना के 1 शाब्दीव्यंजना, 2 आर्थीव्यंजना ये दो भेद होते हैं।

शाब्दी व्यंजना में शब्द की प्रधानता से व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है। इसीलिए शाब्दी व्यंजना में शब्द को हटाकर उसके पर्यायवाची शब्द को रखने से व्यंग्यार्थ समाप्त हो जाता है अतः शब्द की प्रधानता से होने वाले व्यंग्यार्थ स्थल में शाब्दी व्यंजना होती है।

आर्थीव्यंजना में अर्थ की प्रधानता से व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है तथा इसमें शब्द को परिवर्तित करके यदि समानार्थक शब्द रखेंगे तो भी व्यंग्यार्थ होगा। अतः शब्द परिवृत्ति सह–व्यंजना को आर्थी–व्यंजना और शब्द परिवृत्ति असहव्यंजना को शाब्दीव्यंजना कहते हैं। इस शाब्दी व्यंजना को दो भेद 1 अभिधामूला–व्यंजना, लक्षणा मूला व्यंजना होते हैं। द्वितीय उल्लास के अंत में अभिधा मूला व्यंजना का स्वरूप प्रतिपादित करते हुए **आचार्य मम्मट** ने काव्य प्रकाश में लिखा है कि –

अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिवे।
संयोगाधरैवाच्यार्थधीकृद व्यापृतिरञ्जनम।।

अर्थात 1 संयोग 2 विप्रयोग 3 साहचर्य 4 विरोधिता 5 अर्थ 6 प्रकरण 7 लिंग 8 अन्य शब्द की सन्निध 9 सामर्थ्य 10 औचित्य 11 देश 12 काल 13 व्यक्ति (पुर्लिंग, स्त्रीलिंग) 14 स्वर आदि के कारण अनेकार्थ शब्दों के अर्थ केवल एक अर्थ में नियंत्रित हो जाते हैं फिर भी सहदयो के हदय में अन्य अर्थों की प्रतीति होती है वह व्यंजना व्यापार से ही होती है। इसी व्यापार को अभिधमूला व्यंजना कहते है।

लक्षणामूला व्यंजनाः– को अविवक्षितवाच्य भी कहते हैं। लक्षणातमूला व्यंजना के अर्थान्तर–संकमित तथा अत्यन्त तिरस्कृतवाच्य ध्वनि नामक दो भेद होते हैं।

आर्थी व्यंजनाः– 1 वक्ता 2 बोद्धव्य 3 काकु 4 वाक्य 5 वाच्य 6 अन्य सन्निधि 7 प्रस्ताव 8 देश 9 काल 10 चेष्टादि के वैशिष्ट्य से सहदयों के हृदय अन्य विशेष अर्थ को प्रतीति कराने वाले व्यापार को आर्थीव्यंजहना कहते हैं।

कोई भी शब्द अभिधा के सम्बन्ध से वाचक और लक्षणा के सम्बन्ध से लक्षक तथा व्यंजना के सम्पर्क से व्यंजक हो जाता है। इसीलिये शब्द को वाचक लक्षक तथा व्यंजक कहन ठीक नहीं है। यही कारण है कि **आनन्दवर्द्धनाचार्य** ने शब्द और अर्थ के वाच्य वाचक भाव सम्बन्ध को शब्द का **स्वाभाविक धर्म** व्यंग्य, व्यंजक सम्बन्ध को शब्द का **नैमित्तक धर्म** कहा है। इसी भाव को **आचार्य मम्मट** ने निम्नस्थ पंक्ति से स्पष्ट किया है कि–

'स्याद् वाचको लाक्षणिक शब्दोऽत्र व्यंजकस्त्रिधा।'

अर्थात मम्मट के मतानुसार अभिधा, लक्षणा, व्यंजना इन तीन शब्द शक्ति रूप उपाधियों के कारण शब्द वाचक लक्षक व्यंजक हो जाता है। इस प्रकार उपर्युक्त विवेचना से अभिधा, लक्षणा के महत्व के साथ–साथ व्यंजना का महत्व काव्याषय समझने के लिये नितान्त आवश्यक है क्योंकि ध्वनि प्रस्थापनाचार्य मम्मट ने ध्वनि के 1 वस्तु 2 अलंकार 3 रसध्वनि भेद करते हुए रसध्वनि को असंलक्ष्यकम तथा काव्य का आत्मा रस कहा गया है। अतः शब्द शक्तियों के महत्व में तथा उपयोगिता मे संयम का अंश भी नही दृष्टिगोचर हो रहा है। व्यंजना तो काव्य का प्राण हीं है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है–1 भाषा शैली को प्रभावोत्पादक रूप देने में कल्पना का एक विशेष स्थान है। कल्पना की सहायता यहाँ पर भाषा की लक्षणा और व्यंजना नाम की शक्तियाँ करती हैं। × × × × सारा रूप विधान कल्पना ही करती है अतः अनुभव कहे जाने वाले व्यापारों और चेष्टाओं द्वारा आश्रय को जो रूप दिया जाता है वह भी कल्पना द्वारा।"

2 भाषा शैली को अधिक व्यंजक, मार्मिक और चमत्कार पूर्ण बनाने में कल्पना ही काम करती है।

7. रीतियाँ

रीति का अर्थ होता है शैली। इन शैलियों का प्रत्यक्ष सम्बन्ध गुणों से है। प्रत्येक गुण का स्वरूप उसकी शब्द योजना, सामासिक शब्दों की सरलता–जटिलता, वाक्य–विन्यास की शैली आदि पर निर्भर करता है। अतः प्रत्येक गुण के अनुरूप एक विशेष शैली, रीति या वृत्ति होती है। स्पष्ट है कि गुण केवल तीन ही माने गये हैं। अतः उनसे सम्बध रीतियॉ भी तीन ही हैं; यथा–

(i) **माधुर्य गुण के लिए वैदर्भी रीति मान्य है।**

(ii) **ओज गुण की रचना के लिए गौड़ी रीति ग्रहण की जाती है।**

(iii) **प्रसाद गुण की रचना के निमित्त पांचाली रीति स्वीकार की जाती है।**

गुणों से सम्बन्धित होने के कारण ये रीतियॉ भी रस की पोषक हैं। गुणों के आश्रित होकर ही ये रस का उपकार करती है। आधुनिक काव्य के संदर्भ में इनका कोई महत्व नहीं है। **रीतियों के नाम से प्रतीत होता है कि सम्भवतः इनका आरम्भ कमशः विदर्भ, गौड़ तथा पांचाल देश में हुआ हो।**

जहाँ वृत्ति का सम्बन्ध वर्णों से होता है, वहाँ रीति का सम्बन्ध पदों से होता है, इसी कारण **साहित्य दर्पण कार** ने पदों के मेल या संगठन को रीति कहा है और बताया है कि जैसे शरीर में अंगों का संगठन होता है वैसे ही काव्य में शब्दों एवं अर्थों का संगठन होता है। काव्य के इस संगठन का कार्य रीतियाँ करतीं हैं और वे काव्य के आत्मभूत रस, भाव आदि की उपकारक होती हैं।

पद संघटना रीतिरंगसंस्था विशेषवत उपकत्रीं रसादीनाम। **साहित्य दर्पण।**

रीतियों के चार भेद माने गये हैं 1 वेदर्भी 2 पांचाली 3 गौडी तथा 4 लाटी। परन्तु लाटी भेद को केवल रूद्रट ने ही माना है शेष सभी विद्वान रीतियां तीन ही मानते हैं और काव्य में तीन वृत्ति एवं तीन गुणों की भाँति तीन रीतियां ही अधिक प्रचलित हैं। इनका अलग–अलग विवेचन इस प्रकार है–

1 वैदर्भी:– इस रीति मे माधुर्य गुण व्यंजक सुकुमार वर्ण, असमास या मध्यम समास, सौकुमार्यवती रचना का एकत्र प्रयोग होता है इसके उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं–

प्रख्यात कवि **मंजुल मयंक** की यह रचना वैदर्भी रीति का अच्छा उदाहरण है–

" प्यारे लगते हैं चांद सितारे, लेकिन फिर भी सबसे न्यारे वे तारे जो छूट गये।

कितने मधु बसन्त मुखरित हैं मेरे इस मन के मधुवन में,
जाग रहे हैं प्रतिपल कितने मादक मोहक स्वप्न नयन में
कितने ही सुख के क्षण लूटे मैंने अपने लघु जीवन में,
जिनकी अक्षय अजर अमर छवि अंकित है मन के दर्पण में।

लेकिन फिर भी सबसे प्यारे, वे निष्ठुर निर्मम निर्मोही क्षण जो मुझको लूट गये हैं।"

2 पांचाली:– इस रीति में न हो तो कठोर पद हेते हैं और न सुकुमार, अपितु दोनों के अन्तरालवर्ती पदों की योजना की जाती है। मुख्यतया पंचम वर्णों से युक्त पदों का प्रयोग इस रीति मे किया जाता है। आलोच्य कवियों की रचनाओं में इस रीति के उदाहरण अधिक मिलते है। एक रचना देखिए–

विवाह का रूप इस दहेज के कारण इतने विकृत हो गया है कि उसे एक सौदे की तरह माना जाने लगा है, इसी भाव को **डा0 हरगोविंद सिंह** ने इस प्रकार व्यक्त किया है–

"ब्याह सौदा बन गया है हर कदम पर चालबाजी,
बिन कराये खर्च क्यों हो बेटियों के बाप राजी।
नाम के समधी मगर दिल मे भरे तीखी विषमता,
भेंटते से जान पडते खान अफजल औ शिवाजी।"

3 गौड़ी– इस रीति के अन्तर्गत ओज, गुण, कठोर वर्ण वाले पद, दीर्घ समास, विकट रचना आदि का एकत्र समावेश होता है। कुछ कवियों की रचनायें उदाहरण के लिये नीचे प्रस्तुत है–

श्री रामगोपाल दीक्षित की यह रचना कितनी ओजपूर्ण है जिसमें चित्तौड़ पर अलाउद्दीन के प्रथम आक्रमण का वर्णन है–

" धां धां कर तोपें छूट चलीं, लोगों में हा–हा कार मचा,
कंप उठीं दुर्ग की दीवारें, गढ़ बीच प्रलय संहार मचा।
होती थी धरती डगर–मगर सेना के किया कलापों से
रणभूमि धंसी सी जाती थी, खुदकर घोड़ों की टापों से
जब जोश ज्वार में दल पयोधि, बढ़कर गढ़ से टकराता था
तब लघुतम तरणी सदष्ष दुर्ग चित्तौण डगमगा जाता था।।"

8. प्रतीक और बिम्ब–विधान

किसी भी कवि के प्रतीक और बिम्ब उसकी कला के एकान्त परिचायक हैं। उसकी कला की श्रेष्ठता का मानदण्ड ही उसकी कल्पना और उसकी कल्पना का सबसे बड़ा प्रमाण है– प्रतीक और बिम्ब। आधुनिक युग में जैसे–जैसे कला का विकास होता जा रहा है बिम्ब और प्रतीक का क्षेत्र भी बढ़ता जा रहा है। **एजरापाउण्ड** का तो कहना है– **जीवन में केवल एक सशक्त बिम्ब का निर्माण करना अनेक ग्रन्थों के प्रणयन से अधिक अच्छा है।** वस्तुतः बिम्ब और प्रतीक काव्य के सार्वभौम तत्व हैं जो हर देश, हर काल के श्रेष्ठ साहित्य के मानदण्ड हैं।

बिम्ब को स्पष्ट करते हुए **कॉलरिज** ने कहा था "बिम्ब किसी संवेदना की अनुकषति कोई भाव, कोई मानस कि घटना, कोई अलंकार या वस्तुओं की तुलनात्मक ईकाई तक हो सकता है, केवल उसमें किसी तथ्य को प्रस्तुत करने की सामर्थ्य होनी चाहिए।"

ज्ञानेन्द्रियों द्वारा संचित विभिन्न अनुभव हमारे अस्तित्व में संस्कार रूप में विधमान रहते हैं। जब काव्य की कोई ऐसी अभिव्यक्ति सामने आती है जो हमारे संचित अनुभव के निकट है तब हमें रसानुभूति में सुविधा होती है। कल्पना का आश्रय लेकर शब्दों के माध्यम से कवि जो रागात्मक चित्र उपस्थित करता है, उसे ही बिम्ब कहते हैं। कवि अपने मनोभाव को बिम्ब के माध्यम से इन्द्रिय ग्राह्यरूप में प्रस्तुत कर देता है और उसका रागात्मक चित्र पाठक या श्रोता के संचित अनुभव को जागृत कर देता है। इस प्रकार बिम्ब– विधान के द्वारा काव्य की सम्प्रेशण–क्षमता बढ़ जाती है। पाश्चात्य समीक्षा–शास्त्र में इसे काव्य–सौन्दर्य का महत्वपूर्ण उपादान माना जाता है।

बिम्ब में सबसे अधिक महत्व दृष्येन्द्रिय का है और बिम्ब शब्द से सामान्यतः चक्षु–गोचरता का ही बोध होता है, परन्तु काव्यानुभूति में चक्षुगोचरता की ही तरह त्वचा, कान नासिका तथा रसना सम्बन्धी बिम्बों के बोध में सहायक बनते हैं। पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर जो विभिन्न प्रकार के बिम्बों के बोध में सहायक बनते हैं। पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर जो विभिन्न प्रकार के बिम्ब निर्धारित किये गये हैं, वे इस प्रकार हैं– **1 चाक्षुषबिम्ब 2 स्पर्श बिम्ब 3 श्रवण बिम्ब 4 घ्राण बिम्ब**

गति की दृष्टि से प्रत्येक बिम्ब के दो भेद होते हैं– गतिशील बिम्व तथा स्थिर बिम्ब।

गतिशील बिम्ब में चल–चित्र की भॉति किया–कलापों की अनवरत साधना रहती है।

स्थिर बिम्ब एक सजी–सजाई झाँकी जैसा सौन्दर्य उपस्थित करता है।

उदाहरण अवलोकनीय हैं–

"**अब दीपक बुझने वाला है प्राणों की वर्तिका बनाकर**
जलता रहा प्रणय से लड़कर, केवल स्नेह सुधा के बल पर,
लेकिन कब तक जल पायेगा स्नेह खतम होने वाला है।"

X X X X X X

"खोजने जब चला मैं तुम्हें विश्व में मन्दिरों ने बहुत कुछ भुलावा दिया,
खैर पर यह हुई उम्र की दौड़ में ख्याल मैंने न कुछ पत्थरों का किया।
पर्वतों ने झुका शीष चूमे चरण बॉह डाली कली ने गले में मचल,
एक तस्वीर तेरी लिए किन्तु मैं साफ दामन बचाकर गया ही निकल।"

X X X X X X

" जो सुबह रंक था शाम राजा हुआ, जो लुटा आज कल फिर बसा भी वही,
एक मैं ही कि जिसके चरण से धरा रोज तिल–तिल धसकती रही उम्रभर।।"

9. प्रकृति चित्रण

कवियों को चिरकाल से ही सृजन की प्रेरणा प्रकृति से मिलती रहती है। प्रकृति के उन्मुक्त प्रांगण में क्रैंच युगल की दशा से करूणाभिभूत होकर आदि कवि **बाल्मीकि** के मुख से प्रथम छन्द बरबस ही फूट निकला था। लोक जीवन प्रकृति की गोद में पलता है। अतः काव्य में उसके विविध रूपों का प्रतिबिम्बित होना अत्यन्त स्वाभाविक है। आलोच्य काव्य में भी प्रकृति चित्रण मुख्यतः तीन रूपों में मिलता है–

आलम्बनगत, उद्दीपनगत तथा अलंकारगत।

आलम्बनगत चित्रण में कवि प्रकृति से प्रभावित होकर उसका चित्रण स्वतन्त्र रूप से प्रायः वर्णन के उद्देश्य से करता है। इस प्रकार के चित्रण में प्राकृतिक सौन्दर्य, नदियों की कल–कल ध्वनि, स्वच्छ जल से भरे हुए जलाशय, नाना प्रकार के वृक्षों की पंक्तियाँ, पक्षियों का कलरव आदि प्रतिबिम्बित होता है।

ग्रीष्म की घोर तपन के बाद जब मोतियों की लडी की भाँति झिलमिलाती हुई पहली फुहार पडती है तब सभी जीवधारियों को ऐसा लगता है कि प्राणदायिनी अमृत रसधार यही है। वातावरण सोंधी–सोंधी महक से भर जाता है और मूर्च्छित पड़ी मिट्टी में जीवन का स्पंदन होने लगता है। मयूरों के नृत्य, आनन्दमग्न मण्डूकों ध्वनि तथा नाना प्रकार के जीव जन्तुओं की गति विधियों से पर्यावरण भर जाता हैं। नयी–नयी हरियाली के बीच रेंगती हुई लाजवंती बीर– बहूटियॉ किसी कुल वधू की माँग में सिन्दूर भरती–सी प्रतीत होतीं हैं।

'बरसे महाराज झडाझड़ियाँ'– डा0 हरगोविन्द सिंह

उद्दीपन रूप में प्रकृति विरही व्यक्ति के मनोभावों को तीव्र कर देती है। वर्षाकाल में शीतल पुरवाई भी तन–मन को झुलसाती जान पड़ती है। ऐसा लगता है कि मयूर की वाणी में भी अग्नि भरी है। नये–नये किसलय भी आग की लौ प्रतीत होते हैं। काली–काली घटायें, शीतल पवन के झकोरे तथा फुलवारी का सौन्दर्य, ये सारे उपादान काम भाव को अधिकाधिक जागृत करते हैं। अतः अत्यन्त व्याकुल होकर विरहिणी इन सबसे बचना चाहती है।

प्रकृति का **अलंकार गत चित्रण** उपमा, व्यतिरेक, उत्प्रेक्षा, रूपक, मानवीकरण, अन्योक्ति, कारकदीपक आदि अलंकारों के रूप में होता है।

आलोच्य काव्यों में अभिव्यक्ति पक्ष

काव्य-शास्त्रीय कसौटी पर आलोच्य काव्य -

कविता तथा स्वर्ण की परीक्षा करते समय मुख्य रूप से दो ही बातें देखी जाती है- असलियत और गुरुत्व। डा. भागीरथ मिश्र के शब्दों में "कविता की असलियत उसकी अभिव्यक्ति में होती है और गुरुत्व उसके उद्देश्य में-भावों की गहराई में, विचारों की उच्चता में, मानवता के मंगल में, आनन्द अभिव्यक्ति में रहता है और जीवन की प्रेरणा और प्रगति भावों में।"1

काव्य, साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विधा है। यह विधा व्यक्ति के भाव पक्ष की अभिव्यक्ति का तथा उसकी अनुभूतियों को लौकिक समाज में प्रतिबिम्बित करने का एक सशक्त माध्यम है। काव्य, कला की दृष्टि से एक साधना है किन्तु भाव एवं सत्यानुभूति की दृष्टि से एक तपस्या है। शब्द की शक्ति की जितनी अच्छी परख काव्य में होती है उतनी किसी अन्य विधा में संभव नहीं है। कविता के वाह्य कलेवर के रूप में छंद, अलकार और लय एवं गति का अपना महत्व है किन्तु, काव्य की वास्तविक आत्मा सत्यानुभूति एवं हृदय की सरल भावाभिव्यक्ति ही है। जो कवि काव्य के वाह्य श्रृंगार के साथ अन्त:सौन्दर्य के इस मर्म को जानते हैं, वे सम्प्रेषणीय एवं साम्मान्य काव्य की सृष्टि कर पाते है।

आलोच्य काव्यों का कलापक्षीय विवेचन -

(1) श्री शिवशंकर मिश्र - भाषा

भाषा पर श्री मिश्र जी का असाधरण अधिकार है शब्द चयन सरल होते हुए भी उसमें लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता एवं सांकेतिकता का पुट अद्भुत रूप से अनुस्यूत है। अनुभूति की प्रेषणीयता से मिश्र जी के गीत सफल रहे हैं। कल्पना की प्रचुरता होते हुए भी उनके गीतों समसामयिक सन्दर्भो की यथार्थता की उपस्थिति सराहनीय है। साथ ही मानवीय करुणा, दया, संवेदना आदि जीवन मूल्यों के स्वर भी यथा स्थान मुखरित कर इन गीतों ने अपनी अभिव्यक्ति की सार्थकता में चार चाँद लगा दिए हैं। एक गीत में उनका दृढ़ विश्वास स्पष्ट रूप से उभरा है-

"खोल दो नयी सुबह के द्वार अंधेरा खुद ही होगा दूर,
दूर हो जाने को मजबूर द्वार यह तो नवयुग का द्वार, स्वप्न की सुधियों का संसार।
जहाँ पर नहीं राग या द्वेष प्यार ही प्यार, प्यार ही प्यार।
दया ममता समता सद्भाव बने जिस देहरी के उपहार।खोल दो नयी सुबह..

1. डा0 भागीरथ मिश्र- परिचय, "बौछार"

"यदि मिश्र जी की मनोनुकूल शब्दावली में कहें तो इन गीतों को प्रणामी. पीयूषवर्षी, कल्पवृक्षी, अनुरागी, मनोयोगी, पराकाष्ठी, मनोकामी, मधुस्वादी आदि भाववाचक संज्ञाओं से बने विशेषणों से संज्ञापित किया जा सकता है।"1

कवि ने केवल अपनी अनुभूतियों को जीवन की वास्तविकताओं से जोड़ा है, अषितु काव्य भाषा को भी उनके समीप लाने का सराहनीय प्रयास किया है। इसलिए इनके काव्य में भाषा की अनगढ़ता, क्लिष्टता, दुरुहता और अस्पष्टता का अभाव है। प्रतीकों, विम्बों, अप्रस्तुतों एवं परम्परागत छंदों का भी इनके गीतों में सहज विन्यास है।

श्री मिश्र जी के गीतों में दार्शनिक भावों के साथ ही स्वानुभूति, प्रणय-विरह सम्बन्धी कोमल मधुर भावों की मार्मिक अभिव्यक्ति।

2.शैली- श्री मिश्र जी का प्रभूत गीत-साहित्य अप्रकाशित डायरियों में भी हस्तलिखित पड़ा हुआ है। गीतों के अतिरिक्त उनकी डायरी में 67 सवैया छंद, मुक्तक तथा कुछ क्षणिकायें भी शोधकर्ता को अवलोकनार्थ दी गई। मिश्र जी के गीत वस्तुतः बहुत ही उच्चस्तर के हैं। इनमें स्वानुभूति, प्रणय, विरह. सम्बन्धी मधुरभावों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। उत्तर छायावादी गीत शिल्प की लाक्षणिक व व्यंजना प्रधान शैली, भावानुकूल शब्दावली की कोमलता. संगीतात्मकता, संक्षिप्तता तथा लयात्मकता बड़ी अवलोकनीय है।

3.छन्द- श्री मिश्र जी के छंदबद्ध रससिक्त काव्य की कोमल कान्त पदावली तथा भावप्रवण गीत पाठक के सहजतः रस निष्पत्ति की मधुरानुभूति कराते हैं। इनकी रूबाइयाँ अपनी संजीदगी और खानगी में दिलरुबा रहीं हैं। एक छोटी सी भावांजलि में मिश्र जी ने राम व गाँधी की एक साथ वंदना की है-

"जिसकी कृपा किरण से भारत-भाग्य भवन सुखधाम है।
उसी राम के पुण्य पदों में, गाँधी एक प्रणाम है।।"

श्री मिश्र जी की एक क्षणिका दृष्टव्य है-

"खेलते रहना है तो हारो, हारते रहो,
जीत पाओगे तो खेल कैसे चलेगा?"

श्री मिश्र जी का अधिकांश उत्कृष्ट काव्य गीत काव्य है किन्तु उनने सवैयाछंद भी लिखे हैं जिसमें उनकी छंदरचना के अनूठे कौशल के दर्शन होते हैं। उदाहरणार्थ उनका भक्ति भावपूर्ण निम्न सवैया अवलोकनीय है-

"जबसे तुम नाथ मिले मुझसे, जग से नहीं शेष लगाव रहा।

---

1. डा0 लक्ष्मीशंकर मिश्र- "निशंक", अवशेष पुष्प, पृष्ठ 9

फिर ऐसे अभिन्न बने हो स्वयमेव न भेद रहा न दुराव रहा।
जग की इन मोहक वीथियों से नहीं मोह रहा नहीं चाव रहा।
तुम्हें पाकर नाथ सनाथ हुआ न अशांति रही न अभाव रहा।।"

कविवर श्री मिश्र जी की भावुक अभिव्यक्तियों के दर्शन उनके गीतों के माध्यम से होते है- उनका एक गीत है-

" समय ही मुझको नहीं मिला, तन का, चाकर मन का चाकर,
चाकर घर में, चाकर बाहर, लिखा-पढ़ा जो भी वह डर-डर,
स्वजनों में समझा मैं सचमुच बदकिस्मत निकला।।
इस पर भी कुछ पढ़ा-लिखा है, कुछ थोड़ा सा तुम्हें दिखा है,
कुद रद्दी के साथ बिका है। क्यों पतवार से पूंछ रहे हो, तू क्यों नही खिला ?"

अलंकरण- श्री मिश्र के प्रणय गीत परिमाण की दृष्टि से अधिक है, जिनमें रागात्मक भावों का सरल, सहज एवं स्वाभाविक प्रकाशन है, जो छायावादी प्रतीकात्मकता और नवगीतवादी बौद्धिक दुराग्रह से मुक्त हैं। प्रिय के प्रति तन्ययता ही कवि को गीत सृष्टि के लिए विवश करती है। श्री मिश्र जी ने अलंकारों का प्रयोग सफलता पूर्वक किया है। आपके काव्य में परम्परागत एवं नवीन, दोनों अलंकारों का सौन्दर्य विद्यमान है; यथा-

पद ध्वनि लगी देहरी देवग्रही- (अनुप्रास)
प्रतिक्षा हुई पूर्ण सुन एक आहट, × × ×
मन कि ज्यों अविराम पीपल पात है, × × × (उपमा)
चीख-चीख कर उमर कह रही अब है किसका भय (मानवीकरण)

2. श्रीमती विद्यावती मिश्र के काव्य की कलापक्षीय विशेषताएँ-

1. भाषा- कविता की सार्थकता भाषा की बोध गम्यता में है। काव्यसृजन-स्वान्तः सुखाय की दृष्टि से किया जाता है किन्तु इसका उपयोग पाठक करते हैं। भाषा के तीन गुण होते हैं- ओज, माधुर्य और प्रसाद। इन तीनों ही गुणों से युक्त कविता सपाट कविता बन जाती है।

श्रीमती मिश्र की भाषा में मधुरता के साथ बोधगम्यता भी है। कवयित्री की बात पाठक के हृदय में उतरकर स्वतः समझ में आ जाती है। इनकी भाषा में प्रवाह, प्रांजलता एवं मधुरता का समन्वय है। छायावादी युग के अनुरूप भाषा कोमल कान्त पदावली युक्त है। भाषा का एक उदाहरण अवलोकनीय है-

"देख सके जिससे भूला मन, वह विवेक की राह पुनीता;
जिसको पावन करती आई, युग-युग से रामायण गीता;

" मुखरित जिसके प्रति कण-कण से, दिव्य शान्ति समता का स्वर हो!
जिससे आदि काल से व्यापक, जग का अन्धकार मिट जाये;
सत्यं शिवं सुन्दरं द्वारा, मानव निज आदर्श बनाये;
मानवता के पद पखारने को, बहती कल काव्य लहर हो!" "ज्योति",पृष्ठ 9

भाषा की समरसता श्रीमती मिश्र की विशेषता है। गीत हो या संगीत, प्राचीन साहित्य हो या मार्मिक अनुभूति की अभिव्यक्ति, बाल साहित्य हो या पद्य कथा भाषा इनकी भाषा प्रवाहयुक्त है।

काव्य के चार अंग है- महाकाव्य, खण्डकाव्य, प्रबन्धकाव्य, गीतिकाव्य। गीतिकाव्य के अन्तर्गत गेयता, संक्षिप्तता, सम्प्रेषणीता भाव-संकुलता आदि गुण समाहित रहते हैं। किसी समीक्षक ने गीतिकाव्य के स्वरूप के विषय में ठीक ही कहा है "संगीत के आरोह-अवरोह पर जब कविता के कमनीय चरण नृत्य करने लगते है, कवि की अन्तरिम भावानुभूतियों की सौन्दर्यम भागीरथी में सब संगीत की कालिन्दी का मिलन होता है, तब गीत का जन्म होता है।"1

उपर्युक्त समीक्षक का यह कथन समीचीन है। अभिनव विकास के आदिक्रम में अभिव्यक्ति तादात्मक रही है। काव्य की उत्पत्ति नाद से है। इसदृष्टि से श्रीमती मिश्र का समस्त काव्य गीतिकाव्य के अन्तर्गत आता है। इन गीतों में गेयता, लघुता, आत्माभिव्यंजना, संगीतात्मकता, आवेश एवं प्रवाहगत एकरूपता आदि सभी गुण गीत के वैभव में श्रीवृद्धि करते है। श्रीमती मिश्र के गीतों को उत्कृष्ट गीतों की संज्ञा से अभिहित किया गया है।

2.शैली- श्रीमती विद्यावती मिश्र की रचना-शैली की प्रमुख विशेषताएं उसकी भावतरलता, वैयक्तिकता, प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता, आलंकारिकता, छायावादी तथा रहस्यात्मक अभिव्यक्ति आदि है।

3.छन्द- कविता और छन्द के बीच घनिष्ट सम्बन्ध होता है। कविता हमारे प्राणों का संगीत है, छन्द है हत्कम्पन। कविता का स्वभाव ही छन्द में लयमान होता है। गीतिकाव्य की अभिव्यक्ति स्वभावतः ही छन्दमय होती है।

प्राचीन कवियों की कविताओं को छन्दों का नामकरण पिंगल शास्त्र के अन्तर्गत किया गया है। इन छन्दों में मात्रिक एवं वर्णिक दो कोटि के छंद सम्मिलित है। मात्रिक छंदों में दोहा, चौपाई, कुण्डली, हरिगीतिका, गीतिका आदि छंद आते है। वार्णिक छंदों में सवैया, द्रुत विलम्बित, मालिनी, वंशज आदि छंद आते है।

---

1. डा0 मन्जु गुप्ता- हिन्दी में गीतिकाव्य, पृष्ठ 1

मात्रिक छन्दों में दोहा, चौपाई, कवित्त आदि का प्रयोग हिन्दी के वीर गाथाकाल से रीतिकाल तक हुआ। वार्णिक छन्दों में केवल सवैया का प्रयोग प्राचीन कवियों ने किया, मालिनी, वंशज आदि छंद संस्कृत के वार्णिक छंद कहलाते हैं। इनका प्रयोग द्विवेदी युग में श्री हरिऔध जी के 'प्रिय प्रवास' में, अनूप शर्मा के 'सिद्धार्थ' महाकाव्य में किया गया।

द्विवेदी युग से अनेक नवीन छन्दों एवं गीतों की धुनों का अविष्कार हुआ। इन गीतों का नामकरण अभी तक नहीं किया जा सका। द्विवेदी युग के कवियों ने प्राचीन छन्दों को तोड़कर ही अपने नये छन्दों की रचना की। श्री मैथिलीशरण गुप्त ने नये छन्दों का प्रयोग हरिगीतिका आदि छन्दों को तोड़कर किया। अन्य गीतकारों ने चौपाई आदि छन्दों को तोड़कर उन्हें नया रूप प्रदान किया।

गीतिकाव्य में 'टेक' भी आवश्यक है। टेक की परम्परा गीतिकाव्य के विकास क्रम में 12वीं शताब्दी में *श्री अब्दुल हसन खुसरो* ने स्थापित की।

श्रीमती मिश्र ने इसी प्रकार के गीतों का प्रणयन किया। यथा-

"नहीं यदि भर पाओगे देव, काव्य के प्रतिअक्षर में प्रीति!
निराश्रय और बिना आधार, खड़ी कब हो पाई दीवार,
बिना पाये कोई भगवान, न होगा मंदिर कभी पुनीत! अधूरे रह जायेंगे गीत!!
रागिनी में स्वर जैसे बंद, और पिंगल में जैसे छन्द,
उसी विधि होगा अगर न लीन तुम्हारी श्रद्धा में संगीत! अधूरे रह जायेंगे गीत!!"

("ज्योति" पृ.64)

छन्द अथवा गीतों में लय एवं तुकों का होना आवश्यक है। कवियत्री के समस्त गीत आत्माभिव्यंजना से अभिपूरित हैं।

अलंकार-सौष्ठव :- प्राचीन कवि अलंकारों का प्रयोग आने काव्य में सप्रयास करते थे। आधुनिक कवि अथवा गीतकार अलंकारों के प्रयोग पर अधिक ध्यान नहीं देते हैं। भावाभिव्यंजना के समय सहसा ही अलंकारिक शब्द इनके काव्य में समाहित हो जाते हैं आधुनिक कवि अलंकारों के दास नहीं। इनके काव्य में अलंकार स्वत: ही भाषा में सम्मिलित हो जाते हैं।

श्रीमती मिश्र के गीतों की भी यही स्थिति है। यथा-

एक गीत की पंक्तियों में अलंकार योजना दृष्टव्य है-

"कल्पना कर लूं प्रिय तुमने पुकारा, कल्पना कर लूं कि कर तुमने पसारा, कल्पना कर लूं मिला मुझको सहारा, कल्पना कर लूं मिला मुझ को किनारा, कल्पना कर लूं तुम्हारा पास आना।× × × (अनुप्रास) ("ज्योति"पृ.10)

शाप बन जाते हैं वरदान, विमोहित हो जाते हैं प्राण।

तिमिर ही बन जाता रजनीश!

किसी को अपने सम्मुख देख, विनय से झुक जाता है शीश!! (विरोधाभास)

("श्रद्धा" पृ.7)

आधुनिक काव्य में मानवीकरण, प्रतीक आदि का भी समावेश हुआ है। कवयित्री ने अपने गीतों में प्रकृति का मानवीकरण सहज रूप से किया है यथा-

मुझे अकेला छोड़ अभी ओ फागुन मत जाओ!

मैं दुख भूली रही इसी से प्रतिक्षण मुस्काओ!! " × × ×

"मेरा प्रिय है दूर, अभी ओ सावन मत बरसो!

अभी दूर मधुमास, प्रतीक्षा क्षण मत बरसो!!"(मानवीकरण) ("प्रतीक्षा"पृ.5)

बिम्ब योजना- किसी वस्तु का मानवोचित अथवा कल्पनोचित वर्णन ही विम्ब है। जगत की वस्तु को यथावत रूप में देखकर अपनी ओर से रूपक, उपमा आदि के सहारे जब उनको एक नया रूप प्रदान किया जाता है तो वह नया रूप बिम्ब कहलाता है। बिम्बों के अनेक रूप होते हैं- दृष्टिबिम्ब, वस्तुबिम्ब, भावबिम्ब इत्यादि। श्रीमती मिश्र की काव्य कृतियों में भी बिम्बों का सुन्दर चित्रण हुआ है। यथा-

"कितने वर्षो तक रोयेगी पावस दीवानी!

स्वर्णस्मृति बिजली बन चमकी पीड़ा की गर्जन,

और विरह का एक प्रहर ही बन आया सावन,

हृदय-सिंधु में ज्वार सदृश उमड़ा दृग का पानी।

कितने वर्षो तक रोयेगी पावस दीवानी!!" ("श्रद्धा" पृ.40)

प्रतीक-योजना- कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ भर देने की इच्छा और चेष्टा का फल है प्रतीक। साधारणत: प्रतीकों की गणना अलंकरण प्रणाली में होती है। हमारे साहित्य में उनका प्रयोग उपमान के समकक्ष हुआ। किन्तु प्रतीक और उपमान में अन्तर है। प्रतीक में सादृश्य की आवश्यकता नही है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रतीकों के माध्यम से इसी विषय का प्रतिविधान करना प्रतीक विधान है।

प्रतीकों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

सांस्कृतिक प्रतीक, प्रकृति प्रतीक और सैद्धान्तिक प्रतीक।

श्रीमती मिश्र के काव्य में प्रतीकों का सुन्दर चित्रण किया गया है। यथा-

"दिन उतने ही बड़े कि जितनी मानव की अभिलाषा,

रातें उतनी छोटी जितनी चिर विरही की आशा,

तारों से खिलवाड़ कर रहीं हैं रवि-शशि की घातें!
लम्बें-लम्बें दिवस हो गये, छोटी-छोटी रातें!" ("श्रद्धा" पृ.26)

एक और प्रतीक का उदाहरण अवलोकनीय है-

"नाव मैं, तुम बन कर्णाधार, हाथ में लेकर के पतवार,
बता पाये यदि मुझे न देव पार तक जा सकने की रीति! अधूरे रह जायेंगे गीत!!"
("ज्योति" पृ.64)

3. श्री बाबूलाल जैन 'जलज' के काव्य की कला पक्षीय विशेषताएँ-

(1) भाषा- श्री बाबूलाल जैन 'जलज' ने खड़ी बोली को साहित्यिकता, सरसता और अर्थ-गाम्भीर्य प्रदान किया। आपकी भाषा में एक रूपता है, प्रवाह है, प्रौढ़ता है, लोकोक्तियों और मुहावरों को प्रयोग है और रचना लाघव है। भाषा का रूप अपेक्षाकृत सरल है; यथा-

"पग-पग पर दी अग्नि परीक्षा, हुआ किन्तु उद्धार नहीं,
नारी को क्या, अपने ढंग से जीने का अधिकार नहीं।।

भाषा का दूसरा रूप शब्दार्थ वैभव से सुसज्जित है: यथा-

बना कूप-मंडूक खोजता, डबरों में जो गंगा जल।

(2) शैली- श्री जलज जी की रचना शैली ने विविध स्वरूप धारण किए हैं। वह वर्णन प्रधान तथा इतिवृत्तात्मक भी है और प्रौढ़ता, भावात्मकता, अलंकारिकता तथा उक्तिवैचित्र्य से युक्त भी दृष्टिगोचर होती है। उसमें भाषा की लाक्षणिकता का पूरा-पूरा उपयोग दीखता है। आपने गीति शैली का प्रयोग किया है: यथा-

"आत्म-बसन्त एक काफी है, सौ जीवन पतझार से।
एक आत्म चिन्गारी काफी, सौ बुझते अंगार से।।× × ×
ऊँचा मस्तक चौड़ी छाती, फौलादी हैं बाहें,
देव मानवो! उठो तुम्हीं पर, सबकी टिकीं निगाहें।"

(3) छन्द- श्री 'जलज' का छन्द-प्रयोग वैविध्य पूर्ण है। गीतिका, हरिगीतिका, मालिनी, घनाक्षरी के साथ-साथ मधुर गीतों का प्रयोग भी आपने सफलता से किया है। अन्त्यानुप्रास (तुक) का आपके पास अक्षय कोष-सा रहा है। तुकों के मोह में कहीं-कहीं भाव-गाम्भीर्य भी प्रभावित हो गया है। आपने अधिकांश तुकान्त छन्दों में ही रचना की है। एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"सुर दुर्लभ मानव तन पाकर जो प्रभु के गुण गाये।
सत्य सरोवर में जिसका मन, शतदल-सा खिल जाये।।

गीतिका छन्द का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"हो गया आकार खड़ा मैं, द्वार पर भगवान तेरे।

दिव्य अभिनव ज्योति पाकर, आज पुलकित प्राण मेरे।।"

(4) अलंकार- श्री जलज जी ने अलंकारों का प्रयोग सफलतापूर्वक किया है। आपके काव्य में परम्परागत एवं नवीन दोनों अलंकारों का सौन्दर्य विद्यमान है; यथा-

"सतत् साधना करो सत्य की, बोधिवृक्ष की छांव में। × × ×
त्याग तप निष्ठा सृजन के, गीत निज गाता रहूँ मैं। × × ×
पर पीड़ा से द्रवित हो उठा, जिसका तन मन जीवन सारा । (अनुप्रास)

× × × × × ×

हिमगिरि सी विपदाओं में भी, खोये जो न विवेक को।
लेकर लाल मशाल हाथ में, सूरज-सा रे जलता चल।। (उपमा)
दुख की रात गुजर जायेगी, प्राणदीप तुम जलते रहना।
मन-मन्दिर में संकल्पों के, पूजा थाल सजाना। (रूपक)

4. डा0 त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल -

(1) भाषा- डा. ब्रजबाला जी के काव्य का प्रारम्भ ब्रजभाषा की रचनाओं से हुआ और उन्होने ब्रजभाषा में अनेक सुन्दर कवित्त, सवैया, दोहा, पद आदि लिखे हैं। बाद में उन्होने हिन्दी में गीत लिखने शुरू किये। खड़ी बोली को आपने परिष्कृत, प्रवाहमयी, संस्कृतनिष्ठ भाषा के रूप में अपनी काव्य भाषा बना लिया। उनकी भाषा के विविध रूपों की बानगी इस प्रकार है-

व्यावहारिक भाषा-"अपना पथ मै स्वयं चुनूँगा, पद चिन्हों पर चल न सकूँगा,
मै चलता हूँ अपनी गति से मुझे काम क्या जग सम्पत्ति से?
बंधे-बंधे से पाँव धरा पर अब न अधिक मै और धरूँगा।"

संस्कृतनिष्ठ भाषा- मत डरो लख पंथ पर साथी विफलता,
पग बढ़ाओ है निकट मंजिल, सफलता।
चुभ रहे जो शूल उनको फूल समझो, इस तरह हर वेदना आसान होगी।
सोच लो प्रतिकूल भी अनुकूल अपने, इस तरह विपदा स्वयं वरदान होगी।
तोड़ दो पथ में खड़ी चट्टान बाधा, त्याग दो मन से उठी अपनी विकलता।"

ध्वनि सौन्दर्य- श्री ब्रजबाल जी का शब्द-चयन ध्वन्यात्मक सौन्दर्य से भी समन्वित है; यथा-

"मेरी वीणा के शिथिल तार रे! कौन बजाता बार बार ?
चुपके से आया आज कौन? किसने छेड़े आ, तार मौन ?
मै भूल रहा निज व्यथा-भार। रे! कौन बजाता बार-बार ?
किसकी ले अनुमति, छुई वीन? किसने भर दी गति, हुई लीन ?

यह गुन-गुन-गुन करता गुंजन, यह कली-कली का दृग बंधन।
आ रही अमा की नूपुर-धुन, यह रूप चाँदनी कितने दिन।। × × × "

स्पष्ट है कि कविवर डा. ब्रजवाल का भाषा पर असाधारण अधिकार है। शब्द चयन कहीं भी छंद अथवा लय पर बोझ नहीं बना है। आपकी भाषा चुस्त, संयत और बिम्व को उभारने को पूर्ण सक्षम है।यथा-

"दुख के कारण है स्वप्न प्रचुर, जो छिप जायेंगे लख प्रभात।
मत हो उदास कर आज बात।"

शैली- डा0 ब्रजबाल जी की काव्य शैली में परम्परागत तथा नव्य अभिव्यक्ति कौशल का सुन्दर समन्वय है। उसमें ओज, माधुर्य और प्रसाद-तीनों गुणों की सुसंगति है। विषय और भाव के अनुकूल विविध शैलियों का प्रौढ़ प्रयोग उनके काव्य में प्राप्त होता है। वर्णनात्मक, भावात्मक, आलंकारिक, सूक्तिपरक, प्रतीकात्मक आदि शैली-रूप उनकी अभिव्यक्ति को पूर्णता प्रदान करते हैं। वर्णानात्मक शैली में शब्द चित्रांकन की कुशलता दर्शनीय होती है; यथा-

"बहुत युग पहले मथुरा-बीच, रूपसी रहती एक ललाम।
अलौकिक रूप-राशि सौन्दर्य, नाम वासवदत्ता अभिराम।।
मनोरम भुवन मोहिनी बाल, नृत्य-गायन में परम प्रवीण।
सहज मुस्कान वाक-चातुर्य, कला-निष्णात, स्वधर्म धुरीण।।("अनुताप"पृ.1)

जीवन के युग बोध को कवि सामासिक शैली में इस तरह प्रस्तुत करते हैं-

"अतीत में समा सके, वह वर्तमान,
वर्तमान कुछ नहीं-सिर्फ काल-ज्ञान, दृश्य को अदृश्य से जो जोड़ दे भविष्य है,
रूप अरूप से जो मोड़ दे-मनुष्य है।"

छन्द विधान- डा0 ब्रजबाल जी ने विविध छन्दों के माध्यम से काव्य को सफल अभिव्यंक्ति प्रदान की है। भावानुसार छन्द परिवर्तन "अनुताप" में दर्शनीय हैं। "इन्दु एक बिन्दु दो" के छन्द उसके विषयों के सर्वथा अनुकूल हैं। गीतों का भी सफल प्रयोग ब्रजबाल जी ने किया हैं। भाषा की तत्समता छन्द की गेयता और लय को प्रभावित नहीं करती है। आपके गीतिकाव्य में समय एवं आयु के अनुकूल गहन यथार्थ तथा सत्यानुभवों पर आधारित भावनाओं का समाहार हुआ है। प्रतीकवादी शैली में कवि लिखते हैं-

"किसी भी क्षण फेंका जा सकता हूँ, अनुपयोगी समझ,
प्रयोग की हुई पेंसिल का- अन्तिम सिरा हूँ, घिसा हुआ तन है- चुका हुआ सुरमा,
स्वामी की इच्छा पर- हाथों में ठहरा हूँ।" 'इन्दु एक बिन्दु दो" पृ०२४

माधुर्य गुण एवं कोमलकान्त पदावली की प्रचुरता के कारण आपके गीतों का संगीत पक्ष भी संपुष्ट है। समस्त गीत गेय, श्रुति-मधुर तथा लय-गति से पूर्ण आबद्ध है-

"चाँद से कैसे कहूँ मैं, चाँदनी तेरी जलाये।
भूलना चाहूँ जिसे मैं याद यह उसकी दिलाये। × × ×
मै विकल हूँ क्योंकि मुझको याद आती है किसी की। आज तुम बिन हे प्रवासी।"

छन्दों का भावानुकूल प्रयोग सौन्दर्य एवं रस-सृष्टि में सहायक है। 'गुण भूषित दूषण रहित', आपके गीत कवि की हृदतंत्री की मधुर झंकार हैं जो चेतना का दबाव पाकर अचानक बज उठते हैं। संगीत की रसधार कवि हृदय से निकलकर पाठकों को स्नात करती है।

अलंकरण- डा0 ब्रजबाल की दृष्टि साम्यमूलक अलंकारों पर ही रही है। शब्दालंकार, अनायास ही आये है। रूपक, रूपकातिशयोक्ति, उपमा, उत्प्रेक्षा, प्रतीक आदि आपके प्रिय अलंकार हैं; यथा-

"मानव की सभी बातें क्षण भंगुर है,
कमल पत्र पर जल-बिन्दु-सी। (उपमा) × × ×
मीत मेरे, गीत तेरे गा रहा हूँ।
प्रीति मन्दिर, साध आसन, लक्ष्य छवि-उर ध्यान साधन, (रूपक) × × ×
आज नव निर्माण के हम गीत गायें।
स्वर्ग का संसार हम भू पर बसायें।
कौन-सी है राह जिसमें है न बाधा,
कौन-सी है देह जिसको है न कुछ दुख। (अनुप्रास)

5. श्री बलराम सिंह परिहार -

(1) भाषा- श्री परिहार भाषा के सिद्ध शिल्पी हैं। विषय, भाव, विचार और परिस्थिति के अनुकूल भाषा का प्रयोग, भाषा पर उनके अधिकार का प्रमाण है। आपकी भाषा के स्वरूप अवलोकनीय है-

"यहाँ पर जब-जब जली मशाल-ज्ञान की, जागा जब जब धर्म।
विश्व ने ली संतोषी-साँस, मिटा है तब तब घोर अधर्म।।
मुक्त हो चुके तुम्हारे पाँव, हुए कुछ बढ़ने को स्वच्छंद।
किन्तु जकड़े हैं अब भी हाथ, घिरे अब भी सामाजिक द्वन्द्व।।
मुक्ति इन सबसे पाने चलो, करें हम सब मिलकर विद्रोह।
जगायें अपना पौरुष आज, शक्ति का स्वयं करें संदोह। (संस्कृतनिष्ठ भाषा।

× × × × ×

उपजे पड़े रावण-अहिरावण अपने ही घर में,
सूर्पणखायें नाच रही है 'जैक्सन' के स्वर में।।
अपने लोकगीत बेचारे माँग रहे भिक्षा।
लोकपाल कह रहे कि यह- सब ईश्वर की इच्छा।। (सरल व्यावहारिक भाषा)

श्री परिहार की भाषा का एक और गुण है- उसका नाद सौन्दर्य तथा ध्वन्यात्मक प्रभाव। गीत और लय के साथ सटीक शब्द-चयन देखते ही बनता है। "वह वसन्त आया नहीं है।" कविता आपकी इसी भाषा-छवि का प्रादर्श है; यथा-

"गिरी दहकती अंगारों में दिया छन्न का शब्द सुनाई, × × ×
दिशि-दिशाओं में घुयें की बढ़ रही निर्वाध ढेरी।
साँस घुटती मनुजता की, है गगन अब तक अंधेरी।।
छूटते बम, टूटते दम, कम न होती आपदायें-
रोग शोक समूह की नभ में घटा छाई घनेरी ।।
जो धुंऐ का ध्वस्त करदे, हर मनुज को स्वस्थ कर दे-
वह वसन्त आया न अब तक, वह वसन्त आया नहीं है।।"

शैली- 'शैली स्वयं रचयिता ही होती है', यह कथन निराला जी की तरह श्री बलराम सिंह परिहार पर घटित होता है। उनके रचनात्मक विकास, मनोवृत्ति, विद्रोह और मानसिक त्रास का रचनानुवाद उनकी शैली में सर्वत्र देखा जा सकता है। वह जहाँ प्रकृति-सौन्दर्य और वीर रस के कवि हैं, वहीं विद्रोह और विरोध के भी। आपने अपनी रचनाओं में अधिकांशत: विवरणात्मक, भावनात्मक एवं चिन्तनपरक शैली का प्रयोग किया है। छायावादी और रहस्यवादी संस्पर्श भी आपकी शैली की विशिष्टता है।

छन्द विधान- श्री परिहार ने संगीतमय गीत-रचनायें की हैं। उनकी समस्त रचनाएं छन्द युक्त हैं। गीतिका छंद का उदाहरण "मिथ्या अभिमान" शीर्षक कविता में दृष्टव्य है-

"तन को गर्व था सब डालियों मेरी विरासत हैं।
बिना मेरे न उनमें एक सबकी सब निराश्रित हैं।।× × ×
उधर सब डालियों को गर्व था यदि हम नहीं होते,
विटप की पत्तियाँ फूल सब के सब पड़े रोते, × × ×
उधर था चल रहा प्रतिवाद सब का इस तरह भारी,
इधर थी मौन 'जड़' का कर्म जीवन-दान था जारी।

("हम उनकी जयगायें" पृ. 119।

भावानुसार छन्द परिवर्तन आपकी कविताओं में दर्शनीय हैं।भाषा की तत्समता, छंद की गेयता और लय को प्रभावित नहीं करती है। एक अन्य उदाहरण देखिए-

"असंयम आवेशों से ग्रस्त, निराशा, आलस से अभित्रस्त,
सगर के थे सुत साठ हजार हुआ उन सबका जीवन ध्वस्त,
न उनमें तेज रहा, ना शक्ति, न किंचित पौरुष बल अवशेष,
अचेतन होकर थे सब पड़े, विकल थे उस क्षण बहुत नरेश।"

अलंकरण- श्री बलराम सिंह परिहार अलंकारों का सहज भाव से और सप्रयास दोनों रूपों में प्रयोग करते हैं। आपने परम्परागत और नवीन, दोनों ही प्रकार के अलंकारों का सफल प्रयोग किया है; यथा-

"कान्ति में मनोज मनभावानि लजाई थी। × × ×
ऊपर से गिर जाता नीचे फिर-फिर आगे बढ़ता जाता। × × ×
गिर-गिरकर उठ-उठ चलने में, क्या तू कुछ भी कर न पाता। × × ×
नाविक ने मस्तूल खोल दी नाव बढ़ी लहरों की राह,
छप-छप करती सिंधु राज के वक्षस्थल पर बढ़ी सयानी। × × ×
फिर ऐसी डोली पुरवाई, छहर-छहर कर वर्षा लाई, × × ×
त्राहि-त्राहि करें उठी यहाँ की प्यासी क्षुधित प्रजा सारी।× × ×
हाहाकार मच गया, थे दो टूंक रोटियों के लाले।
छोड़-छाड़ बैठे अपने सब रहे सहे सारे उद्योग।।× × ×
मातु-मातु उर्वशी तुम कुंती सदृश मेरी, आज से तुम्हारा मैं अज्ञान बेटा हूँ।।
(अनुप्रास और पुनरुक्ति)

बिंदिया लगाई भाल चन्द्रमा सा चमक उठा, (उपमा) × × ×
जैसे प्रेमपीड़ा में कसकता भक्त ईश्वर का,
अपने देहगेह की सुध बिसराता है। (रूपक)

6. डा0 हरगोविन्द सिंह- के काव्य का कलापक्ष भी पूर्ण सशक्त और सन्तुलित हैं उनकी भाषा, शैली, अलंकरण, छंद योजना-सभी कुछ एक महान कवि के स्तरानुकूल हैं।

1. भाषा- डा0 सिंह की भाषा में कई रूप उनके काव्य की विकास मात्रा में दिखाई पडते है। आपने अपने काव्य-सृजन का आरम्भ जनपदीय भाषा (बुन्देली। से किया फिर खड़ी बोली को अपनाकर उसे परिष्कृत प्रवाहमयी, संस्कृतनिष्ठ भाषा के रूप में अपनी काव्य भाषा बनाया और अपने जीवन की सान्ध्य वेला में पुनः बुन्देली भाषा और साहित्य के मूर्धन्य विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित

हुए। आपकी भाषा के विविध रूपों की बागनी निम्न प्रकार है-

संस्कृत निष्ठभाषा-

"प्राण-स्वरूपा, दु:ख नाशिनी, सुखदायक पीयूष पिलाती।
देती हो सद्बुद्धि तुम्हीं माँ और तुम्हीं सन्मार्ग दिखाती।। × × ×
यहाँ तुम्हारी ही ऊर्जा से धर्म-चक्र गतिशील निरन्तर,
अवलम्बित है एक तुम्हीं पर ग्रह मण्डल, नक्षत्र दिवाकर।।"

व्यावहारिक भाषा- (व्यावहारिक जीवन के सन्दर्भ में)

"दे रहे हैं बालकोंको नित्य जो उपदेश-पालते निजकर्म में भी यदि वही निर्देश,
क्यों विरोधी मान्यताएंशक्तिकरतीं क्षीण, स्वर्ग कबका बनगया होताहमारा देश।"

जनपदीय भाषा- काव्य भाषा में आपने अधिकतर बुन्देली (लुधियाती) के ठेठ शब्दों का प्रयोग किया है-

"बातें करैं बड़ी-बड़ी,धुजालैय आगूं फिरैं,औरकेपढ़ावे खैं ये बांधै फिरैं बस्ता हैं,
हिरको दिखानौजहाँ ठौर कहूँ मोहराको साधकैं चिमाई उतै नाप जात रस्ता हैं।"

शैली- डा0 सिंह की काव्य शैली में परम्परागत तथा नव्य अभिव्यक्ति कौशल का सुन्दर समन्वय है। उसमें ओज, माधुर्य और प्रसाद तीनों गुणों की सुसंगति है। विषय और भाव के अनुकूल विविध शैलियों का प्रौढ़ प्रयोग उनके काव्य में प्राप्त होता है। वर्णनात्मक, भावात्मक आलंकारिक, सूक्तिपरक, प्रतीक्षात्मक आदि शैली रूप उनकी अभिव्यक्ति को पूर्णता प्रदान करते है।

वर्णनात्मक शैली में शब्द चित्रांकन की कुशलता दर्शनीय होती है; यथा-

"लखन को उर्मिला ने ही महामानव बनाया था,
पवित्रव्रत धर्म का आदर्श जीवन में दिखाया था।
धर्म-पथ पर जो स्वामी के, कभी साधक नहीं बनती,
वही तो धर्मपत्नी है, यही जग को बताया था। × × ×
बने लक्ष्मण महायोगी, रहे चौदह बरस वन में,
महल में वीरबाला ने वियोगी तन तपाया था।
बनाये देवता पति को यही कर्तव्य नारी का,
विषय सुख ही नहीं सब कुछ यह संकल्प पाया था।" (पुष्पांजलि)

छन्द विधान- डा0 सिंह ने विविध छन्दों के माध्यम से काव्य को सफल अभिव्यक्ति प्रदान की है। गीतों का भी सफल प्रयोग डा0 सिंह ने किया है। आपने परम्परागत छन्दों के साथ-साथ नवीन छन्दों का भी प्रयोग किया है। आपने गेयता और ध्वनि- प्रभाव पर भी बल दिया है साथ ही मात्राओं और वर्णों के क्रम तथा संख्या को भी। उदाहरण अवलोकनीय है-

(1) आपकी काव्य कृति सद्वाक्य मंजरी चौपाई छंद में ही रचित है-

"ईश्वर ने इंसान बनाया, ऊँच-नीच यह किसकी माया ?
युग-परिवर्तन है आसान, यदि हो जाय व्यक्ति निर्माण,
जिसका स्वामी घट-घट व्यापी, वह सेवक कैसे हो पापी ?
बढ़ते जिससे मनोविकार, ऐसी कला नरक का द्वार।।

(2) बुन्देली में लिखी गयी डा0 सिंह की काव्य कृति "सद्विचार सतसई" में दोहा छन्द का ही प्रयोग हुआ है जो उनके जीवन का निचोड़ हैं उदाहरण अवलोकनीय है-

"पेट भरत, बच्चा जनत, पंछी पसू तमाम,
बस इतनई तुमने करो, तब तौ हो गओ काम!
धन खुब गओ, कुछ नई खुबों, स्वास्थ्य खुबें कुछ हान,
पै चरित्र जिनको खुबो, सब कुछ चौपट जान।
अपने-अपने पूत की, हर माता खें पीर,
पै जौ-लौ रोबें न ऊ, कहाँ धरो है क्षीर ?
नूर खुदा कौ तब मिलत, जब सालिम ईमान,
नेकी पै कुरबान हो, सहत सरीफ कुरान।"

(3) सदबुद्धि पर लिखी गयी रचना देखिए जिसमें रूप घनाक्षरी का प्रयोग हुआ है-

"पात्र जहाँ फूटे धरे, भ्रवों न वारै जाय खूब डारौं दूध-धृत एक बूंद ना खटात,
जोर-जोर धर देव अच्छी खासी सम्पदा, पै बारावाटी पूत ईट-खपरा लों बेंच खात;
तन बल, जनबल, धन बल, बुझा जात, बनौ करो ताप लेत दुर्व्यसन-खुराफात,
रोग-व्याधि है अनेक, दबा एक सद्विवेक एइ सें तो देवता सें साजी बुद्धि मांगी जात।"

(4) इनकी एक रचना में दुर्मिल सवैया का उदाहरण अवलोकनीय है-

जीवन समिधा-

"सुभ लेख चलैं जगती तल, जस की करनीं कुछ तो न करी,
पढ़वे-गुनवे में टिकाऊ रहें, लिख पाए न कौनउं चीन खरी;
बस गेह-सुदेह सम्हार-सजै सब सैंती है सांसन की सुगरी-
जुन आई ती जग्य के लानै इतैं, सब चूल्हे में फूंक दई नकरी।"

(5) गीतिका छन्द का उदाहरण देखिए-

"वाकपटुता की न पूछो, फूल सोने के बरसते,
वेशभूषा और दबियां देख- रोते नैन हंसते;
किन्तु जाने क्यों, न भरता रिक्त मन इन वीथियां में,
आदमी से भेंटने को प्राण तीसों दिन तरसते।"

अलंकरण- डा. सिंह ने परम्परागत तथा नवीन, दोनों ही प्रकार के अलंकारों का प्रयोग भव्यता से किया है। अलंकारों के उदाहरण अवलोकनीय हैं-

"मंगल समाज यौ कि पल्टन को साज-बाज!
लरका को ब्याव है कि समधी से ठना ठनी ? (संदेह) × × ×
ककरीले काबर की काया बन जात मार बिलसत कछार। × × ×
भर गुच्छन जमना फूट कढ़ी गौहान हार गोरी नारी।
जैसे धरती खें उड़ा गओ कोउ पीरुइया प्यारी-प्यारी। (वस्तूत्प्रेक्षा)×××
छीन करें क्षुद्र भाव, दिव्य छवि प्रगटावै, बस करै बज्रधारी बिना तीर तरकस-
(विभावना)

बड़े-बड़े बैइ उतै खात पुरी मालपुआ, नाव दिन-तेरहई, जुरत बरात है।
(अपन्हुति)

साखन से चल रही तपस्या, तपा तपन हो गए कारे,
अब हम ठांडे रहत पछाखं जहां जुरत गोरे-नारे। (काव्यलिंग)
चेतना दीपक जहाँ तिल-तिल जले तम को पचाने । (रूपक एवं पुनरुक्ति)

बिम्ब विधान- के उदाहरण अवलोकनीय हैं-

"जब तुम ऊँघत बैठे-बैठे खस की टटियन में प्यारे,
तब हम भेंटत लपट-घाम खें दौर-दौर कैं उघरारे। (स्पर्श बिम्ब)
रब्बी-रमतूला संग ढोलन की धमाधम्म, झाँझन की झमाझम्म फरकावे कनी-कनी।
(श्रवणबिम्ब)

कुछ सौंधी-सौंधी महक जगी, सोई माटी कुलबिला उठी (घ्राणबिम्ब)
गरब गरूर चाल बाजी भरी बाते सुन, पियत कुनैन कैसो घूंट चुपचाप है।
(रसनाबिम्ब)

7. डा. रामस्वरूप खरे-

भाषा- डा. स्वरूप जी की भाषा संस्कृत गर्भित है। भावुकता, कोमलता, मार्मिकता तथा प्रसाद, माधुर्य आदि गुण जो भाषा के लिए अत्यन्त आवश्यक होते हैं, आपके काव्य में पाये जाते हैं। संस्कृत की तरह कोमल कान्त पदावली भी आपकी रचना शैली की एक विशेषता है। आपकी शैली प्रत्येक स्थल पर काव्यमई बन पड़ी है। जिसे पढ़कर पाठक भाव-विभोर हो जाता है। चित्रमयी कल्पना तथा लाक्षणिक प्रयोग आपकी रचना शैली के प्रमुख अंग हैं।

कल्पना के आधिक्य के साथ-साथ आपके काव्य में प्रतीकों की भी कमी नहीं है। वैविध्यपूर्ण प्रतीक स्वरूप जी की भाषा की असाधारण शक्ति स्वीकार किये जा सकते हैं। आपके शारीरिक संवेदन जितने सशक्त

दृष्टिगोचर होते हैं, आध्यात्मिक संवेदन भी इतने ही समर्थ कहे जा सकते हैं। आपके प्रतीक उस वैशिष्ट की ओर इंगित करते हैं जिसका लालित बोध अद्‌भुत भूमिका का प्रतिपादन करता है। स्वरूप जी के प्रतीक विधान के सम्बन्ध में आध्यात्मिकता, शालीनता, संवेदना, कलाप्रियता आदि को स्वीकार किया जा सकता है। डा.स्वरूप जी की अनुभूति यदि आध्यात्मिक है तो अभिव्यक्ति लौकिक है अत: उसमें आध्यात्मिक पर लौकिकता का आवरण स्वीकार किया जा सकता है। अर्थात लौकिक प्रतीकों को आलम्बन रूप में स्वीकार करके अलौकिक अनुभूति को प्रकट किया गया हैं। इस तरह प्रतीकों की योजना हृदय ग्राही बन पडी हैं डा. स्वरूप की भाषा शुद्ध खड़ी बोली है यदा कदा आपने ब्रजभाषा के शब्दों का प्रयोग भी किया है। आपकी भाषा ओजस्वी, प्रवाहपूर्ण, परिमार्जित एवं प्रसाद गुण युक्त हैं आपकी कविता में भावों की अच्छी व्यंजना देखने को मिलती है। आपकी भाषा न तो दुरूह और न केशव की भाँति पाण्डित्यपूर्ण है। वह सरल प्रभाव से युक्त एवं प्रसाद गुण से ओतप्रोत है। आपकी शैली भी ओजस्विनी एवं प्रौढ़ है। शैली में भी सर्वत्र प्रवाह एवं सरलता का दिग्दर्शन किया जा सकता है।

प्रांजल संस्कृत शब्दावली का प्रयोग आपकी नई कविता में अवलोकनीय हैं-

"दूध और शक्कर के सम्यक मिश्रण से कड़वाहट भी,
मधुर पेय में परिवर्तित हो जाती है।
जीवन की शाश्वत कटुता के अवसान के निमित्त,
खोजी बनाना पड़ेगा हमें, विशुद्ध नीर-क्षीर एवं मधु का।" (नई कविता)

भाव और विषय के अनुकूल मार्मिक शब्दावली उनकी लेखनी से सहज प्रवाहित होती है। यद्यपि डा. स्वरूप की भाषा का एक विशिष्ट स्तर है फिर भी वह विषयानुसार लालित्यपूर्ण भाषा, ओजपूर्ण भाषा तथा दुरुह भाषा में परिवर्तित होती है।

शैली- डा. स्वरूप के काव्य में एकाधिक शैलियों का प्रयोग हुआ हैं प्रकृति-चित्रण में भावात्मक, आलंकारिक तथा दृश्य विद्यायिनी शैली का प्रयोग हुआ है विचार प्रधान तथा दार्शनिक विषयों की शैली विचारात्मक एवं विश्लेषणात्मक हो गई है। इसके अतिरिक्त आपने प्रतीक-शैली का भी प्रयोग किया है सजीव बिम्ब विधान तथा ध्वन्यात्मकता भी आपकी रचना शैली की विशेषताएं हैं। उदाहरण अवलोकनीय है-

"अब आराम हराम, न कर ले, जब तक नव निर्माण। (सूक्तिपरक शैली)

छन्द विधान- छंद के विषय में डा. स्वरूप जी की मान्यताएं कुछ अलग हैं।

उन्होने लयसाधना को ही कवि कर्म का एक महत्वपूर्ण पक्ष स्वीकार किया है। आपके काव्य में छंदों के दो रूप दृष्टिगोचर होते हैं- प्रथम परम्परागत छन्द और द्वितीय नवीन छन्द। अपने काव्य में आपने वैसे तो लगभग सभी छंदों का यथास्थान प्रयोग किया है परन्तु उनमें से गीतिका, हरिगीतिका सरसी आपके प्रमुख छन्द हैं। उदाहरण अवलोकनीय है-

"यही है जागरूक का धर्म, लड़े अन्याय अनय के साथ।
न्याय पर कर दे प्राणोत्सर्ग, झुकाये कभी न अपना माथ।। ("शतमन्यु" पृ5)

अलंकरण- डा.स्वरूप जी ने काव्य में अलंकारों के पर्याप्त में प्रयोग किए हैं। आपने शिल्पगत अभिव्यंजन के अन्य साधनों की भाँति परम्परागत अलंकारों को भी अपनी प्रतिभा से स्पर्श कर सजीव कर दिया है। अलंकार-योजना आपकी सौन्दर्यवृत्ति का परिचायक है। आपके काव्य में अलंकार सौन्दर्य का विहंगावलोकन करने के उपरान्त इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि आपने अलंकारों के प्रयोग में सुरूचि एवं मौलिकता का अद्भुत परिचय दिया है। आपने अपनी कल्पनामयी भावुक उक्तियों के श्रृंगार के लिए परम्परागत परिपाटी का प्रयोग करते हुए पाश्चात्य अलंकारों को भी अपने अनुरूप प्रयुक्त किया है। आपकी विशिष्टता इस बात में है कि आपने मानवीकरण केवल प्राकृतिक सौन्दर्य का ही नहीं, अपितु सूक्ष्मतम भावनाओं एवं अनुभूतियों का भी किया है। अत: आपके काव्य में सूक्ष्म सौन्दर्य योजना के साथ-साथ कलात्मकता एवं अलंकरण प्रवृत्ति का सामंजस्य बहुत ही उपयुक्त ढंग से हुआ है; यथा-

"सृजन किलकारी भरकर आज, मुक्त हो खेलेगा सानन्द।
पड़ेगा फूट नया स्वर सहज, आदि कवि का ज्यों पहला छंद।।("शतमन्यु" पृ.३९)
गिर-गिर कर उठ, संभल-संभल गिरि श्रृंगों पर चढ़ना होगा। (पुनरुक्ति।
जीवन-बीन बजाउं कैसै? टूट गये सब तार। × × ×
मेरा मन-दर्पण अति निर्मल देख लो-
मेरा पावन गंगा-सा मृदु प्यार है!! (रूपक एवं उपमा)
सजी सजाई खड़ी पालकी अभी न आई दुल्हिन सफलता-
अरे! किसी मनचले भ्रमर ने अभी न कलि का हृदय छुआ है!
न युग नया है, न तम गया है, धरणि उनींदी। मनुज उनींदा-
प्रगति ऊषा का ललाट सूना अभी न रवि का उदय हुआ है।" (मानवीकरण)

8. श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'-

1. भाषा- भाषा के विषय में श्री सौमित्र ने उदारता से काम लिया है। विषयानुकूल और पात्रानुकूल भाषा आपके काव्य की विशेषता है। आपने अपनी

काव्य रचनाओं में काव्य सौन्दर्य को कहीं भी क्षीण नहीं होने दिया। आपके गीतों में लय, छन्द व गति का अपना सहज रूप विद्यमान है। भाषा प्रयोग में सफाई और छंद की वंदिश की सराहना करते हुए डा.पद्म सिंह शर्मा 'कमलेश' ने कहा है कि उनके मुक्तकों की जितनी प्रशंसा की जाए, थोड़ी है। आपकी भाषा के एकाधिक स्वरूप अवलोकनीय है-

1. संस्कृतनिष्ठ भाषा- भाषा का यह स्वरूप प्रमुखत: उनके गीतों में रहा है। इस भाषा का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"निश्चय सत्य सूर्य निकलेगा, भ्रन्ति तमिस्रा चीर एक दिन! × × ×
कृत्य एक दीपित विज्ञापन, वह वाणी की बाँह गहे क्यों ?
सत्य स्वयं जलता सूरज है, दीपशिखा की छाँह गहे क्यों?
साधक की साधना सुरभि ही बनती मलय समीर एक दिन।"

2. सरलभाषा- इस भाषा की शब्दावली तद्भव शब्द-प्रधान और व्यावहारिक है; यथा-

"जो जगा सो रोया रे। जाग-जाग क्यों सोया रे?
बुद्ध जगे तो नींद न आयी, द्वार-द्वार जा, अलख जगाई।
क्या था; मन उचटा वैभव में, क्या पाकर सब खोया है रे।
सारी रात कबीर जगे है, पीड़ा लिये अधीर जगे हैं।
जग का दुखड़ा ऐसा व्यापा-अपना मुखड़ा धोया है रे।। यु.नि.यो.फर. 88

3. मिश्रित भाषा- श्री सौमित्र ने आवश्कतानुसार विदेशी भाषा के शब्दों को भी मुक्त भाव से प्रयुक्त किया है; यथा-

"आज में जो जिया सो, जिया आदमी।
गत अगत का नहीं, मर्सिया आदमी! × × ×
रोशनी का पता पूछता और से देख तू ही है जलता दिया आदमी!"

भाषा को प्रवाह पूर्ण एवं प्रभावशाली बनाने के लिए कवि ने मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी यथा स्थान प्रयोग किया है।

शैली- श्री सौमित्र की काव्य शैली प्रबन्ध और मुक्तक, दोनों ही शिल्पों में सफलता से प्रस्तुत हुई है। श्री सौमित्र को नाटकीयता विशेष प्रिय है। आपके काव्य में अपरम्परागत रूप के नाटकीय शैली का भी प्रयोग हुआ है। यथास्थान आपने वर्णनात्तक भावात्मक एवं संवादात्मक शैलियों का भी सफलता से प्रयोग किया है। जिसका दिग्दर्शन आपकी कविताओं में किया जा सकता है।

अलंकार- कवि श्री 'सौमित्र' अलंकारों के प्रेमी नहीं है। स्वत: स्वाभाविक रचना प्रवाह में जो अलंकार आ गए है, वही कवि को ग्राहय हैं। अनुप्राम

उपमा रूपक एवं मानवीकरण आपके प्रिय अलंकार हैं-

कर्म कुरूक्षेत्र में पाँव धरना कठिन × × ×

धर्म धारा गया है हृदय में सदा। × × ×

धर्म कहता है- तुम धैर्य धारण करो (अनुप्रास)

नभ में उड़ता है पंछी-सा, जल में रह लेना मछली-सा (उपमा)

ले रहा वैराग्य अब संहार खुद, ध्वंस का दिल बैठता जाता स्वयं। (मानवीकरण)

छंद- श्री सौमित्र ने अनेक छंदों को अपनी लेखनी की कसौटी बनाया है। इनमें परम्परागत नवीन एवं मुक्त छंदमयी रचनाएं भी है परन्तु रस एवं भाव के अनुसार छंद चयन की विशेषता आमें सर्वत्र विद्यमान है। "अपना दीप जलाओ", "ज्योति के फूल" व "आँसू डूबी मुस्कानें" काव्य कृतियों में इनका छन्द कौशल दर्शनीय है।

9. श्रीमती माया वर्मा -

भाषा- भाषा भावों और विचारों की संवाहिका होती है। श्रीमती वर्मा एक स्थान पर लिखती हैं-

"भावों और विचारों की संवाहक होती है भाषा,

इसकी उन्नति पर निर्भर है सर्वोन्नति की आशा।" आपने खड़ी बोली को अपनी काव्य भाषा बनाया। कवियत्री ने भाषा की अर्थवता और संकेतात्मकता पर ध्यान दिया है इसीलिए कवियत्री के उत्मेष ने अपने विकास क्रम में नया निखार प्रात किया है। आपकी भाषा में पात्रानुकूलता, सम्बोधन परकता तथा वाग्वैदग्ध्य पाया जाता हैं आपके गीतों की हरपंक्ति से प्यार झलकता है-

"प्यार तो पावन ऋचा है वेद की,

प्यार में लगता न कोई दूसरा।।" × × ×

प्यार का हम नाम भूले, हृदय से ममता उड़ी है,

और कहते हैं कि हमने खूब रामायण पढ़ी है।"

कवयित्री में सुन्दर गीत रचना की क्षमता है। श्रीमती माया जी में मनोवैज्ञानिक तत्व निरुपण के भी यदा-कदा संकेत हम बात के साक्षी है कि अन्तवृत्तियों के उद्घाटन में भी वे सक्षम है-

"जब कोई दो कण देकर हम पर अहसान जताता है।

तो वह व्यक्ति हमारे पौरुष को झकझोर जगाता है।।"

सरल शब्दावली- संस्कृत तत्सम शब्दावली के प्रति श्रीमती वर्मा की कोई प्रतिबद्धता नहीं है। आपने अपेक्षाकृत सरल शब्दावली का भी सहज भाव से

प्रयोग किया है; यथा-

"दुनियाँ की हर चीज कीमती ही होती है,
लेकिन सबसे मूल्यवान मन का मोती है।।"

शैली- श्रीमती माया वर्मा के अधिकांश गीत अविधामूलक एवं इनकी शैली द्विवेदी कालीन होने के कारण आपकी काव्य शैली की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार है- 1. नवीन विषयों का समाहरण 2. नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण 3. देशभक्ति, समाज सुधार, प्रकृति चित्रण आदि कविता के विषय बने 4. पौराणिक कथाओं के प्रति आपने नवीन दृष्टिकोण को अपनाया। आपकी रचना-शैली की प्रमुख विशेषताएं उनकी भाव, तरलता, वैयक्तिकता, प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता, आलंकारिता, छायावादी तथा रहस्यात्मक अभिव्यक्ति है।

सामाजिक कुरीतियों पर आपकी एवं रचना में रचना शैली के दिग्दर्शन होते है-

"है जग की रीति कि पक्षी या पशु ही बेंचा जाता है,
पर मानव अपना सुत बेचे यह नहीं समझा में आता है।"

प्रतीक एवं बिम्ब योजना-. कवयित्री ने प्रतीकों एंव बिम्बों का भी अपने काव्य में प्रयोग किया है; यथा-

"नहीं चल पायेगा शासन, चमन पर आज शूलों का।
हमी लिखते रहते हैं आदि युग से भाग्य फूलों का।। × × ×
मनुज होकर मनुज की ही चिता पर हाथ मत सेंको।

अलंकरण एवं छन्द-योजना- श्रीमती माया वर्मा ने परम्परागत एवं नवीन, सभी अलंकारों का कलात्मकता से उपयोग किया है। उपमानों की मौलिकता एवं मनमोहक विधान आपके अलंकरण की विशिष्टताएं है। अनुप्रास, उपमा, रूपक, अपन्हुति आदि आपके प्रिय अलंकार हैं-

"तरस रहे गोपाल आज के माता तक के दूध को।
मांनव की या मानवता की, बोलो किसकी हार है।।
मानस-मानस प्यासा है सौजन्य प्रेम का।। (अनुप्रास) × × ×
मन कानन मैं पतझर का ही बारहमासी वास है (रूपक) × × ×
विस्तृत भूमण्डल की प्यास बुझाने वाला,
सागर भी प्यासा होता है, प्रिय सच मानो।। (विरोधाभास)

श्रीमती माया वर्मा ने गीत लिखे हैं और गीतों के छन्द बंधन में वह पूर्णदक्ष है। अनेक स्थलों पर उनके गीत लोकगीत की लहरिओं में तरंगित होते प्रतीत होते है। छंदों में वैविध्य के साथ-साथ वह वाग्वैदग्ध्य विशेष मनोरम हो उठता है-"एक के बाद दूजी बढ़ी कामना, जिन्दगी बन गई भोग की साधना।"

10. श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' -

भाषा- श्रीमंगल विजय ने मुख्यत: खड़ी बोली को ही अपनी काव्य भाषा बनाया है पर कहीं-कहीं बृजभाषा का पुट हो गया है तो कुछ कविताओं में अंग्रेजी शब्दों की बहुलता हो गई है। आजकल की कविता में भाषा तथा विचार बाहुल्य है, शैलियों के मनमाने आढ़े-टेढ़े प्रयोग है। किन्तु उनमें जीवन मूल्यों के प्रति कोई मोह नहीं है। रीतिकालीन कवियों ने अपने काव्य में वासनापूर्ण श्रंगार को ही प्रधानता दी है। छायावादी कवियों (प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा आदि) में लोकहित की भावना कला के विस्तार में दब गई। जनता उन्हें समझ तक नहीं पाती है। आज फिर ऐसे सरल, सरस, सहज, भाषा में काव्य की आवश्यकता थी जो प्राचीन जीवन मूल्यों, अतीत संस्कृति, भारतीय चिन्तन का प्रतिनिधित्व करें और भौतिकता तथा पाश्चात्य विचार धारा का प्रदूषण दूर करें। यह कार्य श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' द्वारा हुआ है। आज भी कविवर भी विजय वर्गीय भक्तिकाल का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उनके द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा के साथ-साथ मौलिक रचनाओं का सृजन भी होता रहा है।

विषयानुकूलता और व्यंग्यात्मकता ही इनके प्रयोग के औचित्य का आधार हो सकती है। श्री मंगल विजय को उर्दू, फारसी, भाषा के प्रयोग और शैरों की संरचना पर भी महारत हासिल है। यह उनकी गजलों, नज्मों और आशारों से सिद्ध होता है। शैरों में उक्ति वक्रता, उक्ति सौन्दर्य ही प्रधान होता है जिसे मंगल जी ने 'बेताब' उपनाम से बखूबी निभाया है। आपके शैरों की अदायगी सशक्त और दाद देने लायक है। आप की रचनाओं की भाषा में अजस्र प्रवाह है, लाक्षणिक सौन्दर्य है और मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों के प्रयोग से उसे और भी धारदार बना दिया गया है; यथा-

"चलेगा भोगवादी क्रम, तो शोषण रुक नहीं सकता।
बने जग त्यागवादी, फिर उत्पीड़न टिक नहीं सकता।।" × × ×
"आत्मवत् सर्वभूतेषु" यही हो दृष्टि हम सबकी,
स्नेह समतामयी हो, स्वर्ग जैसी सृष्टि हम सबकी।"

शैली- श्री मंगल विजय के काव्य की शैली विविध रूपा है। प्रधान स्वर अध्यात्म, राष्ट्रीयता एवं मानव मूल्यों के उन्नयन जैसे भावों का है साथ ही श्रृंगार एवं व्यंग्य के प्रयोगों में भी शालीनता के साथ चुटीलापन लाने में कवि को सफलता मिली है। 'बदनाम करते है' में उनका दर्द देखिए-

"मनुज की देह पाकर भी, पशु-जीवन बिताते जो,

वही इस देवदुर्लभ-देह को बदनाम करते हैं।
प्रमादी और कायर बन, सदा ही गिड़गिड़ाते जो,
धरा से रत्नगर्भा-गेह को बदनाम करते है।"

उनकी शैली में चित्रात्मकता दृष्टव्य है-

"ओ निष्ठुर! पहचानों अब तो मानवता की पीर। × × ×
स्वार्थ सिद्धि के लिए चढ़ाते, देवी को बलिदान।
बेचारे पशु की विसात क्या, चढ़ जाते इंसान।।
और दहेज की निर्मम माँगें, देवी छाती चीर।"

छन्द- श्री मंगल विजय ने परम्परागत छन्दों; यथा-रोला, हरिगीतिका, मंदाक्रान्ता आदि का प्रयोग किया है और छन्द मुक्त रचनाएं भी की हैं। छंद प्रयोग विविधता छंदों पर कवि के अधिकार की परिचायक है, तो उसने काव्य-संगीत को ताल-लय की विविधता भी प्रदान की है। इनके कुछ गीत प्रचलित गीत, लोकगीत और सिने गीत की धुनों पर भी आधारित है। श्री मंगल विजय मुक्तककार भी हैं।

अलंकार योजना- परम्परागत तथा नवीन, दोनों ही प्रकार के अलंकारों का श्रीमंगल विजय ने प्रयोग किया। एक कविता में कवि ने बरसाती पोखर के चतुर्दिक दर्शित वस्तुओं का उत्प्रेक्षाओं के प्रयोग द्वारा सजीव चित्रण किया है; यथा-

"छोटे से पोखर के चारों ओर खड़ी घास,
जैसे किसी पर्दा नशीन परिवार से, घर के चारों ओर बांधे हो, हरे बांस।×
छोटे से पोखर के किनारे खड़ा हुआ कवि,
जैसे अच्छे-बुरे सभी को प्रकाशित कर रहा हो रवि" (उत्प्रेक्षा)

'प्रतीक पावस' कविता में हेतु उत्प्रेक्षा का प्रयोग करते हुए पावस और किसी नारी में विविध रूपेण साम्य की स्थापना की गयी है। फागुन का चित्रण मानवीकरण और रूपक का प्रयोग करते हुए किया गया है।यह चित्रण वाली कविता 'प्रकृति फागुन' में फागुन द्वारा प्रकृति प्रेयसी को फरिया-चुनरिया और पैंजनी पहनाने का वर्णन अवलोकनीय है-

प्रकृति-फागुन-

"प्रकृति प्रेयसी को पहनाई फागुन ने फूलों की फरिया।
रक्ताभी फूलों से जड़ दी, प्रेयसि की अनुरक्त चुनरिया।।× × ×
डाले हैं डालों पर झूलें बौरों के घुँघरु हैं बोले,
श्यामा स्वर को साध-साध कर कहती है आ जाओ हौले,
अमराई में गूँज उठी है, प्रिय की सौरभ सनी बँसुरिया।× × ×

प्रिय ने वह पैंजनि पहनाई-प्रकृति प्रेयसि भी इठलाई।

(मानवीकरण और रूपक)

श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' के काव्य के कलापक्षीय विवेचन को प्रस्तुत करने वाली कविताओं के अन्य अंश अवलोकनीय है-

वसन्त गीत-

सुन री सखी! मन रंजन आए। चकवी के मद-भंजन आए।।
लाल पलाश विधे स्वागत में, चाँद सी दीप जल्यो नभ छत में।
शोभा श्री लख कंजल जाए।।
क्यों अँगड़ाई पड़ती है धरती की नस-नस, क्यों भरा-भरा लगता है बसुधा का आंगन।
क्यों नया रक्त डाली-डाली में डोल रहा, क्यों फूला नही समाता धरती का मन।।
समझा वसन्त दुल्हा बनकर आया है तब ही दुल्हन बनने की सबने ठानी है.
सब समझे बैठी है वसन्त बिन व्याही है, बस इसी लिए सब अपने मन की रानी है

प्रिय से अपेक्षा-

लो मै सावन की सरस धार बन जाऊं, तुम भू बनकर अपना आँचल फैला दो।
मै श्याम बदरिया बन, नभ में छा जाऊं, तुम मस्त मयूरी बन पायल झनका दो।।

उनका रूप-

उनके मुख से पर उठे, चांदनी छलक पड़ी।
मोतियों की पंक्ति पर दामिनी दमक पड़ी।।
जब मुंदे हुए पलक, एकदम उधर पडे, यह लगा कि बदरियों के बसन उघड़ पड़े।।
नयन खुल पडे लगा प्रथम रवि की किरण फूटी।

विरहिन-

मै आँसू की भरी बदरिया, मुझ विरहिन से गीत न माँगों
मेरी हार बना मेरा छलिया, मुझ हारी से जीत न मांगो।।

चाय का चस्का-

किन्हीं डूबे हुए चिर वासना के स्निग्ध कानों को,
कि जैसे कामिनी के नुपुरों की ध्वनि लुभाती है।
किसी धन के पुजारी को कि ज्यों कलदार की खनखन,
बिना संकोच के हर हाल में हर क्षण रिझाती है।
कि जैसे बादलों की गड़गड़ाहट सुन पपीहे को,
कि अपनी चहेती जल बूंद की ज्यों याद आती है।
यूं ही बस चाय के आदी जनों के कान को, मन को
कहीं भी कप-बसी की खनखनाहट भर लुभाती है।

कल्पना-

अभी अपने उर की उठी कल्पनाओं को, रुपहली-सी साड़ी पहनाई गई है,
अभी भाव की चूनरी में स्वरों की, लहरती किनारी लगाई गई है ।
हृदय के उदधि से जो मोती चुने गये है, उन्हें ही सितारे समझकर जड़े हैं.
बड़े भाग्य से भावना की लली की, अधर से सगाई कराई गई है।

समन्वय-

श्रद्धा की सरिता को ज्ञान के किनारे दो और ज्ञानगरिमा को श्रद्धा के फुहारे दो,
एकाकी ज्ञान नहीं हो जाये गर्वीला,
सूनी सी श्रद्धा न कर ले दूषित नीला ज्ञान और श्रद्धा को आपसी किनारे दो।

दुल्हन-

उषा दुल्हन बन गई आज, अरुणिम सिन्दूर लगाया है,
रविवार ने सप्त सुनहरा सा, पोहागी चीर ओढ़ाया है।
दुल्हन इठलाई, अंगड़ाई, दुल्हन, शरमाई मुस्काई,
लतिकाओं ने दुल्हन सखि क पुष्पों का हार पहिनाया है।

विचार :

मस्तिष्क की गुफाओं में, पद वे सभी हैं जिनके पर हैं,
ऋषि भी हैं जिनके सिर हैं पर में थिरकन हैं सिर में चिंतन हैं।
थिरकन अस्थाई हैं चिंतन गइराई है परवेस उड़ जायेंगे ऋषि अमृत बरसायेंगे।

साधन-साध्य

तुम्हें रिझाने जब-जब मैंने अपनी बीन बजाई,
तब-तब तार-तार से प्रीतम तान तुम्हारी आई।
हर घूंघट वाली से पूँछा जाकर रूप तुम्हारा,
हर घूँघट उल्टा-उल्टा कर जब-जब रूप निहारा।
हर घूँघट घूँट में मैंने लाज तुम्हारी पाई

गीत की हाट

साँस के गाँव घूमे कई, शब्द की बाँह पर साधकर गीत की गाँठरी।
गीत ले लो पुकारा करी हर गली-गली में मेरे बोल की बाँसुरी।
सभी साँस सखियों ने झाँका मुझे कर इशारा बुलावा मुझे द्वार पर,
मैं भी आशा लिए खिच गया द्वार पर आ गई आस्था हर विह्वल प्यार पर,
बैठने जब लगीं सब मुझे घेरकर तब मैने खोल दी गीत की गाँठरी ।।

सजन मिलन

सजनी चली सजन के देश

संयम साबुन को गल-गल कर मन का काम कीच मल मल कर,
ममता मैल छुड़ा, तन-मन से धोये कामना केश।
तप का तेल लगा बालों में जप की लाली भर गालों में,
समरस का सुरम्य नयन दे निरखन चली स्वदेश।सजनी चली सजन .....

शरणागत

बाहों के फूलों से न साधते तुम जीवन जल मरुथल ही ढल जाता,
अधरों के फूलों से न बांधते तुम, मन-मधुप न जाने कहाँ मचल जाता।
तुमने अलको की छाँह न दी होती स्नेहिल पलको की राह न दी होती,
रुपाभ-राह की तपती धरती पर चलकर चरणों का साहस जल जाता।

11- श्री वीरेश्वर उपाध्याय के काव्य की कलापक्षीय विशेषताएँ-

1. भाषा- श्री वीरेश्वर उपाध्याय ने 'गीत' को लय, छन्द तथा सटीक शब्द चयन आदि सभी उपांगों की दृष्टि से उत्कर्ष और लोकप्रियता प्रदान की है। आपकी भाषा भावानुगामिनी है। भावाभिव्यक्ति की तीव्रता और मर्म स्पर्शिता प्रदान करने के लिए आपने तत्सम, तद्भव और देशज सभी शब्दों को सहज भाव से अपनाया है; यथा-

"इन्द्रिय सुख सौन्दर्य न चाहूँ, नहीं चाहिए सुविधा धाम,
तुमसे उपजे हैं यह सब, तुम्हें चाह कर रहूँ अकाम। × × ×
ओजस विमल तेजस् प्रखर, वर्चस महत् के तत्वचित,
भण्डार में जिसके भरे सब ऋद्धि सिद्ध्यादिक सहित।।(तत्सम शब्दाबली)

× × × × × ×

प्रज्ञा पुत्र कहाने वालों जीवन धन्य बना लो।
जाग्रत आत्मा बनकर भाई सोये भाग्य जगा लो।। (देशज शब्दाबली)
प्राण होम, युग धर्मनिभायें, बन जायें ऐसे व्रतधारी।
महा क्रान्ति हित हम जूझेंगे, कार्य करेगी शक्ति तुम्हारी।।(तद्भव शब्दावली)

2. शैली- श्री उपाध्याय ने विषयानुसार विविध काव्य शैलियों का प्रयोग किया है। भावात्मक, विचारात्मक, आलंकारिक, उपदेशात्मक तथा संदेशात्मक आदि विभिन्न शैलियाँ आपके तथ्य को प्रभावशाली बनाए हुए हैं। साहित्यिक भाषा में भाव को सीधे कह देना ही आपकी रचना शैली की प्रधान विशेषता है पाठक को कर्तव्योन्मुख तथा संस्कृति और राष्ट्र के प्रति समर्पित बनाने के लिए आपने तार्किक शैली का भी यथास्थान आश्रय लिया है।

3. छन्द- श्री उपाध्याय जी ने विविध छन्दों के माध्यम से काव्य को सफल

अभिव्यक्ति प्रदान की है। भावानुसार छन्द परिवर्तन भी आपकी रचनाओं में दर्शनीय है- हरिगीतिका छन्द का उदाहरण देखिए-

"कर साधना जिसकी रची यह सृष्टि विधि ने ज्ञात है।
जो वेदमाता देवमाता विश्व माँ विख्यात है।।"

दोहा छन्द का उदाहरण दृष्टव्य है-

"सभी सुखी जीवन जिएं, सब ही रहें निरोग।
हे प्रभु सबका हो भला, दूर रहें दुख भोग।।
काव्याहुति चलती रहे, गुरु का मिले प्रसाद।
धारा नव उल्लास की हर ले जन अवसाद।।"
मनुज 'जिएं तो इस तरह', जीवन सफल बनाएं।
धर्म, अर्थ के साथ ही, काम मोक्ष सध जाएं।।

अलंकरण- श्री उपाध्याय जी की दृष्टि सादृश्यमूलक अलंकारों पर ही रही हैं शब्दालंकार आपकी रचनाओं में अनायास ही आए हैं। अनुप्रास, रूपक, रूपकातिशयेक्ति, उपमा, उत्प्रेक्षा, प्रतीप आदि आपके प्रिय अलंकार हैं; यथा-

"हरपीड़ित की पीड़ा समझें, सेवा करुँ रहूँ अनजान।× × ×
कलि की कुटिल कुचाल को का काटे ब्रहम विचार।।× × ×
भक्ति भाव-भागीरथी, सरयू-ब्रह्म विचार। × × × (अनुप्रास)
प्रभुपद कमलों का रस पाकर, देवराज का पद बेकार ××× (रूपक)
बढ़ो! हमारे साथ चल रही, है युग शक्ति भवानी। (रूपकातिशयोक्ति)

12- श्री शचीन्द्र भटनागर -

1. भाषा- भाषा के विषय में श्री शचीन्द्र जी ने उदारता से काम लिया है। उनके प्रज्ञागीतों की भाषा, शब्द-चयन, प्रतीकात्माकता, उनके उपमान, उनमें प्रयुक्त सरल शब्दों की नई अर्थवत्ता के पीछे प्रायः उनका नवगीतकार छाँकता है। बासी शब्दावली और रूप-विधान से उनको कोई लगाव नहीं है। विषयानुकूल और पात्रानुकूल भाषा आपके काव्य की विशेषता है यही कारण है कि आपकी भाषा के एकाधिक स्वरूप हैं।

भाषा की शब्दावली तद्भव शब्द प्रधान और व्यावहारिक है; यथा-

"सीख नहीं पाए चादर ओढ़ने का ढगं रे,
मैली चादर पर कैसे-चढ़ पाए रंग रे!"

श्री शचीन्द्र ने आवश्यकतानुसार विदेशी भाषा के शब्दों को भी मुक्तभाव से प्रयुक्त किया है; यथा-

"देश के जवान, तुम्हें देश का नमन, × × ×
ध्वस्त किया शत्रु का गरुर और गुमान,
सिर्फ फर्ज का तुम्हें रहा सदैव ध्यान।।"

तत्सम शब्द प्रधान भाषा का उदाहरण अवलोकनीय है-

"झर रहीं है देवसंस्कृति की सहज शीतल फुहारें।
अब धरित्री पर निराशा से भरा कोई न होगा।" × × ×
"शक्तिसम्पन्न कल का दिवाकर रहे, इसलिए हम सभी साधना कर रहे।
साधना वस्तुतः पात्रता-वृद्धि है, साधना तो स्वयं श्रेष्ठतम सिद्धि है,
आत्मशोधन करें, साधना है यही, जागरण प्रण करें, साधना है यही।"

2. शैली- जब हम नवगीत शैली के गीतकारों की चर्चा करते है तो सुकवि श्री शचीन्द्र भटनागर का नाम सम्मान पूर्वक लिया जाता है। आपकी काव्य शैली में न स्वर अर्थ के लिए बाधक बने है और न विशिष्ट अर्थ को अभिव्यक्त करने वाले शब्द स्वर की राह में अवरोध बने हैं। शैली की पुरातन सीमाओं को लाँघकर आप साहित्य के अधुनातन रूप के साथ चले हैं। आपने सर्वथा नवीन प्रतीकों एवं बिम्बों का प्रयोग अपने काव्य में किया है; यथा-

"शांतिकुंज साधकगण कागुरुद्वारा है।अखिल विश्व ने यही सत्य स्वीकारा है।।
वातावरण यहाँ सात्विक सुखदाता है,जो कि स्वयं का परिष्कार सिलखाता है.
सप्तमहाव्रत यहाँ सहज सध जाते हैं,मन अपनत्व-सूत्र में सब बँध जाते हैं,
इससे जुड़कर साधक कभी न हारा है।शांतिकुंज .....
जीवन जीना यहाँ सिखाया जात है, ऐसा उन्नत भाव जगाया जाता है,
जिससे अपनेप्रति विश्वास हुआ करता,मन न हीनता का फिर दास हुआ करता।
बहती यहाँ अजस्र ज्ञान की धारा है। शांतिकुंज.....

आपकी काव्य-शैली प्रबन्ध और मुक्तक, दोनों शिल्पों में सफलता से प्रस्तुत हुई है। यथा स्थान वर्णनात्मक, भाषात्मक एवं संवादात्मक शैलियों का भी आपने सफलता से प्रयोग किया है।

3.अलंकरण- श्री शचीन्द्र भाटनागर ने शब्दालंकारों एवं अर्थलंकारों को सहज रूप में प्रयुक्त किया है। अभिधा के साथ लक्षणा शब्द शक्ति भी आपके काव्य में प्रयुक्त है। अनुप्रास, उपमा, रूपक, अनन्वय, प्रतीक, सन्देह आदि आपके प्रिय अलंकार हैं; यथा-

"कोटि-कोटि संतानों का तुम, ममता में नहलाती थीं,
इसीलिए ममता की मूरत, जगजननी कहलाती थीं।× × ×

मातृ-ममता के मलय भीगे पवन का पासहारा। (अनुप्रास)

तुम्हें गुरुदेव! जब हम ठीक से पहचान पाएंगे,

तुम्हारे रूप में साकार हम भगवान पाएंगे। × × × (अनन्वय)

कौशल्या-दशरथि जैसे सास-ससुर पाऊँगीं। (उपमा)

4. छन्द विधान- श्री शचीन्द्र भटनागर ने अपने प्रज्ञागीतों में गेयछन्दों का प्रयोग किया है। पारम्परिक छन्दों की अपेक्षा उनने नए प्रयोगों का सफल प्रयत्न किया है। श्री शचीन्द्र भटनागर जी का छन्द प्रयोग वैविध्यपूर्ण है। गीतिका, हरिगीतिका, लावनी, मालिनी के साथ-साथ मधुर गीतों का प्रयोग आपने सफलता से किया है। अत्यानुप्रास (तुक) का आपके पास अक्षय कोष-सा है। हरिगीतिका छन्द का उदाहरण अवलोकनीय है-

"लाँघ हम आए बहुत दुर्भेद्य सीमाएं स्वयं,

चन्द्रतल पर घूमकर हैं लौट आए ये चरण, × × ×

राष्ट्र बाँध पाता नहीं भूगोल के परिमाप में,

राष्ट्र मिटता है न अत्याचार या संताप में, ×

मालिनी छन्द का एक उदाहरण देखिए-

"न यूँ पश्चिमी सभ्यता के सहारे,

मिटें शील सौन्दर्य के गुण तुम्हारे,"

13. श्री जितेन्द्र रघुवंशी-

1.भाषा- भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा कोई भी रचनाकार अपनी अनुभूतियों को मूर्त किया करता है। भाषा का स्वरूप भावों और पात्रों पर आश्रित होता है। श्री रघुवंशी की भाषा प्रायः सरल है विषय, भाव, विचार और परिस्थिति के अनुकूल भाषा का प्रयोग, भाषा पर उनके अधिकार का प्रमाण है आपकी भाषा के स्वरूप इस प्रकार हैं-

"निजी स्वार्थ की नहीं महंत्ता, पंचशील अपनाते है,

श्रम को प्यार हृदय से करते, सुव्यवस्था दिखलाते हैं।× × ×

युग की करूण व्यथा को सुनकर, युगप्रहरी है आया।

तम की महानिशा में जलकर, नव प्रकाश फैलाया। (संस्कृतनिष्ठ भाषा)

"स्वार्थ नहीं परमार्थ दिखे फिर, अधिकारों को भूलें,

मिल जुलकर सबरहना सीखें, निज सुख में न फूलें। (व्यावहारिक भाषा)

2. शैली- श्री रघुवंशी के काव्य में भी एकाधिक शैलियों का प्रयोग हुआ है। विचार-प्रधान तथा दार्शनिक विषयों की शैली विचारात्मक एवं विश्लेषणात्मक हो गई है। इसके अतिरिक्त प्रतीक-शैली का प्रयोग भी हुआ है। सजीव

बिम्बविधान तथा ध्वन्यात्मकता भी अपनी रचना शैली की विशेषताएं है; यथा-

"भटक रहे थे हम निज भ्रम में, भौतिकता की चमक-दमक में,
भूले भटके डगर-डगर में, अब आए माँ तेरी शरण में।।
माँ तू पार हमें अब कर दे।माँ तू हम सबको शुभ वर दे।।"

3.छन्द- श्री रघुवंशी ने परम्परागत छन्दों के साथ-साथ नवीन छन्दों का भी प्रयोग किया है। आपने गेयता और ध्वनि-प्रभाव पर ही बल दिया है, मात्राओं और वर्णो के क्रम तथा संख्या पर नहीं।

4.अलंकरण- श्री जीतेन्द्र रघुवंशी जी अलंकृत भाषा के प्रयोग में प्रवीण हैं। आपकी रचनाओं में अनुप्रास रचनाओं में अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, रूपक, सन्देह तथा उपमा आदि अलंकारों का स्वाभविक प्रयोग हुआ है; यथा-

"विश्व के आधार हो या जग के कर्णधार हो , (सन्देह)
कौन सुनेगा क ण व्यथा को, मानवता की पीड़ा को, × × ×
करें कार्य सब मनोयोग से, कभी प्रमाद न छाये, × × ×
स्वयं समीक्षक बनकर अपनी गलती स्वयं निकालें। (अनुप्रास)

14. डा0 जमुनादास बड़ैरिया -

1.भाषा- "भाषा कवि की भाव-वाहिनी शक्ति होती है। शब्दों का अभाव जिसे नहीं होता तथा भाषा के व्याकरण का जिसे आवश्यक ज्ञान होता है, भाषा उस कवि की चेरी होती है और भावानुकूल सांचे में अनायास ही ढलती चली जाती है।"1 डा0 बड़ैरिया के काव्य की भाषा सरल और सुबोध है। भाषा की सरलता और सुबोधता के लिए इन्होने प्राथमिकता देशज शब्दों को ही दी है। डा0 बड़ैरिया के काव्य में जहाँ संस्कृत-शब्दावलीबहुल भाषा का माधुर्य है, वहीं सरल भाषा का भी उपयोग है; यथा-

"घातु-खण्ड, घर्षण-रगड़ सह तपता फिर अंगार में ।
दिव्य सुन्दर रूप पाता, पुजता सदा संसार में।। (संस्कृतनिष्ठ भाषा)
जैसे होते कर्म हमारे, भाग्य सदा वैसा ही बनता।
अपने खोटे कर्मो का फल सदा भोगती रहती जनता।। (सरलभाषा)
ईमान पर कायम रहो, उचित साधन से प्रगति अपनी करो।
शक्तिशाली बनकर जगत में,सुख-शान्ति का जीवन वरो।। (मिश्रित भाषा)

2.शैली- "शैली वस्तुतः भाषा का व्यक्तिगत प्रयोग है- भाषा के माध्यम से

1. श्रीराम स्वरूप दुबे- साकेत सुधा, पृष्ठ 254

किसी बात अथवा भाव को अभिव्यक्त करने का ढंग है। जिस प्रकार मनुष्य में कोई व्यक्तिगत विशेषता होती है, उसी प्रकार किसी कवि अथवा लेखक की सरलता, कृत्रिमता, प्रदर्शन प्रियता, एकरसता आदि से उसकी विशिष्ट शैली का निर्माण होता है। शैली की इस वैयक्तिकता के कारण ही 'स्टायल इज दी मेन' (शैली ही व्यक्ति है) उक्ति चरितार्थ होती है।"1

डा0 बड़ैरिया ने प्रबन्धकाव्य, खण्डकाव्य तथा मुक्तक तीनों ही शैलियों में स्वाधिकार रचनाएं की हैं। विषयानुसार रचना-शैली की विविधता भी सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। भावात्मकता आपकी शैली का प्रधान गुण है। ओजस्विता, आत्मगौरव तथा देशप्रेम के स्वरों को सफलता से आपने श्रोताओं तथा सहृदय पाठकों तक पहुँचाया है। रचना की मार्मिकता से प्रस्तुतीकरण और भाव-संप्रेषण की सफलता आपकी काव्य शैली के विशिष्ट गुण हैं।

3.छन्द विधान- डा0 बड़ैरिया संस्कारशील कवि हैं और उनकी वाणी ने छन्दों का आवश्यक उपयोग किया है। भाव और विषय के अनुकूल छन्द चयन करने की उनमें अद्‌भुत प्रतिभा है। अनेक प्राचीन और नवीन छन्दों का सफल प्रयोग उनकी काव्य रचनाओं में उपलब्ध है। उनके छन्द वर्णिक भी हैं और मात्रिक भी। मात्रिक का प्रयोग उन्होने निश्चय ही अधिक किया है।

आपके छन्द विधान का एक उदाहरण अवलोकनीय है-

"कामायनि के मनु-प्रसाद का-जीवन मूर्तिमान संघर्ष।
श्रेष्ठ नाटकों में दिखलाया प्राच्य राष्ट्र का ही उत्कर्ष।।
देश भक्ति की प्रबल भावना, प्रेरक बन करती उद्‌घोष,
प्रगति-पथ पर बढ़े चलो तुम, करके सदा राष्ट्र-जयघोष।।"

5.अलंकरण- डा0 बड़ैरिया अलंकारों के प्रयोग में दक्ष हैं। शब्दालंकार और अर्थालंकार, दोनों ही उनके काव्य की शोभा बढ़ा रहे हैं। आपकी रचनाओं में अलंकार सहज भाव से आए हैं; यथा-

"सौम्य-सादगी स्पप्न हुए सब, शंकित-त्रस्त सभी नर-नारी,
मन को मरघट सा कर डाला, प्रेत, पिचाश बसा जीवन में। (अनुप्रास)
मन-मन्दिर से दूर करें भय, सुख-सरिता तब मन में बहती (रूपक)

15- डा0 आर0पी0 कर्मयोगी के काव्य का कलापक्षीय विवेचन-

1. भाषा- डा0 कर्मयोगी ने अपनी काव्य रचनाओं में समर्थ और सटीक भाषा

1. श्रीराम स्वरूप दुबे- साकेत सुधा, पृष्ठ 259

का प्रयोग किया है। भाव और विषय के अनुकूल मार्मिक शब्दावली उनकी लेखनी से सहज प्रवाहित होती है। आपने प्रारम्भ जनपदीय भाष से किया और फिर खड़ी बोली को अपनाकर उसे परिष्कृत प्रवाहमयी भाषा के रूप में अपनी काव्य भाषा बना लिया। मुहावरों के प्रयोग से प्रभावशीलता में बृद्धि हुई है। आपकी भाषा की बानगी निम्न प्रकार है-

"मंदिरों में जाते लोग, मसजिदों में जाते लोग,
तऊ जानें कौन ठौर, प्रेम बिरमायौ है? (जनपदीय भाषा)
खुदा एक नूर है जिससे रोशन नहा सारा,
यही तो तेज सविता का बहाता प्राण की धारा (मिश्रित भाषा)
मैं ज्योति पुंज मै दिव्य तत्व, मैने समझा अपना महत्व,
मैं शाश्वत सत्य सनातन हूँ,मैं आदि अनन्त पुरातन हूँ।(संस्कृतनिष्ठ भाषा)
अनुचित-उचित विचारिए, तब कीजै कुछ काम। (सरल व्यावहारिक भाषा)

2. शैली- डा0 कर्मयोगी ने अपने काव्य में मुक्तक काव्य-शैली के द्वारा अपनी भावनाओं को स्वर प्रदान किया है। विषयानुसार आपकी रचना शैली ने विविधाता अपनाई है। आपने अपनी शैली के माध्यम से कहीं ओजस्वी हुंकार लिए त्याग और देशभक्ति के स्वर प्रदान किए हैं तो कहीं ममता, प्रेम और करुणासिक्त वाग्धारा प्रवाहित की है।

3. छंद- "छंद काव्य का वह सांचा है जिसमें भाव को संगीतात्मक रूप में ढाल दिया जाता है। काव्य को श्रुतिमधुर बनाने के लिए संगीत के सहारे की आवश्यकता होती है और संगीत को छन्द की। छंदों का निर्माण संगीत शास्त्र के अनुसार ही हुआ है। छन्द के बन्धन को तोड़कर आज की कविता जितनी उच्छृंखल होती जा रही है, उतना ही उसका आकर्षण भी कम होता जा रहा है।" 1

डा0 कर्मयोगी ने कवित्त, सवैया, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग अपने काव्य में किया है किन्तु आपके दोहे विशेष प्रभावशाली हैं। 'ज्ञान-रश्मि' (दोहावली) की रचना इसी छंद में की गई है। उदाहरण अवलोकनीय हैं-

"प्रभु से चाहें अगर हम, लेना कुछ वरदान।
पावन हिय अपना करें, बरसेंगे अनुदान।।
जिनका मन साधता नहीं, जागृत नहीं विवेक ।
साध न पावें लक्ष्य वे, उनको कष्ट अनेक।। (दोहा छन्द)

1. श्री रामस्वरूप दुबे- साकेत सुधा, पृष्ठ 265

रोला छंद का उदाहरण देखिए-

कोई काम न बड़ा कहाता और न कोई छोटा,
जो जन ऐसा नहीं समझते उन्हें बुद्धि का टोटा।।

4.अलंकरण- परम्परागत तथा नवीन दोनों ही प्रकार के अलंकारों का डा0 कर्मयोगी ने उपयोग किया किन्तु पुरानों को भी कुछ नई भंगमा के साथ प्रयोग किया है। उदाहरण अवलोकनीय हैं-

"संयम साधे जे रहें, शीतल सरल सुभाय। (अनुप्रास)

16. श्री लक्ष्मीनारायण सक्सेना 'कमलेश'

1.भाषा- श्री 'कमलेश' जी की भाषा सरस, साहित्यिक और भाव तथा विषयक अनुरूप परिवर्तित होने वाली है। भक्ति, श्रृंगार, साधना जैसे विषयों में भाषा का साहित्यिक रूप प्राप्त होता है। कहीं-कहीं अन्य भाषाओं के शब्दों का भी सहज भाव से प्रयोग हुआ है।

श्री 'कमलेश' जी ने भाषा की अद्भुत मृदुता और मधुरता प्रदान की है। भाषा और लय का मनोहारी संगम प्रस्तुत करने में आपकी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। आपकी भाषा की विशिष्टता के उदाहरण अवलोकनीय हैं-

"मध्य में टूट जाए- वह प्रबल-उत्साह क्या ?
बह सके धारा न जिसकी- वह अखण्ड प्रवाह क्या ?
नीचे गिरो मत, हर घड़ी ऊँचे उठो, ऊँचे चढ़ो। (तत्सम शब्दावली)

2. शैली- श्री 'कमलेश' जी एक सशक्त शैलीकार हैं। कोमलकाव्य कल्पनाओं के धनी होने के साथ-साथ गम्भीर चिन्तक भी होने से आपकी रचनाओं में उदात्त संदेश भी निहित है। आपने पद या गीत शैली में रचनाएं की हैं।

3. छन्द- कविता में छन्द का निर्धारण भी उतना ही आवश्यक है जितना गद्य में व्याकरण का। छन्द-शास्त्र को पिंगल-शास्त्र भी कहा जाता है, क्योंकि इसके आदि प्रवर्तक पिंगलाचार्य थे। श्री 'कमलेश' ने विविध छन्दों में सफलता पूर्वक काव्य-रचना की है। इनके द्वारा रचित कवित्त के उदाहरण अवलोकनीय हैं- "तीर्थरूप मानस" शीर्षक से एक कविता देखिए-

"अवधपुरी रामजन्म काशी बाल लीला बनी,
वृन्दावन व्याह का अनूठा रास रंग है।
बद्रीनाथ धाम कर याचना उत्तंगपथ, चित्रकूट चारु वन लीला का प्रसंग है।
जगन्नाथ धाम अति पतितउद्धार कथा, रामेश्वरधाम रण क्रीड़ा की उमंग है।

पावन त्रिवेणीराम राज्यका सुरम्य काल, तीर्थरूपमानस काएक एक अंग है।"

इनका मानस में सप्तपुरी शीर्षक से एक अन्य कवित्त छंद देखिए-

"प्रथम बालकाण्ड है अयोध्यापुरी सदृश,
दूसरा अवधकाण्ड मथुरा समान है।
तीसरा अरण्य काण्ड मायापुरी मायारूप,
चौथे किष्किन्धा मध्य काशी मूर्तिमान है।
सुन्दरकाण्ड कांची सी पाँचवीपुरी पुनीत,
छठा युद्ध काण्ड-सी अवन्तिका महान है।
दारावती सातवी पुरी प्रसिद्ध उत्तर की,
सातों काण्ड मध्य सप्तपुरी का विधान है।

4.अलंकरण- 'अलंक्रियते इति अलंकार:' जो शोभा, सुन्दरता और आकर्षण बढ़ाने में सहायक हों वह अलंकार है। हिन्दी में अलंकारों संख्या एक सौ बीस से भी अधिक मानी गई है। इनमें से कुछ को छोड़कर शेष सभी अर्थालंकार है। श्री 'कमलेश' जी के काव्य में शब्दालंकार तथा अर्थालंकार दोनों ने ही परम्परागत और मौलिक उपमानों से शोभा बढ़ाई है; यथा-

"साम्राज्य सारी सिद्धियों का है सुरक्षित सर्वदा - (अनुप्रास)

× × × × × × ×

विजय-शिखर पर दृढ़ प्रतिज्ञ हो, हम सदैव चढ़ते ही जाएं(रूपक)

दशम् अध्याय

उपसंहार

क. महापुरुषों की दृष्टि में आचार्य श्रीराम शर्मा

ख. युग की माँग और आचार्य श्रीराम शर्मा का योगदान

ग. युगमनीषी के रूप में आचार्य श्रीराम शर्मा का सन्देश, साहित्य मनीषियों के विचारों से उसका साम्य तथा उसकी निजी विशेषता।

घ. आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वज्जनों के विचार एवं सम्मतियाँ।

ड़ आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों की हिन्दी काव्य को देन।

(क) महापुरुषों की दृष्टि में आचार्य श्रीराम शर्मा

विश्व के कितने ही भविष्य वक्ताओं एवं भविष्य दृष्टाओं ने जो भविष्य वाणीयाँ की है वे स्पष्ट रूप से आचार्य शर्मा का नाम लेने के अलावा पूर्ण रूप से आचार्य जी के व्यक्तित्व और क्रियाकलापों के साथ मेल खाती है। जीन डिक्सन, जॉन मेलार्ड, रोम्यां रौलॉ, एन्डरसन पादरी वैक्टर, प्रो. हरार, नैस्ट्रोडेमस, आर्थर चार्ल्स क्लार्क, श्रीमती वोरिस्का सिलदिगर, गेरार्ड कइसे, जूल बर्न, कीरो, महर्षि अरविन्द, स्वामी आनन्दाचार्य, विश्वरंजन ब्रह्मचारी, राजनारायण षट्शास्त्री एवं फ्लोरेस का नाम इस संबंध में उल्लेखनीय है यहां शोधकर्ता उन महापुरुषों की अभिव्यक्तियां दे रहा है जिन्होने आचार्य जी के संबंध में स्पष्ट रूप से अपने विचार प्रस्तुत किए जो अवलोकनीय है-

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन: महामहिम राष्ट्रपति डा0 राधाकृष्णन को जब पूज्य आचार्य जी द्वारा भाष्य किए गए उपनिषदों का स्वाध्याय करने का अवसर मिला तो उन्होने अपनी भावांजलि इस प्रकार व्यक्त की *"काश! यह साहित्य मुझे जवानी में मिल गया होता तो मेरे जीवन की दिशा धारा कुछ और होती और में राजनीति में न आकर आचार्य श्री के चरणों में बैठा अध्यात्म का ज्ञान ले रहा होता।"*1

महात्मा गाँधी: गाँधी जी के कार्यालय में पूज्य आचार्य जी किशोर एवं युवावस्था में थे और स्वतंत्रता आंदोलन में एक निष्ठावान स्वयंसेवक के रूप में सक्रिय थे। पंत जी (श्री गोविन्द बल्लभव पंत) के द्वारा आचार्य जी के संबंध में गाँधी जी को मालूम हुआ कि आगरा जिले का एक देहाती स्वयं सेवक बहुत सराहनीय कार्य कर रहा है। साबरमती आश्रम में आचार्य जी के व्यक्तित्व एवं कार्यो से प्रभावित होकर गाँधी जी ने उनकी वहुत प्रशंसा की और कहा- *"तुम्हारे जैसे स्वयं सेवकों पर हमें गर्व है"*2

आचार्य विनोबा भावे: भूदान आन्दोलन के क्रम में विनोबा जी ग्वालियर आए हुए थे। पूज्य आचार्य जी ने अपने द्वारा भाष्य किए गये वेदों की प्रतियाँ उन्हें भेंट करने के उद्देश्य से एक कार्यकर्ता के द्वारा भेजीं। आचार्य जी के द्वारा भाष्य किए गए वेदों को पढ़कर विनोबा भावे ने प्रार्थना के समय वेद भेंट करने हेतु कार्यकर्ता से अपनी भावनात्मक अभिव्यक्ति की। जब वेदों की प्रतियाँ उन्हें प्रार्थना में भेंट की गई तो उन्होने सिर पर रख लिया और कहा-*"ये ग्रंथ किसी व्यक्ति द्वारा नहीं*

1. ब्रहमवर्चस- देवदूत आया हम पहचान न सके, पृष्ठ 68
2. ब्रहमवर्चस- युगद्रष्टा का जीवन दर्शन, वाड.मय, खण्ड-1

*शक्ति द्वारा लिखे गए हैं।*1

देवरहा बाबा: सुप्रसिद्ध संत देवारहा बाबा एक सिद्ध पुरुष थे। प्रत्यक्षत: तो वे आचार्य से हिमालय प्रवास पर अथवा सूक्ष्म स्तर पर अनेकों बार मिले होंगे पर भौतिक जीवन में दोनों को मिलते किसी ने नहीं देखा। उनने एक परिजन से कहा- *बेटा! उनके बारे में मैं क्या कहुं? यह समझो कि मैं हृदय में सतत् उनका स्मरण करता रहता हूँ। गायत्री उनमें पूर्णत: समा गई है एवं वे साक्षात् सविता स्वरूप हैं.....* एक दूसरे अक्सर पर कुछ अधिक खुल कर कह उठे- *"बेटा! लोग उन्हें पहचाने नहीं हैं। तुम्हारे गुरु आचार्य श्रीराम नहीं 'राम' ही है। कभी मत भूलना कि तुम एक अवतारी सत्ता के लीला सहचर हो!* एक बार जब उनसे आचार्य जी के बारे में पूँछा तो बोले में क्या बताऊँ तुम उनके पास रहते हो, तुम्हीं बताओ? तो परिजन कह उठे हमारे पास वह दृष्टि कहाँ जो उनका सही स्वरूप देख सके। आप जैसे दिव्य संपन्न ही देख सकते हैं। सुनकर बाबा थोड़े गंभीर हुए, *बोले उनके बारे में.....उत्तर दिशा की ओर मुड़कर हाथ जोड़कर उनने नमस्कार किया मौन ही रहे कुछ बोले नहीं।"*2

देवरहा बाबा के एक बहुत नजदीक रहे गायत्री परिवार से भी जुड़े एक सरकारी अधिकारी का कथन है कि अपने शिष्यों में से एक प्रमुख उनने प्रात:काल सूर्योदय के समय उतर दिशा में नमन करते हुए कहा था: *"मैं नित्य प्रति सूर्य का प्रणाम कर गायत्री के सिद्ध साधक आचार्य श्री का नित्य प्रति अभिनंदन करता हूँ।*

महात्मा आनन्द स्वामी: एक बार स्वामी जी शांतिकुंज पधारने पर मंच पर बैठे-बैठे विज्ञान के भाग गायत्री मंजरी की बहुत प्रशंसा करने लगे। उसमें शिव पार्वती संवाद के रूप में गायत्री महाविद्या की कुंडलिनी शक्ति का वर्णन है, आचार्य जी ने उन्हें अपना अनन्य मानकर उन्हें बताया कि यह उन्हीं के (आचार्य शर्मा) द्वारा लिखी गई हैं यह सुनकर स्वामी जी गंभीर होकर सोचने लगे। आचार्य जी समझ गये, भलीभाँति ताड़ गए कि वे क्या सोच रहे है। उनने परिहास में बात घुमाने की कोशिश की किंतु अपनी बारी आने पर जब आनन्द स्वामी जी ने अपनी वक्तृता आरम्भ की तो बोले- "एक बार मैं दुर्गम हिमलाय गया वहाँ हिमाच्छादित सुरम्य क्षेत्र के बीच एक बड़ी शिला मुझे बर्फ रहित दिखाई। एक साधक से जो गाइड का काम भी कर रहा था, पूछा तो

1. ब्रहमवर्चस- देवदूत आया हम पहचान न सके, स्मारिका, पृष्ठ 72
2. ब्रहमवर्चस- महापूर्णाहुति, स्मारिका

बोला-कहा जाता है कि इस शिला पर शिवजी ने तप किया था, इसलिए इस पर बर्फ कभी टिकती नहीं। यह किंबदन्ती है, कितनी सच है, मालूम नहीं मेरा इस शिला तक पहुँचने का आग्रह यह सुनने के बाद और बढ़ गया व दुर्गम स्थल होते हुए भी मैं किसी तरह वहाँ पहुँच गया। शिवजी की तपस्या की उस स्थली तक पहुँचकर ध्यान आरम्भ किया तो मैंने सतत् ध्यान में इनकी (समीप बैठे पूज्य आचार्य जी की ओर इशारा करते हुए) झलक देखी। मैं समझ गया कि ये क्या है किस रूप में धरती पर आए हैं। सभी श्रोता अभिभूत थे स्वामी जी के ये भाव भरे उद्‌गार सुनकर पृथ्वी पर इस समय शिवजी की चेतना का प्रतिनिधित्व करने वाली शक्ति स्वयं आचर्य जी हैं- परोक्ष रूप से यह सबने जान लिया, एक सिद्ध गायत्री साधक के मुख से उनकी अनेकानेक बार की अभिव्यक्तियाँ यही थी कि "आचार्य श्री ने गायत्री का जन-जन की बना कर महर्षि दयानन्द के कार्य को आगे बढ़ाया है गायत्री और वे एक रूप हो गए है।"

कांची काम कोटिपीठ के शंकराचार्य- श्री जयेन्द्र तीर्थ स्वामी ज़ब शांतिकुंज पधारे तो ऋषि युग्म के दर्शन उनने किए। संतो की मंडली में उनने अभिव्यक्ति दी व समय-समय पर कहते भी रहे कि "आचार्य जी का एकाकी पुरुषार्थ सारे संत समाज की सम्मिलित शक्ति के स्तर का है। उनने गायत्री व यज्ञ को प्रतिबंध रहित करने निमित्त जो कुछ किया है वह शास्त्रों के अनुसार ही था। आचार्य जी ऐसे युग पुरुष हैं जिनका हर कार्य शास्त्र सम्मत, विधि सम्मत माना जाना चाहिए।"1 ऐसा कहकर उनने उत्तर दिशा में नमन किया- मेरा उन्हें बार-बार नमन हैं।

स्वामी विशुद्धानन्द जी महाराज: हिमालय निवासी त्रिकालदर्शी परम सिद्ध महाराज जी ने आचार्य जी के विषय में दिसम्बर 1957 की अखंड ज्योति में अपने विचार व्यक्त किए है- *आचार्य जी की नस नाड़ियां फौलाद की हैं। विगत तीस वर्षो में घनघोर तप कर उनने अपने आपको अष्टधातु का बना लिया है। हिमालय जैसी उदार हृदय एवं मानसरोवर जैसी निर्मल ये देनों (आचार्य जी व माता भगवती देवी शर्मा) आत्माएं है। वे असंख्यों को पार कराने वाले अनुभवों मल्लाह हैं। वे महान ही पैदा हुए हैं, महानता के साथ जी रहें हैं और उनका अंत भी महान ही होगा।2*

स्वामी करपात्र जी महाराज: अपने भाव भरे उद्‌गार पूज्यवर के संबंध में इस

1. ब्रहमवर्चस- महापूर्णाहुति, स्मारिका
2. ब्रहमवर्चस- देवदूत आया हम पहचान न सके, स्मारिका, पृष्ठ 77

रूप में व्यक्त किए थे- *"आचार्य जी इस युग में गंगोत्री के जनक हैं। उनने गायत्री को सबकी बना दिया। यदि इसे मात्र ब्राहमणों की मानकर उन्हीं के भरोसे छोड़ दिया गया होता तो अब तक गायत्री महाविद्या संभवतः लुप्त हो गई होती।"*1

स्वामी अखंडानंद जी महाराजः संत स्तर की सत्ता की पूज्यवर के बारे में अभिव्यक्ति थी- *"जो गायत्री का गंगाजल की तरह सेवन करना चाहते हों, वे आचार्य जी का मार्ग अपनाएं। यह आसान है और निरापद भी। आचार्य जी ने तो यज्ञ को भी देवदर्शन की तरह सुलभ बना दिया।"* 2

श्री जुगल किशोर बिड़लाः भाव भरे शब्दों में बिड़ला जी कहा करते थे, *मैंने गुरुदेव में, पंडित जी में साक्षात ब्राहमण के दर्शन किए थें उनका कोई कार्य कभी रुका नहीं सकता क्योंकि स्वयं भगवान उनमें समाए हुए हैं।*

श्री रंगनाथ मिश्रः जो कि काफी समय तक भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रहे तथा मानव अधिकार आयोग जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर क संगठन है, के अध्यक्ष रहे हैं, पूज्यवर की स्मृति में जारी किए गए डा टिकट विमोचन समारोह में 27 जून 1991 को एक विशिष्ट अतिथि के रूप सम्मिलित हुए थें। उनने अपनी भावभरी अभिव्यक्ति में पूज्यवर को युग पुरुष बताते हुए उपस्थित समुदाय को सौभाग्यशाली कहा कि वे ऐसे लीला पुरुष के सहचर रहे हैं। अपने सीमित किंतु ओजस्वी वक्तव्य में उनने कहा कि जब वे इस उच्च पद पर नहीं थे उड़ीसा हाईकोर्ट के एक न्यायाधीश मात्र थे, उनने स्वयं शांतिकुंज जाकर दर्शन किए थे। गुरुदेव की सादगी व ब्राह्णत्व से वे अभिभूत होकर लौटे थे। शांतिकुंज की केन्द्रीय टोली के सदस्यों से वे बोल उठे- महाप्रयाण के बाद भी पूज्य आचार्य जी ने एक बार मेरी शंका का समाधान किया था। एक दिन मै चिंतन मुद्रा में अर्धतंद्रा की स्थिति में बैठा था, तभी उनका बिम्ब सामने की दिवाल पर उभरा एवं एक वाक्य में उनने मेरे असमंजस को दूर कर तुरंत वह सब कुछ सुलझा दिया जो कि मेरे लिए ऊहापोह बना हुआ था। फिर निर्णय लेने में मुझे देर न लगी उनकी बात सुनकर श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी के साथ यहाँ से गए डा. अमल कुमार दत्ता जो कि सर्जन है एवं ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान का शोध कार्य देखते हैं पूछ बैठे *यह घटना स्वप्न या आत्मसम्मोहन की स्थिति भी तो हो सकती हैं एक वैज्ञानिक के नाते में पूछ रहा हूँ।* उनके रूप में एक चीफ जस्टिस बोल

1. ब्रहमवर्चस- देवदूत आया हम पहचान न सके, स्मारिका, पृष्ठ 78
2. ब्रहमवर्चस- महापूर्णाहुति, स्मारिका, पृष्ठ 102

उठा कि *नहीं, कतई नहीं, यह भ्रम नहीं था। यह मेरे जैसे स्तर का एक व्यक्ति कह रहा है व यह भी जानता है कि विज्ञान की परिधि से परे का विषय है यह! मेरी अपनी बुद्धि जिस निर्णय तक नहीं पहुँच पा रही थी वहाँ उनके इस दिग्दर्शन ने पहुँचा दिया।* मेरे अन्दर एक अनुपम आत्म विश्वास जाग उठा। निश्चिय ही यह एक दिव्य संचार था।

महामहिम राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा: डाक्टर शर्मा जी ने पूज्यवर आचार्य शर्मा के प्रति अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति के रूप में अपनी पुस्तक "देशमणि" में दो लेख आचार्य शर्मा के प्रति समर्पित किए हैं। विद्वतापूर्ण लिखे गए इन लेखों में उनने जो अभिव्यक्ति की है बड़ी महत्वपूर्ण लगती है कि *"युग परिवर्तन के लिए जिस अवतार की आवश्यकता है, वह पहले आकांक्षा के रूप में ही अवतरित होगा। चूंकि यह आकांक्षा व्यक्ति में ही उत्पन्न हो सकती है इसलिए उनने व्यक्ति के सुधार और विकास को प्रमुख माना। मनुष्य में देवत्व को उभारने का प्रयास किया। उनका यह प्रयास मनुष्य को आचरणशील तथा उदात्त बनाने से जुड़ा हुआ था।"*. आगे एक स्थान पर वो लिखते हैं- *"आचार्य जी ने उपासना, साधना और आराधना की त्रिवेणी रूपी सिद्धान्त और साधना को आधुनिक युग के अनुकूल तर्क और शब्द देकर सामाजिक परिवर्तन का जो रास्ता दिखाया है, उनके लिए आने वाली पीढ़ियाँ युगों तक उनकी कृतज्ञ रहेंगी।"* एक ओर स्थान पर उनने कहा है कि *"आचरण से जो शिक्षण दे उसे आचार्य कहते हैं* आचार्य जी मै इसी रूप में परिभाषित करता हूँ।"1

(ख) युग की माँग और आचार्य श्री राम शर्मा का योगदान-

आचार्य श्रीराम शर्मा ने अपना व्यक्तित्व व कृतित्व युग की माँग को पूरा करने हेतु समर्पित किया था। उन्होने न केवल जीवन व जगत की वर्तमान उलझनों को अपने सर्वांग अनुभव के प्रकाश में सुलझता; बल्कि उसके भविष्यत् विकास के लिए मार्ग प्रशस्त किया। उनके द्वारा किए गये योगदान को निम्न बिन्दुओं में समझा जा सकता है।

1.वैदिक दृष्टिकोण का पुनरुद्धार- आचार्य जी न केवल वेदों के भाष्यदार; बल्कि स्वयं भी युगद्रष्टा ऋषि थे। उनका जीवन दर्शन वेदों की ओर प्रत्यागमन है। इतने लम्बे संघर्षपूर्ण इतिहास के बाद भारतीय दर्शन उनके विचारों में पुनः

1. डा0 शंकर दयाल शर्मा- देशमणि, पृष्ट 107-110

अपनी आत्मा को पा लेता है, लेकिन लम्बे विकास का श्रम बेकार नहीं गया। उन्होने न केवल वैदिक विचार शैली का पुनरुद्धार किया, बल्कि गायत्री और यज्ञ का प्रसार-विस्तार करके वैदिक जीवन शैली को पुनर्जीवित किया है लाखों की संख्या में विश्व भर में फैले गायत्री परिवार के सदस्यों के रहन-सहन व आचार-विचार में आज वैदिक जीवन शैली की झलक अनुभव की जा सकती हैं। वैदिक काल की ही भांति यज्ञ-भाग के कर्मकाण्ड एवं वैदिक मंत्रों में निष्णात युग पुरोहितों एवं ब्रह्मवादिनी स्तर की महिलाएं गायत्री परिवार के यज्ञायोजनों एवं विविध, कार्यक्रमों को संचालित करती देखी जा सकती हैं। आचार्य जी के प्रयासों का मूर्तरूप गायत्री परिवार के चिंतन व जीवन देखकर ऐसा अनुभव होता है जैसे वैदिक चिंतन व जीवन का धरा पर पुनः अवतरण हो गया हो।

2. आचार्य शर्मा जी सर्वांग दृष्टिकोण- आचार्य शर्मा अपने व्यापक बोध में किसी का भी निषेध न करके सभी को एक उच्च समन्वय में मिला देते हैं। साहित्य, दर्शन, धर्म, मनोविज्ञान, नीतिशास्त्र, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, समाजशास्त्र, ज्ञान एवं विज्ञान की अन्य सभी शाखाओं में उन्होने पूर्ण मानव पर, मानव के साथ प्रकृति एवं मानव, जगत तथा ईश्वर में समाज से अभिव्यक्त परम तत्व पर जोर दिया है। उनके दर्शन की विचार भूमि में निर्देशक तत्व सत्-चित्-आनन्द का सर्वांग अनुभव हैं जो कुछ है- वह सत् है, क्योंकि कुछ भी परमात्मा के बाहर नहीं हैं। सर्वव्यापक परमेश्वर अपनी प्रतीतियों को असत्य नहीं बनाता; बल्कि उनकी सत्यता की पुष्टि करता है। आत्मा निरपेक्ष में सत्ता है। मानव भी उतना सत् है, जितनी कि ईश्वर। जगत और ब्रह्म दोनों ही सत् की दो अवस्थाएं हैं। मानव प्रेम अज्ञान नहीं; बल्कि दैवी प्रेम की एक सीढ़ी है।

3. आचार्य शर्मा की सर्वांग प्रणाली- आचार्य जी सर्वांग प्रणाली के द्रष्टा हैं। उनके अनुसार दार्शनिक को जनना ही नहीं, विकसित भी होना है। इस तरह उनका दर्शन जीवन से घुला-मिला है जिसे जीवन दर्शन के रूप में जाना जाता है। यह जीवन दर्शन उनके आध्यात्मिक अनुभव का ही एक महत्वपूर्ण सोपान है लेकिन इससे वह हीन अथवा न्यून नहीं हो जाता। नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, अध्यात्मशास्त्र, विज्ञान सभी का अपना स्वधर्म है। सभी परमतत्व की ओर आवश्यक सोपान हैं। फिलॉसफी जैसा कि उसके नाम से स्पष्ट है- ज्ञान से प्रेम है। अधिक व्यापक ही अधिक बुद्धिमान होता है। अतः जीवन दर्शन में सभी प्रकार के अनुभव सम्मिलित होने चाहिए; परन्तु इसके लिए एक सर्वांग अनुभव एवं इसे पाने के लिए एक सर्वांग प्रणाली की आवश्यकता है। आचार्य

शर्मा ने इसका विकास करके पहले से संघर्षरत अनेकानेक प्रणालियों के मध्य अलौकिक सामांजस्य की स्थापना की है।

4. आचार्य शर्मा का सर्वांग धर्म- मानव जाति के विकास में प्रत्येक धर्म ने सहायता की है। धर्म एक मौलिक आवश्यकता की पूर्ति करता है और यह अपरिहार्य भी है; परन्तु उसके वर्तमान स्वरूप में सुधार की आवश्यकता है। वर्तमान अवस्था में धर्म, प्रथाओं, परम्पराओं, रूढ़ियों एवं कुरीतियों का ढेर बनकर रह गया है। श्री मंगल विजय इसकी पुष्टि अपने काव्य में करते हैं-

"धर्म लिपटाया कफन सी कथाओं के आवरण में,
धर्म का दर्शन कहाँ इस मरघटी वातावरण में,
पूजने की पोथियों में सड़ रहे सिद्धान्त के शव,
क्योंकि वे मृत हो गये अनुयायियों के आचरण में।"

डा. हरगोविन्द सिंह भी धर्म की महत्ता में लिखते हैं-

"धर्म की सत्ता किसी भी राज सत्ता से बढ़ी ,
है यही वह रीढ़ किस पर मनुजता तन क खड़ी है।
किन्तु है दुर्भाग्य इसकी विधि व्यवस्था जाह्नवी ी-
पेट पूजा के कमण्डल में कई युग से पडी है।"

आचार्य शर्मा जी के मतानुसार- धर्म को इस जाल जंलाल से उबारना समय की महती आवश्यकता है। कोई धर्म जितना ही अधिक आध्यात्मिक होगा वह उतना ही उत्तम होगा; क्योंकि आध्यात्मिक ही उसका लक्ष्य है।

आचार्य जी ने अपने चिन्तन में ईश्वर और आत्मा का स्पष्ट बोध कराया साथ ही उसके साक्षात्कार के लिए अध्यात्म की वैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर बल दिया है; लेकिन धर्म उनके लिए सिर्फ भगवत् साक्षात्कार का उपाय भर नहीं है। इसके अन्तर्गत उन्होने इन नीतियों, आचार प्राणालियों का भी स्पष्टीकरण किया है जो सामाजिक विकास व उत्कर्ष के साथ सार्वभौम मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करें। इस हेतु उन्होने समस्त धर्मो की अच्छाईयों को स्वीकार कर एक सर्वव्यापक धर्म-मानव धर्म का प्रतिपादन भी किया है।

5. आचार्य शर्मा का सर्वांग विकास- सामान्य क्रम में विकास के सिद्धान्त को पश्चिमी चिन्तन की देन समझा जाता है। विकास के सिद्धान्त की बात उठते ही मन के सामने डार्विन, लेमार्क, हयूगो-डी ब्रीज आदि अनेक नामों की तालिका आ जाती है। साथ ही हेगल-क्रोचे आदि के नाम भी सामने आते है, जिन्होंने विकासवाद के वैज्ञानिक सिद्धान्त को अपना बौद्धिक कलेवर पहनाकर दर्शन का रूप दिया। विकास का सिद्धान्त पूर्व में भी कभी पनपा था, यह

बात प्रायः बौद्धिक समाज भूल गया है। यदि कभी याद आती भी है तो सांख्य के सूत्रों तक सिमटी-सिकुड़ी रहती है; जब कि विकास के सत्य और तथ्य की वैज्ञानिकता वैदिक चिंतन में भी यत्र-तत्र सर्वत्र बिखरी पड़ी है। आचार्य जी अपने विकासवादी सिद्धान्त में पूर्व और पश्चिम दोनों में से किसी की भी अवहेलना, उपेक्षा नहीं करते। पूर्व के वैयक्तिक विकास को वह जहाँ समष्टिगत स्वरूप प्रदान करते हैं वही जड़-जीवन-मानस तक आकर अटकी हुई पश्चिमी चिंतन की विकास यात्रा को परम चेतना का स्पर्श देते हैं। उनका यह सिद्धान्त पूर्व की आध्यात्मिकता एवं पश्चिम की बौद्धिकता को अपने में समाहित कर विकासवाद का सर्वांगीण स्वरूप प्रस्तुत करता है।

6. आध्यात्मिक साहित्य का सृजन- आध्यात्मिक साहित्य की दृष्टि से देखें तो पाते हैं कि इस सम्बन्ध में आचार्य श्रीराम शर्मा का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होने आध्यात्मिक साहित्य का सृजन आत्म प्रसिद्धि के लिए न कर, जन सामान्य के सम्पूर्ण चिंतन को प्रभावित करने तथा मनुष्य मात्र को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने हेतु किया। उनका साहित्य सृजन उनके 'विचार क्रान्ति अभियान' का अभिन्न अंग है। उनके द्वारा लिखित लगभग तीन हजार पुस्तकें सरल, सुबोध, शैली के कारण अत्यधिक लोकप्रिय हुई। उनकी लोकप्रियता का दूसरा कारण यह है कि आचार्य शर्मा द्वारा रचित इस साहित्य में प्रत्येक मानवीय समस्या-धार्मिक, राजनैतिक, दार्शनिक, शैक्षणिक, वैयक्तिक तथा सामाजिक आदि का समाधान प्राप्त हो जाता है। उनके लेखन में भारतीयता सहज स्वाभाविक रूप से प्रतिबिम्बित होती है; किन्तु साथ ही यथास्थान हमें पाश्चात्य सभ्यता के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर किया गया उनका चिन्तन भी उपलब्ध होता है। इस तरह हम देखते हैं कि उनका साहित्य सृजन विचार क्रान्ति अभियान के अन्तर्गत आता है। श्रीराम शर्मा के विचार क्रान्ति अभियान को भारतीय समाज के प्रति उनका एक अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान माना गया है। इस अभियान के माध्यम से उन्होने प्रत्येक लोकसेवी कार्यकर्ता से यह अपेक्षा की है कि *वह मानवीय चिंतन को सृजनात्मक दिशा में अग्रसर करने में अपना समय, प्रतिभा, श्रम व जीवन लगा दें।* उन्होने वैचारिक क्रान्ति के इस अभियान को इसलिए प्राथमिकता दी कि *चिंतन ही आचरण का निर्धारिक होता है।* इस अभियान के द्वारा उन्होने मूल्यपरक चिंतन के प्रति आस्था जगाने का प्रयास किया। जिससे मानवी मूल्यों के विघटन को रोका जा सके। ज्ञातव्य है कि उन्होने अपने अनुयायियों को *अपने आचरण के द्वारा मूल्य परक सृजनात्मक चिन्तन की शिक्षा दी, इस तरह विचार और आचार के घनिष्ट सम्बन्ध की*

ओर अपने मतावलम्बियों को ध्यान दिलाया।

भारतीय दार्शनिक परम्परा के अनुकूल आचार्य शर्मा ने उन गूढ़ विषयों पर भी अपने विचार प्रस्तुत किये, जो अध्यात्म के महत्वपूर्ण विवेच्य विषय हैं तथा जिनका वर्णन इस शोध प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में किया गया है, इस तरह आचार्य शर्मा ईश्वर, आत्मा, सृष्टि तथा मोक्ष के सम्बन्ध में परम्परागत भारतीय विचार धारा को प्रस्तुत करते हुए उनके वैज्ञानिक आधारों को स्पष्ट करने का सफल प्रयास करते हैं, साथ ही स्थल-स्थल पर हमें उनकी मौलिक व्याख्या एवं शैली का परिचय भी मिलता है। आध्यात्मिक विषयों का जिस प्रकार सारगर्भित वैज्ञानिक प्रतिपादन आचार्य श्री रामशर्मा ने सविस्तार प्रस्तुत किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ प्रतीत होता है। ईश्वर अस्तिकत्व के सम्बन्ध में वैज्ञानिक उपलब्धियों का उल्लेख, विद्युत शक्ति व चित् शक्ति के विभेद के वर्ण द्वारा चित्त शक्ति अथवा आत्मा की प्रभुता का वर्णन उनके आध्यात्मिक दर्शन की विशेषताएं हैं। जड़ और चेतन के गुणधर्मो की जो व्याख्या आचार्य शर्मा करते हैं वह इतनी सम्यक है कि उसे दार्शनिक, वैज्ञानिक व साहित्य-मनीषी भी एक स्वर से स्वीकार करते हैं।

आचार्य शर्मा ने ईश्वर के विराट स्वरूप का चित्रण अत्यन्त मौलिक रूप से किया हैं जिसके अन्तर्गत उन्होने ब्रह्मा के चार मुखों को क्रमशः ब्रह्मा (आत्मा) विष्णु अवतार एवं भगवान का प्रतीक माना है। इस तरह उन्होने भारतीय दार्शनिक परम्परा तथा प्रचलित देववाद का समचित रूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

आत्मा सम्बन्धी विचारों में हम आचार्य शर्मा पर दार्शनिक आत्मवादी परम्परा का गहरा प्रभाव देखते हैं। अन्य भारतीय दार्शनिकों की तरह आचार्य शर्मा भी आत्म जिज्ञासा के विषय में व्यापक चिन्तन करते हुए उत्तर देते है। कि इस संसार का वास्तविक तत्व अथवा अधिष्ठान नित्य अविनाशी आत्मा ही है। इस आत्म तत्व का ज्ञान होने पर मनुष्य भय, शोक, चिन्ता आदि मनोभावों से मुक्त होकर परमपद मोक्ष को प्राप्त करता है।

आचार्य शर्मा के सृष्टि सम्बन्धी चिन्तन पर दृष्टिपात करे तो पाते हैं कि उन्होने न केवल सृष्टि के रहस्यात्मक स्वरूप को उद्घाटित करने व प्रयत्न किया है अपितु साथ ही इस सन्दर्भ में प्रकृति के शोषण से सम्बन्धित मानवीय प्रयासों का उल्लेख करते हुए पर्यावरण को सुरक्षित रखने की अपील भी की है।

आचार्य श्रीराम शर्मा जहाँ ईश्वर को इस जगत को असंख्य जीवों

का रचयिता, पालनकर्ता एवं जगत के नियंत्रणकर्ता के रूप में मानते हैं, वहीं वे कबीर के अन्तरंग की अनूठी कल्पनाओं को जीवन्त कर देते हैं। कबीर साहब ने ईश्वर के विराट स्वरूप का चित्रण इस प्रकार किया है-

"व्यापक ब्रह्म सबनि में ऐकै, को पंडित को जोगी।
राजा-रंक कवन सूं कहिए, कबन वेद को रोगी?
इनमें आप, आप सबहिन में, आप-आप सूं खेले।
नाना भांति धड़े सब भाड़े, रूप धरे धरि मैले।।"

(कबीर ग्रंन्थावली, पद 13 पृ. 34)

आचार्य शर्मा दृढ़ता पूर्वक यह घोषणा करते हैं कि आश्चर्य जनक वैज्ञानिक प्रगति और तकनीकी विकास से यद्यपि मानव की बौद्धिक सामर्थ्य का परिचय मिलता है तथापि अभी भी प्रकृति के ऐसे अनेक रहस्य हैं, जिन्हें सुलझाने में वह समर्थ नहीं हो सका है। आचार्य शर्मा बतलातें है कि सृष्टि में सब कुछ स्थूल ही नहीं है अतः वह सम्पूर्ण सृष्टि को बौद्धिक स्तर पर जानने का दावा नहीं कर सकता। सृष्टि की रहस्यात्मकता एवं स्वसंचालित क्रियात्मकता का विवरण हमें आचार्य शर्मा की पुस्तकों में प्राप्त होता हैं। इस विवरण को समझने पर हममें मानवीय अस्तित्व से परे किसी सर्वशक्तिमान सत्ता के प्रति जिज्ञासा जाग्रत होती है।

व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व की गहन अनुभूति आचार्य शर्मा आजन्म करते रहे। यही कारण है कि उन्होने व्यक्ति के उत्थान के लिए अभूतपूर्व प्रयास किया। आचार्य शर्म ने वर्ष 1989 में शांतिकुंज में नैतिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण की व्यवस्था की। इस शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों से भारत के विभिन्न प्रदेशों की शैक्षणिक संस्थाओं, (विद्यालय एवं महाविद्यालय) के प्राचार्य, शिक्षक एवं शिक्षाधिकारी लाभान्वित हो रहे हैं। इतना ही नहीं उत्तर प्रदेश सरकार ने इस विशेष नैतिक प्रशिक्षण सत्रों में सम्मिलित होना, अपने प्रदेश के महाविद्यालीन शिक्षकों के लिए अनिवार्य घोषित करते हुए भत्ते आदि की व्यवस्था भी की है। इसी प्रकार भारत सरकार के द्वारा स्काउट एवं गाइड के शांतिकुंज, हरिद्वार में संचालित विभिन्न प्रशिक्षणों में नैतिक शिक्षा का समावेश भी शांतिकुंज के सहयोग से किया जाता है।

अध्यात्म की पुनर्स्थापना हेतु आचार्य शर्मा ने 'शान्तिकुंज' आश्रम में साधनात्मक वातावरण तथा 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' में उन साधनाओं के वैज्ञानिक आधारों एवं परिणामों के आंकलन हेतु एक विशाल प्रयोगशाला का निर्माण करवाया। यह प्रयोगशाला आज के भौतिकवादी युग में व्याप्त उन संदेहों

के निराकरण करने के प्रयास में निरन्तर सचेष्ट है जिन संदेहों के कारण भारतीयों की आध्यात्मिक आस्था निरन्तर विघटित हो रही है। इस प्रयोगशाला के द्वारा उन्होने भारतीय आध्यात्मिक परम्परा के दार्शनिक आधारों की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है। यह प्रयोगशाला उन लोगों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करती है जो भारतीय आध्यात्मिक परम्परा की वैज्ञानिकता पर आस्था रखते हैं।

आचार्य शर्मा आत्म-अमरत्व तथा मरणोत्तर जीवन को स्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि पुनर्जन्म, कर्मफल एवं मरणोत्तर जीवन पर विश्वास करने से मानव दुष्कर्म व कुकर्म से बच सकता हैं। अपनी पुस्तकें एवं लेखों के माध्यम से उन्होने जन सामान्य तक यह संदेश पहुंचाने का प्रयास किया है कि नैतिक व्यवस्था के बिना मनुष्य मनुष्य नहीं रह जायेगा। कर्म सिद्वान्त की सरल व्याख्या करते हुए उन्होने यह समझाने का प्रयास किया है कि सत्कर्म एवं सद्विचारों से ही मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सन्तोष प्राप्त होता है। अत: तनाव, कुण्ठा, भय इत्यादि भावों से बचने के लिए सत्कर्म व सद्विचार अपेक्षित हैं। इतना ही नहीं उन्होने कहा- *"मानव के विचार एवं कर्म ही उसके भावी जीवन के निर्माता होते हैं।"*

नवयुग का नवीन जीवन-दर्शन:- आचार्य जी सिर्फ नवयुग का संदेश देकर ही मौन नहीं हो जाते, वह भविष्य के मानव के लिए आचार-विचार की पद्धति, भावी जीवन की रीति-नीति की व्यापक रूपरेखा भी प्रस्तुत करते हैं। साथ ही वे वह उपाय भी प्रस्तुत करते हैं जिनको अपनाकर आज का मानव स्वयं को देवमानव में बदल सके तथा धरती को स्वर्ग बना सके। अपने युग की सभी मांगों से पूरा करने के कारण इसे युग दर्शन भी कहा जा सकता है। अपने सर्वांगीण स्वरूप में इसमें प्राचीन और नवीन, पूर्व एवं पश्चिम, यर्थाथवाद और आदर्शवाद, भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद का अपूर्व समन्वय हैं। जहां गतिहीन मायावादी और आदर्शवादी सिद्धान्त जीवन को पलायन व निराशा के गर्त में धकेलते है एवं सामाजिक तथा राजनैतिक व्यवस्था को विश्रृंखलित करते हैं, वहीं भौतिकवाद-वैज्ञानिक जड़वाद मनुष्य से उसके चेतनात्मक विकास के सारे अधिकार ही छीन लेता है। ऐसे में मनुष्य के जीवन की सभी समस्याओं को सुलझाने और ज्ञान-विज्ञान की सभी प्रणालियों को अपनी सर्वांगीणता में पूर्णता से व्यवस्थित करने वाला दर्शन ही मानवता की यथार्थ सेवा कर सकता है। आचार्य शर्मा ने यही सर्वांगीण प्रयास किया है। "उनका यह प्रयास वर्तमान का विवेचन एवं भविष्य की दृष्टि तो देता है; पर भावी शोध के लिए गतिरोध उत्पन्न नहीं करता। उल्टे उनके द्वारा निर्मित नवयुग के इस नवीन

जीवन दर्शन में भावी दार्शनिक ऐसा सुस्पष्ट मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं जिसको आधार बनाकर वे मानव जाति के नवजागरण में पूरी ईमानदारी से अपनी भूमिका निभाते हुए इस नवयुग का नवीन दर्शन की अनेकों शाखा प्रशाखाओं का व्यापक विस्तार सकते हैं।"1

उपर्युक्त मूल्यांकन के द्वारा शोधकर्ता द्वारा यह प्रमाणित करने का विनम्र प्रयास किया गया है कि आचार्य श्रीराम शर्मा बीसवीं शताब्दी के ऐसे भारतीय चिन्तक हैं, जिन्होने वर्तमान वैज्ञानिक युग की मांग को देखते हुए पारम्परिक दार्शनिक प्रणाली में समाविष्ट विभिन्न विषयों यथा- आत्मा का स्वरूप, आत्म-अमरत्व, आत्मबोध, पुनर्जन्म, मरणोत्तर जीवन, कर्म-सिद्धान्त इत्यादि तथा अतीन्द्रिय जगत के सत्य, आध्यात्मिक शरीर विज्ञान, यज्ञ विज्ञान एवं स्वप्न-विज्ञान की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। इस सन्दर्भ में उन्होने ने केवल विपुल साहित्य की रचना कर उसे सर्व सुलभ बनाया, अपितु साधना स्थली 'शान्तिकुंज' का निर्माण कर साधकों के लिए साधना का मार्ग प्रशस्त किया। इसके अतिरिक्त 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' का निर्माण एवं स्थापना कर उन जिज्ञासु अनुसंधानकर्ताओं के लिए सुअवसर उपलब्ध कराया जो परम्परागत भारतीय दर्शन के विषयों के महत्व को स्वीकार करने के बावजूद उनकी वैज्ञानिक प्रामणिकता सिद्ध करने में असफल रहते है। इस प्रकार पारम्परिक भारतीय दर्शन की आधुनिक वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत कर उसकी प्रयोगात्मक स्वरूप को स्पष्ट कर आचार्य शर्मा ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, राष्ट्र कल्याण तथा विश्व कल्याण की दिशा में अविस्मरणीय योगदान किया है।

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की जन-जन में पहुंच :- आचार्य शर्मा के 'युग निर्माण मिशन' की सर्वाधिक उल्लेखनीय उपलब्धि है वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की प्रबुद्ध वर्ग में पैठ। ज्ञातव्य है कि इस वर्ष (2004) ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के रजत जयन्ती मनायी जा रही है। इसे वर्ष 1979 की गायत्री जयन्ती पर आचार्य शर्मा द्वारा स्थापित किया गया था, परन्तु उन्होने इस औपचारिक स्थापना के काफी पूर्व पचास के दशक से ही इस पक्ष पर लिखना आरम्भ कर दिया था; यहां तक कि उनने एक छोटी सी पुस्तिका वर्ष 1947 में प्रकाशित भी की, जिसका शीर्षक था 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद'। आचार्य जी की धारण रही है कि विज्ञान और अध्यात्म एक दूसरे अविभाज्य अंग हैं। दोनों साथ मिलकर जब जब चले है, समाज ने उस युग में प्रगति की है। आज

1. डा0 मंदाकिनी श्रीमाली- प्रज्ञापुरुष का समग्र दर्शन

विज्ञान निरंकुश है एवं धर्म की एवं अध्यात्म की स्थापनाओं की अवहेलना करता है या उन्हें अवैज्ञानिक ठहराता है। दूसरी ओर मूढ़ मान्यताओं, रूढ़ियों, अंधविश्वासों, पुरातन परम्पराओं ने अध्यात्म को बेडियों में जकड़ रखा है। वह मुक्त ही नहीं हो पा रहा। मात्र चिन्ह पूजा दिखाना एवं उसके नाम पर मनमानी अध्यात्म का पर्याय बनकर रह गई है।

आचार्य शर्मा का यह चिन्तन रहा कि *अध्यात्म एक उच्च स्तरीय विज्ञान है*- चेतना जगत की एक महत्वपूर्ण विद्या है, जिसे आज के पदार्थ विज्ञानी मर्म से समझ नहीं पाते। अध्यात्म को विज्ञान सम्मत बनाना आज का युगधर्म है, इसी कारण पूज्य आचार्य जी ने आप्त वचनों को वैज्ञानिक आधार पर प्रमाणित करने का दायित्व अपने हाथ में लिया। उनने प्रतिपादित किया कि आज के विज्ञान को हमारा चिरपुरातन, किन्तु नूतन परिष्कृत अध्यात्म ही चिरस्थायी आधार दे सकता है। अस्तिकता का वैज्ञानिक आधार आचार्य जी ने तर्क, तथ्य प्रमाणों की कसौटी पर कसकर प्रस्तुत किया। इन प्रतिपादनों को पढ़कर अगणित बुद्धिजीवी 'गायत्री परिवार' से जुड़ते चले गए। युवा वर्ग को एक नई दिशा मिली। लोगों को लगा कि अध्यात्म पलायनवाद नहीं सिखाता, यह तो जीवन जीने की कला है। हर श्वांस में इसे जिया जाना चाहिए, जिया गया है। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद मात्र गायत्री परिवार नहीं, आचार्य शर्मा की प्रेरणा से अब अगणित संस्था प्रमुखों के मुख से प्रतिपादित किया जाने लगा है। यह वैज्ञानिक अध्यात्मवाद ही है, जिसने चिकित्सकों, तकनीकी विशेषज्ञों, अध्यापकों, तार्किक दार्शनिकों, साहित्यकारों, छात्र-छात्राओं एवं प्रशासन से जुड़े अधिकारियों को युग निर्माण मिशन से जोड़ दिया। वर्ष 1977-78 में 42 पुस्तकों का वैज्ञानिक अध्यात्मवाद प्रधान एक सेट आचार्य जी ने लिखकर प्रकाशित किया था एवं पुनः वर्ष 1988-89 में 24 पुस्तकों का सेट जन-जन के बीच पहुँचा। अध्यात्म की प्रगतिशील व्याख्या ने लाखों-करोड़ों व्यक्तियों में आचार्य जी के विचारों को पहुंचा दिया। 'अखण्ड ज्योति', 'युग शक्ति गायत्री', 'युग निर्माण योजना', 'प्रज्ञा अभियान' आदि पत्र-पत्रिकाएं आचार्य जी के प्रतिपादनों को प्रतिमाह जन-जन में पहुंचा रही हैं।

संघ शक्ति का जागरण:- आचार्य शर्मा जी के ऐतिहासिक परम पुरुषार्थ से संघ शक्ति की दुर्गा का जागरण हुआ। 'संघौशक्ति कलौयुगे' की बात कहकर उनने विभिन्न वर्गों को एक जुटकर युग के नव निर्माण की बात कही, जो क्रमशः जनसमुदाय को आत्मसात होती रही। संगठन किए बिना कोई भी समूह-संस्था या राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता। संगठन यदि साधना की धुरी पर

खड़ा हो, संवेदना उसकी रग-रग में हो तो उसका आधार मजबूत होता है। आचार्य जी का जीवन भर ध्यान इसी तथ्य पर रहा कि हम सभी संघबद्ध होकर दुर्गाशक्ति को जगाएं। यह हो पाया, तब ही हम युग निर्माण कर पाएंगे। संगठन को उनने नीचे से ऊपर तक एक पारदर्शी तंत्र द्वारा सशक्त बनाया।

समूह मन के जागरण की साधना की प्रतिष्ठा:- लोक मानस में सामूहिक साधना की प्रतिष्ठा आचार्य शर्मा की एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यदि समूह चेतना को जाग्रत करना है, एक कलेक्टिव माइन्ड- समूह मन का विकास करना है तो सभी मिलकर एक साथ प्रार्थना-जप-अनुष्ठान आदि करें, यह निर्देश आचार्य जी का समय-समय पर आता रहा एवं इसके परिणाम भी देखने को मिले। राष्ट्र पर या विश्व पर जब भी विपत्ति आई, आचार्य जी ने सामूहिक साधनाओं की तीव्रता बढ़ा दी। उनके ये प्रयोग पूर्णत: विज्ञान सम्मत थे। इनसे वातावरण में ऐसे कम्पन बने, ऐसा कुछ सकारात्मक माहौल बना कि दैवी प्रकोप तक निरस्त होते चले गए।

आचार्य शर्मा द्वारा व्यष्टि और समष्टि स्तर पर वैज्ञानिक अध्यात्म के प्रयोग सम्पन्न किए गये। आचार्य शर्मा ने अपने आध्यात्मिक प्रयोगों की शुरुआत प्राण प्रत्यावर्तन सत्रों से की। वर्ष 1973 एवं 74 में सम्पन्न हुए इन प्रयोगों का उद्देश्य भागीदारों की चेतना में ऐसा उत्कर्ष करना था कि लोभ मोह के सामान्य दायरे से ऊपर उठकर लोकहित के लिए समर्पित हो सकें। इस प्रयोग के प्रभाव ने ही शांतिकुंज और गायत्री नगर में आकर अपना लोक कल्याण के लिए सर्वस्व अर्पित करने वालों की भीड़ लगा दी।

वर्ष 1979 में आचार्य जी ने आध्यात्मिक शक्ति का एक अन्य विशिष्ट प्रयोग किया, जिसे उन्होने सुरक्षा अनुष्ठान की संज्ञा दी। इस वर्ष 'स्काईलैव' नामक अंतरिक्षीयान के विस्फोट का खतरा धरती पर मड़रा रहा था। वैज्ञानिकों के अनुसार "इसके गिरने पर प्रभावित होने वाले क्षेत्र थे- लाओस, मनीला, पनामा, अटलांटिक देश, नाइजीरिया तथा भारत का एक बहुत बड़ा क्षेत्र जिसमें महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, उड़ीसा तथा पश्चिमी बंगाल प्रमुख थे।"1 वैज्ञानिकों के अनुसार धरती पर इसके प्रभाव धन-जन की हानि के साथ सारे वातावरण का सन्तुलन बिगड़ जाना था। स्काईलैव इन जनसंकुल स्थानों से दूर समुद्र में कैसे जा गिरा, इसे ठीक-ठीक बताने में तो वैज्ञानिक

1. आचार्य श्रीराम शर्मा- यान संकट और सुरक्षा अनुष्ठान, अखण्ड ज्योति, वर्ष 42, अंक 7, पृष्ठ 1

सफल नहीं हो सके, पर हाँ उनके लिए यह आश्चर्य तो रहा ही। आचार्य शर्मा ने इस आश्चर्य का रहस्योद्घाटन करते हुए लिखा- "यह इस बात का चिन्ह है कि स्थूल को प्रभावित करने वाले विज्ञान की तरह सूक्ष्म को प्रभावित करने वाला अध्यात्म भी सामायिक समस्याओं के सम्बन्ध में जागरुक है। यह उज्जवल भविष्य शुभ चिन्ह है। गायत्री परिवार के लाखों परिजनों ने जुलाई 1979 में (पूज्य आचार्य शर्मा के निर्देशन में) निर्धारित साधना की। उसे सूक्ष्म संरक्षण की द्रष्टि से अत्यन्त शक्तिशाली एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जायेगा।"1

शब्द शक्ति द्वारा वातावरण का सामूहिक उपचार समाज में स्थापित होता चला गया। समस्त प्रज्ञा परिजनों ने सामूहिक जप, नवरात्र साधना दिन में एक बार किसी भी समय एक साथ गायत्री मंत्र का उच्चारण कर 'सबको सद्बुद्धि-सबका उज्जवल भविष्य' का वातावरण बनाना आरम्भ कर दिया। ऐतिहासिक बारह वर्षीय युग सन्धि महापुरश्चरण इसी आधार पर वर्ष 1988 से 2000 तक चला एवं इसकी दो महापूर्णाहुतियाँ भी हुई- एक आँवलखेड़ा (आगरा) में वर्ष 1995 में, दूसरी सारे हरिद्वार नगर में वर्ष 2000 में। उन दोनों में सामूहिक साधना के महत्व को देखा गया। विभिन्न धर्मो के उपासना-गृहों में सबके लिए सद्बुद्धि सबके लिए उज्जवल विषय की प्रार्थना' इसके पश्चात सम्पन्न होने लगी। अखिल भारतीय स्तर पर सम्पन्न हुए दीप यज्ञों ने उस वातावरण को और सघनता से सर्वव्यापी बनाया। यह सर्वग्राह्य प्रयोग नियमित-निरन्तर समय में होने लगा। श्री वीरेश्वर उपाध्याय की लिखी प्रार्थना जन-जन के द्वारा गायी जाने लगी-

'हे प्रभो! अपनी कृपा की छांह में ले लीजिए,
कर दूर इस दुर्बुद्धि को, हमें नेक नीयत दीजिए।।
हम आपके होकर रहें, शुभ प्रेरणा लें आप से,
करते रहें नित पुण्यहम, बचते रहें हर पाप से ।।
सुख बांटकर दुख लें बंटा, प्रभु भाव यह दे दीजिए,
उजला चरित्र बना हमें, उज्जवल भविष्यत् दीजिए।।"

डा. आर.पी. कर्मयोगी की लिखी एक अन्य प्रार्थना भी आत्मकल्याण एवं विश्व कल्याण हेतु जन-जन के द्वारा की गयी-

"प्रभु! मेरी खोटी बुद्धि को ठीक करो।

1. आचार्य श्रीराम शर्मा- स्काईलेब तो मर गया- पर प्रेत शांति अभी शेष है, अखण्ड ज्योति, वर्ष 46, अंक 8, कवर पेज

मैं किसी की निंदा-चुगली न सुनूं, न करुं।
मैं किसी का बुरा न सोचूं, न करुं।
मैं पापो से बचूं।
"प्रभु! मुझे सद्बुद्धि दो,
मैं सबसे मीठा बोलूं। सबका हित सोचूं। सबका हित करुं।
मैं हर दिन कोई पुण्य-कर्म करुं।
हम सब मिल-जुलकर रहें।"

डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया की लिखी एक अन्य प्रार्थना गायत्री तपोभूमि मथुरा से आचार्य जी द्वारा प्रारम्भ करायी गई जो अवलोकनीय है-

"वन्दना हम कर रहे, सद्ज्ञान प्रभु दे दीजिए।
विश्व से अज्ञान, अवगुण,नाथ सब हर लीजिए।।
लोकहित की भावना और कामना मन में जगे।
हर हृदय को प्यार को आलोक से भर दीजिए।।
बढ़ रहीं हत्याएं निशदिन, विश्व में पशु-जीव की।
करूणा दया का भाव हो, वरदान हम को दीजिए।।
मोह तृष्णा में फँसा मन, श्रेय पथ भूला रहा।
कृष्ण बन गीता सुनाकर, मोह को हर लीजिए।।
आजयुग के असुर-दानव, दे रहे अतिकष्ट है।।
नष्ट करने नाथ आओ, प्रण तो पूरा कीजिए।।
भूकम्प से आतंक से, सब ओर हाहाकार है।
हो प्रकृति अनुकूल प्रभु वह, राह दिखला दीजिए।।
सब करें व्यवहार ऐसा, हो न हिंसा विश्व में।
यज्ञमय जीवन जिएं प्रभु, दिव्यता दे दीजिए।।
कांप उठती भय से धरती, पाप ज्यों-ज्यों बढ़ रहा।
हे प्रभो, प्रज्ञा जगा, सद्भावना भर दीजिए।।
आतंक दु:ख विखराव को, जग से मिटादें हो प्रभो,
शान्ति सुख संतोष का, विज्ञान सबको दीजिए।।"

ज्ञातव्य है कि गायत्री परिवार में दिन का प्रारम्भ श्री लक्ष्मीनाराण सक्सेना 'कमलेश' की लिखी प्रार्थना 'वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्तव्य मार्ग पर डट जाएं' और अन्त श्री बलराम सिंह परिहार की लिखी प्रार्थना 'विधाता तू हमारा है तू ही विज्ञान दाता है, बिना तेरी ही दया कोई नहीं आनन्द पाता है' प्रार्थनाओं से होता है। पूज्य आचार्य शर्मा जी ने इस तरह विशिष्ट

साधना-प्रार्थना कराकर स्काईलैब जैसे संकट को भी हिन्द महासागार में गिरने के लिए विवश कर दिया। प्रार्थना का, संकट की घड़ियों में बड़ा महत्व है महात्मा गाँधी, बिनोवाभावे एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे राष्ट्र संत नित्य प्रति अनिवार्य रूप से सामूहिक रूप से प्रार्थना कराते थे। पूज्य आचार्य जी ने गायत्री मंत्र को सद्बुद्धि के लिए की गई प्रार्थना ही स्वीकारा हैं।

वेदमंत्रों के पद्यानुवाद भी उन्होने अनेक कवियों से कराये हैं। डा0 सूर्यदेव शर्मा और डा0 मुंशीराम शर्मा के पद्यानुवाद जिस तरह आर्य समाज में अत्यन्त प्रसिद्ध हुए हैं उसी तरह पूज्य आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन से जुड़े समकालीन हिन्दी कवियों के वेद मंत्रों के पद्यानुवाद जिन्हें पूर्व के अध्याय में विस्तृत रूप से दिया जा चुका है, प्रसिद्ध हुए हैं। गायत्री मंत्र का निम्नलिखित पद्यानुवाद देखिए-

ओउम् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात।

"प्रभो! प्राणेश, मलहारी, तुम्हीं आनन्द सागर हो।
प्रकाशक देव! सविता, विश्व-नाटक-नाट्य-नागर हो।
तुम्हारे शुभ्र-व्यापक तेज का हो ध्यान नित हमको।
विमल वर बुद्धि दो स्वामी! असत्-सत् ज्ञान हो हमको।" (संध्या संगीत से साभार)

इन प्रार्थना प्रयोगों से वस्तुतः सारा वातावरण ही गायत्रीमय हो उठा।

आश्वमेधिक महाकुंभ स्तर के महापुरुषार्थः- पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा के महाप्रयाण के पश्चात उन्हीं की सूक्ष्म प्रेरणा से आश्वमेधिक महाकुम्भ स्तर के महापुरुषार्थ उनकी सहधर्मिणी परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा ने सम्पन्न कराये। उनके निर्देशन में श्रद्धाजंलि समारोह (वर्ष 1990) के बाद स्थान-स्थान पर अखण्ड जप प्रधान आयेाजन सम्पन्न होने लगे। सारा वातावरण गायत्रीमय हो गया। जून 1992 में एक विराट शपथ समारोह, हरिद्वार में हुआ, जिसमें एक लाख से भी अधिक व्यक्तियों ने आँवलखेड़ा गुरु ग्राम की पावन माटी हाथ में लेकर अपने समय दान की घोषणाएं की। इसी आयोजन में आश्वमेधिक एवं महाकुम्भ स्तर के पुरुषार्थो की घोषणा की गई। शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में सम्पन्न हुए। "प्रथम अश्वमेध यज्ञ जिसका उद्देश्य था- संव्याप्त अनीति-दुष्प्रवृत्ति का उच्छेदन-निष्कासन, सत्प्रवृत्तियों का संवर्द्धन, पर्यावरण सन्तुलन एवं देवसंस्कृति का विश्वव्यापी विस्तार, राजस्थान की जयपुर नगरी में नवम्बर 1992 में सम्पन्न हुआ। उसके बाद 26 आश्वमेधिक महायज्ञों की श्रृंखलाएं विधिवत सम्पन्न हुई। पाँच अश्वमेध विदेश की धरती पर भी सम्पन्न हुए। जिनमें

से तीन लेस्टर (यूके), टोरण्टो (कनाडा) लांस एन्जेल्स (यूएसए) में स्वयं माता भगवती देवी जी की भागीदारी रही।

न्यूजर्सी का वाजपेय यज्ञ (1998), प्रथम अर्द्धपूर्णाहुति आँवलखेड़ा (आगरा) 1995, द्वितीय व अंतिम महापूर्णाहुति (2000) हरिद्वार में सम्पन्न होने वाले ऐसे उपक्रम हैं, जिनने युग निर्माण मिशन को करोड़ों व्यक्तियों तक पहुँचा दिया। तिरुपति (दक्षिण भारत) में 2002, दिसम्बर में एक आश्वमेधिक महायज्ञ सम्पन्न हुआ एवं "अब मदुरई में 2005 दिसम्बर में तथा सिडनी (आस्ट्रेलिया) में सितम्बर-अक्टूबर 2005 में शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में दो और अश्वमेध महायज्ञ होने जा रहे हैं।"1

पूज्य आचार्य शर्मा के महापुरुषार्थ से देवसंस्कृति पुनः विश्वव्यापी हुई है। गायत्री-यज्ञ-संस्कार की त्रिवेणी में स्नान कर जन-जन युग के निर्माण की प्रक्रिया को साकार करने को उद्यत है।

(ग) युग मनीषी के रूप में आचार्य श्री राम शर्मा का सन्देशः

राष्ट्र को सांस्कृतिक-वैचारिक स्तर पर मुक्ति दिलाने को कृत संकल्प आचार्य शर्मा का चिंतन एवं संदेश बड़ा ही स्पष्ट है वे लिखते हैं-"हम देख रहे सुषुप्ति की स्थिति में पड़ी राष्ट्र चेतना को कुम्भकर्णी निद्रा से जगाने का प्रयास करेंगे। विश्वास है, अगले दिनों राष्ट्र जागेगा और उठ खड़ा होगा। जिस दिन यह जगेगा, उस दिन दशों दिशाएं काँप जाएंगी। उसके पास अध्यात्म तत्व ज्ञान, शौर्य, साहस, विज्ञान एंव सम्पन्नता की इतनी अधिक परम्परागत पूंजी विद्यमान है, जिसके बल पर वह विश्व की अनुपम शक्ति बनकर रहेगा। हमारा उज्जवल भविष्य भी ऐसा होने जा रहा है, जिसमें हम प्रत्येक क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व, मार्गदर्शन कर सकने में समर्थ हो सकें।"2

बड़ा ही आशावादी-युग प्रवर्तक स्तर का संदेश आचार्य शर्मा का है एवं उसी ने इस निराशा के कुहासे से उबारकर सतयुगी संकल्प के साथ जोड़ा है। इस संकल्प की धुरी दो हैं- मनुष्य में देवत्व एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण। इसे स्वप्न नहीं, एक वास्तविकता बनाते हुए युग ऋषि आचार्य शर्मा ने विचार क्रान्ति की चिन्गारी को दावानल बनाकर हमें नई सहस्राब्दि के द्वार पर ला खड़ा किया है। पूज्य आचार्य जी आज की विकट परिस्थिति में सभी समस्याओं को सुलझाने की एक की औषधि बताते हैं- अध्यात्म, परिष्कृत स्तर का जीवन-मूल्यों से जुड़ा अध्यात्म। वे लिखते हैं कि-" घूम-फिर कर

1. डा0 प्रणव पण्ड्या- अपनों से अपनी बात, अखण्ड ज्योति, वर्ष 69, अंक 1, पृष्ठ 69
2. आचार्य श्रीराम शर्मा- अखण्ड ज्योति, अगस्त 1969, पृष्ठ 17

आदमी उससे भी बदतर हालत में आ पहुंचा है, जहां से उसने अपनी यात्रा आरम्भ की थी। अब उसे नई व्यवस्था के सृजन की आवश्यकता पड़ रही है। कौन करेगा यह सब? उसके लिए क्रान्ति के उस नए आयाम को ढूंढना पड़ेगा, जो विगत की भूलों से मुक्त हो, जिसमें व्यक्ति के मनोसामाजिक नवसृजन की अपूर्ण क्षमता हो। क्रान्ति का यही आयाम विचार क्रान्ति है।"1

आज के इस संकट को आचार्य जी 'आस्था संकट' नाम देते है। बुद्धि विपर्यय-दुर्मति जन्य दुर्गति आस्था क्षेत्र में घुसी निकृष्टता-आकांक्षाओं में समाविष्ट भ्रष्टता और आचरण में गुंथ गई दुष्टता के रूप में वे आस्था संकट की व्याख्या करते हैं। इसी ने नास्तिकता को वर्तमान समस्याओं -विभीषिकाओं को भी जन्म दिया है। आज भारत भ्रष्ट देशों की सूची में चौथे स्थान पर आ गया है जो हमारे देश के लिए अत्यन्त दुर्भाग्य की स्थिति है। इसका समाधान आचार्य शर्मा ने एक ही बताया है- उल्टे को *उलटकर सीधा करना, मन: स्थिति से परिस्थिति में बदलाव लाना। यहीं है महान परिवर्तन प्रस्तुत कर सकने वाली विचार क्रान्ति,* जिसे हम आज की परिस्थिति में अवतारी चेतना का प्रवाह कह सकते हैं। जीवन भर युग ऋषि आचार्य श्री ने इसी विचार क्रान्ति को युग परिवर्तन का आधार बनाकर प्रस्तुत किया। प्राय: तीन हजार से अधिक छोटी बड़ी पुस्तिकाओं के माध्यम से जो प्राण चेतना नि:सृत हुई है, उसी ने इस सहस्राब्दि की समापन बेला में चिंतन का ढांचा बदला है एवं जन-जन को सतयुगी मन: स्थिति में जीने की दिशामें अग्रगामी बनाया है समाज की आधी जन शक्ति नारी शक्ति जागरण उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त कर दिखाया है।

बौद्धिक क्रान्ति द्वारा चिंतन का, नैतिक क्रान्ति द्वारा चरित्र का एवं सामाजिक क्रान्ति द्वारा व्यवहार का परिष्कार उन्हीं का दिया व्यावहारिक जीवन दर्शन है। उनकी पुस्तकों के विचारों एवं 'अखण्ड ज्योति' में प्रकाशित प्रति माह संप्रेषित उनकी चिंतन चेतना ने लाखों-करोड़ों को झकझोर कर ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहाँ परिवर्तन सुनिश्चित दिखाई पड़ रहा है। ऐसा ही युग द्रष्टा अपनी ऐतिहासिक क्रान्ति धर्मी रचना "सतयुग की वापसी" (1989) में लिखते है- "इक्कीसवीं सदी भाव संवेदनाओं के उभरने-उभारने की अवधि है। हमें इस उपेक्षित क्षेत्र को ही हरा-भरा बनाने में निष्ठावान माली की भूमिका निभानी चाहिए। यह विश्व उद्यान इसी आधार पर हरा-भरा,

1. डा0 प्रणव पण्ड्या- अखण्ड ज्योति, अक्टूबर 1992, पृष्ठ 43

फला-फूला एवं सुषमा सम्पन्न बन सकेगा। आश्चर्य नहीं कि वह स्वर्गलोक वाले नन्दन वन की समता कर सके।"1

इस प्रकार युग मनीषी के रूप में आचार्य जी के सन्देश तो जगह-जगह बिखरे हैं, छपे है। उनका संदेश संत तुलसी दास की इस चौपाई के अनुसार समझा जा सकता है-

"कीरति भनति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कर हित होई।।"-मानस

युग मनीषी के रूप में आचार्य शर्मा का संदेश बिन्दुवार उन्हीं के शब्दों में अवलोकनीय है-

1. मनुष्य निरन्तर प्रगति पथ पर बढ़ता जा रहा है। उसका ज्ञान बढ़ रहा है और ज्ञान बढ़ने के फलस्वरूप पुरानी मान्यताओं के स्थान पर नये प्रतिपादन सामने आ रहे हैं। यह क्रम चला आ रहा है और भविष्य में भी अनन्त काल तक चलता रहेगा। अतः हमें दुराग्रही नहीं होना चाहिए और पूर्वजों के प्रति आस्थावान रहते हुए भी यह मानकर चलना चाहिए कि जो माना गया या कहा गया अथवा माना य कहा जा रहा है, वहीं अन्तिम नहीं है।

2. अपने अनुयायियों को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा- परिजनो! आप हमारी वंश परम्परा को जानिए। अगर हमकों यह मालूम पड़ा कि आपने हमारी परम्परा नहीं निवाही और अपना व्यक्तिगत अहंकार, अपनी व्यक्तिगत यश-कामना और व्यक्तिगत धन संग्रह करने का सिलसिला शुरु कर दिया, तो हमारी आँखों से आँसू टपकेंगे और वह आँसू आपको चैन से नहीं बैठने देंगे, आपको हैरान कर देंगे।

3. हमारी अभिलाषा है कि 'गायत्री परिवार' का हर सदस्य उत्कृष्ट प्रकार के व्यक्तित्व से सम्पन्न भारतीय धर्म और संस्कृति का सिर ऊँचा करने वाला सज्जन व्यक्ति बने। उसका जीवन उलझनों और कुण्ठाओं से भरा हुआ नहीं, वरन आशा, उत्साह, संतोष एवं मस्ती से भरा हुआ बीते। अपनी श्रेष्ठता का अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करना, इसी कसौटी पर हमारी वास्तविकता अब परखी जानी है। अब तक उपदेशों का कितना प्रभाव अन्तःकरण पर हुआ, इस प्रश्न का उत्तर अब हमें आचरण द्वारा ही देना पड़ेगा।

4. तुम सब हमारी भुजा बन जाओ, हमारे अंग बन जाओ, यह हामरे मन की बात है। अब तुम पर निर्भर है कि तुम कितना हमारा बनते हो ? समर्पण का अर्थ है- दो का अस्तित्व मिट कर एक हो जाना। तुम भी अलग अस्तित्व

1. आचार्य श्रीराम शर्मा- सतयुग की वापसी, पृष्ठ 27

मिटाकर हमारे साथ मिला दो व अपनी क्षुद्र महत्वाकंक्षाओं को हमारी अनन्त आध्यात्मिक महत्वाकंक्षाओं में विलीन कर दो। जिसका अहं जिंदा है, वह वैश्या है जिसका अहं मिट गया वह पवित्र है देखना है कि हमारी भुजा आँख, मस्तिष्क बनने के लिए तुम कितना अपने अहं को गला पाते हो ?

5. इन दिनों ऐसे मणि मुक्तकों की तलाश हो रही है, जिनका सुगठित हार युग चेतना की महाशक्ति के गले में पहनाया जा सके। ऐसे सुसंस्कारियों की तलाश युग निमंत्रण पहुँचाकर की जा रही है। जो जीवित होंगे, करवट बदलने में उठ खड़े होंगे और संकट काल में शौर्य प्रदर्शित करने वाले सेनापतियों की तरह अपने को विजयश्री वरण करने के अधिकारी के रूप में प्रस्तुत करेंगे। कृपण और कायर ही कर्तव्यों की पुकार सुनकर कांपते, घबराते और किसी कोटर में अपना मुँह छिपाने की विडम्बना रचते हैं। एक दिन मरते तो वे भी हैं, पर खेद, पश्चाताप की कलंक-कालिमा सिर पर लादे हुए।

6. दैवी शक्तियों के अवतरण के लिए पहली शर्त है- साधक की पात्रता, पवित्रता और प्रमाणिकता। सर्वत्र इसी की खोज और मांग है, क्योंकि विवाह योग्य हो जाने पर अभिभावक उपयुक्त जोड़ा तलाश करने के लिए काफी भागदौड़ करते हैं, किन्तु कोई कुपात्र पड़ोस में बसता हो तो भी उसकी ओर से मुँह फेर लेते है। खुशामद, सिफारिश और संदेश पहुंचने पर भी ध्यान नहीं देते। आध्यात्मिक सिद्धियाँ ईश्वर की पुत्रियाँ है। उन्हें प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को सर्वांग सुन्दर होना चाहिए- भीतर से भी और बाहर से भी। यही पात्रता की परिभाषा है।

7. परिवर्तन की प्रक्रिया अनायास ही सामने आकर खड़ी नहीं हो जायेगी। जादू की छड़ी घुमाकर कोई संत, देवदूत या अवतार यह सब करके नहीं रख जाएगा। इसके लिए कोटि-कोटि जनता को घोर प्रयत्न करना पड़ेगा और हर सजग आत्मा को प्रस्तुत विपन्ताओं से जूझने के लिए रीछ, वानरों की तरह दुस्साहसी बनना पड़ेगा। इस महाअभियान का नेतृत्व करने के लिए महाभावों की आज अत्यधिक आवश्यकता है, जो ईश्वरीय इच्छा, युग की आवश्यकता और विश्वव्यापी सुख-शान्ति के लिए अपने क्षुद्र स्वार्थो का बलिदान करके नवनिर्माण की ऐतिहासिक भूमिका सम्पन्न करते हुए अपने को धन्य बना सकें।

8. जिसकी आशा का दीपक बुझ गया, जिसे निराशा ने घेर लिया, जिसकी आकांक्षाएं समाप्त हो गई, भविष्य के लिए जिसके पास कुछ सोचने या करने को नहीं है, उस ढर्रे की जिन्दगी को मौत की भोंड़ी खुराक ही कहना चाहिए। जीवन का अर्थ साँस लेना खाना, सोना नहीं है, वरन कुछ ऊँचा है।

जहाँ वह ऊँचाई न हो वहाँ जीवित को भी मृतक की स्थिति में माना जा सकता है। कई व्यक्ति जिन्दगी के कंधों पर मौत की लाश लादकर ढोते रहते हैं। आशा विहीन लोगों को इसी श्रेणी में गिना जाना चाहिए।

9. संसार की सारी सफलताओं का मूलमंत्र है-प्रबल इच्छा शक्ति इसी के बल पर विद्या, सम्पत्ति और साधनों का उपार्जन होता हैं यही वह आधार है जिस पर आध्यात्मिक तपस्याएं और साधनाएं निर्भर रहती हैं। यही वह दिव्य सम्बल है जिसे पाकर संसार में खाली हाथ आया मनुष्य वैभव सम्पन्न, ऐश्वर्यवान बन कर संसार को चकित कर देता है। जीवन में उन्नति और सफलता की आकांक्षा करने से पहले अपनी इच्छा शक्ति को प्रबल तथा प्रखर बना लेने वालों को न कभी असफल होना पड़ता है और न निराश।

10. आज आवश्यकता इस बात की है कि जो कुछ उचित एवं आवश्यक समझते हैं, उसे कल्पना तक ही सीमित न रहने दें, कार्यान्वित करने का भी साहस दिखलाएं। जैसे धीरे-धीरे भी चलती रहने वाली चीटी योजनों की यात्रा पार कर लेती है, पर केवल विचार मग्न बैठा रहने वाला गरुड़ भी जहाँ का तहाँ पड़ा रहता हैं सद्विचारों का कोई परिणाम देखना हो तो उन्हें कार्यन्वित ही करना पड़ता हैं

11. अपने भाग्य को स्वयं बन जाने की राह देखना भूल ही नहीं, मूर्खता भी है। यह संसार इतना व्यस्त है कि लोगों को अपनी परवाह से ही फुरसत नहीं। यदि कोई थोड़ा-सा सहरा देकर आगे बढ़ा भी दे और उतनी योग्यता न हो, तो फिर पश्चाताप, अपमान और अवनति का ही मुख देखना पड़ता है। स्वयं मौलिक सूझबूझ और परिश्रम से बनाये हुए भाग्य में इस तरह की कोई आशंका नहीं रहती। जितनी योग्यता बढ़ती चले, सफलता की मंजिल उतनी प्राप्त करता चले। रास्ता सबके लिए खुला है, उस पर चलकर कितना पार कर सकता है, यह व्यक्ति की लगन, साहस और विश्वास पर निर्भर करता है।

12. युग निर्माण परिवार के परिजनों को निरन्तर आत्म निरीक्षण करना चाहिए और देखना चाहिए कि भारत के औसत नागरिक के स्तर से वह अपने ऊपर अधिक खर्च तो नहीं करता ? यदि करता है तो आत्मा की, न्याय की, कर्तव्य की पुकार सुननी चाहिए और अतिरिक्त खर्च को तुरन्त घटाना चाहिए। वैसे भारत जैसे देश में सादगी एक सामाजिक जिम्मेदारी है। खाने पहनने की चमक-दमक का प्रदर्शन एवं खर्चीले ठाठ-वाट का बढ़ाना एक सामाजिक अपराध है। अतःएव सादगी भरा जीवन क्रम अपनाना हमारा सर्वोपरि दायित्व है और ऐसा करना स्वयं अपना उदाहरण उपस्थित करके ही संभव है, मात्र

उपदेश द्वारा नहीं।

13. "सभी चाहते है कि मन में बुरे विचार कभी न आवें। सदा शान्त और आनन्दित रहें इसके लिए हम प्रयत्न भी करते हैं किन्तु संसार की गति भी कुछ ऐसी है कि मन को आघात पहुंचाने वाली घटना में यहाँ घटित होती रहती हैं। इन घटनाओं को सहते हुए भी जो मन को वश में रखते हैं और उसे शुभ संकल्पों से रिक्त नहीं होने देते, ईश्वर की आज्ञाओं का सच्चे मन से वही पालन कर सकते हैं। जो मन को चंचल, अस्थिर या विकार पूर्ण नहीं होने देते वही सच्चे साहसी वीर और गंभीर होते हैं।"

– पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाड्.मय खण्ड-8 पृ. 6.22।

14. युग विभीषिकाओं का समाधन आचार्य जी ने 'विचार क्रान्ति' द्वारा सम्भव बतलाया है जो नैतिक क्रान्ति, बौद्धिक क्रान्ति, सामाजिक क्रान्ति के साथ-साथ आध्यात्मिक क्रान्ति से सम्भव है। उसी से मनुज में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण संभव है।

इस हेतु व्यक्ति निर्माण (हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा), परिवार निर्माण (संस्कारित परिवार), समाज निर्माण (सभ्य समाज) की साधना करनी होगी और तभी 'युग निर्माण' सध सकेगा। विश्व बन्धुत्व एवं विश्वराष्ट्र का स्वप्न साकार तभी हो पाएगा। आचार्य जी के चिन्तन एवं चरित्र में यत्र-तत्र-सर्वत्र लोक मंगल एवं लोकसेवा का संदेश परिलक्षित होता है।

15. आचार्य शर्मा जी के मतानुसार -

- सामाजिक क्रान्ति के लिए बौद्धिक एवं नैतिक क्रान्ति आधार बने।
- समाज निर्माण के लिए व्यक्ति और परिवार निर्माण आवश्यक है।
- धरती पर स्वर्ग के अवतरण के लिए मनुष्य में देवत्व का उदय अनिवार्य है।
- युग निर्माण सतसकंल्प के सभी अठारह सूत्र जिनको आचार्य शर्मा ने नवयुग का संविधान घोषित किया है और जिसे जीवंन में धारण करने से उज्जवल भविष्य का आधार बनेगा, इनका उल्लेख शोधकर्ता द्वारा अध्याय द्वितीय में किया जा चुका है, आचार्य जी के युगमनीषी के रूप में अपने आपमें उनका अदभुत संदेश है।

16. "जीवन मूल्यों के हास हो रहा हैं स्वार्थ और संकीर्णता ने तो मानवता का गला ही घोट दिया है। अब एक ही उपाय शेष है- आर्ष परम्पराओं को पुनर्जीवित करना। जीवन निर्माण का प्रेरणादायी साहित्य ही लोगों के व्यक्तित्व को ऊँचा उठा सकेगा। यज्ञ में समाहित शिक्षण को सार्वजनिक करके जनता को यह समझाया जाय कि यज्ञीय जीवन ही यथार्थ जीवन है। व्यक्ति को

ऊँचा उठाने, श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए व्यक्ति को अपना सोच बदलना होगा। प्रबुद्ध वर्ग को विशेष कर विचार क्रान्ति करनी पड़ेगी।"

17. हम लोगों को यह बताएं कि विभूतियों के बिना मानव जीवन निरर्थक जैसा है। हम जीवन को इंसान की तरह क्यों न जिएं। जब मनुष्य का सुरदुर्लभ शरीर पाया है, तो इसे सार्थक क्यों न करें। हमारे विचारों और कार्यो में एक सुव्यवस्थित हेर-फेर होना चाहिए तभी अध्यात्म का सत्परिणाम सामने प्रस्तुत होगा। अपने को सुधारने और बनाने का कार्य हम जितनी तत्परता से करेंगे, उसी के अनुकूल निकटवर्ती वातावरण में सुधार और युग निर्माण का कार्य आरम्भ होगा। युग निर्माण दूसरों को उपदेश देने से नहीं, बल्कि स्वयं को बदलने से शुरू होगा।

18. मनुष्य को मनुष्य से अलग करने वाली दुष्प्रवृत्तियाँ और संकीर्णताओं का अन्त किया जाना चाहिए, ताकि लोग परस्पर एकता का, घनिष्टता का अनुभव कर सकें। एक दूसरे के अधिकाधिक निकट आ सकें। वर्ग भेद उत्पन्न करने वाली हर प्रवृत्ति को निरुत्साहित किय जाना चाहिए। जाति, वर्ण, भाषा, देश, धर्म, संस्कृति आदि के नाम पर इतने विभेद पिछले दिनों खड़े कर दिए गये हैं। कि उनने न केवल आदमी-आदमी के बीच खाई खोदी है, वरन् परस्पर एक दूसरे को विराना, अपरिचित विरोधी और शत्रु भी बना दिया है। जब तक यह भेद-भाव की दीवारें गिराई नहीं जायेंगी, पृथकतावादी संकीर्णता के रक्त रंजित पंजे मनुष्य की छाती में गड़े ही रहेंगे।

19. पूज्य आचार्य शर्मा जी ने कहा था- युवक परिवर्तन की कमान संभालें। काम कितना अधिक करने को पड़ा है, मंजिल कितनी लम्बी पार करनी है, विकृतियों की जड़ें कितनी गहरी है, सृजन के कितने साधन जुटाने हैं उसे देखते हैं तो लगता है, इस युग के हर भावनाशील जाग्रत और जीवन्त व्यक्ति को गौतमबुद्ध, शंकाराचार्य, समर्थ गुरु रामदास, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, महर्षि दयानन्द, महात्मा गाँधी आदि की तरह भरी जवानी में ही कर्म क्षेत्र में कूद पड़ना चाहिए, बुढ़ापे का इंतजार नहीं करना चाहिए। जिनके उत्तर दायित्व पूरे हो चुके हैं, वे घर-गृहस्थी की छोटी सीमा में ही आबद्व न रहकर विशाल कर्मक्षेत्र में उतरें और जन-जागृति का शंख बजाएं. युग परिवर्तन की कमान संभालें।

"हम पुरोहित राष्ट्र को, जीवन्त ज्योतिर्मय बनाएँ।
शंख जागृति का बजाकर, विश्व मानवता जगाएँ।।" डा0 सिंह

आचार्य शर्मा भविष्य कथन करते हुए लिखते हैं- "वर्तमान परिस्थितियों को

देखने वाले एक ही बात कहते है। कि महाविनाश अब आया- तब आया। इतने पर भी हम अकेले का यह कथन अन्य सभी के प्रतिकूल है कि यह दुनियाँ ने केवल जिएगी वरन और भी अच्छी बनेगी। जिन्हें रूचि हो वे इस भविष्यवाणी को नोट कर लें। युद्ध जहाँ तहाँ क्षेत्रीय स्तर के ही होते रहेंगे। कोई ऐसी विपत्ति खड़ी न होगी जिसके समूचे संसार भर के मनुष्य समुदाय का भविष्य ही संकट में घिर जाए।"

20. "हम व्यक्ति नहीं विचार हैं। जो हमारे शरीर तक ही अपना सम्बन्ध रखना चाहते हैं, विचारों का तिरस्कार करते है, उन्हें हमारा साथ छोड़ देना चाहिए। हमारी आत्मीयता की एक ही कसौटी है कि हमारा दर्द किस-किस की नसों में कितनी मात्रा में भर चला और हमारी आग की कितनी चिनगारियों कितने अंशों में किसके कलेजे से सुलगने लगी। किसने हमारे प्राणों से सींचे गए संगठन को मजबूत बनाने का संकल्प लिया?"

21. "इक्कीसवीं सदी का विशालकाय आन्दोलन एक छोटे से शान्तिकुंज आश्रम से प्रकट होकर ऐसा चमत्कार उत्पन्न करेगा कि उसके आँचल में भारत ही नहीं समूचे विश्व को आश्रय मिलेगा। दुनियाँ नया रूप धारण करेगी और विकृत विचार परिष्कृत होकर दूरदर्शी विवेकशीलता के रूप में अपना सुविस्तृत परिचय देने लगेंगे।"

22. "जो हमें प्यार करता है, उसे हमारे मिशन से भी प्यार करना चाहिए। यदि केवल हमारे व्यक्तित्व के प्रति ही श्रद्धा है, शरीर से ही मोह है, उसी की प्रशस्ति-पूजा की जाती है और मिशन की बात उठाकर ताक पर रख दी जाती है, तो लगता है हमारे प्राण का तिरस्कार करते हुए केवल शरीर पर पंखा डुलाया जा रहा है। अपनी मनोदशा मिशन को आगे बढ़ते देखकर प्रसन्न और संतुष्ट होने की है। अब उसी में अपना सारा आनन्द-उल्लास केन्द्रीभूत हो गया है। सो जो कोई उस दिशा में आगे बढ़ता दिखता है, तो लगता है कि अपने कर्तव्य के लिए ही नहीं, हमारे लिए भी बहुत कुछ करने में संलग्न है। ऐसे लोगों के प्रति हमारी श्रद्धा, कृतज्ञता, ममता और सहानुभूति का अन्तः प्रवाह अनायास ही प्रवाहित होने लगता है। वस्तुतः भावना और आदर्शों की प्रखरता से ही अपने को शान्ति और संतुष्टि मिलती है।"

23. "मनुष्य का चरित्र विचार और आचार दोनों से मिलकर बनता है। बहुत से ऐसे लोग पाये जा सकते हैं जिनके विचार बड़े ही उदात्त, महान और आदर्शपूर्ण होते है, किन्तु उनकी क्रियाएं उनके अनुरूप नहीं होती। विचार पवित्र हो और कर्म अपावन, तो यह सच्चरित्रता नहीं हुई। इसी प्रकार ऊपर से बड़े आदर्शवादी

किन्तु भीतर कलुषपूर्ण विचार धारा रहे, तो ऐसे लोगों को भी चरित्रवान नहीं माना जाएगा। वास्तव में चरित्रवान वही होता है, जो विचार और आचार दोनों को समान रूप से उच्च और पुनीत रखकर चलता है।"

24. "नारी ब्रह्म विद्या है, श्रद्धा है, शक्ति है, पवित्रता है, कला है और वह सब कुछ है, जो इस संसार में सर्वश्रेष्ठ के रूप में दृष्टिगोचर होता है। नारी मूर्तिमान कामधेनु है, अन्नपूर्णा है, सिद्धि है और वह मानव प्राणी के समस्त अभावों, कष्टों और संकटों के निवारण करने में समर्थ है। यदि उसे श्रद्धा सिक्त भावना से सींचा जाए तो वह सोमलता विश्व के कण-कण को स्वर्गीय परिस्थितियों से ओतप्रोत कर सकती है।"

25. "गायत्री परिवार की छत्रछाया में वरिष्ठों का समुदाय एकत्रित हुआ है उसकी जिम्मेदारी हजारों गुनी अधिक है। वह भी समय रहते चेतने में उपेक्षा दिखाए तो समझना चाहिए कि आशा का टिमटिमाता दीपक भी बुझ गया। इस विषम बेला में वरिष्ठ परिजनों को यह फैसला कर ही लेना है कि सत्प्रवृत्तियों को अपने जीवन में धारण क 'विचार क्रान्ति अभियान' के लिए आदर्श बनना है या दुष्प्रवृत्तियों, छल प्रपंच में ही फँसे रहना है ? आप कम उदार लोग ही समय रहते चेतने में उपेक्षा दिखायेंगे, तो हमें बहुत कष्ट होगा।"

26. "जीवन जीना एक कला है, पर आज का सबसे बडा संकट यह है कि मानव मूल्यों की गिरावट ने जीवन को तहस-नहस करके रख दिया है। व्यक्तित्व से रहित व्यक्ति की हालत बद से बदतर होती चली जा रही है। करूणा कराह रही है, दया रो रही है और सेवा सो रही है। मनुष्य अपने अहं में डूबा है, न सहयोग है, शान्ति। किसको किसकी चिन्ता है ? बात सब करते हैं, पर मर्म से कोसों दूर। सुख सब चाहते हैं, पर वे यह नहीं जानते कि सुख का स्रोत अन्दर है, न कि बाहर। बाहर के साधन तो उसके चुम्बकत्व से खिंचकर अनायास ही उसके आस-पास इकठ्ठे हो जाते है। इसके लिए लूट-खसोट बेईमानी और रिश्वत खोरी नहीं करनी पड़ती। जीवन में सुख ही सब कुद नहीं है जहाँ सुख है वहाँ दुख भी है। दुखों से दूर मत भागो, कठिनाईयों से मत डरो, इनसे अवरोध तो होता है, पर इतना नहीं कि प्रबल पुरुषार्थ से उसका सामना न हो सके। व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझे और परिपूर्ण निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों का पालन कर वो प्रगति का मार्ग स्वयं खुल जाता है। हम मनुष्यता के महान गौरव के अनुरुप अनुकरणीय जीवन जिएं तथा दूसरों को भी इस ओर अग्रसर करें, ऐसे उच्चस्तरीय दृष्टिकोण के आधार पर ही मनुष्य की महानता निर्भर है।"

आचार्य श्रीराम शर्मा का अन्तिम संदेश

"अस्सी वर्ष की जीवन यात्रा का एक महत्वपूर्ण अध्याय पूर्ण हुआ। कभी यह न समझा जाय कि *"ज्योति बुझ गयी।"* आगे का लक्ष्य और भी बड़ा है हमें संसार भर के 6 अरब से अधिक मनुष्यों की अन्तश्चेतना को अनुप्राणित करना, उनमें वांछित परिवर्तन लाना व भारतीय संस्कृतिक तत्व ज्ञान को विश्वभर में संव्याप्त करना है। विराट जगती का ब्रह्मवर्चस जगाने का कार्य पराशक्ति द्वारा ही सम्भव है। जो भी परिजन इमसे अपनी विगत जीवन अवधि के पैंसठ वर्षो में किसी न किसी रूप में जुड़े थे, उन्हें सतत् प्रकाश, नवजीवन का उल्लास प्राप्त होता रहेगा, भले ही प्रत्यक्षतः नेत्र उन्हें न देख पायें। हम बिछुड़ने के लिए नहीं जुड़े थे। हमें एक क्षण के लिए भुला पाना आत्मीय परिजनों के लिए कठिन हो जायेगा। ब्रह्म कमल के रूप में हम तो खिल चुके; किन्तु उसकी शोभा और सुगंधि के विस्तार हेतु ऐसे अगणित ब्रह्मबीज-देवमानव उत्पन्न कर जा रहे है, जो खिल कर समूचे संस्कृति सरोवर को सौन्दर्य सुवास से भर सकें, मानवता को निहाल कर सके।

ब्रह्मनिष्ठ आत्माओं का उत्पादन, प्रशिक्षण एवं युग परिवर्तन के महान् कार्यो में उनका नियोजन बड़ा कार्य है। यह कार्य हमारे उत्तराधिकारियों को करना है। शक्ति हमारी काम करेगी तथा प्रचण्ड शक्ति प्रवाह अगणित देवात्माओं को इस मिशन से अगले दिनों जोड़ेगा। उन्हें संरक्षण, स्नेह देने और संवारने का कार्य माता जी (श्रीमती भगवती देवी शर्मा) सम्पन्न करेंगी। हम सतयुग की वापसी के सरंजाम में जुट जायेंगे। जो भी संकल्पनाएं नवयुग के संबंध में हमने की थीं, वे साकार होकर रहेंगी। इसी निमित्त काय पिंजर का सीमित परिसर छोड़ कर हम विराट् घनीभूत प्राणऊर्जा के रूप में विस्तृत होने जा रहे है।

परिजन हमारी स्थूल काया से कोई मोह न करें, इस पार्थिव शरीर को शान्तिकुंज के ही प्रांगण में अग्नि को समर्पित कर दिया जाय। हमारा सूक्ष्म शरीर इसके बाद और भी अधिक घनीभूत रूप में शान्तिकुंज आश्रम के घेरे में तथा समस्त भारत व विश्व में संव्याप्त होता जाएगा। जब भी कोई परिजन हमसे कुछ करना चाहेगा, पूर्व की तरह ही हमारा ध्यान मात्र करके, अपने अन्दर झाँक कर पूँछेगा कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाय, तो उसे तुरन्त उत्तर मिल जाएगा। हम अब, सबके और अधिक समीप होंगे।

हमारे प्रति परिजनों की सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि विचार क्रान्ति के विद्या विस्तार के निमित्त किये गये हमारे बहुमुखी कर्तत्व का

विस्तार करें, चिन्तन चेतना को जन-जन तक पहुँचाये एवं युग संजीवनी द्वारा मानवता को नवजीवन प्रदान करें। देव मानवों के इस समुदाय के हमसे जुड़े सभी परिजनों को हमारे कोटि-कोटि आर्शीवाद, आत्मिक प्रगति की दिशा में अग्रसर होने हेतु अगणित शुभकामनाएँ।"1

विभिन्न साहित्य मनीषियों के विचारों से साम्य

संत कबीर- संत कबीर की प्रसिद्ध पंक्तियाँ है-

"लोका जानि न भूलौ भाई ।

खालिक खलक, खलक में खलिक, सब घट रह्यो समाई"

इस तरह आत्मा और परमात्मा परस्पर मिल जाते हैं। क्षुद्र अहं विराट पुरुष में विलय हो जाता है।"2 आचार्य शर्मा जी अपनी रहस्यानुभूति को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- "अपना स्वरूप आत्मा की स्थिति में अनुभव होने लगा और अन्त:करण परमेश्वर का परम पवित्र निवास गृह दिखने लगा। आगे वह लिखते हैं- "हमने जीवन में एक ही उपार्जन किया है-प्रेम। एक ही सम्पदा कमाई है-प्रेम। एक ही रस हमने चखा है और वह है प्रेम का।"3 अन्तरात्मा में प्रकाश उत्पन्न करने वाला तत्व प्रेम है। समस्त सत्प्रवृत्तियाँ उसी की सहचरी है। कृष्ण चरित्र में जिस रास और महारास का आलंकारिक रूप से सुविस्तृत और आकर्षक वर्णन हुआ है, उसमें प्रेम तत्व को श्री कृष्ण के रूप में और सत्प्रवृत्तियों को गोपिकाओं के रूप में चित्रित किया गया है। एक प्रेमी और अनेक प्रेमिकाएं यह आश्चर्य अध्यात्म जगत में संभव है। प्रेम से भरी आत्मा को अगणित सतप्रवृत्तियों असीम प्यार करती हैं और वे सभी दौड़ी-दौड़ी प्रियतम से मिलने और उसके साथ तादात्म्य होने चली आती है। उत्कृष्ट प्रेम और उसके आधार पर एकत्रित हुई सत्प्रवृत्तियाँ जीवन को आनन्द उल्लास से भरा पूरा बना देती है।"

स्वामी विवेकानन्द का कथन है- "फिर से कालचक्र घूमकर आ रहा है, एक बार फिर भारत से वही शक्ति-प्रवाह नि:सृत हो रहा है, जो शीघ्र ही समस्त जगत को प्लावित कर देगा। विश्वास रखो, विश्वास रखो, प्रभु की आज्ञा है कि भारत की उन्नति अवश्य ही होगी और साधारण तथा गरीब लोग सुखी होंगे। भारत का पुनरुद्धार होगा, पर वह जड़ की शक्ति से नहीं, वरन आत्मा की शक्ति द्वारा वह उत्थान विनाश की ध्वजा लेकर नहीं वरन

1. ब्रहमवर्चस- महापूर्णाहुति स्मारिका, शांतिकुंज, हरिद्वार, वर्ष 2000
2. डा0 रामकुमार वर्मा- कबीर का रहस्यवाद, पृष्ठ 38
3. आचार्य श्रीराम शर्मा- अपनो से अपनी बात, अखण्ड ज्योति, वर्ष 33, अंक 1, पृष्ठ 56-63

शक्ति और प्रेम की ध्वजा से- सन्यासियों के वेश से- धन की शक्ति से नहीं, बल्कि भिक्षा पात्र की शक्ति से संपादित होगा।"1

श्री अरविन्द का कथन है- "हमें विश्वास है कि भारत का पुनरुत्थान निश्चित है लेकिन हमें वातावरण तैयार करना होगा। अपने प्रेम भरे कार्यों से बल और आत्म बलिदान द्वारा उसे शुद्ध करना होगा। आज शिक्षित वर्ग पुनरुथान की आशाओं का आधार हैं उनके अन्दर न भी भावना जागी है। जनसाधारण नेतृत्व के लिए उनकी ओर आँखे लगाये हुए हैं। उनका कर्तव्य है कि वे इस आदर्श के योग्य बनें। देश में आशाबल और प्रकाश का संचार करके कुचले हुए, दबे हुए देशवासियों का उद्धार करें।"2

महायोगी महर्षि अरविन्द दिव्य दृष्टा थे। समय से पहले भविष्य के झरोखे में झांकना उनकी निजी विशेषता और अद्‌भुत सामर्थ्य थी। उन्होने बंद नेत्रों से जो कुछ देखा, उन्हें हृदय में अनुभूत हुआ, वर्तमान में वही यथार्थ में उतरा। उनक एक-एक शब्द शक्ल में बदल गया। उनके शब्दों में उन्हीं की अनुभूतियाँ - ाचार्य शर्मा के जीवन दर्शन की झाँकी के परिप्रेक्ष्य में 'सावित्री महाकाव्य' ी हिन्दी रूपान्तर कत्री श्रीमती विद्यावती 'कोकिल' ने

"शक्तिशाली अग्रदूत" शीर्षक से इस प्रकार की है-

"अहो शक्तिशाली अग्रदूत! मैंने सुनी आर्त औ कातर वाणी तेरी,
निश्चय ही भू पर उतरेगी 'कोई' जो इस बोझिल विधान को तोड़ेगी,
एक अकेली निज आत्मा के बल से 'प्रकृति' की अशुभ भावी को बदलेगी।
उतरेगा एक असीम 'मन' जगती पर जो धारण निज में विश्व को करेगा,
व्यग्र शान्तियों से परिपूर्ण बना इस अति उग्र और मधुर अन्तर उतरेगा,
देवों के स्वर्गिक प्रेम से द्रवित बन सकल शक्तियां और महत्ताएं जब
उस एक अकेली में आ भेटेंगी स्वर्गिक सुन्दरता पृथ्वी पर आकर
सुसरल स्वाभाविक ढंग से विचरेगी अपने वाचाविहीन अन्तर में वह
धारण किए हुए 'प्रज्ञा' को होगी और शक्ति उसकी उसके भीतर इक
विजयी की तलवार सरिस चमकेगी, उसके नयन गवाक्षों में से होकर
'शाश्वत' की आनन्द श्री चितएगी और मृत्यु के भीषणतम मुहूर्त में
एक बीज बो दिया यहाँ जाएगा और मानवी इस मिट्‌टी में स्वर्गिक
एक पौधा प्रतिरोपित हो जाएगा प्रकृति स्व-नश्वर डग फलांग जाएगी।
अविकारी एवं संकल्प के द्वारा यह विधि ही परिवर्तित हो जाएगी।"3

1. ब्रहमवर्चस- महापूर्णाहुति, स्मारिका, पृष्ठ 76
2. ब्रहमवर्चस- वही, पृष्ठ 76
3. श्री अरविन्द- क्रान्तिदर्शन ओर बदलाव, सावित्री (हिन्दी संस्करण) सर्ग-4, पृष्ठ 335-336

आचार्य श्रीराम शर्मा के सन्देशानुसार-

"सघन तमिस्रा का अन्त होगा। ऊषा काल के साथ उभरता हुआ अरुणोदय अपनी प्रखरता का परिचय देगा। जिन्हें तमिस्रा चिरस्थायी लगती हो वे अपने ढंग से सोचें, पर हमारा दिव्य दर्शन, उज्जवल भविष्य की झाँकी प्रस्तुत करता है। लगता है इस पुण्य प्रयास में सृजन की पक्षधर देवशक्तियाँ प्राण-पण से जुट गई हैं। इसी सृजन प्रयास के एक अकिंचन घटक के रूप में हमें भी कुछ कारगर अनुदान प्रस्तुत करने का अवसर मिल रहा है। इस सुयोग, सौभाग्य पर हमें अतीव संतोष है और असाधरण आनन्द भी। यह हमारे स्वप्नों का संसार है। इनके पीछे कल्पनाएं, अटकलें काम नहीं कर रही हैं, वरन अदृश्य जगत में चल रही हलचलों को देखकर इस प्रकार का आभास मिलता है, जिसे हम सत्य के अधिकतम निकट देख रहे हैं।"1

नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती का सन्देश

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना करते समय आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य प्राणी मात्र का उपकार करना बताया था। उन्होंने जीवन पर्यन्त इस कार्य को किया और उनके बाद उनके अनुयायियों ने इस कार्य को आगे बढ़ाया।

'सत्य सनातन वैदिक धर्म' संसार का श्रेष्ठ और मूल धर्म है। महर्षि दयानन्द उसके पुनरुद्धारक, प्रचारक एवं प्रसारक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा कि यह धर्म वेद प्रतिपादित आस्तिक धर्म है। यह तर्क प्रभाव एवं युक्ति सम्पन्न है। उन्होने ईश्वर, जीव और प्रकृति इन तीनों को अनादित्व माना है। परम पिता परमात्मा कण-कण में विद्यमान है। वह सर्वव्यापक हैं। वह सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता, पालक और संहारकर्ता है। वह जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त है। उनका साक्षात्कार जीवात्मा अनुभूति द्वारा करता है। यम-नियम, साधना, योगाभ्यास, समाधि के माध्यम से उन्हें प्राप्त किया जा सकता है। गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ *'सत्यार्थ प्रकाश'* में उसके सौ नाम गिनाए हैं और कहा है कि उस ॐ के इससे भी अधिक नाम हो सकते हैं। उनकी मान्यताओं का मूल आधार वेद है। सृष्टि के आरम्भ में प्राणीमात्र के कल्याण के लिए परमात्मा ने वेद का ज्ञान दिया। यह ज्ञान प्राणीमात्र के लिए है। यह सर्वभौम और

1. ब्रहमवर्चस- महापूर्णाहुति स्मारिका

सर्वकालिक है। वेद में सृष्टि तथा मानवता का चिंतन है। विज्ञान के ये अच्छे भण्डार हैं। वेदों के मार्ग का अनुयायी संसार में सभी सुख-सम्पदाओं को प्राप्त करता है। वेद मार्ग पर चलकर मनुष्य वास्तव में मानव बनता है और वह केवल अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहता अपितु सभी की उन्नति की कामना करता है। पुनर्जन्म, कर्मबाद और मोक्ष की कामना भारतीय दर्शन का विषय रहा है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त प्रामाणिक, व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक है। गीता में सर्वत्र इसकी अनुगूँज है। आत्मा मरती नहीं है, केवल यह देह नष्ट होती है और आत्मा नई देह धारण कर लेती है। मनुष्य जन्म जीव को सद्कर्म करने का अवसर प्रदान करता है। मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है और फल भोगने में परतंत्र है। *कर्मफल से कोई बच नहीं सकता, 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' 'जो जस करहि सो तस फल चाखा।'* सदाचार पूर्वक ध ार्मिक जीवन यापन करने वाला व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी बनता है। जीवन मृत्यु के बन्धन से मुक्त होने की कामना सभी करते हैं, लेकिन ज्ञान दूर, कुछ क्रिया भिन्न हैं, क्यों इच्छा पूरी हो मन की। इसके लिए *ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय आवश्यक है।* धार्मिक जीवन और योगाभ्यास द्वारा मनुष्य मोक्ष का अधिकारी बनता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पूजा, प्रवचनों में 'धर्म' के विषय में बोलते हुए मनु महाराज को उद्धृत किया है।

"धृति क्षमा दमो अस्तेयं शौचं इन्द्रिय निग्रह।
धीर्विधा सत्यंअक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।"-मनुस्मृति

जो व्यक्ति इन लक्षणों को धारण करता है, वह धार्मिक है। महर्षि दयानन्द ने धर्म के नाम पर प्रचलित मिथ्या विश्वासों का खंडन किया। उन्होने सत्य-धर्म को एक ही माना है और उनकी दृष्टि में *धर्म वही हो सकता है, जो श्रेष्ठ मानव मूल्यों की रचना प्रक्रिया को गतिशील रखने में सक्षम हो सके।* वे उदार, मानवतावादी महापुरुष थे जो सदैव पर कल्याण में रत रहे। पुनर्जागरण काल का वह पुरोधा सदैव याद किया जायेगा।

स्वामी जी देश-भाषा में शिक्षा का राष्ट्रीयकरण करना चाहते थे, और विज्ञान तथा कला-कौशल द्वारा देश को समृद्ध बनाने की उन्हें चिन्ता थी, *परन्तु उनका उद्देश्य राजनैतिक आन्दोलन करना न था। उनका मुख्य उद्देश्य तो धार्मिक क्रान्ति करना था।* सहस्त्रों वर्षो से वैदिक धर्म में जो विकार उत्पन्न हो गया था, उसे दूर कर सत्य वैदिक धर्म की स्थापना ही उन्हें अभीष्ट थी। उनका मूल मंत्र था *"वेदों की ओर लौटो"।*

देश गहरा सोया हुआ और अन्ध रूढ़ियों से ग्रस्त था- स्वामी जी

ने इस समस्या का सूक्ष्मता से अध्ययन किया। ऐसी विषम स्थिति में भारत के महारोग को दूर करने का एक मात्र निदान और श्रेष्ठ उपाय यही था जो स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्थिर किया। भारत का यह अद्वितीय मेधावी पुरुष अनुभव और निरीक्षण के द्वारा इस तथ्य पर पहुँचा कि तत्कालीन परिस्थितियों में किसी प्रकार का भी राजनैतिक आन्दोलन पनप नहीं सकता था, वर्ष 1857 ई0 के स्वातंत्र्य संग्राम की असफलता के कारणों पर भी उसने अवश्य ही विचार किया होगा। भारतीयों के संकीर्ण विचार, ऊँच-नीच के भाव, जाति-भेद, संगठन-हीनता आदि असफलता के मुख्य कारण थे। भारत में प्रचलित सहस्त्रों मत-मतान्तरों ने समूह शक्ति को खोखला कर दिया था। अतः धार्मिक अनाचारों, सामाजिक कुप्रथाओं और मिथ्या भेद भावों को दूर कर एक सर्वमान्य और *सार्वभौम-वैदिक धर्म* की स्थापना करके देश को जागृत करना उनका मूल उद्देश्य था। अतः स्वामी दयानन्द का उद्देश्य धार्मिक और सामाजिक सुधार के साथ भारतीयों में राष्ट्रीय भावोद्दीपन भी था। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि जनभाषा में ही प्रचार कार्य सफल हो सकता है। बौद्ध मत के प्रचलन के मुख्य कारणों में से एक यह भी है। *राष्ट्र को एक सूत्र में आबद्ध करने के लिए एक भाषा का होना अनिवार्य है।* स्वामी दयानन्द की पैनी दृष्टि ने इस आवश्यकता का अनुभव किया। जनभाषा की एकमात्र अधिकारिणी हिन्दी थी, उसे उन्होने *आर्य-भाषा* नाम दिया, राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर प्रतिष्ठापित किया और व्याख्यान, पुस्तकों तथा समाचार पत्रों द्वारा व्यापक प्रचार करने का आधुनिक युग में सर्वप्रथम श्रेय प्राप्त किया।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

जिस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने समकालीन खड़ी बोली गद्य को सशक्त बनाकर उसमें प्राण-प्रतिष्ठा की थी उसी प्रकार पं0 महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली की परुष कही जाने वाली शब्दावली में कविता की पंक्तियाँ लिखकर उसमें संगीत की शक्ति प्रेरित की। गद्य और पद्य में नवीन उन्मेष उत्पन्न करने वाले भारतेन्दु और महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के दो कर्मयोगी थे जिन्होने परिश्रम और अध्यवसाय से खड़ी बोली साहित्य के दो कर्मयोगी का शक्ति सम्पन्न बनाया। खड़ी बोली कविता में उन्मेष द्विवेदी जी के कार्य-काल से ही प्रारम्भ होता है। इसी उन्मेष में हिन्दी के राष्ट्रीय कवि बाबू मैथलीशरण गुप्त की कविता की रूपरेखा निर्मित हुई।

पं. महावरी प्रसाद द्विवेदी संस्कृत व्याकरण का ज्ञान लेकर *'सरस्वती'*

का सम्पादन करने में सन्नद्ध हुए तो गद्य का रूपान्तरण ही हो गया और उसे वह दृढ़ता प्राप्त हुई जो साहितय के गंभीर विचारों का भार वहन करने में समर्थ हुई। भाषा को परिमार्जित और शुद्ध करने के संकल्प में *'सरस्वती'* सम्पादन की जो साधना छिपी हुई है उसका मूल्य नहीं आंका जा सकता।

भाषा को साहित्य के उपयुक्त बनाने में केवल शब्दों की रुचि परिष्कृत करना ही यथेष्ट नहीं है, उसे भावों से सम्पन्न करने का यत्न भी होना चाहिए। अंग्रेजी, मराठी, गुजराती और बंगाली साहित्य के विविध भावों को हिन्दी में रुपान्तरित करने की चेष्टा द्विवेदी जी की ओर से जितनी अधिक हुई उतनी हिन्दी के किसी सम्पादक से नहीं हो सकी। भाव जगत की विस्तृत परिधि से परिचय कराने के प्रयास में द्विवेदी जी ने भिन्न साहित्य -विषयक अनेक लेख हिन्दी भाषा-भाषियों को दिये। उन्होने जो लेख लिखे उनमें से बहुतों में 'हिन्दी के अतिरिक्त कई अन्य भाषाओं के साहित्य सम्बन्धी विचारों का भी पुट है'। हिन्दी लेखकों को वे केवल भाषा विषयक शुद्ध ज्ञान से ही परिचित नहीं कराना चाहते थे, वे उन्हें अपने अधिकारों से भी अवगत करा देना चाहते थे। इसीलिए उन्होने वर्ष 1913 में *'नया कापी राइट एक्ट'* नामक लेख लिखा जिसके प्रारम्भ में उन्होने अपने इसी भाव का संकेत किया है- "इस कानून का घनिष्ट सम्बन्ध पुस्तकों के लेखकों और प्रकाशकों से है और उनका जानना उनके लिए बहुत आवश्यक भी है। अतएव उसका सारांश लिखना हम यहाँ पर उचित समझते हैं।" इस प्रकार पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी जगत के ज्ञान का परिवर्द्धन और परिष्करण करते हुए जिस उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्तित्व का परिचय दिया उससे वे साहित्य के इतिहास में निस्सन्देह आचार्य माने जायेंगे। एक कविता के माध्यम से उनका संदेश अवलोकनीय है-

1. "जिसे खोजता वन-वन में, तू खोज उसे अपने मन में।
मन की शीतल सुरभित कुंजों में मन मोहन रमता है।
जहाँ प्रेम की कालिन्दी का अमृत कल-कल करता है,
लीलामय वह उसी मधुर मधुवन में, क्रीड़ा करता है,
राग रसीला मुरली का वह रोम-राम में भरता है।
देख हृदय की आँखों से, प्रतिबिम्ब उसी का जीवन में,
जिसे खोजता वन-वन में, तू खोज उसे अपने मन में।।1।।× × ×
नवजीवन संचार करें मरु में तेरी जीवन धारा,
'युक्ताहार विहार' बने तेरा पथ-दर्शक ध्रुवतारा।
इन्द्रिय भोगों की अतृप्त है तृष्णा-अन्ध न हो मानव।

सुखमय वास स्थान बने तेरा यह पृथ्वर तल प्यारा।।
उतर स्वर्ग आयेगा भू पर, रस छलकेगा। कण-कण में,
जिसे खोजता वन-वन में, तू खोज उसे अपने मन में। "जीवन संगीत" पृ० 16

2. पशु पक्षी भी तो जीते हैं, मानव! जीवन-सम्मान करो।
कल-कल करती जीवन सरिता, संगीत मधुर निश्छल गावे।
अरि के प्राणों की वीणा भी, जिसको सुन झंकृत हो जावे।।
अभिशाप दैव का नहीं उसे-विधि का अनुपम वरदान कहो।।
सम्मान भोगते तुम सस्मित, अपमान सही तो हँस हँस कर।
जयमाल पहनते प्रभुदित तो, स्वीकार पराजय हो सादर।।
पीयूष चाहता कौन नहीं-तुम बढ़ो गरल का पान करो।।
देखो मुड़कर न मरुस्थल को, चढ़ जाओं, यदि है अचल खड़ा।
लहलहा उठेगा, सींचो तो, आगे है क्षेत्र विशाल पड़ा।।
गिरि बनता कण-कण से जीवन- क्षण-क्षण को जोड़ महान करो।
पशु पक्षी भी तो जीते हैं, मानव जीवन-सम्मान करो।। "जीवन संगीत" में प्रकाशित

बाबू गुलाब राय

बाबू गुलाबराय 'हमारी विचार धारा' शीर्षक से अपना संदेश लिखते हैं- "साहित्य के चिरन्त सत्य में तो देश और भाषा में भेद नहीं हो सकता, किन्तु साहित्य की विभिन्न विधाओं में वे सत्य जो रूप ग्रहण करते हैं उनके अनुकूल परिभाषाएं और नियम बदलते रहे हैं। किसी भाषा का साहित्य शास्त्र उसके लक्ष्य ग्रन्थों पर आधारित होता है। यद्यपि कवि, लेखक, नाटककार तथ अन्य साहित्य-स्रष्टागण प्राचीन मानों और नियमों के अनुकूलन करने का प्रयत्न करते हैं तथापि सहज स्वतंत्रता और मौलिकता परिस्थितियों के अनुकूल उन्हें नये मार्गो की ओर ले जाती है।"1 × × ×

प्राचीन ग्रन्थों की रस और अलंकार सम्बन्धी आलोचना होती है किन्तु वह निगमनात्मक ढंग से। अलंकारों की इतनी बढ़ी हुई संख्या होने पर भी वह ऐसी नहीं जिसमें कहने के लिए नये चमत्कारिक ढंगों की गुंजाइश न रहे। अलंकार आते हैं किन्तु उनका नामकरण नहीं हुआ है। दो एक आगमनात्मक अध्ययन हुए हैं किन्तु वे रूढ़िवाद के आगे सफल नहीं हुए।

छंद-शास्त्र का भी यही हाल है। नये छन्दों की मान्यता न होने

1. बाबू गुलाबराय- हमारी विचारधारा, साहित्य संदेश, भाग-16, अंक 3, पृष्ठ 84

के कारण ही प्राचीनतावादी यह कह देते हैं कि आजकल के छोकरों को छन्द और पिंगल का ज्ञान नहीं। साहित्य की विधाओं ने भी नये रूप धारण किये हैं। प्राचीन काल में भी सूर, तुलसी, घनानंद आदि ने नये आदर्श और नई साहित्य सामग्री दी। उसका रीतिकाल ने उपयोग नहीं किया। वह साहित्य शास्त्र बहुत अंश में पुराने कालों में ही चलता रहा। आजकल का साहित्य शास्त्र भी पुराने ढांचों पर ही चल रहा है।, पुराने चौखटों में नई कविता ठीक नहीं बैठती। उसके लिए चौखटों को बदलने की आवश्यकता है। आजकल का गद्य-काव्य 'कादम्बरी' के आदर्शो से बहुत भिन्न है। इसी प्रकार नवीन कविताएं प्राचीन ढाँचों से ठीक नहीं उतरती। साहित्य शास्त्र के आदर्श बदलते रहे है और उनको अब भी गतिशील रखने की आवश्यकता है। × × ×

हम राष्ट्र की एक सूत्रता के नाते हिन्दी का व्यापक प्रचार चाहते हैं। हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान देना चाहते हैं। प्रान्तीय भाषाओं का नहीं। प्रान्तीय भाषाओं की समृद्धि में हिन्दी की भी समृद्धि है क्योंकि उसमें राष्ट्र की समृद्धि सन्निहित है। हम स्टेशनों पर इसीलिए हिन्दी में नाम चाहते है कि उत्तर भारत के लोग दक्षिण के स्थानों से परिचित हों और उनसे प्रेम का सम्पर्क स्थापित करें। हिन्दी प्रार्थक्य की भावना लेकर नहीं जाती वरन वैविध्य में एकता का संदेश लेकर जाती है।× × ×

"जो लोग पैसे के लिए कलम चलाते है। या अपनी लेखनी को बेचते है निसंदेह वे सच्चे साहित्यक नहीं हो सकते।"1 बाबू गुलाब राय के निबन्धों में 'समाज और कर्तव्य पालन', 'फिर निराशा क्यों', 'मेरी कलम का राज' आदि उल्लेखनीय हैं। इन्होने स्वयं अपने ऊपर चुटकीली। इनके निबन्ध विचारात्मक, भावात्मक तथा वैयक्तिक रहे हैं। बाबू गुलाबराय द्विवेदी युग, शुक्ल युग और आधुनिक युग में निबन्ध रचना करते रहे। इनकी निबन्ध कला लगातार प्रौढ़ता को प्राप्त करती रही। इस युग में ललित निबन्ध की दृष्टि से श्री गुलाबराय का नाम उल्लेखनीय है। 'मेरा मकान', मेरे नापतिचार्य, मेरी दैनन्दिनी का एक पृष्ठ, प्रीति-भोज आदि निबन्धों में ललित निबन्ध की समग्र विशेषताएं प्राप्त होती हैं। इसके अतिरिक्त 'ठलुआ क्लब', 'मेरी असफलताएं' आदि संग्रहों में उनके व्यक्तिगत निबन्ध संकलित हैं। आपके निबन्धों की भाषा सरल, स्पष्ट और भाव-व्यंजक है। आपने 'सिद्धान्त और अध्ययन', 'कार्य के रूप' में हिन्दी नाट्य विमर्श आदि पुस्तकों द्वारा सैद्धान्तिक समीक्षा को आगे बढ़ाया।

1. बाबू गुलाबराय- साहित्य संदेश, भाग-16, अंक 10, पृष्ठ 401

वियोगी हरि

विरह की अग्नि से जब स्थूल और सूक्ष्म दोनों ही शरीर भस्मीभूत हो चुके, तब कहीं इस प्रेम-विभोर जीव का उस परम प्रिय तल से तादात्म हुआ। इस विरहानल- दाह का आनन्द या तो विरहिणी ही लूटती है, और या वह सुहागिन, जिसकी अपने वियुक्त प्रियतम से भेंट हो चुकी है। महात्मा कबीर की ये साखी विरह तत्व का समर्थन कर रही है-

"विरहा कहै कबीर सो, तू जनि छाँड़ै मोहि।
पारब्रह्म के तेज में, तहाँ ले राखौ तोहि।।"

इसमें सन्देह नहीं, कि आत्यंतिक विरहा शक्ति ही प्रेम की सबसे ऊँची अवस्था है। *प्रेम की परिपुष्टि विरह से ही होती है।* विरह एक तरह का पुट है। बिना पुट के वस्त्र पर रंग नहीं चढ़ता। सूरदास जी ने कहा है-

ऊधौ विरहा प्रेम करै
ज्यों बिनु पुट पट गहै न रंगहि, पुट गहे रसाहे परै।।

जब तक घड़े ने अपना अहंकार नहीं जला- डाला, तब तक कौन उसके हृदय ने सुधा रस भरने आयेगा? विरहाग्नि में जलकर शरीर मानो कुंदन हो जाता है। मन का वासनात्मक मैल जलाकर उसे विरह हो निर्मल करता है-

विरटि-अगिन जारे कुंदन होई। निर्मल मन पावै पै सोई'।।

बिना विरह ने प्रेम की स्वतंत्र सत्ता नहीं है। इसी तरह बिना प्रेम के विरह का भी अस्तित्व नहीं है। जहाँ प्रेम है, वहाँ विरह है। प्रेम की आग को विरह-पवन ही उज्वलित करता है। प्रेम के अंकुर को विरह जल ही बढ़ाता है। प्रेम दीपक की बाती को यह विरह ही उकसाता रहता है। इसी से तो कहा गया है कि -

"धन सो धन जेहि विरह-वियोगू, प्रीतम लागि तनै सुख-भोगू।।

"व्यापकता की प्रत्यक्षानुभूति विरह-वेदना में ही होती है। विरह के प्रति सभी सहानुभूति प्रकट करते हैं, या उसकी दृष्टि ही कुछ ऐसी हो जाती है, कि सारा संसार उसे अपने ही समान विरहाकुल दिखाई देता है। निसंदेह प्रिय-विरह समस्त प्रकृति में भर जाता है। अणु परमाणु तक विरही दिखाई देता है।"1 इस संदर्भ में सूर का एक पद अवलोकनीय है-

ऊद्यौ, यहि ब्रज विरह बढ़ूयो।
घर बाहर, सरिता वन उपवन, बल्ली द्रुमन चढ़ूयो।

---

1. सद्गुरु शरण अवस्थी- वियोगीहरि, गद्य प्रकाश, वर्ष 1934

वासर-रैन सधूम भयानक, दिसि-दिसि तिमिर बढ़्यो।× × ×
'सूरदास' प्रभु नंदनंदन बिनु नाहिन जात कढ़्यो।।

जो इस विरहानल से जलते-जलते बच गया, उस पर आश्चर्य होता है-

'मधुवन! तुम कत रहत् हरे' ?
विरह वियोग श्याम सुन्दर के, काढ़े कत न जरे?

अस्तु जो भी हृदयवान होगा, वह अवश्य मेव विरही के प्रति सहानुभूति दिखायेगा। हृदयहीन की बात दूसरी है। हृदय की विशालता, सच पूछो तो, एक विरही में ही देखी गयी है। उसके हृदय में होता है अपने प्यार का ध्यान और उस ध्यान में होती है अखिल विश्व की व्यापकता। फिर क्यों न उसके व्यथित हृदय के साथ समस्त सृष्टि संवेदना प्रकट किया करे?

विरह दशा में सारा संसार ही अपना सगा प्रतीत होने लगता है।

"इस मंदिर में भी मिलेगा खुदा, कुछ अन्दर इश्क की आग भी हो।
स मस्जिद में भी मिलेगा तुम्हें, मन मोहन से अनुराग भी हो।।
वह जिर है हर के दिल में, उसे चाहने की चित चाह भी हो।
मलेगा उस से राह तो है, पर दर्द भरी कुछ आह भी हो।।
मुझे वेद पुरान कुरान से क्या, मुझे सत्य का पाठ पढ़ा दे कोई।
मुझे स्वर्ग या मुक्ति की चाह नहीं, मुझे त्याग का रंग चढ़ा दे कोई।।
मुझे धर्म अधर्म से क्या करना, मुझे प्रेम का प्याला पिला दे कोई।
मुझे मन्दिर मस्जिद जाना नहीं, मुझे राम रहीम मिला दे कोई।।
पुजती हो गरीब की आस जहाँ, कहते हो जिसे सब प्रेम मही।
मेरी काशी वही मेरा कावा वही, मेरा स्वर्ग वही मेरा धाम वही।।
दिखता हो अनाथ के आँसुओं, दिलदार जो दीन दुखी का सही।
मेरा अल्ला वही मेरा बुद्ध वही, मेरा राम वही मेरा श्याम वही।।

- वियोगी हरि

डॉ0 रामकुमार वर्मा

जीवन सदा हरा भरा है, सुन्दर है, मधुर है जैसे चाँद की हँसी, फूल की सुगन्धि, पंक्षी का कलरव। नदी की लहर जो हमेशा आगे बढ़ना जानती है। फैलती है तो, जैसे पलक खुल रही है और वह पल भर में संसार का तट छू लेती है। डा0 वर्मा कहते हैं - "मेरे विचार से जीवन की परिभाषा इससे अधिक क्या हो सकती है? इसमें सुख है, सुगन्धि है, रूप है और है ऐसी प्रगतिशीलता जो अपने से निकलकर सारे संसार को छू लेती है।"

1. डा0 रामकुमार वर्मा- विचार दर्शन, पृष्ठ 62

साहित्य ने भी इस बात का प्रयत्न किया है कि वह जीवन को अधिक से अधिक ऊँचे धरातल पर ले जाये और वह केवल अपने में ही सीमित न रहे, वरन् समस्त विश्व को छूकर *'यूनीवर्सल'* या विश्वजनीन हो जाये। सेक्सपियर के इयागों में संसार के धूर्तो की प्रतिमूर्ति है। *सूरदास की यशोदा* में संसार भर की वात्सल्यमयी माताओं के हृदयों का स्पंदन है। इसलिए संसार के साहित्य ने इस बात की कोशिश की है कि जीवन अपने आप में सीमित न रहे, वरन् वह अधिक से अधिक व्यापक होकर सारे संसार की गतिशीलता अपने भीतर भर सके। इस सम्बन्ध में ईशावास्योपनिषद् के आरम्भ में ही बड़ा सुन्दर श्लोक है-

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधाः कस्यस्विद्धनं।।"

डा० वर्मा लिखते हैं- मैं कविता लिखता हूँ और नाटक भी। इन दोनों को लिखते समय मैं बार-बार यह अनुभव करता हूँ कि मैं अपने मित्रों को ऐसी चीज दूँ जो किसी न किसी तरह नई हो और जो उनके मन की उत्सुकता बढ़ाती हुई उन्हें किसी सत्य या रहस्य से परिचित करा दे। मैं जीवन में रूप के आकर्षण को कम नहीं समझता। उससे जीवन में जागरण आता है। प्रकृति में जो कुछ भी आकर्षक है उसकी ओर आँखे उठ जाना स्वाभाविक है। लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि रूप का आदर्श और *'मिशन'* केवल इन्द्रियों के बाहरी धरातल तक ही न रहे, वरन् इन्द्रियों को पार कर वह आत्मा का तार हिला दे। हमारे यहाँ के *सूफी और सन्त कवियों* ने जो मिलन और विरह के चित्र खींचे हैं, वे इन्द्रियों की पुकार से नहीं बने, वे आत्मा की आवाज से बने हुए हैं। रूप की सार्थकता भी यही है। ऊपरी रूप तो केवल एक 'वार्निश' या 'पालिश' है-

"क्या शरीर है ? शुष्क धूल का थोड़ा सा छवि-जाल।
उस छवि में ही छिपा हुआ है वह भीषण कंकाल।।"

इसलिए यह स्पष्ट है कि मैं जीवन को सौन्दर्य और सुख का केन्द्र मानता हूँ। ऐसे सौन्दर्य का जो कभी पुराना न हो, जिसमें कभी बुढ़ापा न आये और ऐसे सुख का जो विपत्ति के बादल से भी धुंधला न होने पाये।

मैंने जीवन इसी तरह देख है, चाँद और सूरज की तरह। बादल आते है और आकर चले जाते हैं। लेकिन सूरज प्रतिदिन निकलता है और आकाश पर दिन भर राज्य करके शाम को चला जाता है। इसका जीवन ही दिव्य और गौरवमय है। मैं शाक्ति और पुरुषार्थ में पूरा विश्वास रखते हुए भी

भाग्य में आस्था मानता हूँ। इससे जीवन में एक संतोष का उदय होता है।

आत्मा की गूढ़ और छिपी हुई सौन्दर्य-राशि का भावना के आलोक से प्रकाशित हो उठना ही *'कविता'* है। जिस समय आत्मा का व्यापक सौन्दर्य निखर उठता है, उस समय कवि अपने में सीमित रहते हुए भी असीम हो जाता है। उस समय क्षण-क्षण में *'मैं'* और 'सब' में विपर्यय होता है।

श्री पदुमलाल पुन्ना लाल बख्शी

"जिस साहित्यिक के सामने एक उज्जवल आदर्श हो और जो उस आदर्श की प्राप्ति हेतु त्याग और तपस्या का जीवन अपनाएं एवं उस सम्बन्ध का मार्ग अनुकरण कर सके उसी को सच्चा साहित्यिक कह सकते हैं। साहित्यिक ही अपने प्रयत्नों से और कण-कण से अर्जित समुद्र के द्वीप की तरह स्थायी साहित्य का निर्माण कर सकता है। वर्तमान समय में राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्र अपने लक्ष्य से काफी परे हट चुके हैं और लक्ष्यहीन होकर भटक रहे हैं। अत: आज का साहित्यिक तब तक भटकता ही रहेगा जब तक वह किसी आदर्श को खोज नहीं लेता।"1

श्रीमती महादेवी वर्मा

जबलपुर साहित्य संघ द्वारा किए गये एक सम्मान के उत्तर में श्रीमती महादेवी वर्मा ने जो भाषण दिया उसमें सच्चे साहित्य की चर्चा करते हुए उन्होने कहा- "सच्चे साहित्य का निर्माण तभी सम्भव हो सकता है जबकि साहित्यकार अपने स्वार्थ को भूलकर अहं को इदं से मिला दे। यही साहित्य स्थायी हो सकता है। इस बात को ध्यान में रखा जाय कि साहित्य की ध्वजा कभी भी नीचे नहीं गिरती, उसको सम्हालने के लिए अनेक व्यक्ति एक के पीछे एक रहते हैं। *साहित्य का मरण तभी संभव है जबकि मानवता की मृत्यु हो जाये।* इस प्रकार साहित्य की यात्रा अनन्त है। यह सत्य है कि साहित्य सेवा के क्षेत्र में बाधाएं और कठिनाइयाँ अनन्त है, किन्तु मन में यदि आत्मविश्वास का सम्बल और आस्था है तो प्रत्येक कठिनाई का निवारण हो सकता है।"2

साहित्य की महत्ता की चर्चा करते हुए श्रीमती महादेवी वर्मा ने आगे कहा- "नदियों और पहाड़ों की भौगौलिक तथा प्राकृतिक सीमाएं कभी

1. बाबू गुलाब राय- साहित्य संदेश, भाग-16, अंक 10
2. श्रीमती महादेवी वर्मा- सच्चे साहित्य का निर्माण, साहित्य संदेश, जनवरी 1955, पृष्ठ 24

भी साहित्यिकों के बीच एक दीवार उत्पन्न नहीं कर सकती। कोई भी व्यक्ति कहीं भी और किसी भी देश या राज्य में साहित्य-सृजन करें, वह सरस्वती के मन्दिर में बैठा हुआ एक पुजारी ही होगा। अर्चना करने वालों में कभी भेद-भाव नहीं होगा। साहित्य ने तो सदैव जीवन की प्रत्येक प्रकार की चुनौती को स्वीकार किया है और कभी भी किसी की पराजय स्वीकार नहीं की। साहित्य ही एक मात्र ऐसा अंग है जो कि मनुष्य को मनुष्य से मिलाता है। आपने यह भी कहा- "साहित्यिक किसी वाद के चक्कर में न पड़ें। आज उन्हें इस दिशा में सजग होना पड़ेगा क्योंकि दल विशेष के साथ रहने से उस दल की समाप्ति के साथ ही साथ उनकी समाप्ति भी सुनिश्चित-सी है। सरस्वती का जो पुजारी होता है। वह कभी भी इनकी ओर दृष्टिपात नहीं करता।"

श्रीमती महादेवी वर्मा की रहस्यवादी भावना अवलोकनीय है जिसमें उन्होने सांसारिक माया-मोह में लिप्त जीवात्मा को वे सचेत कर रहीं है कि प्राप्ति का लक्ष्य अभी दूर है और उसकी प्राप्ति हेतु सचेष्ट रहना होगा-

"चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना! जाग मुझको दूर जाना!
बांध लेंगे क्या तुझे यह मोह के बन्ध सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले ?
विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले ?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना! जाग तुझको दूर जाना।

एक अन्य गीत में उन्होने बदली के साथ अपने जीवन एवं व्यक्तित्व का साम्य स्थापित किया है-

मैं नीर भरी दुख की बदली! × × ×
विस्तृत नभ का कोई कोना, मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही, उमड़ी कल थी मिट आज चली!
("सांध्य गीत")

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आजकल धर्म का प्रभाव क्रमशः क्षीण होता जा रहा है क्योंकि धर्म को माध्यम बनाने में लाभ के बजाय हानि ही होती है। आज का मनुष्य धार्मिक झगड़े में पड़ना उचित नहीं समझता, न उसके पास समय ही है यदि वह प्रगति करना चाहता है। आज धर्म से अधिक महत्व *मानव धर्म*

को दिया जा रहा है। मनुष्य एक साथ मिल-जुल कर किस प्रकार आगे बढ़ सकता है यही मुख्य समस्या है। यही कारण है कि धार्मिक एक साथ मिलजुल कर किस प्रकार आगे बढ़ सकता है यही मुख्य समस्या है। यही कारण है कि धार्मिक चित्रों के स्थान पर सामाजिक चित्रण का प्रचलन बढ़ता जा रहा है, जनता या समाज की दृष्टि से भी सामाजिक चित्र का महत्व अधिक है। जनता चित्रों में आज की सामाजिक अवस्था देखना चाहती है परन्तु आधुनिक चित्रकला इधर कुछ वर्षो से इससे भी विमुख होती दीख पड़ रही है, एक नवीन दृष्टिकोण बनाने के प्रयत्न में है जिसे सूक्ष्मवाद कहा जा सकता है। × × × × × × × × ×

"आज चित्रकार यह जानता है कि उसकी कला का मूल्य समाज में कुछ नहीं पर उसे अपना कर्तव्य करना ही है। जिस प्रकार प्रकृति का कार्य नहीं रुकता उसी प्रकार कलाकार का कार्य रुकना नहीं जानता। वह रचना करता जाता है भले ही उसे उसका मूल्य न मिले और समाज उसकी कला का आदर न करें। जब तक समाज कला का आदर करता है तब तक कलाकार समाज का भी आदर करता है परन्तु जब समाज की बात पर पर्दा पड़ जाता है या पुतलियाँ ज्योतिहीन हो जाती हैं तो कला का सर्वप्रथम कार्य होता है -उन के बेकार पुतलियों को फोड़कर उनके स्थान पर नई पुतलियां बैठाना और पर्दे को काटकर पुन उसे ज्योतिर्मय करना। आधुनिक कला ने जो सूक्ष्म रूप अपनाया है उसका कारण यही है कि वह एक बार समाज की आँखों को ज्योतिहीन कर दे ताकि पुनः उसमें नई रोशनी आ सके। यह समय की पुकार है, इसकी आवश्यकता है।"1

आचार्य शुल्क के अनुसार "श्रेष्ठ साहित्य वही है जिसमें हित की भावना सन्निहित हो।"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद और रहस्यवाद को पर्याय रूप में स्वीकार किया है। छायावादी काव्य में जब अज्ञात और अनन्त प्रियतम को आलम्बन बनाकर चित्रमयी भाषा में प्रेम की अभिव्यंजना की जाती है, तब रहस्यवाद की सृष्टि होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का विचार है, *"जबकि प्रत्तेक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है तब यह तय है कि चित्तवृत्तियों के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चलता है।"* शुरु से अन्त तक जनता की

1. बाबू गुलाब राय- साहित्य संदेश, भाग-16, अंक 10

चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है।" आचार्य शुक्ल का योगदान साहित्य जगत में द्विवेदी युग में ही हो गया था। उनका महत्वपूर्ण योगदान देखकर उनके नाम पर ही एक युग चल पडा-शुक्ल युग। आपके निबन्धों में प्रौढ़ चिन्तन सूक्ष्म विश्लेषण और तर्क पूर्ण विवेचन दृष्टिगत होता है। इसीलिए उनकी गिनती सर्वश्रेष्ठ निबन्धकारों में की जाती है। इनके निबन्ध चिन्तामणि भाग 1 और चिन्तामणि भाग 2 में संकलित हैं। आपके मनोविकार सम्बन्धी निबन्ध बहुत प्रशंसनीय रहे हैं। ये निबन्ध हैं- उत्साह, श्रद्धा-भक्ति, करुणा, लज्जा, ग्लानि, लोभ और प्रीति, ईर्ष्या, भय आदि। इनके निबन्धों की भाषा शुद्ध साहित्यिक है, फिर भी सहजता सरलता एवं स्वाभाविकता का गुण इनमें मौजूद है।

श्री जयशंकर प्रसाद

आज हमारे देश के राजनीतिज्ञों ने एक दूसरे की आलोचना-प्रत्यालोचना करने का बीड़ा-सा उठा लिया है। वे एक दूसरे के प्रति हृदय-विदारक शिकायतों के अस्त्रों का प्रयोग करते रहते हैं, उन्हें चाहिए कि एक बार प्रसाद के नाटक गंभीरता से पढ़ जावें। सज्जन, कल्याणी परिणय, करुणालय प्रायश्चित, राज्यश्री, विशाख, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, एक घूँट, ध्रुव स्वामिनी, अज्ञातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त नाटक उन्हें उनकी भूल समझा देंगे। उनका संदेश है- "केवल अधिकार के लिए लड़ते रहना निरर्थक है, जब तक कि उसके पीछे कर्तव्य पालन का उत्तरदायित्व न हो। केवल एक दूसरे की भूल दिखाने-आलोचना करने मात्र से राष्ट्र का कल्याण नहीं होता, इससे तो देश की समस्याएं बढ़ेंगी हीं। निर्भीकता, न्यायवृत्ति, कर्तव्य परायणता, सात्विकता, सहानुभूति, परोपकार की भावना के बिना राष्ट्रीयता का दभ्य भरना मिथ्या है। केवल नारे लगाने से, रैली निकालने से भाषणबाजी करने मात्र से ही देश की समस्याओं का निराकरण नहीं होगा, वे तो उपर्युक्त गुणों को आत्म सात कर, कर्मठता के आगे वढ़ते हुए, कंधे से कंधा मिलाकर चलते हुए राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने से ही सुलझेंगी।"1 प्रसाद के नाटक हमें यही सिखाते हैं- उनके नाटकों के पात्र हममें यही संदेश देते हैं। प्रसाद जी को भारतीय विद्धानों से चाहे वे प्राचीन हो या नवीन, बडा लगाव था। वे भारतीयता में ही

1. जयशंकर प्रसाद- स्कन्दगुप्त, पृष्ठ 144-145

सब कुछ न्यौछावर करना पसन्द करते हैं-

"वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान।
वही है शान्ति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य संतान।
जियें तो सदा उसी के लिए, यही अभियान रहे, यह हर्ष।
निछावर कर दें हम सर्वस्व हमारा प्यारा भारत वर्ष।।" × × ×
"क्या सुना नहीं कुछ, अभी पडे सोते हो।
क्यों निज स्वतंत्रता की लज्जा खोते हो।"

काव्य की निर्झरिणी बही तो आँसू, लहर, प्रेम पथिक, चित्राधार, झरना और कामायिनी महाकाव्य तक जा पहुंची। जिसकी सानी का महाकाव्य भारतीय भाषाओं में तो ठीक विश्व की भाषाओं तक में नहीं मिलता। मनुष्य के अन्तर्जगत के घात-प्रतिघातों में विकसित होता हुआ यह काव्य भारतीय अध्यात्म के उस चरम सत्य 'आनन्द' की प्रगति तक जा पहुँचा जहाँ सुख-दुख दोनों एकाकार हो जाते हैं।

नाटक लिखे तो भारतीय संस्कृति का वह उज्जवल स्वरूप सामने ला रखा जिसे देखकर हम अपने उस वैभव-उत्कर्ष पर गर्व कर सकें। उससे प्रेरणा लेकर वर्तमान में कुछ वैसा ही पाने के लिए कमर कस लें जिनमें हमारी संस्कृति व सभ्यता का चरम गौरव आँखों के सामने सजीव हो उठता है। तितली, कंकाल, और इरावती (अपूर्ण) ढाई उपन्यास लिखकर ही आपने श्रेठ उपन्यासकारों में अपना नाम स्थापित कर लिया। कहानियाँ आपने बहुत लिखीं। प्रतिध्वनि, आकाश-दीप, आँधी, छाया, इन्द्रजाल, पुरस्कार आदि आपकी प्रमुख कहानियाँ हैं जो कहानी कला का उत्कृष्टतम उदाहरण ही नहीं, जीवन में उत्तमोत्तम प्रेरणाएँ भरने में भी सक्षम हैं।

काव्य और कला नामक पुस्तकों में आपके लिखे हुए निबन्ध संग्रहीत हैं। ये भाषा व भाव लालित्य दर्शन के साथ-साथ मनुष्य को निरन्तर उत्कृष्ट तथा मन से पवित्र कर्मो से पावन बनाने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। *उनकी रचनाओं में जहाँ कला का चरम विकास है वहीं मनुष्य को देवता बनाने वाली प्रेरणायें भी भरी पड़ी हैं।* प्रसाद जी को अपनी सभ्यता व संस्कृति पर गर्व था उनकी प्रत्येक कृति में उनका यह गर्व झलकता है। प्रसाद जी के नारी पात्र उसके अपने शक्ति सम्पन्न स्वरूप में ही अवतरित हुए हैं। कामायिनी की श्रद्धा मातृशक्ति की परिचायक है। उन्होने इसी महाकाव्य में नारी का परिचय इस प्रकार दिया है-

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल में,

पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के उर्बर आँगन में।"

उनके नाटकों तथा कहानियों में भी उन्होने ऐसे ही उदात्त नारी पात्रों की सृष्टि करके उनमें प्राण भरे हैं जिनसे भारतीय नारी को अपना वह प्राचीन गरिमामय पद पाने की प्रेरणा मिलती है। उन्होने बहुत कुछ लिखा पर कुछ भी निरुद्देश्य नहीं लिखा। मनुष्य को मनुष्य बनाने-देवता बनाने की प्रेरणायें उनमें यत्र-तत्र भरी पडी है। उनकी रचनाएं भारतीयता का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे यही की मिट्टी में उगी, पनपी व बड़ी हैं। पाश्चात्य अनुकरण का लेशमात्र भी उनमें नही है। उनकी भाषा सुन्दर तथा उत्कृष्ट तत्सम शब्दावली युक्त थी। भाषा की दृष्टि में उनकी भाषा हिन्दी का कीर्तिमान कहीं जा सकती है। भाषा सुन्दर और भाव भी सुन्दर-सोने में सुगन्ध जैसी बा उनके साहित्य में देखने को मिलती है। एक स्थान पर उन्होने मृत्यु के सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार किया है-

"मृत्यु अरी! चिर निद्रे तेरा, अंक हिमानी सा शीतल।"

मनुष्य में भी सौन्दर्य देखने वाले इस महान कवि के ऋण से हिन्दी जगत कभी उऋण नहीं हो सकेगा।

प्रसाद का समन्वयात्मक दृष्टिकोण अवलोकनीय है-

"शक्ति के विद्युत कण जो व्यस्त, विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय;
समन्वय उनका करें समस्त, विजयिनी मानवता हो जाय!"

("कामायिनी")

डा0 नगेन्द्र

डा0 नगेन्द्र ने साहित्य की विकास प्रक्रिया के अध्ययन के लिए उससे सम्बन्धित निम्न पाँच तत्वों पर प्रकाश डाला है-

1. सृजन शक्ति (साहित्य की प्रतिभा और उसका व्यक्तित्व)
2. परम्परा (साहित्यिक व सांस्कृतिक परम्पराएं)
3. वातावरण (युगीन परिस्थितियाँ, प्रवृत्तियाँ एवं चेतना)
4. द्वन्द्व 5. सन्तुलन

उनका कथन है कि साहित्य के मूल में साहित्यकार की प्रतिभा और उसका व्यक्तित्व ही अन्तर्निहित रहता है। अभिप्राय है कि साहित्य का मूलाधार साहित्यकार की निर्माण क्षमता होती है। साहित्यिक व सांस्कृतिक परम्पराएं, युगीन परिस्थितियाँ, प्रवृत्तियों, चेतना और वातावरण इसमें सहायक प्रमाणित होते हैं। द्वन्द्व इन सबको गतिप्रदान करता है। वस्तुत: द्वन्द्व ही साहित्यकार आन्तरिक द्वन्द्व को प्रमुखता देता है तो कोई वाह्य संघर्ष को ही

सर्वोपरि मानता है द्वन्द्व में सन्तुलन होना आवश्यक है। एक क्षेत्र के द्वन्द्व में सन्तुलन अथवा शान्ति स्थापित हो जाने पर साहित्यकार की प्रतिभा दूसरे क्षेत्र की तरह अग्रसर होती है।

डा0 नगेन्द्र ने समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए तथा ऐतिहासिक कालक्रम व साहित्यिक विधा दोनों का आधार स्वीकार करते हुए हिन्दी साहित्य का काल विभाजन प्रस्तुत किया। डा0 नगेन्द्र कहते हैं " प्रगतिवाद ने हिन्दी काव्य को एक जीवन्त चेतना प्रदान की है, इसका निषेध नहीं किया जा सकता। आपके शब्दों में "राजनैतिक क्षेत्र में जो साम्यवाद है, वही साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद के नाम से सम्बोधित किया गया। प्रगतिवाद की आधारशिला मार्क्स की भौतिकवादी विचार धारा पर आधारित है। सम्पूर्ण समाज दो भागों में विभक्त है। इनमें प्रथम वर्ग शोषकों (पूंजीपतियों) का है और दूसरा वर्ग शोषित (निर्धनों) का है। *समाज को उन्नतिशील बनाने के लिए वर्ग हीनता का होना अनिवार्य है।* इस भावना के प्रसार में जो साहित्य योगदान प्रदान करता है वही प्रगतिवादी साहित्य हैं।" आपके ग्रंथों में सुमित्रानन्दन पंत, साकेत: एक अध्ययन, रीति काव्य की भूमिका, विचार और विश्लेषण आदि उल्लेखनीय हैं।

मुंशी प्रेमचन्द्र

व्यक्तित्व- साहित्य सृजन के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचन्द्र जी अपने समय के अत्यन्त लोकप्रिय साहित्य मनीषी सिद्ध हुए। इनकी रचनाओं के पात्र काल्पनिक न लगकर यर्थात लगते है। गाँव तथा नगर के मध्यम तथा गरीबी वर्ग का जो चित्रण इनके साहित्य में हुआ है, अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होने साहित्य लिखा नहीं, *साहित्य के माध्यम से विश्व मानव की-दरिद्र और पीड़ित मानव की सेवा की है। साहित्य-सृजन और पत्रकारिता को उन्होने शौक मौज के लिए नहीं अपनाया था न अर्थोपार्जन के लिए।* प्रेमचन्द्र जी ने अपनी सभी महत्वाकांक्षाओं को त्याग कर इस पथ को अपना लिया था। इनके पत्रों ने जनता में एक जागृति की लहर उत्पन्न की पर उस लहर ने इनके व्यक्तिगत जीवन में घाटे की बाढ़ ला दी और पुस्तकों की जो थोड़ी बहुत आय होती थी उसका अधिकांश 'हंस' और 'जागरण' के घाटे की भेंट हो गया।

मान सम्मान से कोसों दूर रहने वाले प्रेमचन्द्र जी कहीं सभाओं में भाग नहीं लेते थे। इनके पाठक तक उनसे परिचित नहीं थे कि यही साधारण सा दीखने वाला आदमी इतना बडा साहित्यकार है। *सादगी की सजीव प्रतिभा*

एवं भारतीयता के सच्चे उदाहरण थे प्रेमचन्द्र जी। आप सच्चे अर्थो में देशभक्त, समाज सुधारक, मानवतावादी व आदर्शो के प्रतिपादक थे। उनका माध यम था साहित्य। आज के तथाकथित साहित्यकारों की तरह उन्होने धन और नाम बटोरने के उद्देश्य से नहीं लिखा। उन्होने छुआ-छूत, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, बेमेल विवाह, दहेज प्रथा, गुलामी, सत्याग्रह, असहयोग-आन्दोलन, जमीदारों के अत्याचार, किसानों की दरिद्रता आदि तात्कालित विषयों पर अपनी सशक्त लेखनी चलाई व जन मानस को झकझोर कर रख देने वाला साहित्य रचा। गई गुजरी स्थिति से ऊपर उठने, पीड़ितों, शोषितों को ऊपर उठाने, देश के लिए कुछ कर गुजरने का एक ऐसा आग्रह इनकी रचनाओं में है कि वे पाठकों के विचारो को उत्तेजित करती है और वह कर्म क्षेत्र में कूद पड़ता है।

आदर्शोन्मुख यथार्थ साहित्य का सृजन मात्र ही नहीं, प्रेमचन्द्र जी ने स्वयं के जीवन को भी एक आदर्श रूप में प्रस्तुत किया। एक साधारण है सिचत के परिवार में पैदा होकर भी परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर आपने बी0ए0 तक की शिक्षा पूर्ण की। सरकारी नौकरी करते हुए देशप्रेम की कहानियाँ प्रकाशित करना समय की पुकार सुनकर सरकारी नौकरी छोड़कर पत्रकारिता जैसा घाटे का सौदा अपनाना- ये कार्य एक आदर्शवादी व्यक्ति ही कर सकता था।

आपने लगभग दो दर्जन उपन्यास तथा 300 से भी अधिक कहानियाँ लिखीं जो इतनी लोकप्रिय हुई कि उनके कई-कई संस्करण निकले। हिन्दी की मौलिक रचनाओं का उस समय अभाव था। एक भाषा जो कल सारे देश की राष्ट्रभाषा बनेगी, उनका कोष इस प्रकार खाली खाली हो यह प्रेमचन्द्र जी को स्वीकार नहीं था इसलिए अपनी सशक्त लेखनी से वे अनवरत इस कमी को पूरा करने में लगे रहे।

संदेश- प्रेमचन्द्र जी की पीड़ा उनकी एक-एक रचना में व्याप्त है। *परिश्रम और पुरुषार्थ से उपार्जित अपनी योग्यता एवं प्रतिभा को लोकहित में लगाने तथा तिल-तिल करके जलते हुए जन जागरण का प्रकाश फैलाने में प्रेमचन्द्र जी ने अपने जीवन का एक-एक क्षण अर्पित किया।* इनका साहित्य आज भी उतना ही लोकप्रिय है। आज भी वे अपने आदर्शोन्मुख व्यक्तित्व एवं कृतित्व से भावनाशील लोगों को प्रेरणा दे रहे हैं कि व्यक्ति समय की पुकार पर अपनी सुख-सुविधाओं को छोड़कर छोटा आदमी होते हुए भी महान कार्य कर सकता है। प्रेमचन्द्र जी एक महान साहित्यकार, विचार एवं समाज सुधारक थे। उन्होने अपने कालजयी रचनाओं से हिन्दी का गौरव बढ़ाया। यह आधुनिक

कहानी के जन्मदाता तथा उपन्यास सम्राट थे। *वे युग के प्रवर्तक साहित्यकार थे।* उनके कई उपन्यासों का विश्व की अन्य भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। हिन्दी साहित्य सदैव उनका ऋणी रहेगा।

डा0 रामविलास शर्मा

प्रगतिशील निबन्धकारों और आलोचकों में डा0 रामविलास शर्मा का नाम प्रमुख है। 'प्रगति' शब्द का अर्थ है- उन्नति करना, आगे बढ़ना। आज प्रगतिवाद का अर्थ केवल उन्नति या विकास के रूप में नहीं किया जाता बल्कि विशिष्ट काव्यधारा के लिए प्रस्तुत किया जाता है। मार्क्सवादी या साम्यवादी दृष्टिकोण के अनुसार निमित काव्य धारा, प्रगतिवाद है। हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी चेतना का उदय वर्ष 1936 ई0 के लगभग हुआ। *श्री मुल्कराज आनन्द और सज्जादजहीर* के प्रयासों के फलस्रूप, *'प्रगतिशील लेखक संघ'* की स्थापना हुई। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रगतिवादी कविताएं प्रकाशित हुई। रूपाभ, हंस अवन्तिका, नया पथ, समालोचक तथा नया साहित्य आदि पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रगतिवादी साहित्य का विकास हुआ।

श्री सुमित्रानन्दन जी पंत

पंत जी ने वास्तविक अर्थो में प्रगतिवाद का प्रवर्तन किया। उनकी *युगान्त, युग वाणी* और *ग्राम्या* काव्य कृतियों में पूंजीवाद और साम्राज्य के दुष्परिणामत के साथ ही कृषक और श्रमिकों की दयनीय स्थिति का विस्तृत चित्रण प्राप्त होता है। आपने पुरातन के प्रति विद्रोह करके नीवनता का आह्वन किया। युगान्त में यही दृष्टिकोण उजागर हुआ है-

"नष्ट भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन, ध्वंश भ्रंश के जड़ बंधन।
पावन पग धर आए नूतन, दो पल्लवित नवल मानवपन।।"

नारी की दयनीय स्थिति का अवलोकन करके कविवर पन्त अन्यत्र भी कह उठते हैं-

"योनि नहीं है रे नारी, वह भी मानवी प्रतिष्ठिति,
उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रहे न नर पर अवसित।× × ×
मुक्त करो नारी को मानव, चिर बन्दिनी नारी को।।"

मार्क्स का गुणगान करते हुए पन्त जी कहते हैं-

"धन्य मार्क्स चिर तमाच्छन्न पृथ्वी के उदय शिखर पर।
तुम त्रिनेत्र के ज्ञान चक्षु-से प्रकट हुए प्रलयंकर।।"

स्मृतिशेष श्री विद्यानिवास मिश्र

ललित निबन्ध परम्परा में विद्यानिवास मिश्र कृत *'मेरे राम का मुकुट मांग रहा है'*, *'उस अमराई ने राम-राम कहा है'*, *'आंगन का पंक्षी'*, *'बंजारा मन'*, *'तुम चन्दन हम पानी'*, *'चितवन की छांह'*, को भुलाया नहीं जा सकता। आपने किसी सामन्य से सामान्य विषय को लेकर एक गंभीर अर्थ की सृष्टि सरसता पूर्ण तरीके से ललित्यमयी रागात्मक भाषा के साथ की है। लोकजीवन, लोकगीत और लोकसंस्कृति के चित्र आपके निबन्धों में अकस्मात आ जाते हैं। *आपका 'भोर का आहवान'*, *'अस्ति की पुकार'*, *'हिमालय'* आदि निबन्ध में इसी प्रकार के चित्र प्राप्त होते हैं।

ऋषि परम्परा के समर्पित साहित्यकार थे श्री विद्यानिवास मिश्र। अनेक उपाधियों और सम्मानों से विभूषित, संसदीय राजभाषा सलाहकार समिति के सदस्य और 'साहित्य अमृत' पत्रिका के सम्पादक पद्मश्री डा0 विद्यानिवास मिश्रा आधुनिक हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ मनीषी, प्रकाण्ड शिक्षाविद् और भारतीयता से ओताप्रोत थे। अपने लेखों, ललित निबन्धों और समीक्षात्मक ग्रंथों के माध्यम से आपने हिन्दी साहित्य की ऐसी अभिवृद्धि की है कि आधुनिकता की दौड़ में धूमिल होती जा रही भारतीयता के लिए वह सदियों तक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करती रहेगी तथा भावी पीढ़ियां उनसे प्रेरणा ग्रहण करती रहेंगी।

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (वर्ष 1898-1960)

'नवीन' जी काव्य में एक ओर राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के कटुजीवन की अनुभूतियाँ हैं तो दूसरी तरफ जागरण के स्वर व्यंजित हुए हैं। उनके काव्य में मानवीय स्तर पर प्रेम और विरह की संवेदनाएं व्यक्त हुई हैं। वे छायावाद के समान्तर बहने वाली वीर-श्रृंगारधारा के अग्रणी कवि थे। आप कानपुर में श्री गणेशशंकर विद्यार्थी के सम्पर्क में आये। गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन आह्वान पर ये कालेज छोड़कर व्यावहारिक राजनीति के क्षेत्र में आ गये। इन्होने अनेक बार जेल यात्राएं की। आपके काव्य में राष्ट्रीयता, देशप्रेम, मानव प्रेम, भक्ति प्रेम की भावना तथा प्रकृति-चित्रण प्रमुख है। आप वीर- काव्य के कवियों में प्रमुख रहे। राष्ट्रीयता की भावना उनके हर एक पद में दिखाई देती है; यथा-

"यह गिरिवर बन गया युगों से, विजय निशान हमारा है।
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है।।"

उनके काव्यों में सशक्त विद्रोह की भावना मौजूद है। साम्राज्यवादियों की प्रति

उग्रता तथा आक्रोश उनकी कविताओं में फूट पड़ता है। वे एक ऐसी क्रान्ति चाहते थे जिससे क्रूर विदेशी शासन का सर्वनाश हो जाए। वे कवि को विद्रोह के लिए प्रेरित करते हैं-

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।।
प्राणों के लाले पड़ जाएं, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए।
नाश और सत्यानाशों का, धुआँधार जग में छा जाए।।"

उपर्युक्त पंक्तियों से पुरुषत्व जाग्रत हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि के हृदय में भावना का स्रोत उमड़ पड़ा है, जिसे सम्हालने में वह असमर्थ है। 'नवीन' जी का *'पराजय गीत'* भी क्रान्तिकारी विचारों से परिपूर्ण रचना है।

मैथिलीशरण गुप्त- (वर्ष 1886-1964)

गुप्त जी हमारे सच्चे राष्ट्र कवि थे। उनकी कविता के विविध विषय हैं। उनके प्रबन्ध काव्यों के विषय प्रायः पौराणिक अथवा ऐतिहासिक हैं, जिनमें कुछ बौद्धकालीन और कुछ राष्ट्रीय हैं। आपका मुख्य विषय *राष्ट्रीयता* ही रहा है। माँ भारती की वन्दना करते हुए वे लिखते हैं-

"मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती।
भगवान भारत वर्ष में गूंजे हमारी भारती।।"

गुप्त जी ने उपेक्षित नारी के प्रति अपनी श्रद्धा और सहानुभूति प्रकट की है। उन्होने दो पंक्तियों में नारी विवशता को साकार रूप में संजोया है-

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।"

आपके काव्य में समाज सुधारवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है-

"इन्हें समाज नीच कहता है, पर ये भी तो हैं प्राणी।
इनमें भी मन और भाव है, किन्तु नहीं वैसी वाणी।।"

नवयुग की चुनौती विषय पर गुप्त जी की रचना है-

"वह अतीत पुरखों का युग था उसका क्या कहना है।
सुनो किन्तु अपने ही युग में हम सब को रहना है।।
अपने युग को हीन समझना आत्महीनता होगी।
अजग रहो! इससे दुर्बलता और दीनता होगी।।
जिस युग में हम हुए वही तो अपने लिए बडा है।
अहो, हमारे आगे कितना *कर्म-क्षेत्र* पडा है।।

जीर्ण वस्तुओं की ममता से घर ही कूड़ा होगा।
अहो आज का कुसुम हार भी कल का कूड़ा होगा।×××
मनुष्यत्व जन में ही रहता नहीं विशाल भवन में।
वह भी क्या कुछ दुर्लभ होगा जो भी चाहो मन में।।
रही चुनौती आज हमारी अधिक कहूँ क्या तुमको।
नई सृष्टि के लिए प्रलय भी प्रेक्षणीय है हमको।।

राष्ट्रकवि श्री सोहन लाल द्विवेदी

वर्ष 1938 से 1942 तक आपने लखनऊ के दैनिक पत्र *'अधिकार'* का सम्पादन किया। आपके सम्पादन में इण्डियन प्रेस इलाहाबाद से प्रकाशित *'बालसखा'* नामक मासिक पत्र ने विशेष ख्याति अर्जित की। वर्ष 1941 से प्रकाशित काव्य ग्रंथ *'भैरवी'* के बाद से आपकी काव्य यात्रा निरन्तर जारी रही। वर्ष 1970 में *'पद्मश्री'* से विभूषित द्विवेदी जी को 1976 में *डी0लिट्* की उपाधि से प्रदान कर कानपुर विश्वविद्यालय ने अपना मान बढ़ाया। आपकी रचनाओं पर *गाँधी जी* एवं *आचार्य श्रीराम शर्मा* के जीवन दर्शन के प्रभाव की स्पष्ट झलक है। जागरूक प्रहरी भी थे राष्ट्रकवि श्री सोहनलालजी।

राष्ट्रीय भावना प्रधान काव्य रचना के कारण आपको सर्वप्रथम *'राष्ट्र कवि'* का अलंकरण प्रदान किया गया। राष्ट्रीयता इनकी कविताओं का प्राण हैं अपनी कविताओं से आपने *राष्ट्रीय जागृति का संदेश* और *नवयुवकों को बलिदान की प्रेरणा* दी है साथ ही स्वाधीनता के पश्चात् वे एक जागरूक प्रहरी की भाँति देश के नेताओं को निरन्तर सावधान करते रहे-

"जगा रहे जो सोए गौरव को अभिराम।
उस स्वदेश के स्वाभिमान को कोटि प्रणाम।"

द्विवेदी जी एक गाँधीवादी कवि हैं। अतः उनकी कविता में गाँधीवादी विचारों का बाहुलय है। खादी प्रचार, हरिजनोंद्धार आदि के विषय में उनका संदेश है-

'खादी के रेशे-रेशे में अपने भाई का प्यार भरा।
माँ बहिनों का सत्कार भरा बच्चों का मधुर दुलार भरा।।'

युवकों को प्रेरित करने के लिए वीर रस का सहारा लिया गया है; यथा-

"जो फाँसी के तख्ते पर जाते हैं झूल,
जो हँसते हँसते शूली को लेते है चूम।
मातृभूमि का जगा जिन्हें ऐसा अनुराग,
यौवन में लिखा जिन्होने वैराग।।"

आपने राष्ट्रगौरव के साथ ही साथ बलिदानी वीरों की यशोगाथा भी गायी है-

"ज्ञात नहीं हैं जिनके नाम, उन्हें प्रणाम, सतत प्रणाम।"× × ×

"जो घावों पर मरहम का कर देते हैं काम,

उन सहृदय को मेरे कोटि प्रणाम।।"

इनकी रचनाओं में आलम्बन तथा उद्दीपन रूपों में प्रकृति के मनोहारी चित्रण मिलते हैं; यथा-

"समझा रहे हो क्या कहती है, उठ-उठ गिर-गिर तरल तरंग।

भर लो-भर लो अपने मन में मीठी-मीठी मृदुल उमंग।"

'आज का बालक ही देश का भावी कर्णधार है'- इस तथ्य को भली-भांति समझते हुए आपने उच्चकोटि के बालसाहित्य की रचना की। गाँधीवादी कवियों में श्री सोहन लाल जी एक उच्च और समर्थ कवि स्थान के अधिकारी हैं। राष्ट्रीय भावना के गायकों तथा बाल साहित्यकारों में वह अद्वितीय हैं। अत: हिन्दी साहित्य में इस अमर गायक का एक प्रतिष्ठित स्थान है। उनकी यादगार रचना है- "महलों को भूलो यारो, झोपड़ियों की ओर चलो। उनकी रोटी नमक निहारो, अपनी खीर भरी थाली।"

श्री *रामधारी सिंह 'दिनकर'*

दिनकर जी की कवितओं में ओजस्विता एवं तेजस्विता के सा *योद्धा का गंभीर घोष, अनल का सा तीव्र ताप, सूर्य का सा प्रखर तेज हैं। 'फुंकार'* वस्तुत: *यौवन की हुंकार है,* जिसमें क्रान्ति की तीव्र भावना भरी हुई है। *'विप्लव'* में विद्रोह की आग रस रही है। *रामवृक्ष बेनीपुरी* ने उन्हें क्रान्ति कवि स्वीकार किया है- "हमारे क्रान्ति युग का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व कविता में इस समय *'दिनकर'* कर रहे हैं। उन्होने *रसवन्ती, रेणुका, इतिहास के आँसू आदि में कर्म में उत्साह, पौरुष एवं उत्तेजना* के गीत गाये हैं और जन-जीवन में प्राण फूँकने का कार्य किया है। आपने ओजस्विता, तेजस्विता से परिपूर्ण कविताएं लिखकर जन जागरण काव्य धारा को पुष्ट किया हैं उनकी काव्य-चेतना जन-जीवन में शौर्य, पराक्रम, वीरता, कर्मण्यता जगाने वाली है। यही कारण है कि *'दिनकर'* जी हिन्दी *जन जागरण* सम्बन्धी आधुनिक काव्य धारा में शीर्ष स्थान के अधिकारी हैं। *कुरुक्षेत्र* में दिनकर जी ने एक दार्शनिक कवि की भाँति बडे कौशल से अतीत की पृष्ठभूमि पर वर्तमान को चित्रित किया है इस रचना में भाषा प्रवाह, भावों में स्पष्टता और विचारों में नवीन युग का प्रतिनिधित्व हुआ है। आपके प्रगतिवादी काव्य में एक ओर शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति दृष्टिगोचर होती है तो दूसरी ओर इन कवियों ने पूँजीपतियों अथवा शोषक वर्ग की भर्त्सना की है-

"श्वानों को मिलता दूध-वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं।

माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़े की रात बिताते हैं।।
युवती की लज्जा वसन बेच जब ब्याज चुकाए जाते हैं।
मिल मालिक तेल फुलेलों पर पानी-सा द्रव्य बहाते हैं।" × × ×

"ये नर-भुजंग मानवता का, पथ कठिन बहुत कर देते हैं"×××

"प्यारे स्वदेश के हित अंगार मांगता हूं।
ध्रुव की कठिन घड़ी में पहचान मांगता हूं।"

भारतीय जनता की निराशा और कुण्ठा को देखकर वे लिखते हैं-

"अरमान-आरजू की लाशें निकल रही हैं।" *(आग की भीख)*

"संस्कृति के चार अध्याय" में श्री दिनकर का संदेश है-

"धार्मिक विश्वास की एकता मनुष्यों की साँस्कृतिक एकता को जरूर पुष्ट करती है। इस दृष्टि से एक तरह की एकता तो वह है जो हिन्दू समाज में मिलेगी, जो मुस्लिम समाज में मिलेगी, जो पारसी या क्रिस्तानी समाज में मिलेगी। लेकिन, धर्म के केन्द्र से बाहर जो संस्कृति की विशाल परिधि है, उसके भीतर बसने वाले सभी भारतीयों के बीच एक तरह की साँस्कृतिक एकता भी है जो उन्हें दूसरे देशों के लोगों से अलग करती है। ×××

असली बात यह है कि जैसे दुनियाँ के और भी कई देश दुनियाँ से अलग और अपने आप में पूर्ण हैं, वैसे ही, प्रकृति ने भारतवर्ष को भी एक स्वतंत्र देश के रूप में सिरजा है, जो दुनियाँ से अलग और अपने-आप में पूर्ण है तथा जिसके भीतर बसने वाले सब लोग भारतीय हैं।"1

"अभिनव मनुष्य" कविता में कवि ने मानव मात्र को यह संदेश दिया है- भौतिक उन्नति के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर होते हुए हमें सहज मानवीयता और हृदय की कोमल भावनाओं को विस्मृत नहीं करना चाहिए-

है बहुत बरसी धरित्री पर अमृत की धार,
पर नहीं अब एक सुशीतल हो सका संसार।
भोग-लिप्सा आज भी लहरा रही उद्दाम,
बह रहीं असहाय नर की भावना निष्काम। × × ×
सावधान मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक तजकर मोह, स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध है तू शिशु अभी अज्ञान,
फूल काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान,

1. रामधारी सिंह दिनकर- संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ 658-359

खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार। ('कुरुक्षेत्र से')

संत बिनोवा भावे

संत बिनोवा भावे चाहते थे कि सर्वोदयी कार्यकर्ता देश में शान्ति और सुरक्षा का वातावरण निर्मित कर स्नेह और भ्रातृत्व-भावना को विकसित करें ताकि पारस्परिक विवादों के लिए पुलिस और न्यायालय की शरण न लेनी पडे और सद्भावना पूर्वक उन्हें निपटाया जा सके। उन्होने कन्या कुमारी में प्रतिज्ञा की थी कि *"जब तक देश का पाँच लाख गांवों में ग्राम स्वराज्य की स्थापना नहीं हो जाती, तब तक मेरी पद यात्रा चलती ही रहेगी।* बिनोवा जी प्रात: 3 बजे उठते थे, दैनिक कार्य से निवृत्त होकर प्रार्थना करते और फिर 7 किमी. प्रतिघंटे की गति से पद यात्रा करने के लिए निकल पड़ते थे। वह इतनी तेज गति से चलते थे कि कभी-कभी उनके साथियों को दौड़ना पड़ता था। रास्ते में अनेक गाँव वाले उनके दर्शनों को आते और उनके विचारों से लाभान्वित होते थे। उन्हें अपनी यात्रा के माध्य ऐसा अनुभव होता था मानों *गाँधी* जी उनके साथ घूम रहे हों। वह कहते थे- *"राजनीति के दिन लद गये अब तो प्रेम तथा अहिंसा से ही विजय प्राप्त की जा सकती है।"*

भूदान और ग्रामदान को वह भक्ति का-परमार्थ का मार्ग मानते थे। सबकी भूमि पर स्वामित्व हो जाने का सीधा सा अर्थ है- सारे सुख और दुखों का एक हो जाना। जिस समय देश में भाषा विवाद चल रहा हो और अंग्रेजी हिन्दी की खींचतान चल रही हो वहाँ इस व्यवस्था के बीच भी *उन्होने देश की सारी भाषाओं को सीखकर यह आदर्श रखा कि यदि व्यक्ति चाहे तो दो या तीन भाषाओं का अध्ययन कोई कठिन कार्य नहीं है'*

'गीता प्रवचन' उनका प्रमुख ग्रन्थ है जिसकी लाखों प्रतियां अब तक बिक चुकी हैं। वह कई भाषाओं में छपी है। *'कुरान-सार'* नामक ग्रंथ की रचना से यह स्पष्ट विदित होता है कि *सर्व-धर्म समन्वय* में उनकी अटूट आस्था थी। बिनोवा जी ने काफी साहित्य लिखा और प्रकाशित हुआ। सचमुच ही बिनोवा जी भारतीय गौरवमयी संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ तथा गाँधी जी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी है। उनका संदेश है-

1. "हमें दैवीय सम्पत्ति का विकास करना है और आसुरी सम्पत्ति से दूर रहना है। संक्षेप में कहें, तो असुरी सम्पत्ति का अर्थ है- काम, क्रोध, लोभ। ये ही तीनों सारे संसार को नचारहे हैं। अब इस नृत्य को समाप्त करो। क्रोध

और लोभ काम से पैदा होते हैं। काम के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न होने से लोभ पैदा होता है और प्रतिकूलता आने से क्रोध। संयम-मार्ग अंगीकार करके इन काम, क्रोध, लोभ से बचा जा सकता है।

2. आहार शुद्धि से चित्त-शुद्धि होगी। शरीर को भी बल मिलेगा। समाज-सेवा अच्छी तरह हो सकेगी। चित्त में संतोष रहेगा और समाज भी संतोष फैलेगा। जिस समाज में यज्ञ, दान, तप ये क्रियायें विधि और मंत्र सहित होती रहती है, उसमें विरोध दिखाई नहीं देता।

3. *जीवन का यज्ञमय बनाकर फिर उसको ईश्वरार्पण कर देना चाहिए।*

4. पवित्र संस्कार डालने के लिए उदात्त विचार मन में दौड़ाने चाहिए। हाथ पवित्र कर्म करने में लगे रहें। भीतर से ईश्वर का स्मरण और बाहर से स्वधर्माचरण; हाथों से सेवारुपी कर्म, मन में विकर्म-ऐसा नित्य करते रहना चाहिए।"1

'विज्ञान-युग में धर्म' पुस्तक में संत विनोवा का संदेश अवलोकनीय है-

"मेरा मानना है कि विज्ञान युग में मजहब को और सम्प्रदायों को स्थान नहीं है। व्यक्ति को सम्प्रदायों से ऊपर उठना है और मानव धर्म का विकास करना है। धर्म पचासों नहीं हो सकते। मनुष्यों के लिए एक ही धर्म हो सकता है और वह है मानव-धर्म! मानव धर्म से ही अब व्यक्ति और समाज आगे प्रगति करेंगे। मनुष्य अब अलग-अलग धर्म-सम्प्रदायों में बंधे रहने के बजाय सभी धर्मो का सार ग्रहण कर लेगा और इसमें से मानव धर्म पनपेगा। अध्यात्म यानि सभी धर्मो का सार। अब सम्प्रदाय नहीं, अध्यात्म चलेगा।"2

पद्म भूषण *गोपाल दास 'नीरज'*

नीरज का कवि व्यक्तित्व समाज की उन सब सड़ी-गली मान्यताओं की कीचड़ में खिलने वाली सभ्यता के रंग-रूपों, मन्दिर-मस्जिद या बिहारी-बंगाली के नाम पर होने वाली अश्लील लूट खसोटों, शोषण और दमन के ऊपर खड़ी होने वाली ऊँची अट्टालिकाओं से प्रभावित हुआ और उसने उन सब अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाई जिनसे मानवता पीड़ित होती है। *नीरज* के काव्य में समाज की हर हलचल, उसके हर पहलू की हर विषमता का चित्र मिल जाता है। नीरज की यह सामाजिक सजगता इस बात का प्रमाण देती है कि वह जीवन और समाज से कटे हुए एक व्यक्तिवादी कवि नहीं है जिसकी बरसाती

1. संत विनोवा भावे- गीता प्रवचन
2. संत विनोवा भावे- विज्ञान युग में धर्म

के ऊपर समाज की हर धूप, हर गर्मी, हर बारिश फिसल जाती है। उनका हृदय धरती-सा संवदेनशील है जो हर धूप, गर्मी और बारिश को अपने में समा लेता है और प्रतिक्रियायें में कहीं गुलाबों की फसल तैयार करता है तो कहीं कैक्टसों का जंगल। कभी वह मनुष्य की एवरेस्ट विजय के गीत गाता है तो कहीं साँसों में आँधी तूफानों को भरकर गाता है-

"मैं विद्रोही हूँ जग में विद्रोह कराने आया हूँ,
क्रान्ति क्रान्ति का सरल सुनहरा राग सुनाने आया हूँ।"

यद्यपि आपकी कुछ कविताओं में मार्क्स की क्रान्ति की ध्वनि भी है परन्तु उन पर गाँधीवाद का प्रभाव अधिक व्यापक है।

"सच मानो निश्चय विजय तुम्हारी ही होगी,
दुश्मन को अपना हृदय-जरा देकर देखो।"

विश्व बन्धुत्व, साम्य और शान्ति के लक्ष्य पर नीरज प्रेम और करूणा द्वारा पहुँचना चाहते हैं और इस प्रकार उनको प्रगतिशील ही कहा जा सकता है। *'अमर पद का अधिकार'* शीर्षक कविता से उनका सन्देश है-

"पन्थ की कठिनाइयों से मान लूं मैं हार- यह सम्भव नहीं है। ××
मैं मुसाफिर हूँ कि जिसने है कभी रुकना न जाना,
है कभी सीखा न जिसने मुश्किलों में सर झुकाना,
क्या मुझे मंजिल मिलेगी या नहीं- इसकी न चिंता,
क्योंकि मंजिल है डगर पर सिर्फ चलने का बहाना,
और तो सब धूर पथ पर चाह चलने की अमर बस,
मैं अमर पद का न लूँ अधिकर- यह सम्भव नहीं है।" ×××

'तूफान मेरा क्या करेगा', शीर्षक कविता से आशावादी संदेश है-

"मैं अकम्पित दीप प्राणों का लिये, यह तिमिर तपा न मेरा क्या करेगा,
बन्द मेरी पुतलियों में रात है, हास बन बिखरा अधर पर प्रातं है।
मैं पपीहा मेघ क्या मेरे लिए- जिन्दगी का नाम ही बरसात है,
साँस में मेरी उनन्चासों पवन, यह प्रलय,-पवमान मेरा क्या करेगा ?"

श्री राम नरेश त्रिपाठी

'त्रिपाठी' जी की साहित्य सेवा बहुमुखी रही है। आपने अनेक खण्ड काव्यों की रचना के साथ-साथ मुक्तक रचनाएं भी की हैं। आपने गद्य तथा पद्य दोनों ही क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का अवदान हिन्दी को प्रदान किया है। एक कवि के रूप में आप *भावुक कवि मात्र न होकर उदात्त मानवीय*

मूल्यों के संरक्षक भी दिखाई देते हैं। आपने तन और मन से स्वस्थ व्यक्ति के निर्माण का आदर्श प्रस्तुत किया। आप की रचनाएँ कर्तव्यनिष्ठा, विश्वबन्धुत्व, मानव-सेवा, स्वाभिमान तथा देश भक्ति का संदेश देती हैं मानव सेवा का संदेश देती रचना इस प्रकार है-

"मैं ढूँढ़ता तुझे था जब कुंज और वन में,
तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में।
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था-
मै था तुझे बुलाता संगीत में भजन में।।
मेरे लिए खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू-
मैं बांट जोहता था तेरी किसी चमन में।
बनकर किसी के आँसू मेरे लिए बहा तू-
आखें लगी थी मेरी तब प्यार के बदन में।।
बाजे बजा बजा के मैं था तुझे रिझाता-
तब तू लगा हुआ था पतितों के संगठन में।
मैं था विरक्त मुझसे जग की अनित्यता पर-
उत्थान भर रहा था तब तू किसी पतन में।।
बेबस गिरे हुओ के तू बीच में खड़ा था-
मैं स्वर्ग देखता था झुकता कहाँ चरण में।
तूने दिये अनेकों अवसर न मिल सका मैं-
तू कर्म में मगन था मैं व्यस्त था कथन में।।"1

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन एवं संदेश की निजी विशेषता

आचार्य श्रीराम शर्मा जी का व्यक्तित्व ऐसी युगान्तकारी परिस्थितियों में महाक्रान्ति का पर्याय बन कर आया है, जिनमें ऋषित्व और मनीषा एकाकार हुए। ऐसे विरल महापुरुष के रूप में हम आचार्य शर्मा जी का दर्शन करते हैं। दर्शन को बुद्धिवाद के चक्रव्यूह से निकाल कर आचार्य जी ने ऐतिहासिक पुरुषार्थ किया। समय की दार्शनिक भ्रष्टता को दूर कर उसे उच्च स्तरीय चिंतन तक ले जाना ही अवतारी प्रवाह का लक्ष्य रहा है। इस युग की दार्शनिक भ्रष्टता बड़े अजीबोगरीब स्तर की है। उपभोगवाद से ऊब चुके विज्ञान के शिखर पर पहुंचे समाज में चिंतन के स्तर पर जो विकृतियों का कुहासा छाया

1. रामनरेश त्रिपाठी- जीवन संगीत (काव्य संग्रह) में प्रकाशित रचना

आज दिखाई दे रहा था, उसे युग प्रर्वतक के क्रान्तिकारी विचार ही मिटा सकते थे। यही कार्य उन्होने किया व अब नई सहस्राब्दि के द्वार पर खड़ी मानव जाति के समक्ष एक ऐसा नूतन दर्शन लाकर रख दिया है कि सारी समस्यायें इसी धुरी पर मिटती चली जाएंगी, नया युग शीघ्र आएगा एवं सारे विश्व का वैचारिक-सांस्कृति-आध्यात्मिक मार्गदर्शन करेगा।

वर्ष 1969 की अखण्ड ज्योति में आचार्य श्री लिखते हैं- "लेखन और प्रवचन हमारा व्यवसाय नहीं, अन्त:करण की एठन है जो निरन्तर इसलिए होती रहती है कि हमारी अनुभूतियों और उपलब्धियों का लाभ हमारे सहचरों को भी मिलना चाहिए। उपर्युक्त दोनों ही क्रियाकलाप हम अपनी आन्तरिक सम्पदा दूसरों को हस्तांतरित करने के उद्देश्य से चलाते रहे हैं।"1 जो विचार इस ऋषि सत्ता के अन्त:करण के माध्यम से जन-जन तक फैले, उन्होने ही एक प्रचण्ड क्रान्तिकारी प्रवाह गायत्री परिवार के रूप में खड़ा किया है। परमपूज्य आचार्य शर्मा कहते है कि युग निर्माण योजना की विचार क्रान्ति युग गीता गायन एवं पांचजन्य का तुमुलनाद है। नवनिर्माण का विकल्प केवल सर्वनाश है। दोनों में से किसी एक को चुनना होगा। निश्चय ही हम सर्वनाश नहीं चुन सकते। नवनिर्माण की जिम्मेदारी स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। नियति हमें-प्रबुद्धता सम्पन्न अन्त:करण वालों को इसी दिशा में नियोजित कर रही है, करके रहेगी।

राष्ट्र को सांस्कृतिक-वैचारिक स्तर पर मुक्ति दिलाने को कृतसंकल्प आचार्य शर्मा का चिंतन बड़ा ही स्पष्ट है। वे लिखते हैं- "हम लोग सुषुप्ति की स्थिति में पड़ी राष्ट्र चेतना को कुम्भकर्णी निद्रा को जगाने का प्रयास करेंगे। विश्वास है, अगले दिनों राष्ट्र जागेगा और उठ खड़ा होगा। जिस दिन यह जगेगा उस दिन दशों दिशायें कांप जायेंगी।उसके पास अध्यात्म, तत्वज्ञान, शौर्य, साहस, विज्ञान एवं सम्पन्नता की इतनी अधिक परम्परागत पूंजी विद्यमान है, जिसके बल पर वह विश्व की अनुपम शक्ति वनकर रहेगा। हमारा उज्जवल भविष्य भी ऐसा होने जा रहा है, जिसमें हम प्रत्येक क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व, मार्गदर्शन कर सकने में समर्थ हो सकेंगे।"2

बड़ा ही आशावादी-युग प्रर्वतक स्तर का चिंतन आचार्य शर्मा का रहा है एवं उसी ने इस निराशा के कुहासे से उबार कर सतयुगी संकल्प के साथ जोड़ा है। इस संकल्प की धुरी दो हैं- मनुष्य में देवत्व एवं धरती पर

1. आचार्य श्रीराम शर्मा- अखण्ड ज्योति, वर्ष 1969
2. ब्रहमवर्चस- महापूर्णाहुति स्मारिका, शांतिकुंज, हरिद्वार

स्वर्ग का अवतरण। इसे स्वप्न नहीं, एक वास्तविकता बताते हुए युग ऋषि आचार्य शर्मा ने विचार क्रान्ति की चिन्गारी को दावानल बनाकर हमें नई सहस्राब्दि के द्वार पर ला खड़ा किया है।

साहित्य के विषय में आचार्य श्री का चिंतन अवलोकनीय है-

साहित्यकार एक संवेदनशील प्राणी होता है। साधारण मनुष्य जिन बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है, साहित्यकार उन्हीं साधारण बातों को जीवनोपयोगी एवं अमूल्य समझता है और उनका स्वरूप अपनी कल्पना द्वारा उपस्थित कर साहित्य का सृजन करता है। साहित्यकार जिस समाज में रहता है, जिस हवा में साँस लेता है, उस समाज की गतिविधियों को सुख-दुख की अभिव्यक्ति देता है। साहित्यकार अपनी वैयक्तिक कामनाओं को भी सामाजिक धरातल पर ही रखकर चलता है। अपनी आशा-निराशा, सुख-दुख और पाप-पुण्य की भावनाओं को समाज के परिपार्श्व में ही रखकर उसे वाणी देता है। सच्चा साहित्यकार वही है जो सरस, सरल और सहज साहित्य का निर्माण करें, सामाजिक परिस्थितियों का सूक्ष्म निरीक्षण कर विशद विवेचन करे। सच्चा साहित्यकार ही नव-चेतना, नवजागरण एवं नवसंदेश दे, जाति, समाज एवं राष्ट्र का पथ प्रदर्शन कर सकता है। सच्चा साहित्यकार ही सुधारक, विद्रोही एवं क्रान्तिकारी हो सकता है। साहित्यकार ही पथ-भ्रष्ट को पथ दिखाने वाला, आश्रयहीन को आश्रय देने वाला और कर्तव्यच्युत को कर्तव्य परायण बनाने वाला है। साहित्यकार तथ्य को स्वीकार करता है, यर्थात का चित्रण करता है और भविष्य का निर्माण करता है।

साहित्यकार एक स्वतंत्र प्राणी है, कल्पना लोक का जीव है वह राजनीति, दलबंदी और शासन प्रभाव के वशीभूत नहीं रहता वह मौज में लिखता है, कल्पना में बहता है और यर्थाता का चित्रण करता है।

कबीर, सूर और तुलसी जैसे साहित्यकार क्या कभी भुलाये जा सकते हैं। महान सम्राट अकबर के निमंत्रण पर सूर ने स्पष्ट शब्दों में कहा था- "सन्तन को कहा सीकरी सो काम"। साहित्यकार जब तक स्वतंत्र है, स्वान्तः सुखाय और जनहिताय से प्रेरित है, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्र जागरण और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है, तभी तक साहित्यकार का साहित्य युग प्रवर्तक साहित्य की श्रेणी में आता है। श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में- "साहित्य ऐसी संजीवनी औषधि है जो मुर्दो को जीवित कर सकती है, पतितों को उठा सकती है, उत्थितों के मस्तिष्क को उन्नति कर सकती है।"

साहित्य का आधार सत्यम् शिवम् सुन्दरम् होता है। साहित्य सत्य

की उपेक्षा नहीं करता, शिवम् उसका उद्देश्य होता है और सुन्दरता में वह अमर हो जाता है। सद् साहित्य वही है, जो सत्यम् शिवम् सुन्दरम् को मानता हुआ चलता है। पं. रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि- "साहित्य वह साधन है जिसके द्वारा शेष सृष्टि के साथ मनुष्य के भावनात्मक सम्बन्ध की रक्षा और उसका निर्वाह होता है। डा. श्यामसुन्दर दास जी ने कहा है - " सामाजिक मस्तिष्क अपने पोषण के लिए जो भाव सामग्री निकाल कर समाज को सौंपता है, उसी के संचित भण्डार का नाम साहित्य है। हिन्दी साहित्य के आधार स्तम्भ आचार्य श्री द्विवेदी जी ने इस सन्दर्भ में कहा है कि- "ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है।" "साहित्य समाज का दर्पण है।"

श्री वर्सफोल्ड नामक अंग्रेजी विद्वान का मत है - Literature is the brain of humanity. अर्थात साहित्य मानव समाज का मस्तिष्क होता है।" आचार्य शर्मा का साहित्य इसी कोटि का सत् साहित्य है।

वह लिखते है- "साहित्य जीवन की अनुभूति की गहरी अभिव्यक्ति है। भाव भरे हृदय से काव्य के स्वर फूटते है; शब्द, छंद, अलंकार सृजित होते हैं। साहित्य के ये सृजनशील स्तर व्यक्ति और समाज को नूतन दिशा और दशा प्रदान करते हैं। अनुभव की तपिश से तपे लेखन के दम पर इतिहास के रुख को पलटा और परिवर्तित किया जा सकता है। स्वर्णिम भविष्य की नींव रखी जा सकती है। उत्कृष्ट और श्रेष्ट साहित्य किसी समाज और राष्ट्र की प्रगति और उन्नति का परिचायक होता है। यदि किसी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का परिचय प्राप्त करना हो तो वहाँ के साहित्य को टटोलना चाहिए। चरित्रनिष्ठा और आदर्शवादी व्यक्तित्व के गठन में श्रेष्ठ साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है और साहित्य को दिशा देने के लिए भी ऐसे कर्मठ, भावनाशील एवं सद्विचारकों की आवश्यकता है। ये सभी एक ही माला की विभिन्न कड़ियां हैं।"[1]

साहित्यकार अपनी प्रतिभा से यथार्थ जीवन को साहित्यिक परिपूर्णता प्रदान करता है; उसमें सौन्दर्य प्रतिष्ठित करता है; उसे भावपूर्ण एवं सरस बना देता है। उसकी सही और समुचित समझ के लिए जीवन की उन स्थितियों का ज्ञान भी आवश्यक है, जिनका चित्रण साहित्य में होता है। इस जीवन की परिधि में व्यक्ति और समाज दोनों आते हैं। दोनों का अटूट और घनिष्ट सम्बन्ध है। दोनों सापेक्ष हैं। समाज व्यक्तियों का समुच्चय है और व्यक्तित्व का गठन भी समाज के परिवेश में होता है। वैयक्तिक और सामाजिक जीवन की डोर एक दूसरे से बंधी हुई है, जिसे साहित्य मजबूती प्रदान करता है।

1 आचार्य श्री रामशर्मा- अखण्ड ज्योति, अक्टू 67, पेज-11

परन्तु विडम्बना यह है कि विचारकों की एकांगी दृष्टि साहित्य में व्यक्तिवाद और समाजवाद दो भिन्न धाराओं को जन्म देती है।

साहित्य, व्यक्ति और समाज तीनों अन्योन्याश्रित हैं। ईकोलाजिकल पिरामिड के समान इन तीनों के किसीभी अंग में विकृति आने पर संतुलन गडबड़ाता है और इसका प्रभाव बड़ा ही घातक होता है। अत: मात्र ऐसे साहित्य की आवश्यकता है, जो हमें हठीले, दुराग्रही विचारों से मुक्त करे और हमारे शुष्क और कठोर अन्त:करण में भाव-संवेदन की गंगोत्री बहाएं। प्राणवान विचारों से गुँथे हुए तथा निर्मल भावनाओं से ओत-प्रोत साहित्य ही व्यक्ति और समाज का कल्याण कर सकता है। अत: हमें सद्साहित्य की शरण में जाना चाहिए तथा इससे प्रेरणा ग्रहण करना चाहिए क्योंकि सत्साहित्य ही मानव जाति का कल्याण करेगा।"

आचार्य शर्मा का कृतित्व एक अवतारी चेतना का ही कार्य है। अवतार कभी बूढ़े नहीं होते। वे अवतरित होने से महाप्रयाण की वेला तक सतत् वे कार्य करते रहते हैं, जो उन्हें उस रूप में स्थापित करते हैं। उनके लीला-प्रसंग गाये जाते है। लोग उन्हें काल खण्डों तक याद करते हैं आचार्य शर्मा की यह वाणी अवलोकनीय है- " विज्ञान जीवित रहेगा पर उसका नाम भौतिक विज्ञान न होकर अध्यात्म विज्ञान ही हो जाएगा। इस आधार को अपनाते ही वे सभी समस्याएं सुलझ जायेगी जो इन दिनों अत्यन्त भयावह दीख पडती हैं। × × ×

न अगली शताब्दी में (21वीं शताब्दी) में विश्व युद्ध होंगे. न महामारियां फैलेगी और न जनसंख्या की अभिवृद्धि से वस्तुओं में कमी पड़ने की चिंता ही करनी पड़ेगी। नारी प्रधान 21वीं शताब्दी का वातावरण ऐसा होगा, जिसे सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा की संयुक्त शक्ति द्वारा अपनाया गया क्रिया-कलाप कहा जा सके।" 'नर-नारी सम्बन्ध' विषय पर नारी जाग्रति के प्रणेता युगऋषि आचार्य श्रीराम शर्मा लिखते हैं-

"प्रजनन प्रक्रिया के मूल में छिपी पवित्रता को पहचाना जाना चाहिए। नर और नारी दोनों मिलकर एक व्यवस्थित शक्ति का रूप धारण करते हैं। जब तक ये मिलन न हो, चेतना व गति उत्पन्न ही न होगी। काम बीज का दुरुपयोग न कर उसका परिष्कार किया जाना चाहिए। नर-नारी का निर्मल सामीप्य ही आध्यात्मिक काम विज्ञान है।" - युगदृष्टा का जीवन दर्शन, पृष्ठ 2.38

"जब तक नारी के नैनों से बहता है जल खारा।
तब तक नवयुग का न पूर्ण होगा मृदु स्वप्न तुम्हारा।।" -आचार्य शर्मा
'महिला जागृति अभियान' जुलाई 1975

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित समकालीन हिन्दी कवियों के सम्बन्ध में विभिन्न विद्धज्जनों के विचार और सम्मतियाँ-

1. श्री शिवशंकर मिश्र-

(i) पं. शिवशंकर मिश्र की कविताओं में उनके व्यक्तित्व एवं मनोसंसार की स्वर्णिम अभिव्यक्ति उपलब्ध है। नित्य लेखन को उन्होने माँ शारदा की आराधना का अंग बना लिया था। फिर भी अपने कविरूप को गुप्त रखने का वे निरन्तर प्रयास करते रहे। वर्ष 1940 के आसपास मैं उनके सम्पर्क में आया था। उस समय ही सरस एवं भावपूर्ण गीतों के प्रणेता के रूप में साहित्यिक मिश्र मण्डली में ख्याति अर्जित कर चुके थे। कालान्तर में उन्होने रुवाइयों, चतुष्पादियों तथां सवैया छन्दों को भी काव्य रचना का माध्यम बनाया था परन्तु उनका कविरूप गीतों में ही सर्वाधिक मनोहारी है। इसीलिए उनके स्वर्गरोहण के बाद मैंने संकल्प लिया था कि उनकी डायरियों में बिखरी पड़ी कवितओं में से गीतों का चयन कर उन्हें प्रकाशिता किया जाये। *'अवशेष पुष्प,'* तथा *'कुछ मेरे कुछ बात तुम्हारी'* शीर्षक से उनको दो गीत संग्रह कमशः वर्ष 1996 तथा 1997 में प्रकाशित हो चुके हैं। *'सुधियों की बरसात'*, शीर्षक से मिश्र जी का यह तीसरा गीत संग्रह हिन्दी कविता प्रेमियों के कर कमलों में सौंपते हुए मुझे सुख एवं संतोष का अनुभव हो रहा है।

-योगेश दयालु, गणेश गंज लखनऊ

2. साहित्य के क्षेत्र में उनकी कविता यात्रा भी विशेष महत्वपूर्ण रही, काव्य की परम्परा को वातावरण के अनुकूल बनाने में केवल भाषा को ही माध्यम नहीं बनाया वरन उन्होने कुछ ऐसा दे दिया जो सहज संभव नहीं हो सकता था। साहित्य में भाव पक्ष को साहित्य की आत्मा कहा जाता है जिसका सम्बन्ध अनुभूतियों से है। अनुभूतियां निराकार होती है। इन्हीं निराकार अनुभूतियों की रंगो, रेखाओं तथा शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्ति ही साहित्य का स्थूल शरीर होता है कला पक्ष का सम्बन्ध इसी साहित्य शरीर से है अतः साहित्य का उद्देश्य है मूर्त साधनों का उपभोग तथा तद्विशिष्टता। यह सारा वैशिष्ट्य हमारे मिश्र जी में उपलब्ध था। उनकी सरसता तथा समदर्शिता तथा समदर्शिता सर्वथा सराहनीय रही हैं भेदभाव से मिश्र जी कोसों दूर थे।

-चक्रपाणि पाण्डेय, लखनऊ

3. हिन्दी पत्रकारिता का प्रादुर्भाव ही जनमानस की वेदना को मुखरित करने के लिए हुआ था। पं. शिवशंकर ने जाति-पांति से ऊपर उठकर साहित्य और पत्रकारिता का क्षेत्र चुना। अनेक वर्षो तक लखनऊ क्रिश्चियन कालेज में अध

यापन करने के बाद वे प्रान्तीय सरकार की सेवा में आ गये। वह अजातशत्रु थे। ज्ञान के भण्डार और निष्काम कर्म योगी थे। उन्होने अपने लिए कभी कुछ नहीं चाहा, दूसरों की सेवा में ही उन्हें सुख मिलता था। उनके जीवन का मूलमंत्र था "परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्" उनका उपनाम था 'करुण' जैसा नाम वैसा ही स्वभाव भी था। उनके भावों से करुण रस सतत् प्रवाहित होता रहता था। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार तो उन्हें स्पर्श ही नहीं कर पाता था। उनका जितना व्यापक साहित्यिक क्षेत्र था उतना ही विशाल सामाजिक श्रेय था। शिक्षा-दीक्षा हेतु वह सभी का समान रूप से सहयोग करते थे। उनकी कलम निरन्तर द्रुत गति से चलती रहती थी। अनेक जिज्ञासुओं को उन्होने पी-एच0डी0 के लिए सहयोग दिया। अपने गोलोक धाम जाने के पाँच मिनट पूर्व तक वह लिखते रहे।

-श्री राधा शरण, वृंदावन

4. चिन्तन-लेखन जगत के, रहे मिश्र आदित्य,
प्रतिदिन पन्द्रह पृष्ठ तक, छपता था साहित्य।
छपता था साहित्य, लिखी अगणित रचनायें,
लेख, नाट्य, लघुकथा, छन्द की सकल विधाएं।
कह 'पंकज' कर गये नाम निज अमर-चिरंतन।
जग का हित कर सकें मिश्र का लेखन-चिंतन।।

सेतु रहे जो सर्वदा सर्जक जन के बीच।
मिले सदा सबसे मिटा, भेद ऊँच और नीच।
भेद ऊँच असनीच, अमियमय था अभ्यन्तर,
उदधि सरिस गंभीर, रहे पंडित शिवशंकर।
पंकज श्रद्धा सुमन, हो अर्पित उनके हेतु।
विशेषांक के रूप में प्रस्तुत साहित्य सेतु।।

-रामऔतार 'पंकज', प्रतापगढ़

5. अनुपम मेधा-
साहित्य शिरोमणि सहें, गीत सम्राट कहें,
भाषा का जादूगर, नव व्यास कहें या।
दिगदिगन्त के सूत्रधार, हर कर्म में तुम्हीं हो,
हर सोच में तुम्हीं हो, हर रंग में तुम्हीं हो।
अनुपम मेधा के अनुचर! ओ समरसंता के स्वामी!

किस नाम से पुकारूँ, किस रूप से निहारूँ,
हे कालजयी तुमको, हे विश्वजयी तुमको! -डा0 कृष्णशर्मा, लखनऊ

6. उत्कृष्ट साहित्य सृजन, साहित्य सृजन के प्रेरक बहुआयामी प्रतिभा के धनी पं. श्री शिवशंकर मिश्र को बाल साहित्य सेवा के लिए उ0प्र0 हिन्दी संस्थान द्वारा "डा0 राम कुमार वर्मा बाल नाट्य पुरस्कार" से सम्मानित भी किया गया था।
-उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ

7. कवि तो बड़ा होता ही है किन्तु वह कवि जो अपनी रचनाओं से दूसरों में सृजनशील अंकुर उगाने के लिए अपने को समर्पित करता है, वह अपनी कविताओं से बड़ी भूमिका अदा करता है। ऐसे थे सहज बन्धु श्री शिवशंकर मिश्र।
-श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा, लखनऊ

8. पं. शिवशंकर मिश्र बहुमुखी प्रतिभा के ज्योतिवाही थे, एक बहुत अच्छे इंसान थे। इंसानियन उनमें लहरें लेती थी जैसे सागर में तंरगे उठती हैं।
-श्री रमाकान्त श्रीवास्तव, लखनऊ

2. श्रीमती विद्यावती मिश्र

1. श्रीमती विद्यावती मिश्र की काव्यकृति 'युगवीणा' की रचनायें एक विशेष उद्देश्य की पूर्ति की दृष्टि से लिखी गई हैं। इनमें मानव कर्तव्यों को उत्तम रीति से करने की प्रेरणा दी गई है।
-पं.श्रीराम शर्मा आचार्य, गायत्री तपोभूमि, मथुरा

2. श्रीमती विद्यावती मिश्र हिन्दी की मूर्धन्य कवयित्री हैं। विगत दो दशकों में उनकी अनवरत साधना ने हिन्दी काव्य को बहुत कुछ दिया है। उनकी काव्य पुस्तकों की सर्वत्र चर्चा, सराहना और समादर हुआ है। समिति के अनुरोध पर उन्होने प्रस्तुत पद्यरूपक प्रकाशन हेतु देने की कृपा की है हम बहिन विद्यावती के इस सहयोग के लिए आभारी हैं।
-श्री चतुर्भुज शर्मा, मंत्री, तुलसी स्मारक समिति, लखनऊ

3. श्रीमती विद्यावती मिश्र ने गीत संग्रह 'ज्योति' के प्रकाशन के साथ अपना कार्य आरम्भ किया था। सामान्य पाठकों एवं काव्य मर्मज्ञों ने पुस्तक का समान रूप से सम्मान किया। अल्पकाल में ही उसे लोकप्रियता प्राप्त हुयी। *'प्रतीक्षा'* कवयित्री के नवीनतम गीतों का संकलन है। इसके प्राय: सभी गीत ही हिंदी की विभिन्न उच्चकोटि की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है और इनमें से कुछ आकाशवाणी से भी प्रसारित हुए है।
- पं.दयाशंकर मिश्र

3. श्री बाबूलाल जैन 'जलज'

1. श्री 'जलज' जी के गीत संग्रह का अधिकांश गीत, गीत तत्वों पर खरे उतरते हैं। आध्यात्मिक भावों के रस में डूबे ये गीत सहज ही आनन्द लोक में पहुंचा देते हैं।" -श्री दानेश्वर शर्मा, छत्तीसगढ़

2. श्री 'जलज' जी की कविताओं में कवि का चिन्तन मनन और जीवन दर्शन झलक रहा है। प्रत्येक रचना भाव और भाषा की दृष्टि से कवता का उत्तम उदाहरण है। -पं. विष्णुदत्त मिश्र, तरंगी (राष्ट्रीयकवि) भोपाल

4. डा0 त्रिलोकीनाथ 'बृजबाल'

1. "अपरिभाषित सत्यांश" आपकी सुन्दर रचनाओं के द्वारा जिस प्रकार परिभाषित हुआ है, उसे पढ़कर मन मुग्ध हो गया। डा. ब्रजबाल सचमुच प्रतिभा के धनी हैं। -डा0 रामकुमार वर्मा

2. 'एक डाल, तीन फूल' के गीत पढ़कर लगा कि जैसे एक ताजी हवा का झोका मुझ धीरे से छूकर आनन्दित कर गया हो। रचनाएं हृदय का छूती हैं। -श्री यशपाल जैन

3. डा0 ब्रजबाल के गीतों में अनुभूति एवं अभिव्यक्ति दोनों ही पक्ष सबल है। -डा.पद्म सिंह शर्मा 'कमलेश' (हिन्दी के प्रसिद्ध कवि एवं लेखक)

4. 'कविवर श्री त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल और उनके गीत' के इन गीतों में मानव-मन की अनेक बहुरंगी अनुभूतियाँ पूर्णतः रूपायित हुई हैं। भाषा, भाव, कथन, शिल्प और छन्द-विधान सभी दृष्टि से उनकी रचनाएं अपनी सार्थकता सिद्ध कर रही हैं।" -आचार्य श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

5. श्री 'ब्रजबाल' जी के गीत प्रेरक, उत्साहवर्धक और भावपूर्ण हैं। भाषा में सरलता है और छन्दों में प्रवाह गीतों का भाव बोध प्रभावशाली है।" -डा0 रामस्वरूप खरे

5. श्री बलराम सिंह परिहार

1. श्री बलराम सिंह परिहार के काव्य संग्रह 'काव्य कैलाश' की रचनाओं में भाव उच्च होने के साथ ही भाषा सरल है और गाने का छन्द अनजान व्यक्तियों द्वारा भी गाये जाने सकने योग्य है। × × ×

बहुत से किशोर और युवा लड़के गंदे गाने निर्लज्जता पूर्वक गाते देखे जाते हैं। ये सब प्रवृत्तियाँ देश और समाज की दृष्टि से अहितकर हैं। इनसे सामान्य जनता का चारित्रिक स्तर गिरता है और उनमें दोषों की वृद्धि होने लगती है। इस परिस्थिति का सुधार करने की दृष्टि से श्री परिहार का यह काव्य-संग्रह

हितकारी सिद्ध होगा।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रवर्तक, अखिल विश्व गायत्री परिवार

2. युग पुरुष आचार्य जी ने 'अखण्ड ज्योति', 'युग निर्माण योजना' पत्रिकाओं के सम्पादन का उत्तरदायित्व भी सौंपा और इस प्रयोजन में सहायता करने के लिए चि0 बलराम सिंह परिहार को साथ जोड़ा। × × ×

कहना न होगा कि विगत 10 वर्षों से (वर्ष 1961 से) चि0 बलराम सिंह भी गुरुदेव (आचार्य श्रीराम शर्मा) के प्रशिक्षण, स्नेह एवं सामीप्य का लाभ लेते रहे हैं। उनकी सरलता निष्ठा और तत्परता ने उन्हें गुरुदेव के पुत्रवत् स्नेह का अधिकारी बनाया और अब वे पत्रिकाओं के सम्पादन कार्य में मेरे सहायक नियुक्त किये जा रहे हैं। लिखने-पढ़ने के कार्यों का एवं काव्य-सृजन का उन्हें अच्छा अभ्यास रहने से वे सरलता पूर्वक इस उत्तर दायित्व में और भी अधिक सहायक सिद्ध होंगे।

-भगवती देवी शर्मा, वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्ति कुंज, हरिद्वार

6. डा0 हरगोविन्द सिंह

1. अकविता के युग में लिखी गयी डा0 हरगोविन्द सिंह की तुकान्त रचनाएं- वे भी गेयशैली और सीधी सपाट भाषा में विशुद्ध साहित्य प्रेमियों को विशिष्ट संदेश पहुँचाने का सशक्त माध्यम हैं। युग निर्माण मिशन के तपोमूर्ति जन्मदाता पू0 आचार्य श्रीराम शर्मा ने अपना अत्यन्त मूल्यवान समय देकर डा0 सिंह को काव्य-सृजन की दिशा, शैली एवं युगधर्म के सम्बन्ध में अपने सद्विचारों से कृतार्थ किया है।

-डा0 मुंशी राम शर्मा 'सोम'

2. "लेखक का परिश्रम सर्वथा श्लाघनीय है और उसका उत्साह अनुकरणीय। डा0 सिंह का शोधग्रंथ "बुन्देली की कृषि-उद्योग शब्दावली का अध्ययन" सर्वांग परिपूर्ण है। रेखाचित्र भी बहुत उपयोगी हैं। इस ग्रन्थ के प्रकाशन से हिन्दी और शब्दाबली-विज्ञान की श्रीवृद्धि होगी। लेखक साधुवाद के पात्र हैं।

-डा0 बाबूराम सक्सेना, भूतपूर्व कुलपति, रायपुर विश्वविद्यालय

7. डा0 रामस्वरूप खरे

1. "समाज-स्रष्टा होने के नाते कवि का धर्म है कि वह मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा में सतत् जागरुक रहे। प्रसन्नता का विषय है कि सुकवि श्री रामस्वरूप खरे ने लेखनी सँवारी है। प्रसन्नता का विषय है कि उनकी प्रतिभा ने बहुत थोड़े समय में उनके लिए अच्छी प्रसिद्धि और योग्य प्रतिष्ठा का स्थान सुरक्षित

कर दिया है।

"अर्चना" नामक अपने प्रथम गीत-संग्रह में भावों की सहज अभिव्यक्ति द्वारा कवि रामस्वरूप खरे ने उज्जवल भविष्य का भरपूर विश्वास दिलाया। दो दर्जन सरल गीतों के इस संग्रह में कवि के अन्तर की पीर यथेष्ट सच्चाई के साथ व्यक्त हुई है, और उसके जीवन के रहस्योद्घाटन का सफल प्रयास किया है। प्रसाद गुण के साथ उदात्त भाव कवि प्रतिभा के पूर्ण परिचायक हैं।

-साहित्य वारिधि डा0 हरीमोहन लाल श्रीवास्तव,दतिया, म0प्र0

डा0 'स्वरूप' के खण्ड काव्य 'शतमन्यु' पर विभिन्न विद्ज्जनों ने अपने मन्तव्य प्रकट किए हैं। उनमें से प्रमुख की सम्मतियाँ अवलोकनीय हैं-

1. "शतमन्यु" में काव्य प्रतिभा और जीवन मंगल विधायक प्रयोजन का आभास मिला। कथा के संकलन और संगठन दोनों दृष्टियों से कवि बधाई के पात्र हैं। इस रचना से युवकों का चरित्रिक उत्कर्ष होगा।"

-डा0 जयनाथ नलिनः कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

2. इसी खण्डकाव्य पर निम्न प्रभावोत्वादक टिप्पणी अवलोकनीय है-

"आपकी अभिव्यक्ति प्रान्जल है, आपकी सद्प्रवत्तियों में आस्था विशेष श्लाघनीय है।" -आचार्य मुंशीराम शर्मा 'सोम'

3. "शतमन्यु" का छन्द विधान शुद्ध और भाव पक्ष पुष्ट रसपूर्ण है।"

-राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

4. "लेखक होने के साथ-साथ स्वरूप जी एक अच्छे कहानीकार तथा कवि भी हैं। उनकी कृतियों में अभिव्यक्ति और अनुभूति दोनों ही पक्षों का वैशिष्ट्य विद्यमान है।

-डा0 ब्रजबासी लाल, भू.पू.उपकुलपति, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

8. श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय'

1. वस्तुतः कविवर मंगल विजय भक्ति काव्य में आधुनिक युग का नेतृत्व कर रहे हैं। ऐसे भक्त कवि पर हर भारतीय को गर्व है। इतना ही नहीं भक्त मानवतावादी होता है। मंगल जी का यही स्वरूप उनकी *'मानव मात्र की प्रार्थना'* रचना में देखकर मानव मात्र को विश्व बंधुत्व की प्रेरणा मिलती है।

-डा0 रामचरण महेन्द्र, पूर्व प्राचार्य एवं प्रोसेर राजकीय कालेज-कोटा

2. श्री मंगल जिसय एक धर्मपरायण, अध्यात्मवादी, आदर्शवादी और समाज के पुर्ननिर्माण के पक्षधर कवि हैं, साथ ही वे चिंतक भी हैं और एक सृजन धर्मा कवि भी। उनके व्यक्तित्व के विविध पक्ष परस्पर असम्बद्व नही अनागुम्फित हैं।

उनके कविरूप को उनके व्यक्तित्व के इसी समवायी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। किसी साहित्यकार के कृतित्व के विवेचन के सन्दर्भ में प्रेरणा, प्रभाव और विकास भी विचारणीय बिन्दु हो जाते हैं। ×××

मंगल जी के विकासशील कवि ने गीत, मुक्तक, गजलें, नज़्में लिखी हैं। तो खण्ड काव्य भी। इस प्रकार कवि मूलतः भौतिकवाद का विरोध और अध्यात्मवाद का पक्षधर है। पर साथ ही उसने दोनों में समन्वय की दृष्टि रखने की आवश्यकता भी अनुभव की है। आध्यात्म के अतिरिक्त कवि ने अपनी जीवन दृष्टि और जीवन दर्शन को वाणी दी है।-

-डा0 प्रेमचन्द्र 'विजय वर्गीय'पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी एवं आधुनिक भाषा विज्ञान तथा डीन, वनस्थली विद्यापीठ

3. गुरुसत्ता (आचार्य श्रीराम शर्मा) के जीवन दर्शन से प्रभावित श्री मंगल विजय-जी के काव्य में सौन्दर्य, स्नेह, संवेदना का अनूठा संगम है। उनने जीवन में प्राणों का संचार किया है एवं कइयों के जीवन की दिशा धारा को बदला है। × × ×

काव्य हृदय को स्पर्श करता है व एक प्रकार से बौद्धिकता के साथ एक भावनात्मक क्रान्ति भी कर सकता है। भाई मंगल विजय जी की कविता में यही मर्म छिपा है।"

-श्रीमती शैलबाला पण्ड्या, प्रमुख,अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुंज

4. शिक्षक, शिक्षाविद्, मननशील, भावनाशील, विचारों से सुलझे हुए और सिद्धान्तों पर दृढ़ आस्था रखने वाले कविवर श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय' युगनिर्माण योजना की पावन सुरसरि के भागीरथ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के प्रेरणापूर्ण आह्वान के फलस्वरूप लोकमंगल के लिए समर्पित भारतीय आकाश का एक ऐसा दिव्य नक्षत्र है, जिसमें अनुपम आभा के साथ-साथ लोक मंगल का पावन संदेश है। उनके काव्य संग्रह *'साधना के स्वर'* की कविताएं भाव, प्रवाह, भाषा, प्रसाद गुण और गेयत्व की दृष्टि से किसी टिप्पणी की अपेक्षा नहीं रखती।

-डा0 ओमशरण विजय, पूर्व प्रोटोकोल ऑफीसर, राजस्थान शासन, जयपुर

5. श्री मंगल विजय का काव्य अन्तर्जगत को हिला ही नहीं देता, स्मरण भी दिलाता है कि हिन्दी साहित्य का प्राण विधेयात्मक चिंतन का प्रणेता काव्य अभी भी जिन्दा है। × × ×

मंगल जी काव्य में वेदना, टीस, कसक, क्रान्ति, अनुराग, भक्ति एवं सद्ज्ञान के प्रबोध का जो सौन्दर्य रहता है, उसने लाखों हृदयों को हुआ

है। भाई मंगल विजय की काव्यसृष्टि में कला और कविता दोनों एक साथ हैं। उन्होने अस्मिता का विस्तार भी किया है और गुरुभक्ति की साधना से, इससे मुक्ति भी पाई है।

-डा0 प्रणव पण्ड्या, निर्देशक, ब्रहमवर्चस शोध संस्थान
एवं कुलाधिपति देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

6. 'वन्दना के बोल' भावों के रूप में हृदय से उभरते हैं और हृदय तक पहुंचते भी हैं। जब साधक को दिव्यता की अनुभूति होती है, तो दिव्यता के स्रोत के प्रति वंदना के स्वर उमड़ उठते हैं। जन-जन तक उन्हें पहुंचाने के लिए भाषा का, शब्दों, छन्दों का भी सहारा लेना पड़ता है किन्तु वास्तव में तो 'वंदना के बोल' भावों की भाषा में ही बोलते हैं।

-वीरेश्वर उपाध्याय, संपादक 'प्रज्ञा अभियान' एवं
न्यूज एण्ड फीचर्स, शान्तिकुंज, हरिद्वार

9. श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'

1. श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' के मुक्तकों की एक-एक पंक्ति धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सूचक है। उनके बाद उन जैसी कविता लाखन सिंह भदौरिया ही लिख सकेगा। -प्रसिद्ध गीतकार श्री बलवीर सिंह 'रंग'

2. श्री सौमित्र ने अपनी काव्य रचनाओं में काव्य सौन्दर्य को कहीं भी क्षीण नहीं होने दिया। गीतों में लय, छन्द व गति का अपना सहज रूप विद्यमान है उनके अब तक जो काव्य-संकलन प्रकाशित हुए है, उनमें 'अपनादीप जलाओ', 'माटी व मुक्तक', 'ज्योति के फूल' व 'आँसू डूबी मुस्कानें' शामिल हैं। इसके अतिरिक्त अनेक गीत-संकलनों में 'सौमित्र' जी की रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। उनका प्रत्येक मुक्तक उस सीप के समान है जो अपने में एक कीमती विचार रूपी मोती छिपाए हुए है।

-डा0 सी.पी. गोयल, मुख्य संवाद प्रसारक 'अमर उजाला',
एवं सेवा मुक्त रीडर, चित्रगुप्त महाविद्यालय, मैनपुरी

3. श्री भदौरिया की कविताओं में तिमिर के साथ भी मस्ती, मिहिर के साथ भी मस्ती का परिचय मिलता है।

-चर्चित युवा कथाकार डा. शिवाजी श्रीवास्तव

10. श्रीमती माया वर्मा

1. "आधुनिक युग की मीरा, जो महादेवी वर्मा के समान ही मानव वेदना की

गायिका हैं, की रचनाओं में मानवता की अन्तर्वेदना की अभिव्यक्ति है। उनके काव्य का चिंतन करते हुए हम यही अनुभव करते हैं कि वे मानवीय करुणा से ओतप्रोत निष्ठा और आस्था की प्रतीक ऐसी विशिष्ट साहित्यकार हैं जिनका सम्पूर्ण सृजन शिवतत्व से ही संयुक्त हैं। × × ×

श्रीमती वर्मा की सम्पूर्ण रचनाएं हमारे आधुनिक जीवन की श्रेष्ठ मार्गदर्शक हैं, वे हमें अटूट साहस प्रदान करती हैं।

-डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया

2. "जीवन सुरभि" (काव्य संग्रह) की कविताएं निश्चय ही प्रेरणास्पद हैं और कविता जगत में व्याप्त असमंजस के घटाटोप में प्रकाश की विद्युत-किरण सदृश हैं। इनमें अर्थवत्ता के साथ गेयता है, जो गुण अर्थवत्ता को सहज ग्राह्य और अनुकरणीय बना देता है।

-प्रो0 दिवाकर विद्यालंकार, पूर्व हिन्दी विभागध्यक्ष एवं
सेवानिवृत्त प्राचार्य, महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, ग्वालियर।

3. "मायादेवी वर्मा ने अपने काव्य रूपकों में मानव जीवन को व्यवस्थित बनाने, उसे उत्कृष्टकता की दिशा प्रदान करने वाले प्रसंगों को बड़ी कुशलता पूर्वक उभारा है। इनकी संगीत नाटिकाओं की रंगमंच पर प्रस्तुति करने में मानव मन में आत्मोत्थान प्रेरणाएं जगेंगी, साथ ही इसको एकान्त में बैठकर पढ़ने से भी सामाजिक कर्तव्य, सौहार्द्र, शान्ति, साहस और व्यवस्था की भावनायें पैदा होगीं। -वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

11. श्री शचीन्द्र भटनागर

1. हिन्दी गीतकारों में शचीन्द्र भटनागर एक ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं जिनकी गीत-सृष्टि में प्रकृति और प्रणय, व्यष्टि और समष्टि या व्यक्ति और समाज को पूर्ण सन्तुलन के साथ अभिव्यक्ति मिली है। × × ×

गीत लिखना उनके जीवन की अनिवार्य विवशता है, परन्तु इस विवशता में विषयों का अनुक्रम एकदम नवीन है, पारम्परिक छन्दों की अपेक्षा उनमें नए प्रयोगों का सफल प्रयत्न हुआ है, साथ ही बासी शब्दावली और रूप-विधान से उनको कोई लगाव नहीं है। उनके गीत जीवन से परिपूर्ण संपृक्त हैं। सामाजिक वैषम्य के प्रति जहाँ इन गीतों में आक्रोश का महत्वपूर्ण स्वर उभरा है वहाँ इस जीवन को ही जीने की सलाह देते हैं, पलायन से सर्वथा विमुख होकर।"

-डा0 गिरिराजशरण अग्रवाल, रीडर एवं अध्यक्ष,

वर्द्धमान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिजनौर।

2. "शचीन्द्र जी आपके लिए नये नहीं हैं। प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं तथा काव्य संकलनों में आपने उनकी रचनाएं पढ़ी हैं, अनेक कवि सम्मेलनों के मंचों से उन्हें सुना हा। अत: स्वाभिमान के धनी, युगबोध के पक्षधर, छन्द और शैली की पुरातन सीमाओं को लाँघकर साहित्य के अधुनातन रूप के साथ चलने वाले, अभिव्यक्ति में नवीनता के हामी, सर्वथा नवीन प्रतीक एवं बिम्ब-विधान के समर्थक, इस समर्थ कवि के सम्बन्ध में अधिक क्या कहूँ।"

-निखिल सन्यासी, प्रतिष्ठित गीतकार एवं सम्पादक

3. "उनकी (शचीन्द्र भटनागर की) लेखनी जब युगनिर्माण मिशन के लिए समर्पित हुई तो *प्रज्ञागीतों* के क्षेत्र में एक *नई क्रान्ति* आ गई। × × ×

उनके गीतों की गणना *प्रथम कोटि* में की जाने लगी है। परमपूज्य गुरुदेव (आचार्य श्रीराम शर्मा) के चिंतन की गहराई, विषयानुकूल भाषा एवं लयात्मकता उनके गीतों की विशेषएँ हैं।"

-स्मृतिशेष पं. लीलापत शर्मा, व्यवस्थापक गायत्री तपोभूमि, मथुरा

4. "आत्मीय भाई श्री शचीन्द्र भटनागर के काव्य में युग निर्माण योजना को जिस भक्ति व शक्ति के भाव से सराबोर किया है, उसकी तुलना किसी पुरुषार्थ से संभव नहीं। एक *सद्गुरु के सच्चे शिष्य* के रूप में उनकी अभिव्यक्ति मुझे अन्दर तक स्पर्श कर जाती है। × × ×

सचमुच उनका काव्य निराला हैं उनका काव्य हृदय को स्पर्श कर सीधे अन्तरतम को छूकर कुछ कर गुजरने की प्रेरणा देता चला आ रहा है।"

-श्रद्धेया शैलबाला पण्ड्या, संचालिका, शान्तिकुंज, हरिद्वार

5. कविवर श्री शचीन्द्र भटनागर बडे ही भावनाशील, लोकमंगल के लिए समर्पित जीवन जीने वाले पद्य-कौशल के धनी मनीषी हैं। इनकी कविताएँ युग निर्माण योजना के मंचों पर वर्षो से गांई जाती व लाखों व्यक्तियों को अनुप्राणित करती रही हैं। × × ×

कवि के भाव इतने निर्मल है कि लगता है हृदय में भरे रक्तरुपी स्याही में कलम डुबोकर अपनी वेदना को व्यक्त किया गया है। सचमुच ही लगता है मानो माँ सरस्वती साक्षात् उनसे लिखवा रही हो।"

-डा0 प्रणव पण्ड्या, एम.डी, कुलाधिपति देवसंस्कृति विश्वविद्यालय एवं निदेशक, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, शान्तिकुंज, हरिद्वार

आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित आलोच्य कवियों की हिन्दी काव्य को देन

भौतिकवाद एवं भोगवाद के दूषित प्रभाव ने जहाँ हर क्षेत्र एवं हर विधा को विकृत किया, वहाँ हिन्दी काव्य भी उससे अछूता नहीं रहा। *'रसो वै सः'* जैसे पावन रस को विष बनाने का दूषित कार्य तथा कथित *'श्रंगार रस'* के नाम पर किया गया जिसमें मांसलता, वासना, उत्तेजना, अशमीलता के पतनोन्मुख दृश्य ही उभारे गए। इधर विज्ञापनवादी संस्कृति ने भी नारी का भोग्या स्वरूप ही उभारा।

इस काम-कीच से हिन्दी काव्य को उबारने के लिए आचार्य श्रीराम शर्मा जी ने साहित्य का गरिमामय एवं नारी का महिमामय पक्ष प्रस्तुत किया। साहित्य को लोकरंजन का नहीं लोकमंगल का हेतु बताया। इस परिष्कृत दृष्टिकोण ने आचार्य शर्मा के समकालीन जागरुक हिन्दी कवियों को भी प्रभावित किया और उनके काव्य में शालीन श्रृंगार के साथ-साथ नारी गरिमा एवं लोकमंगल के स्वर उभर कर आये। विशेषकर उन्होने काव्य को विधेयात्मक दिशाएं दी। इतना ही नहीं व्यक्तिगत रूप से कई हिन्दी कवियों के विशेष प्रेरणा एवं शक्ति प्रदान कर आचार्य शर्मा ने सैकड़ों प्रेरकगीत उनसे लिखवाए। खासतौर से युग निर्माण कवियों का तो उन्होने कायाकल्प करके ही रख दिया।

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित हिन्दी कवियों ने हिन्दी काव्य को ऐसी कृतियाँ दी जिनने-

- युग की आवश्यकताओं का, भटकावों और दिशा निर्देशों का व्यावहारिक एवं जीवन्त चित्रण प्रस्तुत है।
- भक्ति भावना को जीवन मूल्यों से जोड़ा गया है।
- परम्पराओं को विवेकसम्मत रूप प्रदान किया गया है।
- कुरीतियों, अवांछनीयताओं के प्रति मन में मन्यु जागृत किया है।
- भारतीय जीवन दर्शन को विवेक एवं विज्ञान सम्मत ढंग से प्रस्तुत किया गया है।
- संस्कारों, पर्वो एवं राष्ट्रीय पर्वो के जनसुलभ एवं लोककल्याण केन्द्र स्वरूप को स्पष्ट किया गया है।
- व्यावहारिक अध्यात्म के सूत्रों को उजागर किया गया है।
- प्रबुद्धवर्ग एवं विभिन्न प्रतिभावानों को उनके युगीन कर्तव्यों के पालन के लिए जागृत और प्रेरित किया गया है।

☞ जन सामान्य को अपनी गरिमा समझने तथा गरिमामय जीवन जीने के लिए उत्साहित किया गया है।

☞ उज्जवल भविष्य के प्रति आशा और उत्साह का संचार किया गया है।

अलग-अलग कवियों की हिन्दी काव्य को देन अवलोकनीय है-

1.**कविवर श्री शिवशंकर मिश्र** ने एक सफल गीत शिल्पी के रूप में हिन्दी काव्य की श्रीवृद्धि की। हिन्दी जगत ने आपको एक श्रेष्ठ साहित्य मनीषी के रूप में माना। हिन्दी की अनेक विधाओं में आप प्रतिष्ठित हुए। जहाँ साहित्यकारों ने आपको एक संस्था माना वहीं पर सामाजिक दृष्टि से भी आप एक अलग संस्था समझे जाते रहे। साहित्य की विविध विधाओं में आपने निरन्तर लोखनी चलाई किन्तु कविता से आप मूलरूप से जुड़े रहे और मूलरूप से आप का योगदान हिन्द काव्य जगत के लिए रहा।

2. **श्रीमती विद्यावती मिश्र** ने अपनी काव्य-साधना काल में छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता तथा साठोत्तरी कविता के सभी युग देखे। इन पर विशेष प्रभाव छायावाद का ही पड़ा। अत: इन्होने छायावादोत्तर कवयित्री के रूप में हिन्दी काव्य को अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनके तीन गीत संग्रह- 'ज्योति,' 'प्रतीक्ष' एवं 'श्रद्धा' छायावादी प्रवृत्तियों से अनुप्राणित हैं। इनका 'युगवीणा' गीत संग्रह प्रगतिशील विचारों के ओतप्रोत है। श्रीमती मिश्र ने कवयित्री के रूप में पर्याप्त ख्याति अर्जित की और भाषा-शैली एवं अभिव्यक्ति की दृष्टि से इनकी रचनाएं प्रौढ़ तथा परिपक्व हैं। श्रीमती मिश्र हिन्दी की मूर्धन्य कवयित्री थीं। अपनी एकान्त साहित्य साधना द्वारा इन्होंने हिन्दी काव्य की श्रीवृद्धि की।

3. **श्री बाबूलाल जैन 'जलज'** मानवीय भावनाओं के चतुर चित्रकार तथा साहित्यिक भाषा के शिल्पकार थें। हिन्दी काव्य जगत में उनकी सेवाएं चिर-स्मरणीय रहेंगी।

4. **डा0 त्रिलोकी नाथ 'बृजबाल'** के काव्य की हिन्दी के शीर्षस्थ साहित्यकारों एवं विद्वानों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा उनका हिन्दी के कई सन्दर्भ ग्रन्थों में उल्लेख हुआ हैं आपके काव्य संग्रह *'इन्दु एक बिन्दु दो'* का देश विदेश की बारह भाषाओं में पुस्तकाकार अनुवाद प्रकाशित हुआ जो हिन्दी काव्य जगत में एक अन्यतम उदाहरण है। डा0 ब्रजबाल साहित्य-साधना के अनुष्ठान में पूर्ण मनोयोग से संलग्न रहे। आपने अपने सत्प्रयास से माँ भारती के भण्डार की श्रीवृद्धि की।

5. **श्रीबलराम सिंह परिहार** कवि होने के अतिरिक्त एक लेखक निबन्धकार

और सफल सम्पादक भी हैं। अत: उनकी साहित्य सेवा बहुमुखी है। उनके व्यक्तित्व की तेजस्विता और फक्कड़पन उनके काव्य में भी सर्वत्र प्रतिबिम्बित हुआ है। स्वाभिमानी और स्पष्टवादी होने के साथ वह अति भावुक भी हैं। यही कारण है कि उनकी काव्य रचनाओं में जहाँ एक ओर आग है तो दूसरी ओर करुणा की भागीरथी भी हैं आपने त्याग, बलिदान, समयदान एवं देशभक्ति का अनूठा संगम हिन्दी काव्य सरिता को प्रदान किया है।

6. डा0 हरगोविन्द सिंह ने गीतिकाव्य, बुन्देली काव्य साहित्य तथा मुक्तक तीनों ही शैलियों में स्वाधिकार रचनाएं कीं। विषयानुसार रचना शैली की विविधता भी सर्वत्र आपके काव्य में दृष्टिगोचर होती हैं कविता एवं गीत के साथ-साथ आपने काव्य रूपक, नाटक एवं विविध विषयों पर निबन्ध भी लिखे। भावात्मकता एवं व्यंग्य प्रधान शैली आपका प्रधान गुण है। ओजस्विता, आत्मगौरव तथा देशप्रेम के स्वरों को सफलता से आपने श्रोताओं तथा सहृदय पाठकों तक पहुंचाया है। बुन्देली में लिखी गई इनकी काव्य कृतियां हिन्दी काव्य जगत की अनमोल धरोहर हैं। *'बुन्देली शब्दावली'* पर लिखा गया उनका बृहद शोध ग्रन्थ तो बुन्देली साहित्य के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ है।

7. डा0 रामस्वरूप खरे बुन्देलखण्ड के गौरव, साहित्य-दीप डा0 स्वरूप जी की काव्य-प्रतिभा देश विदेश की काव्य प्रवृत्तियों को आत्मसात कर और युग जीवन के प्रति सचेत बनकर उत्तरोत्तर विकाससोन्मुख होती रही हैं उनमें नित्य नूतन सृष्टि करने की क्षमता अक्षुण्ण है। इनका दृष्टिकोण स्वच्छ एवं उदार हैं *आचार्य शर्मा ने आपको युग कवि की मान्यता प्रदान की।* इनमें तुलसी जैसी व्यापकता और विशालता है तथा सूर जैसी गंभीरता भी हैं प्रान्तीयता एवं प्रादेशिकता के संकीर्ण-परिधि बन्धन से स्वयं को मुक्त रख ये हिन्दी को ही अखिल भारतीय दृष्टि से महत्व देते हुए उसी की सेवा में लगे हुए हैं। एक निराले एवं क्रान्तिकारी कवि डा. स्वरूप ने हिन्दी काव्य को जो योगदान दिया है, उसके लिए वह साधुवाद के पात्र हैं।

8. श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' गाँधीवादी कवियों में श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' एक उच्च एवं समर्थ कवि स्थान के अधिकारी हैं। राष्ट्रीय व सामाजिक भावना के गायकों में वह अद्वितीय हैं। अत: हिन्दी साहित्य में इस अनुपम गायक का एक प्रतिष्ठित स्थान अपेक्षित है।

9. श्रीमती माया वर्मा के काव्य में नयी चेतना जाग्रत करने की व्यग्रता अभिप्रेत है। आपके गीतिकाव्य के तत्व इस तथ्य के साक्षी हैं कि कवयित्री में

सुन्दर गीत रचनाओं की क्षमता थी। आपकी हृदय ग्राही कविताओं को पढ़ने और उनके सम्बन्ध में कुछ लिखने का अवसर शोाकर्ता को मिला। मैं स्वर्गीय कवयित्री के प्रति विनम्र शब्दों में अपनी श्रद्धांजलि देता हूँ और कामना करता हूँ कि जन-सामान्य में उनकी काव्य कृतियों का व्यापक प्रचार-प्रसार हो। आपने हृदय के वेदना-पक्ष को जितनी सहजता और सम्पूर्णता से प्रस्तुत किया है, वह आज के युग में अन्यत्र दुर्लभ है। आपके सम्बन्ध में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का महादेवी वर्मा जी के सम्बन्ध में व्यक्त किया गया विचार एकदम सटीक बैठता है- *"श्रीमती वर्मा जहाँ एक ओर कल्पना के स्वप्निल नभ में विचरण करने वाली कवयित्री हैं वही दूसरी ओर धरा की पीड़ा को अन्तर में समेटती हुई, अपनी सहानुभूति पूर्ण भावना से उसके आँसू पोंछती हुई दोनों हाथों से दान देती दानेश्वरी-वारदायिनी भी हैं।"*

10. **श्री मंगल विजय 'विजय वर्गीय'** के काव्य में शालीन श्रृंगार के साथ-साथ नारी गरिमा एवं लोकमंगल का स्वर उभर कर आया। आपने वि योत्मक काव्य सृजन करके हिन्दी साहित्य की अमूल्य सेवा की है। आपक काव्य में कहीं ओजस्वी हुंकार लिए त्याग और देशभक्ति के स्वर हैं, क कहीं ममता, प्रेम और करुणासिक्त बाग्धारा भी प्रवाहित हुई है। *आपकी रचनाओं पर पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन दर्शन के प्रभाव की सर्वाधि क स्पष्ट झलक है।* भारतीय समाज के नवनिर्माण के लिए आप सदा व्याकुल हैं। प्रगतिशील युग निर्माण कवियों में आपका नाम बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है। लगभग *पाँच हजार* उत्कृष्ट स्तर के गीत एवं कविताएँ लिख कर आपने हिन्दी काव्य की अभूतपूर्व सेवा की है।

11. **श्री वीरेश्वर उपाध्याय** एक भावुक-हृदय कवि होने के साथ-साथ एक विचारक भी हैं। गाँधीवादी विचार धारा एवं आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित होकर आपने काव्य रचना की। *अरविन्द-दर्शन* से भी आप प्रभावित है। कविता के साथ-साथ आपकी सम्पादन तथा निबन्ध लेखन के प्रति भी अच्छी पकड़ है। श्री उपाध्याय काव्य को जन-जीवन के निकट लाना चाहते हैं। कवि के सामाजिक दायित्व को अनदेखा न करके राष्ट्र की सामयिक सेवा में आपने अपनी काव्यांजलि अर्पित की है। संत स्वभाव होने के कारण सम्पूर्ण गायत्री परिवार ने आपको *'संत श्री'* की उपाधि से विभूषित किया है। साहित्य के विविध पक्षों पर अपनी लेखनी चलाते हुए आप माँ भारती के भंडार की श्रीवृद्धि कर रहे हैं।

12. **श्री शचीन्द्र भटनागर** नवगीत शैली के गीतकारों में सुकवि शचीन्द्र

भटनागर का नाम सम्मान पूर्वक लिया जाता है। प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं तथा काव्य संकलनों में आपकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। आपके प्रज्ञागीत मन को दू लेने वाले सहज-सरल गीत हैं। जिनमें सतत् गतिशीलता की प्रेरणा है, लोकमंगल का संदेश है, विधेयात्मक स्वर है और प्रत्येक शब्द में युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के चिंतन का सहज संप्रेषण है। हताश एवं पतनोन्मुखी अंधकार में इनके प्रज्ञागीत एक *ज्ञान मशाल* की भाँति हैं।

13. **श्री जितेन्द्र रघुवंशी** ने काव्य में भारतीय संस्कृति तथा समाज निर्माण को सदैव स्थान दिया है। भावुकता और आध्यात्मिकता आपके सृजन का प्राण रहे हैं। एक कवि के रूप में आप भावुक कवि मात्र न होकर उदात्त मानवीय मूल्यों के संरक्षक भी दिखाई देते हैं। आप एक कुशल वक्ता भी है और ओजस्वी वाणी के धनी हैं। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में आपका योगदान समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

14. **डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया** आदर्श और यथार्थ के समन्यवादी लेखक, समालोचक एवं कवि हैं। आपका साहित्य सर्वकालीन तथा सर्वजनहिताय है। गाँधीवादी, आचार्य शर्मा के चिंतन को जन-जन तक पहुंचाने वाले और मानवतावादी साहित्य के प्रणेता होने के कारण आप हिन्दी साहित्याआकाश के उज्जवल नक्षत्र हैं।

15. **डा0 आर.पी.कर्मयोगी** की रचनाओं में जीवन दर्शन की गाथा है। उनकी कविताओं में वह मर्म है जिसे कवि ने जिया है। उनके गीत अनुभव पर आधारित गीत हैं, जिसे कवि ने उन्मुक्त रूप से गाया है। आपके दोहे मात्र शब्दों का खेल नहीं, बल्कि असलियत का उफान है। जीवन्त और जवलन्त काव्य रचनाओं के लिए डा. कर्मयोगी ने हिन्दी काव्य की यथोचित सेवा की है।

16. **श्री लक्ष्मीनारायण ~~सक्सेना~~ 'कमलेश'** एक कुशल लेखक, मानस मर्मज्ञ एवं विशाल हृदय कवि थे। *'अखण्ड ज्योति'* के प्रारम्भिक दिनों में आपने आचार्य शर्मा के साथ इसका सम्पादन सहयोग भी किया। मूलत: वह कवि थे फिर भी इन्होने अपनी गद्य रचनाओं, मानस पर प्रेरक लेखों से गद्य साहित्य में भी अपना उचित स्थान बनाया। मन-वचन-कर्म के सच्चे साहित्यकार श्री 'कमलेश' जी को साहित्य और समाज दोनों में ही उच्चस्थान प्राप्त हुआ। आपके द्वारा रचित प्रार्थना *'वह शक्ति हमें दो दयानिधे'* ने राष्ट्रव्यापी सम्मान प्राप्त किया। एक ओर वह जीवन भर समाज सेवा में तल्लीन रहे तो दूसरी ओर साहित्य सृजन में लवलीन। हिन्दी के आदर्शवादी लेखकों और कवियों में आपका महत्वपूर्ण स्थान रहेगा।

वयं राष्ट्रेजागृयाम पुरोहिताः

हम पुरोहित राष्ट्र को जीवन ज्योतिर्मय बनाएं ।
शंख जागृति का बजाकर विश्व मानवता जगाएँ ।।

—डा0 हर गोविन्द सिंह

आचार्य शर्मा का जीवन-दर्शन तर्क की विचारणा नहीं सत्य की अनुभूति है । आचार्य श्री राम शर्मा जहाँ क्रान्तिकारी सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत एवं एक आध्यात्मिक अलौकिक महापुष के रूप में इस समाज के समक्ष उजागर हुए बहाँ वे एक अनूठे क्रान्तिदर्शी तथा आध्यात्मिक साहित्यकार भी थे । उन जैसा साहित्य—सृजन आज तक किसी अन्य साहित्यकार के माध्यम से सम्भव नहीं हुआ । इस तथ्य की पुष्टि के लिए उनकी लिखी 3200 छोटी—बड़ी पुस्तकें एवं पं0 श्री राम शर्मा आचार्य वाङ्मय के 108 खण्ड इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है। न केवल भारतीय साहित्य अपितु पाश्खत्य साहित्य में भी ऐसा कोई साहित्यकार नहीं है जिसका सम्पूर्ण कृतित्व इस प्रकार समाज में समादूत हुआ हो । यही कारण है कि उनके जीवन दर्शन से प्रेरणा लेकर अनेक कवि एवं साहित्यकार इस समाज में प्रादुर्भूत हुए और उन्होने अज्ञान, अंधविश्वास और कुरीतियों पर कुठारा घात करते हुए उनसे मुक्त होने के प्रेरणास्पद मंत्र अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से फूँके और यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मनुष्य सब कुछ कर सकता है यदि वह अपने लक्ष्य के प्रति अगाध श्रद्धा, विश्वास और भक्ति भाव रखे । आचार्य शर्मा के सहस्रो हस्त लिखित इसके साक्षी हैं ।

निः सन्देह यह कहा जा सकता है कि वेद मूर्ति तपोनिष्ठ आचार्य श्री राम शर्मा न केवल एक महामानव थे अपितु एक अवतारी पुरुष भी थे जिन्होनें युग निर्माण के संकल्प को अपने जीवन में ही साकार कर दिखाने का पूर्ण रूपेण प्रयास किया और आज भी उनके अनुयायी 'प्रज्ञा परिजन' 'इक्कीसवीं सदी—उज्जवल भविष्य के उनके श्रेष्ठ संकल्प को पूरा करने के लिए प्राण पण से युगनिर्माण मिशन को और भी सृदृढ़ स्थिति में पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं ।

आचार्य श्री राम शर्मा का व्यक्तित्व और कृत्तिव अनन्त है । उनके जीवन के एक—एक पक्ष पर अनेकानेक शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये जा सकते हैं। मेरा तो यह लघु एवं विनम्र प्रयास है इसलिए मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने उनके जीवन दर्शन के सम्पूर्ण पक्ष को एवं उनसे प्रभावित समस्त कवियों के काव्य सृजन को उजागर कर दिया है लेकिन इतना अवश्य है कि इस शोध कार्य से प्रेरणा पाकर अनेक शोधार्थी आचार्य शर्मा के जीवन के विभिन्न प्रकरणों को लेकर भिन्न—भिन्न शोध के पक्ष उजागर करने में समर्थ हो सकेंगे ।

शोधकर्ता का मानना है गायत्री परिवार में साहित्यिक कवियो का अभाव नहीं है। परन्तु आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित अधिकांश समकालीन हिन्दी कवियों ने अपनी रचनाओं को युग निमार्ण मिशन की पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित कराने के अतिरिक्त कविताओं के संग्रह

प्रकाशित कराने का प्रयत्न नहीं किया । गायत्री परिवार शान्ति कुंज हरिद्वार एवं युग निमार्ण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा से ऐसे कवियों की रचनाओं को अलग से प्रकाशित करने के प्रयास की आवश्यक्ता है अन्यथा अनेक कवियों की उत्तम रचनाओं के लुप्त होने का संकट उत्पन्न हो सकता है । उल्लेखनीय है कि इन कवियों की वाणी ने देश में नव जागरण उत्पन्न किया है।

अपनी यशस्वी ऋषि परम्परा में अवतरित हुये पूज्य पाद आचार्य शर्मा जी के प्रति मैं अपने आपको उपकृत मानता हूं जिनके अमूल्य त्याग, तप, सूक्ष्म संरक्षण तथा असीम कृपा दृष्टि के फलस्वरूप मुझे प्रस्तुत शोधकार्य के इस पुनीत यज्ञ में एक हेता के रूप में अपनी आहुति समर्पित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ । मेरी यह विनीत श्रंदाजंलि उनके युगल चरणों में सादर समर्पित है ।

यह शोध प्रबन्ध कहां तक उपयोगी बन पाया है, यह अध्येत्ताओं के सोचने एवं निर्णय लेने का विषय है । शोध कर्ता ने तो एक विनम्र प्रयास भर किया है । बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति जी का भी शोधकर्ता हृदय से आभार मानता है । जिन्होंने मुझे एक अवसर दिया कि मैं अध्येत्ताओं के सम्मुख अपने कठिन परिश्रम से लिखे गये इस वृहद शोध ग्रंथ को प्रतिष्ठित कर सकूं जिसमें फुल स्केप साइज के 1400 से अधिक पृष्ठो में गुम्फित ठोस सामग्री दो भागों में है । साथ ही आचार्य शर्मा के जीवन-दर्शन को और अधिक स्पष्ट करने के लिए यथावश्यक रेखाचित्र, मानचित्र एवं चित्र (फोटोग्राफ) भी परिशिष्ट में लगाये गये हैं ।

यों आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन पर अनेक शोध प्रबंध विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रस्तुत किये जा चुके हैं और प्रस्तुत हो रहे हैं । अतः मेरा यह विनम्र प्रयास उसी क्रम में एक कड़ी बढ़ावेगा ऐसा शोधकर्ता का अपना अभिमत है ।

परिशिष्ट

परिशिष्ट – 1

(क) रेखा चित्र

(ख) मानचित्र

(ग) चित्र (फोटो ग्राफ)

परिशिष्ट – 2 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(क) आधार ग्रन्थ सूची (हिन्दी)–आचार्य शर्मा का सन्दर्भित साहित्य

(ख) सहायक ग्रन्थ सूची (आलोच्य काव्य कृतियाँ)

(ग) सहायक ग्रन्थ सूची (हिन्दी)

(घ) सहायक ग्रन्थ सूची (संस्कृत)

(ड़) सहायक ग्रन्थ सूची (अँग्रेजी)

(च) सन्दर्भित पत्र–पत्रिकायें

आचार्य श्रीराम शर्मा : वंशवृक्ष

(कुल - सनाढ्य ब्राह्मण, गोज- भारद्वाज
उप गोत्र- राजौरिया, निकास-
कातकी से मुहम्मदी, मरसैं

कातकी से आँवलखेड़ा आए

पं० खुशहाल जी

पं० नारायण प्रसाद

पं० मुरलीधर

पं० भगवत प्रसाद

पं० बद्री प्रसाद

पं० राम रतन

पं० हुब्बलाल

पं० विजय पाल

पं० मनीराम

पं० गनेशी लाल

पं० चम्पाराम

पं० नेजपाल

पं० गयाप्रसाद

पं० हेतराम

पं० शोभा राम

पं० भगवती प्रसाद

पं० ज्योति प्रसाद

पं० रघुनाथ

पं० श्याम बाबू

पं० द्वारिका प्रसाद

पं० शिवचरण

पं० सीताराम

पं० राधेश्याम

पं० मोती राम

पं० देवलाल

पं० वासुदेव

पं० क्षेत्रपाल

पं० भूदेव शर्मा

पं० रूपकिशोर

दो पुत्रियाँ

पं० राम प्रसाद

पं० प्रेम चन्द्र

पं० जय प्रकाश

पं० रवि कुमार

पं० सुरेन्द्र

पं० चुन्नी लाल

पं० कल्याण प्रसाद

पं० हरि प्रसाद आचा

पं० गया प्रसाद शास्त्री

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

दो पुत्रि

पं० ओम प्रकाश शर्मा

एकदत्तक पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ

श्री मृत्युञ्जय शर्मा

तीन पुत्रियाँ

शैलबाला (पुत्री)

पत्नी डा० प्रणव पण्ड्या

डा० चिन्मय पण्ड्या

वंशवृक्ष : रेखांकन

आचार्य श्री रामशर्मा की जीवन यात्रा के महत्वपूर्ण सोपान

1	जन्म–ग्राम ऑवल खेड़ा, जनपद आगरा, उ0 प्र0 जन्म तिथि– आश्विन कृष्ण त्रयोदशी, विक्रम संवत् 1968	20 सितम्बर 1911
2	राजनैतिक जीवन का शुभारम्भ– श्रीराम 'मत्त' के रूप में	1923–24
3	आचार्य शर्मा के चौबीस महापुरश्चणों का शुभारम्भ–बसन्त पंचमी	18 जनवरी 1926
4	सहधर्मिणी शक्ति स्वरूपा माता भगवती देवी शर्मा का जन्म	20 सितम्बर 1926
5	स्वतंत्रता संग्राम सेनानी–सत्याग्रही के रूप में कार्यकाल	1928 से 33
6	अखण्ड ज्योति पत्रिका का प्रकाशन (सर्वप्रथम वर्ष 1938 बसन्त पंचमी)	विधिवत् वर्ष 1940 बसंत पंचमी
7	आचार्य शर्मा का श्रीमती भगवती देवी शर्मा से विवाह	1944
8	चौबीस महापुरश्चरणों का समापन के पश्चात् चौबीस दिन जल उपवास	1953
9	गायत्री परिवार का विधिवत् गठन एवं प्रथम गुरूदीक्षा,	1953 गायत्री जयन्ती
10	गायत्री तपोभूमि मथुरा में गायत्री माता की प्राण–प्रतिष्ठा सम्पन्न	1953
11	108 कुण्डीय गायत्री नरमेघ यज्ञ, मथुरा	20–24 अप्रैल 1956
12	गायत्री परिवार की शाखाओं की अधिकृत घोषणा	सितम्बर 1956
13	प्रथम अखिल भारतीय गायत्री परिवार सम्मेलन	7–12 जून 1956
14	सहस्र कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, मथुरा	23–26 नव0 1958
15	व्रद, उपनिषद सहित समस्त आर्य साहित्य का सरल सुबोध भाष्य	1960–61
16	युग निर्माण की शतसूत्री योजना एवं युग निर्माण सत्संकल्प के रूप में नवयुग का संविधान	1963, गायत्री जयंती
17	युग निर्माण योजना पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ	1964
18	गायत्री तपोभूमि, मथुरा, में युग निर्माण विद्यालय का शुभारम्भ	1967
19	पाक्षिक युग निर्माण योजना का प्रकाशन (बाद में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान)	जनवरी 1967
20	शान्ति कुन्ज, हरिद्वार का निर्माण कार्य आरम्भ	गुरूपूर्णिमा 1969
21	पॉच सहस्रकुण्डीय महायज्ञ–टाटानगर, ,बहराइच, भीलबाड़ा महासमुन्द एवं पोरबन्दर	1960–71
22	मथुरा से विदाई, शान्तिकुन्ज, हरिद्वार आगमन	16–20 जून 1971
23	आचार्य जी का हिमालय अज्ञातवास के लिए प्रस्थान (चौथी बार)	1 जुलाई 1971
24	हिमालय से लौटते ही शान्तिकुन्ज में प्राण–प्रत्यावर्तन सत्रों की श्रृंखला	जून 1972
25	अफ्रीका के पूर्वी भाग में प्रवास	दिसम्बर 1972 से फरवरी 73

26	शान्तिकुन्ज में कन्या प्रशिक्षण का शुभारम्भ	गायत्री जयन्ती 1973
27	"महिला जागृति अभियान" पत्रिका का प्रकाशन	1975 गुरूपूर्णिमा
28	स्वर्ण जयन्ती साधना	1976
29	विशिष्ठ ब्रहमवर्चस साधना	1977–1978
30	ब्रहमवर्चस शोध संस्थान की स्थापना	1979
31	गायत्री शक्तिपीठों–प्रज्ञापीठो की स्थापना का शुभारम्भ	1979 गायत्री जयन्ती
32	युग सन्धि महापुरश्चरण साधना	1980
33	आध्यात्मिक कायाकल्प की चन्द्रायण स्तर की साधना	1981–1982
34	अति प्रचण्ड सूक्ष्मीकरण साधना में प्रवेश	1984 रामनवमी
35	पंच वीरभद्रों के जागरण की सावित्री साधना	1986
36	राष्ट्र की देवात्म शक्ति की कुंडलिनी जागरण	1987
37	बारह वर्षीय युगसन्धि महापुरश्चरण की घोषणा एवं आरम्भ	अगस्त 1988
38	लक्ष्यवेदीय दीपयज्ञों की घोषणा	8 मई 1990
39	युग पुरूष आचार्य शर्मा का महाप्रयाण	2 जून 1990, गायत्री जयंती
40	छः स्थानों पर लक्षवेदीय दीप महायज्ञ	6 से 8 जून 1990, गायत्री जयंती
41	श्रद्धान्जलि समारोह (शान्तिकुन्ज,हरिद्वार के तत्वावधान में)	1 से 4 अक्टूबर 1990
42	आर्चाय जी की स्मृति में भारत सरकार द्वारा एक डाक टिकट जारी	27 जून 1991
43	विराट शपथ समारोह (शान्तिकुन्ज,हरिद्वार के तत्वावधान में)	7 से जून 1992
44	अश्वमेघ यज्ञों की घोषणा	10 जून 1992
45	प्रथम अश्वमेघ यज्ञ जयपुर	7 से 10 नवम्बर 1992
46	लेस्टर (यू0के0), टोरण्टो (कनाडा)	वर्ष 1993
47	लॉस ऐंजिल्स (यू0 एस0 ए0) में	वर्ष 1993
48	चित्रकूट अश्वमेघ यज्ञ,	16 से 20 अप्रैल 1994
49	शक्ति स्वरूपा माता भगवती देवी शर्मा का महाप्रयाण	19 सितम्बर 1994 भाद्रपक्ष पूर्णिमा
50	युग सन्धि महापुरश्चरण की अर्द्धपूर्णाहुति (ऑवलखेड़ा)	1 से 7 नवम्बर 1995
51	विराट विभूति ज्ञान यज्ञ (नेहरू स्टेडियम–नई दिल्ली)	8 अक्टूबर 2000
52	युग सन्धि महापुरश्चरण की महापूर्णाहुति (सृजन संकल्प विभूति महायज्ञ) शान्तिकुन्ज,हरिद्वार के तत्वावधान में	6 से 11 नवम्बर 2000

अखिल विश्व गायत्री परिवार
की

उल्लेखनीय गतिविधियाँ

धर्मतंत्र से लोक शिक्षण

हर समुदाय के लोक सेवियों को पौराहित्य का प्रशिक्षण

देव संस्कृति का घर-घर विस्तार

आश्वमेधिक अभियान द्वारा राष्ट्रीय गरिमा की पुनर्स्थापना

कुटीर उद्योगों द्वारा आर्थिक स्वावलम्बन

बाल संस्कार शालाओं द्वारा सुसंस्कार संवर्धन

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा द्वारा छात्रों मे सांस्कृतिक निष्ठा का जागरण

प्रज्ञा पुराणा कथाओ के माध्यम से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र निर्माण

समूचे विश्व में आध्यात्मिक पुनरुत्थान

विदेशों में भारतीय संस्कृति एवं यज्ञीय परम्परा का विकास

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास के प्रयास। दूर देशों मे आध्यात्मिक यात्राएँ

आचार्य श्रीराम शर्मा के

प्रज्ञा अभियान द्वारा

समग्र क्रान्ति का उद्घोष

इक्कीसवी सदी-उज्जवल भविष्य

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा

कुरीतियों और मूढ़ मान्यताओं का निवारण

नारी की उसकी गरिमा का बोध कराकर नारी जागरण

दहेज और विवाहोन्माद के विरुद्ध सशक्त मोर्चा

आदर्शनिष्ठ परिवार संस्था का पुनरुज्जीवन

नशा उन्मूलन और व्यसन मुक्ति आन्दोलन

गायत्री साधना नर-नारी सबके लिए सुलभ

जड़ी-बूटी चिकित्सा-स्वास्थ्य संवर्धन

सबके लिए शिक्षा कामकाजी विद्यालयों का शुभारंभ

स्वावलम्बन-ग्राम विकास

जप विज्ञान

गायत्री मंत्र सविता देवता से एकात्म स्थापित करने की वैज्ञानिक तकनीक है।

गायत्री मंत्र में ध्वनियों का गुंथन इस प्रकार हुआ है कि मंत्र जप के साधक की अन्तश्चेतना पर प्रबल कंपन होता है और सुषुप्ति जागृति में बदल जाती है।

जप का तरीका

ब्रह्ममुहुर्त मे सूर्योदय के एक घंटे पहले ब्रह्म संध्या यानी षट्कर्म-पवित्रीकरण, आचमन, शिखा वंदन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी पूजन तथा आवहान करते हुए सूर्य मध्यस्था गायत्री के ध्यान के साथ जप करना।

मंत्र जप

जप का मतलब मानसिक चेतना को जगना है न कि ईश्वर को लुभाना

जप के प्रकार

- बैखरी (सस्वर)
- उपांशु — केवल होंठ हिलते रहें पास बैठा व्यक्ति भी न सुन सके
- मानसिक — मन ही मन, होंठ भी न हिलें
- लिखित — नित्य निर्धारित संख्या में मंत्र लेखन
- अजपा — चेतना पर सोते जागते, जप प्रक्रिया का सतत प्रवाह

जप का प्रभाव

- इन्द्रियों पर
- मन पर
- स्वभाव पर
- चिंतन पर
- चेतना पर

जप का लक्ष्य

- एकाग्रता पूर्वक अन्तर्मुखी होना
- चेतना के विशेष स्तर पर पहुँचना
- आत्मानुभूति
- चित्तवृत्तियों का परिशोधन
- आत्मतेज का ब्रह्मतेज में विलय

ध्यान

ध्यानम् निर्विषयं मनः

ध्यान का मतलब है, मन की उछलकूद बंद।
शान्त और स्वच्छ मन का इष्ट में नियोजन। एक मुद्रा में सम्पूर्ण जाग्रति
यही है ध्यान का विज्ञान

ध्यान के उद्देश्य

- बिखरी हुई चेतना को एक केंद्र पर समेटना
- मन उछलकूद पर नियंत्रण
- असंतुलन को संतुलन में बदलना
- आत्मबोध की भूमिका में जागरण
- इष्ट के साथ एकत्व की अनुभूति
- अतीन्द्रिय क्षमता की अनुभूति
- चेतना की रहस्यमयी परतों का ज्ञान

तन्मयता इतनी प्रगाढ़ करते जाना कि हृदय में
स्वतः इष्ट की मूर्ति का मर्म उद्भासित होने लगे।

ध्यान के उच्चस्तरीय लाभ

- मन की पूरी क्षमता का उपयोग
- मस्तिष्क की तरंगों में परिवर्तन
- कारण शरीर (अन्तःकरण) में शक्ति संचार
- सुषुप्त चक्र जागृत
- प्रकृति के रहस्य उद्घाटित
- दैवी शक्तियाँ आकर्षित
- सूर्य की सूक्ष्म चेतना से सम्पर्क

ध्यान एक मानसिक प्रक्रिया है

जैसे-जैसे तन्मयता बढ़ती जाती है ध्यान सरल होता जाता है।

ध्यान का ऐसा गहरा अभ्यास हो कि वह शोरगुल में भी संभव हो सके।

ध्यान में सविता का दिव्य तेज कषाय कल्मषों को जलाकर भस्म कर देता है।

मंत्र सिद्धि का आधार-तप, त्याग और संयम है।

मंत्र जप में ध्वनियों का उच्चारण तेल धारवत् हो।

ध्यान में आक्रमण करने वाले विचारों को ऐसा समझिए जैसे ये मनोमय कोष से गुजरने वाले यात्री हो

ध्यान के गहरे अभ्यास से सविता के दिव्य गुणों का साधक के जीवन में उतरना ही साधक का सविता को समर्पण है।

आत्म ज्योति का ब्रह्मज्योति में एकीकृत होने का अर्थ है-साधक सविता एक।

आचार्य शर्मा का वेदभाष्य पढ़कर बिनोवा जी नाचे

महात्मा गाँधी अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में रहकर सम्पूर्ण देश के आन्दोलन को गति देने का कार्य करते थे। उस आश्रम को देखने का अवसर मुझे भी मिला। परिसर में एक कक्ष जिसमें आश्रम के दो विद्यार्थी रहते थे। आचार्य विनोबा भावे और आचार्य श्रीराम शर्मा दोनों ही अपनेयुग के कीर्ति स्तम्भ बने। बहुत छोटा सा कक्ष, उसमें बीच में एक छोटा सा पार्टीशन जो दोनों को पुस्तकों के साथ एकाकार करता था। उस परिसर में 9 वर्ष का समय गुजारा। गाँधी जी के आश्रम में जब बाहर से कोई मेहमान आते थे तो वह बताते थे कि और तो सब यहाँ अतिथि, कार्यकर्ता, साथी हो सकते हैं लेकिन विनोबा और श्रीराम विद्यार्थी रूप हैं। दोनों ने उस पुण्य भूमि पर रहकर अनेक भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया। बहुत बड़ी विद्वता मिली।

बाबा विनोवा ने अरबी का ज्ञान रेडियो से किया। कुरान का बहुत अच्छा अनुवाद लिखा। आचार्य श्रीराम शर्मा ने जब वेदों पर भाष्य लिखा तो बाबा ने उन ग्रन्थों को सिर पर रखकर काफी देर तक आत्मविभोर होकर नाच किया। दोनों असली गांधी शिष्य बने। विनोवा जी ने संस्कृत सीखने के लिए अवकाश लिया और ठीक एक वर्ष वहीं रहकर संस्कृत का अध्ययन किया।

आज दोनों विराट महापुरुष हमारे बीच नहीं है लेकिन उनकी वह अकिंचन कुटिया अभी भी साबरमती में हैं।

रमेश भइया
बिनोवा सेवा आश्रम
पो० बरतारा, जि० शाहजहाँपुर (उ०प्र०)

(1413)A

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आचार्यश्री राम शर्मा (परम पूज्य गुरुदेव) का अद्भुत त्याग

ब्रह्मवर्चस शान्तिकुंज, हरिद्वार

दिनांक 11/11/87

आदरणीय श्री रामनरेश जी शुक्ल

अभिवादन ।

आपका कृपा पूर्वक भेजा चेक्वान स्वीकृति पत्र मिला। इसके लिए आपको जो प्रयास करना पड़ा उसके लिए हम लोग कृतज्ञ हैं।

इस स्वीकृति राशि को किसी सार्वजनिक पुण्य प्रयोजन के लिए अर्पित करना है। यदि कोई सरकारी कोष हरिजन सहायता जैसा हो तो उसे प्राथमिकता दें। अन्यथा मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए ही इसे हस्तान्तरित कर दें। इस पत्र को ही इस हेतु आवेदन पत्र मानें।

इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता सेनानियों को रेल सफर आदि की जो सुविधा मिलती है उसे भी प्रदान न करें।

हम लोग सन्यासी की तरह रहते हैं। रोटी, कपड़ा और मकान की सुविधा आश्रम में उपलब्ध है। ऐसी दशा में न हमें, न ही हमारी पत्नी को किसी अनुदान राशि की आवश्यकता पड़ेगी।

आशा है आप यह परिवर्तन अपने दफ्तर में ही करा देंगे।

शुभाकांक्षी

§ श्रीरामशर्मा आचार्य §

विशेष:-

1/ स्वतंत्रता सेनानी प्रमाणपत्र डाक से ही भिजवा दें। समारोह आदि की व्यवस्था करना व्यर्थ है।

2/ श्री जगन प्रसाद रावत ने जो अनुमोदन लिखाकर भेजा था, उसकी एक प्रतिलिपि यहाँ भी चाहिए। उसे देने की कृपा करें।

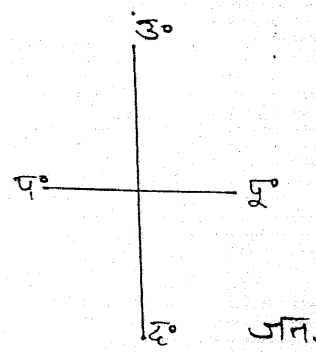

जनजागरण प्रेस
(जयसिंहपुरा)

← वृन्दावन को

गायत्री तपोभूमि
[1]

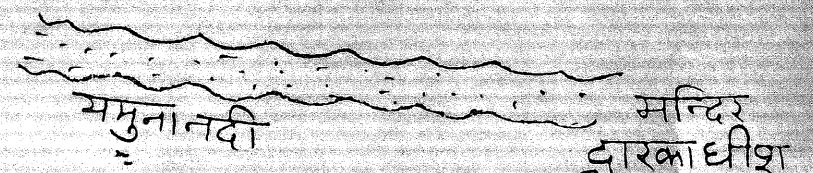

अखण्डज्योति संस्थान
[2]
घीया मंडी

बिरलामन्दिर

← वृन्दावन को

नघुरा

आचार्य श्री राम शर्मा की स्थापनाएँ :-

मार्गदर्शक मानचित्र :

१- गायत्री तपोभूमि मथुरा — युग निर्माण विद्यालय
२- अखण्डज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा — प्रकाशन- युग निर्माण- साहित्य, पत्राचार पाठ्यक्रम

अखण्डज्योति व पं० श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय का प्रकाशन

श्रीकृष्ण जन्मभूमि

(1415)

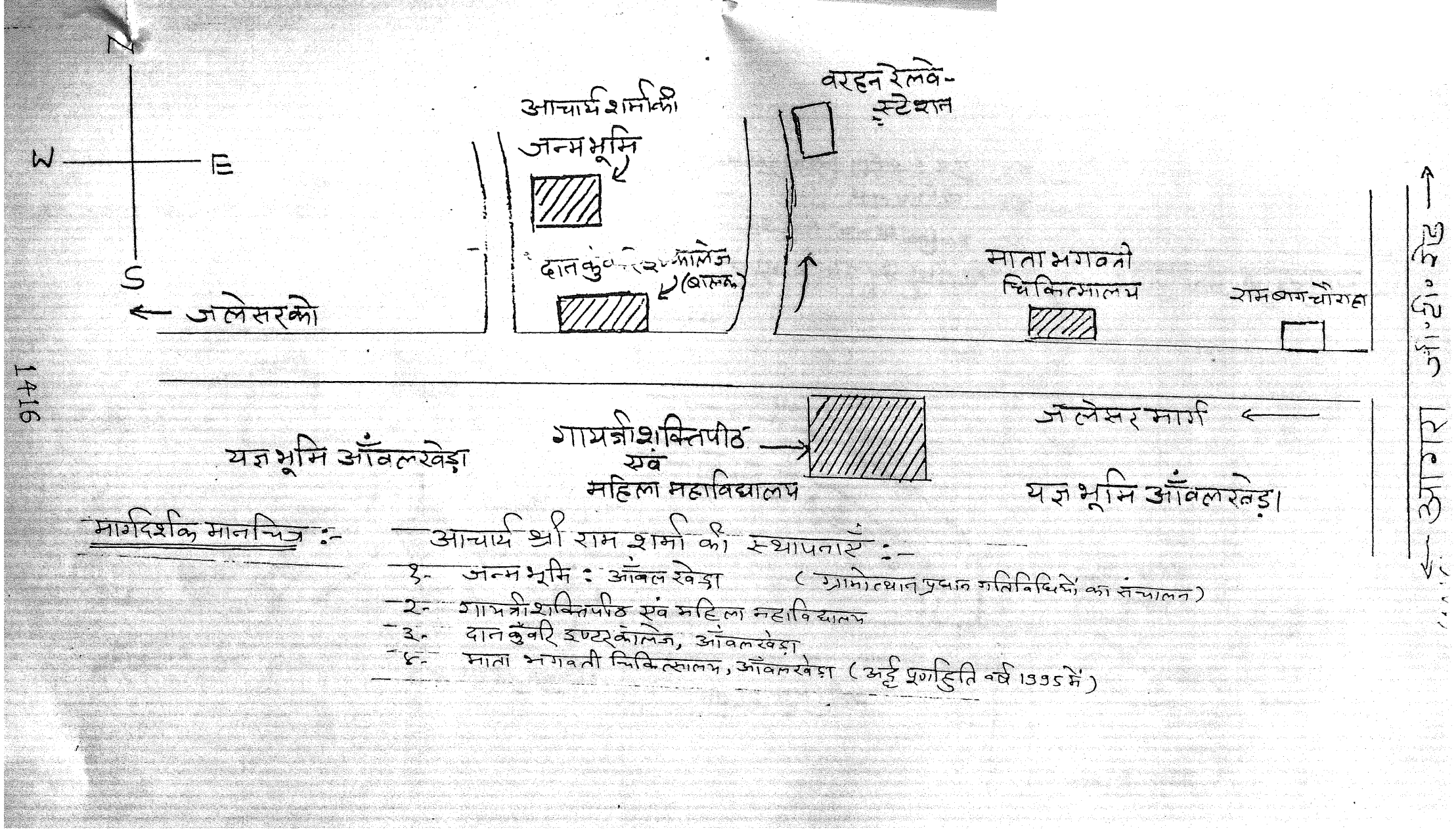

मार्गदर्शक मानचित्र :-

आचार्य श्री राम शर्मा की स्थापनाएँ :-

१. जन्मभूमि : आँवलखेड़ा (ग्रामोत्थान प्रधान गतिविधियों का संचालन)
२. गायत्रीशक्तिपीठ एवं महिला महाविद्यालय
३. दानकुँवरि इण्टर कालेज, आँवलखेड़ा
४. माता भगवती चिकित्सालय, आँवलखेड़ा (अर्द्ध पूर्णाहुति वर्ष 1995 में)

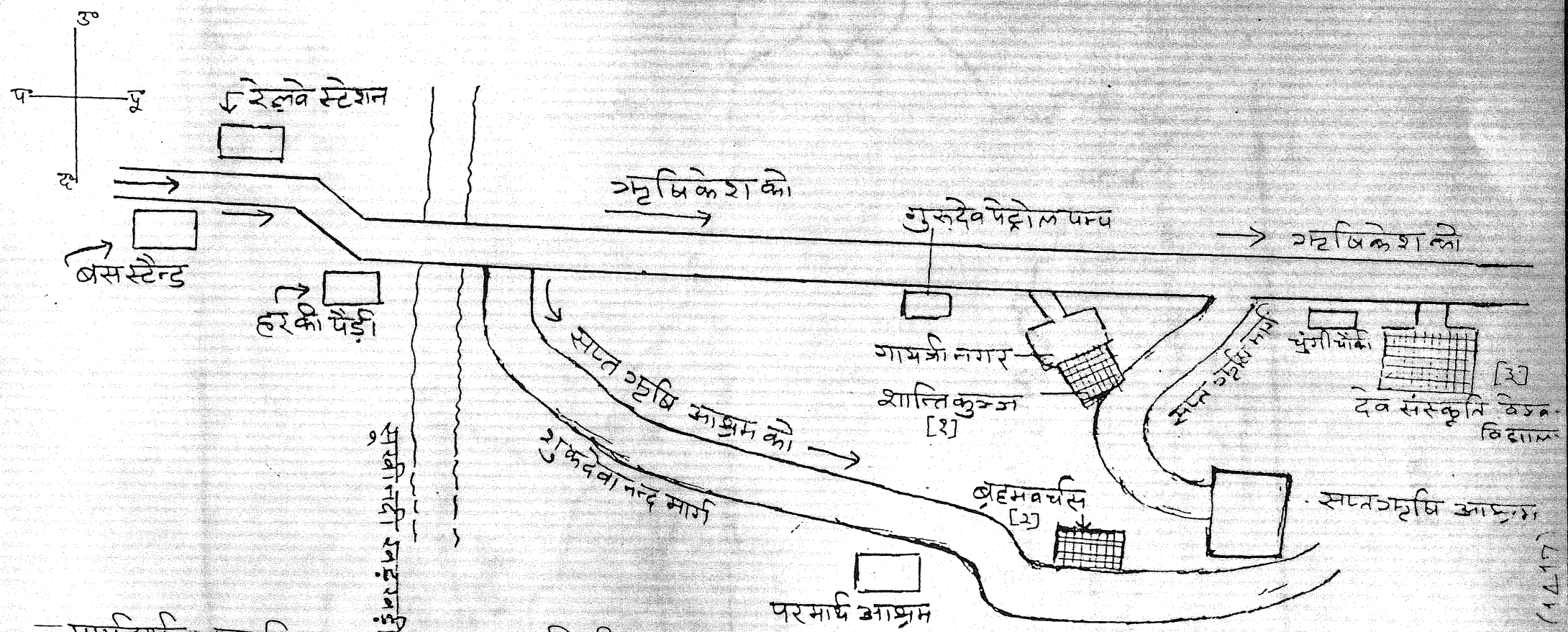

मार्गदर्शक मानचित्र :

आचार्य श्रीराम शर्मा की स्थापनाएँ :-

१- शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार — सापनात्मक, रचनात्मक सम्पर्क - परामर्श, संगठन एवं विविध-सत्रों का आयोजन

२- ब्रह्मवर्चस — अध्यात्म विज्ञान का समन्वय एवं शोध कार्य

३- देव संस्कृति विश्वविद्यालय - जीवन विद्या का आलोक केन्द्र

उत्तर प्रदेश
एवं
उत्तरांचल

आचार्य श्री राम शर्मा की पाँचों महत्त्वपूर्ण स्थापनाओं को दर्शाता

मान चित्र

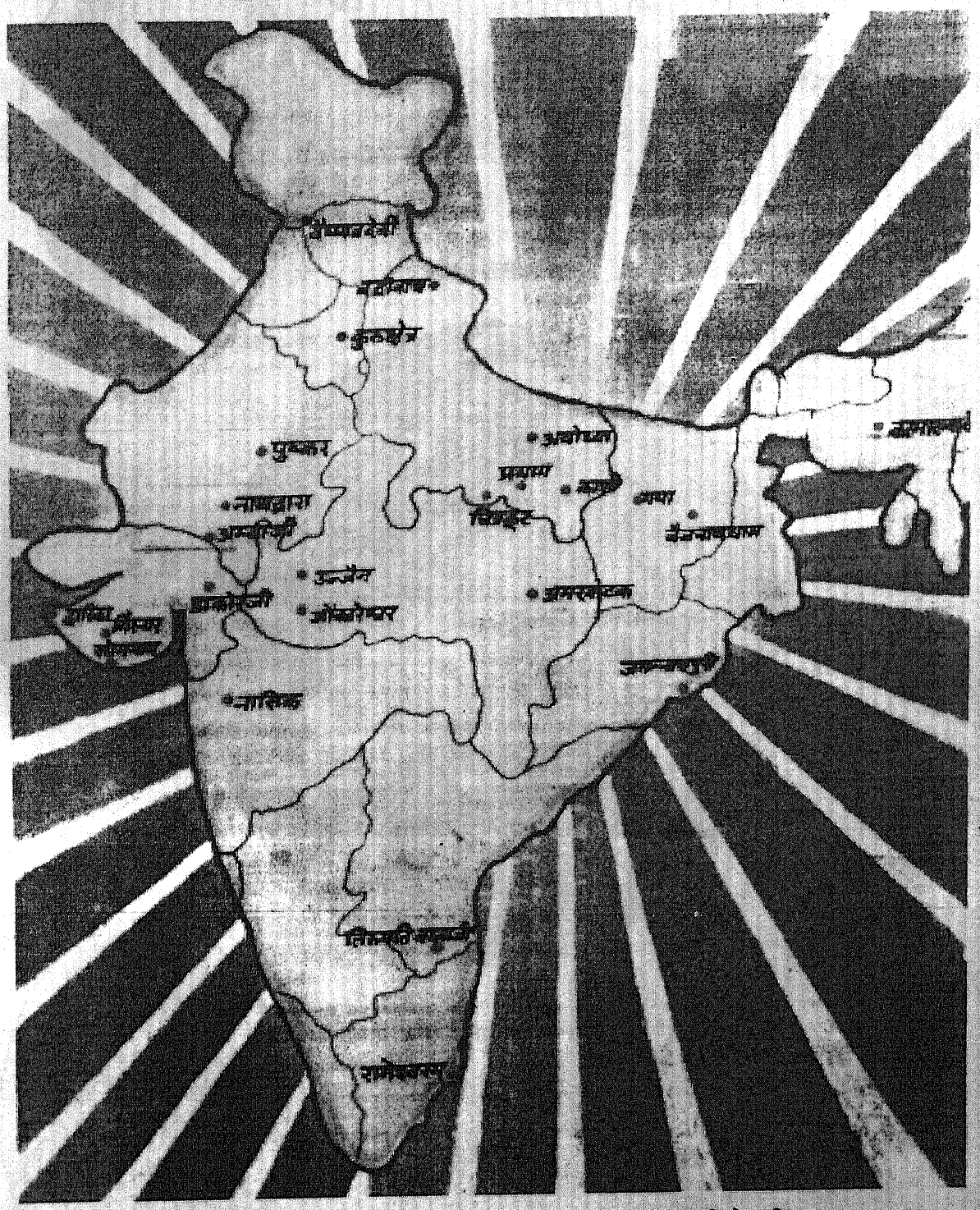

आचार्य शर्मा द्वारा प्रारम्भ में २४ गायत्री शक्ति पीठों की
राष्ट्र के प्रमुख सॉस्कृतिक स्थलों पर स्थापना
(अब इनकी संख्या विश्व सहित सम्पूर्ण भारत वर्ष में ४००० के ऊपर है)

श्री अरविन्द

समर्थ रामदास

स्वामी विवेकानन्द

सन्त कबीर

रामकृष्ण परमहंस

आचार्य शर्मा के पूर्व जन्मों की झाँकी

स्वामी दयानन्द

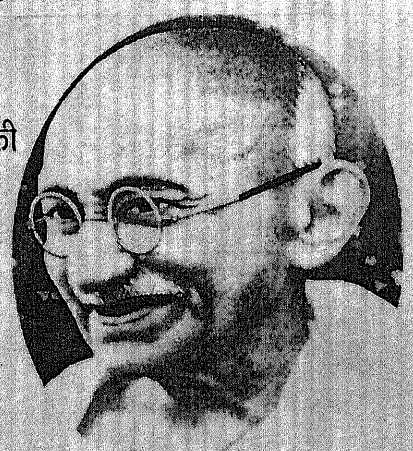

महात्मा गाँधी

सन्त परम्परा एवं आचार्य श्रीराम शर्मा

(1420)

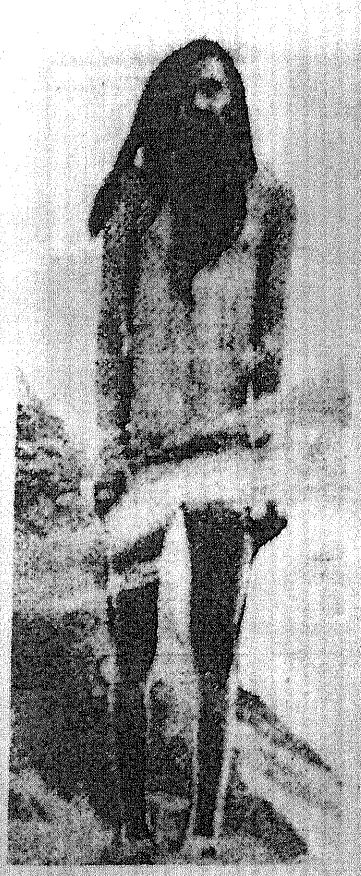

आचार्य शर्मा की गुरु सत्ता
स्वामी सर्वेश्वरानन्द महाराज

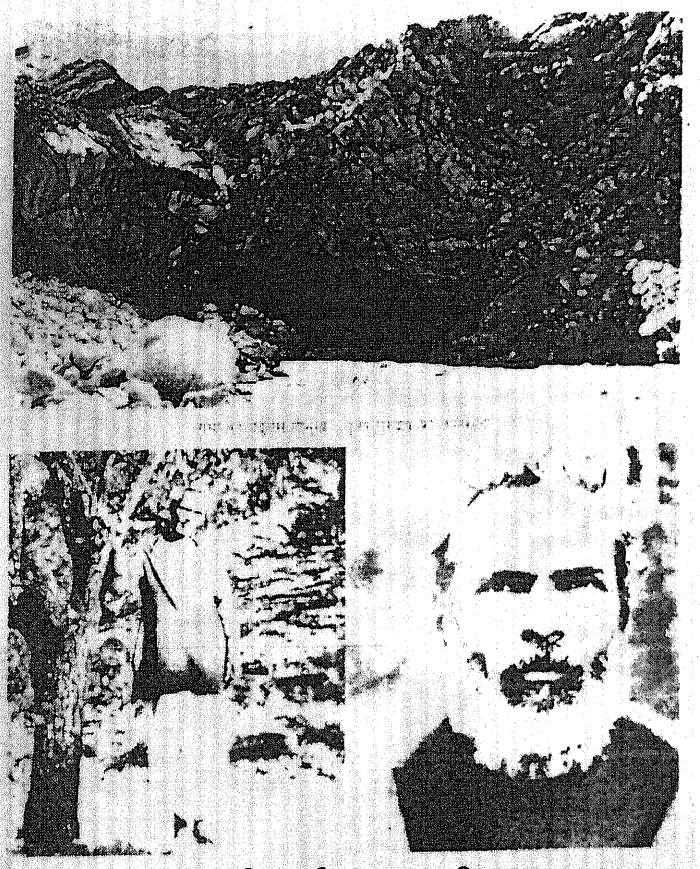

आचार्य शर्मा का तपस्वी स्वरूप

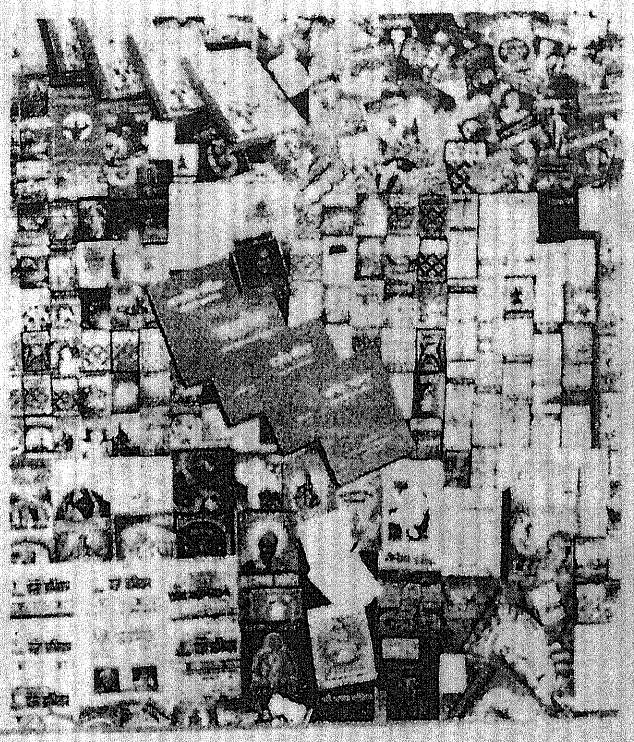

आचार्य शर्मा का स्वरूप उनके साहित्य में छिपा है

आचार्य शर्मा के सम्मान में पूर्व महामहिम राष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा द्वारा डाक टिकट का विमोचन

आचार्य शर्मा का श्रीराम 'मत्त' के रूप में स्वतन्त्रता संग्राम में अनुपम योगदान

आचार्य शर्मा की जन्म भूमि ऑवलखेड़ा (आगरा) में पूर्व प्रधानमन्त्री माननीय पी.वी.नरसिंहा राव द्वारा कीर्ति स्तम्भ का लोकार्पण

गायत्री तपो भूमि, मथुरा

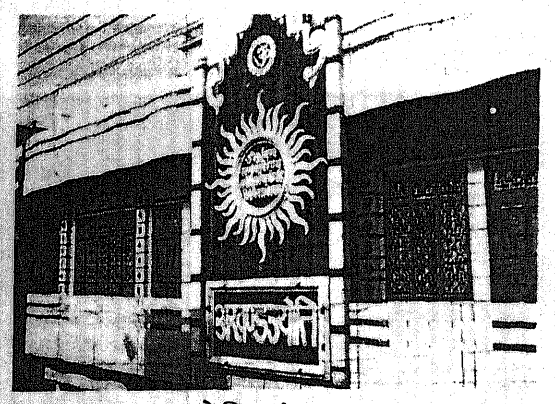

अखण्ड ज्योति संस्थान,मथुरा

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान,हरिद्वार

शान्तिकुंज,गायत्री तीर्थ, हरिद्वार

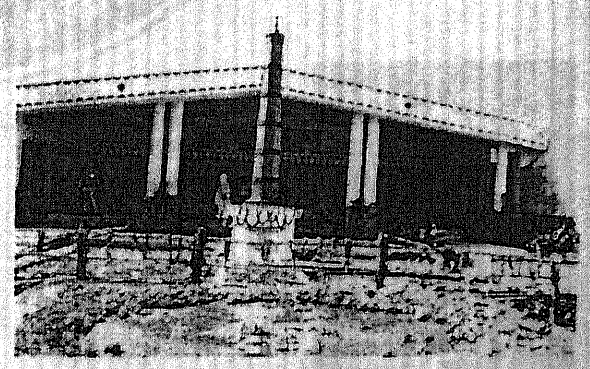

जन्मभूमि ऑवलखेड़ा,आगरा

आचार्य शर्मा की संस्थापनाएँ-

समूह मन के जागरण की साधना

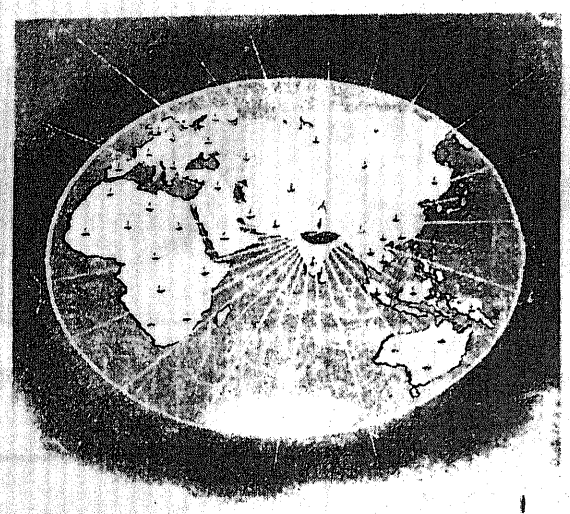

वर्ष १९८८ व उसके बाद सारे भारत व विश्व भर में दीप यज्ञों के
जन-जन तक विस्तारका आचार्य शर्मा द्वारा क्रियान्वयन

आचार्य शर्मा द्वारा सर्वधर्म समभाव के अभिनव प्रयास

आचार्य शर्मा का शिवत्व, नीति और सदाचार की स्थापना वाला महाकाल स्वरूप

आचार्य श्री राम के वीर हनुमान
स्मृति शेष पं० लीलापत शर्मा
पूर्व व्यवस्थापक-गायत्री तपो भूमि
मथुरा

डा० प्रणव पण्ड्या
निदेशक- ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान
कुलाधिपति- देव संस्कृति विश्व विद्यालय
शान्ति कुंज, हरिद्वार

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या
प्रमुख- अखिल विश्व गायत्री परिवार
शान्तिकुंज हरिद्वार

श्री मृत्युंजय शर्मा
व्यवस्थापक, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

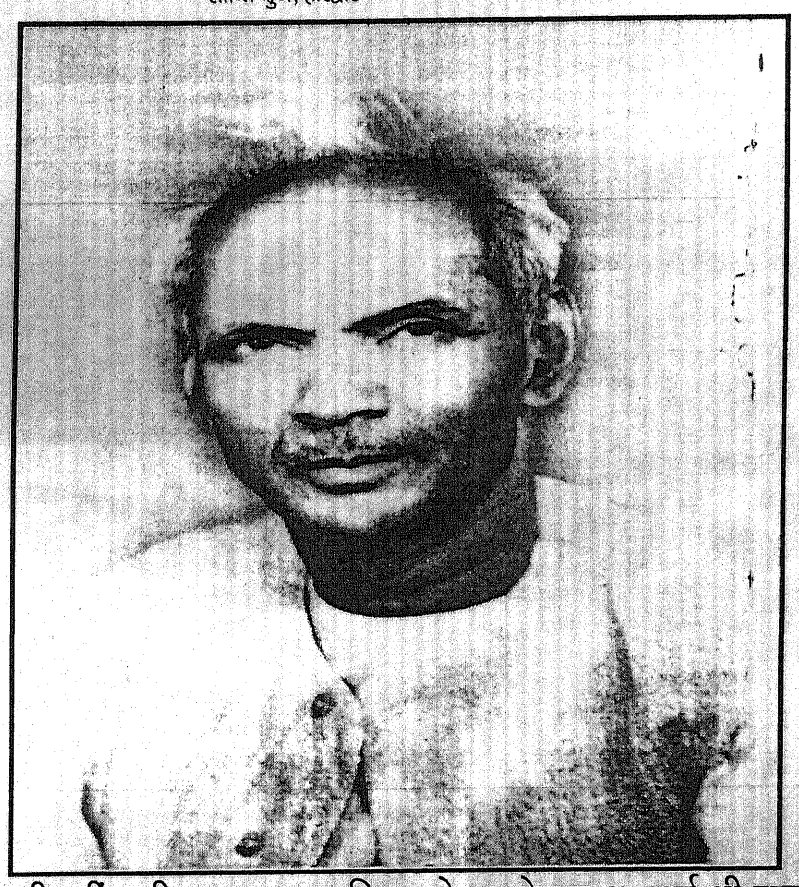

इक्कीसवीं सदी- उज्जवल भविष्य के उद्घोषक आचार्य श्री राम शर्मा

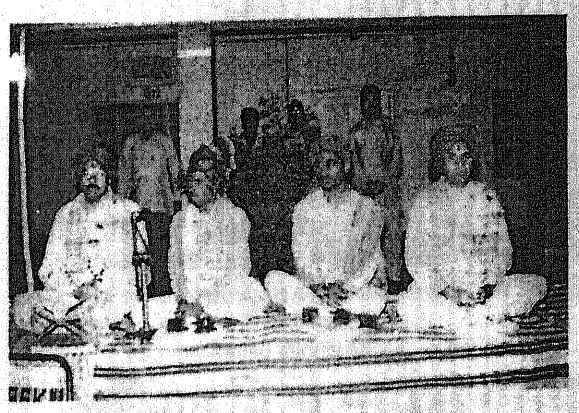

प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का संचालन करते हुए
पं० लक्ष्मण लाल त्रिपाठी (शोध कर्ता)
(राजस्थान प्रान्त)

कार्यकर्ताओं को संगठनात्मक प्रशिक्षण प्रदान करते हुए
शान्ति कुंज हरिद्वार के
वरिष्ठ प्रतिनिधि श्री वीरेश्वर उपाध्याय

आचार्य शर्मा द्वारा लिखित श्री मद् प्रज्ञा पुराण कथा आयोजन

शान्ति कुंज हरिद्वार के तत्वावधान में अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित
भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का पुरस्कार वितरण एवं सत्कार्य अभिनन्दन समारोह
स्थान- गायत्री शक्ति पीठ , राठ

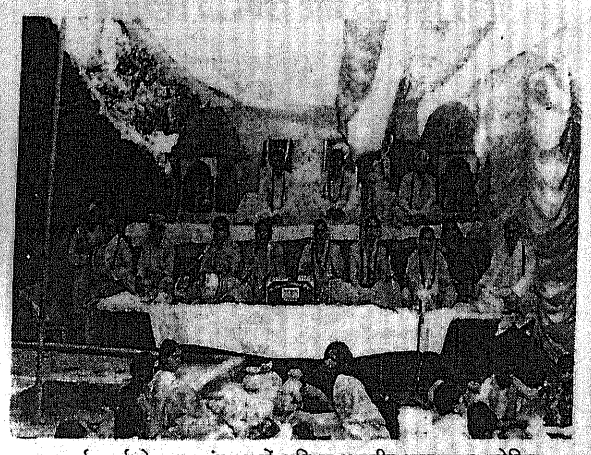

आचार्य शर्मा के सूक्ष्म संरक्षण में अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित
विराट महिला जागृति सम्मेलन

शान्ति कुंज हरिद्वार के तत्वावधान में देव संस्कृति दिग्विजय अभियान
के अन्तर्गत मांट्रियल कनाडा में आयोजित अश्वमेध यज्ञ

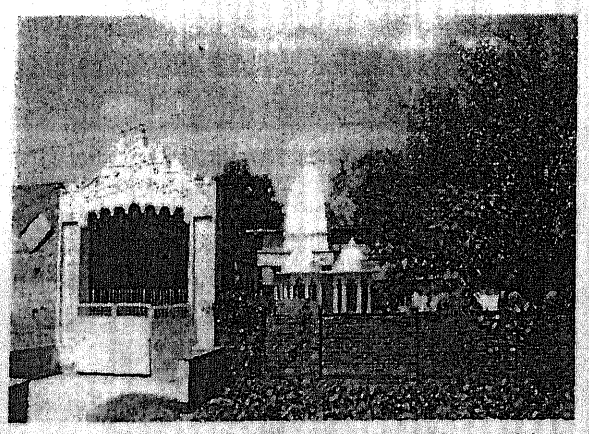

आचार्य शर्मा द्वारा अखिल विश्व स्तर पर गायत्री शक्ति पीठो - प्रज्ञा पीठों की
स्थापना
फोटो गायत्री शक्ति पीठ राठ(हमीरपुर) उ०प्र०

गायत्री परिवार कला मंच द्वारा मंचित 'प्रज्ञावतार' नाटक .

अखिल विश्व गायत्री परिवार की उल्लेखनीय गतिविधियाँ

भगीरथ परम्परा और आचार्य शर्मा

बुद्ध परम्परा और आचार्य शर्मा

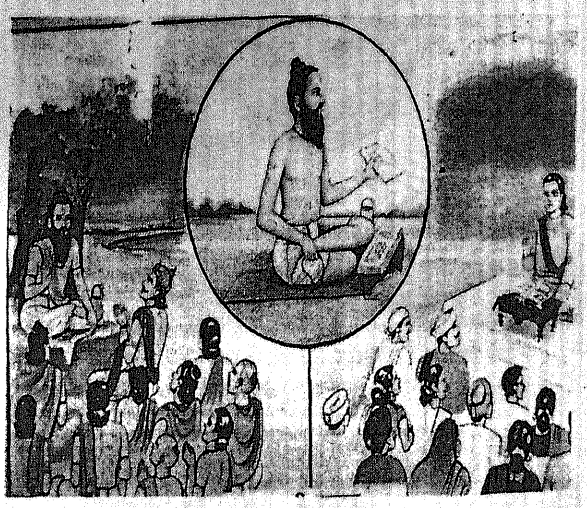

तुलसी परम्परा और आचार्य शर्मा

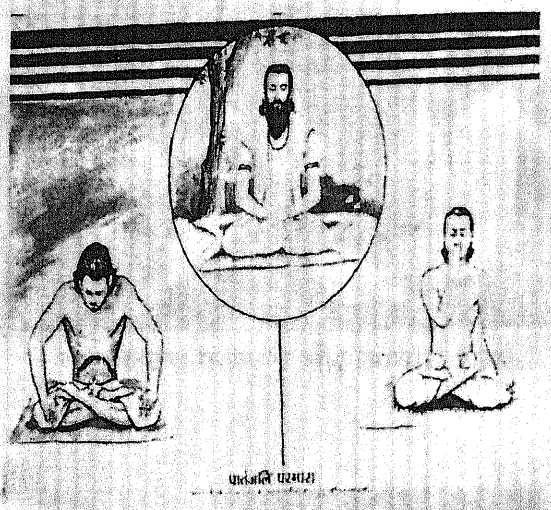

पातंजलि परम्परा और आचार्य शर्मा

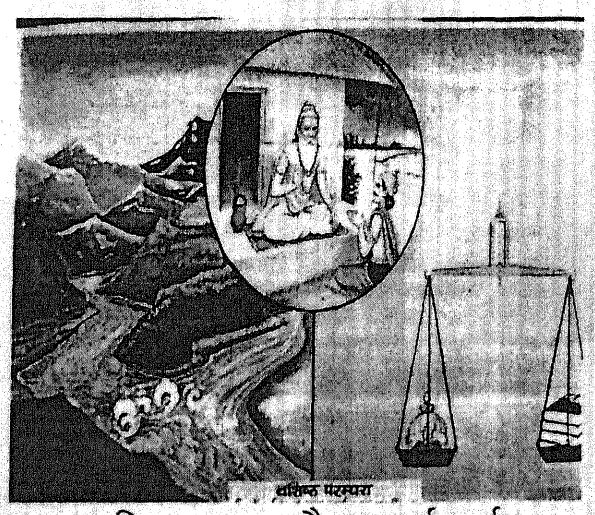

वशिष्ठ परम्परा और आचार्य शर्मा

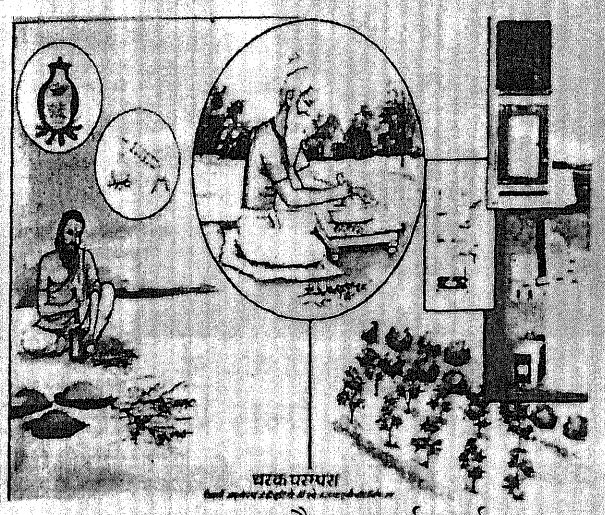

चरक परम्परा और आचार्य शर्मा

ऋषि परम्परा और आचार्य शर्मा

आचार्य शर्मा द्वारा समस्त ऋषियों की दिशा धारा एवं कार्य पद्धति काएक ही स्थान पर समन्वय

नारद परम्परा और आचार्य शर्मा

परशुराम परम्परा और आचार्य शर्मा

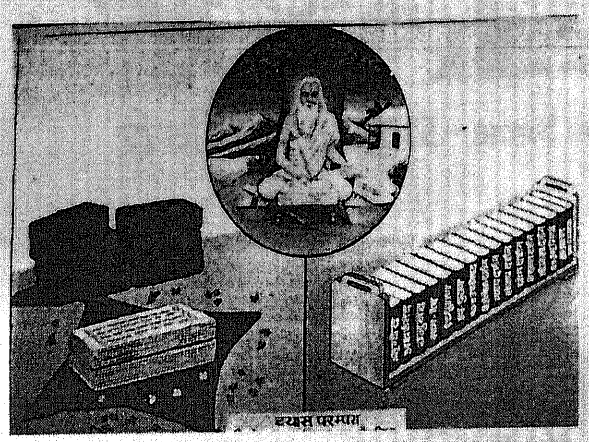

व्यास परम्परा और आचार्य शर्मा

याज्ञवल्क्य परम्परा और आचार्य शर्मा

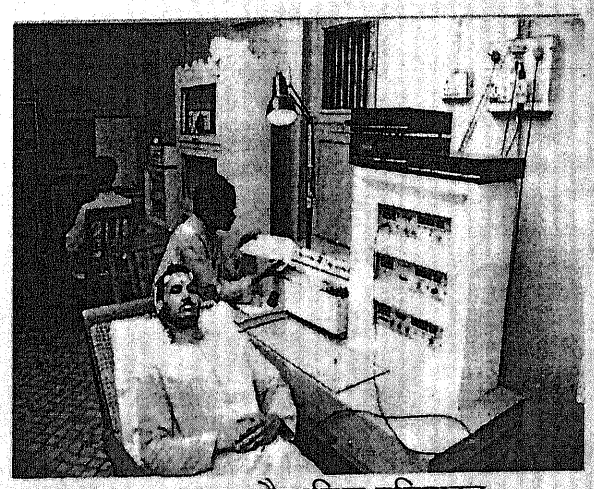

अध्यात्म का वैज्ञानिक प्रतिपादन

वनौषधि विज्ञान पर प्रयोग

ऋषि परम्परा और आचार्य शर्मा

आचार्य शर्मा द्वारा समस्त ऋषियों की दिशा धारा एवं कार्य पद्धति काएक ही स्थान पर समन्वय

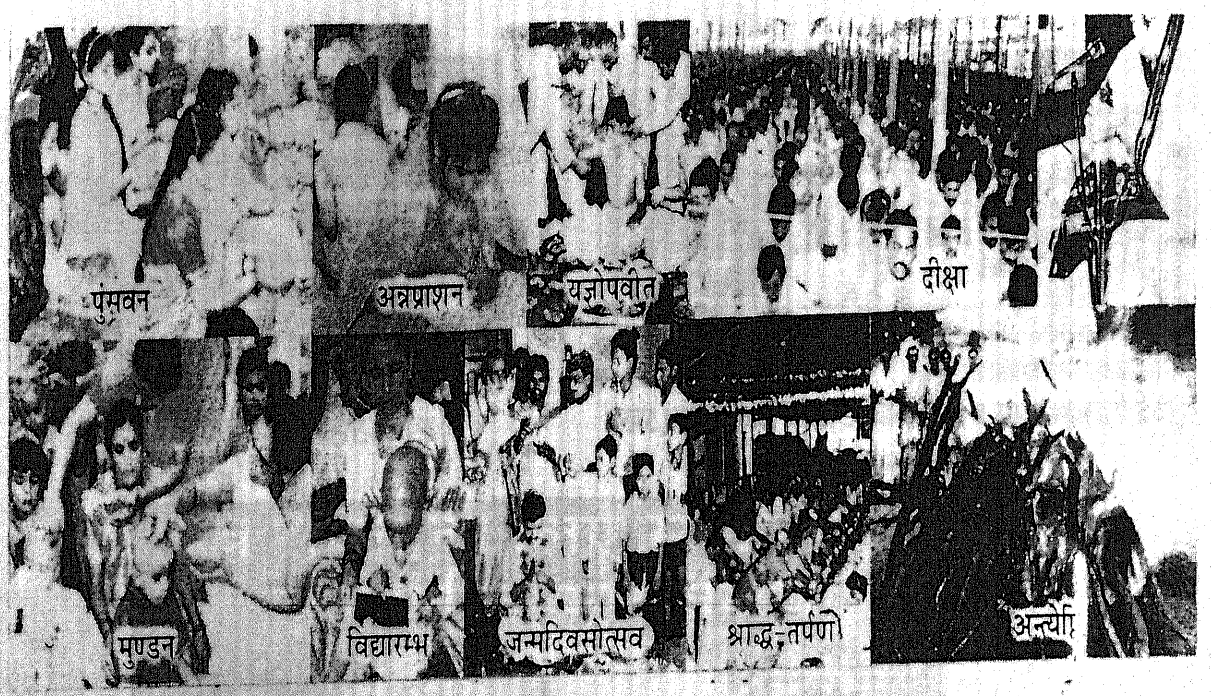

ये जीवन्त संस्कार- आचार्य शर्मा द्वारा पुनर्जीवित की गयी संस्कार पर रा

सामूहिक विवाह संस्कारों के अभिनव प्रयोग

आचार्य शर्मा का महाप्रयाण

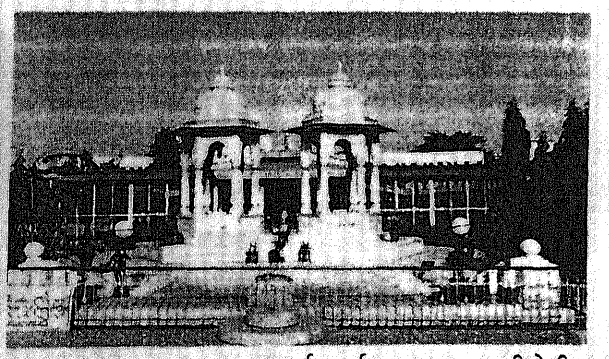

प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा(आचार्य शर्मा व माता भगवती देवी) के स्मारक

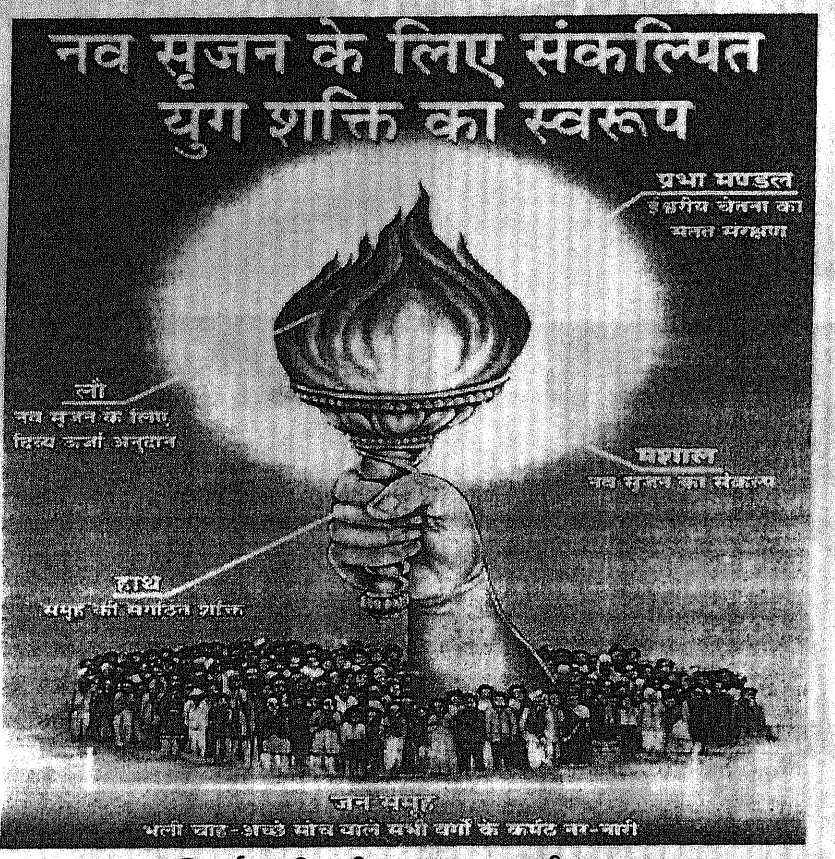

युग परिवर्तन की प्रतीक ज्ञान यज्ञ की लाल मशाल

देवसस्कृति दिग्विजय-आश्वमेधिक अभियान

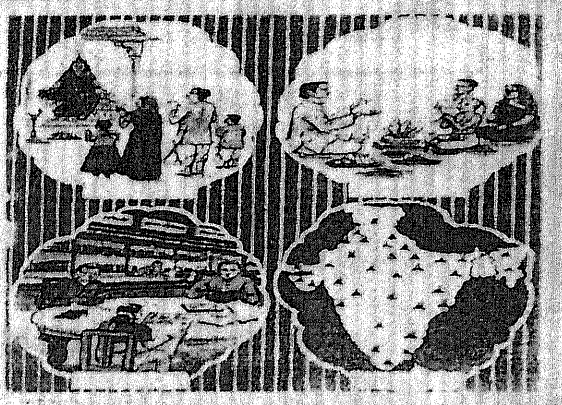

आश्वमेधिक अनुयाज क्रम में उपासना, संस्कार स्वाध्याय एवं राष्ट्र सेवा के कार्यक्रम

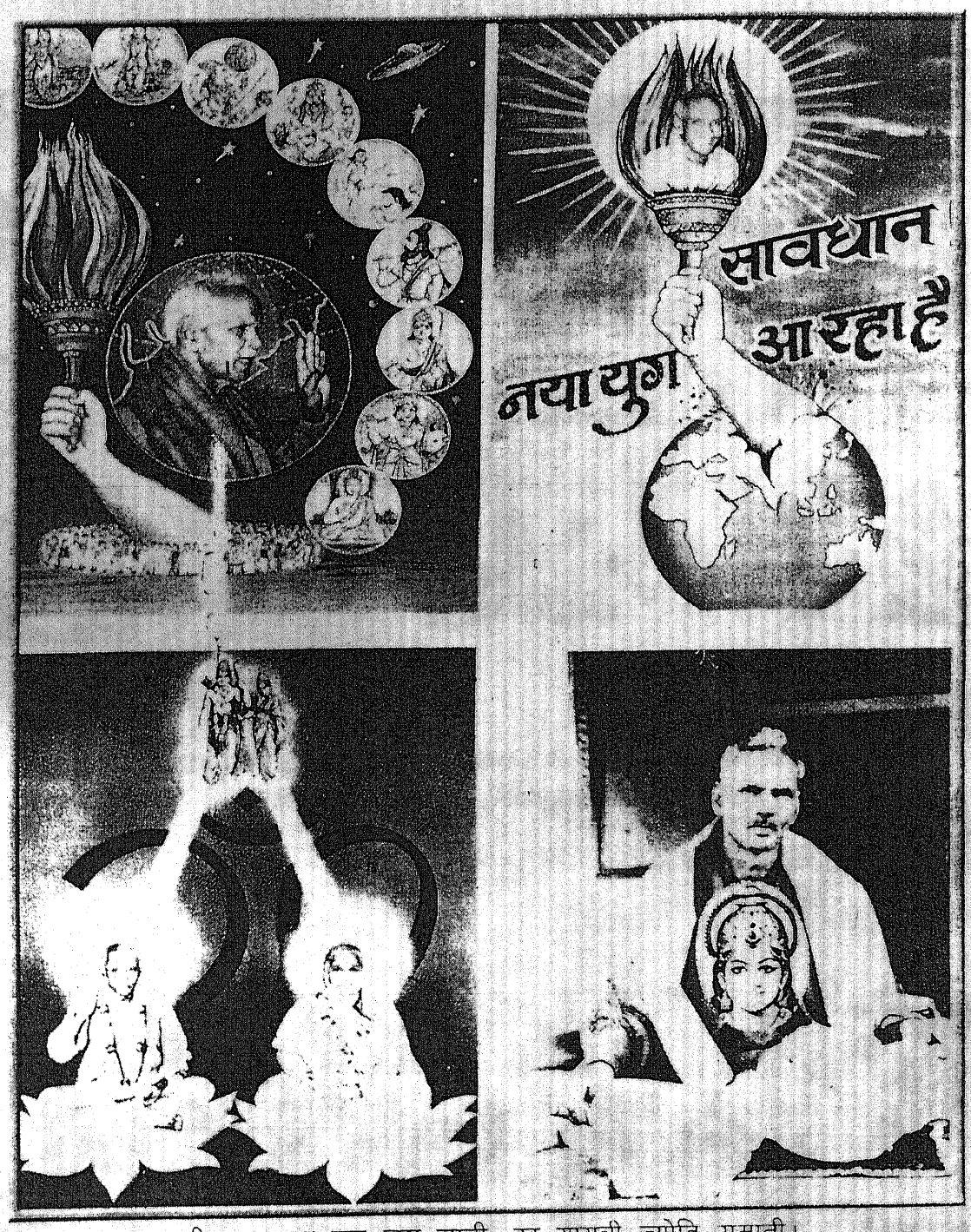

सीय राममय सब जग जानी, उर गायत्री ज्योति समानी।

जिसने भक्त जैसी श्रद्धा, ब्राह्मण जैसी प्रज्ञा और साधु जैसी परमार्थ-निष्ठा अर्जित कर ली, समझना चाहिए उसे सामर्थ्य और संपन्नता का स्रोत हस्तगत हो गया।

आचार्य शर्मा का बहुआयामी व्यक्तित्व एवं अवतारी स्वरूप

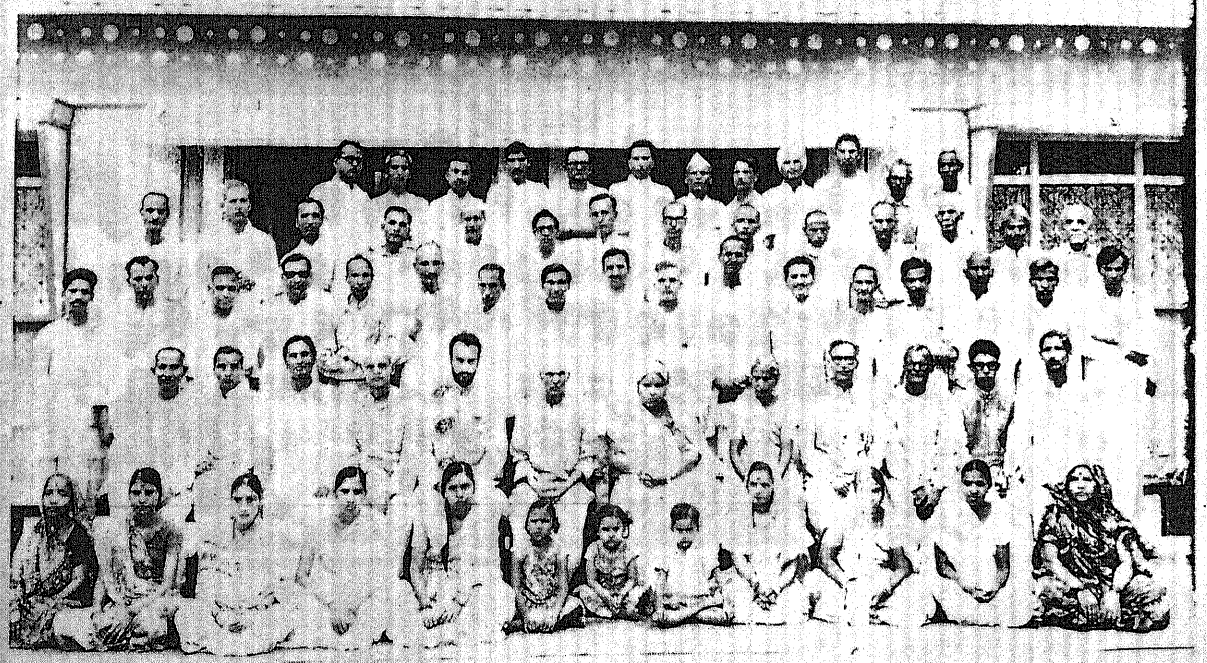

आचार्य शर्मा द्वारा चलाये गये लेखन सत्रो की श्रृंखला लेखन सत्र -द्वितीय
शान्ति कुंज हरिद्वार , १०जून से २४ जून १९७४

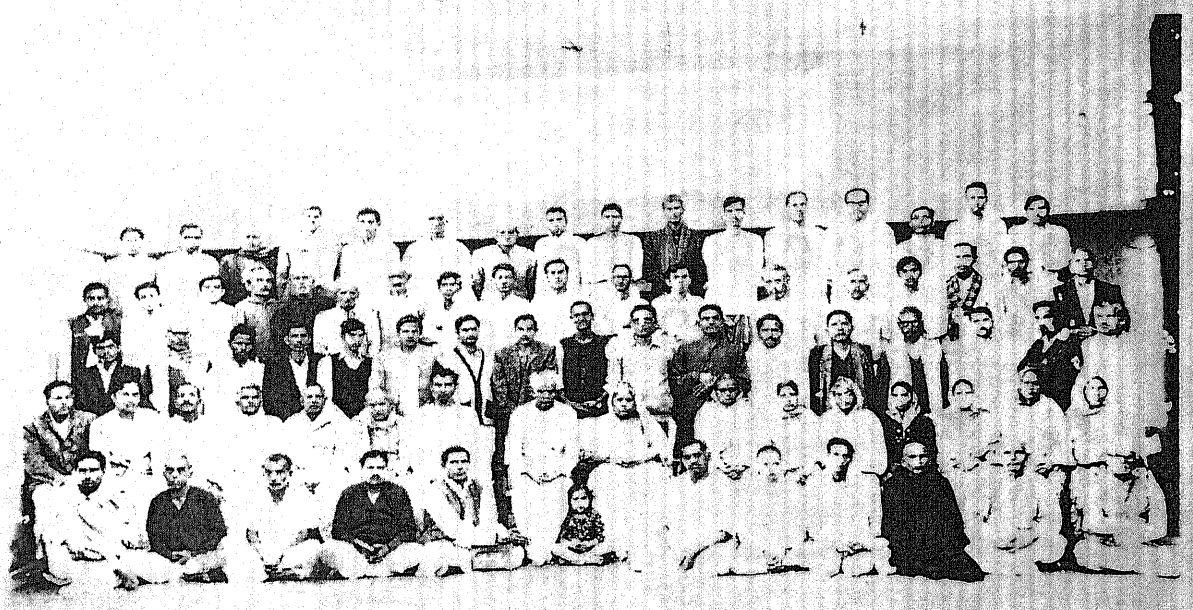

४८ वाँ प्राण प्रत्यावर्तन शिविर , १८.११.७३ से २२.११.७३

आचार्य शर्मा द्वारा काव्य सृजन को प्रोत्साहन देने वाली गतिविधियाँ

शान्ति कुंज में चलाये गये विभिन्न सत्रो की श्रृंखला

(1432)

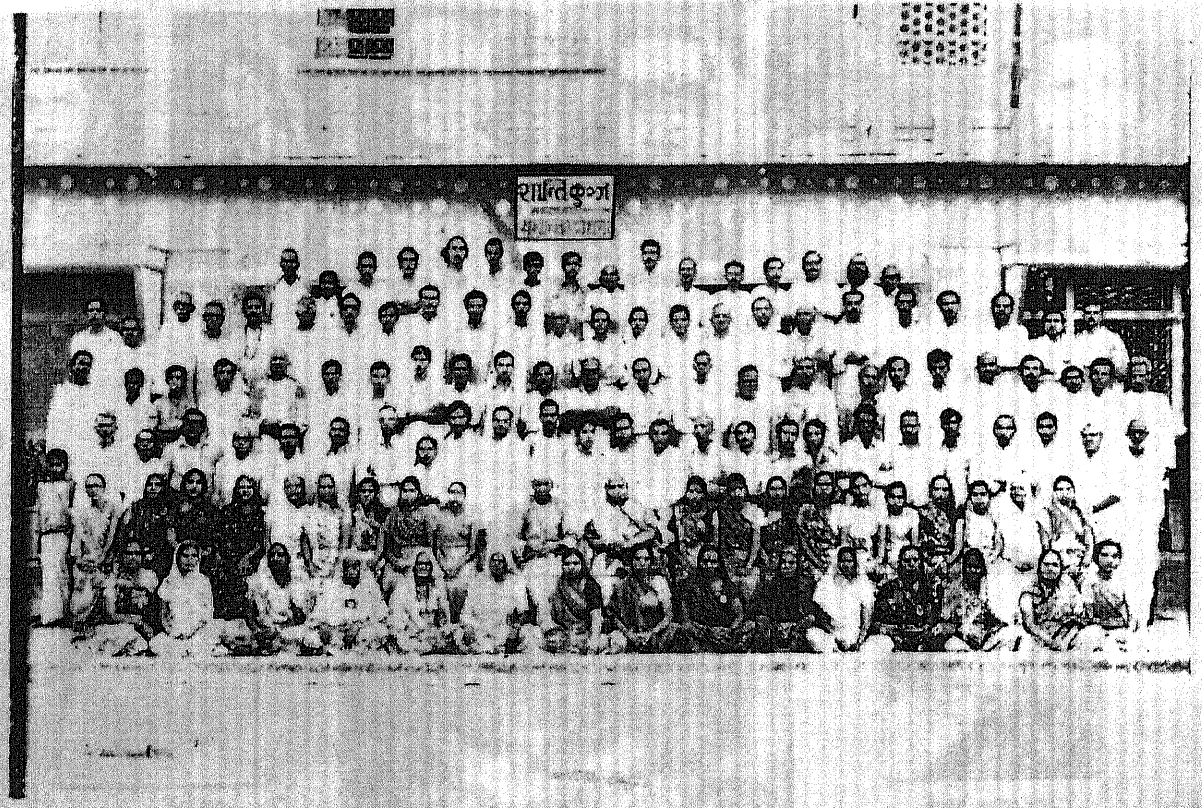

आचार्य शर्मा द्वारा लगाया गया साधना शिविर- दि० ३१ मई ७६ से ९ जून ७६

प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर दि० १अगस्त से ७ अगस्त १९९६

आचार्य शर्मा द्वारा काव्य सृजन को प्रोत्साहन देने वाली गतिविधियाँ

शान्ति कुंज में चलाये गये विभिन्न सत्रो की श्रृंखला

(1433)

श्री शिवशंकर मिश्र
(युवावस्था)

श्रीमती विद्यावती मिश्र

श्रीबाबूलाल जैन 'जलज'

डा० त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल

श्रीबलराम सिंह परिहार

डा० हरगोविन्द सिंह

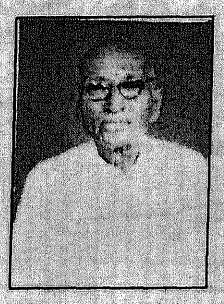

श्री लक्ष्मनसिंह भदौरिया 'सौमित्र'

शोध कर्ता का आचार्य शर्मा के प्रति भाव भरा समर्पण

श्रीमती माया वर्मा

डा० रामस्वरूप खरे

श्री मंगल विजय 'विजयवर्गीय'

श्री वीरेश्वर उपाध्याय

श्री शचीन्द्र भटनागर

श्री जितेन्द्र रघुवंशी

डा० जमुनाप्रसाद बडेरिया

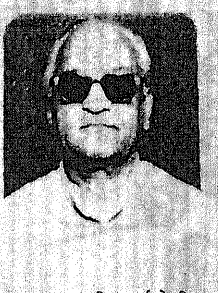

डा० आर०पी०कर्मयोगी

श्री लक्ष्मीनारायण 'कमलेश'

आचार्य शर्मा के जीवन दर्शन से प्रभावित प्रमुख समकालीन हिन्दी कवि

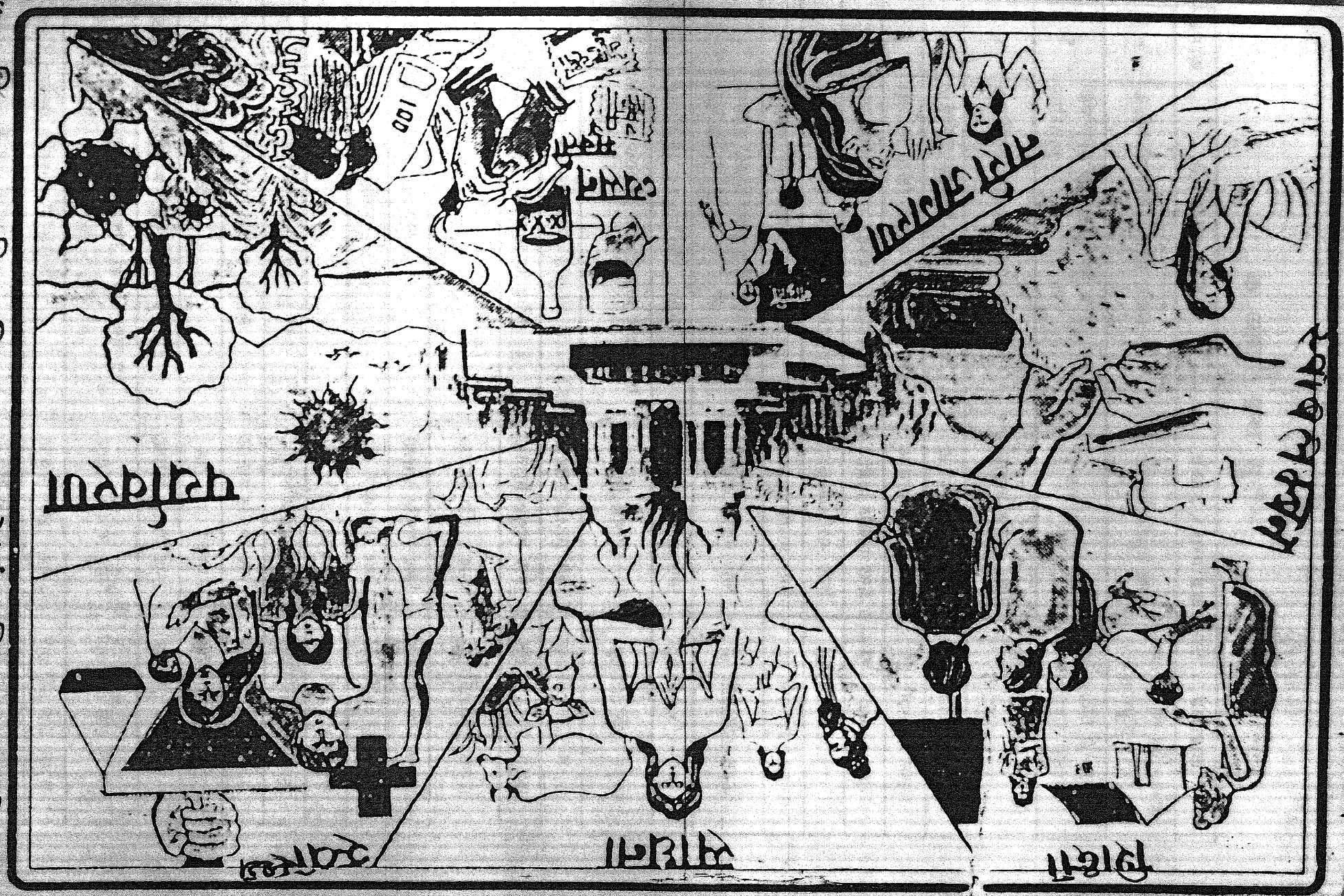

"श्रीनिकुञ्ज, हरिद्वार के तत्वावधान में संचालित सप्त आन्दोलन"

(1435)

क आधार ग्रन्थ सूची:–

कमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखाक / सम्पादक	प्रकाशक
1	असीम पर निर्भर ससीम जीवन	आचार्य श्रीराम शर्मा	अ0 ज्योति प्रे0 गायत्री तपोभूमि मथुरा
2	अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व	आचार्य श्रीराम शर्मा	अ0 ज्योति प्रे0 गायत्री तपोभूमि मथुरा
3	अतीन्द्रिय क्षमताओं की पृष्ठभूमि	आचार्य श्रीराम शर्मा	अ0 ज्योति प्रे0 गायत्री तपोभूमि मथुरा
4	अतीन्द्रिय सामर्थ्य–संयोग नहीं तथ्य	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
5	अध्यात्म ऊर्जा की प्रकटीकरण की साधना	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
6	अध्यात्मवादी मनः शास्त्र की उपयोगिता	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
7	अध्यात्म की आधारशिला मन की स्वच्छता	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
8	अध्यात्मपरक शिक्षा के मूलभूत आधार	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
9	अध्यात्म अर्थात् उत्कृष्ट चिन्तन, आदर्श कर्त्तव्य	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
10	अवतार का प्रयोजन और स्वरूप	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
11	अध्यात्म क्या था, क्या हो गया, क्या होना चाहिए?	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
12	अज्ञान के बन्धन काटें, उन्मुक्त जीवन जिएँ	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
13	अमृत–पारस–कल्पवृक्ष की प्राप्ति	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
14	अन्तरंग और बहिरंग के परिष्कार की साधना	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
15	अध्यात्मवाद ही क्यों?	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
16	अमृत कलश भाग–1	पं0 लीलापति शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
17	अमृत कलश भाग–2	पं0 लीलपति शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
18	अध्यात्मवादी भौतिकता अपनाई जाय	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
19	अनेक समस्याओं का एक ही हल	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
20	अध्यात्म एवं विज्ञान	डा0 प्रणव पंड्या	यु0 नि0 यो0, मथुरा
21	अणु में विभु और गागर में सागर	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
22	असामान्य एवं विलक्षण, किन्तु सम्भव एवं सुलभ	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
23	आत्मा न नर है, न नारी है	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
24	आत्मा वा अरे ज्ञातव्यः	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
25	आनन्द की गंगोत्री अपने अन्तराल में	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा

कमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
26	आसन–प्राणायाम से आधि व्याधि निवारण	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
27	असंयम बनाम आत्मघात	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
28	आयुर्वेद का प्राण–वनौषधि विज्ञान	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
29	आरोग्य समस्यायें और समाधान	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
30	अक्षुण्ण स्वास्थ्य प्राप्ति हेतु शाश्वत राजमार्ग	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
31	आर्थिक स्वाबलम्बन	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
32	आधी जनशक्ति अपंग न रहे	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
33	आन्तरिक उल्लास का विकास	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
34	आगे बढ़ने की तैयारी	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
35	आत्मा से परमात्मा	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
36	अभिभावकों व सन्तनों के बीच भावनात्मक आदान–प्रदान	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
37	अर्थानुशासन	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
38	अनाचार से कैसे निपटें	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
39	अन्ध विश्वास से लाभ कुछ नहीं हानि अपार	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
40	अवांछनीय प्रचलनों को उलटने की आवश्यकता	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
41	अध्यात्म विद्या का प्रवेश द्वार	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
42	अध्यात्म दृष्टिकोण एवं अनन्त आत्मबल	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
43	आत्मीयता का माधुर्य एवं आनन्द	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
44	आस्तिकता की उपयोगिता–आवश्यकता	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
45	आत्मा–परमात्मा का मिलन–संयोग	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
46	अध्यात्म क्या था? क्या होगया? क्या होना चाहिए?	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
47	अपूर्णता से पूर्णता की ओर	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
48	आत्मा की पुकार अनसुनी न करें	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
49	अज्ञान के बंधन काटें, उन्मुक्त जीवन जिएं	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
50	अध्यात्मवाद ही क्यों?	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखाक / संस्थापक	प्रकाशक
51	आत्म विकास का राज मार्ग	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
52	आन्तरिक कायाकल्प का सुनिश्चत विधान	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
53	अन्तंरग जीवन का देवासरु संग्राम	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
54	अपूर्णता से पूर्णता की ओर	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
55	अपनी राह स्वयं बनाने बाले असामान्य व्यक्तित्व	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
56	आत्मा और परमात्मा का मिलन–संयोग	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0, मथुरा
57	आत्मोत्कर्ष का साधना मार्ग	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
58	आत्मा की पुकार अनसुनी न करें	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
59	आस्तिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
60	आस्तिकता की दार्शनिक और वैज्ञानिक पृष्ठभूमि	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
61	आत्मशक्ति से युग शक्ति का उद्भव	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
62	आध्यात्मिक काम विज्ञान	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
63	आदर्श को लोक व्यवहार में उतारें	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
64	आइए, इन समस्याओं का हल ढूंढें	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
65	आध्यात्मिकता व्यवहार में उतारें	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
66	आध्यात्मिक साम्यवाद	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
67	आध्यात्मिक मान्यताओं का वैज्ञानिक प्रतिपादन **(शोधग्रन्थ)**	डा0 श्री मती उषा खण्डेलवाल	
68	आध्यात्मिक कान्ति	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
69	आस्तिकताः मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
70	आस्तिकवाद–तथ्य एवं सत्य	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
72	आसान और प्राणायाम	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
73	अनाचार से कैसे निपटें	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
74	आद्यशक्ति गायत्री की समर्थ साधना	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज हरिद्वार
75	आन्तरिक कायाल्प का सरल किन्तु सुनिश्चित विधान	ब्रह्मवर्चस	शान्तिकुन्ज हरिद्वार
76	इक्कीसवीं सदी के लिए हमें क्या करना होगा	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज हरिद्वार
77	इक्कीसवी सदी का गगावतरण	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज हरिद्वार
78	इक्कीसवी सदी बनाम उज्जवल भविष्य भाग–1	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज हरिद्वार

कमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / संस्थापक	प्रकाशक
79	इक्कीसवीं सदी बनाम उज्जवल भविष्य भाग–2	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्ति कुन्ज हरिद्वार
80	इक्कीसवीं सदी की मॉग युग नेतृत्व	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्ति कुन्ज हरिद्वार
81	इक्कीसवीं सदी–नारी सदी (वाड्.मय क0 62)	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
82	ईश्वर और उसकी अनुभूति	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
83	ईश्वर का विराट दर्शन	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
84	ईश्वर का विराट स्वरूप	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
85	ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियॉ (वाड्.मय 56)	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
86	ईश्वर कौन है? कहॉ है? कैसा है?–	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
87	ईश्वर ज्वाला है आत्मा चिन्गारी	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा88
88	ईश्वर प्रेम अर्थात् सद्भावना मुक्त संवंदेना	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा89
89	ईश्वर और उसकी प्राप्ति	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा90
90	ईश्वरीय न्याय	पं0 श्री रामशर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा91
91	उपासना का तत्व दर्शन और स्वरूप	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा92
92	उषासना के तीन चरण–जप, तप और ध्यान	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा93
93	उत्कृष्ट जीवन की कलाकारिता	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा94
94	उपासना–समर्पण योग	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान95 मथुरा96
95	एक नाव में बैठे हम सब	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 97मथुरा
96	एक ही समसया, एक ही समाधान	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 म98थुरा
97	एक समानान्तर शिक्षा तंत्र	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 म99थुरा
98	एक सत्य के दो अन्वेषकः धर्म और विज्ञान	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुर100
99	ऋषि चिन्तन	डा0 पणव पण्ड्या	यु0 नि0 यो0 मथुर
100	ऋषि चिन्तन के सान्निध्य में	पं0 लीलपति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुर
101	ऋषि युग्म का आह्वान	पं0 लीलपति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुर
102	कर्मयोग और कर्मकौशल	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुर
103	कर्मकाण्ड क्यों और कैसे	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुर

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / संपादक	प्रकाशक
104	कला की शक्ति लोक मंगल में लगे	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
105	कर्मफल व्यवस्था के प्रति अनास्था ही नास्तिकता है	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
106	कर्मयोग और कर्म कौशल	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
107	कॉपती परछाइयॉ	डा0 रामस्वरूप खारे	जनर्दिन प्रकाशन, लखनऊ
108	कुण्डलिनी महाशक्ति और उसकी संसिद्धि	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
109	कुरीतियों का उन्मूलन अवश्यक	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
110	क्रान्ति की रूप रेखा	प0 लीलपति शर्मा	यु0 नि0 यो0
111	कैसा होगा आने वाला युग	प0 लीलपति शर्मा	यु0 नि0 यो0
112	क्या धर्म अफीम की गोली है?	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
113	कामना, वासना की मर्यादा	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
114	कल्प चिकित्सा	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
115	गायत्री मन्त्रार्थ	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
116	गायत्री और यज्ञ का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
117	गायत्री की चौबीस [illegible]वित धाराएँ	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
118	गायत्री की महान [illegible] हेमा	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखण्ड ज्योति स0 मथुरा
119	गायत्री पुराण	डा0 चमनलाल गौतम	संस्कृति स0 बरेली
120	गायत्री महाविज्ञान भाग–1	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
121	गायत्री महाविज्ञान भाग–2	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
122	गायत्री महाविज्ञान भाग–3	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
123	गायत्री महाविज्ञान (संयुक्त)	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
124	गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन–वाड्मय–9	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
125	गायत्री साधना का गुध्य विवेचन वाड्मय–10	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
126	गायत्री साधना साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार–वांड्मय–11	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
127	गायत्री की चौबीस शिक्षाएं	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
128	गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान परक–साधनायें–वाड्मय–12	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
129	गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियॉ–13	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
130	गायत्री साधना की वैज्ञनक पृष्ठभूमि–वाड्मय–14	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
131	गायत्री परिवार का लक्ष्य	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0
132	गीता कथा	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
133	गुरूदेव की धरोहर भाग–1	डा0 प्रणव पण्ड्या	यु0 नि0 यो0
134	गुरूदेव की धरोहर भाग–2	डा0 प्रणव पण्ड्या	यु0 नि0 यो0

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
135	गृहस्थ एक योग साधना	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0
136	गृहस्थः एक एक तपोवन–वाड्मय–61	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान् मथुरा
137	गुरूदेव के जीवन के चौदह रत्न	ब्रहमवर्चस	यु0 नि0 यो0 मथुरा
138	गुरूदेव के मार्मिक संस्मरण	पं0 लीलापति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
139	गायत्री की चौबीस शक्ति धाराएँ एवं उनके यंत्र तंत्र	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
140	गायत्री प्रज्ञापीठ–स्वरूप और कार्यकम	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
141	घर के वातावरण में स्वर्ग का अवतरण	ब्रहमवर्चस	यु0 नि0 यो0 मथुरा
142	चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति सं0 मथुरा
143	चेतन अचेतन एवं सुपर चेतन	डा0 प्रणव पण्ड्य	शान्तिकुंज हरिद्वार
144	चेतना की शिखर मात्रा– खण्ड–1	ब्रहमवर्चस	यु0 नि0 यो0 मथुरा
145	चिर यौवन का रहस्योद्घाटन	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुंज, हरिद्वार
146	चिकित्सा उपचार के विविध आयाम–वाड्मय–40	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति सं0 मथुरा
147	चेतना की प्रचण्ड क्षमता–एक दर्शन	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	अखण्ड ज्योति सं0 मथुरा
148	जन जागरण के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
149	जीवन देवता की साधना–आराधना वाड्मय–2	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति सं0 मथुरा
150	जीवन जीने की कला	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
151	जीवन विद्या	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुंज हरिद्वार
152	जीवेम शरदः शतम्	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति सं0 मथुरा
153	जीवन पथ	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुंज, हरिद्वार
154	जीवन धारा	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुंज, हरिद्वार
155	जीवन साधना–प्रयोग और सिद्धियॉ	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	शान्तिकुंज, हरिद्वार
156	जल्दी भरने की उतावाली न करें	ब्रहमवर्चस	यु0 नि0 यो0 मथुरा
157	जीवन लक्ष्य और उसकी प्राप्ति	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
158	त्योहार और व्रत	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
159	तत्व दृष्टि से बंधन मुक्ति	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
160	तमसो मा ज्योतिर्गमय	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
161.	तीर्थ सेवनः क्यों और कैसे	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
161	दहेज–एक कुरीति	पं० श्री रामशर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
162	दहेज दानव से सामाजिक लड़ाई लड़ी जाय	पं० श्री रामशर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
163	दिव्य शक्तियों का उद्भव प्राण शक्ति से	पं० श्री रामशर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
164	देवदूत आया पहचान न सके	बलराम सिंह परिहार	यु० नि० यो० मथुरा
165	दृश्य जगत के अदृश्य संचालन सूत्र	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
166	दृश्य जगत की अदृश्य पहेलियॉ वाड.मय–55	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
167	धर्म और विज्ञान विराधी नहीं पूरक	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
168	धर्मतंत्र से लोकशिक्षण भाग–1	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
169	धमतंत्र से लोकशिक्षण भाग–2	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
170	धर्म चक प्रवर्तन एवं लोकमानस का शिक्षण	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
171	धर्म तत्व का दर्शन एवं मर्म–वाड्मय–53	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
172	धर्म तंत्र की क्षमता निरर्थक न बहे	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
173	धर्म संस्कृति के अग्दूत	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
174	धर्मोद्धारक और संस्कृति संरक्षक	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
175	धार्मिक नव चेतना के अवतार–चैतन्य महाप्रभु	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
176	नव सृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी	आचार्य श्री रामशर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
177	नर से नारायण बनने का प्रगति पथ	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
178	नारी अभ्युदय का नवयुग	आचार्य श्री रामशर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
179	नियामक सत्ता एवं उसकी विधि व्यस्था	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
180	नीरोग जीवन के महत्वपूर्ण सूत्र–वाड्मय–39	आचार्य श्री रामशर्मा	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
181	नारी को तिरष्कार नहीं प्रोत्साहन दें	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
182	नारी जागरण अभियान	माता भगवती देवी शर्मा	शान्ति कुन्ज, हरिद्वार
183	नारी की गरिमा गिराने में घाटा ही घाटा	माता भगवती देवी शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
184	नीच और दलितों को अपनाने वाले–गुरूनानक	आचार्य श्री राम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
185	परिष्कृत व्यक्ततत्वः एक सिद्धि, एक उपलब्धि	आचार्य श्री रामशर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
186	परिवर्तन के महान क्षण	आचार्य श्री रामशर्मा	शान्ति कुन्ज, हरिद्वार
187	पत्र पाथेय	डा० प्रणव पण्ड्या	यु० नि० यो० मथुरा
188	परम पूज्य गुरूदेव के अमृत कणः नव युग गीता	जितेन्द्र रघुवंशी	प्रजाकुन्ज, कनखल हरिद्वार
189	प्रज्ञावतार हमारे गुरूदेव	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखाक / सम्पादक	प्रकाशक
190	प्रज्ञावतार का स्वरूप और कियाकलाप	पं0 लीलापति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
191	प्रजातंत्र का मेरूदण्ड, समर्थ धर्म तंत्र	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
192	पितरों को श्रद्धा दें, वे हमें शक्ति देंगे	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
193	पुनर्जन्म एक ध्रुव सत्य	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
194	पॉच प्राण–पॉच देव	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
195	प्रसुप्ति से जागृति की ओर	ब्रहमवर्चस	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
196	प्राणशक्ति, एक दिव्य विभूति	ब्रहमवर्चस	यु0 नि0 यो0 मथुरा
197	प्रज्ञा अभियान–दर्शन, स्वरूप कारी युग	पं0 श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
198	प्रज्ञा प्रवचन	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
199	प्रज्ञापुराण खण्ड–1	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
200	प्रज्ञापुराण खण्ड–2	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
201	प्रज्ञापुराण खण्ड–3	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
202	प्रज्ञापुराण खण्ड–4	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
203	प्रज्ञावतरण	डा0 सुशीला गुप्ता	यु0 नि0 यो0 मथुरा
204	प्रज्ञापुराण कथामृतम्	डा0 सुशीला गुप्ता	यु0 नि0 यो0 मथुरा
205	प्रज्ञावतार की विस्तार प्रकिया	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
206	प्रति गामिता का कुचक ऐसे टूटेगा–वाड्मय 59	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
207	पूज्यवर की एक अमृतवाणी–1 वाड्मय–67	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
208	प्रज्ञापुरूष का समग्रदर्शन (शोध ग्रंथ)	डा0 मन्दाकिनी श्रीमाली	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
209	परमपूज्य गुरूदेव की सूक्ष्मीकृत जीवनचर्या	माता भगवती देवी शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
210	प्राणायाम से आधि–व्याधि निवारण	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
211	प्राण घातक व्यसन	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
212	प्रज्ञोपनिषद	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
213	परमार्थ में ही स्वार्थ है	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
214	पर्वो की प्रेरणा और पद्धति	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
215	परिवार को सुव्यवस्थित कैसे बनायें	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
216	परिवारों में सुसंस्कारिता का वातावरण	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
217	प्रखर प्रज्ञा	पं0 लीलापति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
218	पातन्जलि योग का तत्व दर्शन	प0 श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
219	पूज्य गुरूदेव के मार्मिक संस्मरण	पं0 लीलापति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
220	बाल निर्माण की उपयोगी कहानियॉ	डा0 आशा सरसिज	यु0 नि0 यो0 मथुरा
221	ब्रहमवर्चस शोध संस्थान–एक परिचय	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
222	ब्रहमवर्चस साधना की ध्यान धारणा	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
223	ब्रहमवर्चस की पंचाग्नि विद्या	आचार्य श्री राम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
224	भक्ति योग का वास्तविक स्वरूप	श्री रामशर्मा अचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
225	भक्ति और शक्ति के समन्वयी–समर्थ रामदास	श्री रामशर्मा अचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा
226	भव्य समाज की नव्य रचना	आचार्य श्री राम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
227	भारतीय संस्कृति का मेरूदण्ड–वानप्रस्थ	आचार्य श्री राम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
228	भारतीय संस्कृति की रक्षा कीजिए	आचार्य श्री राम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
229	भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्याति संस्थान, मथुरा
230	भव्य समाज का अभिनव निर्माण	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्याति संस्थान, मथुरा
231	भारतीय संस्कृति के संरक्षक–उद्धारक	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
232	भारतीय संस्कृति के कीर्ति स्तम्भ	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
233	मनुष्य चलता–फिरता पेड़ नहीं	आचार्य श्री राम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
234	मरणोत्तर जीवनः तथ्य एवं सत्य	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्याति संस्थान, मथुरा
235	मनः स्थिति बदले तो परिस्थिति बदले	आचार्य श्री राम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
236	महाकल और युग प्रत्यावर्तन प्रकिया	आचार्य श्री राम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
237	मर्यादा पुरूषोत्तम राम–वाड्मय 30	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्याति संस्थान, मथुर
238	मरकर भी अमर हो गये जो–वाड्मय 44	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्याति संस्थान, मथुर
239	महापुरूषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग–वाड्मय 50 एवं 51	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्याति संस्थान, मथुर
240	मनुष्य में देवत्व का उदय–वाड्मय 54	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्याति संस्थान, मथुर
241	मनस्विता, प्रखरता एवं ओजस्विता–वाड्मय 57	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्याति संस्थान, मथुर
242	महाशक्ति की लोकयात्रा	ब्रहमवर्चस	यु0 नि0 यो0 मथुरा
243	महाकाल का घोंसला–शान्तिकुन्ज	ब्रहमवर्चस	यु0 नि0 यो0 मथुरा

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
244	महाकाल की चेतावनी	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
245	महाकाल की भविष्य वाणी	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
246	महाकाल का शिक्षकों को आह्वान	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
247	महाकाल का दिव्य चिंतन	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
248	महाप्रज्ञा का तत्व दर्शन सबके लिए	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
249	महाकाल की पुकार सुनें	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
250	महाभारत कथा	डा० चमन लाल गौतम	संस्कृति संस्थान, बरेली
251	मानवता को विश्व बन्धुत्व का मंत्र देने वाले सृजन शिल्पी	श्री रामशर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
252	मैं क्या हूँ	श्री रामशर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
253	युग दृष्टा का जीवन दर्शन–वाङ्मय–1	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
254	यज्ञ का ज्ञान विज्ञान	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
255	यज्ञ: एक समग्र उपचार प्रक्रिया	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
256	युग परिवर्तन कैसे और कब? वाङ्मय–27	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
257	युग निर्माण योजना के आदर्श और सिद्धान्त–भाग–1	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
258	युग निर्माण योजना के आदर्श और सिद्धान्त–भाग–2	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
259	युग निर्माण योजना भाग–1	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
260	युग निर्माण योजना भाग–2	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
261	युग की माँग प्रतिभा परिष्कार– प्रथम एवं द्वितीय भाग	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
262	युग ऋषि का अध्यात्म युग ऋषि की वाणी में	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
263	यज्ञपिता गायत्री माता	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
264	युग निर्माण की रूपरेखा और कार्य पद्धति	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
265	युग निर्माण की शिक्षण प्रक्रिया	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
266	युग निर्माण योजना–एक परिचय एक झाँकी	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
267	युग की माँग प्रतिभा परिष्कार	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
268	युग निर्माण सत्संकल्प की दिशा धारा	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
269	युग निर्माण योजना–दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
270	युग गीता भाग–1 एवं भाग –2	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
271	युग की पुकार अनसुनी न करें	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
272	युग निर्माण का शतसूत्री कार्यक्रम	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
273	युग ऋषि की अन्तर्वेदना भाग–1	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
274	युग ऋषि की अन्तर्वेदना भाग–2	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
275	युग ऋषि की अपेक्षायें	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
276	युग निर्माण सत्संकल्प की दिशा धारा	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
277	युग निर्माण चित्रावली भाग – 1 एवं 2	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
278	युग शक्ति गायत्री का अभिनव अवतरण	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
279	यज्ञ आयोजनों से सूक्ष्म जगत का परिष्कार	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
280	यज्ञोपचार का ज्ञान विज्ञान	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
281	युग परिवर्तन की प्रक्रिया और पद्धति	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
282	युग निर्माण की सुनिश्चित सम्भावना	बलराम सिंह परिहार	यु० नि० यो० मथुरा
283	युग कवि स्वरूप, व्यक्तित्व एवं कृतित्व (लघु शोध प्रबन्ध)	राम मनोहर	दिव्या प्रकाशन, लखनऊ
284	युग कवि डा० राम स्वरूप खरे का बाल साहित्य (लघु शोध– प्रबन्ध)	संगीता गुप्ता	अनुमेधा प्रकाशन, लखनऊ
285	यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते (वाङ्मय 47)	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
286	युग सृजन के सन्दर्भ में प्रगतिशील लेखन कला	ब्रह्मवर्चस	शान्ति कुन्ज हरिद्वार
287	राष्ट्र मन्दिर के कुशल शिल्पी	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
288	राष्ट्र देव के सच्चे आराधक	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
289	रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
290	राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने वाङ्मय – 64	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
291	रामचरित मानस की प्रगतिशील प्रेरणा	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
292	रामायण में पारिवारिक आदर्श	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
293	रामायण सप्ताह	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
294	रूग्ण समाज और उसका कायाकल्प	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
295	लोकमानस का परिष्कृत मार्गदर्शन	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
296	लेखन कला	प्रो० रामचरण महेन्द्र	अखण्ड ज्योति कार्यालय
297	विवाहित जीवन का अलौकिक आनन्द	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
298	विवाहोन्माद: समस्या और समाधान वाङ्मय – 60	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
299	व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
300	विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
301	विचार क्रान्ति के दीप यज्ञ	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
302	विद्यार्थी जीवन की दिशाधारा	डा० आर पी० कर्मयोगी	शान्ति कुन्ज, हरिद्वार
303	विश्वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी वाङ्मय – 52	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
304	विचारसार एवं सूक्तियाँ (वाङ्मय 68, 69, 70)	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
305	विवाद से परे ईश्वर का अस्तित्व	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
306	विचार क्रान्ति और कलामंच	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
307	विवेक की कसौटी	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
308	वेदों का दिव्य सन्देश	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
309	वेदों की स्वर्णिम सूक्तियाँ	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
310	विनोद और उल्लास की प्रवृत्तियॉ	डा0 रामचरण महेन्द्र	यु0 नि0 यो0 मथुरा
311	शिक्षा ही नहीं विद्या भी	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
312	शब्द ब्रहम–नाद ब्रहम	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
313	शिक्षा एवं विद्या (वाड्मय)	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
314	शान्तिकुन्ज और उसकी उपलब्धियॉ	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
315	शरीर की अद्भुत क्षमता एवं विलक्षणता	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
316	षोड्श संस्कार विवेचन	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
317	स्वस्थ रहने की कला	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
318	समयदान ही युग धर्म	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
319	सबके लिए सद्बुद्धि सबके लिए उज्जवल भविष्य	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
320	सर्वोपयोगी गायत्री साधना	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
321	सबके लिए सुलभ–उपासना–साधना	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
322	सत्य ही जीतता है असत्य नहीं	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
323	साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
324	साधना से सिद्धि भाग–1	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
325	साधना से सिद्धि भाग–2	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
326	सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र (वाड.मय)	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
327	सूक्ष्मीकरण एवं उज्जवल भविष्य का अवतरण भाग–1 एवं 2	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
328	सतयुग की वापसी	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
329	समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
330	संस्कारों का पुनर्जीवन	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
331	सुनसान के सहचर	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
332	समस्यायें आज की समाधान कल के	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
333	सफल जीवन के कुछ स्वर्णिम सूत्र	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
334	स्वर्ग–नरक की स्वसंचालित प्रक्रिया	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
335	संस्कृति–संजीवनी श्री मद् भागवत एवं गीता	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
336	सॉस्कृति चेतना के उन्नायक: सेवाधर्म के उपासक	ब्रहमवर्चस	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
337	समाज का मेरूदण्ड सशक्तय परिवार तंत्र (वाड्मय–48)	ब्रहमवर्चस	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
338	समाजिक, नैतिक, बैद्धिक, क्रान्ति कैसे (वाड्मय–65)	ब्रहमवर्चस	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
339	संस्कृति पुरूष हमारे गुरूदेव	ब्रहमवर्चस	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
340	स्वतंत्रता सेनानी हमारे गुरूदेव	ब्रहमवर्चस	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
341	सूक्ति सुधा	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
342	श्री राम कथा	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
343	श्री मद्भागवत के प्रेरक तत्व	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
344	सतयुग के सपनों को हम साकार करें	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
345	सृष्टा का अस्तित्व सृष्टि के कण–कण से प्रमाणित	आचार्य श्रीराम शर्मा डा० प्रणव पण्डया	यु० नि० यो० मथुरा
346	साधना विज्ञान की तात्विक पृष्ठभूमि	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
347	संस्कृति संबोध	ब्रहमवर्चस	शा० तकुन्ज, हरद्वार
348	संस्कृति सौरभ	ब्रहमवर्चस	शा० तकुन्ज, हरद्वार
349	सजल श्रद्धा	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
350	साधना से सिद्धि के आधार भूत सिद्धान्त	ब्रहमवर्चस	यु० नि० यो० मथुरा
351	सरस सफल जीवन का केन्द्र बिन्दु उत्कृष्ट चिंतन	ब्रहमवर्चस	यु० नि० यो० मथुरा
352	समझदारों की नासमझी	श्रीराम शर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
353	समृद्धि और शान्ति का एक ही आधार विभूतियों का सुनियोजन	ब्रहमवर्चस	यु० नि० यो० मथुरा
354	सफल दाम्पत्य सुखी जीवन	श्रीराम शर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
355	सच्ची आस्तिकता अपनायें	श्रीराम शर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
356	समाज सुधार के अग्रदूत–राजाराममोहन राय	श्रीराम शर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
357	स्त्रियों का गायत्री अधिकार	श्रीराम शर्मा आचार्य	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
358	स्वामी दयानंद सरस्वती	श्रीराम शर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
359	सेवा और सहिष्णुता के उपासक–संत तुकाराम	श्रीराम शर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
360	हमारी वसीयत और विरासत	श्रीराम शर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
361	हम बदलें तो दुनियॉ बदले	श्रीराम शर्मा आचार्य	यु० नि० यो० मथुरा
362	हमारी संस्कृति इतिहास के कीर्तिस्तम्भ (वाड्मय–43)	ब्रहमवर्चस	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
363	हमारी भावी पीढी और उसका नव निर्माण (वाड्मय–63)	ब्रहमवर्चस	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
364	हारिये न हिम्मत	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा

कमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
365	हमारी युग निर्माण योजना, प्रथम खण्ड	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0. यो0 मथुरा
366	हमारी युग निर्माण योजना, द्वितीय खण्ड	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0. यो0 मथुरा
367	हमारी शतसूत्रीय युग निर्माण योजना	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0. यो0 मथुरा
368	ज्ञान यज्ञ	पं0 श्री रामशर्मा आचार्य	यु0 नि0. यो0 मथुरा

सद्वाक्य

(1) अच्छी पुस्तकें जीवन्त देव प्रतिमाएं है, जिनकी आराधना से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है ।

(2) जो जैसा सोचता है और करता है ,वह वैसा ही बन जाता है ।

(3) अपना मूल्य समझों और विश्वास करों कि तुम संसार के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हो ।

(4) मनुष्य का जन्म तो सहज होता है, पर मनुष्यता उसे कठिन प्रयत्न से प्राप्त करनी पड़ती है ।

(5) प्रसन्न रहने के दो ही उपाय है – आवश्यकताएं कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बिठाएं।

(6) सभ्यता का स्वरूप है सादगी, अपने लिए कठोरता और दूसरों के लिए उदारता।

(7) दूसरों के साथ वह व्यवहार न करें जो तुम्हें अपने लिए पसन्द नही ।

(8) किसी का सुधार उपहास से नही , उसे नये सिरे से सोचने और बदलने का अवसर देने से होता है ।

—आचार्य श्रीराम शर्मा

(ख) सहायक ग्रंथ सूची (आलोच्य काव्यकृतियाँ)

क्रमांक	कृति का नाम	रचयिता / लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
1	अर्चन–वन्दन	पं० लीलपति शर्मा (संकलन–संपादन)	यु० नि० यो० मथुरा
2	अध्यात्म संगीत	पं० लीलपति शर्मा (संकलन–संपादन)	यु० नि० यो० मथुरा
3	आत्म चिंतन	पं० लीलपति शर्मा (संकलन–संपादन)	यु० नि० यो० मथुरा
4	अर्चना (गीत संग्रह)	डा० राम स्वरूप खारे	अभिनव साहित्य परिषद, मथुरा
5	अर्चना गीत	माया वर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
6	अवतार कथा	माया वर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
7	अभिवन्दना	बलराम सिंह परिहार	यु० नि० यो० मथुरा
8	अभिव्यंजना	बलराम सिंह परिहार	यु० नि० यो० मथुरा
9	अपने दीप जलाओ (काव्य संग्रह)	लाखान सिंह भदौरिया 'सौमित्र'	यु० नि० यो० मथुरा
10	अनुभूति (खण्ड काव्य)	डा० त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल	यु० नि० यो० मथुरा
11	अपरिभाषित सत्यांश	डा० त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल	यु० नि० यो० मथुरा
12	अवशेष पुष्प (कवित–संग्रह)	शिवशंकर मिश्र	क्षितिजि प्रकाशन लखनऊ
13	इक्कीसवाँ जोड़ा (उपन्यास)	माया वर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
14	इन्दु एक बिन्दु दो	डा० त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल	
15	उद्‌बोधन (कविता–संग्रह)	बलराम सिंह परिहार	यु० नि० यो० मथुरा
16	उद्‌बोधन (कविता संग्रह)	भगवान सहाय वशिष्ठ	अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा 1964
17	एक डाल तीन फूल (काव्य–संग्रह)	डा० त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल	
18	करिष्ये बचनं तव (गीत–संग्रह)	शचीन्द्र भटनागर	यु० नि० यो० मथुरा
19	क्रान्ति गीत	शचीन्द्र भटनागर	यु० नि० यो० मथुरा
20	क्रान्ति के स्वर, भाग'–1	शचीन्द्र भटनागर	यु० नि० यो० मथुरा
21	क्रान्ति–घोष (क्रान्तिकारी कवितायें)	मंगल विजय	अप्रकाशित
22	काव्य गीत मंजूषा (वाङ्मय)	ब्रह्मवर्चस	अखण्ड ज्योति स०, मथुरा (अप्रकाशित)
23	काव्य कैलाश	भगवती देवी शर्मा	यु० नि० यो० मथुरा
24	कविवर डा० ब्रजबाल और उनकी कृतियाँ	डा० रामनिवास शर्मा 'अधीर'	जनहित प्रका० मथुरा

क्रमांक	कृति का नाम	रचयिता / लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
25	क्रान्ति प्रेरणा	विनय भाई (संचय कर्ता)	गाँधी विचार केन्द्र, कानपुर
26	काव्य–पीयूष	शिवशंकर मिश्र	दिनेश पुस्तक भं0 मेरठ
27	ख्याल प्रसून	डा0 हरगोविन्द सिंह	लोकमंगल प्रकाशन, बाजा की इटैलिया
28	गरिमा गान	ब्रह्मवर्चस	शान्तिकुंज, हरिद्वार
29	गागर में सागर (मुक्तक काव्य)	माया वर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
30	गीता–पद्यानुवाद	डा0 राम स्वरूप खारे	अ0 ज्यो0 सं0 मथुरा
31	गेंया (कविता–संग्रह)	डा0 त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल	
32	गंगावतरण (संगीत रूपक)	शिवशंकर मिश्र, विद्यावती मिश्र	यु0 नि0 यो0 मथुरा
33	गीत नवनीत	मंजुल मयंक	रामायण प्रकाशन, लखनऊ
34	जाग उठी तरूणाई (तरूणगीत)	मंगल विजय 'विजय गीय'	गायत्री तपोभूमि, मथुरा
35	ज्योति (गीत–संग्रह)	विद्यावती मिश्र	हिन्दी परिषद, लखनऊ
36	ज्योति किरण	माया वर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
37	जागो प्रहरी (कविता–संग्रह)	भगवती देवी शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
38	जागृति गीत (कविता–संग्रह)	माया वर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
39	जीवन–संगीत (कविता–संग्रह)	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	अखण्ड ज्योति सं0, सं0 2004 वि0
40	जीवन–सुरभि (काव्य–संग्रह)	माया वर्मा	कृति प्रकाशन, ग्वालियर
41	तुलसी के राम (बाल कविता–संग्रह)	विद्यावती मिश्र	तुलसी स्मारक समिति, लखनऊ
42	तुलसी के सुबोध दोहे	वियोगी हरि	सस्ता साहि0 म0 प्रका0 दिल्ली
43	दहेज का दानव (खण्ड काव्य)	माया वर्मा	
44	दोहा अन्त्याक्षरी	माता भगवती देवी शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
45	धम्मपद	शिवशंकर मिश्र	भारतीय बौद्ध समिति, लखनऊ
46	नव प्रभात	रूक्मणी राय	यु0 नि0 यो0 मथुरा
47	नये सन्दर्भ (कविता–संग्रह)	माया वर्मा	
48	नये युग का अभिनव निर्माण (कविता–संग्रह)	डा0 राम स्वरूप खारे	यु0 नि0 यो0 मथुरा
49	नीरज: व्यक्तित्व और कृतित्व	डा0 सुधा सक्सेना	प्रगति प्रकाशन आगरा
50	प्रज्ञागीत	माता भगवती देवी शर्मा	शान्तिकुंज हरिद्वार

क्रमांक	कृति का नाम	रचयिता / लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
51	प्रज्ञावतार (महाकाव्य)	मंगल विजय	शान्तिकुन्ज , हरिद्वार
52	पर्वपीयूष	पं० लीलापति शर्मा	यु० नि० या० मथुरा
53	प्रभात किरण (कविता–संग्रह)	माया वर्मा	यु० नि० या० मथुरा
54	पाथेय (कविता संग्रह)	डा० त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल	
55	पुष्पांजलि (कविता संग्रह)	डा० हरगोविन्द सिंह	लोकमंगल प्रकाशन, अतरौलिया राठ
56	प्रतीक्षा (गीत संग्रह)	विद्यावती मिश्र	हिन्दी परिषद, लखनऊ
57	फाग मंजरी	डा० हर गोवन्दि सिंह 'माधव'	लोकमंगल प्रकाशन, इटैलिया बाजा
58	बापू के राम (बाल कविता संग्रह)	विद्यावती मिश्र	तुलसी स्मारक समिति, लखनऊ
59	बिहारी के सुबोध दोहे	वियोगि हरि	सस्ता साहि० मं० प्रका० दिल्ली
60	बुन्देली काव्य	डा० रामस्वरूप खारे एवं डा० हरगोविन्द सिंह	श्री राममेहरा एण्ड कं० आगरा
61	बाल नीति शतक (बाल साहित्य)	माया वर्मा	गायत्री तपोभूमि मथुरा
62	बिल्ली के बच्चे (बाल काव्य संग्रह)	माया वर्मा	यु०नि० यो०, मथुरा
63	भगवान राम (संगीत रूपक)	शिवशंकर मिश्र एवं विद्यावती मिश्र	यु०नि० यो०, मथुरा
64	भगवान श्री कृष्ण (संगीत रूपक)	माया वर्मा	यु०नि० यो०, मथुरा
65	भगवान शिवशंकर (संगीत रूपक)	माया वर्मा	यु०नि० यो०, मथुरा
66	भगवती गीता (गीता का बुन्देली में अनुवाद)	भगवती प्रसाद निगम	रजनी स्मृति प्रतिष्ठान, राठ
67	मणि मुक्ता (कविता–संग्रह)	बलराम सिंह परिहार	यु० नि० यो०, मथुरा
68	महाराज हरिश्चन्द्र (संगीत रूपक)	शिवशंकर मिश्र, विद्यावती मिश्र	यु० नि० यो०, मथुरा
69	मेरे स्वप्न तुम्हारे चित्र (मुक्तक काव्य)	डा० राम स्वरूप खारे	हिन्दी प्रचार समा० मथुरा
70	मंगल किरण	माता भगवती देवी शर्मा	यु० नि० यो०, मथुरा
71	मीत मेरे गीत तेरे	डा० त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल	
72	मायावर्मा के काव्य में युग चेतना	डा० जमुना प्रसाद बडैरिया	सद्भाव संस्थान, ग्वालियर
73	मुक्ति (कविता–संग्रह)	विद्यावती मिश्र	हिन्दी परिषद, लखनऊ
74	मनोवैज्ञानिक रामायण	नेम सिंह 'रमन'	रमन प्रकाशक, इटावा
75	मंजुल मयंक अभिनन्दन ग्रन्थ	डा० भगवानदीन नाथूराम 'पथिक'	सृजन संकल्प संस्था, हर्मीरपुर
76	प्रेरणा–गीत	माता भगवती देवी शर्मा	यु० नि० यो०, मथुरा

क्रमांक	कृति का नाम	रचयिता / लेखक सम्पादक	प्रकाशक
77	युग गायन (भाग–1 2 3)	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
78	युग शिल्पी संगीत	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
79	युग शिल्पी (प्रज्ञागीत) भाग–1,2	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
80	युग निमंत्रण (कविता–संग्रह)	माया वर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा,
81	युग पुरूष की विदाई (कविता–संग्रह)	माया वर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा,
82	युग ऋषि श्रीराम शतक (पद्यमयी जीवनी)	माया वर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा,
83	युग–सन्देश (कविता–संग्रह)	भगवान सहाय 'वशिष्ठ'	अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा 1964
84	युग–वीणा	विद्यावती मिश्र	अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
85	युग निर्माण–संगीत (भाग 1 से 10 तक)	पं0 लीलापति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
86	युग निर्माण संगीत संग्रह	पं0 लीलापति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
87	वसन्त प्रेरणान्जलि	जितेन्द्र रघुंवशी (संकलन–संपादन)	प्रजाकुंज, कलखल, हरिद्वार
88	वृन्द कवि के दोहे	वियोगि हरि	सस्ता साहि0 मं0 प्रका0 दिल्ली
89	शंखनाद (कविता–संग्रह)	माता भगवती देवी शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
90	शौर्य साधना	पं0 लीलापति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
91	शक्ति के स्वर	पं0 लीलापति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
92	शतमन्यु (खण्ड काव्य)	~~डा0 त्रिलोकी नाथ~~ डा० राम स्वरूप खरे ~~ब्रजबोल~~	हिन्दी प्रचार समा0, मथुरा
93	श्रद्धा (गीत संग्रह)	विद्यावती मिश्र	हिन्दी परिषद, लखनऊ
94	संस्कृति के सौरभ–गुरू गौरव	पं0 लीलापति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
95	सृजन संकल्प	पं0 लीलापति शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
96	समूह गान (भाग 1 व 2)	ब्रहमवर्चस	यु0 नि0 यो0 मथुरा
97	सहगान कीर्तन	माता भगवती देवी शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
98	संगीत सौरभ (भाग 1 व 2)	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार.
99	संगीत सौरभ (भाग 3)	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार.

कमांक	कृति का नाम	रचयिता / लेखाक / सम्पादक	प्रकाशक
100	श्रद्धांजलि गीत	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
101	साधना के स्वर (कविताओं एवं गजनों का संग्रह)	मंगल विजय	प्रज्ञाफाइल आर्ट, औ0 मेज
102	सत्य नारायण कथा का पद्यानुवाद	डा0 रामस्वरूप खारे	यु0 नि0 यो0 मथुरा
103	सद्विचार सतसई	डा0 हरगोविन्द सिंह	लोक मंगल प्रकाशन, अतरौलिया राठ
104	सद्वाक्य मंजरी	डा0 हरगोविन्द सिंह	लोक मंगल प्रकाशन, अतरौलिया राठ
105	श्रद्धांजलि (गीत संग्रह)	बलराम सिंह परिहार	यु0 नि0 यो0 मथुरा
106	सेतुबन्ध (पद्य रूपक)	विद्यावती मिश्र	तुलसी स्मारक स0 लखानऊ,1962
107	कबीर की सुबोध साखियं	वियोगी हरि	सस्ता साहि0 मं0 प्रका0 दिल्ली
108	श्रम के स्वर	शिवशंकर मिश्र (संपादन)	रोहिताश्व प्रकाशन, लखानऊ, 1958
109	सुधियों की बरसात (गीत-संग्रह)	पं0 शिवशंकर मिश्र	श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा राजेन्द्र न0, लखानऊ
110	स्वरूप काव्य का समीक्षात्मक विवेचन	डा0 दुर्गा प्रसाद श्रीवास्तव	जनार्दन प्रकाशन, कानपुर
111	हम उनकी जय गायें (गीत–संग्रह)	बलराम सिंह परिहार	यु0 नि0 यो0, मथुरा
112	ज्ञान रश्मि (श्रेष्ठ कविता संग्रह)	मंगल विजय	प्रज्ञा प्रकाशन, ओबेदुल्लागंज
113	ज्ञान–रश्मि (दोहावली)	डा0आर0पी0 कर्मयोगी	यु0 नि0 यो0 मथुरा

(ग) सहायक ग्रन्थ सूची (हिन्दी)

कमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखाक / सम्पादक	प्रकाशक
1	अनासक्ति योग	मोहनदास करमचन्द्र गॉधी	सस्ता साहित्य मंडल दिल्ली,
2	आधुनिक भारतीय समाज और संस्कृति	दामोदर सिंघल	
3	अद्वेत वेदान्त	राममूर्ति शर्मा	ने0 प0 हा0 दरियागंज, दिल्ली
4	आत्मानुभूति तथा उसके राजमार्ग	स्वामी विवेकानंद	रामकृष्णमठ, धन्तौली नागपुर
5	आध्यात्मिक आलोक	यतीन्द्रनाथ 'दास'	अक्षय प्रकाशन, कानपुर
6	आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास	जगदीश सहाय श्रीवास्तव	पु0 प्र0 बख्शीपुर–गोरखपुर
7	आमूल कान्ति की आवश्यकता	जे0 कृष्णमूर्ति	कृष्णमूर्ति फउ0 वराणसी
8	आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियॉ	डा0 नगेन्द्र	
9	आधुनिक युग में धर्म	सर्वपल्ली राधाकृष्णन	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10	उत्तर भारत की सन्त परम्परा	परशुराम चतुर्वेदी	
11	उपनिषदों के चौदह रत्न	हनुमान प्रसाद पोद्दार	गीता प्रेस, गोरखापुर
12	उपनिषदों का सन्देश	महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती	गोविन्द राम हासानन्द, दिल्ली
13	एक बनो नेक बनो	बिनोवा भावे	सर्व सेवासंघ, वराणसी
14	कबीर ग्रन्थावली	सन्त कबीर	
15	कान्ति प्रेरणा	विनय भाई	गॉधी विचार केन्द्र, कानपुर
16	कल्कि या सभ्यता का भविष्य	एस0 राधाकृष्णन्	
17	काव्य के रूप	बाबू गुलाबराय	
18	काव्य चिंतन	डा0 नगेन्द्र	
19	काव्य विवेचन	प्रे0 सुरेशचन्द्र गुप्ता	
20	काव्यॉजलि	प्रेमचन्द्र अग्रवाल	
21	गद्यप्रकाश	सद्गुरूशरण अवस्थी	इ0 प्रे0 लि0 प्रयाग (1934)
22	गॉव का गोकुल	अप्पा पटवर्धन	अ0 भा0 सर्वसेवा संघ वर्धा

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
23	ग्राम राज	धीरेन्द्र मजूमदार	अ0 भा0 सर्व सेवासघ वर्धा
24	चिन्तन के नए चरण	देवदत्त शास्त्री	चौखाल्या विद्या भवन, वाराणसी
25	जय जगत	आचार्य बिनोवा भावे	जय जगत म0 स0 गोपुरी, वर्धा
26	दर्शन के उपयोग	चार्ल्स फैबेल	लीडर प्रेस इलाहाबद
27	दुनियॉ में रहना किस तरह	महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती	गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली
28	ध्यानतत्र के आलोक में	स्वामी सत्यानन्द सरस्वती	बिहारयोग महा वि0 मुंगेर
29	देशमणि	डा0 शकरदयाल शर्मा	
30	धर्म दर्शन	लक्ष्मीनिधि शर्मा	केदारनाथ, रामनाथ, कालिजरोड मेरठ
31	धर्म दर्शन	डा0 रामनाथ शर्मा	प्रगति प्रकाशन, आगरा
32	निर्गुण ब्रहम्	स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती	
33	प्राच्य धर्म और पाश्चात्य विचारक	डा0 राधाकृष्णन्	
34	प्रेम	जे0 कृष्णमूर्ति	कृष्णमूर्ति फाउन्डेशन, इण्डिया, वाराणसी
35	परिवार में रहने की कला	डा0 भीकमचन्द प्रजापति	एच0 एल0 सहॉद चेन्टू दिव्य
36	परा मनोविज्ञान	भीखामलाल आत्रेय	
37	बुन्देली की कृषि–उद्योग शब्दावली का अध्ययन (शोध प्रबन्ध)	डा0 हरगोविन्द सिंह	
38	भविष्य का धर्म: वैज्ञानिक धर्म	गोपाल दास अग्रवाल	अ0 पु0 ने0 करबी
39	भगवान शंकर और दयानन्द	महात्मा आनन्द स्वामी	गोविन्दराम हासनन्द, दिल्ली
40	भारत के राष्ट्रीय महापुरूष	गोपाल दास अग्रवाल	अ0 पु0 ने0 करबी
41	भावी कविता	श्री अरविन्द	श्री अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी
42	भारत की विश्व को देन	मक्समूलर	
43	भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें	पी0 एन0 ओक	
44	भारतीय सस्कृति का विकास	सत्यकेतु विद्यालंकार	
45	भारतीय प्रज्ञा	विलियम मॉनियर अनु. डा0 रामकुमार राय	
46	महामत्र	महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती	गोविन्दराम हासनन्द, दिल्ली
47	महात्मा आनन्द स्वामी की बोध कथाएं	राम कुमार गुप्त	गोविन्दराम हासनन्द, दिल्ली
48	मेरा जीवन तथा ध्येय	स्वामी विवेकानन्द	राम कृष्ण मठ, नागपुर

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
49	मातृभूमि के प्रति हमारा कर्त्तव्य	स्वामी वीरेश्वरानन्द	रामकृष्ण मठ, नागपुर
50	मानव चक्र	श्री अरविन्द	श्री अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी
51	मातृवाणी खण्ड–2	श्री माँ	श्री अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी
52	मंजुल मयंक अभिनंदन ग्रन्थ	डा0 भगवानदीन, नाथूराम पथिक	
53	श्री अरविन्द कृत धर्म की व्याख्या	डा0 कु0 छायाराय	
54	सत्यार्थ प्रकाश	स्वामी दयानन्द सरस्वती	
55	श्री अरविन्द के पत्र	अरविन्द साहित्य संग्रह, पाण्डिचेरी	
56	साहित्य और सौन्दर्य बोध	डा0 रामशंकर द्विवेदी	
57	साहित्य का मर्म	डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी	
58	संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह 'दिनकर'	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
59	साकेत सुधा	राम स्वरूप दुबे	
60	श्री जय शंकर प्रसाद के नाटकों का राष्ट्रीय दृष्टि से अनुशीलन (शोध–प्रबन्ध)	डा0 जमुना प्रसाद बड़ैरिया	
61	संस्कृति का दार्शनिक विवेचन	डा0 नन्दकिशोर 'देवराज'	हिन्दी समिति सूचना विभाग लखनऊ
62	साहित्यिक निबंध	डा0 उमेशचन्द्र मिश्र	
63	साहित्यालोचन एवं हिन्दी साहित्य का इतिहास	डा0 अश्वघोष द्वारा सम्पादित	
64	योग का प्रारम्भ	श्री माँ	अदिति कार्यालय, पांडिचेरी
65	राम नाम एक चिन्तन	बिनोवा भावे	सर्व सेवासंघ, वाराणसी
66	राष्ट्रधर्म द्रष्टा श्री अरविन्द	डा0 रामनाथ शर्मा	लो0 प्र0 लखनऊ
67	राधा कृष्णन का विश्व दर्शन	श्री शान्ति जोशी	
68	राम चरित मानस	गोस्वामी तुलसीदास	गीताप्रेस, गोरखपुर
69	लाइफ ऑफ राम कृष्ण	रोमांरोला	
70	विचार दर्शन	डा0 रामकुमार वर्मा	कि0 म0 इलाहाबाद
71	विवेकानन्द साहित्य, खण्ड 1 से 10	स्वामी विवेकानन्द	मायावती पिथौरागढ़ (हिमालय
72	विज्ञान युग में धर्म	बिनोवा भावे	सर्वसेवा संघ, वाराणसी
73	विज्ञान का दर्शन	ए0 के0 सिन्हा	

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
74	विनय पत्रिका	गोस्वामी तुलसीदास	गीता प्रेस गोरखपुर
75	विवेक चूड़ामणि		
76	विश्व मानवता की ओर	रवीन्द्रनाथ टैगोर	सर्व सेवासंघ, वाराणसी
77	शुचिता से आत्म दर्शन	बिनोवा भावे	
78	शोध प्रविधि	डा० विनय मोहन शर्मा	ने० प० हा० दरियागंज, नयी दिल्ली
79	शिकागो वक्तृता	स्वामी विवेकान्द	रामकृष्ण मठ, नागपुर
80	श्री अरविन्द का पूर्ण योग	नारायण प्रसाद 'बिन्दु'	श्री अरविन्द योग मन्दिर, जबलपुर (सहारनपुर)
81	सुखी गृहस्थ	महात्मा आनन्द स्वामी	गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली
82	श्री अरविन्द और उनका आश्रम	नारायण प्रसाद 'बिन्दु'	श्री अरविन्द आश्रम ट्रस्ट, पाण्डिचेरी
83	श्री अरविन्द की प्रेरणा	नारायण प्रसाद 'बिन्दु'	श्री अरविन्द आश्रम ट्रस्ट, पाण्डिचेरी
84	सावित्री (महाकाव्य)	श्री अरविन्द, रू० क० द्यवती 'कोकिल'	श्री अरविन्द आश्रम ट्रस्ट, पाण्डिचेरी
85	हिन्दी साहित्य और युग प्रवृत्तियाँ	शिवकुमार शर्मा	
86	हिमालय कह रहा है	पायलट बाबा	पायलट बाबा आश्रम, गेढिया, नैनीताल
87	हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्य समाज की देन	डा० लक्ष्मीनारायण गुप्त	
88	हिन्दी साहित्य का परिचय	रामेश्वर प्रसाद शुक्ल 'अंचल'	
89	हिन्दी व्याकरण काव्यांग और साहित्य प्रकाश	श्याम सुन्दर लाल	न० पि० व० जबलपुर
90	ज्ञानयोग पर प्रवचन	स्वामी विवेकानन्द	रामकृष्ण मठ, नागपुर
91	हिन्दी साहित्य का इतिहास	पं० रामचन्द्र शुक्ल	
92	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा० रामकुमार वर्मा	
93	हिन्दी प्रभा	महेश प्रसाद शर्मा, प्रेम चन्द्र अग्रवाल	बे० पा० मथुरा
94	हिन्दी प्रकाश	लल्लू सिंह, छोटे लाल पाल	आ० पु० मं० शिकोहाबाद

(घ) सहायक ग्रन्थ सूची–संस्कृत

कमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखाक / सम्पादक	प्रकाशक
1	अथर्ववेद (भाष्य)	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
2	अध्यात्म रामायण	अनुवादक–मुनिलाल	गीताप्रेस, गोरखापुर
3	आचार्य मम्मट: काव्य प्रकाश	चुन्नीलाल शुक्ल	साहित्य भण्डार, मेरठ
4	ईशावास्योपनिषद		गीताप्रेस, गोरखापुर
5	एक सौ आठ उपनिषद–ब्रहविद्या	पं0 श्रीरामशर्मा आचार्य	शान्तिकुन्ज, हरिद्वारार
6	एक सौ आठ उपनिषद–ज्ञान खण्ड	पं0 श्रीरामशर्मा आचार्य	शान्तिकुन्ज, हरिद्वारार
7	एक सौ आठ उपनिषद–साधना खण्ड	पं0 श्रीरामशर्मा आचार्य	शान्तिकुन्ज, हरिद्वारार
8	एतरेयोपनिषद		गीताप्रेस गोरखापुर
9	अंगुन्तर निकाय		गीताप्रेस गोरखापुर
10	ऋगवेद (प्रथम खण्ड से चतुर्थ खण्ड)	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य	शान्तिकुन्ज, हरिद्वारार
11	"ऋषि" सर्व दर्शन संग्रह	प्रो0 उमाशंकर शर्मा	
12	चाणक्य नीति	आचार्य चाणक्य	गीताप्रेस, गोरखापुर
13	छान्दोग्य उपनिषद		गीताप्रेस, गोरखापुर
14	कठोपनिषद		गीताप्रेस, गोरखापुर
15	केनोपनिषद		गीताप्रेस, गोरखापुर
16	ज्योतिष पीयूष	पं0 कल्याण दत्त शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
17	तैत्तरीय उपनिषद		गीताप्रेस, गोरखापुर
18	तैत्तिरीय आरण्यक		गीताप्रेस, गोरखापुर
19	न्याय वार्तिक		गीताप्रेस, गोरखापुर
20	न्याय सूत्र	महर्षि गौतम	गीताप्रेस, गोरखापुर
21	न्याय और वैशेषिक दर्शन	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुंज, हरिद्वार
22	पारस्कर गृहय सूत्र		गीताप्रेस, गोरखापुर
23	पातंजलि योग दर्शन	आचार्य श्रीराम शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
24	प्रश्नोपनिषद		गीताप्रेस, गोरखापुर
25	प्रज्ञोपनिषद	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखण्ड ज्योति सं0
26	ब्रहमसूत्र भाष्य–	आचार्य शंकर	गीताप्रेस, गोरखापुर
27	बाल्मीकि रामायण	आदि कवि बाल्मीकि	गीताप्रेस, गोरखापुर
28	ब्रहम् चिन्तन (काव्य)	आचार्य शंकर	गीताप्रेस, गोरखापुर
29	भक्ति सूत्र		गीताप्रेस, गोरखापुर

कमांक	ग्रन्थ का नाम	लेखक/सम्पादक	प्रकाशक
30	मनुस्मृति	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा,
31	महाभारत	वेद ब्यास	गीताप्रेस, गोरखपुर
32	महाभारत कथा	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा
33	महार्थ मन्जरी		गीताप्रेस, गोरखपुर
34	मुंडकोपनिषद		गीताप्रेस, गोरखपुर
35	मीमांसा दर्शन (जै0 सू0)		गीताप्रेस, गोरखपुर
36	यजुर्वेद	श्रीराम शर्मा आचार्य	शान्तिकुंज , हरिद्वार
37	योग वशिष्ठ	श्रीराम शर्मा आचार्य	शान्तिकुंज , हरिद्वार
38	योग चूड़ामणि उपनिषद		गीताप्रेस, गोरखपुर
39	योगसूत्र		गीताप्रेस, गोरखपुर
40	योगतत्वोपनिषद		गीताप्रेस, गोरखपुर
41	विष्णु पुराण	श्रीराम शर्मा आचार्य	यु0 नि0 यो0 मथुरा,
42	वैशेषिक दर्शन	महर्षि कणाधि	गीताप्रेस, गोरखपुर
43	व्यास स्मृति		गीताप्रेस, गोरखपुर
44	शतपथ ब्राह्मण		गीताप्रेस, गोरखपुर
45	सांख्य एवं योग दर्शन	श्रीराम शर्मा आचार्य	शान्तिकुंज, हरिद्वार
46	संध्या प्रयोग		गीताप्रेस, गोरखपुर
47	श्रीमद् भागवत (प्रथम एवं द्वितीय खण्ड)		गीताप्रेस, गोरखपुर
48	श्रीमद् भगवत गीता		गीताप्रेस, गोरखपुर
49	श्रीमद् देवी भागवत (हिन्दी टीका)	विद्यावारिधि पं0 ज्वाला प्रसाद मिश्र	गीताप्रेस, गोरखपुर
50	सामवेद		शान्तिकुंज, हरिद्वार
51	स्वच्छन्दोद्यात		गीताप्रेस, गोरखपुर
52	संस्कृत वाड्मय का इतिहास	आचार्य देवी शंकर	डा0 राज किशोर सिंह
53	सुभाषित रत्न भांडागार		
54	सर्व दर्शन संग्रह		

ड़ सहायक ग्रन्थ सूची–आंग्लभाषा

1	A call to Youth of India	Shri Aurovindo & mother	
2	A pluralistic universe	James Jeans	
3	Appearance and Reality	Braddely F H	
4	Be Good	Swami Ram Sukh Das	
5	Critic of the Haegaline philosophy of Right-selected Essays	Marks K.A.	
6	Divine culture shall Expend Not Remain confined	Mata Bhagwati Devi Sharma	Shanti Kunj Haridwar
7	Every Man's Encyclopaedia	V. X. fourth Edition	
8	Essays in science	Einstein	The wisdon Lipsary(1934)
9	Garlands of Letters	John Wood Ruck	
10	Human Cycle	Shri Aurovindo	Shri Aurovindo A. Trust
11	Hand book of Experimintal psychology	Spennce K. W.	
12	Ideal and progress	Shri Aurvindo	Shri Aurovindo A. Trust
13	Is capitalism coming to an End	Peter E. Drucker	
14	News and Reviews	Shri Aurvindo	Shri Aurovindo A. Trust
15	Philosophic problems	Mendel Bourn	
16	Practical Vendant	Dr. B. L. Atreya	Ram Tirtha P. Lucknow
17	Religion with out Revelation	Julias Huxley	
18	Spirit and truth	Karl Heam	
19	Some fandamintal Problems in Indian Philosophy	C. Kushan Raja	
20	The Tikvary of Faith	Dr. Radha Krishnan	
21	The Encyclopaedia of philosophy	Poul Edwards.	Vol. 1
22	The Humanity of Men	Ralph Barton Parry	
23	The latent Power of Gayatri	Shri Ram Sharma Acharya	Yug Nirman Yojana Mathura
24	The Basic Writing of Bertrand Russell	Egner & denom	
25	The Mysterious Universe	James Jeans J.	
26	The Yogi and the comissar	Aurther Koslar	

पत्र–पत्रिकायें एवं स्मारिकायें :–

कमांक	पत्रिका का नाम	लेखाक / सम्पादक	प्रकाशक
1	अखाण्ड ज्योति (मासिक) वर्ष 1955 से वर्तमान 2004 तक की	आचार्य श्रीराम शर्मा डा0 प्रणव पण्ड्या	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
2	युग निर्माण योजना (मासिक) 1962 से वर्तमान 2004 तक की	आचार्य श्रीराम शर्मा पं0 लीलापति शर्मा	गायत्री तपोभूमि, मथुरा
3	युग निर्माण योजना (साप्ताहिक)	आचार्य श्रीराम शर्मा	अखाण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
4	गायत्री परिवार पत्रिका (मासिक)	आचार्य श्रीराम शर्मा	गायत्री तपोभूमि, मथुरा
5	युग संस्कृति (मासिक)	डा0 चमनलाल गौतम	संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब, बरेली
6	साहित्य संदेश (मासिक)	बाबू गुलाबराय डा0 सत्येन्द्र	साहित्य–रत्न भंडार, आगरा
7	ज्ञान यज्ञ (मासिक)	पं0 श्री रामशर्मा आचार्य	विलासपुर से प्रकाशित
8	जीवन यज्ञ (मासिक)	पं0 श्री रामशर्मा आचार्य	संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब, बरेली
9	युग शक्ति गायत्री (मासिक)	पं0 श्री रामशर्मा आचार्य.	गायत्री तपोभूमि, मथुरा
10	प्रज्ञा अभियान (मासिक)	पं0 श्री रामशर्मा आचार्य	शान्किुन्ज, हरिद्वार
11	प्रज्ञा अभियान (मासिक)	श्री वीरेश्वर उपाध्यायं	शान्किुन्ज, हरिद्वार
12	प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक)	श्री वीरेश्वर उपाध्याय	शान्किुन्ज, हरिद्वार
13	राष्ट्र धर्म (मासिक)	आनन्द मिश्र 'अभय'	संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ
14	कल्याण (मासिक)		गीताप्रेस गोरखा पुर
15	गायत्री उपवन (मासिक) एवं पंचकोशी साधना विशेषॉक	बलराम सिंह परिहार	हरिपुर कला (राय बाला) देहरादून
16	पान्चजन्य (साप्ताहिक)	गिरीश चन्द्र मिश्र तरूण विजय	संस्कृति भवन, नई दिल्ली
17	साहित्य सेतु (त्रैमासिक)	राजरश्मि	लखनऊ
18	इलाइट (मासिक)		लखनऊ से प्रकाशित
19	नव ज्योति	सितम्बर 1998 (शिक्षक दिवस विशे0)	शिक्षा प्रसार विभाग उ0 प्र0 इलाहाबाद
20	हिन्दू विश्व	श्री मती शकुन्तला सिरौठिया	गोसाईं टोला, इलाहाबाद
21	प्रेम की पुकार	स्वामी अवधेशानन्द गिरि	

कमांक	पत्रिका का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशक
22	अखण्ड ज्योति स्मृति विशेषांक अगस्त–सितम्बर 1990	ब्रहमवर्चस	अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
23	देवदूत आया हम पहचान न सके (स्मारिका)	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुंज, हरिद्वार
24	महापूर्णाहूति (स्मारिका)	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुंज, हरिद्वार
25	गुरू कृपा (स्मारिका)	डा0 सतीशचन्द्र शुक्ला	गायत्री शक्तिपीठ, भिण्ड
26	ऋतम्भरा (स्मारिका)	डा0 आर0 पी0 कर्मयोगी डा0 बलराम राव	गायत्री शक्तिपीठ, भोपाल
27	तपोवन (चित्रकूट अश्वमेध स्मारिका) 1994		गायत्री शक्पीट, चित्रकूट
28	सजल श्रद्धा (स्मारिका)	डा0 हरगोविन्द्र सिंह पं0 लक्ष्मणलाल त्रिपाठी	गायत्री शक्तिपीठ, राठ
29	अग्नि शिखा (मासिक)		श्री अरविन्द आश्रम ट्रस्ट पांडिचेरी
30	शोध यात्रा (त्रैमासिक)	डा0 राम कृष्ण गुप्त	शोध परिषद ग्वालियर
31	टाइमब्यूरो (विशेषांक) वर्ष 4 अंक 11	राधेश्याम वर्मा 'श्याम'	सरिता बिहार, दिल्ली
32	टाइमब्यूरो (विशेषांक) वर्ष 2 अंक 12	शिवनंाथ शर्मा	सरिता बिहार, दिल्ली
33	भारतीय धर्म–मानव धर्म (स्मारिका)	आचार्य श्रीराम शर्मा	यु0 नि0 यो0 मथुरा,
34	उत्तर प्रदेश संदेश पं0 दीनदयाल उपाध्याय (विशेषांक) अंक 9 वर्ष 1991	डा0 कौशल कुमार राय	सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ0 प्र0
35	दैनिक जागरण		कानपुर
36	दैनिक आज		कानपुर
37	दैनिक अमर उजाला		कानपुर
38	बुन्देलखण्ड केसरी (साप्ताहिक)	डा0 सत्यनारायण सिंह,	राठ (हमीरपुर)
39	युग प्रवाह वीडियो पत्रिका (पाक्षिक)	ब्रहमवर्चस	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
40	महिला जागृति अभियान (मासिक)	माता भगवती देवी शर्मा	शान्तिकुन्ज, हरिद्वार
41	जागृति संदेश (1975)	हरिप्रसाद शुक्ला	यु0 नि0 प0 कानपुर
42	गुरूसत्ता से साक्षात्कार (सचित्र)	मृत्युंजय शर्मा	अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा